" नया हिन्द "

जिल्द 12

(जनवरी सन 1952 से जून सन 1952 तक)

लेख और उनके लेखक

अ

आ

इ

उ

क

ग

च

ज

ड

त

द

न

प

ब

भ

म

य

र

ल

व

स

श

ह

ज्ञ

"नया हिन्द"

जिल्द 12

(जनवरी सन 1952 से जून 1952 तक)

लेखक और उनके लेख

"نیا ہند"

جلد 12

(جنوری سن 1952 سے جون سن 1952 تک)

لیکھ اور اُن کے لیکھک

الف

صفحہ

ب

پ

ت

ج

چ

ح

خ

د

ڈ

"نیا ہند"

جلد 13

(جنوری 1952 سے جون 1952 تک)

لیکھک اور اُن کے لیکھ

नया हिन्द / نیا ہند

एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

सहायक एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

اسسٹنٹ ایڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

2 JAN 1952

र के खास लेख

- हिन्द चीन का [illegible] मेल—सुन्दरलाल
- उत्तर प्रदेश में [illegible]—विनोबा
- इन्सान की हस्ती और आज के सवाल— जवाहरलाल नेहरू
- प्रेम धर्म की राह में—जैनेन्द्र कुमार
- शिक्षा की नींवों का पाठ काट- क्यों?—धीरेन्द्र मजूमदार
- आंखें (कहानी)—ख़लील जिब्रान

[illegible] राह

- [illegible]—सुन्दरलाल
- [illegible] की पुकार—सुरेश रामभाई
- [illegible] की खोज—सुरेश रामभाई

خاص لیکھ

- [illegible]—سندر لال
- [illegible]—ونوبا
- انسان کی ہستی اور آج کے سوال—جواہر لال نہرو
- [illegible]—جینیندر کمار
- [illegible]—دھیریندر مجومدار
- [illegible]—خلیل جبران

- [illegible]—سندر لال
- [illegible]—سریش رام بھائی
- [illegible]—سریش رام بھائی

जनवरी 1952 جنوری

[illegible]

जनवरी 1952 | جنوری 1952

पन्ना صفحہ

…में ही रुपया साल, बाहर दस रुपया … एक रुपया दस आने .

—ہندوستان میں چھ روپیہ سال؛ باہر دس روپیہ سال؛ ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर | مینیجر

'नया हिन्द' | 'نیا ہند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद | 145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 12 जनवरी, सन '52 नम्बर 1

جلد 12 جنوری، سن '52 نمبر 1

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

समय का सागर

(बहन विद्यावती 'कोकिल')

समय का ये सागर कि जिसकी लहर पर
जिसे देखिये वह चला आ रहा है.
ये चांद और सूरज चले आ रहे हैं
ये तारों का झुरमुट बढ़ा आ रहा है.

कौन इसमें आगे कौन इसमें पीछे
इक उन्माद गति का चढ़ा आ रहा है.
कौन इसमें हारा कौन इसमें जीता
कि आसन सभी का छुटा आ रहा है.

अजब बेबसी है अजब हड़बड़ी है
धरा का ये घूँघट खुला आ रहा है.
ये जीवन का यौवन जो छलका था इक दिन
बराबर छलक कर बहा आ रहा है.

ये उत्तुंग लहरें ये तूफ़ान भारी
कि पर्वत का साहस हिला आ रहा है.
न बहने की ताक़त न रुकने का साहस
जिधर पांव धरिए उठा आ रहा है.

उन्माद गति = चाल की मस्ती, धरा = ज़मीन, यौवन = जवानी, उत्तुंग = ऊंची.

سمے کا ساگر

(بہن ودیاوتی 'کوکل')

سمے کا یہ ساگر کہ جس کی لہر پر
جسے دیکھئے وہ چلا جا رہا ہے۔
یہ چاند اور سورج چلے جا رہے ہیں
یہ تاروں کا جھرمٹ بڑھا جا رہا ہے۔

کون اس میں آگے کون اس میں پیچھے
اک اُنماد گتی کا چڑھا آ رہا ہے۔
کون اس میں ہارا کون اس میں جیتا
کہ آسن سبھی کا چھٹا جا رہا ہے۔

عجب بے بسی ہے عجب ہڑبڑی ہے
دھرا کا یہ گھونگھٹ کھلا جا رہا ہے۔
یہ جیون کا یوون جو چھلکا تھا اک دن
برابر چھلک کر بہا جا رہا ہے۔

یہ اُتنگ لہریں یہ طوفان بھاری
کہ پربت کا ساہس ہلا جا رہا ہے۔
نہ بہنے کی طاقت نہ رکنے کا ساہس
جدھر پاؤں دھریئے اٹھا جا رہا ہے۔

اُنماد گتی = چال کی مستی، دھرا = زمین، یوون = جوانی، اُتنگ = اونچی۔

समय का सागर

ये मानव ही था जिसने रुक कर ये पूछा
ये आलम का आलम कहां जा रहा है.
लहर ओढ़ कर इक तरी है बनाई
ये मानव ही है जो तिरा जा रहा है.

विवशता से अन्दर जला जा रहा है
कि जल कर उजाला किया जा रहा है.
बहुत चांद सूरज हैं जीवन को लेकिन
उजाला इसी से किया जा रहा है.

आंधियों ने बस्ती उजाड़ी हमारी
भले ही चमन यह मिटा जा रहा है.
हृदय की ओट में ये दीपक हमारा
जला जा रहा है जला जा रहा है.

سمے کا ساگر

یہ مانو ہی تھا جس نے رک کر یہ پوچھا
یہ عالم کا عالم کہاں جا رہا ہے۔
لہر اوڑھ کر اِک تری ہے بنائی
یہ مانو ہی ہے جو ترا جا رہا ہے۔

وِوشتا سے اندر جلا جا رہا ہے
کہ جل کر اُجالا کیا جا رہا ہے۔
بہت چاند سورج ہیں جیون کو لیکن
اُجالا اِسی سے کیا جا رہا ہے۔

آندھیوں نے بستی اجاڑی ہماری
بھلے ہی چمن یہ مٹا جا رہا ہے۔
ہردے کی اوٹ میں یہ دیپک ہمارا
جلا جا رہا ہے جلا جا رہا ہے۔

भजन, पूजा, साधन आराधना सब छोड़ दो. मंदिर के दरवाजे बन्द कर के इस अंधेरे कोने में किस की पूजा बंदगी कर रहे हो? अपनी आंखें खोल कर देखो कि देवता तुम्हारे सामने नहीं हैं.

जहाँ मिट्टी खोदने वाला सख्त जमीन खोद रहा है, जहाँ सड़क बनाने वाला पत्थर तोड़ रहा है, तुम्हारे देवता वहीं हैं. धूप और बरसात में देवता उन्हीं के साथ हैं. उनके कपड़े धूल से भरे हुए हैं. अपने पाक पवित्र कपड़े उतार कर उनकी तरह तुम भी इस धूल में आओ.

मुक्ति! मुक्ति कहाँ है? हमारे प्रभू ने अपने आप खुशी खुशी अपने ऊपर सृष्टि का बंधन ले लिया है. वह हमारे साथ हमेशा के लिये बंध गए हैं.

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

بھجن، پوجن، سادھن، آرادھنا سب چھوڑ دو۔ مندر کے دروازے بند کر کے اس اندھیرے کونے میں کس کی پوجا بندگی کر رہے ہو؟ اپنی آنکھیں کھول کر دیکھو کہ دیوتا تمہارے سامنے نہیں ہیں۔

جہاں مٹی کھودنے والا سخت زمین کھود رہا ہے، جہاں سڑک بنانے والا پتھر توڑ رہا ہے، تمہارے دیوتا وہیں ہیں۔ دھوپ اور برسات میں دیوتا انہیں کے ساتھ ہیں۔ اُن کے کپڑے دھول سے بھرے ہوئے ہیں۔ اپنے پاک پوتر کپڑے اُتار کر اُن کی طرح تم بھی اس دھول میں آؤ۔

مکتی! مکتی کہاں ہے؟ ہمارے پربھو نے اپنے آپ خوشی خوشی اپنے اوپر سرشٹی کا بندھن لے لیا ہے۔ وہ ہمارے ساتھ ہمیشہ کے لئے بندھ گئے ہیں۔

—رویندر ناتھ ٹھاکر

तरी = नाव, तिरा जा रहा है = पार लग रहा है, विवशता = मजबूरी, अन्दर = दिल,

تری = ناو، ترا جا رہا ہے = پار لگ رہا ہے، وِوشتا = مجبوری، اندر = دل۔

हिन्द और चीन का कलचरी मेल

(सुन्दरलाल)

पुरानी दुनिया की लगभग सब बड़ी बड़ी सभ्यतायें बड़े बड़े दरियाओं के किनारे जनमीं और फूली फलीं. नील नदी के किनारे की मिस्री सभ्यता, दजला और फरात की सुमेरी सभ्यता, सिन्ध नदी की पुरानी भारती सभ्यता, गंगा और जमना की आर्य सभ्यता और हुआंग-हो नदी के किनारे की पुरानी चीनी सभ्यता, सब इसी की मिसालें हैं. यह सब कहानी पिछले लगभग दस हज़ार बरस की इनसानी तहज़ीब की कहानी है. आज हम इन पुराने देशों में से दो यानी चीन और भारत की बाबत कुछ कहना चाहते हैं.

यह दोनों देश आज से कम से कम 5000 साल पहले मानव सभ्यता की चोटी पर पहुँच चुके थे, जब कि इंगलैन्ड का टापू योरप महाद्वीप की भूमि से अभी कट कर अलग भी नहीं हुआ था, और योरप के पूरबी, दक्खिनी और पच्छमी किनारों पर केवल कहीं कहीं जंगली या नीम जंगली आदमी देखने को मिलते थे. बाकी सारा योरप उन दिनों लम्बी दलदलों, घने जंगलों और जंगली जानवरों से भरा हुआ था. अमरीका के आबाद होने में अभी हज़ारों बरस की देर थी.

चीन ने इनसानी दुनिया को बहुत सी चीज़ें सिखलाईं. छज्जेदार टोप जिसे अंगरेज़ी में 'हैट' कहते हैं चीन ही की ईजाद है. पायजामा यानी बेसिली धोती या लुंगी की जगह दोनों टांगों के लिये अलग अलग सिली हुई पोशाक भी दुनिया को चीन ही की देन है. तेरहवीं सदी तक सारे योरप में छोटी गोल टोपी जो केवल चान्द ढक सकती थी पहनी जाती थी और टांगों में तहबन्द या लुंगी बांधी जाती थी. पुराने यूनान और रोम की तस्वीरों और किताबों में यही पोशाक मिलेगी. तेरहवीं सदी में मार्को पोलो के चीन से योरप लौटने के बाद चीन से सीख कर योरप में टोप और पतलून का रिवाज शुरू हुआ. कागज़ की ईजाद दो देशों में अलग अलग हुई, मिस्र में "पैपिर" के दरख़्त से जिससे अंगरेज़ी का "पेपर" शब्द बना और चीन में बाँस से. कम्पास यानी कुतबनुमा जो समन्दरी जहाज़ों को दिशा बताती है दुनिया को चीन ही की देन है. आतिश-बाज़ी और बारूद चीन ही की ईजादें हैं. रेशम का कातना और बुनना चीन ही ने दुनिया को सिखलाया.

चित्रकारी में चीन किसी समय दुनिया के सब देशों से बढ़ा चढ़ा था. भारत भी एक उतना ही पुराना देश है. जो जो चीज़ें दुनिया ने भारत से सीखीं उनमें शायद

هند اور چین کا کلچری میل

(سندر لال)

پرانی دنیا کی لگ بھگ سب بڑی بڑی سبھیتائیں بڑے بڑے دریاؤں کے کنارے جنمیں اور پھولی پھلیں. نیل ندی کے کنارے کی مصری سبھیتا، دجلہ اور فرات کی سمیری سبھیتا، سندھ ندی کی پرانی بھارتی سبھیتا، گنگا اور جمنا کی آریہ سبھیتا اور ہوانگ ہو ندی کے کنارے کی پرانی چینی سبھیتا، سب اسی کی مثالیں ہیں. یہ سب کہانی پچھلے لگ بھگ دس ہزار برس کی انسانی تہذیب کی کہانی ہے. آج ہم ان پرانے دیشوں میں سے دو یعنی چین اور بھارت کی بابت کچھ کہنا چاہتے ہیں.

یہ دونوں دیش آج سے کم سے کم 5000 سال پہلے مانو سبھیتا کی چوٹی پر پہونچ چکے تھے، جبکہ انگلینڈ کا ٹاپو یورپ مہادیپ کی بھومی سے ابھی کٹ کر الگ بھی نہیں ہوا تھا، اور یورپ کے پوربی، دکھنی اور پچھمی کناروں پر کہیں کہیں جنگلی یا نیم جنگلی آدمی دیکھنے کو ملتے تھے. باقی سارا یورپ ان دنوں لمبی دلدلوں، گھنے جنگلوں اور جنگلی جانوروں سے بھرا ہوا تھا. امریکہ کے آباد ہونے میں ابھی ہزاروں برس کی دیر تھی

چین نے انسانی دنیا کو بہت سی چیزیں سکھائیں. چھجے دار ٹوپ جسے انگریزی میں 'ہیٹ' کہتے ہیں چین ہی کی ایجاد ہے. پائجامہ یعنی بے سلی دھوتی یا لنگی کی جگہ دونوں ٹانگوں کے لئے الگ الگ سلی ہوئی پوشاک بھی دنیا کو چین ہی کی دین ہے. تیرھویں صدی تک سارے یورپ میں چھوٹی گول ٹوپی جو کیول چاند ڈھک سکتی تھی پہنی جاتی تھی اور ٹانگوں میں تہہ بند لنگی باندھی جاتی تھی. پرانے یونان اور روم کی تصویروں اور کتابوں میں یہی پوشاک ملے گی. تیرھویں صدی میں مارکو پولو کے چین سے یورپ لوٹنے کے بعد چین سے سیکھ کر یورپ میں ٹوپ اور پتلون کا رواج شروع ہوا. کاغذ کی ایجاد دو دیشوں میں الگ الگ ہوئی، مصر میں "پیپر" کے درخت سے جس سے انگریزی کا "پیپر" شبد بنا اور چین میں بانس سے. کمپاس یعنی قطب نما جو سمندری جہازوں کو دشا بتاتی ہے دنیا کو چین ہی کی دین ہے. آتش بازی اور بارود چین ہی کی ایجادیں ہیں. ریشم کا کاتنا اور بننا چین ہی نے دنیا کو سکھایا.

چترکاری میں چین کسی سمے دنیا کے سب دیشوں میں بڑھا چڑھا تھا. بھارت بھی ایک اتنا ہی پرانا دیش ہے. جو جو چیزیں دنیا نے بھارت سے سیکھیں ان میں شاید

डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने चीन की यात्रा की. चीन में जगह जगह उनका बहुत बड़ा स्वागत हुआ. पुराने रिश्ते जुड़े. शान्ति निकेतन विश्व विद्यालय में 'चीना भवन' की बुनियाद रक्खी गई. होते होते सन 1947 में भारत अंगरेज़ों के पंजे से आज़ाद हुआ. सन 1949 में चीन के अन्दर नया आज़ाद लोक राज क़ायम हुआ. दोनों देशों के विचार वान देश भक्त एक दूसरे से मिलने और एक दूसरे को अधिक समझने के लिये बेचैन हुए. पहली अक्तूबर सन 1951 को नए चीनी लोकराज की दूसरी सालगिरह थी. भारत का एक प्रतिनिधि मंडल 'इन्डियन गुडविल मिशन' के नाम से इस जशन में हिस्सा लेने के लिये चीन पहुँचा. चीन की सरकार और वहां की जनता ने भारत के प्रतिनिधियों का जिनमें हिन्दू मुसलमान ईसाई पारसी, सब सूबों और सब विचारों के लोग शामिल थे, ज़ोरों के साथ खुले दिल से स्वागत किया. चालीस दिन चीन में रह कर भारत के प्रतिनिधियों ने नए चीन के रहन सहन, रंगढंग और राज काज को अच्छी तरह से देखा.

हमने देखा कि इस नए कलेवर में भी पुरानी चीनी सभ्यता की बुनियादें हिली नहीं हैं बल्कि उन्हीं पुरानी बुनियादों पर बीच की कमज़ोर इमारत को गिरा कर एक नया सुन्दर मज़बूत और विशाल भवन खड़ा कर दिया गया है.

सब से पहले मज़हब के मामले में नया चीन पहले से भी ज़ियादा ऊंचा और उदार है. नए चीन में हर आदमी को पूरी मज़हबी आज़ादी है. वहां बौद्ध हैं. कंगफ़ू-त्से धर्म के लोग हैं, ताओ धर्म के पैरो हैं, ईसाई हैं. मुसलमान हैं और भारत से गए हुए कुछ सिक्ख भी हैं. नए चीन में मसजिदें हैं जिन में अज़ान दी जाती है और नमाज़ें पढ़ी जाती हैं, गुरुद्वारे हैं जिनमें ग्रन्थ साहब का पाठ होता है. बड़े बड़े मंदिर और पैगोडा हैं जिनमें धूप दीप के साथ पूजा होती है.

हाँग-चाऊ का सुन्दर नगर किसी समय बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य का बहुत बड़ा केन्द्र रह चुका है. महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की वहाँ ख़ास आवभगत हुई थी. हमने वहाँ बौद्ध मन्दिर देखे जिनमें दस दस और बीस बीस फ़ुट ऊंची बुद्ध बोधिसत्वों और दिग्पालों की सोने का पत्तर चढ़ी सुन्दर मूर्तियां इस समय तक भारत की उस पुरानी मूर्ति कला की याद दिला रही हैं. मन्दिर के घंटे घड़ियाल और धूप दीप हमारे दिलों पर ज़ोरों के साथ यह अंकित कर रहे थे कि अपने बड़प्पन में, अपनी शान में और अपनी कमज़ोरी में तीनों में भारत और चीन एक थे, एक हैं और एक ही रहेंगे. उस मन्दिर के बाहर, जिसके चीनी नाम का हिन्दी अनुवाद है 'चारों दिशाओं का धार्मिक संगम'

ڈاکٹر رویندر ناتھ ٹیگور نے چین کی یاترا کی ۔ چین میں جگہ جگہ اُن کا بہت بڑا سواگت ہوا ۔ پرانے رشتے جڑے ۔ شانتی نکیتن وشو ودیالیہ میں 'چینا بھون' کی بنیاد رکھی گئی ۔ ہوتے ہوتے سن 1947 میں بھارت انگریزوں کے پنجے سے آزاد ہوا ۔ سن 1949 میں چین کے اندر نیا آزاد لوک راج قائم ہوا ۔ دونوں دیشوں کے وچار وان دیش بھکت ایک دوسرے سے ملنے اور ایک دوسرے کو ادھک سمجھنے کے لئے بے چین ہوئے ۔ پہلی اکتوبر سن 1951 کو نئے چینی لوک راج کی دوسری سالگرہ تھی ۔ بھارت کا ایک پرتی ندھی منڈل 'انڈین گڈول مشن' کے نام سے اس جشن میں حصہ لینے کے لئے چین پہونچا ۔ چین کی سرکار اور وہاں کی جنتا نے بھارت کے پرتی ندھیوں کا جن میں ہندو مسلمان عیسائی پارسی' سب صوبوں اور سب وچاروں کے لوگ شامل تھے زوروں کے ساتھ کھلے دل سے سواگت کیا ۔ چالیس دن چین میں رہ کر بھارت کے پرتی ندھیوں نے نئے چین کے رہن سہن' رنگ ڈھنگ اور راج کاج کو اچھی طرح دیکھا ۔

ہم نے دیکھا کہ اِس نئے کلیور میں بھی پرانی چینی سبھیتا کی بنیادیں ہلی نہیں ہیں بلکہ انہیں پرانی بنیادوں پر بیچ کی کمزور عمارت کو گرا کر ایک نیا سندر مضبوط اور وشال بھون کھڑا کر دیا گیا ہے ۔

سب سے پہلے مذہب کے معاملے میں نیا چین پہلے سے بھی زیادہ اونچا اور اُدار ہے ۔ نئے چین میں ہر آدمی کو پوری مذہبی آزادی ہے ۔ وہاں بودھ ہیں' کنگفوتسے دھرم کے لوگ ہیں' تاؤ دھرم کے پیرو ہیں' عیسائی ہیں' مسلمان ہیں اور بھارت سے گئے ہوئے کچھ سکھ بھی ہیں ۔ نئے چین میں مسجدیں ہیں جن میں اذان دی جاتی ہے اور نمازیں پڑھی جاتی ہیں' گوردوارے ہیں جن میں گرنتھ صاحب کا پاٹھ ہوتا ہے' بڑے بڑے مندر اور پیگوڈا ہیں جن میں دھوپ دیپ کے ساتھ پوجا ہوتی ہے ۔

ہانگ چاؤ کا سندر نگر کسی سمے بودھ دھرم اور بودھ ساہتیہ کا بہت بڑا کیندر رہ چکا ہے ۔ مہا کوی رویندر ناتھ ٹیگور کی وہاں خاص آؤبھگت ہوئی تھی ۔ ہم نے وہاں بودھ مندر دیکھے جن میں دس دس اور بیس بیس فٹ اونچی بدھ بودھی ستوں اور دگپالوں کی سونے کا پتر چڑھی سندر مورتیاں اس سمے تک بھارت کی اس پرانی مورتی کلا کی یاد دلا رہی ہیں ۔ مندر کے گھنٹے گھڑیال اور دھوپ دیپ ہمارے دلوں پر زوروں کے ساتھ یہ انکت کر رہے تھے کہ اپنے بڑپّن میں' اپنی شان میں اور اپنی کمزوری میں تینوں میں بھارت اور چین ایک تھے' ایک ہیں اور ایک ہی رہیں گے ۔ اس مندر کے باہر' جس کے چینی نام کا ہندی انوواد ہے 'چاروں دشاؤں کا دھارمک سنگم'

खिलौनों और पूजा के सामान की दर्जनों दुकानें हमें भारत के कुम्भ मेले की याद दिला रही थीं. मालूम होता था कि अब भी भारत की आम जनता और चीन की आम जनता में इतना फ़रक़ नहीं है. पर एक फ़रक़ हमें दिखाई दिया. इस मन्दिर से सम्बन्ध रखने वाले मठ और पुस्तकालय में चालीस चीनी बौद्ध महन्त रहते हैं. जब से नया चीनी लोकराज क़ायम हुआ है उनमें से तेरह जो अधिक बूढ़े हैं पूजापाठ और पठन पाठन में लगे रहते हैं और बाक़ी सत्ताइस जो कुछ मज़बूत हैं दिन का अधिकतर समय किसानों की तरह खेती करने और अनाज पैदा करने में बिताते हैं. सरकार के या किसी के हुक्म या दबाव से नहीं बल्कि केवल देश के नए इनक़लाब और नए विचारों के असर से.

चीन में अलग अलग धर्मों के लोगों को आपस में शादियां करने की पूरी आज़ादी है. केवल शर्त यह है कि एक पुरुष के एक से अधिक स्त्री या एक स्त्री के एक से अधिक पति न हों. अनेक चीनी घरानों में मियां बीवी में से कोई एक बौद्ध है तो दूसरा ईसाई या मुसलमान. सगे भाइयों में एक एक मज़हब का है तो दूसरा दूसरे मज़हब का. सब प्रेम के साथ मिल जुल कर एक घर में रहते हैं. धर्म के नाम पर राजकाजी या किसी तरह की भी पार्टियां वहां देखने में नहीं आतीं .हैं

अब ज़रा चीन की हुकूमत को देखें. नई चीनी सरकार ने एक नया प्रोग्राम जिसे वह 'कामन प्रोग्राम' कहते हैं देश के सामने रक्खा है. इस प्रोग्राम में तीन बड़े उसूलों पर ज़ोर दिया गया है—ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा. इन्हीं तीन उसूलों पर चल कर नए चीन के हाकिमों और नेताओं ने देश की सारी मुश्किलों को हल कर डाला है. उन्होंने देश में घूस ख़ोरी, वेश्या पन और भीख माँगने के पेशे को मिटा दिया है. उन्होंने देश के ब्योपारियों और दस्तकारों की काया पलट कर दी है. चीज़ों में मेल मिलावट के तरीक़े और नाप तोल में बेईमानी जो तीन साल पहले वहाँ किसी देश से कम न थी. आज एक पुरानी कहानी रह गई है. ईमानदारी उनका सबसे पहला उसूल है और सारा देश उस पर चलने की कोशिश कर रहा है. उनका दूसरा उसूल है सादगी. इस उसूल पर चल कर उन्होंने राज के बड़े बड़े नौकरों और अफ़सरों की तनख़ाहें एक दम कम कर दीं. लगभग नए चीन के वज़ीरों को 450 रुपया महीना मिलता है और नए चीन के राष्ट्रपति माओ-त्से-तुंग को लगभग 600 रुपया महीना. यही हाल और सब महकमों का भी है. छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी तनख़ाहों में आम तौर पर एक और चार या एक और पाँच का औसत रह गया है. इस तरह नए चीन ने

کھلونوں اور پوجا کے سامان کی درجنوں دوکانیں ہمیں بھارت کے کمبھ میلے کی یاد دلا رہی تھیں۔ معلوم ہوتا تھا کہ اب بھی بھارت کی عام جنتا اور چین کی عام جنتا میں اتنا فرق نہیں ہے۔ پر ایک فرق ہمیں دکھائی دیا۔ اس مندر سے سمبندھ رکھنے والے مٹھ اور پستکالے میں چالیس چینی بودھ مہنت رہتے ہیں۔ جب سے نیا چینی لوک راج قائم ہوا ہے ان میں سے تیرہ جو ادھک بوڑھے ہیں پوجا پاٹھ اور پٹھن پاٹھن میں لگے رہتے ہیں اور باقی ستائیس جو کچھ مضبوط ہیں دن کا ادھک تر سمے کسانوں کی طرح کھیتی کرنے اور اناج پیدا کرنے میں بتاتے ہیں۔ سرکار کے یا کسی کے حکم یا دباؤ سے نہیں بلکہ کیول دیش کے نئے انقلاب اور نئے وچاروں کے اثر سے۔

چین میں الگ الگ دھرموں کے لوگوں کو آپس میں شادیاں کرنے کی پوری آزادی ہے۔ کیول شرط یہ ہے کہ ایک پرش کے ایک سے ادھک استری یا ایک استری کے ایک سے ادھک پتی نہ ہوں۔ انیک چینی گھرانوں میں میاں بیوی میں سے کوئی ایک بودھ ہے تو دوسرا عیسائی یا مسلمان۔ سگے بھائیوں میں ایک ایک مذہب کا ہے تو دوسرا دوسرے مذہب کا۔ سب پریم کے ساتھ مل جل کر ایک گھر میں رہتے ہیں۔ دھرم کے نام پر راج کاجی یا کسی طرح کی بھی پارٹیاں وہاں دیکھنے میں نہیں آتی ہیں۔

اب ذرا چین کی حکومت کو دیکھیں۔ نئی چینی سرکار نے ایک نیا پروگرام جسے وہ 'کامن پروگرام' کہتے ہیں دیش کے سامنے رکھا ہے۔ اس پروگرام میں تین بڑے اصولوں پر زور دیا گیا ہے—ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا۔ انہیں تین اصولوں پر چل کر نئے چین کے حاکموں اور نیتاؤں نے دیش کی ساری مشکلوں کو حل کر ڈالا ہے۔ انہوں نے دیش سے گھوس خوری، ویشیا پن اور بھیک مانگنے کے پیشے کو مٹا دیا ہے۔ انہوں نے دیش کے بیوپاریوں اور دستکاروں کی کایا پلٹ کر دی ہے۔ چیزوں میں میل ملاوٹ کے طریقے اور ناپ تول میں بے ایمانی جو تین سال پہلے وہاں کسی دیش سے کم نہ تھی آج ایک پرانی کہانی رہ گئی ہے۔ ایمانداری ان کا سب سے پہلا اصول ہے اور سارا دیش اس پر چلنے کی کوشش کر رہا ہے۔ ان کا دوسرا اصول ہے سادگی۔ اس اصول پر چل کر انہوں نے راج کے بڑے بڑے نوکروں اور افسروں کی تنخواہیں ایک دم کم کر دیں۔ نئے چین کے وزیروں کو لگ بھگ 450 روپیہ مہینہ ملتا ہے اور نئے چین کے راشٹرپتی ماؤزے تنگ کو لگ بھگ 600 روپیہ مہینہ۔ یہی حال اور سب محکموں کا بھی ہے۔ چھوٹی سے چھوٹی اور بڑی سے بڑی تنخواہوں میں عام طور پر ایک اور چار یا ایک اور پانچ کا اوسط رہ گیا ہے۔ اسطرح نئے چین نے

बड़े छोटे और अमीर ग़रीब के फ़रक़ को एक बड़े दरजे तक मिटा डाला. जनता की सेवा के उसूल पर चल कर उन्होंने सारे देश को मेहनती बना दिया. इन्हीं उसूलों की बरकत से नए चीन ने दो बरस के अन्दर वहां के 47,50,00,000 आदमियों की खाने, कपड़े और ज़िन्दगी की सब मामूली ज़रूरतों की कठिनाई को एक दम दूर कर दिया. नए चीन में आज इन सब चीज़ों की इफ़रात है. चारों तरफ़ ख़ुशहाली है.

चीन की दस्तकारियां भी बहुत दरजे तक हमने भारत की दस्तकारियों से मिलती हुई पाईं. सूत और रेशम से कढ़े हुए कपड़े हमें भेंट किए गए जिन्हें देख कर बिल्कुल लखनऊ की चिकन और बनारस की कामदानी की याद आ जाती है. रेशमी कपड़ों में जीती जागती तसवीरों का बुनना जो हूबहू फ़ोटो दिखाई दें, पीतल के बरतनों पर तरह तरह की नक़्क़ाशी, चीनी मिट्टी के बर्तन और लकड़ी और हाथी दांत के बारीक काम में मालूम होता है चीन भारत से बहुत बढ़ा चढ़ा है. हमने उनके चरख़े देखे, करघे देखे और चीनी खद्दर के थान देखे. नया चीन तेज़ी के साथ बड़ी बड़ी मिलों की तरफ़ जा रहा है. फिर भी अभी तक चीन में जितना हाथ का कता और हाथ का बुना कपड़ा बनता और बिकता है उतना शायद हमारे देश में न मिलता हो, और चीनी सरकार इसमें ख़ूब मदद देती है. चीन की दूसरी गांव की दस्तकारियाँ भी ख़ूब तरक़्क़ी कर रही हैं. चीन के गांव हमें बिल्कुल भारत के गांव से दिखाई दिए सिवाए इसके कि लोगों में ईमानदारी, मेहनत की आदत और एक दूसरे से प्रेम अधिक है.

चीन की पुरानी इमारतों को देख कर हमें बिल्कुल भारत की पुरानी इमारतें याद आ गईं. पेकिंग में हमने पुराने मंदिरों के फाटक देखे जो हूबहू सांची के पत्थर के फाटकों से मिलते हैं. नामुमकिन है कि वह ढंग भारत ने चीन से या चीन ने भारत से न लिया हो. पुराने महलों और मक़बरों में हमने वही भारत की मुग़ल ज़माने की इमारतों की तरह लम्बे लम्बे रास्ते, बीच में नहरें और फ़व्वारे, पानी के झरने और सावन भादों और उसी तरह की क्यारियां और रविशें देखीं जिस तरह की अपने देश में. चीन के ऊंचे गाजर की शकल के पैगोडा बिल्कुल मदुरा और त्रिवेन्द्रम के मन्दिरों से मिलते हैं. केवल चीन की रंगीन टाइल्स एक ख़ास चीज़ हैं जो भारत में दिखाई नहीं देतीं. इन टाइल्स को छाने में भी चीनी कारीगर जो गोलाई देते हैं और कंगूरे निकालते हैं वह भी एक अनोखी और बड़ी सुन्दर चीज़ है. हमें कुछ अचरज हुआ कि इस चीज़ की नक़ल अब तक भारत में क्यों नहीं हुई. शंघाई के नगर में एक बाज़ार के अन्दर हमने एक खंभे के ऊपर

ے چھوٹے اور امیر غریب کے فرق کو ایک بڑے درجے تک مٹا ڈالا۔ جنتا کی سیوا کے اصول پر چل کر انہوں نے سارے دیش کو محنتی بنا دیا۔ انہیں اصولوں کی برکت سے نئے چین نے دو برس کے اندر وہاں کے 47,50,00,000 آدمیوں کی کھانے، کپڑے اور زندگی کی سب معمولی ضرورتوں کی کٹھنائی کو ایک دم دور کر دیا۔ نئے چین میں آج ان سب چیزوں کی افراط ہے۔ چاروں طرف خوشحالی ہے۔

چین کی دستکاریاں بھی بہت درجے تک ہم نے بھارت کی دستکاریوں سے ملتی ہوئی پائیں۔ سوت اور ریشم سے کڑھے ہوئے کپڑے ہمیں بھینٹ کئے گئے جنہیں دیکھ کر بالکل لکھنؤ کی چکن اور بنارس کی کامدانی کی یاد آجاتی ہے۔ ریشمی کپڑوں میں جیتی جاگتی تصویروں کا بننا جو ہوبہو فوٹو دکھائی دیں، پیتل کے برتنوں پر طرح طرح کی نقاشی، چینی مٹی کے برتن اور لکڑی اور ہاتھی دانت کے باریک کام میں معلوم ہوتا ہے چین بھارت سے بہت بڑھا چڑھا ہے۔ ہم نے ان کے چرخے دیکھے، کرگھے دیکھے اور چینی کھدر کے تھان دیکھے۔ نیا چین تیزی کے ساتھ بڑی بڑی ملوں کی طرف جا رہا ہے۔ پھر بھی ابھی تک چین میں جتنا ہاتھ کا کتا اور ہاتھ کا بنا کپڑا بنتا اور بکتا ہے اتنا شاید ہمارے دیش میں نہ ملتا ہو، اور چینی سرکار اس میں خوب مدد دیتی ہے۔ چین کی دوسری گاؤں کی دستکاریاں بھی خوب ترقی کر رہی ہیں۔ چین کے گاؤں ہمیں بالکل بھارت کے گاؤں سے دکھائی دیئے سوائے اس کے کہ لوگوں میں ایمانداری، محنت کی عادت اور ایک دوسرے سے باہم پریم ادھک ہے۔

چین کی پرانی عمارتوں کو دیکھ کر ہمیں بالکل بھارت کی پرانی عمارتیں یاد آگئیں۔ پیکنگ میں ہم نے پرانے مندروں کے پھاٹک دیکھے جو ہو بہو سانچی کے پتھر کے پھاٹکوں سے ملتے ہیں۔ ناممکن ہے کہ وہ ڈھنگ بھارت نے چین سے یا چین نے بھارت سے نہ لیا ہو۔ پرانے محلوں اور مقبروں میں ہم نے وہی بھارت کی مغل زمانے کی عمارتوں کی طرح لمبے لمبے راستے، بیچ میں نہریں اور فوارے، پانی کے جھرنے اور ساون بھادوں اور اسی طرح کی کیاریاں اور روشیں دیکھیں جس طرح کی اپنے دیش میں۔ چین کے اونچے گاجر کی شکل کے پیگوڈا بالکل مدورا اور ترویندرم کے مندروں سے ملتے ہیں۔ کیول چین کی رنگین ٹائلس ایک خاص چیز ہیں جو بھارت میں دکھائی نہیں دیتیں۔ ان ٹائلس کو چھانے میں بھی چینی کاریگر جو گولائی دیتے ہیں اور کنگورے نکالتے ہیں وہ بھی ایک انوکھی اور بڑی سندر چیز ہے۔ ہمیں کچھ اچرج ہوا کہ اس چیز کی نقل اب تک بھارت میں کہیں نہیں ہوئی۔ شنگھائی کے نگر میں ہیں بازار کے اندر ہم نے ایک کھمبے کے اوپر

हिन्द और चीन का कुदरती मेल

सम्राट अशोक का चार शेरों वाला वह चिन्ह देखा जो आज हमारे देश की नई सरकार का चिन्ह माना जाता है.

भारत के बहुत से फल और बहुत सी तरकारियाँ चीन में इफ़रात से होती हैं जैसे सेब, अनार, अंगूर, नाशपाती, केला, संतरा, चकोतरा, मोसम्बी, चीकू, लीची, कमरख, गन्ना, आलू, अरबी, फूल गोभी, पत्ता गोभी, बंद गोभी, गांठ गोभी, बैंगन, भिण्डी, गाजर, मूली, शलजम, मटर, टमाटर, शकरकन्द वग़ैरा. इनके अलावा चीन में बहुत से और बढ़िया फल और तरकारियां होती हैं जो भारत में नहीं मिलतीं. आम सिवाय कैन्टन के चीन में और कहीं नहीं होता.

चीन में अधिक तर खेती बैलों से होती है. कुछ हिस्सों में ऊँट, घोड़े, गधे और भैंसे भी इस काम में लाए जाते हैं. बीच के और पच्छिम के हिस्से में गेहूँ बहुत और खूब होता है. बाक़ी में चावल, मक्का, ज्वार, तिल, मूँगफली, सोया बीन वग़ैरा बहुत होते हैं. चीनी हमारी ही तरह बेलन से रोटी बेलते हैं. खानों की किस्में उनके यहां काफ़ी और बहुत अच्छी हैं. दूध और मक्खन काफ़ी मिलता है लेकिन घी का रिवाज नहीं है. खाना अधिक तर तिल या मूंग फली या सोया बीन के तेल में पकाया जाता है. चीनी खाने मज़ेदार होते हैं. अचारों का रिवाज भी खूब है. एक दूसरे से मिलने पर चीनी उसी तरह हाथ मिलाते हैं, दोनों हाथों से मुसाफ़ा करते हैं और गले मिलते हैं जिस तरह हम भारत वासी. चीन में फूल बहुत होते हैं. पर गले की मालाओं का रिवाज हमने नहीं देखा. मालाओं की जगह मेहमानों को बड़े बड़े गुलदस्ते दिए जाते हैं. चीनियों को गाने बजाने का काफ़ी शौक़ है और एक दिन रात को हमने उन्हें ठीक मालकौंस गाते हुए सुना.

चीन की औरतों में किसी तरह का परदा नहीं. औरतों और मर्दों की पोशाक क़रीब क़रीब एक सी है और बहुत सादा. चीन की औरतें देश के सब कामों और सब आन्दोलनों में मर्दों के साथ पूरा पूरा हिस्सा ले रही हैं. नेक चलनी पर नए चीन में बहुत ज़ोर दिया जाता है. अफ़ीम का खाना और पीना क़ानूनन बिल्कुल बन्द कर दिया गया है.

नए चीन की सरकार और वहां की जनता दोनों दुनिया के सब देशों के साथ शान्ति और दोस्ती से रहना चाहती हैं. वह किसी से लड़ना नहीं चाहते, सारी दुनिया की जनता के साथ भाईचारा बढ़ाने की तालीम नए चीन के हर बच्चे को दी जाती है. हिन्दुस्तान की सरकार और वहाँ की जनता भी दुनिया के सब देशों के साथ अमन से रहना चाहती है. चीन और भारत दोनों जहां तक बस चले दुनिया से युद्ध को मिटाना चाहते हैं. चीन और भारत

ہند اور چین کا قدرتی میل

سمراٹ اشوک کا چار شیروں والا وہ چنہ دیکھا جو آج ہمارے دیش کی نئی سرکار کا چنہ مانا جاتا ہے ۔

بھارت کے بہت سے پھل اور بہت سی ترکاریاں چین میں افراط سے ہوتی ہیں جیسے سیب، انار، انگور، ناشپاتی، کیلا، سنترہ، چکوترا، موسمی، چیکو، لیچی، کمرخ، گنا، آلو، اروی، پھول گوبھی، پتا گوبھی، بند گوبھی، گانٹھ گوبھی، بینگن، بھنڈی، گاجر، مولی، شلجم، مٹر، ٹماٹر، شکرقند وغیرہ ۔ ان کے علاوہ چین میں بہت سے اور بڑھیا پھل اور ترکاریاں ہوتی ہیں جو بھارت میں نہیں ملتیں ۔ آم سوائے کینٹن کے چین میں اور کہیں نہیں ہوتا ۔

چین میں ادھک تر کھیتی بیلوں سے ہوتی ہے ۔ کچھ حصوں میں اونٹ، گھوڑے، گدھے اور بھینسے بھی اس کام میں لائے جاتے ہیں ۔ بیچ کے اور پچھم کے حصے میں گیہوں بہت اور خوب ہوتا ہے ۔ باقی میں چاول، مکا، جوار، تل، مونگ پھلی، سویا بین وغیرہ بہت ہوتے ہیں ۔ چینی ہماری ہی طرح بیلن سے روٹی بیلتے ہیں ۔ کھانوں کی قسمیں ان کے یہاں کافی اور بہت اچھی ہیں ۔ دودھ اور مکھن کافی ملتا ہے لیکن گھی کا رواج نہیں ہے ۔ کھانا ادھک تر تل یا مونگ پھلی یا سویا بین کے تیل میں پکایا جاتا ہے ۔ چینی کھانے مزیدار ہوتے ہیں ۔ اچاروں کا رواج بھی خوب ہے ۔ ایک دوسرے سے ملنے پر چینی اسی طرح ہاتھ ملاتے ہیں، دونوں ہاتھوں سے مصافحہ کرتے ہیں اور گلے ملتے ہیں جس طرح ہم بھارت واسی ۔ چین میں پھول بہت ہوتے ہیں ۔ پر گلے کی مالاؤں کا رواج ہم نے نہیں دیکھا ۔ مالاؤں کی جگہ مہمانوں کو بڑے بڑے گلدستے دیئے جاتے ہیں ۔ چینیوں کو گانے بجانے کا کافی شوق ہے اور ایک دن رات کو ہم نے انہیں ٹھیک مالکوس گاتے ہوئے سنا ۔

چین کی عورتوں میں کسی طرح کا پردہ نہیں ۔ عورتوں اور مردوں کی پوشاک قریب قریب ایک سی ہے اور بہت سادا ۔ چین کی عورتیں دیش کے سب کاموں اور سب آندولنوں میں مردوں کے ساتھ پورا پورا حصہ لے رہی ہیں ۔ نیک چلنی پر نئے چین میں بہت زور دیا جاتا ہے ۔ افیم کا کھانا اور پینا قانوناً بالکل بند کر دیا گیا ہے ۔

نئے چین کی سرکار اور وہاں کی جنتا دونوں دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ شانتی اور دوستی سے رہنا چاہتی ہیں ۔ وہ کسی سے لڑنا نہیں چاہتے ۔ ساری دنیا کی جنتا کے ساتھ بھائی چارا بڑھانے کی تعلیم نئے چین کے ہر بچے کو دی جاتی ہے ۔ ہندستان کی سرکار اور یہاں کی جنتا بھی دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ امن سے رہنا چاہتی ہے ۔ چین اور بھارت دونوں جہاں تک بس چلے دنیا سے یدھ کو مٹانا چاہتے ہیں ۔ چین اور بھارت

दोनों सरकारों की दोस्ती और दोनों देशों की जनता की बढ़ती हुई दोस्ती में इन दोनों देशों के भले के साथ साथ दुनिया की शान्ति, तरक़्क़ी और ख़ुशहाली का राज़ छिपा हुआ है.

دونوں سرکاروں کی دوستی اور دونوں دیشوں کی جنتا کی بڑھتی ہوئی دوستی اِن دونوں دیشوں کے بھلے کے ساتھ ساتھ دنیا کی شانتی، ترقی اور خوش حالی کا راز چھپا ہوا ہے۔

उत्तर प्रदेश से अपील

उत्तर प्रदेश के मेरे भाई-बहनों,

आपको यह मालूम हो गया है कि भूमि-दान-यज्ञ के प्रचार के लिये मैं आपके सूबे में पांच-छै महीने घूमने वाला हूं. तारीख़ 1-2 नवम्बर को मथुरा में बहुत सारे रचनात्मक काम करने वालों का, जिसमें सब पक्ष के लोग शामिल थे, सम्मेलन हुआ था. उसमें सर्वोदय प्रेमी सज्जनों ने इस तरह संकल्प-इरादा किया है.

एक करोड़ की मांग.

"श्री विनोबा ने भूमि दान यज्ञ के सिलसिले में बे-ज़मीन वालों के लिये उत्तर प्रदेश से एक करोड़ एकड़ ज़मीन की मांग की है. हम इस मांग का स्वागत करते हैं. श्री विनोबा सारे सूबे की पैदल यात्रा कर रहे हैं. इस यात्रा के मौक़े पर उनके मांग की पहली क़िस्त के रूप में हम सब पांच लाख एकड़ ज़मीन जमा करने का संकल्प इरादा करते हैं"

पांच माह में पांच लाख एकड़.

सारे हिन्दुस्तान से बे ज़मीन वालों के लिये मैंने पांच करोड़ एकड़ ज़मीन मांगी है. इस हिसाब से उत्तर प्रदेश के हिस्से में एक करोड़ एकड़ ज़मीन आती है. यह एक बहुत बड़ा काम है. यह तभी हो सकेगा जब हमारा संदेश हर गांव में, हर घर में और हर एक के दिल में पहुंचेगा. सबकी आम कोशिश से ही यह हो सकेगा. फ़िलहाल पांच लाख एकड़ ज़मीन पांच-छै महीनों के अन्दर हासिल करनी है. यह हमारे बड़े संकल्प इरादे की शुरूआत होगी. इतना अगर मेरी इस यात्रा के दौरान में हो जाए तो एक अच्छी शुरूआत होगी, जिससे सारे मुल्क को इस काम के लिये प्रेरना मिलेगी.

ग़रीब और छोटे किसानों से.

भूदान-यज्ञ में पहली मांग ग़रीबों से है. लोगों को इस पर ताज्जुब होगा. लेकिन हर एक का उद्धार अपने ही

اُتر پردیش سے اپیل

اُتر پردیش کے میرے بھائی بہنوں،

آپ کو یہ معلوم ہوگیا ہے کہ بھومی دان یگیہ کے پرچار کے لئے میں آپ کے صوبے میں پانچ چھ مہینے گھومنے والا ہوں۔ تاریخ 1-2 نومبر کو متھرا میں بہت سارے رچناتمک کام کرنے والوں کا، جس میں سب پکش کے لوگ شامل تھے، سمیلن ہوا تھا۔ اُس میں سروودے پریمی سجنوں نے اِس طرح سنکلپ ارادہ کیا ہے۔

ایک کروڑ کی مانگ۔

"شری ونوبا نے بھومی دان یگیہ کے سلسلے میں بے زمین والوں کے لئے اُتر پردیش سے ایک کروڑ ایکڑ زمین کی مانگ کی ہے۔ ہم اِس مانگ کا سواگت کرتے ہیں۔ شری ونوبا سارے صوبے کی پیدل یاترا کر رہے ہیں۔ اِس یاترا کے موقعہ پر اُن کے مانگ کی پہلی قسط کے روپ میں ہم سب پانچ لاکھ ایکڑ زمین جمع کرنے کا سنکلپ ارادہ کرتے ہیں۔"

پانچ ماہ میں پانچ لاکھ ایکڑ۔

سارے ہندستان سے بے زمین والوں کے لئے میں نے پانچ کروڑ ایکڑ زمین مانگی ہے۔ اِس حساب سے اُتر پردیش کے حصے میں ایک کروڑ ایکڑ زمین آتی ہے۔ یہ ایک بہت بڑا کام ہے۔ یہ تبھی ہوسکے گا جب ہمارا سندیش ہر گاؤں میں، ہر گھر میں اور ہر ایک کے دل میں پہونچے گا۔ سب کی عام کوشش سے ہی یہ ہوسکے گا۔ فی الحال پانچ لاکھ ایکڑ زمین پانچ چھ مہینوں کے اندر حاصل کرنی ہے۔ یہ ہمارے بڑے سنکلپ ارادے کی شروعات ہوگی۔ اتنا اگر میری اِس یاترا کے دوران میں ہوجائے تو ایک اچھی شروعات ہوگی، جس سے سارے ملک کو اِس کام کے لئے پریرنا ملے گی۔

غریب اور چھوٹے کسانوں سے۔

بھودان یگیہ میں پہلی مانگ غریبوں سے ہے۔ لوگوں کو اِس پر تعجب ہوگا۔ لیکن ہر ایک کا اُدھار اپنے ہی

आसान ढंग से हो सकता है, इस बात को ध्यान में रखें तो इसमें ताज्जुब करने जैसा नहीं लगता. जिनके पास कुछ भी ज़मीन है, ऐसे छोटे छोटे काश्तकार अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा बतौर प्रेम की निशानी के दें, ऐसी उम्मीद है. इस तरह तेलंगाना में, मध्य प्रदेश, विन्ध्य प्रदेश और मध्य भारत में, काफ़ी ज़मीन ग़रीब काश्त-कारों से मिली है.

बड़े किसानों से.

बड़े काश्त-कारों का तो यज्ञ में बड़ा हिस्सा होना ही चाहिये. हवा, पानी और सूरज की रोशनी, यह सब भगवान की देनें जैसे सबके लिये होती हैं, वैसे ज़मीन भी भगवान की देन है और सबके लिये है. "ज़मीन सबकी मां है और ज़मीन की सब औलाद हैं." यह है हमारी तहज़ीब या सभ्यता की पहली बात, जिसे वेद ने बतलाया है. बे-ज़मीन वालों का हक़ समझ कर के, उन्हें अपने ख़ानदानी के रूप में पहचान कर के, अपनी ज़मीन का एक अच्छा हिस्सा उनको देना बड़े काश्त-कारों का धर्म है और उसी में उनका बड़प्पन है.

ज़मींदारों से.

जो बात बड़े काश्त-कारों को लागू है वह ज़मींदारों के लिये भी है, लेकिन अब ज़मींदार ज़मींदारी से मुक्त हो रहे हैं. उस हालत में उनसे क्या उम्मीद कर सकते हैं ? मेरी उनसे दोहरी उम्मीद है: जो ज़मीन उनके पास ख़ुद काश्त के लिये बची है, उसमें से एक हिस्से का भूमि दान वह दें. इसके अलावा, ज़मींदारी का जो मावज़ा उन्हें सरकार की तरफ़ से मिलने वाला है, वह सब या उसका एक हिस्सा, वह प्रेम के साथ छोड़ सकते हैं. यही मिल-कियत क़ुरबानी है । मेरी यह सारी कोशिश हमारे सवालों को हल करने का, हमारी सभ्यता के माफ़िक़, शान्ति का तरीक़ा ढूँढने के लिये है. ज़मींदार दोहरा दान दे कर उसमें सहयोग देंगे तो अहिंसात्मक इन्क़लाब के रास्ते पर चलने की नेक नामी उन्हें मिल सकती है.

पैसे वालों से.

जिनके पास ज़मीन नहीं है लेकिन पैसा है, वह इस यज्ञ में किस तरह हिस्सा लें ? पैसा तो मैं लेना नहीं चाहता, लेकिन वह ज़मीन ख़रीद कर दे सकते हैं. बे-ज़मीन वालों को जहां ज़मीन मिल जाएगी, वहां उस ज़मीन पर कुआं खुदवा कर दे सकते हैं, बैल जोड़ी दे सकते हैं.

बे-ज़मीन और बे-पैसे वालों से.

आख़िर, जिनके पास न ज़मीन है न पैसा, लेकिन जोश, मेहनत करने की ताक़त और देश प्रेम है, उन्हें तो मैं इस भूमि दान यज्ञ का सर्वस्व या सब कुछ मानता हूँ.

آسان ڈھنگ سے ہوسکتا ہے' اس بات کو دھیان میں رکھیں تو اس میں تعجب کرنے جیسا نہیں لگتا . جن کے پاس کچھ بھی زمین ہے' ایسے چھوٹے چھوٹے کاشتکار اپنی زمین کا کچھ حصہ بطور پریم کی نشانی کے دیں' ایسی امید ہے . اس طرح تلنگانہ میں' مدھیہ پردیش' وندھیہ پردیش اور مدھیہ بھارت میں' کافی زمین غریب کاشتکاروں سے ملی ہے

بڑے کسانوں سے

بڑے کاشتکاروں کا تو یگیہ میں بڑا حصہ ہونا ہی چاہئے . ہوا' پانی اور سورج کی روشنی' یہ سب بھگوان کی دینیں جیسے سب کے لئے ہوتی ہیں' ویسے زمین بھی بھگوان کی دین ہے اور سب کے لئے ہے . 'زمین سب کی ماں ہے اور زمین کی سب اولاد ہیں ." یہ ہے ہماری تہذیب یا سبھیتا کی پہلی بات' جسے وید نے بتلایا ہے . بے زمین والوں کا حق سمجھ کرکے' انہیں اپنے خاندانی کے روپ میں پہچان کرکے' اپنی زمین کا ایک اچھا حصہ ان کو دینا بڑے کاشتکاروں کا دھرم ہے اور اسی میں ان کا بڑپن ہے .

زمینداروں سے .

جو بات بڑے کاشتکاروں کو لاگو ہے وہ زمینداروں کے لئے بھی ہے' لیکن اب زمیندار زمینداری سے مکت ہو رہے ہیں . اس حالت میں ان سے کیا امید کر سکتے ہیں ؟ میری ان سے دوہری امید ہے : جو زمین ان کے پاس خود کاشت کے لئے بچی ہے' اس میں سے ایک حصے کا بھومی دان وہ دیں . اس کے علاوہ' زمینداری کا جو معاوضہ انہیں سرکار کی طرف سے ملنے والا ہے' وہ سب یا اس کا ایک حصہ' وہ پریم کے ساتھ چھوڑ سکتے ہیں . یہی ملکیت قربانی ہے ! میری یہ ساری کوشش ہمارے سوالوں کو حل کرنے کا' ہماری سبھیتا کے موافق' شانتی کا طریقہ ڈھونڈھنے کے لئے ہے . زمیندار دوہرا دان دے کر اس میں سہیوگ دیں گے تو اہنساتمک انقلاب کے راستے پر چلنے کی نیک نامی انہیں مل سکتی ہے .

پیسے والوں سے .

جن کے پاس زمین نہیں ہے لیکن پیسہ ہے' وہ اس یگیہ میں کس طرح حصہ لیں ؟ پیسہ تو میں لینا نہیں چاہتا' لیکن وہ زمین خرید کر دے سکتے ہیں . بے زمین والوں کو جہاں زمین مل جائے گی' وہاں اس زمین پر کنواں کھدوا کر دے سکتے ہیں' بیل جوڑی دے سکتے ہیں .

بے زمین اور بے پیسے والوں سے .

آخر' جن کے پاس نہ زمین ہے نہ پیسہ' لیکن جوش' محنت کرنے کی طاقت اور دیش پریم ہے' انہیں تو میں اس بھومی دان یگیہ کا سروسو یا سب کچھ مانتا ہوں .

वह घर घर जा कर प्रचार कर सकते हैं, इसके माफ़िक़ वातावरन पैदा कर सकते हैं, जत्थे के जत्थे इकट्ठे हो कर कुदाली से बंजर ज़मीन तोड़ने का काम कर सकते हैं ताकि वह ज़मीन बे-ज़मीन वालों के काम आ सके.

भारत माता की पुकार.

कहने की मन्शा यह है कि इस समय इस काम में हर शख़्स से मैं कुछ न कुछ उम्मीद करता हूं. दरिद्र-नारायन की तरफ़ से मैं बोल रहा हूं और भारत माता की यह मांग है. इससे सबका दिल पाक शुद्ध बनेगा और सारा हिन्दुस्तान एक रस बनाने में मदद मिलेगी. जिस इलाक़े में गंगा, जमुना और सरजू जैसी पावन नदियां बह रही हैं, जहां राम, कृश्न और बुद्ध जैसे अवतारी आदमी प्रकट हुए हैं, जहां तुलसीदास और सूरदास जैसे कवि और संत पुरुश हो गए हैं, उस इलाक़े से अगर उम्मीद न रखी जाए तो और कहां से रखी जाए.

—विनोबा

وہ گھر گھر جا کر پرچار کر سکتے ہیں' اِسکے موافق واتاورن پیدا کر سکتے ہیں' جتھے کے جتھے اکٹھے ہوکر کدالی سے بنجر زمین توڑنے کا کام کر سکتے ہیں تاکہ وہ زمین بے زمین والوں کے کام آ سکے.

بھارت ماتا کی پکار.

کہنے کی منشا یہ ہے کہ اِس سمے اِس کام میں ہر شخص سے میں کچھ نہ کچھ اُمید کرتا ہوں. دردر نارائن کی طرف سے میں بول رہا ہوں اور بھارت ماتا کی یہ مانگ ہے. اِس سے سب کا دل پاک شدھ بنے گا اور سارا ہندستان ایک رس بنانے میں مدد ملے گی. جس علاقے میں گنگا' جمنا اور سرجو جیسی پاون ندیاں بہ رہی ہیں' جہاں رام' کرشن اور بدھ جیسے اوتاری آدمی پرکٹ ہوئے ہیں' جہاں تلسی داس اور سور داس جیسے کوی اور سنت پرش ہوگئے ہیں' اُس علاقے سے اگر اُمید نہ رکھی جائے تو کہاں سے رکھی جائے.

—ونوبا

इनसान की हस्ती और आज के लोकराज

(भाई जवाहर लाल नेहरू)

[दिसम्बर के महीने में नई दिल्ली में यूनो की तालीम-साइन्स-कलचर संघ की तरफ़ से, जो यूनस्को कहलाती है, एक चर्चा कई रोज़ चली, जिसमें ग्यारह देशों के ऊंचे विद्वानों-फ़िलासफ़रों ने हिस्सा लिया था. चर्चा का विशय था—"पूरब और पच्छिम में तालीम की फ़िलासफ़ी और इनसान की हस्ती." चर्चा के आख़री दिन हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी उसमें शिरकत की. उनकी स्पीच के कुछ हिस्से का आज़ाद अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

दुनिया को पूरब और पच्छिम नाम के टुकड़ों में बांटने का जो ख़याल है उस के मैं हमेशा ख़िलाफ़ रहा हूं. इस तरह के किसी बंटवारे में मुझे यक़ीन नहीं है. माना कि नसली और क़ौमी नज़रिये और आदर्शों के लिहाज़ से कुछ भेद दिखलाई पड़ते हैं, लेकिन आम ज़बान में पूरब और पच्छिम कह देने की बात मेरी समझ में नहीं आती.

انسان کی ہستی اور آج کے لوک راج

(بھائی جواہر لال نہرو)

[دسمبر کے مہینے میں نئی دلی میں یونو کی تعلیم سائنس کلچر سنگھ کی طرف سے' جو یونسکو کہلاتی ہے' ایک چرچا کئی روز چلی' جس میں گیارہ دیشوں کے اونچے ودوانوں فلاسفروں نے حصہ لیا تھا. چرچا کا وشے تھا—"پورب اور پچھم میں تعلیم کی فلاسفی اور انسان کی ہستی." چرچا کے آخری دن ہمارے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو نے بھی اُس میں شرکت کی. اُن کی اسپیچ کے کچھ حصے کا آزاد انوواد ہم نیچے دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

دنیا کو پورب اور پچھم نام کے ٹکڑوں میں بانٹنے کا جو خیال ہے اِس کے میں ہمیشہ خلاف رہا ہوں. اِس طرح کے کسی بٹوارے میں مجھے یقین نہیں ہے. مانا کہ نسلی اور قومی نظریئے اور آدرشوں کے لحاظ سے کچھ بھید دکھلائی پڑتے ہیں' لیکن عام زبان میں پورب اور پچھم کہ دینے کی بات میری سمجھ میں نہیں آتی.

इनसान की हस्ती और आज के लोकराज

एक कारखाने दार मुल्क और एक ग़ैर कारखाने दार मुल्क में भेद मैं समझ सकता हूँ, मशीनों और उद्योग धंधों के तरीक़ों के कम व बेश फैलने की वजह से जुदा जुदा मुल्कों में कुछ कुछ फ़र्क़ हो गए हैं, मगर कोई यूँ ही पूरब और पच्छिम कह दे तो इसका मैं कोई मतलब नहीं लगा पाता.

पुराने ज़माने में तरक़्क़ी या बरबादी दोनों ही बहुत थोड़े पैमाने पर हुआ करती थी, उनका दायरा कम होता था और उनका असर भी कम पड़ता था. मिसाल के लिये योरप के "अंधेरे ज़माने" को लीजिये उस वक़्त एशिया के कई हिस्सों में—चीन, हिन्दुस्तान या मध्य पूरब या और जगह—काफ़ी रोशनी थी. आज जब हम एक बड़ी तरक़्क़ी के दरजे पर पहुँच गए हैं, तब एक बड़ी तबाही के दरजे पर भी पहुँच गए हैं. क्या इस तबाही से हम बच सकते हैं? यहाँ एक बड़ा सवाल हमारे सामने खड़ा हो जाता है और इनसान की हस्ती के आदर्श वाले सवाल, सिर्फ़ किताबी सवाल रह जाते हैं, हालाँकि अहमियत उनकी भी काफ़ी है. जो भी हो मुझ जैसे आदमी को जिसे अपने सिर पर ज़िम्मेदारी का बोझ उठाना पड़ता है—इस सवाल के अमली पहलू बहुत परेशान किया करते हैं.

आज कल डिमॉक्रेसी या प्रजा तंत्र या लोकराज की बड़ी चर्चा है मैं मानता हूँ कि स्वराज के जो तरह तरह के रास्ते आदमी के सामने आज मौजूद हैं उनमें लोकराज ही सबसे बेहतर है. लेकिन साथ ही साथ हमने देखा कि पिछले दस-बीस बरसों में लोकराज किस बड़े पैमाने पर और कुछ कुछ बेक़ाबू तरीक़े से फैल कर हमारे सामने आया है. जब हम लोकराज का विचार करते हैं तो आम तौर से हम उन्नीसवीं सदी या बीसवीं सदी के शुरू की बातों के मानों में—जिस ज़माने में इसका दायरा बहुत कम था—उस पर विचार करते हैं लेकिन तकनीकी तरक़्क़ी की वजह से तब से अब में काफ़ी फ़र्क़ हो गया है. इस बीच बालिग़ मताधिकार या वोट के मानों में और दूसरे कई तरह से लोकराज काफ़ी फैला है. इसका नतीजा यह हुआ कि लाखों-करोड़ों आदमियों ने उन कारख़ानों-धन्धों में परवरिश पाई है जो इन दिनों बढ़े और फैले हैं. इन धन्धों में लोगों को ख़ुद सोचने का मौक़ा न मिलता है, न दिया जाता है. साथ ही साथ लोकराजी निज़ाम के अन्दर यह लाखों-करोड़ों आदमी ही आख़िरी सूरत में, हुकूमत करते हैं या हुकूमत करने वालों को चुनते हैं. क्या यह हमेशा सही आदमी होते या ऐसे आदमी चुनते हैं जो कमोबेश सही हों? यहाँ पर थोड़ा सा शक हो जाता है और बिना किसी को चोट पहुँचाए यह कहा जा सकता है—और मैं तो ज़रूर बिना चोट पहुँचाए कह सकता हूँ क्योंकि मैं ख़ुद राजकाजियों की बिरादरी का

انسان کی ہستی اور آج کے لوک راج

ایک کارخانے دار ملک اور ایک غیر کارخانے دار ملک میں بھید میں سمجھ سکتا ہوں، مشینوں اور اُدیوگ دھندوں کے طریقوں کے کم و بیش پھیلنے کی وجہ سے جدا جدا ملکوں میں کچھ کچھ فرق ہوگئے ہیں، مگر کوئی یوں ہی پورب اور پچھم کہہ دے تو اس کا میں کوئی مطلب نہیں لگا پاتا.

پرانے زمانے میں ترقی یا بربادی دونوں ہی بہت تھوڑے پیمانے پر ہوا کرتی تھیں، اُن کا دائرہ کم ہوتا تھا اور اُن کا اثر بھی کم پڑتا تھا. مثال کے لئے یورپ کے "اندھیرے زمانے" کو لیجئے. اُس وقت ایشیا کے کئی حصوں میں—چین، ہندوستان یا مدھیہ پورب یا اور جگہ—کافی روشنی تھی. آج جب ہم ایک بڑی ترقی کے درجے پر پہنچ گئے ہیں، تب ایک بڑی تباہی کے درجے پر بھی پہنچ گئے ہیں. کیا اِس تباہی سے ہم بچ سکتے ہیں؟ یہیں ایک بڑا سوال ہمارے سامنے کھڑا ہو جاتا ہے اور انسان کی ہستی کے آدرش والے سوال، صرف کتابی سوال رہ جاتے ہیں حالانکہ اہمیت اُن کی بھی کافی ہے. جو بھی ہو مجھ جیسے آدمی کو—جسے اپنے سر پر ذمے داری کا بوجھ اُٹھانا پڑتا ہے—اِس سوال کے عملی پہلو بہت پریشان کیا کرتے ہیں.

آج کل ڈیماکریسی یا پرجاتنتر یا لوک راج کی بڑی چرچا ہے. میں مانتا ہوں کہ سوراج کے جو طرح طرح کے راستے آدمی کے سامنے آج موجود ہیں اُن میں لوک راج ہی سب سے بہتر ہے. لیکن ساتھ ہی ساتھ ہم نے دیکھا کہ پچھلے دس بیس برسوں میں لوک راج کس بڑے پیمانے پر اور کچھ کچھ بےقابو طریقے سے پھیل کر ہمارے سامنے آیا ہے. جب ہم لوک راج کا وچار کرتے ہیں تو عام طور سے ہم اُنیسویں صدی یا بیسویں صدی کے شروع کی باتوں کے معنوں میں—جس زمانے میں اِس کا دائرہ بہت کم تھا—اُس پر وچار کرتے ہیں لیکن تکنیکی ترقی کی وجہ سے تب میں اب میں کافی فرق ہوگیا ہے. اِس بیچ بالغ متادھکار یا ووٹ کے معنوں میں اور دوسرے کئی طرح سے لوک راج کافی پھیلا ہے. اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ لاکھوں کروڑوں آدمیوں نے اُن کارخانوں دھندوں سے پرورش پائی ہے جو اِن دنوں بڑھے اور پھیلے ہیں. اِن دھندوں میں لوگوں کو خود سوچنے کا موقع نہ ملتا ہے، نہ دیا جاتا ہے. ساتھ ہی ساتھ لوک راجی نظام کے اندر یہ لاکھوں کروڑوں آدمی ہی آخری صورت میں حکومت کرتے ہیں یا حکومت کرنے والوں کو چنتے ہیں. کیا یہ ہمیشہ صحیح آدمی ہی یا ایسے آدمی چنتے ہیں جو کم و بیش صحیح ہوں؟ یہیں پر تھوڑا سا شک ہو جاتا ہے اور بنا کسی کو چوٹ پہنچائے یہ کہا جا سکتا ہے—اور میں تو ضرور بنا چوٹ پہنچائے کہہ سکتا ہوں کیونکہ میں خود راج کاجیوں کی برادری کا

हैं—कि बालिग़ वोट वाले मौजूदा जम्हूरी तरीक़ों से जो आदमी चुने जाते हैं उनकी हालत, उनकी सूझ और क़ाबिलियत धीरे धीरे गिरती जा रही है. माना कि कुछ ऊंची हस्तियां भी चुनी जाती हैं लेकिन सोच-विचार के धीरे धीरे कम होने के कारन उनका दर्जा गिरता ज़रूर जाता है. इसके अलावा प्रोपेगन्डे के जो आज कल के साधन हैं, मशीन का शोर-गुल और इश्तहार बाज़ी, यह सब ऐसी चीज़ें हैं जो आदमी को सोचने नहीं देतीं.

आदमी के ऊपर चीख़-पुकार और गुल ग़पाड़े का असर पड़ता है. एक ही चीज़ बार बार सुनते सुनते उसके कान भर जाते हैं. इस तरह की और बहुत-सी चीज़ों का उस पर असर पड़ता है. इस का नतीजा क्या होता है? यह कि हम एक डिक्टेटर या गूंगा राज काजी आदमी पैदा कर देते हैं जिसे कोई हिस नहीं होती. ऐसा राज काजी आदमी दुनिया का सारा शोर-गुल बर्दाश्त कर के भी दो टांगों पर खड़ा रह सकता है और इसलिये वह चुन लिया जाता है, क्योंकि उस शोर-गुल में दूसरे ख़त्म हो चुके होते हैं. यह एक बहुत ही अजीब हालत है.

पिछले कुछ हफ़्तों से मैं अपने इस बड़े देश में इधर-उधर घूम रहा हूं. करोड़ों लोगों को देखने का मुझे मौक़ा मिलता है. उन्हें देख कर मेरे अन्दर यही ख़याल हमेशा पैदा होता है—इन लोगों का क्या हालत होने वाला है, यह क्या सोचते हैं? वह और हम—क्योंकि हम सब एक ही नाव में तो हैं—किधर जा रहे हैं? और तब मुझे दूसरे देशों के लाखों करोड़ों लोगों का ख़याल आता था.

यहां पर हम में से कुछ लोग राज काजी तौर पर काम करते हैं और यह समझते हैं कि क़ौमों की क़िस्मतों का फ़ैसला कर रहे हैं. हमारे यह फ़ैसले उन लाखों-करोड़ों पर क्या असर डालते हैं? क्या हम उनकी बाबत कुछ सोचते हैं? या सिर्फ़ एक ऊंची हवा में रहते हैं जिस में डिप्लोमेट, राज काजी नेता और इन के जैसे कुछ लोगों की चलती है? क्या हमारा बस यही काम है कि काग़ज़ पर कुछ लिख मारा, उसे इधर भेजा, उधर से कोई काग़ज़ आया उस पर कुछ लिख दिया या कभी कभी एक दूसरे को सख़्त सुस्त कह दिया. जब मैं इन लाखों-करोड़ों का ख़याल करने लगता हूं तो सारी राजनीति ओछी मालूम होती है. आज हमारी हालत हांडी में चढ़ी उस चीज़ की तरह है जो पक कर तैयार नहीं हुई है. इस बदलती हुई हालत को जब मैं सोचता तो हैरान रह जाता हूं.

यहां हिन्दुस्तान में मेरा ख़ास ध्यान इस बात पर रहता है कि हमारे लोगों को ज़िन्दगी की बुनियादी मामूली ज़रूरतें कैसे नसीब हों, किस तरह उन्हें खाना मिले, कपड़ा मिले, रहने को मकान मिले, उन को तालीम मिले,

ہیں—کہ بالغ ووٹ والے موجودہ لوک راجی طریقوں سے جو آدمی چنے جاتے ہیں اُن کی حالت، اُن کی سوجھ بوجھ اور قابلیت دھیرے دھیرے گرتی جا رہی ہے. مانا کہ کچھ اونچی ہستیاں بھی چنی جاتی ہیں لیکن سوچ وچار کے دھیرے دھیرے کم ہونے کے کارن اُن کا درجہ گرتا ضرور جاتا ہے. اس کے علاوہ پروپیگنڈے کے جو آج کل کے سادھن ہیں، مشین کا شور غل اور اشتہار بازی، یہ سب ایسی چیزیں ہیں جو آدمی کو سوچنے نہیں دیتیں.

آدمی کے اوپر چیخ پکار اور غل غپاڑے کا اثر پڑتا ہے. ایک ہی چیز بار بار سنتے سنتے اس کے کان بھر جاتے ہیں. اس طرح کی اور بہت سی چیزوں کا اُس پر اثر پڑتا ہے. اِسکا نتیجہ کیا ہوتا ہے؟ یہ کہ ہم ایک ڈکٹیٹر یا گونگا راج کاجی آدمی پیدا کر دیتے ہیں جسے کوئی حس نہیں ہوتا. ایسا راج کاجی آدمی دنیا کا سارا شور غل برداشت کرکے بھی دو ٹانگوں پر کھڑا رہ سکتا ہے اور اس لئے وہ چن لیا جاتا ہے کیونکہ اُس شور غل میں دوسرے ختم ہوچکے ہوتے ہیں. یہ ایک بہت ہی عجیب حالت ہے.

پچھلے کچھ ہفتوں سے میں اپنے اِس بڑے دیش میں اِدھر اُدھر گھوم رہا ہوں. کروڑوں لوگوں کو دیکھنے کا مجھے موقع ملتا ہے. انہیں دیکھ کر میرے اندر یہی خیال ہمیشہ پیدا ہوتا ہے—اِن لوگوں کی کیا حالت ہونے والی ہے، یہ کیا سوچتے ہیں؟ وہ اور ہم—کیونکہ ہم سب ایک ہی ناؤ میں تو ہیں—کدھر جا رہے ہیں؟ اور تب مجھے دوسرے دیشوں کے لاکھوں کروڑوں لوگوں کا خیال آتا تھا.

یہاں پر ہم میں سے کچھ لوگ راج کاجی طور پر کام کرتے ہیں اور یہ سمجھتے ہیں کہ قوموں کی قسمتوں کا فیصلہ کر رہے ہیں. ہمارے یہ فیصلے اُن لاکھوں کروڑوں پر کیا اثر ڈالتے ہیں؟ کیا ہم اُن کی بابت کچھ سوچتے ہیں؟ یا صرف ایک اونچی ہوا میں رہتے ہیں جس میں ڈپلومیٹ راج کاجی نیتا اور اِن کے جیسے کچھ لوگوں کی چلتی ہے؟ کیا ہمارا بس یہی کام ہے کہ کاغذ پر کچھ لکھ مارا، اُسے ادھر بھیجا، ادھر سے کوئی کاغذ آیا اُس پر کچھ لکھ دیا یا کبھی کبھی ایک دوسرے کو سخت سست کہہ دیا. جب میں اِن لاکھوں کروڑوں کا خیال کرنے لگتا ہوں تو ساری راج نیتی اوچھی معلوم ہوتی ہے. آج ہماری حالت ہانڈی میں چڑھی اُس چیز کی طرح ہے جو پک کر تیار نہیں ہوئی ہے. اِس بدلتی ہوئی حالت کا جب میں سوچتا تو حیران رہ جاتا ہوں.

یہاں ہندستان میں میرا خاص دھیان اِس بات پر رہتا ہے کہ ہمارے لوگوں کو زندگی کی بنیادی معمولی ضرورتیں کیسے نصیب ہوں، کس طرح اُنہیں کھانا ملے، کپڑا ملے، رہنے کو مکان ملے، اُنکو تعلیم ملے،

की सन्तुष्टी अच्छी रहे, वगैरा. जब तक यह दुनियावी चीज़ें आप के पास नहीं हैं तब तक दिमाग़ या आत्मा के जीवन की बात कहना बेकार सा लगता है. भूखे आदमी के सामने आप क्या ईश्वर का नाम ले सकते हैं? आप को चाहिये कि उसे खाना दें.

लेकिन इन नंगे-भूखों से व्योहार करते समय भी हमारे सामने कुछ आदर्श और मक़सद रहा करते हैं जिन पर हमें पहुंचना है. अगर इन आदर्शों और मक़सदों का इन्सानी दिमाग़ के विकास से सम्बन्ध लगातार कम होता जाता है तो ज़रूर इसमें कोई कमी है. अगर दुनिया कुल मिला कर, दिमाग़ी तौर से गिरती है या उसका नैतिक पतन होता है तो सभ्यता या कलचर की जड़ को ही चोट पहुँचती है. ऐसी सभ्यता एक लम्बे अरसे तक भले टिकी रहे मगर वह दिन दिन खोखली पड़ती जाती है और फिर बाद में ख़त्म हो जाने वाली है

ان کی تندرستی اچھی رہے' وغیرہ. جب تک یہ دنیاوی چیزیں آپ کے پاس نہیں ہیں تب تک دماغ یا آتما کے جیون کی بات کہنا بیکار سا لگتا ہے . بھوکے آدمی کے سامنے آپ کیا ایشور کا نام لے سکتے ہیں؟ آپکو چاہئے کہ اُسے کھانا دیں .

لیکن اُن ننگے بھوکوں سے بیوہار کرتے سمے بھی ہمارے سامنے کچھ آدرش اور مقصد رہا کرتے ہیں جن پر ہمیں پہنچنا ہے . اگر اِن آدرشوں اور مقصدوں کا انسانی دماغ کے وکاس سے سمبندھ لگاتار کم ہوتا جاتا ہے تو ضرور اِن میں کوئی کمی ہے. اگر دنیا کل ملاکر' دماغی طور سے گرتی ہے یا اُس کا نیتک پتن ہوتا ہے تو سبھیتا یا کلچر کی جڑ کو ہی چوٹ پہونچتی ہے . ایسی سبھیتا ایک لمبے عرصے تک بھلے ٹکی رہے مگر یہ دن دن کھوکھلی پڑتی جاتی ہے اور پھر بعد میں ختم ہوجانے والی ہے .

नए चीन की झलक

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[पिछले नम्बर में हम डाक्टर कुमारप्पा के कुछ ख़त छाप चुके हैं जिनसे नए चीन की ख़ासी झलक मिलती है. अब 'ग्रामोद्योग पत्रिका' से कुछ और ख़त नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

(1)

"मुकडन और वहां पर अंगरेज़ों और जापानियों के ज़माने के आलीशान होटलों को अफ़सरों के लिये आराम करने की जगह और मज़दूरों के मकान की शकल दे दी गई है. ऐसा मालूम होता है मानो बम्बई का ताजमहल होटल या मद्रास का स्पेन्सर्स या कान-मेरा होटल को कांगरेस स्वयंसेवकों के रहने की बारिकों में बदल दिया गया हो. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना ही है कि इन इमारतों की देख भाल अच्छी तरह की जाती है. जैसे जैसे हम उत्तर की तरफ़ बढ़ते गए सफ़ाई का दर्जा कम होता गया. यहां तक कि जब हम मुकडन पहुँचे तो हमें काफ़ी मक्खियां और कीड़े दिखलाई पड़े. लोग जहां तहां थूक भी रहे थे. मच्छर भी काफ़ी थे. पर लोग मेहनती और भर-पेट मालूम होते

نئے چین کی جھلک

(ڈاکٹر جے . سی . کماریپا)

[پچھلے نمبر میں ہم ڈاکٹر کماریپا کے کچھ خط چھاپ چکے ہیں جن سے نئے چین کی خاص جھلک ملتی ہے . اب 'گرام اُدیوگ پتریکا' سے کچھ اور خط نیچے دے رہے ہیں--ایڈیٹر]

(1)

"مکڈن اور یہاں پر انگریزوں اور جاپانیوں کے زمانے کے عالیشان ہوٹلوں کو افسروں کے لئے آرام کرنے کی جگہ اور مزدوروں کے مکان کی شکل دے دی گئی ہے . ایسا معلوم ہوتا ہے مانو بمبئی کا تاج محل ہوٹل یا مدراس کا اسپینسرس یا کانمرا ہوٹل کو کانگریس سیوک سنگھ سیوکوں کے رہنے کی بارکوں میں بدل دیا گیا ہو . فرق صرف اتنا ہی ہے کہ ان عمارتوں کی دیکھ بھال اچھی طرح کی جاتی ہے . جیسے جیسے ہم اُتر کی طرف بڑھتے گئے صفائی کا درجہ کم ہوتا گیا' یہاں تک کہ جب ہم مکڈن پہنچے تو ہمیں کافی مکھیاں اور کیڑے دکھلائی پڑے . لوگ جہاں تہاں تھوک بھی رہے تھے . مچھر بھی کافی تھے . پر لوگ محنتی اور بھرپیٹ معلوم ہوتے

थे. जानवर भी मोटे ताज़े और गोल-मटोल दिखाई पड़ते थे. वहां की गाड़ियां भले ही टूटी फूटी हों पर उन्हें खींचने वाले खच्चर, घोड़े या बैल काफ़ी मोटे और मज़बूत दिखाई दिये. यहां के लोग बहुत अच्छा खाना खाते हैं. एक स्टेशन पर हमारे डिब्बे के सामने खोनचे वाले के शीशा लगे खोनचों में क़रीब आठ दरजन तरह तरह के मुर्ग़ी के बच्चे रखे थे जो बहुत ही अच्छी तरह पकाए गए थे. हर एक की क़ीमत दो रुपया थी. उनके पास मद्रासी इडली जैसी कुछ चीज़, कुछ साग, धागे में बंधे हुए कुछ फल और दूसरी मिठाईयां भी थीं. अमरीका को छोड़ कर दूसरे किसी भी देश में मैंने इतनी तरह तरह की चीज़ें इतने सस्ते दामों पर बिकते हुए नहीं देखीं.

"देहात के बच्चे अच्छे कपड़े पहने हुए थे. कभी कभी तो ऐसा लगता है कि मानो वह ज़रूरत से ज़ियादा कपड़ा पहने हैं. उनके पैरों में घर के बने कपड़े के जूते थे. इन बच्चों को देख कर बड़ी ख़ुशी होती थी.

"चीन के लोग अपने सुअरों को बाड़े में रख कर ख़ूब खिलाते हैं. मैंने एक किसान से पूछा—"क्या आप लोग इन सुअरों को मैला खाने के लिये नहीं छोड़ते?" उसने जवाब दिया—"इतनी क़ीमती चीज़ हम इन्हें कैसे खिला दें ! उसका तो हम खाद बनाते हैं. फिर आदत न होने की वजह से हमारे सुअर मैला नहीं खाते." जो चीनी मेरे साथ थे उन से भी मैंने इस बारे में पूछा. वह भाई विदेशों से कलचरी सम्बन्ध क़ायम करने वाले अफ़सर हैं और हमारे साथ दौरे के शुरू से हैं. उन्हें यह सुनकर अचरज हुआ कि सुअर भी मैला खाते हैं. उन्होंने कहा—"मैंने न कहीं देखा न अब तक सुना ही था कि सुअर मैला खाते हैं."

"यहां के लोग पक्के मांसाहारी हैं और साग-भाजी भी ख़ूब खाते हैं. मेरा ख़याल है कि उनके खाने तेल वग़ैरा में बहुत ज़ियादा पकाए जाते हैं. हमारी पारटी में जो लोग शाकाहारी थे उन्हें पेकिंग तक अकसर उबले आलू, सेंकी हुई डबल रोटी, गोभी और सेम पर गुज़ारा करना पड़ा था. उसके बाद एक चीनी भाई हमारे साथ हो लिये और उन्होंने जगह जगह बिना मांस के चीनी पकवान खिलवाए. इस तरह हमें कुकुरमुत्ता, बंद गोभी, सोयाबीन की चीज़ें, टिमाटर और दूध दही भी मिलने लगे. चीन के लोग दूध बहुत कम इस्तेमाल करते हैं."

(2)

"चीन जो ऊपर उठा है वह केवल सरकारी मदद के कारन नहीं बल्कि बहुत बड़े पैमाने पर इसका कारन है लोगों का चालचलन. वह लोग धर्म में विश्वास नहीं करते पर

جانور بھی موٹے تازے اور گول مٹول دکھائی پڑتے تھے. وہاں بھلے ہی گاڑیاں ٹوٹی پھوٹی ہوں پر اُنہیں کھینچنے والے خچر، گھوڑے یا بیل کافی موٹے اور مضبوط دکھائی دئے. یہاں کے لوگ بہت اچھا کھانا کھاتے ہیں. ایک سٹیشن پر ہمارے ڈبے کے سامنے خونچے والوں کے شیشہ لگے خونچوں میں قریب آٹھ درجن طرح طرح کے مرغی کے بچے رکھے تھے جو بہت ہی اچھی طرح پکائے گئے تھے. ہر ایک کی قیمت دو روپیہ تھی. اُن کے پاس مدراسی اڈلی جیسی کچھ چیز، کچھ ساگ، دھاگے میں بندھے ہوئے کچھ پھل اور دوسری مٹھائیاں بھی تھیں. امریکہ کو چھوڑ کر دوسرے کسی بھی دیش میں میں نے اِتنی طرح طرح کی چیزیں اِتنے سستے داموں پر بکتے ہوئے نہیں دیکھیں.

"دیہات کے بچے اچھے کپڑے پہنے ہوئے تھے. کبھی کبھی تو ایسا لگتا ہے کہ مانو وہ ضرورت سے زیادہ کپڑا پہنے ہیں. اُن کے پیروں میں گھر کے بنے کپڑے کے جوتے تھے. اِن بچوں کو دیکھ کر بڑی خوشی ہوتی تھی.

"چین کے لوگ اپنے سوئروں کو باڑے میں رکھ کر خوب کھلاتے ہیں. میں نے ایک کسان سے پوچھا—"کیا آپ لوگ اِن سوئروں کو میلا کھانے کے لئے نہیں چھوڑتے؟" اُس نے جواب دیا—"اِتنی قیمتی چیز ہم اُنہیں کیسے کھلائیں؟ اُس کا تو ہم کھاد بناتے ہیں. پھر عادت نہ ہونے کی وجہ سے ہمارے سوئر میلا نہیں کھاتے." جو چینی میرے ساتھ تھے اُن سے بھی میں نے اِس بارے میں پوچھا. وہ بھائی ودیشوں سے کلچرل سمبندھ قائم کرنے والے افسر ہیں اور ہمارے ساتھ دورے کے شروع سے ہیں. اُنہیں یہ سن کر اچرج ہوا کہ سوئر بھی میلا کھاتے ہیں. اُنہوں نے کہا—"میں نے نہ کہیں دیکھا نہ اب تک سنا ہی تھا کہ سوئر میلا کھاتے ہیں."

"یہاں کے لوگ پکے ماساہاری ہیں اور ساگ بھاجی بھی خوب کھاتے ہیں. میرا خیال ہے کہ اُن کے کھانے تیل وغیرہ میں بہت زیادہ پکائے جاتے ہیں. ہماری پارٹی میں جو لوگ شاکاہاری تھے اُنہیں پیکنگ تک اکثر اُبلے آلو، سینکی ہوئی ڈبل روٹی، گوبھی اور سیم پر گزارا کرنا پڑتا تھا. اُس کے بعد ایک چینی بھائی ہمارے ساتھ ہو لئے اور اُنہوں نے جگہ جگہ بنا ماس کے چینی پکوان کھلوائے. اِس طرح ہمیں ککرمتا، بند گوبھی، سویابین کی چیزیں، ٹماٹر اور دودھ دہی بھی ملنے لگے. چین کے لوگ دودھ بہت کم استعمال کرتے ہیں."

(2)

"چین جو اوپر اٹھا ہے وہ کیول سرکاری مدد کے کارن نہیں بلکہ بہت بڑے پیمانے پر اس کا کارن ہے لوگوں کا چال چلن. وہ لوگ دھرم میں وشواس نہیں کرتے پر

ईमानदार हैं और दिल के सच्चे. मछली बाजार से लेकर सराफ़े तक सब जगह एक दाम. हमारा देश जो गिरी हुई हालत में है इसकी बस एक ही वजह है—ऊपर से नीचे तक ईमान में कमी. चीन के लोग काम सिलसिले से करते और उनमें संगठन करने की अपार शक्ति है. याददाश्त और दिमागी ताकत में भले ही हम कुछ ऊंचे हों, पर मुल्क के वह इतने प्यारे हैं और व्यावहारिकता उनमें इतनी भरपूर है कि हम उनके पासंग भी नहीं.

"हमने चीन की आर्थिक हालत पर पेकिंग में पीपुल्स बैंक के गवर्नर की एक स्पीच सुनी. उन्होंने जो आंकड़े मेरे सामने रखे उनका मुझ पर इतना असर नहीं पड़ा जितना खुद उनका. जहां तक किताबों की बात है वह भी हमारे यहां के अर्थशास्त्र वाले 'पंडितों' के आगे ठहर नहीं सकते. वह एक बूढ़े चीनी अफसर थे जो सालों तक इस लिये जानकार और माहिर लोग थे, लेकिन कीमतों या व्यौहारी बातें सब उनकी अपनी थीं. छ: महीने के अन्दर उन्होंने देश की चीजों की कीमतों के उतार चढ़ाव को चाबुक से निकाल कर एक ठिकाने पर ला दिया. अब भी वहां कीमतों के आंकड़े बहुत बड़े बड़े 'इकाई' में हैं पर उनमें कुछ बनना बिगड़ना नहीं. यह ऐसी बात है जैसे हम अपने यहां का हिसाब रुपयों में न लगा कर 'पाई' में लगाएं. यहां के सिक्के की इकाई बहुत छोटी है. इसे कम भी बदला जा सकता है. हमारा एक पैसा उनके सौ सेन्ट के बराबर होता है. यहां के व्यौपार में अटकल पच्चू का काम नहीं है.

"जैसा मैंने पहले भी लिखा था यहां खाना और कपड़ा काफी मिलता है. आप कहीं भी जाएं लोगों को मुस्कराते हुए पाएंगे. अच्छी सरकार और खुशहाली की यही सच्ची कसौटी है. मुझे डर है कि आज कल की तैयारी या चीन की हालत के बाद अगर यह लोग सावधान न हों तो सूरत बहुत कुछ बदल सकती है. अभी के आंकड़ों से ही ऐसा दिखाई देता है कि खाने की चीजों की कीमत कुछ थोड़ी-थोड़ी गिर रही है और कपास, तम्बाकू और सन की कीमत ज्यादा बढ़ रही है. इस झुकाव का नाम कारखाने शाही है जिसको हम बहुत अच्छी तरह जानते हैं और इसका आखिरी नतीजा क्या होता है यह भी हमें मालूम है. मुझे पूरी उम्मीद है कि सब काम ठीक से कर लेने की उनकी जो रफ्तार है उसके बल पर वह इस बढ़ती हुई अलामत को जल्दी ही थाम लेंगे ताकि रोग पर पूरा काबू पा सकें.

"इस वक्त उनका कहना है कि उत्तर-पूरब के सूबे के किसानों की चीजें खरीदने की ताकत 69 फी सदी और

وہ ایمان دار ہیں اور دل کے سچے. مچھلی بازار سے لے کر صرافے تک سب جگہ ایک دام. ہمارا دیش جو گری ہوئی حالت میں ہے اسکی بس ایک ہی وجہ ہے—اوپر سے نیچے تک ایمان میں کمی. چین کے لوگ کام سلسلے سے کرتے ہیں اور ان میں سنگٹھن کرنے کی اپار شکتی ہے. یادداشت اور دماغی طاقت میں بھلے ہی ہم کچھ اونچے ہوں پر ملک کے وہ اتنے پیارے ہیں اور ویوہارکتا ان میں اتنی بھرپور ہے کہ ہم ان کے پاسنگ بھی نہیں.

"ہم نے چین کی آرتھک حالت پر پیکنگ میں پیپلس بینک کے گورنر کی ایک اسپیچ سنی. انہوں نے [illegible] اٹکل پچو کا کام نہیں ہے.

[illegible] جلدی ہی تھام لیں گے تاکہ روگ پر پورا قابو پا سکیں.

"اس وقت ان کا کہنا ہے کہ اتر پورب کے صوبے کے کسانوں کی چیزیں خریدنے کی طاقت 69 فی صدی اور

आम जनता की 53 फी सदी बढ़ी है. मुझे इसमें कोई शक नहीं मालूम होता क्योंकि आम लोगों की खुशहाली साफ़ दिखाई पड़ती है. अब तक उन्होंने सड़कों पर कुछ खर्च नहीं किया है. उन्होंने अपनी सारी शक्ति खेती की पैदावार बढ़ाने में लगाई है और वह भी अपने पुराने तरीक़ों में सुधार करके. मशीनों के ज़रिये खेती करने के आसार मुझे कहीं भी नहीं दिखाई दिये. सारा काम गधे, खच्चर और बैलों से होता है. छोटे छोटे घोड़े भी इस्तेमाल किये जाते हैं यह लोग अपने जानवरों को अच्छी खुराक खिलाते हैं और उनकी रखवाली भी काफ़ी करते हैं. क्या आदमी और क्या मवेशी, दोनों के खाने पीने या बरबाद करने के लिये भी यहाँ बहुत है, पर यहाँ के लोग किसी भी चीज़ को बेकार नहीं जाने देते. बेकार जाने वाली हर चीज़ को दौलत में बदल देने की उनकी ख़ास तासीर मालूम होती है.

"मुकडन के लोहे के कारख़ाने में कम से कम मज़दूरी इतनी रखी गई है कि दो आदमियों की गुज़र-बसर आराम से चल सके. वहाँ के बड़े मैनेजर को इससे तिगना मिलता है. कुछ कुशल मज़दूर तो मैनेजर से भी दुगना कमा लेते हैं. क्या टाटा या बिरला के कारख़ानों के बारे में हम ऐसा कह सकते हैं ?

"चीन के पुराने रेसकोर्स वाले मैदानों को मुस्तक़िल नुमायशों की शकल में बदल दिया गया है, जिनसे जनता को तालीम मिलती है. नुमायश के स्टाल बाँस की चटाइयों के बने हैं. इन नुमायशों को देखने के लिये कोई टिकट नहीं रहता. इन्हें देखने के लिये स्कूलों के बच्चे अपने मास्टरों के साथ आते हैं. नुमायश के लोग जो कुछ बताते हैं उसकी ख़ास बातें यह बच्चे नोट कर लेते हैं और जब यह कोई सवाल पूछते हैं तो वह लोग बड़े ध्यान से जवाब देते हैं."

(3)

"नानकिंग से हम लोग शंघाई आए. यह एक बहुत बड़ा शहर है जहाँ आसमान को छूने वाली ऊँची ऊँची कोठियाँ हैं. पर रास्तों पर मोटर गाड़ियाँ न होने से कुछ अटपटा-सा लगता था. सड़क के दोनों तरफ़ साइकिल रिक्शा की तीन-तीन लाइनें थीं. साइकिल-रिक्शा को यहाँ "पेडिकैब" कहते हैं. माल ढोने वाली कुछ मोटर लारियाँ भी दिखाई दीं. जैसा हर जगह होता है यहाँ भी शहर में घुसते वक़्त ग़रीबों की और गंदी बस्तियाँ मिलीं. अनाज को यहाँ काफ़ी था. हवा में कलकत्ते जैसा कोहरा था. अमरीकी नमूने की बीस मंज़िल वाली भी कुछ इमारतें थीं. हम जिस होटल में टिकाए गए थे वह पंद्रह मंज़िल का था. शंघाई में हमें अंगरेज़ी अख़बार दिखाई पड़े.

آمدنی کی 53 فی صدی بڑھی ہے ۔ مجھے اس میں شک نہیں معلوم ہوتا کیونکہ عام لوگوں کی خوش حالی صاف دکھائی پڑتی ہے ۔ اب تک انہوں نے سڑکوں پر خرچ نہیں کیا ہے ۔ انہوں نے اپنی ساری شکتی کھیتی کی پیداوار بڑھانے میں لگائی ہے اور وہ بھی اپنے پرانے طریقوں میں سدھار کر کے ۔ مشینوں کے ذریعے کھیتی کرنے کے آثار مجھے کہیں بھی دکھائی نہیں دیئے ۔ سارا کام گدھے، خچر اور بیلوں سے ہوتا ہے ۔ چھوٹے چھوٹے گھوڑے بھی استعمال کئے جاتے ہیں ۔ یہ لوگ اپنے جانوروں کو اچھی خوراک کھلاتے ہیں اور ان کی رکھوالی بھی کافی کرتے ہیں ۔ کیا آدمی اور کیا مویشی، دونوں کے کھانے پینے یا برباد کرنے کے لئے بھی یہاں بہت ہے، پر یہاں کے لوگ کسی بھی چیز کو بیکار نہیں جانے دیتے ۔ بیکار جانے والی ہر چیز کو دولت میں بدل دینے کی ان کی خاص تاثیر معلوم ہوتی ہے ۔

" مکڈن کے لوہے کے کارخانے میں کم سے کم مزدوری اتنی رکھی گئی ہے کہ دو آدمیوں کی گذر بسر آرام سے چل سکے ۔ وہاں کے بڑے مینیجر کو اس سے تگنا ملتا ہے ۔ کچھ کشل مزدور تو مینیجر سے بھی دگنا کما لیتے ہیں ۔ کیا ٹاٹا یا برلا کے کارخانوں کے بارے میں ہم ایسا کہہ سکتے ہیں ؟

" چین کے پرانے ریس کورس والے میدانوں کو مستقل نمائشوں کی شکل میں بدل دیا گیا ہے، جن سے جنتا کو تعلیم ملتی ہے ۔ نمائش کے اسٹال بانس کی چٹائیوں کے بنے ہیں ۔ ان نمائشوں کو دیکھنے کے لئے کوئی ٹکٹ نہیں رکھا ۔ انہیں دیکھنے کے لئے اسکولوں کے بچے اپنے ماسٹروں کے ساتھ آتے ہیں ۔ نمائش کے لوگ جو کچھ بتاتے ہیں اس کی خاص باتیں یہ بچے نوٹ کر لیتے ہیں اور جب یہ کوئی سوال پوچھتے ہیں تو وہ لوگ بڑے دھیان سے جواب دیتے ہیں ۔"

(3)

" نانکنگ سے ہم لوگ شنگھائی آئے ۔ یہ ایک بہت بڑا شہر ہے جہاں آسمان کو چھونے والی اونچی اونچی کوٹھیاں ہیں ۔ پر راستوں پر موٹر گاڑیاں نہ ہونے سے کچھ اٹپٹا سا لگتا تھا ۔ سڑک کے دونوں طرف سائیکل رکشا کی تین تین لائنیں تھیں ۔ سائیکل رکشے کو یہاں " پیڈی کیب " کہتے ہیں ۔ مال ڈھونے والی کچھ موٹر لاریاں بھی دکھائی دیں ۔ جیسا ہر جگہ ہوتا ہے یہاں بھی شہر میں گھستے وقت غریبوں کی اور گندی بستیاں ملیں ۔ اناج تو یہاں کافی تھا ۔ ہوا میں کلکتے جیسا کہرا تھا ۔ امریکی نمونے کی بیس منزل والی بھی کچھ عمارتیں تھیں ۔ ہم جس ہوٹل میں ٹھہرائے گئے تھے وہ پندرہ منزل کا تھا ۔ شنگھائی میں ہمیں انگریزی اخبار دکھائی پڑے

पर कुछ खास अख़बार भी चलते हैं जो सरकार की टीका-टिप्पणी तक करते हैं, पर ज़ियादा बिक्री सरकारी अख़बारों की होती है. लोग इतने ज़ियादा देश-भक्त हैं कि घरों में शार्टवेव का रेडियो होने पर भी वह परदेस के स्टेशन नहीं लगाते. इसलिये हिन्दुस्तान के बारे में हमें कुछ भी ख़बर नहीं मिलती.

"हम लोग एक लोक-अदालत में गए जहाँ मुक़द्दमों का फ़ैसला कुर्सी से किया जाता है. यहाँ वकील नहीं हैं. तैयारी की या बीच की हालत जैसे होने के कारन यहाँ के जो जज या मजिस्ट्रेट हैं वह भी सात छै महीने से ज़ियादा की ट्रेनिंग पाए हुए नहीं हैं. पुराने तमाम क़ायदे ताक़ पर रख दिये गए हैं और मामूली समझ-बूझ के मुताबिक़ काम किया जाता है. अदालत में एक बड़ा जज होता है और एक उसका मददगार. एक मर्द और एक औरत असेसर के तौर पर रहते हैं. बस यही अदालत है. जज ख़ुद गवाही लेता और सुनवाई करता है और मामला कुछ टेढ़ा हुआ तो मुद्दालय की पैरवी के लिये सरकार की तरफ़ से एक वकील दिया जाता है ताकि अदालत को आसानी हो जाए. लोगों के नुमायन्दे मुक़द्दमे की सुनवाई के समय हाज़िर रह सकते हैं, वह चाहें तो अपनी राय भी दे सकते हैं. हमने जो मुक़द्दमा देखा उसमें किसी औरत ने, जिसके साथ बुरा सलूक किया गया था, आत्म हत्या कर ली थी. इसमें सास को पन्द्रह साल, ससुर को दो साल और देवर को दस साल क़ैद की सज़ा सुनाई गई. जनता के कुछ नुमायन्दों की राय थी कि फ़ैसला ठीक है और सज़ायें भी माक़ूल हैं. पर एक औरत ने खड़े होकर कहा कि यह सज़ाएं बहुत कम हैं क्योंकि दूसरों के बुरे सलूक के कारन उस औरत ने आत्म हत्या की थी, इसको ख़ून जैसा मामला समझना चाहिये और सास को फांसी की सज़ा मिलनी चाहिये' यह है आज के चीन का लोकराज!"

(4)

"चीन के लोग बड़े प्रिय और प्रेम करने वाले होते हैं. अगर छोटे बच्चे भी किसी परदेसी को रास्ते में जाते हुए देख लें तो वह झट अपनी मां के पाजामों की ओट से उनकी तरफ़ देख कर मुस्कराहट के साथ उसका स्वागत करते हैं. ज़रा ज़ियादा उमर वाले बच्चे ख़ुशी से तालियाँ बजाने लगते हैं.

"कैन्टन में हम लोगों को विदा करने के लिये स्टेशन पर छोटे बच्चे मौजूद थे. वे एक लाइन में खड़े थे और उनके हाथों में फूल थे. जब एक बच्चे ने फूल मुझे दिये तो उसके गालों को थपथपाने के लिये मैं ज़रा झुका. उस बच्चे ने फ़ौरन मेरे गले में हाथ डाल दिये और मुझसे

یہاں پر کچھ خاص اخبار بھی چلتے ہیں جو سرکار کی ٹیکا ٹپنی تک کرتے ہیں' پر زیادہ بکری سرکاری اخباروں کی ہوتی ہے۔ لوگ اتنے زیادہ دیش بھگت ہیں کہ گھروں میں شارٹ ویو کا ریڈیو ہونے پر بھی وہ کبھی پردیش کے اسٹیشن نہیں لگاتے۔ اسلئے ہندستان کے بارے میں ہمیں کچھ بھی خبر نہیں ملتی۔

"ہم لوگ ایک لوک عدالت میں گئے جہاں مقدموں کا فیصلہ پھرتی سے کیا جاتا ہے۔ یہاں وکیل نہیں ہیں۔ تیاری کی یا بیچ کی حالت جیسے ہونے کے کارن یہاں کے جو جج یا مجسٹریٹ ہیں وہ بھی سات چھ مہینے سے زیادہ کی ٹریننگ پائے ہوئے نہیں ہیں۔ پرانے تمام قاعدے طاق پر رکھ دیئے گئے ہیں اور معمولی سمجھ بوجھ کے مطابق کام کیا جاتا ہے۔ عدالت میں ایک بڑا جج ہوتا ہے اور ایک اسکا مددگار۔ ایک مرد اور ایک عورت اسیسر کے طور پر رہتے ہیں۔ بس یہی عدالت ہے۔ جج خود گواہی لیتا اور سنوائی کرتا ہے اور معاملہ کچھ ٹیڑھا ہوا تو مدعاعلیہ کی پیروی کے لئے سرکار کی طرف سے ایک وکیل دیا جاتا ہے تاکہ عدالت کو آسانی ہو جائے۔ لوگوں کے نمائندے مقدمے کی سنوائی کے وقت حاضر رہ سکتے ہیں' وہ چاہیں تو اپنی رائے بھی دے سکتے ہیں۔ ہم نے جو مقدمہ دیکھا جس میں کسی عورت نے' جسکے ساتھ برا سلوک کیا گیا تھا' آتم ہتیا کر لی تھی۔ اس میں ساس کو پندرہ سال' سسر کو دو سال اور دیور کو دس سال کی قید کی سزا سنائی گئی۔ جنتا کے کچھ نمائندوں کی رائے تھی کہ فیصلہ ٹھیک ہے اور سزائیں بھی معقول ہیں۔ پر ایک عورت نے کھڑے ہو کر کہا کہ یہ سزائیں بہت کم ہیں کیونکہ دوسروں کے برے سلوک کے کارن اس عورت نے آتم ہتیا کی تھی' اس کو خون جیسا معاملہ سمجھنا چاہئے اور ساس کو پھانسی کی سزا ملنی چاہئے! یہ ہے آج کے چین کا لوک راج!"

(4)

"چین کے لوگ بڑے پریہ اور پریم کرنے والے ہوتے ہیں۔ اگر چھوٹے بچے بھی کسی پردیسی کو راستے میں جاتے ہوئے دیکھ لیں تو وہ جھٹ اپنی ماں کے پاجاموں کی اوٹ سے انکی طرف دیکھ کر مسکراہٹ کے ساتھ اس کا سواگت کرتے ہیں۔ ذرا زیادہ عمر والے بچے خوشی سے تالیاں بجانے لگتے ہیں۔

"کینٹن میں ہم لوگوں کو وداع کرنے کیلئے اسٹیشن پر چھوٹے بچے موجود تھے۔ وہ ایک لائن میں کھڑے تھے اور ان کے ہاتھوں میں پھول تھے۔ جب ایک بچے نے پھول مجھے دیئے تو اسکے گالوں کو تھپتھپانے کیلئے میں ذرا جھکا۔ اس بچے نے فوراً میرے گلے میں ہاتھ ڈال دیئے اور مجھ سے

चिपट गया. फिर क्या था, मानो दूसरे सभी बच्चों को वैसा करने का इशारा मिल गया. वह सब के सब मेरे ऊपर टूट पड़े और चिपट गए. यह देखकर पंडित सुन्दरलाल जी ने कहा—"भैयो भाई, यह कमबख्त प्रेम के मारे हैं अपनी मुहब्बत से आप इन्हें मार न डालें." तब कुछ स्वयंसेवकों ने मेरी मदद की और उन बच्चों को मुझ से अलग किया. जवान चीन का प्यार इस तरह फूट फूट कर उमड़ रहा है.''

प्रेमचन्द की याद में

(भाई जैनेन्द्र कुमार)

(1)

प्रेमचन्द को गए अब सोलह साल होते हैं. लेकिन मन को यह समझाना मुश्किल है कि वह अब स्वर्ग के हैं, हमारे समाज और ज़माने के नहीं. सच तो यह है कि उन्हें उठा कर काल ने ग़लती ही की. न उनकी उम्र इतनी थी, न किसी तरह वह समय से पीछे थे. वह तो एक क़दम आगे ही थे. और मौजूदा हालतों में शायद वह पहले से भी आज सही और ज़रूरी साबित होते.

मेरी पहली मुलाक़ात उन से सन 1929 में हुई. जाड़ों के दिन थे, कुंभ का मेला पूरा हुआ ही था. प्रयाग से गाड़ी लखनऊ स्टेशन पर कोई चार बजे आ लगी थी. तड़का फूटते ही मैं उन के लाल मकान पर पहुंचा लेकिन वह पहुंचना आसान न हुआ. सोचता था कि नामवर आदमी हैं, लाल मकान का पता अपने आप है ही. एक बच्चा तक जगह बता देगा. पर बात उतनी सीधी न निकली. एक डेढ़ घंटा मुझे लगा अमीनाबाद के पास उस लाल मकान को पाने में और मालूम हुआ कि आत्मा और दिल और दिमाग़ की ऊंचाई दुनियादारी की बड़ाई में मिलती हुई चीज़ नहीं है. शायद दोनों अलग और जुदा हैं.

मकान के ज़ीने के नीचे से आवाज़ देने पर जब ऊपर प्रेमचन्द दिखाई पड़े तो अचानक मन को धक्का लगा. वह रूप देवता के जैसा नहीं मालूम हुआ, और मैं कुछ वैसा ही आस बांधे था. आगे आए बालों में माथा ढका हुआ, घनी बड़ी मूंछें, क़रीब घुटनों तक बंधी धोती, कंधों पर लाल इमली की घिसी पिटी चादर. कुल मिला

ٹ گیا۔ پھر کیا تھا مانو دوسرے سبھی بچوں کو ویسا کرنے کا اشارہ مل گیا۔ وہ سب کے سب میرے اوپر ٹوٹ پڑے اور چمٹ گئے۔ یہ دیکھ کر پنڈت سندر لال جی نے کہا— "دیکھو بھائی یہ ناک بھوں کے مارے ہیں، اپنی محبت سے آپ انہیں مار نہ ڈالیں۔" تب کچھ سوئم سیوکوں نے میری مدد کی اور ان بچوں کو مجھ سے الگ کیا۔ جوان چین کا پیار اس طرح پھوٹ پھوٹ کر امڈ رہا ہے۔"

پریم چند کی یاد میں

(بھائی جینیندر کمار)

(۱)

پریم چند کو گئے اب سولہ سال ہوتے ہیں۔ لیکن من کو یہ سمجھانا مشکل ہے کہ وہ اب سورگ کے ہیں، ہمارے سماج اور زمانے کے نہیں۔ سچ تو یہ ہے کہ انہیں اٹھا کر کال نے غلطی ہی کی۔ نہ ان کی عمر اتنی تھی، نہ کسی طرح وہ سمے سے پیچھے تھے۔ وہ تو ایک قدم آگے ہی تھے اور موجودہ حالتوں میں شاید وہ پہلے سے بھی آج صحیح اور ضروری ثابت ہوتے۔

میری پہلی ملاقات ان سے سن ۱۹۲۹ میں ہوئی۔ جاڑوں کے دن تھے کمبھ کا میلا پورا ہوا ہی تھا۔ پریاگ سے گاڑی لکھنؤ اسٹیشن پر کوئی چار بجے آ لگی تھی۔ تڑکا پھوٹتے ہی میں ان کے لال مکان پر پہنچا۔ لیکن یہ پہنچنا آسان نہ ہوا۔ سوچتا تھا کہ نامور آدمی ہیں، لال مکان کا پتہ اپنے آپ ہے ہی۔ ایک بچہ تک جگہ بتا دے گا۔ پر بات اتنی سیدھی نہ نکلی۔ ایک ڈیڑھ گھنٹہ مجھے لگا امینا باد کے پاس اس لال مکان کو پانے میں اور معلوم ہوا کہ آتما اور دل اور دماغ کی اونچائی دنیا داری کی بڑائی سے ملتی ہوئی چیز نہیں ہے۔ شاید دونوں الگ اور جدا ہیں

مکان کے زینے کے نیچے سے آواز دینے پر جب اوپر پریم چند دکھائی پڑے تو اچانک من کو دھکا لگا۔ وہ روپ دیوتا کے جیسا نہیں معلوم ہوا اور میں کچھ ویسی ہی آس باندھے تھا۔ آگے آئے بالوں سے ماتھا ڈھکا ہوا، گھنی بڑی مونچھیں، قریب گھٹنوں تک بندھی دھوتی، کندھوں پر لال املی کی گھسی پٹی چادر۔ کل ملا

है जो नक्शा आँखों के सामने पड़ा वह ज़रूर ही मनोहारी न था. लेकिन देखते देखते वह शख्स लपक कर जीने से नीचे आया, फौरन मेरे हाथ से सामान की छोटी मोटी गठरी छीनी, और मुझे इस तरह ऊपर ले चला कि मैं समझ भी न सका कि मैं यहां अजनबी हूँ या क्या. ऊपर दालान में एक तरफ मिट्टी का ढेर था, पानी का एक मोटा नल और धार बनाती हुई इस कोने से उस कोने को मिला रही थी. सहन के बराबर वाले कमरे में जिस में हम दाखिल हुए और बैठे, किताबें कापियां मेज़ मूढ़े पर बेतरतीब खड़ी और पड़ी थीं और स्याही के धब्बे भी वहां होने के लिये हर तरह आज़ाद थे. किताबों को झट इधर उधर सरका कर मेरे लिये मूढ़े पर जगह की गई, और हम लोग गप करने बैठ गए. ऐसे कि जैसे कब के दोस्त हैं. मैं कच्ची उम्र का अनाड़ी लड़का, वह एक पहुंचे हुए बुज़ुर्ग. साहित्य के वह सम्राट, जिनके किनारे आकर झिझक के साथ झांकने की इजाज़त चाहने वाला मैं तलबगार. पर प्रेमचन्द की दरया दिली में बाल बराबर यह फ़र्क़ फांक नहीं डाल सकी. मैं तक अपनी ख़ुर्दी को भूल गया और ताज्जुब नहीं कि बातों में उस समय कुछ ज़ियादती कर गया होऊं.

कब तीन बज गए पता न चला, आख़िर अन्दर से ताकीद आई कि दिन इतना चढ़ गया, [illegible] ? तब वह दुनिया की तरफ़ जागे और उन्हों ने पैर में सलीपर डाल, तकिये से [illegible] खींच, तुमसा तलाश, वह दवा लेने दौड़े. कहा तुम इतने हाथ मुंह धो लो. मैं अभी आया.

प्रेमचन्द का रूप यह था और सब जगह, सब समय, शायद यही रहता था. दुनिया में कुछ बनावट भी चाहिये, ज़ियादा खुल और [illegible] रहने का यहां फायदा नहीं है. जान पड़ता है प्रेमचन्द को दुनिया के इस ज़रूरी क़ायदे का ख़याल दिमाग़ी तौर पर अगर था तो अमल में वह उसे साथ नहीं रख पाते थे.

खा पी कर बोले, चलो जैनेन्द्र, दफ़्तर चलें. मकान से उतर कर मैंने देखा कि हज़रत ने अपना तो बाद में तांगा नहीं लिया. इक्का लिया. मैं एक [illegible] से तांगे को देख कर उन से बात चीत करना चाहता था, पर वह बोले, नहीं, इक्के से चलेंगे. तांगा हमें खींचता है, इक्के पर हम सवार होते हैं. कहां कोई बात हुई कि मुंह हमारा इधर है और जिधर हम पीठ को ताक रहे हैं. अपनी चीज़ तो इक्का है, कह कर झट इक्का रुकवाया और एक इक्का वाले को इस तरह पुकारा, मानो वह इक्का कोई प्यारा दोस्त हो. दफ़्तर में पहुंच कर और बैठ कर भी कोई दफ़्तरीपन उन पर मैंने चढ़ा नहीं देखा. काम भी हो सकता था और हँसी-ठट्ठा भी चल सकता था.

کہ جو نقشہ آنکھوں کے سامنے پڑا ضرور ہی منوہاری نہ تھا. لیکن دیکھتے دیکھتے وہ شخص لپک کر زینے سے نیچے آیا، فوراً میرے ہاتھ سے سامان کی چھوٹی موٹی چیز چھینی، اور مجھے اس طرح اوپر لے چلا کہ میں سمجھ ہی نہ سکا کہ میں یہاں اجنبی ہوں یا کیا۔ اوپر دالان میں ایک طرف مٹی کا ڈھیر تھا پانی کی ایک موٹی لکیر خم بناتی ہوئی اس کونے سے اس کونے کو ملا رہی تھی۔ صحن کے برابر والے کمرے میں جس میں ہم داخل ہوئے اور بیٹھے، کتابیں کاپیاں میز مونڈھے پر بے ترتیب کھڑی اور پڑی تھیں اور سیاہی کے دھبے بھی وہاں ہونے کے لئے ہر طرح آزاد تھے۔ کتابوں کو جھٹ ادھر ادھر سرکا کر میرے لئے مونڈھے پر جگہ کی گئی، اور ہم لوگ گپ کرنے بیٹھ گئے ایسے کہ جیسے کب کے دوست ہوں۔ میں کچی عمر کا اناڑی لڑکا، وہ ایک پہنچے ہوئے بزرگ۔ ساہتیہ کے وہ سمراٹ اور میں ان کے کنارے آکر جھجھک کے ساتھ جھانکنے کی اجازت چاہنے والا میں طالب تھا۔ پر پریم چند کی دریا دلی میں بال برابر یہ فرق پھانک نہیں ڈال سکی۔ میں تک اپنی خوردی کو بھول گیا اور تعجب نہیں کہ باتوں میں اس سمے کچھ زیادتی کر گیا ہوؤں۔

کب تین بج گئے پتہ نہ چلا آخر اندر سے تاکید آئی کہ دن اتنا چڑھ گیا ہوا ... تب وہ دنیا کی طرف جاگے اور سلیپر پہن کر ... تکیے سے ... تلاش ... وہ دوا لینے دوڑے۔ کہا تم ہاتھ منہ دھو لو میں ابھی آیا۔

پریم چند کا روپ یہ تھا اور سب جگہ سب سمے شاید یہی رہتا تھا۔ دنیا میں کچھ بناوٹ بھی چاہئے زیادہ کھلے اور دلدار رہنے کا یہاں فائدہ نہیں ہے۔ جان پڑتا ہے پریم چند کو دنیا کے اس ضروری قاعدے کا خیال دماغی طور پر اگر تھا تو عمل میں وہ اسے ساتھ نہیں رکھ پاتے تھے۔

کھا پی کر بولے، چلو جینندر، دفتر چلیں۔ مکان سے اتر کر میں نے دیکھا کہ حضرت نے اپنی ... تانگہ نہیں لیا یکہ لیا۔ میں یکہ دیکھ کر ... ان سے بات چیت کرنا چاہتا تھا پر وہ بولے نہیں یکے سے چلیں گے۔ تانگہ ہمیں کھینچتا ہے یکے پر ہم سوار ہوتے ہیں۔ یہ کوئی بات ہوئی کہ منہ ہمارا ادھر ہے اور پیچھے ہم پیٹھ کی طرف تک رہے ہیں۔ اپنی چیز تو یکہ ہے، کہہ کر جھٹ یکہ رکوایا اور ایک یکے والے کو اس طرح پکارا مانو وہ ان کا کوئی پیارا دوست ہے۔ دفتر میں پہنچ کر اور بیٹھ کر بھی کوئی دفتری پن ان پر میں نے چڑھا نہیں دیکھا۔ کام بھی ہو سکتا تھا اور ہنسی ٹھٹھا بھی چل سکتا تھا۔

उस वक्त तो एक ही दिन मैं उनके साथ ठहर सका और उसी रात वहां से चला आया. लेकिन उन चन्द घंटों ने हमेशा के लिये मुझे प्रेमचन्द का बना दिया. तब 'हंस' निकालने का ख़याल चल रहा था, भाई ईश्वरी प्रसाद उसके लिये तस्वीरें तैयार कर के लाए थे और उसी दिन टालस्टाय के ग्रन्थों का अनुवाद लेकर भाई हृदयनारायण वहां आए थे. दोनों के साथ उनका व्योहार देख कर मुझे अचंभा हुआ मानो प्रेमचन्द दूसरे के साथ अपने बरतने में अपनी खुशी को बाद ही दे देते थे. याद पड़ता है इस पहले ही मौक़े पर मैं उनसे पूछ बैठा कि अखबार की नौकरी में पड़ने की ऐसी क्या मजबूरी उन्हें थी? छोड़िये, छुट्टी लीजिये आप की क़लम क्या आप के लिये सब कुछ नहीं हो सकती. इस सवाल पर वह ताज्जुब से मेरी तरफ़ देखने लगे, समझ गए कि मैं अनुभव से कोरा हूं, पर नाराज़ नहीं हुए. जिन्दगी की अपनी लम्बी दास्तान ले बैठे. बताया कि कैसे एक नौकरी से दूसरी नौकरी में गए, इस मुदर्रिसी से वह मास्टरी की. आखर प्रेस खोला, प्रेस से तंग आकर उस में ताला डाल घर बैठे. बोले, सुनो, एक जगह से पांच सौ रुपए आने वाले थे, पर दिन इन्तज़ार दिखाए जाते थे. आखिर एक दिन ढाई सौ रुपए पहुंच ही गए. सब नोट ज्यों के त्यों मैंने धर्मपत्नी के हाथ में दिये.

उन्होंने पूछा—कितने हैं? मैंने कहा—ढाई सौ.

झल्ला कर बोलीं—ढाई सौ! और ज़ोर से हाथ को झटक कर उन्होंने सारे नोट दालान में फेंक दिये और मुझे उस वक्त वह सुननी पड़ी कि क्या बताऊं. तंगी में दिन गुज़र रहे थे, माना था लेकिन तब आस तो लगी थी पांच सौ की रक़म पर. उसकी जगह जो आए ढाई सौ तो पत्नी का धीरज छूट गया. पतिदेव का तो क्या, सब कुछ मुझ को सुनना पड़ा. उस के बाद जो इस जगह का आफ़र मिला तो मैंने झट क़बूल लिया. बताओ तुम क्या नहीं करते? अब रोज़ रोज़ का तो रोना नहीं है.

दिल्ली लौटने के बाद फिर ख़तो-किताबत का सिलसिला शुरू हो गया. दूसरी बार मिलना हुआ तो एक बड़ी मज़ेदार बात हुई. उस समय उन्होंने मकान बदल लिया था. एक दूसरे मित्र भी तब लखनऊ में रहते थे. उन से ज़िक्र आया कि चलो, प्रेमचन्द के घर चलें. नौकर को हुक्म हुआ कि सवारी लाए. उस ने इक्का ला कर खड़ा किया. मित्र ने डांट कर कहा कि बदशऊर, देख के सवारी लाते हैं. दुबारा अच्छा समझ कर एक तांगा ले आया. मित्र की रुचि के लायक वह भी न निकला. आखिर में एक फ़ैन्सी रईसी बग्घी लाई गई. मित्र ने रेशमी शेरवानी पहना, उस की जोड़ का चुस्त पाजामा, बढ़िया पालिश की शू और सफ़ेद झकझकी, टोपी बांकी कर के लगाई. पहुंचे प्रेमचन्द

اس وقت تو ایک ہی دن میں ان کے ساتھ ٹھہر سکا اور اسی رات وہاں سے چلا آیا. لیکن ان چند گھنٹوں نے ہمیشہ کے لئے مجھے پریم چند کا بنا دیا. تب 'ہنس' نکالنے کا خیال چل رہا تھا. بھائی ایشوری پرساد اس کے لئے تصویریں تیار کر کے لائے تھے اور اسی دن ٹالسٹائی کے گرنتھوں کا انوواد لے کر بھائی ہردے نرائن وہاں آئے تھے. دونوں کے ساتھ ان کا بیوہار دیکھ کر مجھے اچنبھا ہوا. مانو پریم چند دوسرے کے ساتھ اپنے برتنے میں اپنی خوشی کو بعد ہی دے دیتے تھے. یاد پڑتا ہے اس پہلے ہی موقعے پر میں ان سے پوچھ بیٹھا کہ اخبار کی نوکری میں پڑنے کی ایسی کیا مجبوری انہیں تھی؟ چھوڑیئے، چھٹی لیجئے. آپ کی قلم کیا آپ کے لئے سب کچھ نہیں ہو سکتی. اس سوال پر وہ تعجب سے میری طرف دیکھنے لگے، سمجھ گئے کہ میں تجربے سے کورا ہوں، پر ناراض نہیں ہوئے. زندگی کی اپنی لمبی داستان لے بیٹھے. بتایا کہ کیسے ایک نوکری سے دوسری نوکری میں گئے، اس مدرسی سے وہ ماسٹری کی. آخر پریس کھولا، پریس سے تنگ آکر اس میں تالا ڈال گھر بیٹھے. بولے، سنو، ایک جگہ سے پانچ سو روپئے آنے والے تھے، پر دن انتظار دکھائے جاتے تھے. آخر ایک دن ڈھائی سو روپئے پہنچ ہی گئے. سب نوٹ جوں کے توں میں نے شریمتی کے ہاتھ میں دیئے.

انہوں نے پوچھا—کتنے ہیں؟ میں نے کہا—ڈھائی سو.

جھلا کر بولیں—ڈھائی سو! اور زور سے ہاتھ کو جھٹک کر انہوں نے سارے نوٹ دالان میں پھینک دیئے. اور مجھے اس وقت وہ سننی پڑی کہ کیا بتاؤں. تنگی میں دن گزر رہے تھے، مانا تھا لیکن تب آس تو لگی تھی پانچ سو کی رقم پر. اس کی جگہ جو آئے ڈھائی سو تو پتنی کا دھیرج چھوٹ گیا. پتی دیو کا تو کیا، سب کچھ مجھکو سننا پڑا. اس کے بعد جو اس جگہ کا آفر ملا تو میں نے جھٹ قبول لیا. بتاؤ تم کیا نہیں کرتے؟ اب روز روز کا تو رونا نہیں ہے.

دلی لوٹنے کے بعد پھر خط و کتابت کا سلسلہ شروع ہو گیا. دوسری بار ملنا ہوا تو ایک بڑی مزیدار بات ہوئی. اس سمے انہوں نے مکان بدل لیا تھا. ایک دوسرے متر بھی تب لکھنؤ میں رہتے تھے. ان سے ذکر آیا کہ چلو پریم چند کے گھر چلیں. نوکر کو حکم ہو کہ سواری لائے. اس نے یکہ لاکر کھڑا کیا. متر نے ڈانٹ کر کہا کہ بدشعور، دیکھ کے سواری لاتے ہیں. دوبارہ اچھا سمجھ کر ایک تانگہ لے آیا. متر کی رچی کے لائق وہ بھی نہ نکلا. آخر میں ایک فینسی رئیسی بگھی لائی گئی. متر نے ریشمی شیروانی پہنی، اس کی جوڑ کا چست پاجامہ، بڑھیا پالش کی شو اور سفید جھکجھکی، ٹوپی بانکی کرکے لگائی. پہونچے پریم چند

यहां. वहां दरवाजे के पास आते हैं कि देखते क्या हैं, बगल से उसी वक़्त लपके चले आ रहे हैं, प्रेमचन्द ! बगल में छतरी है, दूसरे हाथ में झोला, झोले में से ताजा साग सब्जी झांक रही है. बदन पर खादी का एक कुर्ता, धोती उसी नमूने की ऊंची बंधी हुई है. साफ था कि क़दमों से लंबी राह नापते आ रहे हैं. उस दृश्य के यह दो विरोधी नमूने मुझे भूलते नहीं हैं.

इसी ख़याल में मैंने पूछा, यह बताइये कि आपको खुद कुशी की भी कभी सूझी है, या सूझती है ?

बोले—कई बार. और एक तो अभी कुछ महीने की बात है. फिर आपने अपने जीवन का एक क़िस्सा सुनाया. सवेरे घर में कुछ कहा सुनी हुई, और तय किया कि आज मर कर ही दिखाना होगा. दिन भर घूमते रहे कि आज किसी तरह घर वापिस लौटना नहीं है मर के छोड़ना है. पर यों नहीं. कांग्रेस वाले वालंटियर जो पिकेटिंग करते हैं वहीं चुप चाप किसी जत्थे में घुस कर पुलिस की लाठी से सिर तुड़वा कर मरना ठीक होगा. दिन भर इस कोशिश में भटके, पर सिर कहीं टूटा ही नहीं. शाम होने के बाद तीन घंटे अकेले सन्नाटा मार एक बाग़ में बैठे रहे पर मौत नहीं आनी थी और नहीं आ के दी. और देखा कि ग्यारह बजे वह अपने ही क़दम घर वापिस आ रहे हैं.

प्रेमचन्द की हस्ती की सब से बड़ी ख़ूबी यह थी कि वह हर तरफ़ से सादा थे इस तरह वह जनता और जन के नुमाइन्दे थे. आम तो हर कोई बनना चाहता है, आम लोगों में मिल कर खुद ख़त्म होना कोई नहीं चाहता. प्रेमचन्द की जैसे यही साधना थी इस के लिये मेरे जैसा आदमी मन का जितना अहसानमन्द हो थोड़ा है.

(2)

प्रेमचन्द के बारे कई बार लिखने और कहने का मौक़ा आया है. इस लिये कोई नई चीज़ तो कहने को मेरे पास क्या हो सकती है. उन पर कई किताबें निकली हैं और कुछ लोग खोज में लगे हैं कि सब तरह की चीज़ें जुटा कर उनका अच्छा और पूरा जीवन चरित्र निकाला जा सके. लेकिन जब अवसर होता है कि उन पर लौट कर याद आए तो बहुत से उनके साथ वाक़ये ऐसे ताज़ा हो उठते हैं जैसे कल की घटना हो. प्रेमचन्द की शख़्सियत की ख़ासियत थी एक वह जिन्दा दिली भी जो छनों-पलों को ऐसा रस देती है कि वह मिटते नहीं हैं, याद में बने ही रहते हैं.

जिस वक़्त प्रेमचन्द से मिलना हुआ मेरी उम्र काफ़ी कम थी. प्रेमचन्द पचास पार कर चुके थे. मैं अपने को

کے یہاں. وہاں دروازے کے پاس آتے ہیں کہ دیکھتے کیا ہیں کہ بغل سے اسی وقت لپکے چلے آ رہے ہیں پریم چند! بغل میں چھتری ہے دوسرے ہاتھ میں جھولا، جھولے میں سے تازہ ساگ سبزی جھانک رہی ہے. بدن پر کھادی کا ایک کرتا، دھوتی اسی نمونے کی اونچی بندھی ہوئی. صاف تھا کہ قدموں سے لمبی راہ ناپتے آ رہے ہیں. اس درشیہ کے یہ دو وِرودھی نمونے مجھے بھولتے نہیں ہیں.

اسی خیال میں میں نے پوچھا، یہ بتائیے کہ آپ کو خودکشی کی بھی کبھی سوجھی ہے یا سوجھتی ہے؟

بولے— کئی بار. اور ایک تو ابھی کچھ مہینے کی بات ہے. پھر آپ نے اپنے جیون کا ایک قصہ سنایا. سویرے گھر میں کچھ کہا سنی ہوئی اور طے کیا کہ آج مر کر ہی دکھانا ہوگا. دن بھر گھومتے رہے کہ آج کسی طرح گھر واپس لوٹنا نہیں ہے مر کے چھوڑنا ہے. پر یوں نہیں. کانگریس والے والنٹیر جو پکیٹنگ کرتے ہیں وہیں چپ چاپ کسی جتھے میں گھس کر پولس کی لاٹھی سے سر تڑوا کر مرنا ٹھیک ہوگا. دن بھر اس کوشش میں بھٹکے پر سر کہیں ٹوٹا ہی نہیں. شام ہونے کے بعد تین گھنٹے اکیلے سناٹا مار ایک باغ میں بیٹھے رہے پر موت نہیں آنی تھی اور نہیں آنے دی. اور دیکھا کہ گیارہ بجے وہ اپنے ہی قدم گھر واپس آ رہے ہیں.

پریم چند کی ہستی کی سب سے بڑی خوبی یہ تھی کہ وہ ہر طرف سے سادہ تھے اس طرح وہ جنتا اور جن کے نمائندے تھے. عام تو ہر کوئی بننا چاہتا ہے عام لوگوں میں مل کر خود ختم ہونا کوئی نہیں چاہتا. پریم چند کی جیسے یہی سادھنا تھی. اس کے لئے میرے جیسا آدمی من کا جتنا احسان مند ہو تھوڑا ہے.

(2)

پریم چند کے بارے میں کئی بار لکھنے اور کہنے کا موقع آیا ہے. اس لئے کوئی نئی چیز تو کہنے کو میرے پاس کیا ہو سکتی ہے. ان پر کئی کتابیں نکلی ہیں اور کچھ لوگ کھوج میں لگے ہیں کہ سب طرح کی چیزیں جٹا کر ان کا اچھا اور پورا جیون چرتر نکالا جا سکے. لیکن جب اوسر ہوتا ہے کہ ان پر لوٹ کر یاد جائے تو بہت سے ان کے ساتھ واقعے ایسے تازہ ہو اٹھتے ہیں جیسے کل کی گھٹنا ہو. پریم چند کی شخصیت کی خاصیت تھی ایک وہ زندہ دلی بھی جو چھنوں پلوں کو ایسا رس دیتی ہے کہ وہ مٹتے نہیں ہیں، یاد میں بنے ہی رہتے ہیں.

جس وقت پریم چند سے ملنا ہوا میری عمر کافی کم تھی. پریم چند پچاس پار کر چکے تھے. میں اپنے کو

उनका भक्त ही गिन सकता था. उस रिश्ते को दोस्ती मानता तो किस हिम्मत पर ? सिर्फ़ एक बार लखनऊ में मिलना हुआ था. उनके नाम की शोहरत का तो पूछना क्या. यहां दिल्ली मे लोगों का विचार हुआ कि एक सूबा साहित्य सम्मेलन की सदारत के लिये प्रेमचन्द को बुलाना चाहिये. जानने वाले ही जानते हैं कि कोशिशें कितनी की गईं. लेकिन प्रेमचन्द को मनाना और पाना आसान न हुआ. शायद उसके बाद की ही बात है, या हो सकता है कि पहले की हो, मैंने एक पोसट कार्ड पर लिखा कि घर पर भगवानदीन जी हैं, इस वक़्त सुन्दरलाल जी भी हैं, माता जी और मैं तो आपको याद करते ही हैं, आप आ सकें तो लिखें. ख़त का जवाब चार रोज़ से पहले तो आएगा नहीं. यह सोच हम बेफ़िक्र थे. लेकिन तीसरे रोज़ ही बड़े सवेरे देखता क्या हूं कि कन्धे पर कम्बल डाले और हाथ में एक बकचा संभाले गली में से चले आ रहे हैं प्रेमचन्द साहब. मैंने कहा: यह क्या, आप कहां से !

बोले: क्या करता, तुम्हारा कार्ड मिला ही तीसरे पहर, इससे पहले पहुंचना नामुमकिन था.

मैंने कहा : न ख़बर न तार ! यह क्या आने का तरीक़ा है.

बोले : पूछता ताछता आख़िर आ तो लगा हूं. तुम्हारे घर

तार देता तो अव्वल तो क्या पता मिल ही जाता, फिर तुम ख़्वामख़्वाह स्टेशन दौड़ते !

दिल्ली में वह पहली बार आए थे. बड़ी इज़्ज़त के साथ पब्लिक रूप में उनको अनेकों बार इस दिल्ली में बुलाने की कोशिशें की गई होंगी. पर वह आए तो इस बे तौर-तरीक़े कि कुछ कहा नहीं जा सकता.

उन दिनों यहां वह पांच छै रोज़ रहे. जगह जगह बैठकें हुईं, दावतें हुईं. सब में वह शरीक हुए और अपना पार्ट ख़ूबी से अदा किया. लेकिन मैंने देखा कि अपने में वह ख़ुश नहीं हैं. बातों बातों में पीछे मालूम हुआ कि इधर दस बारह बरस से यह दिल्ली के पहले दिन गुज़रे हैं कि उन्होंने सवेरे के घंटों में अपना काम नहीं किया है. यूँ भी कहते थे कि यहां तो मैं दावतों पर दावतें उड़ा रहा हूँ. घर वाले क्या करते होंगे.

मैं इतना बेवक़ूफ़ न था कि 'घर-वालों' का असली मतलब न समझता. उनका मतलब सिर्फ़ शिवरानी देवी या धन्नू-बन्नू से न था. वह तो शायद हर उस हिन्दुस्तानी घर से था जिसे औसत समझा जा सकता है और लेखक की हैसियत से जिसे उन्होंने सदा के लिये अपना मान लिया था.

اُن کا بھکت ہی گن سکتا تھا. اُس رشتے کو دوستی مانتا تو کس ہمت پر ؟ صرف ایک بار لکھنؤ میں ملنا ہوا تھا . اُن کے نام کی شہرت کا تو پوچھنا کیا . یہاں دلی میں لوگوں کا وچار ہوا کہ ایک صوبہ ساہتیہ سمیلن کی صدارت کے لئے پریم چند جی کو بلانا چاہئے . جاننے والے ہی جانتے ہیں کہ کوششیں کتنی کی گئیں' لیکن پریم چند کو منانا اور پانا آسان نہ ہوا . شاید اُسکے بعد کی ہی بات ہو' یا ہوسکتا ہے کہ پہلے کی ہو' میں نے ایک پوسٹ کارڈ پر لکھا کہ گھر پر بھگوان دین جی ہیں' اِس وقت سندر لال جی بھی ہیں' ماتا جی اور میں تو آپ کو یاد کرتے ہی ہیں' آپ آ سکیں تو لکھیں . خط کا جواب چار روز سے پہلے تو آنے کا نہیں . یہ سوچ ہم بے فکر تھے . لیکن تیسرے روز ہی بڑے سویرے دیکھتا کیا ہوں کہ کندھے پر کمبل ڈالے اور ہاتھ میں ایک بکچا سنبھالے گلی میں سے چلے آ رہے ہیں پریم چند صاحب . میں نے کہا : یہ کیا' آپ کہاں سے '

بولے : کیا کرتا تمہارا کارڈ ملا ہی تیسرے پہر' اِس سے پہلے پہونچنا ناممکن تھا .

میں نے کہا : نہ خبر نہ تار ' یہ کیا آنے کا طریقہ ہے .

بولے : پوچھتا تاچھتا آخر آ تو لگا ہوں' تمہارے گھر .

تار دیتا تو اول تو کیا پتہ مل ہی جاتا' پھر تم خوامخواہ اسٹیشن دوڑتے '

دلی میں وہ پہلی بار آئے تھے . بڑی عزت کے ساتھ پبلک روپ میں اُن کو انیکوں بار اِس دلی میں بلانے کی کوششیں کی گئی ہوں گی . پر وہ آئے تو اِس بے طور طریقے کہ کچھ کہا نہیں جا سکتا .

اُن دنوں یہاں وہ پانچ چھ روز رہے . جگہ جگہ بیٹھکیں ہوئیں' دعوتیں ہوئیں . سب میں وہ شریک ہوئے اور اپنا پارٹ خوبی سے ادا کیا . لیکن میں نے دیکھا کہ اپنے سے وہ خوش نہیں ہیں . باتوں باتوں میں پیچھے معلوم ہوا کہ اِدھر دس بارہ برس سے یہ دلی کے پہلے دن گذرے ہیں کہ اُنہوں نے سویرے کے گھنٹوں میں اپنا کام نہیں کیا ہے . یوں بھی کہتے تھے کہ یہاں تو میں دعوتوں پر دعوتیں اُڑا رہا ہوں' گھر والے کیا کرتے ہونگے .

میں اتنا بیوقوف نہ تھا کہ ' گھر والوں ' کا اصلی مطلب نہ سمجھتا اُس کا مطلب صرف شیو رانی دیوی یا دھنو بنو سے نہ تھا . وہ تو شاید ہر اُس ہندستانی گھر سے تھا جسے اوسط سمجھا جا سکتا ہے اور لیکھک کی حیثیت سے جسے اُنہوں نے سدا کے لئے اپنا مان لیا تھا .

कहीं दिल्ली की बात है. शाम को एक पार्टी थी. प्रेमचन्द जी तारीफ़ में लेकचर हुए और इसी तरह साढ़े आठ बज आए. फिर कुछ वक्त मेज़बान ने लेना चाहा. यूँ नौ और साढ़े नौ का वक्त हो गया. उन्होंने इसरार किया कि खाना यहीं खा लीजिये. मैंने कहा कि घर पर मां राह न देखती हों. बस इसके बाद प्रेमचन्द किसी तरह वहीं सुलझा न तोड़ सके, लेकिन बातें जारी रहीं. हम लोग इस तरह वापस घर पर कोई साढ़े ग्यारह बजे आकर लगे. देखते क्या हैं कि घर तो तमाम सोया पड़ा है. घर छोटा ही था और बड़ी तरकीब से हम सबके लिये वहां जगह हो पाती थी. शायद मां को ख़याल रहा कि अब खाना तो हम लोग खाएंगे ही नहीं, बल्कि शायद रात भी कहीं दूसरी जगह गुज़ारेंगे. मुझ पर मां का भरोसा न था और प्रेमचन्द को तो वह देख ही चुकी थीं कि एक बालक हैं, कहीं किसी भी हालत में रह आ सकते हैं. घर में बिजली नहीं थी, एक तरफ़ मद्धिम लालटेन जल रही थी. चेहरे पर बहादुरी ला कर, लालटेन की बत्ती ऊंची कर मैं कमरे में से मां की खाट की तरफ़ बढ़ा.

प्रेमचन्द ने हाथ बढ़ा कर मुझे पकड़ा. कहा, जगाना नहीं, दोनों यहीं कहीं कुछ ले कर पड़ रहेंगे, यार!

मेरा मन डूबा जा रहा था. मैंने हाथ छुड़ा कर बढ़ने की कोशिश की. प्रेमचन्द ने फुस फुसा कर कहा, जैनेन्द्र, बेवक़ूफ़ न बनो. लेकिन मां तो मां थीं. ज़रा आहट पर उनकी आंख खुल चुकी थी. बोलीं, 'अरे जैनेन्द्र!' फिर देख कर कहा, 'आइये, आइये.' झट पट बच्चों को पलंग से उठा खटोले पर किया, दो हाथ देकर पलंग को साफ़ किया, कहा, "आइये न, बैठिये."

हम लोग बैठे और प्रेमचन्द ने मुझे ताकीद की कि देखो तुमने बेवक़ूफ़ी की कि नहीं.

बातों के बीच में एक सेकेन्ड के लिये मुझे बुलाया गया और मैं सही कहता हूं कि हमारे पहुंचने के पन्द्रह मिनट के अन्दर एक थाल हमारे सामने आ गया जिसमें ताज़ी पूरियाँ थीं, अचार, दही और कुछ मिठाई. कहने की ज़रूरत नहीं कि उन दिनों दिल्ली में दूध-दही की दुकानें आधी रात बाद तक खुली रहती थीं. उसके बाद प्रेमचन्द ने महसूस किया कि अगर बिना खाए चुप चाप हम लोग उस वक्त सो गए होते तो यह ज़बरदस्त ज़ुल्म होता. उस दिन के बाद से मां के लिये उनके मन में गहरा भाव हो गया और उनके मरने पर उन्होंने मुझे वह चिट्ठी लिखी जिसे साहित्य के लिये मैं अनमोल मानता हूं.

इस पहली मुलाक़ात में मैंने देख लिया कि इस आदमी के लिये आदमी और प्रेम से बाहर कोई चीज़

اُنہیں دنوں کی یہ بات ہے۔ شام کو ایک پارٹی تھی۔ پریم چند کی تعریف میں لیکچر ہوئے اور اسی طرح ساڑھے آٹھ بج آئے۔ پھر کچھ وقت میزبان نے لینا چاہا۔ یوں نو اور ساڑھے نو کا وقت ہو گیا۔ اُنہوں نے اصرار کیا کہ کھانا یہیں کھا لیجئے۔ میں نے کہا کہ گھر پر ماں راہ نہ دیکھتی ہوں۔ بس اسکے بعد پریم چند کسی طرح وہاں لگا نہ توڑ سکے۔ لیکن باتیں جاری رہیں۔ ہم لوگ اسطرح واپس گھر پر کوئی ساڑھے گیارہ بجے آ کر لگے۔ دیکھتے کیا ہیں کہ گھر تو تمام سویا پڑا ہے۔ گھر چھوٹا ہی تھا اور بڑی ترکیب سے ہم سب کے لئے وہاں جگہ ہو پاتی تھی۔ شاید ماں کو خیال رہا کہ اب کھانا تو ہم لوگ کھائینگے ہی نہیں بلکہ شاید رات بھی کہیں دوسری جگہ گذاریںگے۔ مجھ پر ماں کا بھروسہ نہ تھا اور پریم چند کو تو وہ دیکھ ہی چکی تھیں کہ ایک بالک ہیں کہیں کسی بھی حالت میں رہ جا سکتے ہیں۔ گھر میں بجلی نہیں تھی۔ ایک طرف مدھم لالٹین جل رہی تھی۔ چہرے پر بہادری لا کر لالٹین کی بتی اونچی کر میں کمرے میں سے ماں کی کھاٹ کی طرف بڑھا

پریم چند نے ہاتھ بڑھا کر مجھے پکڑا۔ کہا، جگانا نہیں، دونوں یہیں کہیں کچھ لے کر پڑ رہینگے یار!

میرا من ڈوبا جا رہا تھا۔ میں نے ہاتھ چھڑا کر بڑھنے کی کوشش کی۔ پریم چند نے پھس پھسا کر کہا، جینیندر، بیوقوف نہ بنو۔ لیکن ماں تو ماں تھیں۔ ذرا آہٹ پر اُن کی آنکھ کھل چکی تھی۔ بولیں، "ارے جینیندر!" پھر دیکھ کر کہا "آئیے، آئیے۔" جھٹ پٹ بچوں کو پلنگ سے اُٹھا کھٹولے پر کیا، دو ہاتھ دے کر پلنگ کو صاف کیا، کہا، "آئیے نہ بیٹھئے۔"

ہم لوگ بیٹھے اور پریم چند نے مجھے تاکید کی کہ دیکھو تم نے بیوقوفی کی کہ نہیں۔

باتوں کے بیچ میں ایک سیکنڈ کے لئے مجھے بلایا گیا اور میں صحیح کہتا ہوں کہ ہمارے پہنچنے کے پندرہ منٹ کے اندر ایک تھال ہمارے سامنے آیا جس میں تازی پوریاں تھیں، اچار، دہی اور کچھ مٹھائی۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ ان دنوں دلی میں دودھ دہی کی دوکانیں آدھی رات بعد تک کھلی رہتی تھیں۔ اسکے بعد پریم چند نے محسوس کیا کہ اگر بنا کھائے چپ چاپ ہم لوگ اسوقت سو گئے ہوتے تو یہ زبردست ظلم ہوتا۔ اس دن کے بعد سے ماں کے لئے اُن کے من میں گہرا بھاؤ ہوگیا اور اُن کے مرنے پر اُنہوں نے مجھے وہ چٹھی لکھی جسے ساہتیہ کے لئے میں انمول مانتا ہوں

اِس پہلی ملاقات میں میں نے دیکھ لیا کہ اِس آدمی کے لئے سادگی اور پریم سے باہر کوئی چیز

क़ीमत और महत्व नहीं रखती. बड़ी शोहरत और इज़्ज़त की कोई क़ीमत नहीं है. मन के एक सहज भाव पर वह सब क़ुरबान किया जा सकता है.

पान का उन्हें शौक़ था. शौक़ क्या आदत कहना चाहिये. क्योंकि पान की क़िस्मों की और उम्दगी की उन्हें पहचान थी, यह तो मुझे यक़ीन नहीं होता. हमारे यहां पान का इन्तज़ाम न था, घर पर वह मंगाने भी न देते थे. बस घर से निकले कि किसी पान वाली दुकान पर खड़े हो गये और बीड़ा ले लिया. मैं इसमें कुछ संकोच मानता था. प्रेमचन्द की शान के लायक़ यह चीज़ मुझे न लगती थी. लेकिन इस बात को उनके गले उतार सकना किसी के लिये मुमकिन न हो सका.

ऐसे ही दुकान के आगे थे कि एक साहब, ज़रा रईस मिज़ाज, सामने से आ धमके. प्रेमचन्द की घनी और बड़ी मूछें थीं, सलीक़ा लिबास का अक्सर नदारद रहता था. प्रेमचन्द उस वक़्त पनवाड़ी से शायद ख़ैरीयत पूछने लगे होंगे. उन रईस ज़ादे ने मुझ से मुख़ातिब होकर हाथों के इशारे से मुँह ही मुँह में पूछा कि यह किन आपलोक को साथ लिये हो.

मैंने कहा, बाबू जी !

प्रेमचन्द मेरी तरफ़ मुड़े.

मैंने परिचय देते हुए कहा, आप उर्दू शायरी से शौक़ रखते हैं. मुहल्ले के ख़ास रईस हैं...और आप प्रेमचन्द हैं.

प्रेमचन्द के मुँह में बीड़ा था, तो भी तपाक से हाथ बढ़ाया और बीड़े को ज्यों त्यों गालों के बीच रोक कर एक क़हक़हा लगाया.

मैंने देखा कि दोस्त का रंग सफ़ेद फ़क़ पड़ गया है. मुँह से उनके निकला 'प्रेमचन्द!' और आगे कुछ कह न सके.

एक दिन सवेरे ही बोले, जैनेन्द्र, कूचा चेलां कहां है और फ़तहपुरी भी चलना है.

मैंने कहा, चलिये. लेकिन शेव......

बोले, तो अच्छा, कर लो शेव.

मैंने कहा, हज़रत, मैं नहीं, अपनी दाढ़ी तो देखिये.

फ़ौरन दाढ़ी पर उनका हाथ गया. आइने के सामने हुए, बोले बात तो ठीक है भई.

शेव किया. शेरवानी निकाल कर पहन ली और चुस्त पाजामा और सिर पर टोपी भी सही बिठाई. बाहर आकर बोले, लो चलो, देखकर मैंने कहा, शेव एक बार आप और कर लेते तो कैसा ? यह देखिये, किस क़दर बाल रह गए हैं.

قیمت اور مہتو نہیں رکھتی . بڑی شہرت اور عزت کی کوئی قیمت نہیں ہے . من کے ایک سہج بھاؤ پر وہ سب قربان کیا جا سکتا ہے .

پان کا انہیں شوق تھا . شوق کیا عادت کہنا چاہئے . کیونکہ پان کی قسموں کی اور عمدگی کی انہیں پہچان تھی، یہ تو مجھے یقین نہیں ہوتا . ہمارے یہاں پان کا انتظام نہ تھا، گھر پر وہ منگانے بھی نہ دیتے تھے . بس گھر سے نکلے کہ کسی پان والی دکان پر کھڑے ہوگئے اور بیڑا لے لیا . میں اس میں کچھ سنکوچ مانتا تھا . پریم چند کی شان کے لائق یہ چیز مجھے نہ لگتی تھی . لیکن اس بات کو اُن کے گلے اُتار سکنا کسی کے لئے ممکن نہ ہوسکا .

ایسے ہی دکان کے آگے تھے کہ ایک صاحب، ذرا رئیس مزاج، سامنے سے آدھمکے . پریم چند کی گھنی اور بڑی مونچھیں تھیں، سلیقہ لباس کا اکثر ندارد رہتا تھا . پریم چند اس وقت پنواڑی سے شاید خیریت پوچھنے لگے ہونگے . اُن رئیس زادے نے مجھ سے مخاطب ہو کر ہاتھوں کے اشارے سے منہ ہی منہ میں پوچھا کہ یہ کس راغ لوں کو ساتھ لئے ہو .

میں نے کہا، بابو جی !

پریم چند میری طرف مڑے .

میں نے پریچے دیتے ہوئے کہا، آپ اردو شاعری سے شوق رکھتے ہیں . محلے کے خاص رئیس ہیں........ اور آپ پریم چند ہیں .

پریم چند کے منہ میں بیڑا تھا . تو بھی تپاک سے ہاتھ بڑھایا اور بیڑے کو جیوں تیوں گالوں کے بیچ روک کر ایک قہقہا لگایا

میں نے دیکھا کہ دوست کا رنگ سفید فق پڑ گیا ہے . منہ سے اُن کے نکلا 'پریم چند!' اور آگے کچھ کہہ نہ سکے .

ایک دن سویرے ہی بولے، جینندر، کوچہ چیلاں کہاں ہے اور فتح پوری بھی چلنا ہے .

میں نے کہا، چلئے . لیکن شیو.........

بولے، تو اچھا، کر لو شیو .

میں نے کہا، حضرت، میں نہیں، اپنی داڑھی تو دیکھئے .

فوراً داڑھی پر اُن کا ہاتھ گیا . آئینے کے سامنے ہوئے، بولے بات تو ٹھیک ہے بھئی .

شیو کیا . شیروانی نکال کر پہن لی اور چست پاجامہ اور سر پر ٹوپی بھی صحیح بٹھالی . باہر آکر بولے، لو چلو . دیکھکر میں نے کہا شیو ایک بار آپ اور کر لیتے تو کیسا ؟ یہ دیکھئے، کس قدر بال رہ گئے ہیں .

बोले, ऊंह, चलो भी यार. चेहरा मुरझाना एक यूं ही रस्म है. देखो न इसी को तहज़ीब कहते हैं. हटाओ, आओ चलें.

इसी चेहरे से वह अपने उर्दू के क़द्रदां लोगों के यहां गए. और मुझे नहीं याद पड़ता कि कोई उनमें इस क़दर आंख वाला निकला कि वह इनकी उस बनी-अनबनी दाढ़ी को देख सका, या वहां अटक सका.

दिल्ली में साहित्य सम्मेलन हुआ तो प्रेमचन्द भी आए. एक लम्बी गैलरी से हाल में पड़ी सौ-एक खाटों में एक खाट उनको भी मिल गई. आए तो थे जाती इसरार को पूरा करने की रक्षा में. साहित्य की राजनीति में यूं ज़ियादा दख़ल उन्हें न था. बातों बातों में बात निकली कि हिन्दुस्तान में भाषाएं कई होने की वजह से क्या यहां के साहित्यकार आपस में अजनबी और दूर ही बने रहेंगे. हम लोगों में तय हुआ कि यह हालत ठीक नहीं है और सब भाषाओं में जो इस तरह कलचर की चिन्ता और साहित्य की रचना करने वाले लोग हैं उन्हें पास आना चाहिये. एक दूसरे से परिचय लेना और एक दूसरे को बल देना चाहिये. फिर योजना की बात हुई कि इसके लिये कान्फ्रेंस की धूम धाम करना ठीक न होगा. केन्द्र में गांधी जी को लिया जाए क्योंकि वह भारती आत्मा के निशान हैं और किन्हीं एक के घर पचास साठ इस प्रकार के लेखकों को बुलवा दिया जाए.

इस मेहमांनवाज़ी के लिये दो नाम सूझे. एक घनश्याम दास बिरला और दूसरे शिव प्रसाद गुप्त. लेकिन इनसे मिलने के काम पर प्रेमचन्द का दिल बैठता था. तीन-चार रोज़ रह कर उन्होंने हिम्मत बांधी, फ़ोन भी एक आध बार किया, पहला परिचय भी ज्यों त्यों कर घनश्याम दास जी से करा दिया गया. लेकिन मन उठता और फिर बैठ जाता. आख़िर कहा, काशी जाता हूं वहां ज़रूर शिव प्रसाद जी से मिलूंगा. वह गए और आख़िर तक शिव प्रसाद जी से नहीं मिले. रईस के बारे में अपनी इस तबियत को वह न अपने जीवन में न साहित्य में दबा सके. मैंने एक बार सवाल किया कि आपने जो हज़ारों पन्ने लिखे हैं, एक शब्द में आप से पूछा जाए कि उनमें आप ने क्या कहना चाहा है तो आप क्या कहेंगे? आप फ़ौरन बोले, "धन की दुश्मनी!"

अपनी ज़िन्दगी में सभी तरह के लोगों से मेरा वास्ता पड़ा है. लेकिन अपने दीखने के बारे में जो इस क़दर सहज और बनावटी नहीं है, जो जो है उससे बाल बराबर भी दूसरी तरह दीखने की इच्छा है या कोशिश नहीं करता ऐसा आदमी दुनिया में मुश्किल से मिलता है. कुछ सुन्दर दीखना चाहते हैं, कुछ हैं जो उसी कारण शायद असुन्दर

بولے ’اونہہ‘ چلو بھی یار۔ چہرا کمھلانا ایک یوں ہی رسم ہے۔ دیکھو نہ اسی کو تہذیب کہتے ہیں۔ ہٹاؤ، آؤ چلیں۔

اسی چہرے سے وہ اپنے اردو کے قدرداں لوگوں کے یہاں گئے۔ اور مجھے نہیں یاد پڑتا کہ کوئی ان میں اس قدر آنکھ والا نکلا کہ وہ ان کی اس بنی ان بنی داڑھی کو دیکھ سکا یا وہاں اٹک سکا۔

دلی میں ساہتیہ سمیلن ہوا تو پریم چند بھی آئے۔ ایک لمبی گیلری سے ہال میں پڑی سو ایک کھٹیوں میں ایک کھاٹ ان کو بھی مل گئی۔ آئے تو تھے ذاتی اصرار کو پورا کرنے کی رکھشا میں۔ ساہتیہ کی راج نیتی میں یوں زیادہ دخل انہیں نہ تھا۔ باتوں باتوں میں بات نکلی کہ ہندوستان میں بھاشائیں کئی ہونے کی وجہ سے کیا یہاں کے ساہتیہ کار آپس میں اجنبی اور دور ہی بنے رہیں گے۔ ہم لوگوں میں طے ہوا کہ یہ حالت ٹھیک نہیں ہے اور سب بھاشاؤں میں جو اس طرح کلچر کی چنتا اور ساہتیہ کی رچنا کرنے والے لوگ ہیں انہیں پاس آنا چاہئے۔ ایک دوسرے سے پریچے لینا اور ایک دوسرے کو بل دینا چاہئے۔ پھر یوجنا کی بات ہوئی کہ اس کے لئے کانفرنس کی دھوم دھام کرنا ٹھیک نہ ہوگا۔ کیندر میں گاندھی جی کو لیا جائے کیونکہ وہ بھارتی آتما کے نشان ہیں اور انہیں ایک کے گھر پچاس ساٹھ اس طرح کے لیکھکوں کو بلوا دیا جائے۔

اس مہمان نوازی کے لئے دو نام سوجھے، ایک گھنشیام داس برلا اور دوسرے شیو پرساد گپت۔ لیکن ان سے ملنے کے کام پر پریم چند کا دل بیٹھتا تھا۔ تین چار روز رہ کر انہوں نے ہمت باندھی، فون بھی ایک آدھ بار کیا، پہلا پریچے بھی جوں توں کر گھنشیام داس جی سے کرا دیا گیا۔ لیکن من اٹھتا اور پھر بیٹھ جاتا۔ آخر کہا، کاشی جاتا ہوں وہاں ضرور شیو پرساد جی سے ملوں گا۔ وہ گئے اور آخر تک شیو پرساد جی سے نہیں ملے۔ رئیس کے بارے میں اپنی اس طبیعت کو وہ نہ جیون میں نہ ساہتیہ میں دبا سکے۔ میں نے ایک بار سوال کیا کہ آپ جو ہزاروں پنے لکھے ہیں، ایک شبد میں آپ سے پوچھا جائے کہ ان میں آپ نے کیا کہنا چاہا ہے تو آپ کیا کہیں گے؟ آپ فوراً بولے، ”دھن کی دشمنی!“

اپنی زندگی میں سبھی طرح کے لوگوں سے میرا واسطہ پڑا ہے۔ لیکن اپنے دکھنے کے بارے میں جو اس قدر سہج اور بناوٹی نہیں ہے، جو جو ہے اس سے بال برابر بھی دوسری طرح دکھنے کی اچھا یا کوشش نہیں کرتا، ایسا آدمی دنیا میں مشکل سے ملتا ہے۔ کچھ سندر دیکھنا چاہتے ہیں، کچھ ہیں جو اسی کارن شاید اسندر

दीखना चाहते हैं. सानी होने से अलग जिन्हें दीखने से भी वास्ता रहता है. दुनिया में वैसे ही लोगों की कसरत है. सज्जन होना मुमकिन न हो तो भी सज्जन दीखना सही माना जाता है. बढ़ चढ़ कर जिनको दुष्ट कहा जाता है वह वह हैं जो प्रयत्न पूर्वक दुष्ट दीखते हैं और उसमें शेखी मानते हैं. ऐसे ऊपर से सज्जन दुर्जन की बात अलग बन जाती है. पर असल में असलियत वह नहीं है. प्रेमचन्द के साहित्य में भी यह दरसाया गया है और प्रेमचन्द के खुले जीवन पर भी मुझे यह इस प्रकार लिखा हुआ मिला कि उसे पढ़ने में मैं कोई भूल नहीं कर सकता.

—'आल इंडिया रेडियो' दिल्ली से

دیکھنا چاہتے ہیں۔ سجنی ہونے سے الگ جنہیں دیکھنے سے بھی واسطہ رہتا ہے۔ دنیا میں ویسے ہی لوگوں کی کثرت ہے۔ سجن ہونا ممکن نہ ہو تو بھی سجن دیکھنا صحیح مانا جاتا ہے۔ بڑھ چڑھ کر جن کو دشٹ کہا جاتا ہے وہ وہ ہیں جو پریتن پوروک دشٹ دیکھتے ہیں اور اس میں شیخی مانتے ہیں۔ ایسے اوپر سے سجن درجن کی بات الگ بن جاتی ہے۔ پر اصل میں اصلیت وہ نہیں ہے۔ پریم چند کے ساہتیہ میں بھی یہ درسایا گیا ہے اور پریم چند کے کھلے جیون پر بھی مجھے یہ اس پرکار لکھا ہوا ملا کہ اسے پڑھنے میں میں کوئی بھول نہیں کر سکتا۔

—'آل انڈیا ریڈیو' دلی سے

मिल की चीज़ों का बाइकाट—क्यों ?

(भाई धीरेन्द्र मजूमदार)

इधर कुछ महीनों से चरखा और ग्रामोद्योग के काम करने वालों को, कम से कम खाने और कपड़े के लिये, मिल की चीज़ों का बाइकाट करने के बारे में मैं कह रहा हूँ. इधर धीरे धीरे उसकी ज़रूरत की तरफ़ देश के रचनात्मक काम करने वालों का ध्यान खिंचने लगा है, यह ख़ुशी की बात है. कांग्रेस के मेनीफ़ेस्टो और सरकारी पंच साला योजना के मसौदे के छपने के बाद आम तौर से सर्वोदय विचार के लोगों के लिये इस दिशा में लापरवाह रहना मुमकिन नहीं है. इसलिये आज जगह जगह कताई मंडल सम्मेलनों में खाने और कपड़े के सामान के बारे में मिल की चीज़ों का बाइकाट करने का इरादा किया जा रहा है.

कुछ लोग कहते हैं 'बाइकाट' क्यों? उनसे मेरा सवाल है, 'खादी क्यों?' खादी के काम के दो ही मक़सद हो सकते हैं—पहला, यह कि देश में बहुत बेकार लोग हैं, उनको किसी तरह काम देने के लिये चरखा और करघा एक बहुत बड़ा ज़रिया है. इसलिये चरखे का काम करना है. दूसरा, यह कि दुनिया में बिना शासन और अमन शान्ति वाला समाज क़ायम करने के लिये यह ज़रूरी है कि कम से कम बुनियादी ज़रूरतों के लिये जो सामान तैयार करना है वह ग़ैर केन्द्रित और स्वावलम्बी ढंग पर पैदा किया जाय न कि बड़े बड़े पैमाने वाले केन्द्रित कारखानों

مل کی چیزوں کا بائی کاٹ—کیوں؟

(بھائی دھیرندر مزوم دار)

ادھر کچھ مہینوں سے چرخا اور گرام ادیوگ کے کام کرنے والوں کو، کم سے کم کھانے اور کپڑے کے لئے، مل کی چیزوں کا بائی کاٹ کرنے کے بارے میں میں کہہ رہا ہوں۔ ادھر دھیرے دھیرے اسکی ضرورت کی طرف دیش کے رچناتمک کام کرنے والوں کا دھیان کھنچنے لگا ہے، یہ خوشی کی بات ہے۔ کانگریس کے مینی فیسٹو اور سرکاری پنچ سالہ یوجنا کے مسودے کے چھپنے کے بعد عام طور سے سروودے وچار کے لوگوں کے لئے اس دشا میں لاپرواہ رہنا ممکن نہیں ہے۔ اس لئے آج جگہ جگہ کتائی منڈل سمیلنوں میں کھانے اور کپڑے کے سامان کے بارے میں مل کی چیزوں کا بائی کاٹ کرنے کا ارادہ کیا جا رہا ہے۔

کچھ لوگ کہتے ہیں 'بائی کاٹ' کیوں؟ ان سے میرا سوال ہے، 'کھادی کیوں؟' کھادی کے کام کے دو ہی مقصد ہو سکتے ہیں— پہلا، یہ کہ دیش میں بہت بیکار لوگ ہیں، ان کو کسی طرح کام دینے کے لئے چرخا اور کرگھا ایک بہت بڑا ذریعہ ہیں۔ اس لئے چرخے کا کام کرنا ہے۔ دوسرا، یہ کہ دنیا میں بنا شوشن اور امن شانتی والا سماج قائم کرنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ کم سے کم بنیادی ضرورتوں کے لئے جو سامان تیار کرنا ہے وہ غیر کیندری اور سواولمبی ڈھنگ پر پیدا کیا جائے نہ کہ بڑے بڑے پیمانے والے کیندری کارخانوں

के ज़रिये, जिनका मक़सद पहली तरह का है, उनको सिर्फ इतना ही सोचना होगा कि किस सूरत से ज़ियादा से ज़ियादा लोगों को रोज़ी दी जा सकती है. लेकिन हम लोग, जो कि खादी के ज़रिये दूसरा मक़सद हासिल करना चाहते हैं, उन्हें हर हालत में खाने और कपड़े के बारे में मिल सामान बाइकाट आन्दोलन चलाना ही होगा. इस के सिवाय और दूसरा रास्ता नहीं है.

लेकिन इस बारे में सिर्फ भावना ज़ाहिर करना या ठहराव पास करना काफी नहीं है. इस के लिये बाक़ायदा कोशिश करनी होगी. इसलिये जो कोई रचनात्मक काम करने वाले इस को मानते हैं, उन्हें खाने और कपड़े के बारे में मिलों की चीज़ों का बाइकाट और ग्रामोद्योग की चीज़ों का इस्तेमाल करना चाहिये. इसके लिये यह ज़रूरी है कि जो चीज़ें ग्राम उद्योग में शुमार की जाती हैं उनकी यह सूची तैयार करें और फिर अपने आप और अपने दोस्तों से यह इरादा कराएं कि हम इन्हीं चीज़ों का इस्तेमाल करेंगे. इस तरह हमें यह बाइकाट आन्दोलन शुरू कर देना है.

کے ذریعہ ہو، جن کا مقصد پہلی طرح کا ہو، ان کو صرف اتنا ہی سوچنا ہوگا کہ کس صورت سے زیادہ سے زیادہ لوگوں کو روزی دی جا سکتی ہے۔ لیکن ہم لوگ، جو کہ کھادی کے ذریعے دوسرا مقصد حاصل کرنا چاہتے ہیں، انہیں ہر حالت میں کھانے اور کپڑے کے بارے میں مل سامان بائیکاٹ آندولن چلانا ہی ہوگا۔ اسکے سوائے اور دوسرا راستہ نہیں ہے۔

لیکن اس بارے میں صرف بھاونا ظاہر کرنا یا ٹھہراؤ پاس کرنا کافی نہیں ہے۔ اس کے لئے باقاعدہ کوشش کرنی ہوگی۔ اس لئے جو کوئی رچناتمک کام کرنے والے اس کو مانتے ہیں، انہیں کھانے اور کپڑے کے بارے میں ملوں کی چیزوں کا بائیکاٹ اور گرام ادیوگ کی چیزوں کا استعمال کرنا چاہئے۔ اس کے لئے یہ ضروری ہے کہ جو چیزیں گرام ادیوگ میں شمار کی جاتی ہیں اس کی وہ سوچی تیار کریں اور پھر اپنے آپ اور اپنے دوستوں سے یہ ارادہ کرائیں کہ ہم انہیں چیزوں کا استعمال کریں گے۔ اس طرح ہمیں یہ بائیکاٹ آندولن شروع کر دینا ہے۔

पख़्तूनिस्तान का सवाल

(भाई अब्दुल मजीद खां)

[प्रोफ़ेसर अब्दुल मजीद खां कुछ अरसा पहले सऊदी अरब में हिन्द सरकार की तरफ से कौन्सल थे. अपनी गम्भीरता, ज़िम्मेदारी और शान्त तबियत के लिये आप मशहूर हैं. हमें यक़ीन है कि पख़्तूनिस्तान के अहम सवाल पर आपका यह गम्भीर लेख ग़ौर के साथ पढ़ा जायगा—एडीटर]

सन 1893 में अमीर अब्दुल रहमान और सर मार्टीमेर डूरण्ड के बीच अफ़ग़ानिस्तान और ब्रिटिश हिन्द की तरफ से एक राज़ीनामा हुआ था. इस राज़ीनामे में अमीर के राज की पूरबी और दक्खिनी हद क़ायम कर दी गई थी. यह हद डूरण्ड लाइन कहलाती है. सर फ़्रेज़र-टेटलर के शब्दों में —"डूरण्ड लाइन में कुछ अच्छाई है मगर दोष बहुत से हैं. भूगोल, फ़ौजी मौक़ा और नस्ली लिहाज़ से यह हद बिल्कुल बेतुकी है. सिन्धु नदी की एक खास घाटी को यह बीच से काटता है. यही नहीं, यह लाइन

پختونستان کا سوال

(بھائی عبدالمجید خاں)

[پروفیسر عبدالمجید خاں کچھ عرصہ پہلے سعودی عرب میں ہند سرکار کی طرف سے کونسل تھے۔ اپنی گمبھیرتا، ذمہ داری اور شانت طبیعت کے لئے آپ مشہور ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ پختونستان کے اہم سوال پر آپ کا یہ گمبھیر لیکھ غور کے ساتھ پڑھا جائے گا—ایڈیٹر]

سن 1893 میں امیر عبدالرحمان اور سر مارٹیمر ڈیورنڈ کے بیچ افغانستان اور برٹش ہند کی طرف سے ایک راضی نامہ ہوا تھا۔ اس راضی نامے میں امیر کے راج کی پوربی اور دکھنی حد قائم کر دی گئی تھی۔ یہ حد ڈیورنڈ لائن کہلاتی ہے۔ سر فریزر ٹیٹلر کے شبدوں میں—"ڈیورنڈ لائن میں کچھ اچھائی ہے مگر دوش بہت سے ہیں۔ بھوگول، فوجی موقع اور نسلی لحاظ سے یہ حد بالکل بے تکی ہے۔ سندھ ندی کی ایک خاص گھاٹی کو یہ بیچ سے کاٹتی ہے۔ یہی نہیں، یہ لائن

एक राष्ट्र के दो टुकड़े कर देती है और क़ौमों तक को बांट देती है." अफ़ग़ान लोग नक़्शा समझने के मामले में कमज़ोर से हैं. जब अमीर अब्दुल रहमान को डुरन्ड लाइन की कुछ बातें पूरे तरीक़े के साथ बताई जाने लगीं तो उन्होंने मानने से ही इनकार किया. इसलिये इस लाइन के कुछ हिस्से जगह जगह अब तक साफ़ नहीं हैं और उनकी बाबत ठीक जानकारी भी शायद ही किसी को हो.

हर कोई जानता है कि क्या अमीर अब्दुल रहमान, क्या उनके बेटे अमीर हबीबुल्ला और क्या उनके पोते शाह अमानुल्ला, किसी ने कभी भी इस बात में परेशानी नहीं महसूस की कि पूरे इलाक़े में अफ़ग़ानी असर किस तरह से रहे. पचास बरस तक अफ़ग़ानिस्तान के शाह लोग क़बीलों के जिरगों को बुलाते रहे जो डुरन्ड लाइन के पूरब की तरफ़ से काबुल आते जाते थे. अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह इन जिरगों को अपने सगे सम्बन्धी मानते थे. यह था भी क़ुदरती क्योंकि जिरगे और अफ़ग़ान कोई दो चीज़ें हैं नहीं. इस तरह की बनावटी हद बना देने से लोगों को नहीं बांटा जा सकता. ठीक उस तरह जिस तरह कोई बनावटी रुकावट वेल्स के लोगों को इंगलैन्ड के लोगों से अलग नहीं कर सकती. इसलिये डुरन्ड लाइन हो या न हो, इस लकीर के दोनों तरफ़ के जवां-मर्द लोग एक ही क़ौम या राष्ट्र माने जाएंगे जैसा कि उनका पिछले दो हज़ार बरस का इतिहास बताता है.

रक़बा और आबादी.

पख़्तूनिस्तान दर असल दो इलाक़ों का बना है—एक मैदानी और दूसरा पहाड़ी—जो बराबर बराबर चले गए हैं और एक तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान व दूसरी तरफ़ पाकिस्तान से घिरे हैं. मैदानी इलाक़ा सिन्ध नदी के पच्छिम में पहाड़ों के पूरब में है और पहाड़ी इलाक़ा पुरानी ब्रिटिश हकूमती लाइन और अफ़ग़ानी हद (डुरन्ड लाइन) के बीच है. संसार का मशहूर ख़ैबर पास इसी में पड़ता है. इसका रक़बा क़रीब साठ हज़ार मुरब्बा मील है और लम्बाई 600 मील के क़रीब है जो उत्तर में चित्राल से दक्खिन में बिलोचिस्तान तक चली गई है. यहां की आबादी क़रीब सत्तर लाख के है. यहां की सबसे ख़ास जगह तीराह है जो ख़ैबर के पास ही है. ख़ैबर पास ही अफ़ग़ानिस्तान में घुसने का दरवाज़ा है. यहां के लोग ज़ियादा तर पश्तो ज़बान बोलते हैं.

नस्ल के लिहाज़ से पख़्तून लोग—ईरान वालों की तरह हिन्दी-ईरानी हैं. इतिहास में यह लोग अपनी आज़ादी के लिए मशहूर हैं. आज़ादी के लिये इनकी भयानक और लगातार लड़ाइयां सब कोई जानते हैं. मिस्टर के.

ایک راشٹر کے دو ٹکڑے کر دیتی ہے اور قوموں تک کو بانٹ دیتی ہے." افغان لوگ نقشہ سمجھنے کے معاملے میں کمزور سے ہیں. جب امیر عبدالرحمان کو ڈرنڈ لائین کی کچھ باتیں پورے طریقے کے ساتھ بتائی جانے لگیں تو انہوں نے ماننے سے ہی انکار کیا. اس لئے اس لائین کے کچھ حصے جگہ جگہ اب تک صاف نہیں ہیں اور ان کی بابت ٹھیک جانکاری بھی شاید ہی کسی کو ہو.

ہر کوئی جانتا ہے کہ کیا امیر عبدالرحمان، کیا ان کے بیٹے امیر حبیب اللہ اور کیا ان کے پوتے شاہ امان اللہ، کسی نے کبھی بھی اس بات میں پریشانی نہیں محسوس کی کہ پورے علاقے میں افغانی اثر کس طرح سے رہے. پچاس برس تک افغانستان کے شاہ لوگ قبیلوں کے جرگوں کو بلاتے رہے جو ڈرنڈ لائین کے پورب کی طرف سے کابل آتے جاتے تھے. افغانستان کے بادشاہ ان جرگوں کو اپنے سگے سمبندھی مانتے تھے. یہ تھا بھی قدرتی کیونکہ جرگے اور افغان کوئی دو چیزیں ہیں نہیں.

اس طرح کی بناوٹی حد بنا دینے سے لوگوں کو نہیں بانٹا جا سکتا. ٹھیک اس طرح جس طرح کوئی بناوٹی رکاوٹ ویلس کے لوگوں کو انگلینڈ کے لوگوں سے الگ نہیں کر سکتی. اس لئے ڈرنڈ لائین ہو یا نہ ہو، اس لکیر کے دونوں طرف کے جواں مرد لوگ ایک ہی قوم یا راشٹر مانے جائیں گے جیسا کہ ان کا پچھلے دو ہزار برس کا اتہاس بتاتا ہے.

رقبہ اور آبادی

پختونستان دراصل دو علاقوں کا بنا ہے—ایک میدانی اور دوسرا پہاڑی—جو برابر برابر چلے گئے ہیں اور ایک طرف افغانستان و دوسری طرف پاکستان سے گھرے ہیں. میدانی علاقہ سندھ ندی کے پچھم میں پہاڑوں کے پورب میں ہے اور پہاڑی علاقہ پرانی برٹش حکومتی لائین اور افغانی حد (ڈرنڈ لائین) کے بیچ ہے. سنسار کا مشہور خیبر پاس اسی میں پڑتا ہے. اس کا رقبہ قریب ساٹھ ہزار مربع میل ہے اور لمبائی 600 میل کے قریب ہے جو اتر میں چترال سے دکھن میں بلوچستان تک چلی گئی ہے. یہاں کی آبادی قریب ستر لاکھ کے ہے. یہاں کی سب سے خاص جگہ تیراہ ہے جو خیبر کے پاس ہی ہے. خیبر پاس ہی افغانستان میں گھسنے کا دروازہ ہے. یہاں کے لوگ زیادہ تر پشتو زبان بولتے ہیں.

نسل کے لحاظ سے پختون لوگ—ایران والوں کی طرح ہندی ایرانی ہیں. اتہاس میں یہ لوگ اپنی آزادی کے لئے مشہور ہیں. آزادی کے لئے ان کی بھیانک اور لگاتار لڑائیاں سب کوئی جانتے ہیں. مسٹر کے.

डी. ग्राहम ने कहा है— "पख्तून को आप ग़रीब, पुराने ज़माने का और घमंडी कहिये. यह भी कह सकते हैं कि उसकी जानकारी बहुत थोड़ी होती है. लेकिन एक चीज़ को मानो वह अपनी जान से भी ज़ियादा प्यारा समझता है—आज़ादी." अफ़ग़ानों वाली तीन लड़ाइयां और पख्तून इलाक़ों में कई बार अंगरेज़ों का फ़ौजें भेजना यह साबित करता है कि इन लोगों में आज़ादी का कितना ज़बरदस्त जज़्बा है. आज़ादी इनकी रग-रग में मानो भरी हुई है.

जब हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज चलता था तो अंगरेज़ी हुकूमत अच्छी तरह जानती थी कि पख्तून अपनी आज़ादी के आगे दूसरी किसी चीज़ की क़ीमत नहीं समझता. फिर भी, उस सरकार के ऊपर हमेशा यह डर सवार रहता था कि बीच एशिया से कोई हमला न कर बैठे. सूबा सरहद के मामलों के नामी जानकार, सर विलियम बार्टन पख्तूनों के बारे में इस तरह कहा करते थे—"यहां अंगरेज़ी सरकार के सामने एक ऐसी राजकाजी अक़लियत का सवाल था जिसको वह हिन्दुस्तान में अब तक घुला मिला नहीं सकी. पठान तबियत का अन्दाज़ा करते वक़्त हमें उनके देश प्रेम को नहीं भूलना चाहिये जिसने पिछले डेढ़ सौ बरस में एक अलग राजकाजी हस्ती की शकल ले ली है.......इस बात में कोई शक नहीं है कि इस इलाक़े का पठान अपनी क़िस्मत हिन्दुस्तान के हवाले कर देने को तैयार नहीं है. अगर वह करेगा भी तो इस शर्त पर कि हिन्दुस्तान के लोगों से अलग उसकी क़ौम की शख़्सियत का क़रार किया जाए."

बटवारे के बाद.

सन 1947 में हिन्दुस्तान के बंटवारे के कुछ महीने पहले लार्ड माउन्ट बैटन ने पहाड़ी इलाक़े और सरहद में रहने वाले इन लोगों से कहा था—"अंगरेज़ी सरकार तो हिन्दुस्तान छोड़ कर जा रही है, अब यह आपका काम है कि नई ताक़त से ताज़ा राज़ीनामा कर लीजिये." लेकिन बद-क़िस्मती की बात यह है कि नई ताक़त एक न हो कर दो टुकड़ों में बट गई थी. उनमें से एक—हिन्दुस्तान—की हद सरहद के इन इलाक़ों को छूती भी नहीं थी और दूसरा—पाकिस्तान—राज़ीनामा करना नहीं चाहता था. हम बता दें कि जब पहले इंगलैण्ड ने और बाद में अमरीका ने दोस्ताना राज़ीनामे की तजवीज़ की तो पाकिस्तान ने मुँहतोड़ जवाब दिया कि पख्तूनी पठानों की मांगों के अलावा हर चीज़ पर बात करने लिये हम तैयार हैं.

पख्तून लोगों से न रहा गया. उन्होंने अपने ख़यालात को ज़ाहिर करना शुरू किया और बताया कि उनके दिल में क्या है और उनकी क्या इच्छा है. इस पर

ڈی. گراہم نے کہا ہے— "پختون کو آپ غریب، پرانے زمانے کا اور گھمنڈی کہیے. یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ اُسکی جانکاری بہت تھوڑی ہوتی ہے. لیکن ایک چیز کو مانو وہ اپنی جان سے بھی زیادہ پیارا سمجھتا ہے— آزادی." افغانوں والی تین لڑائیاں اور پختون علاقوں میں کئی بار انگریزوں کا فوجیں بھیجنا یہ ثابت کرتا ہے کہ اِن لوگوں میں آزادی کا کتنا زبردست جذبہ ہے. آزادی اِن کی رگ رگ میں مانو بھری ہوئی ہے.

جب ہندستان میں انگریزی راج چلتا تھا تو انگریزی حکومت اچھی طرح جانتی تھی کہ پختون اپنی آزادی کے آگے دوسری کسی چیز کی قیمت نہیں سمجھتا. پھر بھی، اُس سرکار کے اوپر ہمیشہ یہ ڈر سوار رہتا تھا کہ بیچ ایشیا سے کوئی حملہ نہ کر بیٹھے. صوبہ سرحد کے معاملوں کے نامی جانکار، سر ولیم بارٹن پختونوں کے بارے میں اِس طرح کہا کرتے تھے— "یہاں انگریزی سرکار کے سامنے ایک ایسی راج کاجی اقلیت کا سوال تھا جس کو وہ ہندستان میں اب تک گھلا ملا نہیں سکی. پٹھان طبیعت کا اندازہ کرتے وقت ہمیں اُن کے دیش پریم کو نہیں بھولنا چاہئے جس نے پچھلے ڈیڑھ سو برس میں ایک الگ راج کاجی ہستی کی شکل لے لی ہے....... اِس بات میں کوئی شک نہیں ہے کہ اِس علاقے کا پٹھان اپنی قسمت ہندستان کے حوالے کر دینے کو تیار نہیں ہے. اگر وہ کرے گا بھی تو اِس شرط پر کہ ہندستان کے لوگوں سے الگ اُس کی قوم کی شخصیت کا قرار کیا جائے."

بٹوارے کے بعد.

سن 1947 میں ہندستان کے بٹوارے کے کچھ مہینے پہلے لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے پہاڑی علاقے اور سرحد میں رہنے والے اِن لوگوں سے کہا تھا— "انگریزی سرکار تو ہندستان چھوڑ کر جا رہی ہے. اب یہ آپ کا کام ہے کہ نئی طاقت سے تازہ راضی نامہ کر لیجئے." لیکن بدقسمتی کی بات یہ ہے کہ نئی طاقت ایک نہ ہو کر دو ٹکڑوں میں بٹ گئی تھی. اُن میں سے ایک— ہندستان— کی حد سرحد کے اِن علاقوں کو چھوتی بھی نہیں تھی اور دوسری— پاکستان— راضی نامہ کرنا نہیں چاہتی تھی. ہم بتا دیں کہ جب پہلے انگلینڈ نے اور بعد میں امریکہ نے دوستانہ راضی نامے کی تجویز کی تو پاکستان نے منھ توڑ جواب دیا کہ پختونی پٹھانوں کی مانگوں کے علاوہ ہر چیز پر بات کرنے کے لئے ہم تیار ہیں.

پختون لوگوں سے نہ رہا گیا. اُنہوں نے اپنے خیالات کو ظاہر کرنا شروع کیا اور بتایا کہ اُن کے دل میں کیا ہے اور اُن کی کیا اچھا ہے. اِس پر

पाकिस्तान वालों ने पख़्तूनी नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया और सरहद के कुछ हिस्सों पर अपना क़ब्ज़ा भी जमा लिया. 22 जून 1947 को फ़ख़रे अफ़ग़ान, सरहदी गांधी, ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ां ने कहा कि हम पख़्तून लोग इस बात का अब फ़ैसला करवानेको तैयार हैं कि हम पाकिस्तान में मिलेंगे या अपना पख़्तूनिस्तान बनाएंगे, न कि इस बात पर कि पाकिस्तान में मिलेंगे या हिन्दुस्तान में. कुछ दिनों के बाद उनको जेल में डाल दिया गया.

इस इलाक़े के लोगों की आज़ादी को क़ायदे-आज़म जिन्नाह ने अपनी दो स्पीचों में क़बूल भी किया था. लेकिन यह ज़रूर है कि उन्होंने बड़े एहतियात भरे लफ़्ज़ कहे थे—"यह साफ़ है कि पाकिस्तान की कन्स्टीटुयन्ट एसेम्बली ऐसा ही विधान बना सकती है जिसमें सरहद ख़ुद-मुख़्तार हो." इसके अलावा 3 जून 1948 को क़ायदे आज़म ने वादा किया था कि पाकिस्तान की सरकार सरहद की आज़ादी में कोई दख़्ल नहीं देगा. यहां यह बात साफ़ साफ़ कह देने की ज़रूरत है कि कलचर, नस्ल, ज़बान और रीतिरवाज के लिहाज़ से अफ़ग़ानिस्तान और पख़्तूनिस्तान के लोग एक हैं और सदियों तक पख़्तूनिस्तान अफ़ग़ानिस्तान का जुग़राफ़ी और राजकाजी हिस्सा रहा है. लेकिन अफ़ग़ानिस्तान की यह इच्छा नहीं है कि पख़्तूनिस्तान का इलाक़ा उसे मिल जाए या यह उसके राज में शामिल हो जाए. अफ़ग़ानिस्तान तो सिर्फ़ यह चाहता है कि इस इलाक़े में ख़ुद मुख़्तार हकूमत क़ायम हो और पख़्तूनी लोग आज़ाद रहें.

एशिया में जागृति.

बीसवीं सदी की ख़ास चीज़ यही है कि दुनिया भर की क़ौमों में ताज़ा और नया ख़ून दौड़ रहा है और नए नए ख़याल लोगों के दिल में घर कर रहे हैं. दूसरे लफ़्ज़ों में, एक क़ौम पर दूसरे का राज हो—इसके बजाए आज़ादी और ख़ुद-मुख़्तारी का जज़्बा ज़ोर पकड़ रहा है. पिछली दो लड़ाईयों ने इन ख़यालों को और भी जानदार बना दिया है. एशिया अब जाग गया है. जागते जागते पिछले पचास बरस एशिया ने ले लिये. सन 1943 में चीन में से अपना हकूमती हक़ अमरीका ने ख़ुशी से छोड़ दिया. 1947 में हिन्दुस्तान से अंगरेज़ लोग गए और बरमा भी आज़ाद हुआ. इस तरह एशिया फिर अपने आपे में आ रहा है. यह लाज़मी बात है कि ज़माने की पुकार का असर पूरब के सारे देशों पर पड़े और जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान आज़ाद हों तो पख़्तूनी लोगों में भी आज़ादी की इच्छा पैदा हो. इसलिये वक़्त का तक़ाज़ा है कि पख़्तूनों की इस वाजब इच्छा की क़द्र की जाए और उनके हक़ को मन्ज़ूर किया जाए.

پاکستانی والوں نے پختونی نیتاؤں کو گرفتار کر لیا اور سرحد کے کچھ حصوں میں اپنا قبضہ بھی جما لیا ۔ 22 جون 1947 کو فخر افغان' سرحدی گاندی' خان عبدالغفار خاں نے کہا کہ ہم پختون لوگ اِس بات کا ابھی فیصلہ کروانے کو تیار ہیں کہ ہم پاکستان میں ملینگے یا اپنا پختونستان بنائینگے' نہ کہ اِس بات پر کہ پاکستان میں ملینگے یا ہندستان میں ۔ کچھ دنوں کے بعد اُن کو جیل میں ڈال دیا گیا ۔

اِس علاقے کے لوگوں کی آزادی کو قائداعظم جناح نے اپنی دو اسپیچوں میں قبول بھی کیا تھا ۔ لیکن یہ ضرور ہے کہ اُنھوں نے بڑے احتیاط بھرے لفظ کہے تھے— " یہ صاف ہے کہ پاکستان کی کنسٹی ٹیونٹ اسمبلی ایسا ہی ودھان بنا سکتی ہے جس میں سرحد خود مختار ہو ۔" اِسکے علاوہ 3 جون 1948 کو قائداعظم نے وعدہ کیا تھا کہ پاکستان کی سرکار سرحد کی آزادی میں کوئی دخل نہیں دے گی ۔ یہاں یہ بات صاف صاف کہہ دینے کی ضرورت ہے کہ کلچر' نسل' زبان اور ریت رواج کے لحاظ سے افغانستان اور پختونستان کے لوگ ایک ہیں اور صدیوں تک پختونستان افغانستان کا جغرافی اور راج کاجی حصہ رہا ہے ۔ لیکن افغانستان کی یہ اِچھا نہیں ہے کہ پختونستان کا علاقہ اُسے مل جائے یا یہ اُسکے راج میں شامل ہوجائے ۔ افغانستان تو صرف یہ چاہتا ہے کہ اِس علاقے میں خود مختار حکومت قائم ہو اور پختونی لوگ آزاد رہیں ۔

ایشیا میں جاگرتی.

بیسویں صدی کی خاص چیز یہی ہے کہ دنیا بھر کی قوموں میں تازہ اور نیا خون دوڑ رہا ہے اور نئے نئے خیال لوگوں کے دل میں گھر کر رہے ہیں ۔ دوسرے لفظوں میں' ایک قوم پر دوسرے کا راج ہو—اِسکے بجائے آزادی اور خود مختاری کا جذبہ زور پکڑ رہا ہے ۔ پچھلی دو لڑائیوں نے اِن خیالوں کو اور بھی جاندار بنا دیا ہے ۔ ایشیا اب جاگ گیا ہے ۔ جاگتے جاگتے پچھلے پچاس برس ایشیا نے لے لئے ۔ سن 1943 میں چین میں سے اپنا حکومتی حق امریکہ نے خوشی سے چھوڑ دیا ۔ 1947 میں ہندستان سے انگریز لوگ گئے اور برما بھی آزاد ہوا ۔ اِسطرح ایشیا پھر اپنے آپے میں آ رہا ہے ۔ یہ لازمی بات ہے کہ زمانے کی پکار کا اثر پورب کے سارے دیشوں پر پڑے اور جب ہندستان اور پاکستان آزاد ہوں تو پختونی لوگوں میں بھی آزادی کی اِچھا پیدا ہو ۔ اِسلئے وقت کا تقاضا ہے کہ پختونوں کی اِس واجب اِچھا کی قدر کی جائے اور اُن کے حق کو منظور کیا جائے ۔

मुख़ालिफ़ों के एतराज़.

(1) पख्तूनिस्तान के जो मुख़ालिफ़ हैं उनमें से कुछ का कहना है कि छोटी छोटी आज़ाद हुकूमतों का ज़माना गया और अब दुनिया एक अन्तर क़ौमी इकाई या फ़ैडरेशन की तरफ़ बढ़ रही है. बहुत ठीक. हमें नाज़ के साथ अपने को दुनिया का नागरिक कहना चाहिये और हम यह भी मानते हैं कि एक अमेरिकन ने कहा था कि "या तो एक दुनिया होगी या दुनिया ही न होगी." इसमें काफ़ी सच्चाई है. लेकिन यूनो के बन जाने के बाद ही दुनिया की क़रीब क़रीब सभी क़ौमों ने हिन्दुस्तान का बंटवारा मान लिया और फ़लस्तीन का भी इसराईल और अरब फ़लस्तीन में बंटना क़बूल किया. हिन्दुस्तान के एक बहुत मशहूर वाइसराय ने यहां के बंटवारे को "सिर-से-पैर तक पागलपने की बात" कहा था. लेकिन उसी वाइसराय ने हिन्दुस्तान के दो हिस्से में बंटने की ताईद भी की. ऐसी हालत में पख्तूनों को ख़ुद-मुख़्तार होने के हक़ से क्यों महरूम रहने दिया जाए ? अगर बीच अमरीका की छोटी छोटी लोकराजी रियासतें और अरब के नज़दीक की छोटी छोटी आज़ाद रियासतें जुदा जुदा मुल्क की हैसियत से यूनो की मेम्बर शान के साथ हो सकती हैं, तो किसी भी समझदार आदमी को पख्तूनों के पैदायशी हक़ पर मुकरना नहीं चाहिये. एक आज़ाद और ख़ुद मुख़्तार पख्तूनिस्तान की उनकी मांग मुनासिब और ठीक है.

(2) दूसरे कुछ लोगों का कहना है कि पख्तूनिस्तान इतना छोटा-सा देश है कि उसका आज़ाद रह सकना ना मुमकिन सा है. बेशक, पच्छमी पैमानों से नापने पर वह एक ग़रीब देश सा बन होगा. लेकिन इस सिलसिले में हमें क़ायदे आज़म की बात याद आती है. उन्होंने मिस्टर हर्बर्ट मैथ्यूज़ से एक मुलाक़ात के दौरान में कहा था जो 21 सितम्बर 1942 के न्यूयार्क टाइम्स में छपी थी— "अफ़ग़ानिस्तान एक ग़रीब देश है, मगर उसका काम ख़ूब चलता है. यही हालत ईराक़ की है. अगर हम आज़ादी की हालत में ग़रीबा-मरू बनकर और सोच समझकर रहना चाहते हैं तो हिन्दू लोगों का इसमें क्या बिगड़ता है ?......आर्थिक हालत जैसी होगी ख़ुद संभाल कर लेगी." ठीक इसी तरह से पख्तूनों का कहना है, "अगर हम आज़ादी की हालत में ग़रीबा-मरू बन कर और सोच-समझ कर रहना चाहते हैं तो पाकिस्तान का इसमें क्या बिगड़ता है ? पख्तूनिस्तान से इतना तो बन नहीं पड़ेगा कि टैंक और बड़े बड़े हवाई जहाज़ अपने पास रख सके. फिर, अन्तर क़ौमी इन्साफ़ क़ायम रखने और हमला-चढ़ाई रोकने के लिये यूनो है ही. इसके अलावा पख्तूनिस्तान बड़ी लम्बी-चौड़ी फ़ौजें रखने और

مخالفوں کے اعتراض۔

(1) پختونستان کے جو مخالف ہیں اُن میں سے کچھ کا کہنا ہے کہ چھوٹی چھوٹی آزاد حکومتوں کا زمانہ گیا اور اب دنیا ایک انٹر قومی اکائی یا فیڈریشن کی طرف بڑھ رہی ہے۔ بہت ٹھیک۔ ہمیں ناز کے ساتھ اپنے کو دنیا کا ناگرک کہنا چاہئے اور ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ ایک امریکن نے کہا تھا کہ "یا تو ایک دنیا ہوگی یا دنیا ہی نہ ہوگی۔" اِس میں کافی سچائی ہے۔ لیکن یونو کے بن جانے کے بعد ہی دنیا کی قریب قریب سبھی قوموں نے ہندوستان کا بٹوارا مان لیا اور فلسطین کا بھی اسرائیل اور عرب فلسطین میں بٹنا قبول کیا۔ ہندوستان کے ایک بہت مشہور وائسرائے نے یہاں کے بٹوارے کو "سر سے پیر تک پاگل پن کی بات" کہا تھا لیکن اُسی وائسرائے نے ہندوستان کے دو حصے میں بٹنے کی تائید بھی کی۔ ایسی حالت میں پختونوں کو خود مختار ہونے کے حق سے کیوں محروم رہنے دیا جائے؟ گر بیچ امریکہ کی چھوٹی چھوٹی لوک راجی ریاستوں اور عرب کے نزدیک کی چھوٹی چھوٹی آزاد ریاستیں جدا جدا ملک کی حیثیت سے یونو کی ممبر شان کے ساتھ ہوسکتی ہیں تو کسی بھی سمجھدار آدمی کو پختونوں کے پیدائشی حق پر مکرنا نہیں چاہئے۔ ایک آزاد اور خود مختار پختونستان کی اُن کی مانگ مناسب اور ٹھیک ہے

(2) دوسرے کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ پختونستان اتنا چھوٹا سا دیش ہے کہ اسکا آزاد رہ سکنا ناممکن سا ہے۔ بیشک پچھمی پیمانوں سے ناپنے پر وہ ایک غریب دیش ثابت ہوگا۔ لیکن اِس سلسلے میں ہمیں قائداعظم کی بات یاد آتی ہے۔ اُنہوں نے مسٹر ہربٹ میتھیوز سے ایک ملاقات کے دوران میں کہا تھا جو 21 ستمبر 1942 کے نیویارک ٹائمس میں چھپی تھی— "افغانستان ایک غریب دیش ہے مگر اُس کا کام خوب چلتا ہے۔ یہی حالت عراق کی ہے۔ اگر ہم آزادی کی حالت میں غریبا مٹو بن کر اور سوچ سمجھکر رہنا چاہتے ہیں تو ہندو لوگوں کا اِس میں کیا بگڑتا ہے؟........ آرتھک حالت جیسی ہوگی خود سنبھال کر لے گی۔" ٹھیک اُسی طرح سے پختونوں کا کہنا ہے "اگر ہم آزادی کی حالت میں غریبا مٹو بن کر اور سوچ سمجھکر رہنا چاہتے ہیں تو پاکستان کا اِس میں کیا بگڑتا ہے؟ پختونستان سے اتنا تو بن نہیں پڑے گا کہ ٹینک اور بڑے بڑے ہوائی جہاز اپنے پاس رکھ سکے۔ پھر انٹر قومی انصاف قائم رکھنے اور حملہ چڑھائی روکنے کے لئے یونو ہے ہی۔ اِسکے علاوہ پختونستان بڑی لمبی چوڑی فوجیں رکھنے اور

विदेशों में राजदूत रखने के लिये पैसा क्यों बेकार बरबाद करेगा ? पख्तून लोग तो इज्ज़त के साथ आज़ादी और अमन चाहते हैं. इस चीज़ की गारन्टी दुनिया के बड़े बड़े देश आसानी से कर सकते हैं. जहां तक ख़ुराक की बात है पख्तूनिस्तान कमोबेश स्वावलम्बी होगा ही. और फिर, सवाल यह है कि कौन देश ऐसा है जिसे दूसरे से कुछ न कुछ नहीं लेना पड़ता ? इससे कौन इन्कार करेगा कि खाना और कपड़ा आज दुनिया के सवाल हैं दो या तीन देशों को छोड़ कर बाक़ी सब आर्थिक रूप से एक दूसरे के सहारे रहते हैं.

(3) कुछ कट्टर मुसलमानों का कहना है कि पाकिस्तानी मुसलमान और पख्तून एक ही मज़हब के मानने वाले हैं इसलिये पख्तूनिस्तान को हमेशा पाकिस्तान के अन्दर रहना चाहिये. लेकिन इसके खिलाफ़ इन्साफ़ और सच्चाई की बात यह है कि पख्तूनों को इस बात की आज़ादी होनी चाहिये कि वह अपने आने वाले ज़माने का आप से आप फ़ैसला करें और उसे जैसा चाहें बनायें. अगर पाकिस्तान बार बार इसरार के साथ कहता है कि काशमीर में लोगों की राय ले ली जाए तब पख्तूनों की गर्दन पर पाकिस्तानी जुआ ज़बरदस्ती रख देना ख़ुद मुख़्तारी के हक़ के उसूल को पैरों तले कुचलना है. पख्तून इस उसूल को कभी नहीं क़बूल करेंगे क्योंकि उनका और पाकिस्तान के मुसलमानों का धर्म एक ही है. इसलिये वह चुपचाप पाकिस्तान की फ़रमांबरदारी करें. अगर इस ग़लत उसूल को मान लिया जाए तब धर्म के नाम पर किसी भी बड़ी हकूमत में छोटी छोटी हकूमतें क़ायम करनी पड़ेंगी और कोई भी हकूमत अपनी पड़ोसी हकूमत को हड़प सकेगी. इस का यह भी मतलब होगा कि पख्तूनिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और सोवियत रूस के कुछ हिस्से जैसे ताजिस्तान, उज़बेकिस्तान और सारे अरब देशों को एक दूसरे का ख़ास हिस्सा मानना चाहिये क्योंकि इन सब जगहों के लोग इसलाम धर्म को मानते हैं. समझदार पख्तूनों की यह ठोस राय है कि मज़हब के नाम पर हिन्दुस्तान को बांट कर और पाकिस्तान को क़ायम करना इतिहास की बड़ी भयानक राजकाजी ग़लतियों में से है.

(4) सर मुहम्मद ज़फ़रुल्ला और उनके पाकिस्तानी साथी कहा करते हैं कि डुरन्ड लाइन पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के बीच एक अन्तर क़ौमी हद है जो कभी नहीं बदली जा सकती और हमेशा के लिये बनी रहेगी. हम इस दलील को थोथी नहीं तो ना समझी और ना इन्साफ़ी की बात ज़रूर कहेंगे. कौन नहीं जानता कि इस बीसवीं सदी में दुनिया तेज़ी से बदल रही है और पुरानी लकीर के फ़क़ीर बनने की मुराद यही है कि इन्सानी हक़ों और

دیشوں میں راجدوت رکھنے کے لئے پیسہ کیوں بیکار برباد کرے گا ؟ پختون لوگ تو عزت کے ساتھ آزادی اور امن چاہتے ہیں. اس چیز کی گارنٹی دنیا کے بڑے بڑے دیش آسانی سے کر سکتے ہیں . جہاں تک خوراک کی بات ہے پختونستان کم و بیش سواولمبی ہوگا ہی . اور پھر سوال یہ ہے کہ کون دیش ایسا ہے جسے دوسرے سے کچھ نہ کچھ نہیں لینا پڑتا ؟ اس سے کون انکار کریگا کہ کھانا اور کپڑا آج دنیا کے سوال ہیں . دو یا تین دیشوں کو چھوڑ کر باقی سب آرتھک روپ سے ایک دوسرے کے سہارے رہتے ہیں .

(3) کچھ کٹر مسلمانوں کا کہنا ہے کہ پاکستانی مسلمان اور پختون ایک ہی مذہب کے ماننے والے ہیں اس لئے پختونستان کو ہمیشہ پاکستان کے اندر رہنا چاہئے . لیکن اس کے خلاف انصاف اور سچائی کی بات یہ ہے کہ پختونوں کو اس بات کی آزادی ہونی چاہئے کہ وہ اپنے آنے والے زمانے کا آپ سے آپ فیصلہ کریں اور اسے جیسا چاہیں بنائیں . اگر پاکستان بار بار اصرار کے ساتھ کہتا ہے کہ کاشمیر میں لوگوں کی رائے لے لی جائے تب پختونوں کی گردن پر پاکستانی جوا زبردستی رکھ دینا خود مختاری کے حق کے اصول کو پیروں تلے کچلنا ہے . پختون اس اصول کو کبھی نہیں قبول کرینگے کیونکہ ان کا اور پاکستان کے مسلمانوں کا دھرم ایک ہی ہے اسلئے وہ چپ چاپ پاکستان کی فرمانبرداری کریں . اگر اس غلط اصول کو مان لیا جائے تب دھرم کے نام پر کسی بھی بڑی حکومت میں چھوٹی چھوٹی حکومتیں قائم کرنی پڑینگی اور کوئی بھی حکومت اپنی پڑوسی حکومت کو ہڑپ سکیگی . اسکا یہ بھی مطلب ہوگا کہ پختونستان، افغانستان، ایران اور سوویت روس کے کچھ حصے جیسے تاجستان، ازبکستان اور سارے عرب دیشوں کو ایک دوسرے کا خاص حصہ ماننا چاہئے کیونکہ ان سب جگہوں کے لوگ اسلام دھرم کو مانتے ہیں . سمجھدار پختونوں کی یہ ٹھوس رائے ہے کہ مذہب کے نام پر ہندستان کو بانٹ کر اور پاکستان کو قائم کرنا اتہاس کی بڑی بھیانک راج کاجی غلطیوں میں سے ہے .

(4) سر محمد ظفراللہ اور ان کے پاکستانی ساتھی کہا کرتے ہیں کہ ڈیورنڈ لائن پاکستان اور افغانستان کے بیچ ایک انتر قومی حد ہے جو کبھی نہیں بدلی جا سکتی اور ہمیشہ کے لئے بنی رہیگی . ہم اس دلیل کو بودی نہیں تو ناسمجھی اور ناانصافی کی ضرور کہینگے . کون نہیں جانتا کہ اس بیسویں صدی میں دنیا تیزی سے بدل رہی ہے اور پرانی لکیر کے فقیر بننے کی مراد یہی ہے کہ انسانی حقوں اور

ख़याल को ताक पर रख कर पाकिस्तान वाले पख्तूनों को उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ दबाए रखना चाहते हैं. इस दलील का दो-टूक और मज़बूत जवाब यह है कि जब बरमा और लंका—जो एक सदी तक अंगरेज़ी हिन्द साम्राज्य के हिस्सा थे—अलग अलग आज़ाद देश बन सकते हैं तो इसकी कोई वजह नहीं है कि सूबा सरहद, बिलोचिस्तान और क़बीली इलाक़े के लोगों को एक अलग राज न बनाने दिया जाए—ख़ास कर जब पिछले कई बरसों से वह इसके लिये संघर्ष कर रहे हैं.

(5) डुरन्ड लाइन कोई पाक-पवित्र चीज़ नहीं है. बल्कि वह तो अंगरेज़ी सरकार ने (जो अब ख़त्म हो चुकी है) अफ़ग़ानिस्तान के मत्थे ज़बरदस्ती मढ़ दी थी. इसलिये यूनो के चार्टर के अनुसार अब इसकी क़ानूनी अहमियत ज़रा भी नहीं रह जाती. हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज ख़त्म होने के बाद इस लाइन के कोई माने या तुक नहीं रहता. इसके अलावा पुराने बेमेल सुलहनामों का—जो एक बड़े देश ने किसी दूसरे छोटे देश से कर लिये थे, जैसे इंगलैंड ने चीन से, या अमरीका ने चीन से—जो चालीस बरस पहले किये गए थे अब कोई मतलब नहीं रह गया है. इसी तरह से डुरन्ड लाइन भी अंगरेज़ी सरकार और अफ़ग़ानिस्तान के बीच एक बेकार सुलहनामे का नतीजा है. इसलिये 1921 का अंगरेज़ अफ़ग़ान सुलहनामा भी ख़ारिज हो गया.

(6) पाकिस्तान के नेता शोर मचाते फिरते हैं कि "पख्तूनिस्तान सिर्फ़ एक फ़र्ज़ी ख़्याल है और बेपेंदी की चीज़ है." मगर असल बात यह है कि आज़ादी का आन्दोलन सिर्फ़ क़बीली इलाक़ों तक महदूद नहीं है बल्कि इसकी जड़ें सरहद और बिलोचिस्तान में भी दूर तक चली गई हैं. इन दोनों जगहों के भी हज़ारों काम करने वाले और नेता जेलों में भर दिये गए हैं. मई 1951 में लाहौर के नामी अख़बार 'सिविल एन्ड मिलिटरी गज़ट' ने एक बड़ा तगड़ा एडीटोरियल नोट लिखा था. उसमें कहा गया है "क़य्यूम हुकूमत के अन्दर पठानों के साथ जो ज़ियादतियां की जा रही हैं उनकी मिसाल अंगरेज़ी राज में भी नहीं मिलती. पठानों को यह महसूस होता है कि पाकिस्तान की सरकार बड़े इतमिनान के साथ हमारी इन मुसीबतों और आफ़तों को देख रही है और उसके (पाकिस्तान की सरकार के) दिमाग़ में यह ख़्याल ठूंस ठूंस कर भर दिया गया है कि पठानों को 'डंडे' से ही ठिकाने पर रखा जा सकता है. लेकिन पठान लोगों की बर्दाश्त अब हद तक पहुँच गई है."

पख्तूनिस्तान के आन्दोलन को दबाने के लिये पाकिस्तान ने पिछले चार बरस में जो किया है वह इन्सानियत के

انصاف کو طاق پر رکھ کر پاکستان والے پختونوں کو انکی مرضی کے خلاف دبائے رکھنا چاھتے ھیں . اس دلیل کا دو ٹوک اور مضبوط جواب یہ ھے کہ جب برما اور لنکا — جو ایک صدی تک انگریزی ھند سامراج کے حصہ تھے — الگ الگ آزاد دیش بن سکتے ھیں تو اس کی کوئی وجہ نہیں ھے کہ صوبہ سرحد، بلوچستان اور قبیلی علاقے کے لوگوں کو ایک الگ راج نہ بنانے دیا جائے — خاص کر جب پچھلے کئی برسوں سے وہ اسکے لئے سنگھرش کر رھے ھیں .

(5) ڈیورنڈ لائن کوئی پاک پوتر چیز نہیں ھے . بلکہ وہ تو انگریزی سرکار نے (جو اب ختم ھوچکی ھے) افغانستان کے متھے زبردستی مڑھ دی تھی . اسلئے یونو کے چارٹر کے انوسار اب اس کی قانونی اھمیت ذرا بھی نہیں رہ جاتی . ھندستان میں انگریزی راج ختم ھونے کے بعد اس لائن کے کوئی معنے یا تک نہیں رھتی . اسکے علاوہ پرانے بے میل صلحناموں کا — جو ایک بڑے دیش نے کسی دوسرے چھوٹے دیش سے کر لئے تھے، جیسے انگلینڈ نے چین سے، یا امریکہ نے چین سے — جو چالیس برس پہلے کئے گئے تھے اب کوئی مطلب نہیں رہ گیا ھے . اسی طرح سے ڈیورنڈ لائن بھی انگریزی سرکار اور افغانستان کے بیچ ایک بیکار صلحنامہ کا نتیجہ ھے . اس لئے 1921 کا انگریز افغان صلحنامہ بھی خارج ھوگیا .

(6) پاکستان کے نیتا شور مچاتے پھرتے ھیں کہ "پختونستان صرف ایک فرضی خیال ھے اور بے پیندی کی چیز ھے." مگر اصل بات یہ ھے کہ آزادی کا آندولن صرف قبیلی علاقوں تک محدود نہیں ھے بلکہ اسکی جڑیں سرحد اور بلوچستان میں بھی دور تک چلی گئی ھیں . ان دونوں جگہوں کے بھی ھزاروں کام کرنے والے اور نیتا جیلوں میں بھر دیئے گئے ھیں . مئی 1951 میں لاھور کے نامی اخبار 'سول اینڈ ملٹری گزٹ' نے ایک بڑا تگڑا ایڈیٹوریل نوٹ لکھا تھا . اسمیں کہا گیا ھے — "قیوم حکومت کے اندر پٹھانوں کے ساتھ جو زیادتیاں کی جارھی ھیں ان کی مثال انگریزی راج میں بھی نہیں ملتی . پٹھانوں کو یہ محسوس ھوتا ھے کہ پاکستان کی سرکار بڑے اطمینان کے ساتھ ھماری ان مصیبتوں اور آفتوں کو دیکھ رھی ھے اور اس کے (پاکستان کی سرکار کے) دماغ میں یہ خیال ٹھونس ٹھونس کر بھر دیا گیا ھے کہ پٹھانوں کو 'ڈنڈے' سے ھی ٹھکانے پر رکھا جاسکتا ھے . لیکن پٹھان لوگوں کی برداشت اب حد تک پہونچ گئی ھے."

پختونستان کے آندولن کو دبانے کے لئے پاکستان نے پچھلے چار برس میں جو کیا ھے وہ انسانیت کے

एक दम खिलाफ़ है. चारसद्दा, स्वाबी, बन्नू और दूसरी जगहों की मीटिंग और जलूसों को—जो शान्ति से अपनी राय का इज़हार कर रहे थे—तोड़ने के लिये बड़ी बड़ी ज़ियादतियां की गईं जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी. रज़मक, वान, मीरान शाह, मोहम्मद और तीराह नाम की जगहों पर हवाई जहाज़ों से बम गिराए गए. कहने की ज़रूरत नहीं कि इन चीज़ों से पख़्तून मर्दों, औरतों और बच्चों का बहुत नुक़सान हुआ.

(7) पाकिस्तान वालों के ऊपर मानो पख़्तूनिस्तान का भूत हर दम सवार रहता है. सन 1950 में जब नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ां कैलीफ़ोर्निया गए थे कुछ पख़्तून उन्हें अचानक दिखलाई पड़े. इस चीज़ को लेकर पाकिस्तान ने एक वावैला खड़ा कर दिया. और जब सौ पख़्तून नुमायन्दों ने नई दिल्ली में यूनो से अपने मामले में मदद करने के लिये अपील की तब तो उनके होश ही मानो जाते रहे.

(8) 1948 में पख़्तूनों ने एक ख़ुद-मुख़्तार हुकूमत का एलान किया जिसकी राजधानी वज़ीरिस्तान के शहर तीराह में थी और जिस के सदर मिरज़ा अली ख़ां (ईपी के फ़क़ीर) हैं. इस हुकूमत को अफ़ग़ानिस्तान ने मान भी लिया है. पख़्तूनिस्तान की पार्लियामेन्ट भी हाल ही में तीराह में क़ायम हो चुकी है. इस में पख़्तूनों ने कहा था कि हम जो आज़ादी की मांग करते हैं वह क़ुरान पाक के मुताबिक़ और हज़रत रसूलल्लाह मुहम्मद के उसूलों की बिना पर है. 23 दिसम्बर 1949 को पख़्तून रेडियो ने अपने ब्राडकास्ट में कहा था—"क़ुरान के अन्दर रसूलल्लाह के उसूलों के अन्दर ही, कहीं भी एक लफ़्ज़ या शब्द ऐसा नहीं मिलता जिसकी बिना पर यह कहा जा सके कि किसी क़ौम को यह हक़ है कि दूसरी क़ौम को आज़ादी के हक़ से उसे महरूम रखे या उसे ग़ुलाम बना कर रखे या अपने को उसका आक़ा व मालिक समझे." पख़्तून और पाकिस्तानी, दोनों ही मुसलमान हैं. इसलिये जो बात क़ुरान में कही गई है उसकी अहमियत दोनों के लिये ही बहुत ज़ियादा होनी चाहिये. उस ब्राडकास्ट में कहा गया—"एक दूसरी हमला करने वाली क़ौम पख़्तूनिस्तान के लोगों पर ज़बरदस्ती असर क़ायम करना चाहती है और इस्लाम के नाम पर, धोके और झूट के ज़रिये उन्हें अपना ग़ुलाम बनाए रखना चाहती है."

हमें पूरी उम्मीद है कि जल्दी ही यूनो मौक़े-महल की अहमियत को समझ कर उसके मुताबिक़ क़दम उठाएगी और जो सावधानी की बात सर केर फ़्रेज़र टैटलर ने कही है उस पर ध्यान देगी. उनका कहना है कि "अगर रूस और हिन्दुस्तान (जिसकी बजाय अब पाकिस्तान

ایک دم خلاف ہے۔ چار سدّا' صوابی' بنّو اور دوسری جگہوں کی میٹنگ اور جلوسوں کو—جو شانتی سے اپنی رائے کا اظہار کر رہے تھے—توڑنے کے لئے بڑی بڑی زیادتیاں کی گئیں جسکی کوئی ضرورت نہیں تھی۔ رزمک' وان' میران شاہ' محمد اور تیراہ نام کی جگہوں پر ہوائی جہازوں سے بم گرائے گئے۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ ان چیزوں سے پختون مردوں' عورتوں اور بچوں کا بہت نقصان ہوا۔

(7) پاکستان والوں کے اوپر مانو پختونستان کا بھوت ہر دم سوار رہتا ہے۔ سن 1950 میں جب نواب زادہ لیاقت علی خاں کیلیفورنیا گئے تو کچھ پختون انہیں اچانک دکھلائی پڑے۔ اس چیز کو لیکر پاکستان نے ایک واویلا کھڑا کردیا۔ اور جب سو پختون نمائندوں نے نئی دلی میں 'یونو' سے اپنے معاملے میں مدد کرنے کے لئے اپیل کی تب تو اُن کے ہوش ہی مانو جاتے رہے۔

(8) 1948 میں پختونوں نے ایک خود مختار حکومت کا اعلان کیا جس کی راج دھانی وزیرستان کے شہر تیراہ میں تھی اور جس کے صدر مرزا علی خاں (اپی کے فقیر) ہیں۔ اس حکومت کو افغانستان نے مان بھی لیا ہے۔ پختونستان کی پارلیامنٹ بھی حال ہی میں تیراہ میں قائم ہو چکی ہے۔ اُس میں پختونوں نے کہا تھا کہ ہم جو آزادی کی مانگ کرتے ہیں وہ قرآن پاک کے مطابق اور حضرت رسول اللہ محمد کے اُصولوں کی بنا پر ہے۔ 23 دسمبر 1949 کو پختون ریڈیو نے اپنے براڈکاسٹ میں کہا تھا—"قرآن کے اندر رسول اللہ کے اصولوں کے اندر ہی' کہیں بھی ایک لفظ یا شبد ایسا نہیں ملتا جس کی بنا پر یہ کہا جاسکے کی کسی قوم کو یہ حق ہے کہ دوسری قوم کی آزادی کے حق سے اُسے محروم رکھے یا اُسے غلام بناکر رکھے یا اپنے کو اس کا آقا و مالک سمجھے۔" پختون اور پاکستانی' دونوں ہی مسلمان ہیں۔ اسلئے جو بات قرآن میں کہی گئی ہے اُس کی اہمیت دونوں کے لئے ہی بہت زیادہ ہونی چاہئے۔ اُس براڈکاسٹ میں کہا گیا—"ایک دوسری حملہ کرنے والی قوم پختونستان کے لوگوں پر زبردستی اثر قائم کرنا چاہتی ہے اور اسلام کے نام پر' دھوکے اور جھوٹ کے ذریعہ انہیں اپنا غلام بنائے رکھنا چاہتی ہے۔"

ہمیں پوری امید ہے کہ جلدی ہی یونو موقعے محل کی اہمیت کو سمجھ کر اس کے مطابق قدم اٹھائیگی اور جو ساودھانی کی بات سر کیر فریزر ٹیٹلر نے کہی ہے اُس پر دھیان دیگی۔ اُن کا کہنا ہے کی "اگر روس اور ہندستان (جس کے بجائے اب پاکستان

(होना चाहिये) के बीच के देशों में अमन-शान्ति नहीं रहती है और छोटों से बड़े बखेड़े होते हैं तो इन का फ़ायदा अगर किसी को होगा तो कम्यूनिस्टों को. इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि क़बीलों का सवाल काफ़ी मुश्किल और टेढ़ा सवाल है. इसका हल धीरज, स्यासत और ख़ासकर सहयोग से ही निकल सकता है. अगर इसे शान्ति के साथ हल कर लिया गया तो यह दोनों सरकारों की (जिनका इसमें हाथ है) एक ख़ासी सेवा होगी जिससे दक्खिन एशिया मज़बूत बन सकेगा."

पख़्तूनों का पक्ष इन्साफ़ का पक्ष है. उनकी मांग मुनासिब और सही है और अपनी आज़ादी तो वह ज़रूर हासिल कर के रहेंगे. लेकिन लोकशाही चाहने वाली दुनिया का फ़र्ज़ है कि आज़ादी के लिये जी-जान से प्यारे इस आन्दोलन में वह अपनी नैतिक और अख़लाक़ी मदद दे. दुनिया के लोकशाही देशों का फ़र्ज़ है कि पख़्तूनिस्तान के लोगों का सही हक़ उन्हें दिलाएं. दुनिया की तरक़्क़ी पसंद ताक़तों को चाहिये कि पाकिस्तान को ठीक रास्ते पर लाने के लिये ज़मीन आसमान एक कर दें. साम्राज्यशाही और हुकूमतशाही के दिन लद गए और यह पाकिस्तानियों की बड़ी नाइन्साफ़ी है कि वह डंडे के ज़ोर से या और तरह तरह से सता-सता कर पख़्तूनों पर राज करने के निकम्मे ख़्याल से चिपके रहें. आज़ादी हर इन्सान का, हर क़ौम का जन्मजात हक़ है. पख़्तून लोग भी बस यही हक़ चाहते हैं—न कोई चीज़ ज़ियादा, न कोई चीज़ कम.

—'हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड' से अनुवाद.

کھلواڑ) کی وجہ سے دیشوں میں امن شانتی نہیں رہتی اور جو زور سے جھگڑے بکھیڑے ہوتے ہیں تو ان سے فائدہ اگر کسی کو ہوگا تو کمیونسٹوں کو. اس سے کوئی انکار نہیں کرسکتا کہ قبیلوں کا سوال کافی مشکل اور ٹیڑھا سوال ہے. اس کا حل دھیرج، سیاست اور خاص کر سہیوگ سے ہی نکل سکتا ہے. اگر اسے شانتی کے ساتھ حل کرلیا گیا تو یہ دونوں سرکاروں کی (جن کا اس میں ہاتھ ہے) ایک خاصی سیوا ہوگی جس سے دکھن ایشیا مضبوط بن سکیگا."

پختونوں کا پکش انصاف کا پکش ہے. ان کی مانگ مناسب اور صحیح ہے اور اپنی آزادی تو وہ ضرور حاصل کرکے رہینگے. لیکن لوک شاہی چاہنے والی دنیا کا فرض ہے کہ آزادی کے لئے جی جان سے پیارے اس آندولن میں وہ اپنی نیتک اور اخلاقی مدد دے. دنیا کے لوک شاہی دیشوں کا فرض ہے کہ پختونستان کے لوگوں کا صحیح حق انہیں دلائیں. دنیا کی ترقی پسند طاقتوں کو چاہئے کہ پاکستان کو ٹھیک راستے پر لانے کے لئے زمین آسمان ایک کردیں. سامراج شاہی اور حکومت شاہی کے دن لد گئے اور یہ پاکستانیوں کی بڑی ناانصافی ہے کہ وہ ڈنڈے کے زور سے یا اور طرح طرح سے ستا ستا کر پختونوں پر راج کرنے کے نکمے خیال سے چپکے رہیں. آزادی ہر انسان کا ہر قوم کا جنم ذات حق ہے. پختون لوگ بھی بس یہی حق چاہتے ہیں—نہ کوئی چیز زیادہ، نہ کوئی چیز کم.

— ہندستان اسٹینڈرڈ سے انوواد.

मारथा

(ख़लील जिब्रान)

बाप उसे मां की गोद में छोड़ कर मर गया. मां उसके दस साल की होने से पहले ही चल बसी. वह अनाथ एक ग़रीब पड़ोसी के घर में रहने लगी जो अपनी बीवी बच्चों के साथ एक छोटी सी झोंपड़ी में रहता था. यह झोंपड़ी बस्ती से दूर लेबनान की सुन्दर तराई में थी.

विरासत में बाप उसके लिये अपना नाम और एक कच्ची पक्की झोंपड़ी छोड़ गया था. वह झोंपड़ी अब भी शाह बलूत के पेड़ों के बीच खड़ी थी. मां से उसे दुख के आंसू और अनाथ ज़िन्दगी मिली थी. अपने वतन में

مارتھا

(خلیل جبران)

باپ اسے ماں کی گود میں چھوڑ کر مر گیا. ماں اس کے دس سال کی ہونے سے پہلے چل بسی. وہ اناتھ ایک غریب پڑوسی کے گھر میں رہنے لگی. جو اپنی بیوی بچوں کے ساتھ ایک چھوٹی سی جھونپڑی میں رہتا تھا یہ جھونپڑی بستی سے دور لبنان کی سندر ترائی میں تھی.

وراثت میں باپ اس کے لئے اپنا نام اور ایک کچی پکی جھونپڑی چھوڑ گیا تھا. وہ جھونپڑی اب بھی شاہ بلوط کے پیڑوں کے بیچ کھڑی تھی. ماں سے اسے دکھ کے آنسو اور اناتھ زندگی ملی تھی. اپنے وطن میں

थी वह परदेसी थी. उन घने सायादार पेड़ों और ऊँची पहाड़ियों के बीच वह अकेली फिरती थी. रोज़ सुबह होते ही नंगे पैर और फटे चिथड़ों में लिपटी हुई वह गाय चराने दूर तराई में जाती जहाँ चरागाह था और किसी पेड़ की साया में बैठी रहती. वह कभी परिंदों की बोली के साथ गाने लगती और कभी बहते हुए झरने की ताल पर रोने लगती, या गायों को भरपेट घास चरते देख कर उनसे जलने लगती. फूलों और तितलियों का खेल देखते देखते दिन पूरा हो जाता. सूरज डूब जाता और भूक सताने लगती. वह झोंपड़ी में लौट आती और अपने मालिक की बेटी के साथ सिरके और ज़ैतून के तेल में रक्खे हुए सूखे फलों के साथ मक्के की रोटी खाने बैठ जाती. खाने के बाद वह थोड़ी सी घास बिखराकर अपनी बाँह के तकिए के सहारे लेट जाती. नींद में वह कराह उठती और चाहती कि ज़िन्दगी एक ऐसी लम्बी नींद बन जाए जिस में न सपने आवें और न जागना पड़े. सुबह होते ही उस का मालिक उसे बुरी तरह झकझोर कर उठा देता. वह काँपती सहमी फिर से दिन का काम शुरू कर देती. इस तरह उन दूर की पहाड़ियों और तराई के बीच अभागिन मारथा के दिन बीतते रहे.

कुछ ही दिनों बाद उसके दिल में नये अनजाने जज़्बात ने करवट ली. जैसे कोई अनजान फूल अपने अन्दर की महक को जानने लगा हो. सपनों और अजीब अजीब ख़यालों ने उसे आ घेरा जैसे किसी तालाब के किनारे ढोर घिर आए हों. वह अब जवान थी. उसे चुपके से कोई कह गया कि वह एक ऐसी धरती है जिस पर ज्ञान का पहला ही बीज अंकुआ देगा और अनुभव के शुभ चरन पड़ेंगे. वह लड़की जो इतनी अजीब और पाक थी भाग्य के खोटे पन से एक किसान के घर में क़ैदी की तरह दिन बिता रही थी. उसे साल के सब दिन और सब मौसम एक से थे. सूरज और धरती के बीच उड़ने वाले अनजान फ़रिश्ते की तरह वह उस गाँव की अबूझ शोभा थी.

जिन लोगों ने अपनी ज़िन्दगी के ज़ियादातर दिन बड़े बड़े शहरों में गुज़ारे हैं वह लेबनान के गाँव और झोंपड़ियों में रहने वालों की ज़िन्दगी की कल्पना नहीं कर सकते. हम लोग आज कल की तहज़ीब के बहाव में बह जाते हैं. हम या भूल गए हैं या भूलने की कोशिश में हैं कि उस ख़ूबसूरत सीधी सादी और रूहानी तौर पर पाक ज़िन्दगी का क्या फ़लसफ़ा है ? अगर हम मुंह फेर कर देखें तो मालूम होगा कि वहाँ बसंत की ख़ुशियाँ हैं और गरमी की नींद. पतझड़ के दिनों में वहाँ खलिहानों की मेहनत है और जाड़े के दिनों में गरमी का आराम. गोया क़ुदरत

تھی وہ پردیسی تھی ۔ اُن گھنے سایہ‌دار پیڑوں اور اونچی پہاڑیوں کے بیچ وہ اکیلی پھرتی تھی ۔ روز صبح ہوتے ہی ننگے پیر اور پھٹے چیتھڑوں میں لپٹی ہوئی وہ گائے چرانے دور ترائی میں جاتی جہاں چراگاہ تھی اور کسی پیڑ کی سایہ میں بیٹھی رہتی ۔ وہ کبھی پرندوں کی بولی کے ساتھ گانے لگتی اور کبھی بہتے ہوئے چشمے کی تال پر رونے لگتی، یا گایوں کو بھر پیٹ گھاس چرتے دیکھ کر اُن سے جلنے لگتی. پھولوں اور تتلیوں کا کھیل دیکھتے دیکھتے دن پورا ہوجاتا ۔ سورج ڈوب جاتا اور بھوک ستانے لگتی ۔ وہ جھونپڑی میں لوٹ آتی اور اپنے مالک کی بیٹی کے ساتھ سرکے اور زیتون کے تیل میں رکھے ہوئے سوکھے پھلوں کے ساتھ مکے کی روٹی کھانے بیٹھ جاتی ۔ کھانے کے بعد وہ تھوڑی سی گھاس بکھرا کر اپنی بانہہ کے تکیے کے سہارے لیٹ جاتی ۔ نیند میں وہ کراہ اٹھتی اور چاہتی کہ زندگی ایک ایسی لمبی نیند بن جائے جس میں نہ سپنے آویں اور نہ جاگنا پڑے ۔ صبح ہوتے ہی اس کا مالک اسے بری طرح جھنجھوڑ کر اٹھا دیتا ۔ وہ کانپتی سہمی پھر سے دن کا کام شروع کر دیتی ۔ اس طرح اُن دور کی پہاڑیوں اور ترائی کے بیچ ابھاگن مارتھا کے دن بیتتے رہے

کچھ ہی دنوں بعد اُس کے دل میں نئے انجانے جذبات نے کروٹ لی. جیسے کوئی انجان پھول اپنے اندر کی مہک کو جاننے لگا ہو ۔ سپنوں اور عجیب عجیب خیالوں نے اُسے آ گھیرا جیسے کسی تالاب کے کنارے ڈھور گھر آئے ہوں ۔ وہ اب جوان تھی ۔ اُسے چپکے سے کوئی کہہ گیا کہ وہ ایک ایسی دھرتی ہے جس پر گیان کا پہلا ہی بیج انکوا دے گا اور انوبھو کے شبھ چرن پڑیں گے ۔ وہ لڑکی جو اتنی عجیب اور پاک تھی بھاگیہ کے کھوٹے پن سے ایک کسان کے گھر میں قیدی کی طرح دن بتا رہی تھی. اُسے سال کے سب دن اور سب موسم ایک سے تھے ۔ سورج اور دھرتی کے بیچ اُڑنے والے انجان فرشتے کی طرح وہ اُس گاؤں کی اَبوجھ شوبھا تھی ۔

جن لوگوں نے اپنی زندگی کے زیادہ تر دن بڑے بڑے شہروں میں گذارے ہیں وہ لبنان کے گاؤں اور جھونپڑیوں میں رہنے والوں کی زندگی کی کلپنا نہیں کرسکتے ۔ ہم لوگ آج کل کی تہذیب کے بہاؤ میں بہہ جاتے ہیں ۔ ہم یا بھول گئے ہیں یا بھولنے کی کوشش میں ہیں کہ اُس خوبصورت سیدھی سادی روحانی طور پر پاک زندگی کا کیا فلسفہ ہے ؟ اگر ہم منہ پھیر کر دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ وہاں بسنت کی خوشیاں ہیں اور گرمی کی نیند. پت جھڑ کے دنوں میں وہاں کھلیانوں کی محنت ہے اور جاڑے کے دنوں میں گرمی کا آرام ۔ گویا قدرت

जहाँ अपने सब साये संसार में दिखाई देती है. दिखावे की दौलत में हम लोग इन देहातियों से भले ही बढ़े चढ़े हों लेकिन उन लोगों के दिल हम लोगों से कहीं ऊंचे हैं. हम लोग बोते अधिक हैं पर काटते कुछ नहीं. वह जो कुछ बोते हैं उसे काटते भी हैं. हम लोग हिर्सो हवस के गुलाम हैं, वह संतोष के मासूम बालक हैं. हमारी जिंदगी के प्याले का पानी कड़ुवाहट, नाउम्मीदी, डर और थकान से गन्दला हो रहा है. उनके प्याले का पानी साफ और निखरा हुआ है.

मारथा सोलह साल की हो गई थी. उसकी रूह एक चमकीला आईना थी जिस में गाँव की सुन्दरता साफ झलकती थी. उसका दिल उन लम्बी चौड़ी तराइयों की तरह था जहाँ आवाज गूँज कर लौट आती है.

एक दिन चैत की पतझड़ में जब कि तमाम फिज़ा में निराशा छा रही थी, वह एक चश्मे के किनारे बैठी थी, जैसे पिंजरे के किसी पंछी को छुट्टी मिली हो या कोई कवि अपने ख्यालों की बंदिश से छूट गया हो. वह पीली पत्तियों का पेड़ों से झड़ना देख रही थी. हवा उन पत्तियों से इस तरह खेल रही थी जिस तरह मौत आदमी की जिन्दगी से खेलती है. फूल मुरझा गए थे और उनके दिल कुम्हला कर टुकड़े टुकड़े हो चुके थे. फूलों के बीज धूल में इस तरह जमा हो रहे थे जिस तरह औरतें लड़ाई या दंगे के दिनों में अपने सारे जेवर जमा करती हैं.

मारथा जब फूलों और पेड़ों के साथ उनके ग़म में ग़मगीन बैठी थी, उसने एक घोड़े की टाप सुनी. घूम कर देखा कि एक घुड़सवार उसी की तरफ आ रहा है. उसकी सजधज से अमीरी झलक रही है. वह घोड़े से उतर कर मारथा के साथ ऐसे अदब से पेश आया जैसे आज तक कोई आदमी उससे पेश न आया था.

"मैं राह भूल गया हूँ, क्या आप मुझे रास्ता बता सकेंगी?" उसने पूछा.

वह चश्मे के किनारे एक हरी शाख की तरह तनकर खड़ी हो गई और बोली—"मैं रास्ता नहीं जानती. क्या अपने मालिक से पूछ आऊँ? वह जानते हैं." उसने यह शब्द डरते, शरमाते और अदब से कहे. उसकी कमसिन अदा और भी सुहावनी हो गई. वह जैसे ही जाने लगी घुड़सवार ने उसे थाम लिया. रगों में जवानी की रंगीन शराब उबल पड़ी. निगाहें बदल गईं. वह बोला—"नहीं, जाओ नहीं." मारथा भी चुप खड़ी रह गई. उसकी बोली में ऐसी ताकत थी कि वह आगे नहीं बढ़ सकी. मारथा ने कनखियों से उसकी तरफ देखा. वह भी मारथा की तरफ ऐसे गौर से देख रहा था जिसका मतलब वह नहीं समझ सकी. इसके बाद वह कुछ ऐसे जादू भरे अंदाज से मुस्कराया कि

یہاں اپنے سب ناز و انداز میں دکھائی دیتی ہے. دکھاوے کی دولت میں ہم لوگ ان دیہاتیوں سے بھلے ہی بڑھے چڑھے ہوں لیکن ان لوگوں سے کہیں اونچے ہیں. ہم لوگ بوتے ادھک ہیں پر کاٹتے کچھ نہیں. وہ جو کچھ بوتے ہیں اسے کاٹتے بھی ہیں. ہم لوگ حرص و ہوس کے غلام ہیں، وہ سنتوش کے معصوم بالک ہیں. ہماری زندگی کے پیالے کا پانی کڑواہٹ، ناامیدی، ڈر اور تھکن سے گدلا ہو رہا ہے. ان کے پیالے کا پانی صاف اور نکھرا ہوا ہے.

مارتھا سولہ سال کی ہو گئی تھی. اس کی روح ایک چمکیلا آئینہ تھی جس میں گاؤں کی سندرتا صاف جھلکتی تھی. اس کا دل ان لمبی چوڑی ترائیوں کی طرح تھا جہاں آواز گونج کر لوٹ آتی ہے.

ایک دن چیت کی پت جھڑ میں جبکہ تمام فضا میں نراشا چھا رہی تھی، وہ ایک چشمے کے کنارے بیٹھی تھی، جیسے پنجرے کے کسی پنچھی کو چھٹی ملی ہو یا کوئی کوی اپنے خیالوں کی بندش سے چھوٹ گیا ہو. وہ پیلی پتیوں کا پیڑوں سے جھڑنا دیکھ رہی تھی. ہوا ان پتیوں سے اس طرح کھیل رہی تھی جس طرح موت آدمی کی زندگی سے کھیلتی ہے. پھول مرجھا گئے تھے اور ان کے دل کمھلا کر ٹکڑے ٹکڑے ہو چکے تھے. پھولوں کے بیج دھول میں اس طرح جمع ہو رہے تھے جس طرح عورتیں لڑائی یا دنگے کے دنوں میں اپنے زر و زیور جمع کرتی ہیں.

مارتھا جب پھولوں اور پیڑوں کے ساتھ ان کے غم میں غمگین بیٹھی تھی اس نے ایک گھوڑے کی ٹاپ سنی. گھوم کر دیکھا کہ ایک گھڑ سوار اسی کی طرف آ رہا ہے. اس کی سج دھج سے امیری جھلک رہی ہے. وہ گھوڑے سے اتر کر مارتھا کے ساتھ ایسے ادب سے پیش آیا جیسے آج تک کوئی آدمی اس سے پیش نہ آیا تھا.

"میں راہ بھول گیا ہوں، کیا آپ مجھے راستہ بتا سکیں گی؟" اس نے پوچھا.

وہ چشمے کے کنارے ایک ہری شاخ کی طرح تن کر کھڑی ہو گئی اور بولی—"میں راستہ نہیں جانتی. کیا اپنے مالک سے پوچھ آؤں؟ وہ جانتے ہیں." اس نے یہ لفظ ڈرتے، شرماتے اور ادب سے کہے. اس کی کمسن ادا اور بھی سہانی ہو گئی. وہ جیسے ہی جانے لگی گھڑ سوار نے اسے تھام لیا. رگوں میں جوانی کی رنگین شراب ابل پڑی. نگاہیں بدل گئیں. وہ بولا—"نہیں، جاؤ نہیں." مارتھا بھی چپ کھڑی رہ گئی. اس کی بولی میں ایسی طاقت تھی کہ وہ آگے نہیں بڑھ سکی. مارتھا نے کنکھیوں سے اس کی طرف دیکھا. وہ بھی مارتھا کی طرف ایسے غور سے دیکھ رہا تھا جس کا مطلب وہ نہیں سمجھ سکی. اس کے بعد وہ کچھ ایسے جادو بھرے انداز سے مسکرایا کہ

उसकी मिठास पर मारथा की आँखें भर आईं. उन प्यार भरी नजरों ने मारथा के क़दमों को चूमा और फिर आँखें मारथा की सुन्दर कलाईयों, सुडौल गरदन और मुलायम घन बालों पर जमी रहीं. वह लाज के मारे चुप खड़ी थी. न वहाँ से जाना चाहती थी और न यह जान सकी कि उसकी बोली क्यों बंद हो गई.

मारथा घर नहीं लौटी. गायें अकेली घर चली आईं. जब मालिक घर आया तो उसने चारों तरफ़ मारथा को ढूँढा. वह कहीं दिखाई नहीं दी. उसने ज़ोर ज़ोर से "मारथा ! मारथा !!" आवाज़ें दीं लेकिन पहाड़ियों से गूंज और हवा की सनसनाहट के सिवा कुछ सुनाई नहीं दिया. निराश हो कर वह घर लौट आया और अपनी बीवी से सब हाल कह सुनाया. वह भी रात भर रोती रही और दिल में यही सोचती रही कि—"मैंने मारथा को सपने में किसी जंगली जानवर के चंगुल में बिलखते हँसते देखा है."

मारथा की इतनी ही कहानी मुझे उस गाँव से मालूम हो सकी. मुझे यह सब एक बूढ़े देहाती ने सुनाया जो मारथा को बचपने से जानता था. वह वहाँ से ग़ायब हो गई थी और अपने पीछे सिर्फ़ दो निशानियाँ छोड़ गई थी—मालकिन की आँखों में आँसू की कुछ बूंदें और एक दुखभरी याद जो सुबह की आमद के साथ सारी तराई में फैल जाती और शबनम की बूँद की तरह ख़त्म हो जाती.

उत्तर लेबनान में कालेज की छुट्टियाँ बिता कर पतझड़ में मैं बेरुत लौट आया. कालेज लौटने से पहले मैं अपने साथियों के साथ शहर में आज़ादी का मज़ा लेता हुआ घूमता रहा. वह आज़ादी हमें घर पर और कालेज की चहारदीवारी में कभी मैयस्सर नहीं होती. यह आज़ादी ऐसी होती है जैसे पिंजरे का दरवाज़ा खुला पा कर परिंदा उड़ गया हो और उसके दिल में आज़ादी का नग़मा और ख़ुशी गूँज रही हो.

जवानी कितना ख़ुशनुमा सपना है लेकिन उसकी ख़ूबसूरती किताबों की दलदल में फँसी हुई है. जवानी की आमद कितनी ज़ोरदार होती है.

क्या वह दिन कभी आवेगा जब दानिशमंद लोग जवानी के सपनों और इल्म की ख़ूबियों को मिला सकेंगे ? क्या कभी ऐसा दिन होगा जब इन्सान की उस्ताद क़ुदरत बनेगी और आदमी इन्सानियत की किताबों से ज़िन्दगी के मदरसे में पढ़ेगा ? क्या वह दिन आएगा ?

हम नहीं जानते लेकिन एक इच्छा है कि हम हमेशा ऊपर की तरफ़, रूहानी तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ें और उस तरक़्क़ी का यह नतीजा है कि हम अपनी दया और प्रेम से क़ुदरत की ख़ूबसूरती को समझें और दुनिया में ख़ुशियाँ बिखेरें.

اسکی مٹھاس پر مارتھا کی آنکھیں بھر آئیں ۔ ان پیار بھری نظروں نے مارتھا کے قدموں کو چوما اور پھر آنکھیں مارتھا کی سندر کلائیوں، سڈول گردن اور ملائم گھنے بالوں پر جمی رہیں ۔ وہ لاج کے مارے چپ کھڑی تھی۔ نہ وہاں سے جانا چاہتی تھی اور نہ یہ جان سکی کہ اسکی بولی کیوں بند ہوگئی ۔

مارتھا گھر نہیں لوٹی ۔ گائیں اکیلی گھر چلی آئیں ۔ جب مالک گھر آیا تو اسنے چاروں طرف مارتھا کو ڈھونڈھا ۔ وہ کہیں دکھائی نہیں دی ۔ اسنے زور زور سے "مارتھا ! مارتھا !!" آوازیں دیں لیکن پہاڑیوں سے گونج اور ہوا کی سنسناہٹ کے سوا کچھ سنائی نہیں دیا ۔ نراش ہو کر وہ گھر لوٹ آیا اور اپنی بیوی سے سب حال کہہ سنایا ۔ وہ بھی رات بھر روتی رہی اور دل میں یہی سوچتی رہی کہ—"میں نے مارتھا کو سپنے میں کسی جنگلی جانور کے چنگل میں بلکتے ہنستے دیکھا ہے ۔"

مارتھا کی اتنی ہی کہانی مجھے اس گاؤں سے معلوم ہوسکی ۔ مجھے یہ سب ایک بوڑھے دیہاتی نے سنایا جو مارتھا کو بچپنے سے جانتا تھا ۔ وہ وہاں سے غائب ہوگئی تھی اور اپنے پیچھے صرف دو نشانیاں چھوڑ گئی تھی— مالکن کی آنکھوں میں آنسو کی کچھ بوندیں اور ایک دکھ بھری یاد جو صبح کی آمد کے ساتھ ساری ترائی میں پھیل جاتی اور شبنم کی بوند کی طرح ختم ہو جاتی ۔

اتر لبنان میں کالج کی چھٹیاں بتا کر پتجھڑ میں بیروت لوٹ آیا ۔ کالج لوٹنے سے پہلے میں اپنے ساتھیوں کے ساتھ شہر میں آزادی کا مزا لیتا ہوا گھومتا رہا ۔ وہ آزادی ہمیں گھر پر اور کالج کی چہاردیواری میں کبھی میسر نہیں ہوتی ۔ یہ آزادی ایسی ہوتی ہے جیسے پنجرے کا دروازہ کھلا پا کر پرندہ اڑ گیا ہو اور اس کے دل میں آزادی کا نغمہ اور خوشی گونج رہی ہو ۔

جوانی کتنا خوشنما سپنا ہے لیکن اسکی خوبصورتی کتابوں کی دلدل میں پھنسی ہوئی ہے ۔ جوانی کی آمد کتنی زوردار ہوتی ہے ۔

کیا وہ دن کبھی آوے گا جب دانشمند لوگ جوانی کے سپنوں اور علم کی خوبیوں کو ملا سکینگے ؟ کیا کبھی ایسا دن ہوگا جب انسان کی استاد قدرت بنے گی اور آدمی انسانیت کی کتابوں سے زندگی کے مدرسے میں پڑھے گا ؟ کیا وہ دن آئے گا ؟

ہم نہیں جانتے لیکن ایک اچھا ہے کہ ہم ہمیشہ اوپر کی طرف، روحانی ترقی کی طرف بڑھیں اور اس ترقی کا یہ نتیجہ ہے کہ ہم اپنی دیا اور پریم سے قدرت کی خوبصورتی کو سمجھیں اور دنیا میں خوشیاں بکھیریں ۔

एक दिन शाम को मैं अपने बरामदे में बैठा राहगीरों को देख रहा था कि इतने में एक बालक मेरे पास आया. उसकी उम्र कोई पाँच साल की होगी, कपड़े फटे पुराने, कंधे पर एक थाली में फूलों के गुच्छे, सहमी आवाज़ जो मानो उसे पुरखों से मिलती आई हो, उसने मुझ से फूलों का एक गुच्छा ख़रीद लेने की इल्तजा की.

मैंने उसके छोटे और पीले चेहरे की तरफ़ ग़ौर से देखा. उसकी आँखों में थकान और ग़रीबी का अँधेरा छाया हुआ था. उसका मुँह इस तरह खुला था जैसे कोई घाव मुंह बाए हो. उसकी दुबली देह उन फूलों पर इस तरह झुकी हुई थी जैसे हरे पौधों के बीच कोई मुरझाया हुआ गुलाब का पौधा हो. मैंने एक ही नज़र में यह सब कुछ देख लिया. मैं उस पर रहम खा कर मुस्करा दिया. मेरी मुस्कराहट में हँसी नहीं बल्कि आँसू थे. यह हँसी भी क्या है जो हमारे दिल की गहराई से छलक कर होंठों की सतह पर आ जाती है. अगर हम उस पर ध्यान न दें तो वह आँखों की राह बह निकलती है.

मैंने उससे कुछ फूल ख़रीदे लेकिन असल में मैं उसकी बातें मोल लेना चाहता था. उसकी गूँगी नज़रों के पीछे एक दुख की कहानी छिपी थी. ग़रीब की दुख भरी कहानी जो दिनों के वरक़ पर लगातार अपना नाटक दिखा रही थी. चूँकि यह दुख भरा नाटक है इस पर लोगों की निगाह कम ही पड़ती है, जब मैंने प्यार भरे शब्दों में उससे कुछ कहा तो वह भी सहारा पाकर दोस्त बन गया क्योंकि इन सरीखे लड़कों को औरों से सदा फटकार ही मिला करती है. लोग उन्हें यह नहीं समझते कि ये भी बदक़िस्मती के तीरों से घायल नन्हें से दिल हैं. मैंने उससे उसका नाम पूछा—

"फ़ौवाद" उसने नीची नज़र किये हुए कहा.

"तुम किसके बेटे हो, तुम्हारे मां बाप कहाँ हैं ?"

"मारथा का बेटा हूं जो बान गांव की औरत है."

"तुम्हारा बाप कहाँ है ?" मैंने पूछा.

उसने सिर हिला दिया जैसे वह यह जानता ही न हो कि 'बाप' क्या चीज़ होती है.

"अब तुम्हारी मां कहाँ है." फ़ौवाद ?

"घर पर है, बीमार."

उस बच्चे के इन चन्द शब्दों से मेरे कान जल उठे. दिल की गहराई में अजीबो ग़रीब सूरतें नज़र आने लगीं. मैं फ़ौरन समझ गया कि अभागिन मारथा बेरुत में बीमार है वह लड़की जो कल तक पेड़ों और पहाड़ों की गोद में महफ़ूज़ थी आज भूख की मारी शहर में तड़प रही है. वह अनाथ

اُس دن شام کو میں اپنے برآمدے میں بیٹھا راہ گیروں کو دیکھ رہا تھا کہ اتنے میں ایک بالک میرے پاس آیا ۔ اسکی عمر کوئی پانچ سال کی ہوگی۔ کپڑے پھٹے پرانے، کندھے پر ایک تھالی میں پھولوں کے گچھے، سہمی آواز جو مانو اُسے پرکھوں سے ملتی آئی ہو، اُسنے مجھ سے پھولوں کا ایک گچھا خرید لینے کی التجا کی ۔

میں نے اُس کے چھوٹے اور پیلے چہرے کی طرف غور سے دیکھا ۔ اُسکی آنکھوں میں تھکان اور غریبی کا اندھیرا چھایا ہوا تھا ۔ اُسکا منہ اِسطرح کھلا تھا جیسے کوئی گھاؤ منہ بائے ہو ۔ اُسکی دبلی دیہہ اُن پھولوں پر اِس طرح جھکی ہوئی تھی جیسے ہرے پودوں کے بیچ کوئی مرجھایا ہوا گلاب کا پودھا ہو ۔ میں نے ایک ہی نظر میں یہ سب کچھ دیکھ لیا ۔ میں اُس پر رحم کھا کر مسکرا دیا ۔ میری مسکراہٹ میں ہنسی نہیں بلکہ آنسو تھے ۔ یہ ہنسی بھی کیا ہے جو ہمارے دل کی گہرائی سے چھلک کر ہونٹوں کی سطح پر آجاتی ہے ۔ اگر ہم اُس پر دھیان نہ دیں تو وہ آنکھوں کی راہ بہہ نکلتی ہے ۔

میں نے اُس سے کچھ پھول خریدے لیکن اصل میں میں اُسکی باتیں مول لینا چاہتا تھا ۔ اُسکی گونگی نظروں کے پیچھے ایک دکھ کی کہانی چھپی تھی ۔ غریب کی دکھ بھری کہانی جو دنوں کے ورق پر لگاتار اپنا ناٹک دکھا رہی تھی ۔ چونکہ یہ دکھ بھرا ناٹک ہے اِس پر لوگوں کی نگاہ کم ہی پڑتی ہے ۔ جب میں نے پیار بھرے شبدوں میں اُس سے کچھ کہا تو وہ بھی سہارا پا کر دوست بن گیا کیونکہ اُس سریکھے لڑکوں کو اوروں سے سدا پھٹکار ہی ملا کرتی ہے ۔ لوگ اُنھیں یہ نہیں سمجھتے کہ یہ بھی بد قسمتی کے تیروں سے گھائل ننھے سے دل ہیں ۔ میں نے اُس سے اسکا نام پوچھا—

"فواد" اُسنے نیچی نظر کئے ہوئے کہا ۔

"تم کس کے بیٹے ہو؟ تمہارے ماں باپ کہاں ہیں؟"

"مارتھا کا بیٹا ہوں جو بان گاؤں کی عورت ہے ۔"

"تمہارا باپ کہاں ہے ؟" میں نے پوچھا ۔

اُس نے سر ہلا دیا جیسے وہ یہ جانتا ہی نہ ہو کہ 'باپ' کیا چیز ہوتی ہے ۔

"اب تمہاری ماں کہاں ہے، فواد ؟"

"گھر پر ہے، بیمار ۔"

اُس بچے کے اِن چند شبدوں سے میرے کان جل اُٹھے ۔ دل کی گہرائی میں عجیب و غریب صورتیں نظر آنے لگیں ۔ میں فوراً سمجھ گیا کہ ابھاگن مارتھا بیروت میں بیمار ہے ۔ وہ لڑکی جو کل تک پیڑوں اور پہاڑوں کی گود میں محفوظ تھی آج بھوک کی ماری شہر میں تڑپ رہی ہے ۔ وہ اناتھ

लड़की जिसने अपना बचपन क़ुदरत की गोद में गायें चराते हुए सुहावने खेतों में गुज़ारा था गंदी तहज़ीब के बहाव में बह कर आज दुख और बदनसीबी की शिकार थी.

जब मैं इन ख़यालों में खोया हुआ था वह लड़का टकटकी बांधे मुझे देखता रहा जैसे उसकी भोली आत्मा ने मेरे टूटे हुए दिल को जान लिया हो.

वह जैसे ही जाने के लिये बढ़ा मैंने उसे रोक कर कहा—"मुझे अपनी मां के पास ले चलो, मैं उसे देखना चाहता हूं."

मुझे राह दिखाता हुआ वह चुपचाप मेरे सामने चलता रहा. बार बार वह पीछे भी देखता जाता था कि मैं सचमुच उसके पीछे चल रहा हूँ या नहीं. डरा और सहमा हुआ मैं भी गंदी गलियाँ पार करता गया जहाँ की हवा में मौत सांस ले रही थी और खंडहरों में पापी लोग रात के परदे में पाप के काम किया करते थे. मैं सांप की सी पेंचेदार गलियों से उस कमसिन और भोले बच्चे के पीछे चलता गया, जिसकी हिम्मत गूँगी थी. आखिरकार हम लोग मोहल्ले के छोर तक पहुँच गए जहाँ वह एक टूटे फूटे घर में घुसा.

मैं भी उसके पीछे पीछे गया और उस कमरे तक जाने में डर के मारे मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा. मैंने अपने को एक कमरे में पाया जहां की हवा में काफ़ी नमी थी. कमरे में कोई सामान नहीं था, सिर्फ़ एक चिराग़ था जिस की पीली रोशनी उस अँधियारे को काट रही थी जिसमें एक टूटी चारपाई अपनी ग़रीबी, मुफ़लिसी और नाउम्मीदी की कहानी कह रही थी. उस चारपाई पर एक औरत दीवार की तरफ़ मुंह किये लेटी हुई थी, गोया उसने दुनिया के ज़ुल्मो सितम से अपना मुंह फेर कर दीवार का सहारा लिया हो; या उस पत्थर की दीवार में इन्सान के दिल से ज़ियादा दयावान और नाज़ुक दिल हो. लड़का रो पड़ा—"मां, मां !" मां ने घूम कर देखा कि उसका बेटा मेरी तरफ़ इशारा कर रहा है. मुझे देख कर फटी चादर के नीचे वह कुछ हिली और दुखी आत्मा की कराहती हुई तीखी आवाज़ में चिल्ला पड़ी—

"क्या चाहते हो, तुम ? क्या मेरी ज़िन्दगी के आख़िरी चिथड़े को ख़रीदने आए हो ताकि तुम अपने गंदे अरमानों को पूरा कर सको ? चले जाओ यहाँ से, शहर की गलियों में उन औरतों की कमी नहीं है जो अपनी अस्मत को बेचने के लिए तैयार बैठी हैं. मैं, मैं कुछ नहीं दे सकती. मेरे पास सिर्फ़ चंद साँसें बची हैं जिन्हें मौत क़ब्र की शान्ति से जल्दी ही ख़रीद लेगी."

मैं चारपाई के पास गया. उसकी बातों ने मेरे दिल

لڑکی جس نے اپنا بچپن قدرت کی گود میں گائیں چراتے ہوئے سہاونے کھیتوں میں گزارا تھا گندی تہذیب کے بہاو میں بہ کر آج دکھ اور بدنصیبی کی شکار تھی ۔

جب میں ان خیالوں میں کھویا ہوا تھا وہ لڑکا ٹکٹکی باندھے مجھے دیکھتا رہا جیسے اسکی بھولی آتما نے میرے ٹوٹے ہوئے دل کو جان لیا ہو ۔

وہ جیسے ہی جانے کے لئے بڑھا میں نے اسے روک کر کہا—" مجھے اپنی ماں کے پاس لے چلو، میں اسے دیکھنا چاہتا ہوں ۔"

مجھے راہ دکھاتا ہوا وہ چپ چاپ میرے سامنے چلتا رہا ۔ بار بار وہ پیچھے بھی دیکھتا جاتا تھا کہ میں سچ مچ اس کے پیچھے چل رہا ہوں یا نہیں ۔ ڈرا اور سہما ہوا میں بھی گندی گلیاں پار کرتا گیا جہاں کہ ہوا میں موت سانس لے رہی تھی اور کھنڈروں میں پاپی لوگ رات کے پردے میں پاپ کے کام کیا کرتے تھے ۔ میں سانپ کی سی پیچ دار گلیوں سے اس کمسن اور بھولے بچے کے پیچھے چلتا گیا، جسکی ہمت گونگی تھی ۔ آخرکار ہم لوگ محلے کے چھور تک پہونچ گئے جہاں وہ ایک ٹوٹے پھوٹے گھر میں گھسا ۔

میں بھی اس کے پیچھے پیچھے گیا اور اس کمرے تک جانے میں ڈر کے مارے میرا دل تیزی سے دھڑکنے لگا ۔ میں نے اپنے کو ایک کمرے میں پایا جہاں کی ہوا میں کافی نمی تھی ۔ کمرے میں کوئی سامان نہیں تھا، صرف ایک چراغ تھا جسکی پیلی روشنی اس اندھیارے کو کاٹ رہی تھی جس میں ایک ٹوٹی چارپائی اپنی غریبی، مفلسی اور ناامیدی کی کہانی کہہ رہی تھی ۔ اس چارپائی پر ایک عورت دیوار کی طرف منہ کئے ہوئے لیٹی ہوئی تھی، گویا اس نے دنیا کے ظلم و ستم سے اپنا منہ پھیر کر دیوار کا سہارا لیا ہو، یا اس پتھر کی دیوار میں انسان کے دل سے زیادہ دیاوان اور نازک دل ہو ۔ لڑکا رو پڑا—" ماں، ماں !" ماں نے گھوم کر دیکھا کہ اس کا بیٹا میری طرف اشارہ کر رہا ہے ۔ مجھے دیکھکر پھٹی چادر کے نیچے وہ کچھ ہلی اور دکھی آتما کی کراہتی ہوئی تیکھی آواز میں چلا پڑی—

" کیا چاہتے ہو، تم ؟ کیا میری زندگی کے آخری چیتھڑے کو خریدنے آئے ہو تاکہ تم اپنے گندے ارمانوں کو پورا کر سکو ؟ چلے جاؤ یہاں سے، شہر کی گلیوں میں ان عورتوں کی کمی نہیں ہے جو اپنی عصمت کو بیچنے کے لئے تیار بیٹھی ہیں ۔ میں، میں کچھ نہیں دے سکتی ۔ میرے پاس صرف چند سانسیں بچی ہیں جنہیں موت قبر کی شانتی سے جلدی ہی خرید لے گی ۔"

میں چارپائی کے پاس گیا ۔ اسکی باتوں نے میرے دل

गहराई को मथ डाला. वह उसकी दुख भरी कहानी निचोड़ था. मैं उस तक अपने दिल के भाव लफ़्ज़ों ज़रिये पहुंचाना चाहता था.

"मुझसे डरो नहीं, मारथा ! मैं तुम्हारे यहां भूके भेड़िये की तरह नहीं बल्कि एक दुखी इन्सान की तरह आया हूँ. मैं भी लेबनान का रहने वाला हूं और मैंने भी बहुत दिन उन तराइयों और गांवों में बिताए हैं. डरो नहीं, मारथा."

मेरी बात सुन कर वह समझ गई कि मैं दिल की गहराई से बोल रहा हूँ जो दिल उसी के साथ रो रहा है. वह अपनी चारपाई पर कांप उठी. जैसे कोई नाज़ुक टहनी जाड़े की तेज़ हवा में कांप उठी हो. उसने अपना मुँह छिपा लिया जैसे वह अपने को उस याद से छिपाना चाहती हो जिस याद की मिठास भी चौंकाने वाली और जिसकी ख़ूबसूरती भी तीखी थी. कुछ देर के सन्नाटे के बाद उसका चेहरा कांपते हुए कंधों के बीच दिखाई दिया. मैंने देखा कि उसकी डूबी हुई आंखें कमरे में खड़ी किसी अनदेखी चीज़ को ढूंढ रही हैं और उसके सूखे होंट नाउम्मीदी से कांप रहे हैं. उसके गले में मौत की खड़खड़ाहट थी जिस से दर्द भरी कराह निकल रही थी. उसे इल्तजा और दुआ ने बोल दिये, दुख और कमज़ोरी ने ज़बान दी. वह बोली-

"तुम यहां दया और मेहरबानी से आए हो. और अगर पापी पर रहम करना पुन्य कहा जाए और बदचलन पर मेहरबानी करना पाप न हो तो भगवान तुम्हें ख़ुशहाल करे, यह मेरी दुआ है. मेरी यही इल्तजा है कि तुम यहां से चले जाओ क्योंकि तुम्हें यहां आया देख कर लोग तुम से नफ़रत करेंगे और मुझ पर जो तुम ने मेहरबानी दिखाई है इस से तुम्हें बदनामी मिलेगी. जाओ, जाओ, चले जाओ. इस गंदे मकान में तुम्हें कोई देखे इस से पहले ही चले जाओ. जल्दी चले जाओ और अपने मुंह को ढक लो ताकि कोई राहगीर तुम्हें पहचान न सके. यह मेहरबानी जो तुम्हारे दिल में भरी है मुझे मेरी अस्मत नहीं लौटा सकेगी. और न वह मेरे पाप को धो सकेगी और न मौत के मज़बूत हाथों को मुझ से दूर कर सकेगी. अपनी बदचलनी और गुनाहों के कारन मैं तो इस जहन्नुम में आ गिरी हूँ. लेकिन तुम अपनी मेहरबानी के कारन बदनाम मत हो. मैं तो एक कोढ़ी हूं जो क़ब्रों के बीच जी रही हूँ लेकिन तुम मेरे क़रीब न आओ ताकि लोग तुम्हें नापाक समझ कर तुम से किनारा न करें. अभी लौट जाओ, पर उन पवित्र गांवों में मेरा नाम न लेना, नहीं तो मेरे मासूम बच्चे को अछूत समझ कर कोई भी चरवाहा अपने साथ नहीं रक्खेगा. अगर मेरा नाम लेना ही पड़े तो कह देना मारथा, बान गांव की औरत मर गई. बस और कुछ मत कहना."

کی گہرائی کو متھ ڈالا ۔ یہ اُسکی دکھ بھری کہانی کا نچوڑ تھا ۔ میں اُس تک اپنے دل کے بھاؤ لفظوں کے ذریعے پہونچانا چاہتا تھا ۔

"مجھ سے ڈرو نہیں، مارتھا ! میں تمہارے یہاں بھوکے بھیڑیے کی طرح نہیں بلکہ ایک دکھی انسان کی طرح آیا ہوں ۔ میں بھی لبنان کا رہنے والا ہوں اور میں نے بھی بہت دن اُن ترائیوں اور گاؤں میں بتائے ہیں ۔ ڈرو نہیں، مارتھا ۔"

میری بات سن کر وہ سمجھ گئی کہ میں دل کی گہرائی سے بول رہا ہوں جو دل اُسی کے ساتھ رو رہا ہے وہ اپنی چارپائی پر کانپ اُٹھی ۔ جیسے کوئی نازک ٹہنی جاڑے کی تیز ہوا میں کانپ اُٹھی ہو ۔ اُس نے اپنا منہ چھپا لیا جیسے وہ اپنے کو اُس یاد سے چھپانا چاہتی ہو جس یاد کی مٹھاس بھی چونکانے والی اور جس کی خوبصورتی بھی تیکھی تھی ۔ کچھ دیر کے سناٹے کے بعد اُسکا چہرہ کانپتے ہوئے کندھوں کے بیچ دکھائی دیا ۔ میں نے دیکھا کہ اُسکی ڈوبی ہوئی آنکھیں کمرے میں کھڑی کسی اندیکھی چیز کو ڈھونڈھ رہی ہیں اور اُسکے سوکھے ہونٹ نااُمیدی سے کانپ رہے ہیں ۔ اُس کے گلے میں موت کی کھڑکھڑاہٹ تھی جس سے درد بھری کراہ نکل رہی تھی ۔ اُسے التجا اور دعا نے بول دیئے، دکھ اور کمزوری نے زبان دی ۔ وہ بولی—

"تم یہاں دیا اور مہربانی سے آئے ہو، اور اگر پاپی پر رحم کرنا پنیہ کہا جائے اور بدچلن پر مہربانی کرنا پاپ نہ ہو تو بھگوان تمہیں خوشحال کرے، یہ میری دعا ہے ۔ میری التجا ہے کہ تم یہاں سے چلے جاؤ کیونکہ تمہیں یہاں آیا دیکھکر لوگ تم سے نفرت کریں گے اور مجھ پر جو تم نے مہربانی دکھائی ہے اِس سے تمہیں بدنامی ملے گی ۔ جاؤ جاؤ چلے جاؤ ۔ اِس گندے مکان میں تمہیں کوئی دیکھے اُس سے پہلے ہی چلے جاؤ ۔ جلدی چلے جاؤ اور اپنے منہ کو ڈھک لو تاکہ کوئی راہگیر تمہیں پہچان نہ سکے ۔ یہ مہربانی جو تمہارے دل میں بھری ہے مجھے میری عصمت نہیں لوٹا سکے گی اور نہ وہ میرے پاپ کو دھو سکے گی اور نہ موت کے مضبوط ہاتھوں کو مجھ سے دور کر سکے گی ۔ اپنی بدچلنی اور گناہوں کے کارن میں تو اِس جہنم میں آ گری ہوں ۔ لیکن تم اپنی مہربانی کے کارن بدنام مت ہو ۔ میں تو ایک کوڑھی ہوں جو قبروں کے بیچ جی رہی ہوں لیکن تم میرے قریب نہ آؤ تاکہ لوگ تمہیں ناپاک سمجھکر تم سے کنارا نہ کریں ۔ ابھی لوٹ جاؤ، پر اُن پوتر گاؤں میں میرا نام نہ لینا، نہیں تو میرے معصوم بچے کو اچھوت سمجھ کر کوئی بھی چرواہا اپنے ساتھ نہیں رکھیگا ۔ اگر میرا نام لینا ہی پڑے تو کہہ دینا مارتھا، بان گاؤں کی عورت مر گئی ۔ بس اور کچھ مت کہنا ۔

उसने अपने बेटे के दोनों हाथ अपने हाथ में ले कर उन्हें दुख भरी आंखों से चूमा और एक आह भर कर बोली—

"लोग मेरे बेटे की तरफ़ हिक़ारत की निगाह से देखेंगे और कहेंगे कि यह पाप का फल है; यह मारथा पापिन का बेटा है. वह इससे भी ज़ियादा कहेंगे क्योंकि वह यह नहीं देखेंगे कि उसकी मां ने अपने दुख और आँसुओं से उसके बचपन को पाक बनाया है और अपनी बदनसीबी और ग़म से उसके लिये अपने को क़ुरबान किया है. गली के लड़कों में मैं उसे अनाथ छोड़ जाऊंगी जहां बे-रहम दुनिया में वह अकेला रहेगा और विरासत में उसे एक दर्दनाक याद के सिवा कुछ नहीं मिलेगा. अगर वह कायर और कमज़ोर निकला तो इस याद से शर्माएगा: अगर बहादुर और ईमानदार निकला तो का उसका ख़ून खौल उठेगा. भगवान की दया से अगर वह ज़िन्दा बचा और बहादुर आदमी बन सका तो भगवान उसकी मदद करेंगे कि वह अपने और अपनी मां के दुश्मनों से बदला ले अगर वह मर गया और इस जाल से छूट गया तो वह मुझसे वहाँ आ मिलेगा जहां रोशनी और ख़ुशियां हैं, जहां उसके स्वागत के लिये इन्तज़ारी है."

मेरा दिल बोल पड़ा—"तुम कोढ़ी नहीं हो, मारथा. हालां कि तुम कोढ़ियों के बीच रह रही हो और न तुम नापाक हो हालांकि ज़िन्दगी में तुम पर नापाक हाथ पड़े हैं. यह मिट्टी के गंदे हाथ उस पाक रूह को नहीं छू सकते जैसे बर्फ़ की तहें धरती में जमे हुए बीजों को बरबाद नहीं कर सकतीं. यह ज़िन्दगी मुसीबतों के खलिहान के सिवा और क्या है जहां रूह की बालें कुचली जाती हैं ताकि दाना उनसे अलग हो सके. कम नसीब हैं वह बालें जो इस खलिहान तक नहीं आ सकतीं. उनके दाने कीड़े मकोड़े या परिन्दे ले उड़ेंगे और वह दाने कभी अपने मालिक के ख़ज़ाने का मुँह नहीं देखेंगे.

"तुम पर सितम ढाए गए हैं मारथा, और वह सितमगर महलों का बेटा है जो दौलत में बड़ा और रूह का छोटा है. तुम्हें ज़िल्लत और हिक़ारत सहनी पड़ी है पर तुम्हारी यह ख़ुश क़िस्मती है कि तुम सितम ज़दा हो न कि सितमगर. वह सितमगर भी इन्सानी कमज़ोरियों का शिकार था; ताक़त से ज़िन्दा फूलों और जज़्बाती ख़ुशियों को अपनी ख़्वाहिशों से कुचल देने वाला शैतान नहीं था. इन्सान की रूह परमात्मा से मिलाने वाली सुनहरी ज़ंजीर की एक कड़ी है. आग की लपटें उस कड़ी को तोड़ मरोड़ कर उसकी सुडौल गोलाई की ख़ूबसूरती को भले ही ख़त्म कर दें लेकिन वह उस सोने को पीतल नहीं बना सकतीं, वह तो और भी चमक उठेगा. बदनसीब हैं वह ज़ख़्मी

اُس نے اپنے بیٹے کے دونوں ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے کر اُنہیں دکھ بھری آنکھوں سے چوما اور ایک آہ بھر کر بولی—

"لوگ میرے بیٹے کی طرف حقارت کی نگاہ سے دیکھینگے اور کہینگے کہ یہ پاپ کا پھل ہے؛ یہ مارتھا پاپن کا بیٹا ہے۔ وہ اِس سے بھی زیادہ کہینگے کیونکہ وہ یہ نہیں دیکھینگے کہ اُسکی ماں نے اپنے دکھ اور آنسوؤں سے اُس کے بچپن کو پاک بنایا ہے اور اپنی بدنصیبی اور غم سے اُسکے لئے اپنے کو قربان کیا ہے۔ گلی کے لڑکوں میں میں اُسے اناتھ چھوڑ جاؤنگی جہاں بے رحم دنیا میں وہ اکیلا رہیگا اور وراثت میں اُسے ایک دردناک یاد کے سوا کچھ نہیں ملیگا۔ اگر وہ کائر اور کمزور نکلا تو اِس یاد سے شرمائیگا: اگر بہادر اور ایماندار نکلا تو اُس کا خون کھول اُٹھیگا۔ بھگوان کی دیا سے اگر وہ زندہ بچا اور بہادر آدمی بن سکا تو بھگوان اُس کی مدد کرینگے کہ وہ اپنے اور اپنی ماں کے دشمنوں سے بدلہ لے۔ اگر وہ مرگیا اور اس جال سے چھوٹ گیا تو وہ مجھ سے وہاں آ ملیگا جہاں روشنی اور خوشیاں ہیں، جہاں اس کے سواگت کے لئے انتظاری ہے۔"

میرا دل بول پڑا—"تم کوڑھی نہیں ہو، مارتھا۔ حالانکہ تم کوڑھیوں کے بیچ رہ رہی ہو اور نہ تم ناپاک ہو حالانکہ زندگی میں تم پر ناپاک ہاتھ پڑے ہیں۔ یہ مٹی کے گندے ہاتھ اُس پاک روح کو نہیں چھو سکتے جیسے برف کی تہیں دھرتی میں جمے ہوئے بیجوں کو برباد نہیں کرسکتیں۔ یہ زندگی مصیبتوں کے کھلیہان کے سوا اور کیا ہے جہاں روح کی بالیں کچلی جاتی ہیں تاکہ دانہ اُن سے الگ ہوسکے۔ کم نصیب ہیں وہ بالیں جو اِس کھلیہان تک نہیں آسکتیں۔ اُن کے دانے کیڑے مکوڑے یا پرندے لے اُڑینگے اور وہ دانے کبھی اپنے مالک کے خزانے کا منہ نہیں دیکھینگے۔

"تم پر ستم ڈھائے گئے ہیں مارتھا، اور وہ ستمگر محلوں کا بیٹا ہے جو دولت میں بڑا اور روح کا چھوٹا ہے۔ تمہیں ذلت اور حقارت سہنی پڑی ہے پر تمہاری یہ خوش قسمتی ہے کہ تم ستم زدہ ہو نہ کہ ستمگر۔ وہ ستمگر بھی اِنسانی کمزوریوں کا شکار تھا؛ طاقت سے زندہ پھولوں اور جذباتی خوشیوں کو اپنی خواہشوں سے کچل دینے والا شیطان نہیں تھا۔ اِنسان کی روح پرماتما سے ملنے والی سنہری زنجیر کی ایک کڑی ہے۔ آگ کی لپٹیں اُس کڑی کو توڑ مروڑ کر اُسکی سڈول گولائی کی خوبصورتی کو بھلے ہی ختم کردے لیکن وہ اُس سونے کو پیتل نہیں بنا سکتیں، وہ تو اور بھی چمک اُٹھیگی۔ بدنصیب ہیں وہ زخمی

और कमज़ोर जिन्हें वह आग जला कर राख कर देती है और रेगिस्तान में उड़ा देती है. ओ सारथा, तुम वह फूल हो जिसे इन्सान के चोले में छिपे हैवानों ने कुचल डाला है. भारी भरकम क़दमों ने तुम्हें कुचल दिया है लेकिन वह उस महक को ख़त्म नहीं कर सके हैं जो बेवा के आँसुओं, यतीम की पुकार और ग़रीब की आह से उठती है उस बहिश्त की तरफ़ जहाँ इन्साफ़ और रहम का सोत है. तसल्ली रक्खो सारथा कि तुम वह फूल हो न कि कुचलने वाला पैर."

वह मुझे ग़ौर से सुनती रही और उसका चेहरा राहत पा कर चमक उठा जैसे डूबते हुए सूरज की किरनों से बादल चमक उठते हैं. उसने मुझ से बैठने के लिए कहा. मैं बैठ गया ताकि उसकी दुखी आत्मा की बोलती हुई झलक चेहरे पर देख सकूं. उसकी आँखों में मौत खेल रही थी. ज़िन्दगी की बहार आने से पहले ही जिसकी टूटी चारपाई पर मौत के पर आ गिरे हों कुछ ऐसी झलक उस कमसिन लड़की की आँखों में थी. यह उस अनाथ औरत की दर्द भरी निगाह थी जो कल तक इन्सान की ख़ूबसूरत तराई में जवानी बिता रहा था और आज नाउम्मीदी के साथ मौत से निजात मांग रहा है.

कुछ देर के सन्नाटे के बाद उसने अपनी बची हुई हिम्मत बटोरी अपने दामन को आंसुओं से भिगोती हुई और हर सांस पर दर्द दिल को टटोलती हुई वह कहने लगी—

'हां मैं सितम ज़दा हूं. मैं इन्सान के चोले में छिपे एक हैवान का शिकार हूं. मैं कुचला हुआ फूल हूं......
जब वह मेरे पास आया मैं चश्मे के किनारे बैठी हुई थी. बड़े प्रेम से उसने मुझसे कहा कि मैं ख़ूबसूरत हूं और वह मुझे प्यार करेगा और कभी मुझसे अलग नहीं होगा. उसने मुझ से कहा कि यह लम्बा चौड़ा मैदान कितना सुनसान है, यह तराइयाँ सिर्फ़ दरिन्दों और गीदड़ों के रहने के लिए हैं. उस दिन से पहले मैंने प्यार का स्वाद नहीं चखा था क्योंकि मैं यतीम और अछूत जो थी. अपने घोड़े पर बैठा कर वह मुझे अपने आलीशान घर में ले गया. वहाँ उसने मुझे रेशमी कपड़े, अतर फुलेल, शाही खान पान दिया. उसने यह सब इस तरह मुस्कुराते हुए किया कि उसकी प्यारी बातों के पीछे छिपी हुई हैवानी ख़्वाहिशों का पता भी नहीं लगा. मेरे इस जिस्म से अपनी नापाक मुरादें पूरी कर के और इस आत्मा को शर्म से झुका कर वह चल दिया. मुझ में एक आग सी लग गई जो मुझे तेज़ी से जलाने लगी. दुख के अंगारों और आंसुओं के भंवर को छोड़ कर मैं यहाँ खंडहर में आ पड़ी. इस तरह मेरी ज़िन्दगी के दो टुकड़े हो गए; एक कमज़ोर टुकड़ा दुख से तड़प रहा था, दूसरा छोटा टुकड़ा रात की तनहाई में रो

اور کمزور جنہیں وہ آگ جلا کر راکھ کر دیتی ہے اور ریگستان میں اڑا دیتی ہے. او سارتھا! تم وہ پھول ہو جسے انسان کے چولے میں چھپے حیوانوں نے کچل ڈالا ہے. بھاری بھرکم قدموں نے تمہیں کچل دیا ہے لیکن وہ اس مہک کو ختم نہیں کر سکے ہیں جو بیوہ کے آنسوؤں، یتیم کی پکار اور غریب کی آہ سے اٹھتی ہے اس بہشت کی طرف جہاں انصاف اور رحم کا سوت ہے. تسلی رکھو سارتھا کہ تم وہ پھول ہو نہ کہ کچلنے والا پیر."

وہ مجھے غور سے سنتی رہی اور اس کا چہرا راحت پاکر چمک اٹھا جیسے ڈوبتے ہوئے سورج کی کرنوں سے بادل چمک اٹھتے ہیں. اس نے مجھ سے بیٹھنے کے لئے کہا. میں بیٹھ گیا تاکہ اسکی دکھی آتما کی بولتی ہوئی جھلک چہرے پر دیکھ سکوں. اسکی آنکھوں میں موت کھیل رہی تھی. زندگی کی بہار آنے سے پہلے ہی جسکی ٹوٹی چارپائی پر موت کے پر آ گرے ہوں کچھ ایسی جھلک اس کمسن لڑکی کی آنکھوں میں تھی. یہ اس اناتھ عورت کی درد بھری نگاہ تھی جو کل تک انسان کی خوبصورت ترائی میں جوانی بتا رہی تھی اور آج ناامیدی کے ساتھ موت سے نجات مانگ رہی ہے.

کچھ دیر کے سناٹے کے بعد اس نے اپنی بچی ہوئی ہمت بٹوری. اپنی دامن کو آنسوؤں سے بھگوتی ہوئی اور ہر سانس پر درد دل کو ٹٹولتی ہوئی وہ کہنے لگی—

"ہاں میں ستم زدہ ہوں. میں انسان کے چولے میں چھپے ایک حیوان کی شکار ہوں. میں کچلا ہوا پھول ہوں...... جب وہ میرے پاس آیا میں چشمے کے کنارے بیٹھی ہوئی تھی. بڑے پریم سے اس نے مجھ سے کہا کہ میں خوبصورت ہوں اور وہ مجھے پیار کریگا اور کبھی مجھ سے الگ نہیں ہوگا. اس نے مجھ سے کہا کہ یہ لمبا چوڑا میدان کتنا سنسان ہے، یہ ترائیاں صرف درندوں اور گیدڑوں کے رہنے کے لئے ہیں. اس دن سے پہلے میں نے پیار کا سواد نہیں چکھا تھا کیونکہ میں یتیم اور اچھوت جو تھی. اپنے گھوڑے پر بیٹھا کر وہ مجھے اپنے عالیشان گھر میں لے گیا. وہاں اس نے مجھے ریشمی کپڑے، عطر پھلیل، شاہی کھان پان دیا. اس نے یہ سب اس طرح مسکراتے ہوئے کیا کہ اسکی پیاری باتوں کے پیچھے چھپی ہوئی حیوانی خواہشوں کا پتہ بھی نہیں لگا. میرے اس جسم سے اپنی ناپاک مرادیں پوری کرکے اور اس آتما کو شرم سے جھکا کر وہ چل دیا. مجھ میں ایک آگ سی لگ گئی جو مجھے تیزی سے جلانے لگی. دکھ کے انگاروں اور آنسوؤں کے بھنور کو چھوڑ کر میں یہاں کھنڈر میں آ پڑی. اس طرح میری زندگی کے دو ٹکڑے ہو گئے: ایک کمزور ٹکڑا دکھ سے تڑپ رہا تھا، دوسرا چھوٹا ٹکڑا رات کی تنہائی میں رو

रहा था कि वह कहीं गहरे सूने में चला जावे. इस सूने घर में जालिम मुझे और मेरे दूध पीते बच्चे को भूक प्यास सर्दी गर्मी और तनहाई के आलम में छोड़ गया. डर के सिवा न तो हमारा कोई साथी था, न रोने और कलपने के सिवा कोई मददगार था. उसके दोस्त मेरी जगह, मेरी जरूरतें और मेरी कमजोरियाँ देखने आते. वह एक के बाद एक आते रहे. वह अपनी दौलत से मुझे खरीदना चाहते थे और रोटियों के बदले मेरी अस्मत लेना चाहते थे. ओह ! कई बार मैंने चाहा कि इस नापाक रूह को छुट्टी दे दूं. लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि इस जिन्दगी पर सिर्फ मेरा ही हक़ नहीं था, मेरा बच्चा भी उसका हक़दार था. मेरा लाल जिसे प्रभू ने इस जिन्दगी में भेजा है जिस तरह मुझे इस खंदक़ में क़ैद किया है..... देखो अब वह शुभ घड़ी आ गई है और लाल दुल्हा बन कर बड़ी मुद्दत के बाद आ रहा है ताकि वह मुझे अपनी कोमल सेज तक ले चले."

एक गहरे सन्नाटे में ऐसा लगा जैसे रूहें उड़ रही हों. उसने अपनी पलकें उठाईं जो मौत की छाया से धुंधली हो रही थीं. वह धीमे से बोली—

"ओ खुदाई इन्साफ़, तुम जो इन जालिम सूरतों के पीछे छिपे हो, मेरी इस आखिरी प्रार्थना और असहाय दिल की पुकार को सुन लेना. सिर्फ तुम से मेरी यह प्रार्थना और इल्तजा है कि मुझ पर दया कर के दाहिने हाथ से मेरे लाल की रक्षा करना और बाएं से इन प्रानों को अपनाना."

उसकी हिम्मत टूट गई और सांस धीमी पड़ गई. बेटे की तरफ़ दुख से कातर स्नेह से देखा. प्रान पखेरू उड़ गए और आंखें बालक को देखती रह गईं.

सुबह दो ग़रीबों ने मिल कर उसे लकड़ी के कफ़न में सुला कर दफ़न कर दिया. शहर से दूर सुनसान में उसे दफ़न किया गया. उसकी क़ब्र पर न कोई फ़ातिहा पढ़ने के लिये राज़ी हुआ और न आम क़ब्रस्तान में दफ़न करने की इजाज़त ही मिली. उसकी क़ब्र पर कोई रोने नहीं आया. सिर्फ उसका बेटा और एक और लड़का जिसे जिन्दगी की गर्दिशों ने दया करना सिखाया था उसकी क़ब्र पर आँसुओं के फूल चढ़ाने आते.

(अनुवादक—भाई मदन लाल जैन)

رہا تھا کہ وہ کہیں گہرے سونے میں چلا جاوے۔ اس سونے گھر میں ظالم مجھے اور میرے دودھ پیتے بچے کو بھوک پیاس، سردی گرمی اور تنہائی کے عالم میں چھوڑ گیا۔ ڈر کے سوا نہ تو ہمارا کوئی ساتھی تھا، نہ رونے اور کلپنے کے سوا کوئی مددگار تھا۔ اسکے دوست میری جگہ، میری ضرورتیں اور میری کمزوریاں دیکھنے آتے۔ وہ ایک کے بعد ایک آتے رہے۔ وہ اپنی دولت سے مجھے خریدنا چاہتے تھے اور روٹیوں کے بدلے میری عصمت لینا چاہتے تھے۔ اوہ! کئی بار میں نے چاہا کہ اس ناپاک روح کو چھٹی دے دوں۔ لیکن میں نے ایسا نہیں کیا کیونکہ اس زندگی پر صرف میرا ہی حق نہیں تھا، میرا بچہ بھی اس کا حقدار تھا۔ میرا لال جسے پربھو نے اس زندگی میں بھیجا ہے جس طرح مجھے اس خندق میں قید کیا ہے.........دیکھو اب وہ شبھ گھڑی آگئی ہے اور لال دولہا بن کر بڑی مدت کے بعد آ رہا ہے تاکہ وہ مجھے اپنی کومل سیج تک لے چلے۔"

ایک گہرے سناٹے میں ایسا لگا جیسے روحیں اڑ رہی ہوں۔ اس نے اپنی پلکیں اٹھائیں جو موت کی چھایا سے دھندلی ہو رہی تھیں وہ دھیمے سے بولی—

"او خدائی انصاف، تم جو ان ظالم صورتوں کے پیچھے چھپے ہو، میری اس آخری پرارتھنا اور اسہائے دل کی پکار کو سن لینا۔ صرف تم سے میری یہ پرارتھنا اور التجا ہے کہ مجھ پر دیا کرکے داہنے ہاتھ سے میرے لال کی رکشا کرنا اور بائیں سے ان پرانوں کو اپنانا۔"

اس کی ہمت ٹوٹ گئی اور سانس دھیمی ہوگئی۔ بیٹے کی طرف دکھ سے کاتر سنیہہ سے دیکھا۔ پران پکھیرو اڑ گئے اور آنکھیں بالک کو دیکھتی رہ گئیں۔

صبح دو غریبوں نے مل کر اسے لکڑی کے کفن میں سلا کر دفن کردیا۔ شہر سے دور سنسان میں اسے دفن کیا گیا۔ اسکی قبر پر نہ کوئی فاتحہ پڑھنے کے لئے راضی ہوا اور نہ عام قبرستان میں دفن کرنے کی اجازت ہی ملی۔ اسکی قبر پر کوئی رونے نہیں آیا۔ صرف اس کا بیٹا اور ایک اور لڑکا جسے زندگی کی گردشوں نے دیا کرنا سکھایا تھا اسکی قبر پر آنسوؤں کے پھول چڑھانے جاتے۔

(انوادک — بھائی مدن لال جین)

सर्वोदय और कम्यूनिस्ट

(भाई क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार)

'नया हिन्द' के नवम्बर के परचे में श्री सुरेश रामभाई की लिखत ने मुझे सोच में डाल दिया. पहले तो मैंने सोचा कि 'नया हिन्द' के एडीटर तो चार पांच हैं, मैं किस से बात करूं. फिर यह सोचकर मैं सब से पहले ज़ियादा क़रीब सुन्दरलाल जी से हूं. मैंने कहा लाओ पंडित जी ही से कुछ मन की बात कह डालूं.

मुझ में और पंडित जी में एक बड़ा फ़रक़ है. वह विश्वास और ज्ञान रखते हैं और उनका विश्वास अटल है. मैं अपने मन में अविश्वास और दुविधा रखता हूं. मगर यह दुविधा भी निरबल नहीं. इतनी बात तो पंडित जी मान ही लेंगे कि ढूंढने वाले के मन की दुविधा भी ऐसी सस्ती चीज़ नहीं है कि उसे ठुकरा दिया जाए. दुविधा और शक में बड़ी बड़ी सच्चाइयां छुपी हुई होती हैं. कितने अटल विश्वास वाले हैं जिन्होंने दुविधा और शक की कठिन मंज़िलें तय न की हों ?

श्री सुरेश रामभाई की लिखत ने मेरे मन की दुनिया में शक और शुबह की परछाइयों को हिला दिया है. उन्होंने समाज की हालत को हमारे सामने रख कर कुछ नतीजे निकाले हैं और यह साबित किया है कि अब भी हमारे मुल्क की निजात उसी राह पर चल कर होगी जो महात्मा गांधी ने बताई थी. पर इस मज़मून को बार बार पढ़ कर भी मेरी दुविधा नहीं मानती. वह कहती है कि गांधी जी की हर बात सच्ची तो है, पर तजुरबे की कसौटी पर उनके अच्छे अच्छे विचारों से हमें क्या मिला—यह भी देखना है.

कम्यूनिज़्म और सर्वोदय का सब से बड़ा फ़रक़ यह है कि एक का आदर्श हिन्सा है और दूसरे का अहिन्सा. समाज के अन्दर ही अन्दर अब दोनों आदर्शों का झगड़ा हो रहा है. दोनों अपने मक़सद में एक हैं. दोनों समाज की भलाई चाहते हैं. सर्वोदय धर्म के ढंग से, कम्यूनिज़्म धर्म से बेपरवाह हो कर. दोनों इस दुनिया को धन और मुफ़लिसी से निजात दिलाना चाहते हैं. महात्मा जी ने अपने आदर्श को धार्मिक नीति पर क़ायम किया और कम्यूनिस्टों ने कहा कि पहले तो ग़रीबों की भूक का इलाज दुनिया के आम तौर तरीक़ों से करना होगा. वह ऊंचे नहीं गए और धर्म और सच्चाई में ऊंचे जाने वाले अवाम बहुत ही कम हुआ करते हैं. भारत में आज कितने आदमी हैं जो महात्मा जी के आदर्शों का सहारा लेकर ऊंचे जा सके ? कितने सुन्दरलाल, भगवानदीन या विनोबा भावे हैं ? और अब तो ऐसे बहुत सों का भांडा फूट

سرووُدے اور کمیونسٹ

(بھائی قاضی محمد عبدالغفار)

'نیا ہند' کے نومبر پرچے میں شری سریش رام بھائی کی لکھت نے مجھے سوچ میں ڈالدیا۔ پہلے تو میں نے سوچا کہ 'نیا ہند' کے اڈیٹر تو چار پانچ ہیں میں کس سے بات کروں۔ پر یہ سوچ کر میں سب سے پہلے زیادہ قریب سندر لال جی سے ہوں میں نے کہا لاؤ پنڈت جی ہی سے کچھ من کی باتیں کہ ڈالوں۔

مجھ میں اور پنڈت جی میں ایک بڑا فرق ہے۔ وہ وشواس اور گیان رکھتے ہیں اور ان کا وشواس اٹل ہے۔ میں اپنے من میں اوشواس اور دبدھا رکھتا ہوں۔ مگر یہ دبدھا بھی نربل نہیں۔ اتنی بات تو پنڈت جی مان ہی لینگے کہ ڈھونڈنے والے من کی دبدھا بھی ایسی سستی چیز نہیں ہے کہ اُسے ٹھکرا دیا جائے۔ دبدھا اور شک میں بڑی بڑی سچائیاں چھپی ہوئی ہوتی ہیں۔ کتنے اٹل وشواس والے ہیں جنہوں نے دبدھا اور شک کی کٹھن منزلیں طے نہ کی ہوں؟

شری سریش رام بھائی کی لکھت نے میرے من کی دنیا میں شک اور شبہ کی پرچھائیوں کو ہلا دیا ہے۔ انہوں نے سماج کی حالت کو ہمارے سامنے رکھکر کچھ نتیجے نکالے ہیں اور یہ ثابت کیا ہے کہ اب بھی ہمارے ملک کی نجات اُسی راہ پر چلکر ہوگی جو مہاتما گاندھی نے بتائی تھی۔ پر اس مضمون کو بار بار پڑھکر بھی میری دبدھا نہیں مانتی۔ وہ کہتی ہے کہ گاندھی جی کی بات سچی تو ہے، پر تجربہ کی کسوٹی پر ان کے اچھے وچاروں سے ہمیں کیا ملا—یہ بھی تو دیکھنا ہے۔

کمیونزم اور سرووُدے کا سب سے بڑا فرق یہ ہے کہ ایک کا آدرش ہنسا ہے اور دوسرے کا اہنسا۔ سماج کے اندر ہی اندر اب دونوں آدرشوں کا جھگڑا ہو رہا ہے۔ دونوں اپنے مقصد میں ایک ہیں۔ دونوں سماج کی بھلائی چاہتے ہیں۔ سرووُدے دھرم کے ڈھنگ سے، کمیونزم دھرم سے بے پروا ہو کر۔ دونوں اس دنیا کو دھن اور مفلسی کے جھگڑے سے نجات دلانا چاہتے ہیں۔ مہاتما جی نے اپنے آدرش کو دھارمک نیتی پر قائم کیا اور کمیونسٹوں نے کہا کہ پہلے تو غریبوں کی بھوک کا علاج دنیا کے عام طور طریقوں سے کرنا ہوگا۔ وہ اونچے نہیں گئے اور دھرم اور سچائی میں اونچے جانے والے عوام بہت ہی کم ہوا کرتے ہیں۔ بھارت میں آج کتنے آدمی ہیں جو مہاتما جی کے آدرشوں کا سہارا لیکر اونچے جاسکے؟ کتنے سندر لال، بھگوان دین یا ونوبا بھاوے ہیں؟ اور اب تو ایسے بہت سوں کا بھانڈا پھوٹ

चुका है जो महात्मा जी के चेले बने थे और आज भी अपना काम निकालने के लिये उन ही का नाम लेते हैं !

कम्यूनिस्टों ने समझा (ग़लत समझा या सही) कि भूक और धन दौलत का झगड़ा सिर्फ़ इसी तरह निपटाया जा सकता है कि अमीरों ने जो कुछ ग़रीबों से छीन लिया है वह अब उन से छीन कर फिर ग़रीबों को दे दिया जाए और अब समाज को इस तरह बनाया जाए कि यह छीन झपट फिर हो ही न सके. इस मक़सद के लिये उन्होंने अहिन्सा की पाबन्दी क़बूल नहीं की. उन्होंने कहा कि हिन्सा के ज़रिये से छीना गया है तो हिन्सा ही के ज़रिये से फिर हासिल किया जाए. उनके सामने रूस के इनक़लाब की मिसाल थी. उन्होंने यह भी देखा कि सरमायादार मुल्कों में समाज और हकूमत पर उस गिरोह का असर था जो धर्म की आड़ लेकर सामने आता है. इस लिये रूस के इनक़लाब ने सब से पहले इस गिरोह को ख़तम किया जिस तरह मुस्तफ़ा कमाल ने तुरकी में किया. रूस के अवाम ने जो सदियों इन अधर्मी ताक़तों का ज़ुल्म सहते रहे थे, मौक़ा मिलने पर उस ज़हरीले दरख़्त की जड़ें उखाड़ दीं और अपनी एक नई समाज बना ली. चीन में भी यही हुआ. और अब हमारे मुल्क के ज्ञानी अपनी आंखों रूस और चीन के इस इनक़लाब के नतीजों को देख रहे हैं. सरमायादारों को डर हो रहा है कि यह इनक़लाब कहीं अब उनके क़िलों पर भी हमला न कर दे.

अब ज़रा दूसरा पहलू भी देखिये. धार्मिक अक़ीदों को हम रास्ते की रुकावटों में जो शायद इनसान की प्रकृति में शरीक हैं, उलझा हुआ पाते हैं. हज़रत ईसा ने अहिंसा की बुनियाद पर एक नए समाज का नक़्शा बनाया था, मगर उनके मरने के चन्द रोज़ बाद ही वह मिट गया और उनका बनाया हुआ धर्म ऐसा उलट पलट हो गया कि फिर कभी सीधा न हुआ. इन बीस सदियों में उनके मानने वालों ने जिस तरह एक दूसरे का ख़ून बहाया उसे कौन नहीं मानता. एक ही मज़हब के लोग जो सब हज़रत ईसा के उपदेश को मानने का दावा करते हैं, आज भी एक दूसरे का गला काट रहे हैं.

हज़रत ईसा के बाद महात्मा जी ने भी अहिंसा का उपदेश दिया, उनसे पहले इसलाम के सन्देशी भी यही उपदेश दे चुके थे. लेकिन जिस तरह मुसलमानों ने उस उपदेश को भुलाया, महात्मा जी के चेलों ने भी उनकी ज़िन्दगी ही में उनके बताए हुए धर्म का नाश कर डाला. हज़रत ईसा, महात्मा जी या ऐसे ही सब बुज़ुर्गों ने जो बड़े बड़े त्याग किये उनकी उनके बाद कोई क़द्र न हुई. महात्मा जी ने कांग्रेस को अपने उपदेश और त्याग का मंदिर बनाया. पर आज कांग्रेस का क्या हाल है. जितनी

چکا ہے جو مہاتما جی کے چیلے بنے تھے اور آج بھی اپنا کام نکالنے کے لئے اُن ہی کا نام لیتے ہیں !

کمیونسٹوں نے سمجھا (غلط سمجھا یا صحیح) کہ بھوک اور دھن دولت کا جھگڑا صرف اسی طرح نپٹایا جا سکتا ہے کہ امیروں نے جو کچھ غریبوں سے چھین لیا ہے وہ اب اُن سے چھین کر غریبوں کو دے دیا جائے اور اب سماج کو اسطرح بنایا جائے کہ یہ چھین جھپٹ پھر ہو ہی نہ سکے. اِس مقصد کے لئے انہوں نے اہنسا کی پابندی قبول نہیں کی. اُنہوں نے کہا کہ ہنسا کے ذریعے سے چھینا گیا ہے تو ہنسا ہی کے ذریعہ سے پھر حاصل کیا جائے. اُن کے سامنے روس کے انقلاب کی مثال تھی. اُنہوں نے یہ بھی دیکھا کہ سرمایہ دار ملکوں میں سماج اور حکومت پر اُس گروہ کا اثر تھا جو دھرم کی آڑ لے کر عوام کے سامنے آتا ہے. اس لئے روس کے اِنقلاب نے سب سے پہلے اِس گروہ کو ختم کیا جس طرح مصطفیٰ کمال نے ترکی میں کیا. روس کے عوام نے جو صدیوں اِن ادھرمی طاقتوں کا ظلم سہتے رہے تھے، موقع ملنے پر اُس زہریلے درخت کی جڑیں اُکھاڑ دیں اور اپنی ایک نئی سماج بنا لی. چین میں بھی ہوا اور اب ہمارے ملک کے گیانی اپنی آنکھوں روس اور چین کے اِنقلاب کے نتیجوں کو دیکھ رہے ہیں. سرمایہ داروں کو دنیا اب ڈر رہی ہے کہ یہ اِنقلاب کہیں اب اُن کے قلعوں پر بھی حملہ نہ کر دیں.

اب ذرا دوسرا پہلو بھی دیکھئے. دھارمک عقیدوں کو ہم راستے کی رکاوٹوں میں جو شاید انسان کی پرکرتی میں شریک ہیں اُلجھا ہوا پاتے ہیں. حضرت عیسیٰ نے اہنسا کی بنیاد پر ایک نئی سماج کا نقشہ بنایا تھا، مگر ان کے مرنے کے چند روز بعد ہی وہ مٹ گیا اور ان کا بنایا ہوا دھرم ایسا الٹ پلٹ ہوگیا کہ پھر کبھی سیدھا نہ ہوا. اِن بیس صدیوں میں ان کے ماننے والوں نے جس طرح ایک دوسرے کا خون بہایا اُسے کون نہیں مانتا. ایک ہی مذہب کے لوگ جو سب حضرت عیسیٰ کے اُپدیش کو ماننے کا دعوےٰ کرتے ہیں، آج بھی ایک دوسرے کا گلا کاٹ رہے ہیں.

حضرت عیسیٰ کے بعد مہاتما جی نے بھی اہنسا کا اُپدیش دیا، اُن سے پہلے اسلام کے سندیشی بھی یہی اُپدیش دے چکے تھے. لیکن جسطرح مسلمانوں نے اس اُپدیش کو بھلایا، مہاتما جی کے چیلوں نے بھی ان کی زندگی ہی میں ان کے بتائے ہوئے دھرم کا ناش کر ڈالا. حضرت عیسیٰ، مہاتما جی یا ایسے ہی سب بزرگوں نے جو بڑے بڑے تیاگ کئے ان کی ان کے بعد کوئی قدر نہ ہوئی. مہاتما جی نے کانگریس کو اپنے اُپدیش اور تیاگ کا مندر بنایا پر آج کانگریس کا کیا حال ہے. جتنی

धार्मिक शिक्षा महात्मा जी ने दी वह आज जलते तवे पर पानी की बूंद हो गई !

इस से यह तो साबित नहीं होता कि महात्मा जी का आदर्श ग़लत था. वह तो ग़लत न था पर यह ज़रूर साबित होता है कि अभी हमारी दुनिया में दो चार संदेशों और ज़रूरत है जो इस धर्म का प्रचार करके कोई अच्छा नतीजा निकालें पर इस वक़्त जो दुनिया भूख और मुफ़लिसी के फंदों में फंसी हुई है वह क्या करे ? उससे हम किस तरह कहें कि तुम भूखे रहो और इन्तज़ार करो ! वह तो कहती है कि कोई सन्देसी और पैग़म्बर तो बाद में आयगा, पहले तुम हमें रोटी दो ताकि हम उस वक़्त के लिये ज़िन्दा रह सकें !

दुनिया की तारीख़ हमें बताती है कि बहुत बुरे ज़मानों के बाद अच्छे ज़माने भी आते हैं और वह सब किसी इन्क़लाब के बाद ही आते हैं. हमारा मुल्क आज़ाद हुआ पर उसमें कोई बड़ा इन्क़लाब नहीं आया. एक काग़ज़ी नक़्शा सन '917 में बना था वह तो उसी वक़्त बिगड़ गया था. महात्मा जी ने काया पलट की कोशिश की मगर उनको "बापू" कहने वाले लोग उस काया पलट का साथ न दे सके. समाज अब भी दो टुकड़ों में बँटा है बल्कि ग़रीबों पर अमीरों की पकड़, जिन्हें कांग्रेसी नेताओं का सहारा मिला और ज़ियादा सख़्त हो गई.

महात्मा जी ने एक दफ़ा कहा था कि जब दरिया में बाढ़ आती है तो नीचे की कीचड़ ऊपर आ जाती है और सारा पानी गदला हो जाता है. वही हाल आज है. अब कब यह गदला पानी साफ़ होगा और कब यह कीचड़ नीचे बैठ जायगा, किसी को मालूम नहीं. पर इतना तो मालूम है कि जो लोग महात्मा जी का नाम ले कर जनता के नेता बने वह ख़ुद ही गदले हैं. इसी पानी को साफ़ करने की कोशिश जवाहर लाल ने की मगर वह क़दम क़दम पर हारे. ज़बान के मामले या हिन्दू कोड बिल के झगड़े को तो जाने दीजिये—मगर उन उम्मीदवारों के नाम देख लीजिये जिनको कांग्रेस का टिकट मिला है तो साफ़ मालूम होता है कि जवाहर लाल हारे और दरिया की यह कीचड़ जीती. अब तो जवाहर लाल की ज़िन्दगी में भी बेहतरी की उम्मीद बाक़ी नहीं. जो वज़ारतें रियासतों में बनेंगी वह वही होंगी जो पहले थीं और जवाहर लाल देखा करेंगे और ठंडी सांसें लिया करेंगे. इस बात में मैं नहीं जाता कि यह क्यों हुआ और कैसे हुआ लेकिन यह तो सब देख सकते हैं कि क्या हुआ और दस बीस पचास बरस के लिये सुधार की आस फिर पीछे हट गई

तो अब क्या हो ? वह लोग क्या करें जो ग़रीबों की दुर्दशा को नहीं देख सकते या ख़ुद ग़रीब हैं ? दुनिया

یہی دھارمک شکشا مہاتما جی نے دی وہ آج جلتے توے پر پانی کی بوند ہوگئی !

اس سے یہ تو ثابت نہیں ہوتا کہ مہاتما جی کا آدرش غلط تھا . وہ تو غلط نہ تھا پر یہ ضرور ثابت ہوتا ہے کہ ابھی ساری دنیا میں دو چار سندیشوں کی اور ضرورت ہے جو اس دھرم کا پرچار کرکے کوئی اچھا نتیجہ نکالیں. پر اس وقت جو دنیا بھوک اور مفلسی کے پھندوں میں پھنسی ہوئی ہے وہ کیا کرے ؟ اس سے ہم اس طرح کہیں کہ تم بھوکے رہو اور انتظار کرو ! وہ تو کہتی ہے کہ کوئی سندیسی اور پیغمبر تو بعد میں آئے گا پہلے تم ہمیں روٹی دو تاکہ ہم اس وقت کے لئے زندہ رہ سکیں !

دنیا کی تاریخ ہمیں بتاتی ہے کہ بہت برے زمانوں کے بعد اچھے زمانے بھی آتے ہیں اور وہ سب کسی بڑے انقلاب کے بعد ہی آتے ہیں . ہمارا ملک آزاد ہوا پر اس میں کوئی بڑا انقلاب نہیں آیا . ایک کاغذی نقشہ سن 1947 میں بنا تھا وہ تو اسی وقت بگڑ گیا تھا . مہاتما جی نے کایا پلٹ کی کوشش کی مگر ان کو ”باپو“ کہنے والے لوگ اس کایا پلٹ کا ساتھ نہ دے سکے . سماج اب بھی دو ٹکڑوں میں بٹی رہی بلکہ غریبوں پر امیروں کی پکڑ جنہیں کانگریسی نیتاؤں کا سہارا ملا اور زیادہ سخت ہوگئی .

مہاتما جی نے ایک دفعہ کہا تھا کہ جب دریا میں باڑھ آتی ہے تو نیچے کی کیچڑ اوپر آجاتی ہے اور سارا پانی گدلا ہوجاتا ہے . وہی حال آج ہے . اب کب یہ گدلا پانی صاف ہوگا اور کب یہ کیچڑ نیچے جائے گی کسی کو معلوم نہیں . پر اتنا تو معلوم ہے کہ جو لوگ مہاتما جی کا نام لیکر جنتا کے نیتا بنے وہ خود ہی گدلے ہیں . اسی پانی کو صاف کرنے کی بڑی کوشش جواہر لال نے کی مگر وہ قدم قدم پر ہارے . زبان کے معاملے یا ہندو کوڈ بل کے جھگڑے کو تو جانے دیجئے — مگر ان امیدواروں کے نام دیکھ لیجئے جن کو کانگریس کا ٹکٹ ملا ہے تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ جواہر لال ہارے اور دریا کی یہ کیچڑ جیتی . اب تو جواہر لال کی زندگی میں بھی بہتری کی امید باقی نہیں . جو وزارتیں ریاستوں میں بنیں گی وہ وہی ہوں گی جو پہلے تھیں اور جواہر لال دیکھا کریں گے اور ٹھنڈی سانسیں لیا کریں گے . اس بات میں میں نہیں جاتا کہ یہ کیوں ہوا اور کیسے ہوا . لیکن یہ تو سب دیکھ سکتے ہیں کہ کیا ہوا اور دس بیس پچاس برس کے لئے سدھار کی آس پھر پیچھے ہٹ گئی.

تو اب کیا ہو ؟ وہ لوگ کیا کریں جو غریبوں کی درگتا کو نہیں دیکھ سکتے یا خود غریب ہیں ؟ دنیا

बापू महात्मा जी के उपदेश को लेकर उठे हैं, लेकिन इतने बड़े देश में इस धर्म का प्रचार करते करते भी दो चार विनोबा भावे गुज़र जाएंगे. ज़मीन बहुत सख़्त है. उस पर खेती बहुत दिनों में खड़ी हो सकेगी. अब क्या आप इन भूखों को इलज़ाम देंगे जो कहते हैं कि कब तक कल का इन्तज़ार करें और आज जो करना है वह क्यों न कर गुज़रें ?

धर्म की लहरें तो रूसियों के पास भी थीं और चीनियों के पास भी. मगर वह कल का इन्तज़ार न कर सके और जो कुछ करना था कर गुज़रे. अब जिस तरह धीरे धीरे धर्म की लहरें रूस में वापस आ रही हैं, चीन में भी वापस आएंगी, लेकिन पते की बात यह है कि पहले इन्क़लाब आया, पहले बरबादी हुई, फिर आबादी शुरू हुई. हमारे देश की बरबादी में अभी कुछ कमी रह गई है !! नेकी का क़िला तब बनेगा जब बदी के क़िले टूट जाएंगे.

जो कुछ सुरेश रामभाई ने कहा है, वह तो सब सच है. वह कोई ऐसी तदबीर न बता सके कि भूखों को सुबह नहीं तो शाम तक रोटी मिल जाती. सर्वोदय एक बड़ा त्याग है जिसका फ़ायदा हमें ज़रूर मिलेगा और गांधी जी का आदर्श कभी बेकार न जायगा. मगर आज "बापू" के चेले बग़ावत कर के किसी दूसरे रुख़ पर जा रहे हैं और काम काज सब उन्हीं के हाथ में है. विनोबा भावे के पास कोई ऐसा मंतर तो नहीं कि वह अभी फूंक दें और अभी कोई काया पलट हो जाए. मगर भूखों के पास एक मंतर है जो उन्होंने रूस और चीन से सीखा है और अगर उन्होंने वह मंतर फूँका तो उन्हें कौन दोष दे सकेगा ?

मेरी और मुझ जैसे लोगों की यह दुबिधा ज़ोर पकड़ रही है कि अब किसी दिन हमारे देश में भी वह सब कुछ होना है जो रूस और चीन में हो चुका है और बहुत से देश के प्रेमी दुआ भी मांगने लगे हैं कि वह दिन जल्द आ जावे. सर्वोदय का काम तो जारी ही रहेगा, पर आज का दुख कैसे कम किया जाय ? यह बात श्री सुरेश राम भाई ने नहीं बताई.

باپو مہاتما جی کے اُپدیش کو لے کر اُٹھے ہیں، لیکن اتنے بڑے دیش میں اس دھرم کا پرچار کرتے کرتے بھی دو چار ونوبا بھاوے گذر جائینگے. زمین بہت سخت ہے. اس پر کھیتی بہت دنوں میں کھڑی ہوسکے گی. اب کیا آپ ان بھوکوں کو الزام دینگے جو کہتے ہیں کہ کب تک کل کا انتظار کریں اور آج جو کرنا ہے وہ کیوں نہ کر گذریں ؟

دھرم کی لہریں تو روسیوں کے پاس بھی تھیں اور چینیوں کے پاس بھی. مگر وہ کل کا انتظار نہ کرسکے اور جو کچھ کرنا تھا کر گذرے. اب جس طرح دھیرے دھیرے دھرم کی لہریں روس میں واپس آرہی ہیں، چین میں بھی واپس آئینگی، لیکن پتے کی بات یہ ہے کہ پہلے انقلاب آیا، پہلے بربادی ہوئی، پھر آبادی شروع ہوئی. ہمارے دیش کی بربادی میں ابھی کچھ کمی رہ گئی ہے !! نیکی کا قلعہ جب بنے گا جب بدی کے قلعے ٹوٹ جائینگے.

جو کچھ سریش رام بھائی نے کہا ہے، وہ تو سب سچ ہے. وہ کوئی ایسی تدبیر نہ بتا سکے کہ بھوکوں کو صبح نہیں تو شام تک روٹی مل جاتی. سروودے ایک بڑا تیاگ ہے جس کا فائدہ ہمیں ضرور ملیگا اور گاندھی جی کا آدرش کبھی بیکار نہ جائیگا. مگر آج ''باپو'' کے چیلے بغاوت کر کے کسی دوسرے رخ پر جا رہے ہیں اور کام کاج سب انہیں کے ہاتھ میں ہے. ونوبا بھاوے کے پاس کوئی ایسا منتر تو نہیں کہ وہ ابھی پھونک دیں اور ابھی کوئی کایا پلٹ ہوجائے. مگر بھوکوں کے پاس ایک منتر ہے جو انہوں نے روس اور چین سے سیکھا ہے اور اگر انہوں نے وہ منتر پھونکا تو انہیں کون دوش دے سکیگا ؟

میری اور مجھ جیسے لوگوں کی یہ دبدھا زور پکڑ رہی ہے کہ اب کسی دن ہمارے دیش میں بھی وہ سب کچھ ہونا ہے جو روس اور چین میں ہوچکا ہے اور بہت سے دیش کے پریمی دعا بھی مانگنے لگے ہیں کہ وہ دن جلد آجاوے. سروودے کا کام تو جاری ہی رہیگا پر آج کا دکھ کیسے کم کیا جائے ؟ یہ بات شری سریش رام بھائی نے نہیں بتائی.

बच्चों की दुनिया

बच्चों का तराना

(भाई 'रूही' इलाहाबादी)

(1)

त को हम प्यारे हैं भारत हम को प्यारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है.

(2)

त आँख का तारा है भारत दिल को प्यारा है
का राज दुलारा है सब देशों से न्यारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है.

(3)

ह-जगह हैं चश्मे जारी खिली हुई है क्या फुलवारी
रही है क्यारी क्यारी भारत कितना प्यारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है

(4)

पपीहे बोल रहे हैं छाई कैसी मस्ती है
में भी मंगल है जंगल क्या इक बस्ती है
बादल छाए हैं जिनसे अपना गुज़ारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है.

(5)

पराए देशों के पूजा इसकी करते थे
भारत की चौखट पर आ-आ कर सर धरते थे

بچوں کی دنیا

بچوں کا ترانہ

(بھائی 'روحی' الہ آبادی)

(1)

بھارت کو ہم پیارے ہیں   بھارت ہم کو پیارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے .

(2)

بھارت آنکھ کا تارا ہے   بھارت دل کو پیارا ہے
جگ کا راج دلارا ہے   سب دیشوں سے نیارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے .

(3)

جگہ جگہ ہیں چشمے جاری   کھلی ہوئی ہے کیا پھلواری
مہک رہی ہے کیاری کیاری   بھارت کتنا پیارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے .

(4)

بول پپیہے بول رہے ہیں   چھائی کیسی مستی ہے
جنگل میں بھی منگل ہے   جنگل کیا اک بستی ہے
کیسے بادل چھائے ہیں   جن سے اپنا گزارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے .

(5)

لوگ پرائے دیشوں کے   پوجا اِسکی کرتے تھے
اس بھارت کی چوکھٹ پر   آ آ کر سر دھرتے تھے

बैर कपट का नाम नहीं था   प्रेम की गंगा बहती थी
भाई को भाई से अपने   चाह की आशा रहती थी
दुख सुख में सब का साथी है   भारत दिल का सहारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है.

(6)

दूर-दूर से इल्म के प्यासे   प्यास बुझाने आते थे
अपने-अपने देश में आ कर   भारत का गुन गाते थे
आओ सब झगड़ों को मिटायें   देश का अपने कार करें
हट धर्मी को छोड़ें सब से   प्रेम का अब व्योहार करें
'रूही' का हम गीत यह गाएं   गीत यह कितना प्यारा है
भारत देश हमारा है
भारत हमको प्यारा है.

कानपुर
17-6-'06

राधे,

कल की चिट्ठी में मैंने लिखा था कि जापान की औरतें बहुत वर्जिश करती हैं. इसलिये उनके बदन में हिन्दुस्तान की औरतों से ताक़त भी ज़ियादा होती है और वह तन्दुरुस्त भी ज़ियादा रहती हैं. साथ ही यह औरतें पढ़ती लिखती भी बहुत ज़ियादा हैं. यहां हिन्दुस्तान में तो लड़कियों के मदर्से बहुत थोड़े हैं और उनमें पढ़ाई भी बहुत थोड़ी होती है. मगर जापान में जिस तरह सब लड़के पढ़ते हैं बिल्कुल उसी तरह लड़कियाँ भी पढ़ती हैं. शादी भी उनके यहाँ छोटे छोटे बच्चों की नहीं होती, जैसा कि यहां होती है. बल्कि जब लड़का और लड़की दोनों अच्छी तरह पढ़ लिख कर होशियार और जवान होते हैं, तब उनकी शादी होती है. छोटी उमर में शादी करने की रस्म जो हमारे मुल्क में पड़ गई है यह बड़ी ही ख़राब है. यहाँ तो शादी ब्याह को बिल्कुल एक गुड़ियों का सा खेल और तमाशा बना रखा है. लेकिन असल मतलब शादी का यह है कि अच्छी औलाद हो और उस को बहुत अच्छी तरह पालें, पढ़ाएं, सिखाएं और सब तरह से अच्छा बनाएं. जो आदमी अपनी औलाद को अच्छी तरह नहीं पालते और सब तरह की अच्छी अच्छी बातें उन को नहीं सिखाते वह बड़ा पाप करते हैं.

...کپٹ کا نام نہیں تھا   پریم کی گنگا بہتی تھی
...ی کو بھائی سے اپنے   چاہ کی آشا رہتی تھی
...سکھ میں سب کا ساتھی ہے   بھارت دل کا سہارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے.

(6)

...دور سے علم کے پیاسے   پیاس بجھانے آتے تھے
...نے دیش میں جا کر   بھارت کا گن گاتے تھے
...سب جھگڑوں کو مٹائیں   دیش کا اپنے کار کریں
...ٹ دھرمی کو چھوڑیں سب سے   پریم کا اب بیوہار کریں
...وحی' کا ہم گیت یہ گائیں   گیت یہ کتنا پیارا ہے
بھارت دیش ہمارا ہے
بھارت ہم کو پیارا ہے

کانپور
17-6-'06

...ادھے،

کل کی چٹھی میں میں نے لکھا تھا کہ جاپان کی ...عورتیں بہت ورزش کرتی ہیں. اس لئے اُن کے بدن ...میں ہندستان کی عورتوں سے طاقت بھی زیادہ ...ہوتی ہے اور وہ تندرست بھی زیادہ رہتی ہیں. ساتھ ...ہی یہ عورتیں پڑھتی لکھتی بھی بہت زیادہ ہیں. ...یہاں ہندستان میں تو لڑکیوں کے مدرسے بہت تھوڑے ...ہیں اور ان میں پڑھائی بھی بہت تھوڑی ہوتی ہے. ...مگر جاپان میں جس طرح سب لڑکے پڑھتے ہیں بالکل ...اسی طرح لڑکیاں بھی پڑھتی ہیں. شادی بھی ان کے ...یہاں چھوٹے چھوٹے بچوں کی نہیں ہوتی، جیسی کہ ...یہاں ہوتی ہے. بلکہ جب لڑکا اور لڑکی دونوں اچھی طرح ...پڑھ لکھ کر ہوشیار اور جوان ہوتے ہیں، تب ان کی شادی ...ہوتی ہے. چھوٹی عمر میں شادی کرنے کی رسم جو ...ہمارے ملک میں پڑگئی ہے یہ بڑی ہی خراب ہے. ...یہاں تو شادی بیاہ کو بالکل ایک گڑیوں کا سا کھیل ...اور تماشا بنا رکھا ہے. لیکن اصل مطلب شادی کا یہ ہے ...کہ اچھی اولاد ہو اور اس کو بہت اچھی طرح پالیں، پڑھائیں ...سکھائیں اور سب طرح سے اچھا بنائیں. جو آدمی اپنی اولاد ...کو اچھی طرح نہیں پالتے اور سب طرح کی اچھی اچھی ...باتیں ان کو نہیں سکھاتے وہ بڑا پاپ کرتے ہیں.

क्योंकि जितनी ख़राब आदतें बच्चों में पैदा हो जाती हैं वह बहुत कुछ माँ बाप की लापरवाही और बेवक़ूफ़ी से पड़ जाती हैं. इसलिये हर एक आदमी का फ़र्ज़ है कि जब तक औलाद को पालने और हर तरह से अच्छा उठाने के वास्ते सब तरह की तैयारी न कर लें तब तक शादी न करें. नहीं तो अपनी औलाद में ख़राब आदतें डालने और बुरी तरह उठाने का पाप उसके सिर होगा. बहुत से आदमी शादी को एक तमाशा समझते हैं और छोटे छोटे लड़के लड़कियों की शादी जल्दी से कर उनके हक़ में कांटे बोते हैं. छोटी सी बहू और छोटे से दूल्हा को गाड़ियों में सैर और तरह तरह के फ़िज़ूल और बे-फ़ायदा खेल खिलाने और मेले तमाशों में ले जाने के शौक़ में शादी का जो असल मतलब है उसको बिल्कुल भूल जाते हैं. ज़रा यह नहीं सोचते कि छोटे छोटे लड़के लड़कियों का खेल तमाशा देखना है या उनको मेले तमाशों में ले जाना है तो वह ख़ुद अपने बाल बच्चों को क्यों न ले जाएं. ख़ामख़ाह एक पराई लड़की अपने नादान लड़के के गले चिपका कर हमेशा के वास्ते उन दोनों के लिये जंजाल क्यों पैदा करते हैं. छोटी उमर में शादी होने से बड़े बड़े भारी नुक़सान होते हैं. एक नुक़सान तो यही हुआ कि माँ बाप औलाद की परवरिश के वास्ते अभी तैयार नहीं होते कि बेटा बेटी होने शुरू हो जाते हैं और इसलिये औलाद ख़ाम ख़ाह बुरी उठती है. दूसरा नुक़सान यह है कि जल्दी से बेटा बेटी पैदा होने लगने के सबब माँ का बदन बड़ा कमज़ोर हो जाता है, बदन का बढ़ना बन्द हो जाता है और तरह तरह की बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं. यही सबब है कि बाज़ औरतें बिल्कुल ठिगनी रह जाती हैं और कमज़ोर, जब कि उनके भाई ख़ासे लम्बे और मज़बूत होते हैं. तीसरा नुक़सान यह है कि लड़कियों का पढ़ना लिखना तो बन्द हो ही जाता है, बहुत से लड़के भी शादी होने के बाद पढ़ने लिखने में अच्छी तरह मन नहीं लगाते.

इस्लाम

18-6-06

کیونکہ جتنی خراب عادتیں بچوں میں پیدا ہوجاتی ہیں وہ بہت کچھ ماں باپ کی لاپروائی اور بیوقوفی سے پڑ جاتی ہیں۔ اس لئے ہر ایک آدمی کا فرض ہے کہ جب تک اولاد کو پالنے اور ہر طرح سے اچھا اٹھانے کے واسطے سب طرح کی تیاری نہ کرلیں تب تک شادی نہ کریں۔ نہیں تو اپنی اولاد میں خراب عادتیں ڈالنے اور بری طرح اٹھانے کا پاپ اس کے سر ہوگا۔ بہت سے آدمی شادی کو ایک تماشا سمجھتے ہیں اور چھوٹے چھوٹے لڑکے لڑکیوں کی شادی جلدی سے کر ان کے حق میں کانٹے بوتے ہیں۔ چھوٹی سی بہو اور چھوٹے سے دولہا کو گاڑیوں میں سیر اور طرح طرح کے فضول اور بے فائدہ کھیل کھلانے اور میلے تماشوں میں لے جانے کے شوق میں شادی کا جو اصل مطلب ہے اس کو بالکل بھول جاتے ہیں۔ ذرا یہ نہیں سوچتے کہ چھوٹے چھوٹے لڑکے لڑکیوں کا کھیل تماشہ دیکھنا ہے یا ان کو میلے تماشے میں لے جانا ہے تو وہ خود اپنے بال بچوں کو کیوں نہ لے جائیں۔ خوامخواہ ایک پرائی لڑکی اپنے نادان لڑکے کے گلے چپکا کر ہمیشہ کے واسطے ان دونوں کے لئے جنجال کیوں پیدا کرتے ہیں۔ چھوٹی عمر میں شادی ہونے سے بڑے بڑے بھاری نقصان ہوتے ہیں۔ ایک نقصان تو یہی ہوا کہ ماں باپ اولاد کی پرورش کے واسطے ابھی تیار نہیں ہوتے کہ بیٹا بیٹی ہونے شروع ہوجاتے ہیں اور اس لئے اولاد خوامخواہ بری اٹھتی ہے۔ دوسرا نقصان یہ ہے کہ جلدی سے بیٹا بیٹی پیدا ہونے لگنے کے سبب ماں کا بدن بڑا کمزور ہوجاتا ہے، بدن کا بڑھنا بند ہوجاتا ہے اور طرح طرح کی بیماریاں شروع ہوجاتی ہیں۔ یہی سبب ہے کہ بعض عورتیں بالکل ٹھگنی رہ جاتی ہیں اور کمزور، جب کہ ان کے بھائی خاصے لمبے اور مضبوط ہوتے ہیں۔ تیسرا نقصان یہ ہے کہ لڑکیوں کا پڑھنا لکھنا تو بند ہو ہی جاتا ہے، بہت سے لڑکے بھی شادی ہونے کے بعد پڑھنے لکھنے میں اچھی طرح من نہیں لگاتے۔

اسلم

18-6-06

राधे,

कल की चिट्ठी में जल्दी शादी कर देने के थोड़े से नुक़सान लिखे थे, आज और भी लिखे जाते हैं. यह तो तुम्हें मालूम ही है कि पढ़ना लिखना कैसी अच्छी चीज़ है. जो आदमी सब तरह की किताबें पढ़ सकते हैं वह दुनिया जहान का सब हाल मालूम कर सकते हैं और यह भी ठीक ठीक मालूम कर सकते हैं कि किस किस बात और काम में क्या क्या फ़ायदा और नुक़सान है. बरख़िलाफ़

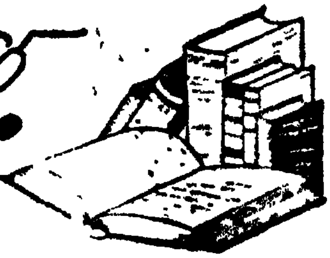
رادھے،

کل کی چٹھی میں جلدی شادی کردینے کے تھوڑے سے نقصان لکھے تھے، آج اور بھی لکھے جاتے ہیں۔ یہ تو تمہیں معلوم ہی ہے کہ پڑھنا لکھنا کیسی اچھی چیز ہے۔ جو آدمی سب طرح کی کتابیں پڑھ سکتے ہیں وہ دنیا جہان کا سب حال معلوم کرسکتے ہیں اور یہ بھی ٹھیک معلوم کر سکتے ہیں کہ کس کس بات اور کام میں کیا کیا فائدہ اور نقصان ہے۔ برخلاف

दूसरे, जो आदमी पढ़े लिखे नहीं हैं उनको बहुत सी अच्छी और ज़रूरी बातें मालूम नहीं होतीं. बहुत सी बुरी बातों को वह अच्छा समझ लेते हैं और अच्छी बातों को बुरा. इस सबब से बहुत सी ग़लतियां करते हैं और नुक़सान उठाते हैं. इससे मालूम हुआ कि जिस किसी को पढ़ना लिखना नहीं आता वह बड़े नुक़सान में रहते हैं. अब देखो जल्दी शादी होने से लड़कियों के पढ़ने लिखने में बड़ा भारी हर्ज पड़ता है. चाहिये तो यह था कि जितना ज़्यादा लड़कों को पढ़ाया जाता है उतना ही लड़कियों को भी पढ़ाया जाता. मगर जल्दी शादी होने की सूरत में यह हो ही नहीं सकता. इस लिये बहुत सी लड़कियां बिल्कुल अनपढ़ी रह जाती हैं और जो कुछ पढ़ती भी हैं वह भी अधूरा पढ़ कर छोड़ देती हैं. पूरा पूरा किसी किताब को भी नहीं पढ़तीं और न किसी और मज़मून को पढ़ती हैं, न कुछ नई नई बातों की बाबत सोचती हैं. इसलिये न उनको यह मालूम होता है कि बच्चों को किस तरह पालना और किस तरह रखना चाहिये, न उन्हें मालूम होता है कि किस तरह इन में अच्छी अच्छी आदतें डालें और न ही उन्हें दीन दुनिया की कुछ ख़बर होती है. पस जल्दी शादी हो जाने से एक तो लड़कियां अनपढ़ और बे अक़ल रह जाती हैं. दूसरे लड़के का भी पढ़ने लिखने में मन कम लगता है. जब तक छोटे रहते हैं तब तक तो दूल्हा बहू को एक साथ नाचना कूदना वग़ैरा खिला कर दोनों का वक़्त ज़ाया किया जाता है और जब बड़े होते हैं तो बेटा बेटी पैदा होने शुरू हो जाते हैं, और बाप को नौकरी करने का फ़िक्र पड़ता है और चूंकि पढ़ने लिखने में पहले ही हर्ज होना शुरू हो जाता है इस लिये नौकरी भी कुछ अच्छी नहीं मिलती. इस सबब रात दिन रोटी कपड़े का फ़िक्र पड़ा रहता है. ख़ुद पढ़ने लिखने की या औलाद की अच्छी तरह पालने की न मां को फ़ुरसत होती है न बाप को. पस दोनों ख़ुद भी पढ़ने लिखने के फ़ायदों से अलग रहते हैं और बच्चों को भी बुरी तरह पाल कर उन की सारी उमर ख़राब करते हैं. इस से मालूम हुआ कि छोटी उमर में शादी करने से फ़ायदा तो कोई भी नहीं और नुक़सान बहुत से हैं.

دوسرے جو آدمی پڑھے لکھے نہیں ہیں اُن کو بہت سی اچھی اور ضروری باتیں معلوم نہیں ہوتیں۔ بہت سی بری باتوں کو وہ اچھا سمجھ لیتے ہیں اور اچھی باتوں کو برا۔ اس سبب سے بہت سی غلطیاں کرتے ہیں اور نقصان اٹھاتے ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ جس کسی کو پڑھنا لکھنا نہیں آتا وہ بڑے نقصان میں رہتے ہیں۔ اب دیکھو جلدی شادی ہونے سے لڑکیوں کے پڑھنے لکھنے میں بڑا بھاری حرج پڑتا ہے۔ چاہئے تو یہ تھا کہ جتنا زیادہ لڑکوں کو پڑھایا جاتا ہے اتنا ہی لڑکیوں کو بھی پڑھایا جاتا۔ مگر جلدی شادی ہونے کی صورت میں یہ ہو ہی نہیں سکتا۔ اس لئے بہت سی لڑکیاں بالکل کچی رہ جاتی ہیں اور جو کچھ پڑھتی بھی ہیں وہ بھی ادھورا پڑھ کر چھوڑ دیتی ہیں۔ پورا پورا کسی کتاب کو بھی نہیں پڑھتیں نہ کسی اور مضمون کو پڑھتی ہیں اور نہ کچھ نئی نئی باتوں کی بابت سوچتی ہیں۔ اس لئے نہ اُن کو یہ معلوم ہوتا ہے کہ بچوں کو کس طرح پالنا اور کس طرح رکھنا چاہئے، نہ انہیں معلوم ہوتا ہے کہ کس طرح اِن میں اچھی اچھی عادتیں ڈالیں اور نہ ہی انہیں دین دنیا کی کچھ خبر ہوتی ہے۔ پس جلدی شادی ہوجانے سے ایک تو لڑکیاں اَن پڑھ اور بے عقل رہ جاتی ہیں۔ دوسرے لڑکے کا بھی پڑھنے لکھنے میں جی کم لگتا ہے۔ جب تک چھوٹے رہتے ہیں تب تک تو دولہا بہو کو ایک ساتھ ناچ کودنا وغیرہ کھلاکر دونوں کا وقت ضائع کیا جاتا ہے اور جب بڑے ہوتے ہیں تو بیٹا بیٹی پیدا ہونے شروع ہوجاتے ہیں، اور باپ کو نوکری کرنے کی فکر پڑتی ہے اور چونکہ پڑھنے لکھنے میں پہلے ہی حرج ہونا شروع ہوجاتا ہے اس لئے نوکری بھی کچھ اچھی نہیں ملتی۔ اس لئے رات دن روٹی کپڑے کی فکر پڑی رہتی ہے۔ خود پڑھنے لکھنے کی یا اولاد کو اچھی طرح پالنے کی نہ ماں کو فرصت ہوتی ہے نہ باپ کو۔ پس دونوں خود بھی پڑھنے لکھنے کے فائدوں سے الگ رہتے ہیں اور بچوں کو بھی بری طرح پال کر اُن کی ساری عمر خراب کرتے ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ چھوٹی عمر میں شادی کرنے سے فائدہ تو کوئی بھی نہیں اور نقصان بہت سے ہیں۔

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

नया चीन

लिखने वाले—डाक्टर सलामत उल्ला.

निकालने वाले—इन्डियन लिटरेचर सोसाइटी, जामिया नगर, देहली.

लिखावट उर्दू, सफ़ा 124, दाम एक रुपया आठ आना.

योरप और अमरीका वालों के कच्चे पैर आते ही एशिया की तरक़्क़ी को घुन लग गया. बहुत से एशियाई मुल्कों में सीधे तौर पर विदेशियों की सरकारें क़ायम हो गईं; और बहुत से देशों में सरकारें देसी रहीं लेकिन वह सदा इन सफ़ेद मदारियों के इशारे पर नाचती रहीं और इनकी हर मांग अपने यहां की जनता को बुरी तरह से कष्ट दे कर पूरी करती रहीं. हमारा पड़ोसी चीन सन 1949 तक इसी लूट खसोट की भट्टी में जलता रहा. लेकिन माओ ऐसे महान नेताओं ने आज चीन का रंग बदल डाला है, मानो चीन स्वर्ग हो गया है. हम चीन में इस नई चेतना को समझना चाहते हैं और अगर हो सके तो उसे अपना कर खुद चीन की तरह तरक़्क़ी की तरफ़ क़दम उठाना चाहते हैं. इस लिये ज़रूरी है कि हमारी जनता चीन के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी हासिल करे.

डाक्टर सलामत उल्ला ने उर्दू जानने वाली जनता को "नया चीन" नामी किताब दे कर बड़ा अच्छा काम किया है. इस किताब में साम्राजी शिकंजे की पूरी तसवीर खींची गई है और यह भी दिखाया गया है कि किस तरह नया चीन इस शिकंजे को तोड़ कर बाहर निकल सका और तरक़्क़ी के रास्ते पर दिन-बदिन बढ़ता जा रहा है. दो बरस में चीन बिल्कुल ही बदल गया है. लेकिन इस किताब से सिर्फ़ इतना ही मालूम होता है कि चीन कहां से चला था और अब किधर जा रहा है—हम उम्मीद करते हैं कि डाक्टर सलामत उल्ला और दूसरे "नया चीन" की कहानी और भी तफ़सील के साथ अंगरेज़ी न जानने वाली जनता तक पहुंचाते रहेंगे—किताब चिकने सफ़ेद काग़ज़ पर है और कवर बहुत सुहावना है.

—मुजीब रिज़वी

نیا چین

لکھنے والے—ڈاکٹر سلامت اللہ .

نکالنے والے—انڈین لٹریچر سوسائٹی، جامعہ نگر، دہلی.

لکھاوٹ اُردو، صفحہ 124، دام ایک روپیہ آٹھ آنہ .

یورپ اور امریکہ والوں کے کچے پیر آتے ہی ایشیا کی ترقی کو گھن لگ گیا. بہت سے ایشیائی ملکوں میں سیدھے طور پر ودیشیوں کی سرکاریں قائم ہوگئیں، اور بہت سے دیشوں میں سرکاریں دیسی رہیں لیکن وہ سدا ان سفید مداریوں کے اشارے پر ناچتی رہیں اور ان کی ہر مانگ اپنے یہاں کی جنتا کو بری طرح سے کشٹ دے کر پوری کرتی رہیں. ہمارا پڑوسی چین سن 1949 تک اسی لوٹ کھسوٹ کی بھٹی میں جلتا رہا. لیکن ماؤ ایسے مہان نیتاؤں نے آج چین کا رنگ بدل ڈالا ہے، مانو چین سورگ ہوگیا ہے. ہم چین میں اس نئی چیتنا کو سمجھنا چاہتے ہیں اور اگر ہو سکے تو اسے اپنا کر خود چین کی طرح ترقی کی طرف قدم اٹھانا چاہتے ہیں. اس لئے ضروری ہے کہ ہماری جنتا چین کے بارے میں زیادہ سے زیادہ جانکاری حاصل کرے.

ڈاکٹر سلامت اللہ نے اُردو جاننے والی جنتا کو "نیا چین" نامی کتاب دے کر بڑا اچھا کام کیا ہے. اس کتاب میں سامراجی شکنجے کی پوری تصویر کھینچی گئی ہے اور یہ بھی دکھایا گیا ہے کہ کس طرح نیا چین اس شکنجے کو توڑ کر باہر نکل سکا اور ترقی کے راستے پر دن بدن بڑھتا جارہا ہے. دو برس میں چین بالکل ہی بدل گیا ہے. لیکن اس کتاب سے صرف اتنا ہی معلوم ہوتا ہے کہ چین کہاں سے چلا تھا اور اب کدھر جارہا ہے—ہم اُمید کرتے ہیں کہ ڈاکٹر سلامت اللہ اور دوسرے "نیا چین" کی کہانی اور بھی تفصیل کے ساتھ انگریزی نہ جاننے والی جنتا تک پہنچاتے رہیں گے—کتاب چکنے سفید کاغذ پر ہے اور کور بہت سہانا ہے .

—مجیب رضوی

फ़रोज़ाँ

लेखने वाले—मुईन अहसन 'जज़्बी.'

निकालने वाले—आज़ाद किताब घर, कलाँ महल, देहली.

लिखावट—उरदू, दाम तीन रुपया, सफ़ा 135.

सफ़ेद काग़ज़ पर छपी, ख़ूबसूरत कवर के साथ जिल्द बंधी यह किताब 'जज़्बी' के सन '29 से लेकर सन '51 तक के कलाम का संग्रह है. इसमें ज़ियादा ग़ज़लें हैं और थोड़ी सी नज़्में—जज़्बी की शायरी में राग रस ज़ियादा है और इस चीज़ को वह किसी तरह भी छोड़ना नहीं चाहते. जज़्बी उरदू के उन शायरों में से एक हैं जो मुशायरों में ख़ूब जमते हैं और जनता की वाह-वाह पाते हैं—उनमें न तो इन्क़लाबी गरज है और न सीधे और साफ़ ढंग से किसी चीज़ को सामने रखने की आदत—उनका ख़याल है कि चिलमन की आड़ से चीज़ों को दिखाने से जज़्बे ज़ियादा तेज़ होते हैं. इन पर एतराज़ करने वालों का कहना है कि वह शेर कहते हैं सिर्फ़ शेर कहने के लिये और शायद अपने लिये, दूसरों से भी उसका कुछ ताल्लुक़ हो जाए तो वह अनजाना गुनाह है. नीचे दिये शेर 'मंज़िल' के बारे में हैं—इनमें सगत है लेकिन जो कुछ भी कहा गया है वह परदे की आड़ से कहा गया है.

"थी हक़ीक़त में वही मंज़िल मक़सद जज़्बी
जिस जगह तुझ से क़दम आगे बढ़ाया न गया
वहाँ से भी तूफ़ाँ उठे हैं ऐ दिल
जिन्हें लोग समझा किये हैं किनार
ऐ हम सफ़रो इसको तो मंज़िल न कहो
आंधियां उठती हैं, तूफ़ां यहां मिलते हैं
अभी समूम ने मानी कहाँ नसीम से हार
अभी तो मारके हाये चमन कुछ और भी हैं."

क़ुदरत बहुत ख़ूबसूरत है. क़ुदरती दृश्यों के बीच में पहुँच कर आदमी रूमानी हो जाता है लेकिन ग़रीब निर्धन?

"जब जेब में पैसे बजते हैं, जब पेट में रोटी होती है
उस वक़्त यह ज़र्रा हीरा है, उस वक़्त यह शबनम मोती है."

दुनिया को संवारना है अमल और क़ायदे से लेकिन जज़्बी साहब ख़यालों में ही संवारने का काम कर रहे हैं.

"क्या तुमको पता, क्या तुमको ख़बर दिन रात ख़यालों में अपने ऐ काकुल गेती! हम तुमको जिस तरह संवारा करते हैं."

काश 'जज़्बी' जनता को उभरने का रास्ता भी अपनी शायरी के ज़रिये दिखा सकें!

—मुजीब रिज़वी

فروزاں

لکھنے والے—معین احسن 'جذبی'

نکالنے والے—آزاد کتاب گھر، کلاں محل، دہلی۔

لکھاوٹ اُردو، دام تین روپیہ، صفحہ 135۔

سفید کاغذ پر چھپی، خوبصورت کور کے ساتھ جلد بندھی یہ کتاب 'جذبی' کے سن '29 سے لے کر سن '51 تک کے کلام کا سنگرہ ہے۔ اِس میں زیادہ غزلیں ہیں اور تھوڑی سی نظمیں—جذبی کی شاعری میں راگ رس زیادہ ہے اور اِس چیز کو وہ کسی طرح بھی چھوڑنا نہیں چاہتے۔ جذبی اردو کے اُن شاعروں میں سے ایک ہیں جو مشاعروں میں خوب جمتے ہیں اور جنتا کی واہ واہ پاتے ہیں—اُن میں نہ تو اِنقلابی گرج ہے اور نہ سیدھے اور صاف ڈھنگ سے کسی چیز کو سامنے رکھنے کی عادت—اُن کا خیال ہے کہ چلمن کی آڑ سے چیزوں کو دکھانے سے جذبے زیادہ تیز ہوتے ہیں۔ اُن پر اعتراض کرنے والوں کا کہنا ہے کہ وہ شعر کہتے ہیں صرف شعر کہنے کے لئے اور شاید اپنے لئے، دوسروں سے بھی اُس کا کچھ تعلق ہوجائے تو یہ انجانا گناہ ہے۔ نیچے دئیے شعر 'منزل' کے بارے میں ہیں—اِن میں سنگیت ہے لیکن جو کچھ بھی کہا گیا ہے وہ پردے کی آڑ سے کہا گیا ہے

"تھی حقیقت میں وہی منزلِ مقصد جذبی
جس جگہ تجھ سے قدم آگے بڑھایا نہ گیا
وہاں سے بھی طوفاں اُٹھے ہیں اے دل
جنہیں لوگ سمجھا کئے ہیں کنارے
اے ہم سفرو اِس کو تو منزل نہ کہو
آندھیاں اُٹھتی ہیں، طوفان یہاں ملتے ہیں
ابھی سموم نے مانی کہاں نسیم سے ہار
ابھی تو معرکہ ہائے چمن کچھ اور بھی ہیں"

قدرت بہت خوبصورت ہے۔ قدرتی درشیوں کے بیچ میں پہنچ کر آدمی رومانی ہوجاتا ہے لیکن غریب نردھن؟

"جب جیب میں پیسے بجتے ہیں، جب پیٹ میں روٹی ہوتی ہے
اُس وقت یہ ذرہ ہیرا ہے، اُس وقت یہ شبنم موتی ہے۔"

دنیا کو سنوارنا ہے عمل اور قاعدے سے لیکن جذبی صاحب خیالوں میں ہی سنوارنے کا کام کر رہے ہیں۔

"کیا تجھکو پتہ، کیا تجھکو خبر، دن رات خیالوں میں اپنے اے کاکل گیتی! ہم تجھکو جسطرح سنوارا کرتے ہیں۔"

کاش 'جذبی' جنتا کو اُبھرنے کا راستہ بھی اپنی شاعری کے ذریعہ دکھا سکیں!

—مجیب رضوی

देश विदेश की डायरी

(16 नवम्बर सन '51 से 15 दिसम्बर सन '51 तक)

नवम्बर

16. अमरीका से उधार लेने के लिये ईरान ने तेल से अपनी आमदनी की ज़मानत देने को कहा.

17. चीनी गुडविल मिशन के नेता मिस्टर टिंग-सी लिन ने डाक्टर कोटनिस की सेवाओं की सराहना करते हुए कहा कि चीन शान्ति क़ायम करने के लिये हिन्दुस्तान से सहयोग करेगा.

18. रूस के परदेश मंत्री श्री विशिन्सकी ने पेरिस में होने वाली यूनो असेम्बली के सामने प्रस्ताव रखा कि अन्तर क़ौमी देख रेख में एटमी हथियारों पर पूरी रोक लगा दी जाए.

19. पूर्वी उत्तर प्रदेश में गल्ले की कमी की वजह से एक करोड़ अट्ठावन लाख इन्सानों की ज़िन्दगी को खतरा.

20. लेबर सरकार के परदेश सेक्रेटरी मिस्टर हरबर्ट मॉरिसन ने कहा कि चीन की वजह से बड़ा उथल पुथल मच सकती है, इसलिये चीन को ज़रूर यूनो में शामिल कर लेना चाहिये.

21. भारत में आए चीनी गुडविल मिशन ने हैदराबाद में यह बताया कि चीन में हिन्दी भाषा की पढ़ाई का इन्तज़ाम कर दिया गया है और बहुत से चीनी विद्यार्थी हिन्दी पढ़ रहे हैं.

22. अमरीका ने अमरीकी और अमरीका के दूसरे साथी देशों के सिपाहियों की उत्तरी कोरिया क़ैद में हत्या का इल्ज़ाम उत्तर कोरिया पर लगाया था. उत्तर कोरिया परदेश मंत्री ने इस आरोप को जड़ मूल से ग़लत बताया और उन्होंने इस आरोप के ख़िलाफ़ यूनो को भी लिखा.

23. बर्तानिया में होम गार्ड्स की एक फ़ौज तैयार की जाएगी जिसमें एक लाख पचीस हज़ार आदमी भरती होंगे.

24. तेहरान में मिस्टर हुसैन फ़ातमी ने कहा कि अंग्रेज़ों को मिस्र से निकालने और सूडान को मिस्र में मिलाने के मामले में ईरान पूरी तरह से मिस्र के साथ

25. वाशिंगटन में यूनाइटेड स्टेट्स चैम्बर आफ़ कॉमर्स की तरफ़ से कहा गया है कि 1789 से लेकर 1945

دیش ودیش کی ڈائری

(16 نومبر سن '51 سے 15 دسمبر سن '51 تک)

نومبر

16 امریکہ سے ادھار لینے کے لئے ایران نے تیل سے اپنی آمدنی کی ضمانت دینے کو کہا .

17. چینی گڈول مشن کے نیتا مسٹر ٹنگ سی لن نے ڈاکٹر کوٹنس کی سیواؤں کی سراہنا کرتے ہوئے کہا کہ چین شانتی قائم کرنے کے لئے ہندستان سے سہیوگ کرے گا .

18. روس کے پردیش منتری شری وشنسکی نے پیرس میں ہونے والی یونو اسمبلی کے سامنے پرستاؤ رکھا کہ انتر قومی دیکھ ریکھ میں ایٹمی ہتھیاروں پر پوری روک لگا دی جائے .

19. پوربی اتر پردیش میں غلے کی کمی کی وجہ سے ایک کروڑ اٹھاون لاکھ انسانوں کی زندگی کو خطرہ .

20. لیبر سرکار کے پردیش سکریٹری مسٹر ہربرٹ ماریسن نے کہا کہ چین کی وجہ سے بڑی اتھل پتھل مچ سکتی ہے. اس لئے چین کو ضرور یونو میں شامل کر لینا چاہئے .

21. بھارت میں آئے چینی گڈول مشن نے حیدرآباد میں یہ بتایا کہ چین میں ہندی بھاشا کی پڑھائی کا انتظام کر دیا گیا ہے اور بہت سے چینی ودیارتھی ہندی پڑھ رہے ہیں .

22. امریکہ نے امریکی اور امریکہ کے دوسرے ساتھی دیشوں کے سپاہیوں کی اتری کوریا قید میں ہتیا کا الزام اتر کوریا پر لگایا تھا . اتر کوریا کے پردیش منتری نے اس آروپ کو جڑ مول سے غلط بتایا اور انہوں نے اس آروپ کے خلاف یونو کو بھی لکھا .

23. برطانیہ میں ہوم گارڈس کی ایک فوج تیار کی جائے گی جس میں ایک لاکھ پچیس ہزار آدمی بھرتی ہوں گے .

24. طہران میں مسٹر حسین فاطمی نے کہا کہ انگریزوں کو مصر سے نکالنے اور سوڈان کو مصر میں ملانے کے معاملے میں ایران پوری طرح سے مصر کے ساتھ ہے .

25. واشنگٹن میں یونائیٹڈ اسٹیٹس چیمبر آف کامرس کی طرف سے کہا گیا ہے کہ 178 سے لیکر 1945

तक की सारी सरकारों ने कुल मिला कर दो लाख चौबन हज़ार दो सौ मिलियन डालर जनता से टैक्स की शक्ल में लिये हैं. लेकिन सद्र टुमैन ने पांच छै मास में ही दो लाख बासठ हज़ार छै सौ मिलियन डालर जनता से वसूल किये.

26. मिस्र सरकार ने दुनिया की तमाम पार्लियामेन्टों के पास अपील भेजी है कि उनके मेम्बर मिस्र पर अंगरेज़ों के ज़ुल्म और ज़्यादती के गवाह रहें.

27. हिन्दुस्तान में अमरीका के राजदूत मिस्टर चेस्टर बाउल्स जब कलकत्ता यूनिवर्सिटी में भाशन देने जा रहे थे तो विद्यार्थियों ने उन्हें काला झंडा दिखाया और उन्हें दूसरे रास्ते से भीड़ से बचा कर अन्दर ले आया गया. इन विद्यार्थियों के हाथ में बड़े बड़े पोस्टर भी थे जिन पर लिखा था "एशिया छोड़ो, अमरीकी मदद ग़ुलामी है, अमरीकी साम्राज का नाश हो."

28. पीकिंग रेडियो ने कहा कि अमरीकी फ़ौजें कोरिया में ज़हरीली गैस का इस्तेमाल कर रही हैं.

29. उत्तर कोरिया के रेडियो ने इस बात की तसदीक़ की कि अमरीकी फ़ौजों ने कोरियाई फ़ौजों के हटने के बाद सियोल के एक लाख बारह हज़ार नागरिकों की हत्या की.

30. मिस्र की जनता की अंगरेज़ विरोधी लड़ाई में हिन्दुस्तानी जनता की शुभकामना के लिये मिस्र के प्रधान मंत्री नहास पाशा ने शुक्रिया अदा किया.

दिसम्बर.

1. चीन में हिन्दुस्तान के राज दूत सरदार पानिक्कर ने कहा कि हिन्दुस्तान और चीन के आपसी सम्बन्ध एशिया के भविश्य की इमारत खड़ी करने वाले हैं.

2. स्वेज़ नहर के इलाक़े में अंगरेज़ों ने 9 मिस्रियों को मार डाला और 62 को बुरी तरह ज़ख़्मी किया.

3. बम्बई सरकार ने भरोच ज़िले के 91 गांवों को क़हत के इलाक़े एलान कर दिया.

4. मद्रास सरकार ने एक रिपोर्ट में कहा है कि मद्रास पुलिस के गोली चलाने से अब तक 243 कम्यूनिस्ट मरे हैं.

5. डाक्टर बोरिकचेन का जन्म जर्मनी में हुआ था लेकिन अब वह ब्रिटेन के नागरिक हैं. उन्हें अभी नोबिल प्राइज़ भी मिला है. अमरीका ने यह कह कर उन्हें अपने मुल्क में आने की इजाज़त नहीं दी क्योंकि वह अमरीकी रक्षा के लिये ख़तरनाक हैं.

6. यू. पी. सरकार का एक करोड़ रुपया एलेक्शन पर ख़र्च होगा.

تک کی ساری سرکاروں نے کل ملا کر دو لاکھ چون ہزار دو سو ملین ڈالر جنتا سے ٹیکس کی شکل میں لئے ہیں. لیکن صدر ٹرومین نے پانچ چھ سال میں ہی دو لاکھ باسٹھ ہزار چھ سو ملین ڈالر جنتا سے وصول کئے.

26. مصر سرکار نے دنیا کی تمام پارلیامنٹوں کے پاس اپیل بھیجی ہے کہ ان کے ممبر مصر پر انگریزوں کے ظلم اور زیادتی کے گواہ رہیں.

27. ہندستان میں امریکہ کے راج دوت مسٹر چسٹر باؤلس جب کلکتہ یونیورسٹی میں بھاشن دینے جا رہے تھے تو ودیارتھیوں نے انہیں کالا جھنڈا دکھایا اور انہیں دوسرے راستے سے بھیڑ سے بچا کر اندر لے جایا گیا. ان ودیارتھیوں کے ہاتھ میں بڑے بڑے پوسٹر بھی تھے جن پر لکھا تھا "ایشیا چھوڑو، امریکی مدد غلامی ہے، امریکی سامراج کا ناش ہو."

28. پیکنگ ریڈیو نے کہا کہ امریکی فوجیں کوریا میں زہریلی گیس کا استعمال کر رہی ہیں.

29. اتر کوریا کے ریڈیو نے اس بات کی تصدیق کی کہ امریکی فوجوں نے کوریائی فوجوں کے ہٹنے کے بعد سیول کے ایک لاکھ بارہ ہزار ناگرکوں کی ہتیا کی.

30. مصر کی جنتا کی انگریز ورودھی لڑائی میں ہندستانی جنتا کی شبھ کامنا کے لئے مصر کے پردھان منتری نحاس پاشا نے شکریہ ادا کیا.

دسمبر

1. چین میں ہندستان کے راج دوت سردار پانیکر نے کہا کہ ہندستان اور چین کے آپسی سمبندھ ایشیا کے بھوشیہ کی عمارت کھڑی کرنے والے ہیں.

2. سوئز نہر کے علاقے میں انگریزوں نے 9 مصریوں کو مارڈالا اور 62 کو بری طرح زخمی کیا.

3. بمبئی سرکار نے بھڑوچ ضلعے کے 91 گاؤں کو قحط کے علاقے اعلان کردیا.

4. مدراس سرکار نے ایک رپورٹ میں کہا ہے کہ مدراس پولیس کے گولی چلانے سے اب تک 243 کمیونسٹ مرے ہیں.

5. ڈاکٹر بورک چین کا جنم جرمنی میں ہوا تھا لیکن اب وہ برٹین کے ناگرک ہیں. انہیں ابھی نوبل پرائز بھی ملا ہے. امریکہ نے یہ کہکر انہیں اپنے ملک میں آنے کی اجازت نہیں دی کیونکہ وہ امریکی رکشا کے لئے خطرناک ہیں.

6. یو. پی. سرکار کا ایک کروڑ روپیہ الکشن پر خرچ ہوگا.

7. यूनो की जनरल असेम्बली में नए चीन की नुमाइन्दगी के बारे में विचार करने की बात ना मन्ज़ूर हो गई.

8. टोकियो में जापान के अटार्नी जनरल ने कहा कि जापानी कम्यूनिस्ट अमरीका के ख़िलाफ़ बहुत बड़ा मोर्चा खड़ा कर रहे हैं. इस मोरचे में नरम से नरम दल के लोग भी शामिल हो रहे हैं.

9. मार्शल स्तालिन मिस्टर चर्चिल से रूस के अन्दर मिलने को तैयार हैं.

10. बम्बई में ख़ुराक मंत्री श्री मुंशी ने कहा कि पैदावार न बढ़ने की वजह से आने वाले दो साल हिन्दुस्तान के लिये बहुत कठिन हैं. इस बीच ग़ल्ले का दाम बहुत बढ़ेगा और बाहर से मंगाने में भी बहुत दिक़्क़त होगी.

11. नहर स्वेज़ के इलाक़े में एक सड़क बनाने के लिये बहुत से घरों को अंगरेज़ों ने बरबाद कर दिया. इसके ख़िलाफ़ मिस्र सरकार ने यूनो में अरज़ी देना तय किया है.

12. लाहौर में एक मस्जिद बनाने पर शिया और सुन्नी मुसलमानों में झगड़ा शुरू हुआ. 57 शिया जेल गए.

13. पेरिस में यूनो के सामने रूसी परदेश मंत्री ने शान्ति क़ायम करने के लिये दो सुझाव रखे—एक, यह कि बिना किसी शर्त के एटमी हथियारों पर रोक लगा दी जाए और उन पर अन्तर क़ौमी कन्ट्रोल हो. दूसरे, यह कि बड़ी बड़ी ताक़तें अपने हथियार और अपनी फ़ौजें कम करें.

14. अमरीका में बुरी तरह से भ्रष्टाचार फैला है और कई मिलियन डालर का गोल माल हो रहा है. सदर ट्रूमैन ने इस भ्रष्टाचार को मिटाने का एलान किया.

15. पीकिंग में चीन और रूमानिया के नुमाइन्दों ने एक कल्चरी समझौते पर दस्तख़त किये.

---

7. یونو کی جنرل اسمبلی میں نئے چین کی نمائندگی کے بارے میں وچار کرنے کی بات نامنظور ہوگئی ۔

8. ٹوکیو میں جاپان کے اٹارنی جنرل نے کہا کہ جاپانی کمیونسٹ امریکہ کے خلاف بہت بڑا مورچہ کھڑا کر رہے ہیں ۔ اس مورچے میں نرم سے نرم دل کے لوگ بھی شامل ہو رہے ہیں ۔

9. مارشل اسٹالن مسٹر چرچل سے روس کے اندر ملنے کو تیار ہیں ۔

10. بمبئی میں خوراک منتری شری منشی نے کہا کہ پیداوار نہ بڑھنے کی وجہ سے آنے والے دو سال ہندوستان کے لئے بہت کٹھن ہیں ۔ اس بیچ غلے کا دام بہت ہی بڑھے گا اور باہر سے منگانے میں بھی بہت دقت ہوگی ۔

11. نہر سوئز کے علاقے میں ایک سڑک بنانے کے لئے بہت سے گھروں کو انگریزوں نے برباد کر دیا ۔ اس کے خلاف مصر سرکار نے یونو میں عرضی دینا طے کیا ہے ۔

12. لاہور میں ایک مسجد بنانے پر شیعہ اور سنی مسلمانوں میں جھگڑا شروع ہوا 57 شیعہ جیل گئے ۔

13. پیرس میں یونو کے سامنے روسی پردیش منتری نے شانتی قائم کرنے کے لئے دو سجھاؤ رکھے--ایک، یہ کہ بنا کسی شرط کے ایٹمی ہتھیاروں پر روک لگا دی جائے اور ان پر انتر قومی کنٹرول ہو ۔ دوسرے، یہ کہ بڑی بڑی طاقتیں اپنے ہتھیار اور اپنی فوجیں کم کریں ۔

14. امریکہ میں بری طرح سے بھرشٹاچار پھیلا ہے اور کئی ملین ڈالر کا گول مال ہو رہا ہے ۔ صدر ٹرومین نے اس بھرشٹاچار کو مٹانے کا اعلان کیا ۔

15. پیکنگ میں چین اور رومانیہ کے نمائندوں نے ایک کلچری سمجھوتے پر دستخط کئے ۔

जग शांति कौंसिल की यूनो से अपील

[जग शांति कौंसिल की एक बैठक 6 नवम्बर सन '51 को वियाना में हुई थी. उसमें हिन्दुस्तान के नुमायन्दों ने भी भाग लिया था इस बैठक ने यूनो की जनरल असेम्बली के सामने एक अपील रखी है. हम उस अपील को ज्यों का त्यों नीचे देते हैं—एडीटर]

सेवा में, सभापति जनरल असेम्बली.

यूनो, पेरिस.

जगशांति कौंसिल जिसकी बैठक वियाना में हो रही है अपनी अपील यूनो की जनरल असेम्बली, जनमत और दुनिया भर की जनता के सामने रखती है.

हाल के महीनों में अंतर क़ौमी हालत में गड़बड़ी हर देश के स्त्री और पुरुष को परेशान और चिन्तित कर रही है. हर आदमी की दिली इच्छा है कि उन पांचों बड़ी ताक़तों में आपस में बात चीत हो और एक समझौता हो जाये जो यूनो चार्टर के लिहाज़ से और अपनी ताक़त की वजह से जग शांति के ज़िम्मेदार हैं. घटनाओं की धाराएँ और आज कल के शांति क़ायम करने के दूसरे तरीक़ों की ये [illegible] जनमत के सामने जग शांति कौंसिल के पांच बड़ी ताक़तों के बीच समझौते के आन्दोलन को ठीक ठहराती है.

जग शांति कौंसिल यूनो की जनरल असेम्बली का ध्यान ख़ास तौर पर नीचे लिखी बातों की तरफ़ दिलाती है.

पहली—सारी दुनिया पर उन फ़ैसलों को लादने से, जो यूनो की उन मेम्बर रियासतों की बहुसंख्या करती है जो वोट के ज़रिये मेम्बर बनाई गई हैं और सिर्फ़ इनसानी नस्ल की छोटी सी तादाद की ही नुमायन्दगी करती हैं, शांति और अन्तर क़ौमी सहयोग पैदा नहीं हो सकता. आपसी बात चीत और फ़िरक़ों को मिटाने की कोशिश से ही दुनिया की शांति पूर्ण तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी समझौता किया जा सकता है.

चूंकि ऐसे समझौते का घेरा एशियाई देशों तक भी है इसलिये इन्साफ़ और असली अंतर क़ौमी पालिसी की दृष्टि से यह ज़रूरी है कि गवर्नमेंट आफ़ पीपुल्स रिपब्लिक आफ़ चायना को यूनो में शामिल किया जाय.

جگ شانتی کونسل کی یونو سے اپیل

[جگ شانتی کونسل کی ایک بیٹھک 6 نومبر سن '51 کو ویانا میں ہوئی تھی. اس میں ہندستان کے نمائندوں نے بھی بھاگ لیا تھا. اس بیٹھک نے یونو کی جنرل اسمبلی کے سامنے ایک اپیل رکھی ہے. ہم اس اپیل کو جوں کا توں نیچے دیتے ہیں—ایڈیٹر]

سیوا میں، سبھاپتی جنرل اسمبلی،

یونو، پیرس.

جگ شانتی کونسل جس کی بیٹھک ویانا میں ہو رہی ہے اپنی اپیل یونو کی جنرل اسمبلی، جن مت اور دنیا بھر کی جنتا کے سامنے رکھتی ہے.

حال کے مہینوں میں انتر قومی حالت میں گڑبڑی ہر دیش کے استری اور پرش کو پریشان اور چنتت کر رہی ہے. ہر آدمی کی دلی اچھا ہے کہ ان پانچوں بڑی طاقتوں میں آپس میں بات چیت ہو اور ایک سمجھوتہ ہو جائے جو یونو چارٹر کے لحاظ سے اور اپنی طاقت کی وجہ سے جگ شانتی کے ذمہ دار ہیں. گھٹناؤں کی دھارائیں اور آج کل کے شانتی قائم کرنے کے دوسرے طریقوں کی یہ ناکامی جن مت کے سامنے جگ شانتی کونسل کے پانچ بڑی طاقتوں کے بیچ سمجھوتے کے آندولن کو ٹھیک ٹھہراتی ہے.

جگ شانتی کونسل یونو کی جنرل اسمبلی کا دھیان خاص طور پر نیچے لکھی باتوں کی طرف دلاتی ہے —

پہلی—ساری دنیا پر ان فیصلوں کو لادنے سے، جو یونو کی ان ممبر ریاستوں کی بہوسنکھیا کرتی ہے جو ووٹ کے ذریعے ممبر بنائی گئی ہیں اور صرف انسانی نسل کی چھوٹی سی تعداد کی ہی نمائندگی کرتی ہیں، شانتی اور انتر قومی سہیوگ پیدا نہیں ہو سکتا. آپسی بات چیت اور فرقوں کو مٹانے کی کوشش سے ہی دنیا کی شانتی پورن ترقی کے لئے ضروری سمجھوتہ کیا جا سکتا ہے

چونکہ ایسے سمجھوتے کا گھیرا ایشیائی دیشوں تک بھی ہے اس لئے انصاف اور اصلی انتر قومی پالیسی کی درشٹی سے یہ ضروری ہے کہ گورنمنٹ آف پیپلز ریپبلک آف چائنا کو یونو میں شامل کیا جائے.

जग शांति कौंसिल की दुनिया से अपील

दूसरी—चार बड़ी शक्तियों के प्रतिनिधियों की कान्फ्रेंस की नाकामयाबी और वाशिंगटन और ओटावा में एटलांटिक कौंसिल के हुए इक़रार का फ़ैसला देशों को ग़ैर हथियारबन्द करने की कोशिश में रुकावट डालता है, जरमन जनता को अपनी एकता क़ायम करने से रोकता है, और योरप में लड़ाई का ख़तरा बढ़ाता है.

चार बड़ों के बीच बातचीत से बहुत ही जल्दी समूचे अमन वाले और ग़ैर हथियारबन्द जरमनी को पैदा किया जा सकता है. यही इच्छा जरमनों की बहुत बड़ी जन संख्या की भी है और यही हक़ जरमनी के पड़ोसी देशों का हित भी है और शांति का हित भी इसी में है.

इसीलिये जग शांति कौंसिल दुनिया से अपील करती है कि वह अपना असर डालकर जरमनी को ग़ैर हथियारबन्द करने के समझौते की पाबन्दी के लिये बड़ी ताक़तों को मजबूर करे और एक ऐसे शांति समझौते के होने में अपना ज़ोर लगाए जिसके आधीन विदेशी फ़ौजें जरमनी से बाहर निकल जायें और समूचे ग़ैर हथियारबन्द जरमनी का जन्म हो सके.

तीसरी—एशिया में फिर से शांति की स्थापना का ताल्लुक़ दुनिया के इन्सानों से है. जापान के साथ सैन फ्रांसिस्को में किये गए समझौते की वजह से एशिया की शांति का ख़तरा पैदा हो गया है. आज इस बात की सख़्त ज़रूरत है कि आजकल जो लड़ाई झगड़ा और ज़ुल्म ज़्यादती कोरिया में हो रहा है उसको फ़ौरन एक समझौता करके बन्द कर दिया जाय और एशिया की जनता को यह हक़ मिल जाय कि वह बिना किसी बाहरी ताक़त के दख़ल दिये अपने को आज़ाद रख सके और अपने देश को एक बनाए.

चौथा—पास पूरब और उत्तरी अफ़्रीक़ा में शांति क़ायम नहीं रह सकती जब तक कि ऐसी हालतें पैदा होती रहेंगी और ऐसे इन्तज़ाम होते रहेंगे जो कि जनता की आज़ादी के हक़ के ख़िलाफ़ हैं.

मिस्र, ईरान, मराक़ो और ट्यूनिस और पास पूरब और उत्तरी अफ़्रीक़ा के तमाम देशों के इस हक़ को अमल में माना जाय कि वह बिना किसी बाहरी ताक़त के दख़ल के दबाव और बिना विदेशी फ़ौजों के कूच या छिपे उनके देश पर क़ब्ज़ा के वह अपनी समस्याओं को ख़ुद हल कर सकें और अपनी देखभाल ख़ुद कर सकें.

पाँचवीं—हथियारबन्दी की यह दौड़ सिवाय बदहाली, बर्बादी और इन्सानियत के लिए भयानक लड़ाई के ख़तरे के जनता को और कुछ भी नहीं दे सकती. इस लिये एक साथ धीरे-धीरे और असरदार कन्ट्रोल करके सब देशों को हथियार बन्द करने के रास्ते पर हम को चलना

جگ شانتی کونسل کی دنیا سے اپیل

دوسری—چار بڑی طاقتوں کے نمائندوں کی کانفرنس کی ناکامیابی اور واشنگٹن اور اوٹاوا میں اٹلانٹک کونسل کے جھوٹے اجلاس کا فیصلہ دیشوں کو غیر ہتھیار بند کرنے کی کوشش میں رکاوٹ ڈالتا ہے، جرمن جنتا کو اپنی ایکتا قائم کرنے سے روکتا ہے، اور یورپ میں لڑائی کا خطرہ بڑھاتا ہے۔

چار بڑوں کے بیچ بات چیت سے بہت ہی جلد سمپورن امن والے اور غیر ہتھیار بند جرمنی کو پیدا کیا جا سکتا ہے۔ یہی اچھا جرمنوں کی بہت بڑی جن سنکھیا کی بھی ہے اور یہی حل جرمنی کے پڑوسی دیشوں کے ہت میں ہے اور شانتی کا ہت بھی اسی میں ہے۔

اسی لئے جگ شانتی کونسل دنیا سے اپیل کرتی ہے کہ وہ اپنا اثر ڈال کر جرمنی کو غیر ہتھیار بند کرنے کے سمجھوتے کی پابندی کے لئے بڑی طاقتوں کو مجبور کرے اور ایک ایسے شانتی سمجھوتے کے ہونے میں اپنا زور لگائے جس کے ادھین ودیشی فوجیں جرمنی سے باہر نکل جائیں اور سمپورن غیر ہتھیار بند جرمنی کا جنم ہو سکے۔

تیسری—ایشیا میں پھر سے شانتی کی استھاپنا کا تعلق دنیا کے انسانوں سے ہے۔ جاپان کے ساتھ سین فرانسسکو میں کئے گئے سمجھوتے کی وجہ سے ایشیا کی شانتی کو خطرہ پیدا ہو گیا ہے۔ آج اس بات کی سخت ضرورت ہے کہ آج کل جو لڑائی جھگڑا اور ظلم زیادتی کوریا میں ہو رہی ہے اس کو فوراً سمجھوتہ کر کے بند کر دیا جائے اور ایشیا کی جنتا کو یہ حق مل جائے کہ وہ بنا کسی باہری طاقت کے دخل دیئے اپنے کو آزاد رکھ سکے اور اپنے دیش کو ایک بنائے۔

چوتھی—پاس پورب اور اتری افریقہ میں شانتی قائم نہیں رہ سکتی جب تک کہ ایسی حالتیں پیدا ہوتی رہیں گی اور ایسے انتظام ہوتے رہیں گے جو کہ جنتا کے آزادی کے حق کے خلاف ہیں۔

مصر، ایران، مراکو اور ٹیونس اور پاس پورب اور اتری افریقہ کے تمام دیشوں کے اس حق کو عمل میں مانا جائے کہ وہ بنا کسی باہری طاقت کے دخل کے دباؤ اور بنا ودیشی فوجوں کے کوچ یا چھپے ان کے دیش پر قبضہ کے وہ اپنی سمسیاؤں کو خود حل کر سکیں اور اپنی دیکھ بھال خود کر سکیں۔

پانچویں—ہتھیار بندی کی یہ دوڑ سوائے بدحالی بربادی اور انسانیت کے لئے بھیانک لڑائی کے خطرے کے جنتا کو اور کچھ بھی نہیں دے سکتی۔ اس لئے ایک ساتھ دھیرے دھیرے اور اثر دار کنٹرول کر کے سب دیشوں کو غیر ہتھیار بند کرنے کے راستے پر ہم کو چلنا

चाहिए. तमाम एटमी हथियारों और मानव को बरबाद करने वाले उन दूसरे हथियारों पर जिनका इस्तेमाल आम नैतिक विचार में बुरा है इस गैर हथियार बन्दी की कोशिश कर उन्हें जरूर से जरूर रोक लगाई जाए. जग शांति कौंसिल यूनो की जनरल असेम्बली से मांग करती है कि वह वियाना में आज 6 नवम्बर सन '51 की इस बैठक के गैर हथियार बन्दी सुझाव को बहस के लिये अपने सामने रखे.

यह सुझाव किसी भी देश के हित और अहित के संतुलन में ऊंच नीच नहीं पैदा करता. इसमें सख्त कन्ट्रोल रखने का जो तरीका बताया गया है उससे गैर हथियार बन्दी की हर स्टेज पर हर देश की सुरक्षा होती है.

हम इस अपील के साथ जग शांति कौंसिल के गैर हथियार बन्दी के सुझाव को नत्थी कर रहे हैं.

जग शांति कौंसिल को पूरा विश्वास है कि लड़ाई का होना कोई जरूरी नहीं है. अलग अलग सियासी और समाजी विचारों को मानने वाली सरकारें शान्ति में एक ही समय में रह सकती हैं. और शांति का यह सुझाव दुनिया भर के इनसानों के हित में है

सदर साहब मेहरबानी फरमाकर हमारे खलूस और मुहब्बत को कबूल फरमाएं.

वास्ते जग शांति कौंसिल
पेत्रो निवनी (नायब सदर) फैडरक जूलियट क्युरी (सदर)

हथियार बन्दी ठहराव.

हथियार बढ़ाने की दौड़ ऐसी बुनियाद पैदा कर रही है जिससे माली छीना झपटी पैदा हो और जनता गरीबी का शिकार हो. इस दौड़ का लड़ाई के सिवा कोई और नतीजा नहीं हो सकता. यह कहना सरासर गलत है कि हथियारों में बढ़ौती आपसी समझौते का असरदार तरीका है.

एक दूसरे के हथियारों की तादाद को बिना जाने बूझे हथियार बढ़ाने की यह दौड़ हर तरफ अविश्वास पैदा करती है. बिना किसी चाल के ऐसे गैर हथियार बन्दी के तरीके से ही सबकी रक्षा हो सकती है, जिस पर पूरा पूरा कन्ट्रोल किया जा सके.

इसी कारन हम उन पांच बड़ी ताकतों अमरीका, रूस, चीन की जनवादी सरकार, बर्तानिया और फ्रांस—जिनके पास सब से अधिक हथियार हैं और जो यूनो के चार्टर के मुताबिक जग शांति कायम करने के लिए जिम्मेदार हैं, से हम मांग करते हैं कि गैर हथियार बन्दी के लिये वह एक कान्फ्रेन्स बुलाएं. . .

چاھئے . تمام ایٹمی ھتھیاروں اور مانو کو برباد کرنے والے اُن دوسرے ھتھیاروں پر جن کا استعمال عام نیتک وچار میں برا ھے اِس غیر ھتھیار بندی کی کوشش کر انھیں ضرور سے ضرور روک لگائی جائے . جگ شانتی کونسل یونو کی جنرل اسمبلی سے مانگ کرتی ھے کہ وہ ویانا میں آج 6 نومبر سن '51 کی اِس بیٹھک کے غیر ھتھیار بندی سجھاؤ کو بحث کے لئے اپنے سامنے رکھے .

یہ سجھاؤ کسی بھی دیش کے ھت اور اھت کے سنتلن میں اونچ نیچ نہیں پیدا کرتا . اس میں سخت کنٹرول رکھنے کا جو طریقہ بتایا گیا ھے اس سے غیر ھتھیار بندی کی ھر اسٹیج پر ھر دیش کی سرکشا ھوتی ھے .

ھم اِس اپیل کے ساتھ جگ شانتی کونسل کے غیر ھتھیار بندی کے سجھاؤ کو نتھی کر رھے ھیں .

جگ شانتی کونسل کو پورا وشواس ھے کہ لڑائی کا ھونا کوئی ضروری نہیں ھے . الگ الگ سیاسی اور سماجی وچاروں کو ماننے والی سرکاریں شانتی سے ایک ھی سمے میں رہ سکتی ھیں . اور شانتی کا یہ سجھاؤ دنیا بھر کے انسانوں کے ھت میں ھے .

صدر صاحب مہربانی فرما کر ھمارے خلوص اور محبت کو قبول فرمائے .

واسطے جگ شانتی کونسل
فیڈرک جولیٹ کیوری (صدر) پیترو نینی (نائب صدر)

ھتھیار بندی ٹھہراؤ .

ھتھیار بڑھانے کی دوڑ ایسی بنیاد پیدا کر رھی ھے جس سے مالی چھینا جھپٹی پیدا ھو اور جنتا غریبی کا شکار ھو . اس دوڑ کا لڑائی کے سوا کوئی اور نتیجہ نہیں ھوسکتا . یہ کہنا سراسر غلط ھے کہ ھتھیاروں میں بڑھوتی آپسی سمجھوتے کا اثر دار طریقہ ھے .

ایک دوسرے کے ھتھیاروں کی تعداد کو بنا جانے بوجھے ھتھیار بڑھانے کی یہ دوڑ ھر طرف اوشواس پیدا کرتی ھے . بنا کسی چال کے ایسے غیر ھتھیار بندی کے طریقے سے ھی سب کی رکشا ھوسکتی ھے، جس پر پورا پورا کنٹرول کیا جاسکے .

اسی کارن ھم اُن پانچ بڑی طاقتوں—امریکہ، روس، چین کی جن وادی سرکار، برطانیہ اور فرانس—جن کے پاس سب سے ادھک ھتھیار ھیں اور جو یونو کے چارٹر کے مطابق جگ شانتی قائم کرنے کے لئے ذمہ دار ھیں، سے ھم مانگ کرتے ھیں کہ غیر ھتھیار بندی کے لئے وہ ایک کانفرنس بلائیں .

इस तरह यह ताकतें शांति चाहने की अपनी इच्छा का प्रदर्शन करेंगी.

आम इनसानों की बरबादी करने वाले हथियारों पर रोक.

इस कानफरेन्स में पाँचों बड़ी ताकतें इस बात पर एक राय हो जायें कि एटमी हथियारों या एटमी ताकत काम में लाकर बनाए जाने वाले हथियारों और आम इनसानों को बरबाद करने वाले हथियारों पर पूरी रोक लगाई जाय.

इस रोक पर ऐसा कन्ट्रोल हो जो न सिर्फ उन हथियारों और फैक्टरियों की ही देख-रेख कर सके जिनका खुल्लम खुल्ला एलान किया जाय बल्कि उन हथियारों और फैक्टरियों पर भी कन्ट्रोल कर सके जिन की मौजूदगी का कहीं भी संदेह हो.

तेज़ और एक साथ हथियारों में कमी.

इस कानफ्रेंस में पाँचों बड़ी ताकतों में धीरे धीरे और व्यवस्थित ढंग से हथियारों को कम करने के बारे में एक समझौता होना चाहिये.

हम माँग करते हैं कि सन '52 के आखिर तक एलान किए हुए और गिने गिनाए हथियारों की कुल तादाद के तिहाई की जगह आधा हिस्सा कम कर दिया जाय. यह भी ऐसी व्यवस्था के आधार पर की जाय जिसमें 'हथियार कमी' को किसी भी समय पर हर देश अपनी रक्षा कर सके.

हमारा सुझाव है कि हथियारों की तादाद, फौजों की गिनती और फैक्टरियों के नम्बर की रोशनी में तमाम हथियारों, फौजों और फैक्टरियों की कमी के लिये समय और उनका निस्बत मुकर्रर हो जाना चाहिए. ऐसा करते वक्त उस देश की जनता और उस देश की लम्बाई चौड़ाई और आने जाने के साधनों का ज़रूर ध्यान में रखा जाय.

हथियारों की गिनती और उन पर कन्ट्रोल.

एटमी हथियारों पर रोक लगाना और तमाम हथियारों में तिहाई की जगह आधे हिस्से की कमी करना. जब यह अन्तर क़ौमी कानफ्रेन्स फर्ज़ बताती है तो ज़रूरी हो जाता है कि हर तरह के हथियारों और फौजों की गिनती की जाय और इस कानफ्रेन्स में मानी हुई सारी बातों को अमली जामा पहनाने के लिए अन्तर-क़ौमी देख रेख और कन्ट्रोल की व्यवस्था की जाय.

इस अन्तर क़ौमी कन्ट्रोल करने वाली समिती का अधिकार उन हथियारों पर ही न हो जिन का समझौते पर दस्तखत करने वाले देशों ने एलान किया हो बल्कि इस समिती को हक़ हो कि उन हथियारों, फौजों और फैक्टरियों की भी जाँच पड़ताल कर सके जिनकी मौजूदगी का शक हो.

اس طرح یہ طاقتیں شانتی چاہنے کی اپنی اچھا کا پردرشن کریں گی۔

عام انسانوں کی بربادی کرنے والے ہتھیاروں پر روک.

اس کانفرنس میں پانچوں بڑی طاقتیں اس بات پر ایک رائے ہو جائیں کہ ایٹمی ہتھیاروں یا ایٹمی طاقت کام میں لا کر بنائے جانے والے ہتھیاروں اور عام انسانوں کو برباد کرنے والے ہتھیاروں پر پوری روک لگائی جائے۔

اس روک پر ایسا کنٹرول ہو جو نہ صرف اُن ہتھیاروں اور فیکٹریوں کی ہی دیکھ ریکھ کر سکے جن کا کھلم کھلا اعلان کیا جائے بلکہ اُن ہتھیاروں اور فیکٹریوں پر بھی کنٹرول کر سکے جن کی موجودگی کا کہیں بھی سندیہ ہو۔

تیز اور ایکساتھ ہتھیاروں میں کمی۔

اس کانفرنس میں پانچوں بڑی طاقتوں میں دھیرے دھیرے اور ویوستھت ڈھنگ سے ہتھیاروں کو کم کرنے کے بارے میں ایک سمجھوتہ ہونا چاہئے۔

ہم مانگ کرتے ہیں کہ سن 52ء کے آخیر تک اعلان کئے ہوئے اور گنے گنائے ہتھیاروں کی کل تعداد کے تہائی کی جگہ آدھا حصہ کم کر دیا جائے۔ یہ بھی ایسی ویوستھا کے آدھار پر کی جائے جس سے 'ہتھیار کمی' کی کسی بھی سمے پر ہر دیش اپنی رکشا کر سکے۔

ہمارا سجھاؤ ہے کہ ہتھیاروں کی تعداد، فوجوں کی گنتی اور فیکٹریوں کے نمبر کی روشنی میں تمام ہتھیاروں، فوجوں اور فیکٹریوں کی کمی کے لئے سمے اور اُن کا نسبت مقرر ہو جانا چاہئے۔ ایسا کرتے وقت اُس دیش کی جنتا اور اُس دیش کی لمبائی چوڑائی اور آنے جانے کے سادھنوں کو ضرور دھیان میں رکھا جائے۔

ہتھیاروں کی گنتی اور اُن پر کنٹرول

ایٹمی ہتھیاروں پر روک لگانا اور تمام ہتھیاروں میں تہائی کی جگہ آدھے حصے کی کمی کرنا۔ جب یہ انتر قومی کانفرنس فرض بتاتی ہے تو ضروری ہو جاتا ہے کہ ہر طرح کے ہتھیاروں اور فوجوں کی گنتی کی جائے اور اس کانفرنس میں مانی ہوئی ساری باتوں کو عملی جامہ پہنانے کے لئے انتر قومی دیکھ ریکھ اور کنٹرول کی ویوستھا کی جائے۔

اس انتر قومی کنٹرول کرنے والی سمتی کا ادھیکار اُن ہتھیاروں پر ہی نہ ہو جن کا سمجھوتے پر دستخط کرنے والے دیشوں نے اعلان کیا ہو بلکہ اس سمتی کو حق ہو کہ اُن ہتھیاروں، فوجوں اور فیکٹریوں کی بھی جانچ پڑتال کر سکے جن کی موجودگی کا شک ہو۔

हमारी राय

ہماری رائے

सर्वोदय और कम्यूनिस्ट

हम भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार के लेख "सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" को बड़ी ख़ुशी और फ़ख़्र के साथ "नया हिन्द" में दूसरी जगह छाप रहे हैं. हमें दुख है कि कुछ दफ़्तरी भूल से यह लेख इस अंक के शुरू में न आ सका. लेकिन बजाए इसके कि उसे उचित स्थान के लिये 'नया हिन्द' के अगले अंक तक रोका जाए हमने यह ठीक समझा कि जिस तरह भी हो इसे इसी अंक में दे दिया जाए. लेख सोच विचार से भरा हुआ और एक इन्सानी दिल से निकला हुआ है. भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार ने लेख के शुरू में ख़ास तौर पर हमारा ज़िक्र किया है. यह उनकी मुहब्बत है. लेख के विचारों पर हम यहां अधिक जाना ठीक नहीं समझते. हो सका तो 'नया हिन्द' में फिर कभी इन सब गुत्थियों पर अपने विचार प्रगट करेंगे. यहाँ हम केवल दो बातें कह देना ज़रूरी समझते हैं. एक, यह कि भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार के ज़्यादातर विचारों और नसीहतों से हम सहमत हैं. हम मानते हैं कि किसी भी ज़ुल्म ज़ियादती या नाइन्साफ़ी को ख़त्म करने के लिये, अगर ख़त्म करने वाले को अहिन्सा का तरीक़ा न सूझता हो या वक़्त पर न सूझ सके तो दूसरे तरीक़े काम में लाने का न केवल उसे हक़ ही है बल्कि उस का फ़र्ज़ भी हो जाता है. ज़ुल्म-ज़ियादती या बेइन्साफ़ी को चुप बैठे बरदाश्त कर लेना कायरता, पाप और हिन्सा से ज़ियादा बुरी चीज़ है. यहां इन्कार का सवाल ही पैदा नहीं होता. दूसरी बात हम यह चाहते हैं कि भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार और उनके से विचार वाले दूसरे भाई कम्यूनिज़्म को भी, कार्ल मार्क्स से रूस और रूस से चीन में बढ़ते हुए, बदलते हुए और सुधरते हुए रूप को, ध्यान से देखें और समझें. सन '20 के रूसी कम्यूनिज़्म और सन '60 के चीनी कम्यूनिज़्म में उतना ही फ़र्क़ है जितना कि बीस बरस के एक नौजवान नेक और जोशीले लड़के और पचास बरस के एक तजरबेकार नेक और समझदार इन्सान में. इन्सानों के साथ बर्ताव में इन दोनों कम्यूनिज़्म में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है. चांग काई-शेक की फ़ौज के ख़िलाफ़

سرووُدے اور کمیونسٹ

ہم بھائی عبدالغفار کے لیکھ ''سرودے اور کمیونسٹ'' کو بڑی خوشی اور فخر کے ساتھ " نیا ھند " میں دوسری جگہ چھاپ رہے ھیں. ھمیں دکھ ہے کہ کچھ دفتری بھول سے یہ لیکھ اِس انک کے شروع میں نہ جا سکا. لیکن بجائے اِسکے کہ اِسے اُچت استھان کے لئے 'نیا ھند' کے اگلے انک تک روکا جائے ہم نے یہ ٹھیک سمجھا کہ جس طرح بھی ھو اِسے اسی انک میں دے دیا جائے. لیکھ سوچ وچار سے بھرا ھوا اور ایک انسانی دل سے نکلا ھوا ھے. بھائی عبدالغفار نے لیکھ کے شروع میں خاص طور پر ھمارا ذکر کیا ھے. یہ اُن کی محبت ھے. لیکھ کے وچاروں پر ہم یہاں ادھک جانا ٹھیک نہیں سمجھتے. ھو سکا تو 'نیا ھند' میں پھر کبھی اِن سب گتھیوں پر اپنے وچار پرکٹ کرینگے. یہاں ہم کیول دو باتیں کہ دینا ضروری سمجھتے ھیں. ایک، یہ کہ بھائی عبدالغفار کے زیادہ تر وچاروں اور نصیحتوں سے ہم سہمت ھیں. ہم مانتے ھیں کہ کسی بھی ظلم زیادتی یا ناانصافی کو ختم کرنے کے لئے، اگر ختم کرنے والے کو اہنسا کا طریقہ نہ سوجھتا ھو یا وقت پر نہ سوجھ سکے تو دوسرے طریقے کام میں لانے کا نہ کیول اُسے حق ھی ھے بلکہ اُس کا فرض بھی ھو جاتا ھے. ظلم زیادتی یا بے انصافی کو چپ بیٹھے برداشت کر لینا کایرتا، پاپ اور ہنسا سے زیادہ بری چیز ھے. یہاں انکار کا سوال ھی پیدا نہیں ھوتا. دوسری بات ہم یہ چاھتے ھیں کہ بھائی عبدالغفار اور اُن کے سے وچار والے دوسرے بھائی کمیونزم کے بھی، کارل مارکس سے روس اور روس سے چین میں بڑھتے ھوئے بدلتے ھوئے اور سدھرتے ھوئے روپ کو، دھیان سے دیکھیں اور سمجھیں. سن '20 کے روسی کمیونزم اور سن '60 کے چینی کمیونزم میں اُتنا ھی فرق ھے جتنا کہ بیس برس کے ایک نوجوان نیک اور جوشیلے لڑکے اور پچاس برس کے ایک تجربہ کار نیک اور سمجھدار انسان میں. انسانوں کے ساتھ برتاؤ میں اِن دونوں کمیونزم میں زمین آسمان کا فرق ھے. چانگ کائی شیک کی فوج کے خلاف

चीनियों ने हथियार लेकर माओ-त्से-तुंग की फ़ौज का मुक़ाबिला किया था और देश भक्तों के क़त्ल में हिस्सा लिया था उन में से भी नब्बे फ़ीसदी से अधिक को माफ़ करके आज चीनी लोकराज के जांनिसार शहरी बना लिया गया है. चीनी सिपाहियों ने कोरिया में लड़ने वाले हज़ारों अमरीकी नौजवानों को ख़ुद अपनी जानें ख़तरे में डाल कर और कहीं-कहीं जानें देकर भी अपना हमदर्द और दोस्त बना लिया है. और भी बहुत सी बातें हैं. हमें यक़ीन है कि चीन इस वक़्त आहिस्ते आहिस्ते लेकिन बिल्कुल साफ़-साफ़ गांधी जी के प्यारे से प्यारे असूलों की तरफ़ बढ़ रहा है. एक दरजे तक चीनी कम्यूनिज़्म गांधीवाद का नया अमली तजुरबा है. दोनों में अभी तक जो फ़र्क़ है उसे हम निगाह से ओझल नहीं कर रहे हैं. ख़ास कर अपने मुल्क के बारे में हमें यह अटल विश्वास है कि गांधीवाद और कम्यूनिज़्म के प्यारे संगम में ही मुल्क का और इसके ज़रिये दुनिया का आइन्दा का भला है. हम यह भी मानते हैं कि असल दीन या धर्म में और उसी मज़हब में जिस ने रूस में ज़ार और पूँजीपतियों का साथ दिया था जिसने हिन्दुस्तान में पांच लाख से ज़ियादा जानें लीं, एक करोड़ से ज़ियादा घर बरबाद किये, गांधी जी को क़त्ल किया, और अब भी जिसके मन्सूबे ख़त्म नहीं हुए हैं, उतना ही फ़र्क़ है जितना ऋषी केश की पाक गंगा में और हुगली की उस गंगा में जिसमें पानी से भर निकालते ही पाव भर मैला सर पर दिखाई देता है. इसमें कोई शक नहीं कि इस वक़्त भाई अब्दुल ग़फ़्फ़ार का और सैकड़ों कम्यूनिस्ट नौजवानों का "अविश्वास और अधर्म" कहीं ज़ियादा ऊंचा और भगवान को कहीं ज़ियादा प्यारा है. हमें रुकना नहीं है आगे बढ़ना है, किसी क़ीमत पर भी आगे बढ़ना है. लेकिन जहाँ तक मुमकिन हो सके यह ख़याल रखना है कि कभी कभी ज़ियादा तेज़ी आगे चल कर रफ़्तार को बेहद कम भी कर देती है. हम ध्यान से मुहब्बत से और दर्द के साथ समझने की कोशिश करें तो इस बारे में महात्मा गांधी के उपदेश और उनके बताए हुए असूल हिन्दुस्तान के लिये एक ज़बरदस्त मशाल राह हैं. बाक़ी फिर.

—सुन्दरलाल

چینیوں نے ہتھیار لیکر ماؤتسے تنگ کی فوج کا مقابلہ کیا تھا اور دیش بھگتوں کے قتل میں حصہ لیا تھا، اُن میں سے بھی نوے فی صدی سے اوپر کو معاف کر کے آج چینی لوک راج کے جاں نثار شہری بنا لیا گیا ہے۔ چینی سپاہیوں نے کوریا میں لڑنے والے ہزاروں امریکی نوجوانوں کو خود اپنی جانیں خطرے میں ڈال کر اور کہیں کہیں جانیں دے کر بھی اپنا ہمدرد اور دوست بنا لیا ہے۔ اور بھی بہت سی باتیں ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ چین اس وقت آہستے آہستے لیکن بالکل صاف صاف گاندھی جی کے پیارے سے پیارے اصولوں کی طرف بڑھ رہا ہے۔ ایک درجے تک چینی کمیونزم گاندھی واد کا نیا عملی تجربہ ہے۔ دونوں میں ابھی تک جو فرق ہے اُسے ہم نگاہ سے اوجھل نہیں کر رہے ہیں۔ خاص کر اپنے ملک کے بارے میں ہمیں یہ اٹل وشواس ہے کہ گاندھی واد اور کمیونزم کے پیارے سنگم میں ہی ملک کا اور اس کے ذریعہ دنیا کا آئندہ کا بھلا ہے۔ ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ اصل دین یا دھرم میں اور اُسی مذہب میں جس نے روس میں زار اور پونجی پتیوں کا ساتھ دیا تھا جس نے ہندوستان میں پانچ لاکھ سے زیادہ جانیں لیں، ایک کروڑ سے زیادہ گھر برباد کئے، گاندھی جی کو قتل کیا، اور اب بھی جس کے منصوبے ختم نہیں ہوئے ہیں، اتنا ہی فرق ہے جتنا رشی کیش کی پاک گنگا میں اور ہگلی کی اُس گنگا میں جس میں پانی سے بھر نکالتے ہی پاؤ بھر میلا سر پر دکھائی دیتا ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ اس وقت بھائی عبدالغفار کا اور سیکڑوں کمیونسٹ نوجوانوں کا "اوشواس اور ادھرم" کہیں زیادہ اونچا اور بھگوان کو کہیں زیادہ پیارا ہے۔ ہمیں رکنا نہیں ہے آگے بڑھنا ہے، کسی قیمت پر بھی آگے بڑھنا ہے۔ لیکن جہاں تک ممکن ہو سکے یہ خیال رکھنا ہے کہ کبھی کبھی زیادہ تیزی آگے چل کر رفتار کو بے حد کم بھی کر دیتی ہے۔ ہم دھیان سے محبت سے اور درد کے ساتھ سمجھنے کی کوشش کریں تو اس بارے میں مہاتما گاندھی کے اُپدیش اور اُن کے بتائے ہوئے اصول ہندوستان کے لئے ایک زبردست مشعل راہ ہیں۔ باقی پھر۔

—سندرلال

अंजुमन तरक़्क़ी उरदू

अंजुमन तरक़्क़ी उरदू की मई '50 से अगस्त '51 तक की रिपोर्ट इस वक़्त सामने है.

आज से इक्यावन बरस पहले यू. पी. के लेफ़्टिनेन्ट गवरनर सर चार्ल्स मैकडानल्ड के खुले इशारे और

انجمن ترقی اُردو

انجمن ترقی اُردو کی مئی '50 سے اگست '51 تک کی رپورٹ اس وقت سامنے ہے۔

آج سے اکاون برس پہلے یو۔ پی۔ کے لفٹننٹ گورنر سر چارلس میکڈانلڈ کے کھلے اشارے اور

उसके बाद इस सूबे में नागरी प्रचारिणी सभा की बुनियाद रक्खी गई और इस प्रान्त की कचहरियों और दफ़्तरों में हिन्दी की तहरीक और हिन्दी उर्दू का झगड़ा शुरू हो गया. इसके जवाब में सन 1903 में अलीगढ़ की एजुकेशनल कानफ़रेन्स ने उर्दू की हिफ़ाज़त करने और उसको तरक़्क़ी देने के लिये अपना एक महकमा खोला. अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू की जिस रिपोर्ट का हमने ऊपर ज़िक्र किया है उससे मालूम होता है कि दस ग्यारह साल तक उर्दू की तरक़्क़ी का काम इसी महकमे की देख रेख में चलता रहा. फिर मौलाना अब्दुलहक़ के सेक्रेट्री होने के बाद एजूकेशनल कान्फ़रेन्स से अलग उर्दू के बढ़ावे के लिये एक संगठन पैदा हुआ. मौलाना की वजह से औरंगाबाद उस का केन्द्र बन गया. हैदराबाद की सरकार और वहाँ के लोगों की मदद से उर्दू ने काफ़ी तरक़्क़ी की. इसको आल इंडिया रूप देने के लिये यह ज़रूरी समझा गया कि अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू का केन्द्र दिल्ली बनाया जाए. सन 1938 में पूरा दफ़्तर औरंगाबाद से दिल्ली आ गया. मौलाना अब्दुल हक़ की देख रेख में अंजुमन ने काफ़ी काम किया और देश का ध्यान अपनी तरफ़ खींचा.

दंगों और बद-अमनी का सब से अधिक असर जीवन के कल्चरी पहलू पर पड़ता है. उसकी बाढ़ रुक जाती है और उसमें तरह तरह के रोग पैदा हो जाते हैं. सन '47 के हिन्दू मुस्लिम बलवों में भी हमारी मिली जुली कल्चर को कठिन मंज़िल से गुज़रना पड़ा. अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू को भी नुक़सान पहुँचा और उसका सारा शीराज़ा थोड़े दिनों के लिये बिखर गया. अंजुमन के दफ़्तर को दिल्ली से अलीगढ़ लाया गया. सन 1948 में अंजुमन के डायरेक्टरों की एक बैठक हुई जिसमें यह तय पाया कि अंजुमन का केन्द्र हिन्दुस्तान में बना रहे और काम फिर से शुरू किया जाए और उसका पाकिस्तान से कोई ताल्लुक़ न रहे. इसी जलसे में डाक्टर ज़ाकिर हुसैन को सदर और क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार को सेक्रेटरी चुना गया.

अंजुमन के नए जनम में बदले हुए हालात के मुताबिक़ उर्दू ज़बान को बढ़ाने के हर नए पहलू को शामिल कर लिया गया है. अंजुमन के मोटे मोटे दो मक़सद हैं—एक, उर्दू भाषा और उसके पुराने साहित्य को ज़िन्दा और क़ायम रखना और दूसरे, उर्दू भाषा को तरक़्क़ी देना. यह भी कोशिश की जायगी कि उर्दू को आम पसन्द बनाने के लिये उसे आसान से आसान बनाने पर ध्यान दिया जाए और जनता की बोल चाल के नज़दीक से नज़दीक रक्खा जाए.

कुछ लोग पूछते हैं कि अब अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू की क्या ज़रूरत है ? हमारी यूनियन के विधान में उर्दू को

اس کے بعد اس صوبے میں ناگری پرچارنی سبھا کی بنیاد رکھی گئی اور اس پرانت کی کچہریوں اور دفتروں میں ہندی کی تحریک اور ہندی اردو کا جھگڑا شروع ہوگیا. اس کے جواب میں سن 1903 میں علی گڑھ کی ایجوکیشنل کانفرنس نے اردو کی حفاظت کرنے اور اس کو ترقی دینے کے لئے اپنا ایک محکمہ کھولا. انجمن ترقی اردو کی جس رپورٹ کا ہم نے اوپر ذکر کیا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دس گیارہ سال تک اردو کی ترقی کا کام اسی محکمے کی دیکھ ریکھ میں چلتا رہا. پھر مولانا عبدالحق کے سکریٹری ہونے کے بعد ایجوکیشنل کانفرنس سے الگ اردو کے بڑھاوے کے لئے ایک سنگٹھن پیدا ہوا. مولانا کی وجہ سے اورنگ آباد اس کا کیندر بن گیا. حیدرآباد کی سرکار اور وہاں کے لوگوں کی مدد سے اردو نے کافی ترقی کی. اس کو آل انڈیا شکل دینے کے لئے یہ ضروری سمجھا گیا کہ انجمن ترقی اردو کا کیندر دلی بنایا جائے. سن 1938 میں پورا دفتر اورنگ آباد سے دلی آگیا. مولانا عبدالحق کی دیکھ ریکھ میں انجمن نے کافی کام کیا اور دیش کا دھیان اپنی طرف کھینچا.

دنگوں اور بدامنی کا سب سے ادھک اثر جیون کے کلچری پہلو پر پڑتا ہے. اس کی باڑھ رک جاتی ہے اور اس میں طرح طرح کے روگ پیدا ہوجاتے ہیں. سن '47 کے ہندو مسلم بلووں میں بھی ہماری ملی جلی کلچر کو کٹھن منزل سے گزرنا پڑا. انجمن ترقی اردو کو بھی نقصان پہنچا اور اس کا سارا شیرازہ تھوڑے دنوں کے لئے بکھر گیا. انجمن کے دفتر کو دلی سے علی گڑھ لیا گیا. سن 1948 میں انجمن کے ڈائرکٹروں کی ایک بیٹھک ہوئی جس میں یہ طے پایا کہ انجمن کا کیندر ہندستان میں بنا رہے اور کام پھر سے شروع کیا جائے اور اس کا پاکستان سے کوئی تعلق نہ رہے. اسی جلسے میں ڈاکٹر ذاکر حسین کو صدر اور قاضی محمد عبدالغفار کو سکریٹری چنا گیا.

انجمن کے نئے جنم میں بدلے ہوئے حالات کے مطابق اردو زبان کو بڑھانے کے ہر نئے پہلو کو شامل کرلیا گیا ہے. انجمن کے موٹے موٹے دو مقصد ہیں—ایک' اردو بھاشا اور اس کے پرانے ساہتیہ کو زندہ اور قائم رکھنا اور دوسرے' اردو بھاشا کو ترقی دینا. یہ بھی کوشش کی جائے گی کہ اردو کو عام پسند بنانے کے لئے اسے آسان سے آسان بنانے پر دھیان دیا جائے اور جنتا کی بول چال کے نزدیک سے نزدیک رکھا جائے.

کچھ لوگ پوچھتے ہیں کہ اب انجمن ترقی اردو کی کیا ضرورت ہے؟ ہماری یونین کے ودھان میں اردو کو

इन भाषाओं में से एक बनाया गया है जो सरकारी भाषा हिन्दी को रूप देने और बढ़ाने में मदद देगी. और प्रान्ती भाषाओं के साथ साथ उर्दू की भी छाप हिन्दी पर रहनी चाहिये और इसी में हिन्दी की भलाई, तरक़्क़ी और ख़ूबसूरती है. लोगों को यह बताने के लिये कि यह उर्दू क्या है, देश की बोलियों में उसकी क्या जगह है और उसकी कैसी छाप हिन्दी पर पड़नी चाहिये अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू का होना बेहद ज़रूरी है. नाम इसका अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू है लेकिन असल में देश की सरकारी भाषा हिन्दी को माला माल करने के सिलसिले में यह बहुत काम कर सकती है.

उर्दू भाषा का किसी मज़हब, किसी जात, किसी फ़िरक़े से कोई सम्बन्ध नहीं. आम तौर पर किसी ज़बान का इस तरह के गरोहों से कोई सम्बन्ध नहीं होता. ज़बानें इलाक़ाई हुआ करती हैं. उर्दू ज़बान उन सब की ज़बान है जो उसे बोलते हैं. उसके मिटने से न कोई मज़हब मिटेगा न किसी ख़ास फ़िरक़े का कल्चर. अगर कोई चीज़ मिटेगी तो वह है हमारा मिला जुला कल्चर और साहित्य के मैदान में अब तक के हमारे तजरबे और हमारी चौमुखी तरक़्क़ी. हमको आगे बढ़ना है और हम हर मैदान में आगे बढ़ेंगे लेकिन बिना बुनियाद के नहीं. उर्दू हमारे देश की एक ज़बान है. उसकी ख़िदमत में हर विचार के आदमी का हिस्सा लेना हर तरह उचित है. अंजुमन के डायरेक्टरों की गिनती बढ़ा दी गई है जिनमें हिन्दू और मुसलमान हिन्दी के विद्वान और उर्दू के विद्वान दोनों शामिल हैं. उनकी गिनती अब चालीस तक हो गई.

पन्द्रह महीनों में अंजुमन ने काफ़ी काम कर डाला. लायब्रेरी की पुरानी किताबों की हालत सुधारी गई और सुधारी जा रही है. मुल्क भर में अंजुमन की शाख़ों में जान डाली गई. बहुत सी नई अच्छी अच्छी किताबें अलग अलग मज़मूनों पर छपवाई गईं. अंजुमन का इरादा है कि उर्दू में हर मज़मून पर किताबें छपवाए. उसके प्रोग्राम में एक बड़ी बात यह भी है कि उर्दू के सारे साहित्य को देव नागरी लिखावट में छाप कर हिन्दी लिखावट जानने वाली जनता तक पहुँचाये और हिन्दी और दूसरी भारती भाषाओं के साहित्य को उर्दू में छाप कर उर्दू जानने वाली जनता से उसका परिचय कराए.

अंजुमन के सामने काम बहुत है लेकिन पूँजी कम है. पहले अंजुमन की सालाना आमदनी एक लाख रुपए थी. अब सिर्फ़ साठ हज़ार रह गई है. उसमें से छत्तीस हज़ार रुपया हिन्द सरकार ने दिया है, बाक़ी आमदनी दूसरे ज़रियों से हुई है. ज़ाहिर है सरकार की मदद पर ज़ियादा दिनों काम नहीं किया जा सकता. अंजुमन को अपने पैरों पर

اِن زبانوں میں سے ایک بنایا گیا ہے جو سرکاری بھاشا ہندی کو روپ دینے اور بڑھانے میں مدد دیں گی. اور پرانتی بھاشاؤں کے ساتھ ساتھ اُردو کی بھی چھاپ ہندی پر رہنی چاہئے اور اسی میں ہندی کی بھلائی، ترقی اور سندرتا ہے. لوگوں کو یہ بتانے کے لئے کہ یہ اُردو کیا ہے، دیش کی بولیوں میں اُس کی کیا جگہ ہے اور اُس کی کیسی چھاپ ہندی پر پڑنی چاہئے انجمن ترقی اُردو کا ہونا بے حد ضروری ہے. نام اُس کا انجمن ترقی اُردو ہے لیکن اصل میں دیش کی سرکاری بھاشا ہندی کو مالا مال کرنے کے سلسلے میں یہ بہت کام کرسکتی ہے.

اُردو بھاشا کا کسی مذہب، کسی جات، کسی فرقے سے کوئی سمبندھ نہیں. عام طور پر کسی زبان کا اِس طرح کے گروہوں سے کوئی سمبندھ نہیں ہوتا. زبانیں علاقائی ہوا کرتی ہیں. اُردو زبان اُن سب کی زبان ہے جو اُسے بولتے ہیں. اِس کے مٹنے سے نہ کوئی مذہب مٹیگا نہ کسی خاص فرقے کا کلچر. اگر کوئی چیز مٹے گی تو وہ ہے ہمارا ملا جلا کلچر اور ساہتیہ کے میدان میں اب تک کے ہمارے تجربے اور ہماری چومکھی ترقی. ہم کو آگے بڑھنا ہے اور ہم ہر میدان میں آگے بڑھیں گے لیکن بنا بنیاد کے نہیں. اُردو ہمارے دیش کی ایک زبان ہے. اُس کی خدمت میں ہر وچار کے آدمی کا حصہ لینا ہر طرح اُچت ہے. انجمن کے ڈائرکٹروں کی گنتی بڑھا دی گئی ہے جن میں ہندو اور مسلمان ہندی کے ودوان اور اُردو کے ودوان دونوں شامل ہیں. اُن کی گنتی اب چالیس تک ہوگئی.

پندرہ مہینوں میں انجمن نے کافی کام کر ڈالا. لائبریری کی پرانی کتابوں کی حالت سدھاری گئی اور سدھاری جارہی ہے. ملک بھر میں انجمن کی شاخوں میں جان ڈالی گئی. بہت سی نئی اچھی اچھی کتابیں الگ الگ مضمونوں پر چھپوائی گئیں. انجمن کا ارادہ ہے کہ اُردو میں ہر مضمون پر کتابیں چھپوائے. اُس کے پروگرام میں ایک بڑی بات یہ بھی ہے کہ اُردو کے سارے ساہتیہ کو دیوناگری لکھاوٹ میں چھاپ کر ہندی لکھاوٹ جاننے والی جنتا تک پہنچایا جائے اور ہندی اور دوسری بھارتی بھاشاؤں کے ساہتیہ کو اُردو میں چھاپ کر اُردو جاننے والی جنتا سے اُن کا پریچے کرائے.

انجمن کے سامنے کام بہت ہے لیکن پونجی کم ہے. پہلے انجمن کی سالانہ آمدنی ایک لاکھ روپئے تھی. اب صرف ساٹھ ہزار رہ گئی ہے. اِس میں سے چھتیس ہزار روپئے ہند سرکار نے دیا ہے، باقی آمدنی دوسرے ذریعوں سے ہوئی ہے. ظاہر ہے سرکار کی مدد پر زیادہ دنوں کام نہیں کیا جاسکتا. انجمن کو اپنے پیروں پر

घाटा होना ही चाहिये. किताबों की बिकरी से अभी बहुत उम्मीद नहीं की जा सकती. एक तो किताबों की बिकरी को यों ही धक्का पहुँचा है दूसरे अंजुमन की निकाली हुई 250 किताबें मुकद्दमे बाज़ी वग़ैरा की वजह से बक्से में पड़ी हैं.

रिपोर्ट के आखीर में आमदनी और खर्च का हिसाब दिया हुआ है. इस से पता चलता है कि किताबों की तैयारी और छपाई में अंजुमन ने सोलह हज़ार तीन सौ पन्द्रह रुपया तीन आना खर्च किया है. अंजुमन का अखबार "हमारी ज़बान" पन्द्रह दिन में निकलता है. उसका निकालना ज़रूरी है. लेकिन इस तरह के अखबार में घाटा होता है. "हमारी ज़बान" का सालाना घाटा छै हज़ार नौ-सौ चौदह रुपया दस आना छै पाई है. एक और अदबी तिमाही रिसाला अंजुमन "उरदू अदब" के नाम से निकालती है. इस रिसाले का सालाना घाटा दो हज़ार दो सौ बाइस रुपया साढ़े दस आना है.

हमारी यूनियन के विधान में उरदू को भारत की भाषाओं में से एक भाषा माना गया है. उरदू का साहित्य है, उरदू की परम्परा है, उरदू के कलाकारों का जनता में मान होता है और मुशायरों में भीड़ लगी रहती है. फिर भी कहा जाता है सरकारी काग़ज़ इस बात पर चुप हैं कि वह कहाँ की ज़बान है. ज़ाहिर है, उरदू किसी दूसरे देश की ज़बान नहीं है. उरदू पाकिस्तान की ज़बान भी नहीं है. उरदू की पाकिस्तान में ज़ियादा से ज़ियादा वही हैसियत हो सकती है जो अंगरेज़ी की अब तक रह चुकी है, या फारसी की किसी ज़माने में थी. पाकिस्तानियों की ज़बान बंगला, पंजाबी, सिन्धी और पश्तो है, उरदू नहीं. फिर उरदू कहाँ की ज़बान है?

हम उरदू और हिन्दी को दो भाषाएँ मानते ही नहीं. सच यह है कि बोल चाल की हिन्दी और की हिन्दी उरदू दोनों एक हैं उसी को हिन्दुस्तानी भी कहते हैं. और किताबी यानी पढ़ेलिखे लोगों और उरदू उसी एक भाषा की दो अलग अलग शैलियाँ हैं. अगर हम उरदू और हिन्दी को अलग अलग भी देखें तो उनमें फरक वाक्यों की बनावट का नहीं कुछ शब्दों ही का है—"मेरी आयु पचास वर्षों की है" हिन्दी है. मेरी उम्र पचास साल की है" उरदू हो गई लेकिन अगर हम इसी कसौटी पर भी अपने प्रान्त की बोल चाल की भाषा को कस कर देखें तो दिल्ली, मेरठ और लखनऊ ही नहीं इलाहाबाद और बनारस की गलियों और गाँवों में भी आम जनता उम्र, हालत, ज़रूरत और फरक बोलती है. आयु, दशा, आवश्यकता और अन्तर नहीं. इसी तरह के पचासों शब्द गिनाए जा सकते हैं. हमें ईमानदारी के साथ इस सच्चाई को मानना चाहिये कि जहां तक उरदू

گھاٹا ہونا ہی چاہئے. کتابوں کی بکری سے ابھی بہت اُمید نہیں کی جاسکتی. ایک تو کتابوں کی بکری کو یوں ہی دھکا پہونچا ہے دوسرے انجمن کی نکالی ہوئی 250 کتابیں مقدمے بازی وغیرہ کی وجہ سے بکسے میں پڑی ہیں.

رپورٹ کے آخیر میں آمدنی اور خرچ کا حساب دیا ہوا ہے. اس سے پتہ چلتا ہے کہ کتابوں کی تیاری اور چھپائی میں انجمن نے سولہ ہزار تین سو پندرہ روپیہ تین آنہ خرچ کیا ہے. انجمن کا اخبار "ہماری زبان" پندرہ دن میں نکلتا ہے. اسکا نکلنا ضروری ہے. لیکن اس طرح کے اخبار میں گھاٹا ہوتا ہے. "ہماری زبان" کا سالانہ گھاٹا چھ ہزار نو سو چودہ روپیہ دس آنہ چھ پائی ہے. ایک اور ادبی تماہی رسالہ انجمن "اردو ادب" کے نام سے نکالتی ہے. اس رسالے کا سالانہ گھاٹا دو ہزار دو سو بائیس روپیہ ساڑھے دس آنہ ہے.

ہماری یونین کے ودھان میں اُردو کو بھارت کی بھاشاؤں میں سے ایک بھاشا مانا گیا ہے. اُردو کا ساہتیہ ہے، اُردو کی پرمپرا ہے، اُردو کے کلاکاروں کا جنتا میں مان ہوتا ہے اور مشاعروں میں بھیڑ لگی رہتی ہے. پھر بھی کہا جاتا ہے سرکاری کاغذ اس بات پر چپ ہیں کہ وہ کہاں کی زبان ہے. ظاہر ہے، اُردو کسی دوسرے دیش کی زبان نہیں ہے. اُردو پاکستان کی زبان بھی نہیں ہے. اُردو کی پاکستان میں زیادہ سے زیادہ وہی حیثیت ہوسکتی ہے جو انگریزی کی اب تک رہ چکی ہے، یا فارسی کی کسی زمانے میں تھی. پاکستانیوں کی زبان بنگلہ، پنجابی، سندھی اور پشتو ہے، اُردو نہیں. پھر اُردو کہاں کی زبان ہے؟

ہم اُردو اور ہندی کو دو بھاشائیں مانتے ہی نہیں. سچ یہ ہے کہ بول چال کی ہندی اور اُردو دونوں ایک ہیں اسی کو ہندستانی بھی کہتے ہیں اور کتابی یعنی پڑھے لکھے لوگوں کی ہندی اور اُردو اسی ایک بھاشا کی دو الگ الگ شیلیاں ہیں. اگر ہم اُردو اور ہندی کو الگ الگ بھی دیکھیں تو اُن میں فرق واکیوں کی بناوٹ کا نہیں کچھ شبدوں ہی کا ہے—"میری آیو پچاس ورش کی ہے" ہندی ہے. "میری عمر پچاس سال کی ہے" اُردو ہوگئی. لیکن اگر ہم اسی کسوٹی پر بھی اپنے پرانت کی بول چال کی بھاشا کو کس کر دیکھیں تو دلی، میرٹھ اور لکھنؤ ہی نہیں الہ آباد اور بنارس کی گلیوں اور گاؤں میں بھی عام جنتا عمر، حالت، ضرورت اور فرق بولتی ہے. آیو، دشا، آوشیکتا اور انتر نہیں. اسی طرح کے پچاسوں شبد گنائے جا سکتے ہیں. ہمیں ایمانداری کے ساتھ اس سچائی کو ماننا چاہئے. جہاں تک اُردو

...और हिन्दी दो हैं वहां तक इस प्रान्त के अधिकतर हिस्से के आम लोग बोल चाल की ज़बान हिन्दी की निस्बत उर्दू के ज़्यादा नज़दीक है. ऐसी हालत में और हिन्दी के ऐसे सूबे की सरकारी ज़बान हो जाने के बाद यह शिकायत कि इस प्रान्त में जो लड़के या जो लोग स्कूलों में उर्दू पढ़ना चाहते हैं उन्हें मदद देने की जगह उनके रास्ते में रुकावटें डाली जाती हैं, बड़े दुख की बात है.

22 मई 1951 को इस काम के लिये एक डेपुटेशन भाई सम्पूर्णानन्द से मिला था. इसका नतीजा हुआ कि उन्होंने एक सरक्युलर निकलवा दिया कि जहां लड़के उर्दू में तालीम पाना चाहें उनको उर्दू में तालीम दी जावे. पर इस हुक्म पर अमल सब जगह सचाई और बड़े दिल से नहीं हो रहा है. हमारे सरकारी अफ़सरों और जनता दोनों को इस मामले में अधिक उदारता से काम लेना चाहिये.

अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू ने हाल में तय किया है कि इस प्रान्त के कई लाख आदमियों के दस्तख़तों से यूनियन के राष्ट्रपति से यह प्रार्थना की जाए कि वह विधान की दफ़ा 347 के अनुसार उर्दू को इस प्रान्त की एक स्थानी यानी इलाक़ाई ज़बान एलान कर दें.

हिन्दी और उर्दू दोनों के प्रेमियों से हमारी अपील है कि वह इस काम में पूरी मदद दें. दस्तख़त इकट्ठा करने वालों का फ़र्ज़ है कि वह न केवल उन लोगों के पास जाएं जो उर्दू के हामी हैं बल्कि उन लोगों के पास भी जाएं जो हिन्दी के सच्चे प्रेमी हैं और उनकी मदद और हमदर्दी हासिल करने की कोशिश करें. हिन्दी के बड़े बड़े लेखकों के पास जा कर उनके सामने अपनी बात रखने और उनकी मदद चाहने से भी उम्मीद है कि वह पूरी तरह से इस मांग का समर्थन करेंगे.

हिन्दी वालों में उर्दू प्रेम ही हिन्दी की शोभा और उसके भंडार दोनों को बढ़ायगा. उसमें जान पैदा कर देगा और उर्दू वालों में हिन्दी प्रेम उर्दू की सच्ची आत्मा को अमर कर देगा.

—सुन्दरलाल

पख़्तूनों की पुकार

अख़बारों की ख़बर है कि पख़्तूनों ने तफ़सील के साथ एक बयान तैयार कर के डाक्टर ग्राहम के पास भेजा है जो आजकल यू.ना की तरफ़ से कश्मीर के मामले में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता का काम कर रहे हैं. इस बयान में कहा गया है कि कश्मीर के सवाल का गहरा ताल्लुक़ पख़्तूनिस्तान के मामले से है और यह सब मामला

اور ہندی دو ہیں وہاں تک اِس پرانت کے اَدھک تر حصے کی عام بول چال کی زبان ہندی کی نسبت اُردو کے زیادہ نزدیک ہے . ایسی حالت میں اور ہندی کے ایسے صوبے کی سرکاری زبان ہوجانے کے بعد یہ شکایت کہ اس پرانت میں جو لڑکے یا جو لوگ اسکولوں میں اُردو پڑھنا چاہتے ہیں انہیں مدد دینے کی جگہ اُن کے راستے میں رکاوٹیں ڈالی جاتی ہیں، بڑے دکھ کی بات ہے .

22 مئی سن 1951 کو اس کام کے لئے ایک ڈیپوٹیشن بھائی سمپورنانند سے ملا تھا : اِس کا نتیجہ ہوا کہ اُنہوں نے ایک سرکلر نکلوا دیا کہ جہاں لڑکے اُردو میں تعلیم پانا چاہیں اُن کو اُردو کی تعلیم دی جائے . پر اس حکم پر عمل سب جگہ سچائی اور بڑے دل سے نہیں ہو رہا ہے . ہمارے سرکاری افسروں اور جنتا دونوں کو اس معاملے میں ادھک اُدارتا سے کام لینا چاہئے .

انجمن ترقی اُردو نے حال میں طے کیا ہے کہ اس پرانت کے کئی لاکھ آدمیوں کے دستخطوں سے یونین کے راشٹرپتی سے یہ پرارتھنا کی جائے کہ وہ ودھان کی دفعہ 347 کے انوسار اُردو کو اس پرانت کی ایک استھانی یعنی علاقائی زبان اعلان کر دیں .

ہندی اور اُردو دونوں کے پریمیوں سے ہماری اپیل ہے کہ وہ اِس کام میں پوری مدد دیں . دستخط اکٹھا کرنے والوں کا فرض ہے کہ وہ نہ کیول اُن لوگوں کے پاس جائیں جو اُردو کے حامی ہیں بلکہ اُن لوگوں کے پاس بھی جائیں جو ہندی کے سچے پریمی ہیں اور اُن کی مدد اور ہمدردی حاصل کرنے کی کوشش کریں . ہندی کے بڑے بڑے لیکھکوں کے پاس جا کر اُن کے سامنے اپنی بات رکھنے اور اُن کی مدد چاہنے سے بھی اُمید ہے کہ وہ پوری طرح سے اس مانگ کا سمرتھن کریں گے .

ہندی والوں میں اُردو پریم ہی ہندی کی شوبھا اور اُس کے بھنڈار دونوں کو بڑھائےگا . اُس میں جان پیدا کر دیگا اور اُردو والوں میں ہندی پریم اُردو کی سچی آتما کو امر کر دیگا .

—سندرلال

پختونوں کی پکار

اخباروں کی خبر ہے کہ پختونوں نے تفصیل کے ساتھ ایک بیان تیار کرکے ڈاکٹر گراہم کے پاس بھیجا ہے جو آج کل یونو کی طرف سے کشمیر کے معاملے میں ہندوستان اور پاکستان کے بیچ مدھیستھتا کا کام کر رہے ہیں . اس بیان میں کہا گیا ہے کہ کشمیر کے سوال کا گہرا تعلق پختونستان کے معاملے سے ہے اور یہ سب معاملہ

1952 में भी पचास लाख टन बाहर से मंगाना पड़ेगा. लेकिन पहले अनुमान यह किया गया था कि सत्तर लाख टन मंगाया जाएगा. सत्तर हो या पचास, मालूम होता है कि हिन्द सरकार को लत लग गई है और वह उस भिखमंगे की तरह ही रहना चाहती है जो हट्टा-कट्टा है मगर खुद मेहनत की कमाई न खा कर भीख मांग मांग कर जिन्दा रहने में मज़ा या बड़ाई मानता है.

लेकिन पचास लाख टन अनाज मंगाने पर भी 1951 में हिन्दुस्तान में जितनी कमी अनाज की रही उतनी शायद ही कभी रही हो. बम्बई के अनाज मिनिस्टर का कहना है कि सौराष्ट्र और गुजरात में ऐसा अकाल उनकी याद में कभी नहीं पड़ा. दक्खिन भारत और खास कर त्रिवांकूर और कोची के लोगों को कैसी तकलीफ रही कौन नहीं जानता. बिहार के दुखड़े के बारे में कुछ कहना फजूल है. और पूरबी उत्तर प्रदेश, बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, गाजीपुर और बलिया के जिलों की हालत आज भी खराब कही जाती है और—अखबारों की खबर है—सरकार वहां अनाज दौड़ दौड़ कर पहुंचाने की कोशिश कर रही है! मर्ज़ बढ़ता गया जितनी दवा की !!

कहने की जरूरत नहीं कि सन 1949 और 1950 में हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने खुले आम कसम खाई थी कि 1951 के बाद से रत्ती भर अनाज हिन्दुस्तान बाहर से नहीं मंगाएगा. उन्होंने कहा था कि सरकार अनाज के मामले को लड़ाई के जैसी अहमियत देती है और अनाज का मसला हल करना उसका पहला मकसद है. लेकिन हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और जैसी बात हुई. उन्हीं बड़े वज़ीर की सदारत में नेशनल प्लानिंग कमीशन कायम हुआ जिसने देश के बनाव बसाव के लिये पंच-साला प्लान बड़ी चमक दमक के साथ तैयार किया है. इस प्लान में यह कबूल किया गया है कि अभी बरसों तक हिन्दुस्तान अनाज के मामले में स्वावलम्बी नहीं हो सकता! हमारा पक्का ख्याल है कि अगर हिन्द सरकार का यही रवैया रहा तो बरसों क्या सदियों तक हिन्दुस्तान अनाज के मामले में स्वावलम्बी नहीं हो सकेगा और जितनी ज़ियादा भीख बाहर से मांगेगा उतनी ही ज़ियादा और मांगने की तबियत व ज़रूरत होती जायेगी.

आखिर, इस दिन दूनी रात चौगुनी गिरती हुई हालत की वजह क्या है? अनाज का सवाल काफी पेचीदा और लम्बा-चौड़ा सवाल है. लेकिन हम यहां कुछ खास पहलुओं पर रोशनी डालने की कोशिश करेंगे.

(1) हिन्दुस्तान को अनाज की भीख मांगने की जो नौबत आई उसकी पहली और बुनियादी वजह है—आज़ाद

1952 میں بھی پچاس لاکھ ٹن باہر سے منگانا پڑے گا. لیکن پہلے خیال یہ کیا گیا تھا کہ ستر لاکھ ٹن منگایا جائیگا. ستر ہو یا پچاس، معلوم ہوتا ہے کہ ہند سرکار کو لت لگ گئی ہے اور وہ اس بھکمنگے کی طرح ہی رہنا چاہتی ہے جو ہٹا کٹا ہے مگر خود محنت کی کمائی نہ کھاکر بھیک مانگ مانگ کر زندہ رہنے میں مزہ یا بڑائی مانتا ہے.

لیکن پچاس لاکھ ٹن اناج منگانے پر بھی 1951 میں ہندستان میں جتنی کمی اناج کی رہی اتنی شاید ہی کبھی رہی ہو. بمبئی کے اناج منسٹر کا کہنا ہے کہ سوراشٹر اور گجرات میں ایسا اکال انکی یاد میں کبھی نہیں پڑا. دکھن بھارت اور خاص کر ترانکور اور کوچی کے لوگوں کو کیسی تکلیف رہی کون نہیں جانتا. بہار کے دکھڑے کے بارے میں کچھ کہنا فضول ہے. اور پوربی اتر پردیش، بہرائچ، گونڈا، بستی، گورکھپور، دیوریا، اعظم گڑھ، غازی پور اور بلیا کے ضلعوں کی حالت آج بھی خراب کہی جاتی ہے اور اخباروں کی خبر ہے—سرکار وہاں اناج دوڑ دوڑ کر پہنچانے کی کوشش کر رہی ہے! مرض بڑھتا گیا جتنی دوا کی!!

کہنے کی ضرورت نہیں کہ سن 1949 اور 1950 میں ہمارے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو نے کھلے عام قسم کھائی تھی کہ 1951 کے بعد سے رتی بھر اناج ہندستان باہر سے نہیں منگائے گا. انہوں نے کہا تھا کہ سرکار اناج کے معاملے کو لڑائی کے جیسی اہمیت دیتی ہے اور اناج کا مسئلہ حل کرنا اس کا پہلا مقصد ہے. لیکن ہاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور جیسی بات ہوئی. انہیں بڑے وزیر کی صدارت میں نیشنل پلاننگ کمیشن قائم ہوا جس نے دیش کے بناؤ بساؤ کے لئے پنچ سالہ پلان بڑی چمک دمک کے ساتھ تیار کیا ہے. اس پلان میں یہ قبول کیا گیا ہے کہ ابھی برسوں تک ہندستان اناج کے معاملے میں سوالمبی نہیں ہو سکتا! ہمارا پکا خیال ہے کہ اگر ہند سرکار کا یہی رویہ رہا تو برسوں کیا صدیوں تک ہندستان اناج کے معاملے میں سوالمبی نہیں ہوسکے گا اور جتنی زیادہ بھیک باہر سے مانگے گا اتنی ہی زیادہ اور مانگنے کی طبیعت و ضرورت ہوتی جائیگی.

آخر اس دن دونی رات چوگنی گرتی ہوئی حالت کی وجہ کیا ہے؟ اناج کا سوال کافی پیچیدہ اور لمبا چوڑا سوال ہے. لیکن ہم یہاں کچھ خاص پہلوؤں پر روشنی ڈالنے کی کوشش کرینگے.

(1) ہندستان کو اناج کی بھیک مانگنے کی جو نوبت آئی اسکی پہلی اور بنیادی وجہ ہے—آزاد

[हि]न्दुस्तान सरकार की आर्थिक नीति. हर कोई जानता [है] कि हमारी सरकार देश के 'रहन सहन का दरजा उठाने' (हम सच कहते हैं कि इन मायावी शब्दों का सच्चा मतलब हम नहीं समझते) के फ़िराक़ में अंधा धुन्ध कारख़ाने खोलने और मशीनें फैलाने के लिये मतवाली हो [र]ही है. इसलिये उसे अमेरिकी सिक्का 'डालर' चाहिये, डालर. उसे रात दिन यही चिन्ता सवार रहती है कि किस तरह से हिन्दुस्तान में ऐसी चीज़ें बनें जो बाहर वाले ख़रीद लें और सरकार को 'डालर' नसीब हो जायें. यही वजह है कि पिछले दो-तीन बरस में सन या पटसन, तम्बाकू, ईख और कपास की पैदावार बढ़ी है जैसा ख़ुराक मिनिस्टर भाई मुन्शी ने क़बूल किया है. किसान को लालच दिला दिला कर इन चीज़ों की काश्त को बढ़ाया गया है और लाज़मी तौर पर अनाज की पैदावार कम होती चली गई.

हमें अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि सरकारी हुक्काम इस वाक़िये को छिपा कर जनता की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश करते हैं और अनाज की कमी का ज़िम्मेदार देश में बारिश की कमी, बाढ़ें, टिड्डी दल वग़ैरा को ठहराते हैं. इस सिलसिले में हम अपने देश के नामी फ़िलासफ़र और आला हस्ती डाक्टर राधा कृष्णन की हाल ही में, कलकत्ते के जादवपुर कालिज में, दी हुई स्पीच का कुछ हिस्सा पेश करते हैं. डाक्टर राधा कृष्णन का कहना है—

"अनाज खूब पैदा करो और ज़मीन सुधार की बातें सुनते सुनते हमारे कान पक गये हैं और फिर भी हमें बताया यह जाता है कि हमें क़रीब सत्तर लाख टन अनाज बाहर से मंगाना होगा. सोचने की बात है कि क्या आंधी, बाढ़, तूफ़ान और ज़लज़ले सिर्फ़ इसी देश में आते हैं, जो हाल ही में आज़ाद हुआ हो? क्या पच्छिम में ऐसे देश नहीं हैं जो लड़ाई की भयंकर ज्वाला में से गुज़रे, जो क़रीब क़रीब एक दम बरबाद हो गये थे, लेकिन फिर भी उन्होंने अपना आर्थिक ढांचा संभाल लिया और अपनी बदस्तूर हालत को पहुँच गये?"

हम जानना चाहते हैं कि सरकार के पास डाक्टर राधा कृष्णन के इस सीधे-सादे सवाल का क्या जवाब है?

(2) अनाज की भीक मांगने की दूसरी वजह है—हमारी सरकारी मशीनरी और बन्दोबस्त का एक दम निकम्मा हो जाना. हर कोई जानता है कि 'चोर बाज़ार' नाम की चीज़ आज खुला बाज़ार है और अनाज का कन्ट्रोल सरकार के बस में होने के बजाय सरकार [illegible] के बस में फंस गई है. [illegible] पर होने का हक़ मिला? वह

ہندستانی سرکار کی آرتھک نیتی۔ ہر کوئی جانتا ہے کہ ہماری سرکار دیش کے 'رہن سہن کا درجہ اٹھانے' (ہم سچ کہتے ہیں کہ اِن مایاوی لفظوں کا سچا مطلب ہم نہیں سمجھتے) کے فراق میں اندھا دھند کارخانے کھولنے اور مشینیں پھیلانے کے لئے متوالی ہوگئی ہے۔ اِس لئے اُسے امریکی سکہ 'ڈالر' چاہئے، ڈالر۔ اُسے رات دن یہی چنتا سوار رہتی ہے کہ کس طرح سے ہندستان میں ایسی چیزیں بنیں جو باہر والے خرید لیں اور سرکار کو 'ڈالر' نصیب ہوجائیں۔ یہی وجہ ہے کہ پچھلے دو تین برس میں سن یا پٹسن، تمباکو، ایکھ اور کپاس کی پیداوار بڑھی ہے جیسا خوراک منسٹر بھائی منشی نے قبول کیا ہے۔ کسان کو لالچ دلا دلا کر اِن چیزوں کی کاشت کو بڑھایا گیا ہے اور لازمی طور پر اناج کی پیداوار کم ہوتی چلی گئی۔

ہمیں افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ سرکاری حکام اِس واقعے کو چھپا کر جنتا کی آنکھوں میں دھول جھونکنے کی کوشش کرتے ہیں اور اناج کی کمی کا ذمہ دار دیش میں بارش کی کمی، باڑھیں، ٹڈی دل وغیرہ کو ٹھہراتے ہیں۔ اِس سلسلے میں ہم اپنے دیش کے نامی فلاسفر اور اعلیٰ ہستی ڈاکٹر رادھا کرشنن کی حال ہی میں کلکتے کے جادو پور کالج میں دی ہوئی اسپیچ کا کچھ حصہ پیش کرتے ہیں۔ ڈاکٹر رادھا کرشنن کا کہنا ہے —

"اناج خوب پیدا کرو اور زمین سدھار کی باتیں سنتے سنتے کان پک گئے ہیں اور پھر بھی ہمیں بتایا یہ جاتا ہے کہ ہمیں قریب ستر لاکھ ٹن اناج باہر سے منگانا ہوگا۔ سوچنے کی بات ہے کہ کیا آندھی، باڑھ، طوفان اور زلزلے صرف اسی دیش میں آتے ہیں، جو حال ہی میں آزاد ہوا ہو۔ کیا پچھم میں ایسے دیش نہیں ہیں جو لڑائی کی بھیانک جوالا میں سے گذرے، جو قریب قریب ایک دم برباد ہوگئے تھے لیکن پھر بھی انہوں نے اپنا آرتھک ڈھانچہ سنبھال لیا اور اپنی بدستور حالت کو پہنچ گئے؟"

ہم جاننا چاہتے ہیں کہ سرکار کے پاس ڈاکٹر رادھا کرشنن کے اِس سیدھے سادے سوال کا کیا جواب ہے؟

(2) اناج کی بھیک مانگنے کی دوسری وجہ ہے— ہماری سرکاری مشینری اور بندوبست کا ایک دم نکما ہوجانا۔ ہر کوئی جانتا ہے کہ 'چور بازار' نام کی چیز آج کھلا بازار ہے اور اناج کا کنٹرول سرکار کے بس میں ہونے کے بجائے سرکار خود کنٹرول کے بس میں پھنس گئی ہے۔ اس کنٹرولی ڈھنگ سے عام جنتا کو

जो मुसीबतें उठानी पड़ रही हैं, जो ईमान से रहना दूभर हो रहा है—यह किसी से छिपा नहीं है.

फिर, सरकारी आंकड़ों का ठिकाना ही क्या है? वह कितने सच्चे और ठोस होते हैं इसकी असलियत सरकारी हाकिम खुद जानते हैं. इन आंकड़ों को मन गढ़न्त कहना ज़ियादा ठीक होगा.

इसके अलावा हमारे सरकारी गोदामों में अनाज की जो रखवाली की जाती है वह जले पर नमक छिड़कने जैसा काम करती है. जानकार लोगों का कहना है कि क़रीब साढ़े बारह फ़ीसदी अनाज (रुपए में दो आने भर) यूँही बेकार और बरबाद चला जाता है. अनाज बरबाद करने वाले "मोटे चूहों" को पकड़ने में सरकार लगातार ना कामयाब रही है.

(3) हम ऊपर कह चुके हैं कि सरकार की पालिसी के कारन किसान का ध्यान अनाज की फ़सलें न बोकर रुपए देने वाली फ़सलों के बोने के लिये हुआ है. इसी तरह की सरकारी बैंक, माल और लगान वाली पालिसी है. यह वही पालिसी है जो अंगरेज़ों ने अपने मतलब के लिये हिन्दुस्तान में क़ायम की थी कौन नहीं जानता कि 1943 में बंगाल के अकाल की जहां कई वजह थीं उनमें से ख़ास कर एक यह भी थी—रिज़र्व बैंक की नीति. रिज़र्व बैंक वही चालें चल रहा है, वही उसकी नीति है, वैसे ही उसके ठाट और ढंग हैं. यह बैंक और हमारे देश भर का सारा बैंकी निज़ाम लुटेराना तरीक़े पर चलता है जिसमें कुछ मालदार लोगों का—जो हिन्दुस्तान का माल बाहर भेज भेज कर डालर कमवाते हैं और 'भारी' मशीनरी मंगाते हैं. कोई बैंक या सरकारी माल महकमा ऐसा क़दम नहीं उठाता जिससे हल चलाने वाले को, दौलत के असली पैदा करने वाले को कुछ फ़ायदा हो. कोआपरेटिव या सहयोगी बैंक जो भी करते हों मगर किसान के साथ सहयोग नहीं करते, अदालतें और पंचायत जो भी करते हों मगर किसान के साथ इन्साफ़ नहीं करते, ग्रामोद्योग के सरकारी अलम-बरदार जो भी करते हों मगर किसान के लिये ग्रामोद्योग नहीं बढ़ाते. फिर, लगान का क़ायदा वही चला आ रहा है जो अंगरेज़ी लाट साहबों ने जारी कर दिया था. हम जानना चाहते हैं कि लगान नक़दी के बजाए अनाज की शकल में क्यों नहीं लिया जाता? पच्छम के "विद्वानों" और "माहरों" की देखा देखी हमारी सरकार भी यह मान बैठी है कि इनसान रुपए की ग़ुलामी के लिये बना है न कि रुपया इनसान के लिये. परदेश की यह विद्या हमारे देश वासियों की समझ में नहीं आती और कौन ताज्जुब है कि वह हक्के-बक्के से रह जाते हैं और सरकारी प्रोग्राम में शिरकत नहीं कर पाते.

جو مصیبتیں اٹھانی پڑ رہی ہیں، جو ایمان سے رہنا دوبھر ہو رہا ہے — وہ کسی سے چھپا نہیں ہے.

پھر، سرکاری آنکڑوں کا ٹھکانہ ہی کیا ہے؟ وہ کتنے سچے اور ٹھوس ہوتے ہیں اسکی اصلیت سرکاری حاکم خود جانتے ہیں. ان آنکڑوں کو من گھڑنت کہنا زیادہ ٹھیک ہوگا.

اس کے علاوہ ہمارے سرکاری گوداموں میں اناج کی جو رکھوالی کی جاتی ہے وہ جلے پر نمک چھڑکنے جیسا کام کرتی ہے. جانکار لوگوں کا کہنا ہے کہ قریب ساڑھے بارہ فیصدی اناج (روپے میں دو آنے بھر) یوں ہی بیکار اور برباد چلا جاتا ہے. اناج برباد کرنے والے "موٹے چوہوں" کو پکڑنے میں سرکار لگاتار ناکامیاب رہی ہے.

(3) ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ سرکار کی پالیسی کے کارن کسان کا دھیان اناج کی فصلیں نہ بوکر روپے دینے والی فصلوں کے بونے کے لئے ہوا ہے. اسی طرح کی سرکاری بینک، مال اور لگان والی پالیسی ہے. یہ وہی پالیسی ہے جو انگریزوں نے اپنے مطلب کے لئے ہندستان میں قائم کی تھی. کون نہیں جانتا کہ 1943 میں بنگال کے اکال کی جہاں کئی وجہ تھیں ان میں سے خاص کر ایک یہ بھی تھی — ریزرو بینک کی نیتی. وہی چالیں چل رہا ہے، وہی اسکی نیتی ہے، ویسے ہی اس کے ٹھاٹ اور ڈھنگ ہیں. یہ بینک اور ہمارے دیش بھر کا سارا بینکی نظام لٹیرانہ طریقے پر چلتا ہے جس میں کچھ مالدار لوگوں کا — جو ہندستان کا مال باہر بھیج بھیج کر ڈالر کمواتے ہیں اور 'بھاری' مشینری منگاتے ہیں. کوئی بینک یا سرکاری مال محکمہ ایسا قدم نہیں اٹھاتا جس سے ہل چلانے والے کو دولت کے اصلی پیدا کرنے والے کو کچھ فائدہ ہو. کوآپریٹیو یا سہیوگی بینک جو بھی کرتے ہوں مگر کسان کے ساتھ سہیوگ نہیں کرتے، عدالتیں اور پنچایت جو بھی کرتے ہوں مگر کسان کے ساتھ انصاف نہیں کرتے، گرامودیوگ کے سرکاری علمبردار جو بھی کرتے ہوں مگر کسان کے لئے گرامودیوگ نہیں بڑھاتے. پھر، لگان کا قاعدہ وہی چلا آرہا ہے جو انگریزی لاٹ صاحبوں نے جاری کر دیا تھا. ہم جاننا چاہتے ہیں کہ لگان نقدی کے بجائے اناج کی شکل میں کیوں نہیں لیا جاتا؟ پچھم کے "ودوانوں" اور "ماہروں" کی دیکھا دیکھی ہماری سرکار بھی یہ مان بیٹھی ہے کہ انسان روپے کی غلامی کے لئے بنا ہے نہ کہ روپیہ انسان کے لئے. پردیش کی یہ ودیا ہمارے دیش واسیوں کی سمجھ میں نہیں آتی اور کون تعجب ہے کہ وہ ہکے بکے سے رہ جاتے ہیں اور سرکاری پروگرام میں شرکت نہیں کر پاتے.

साथ ही साथ सरकार ने खेती के जो नये औज़ारों का प्रचार शुरू किया है—ट्रैक्टर, बिजली से पानी, विलायती खादें वग़ैरा—वह किसान का और भी बंटाधार किये डाल रही है. तफ़सील में न जा कर हम इतना ही कहेंगे कि ट्रैक्टर और विलायती खादें वग़ैरा—कुछ खास बंजर ज़मीनों पर भले मुफ़ीद साबित हों—नुक़सान ही ज़ियादा पहुंचाती हैं. पच्छिम के जानकार लोग यह बात मान रहे हैं और ज़ोरों से कह रहे हैं कि जानवर से खेती और क़ुदरती खाद ही ऐसी दो चीज़ें हैं जो अनाज पैदावार के मसले का ठीक और पायेदार हल निकाल सकती हैं.

बिजली के ज़रिये पानी लेने से कहीं कहीं यह नतीजा हुआ कि तालाब सूख गये और मामूली कुओं का पानी कम हो गया या और भी गहरे उतर गया. हमारे बड़े वज़ीर और दूसरे हुक्काम व पढ़े-लिखे लोग सरकारी प्रोजेक्टों और डाम वाली स्कीमों पर बड़ा नाज़ करते हैं लेकिन अब तक इनसे उलटे लेने के देने ही पड़े हैं. काश! सरकार सिर्फ़ कुआं—सादा कुआं या ढेंकी—खुदवाने का इन्तज़ाम कर देती या लोगों का ध्यान इस तरफ़ खींचती, तो न करोड़ों रुपयों की बरबादी होती और न अनाज का टोटा पड़ता.

(4) ऊपर की तीनों वजह एक तरफ़ और चौथी दूसरी तरफ़. वह है हमारे किसान का अपनी ज़मीन का मालिक न होना. ज़मीन जोते बोए कोई मगर मज़ा लूटे कोई! जागीरशाही ज़मींदारी का किसी न किसी रूप में देश भर में बोल बाला है. किसान दिन दिन पिसा जा रहा है. उसके दिल में इतनी हिम्मत नहीं रह गई, इतना जोश नहीं रह गया कि मन लगा कर काम करे और काश्त बढ़ाए. आज फ़ी एकड़ जितनी कम पैदावार हिन्दुस्तान में होती है उतनी कम शायद ही कहीं होती हो. इसकी क्या वजह है? क्या हमारा किसान खेती का काम भूल गया? क्या हमारे किसान के पास औज़ारों की कमी है? क्या हमारे किसान को हवा-पानी की परेशानी है? नहीं-नहीं, वजह यह है कि वह धरती जिस पर किसान अपने को तबाह कर रहा है उसकी अपनी नहीं है. ज़माने का तक़ाज़ा है कि जिस तरह हवा, धूप, पानी किसी एक की जायदाद न हो कर सबकी हैं इसी तरह धरती भी किसी एक की जायदाद न हो कर सबकी होनी चाहिये.

आज़ाद हिन्दुस्तान में उत्तर प्रदेश, बिहार, मदरास वग़ैरा के सूबों ने ज़मींदारी ख़ात्मा क़ानून बनाए, मगर वह क़ानून काग़ज़ पर क़ानून बन कर रह गए. ज़मीन किसान को न मिल पाई—जिस तरह चीन में मिल गई या पड़ोस में काश्मीर में मिल गई या मिल रही है. उत्तर प्रदेश में कितने किसानों को भूमि-धर होने का हक़ मिला? वह कहां

ساتھ ہی ساتھ سرکار نے کھیتی کے جو نئے اوزاروں کا پرچار شروع کیا ہے—ٹریکٹر، بجلی سے پانی، ولایتی کھادیں وغیرہ—وہ کسان کا اور بھی بنٹادھار کئے ڈال رہی ہیں. تفصیل میں نہ جا کر ہم اِتنا ہی کہیں گے کہ ٹریکٹر اور ولایتی کھادیں وغیرہ—کچھ خاص بنجر زمینوں پر بھلے مفید ثابت ہوں—نقصان ہی زیادہ پہنچاتی ہیں. پچھم کے جانکار لوگ یہ بات مان رہے ہیں اور زوروں سے کہہ رہے ہیں کہ جانور سے کھیتی اور قدرتی کھاد ہی ایسی دو چیزیں ہیں جو اناج پیداوار کے مسئلے کا ٹھیک اور پائیدار حل نکال سکتی ہیں.

بجلی کے ذریعے پانی لینے سے کہیں کہیں یہ نتیجہ ہوا کہ تالاب سوکھ گئے اور معمولی کنووں کا پانی کم ہو گیا یا اور بھی گہرے اُتر گیا. ہمارے بڑے وزیر اور دوسرے حکام و پڑھے لکھے لوگ سرکاری پروجیکٹوں اور ڈام والی اسکیموں پر بڑا ناز کرتے ہیں. لیکن ابتک اِن سے اُلٹے لینے کے دینے ہی پڑے ہیں. کاش! سرکار صرف کنواں—سادہ کنواں یا ڈھینکی—کھدوانے کا انتظام کر دیتی یا لوگوں کا دھیان اِس طرف کھینچتی تو نہ کروڑوں روپیوں کی بربادی ہوتی اور نہ اناج کا ٹوٹا پڑتا.

(4) اوپر کی تینوں وجہ ایک طرف اور چوتھی دوسری طرف. وہ ہے ہمارے کسان کا اپنی زمین کا مالک نہ ہونا. زمین جوتے بوئے کوئی مگر مزہ لوٹے کوئی! جاگیرشاہی زمینداری کا کسی نہ کسی روپ میں دیش بھر میں بول بالا ہے. کسان دن دن پِسا جا رہا ہے. اُسکے دل میں اتنی ہمت نہیں رہ گئی، اِتنا جوش نہیں رہ گیا کہ من لگاکر کام کرے اور کاشت بڑھائے. آج فی ایکڑ جتنی کم پیداوار ہندستان میں ہوتی ہے اُتنی کم شاید ہی کہیں ہوتی ہو. اِسکی کیا وجہ ہے؟ کیا ہمارا کسان کھیتی کا کام بھول گیا؟ کیا ہمارے کسان کے پاس اوزاروں کی کمی ہے؟ کیا ہمارے کسان کو ہوا پانی کی پریشانی ہے؟ نہیں نہیں، وجہ یہ ہے کہ وہ دھرتی جس پر کسان اپنے کو تباہ کر رہا ہے اُسکی اپنی نہیں ہے. زمانے کا تقاضا ہے کہ جس طرح ہوا، دھوپ، پانی کسی ایک کی جائداد نہ ہوکر سبکی ہیں اِسی طرح دھرتی بھی کسی ایک کی جائداد نہ ہوکر سبکی ہونی چاہئے.

آزاد ہندستان میں اُتر پردیش، بہار، مدراس وغیرہ کے صوبوں نے زمینداری خاتمہ قانون بنائے، مگر وہ قانون کاغذ پر قانون بن کر رہ گئے. زمین کسان کو نہ مل پائی—جس طرح چین میں مل گئی یا پڑوس میں کشمیر میں مل گئی یا مل رہی ہے. اُتر پردیش میں کتنے کسانوں کو بھومی دھر ہونے کا حق ملا؟ وہ کہاں

से सैकड़ों हज़ारों रुपए जायें ताकि भूमि घर बन सकें ?
न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी !

आख़िर में हम बड़ी नम्रता के साथ सरकार से अपील करते हैं कि अगर उसे सच मुच अनाज की भीक माँगनी बन्द करनी है तो अपनी अनाज पालिसी में उसे बुनियादी फ़र्क़ कर देना पड़ेगा. अनाज पालिसी बदलने का मतलब है कि वह अपनी ब्योपारी या ट्रेड पालिसी, पैदावार या प्रोडक्शन पालिसी में फ़र्क़ करे. यह तभी बदल सकती हैं जब अपनी सारी पालिसियों को वह विलायती ऐनक चढ़ा कर न देखे बल्कि इन्सान की आखों से देखे—उस इन्सान की आखों से जो जेठ की तपती दुपहरी में सिर का पसीना एड़ी तक बहा रहा है मगर क्या उसे, क्या उसके बाल बच्चों को, न भर पेट खाना नसीब होता है और न तन ढकने को पूरा-सा कपड़ा.

और अगर अनाज की भीक माँगना सरकार बन्द नहीं करती है तो—हम इस वक़्त सिर्फ़ इतना ही कहेंगे—बस ईश्वर ही मालिक है !

—सुरेश रामभाई

سے سیکڑوں ہزاروں روپے لگیں تاکہ بھومی دھر بن سکیں ؟
نہ نو من تیل ہوگا نہ رادھا ناچے گی !

آخیر میں ہم بڑی نمرتا کے ساتھ سرکار سے اپیل کرتے ہیں کہ اگر اسے سچ مچ اناج کی بھیک مانگنی بند کرنی ہے تو اپنی اناج پالیسی میں اسے بنیادی فرق کر دینا پڑے گا . اناج پالیسی بدلنے کا مطلب ہے کہ وہ اپنی بیوپاری یا ٹریڈ پالیسی' پیداوار یا پروڈکشن پالیسی میں فرق کرے . یہ تبھی بدل سکتی ہیں جب اپنی ساری پالیسیوں کو وہ ولائتی عینک چڑھا کر نہ دیکھے بلکہ انسان کی آنکھوں سے دیکھے—اس انسان کی آنکھوں سے جو جیٹھ کی تپتی دوپہری میں سر کا پسینہ ایڑی تک بہا رہا ہے مگر کیا اسے' کیا اسکے بال بچوں کو' نہ بھر پیٹ کھانا نصیب ہوتا ہے اور نہ تن ڈھکنے کو پورا سا کپڑا .

اور اگر اناج کی بھیک مانگنا سرکار بند نہیں کرتی ہے تو— ہم اس وقت صرف اتنا ہی کہیں گے—بس ایشور ہی مالک ہے !

—سریش رام بھائی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंग्रेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़ लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

चीन की आवाज़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नए चीन ने अपने नए लोकराज की दूसरी साल गिरह मनाई थी. ख़ुशी के उस मौक़े पर चीन की कई संस्थाओं की दावत पर हिन्दुस्तान से पंडित सुन्दरलाल की सिदारत में एक मिशन भी गया था जिसने हिन्दुस्तान की आम जनता की तरफ़ से शिरकत की.

चीन में इस मिशन का बहुत शानदार और ज़ोरदार स्वागत किया गया. पिछले दो बरस में चीन के रहने वालों ने जो किया उसकी मिसाल इतिहास में ढूंढने पर मुश्किल से ही मिल सकती है. लेकिन उन्होंने क्या किया—इसकी झलक आपको इस छोटी-सी किताब में मिलेगी.

चालीस पन्नों से ऊपर की किताब, दाम सिर्फ़ चार आना.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رائل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

چین کی آواز

لیکھک—پنڈت سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین نے اپنے نئے لوک راج کی دوسری سالگرہ منائی تھی۔ خوشی کے اس موقعے پر چین کی کئی سنستھاؤں کی دعوت پر ہندستان سے پنڈت سندر لال کی صدارت میں ایک مشن بھی گیا تھا جس نے ہندستان کی عام جنتا کی طرف سے شرکت کی۔

چین میں اس مشن کا بہت شاندار اور زوردار سواگت کیا گیا۔ پچھلے دو برس میں چین کے رہنے والوں نے جو کیا اس کی مثال اتہاس میں ڈھونڈنے پر مشکل سے ہی مل سکتی ہے لیکن انہوں نے کیا کیا— اس کی جھلک آپ کو اس چھوٹی سی کتاب میں ملے گی۔

چالیس پنوں سے اوپر کی کتاب، دام صرف چار آنہ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد۔

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग १५ ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब ५०० आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरह दिया गया है

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपये, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए है जो पंडित जी ने कन्सीलिएटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक बर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قران

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں' گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ ۱۵ خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب ۵۰۰ آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلئیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد .

गांधी बाबा

लेखक—बेगम कुदसिया ज़ैदी.

बच्चों के दिल को हरने वाली, कहानियों की शकल में महात्मा गांधी की यह नन्ही सी जीवनी पढ़ते ही बनती है. इसमें आप देखेंगे कि किस तरह सीधे सादे ढंग से दादी-नानी अपने बच्चों के दिल पर, बात की बात में, गांधी बाबा की पूरी तसवीर नक्श कर देती हैं.

अपने ढंग की हिन्दी में लाजवाब किताब, करीब सत्तर सफे, रंग-बिरंगी छपाई, मोटा-खूबसूरत कागज़, बीसियों रंगीन तसवीरें, मज़बूत सुन्दर जिल्द, दाम सिर्फ तीन रुपये.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिये अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफे की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की कीमत सिर्फ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्कलाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ चार आने.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान कुरबान कर दी. दाम सिर्फ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. कीमत सिर्फ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک — بیگم قدسیہ زیدی

بچوں کے دل کو ہرنے والی، کہانیوں کی شکل میں مہاتما گاندھی کی یہ ننھی سی جیونی پڑھتے ہی بنتی ہے۔ اس میں آپ دیکھیں گے کہ کس طرح سیدھے سادے ڈھنگ سے دادی نانی اپنے بچوں کے دل پر بات کی بات میں گاندھی بابا کی پوری تصویر نقش کر دیتی ہیں۔

اپنے ڈھنگ کی ہندی میں لاجواب کتاب، قریب ستر صفحے، رنگ برنگی چھپائی، موٹا خوبصورت کاغذ، بیسیوں رنگین تصویریں، مضبوط سندر جلد، دام صرف تین روپے۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک — شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی۔ یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ ۲۲۵ صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک انقلاب کا راستہ

لیکھک — شری منظر علی سوختہ

اس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلیگا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کس طرح انکے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے

پینتیس پنے کی کتاب دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

لیکھک — شری رتن لال بنسل

ان بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

سمپادک — شری رتن لال بنسل

ان مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندوستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی۔ کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में सन 1931 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े क़ीमत दो रुपया.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिंदुस्तानी की तकरार पर एक बेलाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रिया मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब. दाम डेढ़ रुपया.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उर्दू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उर्दू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उर्दू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उर्दू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल गहराइयों को छुयेगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उर्दू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

فرقہ‌بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1931 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملیگی ۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا— سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریہ مٹیں گی ۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے ۔ اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل گہرائیوں کو چھوئیگی ۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ سندر جلد ۔ بڑھیا کاغذ ۔ عمدہ چھپائی ۔ دام صرف تین روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر "نیا ہند" 145 مٹھی گنج الہ آباد

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

ہندستانی کلچر سوسائٹی

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कल्चर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) इसको फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कान्फ्रेन्सों, लेक्चरों के सब ढंगों, नाटकों, पिकनिकों और मेलों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी,
145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के मुताबिक़ मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपये चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. [illegible] मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की लिखी हुई कोई किताब [illegible]

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) اسکو پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں کے سب طریقوں، جلسوں، ڈراموں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال
سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے [illegible] ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ [illegible] ممبروں کی [illegible] والے سوسائٹی کی لکھی ہوئی کوئی کتاب جو [illegible]

हमारी नई किताब

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जाएगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

आज हम योरप और अमरीका के लोगों को एक तरफ़ अपने को ईसा का पैरो कहने और दूसरी तरफ़ कमज़ोर कौमों को ग़ुलाम बनाने के लिये एटम बम और हाइड्रोजन बम की रचना करते देख सोचने लगते हैं कि क्या ईसाई धर्म में यह सब जुल्म और नाइन्साफ़ी जायज़ है? लेकिन इस किताब को पढ़ कर इस तरह के सारे भ्रम दूर हो जाएंगे और इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जाएगी।

यह किताब कुमारप्पा जी ने सन 1944 में जबलपुर जेल में लिखी थी. इसके बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राय है—

"मैं अपने अनुभव के बल पर कह सकता हूँ कि प्रोफ़ेसर कुमारप्पा ने इन सफ़ों में गास्पेल (इंजील) का जो मतलब लगाया है वह सच्चा और सही है.. "

महात्मा जी ने यह भी कहा था कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े "

अंगरेज़ी में इस किताब के कई एडीशन निकल चुके हैं. अब यह इसका सरल और बामुहावरा हिन्दुस्तानी अनुवाद निकल रहा है. किताब के आख़ीर में 'ईसा के जीवन के कुछ क़िस्से' देकर अनुवादक ने इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया कागज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہماری نئی کتاب

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک — ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا.

انوادک — سریش رام بھائی.

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

آج ہم یورپ اور امریکہ کے لوگوں کو ایک طرف اپنے کو عیسیٰ کا پیرو کہتے اور دوسری طرف کمزور قوموں کو غلام بنانے کے لئے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کی رچنا کرتے دیکھ سوچنے لگتے ہیں کہ کیا عیسائی دھرم میں یہ سب ظلم اور ناانصافی جائز ہے؟ لیکن اس کتاب کو پڑھ کر اس طرح کے سارے بھرم دور ہو جائیں گے اور انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آ جائیگی.

یہ کتاب کمارپپا جی نے سن 1944 میں جبل پور جیل میں لکھی تھی. اسکے بارے میں راشٹرپتا مہاتما گاندھی کی رائے ہے —

"میں اپنے انوبھو کے بل پر کہہ سکتا ہوں کہ پروفیسر کمارپپا نے ان صفحوں میں گاسپل (انجیل) کا جو مطلب لگایا ہے وہ سچا اور صحیح ہے . . ."

مہاتما جی نے یہ بھی کہا تھا کہ

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے . . . ."

انگریزی میں اس کتاب کے کئی ایڈیشن نکل چکے ہیں. اب یہ اس کا سرل اور بامحاورا ہندستانی انوواد نکل رہا ہے. کتاب کے آخر میں 'عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے' دیکر انوادک نے اسکی شوبھا اور بھی بڑھا دی ہے.

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ —
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر— تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय—

اس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے—

...तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

फ़रवरी 1952 فروری

क़ीमत दस आना قیمت دس آنہ

मासिक पत्र — फ़रवरी 1952 | ماہواری پرچہ — فروری 1952

[illegible] हिन्दुस्तान में है सबका राज, [illegible] काम, [illegible] जाने.

[illegible]

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

[illegible]
'نیا ہند'
[illegible]

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 12 फरवरी, सन '52 नम्बर 2

جلد 12 فروری' سن '52 نمبر 2

आम आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

عام آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

लड़ाई की आग

(भारतीभक्त)

(1)

भूखे मानव तड़प रहे हैं
अघा रहा है गीधों का मन
महायुद्ध की घटा देखकर
हर्षित केवल जोंकों का मन

(2)

युद्ध छिड़ेगा—लूट मचेगी
पूँजी उसमें खुल खेलेगी
डालर के सब पिछलग्गों की
महलें नभ को ठेल बढ़ेंगी

(3)

जनता तो बेमौत मरेगी
घर भी उनके ही उजड़ेंगे
हँसते-हँसते बच्चे उनके
बम तोप जहाँ से गुजरेंगे

(4)

रोटी सोने मोल बिकेगी
बेटी का कुछ मोल न होगा

महायुद्ध = बड़ी लड़ाई, हर्षित = खुश.

لڑائی کی آگ

(بھارتی بھکت)

(1)

بھوکے مانو تڑپ رہے ہیں
اگھا رہا ہے گِدھوں کا من
مہا یدھ کی گھٹا دیکھکر
ہرشت کیول جونکوں کا من

(2)

یدھ چھڑے گا—لوٹ مچے گی
پونجی اس میں کھل کھیلے گی
ڈالر کے سب پچھ لگوں کی
محلیں نبھ کو ٹھیل بڑھیں گی

(3)

جنتا تو بے موت مرے گی
گھر بھی ان کے ہی اُجڑیں گے
ہنستے ہنستے بچے اُن کے
بم توپ جہاں سے گذریں گے

(4)

روٹی سونے مول بکے گی
بیٹی کا کچھ مول نہ ہوگا

مہایدھ = بڑی لڑائی' ہرشت = خوش.

दानवता के दावानल में
जलने से कुछ शेष न होगा

(5)

यही नहीं, जब छा जायेंगे
बमवर्षक नभयान गगन में
"ऐटम" गोले बरसेंगे तब
राख बनेगी धरती छन में

(6)

आह न पूछो उस छन भू पर
कैसा भयानक हश्र मचेगा?
"नागासाकी-हिरोशिमा" से
बढ़कर शत-शत ज्वाला उठेगा!

(7)

युग-युग से निर्मित औ रक्षित
मानव का संसार जलेगा
लुप्त मनुज की संस्कृति होगी
मानव का इतिहास मिटेगा

(8)

क्या हम यह सब जानबूझकर
भी पत्थर से मौन रहेंगे?
चिता हमारी ही बनती हो
औ हम जिन्दा मौन रहेंगे?

(9)

जगती के इन्सान सँभल! कर
जंगखोर की हार सुनिश्चित
गूँजे अमन-निनाद हमारा
"शान्ति-कबूतर" रहे सुरक्षित.

दानवता = हैवानी, दावानल = जंगल की आग, शेष = बाक़ी, बमवर्षक = बम बरसानेवाले, नभयान = हवाई जहाज़, शत शत = सैकड़ों, निर्मित = बनाया हुआ, रक्षित = महफ़ूज़, लुप्त = ग़ायब, मनुज = आदमी, संस्कृति = तहज़ीब, निनाद = नारा.

دانوتا کے داوانل میں
جلنے سے کچھ شیش نہ ہوگا

(5)

یہی نہیں، جب چھا جائینگے
بم ورشک نبھیان گگن میں
"ایٹم" گولے برسینگے تب
راکھ بنے گی دھرتی چھن میں

(6)

آہ نہ پوچھو اُس چھن بھو پر
کیسا بھیانک حشر مچے گا؟
"ناگا ساکی ھیرو شیما" سے
بڑھکر شت شت جوالا اُٹھیگا!

(7)

یگ یگ سے نرمت او رکشت
مانو کا سنسار جلے گا
لپت منج کی سنسکرتی ہوگی
مانو کا اِتہاس مٹے گا

(8)

کیا ہم یہ سب جان بوجھکر
بھی پتھر سے مون رہینگے؟
چتا ہماری ہی بنتی ہو
او ہم زندہ مون رہینگے؟

(9)

جگتی کے انسان سنبھل ' کر
جنگ خور کی ہار سنشچت
گونجے امن نناد ہمارا
"شانتی کبوتر" رہے سرکشت

دانوتا = حیوانی، داوانل = جنگل کی آگ، شیش = باقی، بم ورشک = بم برسانے والے، نبھ یان = ہوائی جہاز، شت شت = سیکڑوں، نرمت = بنایا ہوا، رکشت = محفوظ، لپت = غائب، منج = آدمی، سنسکرتی = تہذیب، نناد = نعرہ۔

ज्ञान यानी मारफ़त का रास्ता

(डाक्टर भगवानदास)

'ज्ञान' का विषय बहुत ही कठिन और रूखा विषय है. हिन्दू धर्म की किताबों में जिसे ज्ञान कांड कहा जाता है उसी को सूफ़ी किताबों में मारफ़त, हक़ायक़, दक़ायक़, और अक़ायद के नामों से बयान किया जाता है. दीन धर्म का यह एक ऊंचा और ज़रूरी पहलू है. ज्ञान का पहला असूल यह है कि असल हक़ीक़त एक है. सच एक है, झूट बहुत से होते हैं. रास्ती एक है ग़लतियां अनगिनत हैं. ठीक उसी तरह जिस तरह दो नुक़्तों के बीच सीधी लकीर एक ही हो सकती है, वही दोनों के बीच का सब से छोटा फ़ासला है. उन्हीं दोनों नुक़्तों के बीच टेढ़ी मेढ़ी लकीरें बेशुमार खिंच सकती हैं. आदमी के इल्म, उसकी समझ, उसके भावों यानी जज़बात और उसके चलन के लिये ठीक और सीधी राह एक ही है, और वह राह एक बुनियादी रूहानी सचाई का नतीजा है. उक़लैदिस (रेखा गनित) की सारी विद्या दो तीन बुनियादी तारीफ़ों के अन्दर बन्द है. संस्कृत की एक कहावत है—"सर्वं त्रैराशिकम् पाति" यानी सारा इल्म हिसाब एक 'रूल आफ़ थ्री' के अन्दर आ जाता है. इसी तरह सारा दीन धर्म, सारा फ़लसफ़ा और सारी साइन्स, ख़ुदा, क़ुदरत और इनसान इन तीन से सम्बन्ध रखती है. इनमें भी क़ुदरत और इनसान दोनों का वजूद ख़ुदा के वजूद में शामिल है.

हक़ यह है कि असल वजूद भी एक ही है, और वह उस पाक ज़ात ईश्वर अल्लाह का वजूद है. सब सचाइयों की बुनियादी सचाई यह है कि इनसान की आत्मा ईश्वर ही का एक अंश है. क़ुदरत भी अल्लाह ही की क़ुदरत है. यह सारी सृष्टि उसी अनन्त और सदा यकसां रहने वाले परमात्मा का नित्य बदलता हुआ लिबास है. इस ज़िन्दगी का असल मतलब यही है कि ईश्वर इनसान के अन्दर अपने को भूला हुआ है और इनसान को चाहिये कि फिर से ईश्वर के अन्दर अपने आप को पहचाने. आत्मा यानी रूह माद्दा परस्ती में फँस कर प्रवृत्ति यानी क़ौसे नज़ूल के रास्ते नीचे उतरती आ रही है. उसे निवृत्ति यानी क़ौसे उरूज के रास्ते फिर से ऊपर चढ़ना है, अपने आप को पहचानना है और जिस ईश्वर अल्लाह से वह निकली थी उसी में फिर फ़ना यानी लीन हो जाना है. प्रवृत्ति का रास्ता नफ़्स परस्ती यानी इन्द्री सुख का रास्ता है. निवृत्ति का रास्ता नफ़्स पर यानी इन्द्रियों पर क़ाबू हासिल करने का रास्ता है. परम आत्मा, रूहे कुल यानी अल्लाह ने अपने को महदूद करके अपनी वेनियते हक़ीक़ी

گیان یعنی معرفت کا راستہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

'گیان' کا وشے بہت ہی کٹھن اور روکھا وشے ہے۔ ہندو دھرم کی کتابوں میں جسے گیان کانڈ کہا جاتا ہے اسی کو صوفی کتابوں میں معرفت' حقائق' دقائق اور عقائد کے ناموں سے بیان کیا جاتا ہے. دین دھرم کا یہ ایک اونچا اور ضروری پہلو ہے۔ گیان کا پہلا اصول یہ ہے کہ اصل حقیقت ایک ہے۔ سچ ایک ہے' جھوٹ بہت سے ہوتے ہیں۔ راستی ایک ہے غلطیاں انگنت ہیں۔ ٹھیک اسی طرح جس طرح دو نقطوں کے بیچ سیدھی لکیر ایک ہی ہو سکتی ہے۔ وہی دونوں کے بیچ کا سب سے چھوٹا فاصلہ ہے۔ انہیں دونوں نقطوں کے بیچ ٹیڑھی میڑھی لکیریں بے شمار کھنچ سکتی ہیں۔ آدمی کے علم' اسکی سمجھ' اس کے بھاؤں یعنی جذبات اور اس کے چلن کے لئے ٹھیک اور سیدھی راہ ایک ہی ہے' اور وہ راہ ایک بنیادی روحانی سچائی کا نتیجہ ہے۔ اقلیدس (ریکھا گنت) کی ساری ودیا دو تین بنیادی تعریفوں کے اندر ہے۔ سنسکرت کی ایک کہاوت ہے—" سروم ترے راشکم پاتی ." یعنی سارا علم حساب ایک 'رول آف تھری' کے اندر آ جاتا ہے۔ اسی طرح سارا دین دھرم' سارا فلسفہ اور ساری سائنس' خدا' قدرت اور انسان ان تین سے سمبندھ رکھتی ہے۔ ان میں بھی قدرت اور انسان دونوں کا وجود خدا کے وجود میں شامل ہے۔

حق یہ ہے کہ اصل وجود بھی ایک ہی ہے' اور وہ اس پاک ذات ایشور اللہ کا وجود ہے۔ سب سچائیوں کی بنیادی سچائی یہ ہے کہ انسان کی آتما ایشور ہی کا ایک انش ہے۔ قدرت بھی اللہ ہی کی قدرت ہے۔ یہ ساری سرشٹی اسی اننت اور سدا یکساں رہنے والے پرماتما کا نتیہ بدلتا ہوا لباس ہے۔ اس زندگی کا اصل مطلب یہی ہے کہ ایشور انسان کے اندر اپنے کو بھولا ہوا ہے اور انسان کو چاہئے کہ پھر سے ایشور کے اندر اپنے آپ کو پہچانے۔ آتما یعنی روح مادہ پرستی میں پھنسکر پرورتی یعنی قوس نزول کے راستے نیچے اترتی جا رہی ہے۔ اسے نورتی یعنی قوس عروج کے راستے پھر سے اوپر اٹھنا ہے' اپنے آپ کو پہچاننا ہے اور جس ایشور اللہ سے وہ نکلی تھی اسی میں پھر فنا یعنی لین ہوجانا ہے۔ پرورتی کا راستہ نفس پرستی یعنی اندری سکھ کا راستہ ہے۔ نورتی کا راستہ نفس پر یعنی اندریوں پر قابو حاصل کرنے کا راستہ ہے۔ پرم آتما' روح کل یعنی اللہ نے اپنے کو محدود کر کے اپنی عینیت حقیقی

यानी शुद्ध अद्वैत रूप के ऊपर ग़ैरियते एतबारी यानी मिथ्या इतरता का जामा पहर. लिया. ख़ुदाय मुरक्कब, परमआत्मा यानी ब्रह्म ने मायावी काम संकल्प यानी शहूनात के ज़रिये जीव आत्मा यानी ख़ुदाए मोअय्यन को शक्ल अख़तियार की. अब रूह यानी जीव आत्मा को फिर से अपने विराट आलमगीर रूप को जानना और पहचानना है. इसी एक सचाई को सब मज़हबों ने तरह तरह से बयान किया है. यह सचाई सब से सीधी लेकिन सब से मुशकिल सचाई है. वजह यह है कि हम सब ख़ुदी और ग़ैरियत की भूल भुलैयाँ में इस बुरी तरह फंसे हुए हैं कि वह वहिदत यानी अद्वैत की बेलाग सचाई को हम समझना भी नहीं चाहते. एक सूफ़ी कहता है—

चीस्त दुनिया ? अज़ ख़ुदा ग़ाफ़िल शुदन
नै कि माश-ओ-नुक़रा-ओ-फ़रज़न्द-ओ-ज़न
न गुम शुद कि रूयश ज़ दुनिया बताफ़्त
कि गुमगशतए ख़ेशरा बाज़ याफ़्त.

यानी दुनिया क्या है ? रोज़ी, चांदी, बेटा या बीवी दुनिया नहीं हैं. ख़ुदा से ग़ाफ़िल होना दुनिया है. जिस किसी ने दुनिया से अपना मुंह मोड़ा वह फिर मिट नहीं सकता, क्योंकि वह अपनी भूली हुई असलियत को फिर से जान जाता है.

न कोई परदा है उसके दर पर
न रूए रोशन नक़ाब में है,
तू आप अपनी ख़ुदी से ए दिल
हिजाब* में है हिजाब में है.

चीनी महात्मा लाओ-त्से ने अपनी किताब 'ताओ-ते-किंग' में लिखा है—

"उस अनन्त को जान लेना ही असली ज्ञान है, उसे न जानने से नफ़्स यानी इन्द्रियाँ ज़ोर करती हैं और यही बुराई है."

ठीक यही बात श्री कृष्न ने बार बार गीता में कही है. इंजील में लिखा है—

"तुम ईश्वर और दुनिया दोनों की सेवा नहीं कर सकते. असली ज़िन्दगी की तरफ़ जाने वाला रास्ता तंग और सीधा है. बहुत कम हैं जिन्हें वह रास्ता मिलता है और जो उस रास्ते पर आगे बढ़ते हैं उनमें से भी कम लिये जाते हैं."

यही बात एक सूफ़ी ने इस तरह कही है—

हम ख़ुदा ख़ाही व हम दुनिया ए दूं
ई ख़याल अस्त-ओ-महाल अस्त-ओ-जनूं

* हिजाब = परदा.

یعنی شدھ ادویت روپ کے اوپر غیریت اعتباری یعنی متھیا اِترتا کا جامہ پہن لیا . خداء مرکب' پرم آتما یعنی برھمہ نے مایاوی کام سنکلپ یعنی شہونات کے ذریعے جیو آتما یعنی خداء معین کی شکل اختیار کی . اب روح یعنی جیو اتما کو پھر سے اپنے وراٹ عالمگیر روپ کو جاننا اور پہچاننا ہے . اسی ایک سچائی کو سب مذہبوں نے طرح طرح سے بیان کیا ہے . یہ سچائی سب سے سیدھی لیکن سب سے مشکل سچائی ہے . وجہ یہ ہے کہ ہم سب خودی اور غیریت کی بھول بھلیاں میں اس بری طرح پھنسے ہوئے ہیں کہ وحدانیت یعنی ادویت کی بے لاگ سچائی کو ہم سمجھنا بھی نہیں چاہتے .

ایک صوفی کہتا ہے—

چیست دنیا ؟ از خدا غافل شدن
نے کہ معاش و نقرہ و فرزند و زن
نہ گم شد کہ رویش نہ دنیا بہ تافت
کہ گم گشتۂ خویش را باز یافت

یعنی دنیا کیا ہے ؟ روزی' چاندی' بیٹا یا بیوی دنیا نہیں ہیں . خدا سے غافل ہونا دنیا ہے . جس کسی نے دنیا سے اپنا منہ موڑا وہ پھر مٹ نہیں سکتا' کیونکہ وہ اپنی بھولی ہوئی اصلیت کو پھر سے جان جاتا ہے .

نہ کوئی پردہ ہے اُس کے در پر
نہ روئے روشن نقاب میں ہے'
تو آپ اپنی خودی سے اے دل
حجاب* میں ہے حجاب میں ہے .

چینی مہاتما لاؤتسے نے اپنی کتاب ' تاؤتے کنگ' میں لکھا ہے—

" اُس اننت کو جان لینا ہی اصلی گیان ہے' اُسے نہ جاننے سے نفس یعنی اندریاں زور کرتی ہیں اور یہی برائی ہے ."

ٹھیک یہی بات شری کرشن نے بار بار گیتا میں کہی ہے .

انجیل میں لکھا ہے—

" تم ایشور اور دنیا دونوں کی سیوا نہیں کر سکتے . اصلی زندگی کی طرف جانے والا راستہ تنگ اور سیدھا ہے . بہت کم ہیں جنہیں وہ راستہ ملتا ہے اور جو اُس راستے پر آگے بڑھتے ہیں اُن میں سے بھی کم لئے جاتے ہیں ."

یہی بات ایک صوفی نے اسطرح کہی ہے—

ہم خدا خواہی وہم دنیائے دوں
ایں خیال است و محال است و جنوں

* حجاب = پردہ

यानी तू ख़ुदा को भी पाना चाहता है और इस ज़लील दुनिया को भी हासिल करना चाहता है. यह सिर्फ़ तेरा ख़याल है. यह नामुमकिन और पागलपन है.

उपनिशद में लिखा है—

"बुद्धिमान आदमी जानते हैं कि वासनाओं यानी ख़्वाहिशों के ज़रिये आदमी का मन संसार में फंसा रहता है. इन ख़्वाहिशों से आज़ाद हो कर ही आत्मा आज़ाद हो सकती है."

इंजील में लिखा है—

"अगर तुम ख़ुदा को पा जाओ और उसके नेकी के राज को हासिल कर लो तो बाक़ी सब चीज़ें तुम्हें अपने आप मिल जायँगी."

उपनिशद में लिखा है—

"हक़ यानी सचाई को जान कर आदमी जो चाहेगा उसे हासिल कर लेगा."

सूफ़ी कहता है—

ख़ुदा को पाया तो क्या न पाया,
सभी मिला जो मिला ख़ुदा है.
ज़रा तो सोचे कभी भी ख़ालिक ‡
से उसकी ख़िलक़त § हुई जुदा है.
सभी तो मैं हूँ, सभी तो मेरा
हमेशा आती यही निदा* है,
तू ही है ख़ालिक़, तुझी में ख़िलक़त
ख़याले क़ायल† तू ही ख़ुदा है.

जिस तरह डाक्टरी के मामले में उसी तरह दीन धर्म के मामले में. बड़े बड़े डाक्टरों और बड़ी बड़ी दवाओं से लोग ख़ुश रहते हैं. तन्दुरुस्ती अच्छी रखने के लिये लोगों को साफ़ हवा, साफ़ पानी और साफ़ सादे खाने की सलाह दी जावे तो उसका उनके दिल पर उतना असर नहीं होता. हालांकि बड़ी बड़ी दवाएँ अधिक से अधिक यह कर सकती हैं कि बीमारी को अच्छा कर दें. पर अगर नुक़सान कर जाएं तो और नई बीमारियाँ पैदा कर देती हैं. जब कि साफ़ हवा, पानी और सादा खाना तन्दुरुस्ती को भी ठीक रखता है और बीमारी को भी आदमी से दूर रखता है. मगर आज कल की बनावटी ज़िन्दगी में साफ़ हवा, साफ़ पानी और साफ़ खाने का मिलना भी मुश्किल है. यही हाल हमारा दीन धर्म के मामले में हो रहा है.

सब मज़हब यही तालीम देते हैं कि इनसान का वजूद ख़ुदा से है. लेकिन अपने अन्दर के ख़ुदा को पहचानने

‡ ख़ालिक़—सृष्टि कर्ता. § ख़िलक़त—सृष्टि.
* निदा—आवाज़. † ख़याले क़ायल—विचारक का विचार.

یعنی تو خدا کو بھی پانا چاہتا ہے اور اس ذلیل دنیا کو بھی حاصل کرنا چاہتا ہے . یہ صرف تیرا خیال ہے . یہ ناممکن اور پاگل پن ہے .

اپنشد میں لکھا ہے—

" بدھی مان آدمی جانتے ہیں کہ واسناؤں یعنی خواہشوں کے ذریعے آدمی کا من سنسار میں پھنسا رہتا ہے . ان خواہشوں سے آزاد ہو کر ہی آتما آزاد ہو سکتی ہے "

انجیل میں لکھا ہے—

" اگر تم خدا کو پا جاؤ اور اس کے نیکی کے راج کو حاصل کر لو تو باقی سب چیزیں تمہیں اپنے آپ مل جائینگی ."

اپنشد میں لکھا ہے—

" حق یعنی سچائی کو جان کر آدمی جو چاہے گا اسے حاصل کر لے گا ."

صوفی کہتا ہے—

خدا کو پایا تو کیا نہ پایا،
سبھی ملا جو ملا خدا ہے .
ذرا تو سوچے کبھی بھی خالق‡
سے اسکی خلقت§ ہوئی جدا ہے .
سبھی تو میں ہوں سبھی تو میرا
ہمیشہ آتی یہی ندا* ہے،
تو ہی ہے خالق، تجھی میں خلقت
خیال قایل† تو ہی خدا ہے .

جس طرح ڈاکٹری کے معاملے میں اسی طرح دین دھرم کے معاملے میں . بڑے بڑے ڈاکٹروں اور بڑی بڑی دواؤں سے لوگ خوش رہتے ہیں . تندرستی اچھی رکھنے کے لئے لوگوں کو صاف ہوا، صاف پانی اور صاف سادے کھانے کی صلاح دی جاوے تو اس کا ان کے دل پر اتنا اثر نہیں ہوتا . حالانکہ بڑی بڑی دوائیں ادھک سے ادھک یہ کر سکتی ہیں کہ بیماری کو اچھا کر دیں . پر اگر نقصان کر جائیں تو اور نئی بیماریاں پیدا کر دیتی ہیں . جبکہ صاف ہوا پانی اور سادہ کھانا تندرستی کو بھی ٹھیک رکھتا ہے اور بیماری کو بھی آدمی سے دور رکھتا ہے . مگر آج کل کی بناوٹی زندگی میں صاف ہوا، صاف پانی اور صاف کھانے کا ملنا بھی مشکل ہے . یہی حال ہمارا دین دھرم کے معاملے میں ہو رہا ہے .

سب مذہب یہی تعلیم دیتے ہیں کہ انسان کا وجود خدا سے ہے . لیکن اپنے اندر کے خدا کو پہچاننے

‡ خالق = سرشٹی کرتا § خلقت = سرشٹی
* ندا = آواز . † خیال قایل = وچارک کا وچار .

से पहले तरह तरह के ज्ञान की ज़रूरत है. हज़रत मोहम्मद ने कहा है—"जो अपनी ज़िन्दगी इल्म के हासिल करने में लगा देता है वह कभी नहीं मरता." हज़रत अली ने कहा है—"फ़लसफ़ा मोमिनों की खोई हुई भेड़ है, उसे फिर से ले लेना चाहिये. अगर वह मुनकिरों या काफ़िरों से मिले तो भी ले लेनी चाहिये." शेख़ सादी ने कहा है कि "बिना इल्म के आदमी ख़ुदा को नहीं पहचान सकता." वेदान्त की भी यही तालीम है.

इंजील में लिखा है—

"देखो ईश्वर का राज तुम्हारे अन्दर है."

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम ही ईश्वर का मन्दिर हो और ईश्वर की आत्मा तुम में रहती है."

"वह ईश्वर हम में से किसी से दूर नहीं है. क्योंकि हम उसी में रहते हैं, उसी में चलते फिरते हैं और उसी में जीते हैं........ईश्वर एक है... ....उसकी आत्मा आदमी के अन्दर काम करती है........एक ईश्वर सब का पैदा करने वाला जो सब से ऊपर है और तुम सब में है."

गीता में श्री कृश्न ने कहा है—"ऐ अर्जुन! मेरे सिवा और कोई चीज़ असल में है ही नहीं."

वेदों के सबसे आख़ीर के हिस्सों को उपनिशद कहते हैं. 'उपनिशद' शब्द का अर्थ है 'गुरु के बिल्कुल पास बैठना.' उपनिशद वह ज्ञान है जो गुरु या पीर सच्चे खोजी को धीरे से उसके कान में बताता था. इस तरह का ज्ञान जब तक धीरे से न दिया जाय और पूरे चित्त से और भक्ति भाव से न सुना जाय दिल में नहीं उतर सकता और न आत्मा को ऊँचा ले जा सकता है. यहूदी, ईसाई, मुसलिम और हिन्दू हर मज़हब में और हर देश में इस तरह के खोजी लोगों के गिरोह रहे हैं. यहूदियों में एस्सेनीज़ (संस्कृत सन्यासी) इसी तरह का एक गिरोह था. ईश्वर अल्लाह और आत्मा-रूह की बातें केवल सच्चे खोजी, नम्र, दीन, शुद्ध हृदय, शुद्ध चरित्र के और खुले दिल के लोग ही समझ सकते हैं. झगड़ालू, घमन्डी या हल्के दिल के नहीं. जिस तरह मकान की खिड़कियां बन्द होने पर उसमें सूरज की रोशनी नहीं आ सकती वैसे ही दिल और दिमाग़ के बन्द होने पर आत्मज्ञान या मारफ़त इलाही हासिल नहीं हो सकती.

क़ुरान में लिखा है:

"वफ़ी अनफ़ुसेकुम अफ़ला तबसेरून"

यानी मैं (अल्लाह) तुम्हारे अन्दर, तुम्हारे सांस के अन्दर मौजूद हूँ, लेकिन तुम नहीं देख पाते.

سے پہلے طرح طرح کے گیان کی ضرورت ہے ۔ حضرت محمد نے کہا ہے—" جو اپنی زندگی علم کے حاصل کرنے میں لگا دیتا ہے وہ کبھی نہیں مرتا ." حضرت علی نے کہا ہے— " فلسفہ مومنوں کی کھوئی ہوئی بھیڑ ہے' اسے پھر سے لے لینا چاہئے ۔ اگر وہ منکروں یا کافروں سے ملے تو بھی لے لینی چاہئے ." شیخ سعدی نے کہا ہے کہ" بنا علم کے آدمی خدا کو نہیں پہچان سکتا ."

ویدانت کی بھی یہی تعلیم ہے ۔

انجیل میں لکھا ہے—

" دیکھو ایشور کا راج تمہارے اندر ہے ."

" کیا تم نہیں جانتے کہ تم ہی ایشور کا مندر ہو اور ایشور کی آتما تم میں رہتی ہے ."

"وہ ایشور ہم میں سے کسی سے دور نہیں ہے ۔ کیونکہ ہم اسی میں رہتے ہیں' اسی میں چلتے پھرتے ہیں اور اسی میں جیتے ہیں .... ایشور ایک ہے ...... اس کی آتما آدمی کے اندر کام کرتی ہے .... ایک ایشور سب کا پیدا کرنے والا جو سب سے اوپر ہے اور تم سب میں ہے ."

گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے—" اے ارجن! میرے سوا اور کوئی چیز اصل میں ہے ہی نہیں ."

ویدوں کے سب سے آخیر کے حصوں کو اپنشد کہتے ہیں ۔ ' اپنشد ' شبد کا ارتھ ہے 'گرو کے بالکل پاس بیٹھنا .' اپنشد وہ گیان ہے جو گرو یا پیر سچے کھوجی کو دھیرے سے اس کے کان میں بتاتا تھا ۔ اسطرح کا گیان جب تک دھیرے سے نہ دیا جائے اور پورے چت سے اور بھکتی بھاؤ سے نہ سنا جائے دل میں نہیں اتر سکتا اور نہ آتما کو اونچا لے جا سکتا ہے ۔ یہودی' عیسائی' مسلم اور ہندو ہر مذہب میں اور ہر دیش میں اس طرح کے کھوجی لوگوں کے گروہ رہے ہیں ۔ یہودیوں میں ایسینیز (سنسکرت سنیاسی) اسی طرح کا ایک گروہ تھا ۔ ایشور اللہ اور آتما روح کی باتیں کیول سچے کھوجی' نمر' دین' شدھ ہردے' شدھ چرتر کے اور کھلے دل کے لوگ ہی سمجھ سکتے ہیں جھگڑالو' گھمنڈی یا ہلکے دل کے نہیں ۔ جس طرح مکان کی کھڑکیاں بند ہونے پر اس میں سورج کی روشنی نہیں آ سکتی ویسے ہی دل اور دماغ کے بند ہونے پر آتم گیان یا معرفت الٰہی حاصل نہیں ہو سکتی ۔

قرآن میں لکھا ہے :

"وفی انفسکم افلا تبصرون"

یعنی میں (اللہ) تمہارے اندر' تمہارے سانس کے اندر موجود ہوں' لیکن تم نہیں دیکھ پاتے ۔

सूफ़ी कहता है—

बावजूदे कि यह मुज़दा तेरा 'नहनो अक़रब'
सफ़े मसहफ़ पै लिखा था मुझे मालूम न था.

अर्थ—अगरचे क़ुरान के पन्ने पर तेरी बाबत यह ख़ुशख़बरी लिखी हुई थी कि तू इनसान की गरदन की रग से भी उनके ज़ियादा पास है, फिर भी मुझे तेरा पता न था, यानी मेरी ख़ुदी ने मुझे अन्धा कर रखा था.

इसलाम का कलमा यानी महावाक्य 'लाइलाह इल्लल्लाह'—सिवाय उस एक ख़ुदा के और कोई ख़ुदा नहीं है—अल्लाह को अपने से अलग समझ कर कहा गया है. सूफ़ी कहता है कि यह केवल उनके लिये है जो अभी अन्दर के ज्ञान नहीं पा सके.

भागवत में भगवान कहते हैं कि—"मेरे सिवा और कोई दूसरा नहीं है, यह सचाई अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये."

यही बात अल्लाह ने क़ुरान में कही है—"लाइलाह इल्ला अना." यही बात गीता में बार बार साफ़ साफ़ शब्दों में दोहराई गई है.

सब पैग़म्बरों, रिशियों, नबियों, रसूलों, तीर्थंकरों और अवतारों ने यही उपदेश दिया है.

यह उपदेश सच्चे खोजियों, अहलेदिल, भिक्शुओं, फ़क़ीरों और दरवेशों, दीक्शितों और मिस्कीनों को दिया जाता है. यही इल्म सीना या पराविद्या है, दूसरे सब इल्म इल्मसफ़ीना या अपरा विद्या हैं—यह इल्मसफ़ीना नीचे का ज्ञान है जो अहले क़ौल, श्रावकों, उपासकों और मामूली गृहस्थों के लिये है. उनके लिये जो दुनिया की खोज में हैं.

जिस तरह ईसाई किताबों में कहीं कहीं 'प्राफ़ेट' यानी नबियों और 'प्रीस्ट' यानी पुरोहितों में फ़रक़ किया गया है, उसी तरह इसलाम में 'सूफ़ी औलियाओं' और 'शरा के पाबन्द मुल्लाओं' में फ़रक़ किया गया है. ऐसे ही वैदिक धर्म में ज्ञानी भक्तों और करम काण्डियों में. हज़रत ईसा ने इस तरह के रस्म परस्तों को 'क़ानूनी' कह कर उन्हें इन शब्दों में डांटा है—"ऐ क़ानूनियो, तुम पर अफ़सोस है! तुमने ज्ञान की कुंजी लेली है, पर ज्ञान का दरवाज़ा खोल कर तुम उसके अन्दर नहीं गए, और जो अन्दर जाना चाहते थे उन्हें भी तुमने रोक दिया." बुद्ध ने सच्चे ब्राह्मन में और झूटे नाम के ब्राह्मन में फ़रक़ किया. इसी से लोग उनके ख़िलाफ़ हो गए. असली ज्ञान की कुंजी आदमी ख़ुद ही अपने अन्दर घुमा सकता है.

मोहम्मद साहब कहते थे—"मैं इल्म रूहानी का शहर हूं और अली उस शहर में जाने का दरवाज़ा है."

صوفی کہتا ہے—

باوجودیکہ یہ مژدہ ترا 'نحن و اقرب'
صفحۂ مصحف پہ لکھا تھا مجھے معلوم نہ تھا.

ارتھ—اگرچہ قرآن کے پنے پر تیری بابت یہ خوش خبری لکھی ہوئی تھی کہ تو انسان کی گردن کی رگ سے بھی ان کے زیادہ پاس ہے، پھر بھی مجھے تیرا پتہ نہ تھا، یعنی میری خودی نے مجھے اندھا کر رکھا تھا.

اسلام کا کلمہ یعنی مہاواکیہ 'لا الہ الا اللہ'—سوائے اس ایک خدا کے اور کوئی خدا نہیں ہے—اللہ کو اپنے سے الگ سمجھکر کہا گیا ہے. صوفی کہتا ہے کہ یہ کیول ان کے لئے ہے جو ابھی اندر کے گیان نہیں پاسکے.

بھاگوت میں بھگوان کہتے ہیں کہ—"میرے سوا اور کوئی دوسرا نہیں ہے، یہ سچائی اچھی طرح سمجھ لینی چاہئے."

یہی بات اللہ نے قرآن میں کہی ہے—"لا الہ الا انا." یہی بات گیتا میں بار بار صاف صاف شبدوں میں دوہرائی گئی ہے.

سب پیغمبروں، رشیوں، نبیوں، رسولوں، تیرتھنکروں اور اوتاروں نے یہی اپدیش دیا ہے.

یہ اپدیش سچے کھوجیوں، اہل دل، بھکشوؤں، فقیروں اور درویشوں، دیکشتوں اور مسکینوں کو دیا جاتا ہے. یہی علم سینہ یا پراودیا ہے. دوسرے سب علم علم سفینہ یا اپراودیا ہیں—یہ علم سفینہ نیچے کا گیان ہے جو اہل قول، شراوکوں، اپاسکوں اور معمولی گرہستوں کے لئے ہے، ان کے لئے جو دنیا کی کھوج میں ہیں.

جس طرح عیسائی کتابوں میں کہیں کہیں 'پرافٹ' یعنی نبیوں اور 'پریسٹ' یعنی پروہتوں میں فرق کیا گیا ہے، اسی طرح اسلام میں 'صوفی اولیاؤں' اور 'شرع کے پابند ملاؤں' میں فرق کیا گیا ہے، ایسے ہی ویدک دھرم میں گیانی بھکتوں اور کرم کانڈیوں میں. حضرت عیسیٰ نے اس طرح کے رسم پرستوں کو 'قانونی' کہکر انہیں ان شبدوں میں ڈانٹا ہے—"اے قانونیو، تم پر افسوس ہے! تم نے گیان کی کنجی لے لی ہے، پر گیان کا دروازہ کھول کر تم اس کے اندر نہیں گئے، اور جو اندر جانا چاہتے تھے انہیں بھی تم نے روک دیا." بدھ نے سچے براہمن میں اور جھوٹے نام کے براہمن میں فرق کیا. اسی سے لوگ ان کے خلاف ہوگئے. اصلی گیان کی کنجی آدمی خود ہی اپنے اندر گھما سکتا ہے.

محمد صاحب کہتے تھے—"میں علم روحانی کا شہر ہوں اور علی اس شہر میں جانے کا دروازہ ہے."

मुसलिम सूफ़ियों में यह बात मशहूर है कि सब से पहले हज़रत अली ने कुछ चुने हुए लोगों को, जो इस बात के हक़दार थे, इल्म रूहानी यानी तसव्वुफ़ की तालीम दी. यह इल्म रूहानी दुनिया के शुरू से चला आता है. इसी को दिव्य ज्ञान या थियासफ़ी कहते हैं. यह रूह की साइन्स है. इसे रूहानी साइन्स भी कहा जा सकता है. इसी को गुप्त विद्या या इल्म सीना कहते हैं. अंगरेज़ी में इसी को 'डाक्टरिन आफ़ दी हार्ट' कहते हैं. दरअसल यह इल्म सीना ब सीना ही यानी दिल से दिल को ही पहुंचता रहा है और सिर्फ़ फ़क़ीरों और ज्ञानियों ने इसे जाना है. आम लोग न इसे समझ सकते हैं और न उनके लिये यह फ़ायदे का हो सकता है. आम लोगों से इसकी बात चीत जितनी हो सकती है वह क़िस्से कहानियों, उपमाओं, इस्तआरों और मुतशाबेहात के ज़रिये ही हो सकती है. उपनिशद कहते हैं कि यह चीज़ें ज्ञान की आँखों से ही देखी जा सकती हैं.

सचमुच परम आत्मा सूरज की किरनों की तरह साफ़ और रौशन है. वह हर वक़्त हमारे पास है, हमारे अन्दर है, वही हमारी आत्मा है, फिर भी हम उसे नहीं देख पाते.

सूफ़ी कहता है—

ग़ायब जो हो ख़ुदा से आलम है उसको हू का
जिस में अनानियत है मौक़ा नहीं है तू का.

यानी जिसका दिल ख़ुदा से दूर है वह सिर्फ़ यही कह सकता है कि 'ख़ुदा है' लेकिन जिसने उस दिलबर को अपने अन्दर पा लिया है वह फिर ख़ुदा को 'वह' या 'तू' से याद नहीं कर सकता. वह फिर यही कहेगा—

ज़ाहिद गुमराह कि मैं किस तरह हमराह हूं
वह कहे अल्लाह है और मैं कहूँ अल्लाह हूँ.

उपनिशद में लिखा है—

"जो यह समझता है कि ब्रह्म है उसका ज्ञान परोक्ष यानी आँखों से ओझल है, और जो जानता है कि मैं ब्रह्म हूँ उसका ज्ञान अपरोक्ष है यानी उसने सचमुच ख़ुदा को देख लिया है."

ज़रथुस्र (ज़रतुश्त) की एक गाथा में कहा गया है—

"मज़दओ सखारे मैरस्तो" यानी सिर्फ़ उस एक अल्लाह ताला की ही इबादत करनी चाहिये.

उपनिशदों में कहा गया है—"केवल आत्मा की ही बात सुननी चाहिये. उसी पर सोचना चाहिये, उसी पर ग़ौर करना चाहिये और कोई न जानने की चीज़ है और न जानने वाला है."

مسلم صوفیوں میں یہ بات مشہور ہے کہ سب سے پہلے حضرت علی نے کچھ چنے ہوئے لوگوں کو' جو اس بات کے حق دار تھے' علم روحانی یعنی تصوف کی تعلیم دی. یہ علم روحانی دنیا کے شروع سے چلا آتا ہے. اِسی کو دیویہ گیان یا تھیاسفی کہتے ہیں. یہ روح کی سائنس ہے. اسے روحانی سائنس بھی کہا جا سکتا ہے. اِسی کو گپت ودیا یا علم سینہ کہتے ہیں. انگریزی میں اِسی کو 'ڈاکٹرین آف دی ہارٹ' کہتے ہیں. دراصل یہ علم سینہ بہ سینہ ہی یعنی دل سے دل کو ہی پہنچتا رہا ہے اور صرف فقیروں اور گیانیوں نے اِسے جانا ہے. عام لوگ نہ اِسے سمجھ سکتے ہیں اور نہ اُن کے لئے یہ فائدے کا ہوسکتا ہے. عام لوگوں سے اِسکی بات چیت جتنی ہو سکتی ہے وہ قصے کہانیوں' اُپماؤں' استعاروں اور متشابہات کے ذریعے ہی ہوسکتی ہے. اُپنشد کہتے ہیں کہ یہ چیزیں گیان کی آنکھوں سے ہی دیکھی جا سکتی ہیں.

سچ مچ پرم آتما سورج کی کرنوں کی طرح صاف اور روشن ہے. وہ ہر وقت ہمارے پاس ہے' ہمارے اندر ہے' وہی ہماری اپنی آتما ہے' پھر بھی ہم اُسے نہیں دیکھ پاتے.

صوفی کہتا ہے—

غائب جو ہو خدا سے عالم ہے اُسکو ہو کا
جس میں انانیت ہے موقع نہیں ہے تو کا.

یعنی جس کا دل خدا سے دور ہے وہ صرف یہی کہ سکتا ہے کہ 'خدا ہے' لیکن جس نے اُس دلبر کو اپنے اندر پا لیا ہے وہ پھر خدا کو 'وہ' یا 'تو' سے یاد نہیں کر سکتا. وہ پھر یہی کہے گا—

زاہد گمراہ کہ میں کسطرح ہمراہ ہوں
وہ کہے اللہ ہے اور میں کہوں اللہ ہوں

اُپنشد میں لکھا ہے—

" جو یہ سمجھتا ہے کہ برہمہ ہے اُس کا گیان پروکش یعنی آنکھوں سے اوجھل ہے' اور جو جانتا ہے کہ میں برہمہ ہوں اُس کا گیان اپروکش ہے یعنی اُس نے سچ مچ خدا کو دیکھ لیا ہے."

زرتھسترو (زرتشت) کی ایک گاتھا میں کہا گیا ہے—

" مزدا و سکھارے مے رستو" یعنی صرف اُس ایک اللہ تعالیٰ کی ہی عبادت کرنی چاہئے.

اُپنشدوں میں کہا گیا ہے—" کیول آتما کی ہی بات سننی چاہئے. اُسی پر سوچنا چاہئے' اُسی پر غور کرنا چاہئے اور کوئی نہ جاننے کی چیز ہے اور نہ جاننے والا ہے."

हमने ऊपर परोक्ष ज्ञान और अपरोक्ष ज्ञान की बात कही है. एक अरब फ़िलासफ़र का कहना है—"इल्म दो क़िस्म का है. एक सुना हुआ और दूसरा वह जिसे दिल के अन्दर महसूस किया गया हो. सुने हुए इल्म से उस वक़्त तक कोई नतीजा पैदा नहीं हो सकता जब तक अपने अन्दर के किसी तजरबे के ज़रिये से रूह ने उसे न जांच लिया हो."

एक और सूफ़ी का कहना है—"ख़ुदा ने हर आदमी की जान में एक कसौटी रख दी है जिस पर कस कर वह पूरे यक़ीन के साथ सचाई को झूट से अलग कर सकता है."

चीन की किताब 'सु-किंग' में लिखा है कि—"यह कसौटी ईश्वर ने हर छोटे से छोटे आदमी को दे रक्खी है." इसी को 'कान्शन्स,' 'ज़मीर' या 'अन्तरात्मा' कहा जाता है." यही आदमी के अन्दर अल्लाह की आवाज़ है. हिन्दू किताबों में इसे तरह तरह से बयान किया गया है. मोहम्मद साहब की एक हदीस है—"इस्तिफ़तह क़ल्बक" यानी जब कभी तुम्हें शक हो तो अपने दिल से पूछो.

चीनी किताब 'वांग यांग मिंग' में लिखा है—"हर दिल के अन्दर एक 'सजिन' यानी जानने वाला रहता है. पर आदमी उस पर पूरी तरह भरोसा नहीं करता इसी लिये उसकी आवाज़ अन्दर ही अन्दर दब जाती है."

संस्कृत में जिसे परोक्ष ज्ञान कहा गया है उसी को शब्द ज्ञान या आगम भी कहते हैं और जिसे अपरोक्ष ज्ञान कहा गया है उसे प्रत्यक्ष ज्ञान भी कहते हैं. अरबी में इन्हें मतबूअ और मसमूअ या माक़ूलात और मनक़ूलात भी कहते हैं.

संस्कृत में जिसे साधारन ज्ञान और योगज ज्ञान कहते हैं उन ही को अरबी में इल्म लदुन्नी और इल्म कसबी कहते हैं. योगज ज्ञान को समाधिज ज्ञान या प्रतिभा ज्ञान भी कहते हैं. ऐसे ही इल्म लदुन्नी को इल्म वजदानी या इलहामी, या कश्फ़ी या इशराक़ी भी कहते हैं और इल्म कसबी को इल्म इक्तसाबी या इस्तदलाली भी कहा जाता है. इसलाम में 'अनल हक़' या 'हक़ तुई' का जो मतलब है वही संस्कृत में 'अहं ब्रह्म' और 'तत्वमसि' का है. अरबी की कहावत है "क़ल्बुल इनसान बैतुर्रहमान" इसका ठीक संस्कृत तरजुमा है "आत्मा अन्तर हृदये." इंजील में भी कहा गया है—"तुम लोग भगवान का मन्दिर हो." ख़लीफ़ा अली कहा करते थे—"ईमान वाले आदमी का दिल अल्लाह का तख़्त है." हज़रत ईसा ने कहा है—"मैं और मेरा बाप एक है." ज़रथुस्ती धर्म में कहा गया है—"नेस्त ऐज़द मगर यज़्दाँ" जिसके लफ़्ज़ी मानी हैं 'लाइलाह इल्लिल्लाह.' बौद्ध धर्म और जैन धर्म में भी ठीक यही

ہم نے اوپر پروکش گیان اور اپروکش گیان کی بات کہی ہے ۔ ایک عرب فلاسفر کا کہنا ہے—" علم دو قسم کا ہے ۔ ایک سنا ہوا اور دوسرا وہ جسے دل کے اندر محسوس کیا گیا ہو ۔ سنے ہوئے علم سے اُس وقت تک کوئی نتیجہ پیدا نہیں ہو سکتا جب تک اپنے اندر کے کسی تجربے کے ذریعے سے روح نے اُسے نہ جانچ لیا ہو ۔"

ایک اور صوفی کا کہنا ہے—"خدا نے ہر آدمی کی جان میں ایک کسوٹی رکھدی ہے جس پر کس کر وہ پورے یقین کے ساتھ سچائی کو جھوٹ سے الگ کرسکتا ہے۔"

چین کی کتاب 'سوکنگ' میں لکھا ہے کہ "یہ کسوٹی ایشور نے ہر چھوٹے سے چھوٹے آدمی کو دے رکھی ہے۔" اِسی کو 'کانشنس' 'ضمیر' یا 'انتر آتما' کہا جاتا ہے ۔ یہی آدمی کے اندر اللہ کی آواز ہے۔ ہندو کتابوں میں اِسے طرح طرح سے بیان کیا گیا ہے محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—"استفتہ قلبک" یعنی جب کبھی تمھیں شک ہو تو اپنے دل سے پوچھو ۔

چینی کتاب 'وانگ یانگ منگ' میں لکھا ہے—"ہر دل کے اندر ایک سجن یعنی جاننے والا رہتا ہے ۔ پر آدمی اُس پر پوری طرح بھروسہ نہیں کرتا ۔ اِسی لئے اُسکی آواز اندر ہی اندر دب جاتی ہے"

سنسکرت میں جسے پروکش گیان کہا گیا ہے اُسی کو شبد گیان یا آگم بھی کہتے ہیں اور جسے اپروکش گیان کہا گیا ہے اُسے پرتیکش گیان بھی کہتے ہیں ۔ عربی میں اِنہیں مطبوع اور مسموع یا معقولات اور منقولات بھی کہتے ہیں ۔

سنسکرت میں جسے سادھارن گیان اور یوگج گیان کہتے ہیں اُن ہی کو عربی میں علم لدنی اور علم کسبی کہتے ہیں ۔ یوگج گیان کو سمادھج گیان یا پرتبھا گیان بھی کہتے ہیں ۔ ایسے ہی علم لدنی کو علم وجدانی یا الہامی یا کشفی یا اشراقی بھی کہتے ہیں اور علم کسبی کو علم اکتسابی یا استدلالی بھی کہا جاتا ہے ۔ اسلام میں 'انا الحق' یا 'حق توئی' کا جو مطلب ہے وہی سنسکرت میں 'اہم برہمہ' اور 'تتوم اسی' کا ہے ۔ عربی کی کہاوت ہے "قلب الانسان بیت الرحمان" اِسکا ٹھیک سنسکرت ترجمہ ہے "آتما انتر ہردے۔" انجیل میں بھی کہا گیا ہے—"تم لوگ بھگوان کا مندر ہو" خلیفہ علی کہا کرتے تھے—"ایمان والے آدمی کا دل اللہ کا تخت ہے۔" حضرت عیسیٰ نے کہا ہے—"میں اور میرا باپ ایک ہیں" زرتشتی دھرم میں کہا گیا ہے—"نیست ایزد مگر یزداں" جسکے لفظی معنی ہیں ۔ 'لا اِلہ اِلا اللہ' بودھ دھرم اور جین دھرم میں بھی ٹھیک یہی

तालीम दी गई है. जो लोग फ़रक़ देख देख कर ख़ुश नहीं होते उन्हें इस बारे में बौद्ध मज़हब और वेदान्त दोनों की तालीम एक ही दिखाई देगी. अपने एक उदान में समाधि से उठने के बाद महात्मा बुद्ध ने कहा था—"जो आदमी कामयाबी के साथ ब्रह्मचर्य के व्रत को पूरा कर लेता है और जिसे पूरा ज्ञान हासिल हो गया है वही ब्रह्म की बाबत दूसरे उन लोगों से बात करने का हक़ रखता है जो उस रास्ते पर चलना चाहते हैं. वही आदमी अपने को ब्राह्मन कह सकता है.'' महात्मा बुद्ध के यह शब्द बिल्कुल उपनिशदों के शब्दों से मिलते हैं. केवल उनकी भाशा संस्कृत की जगह पाली है.

बुद्ध से बहुत पहले इसी तरह की रूहानी हालत मे अश्टावक्र ने कहा था—"अहो अहम्! नमो मह्यम!'' "इसके बहुत दिनों बाद बायज़ीद बुस्तामी ने कहा था—"सुबहानी व आज़म शानी'' दोनो का मतलब एक ही है यानी यह कि मैं कैसी अजीब ग़रीब चीज़ हूँ मेरी शान कितनी बड़ी है. उपनिशदों में बार बार कहा गया है—"अहं ब्रह्म अस्मि'' यानी मैं ही ब्रह्म हूं, 'यस्त्वमसि सो अहम असमी'' जो तू है वही मैं हूं. "इदम् सर्वं असि, अहम एव इदम सर्वम्'' यानी यह सब कुछ तू ही है और मैं ही यह सब कुछ हूँ.

वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों की बातें और दोनो के विचार एक दूसरे से इतने मिलते हैं कि अगर उन दोनों का किसी तीसरी भाशा में तरजुमा किया जावे तो उनमें किसी तरह का भी फ़रक़ दिखाई नहीं दे सकता.

शिव पुरान में लिखा है—"योगी लोग शिव यानी ईश्वर को अपनी आत्मा के अन्दर देखते हैं, पत्थर या मिट्टी की मूर्तियों के अन्दर नहीं. और जो लोग उस ईश्वर को अपने अन्दर नहीं देख पाते वह उसे तीर्थों में ढूंढते फिरते हैं.''

शम्स तबरेज़ी ने कहा है—

ऐ क़ौम ब हज रफ्ता कुजाएद कुजाएद,
माशूक़ हमीं जास्त बेयाएद बेयाएद!
माशूक़े तो हमसाया तो दीवार ब दीवार,
दर बादिया सर गश्ता चराएद चराएद!
आनां कि तलबगार ख़ुदाएद ख़ुदाएद,
हाजत ब तलब नेस्त शुमाएद शुमाएद.
चीज़े कि न गर्दद गुम अज़ बहर च जोएद
कस ग़ैर शुमा नेस्त कुजाएद कुजाएद.

यानी—ऐ लोगों, तुम जो हज को जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा माशूक़ यहीं मौजूद है, वापस आ जाओ, वापस आ जाओ. तुम्हारा माशूक़

تعلیم دی گئی ہے ۔ جو لوگ فرق دیکھ دیکھ کر خوش نہیں ہوتے انہیں اس بارے میں بودھ مذہب اور ویدانت دونوں کی تعلیم ایک ہی دکھائی دیگی ۔ اپنے ایک اُدان میں سمادھی سے اُٹھنے کے بعد مہاتما بدھ نے کہا تھا—' جو آدمی کامیابی کے ساتھ برہمچریہ کے ورت کو پورا کرلیتا ہے اور جسے پورا گیان حاصل ہوگیا ہے وہی برہمہ کی بابت دوسرے اُن لوگوں سے بات کرنے کا حق رکھتا ہے جو اُس راستے پر چلنا چاہتے ہیں ۔ وہی آدمی اپنے کو براہمن کہہ سکتا ہے ۔" مہاتما بدھ کے یہ شبد بالکل اُپنشدوں کے شبدوں سے ملتے ہیں ۔ کیول اُنکی بھاشا سنسکرت کی جگہ پالی ہے ۔

بدھ سے بہت پہلے اِسی طرح کی روحانی حالت میں اشٹاوکر نے کہا تھا—"اہوا ہم ! نمو مہیم !" اسکے بہت دنوں بعد بایزید بسطامی نے کہا تھا—"سبحانی , اعظم شانی" دونوں کا مطلب ایک ہی ہے یعنی یہ کہ میں کیسی عجیب غریب چیز ہوں ۔ میری شان کتنی بڑی ہے ۔ اُپنشدوں میں بار بار کہا گیا ہے—"اہم برہمہ اسمی" یعنی میں ہی برہمہ ہوں' "یستومسی سواہم اسمی' جو تو ہے وہی میں ہوں ۔ اِدم سروم اسی' اہم ایو اِدم سروم" یعنی یہ سب کچھ تو ہی ہے اور میں ہی یہ سب کچھ ہوں ۔

ویدانت اور تصوف دونوں کی باتوں اور دونوں کے وچار ایک دوسرے سے اِتنے ملتے ہیں کہ اگر ان دونوں کا کسی تیسری بھاشا میں ترجمہ کیا جاوے تو اُن میں کسی طرح کا بھی فرق دکھائی نہیں دے سکتا ۔

شیو پران میں لکھا ہے—"یوگی لوگ شو یعنی ایشور کو اپنی آتما کے اندر دیکھتے ہیں' پتھر یا مٹی کی مورتیوں کے اندر نہیں ۔ اور جو لوگ اُس ایشور کو اپنے اندر نہیں دیکھ پاتے وہ اُسے تیرتھوں میں ڈھونڈھتے پھرتے ہیں ۔

شمس تبریزی نے کہا ہے—

اے قوم بہ حج رفتہ کجائید کجائید '
معشوق ہمیں جاست بیائید بیائید !
معشوق تو ہمسایہ تو دیوار بہ دیوار '
در بادیہ سرگشتہ چرائید چرائید !
آنا کہ طلبگار خدائید خدائید '
حاجت بہ طلب نیست شمائید شمائید'
چیزے کہ نہ گردید گم از بہر چہ جوئید
کس غیر شمانیست کجائید کجائید ۔

یعنی—اے لوگو' تم جو حج کو جا رہے ہو' کہاں جا رہے ہو' کہاں جا رہے ہو ؟ تمہارا معشوق یہیں موجود ہے' واپس آجاؤ' واپس آجاؤ ۔ تمہارا معشوق

म्हारा पड़ोसी है. तुम्हारी दीवार से उसकी दीवार मिली ई है. तुम जंगल में सर खपाते हुए क्यों फिर रहे हो, क्यों फ़र रहे हो ? तुम जो ख़ुदा को रहे ढूंढ हो, ढूँढते फिरते हो, ढने की ज़रूरत नहीं है, तुम ख़ुद ही ख़ुदा हो, तुम ख़ुद । ख़ुदा हो. जो चीज़ कभी गुम हुई ही नहीं उसे काहे क ये ढूँढते हो. तुम्हारे सिवा कोई है ही नहीं, कहाँ जाते ।, कहाँ जाते हो ?

تمہارا پڑوسی ہے . تمہاری دیوار سے اسکی دیوار ملی ہوئی ہے . تم جنگل میں سر کھپاتے ہوئے کیوں پھر رہے ہو، کیوں پھر رہے ہو؟ تم جو خدا کو ڈھونڈ رہے ہو ڈھونڈتے پھرتے ہو، ڈھونڈنے کی ضرورت نہیں ہے تم خود ہی خدا ہو، تم خود ہی خدا ہو . جو چیز کبھی گم ہوئی ہی نہیں اسے کاہے کے لئے ڈھونڈتے ہو . تمہارے سوا کوئی ہے ہی نہیں، کہاں جاتے ہو کہاں جاتے ہو؟

क़ौमी तालीम का आदर्श

(डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन)

[30 दिसम्बर 1951 को बंगाल के जादवपुर न्जीनियरिंग कालिज के कन्वोकेशन में डाक्टर सर्वपल्ली धाकृष्णन को दावत दी गई थी. इस मौक़े पर उन्होंने क बड़ी दर्द भरी और गम्भीर तक़रीर की. यहां हम सके कुछ हिस्से का अनुवाद दे रहे हैं—एडीटर]

आज की दुनिया में कुछ ऐसी सोसाइटियां और सिले चल पड़े हैं जिनमें इन्सान की हस्ती को दबा उसे सिर्फ़ एक पुतला-सा बनाने की कोशिश की जाती उन्हें इस बात का कोई ख़याल नहीं है कि इन्सान की ी कितनी शानदार और दौलत मन्द चीज़ है. इसके मने इन्सान-इन्सान के फ़र्क़, उनकी सनक और उनका पनापन वग़ैरा टिक नहीं पाते हैं. कहा यह जाता है कि ान को दबाने से समाज को फिर से बनाया जा गा. लेकिन यह निहायत निकम्मी और नादानी की ाल है.

अकसर लोग पूछते हैं कि आप को इन्सान की निजी ी का विकास ज़ियादा पसन्द है या राष्ट्र का फिर व ? पहले क्या चीज़ चाहिये ? यह वैसा ही सवाल है कि कोई यह पूछे कि मुर्ग़ी पहले होती है या अंडा. सवाल का जवाब हम यह देंगे कि इन्सान की निजी ी का विकास हम ज़रूर चाहते हैं और जब यह ाम हम कर लेते हैं तो सोसाइटी या समाज भी ख़ुद र जायगा. कोई भी योजना जिसमें इन्सान की हस्ती दौलत मिटा दी जाती है या इन्सान की निजी शख़्सियत म करने की कोशिश की जाती है उसे कामयाब योजना कहा जा सकता.

قومی تعلیم کا آدرش

(ڈاکٹر سروپلی رادھا کرشنن)

[30 دسمبر 1951 کو بنگال کے جادو پور انجینیرنگ کالج کے کنووکیشن میں ڈاکٹر سروپلی رادھا کرشنن کو دعوت دی گئی تھی . اس موقعے پر انہوں نے ایک بڑی درد بھری اور گمبھیر تقریر کی یہاں ہم اس کے کچھ حصے کا انوواد دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

آج کی دنیا میں کچھ ایسی سوسائٹیاں اور سلسلے چل پڑے ہیں جن میں انسان کی ہستی کو دبا کر اسے صرف ایک پتلا سا بنانے کی کوشش کی جاتی ہے . انہیں اس بات کا کوئی خیال نہیں ہے کہ انسان کی ہستی کتنی شاندار اور دولت مند چیز ہے اس کے سامنے انسان انسان کے فرق، ان کی سنک اور ان کا اپنا پن وغیرہ ٹک نہیں پاتے ہیں . کہا یہ جاتا ہے کہ انسان کو دبانے سے سماج کو پھر سے بنایا جا سکیگا . لیکن یہ نہایت نکمی اور نادانی کی دلیل ہے .

اکثر لوگ پوچھتے ہیں کہ آپ کو انسان کی نجی ہستی کا وکاس زیادہ پسند ہے یا راشٹر کا؟ پھر بتاؤ؟ پہلے کیا چیز چاہئے ؟ یہ ویسا ہی سوال ہے جیسے کہ کوئی یہ پوچھے کہ مرغی پہلے ہوتی ہے یا انڈا . اس سوال کا جواب ہم یہ دینگے کہ انسان کی نجی ہستی کا وکاس ہم ضرور چاہتے ہیں اور جب یہ وکاس ہم کر لیتے ہیں تو سوسائٹی یا سماج بھی خود سدھر جائیگا . کوئی بھی یوجنا جس میں انسان کی ہستی کی دولت مٹا دی جاتی ہے یا انسان کی نجی شخصیت ختم کرنے کی کوشش کی جاتی ہے اسے کامیاب یوجنا نہیں کہا جا سکتا .

आपके सदर ने कहा कि इस कालिज में इन्सानियत की तालीम पर भी ज़ोर दिया जाता है. मैं भी महसूस करता हूं कि साइन्स और इन्सानियत में आज ज़रूरत से ज़ियादा भेद किया जा रहा है. आपके कालिज से सम्बन्ध रखने वाली एक महान हस्ती ने एक बार कहा था कि कलाकार कोई खास क़िस्म का आदमी नहीं होता है, क्यों कि हर आदमी एक न एक खास क़िस्म का कलाकार होता ही है.

हम कह सकते हैं कि इन्सानियत की तालीम से ताल्लुक़ रखने वाला आदमी कोई खास क़िस्म का आदमी नहीं होता है बल्कि हर आदमी अपने काम-काज में इन्सानियत से ताल्लुक़ रखा करता है. चाहे उसने तकनीकी या इन्जीनियरी काम में महारत हासिल की हो या चाहे वह कुछ ही काम क्यों न करता हो, उसको अपना नज़रिया इन्सानी और अखलाक़ी पाये पर रखना होगा. इसलिये यह ज़रूरी है कि इन्सान की शख्सियत के विकास पर हम काफ़ी ज़ोर दें. यह भी ज़रूरी है कि इन्सान की आज़ादी को हम न दबायें, न सोचने की उसकी आज़ादी को दबायें और न उसे अपने ढंग से पूजा पाठ करने या काम करने से रोकें. इन्सान ही सारे नापों या दर्जों का बनाने वाला है, वही सारी भलाई-बेहतरी की बुनियाद है.

हमें आज राजकाजी आज़ादी हासिल है. लेकिन केवल राजकाजी आज़ादी से आर्थिक तरक़्क़ी आप से आप नहीं हो जाती. हमारी सरकारों की—केन्द्र वाली हो या सूबों की—परख इस बात से की जायगी कि उन्होंने आर्थिक और सनअती ऊंचाई कितनी हासिल की. कम पैदावार, बे-रोज़गारी, ज़ियादा-आबादी और बढ़ती ग़रीबी वग़ैरा के सवालों का हम ने कितना हल किया? यही वह ज़बरदस्त कसौटी है जिसमें से हमारी सरकारों को निकलना होगा.

आप ने सुना होगा कि नैपोलियन कहा करता था कि फ़ौजें पेट के बल चला करती हैं. आजकल के लोग कहा करते हैं कि एक राष्ट्र अपने पेट के बल चला करता है. जिन लोगों को खाना नसीब नहीं है उन का राष्ट्र कभी बड़ा नहीं बन सकता.

अनाज खूब पैदा करो और ज़मीन सुधार की बातें सुनते सुनते हमारे कान पक गए और फिर भी हमें बताया यह जाता है कि हमें क़रीब सत्तर लाख टन अनाज बाहर से मंगाना होगा. सोचने की बात है कि क्या आंधी, बाढ़, तूफ़ान, भूचाल सिर्फ़ उसी देश में आते हैं जो ताज़ा आज़ाद हुआ हो. क्या पच्छिम में ऐसे देश नहीं हैं जो लड़ाई की भयंकर ज्वाला में से गुज़रे, जो क़रीब क़रीब एकदम बरबाद हो गए थे, लेकिन फिर भी उन्होंने अपना

آپ کے صدر نے کہا کہ اِس کالج میں انسانیت کی تعلیم پر بھی زور دیا جاتا ہے . میں بھی محسوس کرتا ہوں کہ سائنس اور انسانیت میں آج ضرورت سے زیادہ بھید کیا جا رہا ہے . آپ کے کالج سے سمبندھ رکھنے والی ایک مہان ہستی نے ایک بار کہا تھا کہ کلا کار کوئی خاص قسم کا آدمی نہیں ہوتا ہے، کیونکہ ہر آدمی ایک نہ ایک خاص قسم کا کلا کار ہوتا ہی ہے .

ہم کہہ سکتے ہیں کہ انسانیت کی تعلیم سے تعلق رکھنے والا آدمی کوئی خاص قسم کا آدمی نہیں ہوتا ہے بلکہ ہر آدمی اپنے کام کاج میں انسانیت سے تعلق رکھا کرتا ہے . چاہے اُس نے تکنیکی یا انجینیری کام میں مہارت حاصل کی ہو یا چاہے وہ کچھ ہی کام کیوں نہ کرتا ہو، اُسکو اپنا نظریہ انسانی اور اخلاقی پائے پر رکھنا ہوگا . اس لئے یہ ضروری ہے کہ انسان کی شخصیت کے وکاس پر ہم کافی زور دیں . یہ بھی ضروری ہے کہ انسان کی آزادی کو ہم نہ دبائیں، نہ سوچنے کی اُسکی آزادی کو دبائیں اور نہ اُسے اپنے ڈھنگ سے پوجا پاٹھ کرنے یا کام کرنے سے روکیں . انسان ہی سارے ناپوں یا درجوں کا بنانے والا ہے، وہی ساری بھلائی بہتری کی بنیاد ہے

ہمیں آج راج کاجی آزادی حاصل ہے . لیکن کیول راج کاجی آزادی سے آرتھک ترقی آپ سے آپ نہیں ہو جاتی . ہماری سرکاروں کی—کیندر والی ہو یا صوبوں کی—پرکھ اِس بات سے کی جائیگی کہ انہوں نے آرتھک اور صنعتی اونچائی کتنی حاصل کی . کم پیداوار، بے روزگاری، زیادہ آبادی اور بڑھتی غریبی وغیرہ کے سوالوں کو ہم نے کتنا حل کیا؟ یہی وہ زبردست کسوٹی ہے جس میں سے ہماری سرکاروں کو نکلنا ہوگا .

آپ نے سنا ہوگا کہ نیپولین کہا کرتا تھا کہ فوجیں پیٹ کے بل چلا کرتی ہیں . آج کل کے لوگ کہا کرتے ہیں کہ ایک راشٹر اپنے پیٹ کے بل چلا کرتا ہے . جن لوگوں کو کھانا نصیب نہیں ہے اُن کا راشٹر کبھی بڑا نہیں بن سکتا .

اناج خوب پیدا کرو اور زمین سدھار کی باتیں سنتے سنتے ہمارے کان پک گئے اور پھر بھی ہمیں بتایا یہ جاتا ہے کہ ہمیں قریب ستر لاکھ ٹن اناج باہر سے منگانا ہوگا . سوچنے کی بات ہے کہ کیا آندھی، باڑھ، طوفان، زلزلے صرف اُسی دیش میں آتے ہیں جو تازہ آزاد ہوا ہو . کیا پچھم میں ایسے دیش نہیں ہیں جو لڑائی کی بھینکر جوالا میں سے گذرے، جو قریب قریب ایک دم برباد ہو گئے تھے، لیکن پھر بھی اُنہوں نے اپنا

धार्मिक ढाँचा संभाल लिया और अपनी बदस्तूर हालत को पहुँच गए? हमें समझ लेना चाहिये कि आज सारी दुनिया ही एक इनक़लाबी दौर से निकल रही है. मौजूदा हालतों के ख़िलाफ़ लोगों को असन्तोष है, यही नहीं, ग़ुस्सा और बग़ावत की भावना ज़ोर पकड़ रहा है.

यह जो आम तौर से बेचैनी छाई हुई है उस से हम बच नहीं सकते. वह हर जगह मौजूद है. बिस्मार्क ने एक बार कहा था कि अक़्लमन्द लोग दूसरों के तजर्बों से सीखते हैं, लेकिन बेवक़ूफ़ लोगों को अपने तजर्बों से सीखना पड़ता है, जो बहुत मंहगा और दुश्वारी का सौदा बैठता है. मुझे यक़ीन है कि आप के सदर, चीफ़ मिनिस्टर वग़ैरा जो सवालों का हल करेंगे तो दुनिया की दशा को समझ कर करेंगे और इस देश की मौजूदा हालत को संभालने के लिये जी जान से पूरी ताक़त लगा देंगे.

इस कालिज में दो जगह ऐसी भी हैं जिनके ज़रिये इस देश की पिछली बातों को बताने समझाने की कोशिश की जाती है. दूसरे देशों के तजुर्बों से हम सीख सकते हैं लेकिन उनके नैतिक या राजकाजी संगठनों या संस्थाओं की नक़ल हमें नहीं करना चाहिये. अगर हम कहें कि हमारे पास सबूत देने को कुछ है ही नहीं और नक़ल के बिना हमारा काम नहीं चल सकता तो यह रोगी के जैसी हालत है, जिस से पता चलता है कि हमें अपने पर कोई विश्वास नहीं है. दूसरे देशों से भले कुछ उत्साह या रोशनी मिल जाय लेकिन उन देशों से हमें अपना क़ौमी चालचलन नहीं मिल सकता. इसलिये यह मुनासिब है कि यह कालिज उस चीज़ पर ज़ोर देते रहें जिसे हम तालीम के अपने क़ौमी आदर्श कहते हैं. हमारे अपने ही रीतिरिवाज और चालढाल के मुताबिक़ हमारा समाजी सुधार हो सकता है और तभी हमारा समाज पनप सकेगा. अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि क़ौमी आदर्श क्या है?

हमारे झंडे पर एक गोल पहिया है, धर्म का पहिया ऐसा पहिया जो घूमता रहता है, दुनिया या संसार का पहिया जो लगातार बदलता रहता है. अगर आप बदलने से इन्कार करते हैं तो धर्म की अपनी कल्पना को जड़ से ही आप काट डालते. बदलने के लिये आपको तैयार रहना चाहिये. पहिये का घूमना आपको बताता है कि इस दुनिया में अचल कोई चीज़ नहीं है, हर चीज़ लगातार हरकत कर रही है और आपको भी वक़्त के मुताबिक़ हरकत करना चाहिये. चुपचाप खड़े हो जाने या दो हज़ार बरस पहले की दुनिया को वापिस लाने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं है. दुनिया हर दम आगे बढ़ रही है.

जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें एक तूफ़ान, शोर ग़ुल मचा हुआ है. अपने धर्म के उसूलों के मुताबिक़ हमें

آرتھک ڈھانچہ سنبھال لیا اور اپنی بدستور حالت کو پہنچ گئے؟ ہمیں سمجھ لینا چاہئیے کہ آج ساری دنیا ہی ایک انقلابی دور سے نکل رہی ہے۔ موجودہ حالتوں کے خلاف لوگوں کو اسنتوش ہے یہی نہیں' غصہ اور بغاوت کی بھاونا زور پکڑ رہی ہے۔

یہ جو عام طور سے بے چینی چھائی ہوئی ہے اس سے ہم بچ نہیں سکتے۔ یہ ہر جگہ موجود ہے۔ بسمارک نے ایک بار کہا تھا کہ عقلمند لوگ دوسروں کے تجربوں سے سیکھتے ہیں' لیکن بیوقوف لوگوں کو اپنے تجربوں سے سیکھنا پڑتا ہے جو بہت مہنگا اور دشواری کا سودا بیٹھتا ہے۔ مجھے یقین ہے کہ آپ کے صدر' چیف منسٹر وغیرہ جو سوالوں کا حل کرینگے تو دنیا کی دشا کو سمجھکر کرینگے اور اس دیش کی موجودہ حالت کو سنبھالنے کے لئے جی جان سے پوری طاقت لگا دینگے۔

اس کالج میں دو جگہ ایسی بھی ہیں جن کے ذریعے اس دیش کی پچھلی باتوں کو بتانے سمجھانے کی کوشش کی جاتی ہے۔ دوسرے دیشوں کے تجربوں سے ہم سیکھ سکتے ہیں لیکن ان کے نیتک یا راج کاجی سنگھٹنوں یا سنستھاؤں کی نقل ہمیں نہیں کرنا چاہئیے۔ اگر ہم کہیں کہ ہمارے پاس ثبوت دینے کو کچھ ہے ہی نہیں اور نقل کے بنا ہمارا کام نہیں چل سکتا تو یہ روگی کے جیسی حالت ہے' جس سے پتہ چلتا ہے کہ ہمیں اپنے پر کوئی وشواس نہیں ہے۔ دوسرے دیشوں سے بھلے کچھ اُتساہ یا روشنی مل جائے لیکن اُن دیشوں سے ہمیں اپنا قومی چال چلن نہیں مل سکتا اس لئے یہ مناسب ہے کہ یہ کالج اس چیز پر زور دیتے رہیں جسے ہم تعلیم کے اپنے قومی آدرش کہتے ہیں۔ ہمارے اپنے ہی ریت اور رواج اور چال ڈھال کے مطابق ہمارا سماجی سدھار ہو سکتا ہے اور تبھی ہمارا سماج پنپ سکیگا اب میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ قومی آدرش کیا ہے؟

ہمارے جھنڈے پر ایک گول پہیا ہے' دھرم کا پہیا ایسا پہیا جو گھومتا رہتا ہے' دنیا یا سنسار کا پہیا جو لگاتار بدلتا رہتا ہے۔ گر آپ بدلنے سے انکار کرتے ہیں تو دھرم کی اپنی کلپنا کو جڑ سے ہی آپ کاٹ ڈالتے بدلنے کے لئے آپ کو تیار رہنا چاہئیے۔ پہئے کا گھومنا آپ کو بتاتا ہے کہ اس دنیا میں اچل کوئی چیز نہیں ہے' ہر چیز لگاتار حرکت کر رہی ہے اور آپ کو بھی وقت کے مطابق حرکت کرنا چاہئیے۔ چپ چاپ کھڑے ہو جانے یا دو ہزار برس پہلے کی دنیا کو واپس لانے کی کوشش کرنے سے کوئی فائدہ نہیں ہے۔ دنیا ہر دم آگے بڑھ رہی ہے۔

جس دنیا میں ہم رہتے ہیں اس میں ایک طوفان' شور غل مچا ہوا ہے۔ اپنے دھرم کے اصولوں کے مطابق ہمیں

अपने को इस हालत में संभालना होगा. लेकिन झंडे पर संसार चक्र या धर्म का पहिया ही सिर्फ़ नहीं है. यह पहिया सफ़ेद ज़मीन पर टिका हुआ है. सचमुच यह दुनिया एक ऐसी चीज़ की चलती हुई छाया है जो खुद अटल और अचल है. इस दुनिया को आकाश और पाताल के बीच का कहा जाता है. हम सब जो इस दुनिया में हिस्सा लेते हैं उन्हें समझ लेना चाहिये कि हमारे जीने का अकेला मक़सद यह दुनिया नहीं है. इस दुनिया के पीछे एक अटल पिछवाड़ा है. इस अटल चीज़ को हम कैसे पा सकते हैं ? जब हम 'संसार' के इस चक्र में शरीक रहते हैं तो यह कैसे समझें कि इस सब से परे भी कुछ है ?

फिर एक बात यह भी है कि धर्म कहता है कि हर आदमी को तप करना चाहिये, यज्ञ करना चाहिये. बिना संयम से रहने में काम में न खुशनूदी आती है, न पायेदारी और न सफ़ाई. अब हम झंडे पर के नारंगी रंग को लें. उसका मतलब है कि हमें अपने अन्दर के दुश्मनों को दबाना चाहिये. यह दुनिया नेक आदमियों के त्याग और तपस्या के बल पर ही जीती है. यही कारन है कि हमें बताया गया है कि बिना त्याग किये, बिना इन्द्रियों को क़ाबू में लाये, कोई आदमी अटल-अमर चीज़ नहीं पा सकता. अपने नफ़्स या जीव को मारना नारंगी रंग का संदेश है.

इसके बाद सवाल आता है, क्या त्याग-तपस्या ही हमारा मक़सद है ? क्या हम त्याग-तपस्या पर सबर कर लें ? त्याग-तपस्या एक साधन हैं या मक़सद या क्या ? यह विचार करने पर हम हरे रंग पर आ जाते हैं, जिसका इशारा इन्सान के पैदावार या ईजाद करने के मादद्दे से है. जिसके ज़रिये इन्सान धरती पर स्वर्ग कर सकता है, हर आदमी को यह बात समझ लेना चाहिये. उसे महसूस करना चाहिये कि दुनिया में हम जो कुछ भी करते हैं वह उस मक़सद के लिये करते हैं जो समय की गति से परे है.

इसलिये त्याग-तपस्या सिर्फ़ एक झगड़ा है जिसकी मदद से हम एक तरह का इन्सानी स्वर्ग बना कर समाजी न्याय क़ायम कर सकते हैं. हमारे दिल में भर पूर दया होना चाहिये ताकि हमारी क़ुरबानी होने पर हमारी मुक्ति हो और साथ ही साथ दूसरों की भी मुक्ति हो. मैं जानता हूँ कि यह रास्ता आसान नहीं है. इस दुनिया में अगर हम ईमानदारी से ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें उस्तरे की तेज़ धार पर चलना पड़ेगा. इसलिये मेरे कहने का मतलब यह है कि इस दुनिया में काम करते वक़्त हमें महसूस करना चाहिये कि इस सबके पीछे कोई अटल-अचल चीज़ है. हमें त्याग-तपस्या और अपनी

اپنے کو اس حالت میں سنبھالنا ہوگا . لیکن جھنڈے پر سنسار چکر یا دھرم کا پہیا ہی صرف نہیں ہے . یہ پہیا سفید زمین پر ٹکا ہوا ہے . سچ مچ یہ دنیا ایک ایسی چیز کی چلتی ہوئی چھایا ہے جو خود اٹل اور اچل ہے . اس دنیا کو آکاش اور پاتال کے بیچ کا کہا جاتا ہے . ہم سب جو اس دنیا میں حصہ لیتے ہیں انہیں سمجھ لینا چاہئیے کہ ہمارے جینے کا اکیلا مقصد یہ دنیا نہیں ہے . اس دنیا کے پیچھے ایک اٹل پچھواڑا ہے . اس اٹل چیز کو ہم کیسے پا سکتے ہیں ؟ جب ہم ' سنسار ' کے اس چکر میں شریک رہتے ہیں تو یہ کیسے سمجھیں کہ اس سب سے پرے بھی کچھ ہے ؟

پھر ایک بات یہ بھی ہے کہ دھرم کہتا ہے کہ ہر آدمی کو تپ کرنا چاہئیے ' یگ کرنا چاہئیے . بنا سنیم سے رہنے میں کام میں نہ خوشنودی آتی ہے ' نہ پائداری ' اور نہ صفائی . اب ہم جھنڈے پر کے نارنگی رنگ کو لیں . اس کا مطلب ہے کہ ہمیں اپنے اندر کے دشمنوں کو دبانا چاہئیے . یہ دنیا نیک آدمیوں کے تیاگ اور تپسیا کے بل پر ہی جیتی ہے . یہی کارن ہے کہ ہمیں بتایا گیا ہے کہ بنا تیاگ کئیے ' بنا اندریوں کو قابو میں لائے ' کوئی آدمی اٹل امر چیز نہیں پا سکتا . اپنے نفس یا جیو کو مارنا نارنگی رنگ کا سندیش ہے .

اس کے بعد سوال آتا ہے ' کیا تیاگ تپسیا ہی ہمارا مقصد ہے ؟ کیا ہم تیاگ تپسیا پر صبر کرلیں ؟ تیاگ تپسیا ایک سادھن ہیں یا مقصد یا کیا ؟ یہ وچار کرنے پر ہم ہرے رنگ پر آجاتے ہیں ' جس کا اشارہ انسان کے پیداوار یا ایجاد کرنے کے مادے سے ہے جس کے ذریعے انسان دھرتی پر سورگ کر سکتا ہے ' ہر آدمی کو یہ بات سمجھ لینا چاہئیے . اسے محسوس کرنا چاہئیے کہ دنیا میں ہم جو کچھ بھی کرتے ہیں وہ اس مقصد کے لئیے کرتے ہیں جو سمے کی گتی سے پرے ہے .

اس لئے تیاگ تپسیا صرف ایک جھگڑا ہے جس کی مدد سے ہم ایک طرح کا انسانی سورگ بنا کر سماجی نیائے قائم کر سکتے ہیں . ہمارے دل میں بھر پور دیا ہونا چاہئیے تاکہ ہماری قربانی ہونے پر ہماری مکتی ہو اور ساتھ ہی ساتھ دوسروں کی بھی مکتی ہو . میں جانتا ہوں کہ یہ راستہ آسان نہیں ہے . اس دنیا میں اگر ہم ایمانداری سے زندہ رہنا چاہتے ہیں تو ہمیں استرے کی تیز دھار پر چلنا پڑے گا . اس لئے میرے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ اس دنیا میں کام کرتے وقت ہمیں محسوس کرنا چاہئیے کہ اس سب کے پیچھے کوئی اٹل اچل چیز ہے . ہمیں تیاگ تپسیا اور اپنی

क़ुरबानी के लिये तैयार रहना चाहिये. और अगर हमने ऐसा कर लिया तो इस धरती की काया पलट जायेगी और यह इसका दूसरा जन्म होगा.

क़ौमी तालीम का असली मक़सद यही है. हम दुनिया में हैं और हमारे ऊपर वह अटल-अचल चीज़ है. क़ौमी तालीम का आदर्श है कि इन दोनों को नज़दीक लायें.

قربانی کے لئے تیار رہنا چاہئے۔ اور اگر ہم نے ایسا کر لیا تو اس دھرتی کی کایا پلٹ جائے گی اور وہ اس کا دوسرا جنم ہوگا۔

قومی تعلیم کا اصلی مقصد یہی ہے۔ ہم دنیا میں ہیں اور ہمارے اوپر وہ اٹل اچل چیز ہے۔ قومی تعلیم کا آدرش ہے کہ ان دونوں کو نزدیک لائے۔

चीनी लिखावट

(प्रोफ़ेसर तान युन शान)

अंगरेज़ी शब्द "लैंगवेज" का मतलब लिखी और बोली जाने वाली दोनों भाषाओं से होता है. लेकिन चीनी भाषा में लिखी और बोली जाने वाली भाषाएँ एक दूसरे से बिलकुल अलग होती हैं. बोली जाने वाली चीनी भाषा यू. यन कहलाती है जिसका मतलब है—शब्द और बोल. और लिखी चीनी भाषा वेनत्सू कहलाती है जिसका मतलब हरफ़ और चिन्ह होता है.

इन्सानी ज़िन्दगी की यह एक क़ुदरती घटना है कि लिखी जाने वाली भाषा से पहले बोली जाने वाली भाषा पैदा होती है. चीनी भाषा भी इस उसूल का कोई अपवाद नहीं है. इस बारे में सुंग काल (960 से 1279 ईसवी) के ताई-तुंग नामी चीनी पंडित ने कहा था—

"लिखी शक्लों से पहले बोली जाने वाली आवाज़ पैदा हुई और लिखे जाने वाले चिन्हों से पहले डोरे में गाठ डाल कर बात समझाने के तरीक़े का आविष्कार हुआ. बाद में लकड़ी पर खुदाई शुरू हुई जिसकी वजह से क़ुदरती चीज़ों और चाल ढाल, हालत और सम्बंध को ज़ाहिर करने वाली ऐसी शक्लें एक लाइन में खोदी जाने लगीं जो उन चीज़ों, उन चाल ढालों, उन हालतों और उन सम्बंधों के बोली वाले नामों को ज़ाहिर करती थीं.

इसके बाद खुदाई करने के चाक़ू और खुदाई करने के लिये तख्तियों की ईजाद हुई. यही लिखावट थी और जिसका मतलब था कि बोली को पढ़ा जा सके."

ऊपर लिखा बयान चीन की सब से पुरानी किताब ई-चंग के आधार पर है. यह ई-चंग चीन का ऋग वेद है. इस किताब में लिखा है—

"पुराने ज़माने में डोरे में गांठ डाल डाल कर हुक्म दिया जाता था और सरकार का काम कामयाबी से चलता

چینی لکھاوٹ

(پروفیسر تان یُن شان)

انگریزی شبد ''لینگویج'' کا مطلب لکھی اور بولی جانے والی دونوں بھاشاؤں سے ہوتا ہے۔ لیکن چینی بھاشا میں لکھی اور بولی جانے والی بھاشائیں ایک دوسرے سے بالکل الگ ہوتی ہیں۔ بولی جانے والی چینی بھاشا یو ین کہلاتی ہے جس کا مطلب ہے—شبد اور بول اور لکھی چینی بھاشا وین سو کہلاتی ہے جس کا مطلب حرف اور چنہ ہوتا ہے۔

انسانی زندگی کی یہ ایک قدرتی گھٹنا ہے کہ لکھی جانے والی بھاشا سے پہلے بولی جانے والی بھاشا پیدا ہوتی ہے۔ چینی بھاشا بھی اس اصول کا کوئی اپواد نہیں ہے۔ اس بارے میں سنگ کال (960 سے 1279 عیسوی) کے تائی تنگ نامی چینی پنڈت نے کہا تھا—

'' لکھی شکلوں سے پہلے بولی جانے والی آواز پیدا ہوئی اور لکھے جانے والے چنہوں سے پہلے ڈورے میں گانٹھ ڈال کر بات سمجھانے کے طریقے کا آوشکار ہوا۔ بعد میں لکڑی پر کھدائی شروع ہوئی جس کی وجہ سے قدرتی چیزوں اور چال ڈھال، حالت اور سمبندھ کو ظاہر کرنے والی ایسی شکلیں ایک لائن میں کھودی جانے لگیں جو اُن چیزوں، اُن چال ڈھالوں، اُن حالتوں اور اُن سمبندھوں کے بولی والے ناموں کو ظاہر کرتی تھیں۔

اس کے بعد کھدائی کرنے کے چاقو اور کھدائی کرنے کے لئے تختیوں کی ایجاد ہوئی۔ یہی لکھاوٹ تھی اور جس کا مطلب تھا کہ بولی کو پڑھا جا سکے۔''

اوپر لکھا بیان چین کی سب سے پرانی کتاب ای چنگ کے آدھار پر ہے۔ یہ ای چنگ چین کا رگ وید ہے۔ اس کتاب میں لکھا ہے—

'' پرانے زمانے میں ڈورے میں گانٹھ ڈال ڈال کر حکم دیا جاتا تھا اور سرکار کا کام کامیابی سے چلتا

था. इसके बाद के काल में अक्लमन्दों ने डोरे की गांठ की जगह लिखे जाने वाले चिन्ह और मज़मून का आविष्कार किया. इस आविष्कार की वजह से तमाम अफ़सरों को ठीक ठीक हुक्म भेजे जा सके और तमाम जनता की ठीक ठीक देख रेख की जा सकी."

चीनी भाषा में लिखावट का आरम्भ.

तहज़ीबी दुनिया में चीनी भाषा की लिखावट सबसे पुरानी है. इसके आरम्भ के सम्बन्ध में बहुत सी कथाएँ मशहूर हैं. पुराने हिन्दुओं की तरह चीनियों का भी विश्वास था कि उनकी लिखावट और किताबें भगवान के घर से उतरी हैं. ई-चंग किताब में इस बारे में लिखा गया है—

"भगवान ने आत्मा की तरह की चीज़ें पैदा कीं और बुद्धिमानों ने उनको समझ लिया. आसमान और ज़मीन पर बहुत सी उथल पुथल और अदला बदली की निशानियाँ हैं और बुद्धिमानों ने उनकी नक़ल कर ली. भगवान ने अपने गीत उतारे जिनसे बुराई और अच्छाई का पता चला और बुद्धिमानों ने उनके सुन्दर सुन्दर मतलब लगा लिये. पीली नदी ने नक़्शा दिया और लो नदी ने लिखावट प्रदान की और बुद्धिमानों ने उनके नमूने बना लिये."

इसी किताब के अनुसार चीनी पंडित मानते हैं कि पुराने चीनी सम्राट फ़ो सी की ईजाद "बाकुआ" या आठ जड़ से ही चीनी लिखावट की शुरूआत होती है—

≡ चेयन = आकाश; ≡ ≡ क्वान = ज़मीन; ≡ ≡ चंग = बिजली; ≡ ≡ सन = हवा; ≡ ≡ कान = पानी; ≡ ≡ ली = आग; ≡ ≡ कान = पहाड़ और ≡ ≡ तुई = झील.

लेकिन पुराने सम्राट फ़ोसी के काल का पता ही नहीं चलता. वह तारीख़ी होने के बजाय कल्पित मालूम होता है. बहुत सी लिखतों से पता चलता है कि फ़ो सी सम्राट का काल ईसा से दस लाख साल पहले का है. इन के अलावा कुछ का कहना है कि यह काल लगभग ईसा से तीन लाख साल पहले था. कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि ईसा से लगभग चार पांच हज़ार बरस पहले फ़ोसी सम्राट का ज़माना था. लेकिन कोई भी इस बात से इनकार नहीं करता है या इस को ग़लत बताता है कि फ़ोसी सम्राट ने बा-कुआ या आठ जड़ की ईजाद की थी जिन से कि चीनी लिखावट शुरू हुई है.

एक और गाथा से पता चलता है कि चीन के सबसे पहले तारीख़ी राजा हवाँग-ती या पीले सम्राट के काल के वज़ीर सांग ची ने चीनी शकलों की ईजाद की. इसी सम्राट ने (2697-2598 ईसा से पहले) के ज़माने में पूरे चीन

تھا. اس کے بعد کے کال میں عقلمندوں نے ڈورے کی گانٹھ کی جگہ لکھے جانے والے چنھ اور مضمون کا آوشکار تھا. اس آوشکار کی وجہ سے تمام افسروں کو ٹھیک ٹھیک حکم بھیجے جا سکے اور تمام جنتا کی ٹھیک ٹھیک دیکھ ریکھ کی جا سکی."

چینی بھاشا میں لکھاوٹ کا آرمبھ.

تہذیبی دنیا میں چینی بھاشا کی لکھاوٹ سب سے پرانی ہے. اِس کے آرمبھ کے سمبندھ میں بہت سی کتھائیں مشہور ہیں. پرانے ہندوؤں کی طرح چینیوں کا بھی وشواس تھا کہ اُن کی لکھاوٹ اور کتابیں بھگوان کے گھر سے اُتری ہیں. ای چنگ کتاب میں اِس بارے میں لکھا گیا ہے—

" بھگوان نے آتما کی طرح کی چیزیں پیدا کیں اور بدھیمانوں نے اُن کو سمجھ لیا. آسمان اور زمین پر بہت سی اُتھل پُتھل اور ادلا بدلی کی نشانیاں ہیں اور بدھیمانوں نے اُن کی نقل کر لی. بھگوان نے اپنے گیت اُتارے جن سے برائی اور اچھائی کا پتہ چلا اور بدھیمانوں نے اُن کے سندر سندر مطلب لگا لئے. پیلی ندی نے نقشہ دیا اور لو ندی نے لکھاوٹ پردان کی اور بدھیمانوں نے اُن کے نمونے بنا لئے."

اسی کتاب کے انوسار چینی پنڈت مانتے ہیں کہ پرانے چینی سمراٹ فوسی کی ایجاد " باکوا " یا آٹھ جڑ سے ہی چینی لکھاوٹ کی شروعات ہوتی ہے—

≡ چیئن = آکاش؛ ≡ ≡ کووان = زمین؛ ≡ ≡ چنگ = بجلی؛ ≡ ≡ سن = ہوا؛ ≡ ≡ کان = پانی؛ ≡ ≡ لی = آگ؛ ≡ ≡ کان = پہاڑ اور ≡ ≡ توئی = جھیل.

لیکن پرانے سمراٹ فوسی کے کال کا پتہ ہی نہیں چلتا. وہ تاریخی ہونے کے بجائے کلپت معلوم ہوتا ہے. بہت سی لکھتوں سے پتہ چلتا ہے کہ فوسی سمراٹ کا کال عیسیٰ سے دس لاکھ سال پہلے کا ہے. اِن کے علاوہ کچھ کا کہنا ہے کہ یہ کال لگ بھگ عیسیٰ سے تین لاکھ سال پہلے تھا. کچھ دوسرے لوگوں کا کہنا ہے کہ عیسیٰ سے لگ بھگ چار پانچ ہزار برس پہلے فوسی سمراٹ کا زمانہ تھا. لیکن کوئی بھی اِس بات سے انکار نہیں کرتا ہے یا اِس کو غلط بتاتا ہے کہ فوسی سمراٹ نے باکوا یا آٹھ جڑ کی ایجاد کی تھی جن سے چینی لکھاوٹ شروع ہوئی ہے.

ایک اور کتھا سے پتہ چلتا ہے کہ چین کے سب سے پہلے تاریخی راجہ ہوانگ تی یا پیلے سمراٹ کے کال کے وزیر سانگ چی نے چینی شکلوں کی ایجاد کی تھی. اسی سمراٹ نے (2697-2598 عیسیٰ سے پہلے) کے زمانے میں پورے چین

…ने एक बनाया था. असल में चीनी शक्लों की ईजाद न …उसने की और न उसके ज़माने में इनकी ईजाद हुई. …सने तो सिर्फ़ इन शक्लों को तरतीब में ला दिया और इन …मिसाल पैदा करके अलग अलग किस्में तय कर दीं. …सल में चीनी लिखावट न एक आदमी की ईजाद है …ौर न हो सकती है और न इसको थोड़े अरसे में पूरा …या जा सकता था. यह सैकड़ों हज़ारों आदमियों की …ज़ारहा बरस की इकट्ठा मेहनत का नतीजा है.

पुराने महान चीनी पंडित सुन जो ने कहा है—"चीनी भाषा की शक्लों की बहुत सी ईजादें हुईं लेकिन उसी लिखावट को अपनाया गया जिसे सांग ची ने तैयार किया था."

ऊपर लिखी बातों से पता चलता है कि यह बात सच है कि चीनी लिखावट का आरम्भ फ़ोसी ने किया और उसको सांग ची ने पूरा किया.

चीनी भाषा की शक्लों में तब्दीली.

सांग ची की तैयार की हुई लिखावट लगभग दो हज़ार साल तक काम में आती रही—ह्वांग-ती के काल (2697-2598 ईसा से पहले) से लेकर चाव वंश के आधे शासन काल (1124-2416 ईसा से पहले) तक. …द मे इस लिखावट का नाम "कू-विन" या "पुरानी …क्लें" पड़ गया. इन में से बहुत सा शक्लें आज भी …ौजूद हैं लेकिन आम तौर पर उनका इस्तेमाल नहीं होता.

पुरानी शक्लों का कुछ हिस्सा तो चीन के मशहूर और …ब से पुराने शब्द कोश (लुग़त) शिव विन-च्याइ-ज़ो …ं महफ़ूज़ है. इस शब्द कोश को हान वंश के ज़माने (206 ईसा से पहले-219 ईसा के बाद) में सू शुन ने …यार किया था. इन शक्लों का बाक़ी कुछ हिस्सा पत्थर …ौर धात पर खुदा हुआ पाया गया. सन 1898 में हु नान …ूबे में खुदाई हुई था जहाँ पर इस पुरानी लिखावट का …ाक़ी हिस्सा कछुये की हड्डी पर खुदा हुआ मिला था. …ात और पत्थर पर खुदी शक्लों को आम तरीक़े से …न-शीह-विन-चो कहते हैं और उन शक्लों का नाम …ीना-को-'वन-चो है जो कछुए की हड्डियों पर खुदी हैं. इन …माम लिखावटों से सिर्फ़ पुरानी लिखावट वाली चीनी …ाषा के बारे में ही जानकारी नहीं बढ़ती बल्कि यह पुराने …ीनी इतिहास पर भी नई रोशनी डालती है.

सांग ची की बनाई हुई शक्लों के रिवाज के दो हज़ार …रस के बाद दूसरे लोगों ने बहुत से दूसरे चिन्हों की …जाद की जिन का इस्तेमाल अलग अलग इलाक़ों या …ियासतों में होने लगा. इन चिन्हों की सिर्फ़ शक्ल में ही …र्क़ नहीं था बल्कि इन चिन्हों के उच्चारन और इस्तेमाल

کو ٹھیک بنایا تھا ۔ اصل میں چینی شکلوں کی ایجاد نہ تو اُس نے کی اور نہ اُس کے زمانے میں اِن کی ایجاد ہوئی ۔ اُس نے تو صرف ان شکلوں کو ترتیب میں لا دیا اور ان میں مثال پیدا کر کے الگ الگ قسمیں طے کر دیں ۔ اصل میں چینی لکھاوٹ نہ ایک آدمی کی ایجاد ہے اور نہ ہو سکتی ہے اور نہ اس کو تھوڑے عرصے میں پورا کیا جا سکتا تھا ۔ یہ سیکڑوں ہزاروں آدمیوں کی ہزارہا برس کی اکٹھا محنت کا نتیجہ ہے ۔

پرانے مہان چینی پنڈت سن زو نے کہا ہے—" چینی بھاشا کی شکلوں کی بہت سے ایجادیں ہوئیں لیکن اُسی لکھاوٹ کو اپنایا گیا جسے سانگ چی نے تیار کیا تھا ۔"

اوپر لکھی باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ یہ بات سچ ہے کہ چینی لکھاوٹ کا آرمبھ فوسی نے کیا اور اُس کو سانگ چی نے پورا کیا۔

چینی بھاشا کی شکلوں میں تبدیلی۔

سانگ چی کی تیار کی ہوئی لکھاوٹ لگ بھگ دو ہزار سال تک کام میں آتی رہی—ہوانگ تی کے کال (2697–2598 عیسیٰ سے پہلے) سے لے کر چاؤ ونش کے آدھے شاسن کال (1124–2416 عیسیٰ سے پہلے) تک بعد میں اِس لکھاوٹ کا نام " کو وین " یا " پرانی شکلیں " پڑ گیا ۔ اِن میں سے بہت سی شکلیں آج بھی موجود ہیں لیکن عام طور پر اُن کا استعمال نہیں ہوتا ۔ پرانی شکلوں کا کچھ حصہ تو چین کے مشہور اور سب سے پرانے شبد کوش (لغت) شیو ۔ وین ۔ چیائی ۔ زو میں محفوظ ہے ۔ اِس شبد کوش کو ہان ونش کے زمانے (206 عیسیٰ سے پہلے—219 عیسیٰ کے بعد) میں سوشن نے تیار کیا تھا ۔ اِن شکلوں کا باقی کچھ حصہ پتھر اور دھات پر کھدا ہوا پایا گیا۔ سن1898 میں ہونان صوبے میں کھدائی ہوئی تھی جہاں اِس پرانی لکھاوٹ کا باقی حصہ کچھوے کی ہڈی پر کھدا ہوا ملا تھا ۔ دھات اور پتھر پر کھدی شکلوں کو عام طریقے سے چن ۔ شیہ ۔ وین ۔ زو ۔ کہتے ہیں اور اُن شکلوں کا نام چیا ۔ کو ۔ وین ۔ زو ہے جو کچھوے کی ہڈیوں پر کھدی ہیں ۔ اِن تمام لکھائیوں سے صرف پرانی لکھاوٹ والی چینی بھاشا کے بارے میں ہی جانکاری نہیں بڑھتی بلکہ یہ پرانے چینی اِتہاس پر بھی نئی روشنی ڈالتی ہیں ۔

سانگ چی کی بنائی ہوئی شکلوں کے رواج کے دو ہزار برس کے بعد دوسرے لوگوں نے بہت سے دوسرے چنہوں کی ایجاد کی جن کا استعمال الگ الگ علاقوں یا ریاستوں میں ہونے لگا۔ اِن چنہوں کی صرف شکل میں ہی فرق نہیں تھا بلکہ اِن چنہوں کے اُچارن اور استعمال

में भी फ़रक़ था. इस से केन्द्री और इलाक़ाई सरकारों के बीच की लिखत पढ़त में दिक़्क़तें पैदा हो गईं. इस लिये चीनी लिखावट में फिर से तबदीली की गई और उसे नई शकल में पिरोया गया. चाऊ वंश के सम्राट स्वान-वांग (827-781 ईसा से पहले) के इतिहास के मंत्री ताई शिह-चाउ ने इस काम को पूरा किया था. लिखावट के इस नए रूप को चाउ-वेन या ता-च्वांग कहते थे.

इसमें कोई शक नहीं कि ताई शिह चाउ ने लिखावट को नया रूप देकर बहुत उपकार किया. लेकिन उन्होंने शकलों को बहुत पेचीदा और बड़ा बना दिया. इस कारन उनकी बनाई लिखावट उतने ज़ियादा दिनों नहीं चल सकी जितनी कि सांग-चो की बनाई लिखावट चली थी. कुछ सदियों के बाद ही चिन वंश (256-209 ईसा से पहले) के मंत्री ली सू ने इस लिखावट में तबदीली की और इसको बहुत आसान शकल प्रदान की. इस रूप का नाम स्याव-च्वान रक्खा गया. उसी समय एक दूसरे अफ़सर चिन-मू ने भी लिखावट में तबदीली की और अपनी बनाई लिखावट का नाम ली-शू या "क्लर्की लिखावट" रक्खा. इसी का नाम बाद में चल कर क्याई-शू या "आदर्श लिखावट" पड़ गया. इस लिखावट में सिर्फ़ चिन्हों की शकल में तबदीली की गई थी और लिखने के तरीक़े को इस तरह से आसान किया गया था कि वह बदलती हुई ज़िन्दगी से मेल खा सके. असल में लिखावट की बनावट में यह तबदीली नहीं थी. तब से लगभग पिछले दो हज़ार बरस में चीनी लिखावट में कोई तबदीली नहीं हुई.

हाल के सुधार आन्दोलन.

इस सदी ईसवी में लिखावट की चीनी भाषा में सुधार के लिये बहुत सी कोशिशें की गई हैं. यहाँ पर सिर्फ़ तीन खास खास आन्दोलनों का ज़िक्र किया जा सकता है.

पहला—को-इन-ज़ु-मू या राष्ट्री उच्चारन आन्दोलन:

लिखावट की चीनी भाषा में हर्फ़ नहीं होते और हर शब्द की अपनी एक अलग खास शकल और अलग खास आवाज़ होती है. इस कारन हिज्जे से इसका उच्चारन नहीं हो सकता. ज़रूरत इस बात की थी कि आवाज़ निकालने का एक ढंग पैदा किया जाय जिससे शकलों का उच्चारन किया जा सके. उच्चारन का पुराना तरीक़ा यह था कि दो अलग अलग शकलों को मिलाया जाता था जिन में पहली छोटी आवाज़ की और दूसरी पूरी आवाज़ की होती थी और उनको जल्दी पढ़ कर एक नई शकल की आवाज़ पैदा की जाती थी. इस तरीक़े का नाम फ़ान-चिह था. इस में बहुत कठिनाइयाँ और दिक़्क़तें थीं. सब से ज़ियादा इसमें यह दिक़्क़त है कि अलग अलग जगहों और

میں بھی فرق تھا ۔ اس سے کیندری اور علاقائی سرکاروں کے بیچ کی لکھت پڑھت میں دقتیں پیدا ہوگئیں۔ اس لئے چینی لکھاوٹ میں پھر سے تبدیلی کی گئی اور اُسے نئی شکل میں پرویا گیا ۔ چاؤ ونش کے سمراٹ سوان وانگ (827-781 عیسیٰ سے پہلے) کے اتہاس کے منتری تائی شیہہ چاؤ نے اس کام کو پورا کیا تھا ۔ لکھاوٹ کے اِس نئے روپ کو چاؤ ۔ وین ۔ یا تا ۔ چوانگ کہتے تھے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ تائی ۔ شیہہ ۔ چاؤ نے لکھاوٹ کو نیا روپ دے کر بہت اُپکار کیا لیکن اُنہوں نے شکلوں کو بہت پیچیدہ اور بڑا بنا دیا ۔ اس کارن ان کی بنائی لکھاوٹ اتنے زیادہ دنوں نہیں چل سکی جتنی کہ سانگ چی کی بنائی لکھاوٹ چلی تھی ۔ کچھ صدیوں کے بعد ہی چن ونش 209-255 عیسیٰ سے پہلے) کے منتری لی زو نے اِس لکھاوٹ میں تبدیلی کی اور اِس کو بہت آسان شکل پردان کی ۔ اِس روپ کا نام سیاؤ ۔ چوان رکھا گیا ۔ اسی سمے ایک دوسرے افسر چن مو نے بھی لکھاوٹ میں تبدیلی کی اور اپنی بنائی لکھاوٹ کا نام لی شو یا " کلرکی لکھاوٹ " رکھا ۔ اسی کا نام بعد میں چل کر کیائی ۔ شو یا " آدرش لکھاوٹ " پڑ گیا ۔ اِس لکھاوٹ میں صرف چنہوں کی شکل میں تبدیلی کی گئی تھی اور لکھنے کے طریقے کو اس طرح سے آسان کیا گیا تھا کہ وہ بدلتی ہوئی زندگی سے میل کھا سکے ۔ اصل میں لکھاوٹ کی بناوٹ میں یہ تبدیلی نہیں تھی ۔ تب سے لگ بھگ پچھلے دو ہزار برس میں چینی لکھاوٹ میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی۔

حال کے سدھار آندولن

اس صدی عیسوی میں لکھاوٹ کی چینی بھاشا میں سدھار کے لئے بہت سی کوششیں کی گئی ہیں ۔ یہاں پر صرف تین خاص خاص آندولنوں کا ذکر کیا جا سکتا ہے :

پہلا — کو ۔ اِن ۔ زو ۔ مو یا راشٹری اُچچارن آندولن :

لکھاوٹ کی چینی بھاشا میں حرف نہیں ہوتے اور ہر شبد کی اپنی ایک الگ خاص شکل اور الگ خاص آواز ہوتی ہے۔ اس کارن ہجے سے اِس کا اُچچارن نہیں ہو سکتا۔ ضرورت اِس بات کی تھی کہ آواز نکالنے کا ایک ڈھنگ پیدا کیا جائے جس سے شکلوں کا اُچچارن کیا جا سکے ۔ اُچچارن کا پرانا طریقہ یہ تھا کہ دو الگ الگ شکلوں کو ملایا جاتا تھا جن میں پہلی چھوٹی آواز اور دوسری پوری آواز کی ہوتی تھیں ۔ اور اُن کو جلدی پڑھکر ایک نئی شکل کی آواز پیدا کی جاتی تھی ۔ اِس طریقے کا نام فان ۔ چیہہ تھا ۔ اِسمیں بہت کٹھنائیاں اور دقتیں تھیں۔ سب سے زیادہ اِس میں یہ دقت ہے کہ الگ الگ جگہوں اور

अलग अलग गावों में अलग अलग उच्चारन होते हैं, हालांकि तिब्बत और मंगोलिया और कुछ छोटे मोटे सरहदी इलाक़ों को छोड़ कर पूरे चीन की लिखावट एक ही है लेकिन चूँकि उच्चारन में फ़रक़ होता है इस कारन अलग अलग इलाक़ों के लोग एक ही शकल से एक मतलब ज़ाहिर करते हुए भी एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते. इसी वजह से राष्ट्री उच्चारन आन्दोलन की ज़रूरत पड़ी. एक आम और सारे चीन के लिये यकसां उच्चारन का तरीक़ा निकालने के लिये 1913 में चीनी सरकार ने बड़े बड़े भाषा शास्त्र के पंडितों की एक कानफ़रेन्स की. तब से नया तरीक़ा तमाम स्कूलों में बरता जाने लगा और तमाम पंडित उसे सीखने लगे. अब क़रीब क़रीब हर पढ़ा लिखा चीनी, चाहे वह दक्खिन का रहने वाला हो या उत्तर का, शकलों को एक ही उच्चारन से पढ़ता बोलता है. इस तरह वह एक दूसरे की बोली समझते हैं. यह बहुत बड़ी कामयाबी है और इस चीज़ ने चीनी लिखी भाषा की ज़बरदस्त सेवा की है.

दूसरा—चेयन-त्सू या शकलों को आसान करने का आन्दोलन:

यह आन्दोलन कुछ पंडितों ने व्यक्तिगत रूप से चलाया. यह कोई आन्दोलन नहीं था. असल में सांग-ची के ज़माने से ही थोड़ी सी ख़ास ख़ास शकलों से काम निकालने का रिवाज शुरू हुआ था. लेकिन इस आन्दोलन का मतलब चीनी लिखावट को नए सिरे से जनम देना था. पूरी तरह से इस आन्दोलन को कामयाबी नहीं मिली. फिर भी कुछ थोड़ी सी शकलों से ही काम निकालने का रिवाज ख़ुद बख़ुद लोगों में ज़ोर पकड़ गया है.

तीसरे—चीनी भाषा को रोमन हरफ़ों में लिखने का आन्दोलन:

इटली का एक मिशनरी माओ-रुक्की सोलहवीं सदी में चीन आया था और उसने एक किताब ताई-सी-त्सू-मू या "पच्छिमी हरफ़" लिखी थी. इसने ही पहले पहल चीनी शकलों का रोमन हरफ़ों में उच्चारन की कोशिश शुरू की. इस मिशनरी की किताब तो गुम हो गई लेकिन इसके बाद दूसरे मिशनरियों ने भी उसके तरीक़े को अपनाया. दूसरा फ़्रान्सीसी मिशनरी निकोलास ट्रेगोल्ट सत्रहवीं सदी में चीन आया और उसने सन 1625 में सी-जू-अोह-मू-त्सू या "पच्छिमी पंडितों के कानों और आंखों की मदद." नामी किताब लिखी. इस किताब में चीनी भाषा के रोमन हरफ़ों में उच्चारन का उसने एक नया तरीक़ा निकाला. यह किताब अब भी मौजूद है. इसके बाद से चीन सम्बन्धी शास्त्र के पंडित टी. एफ़. वाडे और

چینی لکھاوٹ

الگ الگ گاؤں میں الگ الگ اُچچارن ہوتے ہیں. حالانکہ تبت اور منگولیا اور کچھ چھوٹے موٹے سرحدی علاقوں کو چھوڑ کر پورے چین کی لکھاوٹ ایک ہی ہے لیکن چونکہ اُچچارن میں فرق ہوتا ہے اس کارن الگ الگ علاقوں کے لوگ ایک ہی شکل سے ایک مطلب ظاہر کرتے ہوئے بھی ایک دوسرے کی بولی نہیں سمجھ پاتے. اسی وجہ سے راشٹری اُچچارن آندولن کی ضرورت پڑی. ایک عام اور سارے چین کے لئے یکساں اُچچارن کا طریقہ نکالنے کے لئے 1913 میں چینی سرکار نے بڑے بڑے بھاشا شاستر کے پنڈتوں کی ایک کانفرنس کی. تب سے نیا طریقہ تمام اسکولوں میں برتا جانے لگا اور تمام پنڈت اُسے سیکھنے لگے. اب قریب قریب ہر پڑھا لکھا چینی، چاہے وہ دکھن کا رہنے والا ہو یا اُتر کا، شکلوں کو ایک ہی اُچچارن سے پڑھتا بولتا ہے. اِسطرح وہ ایک دوسرے کی بولی سمجھتے ہیں. یہ بہت بڑی کامیابی ہے اور اس چیز نے چینی لکھی بھاشا کی زبردست سیوا کی ہے.

دوسرا — چئین زو یا شکلوں کو آسان کرنے کا آندولن:

یہ آندولن کچھ پنڈتوں نے ویکتی گت روپ سے چلایا. یہ کوئی آندولن نہیں تھا. اصل میں سانگ چی کے زمانے سے ہی تھوڑی سی خاص خاص شکلوں سے کام نکالنے کا رواج شروع ہوا تھا. لیکن اِس آندولن کا مطلب چینی لکھاوٹ کو نئے سرے سے جنم دینا تھا. پوری طرح سے اِس آندولن کو کامیابی نہیں ملی. پھر بھی کچھ تھوڑی سے شکلوں سے ہی کام نکالنے کا رواج خود بخود لوگوں میں زور پکڑ گیا ہے.

تیسرے—چینی بھاشا کو رومن حرفوں میں لکھنے کا آندولن:

اٹلی کا ایک مشنری ماؤ رکی سولھویں صدی میں چین آیا تھا اور اُس نے ایک کتاب تائی. سی. زو. مو یا "پچھمی حرف" لکھی تھی. اس نے ہی پہلے پہل چینی شکلوں کا رومن حرفوں میں اُچچارن کی کوشش شروع کی. اِس مشنری کی کتاب تو گم ہو گئی لیکن اِسکے بعد دوسرے مشنریوں نے بھی اُس کے طریقے کو اپنایا. دوسرا فرانسیسی مشنری نیکولاس ٹریگولٹ سترھویں صدی میں چین آیا اور اُس نے سن 1625 میں سی. جو. اوہ. مو. زو یا "پچھمی پنڈتوں کے کانوں اور آنکھوں کی مدد" نامی کتاب لکھی. اس کتاب میں چینی بھاشا کے رومن حرفوں میں اُچچارن کا اُس نے ایک نیا طریقہ نکالا. یہ کتاب اب بھی موجود ہے. اس کے بعد ہو چین سمبندھی شاستر کے پنڈت ٹی. ایف. واڈے اور

एच. ए. गाइल्स आखिरी सदी में चीन आए. वाडे ने यू-यन-त्सू-चोह-सी या "भाषा की बुनियादी कड़ी" नाम की किताब चीनी भाषा में लिखी और गाइल्स ने चीनी अंगरेज़ी डिक्शनरी बनाई जो अब तक सब से अच्छी डिक्शनरी मानी जाती है. चीनी भाषा के विदेशी पंडित जितनी भी शक्लों को जानते और समझते हैं उन सब का रोमन हरफ़ में लिखने का पूरा तरीक़ा इन दोनों किताबों में मिलता है. हालांकि तरीक़ा मुकम्मल नहीं है तो भी उच्चारन का यह तरीक़ा चीनी भाषा के विदेशी विद्यार्थियों की मदद के लिये बहुत ठीक है. लेकिन हाल के रोमन आन्दोलन का मतलब यह था कि न सिर्फ़ रोमन हरफ़ों के ज़रिये से चीनी शक्लों का उच्चारन किया जाय बल्कि शक्लों की जगह पर रोमन हरफ़ों से ही काम लिया जाय. यहाँ तक सोचा जा रहा था कि पुरानी चीनी लिखावट को बिल्कुल ही खतम कर दिया जाय. इस आन्दोलन को अब तक कामयाबी का मुँह देखना नसीब नहीं हुआ और न कभी आगे कामयाबी मिल सकती है.

ایچ . اے . گائلز آخری صدی میں چین آئے . واڈے نے یو . ین . زو . اوہ . سی یا "بھاشا کی بنیادی کڑی" نام کی کتاب چینی بھاشا میں لکھی اور گائلز نے چینی انگریزی ڈکشنری بنائی جو اب تک سب سے اچھی ڈکشنری مانی جاتی ہے . چینی بھاشا کے ودیشی پنڈت جتنی بھی شکلوں کو جانتے اور سمجھتے ہیں اُن سب کا رومن حرف میں لکھنے کا پورا طریقہ اِن دونوں کتابوں میں ملتا ہے . حالانکہ طریقہ مکمل نہیں ہے تو بھی اُچّارن کا یہ طریقہ چینی بھاشا کے ودیشی ودیارتھیوں کی مدد کے لئے بہت ٹھیک ہے . لیکن حال کے رومن آندولن کا مطلب یہ تھا کہ نہ صرف رومن حرفوں کے ذریعہ سے چینی شکلوں کا اُچّارن کیا جائے بلکہ شکلوں کی جگہ پر رومن حرفوں سے ہی کام لیا جائے . یہاں تک سوچا جارہا تھا کہ پرانی چینی لکھاوٹ کو بالکل ہی ختم کردیا جائے . اِس آندولن کو اب تک کامیابی کا منہ دیکھنا نصیب نہیں ہوا اور نہ کبھی آگے کامیابی مل سکتی ہے .

इन्डोचीन और हो-ची-मीन्ह

(जे. एन. साहनी)

[थोड़ा अरसा हुआ दिल्ली के नामी पत्रकार भाई साहनी इन्डोचीन वग़ैरा गये थे. वहां से लौटने के बाद उन्होंने प्रेस में कई लेख दिये हैं जिनमें वहां की असली हालत बताई है. हम उनके एक लेख का आज़ाद अनुवाद नीचे दे रहे हैं. इन्डोचीन में इन दिनों लड़ाई फिर ज़ोरों से चल रही है—एडीटर]

जनता का सम्राट.

इन्डोचीन की जनता का सम्राट, हो ची मीन्ह की उमर 59 बरस के क़रीब है, उन्होंने तालीम फ़्रान्स में पाई और राजकाजी ट्रेनिंग रूस में. होची मीन्ह फ़्रांसीसी साम्राजवाद के लिये एक ज़बरदस्त चुनौती हैं. उनकी ज़िन्दगी बड़ी अजीब-ग़रीब रही है. सन 1920 के बाद वह कई बरस फ़्रांस में रहे जहां उन्होंने फ़्रान्सीसी जन-मत का ध्यान इन्डोचीन की आज़ादी के हक़ में खींचने की कोशिश की. लेकिन वह नाकामयाब से रहे और मास्को पहुंचे. रूस में कई बरस रह कर उन्होंने 'अन्डर ग्राउन्ड' या ख़ुफ़िया काम करने का कम्यूनिस्टी ढंग सीखा. पिछली

انڈو چین اور ھوچی منہہ

(جے . این . ساھنی)

[تھوڑا عرصہ ہوا دلی کے نامی پترکار بھائی ساھنی انڈو چین وغیرہ گئے تھے. وہاں سے لوٹنے کے بعد انہوں نے پریس میں کئی لیکھ دیئے ہیں جن میں وہاں کی اصلی حالت بتائی ہے . ہم ان کے ایک لیکھ کا آزاد انوواد نیچے دے رہے ہیں. انڈو چین میں ان دنوں لڑائی پھر زوروں سے چل رہی ہے—ایڈیٹر]

جنتا کا سمراٹ.

انڈوچین کی جنتا کا سمراٹ ہو چی منہہ کی عمر 59 برس کے قریب ہے . اُنہوں نے تعلیم فرانس میں پائی اور راج کاجی ٹریننگ روس میں . ہوچی منہہ فرانسیسی سامراج واد کے لئے ایک زبردست چنوتی ہیں . اُن کی زندگی بڑی عجیب غریب رہی ہے . سن 1920 کے بعد وہ کئی برس فرانس میں رہے جہاں اُنہوں نے فرانسیسی جن مت کا دھیان انڈوچین کی آزادی کے حق میں کھینچنے کی کوشش کی . لیکن وہ ناکامیاب سے رہے اور ماسکو پہنچے، روس میں کئی برس رہکر اُنہوں نے 'انڈرگراونڈ' یا خفیہ کام کرنے کا کمیونسٹی ڈھنگ سیکھا . پچھلی

लड़ाई के चंद बरस पहले वह चीन चले गये, वहां उन्होंने फ्रांसीसी राज के खिलाफ़ एक गुरीला आन्दोलन का संगठन शुरू किया. इस क़ौमी काम में उन्हें बहुत से वीतनामियों की मदद के अलावा कम्बोडिया और लाओस की ताक़तवर जमायतों और हस्तियों की भी मदद मिल गई.

जापान का मुक़ाबला.

पिछली लड़ाई के ज़माने में कुछ अरसे तक इन्डोचीन पर जापान का क़ब्ज़ा रहा. उस ज़माने में फ्रांस की हुकूमत की कमज़ोरी साफ़ साफ़ ज़ाहिर हो गई. साथ ही साथ हो-ची-मीन्ह का असर और रोबदाब भी बहुत काफ़ी बढ़ गया.

ख़ास बात यह है कि जब जापान बढ़ता चला आ रहा था तो इन्डोनीशिया में डचों ने और मलाया में अंगरेज़ों ने उसका मुक़ाबला कुछ तो किया, और जापान का क़ब्ज़ा हो जाने के बाद भी उन्होंने अपनी लाज थोड़ी बहुत क़ायम रखी. लेकिन इन्डोचीन की फ्रांसीसी सरकार ने कोई मुक़ाबला नहीं किया और चुप चाप उनको अपना मालिक क़बूल कर लिया. यही नहीं वह हुक्काम भी 'जो बजन बुलावे सो बिजन बुलाते हैं' वाली हालत हुई. जो उनको हुक्म दिया जाता था उसे वह फ्रांसीसी अफ़सर बड़ी फ़रमाबरदारी से पूरा करते थे, यहां तक कि सड़कों पर झाड़ू भी लगाते थे !

मगर हो-ची-मीन्ह को जिस तरह फ्रांसीसी राज के साथ सहयोग करना क़बूल नहीं था उसी तरह से वह जापानियों का भी असर नहीं मान सकते थे. इस मामले में सम्राट बाओ-दाई (जो अनाम और टानकिन के पुश्तैनी राजा हैं) उनके साथ मिल गये. लेकिन जापानी निज़ाम में तो 'सम्राट'' की कोई गुंजाइश नहीं थी क्योंकि जापान के हीरो हीतो नाम के एक सम्राट थे ही. इन्डोचीन में क्या अंगरेज़, क्या अमरीका और क्या चीना-सभी लोग फ्रांस वालों को गिरा हुआ समझते थे और उसी नीची निगाह से देखते थे जिस तरह यूरप में मार्शल पेतां और दूसरे देश के ग़द्दारों को देखा जाता था.

ऐसी हालत में हो-ची-मीन्ह की इज़्ज़त सबकी आंखों में बहुत बढ़ गई और चीनी, अंगरेज़ या अमरीकन, सबके सब उनकी ख़ूब मदद करने लगे. उन्हें पैसा और सामान वग़ैरा काफ़ी तादाद में मिलने लगा. फिर, उन्होंने तारीफ़ के क़ाबिल यह बात कि फ्रांसीसियों के दग़ा देने के बावजूद, चीन में अपना अड्डा बना कर, जापानियों के खिलाफ़ एक अच्छा ख़ासा संगठन खड़ा कर लिया. कुछ स्वार्थ और कुछ देश प्रेम के नाते सम्राट बाओ-दाई ने सलाहकार के तौर पर हो ची मीन्ह को इस काम में मदद भी दी और जब तक जापानियों की हुकूमत रही हो-ची-मीन्ह की फ़ौजों ने बड़ी दिलेरी और मर्दानगी से जापानियों

لڑائی کے چند برس پہلے وہ تھائی لینڈ چلے گئے وہاں اُنہوں نے فرانسیسی راج کے خلاف ایک گوریلا آندولن کا سنگٹھن شروع کیا . اس قومی کام میں انہیں بہت سے ویت ناميوں کی مدد کے علاوہ کمبوڈیا اور لاؤس کی طاقتور جماعتوں اور ہستیوں کی بھی مدد مل گئی.

جاپان کا مقابلہ .

پچھلی لڑائی کے زمانے میں کچھ عرصے تک انڈوچین پر جاپان کا قبضہ رہا . اُس زمانے میں فرانس کی حکومت کی کمزوری صاف صاف ظاہر ہوگئی . ساتھ ہی ساتھ ہوچی منہہ کا اثر اور رعب داب بھی بہت کافی بڑھ گیا .

خاص بات یہ ہے کہ جب جاپان بڑھتا چلا آ رہا تھا تو انڈونیشیا میں ڈچوں نے اور ملایا میں انگریزوں نے اُس کا مقابلہ کچھ تو کیا' اور جاپان کا قبضہ ہوجانے کے بعد بھی انہوں نے اپنی لاج تھوڑی بہت قائم رکھی . لیکن انڈوچین کی فرانسیسی سرکار نے کوئی مقابلہ نہیں کیا اور چپ چاپ اُن کو اپنا آقا قبول کر لیا . یہی نہیں وہ حکام بھی 'جو وجن ڈلاتے سو وجن ڈولاتے ہیں' والی حالت ہوئی. جو اُن کو حکم دیا جاتا تھا اُسے وہ فرانسیسی افسر بڑی فرمانبرداری سے پورا کرتے تھے' یہاں تک کہ سڑکوں پر جھاڑو بھی لگاتے تھے !

مگر ہوچی منہہ کو جس طرح فرانسیسی راج کے ساتھ سہیوگ کرنا قبول نہیں تھا اُسی طرح سے وہ جاپانیوں کا بھی اثر نہیں مان سکتے تھے . اِس معاملے میں سمراٹ باؤ ڈائی (جو انام اور ٹانکن کے پشتینی راجا ہیں) اُن کے ساتھ مل گئے. لیکن جاپانی نظام میں تو ''سمراٹ'' کی کوئی گنجائش نہیں تھی کیونکہ جاپان کے ہیرو ہیتو نام کے ایک سمراٹ تھے ہی . انڈوچین میں کیا انگریز' کیا امریکی اور کیا چینی' سبھی لوگ فرانس والوں کو گرا ہوا سمجھتے تھے اور اُسی نیچی نگاہ سے دیکھتے تھے جس طرح یورپ میں مارشل پیتاں اور دوسرے دیش کے غداروں کو دیکھا جاتا تھا .

ایسی حالت میں ہوچی منہہ کی عزت سب کی آنکھوں میں بہت بڑھ گئی اور چینی' انگریز یا امریکن' سب کے سب اُن کی خوب مدد کرنے لگے . انہیں پیسہ اور سامان وغیرہ کافی تعداد میں ملنے لگا . پھر' انہوں نے تعریف کے قابل یہ بات کی کہ فرانسیسیوں کے دغا دینے کے باوجود' چین میں اپنا اڈا بنا کر' جاپانیوں کے خلاف ایک اچھا خاصا سنگٹھن کھڑا کر لیا کچھ سوارتھ اور کچھ دیش پریم کے ناتے سمراٹ باؤ ڈائی نے صلاح کار کے طور پر ہوچی منہہ کی اس کام میں مدد بھی کی . اور جب تک جاپانیوں کی حکومت رہی ہوچی منہہ کی فوجوں نے بڑی دلیری اور مردانگی سے جاپانیوں

का मुक़ाबला किया. इन फ़ौजों में बीस नामी भाइयों के अलावा लाओस और कम्बोडिया के जवान भी थे.

आज़ाद रिपबलिक का एलान.

लेकिन जापान का राज थोड़े ही दिन रहा. उसके बाद इन्डो चीन के कहना चाहिये दो शासक हो गये—16 वीं पड़ी लकीर के ऊपर वाले हिस्से में चीनी और उसके नीचे वाले में अंगरेज और अमरीकन. इनकी मदद से देश का भीतरी इन्तज़ाम हो-ची-मीन्ह और उसके साथियों ने अपने हाथ में ले लिया और इन्डो चीन एक आज़ाद रिपबलिक एलान कर दिया गया. इसके पहले राजपति हो-ची-मीन्ह बने. ना उम्मेद होकर बाओ-दाई अपने बाल-बच्चों और दोस्तों के साथ हांग कांग चले गये.

लड़ाई के बाद राजनीति ने फिर पलटा खाया. उधर चीन में च्यांग-काई-शेक का टंडीला उठा और माओ-त्से-तुंग ने कम्यूनिस्ट राज क़ायम किया. दूसरे, रूस जो लड़ाई में साथी और मददगार माना जाता था अब दुश्मन समझा जाने लगा. तीसरे, फ़्रांस जो ग़द्दार और दग़ाबाज़ माना जाता था अब (अंगरेज़ी-अमरीकी फरीक़ का) ख़ास बच्चा समझा जाने लगा और इधर से अमरीका, उधर से रूस में एक "ठंडी लड़ाई" छिड़ गई. इन तबदीलियों का हो-ची-मीन्ह पर असर होना लाज़मी था. जिस मेहनत और क़ुरबानी से उन्होंने अपने देश के लिये आज़ादी हासिल की थी और उसे एक बनाया था वह ना-काम होती नज़र आई. उनके साथ अंगरेज़ और चीनी (च्यांगी दल) लोगों का जो सलूक था उसमें फ़र्क़ दिखाई पड़ने लगा. फिर अमरीका की मदद से जिस तरह इन्डोनीशिया में डच राज और मलाया में अंगरेज़ी राज दोबारा चालू हो गया, उसी तरह यहां भी अंगरेज़ी और चीनी फ़ौजें हट गईं और फ़्रांसीसी अमल-दरामद लौट आया.

फ़्रांस सरकार की ज़्यादती.

फ़्रांसीसी सेना के नये सेनापति—ऐडमीरल दार्गन लिउ—ने आते ही दुहेरी नीति बरतनी शुरू की. अव्वल, हो-ची-मीन्ह की आज़ाद सरकार को ख़त्म करना और दूसरे, फ़्रांसीसी नौकर शाही को फिर से जमा देना. एडमीरल ने अपने फ़्रांसीसी आक़ाओं से वादा किया कि तीन महीने के अन्दर मैं हो-ची-मीन्ह और उनके दल-बल का क़िला क़मा करके फ़्रांसीसी राज पूरी शान-शौक़त के साथ क़ायम कर दूँगा, लेकिन थोड़े दिन की रगड़ के अन्दर ही फ़्रांसीसी इतने पिटे की फ़ौज की कमी पड़ गई. इसलिये अब उन्होंने चाल चलने की सोची, और एलोंग की खाड़ी में एडमीरल दार्गन लिउ हो-ची-मीन्ह से मिले और उनकी लोक शाही को सरकार वीत नाम की सरकार मानना क़बूल किया. साथ ही साथ उन्होंने हो-ची-मीन्ह को फ़्रांस जाने के लिये भी राज़ी कर लिया. यह बात अगस्त 1946

کا مقابلہ کیا ۔ ان فوجوں میں بیس نامی بھائیوں کے علاوہ لاوس اور کمبوڈیا کے جوان بھی تھے ۔

آزاد ریپبلک کا اعلان ۔

لیکن جاپان کا راج تھوڑے ہی دن رہا ۔ اس کے بعد انڈوچین کے کہنا چاہئے دو شاسک ہوگئے—16ویں پڑی لکیر کے اوپر والے میں چینی اور اس کے نیچے والے میں انگریز اور امریکن ۔ ان کی مدد سے دیش کا بھیتری انتظام ہوچی منھ اور اس کے ساتھیوں نے اپنے ہاتھ میں لے لیا اور انڈوچین ایک آزاد ریپبلک اعلان کر دیا گیا ۔ اس کے پہلے راج پتی ہوچی منھ بنے ۔ ناامید ہو کر باؤ ڈائی اپنے بال بچوں اور دوستوں کے ساتھ ہانگ کانگ چلے گئے ۔

لڑائی کے بعد راج نیتی پھر نے پلٹا کھایا ۔ ادھر چین میں چانگ کائی شیک کا ٹنڈیلا اٹھا اور ماؤزے تنگ نے کمیونسٹ راج قائم کیا ۔ دوسرے' روس جو لڑائی میں ساتھی اور مددگار مانا جاتا تھا اب دشمن سمجھا جانے لگا ۔ تیسرے' فرانس جو غدار اور دغاباز مانا جاتا تھا اب (انگریزی امریکی فریق کا) خاص بچہ سمجھا جانے لگا اور ادھر سے امریکہ' ادھر سے روس میں ایک "ٹھنڈی لڑائی" چھڑ گئی ۔ ان تبدیلیوں کا ہوچی منھ پر اثر ہونا لازمی تھا ۔ جس محنت اور قربانی سے انہوں نے اپنے دیش کے لئے آزادی حاصل کی تھی اور اسے ایک بنایا تھا وہ ناکام ہوتی نظر آئی ۔ ان کے ساتھ انگریز اور چینی (چیانگی دل) لوگوں کا جو سلوک تھا اس میں فرق دکھائی پڑنے لگا ۔ پھر امریکہ کی مدد سے جس طرح انڈونیشیا میں ڈچ راج اور ملایا میں انگریزی راج دوبارہ سے چالو ہوگیا' اسی طرح یہاں بھی انگریزی اور چینی فوجیں ہٹ گئیں اور فرانسیسی عمل در آمد لوٹ آیا ۔

فرانس سرکار کی زیادتی ۔

فرانسیسی سینا کے نئے سینا پتی—ایڈمرل دارگن لیو ۔ نے آتے ہی دوہیری نیتی برتنی شروع کی ۔ اول' ہوچی منھ کی آزاد سرکار کو ختم کرنا اور دوسرے' فرانسیسی نوکر شاہی کو پھر سے جما دینا ۔ ایڈمرل نے اپنے فرانسیسی آقاؤں سے وعدہ کیا کہ تین مہینے کے اندر میں ہوچی منھ اور ان کے دل بل کا قلع قمع کرکے فرانسیسی راج پورے شان شوکت کے ساتھ قائم کر دوں گا ۔ لیکن تھوڑے دن کی رگڑ کے اندر ہی فرانسیسی اتنے پٹے کہ فوج کی کمی پڑ گئی ۔ اس لئے اب انہوں نے چال چلنے کی سوچی' اور ایلانگ کی کھاڑی میں ایڈمرل دارگن لیو ہوچی منھ سے ملے اور ان کی لوک شاہی سرکار کو ویت نام کی سرکار ماننا قبول کیا ۔ ساتھ ہی ساتھ انہوں نے ہوچی منھ کو فرانس جانے کے لئے بھی راضی کرلیا ۔ یہ بات اگست 1946

की है जब हिन्दुस्तान में अंगरेज़ और इन्डोनीशिया में डच लोग अपना बोरिया बिस्तरा बांध रहे थे. लेकिन फ्रांसीसियों ने अपनी समझ व अक़्ल से काम में लिया.

फ्रांस में हो-ची-मीन्ह को छै माह तक बात चीत के झमेले में फंसाये रखा गया. कभी एक मसले पर बात होती कभी दूसरे पर. लेकिन इस बात चीत का भी कुछ नतीजा नहीं निकला. फोंतेन्ब्लू नाम की जगह में जो बैठक हुई उसमें फ्रांसीसियों ने नाम भर की आज़ादी से ज़ियादा कुछ भी देने से इन्कार किया. हो-ची-मीन्ह भी अपनी बात पर डटे रहे और मुकम्मिल आज़ादी से रत्ती भर कम चीज़ के लिये तैयार नहीं हुये.

इन्डोचीन का बंटवारा.

इस अरसे में इन्डो चीन में फ्रांसीसी सिपाही मन माना करते रहे और उनकी बराबर यही कोशिश रही कि विरोधी ताक़तों को एकदम कुचल दें और फ्रांसीसी राज के लिये हमेशा के वास्ते रास्ता साफ़ कर लें. हनोई और सैगोन के सूबों में उन्होंने अच्छी तरह अपना असर जमा लिया, लाओस और कम्बोडिया के राजाओं को पटा लिया और उनसे वादा किया कि हम आप की पुरानी सल्तनतें फिर से चालू करा देंगे, और बाओ-दाई से भी समझौता कर लिया. इस वक़्त तक बाओ-दाई वैसे हो-ची-मीन्ह के सलाहकार और देश भक्त समझे जाते थे लेकिन उनकी आर्थिक हालत बहुत कुछ ख़राब हो चुकी थी जिस की वजह से फ्रांस वालों ने उन्हें तोड़ लिया और फिर से सम्राट बना दिया. हो-ची-मीन्ह को अब ग़द्दार या देश द्रोही कहा जाने लगा था. फ्रांसीसियों ने कम्बोडिया, लाओस और वीतनाम से अलग अलग राज्य नामे किये. इसका नतीजा यह हुआ कि जिस आज़ाद हुकूमत का 1946 में हो-ची-मीन्ह ने एलान किया था उसके तीन टुकड़े हो गये जिन के अलग अलग राजा थे. इन राज्य नामों में ऊपरी तौर से तो तीनों राजाओं को—फ्रांस देश के साये में—आज़ाद माना गया. मगर फ़ौज, पुलिस और ख़ज़ाने पर फ्रांस वालों का ही इख़्तियार था और यह सचमुच फ्रांसीसी सलाहकारों के हाथ की कठपुतली बना दिये गये. इस नयी तब्दीली का बड़ा ढिंढोरा पीटा गया, बड़े बड़े जश्न मनाये गये जिन में यह दिखाया गया कि हर महकमा फ्रांसीसियों के हाथ से निकल कर इन्डोचीन वालों के हाथ में आ रहा है. लेकिन इन सभी जश्नों में या इनके बाद ही हो-ची-मीन्ह के साथियों ने अपनी ख़िलाफ़त का इज़हार किया और बताने की कोशिश की कि यह सब स्वांग है और दिखावे की बाती है.

इस तरह के एक जश्न में फ्रांसीसी गवर्नर ख़ुद मौजूद थे और नए वीत-नाम राज का चार्ज बाओ-दाई के एक नामज़द आदमी को देने की रस्म अदायगी करनी चाहते

تھی جب ہندستان میں انگریز اور انڈونیشیا میں ڈچ لوگ اپنا بوریا بستر باندھ رہے تھے. لیکن فرانسیسیوں نے اپنی سمجھ و عقل سے کام نہیں لیا .

فرانس میں ہوچی منہہ کو چھ ماہ تک بات چیت کے جھمیلے میں پھنسائے رکھا گیا . کبھی ایک مسئلے پر بات ہوتی کبھی دوسرے پر . لیکن اس بات چیت کا بھی کچھ نتیجہ نہیں نکلا. فونتینبلو نام کی جگہ میں جو بیٹھک ہوئی اس میں فرانسیسیوں نے نام بھر کی آزادی سے زیادہ کچھ بھی دینے سے انکار کیا . ہوچی منہہ بھی اپنی بات پر ڈٹے رہے اور مکمل آزادی سے رتی بھر کم چیز کے لئے تیار نہیں ہوئے.

انڈوچین کا بٹوارہ .

اس عرصے میں انڈوچین میں فرانسیسی سپاہی من مانا کرتے رہے اور ان کی بھرسک یہی کوشش رہی کہ ورودھی طاقتوں کو ایک دم کچل دیں اور فرانسیسی راج کے لئے ہمیشہ کے واسطے راستہ صاف کرلیں. ہنوئی اور سیگون کے صوبوں میں انہوں نے اچھی طرح اپنا اثر جما لیا، لاوس اور کمبوڈیا کے راجاؤں کو پٹا لیا اور ان سے وعدہ کیا کہ ہم آپ کی پرانی سلطنتوں پھر سے چالو کرا دیں گے اور باؤ دائی سے بھی سمجھوتا کرلیا . اس وقت تک باؤ دائی ویسے ہوچی منہہ کے صلاح کار اور دیش بھکت سمجھے جاتے تھے لیکن ان کی آرتھک حالت بہت کچھ خراب ہوچکی تھی جس کی وجہ سے فرانس والوں نے انہیں توڑ لیا اور پھر سے سمراٹ بنا دیا . ہوچی منہہ کو اب غدار یا دیش دروہی کہا جانے لگا تھا . فرانسیسیوں نے کمبوڈیا، لاوس اور ویت نام سے الگ الگ راجیہ نامے کئے . اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ جس آزاد حکومت کا 1946 میں ہوچی منہہ نے اعلان کیا تھا اس کے تین ٹکڑے ہو گئے جن کے الگ الگ راجہ تھے . ان راجیہ ناموں میں اوپری طور سے تو تینوں راجاؤں کو فرانس دیش کے سائے میں آزاد مانا گیا . مگر فوج، پولیس اور خزانے پر فرانس والوں کا ہی اختیار تھا اور یہ سچ مچ فرانسیسی صلاح کاروں کے ہاتھ کی کٹھپتلی بنا دئے گئے . اس نئی تبدیلی کا بڑا ڈھنڈھورا پیٹا گیا، بڑے بڑے جشن منائے گئے جن میں یہ دکھایا گیا کہ ہر محکمہ فرانسیسیوں کے ہاتھ سے نکل کر انڈوچین والوں کے ہاتھ میں جا رہا ہے. لیکن ان سبھی جشنوں میں یا ان کے بعد ہی ہوچی منہہ کے ساتھیوں نے اپنی خلافت کا اظہار کیا اور بتانے کی کوشش کی کہ یہ سب سوانگ اور دکھاوے کی نٹکی ہے .

اس طرح کے ایک جشن میں فرانسیسی گورنر خود موجود تھے اور نئے ویت نام راج کا چارج باؤ دائی کے ایک نام زد آدمی کو دینے کی رسم ادائیگی کرنی چاہتے

थे. पुलिस और फ़ौज काफ़ी तादाद में मौजूद थी. लेकिन इन सबके बीच में नौ बरस का एक लड़का था घुसा जिसने मंच पर पहुंच कर अपनी जेब से बारूद का एक गोला निकाला. लेकिन उसके फेंकने के पहले ही वह गोला फट पड़ा. जिससे वह लड़का उसी ठौर मर गया और पास में खड़े हुए दो गवर्नर भी मर गये और पंद्रह-बीस आदमी बुरी तरह घायल हुए.

हर कोई जानता है कि जापानी सुलहनामा के सिलसिले में सैन फ्रांसिको में एक कान्फ्रेंस हुई थी. उसमें वीत नाम की तरफ़ से वहां के प्रधान-मंत्री, त्रानवान-हू और वीत नाम, कम्बोडिया और लौस के कई मिनिस्टरों ने जा कर शिरकत की. जिस वक़्त यह लोग जा रहे थे मैं सैगोन में ही था. मैंने देखा कि वीत नाम, कम्बोडिया और लौस की इस शिरकत का ज़बरदस्त प्रोपेगेन्डा वहां के अख़बारों में किया गया और जनता को बताया गया कि फ्रांस तो फ्रांस, दुनिया के सारे देश इन तीनों हुकूमतों को इक़रार करते हैं.

गुरीला हमले.

सैन फ्रांसिस्को जाने वाले डेलीगेशन को बड़े ठाट बाट और सज धज के साथ विदा दी गई. लेकिन उनके जाने के चौबीस घंटों के ही भीतर हो-ची-मीन्ह के साथियों ने उन जगहों पर बम व गोले फेंके जिनमें फ्रांसीसी अफ़सर और सिपाही अकसर रहा करते थे. इस तरह करने से चौदह आदमी मरे और कोई पचीस-तीस घायल हुए. लेकिन इसके बाद फ्रांसीसी फ़ौज और पुलिस सारे शहर में छा गई और दो-तीन दिन तक बदला लेती रही. मैं रात भर अपने होटल के कमरे में बन्दूक छूटने की आवाज़ें सुनता रहा. मेरे एक दोस्त ने बताया कि अकसर गोले तो डराने धमकाने को छोड़ दिये जाते हैं. एक दूसरे दोस्त ने बताया कि सुबह को कई लाशें पड़ी पाई गईं जिनकी पीठ में बन्दूक के निशानों की अलामत मौजूद थी.

इस तरह हो-ची-मीन्ह के लोग फ्रांसीसियों का मुक़ाबला करते और बदले में फ्रांसीसी भी तगड़ी मार लगाते थे. थोड़े दिन हुए दलात नाम की एक पहाड़ी जगह में एक घटना हो गई. वहां के मुक़ामी लोगों ने एक फ्रांसीसी पुलिस अफ़सर को मार डाला. पुलिस ने मुजरिमों को पकड़ने की कोशिश की मगर नाकामयाब रही. नाउम्मीद हो कर उसने बदले की एक नई सूरत निकाली. वह यह कि उन्होंने वहाँ की जेल की तलाशी ली जिसमें हो-ची-मीन्ह के कई साथी नज़रबन्द थे. बिना किसी सबूत के चौदह मर्द और छह औरतों पर यह इलज़ाम लगाया गया कि पुलिस अफ़सर इनकी साज़िश से मारा गया. उन्हें जेल के बाहर निकाला गया और गोली से मार दिया गया. उनके जिस्म के टुकड़े टुकड़े किये गये और वह टुकड़े सारे शहर में बिखरा दिये गये. उस वक़्त बाओ-दाई

تھے. پولیس اور فوج کافی تعداد میں موجود تھی. لیکن ان سب کے بیچ میں نو برس کا ایک لڑکا آ گھسا جس نے منچ پر پہنچ کر اپنی جیب سے بارود کا ایک گولہ نکالا. لیکن اس کے پھینکنے کے پہلے ہی وہ گولہ پھٹ پڑا. جس سے وہ لڑکا اسی ٹھور مر گیا اور پاس میں کھڑے ہوئے دو گورنر بھی مر گئے اور پندرہ بیس آدمی بری طرح گھائل ہوئے.

ہر کوئی جانتا ہے کہ جاپانی صلحنامہ کے سلسلے میں سین فرانسسکو میں ایک کانفرنس ہوئی تھی. اس میں ویت نام کی طرف سے وہاں کے پردھان منتری، ٹران وان ہو اور ویت نام، کمبوڈیا اور لوس کے کئی منسٹروں نے جا کر شرکت کی. جس وقت یہ لوگ جا رہے تھے میں سیگون میں ہی تھا. میں نے دیکھا کہ ویت نام، کمبوڈیا اور لوس کی اس شرکت کا زبردست پروپیگنڈا وہاں کے اخباروں میں کیا گیا اور جنتا کو بتایا گیا کہ فرانس تو فرانس، دنیا کے سارے دیش ان تینوں حکومتوں کو اقرار کرتے ہیں.

گوریلا حملے.

سین فرانسسکو جانے والے ڈیلیگیشن کو بڑے ٹھاٹ باٹ اور سج دھج کے ساتھ وداع دی گئی لیکن ان کے جانے کے چوبیس گھنٹوں کے ہی بھیتر ہو. چی منہ کے ساتھیوں نے ان جگہوں پر بم و گولے پھینکے جن میں فرانسیسی افسر اور سپاہی اکثر رہا کرتے تھے. اس طرح کرنے سے چودہ آدمی مرے اور کوئی پچیس تیس گھائل ہوئے. لیکن اس کے بعد فرانسیسی فوج اور پولیس سارے شہر میں چھا گئی اور دو تین دن تک بدلا لیتی رہی. میں رات بھر اپنے ہوٹل کے کمرے میں بندوق چھوٹنے کی آوازیں سنتا رہا. میرے ایک دوست نے بتایا کہ اکثر گولے تو ڈرانے دھمکانے کو چھوڑ دئے جاتے ہیں. ایک دوسرے دوست نے بتایا کہ صبح کو کئی لاشیں پڑی پائی گئیں جن کی پیٹھ میں بندوق کے نشانوں کی علامت موجود تھی.

اس طرح ہو. چی. منہ کے لوگ فرانسیسیوں کا مقابلہ کرتے اور بدلے میں فرانسیسی بھی تگڑی مار لگاتے تھے. تھوڑے دن ہوئے دلات نام کی ایک پہاڑی جگہ میں ایک گھٹنا ہو گئی. وہاں کے مقامی لوگوں نے ایک فرانسیسی پولیس افسر کو مار ڈالا. پولیس نے مجرموں کو پکڑنے کی کوشش کی مگر ناکامیاب رہی. ناامید ہو کر اس نے بدلے کی ایک نئی صورت نکالی. وہ یہ کہ انہوں نے وہاں کی جیل کی تلاشی لی جس میں ہو. چی. منہ کے کئی ساتھی نظربند تھے. بنا کسی ثبوت کے چودہ مرد اور چھ عورتوں پر یہ الزام لگایا گیا کہ پولیس افسر ان کی سازش سے مارا گیا. انہیں جیل کے باہر نکالا گیا اور گولی سے مار دیا گیا. ان کے جسم کے ٹکڑے ٹکڑے کئے گئے اور وہ ٹکڑے سارے شہر میں چھترا دئے گئے. اس وقت باؤ دائی

ज़ात में ही रहते थे. जब उनसे इस ज़ियादती का कहा गया
था तो उन्होंने बस इतना किया कि अपनी राजधानी
ज़ात से हटा कर हू में ले गये.

हो-ची-मीन्ह सरकार का ज़ोर.

हो-चो-मीन्ह और उनके साथियों ने इन तीनों कठ
पुतली सरकारों को मानने से हमेशा इन्कार किया था.
उनका कहना है कि 6 जनवरी 1946 को ही सारी जनता
ने आज़ाद प्रजा तंत्र क़ायम कर लिया था जिसके बाज़ाबता
सदर हो-ची-मिन्ह ही हैं. वह लोग कहते हैं कि फ़्रांसीसियों
की इन्डोचीन में कहीं जगह नहीं है. फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े
में इस वक़्त लौस और कम्बोडिया का काफ़ी हिस्सा है
और वीतनाम का दक्खनी हिस्सा भी जिसमें सैगोन
और हनोई के शहर हैं. लेकिन उत्तर का ज़ियादातर इलाक़ा
हो-ची-मीन्ह के पूरे क़ाबू में है. जिन इलाक़ों में फ़्रांसीसी
असर है उनकी बाबत भी यही कहा जाता है कि वहां पर
बाओ-दाई दिन में राज करते हैं और हो-ची-मीन्ह रात में.
रात को सब चौराहों पर सन्नाटा छाया रहता है. दिन भर
के थके मारे फ़्रांसीसी सिपाही आराम करने चले जाते हैं.

हो-ची-मीन्ह की सरकार टैक्स अपने इलाक़े के लोगों
के अलावा फ़्रांसीसी इलाक़े की जनता से भी वसूल कर
लेती है. कई महीने तक फ़्रांसीसियों को चावल का बाहर
भेजना बन्द कर देना पड़ा क्योंकि जो चावल वह देहात
में जमा करते थे वह जब सड़कों या दरियाओं पर से लाया
जाता तो रास्ते में हो-ची-मीन्ह के आदमी ग़ायब कर देते
थे. कहा जाता है कि हो-ची-मीन्ह को अपने हिस्से का
लगान अब भी मिल रही है. लेकिन इस सब की वजह से
किसानों की तकलीफ़ बहुत बढ़ गई है क्योंकि उन्हें अपनी
उपज का ठीक दाम नहीं मिल पाता. सैगोन और हनोई
तक के शहरों में हो-ची-मीन्ह के लोग आज़ादी के साथ—
लेकिन लुक-छिपे तमाम व्योपारियों, आढ़तियों वग़ैरा से
टैक्स वसूल करते हैं, यहां तक कि फ़्रांसीसियों से भी.
लोग देते इस वजह से हैं कि उनकी जान बची रहे और
उन्हें आफ़त में न फंसना पड़े. एक दिन का ज़िकर है मैं
सैगोन में कुछ दोस्तों के साथ एक होटल में बाहर बैठकर
चाय-पानी कर रहा था. यह वाक़या उसके दूसरे दिन का
है जब सैगोन में गोले फेंके गये थे. उस होटल का मालिक
एक ख़ासा बड़ा व्योपारी और मालदार व असरदार
फ़्रांसीसी था. मैंने अपने एक दोस्त से—जो अरसे से
उस होटल में रह रहा था—पूछा कि क्या कल रात के
वाक़ये के बाद इस जगह पर रहने में कोई ख़तरा तो नहीं
है. उसने मुस्करा कर जवाब दिया—"यह होटल तो बाओ-
दाई के महल से भी ज़ियादा सुरक्षित है. यहां का मालिक
हो-ची-मीन्ह के आदमियों को पैसा देने में कमी नहीं
करता है और इसलिये यहां कभी कोई वाक़या नहीं हुआ."

دلات میں ہی رہتے تھے ۔ جب اُن سے اِس زیادتی کا کہا گیا
تو اُنہوں نے بس اتنا کیا کہ اپنی راجدھانی دلات سے
ہٹاکر ہو میں لے گئے

ہوچی منہہ سرکار کا زور

ہوچی منہہ اور اِن کے ساتھیوں نے ان تینوں کٹ
پتلی سرکاروں کو ماننے سے ہمیشہ انکار کیا تھا ۔ اُن کا
کہنا ہے کہ 6 جنوری 1946 کو ہی ساری جنتا نے آزاد
پرجا تنتر قائم کر لیا تھا جس کے باضابطہ صدر ہوچی منہہ
ہی ہیں ۔ وہ لوگ کہتے ہیں کہ فرانسیسیوں کی انڈو
چائنا میں کہیں جگہ نہیں ہے ۔ فرانسیسیوں کے قبضے
میں اس وقت لوس اور کمبوڈیا کا کافی حصہ ہے اور ویت
نام کا دکھنی حصہ بھی جس میں سیگون اور ہنوئی کے
شہر ہیں ۔ لیکن اُتر کا زیادہ تر علاقہ ہوچی منہہ کے پورے
قابو میں ہے ۔ جن علاقوں میں فرانسیسی اثر ہے اُن کی
بابت بھی یہی کہا جاتا ہے کہ وہاں پر باؤ دائی دن میں
راج کرتے ہیں اور ہوچی منہہ رات میں ۔ رات کو سب
چوراہوں پر سناٹا چھایا رہتا ہے ۔ دن بھر کے تھکے ماندے
فرانسیسی سپاہی آرام کرنے چلے جاتے ہیں ۔

ہوچی منہہ کی سرکار ٹیکس اپنے علاقے کے لوگوں کے
علاوہ فرانسیسی علاقے کی جنتا سے بھی وصول کر لیتی
ہے ۔ کئی مہینے تک فرانسیسیوں کو چاول کا باہر بھیجنا
بند کر دینا پڑا کیونکہ جو چاول وہ دیہات میں جمع
کرتے تھے وہ جب سڑکوں یا دریاؤں پر سے لیا جاتا تو راستے
میں ہوچی منہہ کے آدمی غائب کر دیتے تھے ۔ کہا جاتا
ہے کہ ہوچی منہہ کو اپنے حصے کی کاشت اب بھی مل
رہی ہے ۔ لیکن اس سب کی وجہ سے کسانوں کی تکلیف
بہت بڑھ گئی ہے کیونکہ انہیں اپنی چیز کا ٹھیک دام
نہیں مل پاتا ۔ سیگون اور ہنوئی تک کے شہروں میں
ہوچی منہہ کے لوگ آزادی کے ساتھ—لیکن لکے چھپے—
تمام بیوپاریوں، آڑھتیوں وغیرہ سے ٹیکس وصول کرتے ہیں،
یہاں تک کہ فرانسیسیوں سے بھی ۔ لوگ دیتے اس وجہ سے
ہیں کہ اُن کی جان بچی رہے اور انہیں آفت میں نہ
پھنسنا پڑے ۔ ایک دن کا ذکر ہے میں سیگون میں کچھ
دوستوں کے ساتھ ایک ہوٹل میں باہر بیٹھ کر چائے پانی
کر رہا تھا ۔ یہ واقعہ اُس کے دوسرے دن کا ہے جب سیگون
میں گولے پھینکے گئے تھے ۔ اُس ہوٹل کا مالک ایک خاصہ
بیوپاری اور مالدار و اثردار فرانسیسی تھا ۔ میں نے اپنے ایک
دوست سے—جو عرصے سے اُس ہوٹل میں رہ رہا تھا—پوچھا
کہ کیا کل رات کے واقعے کے بعد اس جگہ پر رہنے میں
کوئی خطرہ تو نہیں ہے ۔ اُس نے مسکرا کر جواب دیا—
" یہ ہوٹل تو باؤ دائی کے محل سے بھی زیادہ سرکشت
ہے ۔ یہاں کا مالک ہوچی منہہ کے آدمیوں کو پیسہ دینے
میں کبھی نہیں چوکتا ہے اور اس لئے یہاں کبھی کوئی
واقعہ نہیں ہوا ۔"

वीत-मीन सरकार रेडियो के मुक़ाबले काफ़ी बड़ी तादाद में लोग सुनते हैं और ख़ूब ध्यान से सुनते हैं. फ़्रांसीसी कड़ा पहरा रखते हैं मगर लोग नहीं मानते क्यों कि वह जानते हैं कि उन्हें सही ख़बरें उसी रेडियो से मिल सकती हैं. हो-ची-मीन्ह को भी लोग बहुत शौक़ से सुनते हैं. वैसे भी, हो-ची-मीन्ह एक निहायत क़ाबिल और होशियार स्पीकर हैं. उनकी स्पीचों का जनता पर ज़बरदस्त असर पड़ता है.

एक अमरीकन अख़बार नवीस का ख़्याल है कि कोई ताज्जुब की बात नहीं कि बाओ-दाई की कुछ रानियां हो-ची मीन्ह के वास्ते ख़ुफ़िया का काम करती हों. उनका कहना है कि बाओ-दाई की रानियों और कुटुम्ब में वोट लिया जाय तो बाओ-दाई से ज़ियादा वोट हो-ची-मीन्ह को ही मिलेंगे.

सचमुच हो-ची-मिन्ह इन्डोचीन का असली शासक है जो फ़्रांसीसियों के पैर कभी नहीं जमने देगा.

ویت نام سرکار کے ریڈیو اعلان کافی بڑی تعداد میں لوگ سنتے ہیں اور خوب دھیان سے سنتے ہیں. فرانسیسی کڑا پہرا رکھتے ہیں مگر لوگ نہیں مانتے کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ انہیں صحیح خبریں اسی ریڈیو سے مل سکتی ہیں. ہوچی منہ کو بھی لوگ بہت شوق سے سنتے ہیں. ویسے بھی، ہوچی منہ ایک نہایت قابل اور ہوشیار اسپیکر ہیں. ان کی اسپیچوں کا جنتا پر زبردست اثر پڑتا ہے.

ایک امریکن اخبار نویس کا خیال ہے کہ کوئی تعجب کی بات نہیں کہ باؤ دائی کی کچھ رانیاں ہوچی منہ کے واسطے خفیہ کا کام کرتی ہوں. اُن کا کہنا ہے کہ باؤ دائی کی رانیوں اور کٹمب میں ووٹ لیا جائے تو باؤ دائی سے زیادہ ووٹ ہوچی منہ کو ہی ملینگے.

سچ مچ ہوچی منہ انڈوچین کا اصلی شاسک ہے جو فرانسیسیوں کے پیر کبھی نہیں جمنے دیگا.

एकांकी नाटक

सुधारक

(सन्त इन्द्रसिंह चक्रवर्ती)

पात्र

धर्मराज	देवलोक का जज
चित्रगुप्त	धर्मराज का पेशकार
ब्रह्मा, विश्नु, शिव	देवता जूरी
कर्म विपाकी	धर्मराज का कार्य लेखक क्लर्क
धर्म	एक बूढ़ा सा चलने फिरने से लाचार मनुश्य
सुधारक	एक समाज सुधारक की आत्मा
पंडित गपोड़ा नन्द शास्त्री मौलवी दरोग़ बयान भाई घमंडा सिंह	धर्म के ठेकेदार

चोबदार, देवता देवियां, तमाशाई वग़ैरा.

समय—न दिन न रात. कुछ पौ फटने का सा.

ایکانکی ناٹک

سدھارک

(سنت اندر سنگھ چکرورتی)

پاتر

دھرم راج	دیو لوک کا جج
چتر گپت	دھرم راج کا پیشکار
برھما، وشنو، شیو	دیوتا جوری
کرم وپاکی	دھرم راج کا کاریہ لیکھک کلرک
دھرم	ایک بوڑھا سا چلنے پھرنے سے لاچار منشیہ
سدھارک	ایک سماج سدھارک کی آتما
پنڈت گپوڑا نند شاستری مولوی دروغ بیان بھائی گھمنڈا سنگھ	دھرم کے ٹھیکیدار

چوبدار، دیوتا دیویاں، تماشائی وغیرہ.

سمے—نہ دن نہ رات. کچھ پو پھٹنے کا سا.

जगह—एक सुन्दर सुहावना मैदान. ठंडी मस्ती भरी हवा चल रही है. पंछी मीठे सुरों में चह चहा रहे हैं. कुछ दूर पर बड़ा सुहावना हरा भरा पहाड़, जिस पर रंग बिरंगे फूल खिल रहे हैं और झरना बह रहा है.

सीन 1

[एक सुन्दर सिंहासन पर धर्म राज पूरी शान के साथ बैठे हैं. उनके दाहिने बायें न्याय और दंड खड़े हैं. एक तरफ़ तीनों देवताओं की मंडली (जूरी) बैठी है. सामने कुछ दूरी पर चित्रगुप्त, कर्म विपाकी, मुँशी मुसद्दी बही खातों का ढेर लगाये बैठे हैं.]

चित्रगुप्त—(चोबदार से) सुधारक को पेश करो.

चोबदार—(सर झुकाकर) जो आज्ञा. (फिर ज़ोर से) चलो कोई सुधारक हाज़िर है—सुधारक हाज़िर है !

[खद्दर का चूड़ीदार पाजामा, खद्दर की अचकन, खद्दर की टोपी और गले में खद्दर का गुलूबन्द लटकाये. तेज़ आंखें, माथे पर निडरता की झलक लिये एक अधेड़ सा आदमी आता है. उसके चेहरे पर काम और चिन्ता के कारण झुर्रियां पड़ी हुई हैं. उसकी पीठ पर समाजी बंधनों, विधवाओं की मुसीबतों, किसानों मज़दूरों की ग़रीबी, अनपढ़ों और धर्म के ठेकेदारों की जहालत की गठरियां लदी हुई हैं. बड़ी धीर गंभीर चाल से चलता हुआ धर्म राज के पास आकर खड़ा हो जाता है.]

धर्मराज—(चित्रगुप्त से) सुधारक की मिसल पढ़ कर सुनाओ.

चित्रगुप्त—(मिसिल उठाकर पढ़ता है) यह उस समय भारत में पैदा हुआ था जब देश राजकाजी ग़ुलामी, जात पात और छुआ छूत के बंधनों में जकड़ा हुआ था. पूँजीवाद का बोल बाला था. ग़रीब का ख़ून अमीर के पसीने से भी सस्ता था. धर्म के नाम पर ज़ुल्म और अत्याचार होते थे, धर्म को अपना निजी रोज़गार बनाने वाले कितने ही ठेकेदार थे जिनमें पंडित, मौलवी और ज्ञानी सब से आगे थे. दिन रात मेहनत करने वाले मज़दूर भूके मरते थे और मिल मालिकों के कुत्ते दूध पीते थे और क़ालीनों पर सोते थे. एक तरफ़ धर्म मज़हब के ठेकेदारों के लड़के अलीगढ़, बनारस, अमृतसर और कितने ही विलायत जाकर पढ़ने के नाम पर ऐश करते थे और दूसरी तरफ़ मज़दूरों के लड़के धरती पर नंगे फिरते और धूल फांकते थे. एक तरफ़ अमीर को ज़रा सी छींक आजाती थी तो डाक्टरों की फ़ौज इकट्ठा हो जाती थी और दूसरी तरफ़ ग़रीब एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर जाते थे पर उन्हें दवा नहीं मिलती थी. पैसे वाले जहां और चीज़ों का व्योपार

جگہ—ایک سندر سہاونا میدان. ٹھنڈی مستی بھری ہوا چل رہی ہے. پنچھی میٹھے سروں میں چہچہا رہے ہیں. کچھ دور پر بڑا سہانا ہرا بھرا پہاڑ، جس پر رنگ برنگے پھول کھل رہے ہیں اور جھرنا بہہ رہا ہے.

سین 1

[ایک سندر سنگھاسن پر دھرم راج پوری شان کے ساتھ بیٹھے ہیں. اُن کے داہنے بائیں نیائے اور دنڈ کھڑے ہیں. ایک طرف تینوں دیوتاؤں کی منڈلی (جیوری) بیٹھی ہے. سامنے کچھ دوری پر چتر گپت، کرم وپاکی، منشی مصدی بہی کھاتوں کا ڈھیر لگائے بیٹھے ہیں.]

چتر گپت—(چوبدار سے) سدھارک کو پیش کرو.

چوبدار—(سر جھکا کر) جو آگیا. پھر زور سے) چلو کوئی سدھارک حاضر ہے—سدھارک حاضر ہے !

[کھدر کا چوڑی دار پاجامہ، کھدر کی اچکن، کھدر کی ٹوپی اور گلے میں کھدر کا گلوبند لٹکائے، تیز آنکھیں، ماتھے پر نڈرتا کی جھلک لئے ایک ادھیڑ سا آدمی آتا ہے. اُسکے چہرے پر کام اور چنتا کے کارن جھریاں پڑی ہوئی ہیں. اُسکی پیٹھ پر سماجی بندھنوں، ودھواؤں کی مصیبتوں، کسانوں مزدوروں کی غریبی، ان پڑھوں اور دھرم کے ٹھیکیداروں کی جہالت کی گٹھریاں لدی ہوئی ہیں. بڑی دھیر گمبھیر چال سے چلتا ہوا دھرم راج کے پاس آکر کھڑا ہوجاتا ہے.]

دھرم راج—(چتر گپت سے) سدھارک کی مثل پڑھکر سناؤ.

چتر گپت—(مثل اُٹھاکر پڑھتا ہے) یہ اُس سمے بھارت میں پیدا ہوا تھا جب دیش راج کاجی غلامی، جات پات اور چھوا چھوت کے بندھنوں میں جکڑا ہوا تھا. پونجی واد کا بول بالا تھا. غریب کا خون امیر کے پسینے سے بھی سستا تھا. دھرم کے نام پر ظلم اور اتیاچار ہوتے تھے. دھرم کو اپنا نجی روزگار بنانے والے کتنے ہی ٹھیکیدار تھے جنمیں پنڈت، مولوی اور گیانی سب سے آگے تھے. دن رات محنت کرنے والے مزدور بھوکے مرتے تھے اور مل مالکوں کے کتے دودھ پیتے تھے اور قالینوں پر سوتے تھے. ایک طرف دھرم مذہب کے ٹھیکیداروں کے لڑکے علیگڑھ، بنارس، امرتسر اور کتنے ولایت جاکر پڑھنے کے نام پر عیش کرتے تھے اور دوسری طرف مزدوروں کے لڑکے دھرتی پر ننگے پھرتے اور دھول پھانکتے تھے. ایک طرف امیر کو ذراسی چھینک آجاتی تھی تو ڈاکٹروں کی فوج اکٹھا ہوجاتی تھی اور دوسری طرف غریب ایڑیاں رگڑ رگڑ کر مر جاتے تھے پر اُنہیں دوا نہیں ملتی تھی. پیسے والے جہاں اور چیزوں کا بیوپار

करते थे वहां धर्म का भी व्योपार करने लगे थे. अपने अपने सम्प्रदाय के नाम पर वह विदेशी हाकिमों के सामने अधिकारों की भीक मांगने आते थे और जब उन्हें कोई ख़िताब, कोई ओहदा या कोई सनद मिल जाती थी वह अपने सम्प्रदाय को भूल जाते थे और विदेशी राज की जड़ें मज़बूत करने में लग जाते थे. साधारन जनता रूढ़ियों और रस्म व रिवाज की ग़ुलाम बना दी गई थी क्योंकि धर्म के ठेकेदारों को असली धर्म के प्रचार में अपना घाटा दिखाई देता था. यही कारन था कि लोग गाय और बाजे के सवाल पर आपस में खूब लड़ते थे और जिस दिल को भगवान का घर बताया गया है उसमें छुरा भोंक कर अपने को धर्म का रक्षक या ग़ाज़ी समझते थे. ऐसे समय सुधारक का जन्म हुआ.

इसने राजकाजी ग़ुलामी और समाजी रूढ़ियों और रस्म व रिवाज के ख़िलाफ़ विद्रोह खड़ा किया. दुनिया ने इसकी आवाज़ पर कान दिये और अपना सुधार शुरू किया पर विरोधियों में हलचल मच गई. इसको गालियां दी गईं, ईंट पत्थर मारे गये और जेल की सज़ा दी गई. हिन्दुओं ने इसे नास्तिक, मुसलमानों ने काफ़िर और सिक्खों ने पतित कहकर दुतकारा.

धर्म राज—अच्छा,........ठहरो. (कर्म विपाकी से) तू कुछ कहना चाहता है ?

कर्म विपाकी—मुझे बहुत कुछ कहना है. (मिसिल लेकर पढ़ने लगता है) यह सुधारक महा पापी है. राजद्रोह के जुर्म में सज़ा काट चुका है, हिन्दू मुस्लिम दंगों को रोकने में लाठियाँ खा चुका है. कांगरस आन्दोलन में गांधी के कहने पर इसने सरकार की नाफ़रमानी की. इसने नमक बनाया, इसने शराब की दूकान पर धरना दिया, यह.....

(दरबार के लोग हँस पड़ते हैं और कर्म विपाकी कुछ झेंप जाता है.)

धर्म राज—आगे पढ़ो.

कर्म विपाकी—इसने अपने जीवन में कोई धर्म का काम नहीं किया. यह लोगों को सदियों से चलती हुई रूढ़ियों को त्याग ने की राय देता रहा. इसने अछूतों को ब्राह्मनों के बराबर बिठाना चाहा, इसने स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी के लिये बहकाया, इसने हिन्दूओं मुसलमानों को अपने धर्म का भेद भाव छोड़ कर आपस में सगे भाई बनने की शिक्षा दी, इसने विधवा विवाह का प्रचार किया, इसने बाल विवाह का विरोध किया, यही नहीं, इसने ब्राह्मनों और अछूतों में विवाह कराया और हिन्दू मुसलमानों में भी शादी ब्याह को अच्छा बताया.......(दरबार के लोगों के चेहरों पर मुस्कराहट देख कर वह ग़ुस्से में

کرتے تھے وہاں دھرم کا بھی بیوپار کرنے لگے تھے. اپنے اپنے سمپردائے کے نام پر وہ بدیشی حاکموں کے سامنے ادھیکاروں کی بھیک مانگنے جاتے تھے اور جب انہیں کوئی خطاب' کوئی عہدہ یا کوئی سند مل جاتی تھی' تو وہ اپنے سمپردائے کو بھول جاتے تھے اور بدیشی راج کی جڑیں مضبوط کرنے میں لگ جاتے تھے . سادھارن جنتا روڑھیوں اور رسم رواج کی غلام بنا دی گئی تھی کیونکہ دھرم کے ٹھیکیداروں کو اصلی دھرم کے پرچار میں اپنا گھاٹا دکھائی دیتا تھا . یہی کارن تھا کہ لوگ گائے اور باجے کے سوال پر آپس میں خوب لڑتے تھے اور جس دل کو بھگوان کا گھر بتایا گیا ہے اس میں چھرا بھونک کر اپنے کو دھرم کا رکشک یا غازی سمجھتے تھے . ایسے سمے سدھارک کا جنم ہوا .

اِسنے راج کاجی غلامی اور سماجی روڑھیوں اور رسم رواج کے خلاف ودروہ کھڑا کیا . دنیا نے اِسکی آواز پر کان دیئے اور اپنا سدھار شروع کیا پر ورودھیوں میں ہلچل مچ گئی . اِسکو گالیاں دی گئیں' اینٹ پتھر مارے گئے اور جیل کی سزا دی گئی . ہندوؤں نے اِسے ناستک' مسلمانوں نے کافر اور سکھوں نے پتت کہکر دتکارا .

دھرم راج—اچھا'..... ٹھہرو . (کرم وپاکی سے) تو کچھ کہنا چاہتا ہے ؟

کرم وپاکی—مجھے بہت کچھ کہنا ہے . (مثل لیکر پڑھنے لگتا ہے) یہ سدھارک مہا پاپی ہے . راج دروہ کے جرم میں سزا کاٹ چکا ہے . ہندو مسلم دنگوں کو روکنے میں لاٹھیاں کھا چکا ہے . کانگریس آندولن میں گاندھی کے کہنے پر اِس نے سرکار کی نافرمانی کی . اِسنے نمک بنایا' اِسنے شراب کی دوکان پر دھرنا دیا' یہ........

(دربار کے لوگ ہنس پڑتے ہیں اور کرم وپاکی کچھ جھینپ جاتا ہے .)

دھرم راج—آگے پڑھو

کرم وپاکی—اِسنے اپنے جیون میں کوئی دھرم کا کام نہیں کیا . یہ لوگوں کو صدیوں سے چلتی ہوئی روڑھیوں کو تیاگنے کی رائے دیتا رہا . اِسنے اچھوتوں کو براہمنوں کے برابر بٹھانا چاہا' اِسنے استریوں کو پرشوں کی برابری کے لئے بہکایا' اِسنے ہندوؤں اور مسلمانوں کو اپنے دھرم کا بھید بھاو چھوڑ کر آپس میں سگے بھائی بننے کی شکشا دی' اِسنے ودھوا وواہ کا پرچار کیا' اِسنے بال وواہ کا ورودھ کیا' یہی نہیں' اِسنے براہمنوں اور اچھوتوں میں وواہ کرایا اور ہندو مسلمانوں میں بھی شادی بیاہ کو اچھا بتایا..... (دربار کے لوگوں کے چہروں پر مسکراہٹ دیکھکر وہ غصے میں

मिसल पढ़ना भूल जाता है और उनकी तरफ देख कर कहता है) क्या मैं झूठ कहता हूं ?

धर्म राज—बस ? कह चुके ?

कर्म विपाकी—नहीं महाराज ! (गुस्सा पीकर फिर मिसल पढ़ता है) इसने कभी भोग नहीं लगवाया, कभी सत्य नारायन की कथा नहीं कराई, कभी पीर फ़क़ीरों की नियाज़ नहीं कराई, बाप का श्राद्ध कराने में टाल मटोल करता रहा, माता का प्रसाद बंटवाने में हीले बहाने करता रहा और तीर्थ यात्रा के लिये तो पैसे होने पर भी नहीं निकला........

(अब तो दरबारियों की हँसी रोके नहीं रुकती. देवियाँ हँसते हँसते लोट पोट हो जाती हैं. चोबदार "शान्ति, शान्ति" की आवाज़ लगाते हैं.)

धर्म राज—और कोई अपराध ?

कर्म विपाकी—इसने अपने ससुर के साले की भतीजी के ब्याह में दहेज नहीं देने दिया.

धर्म राज—कुछ और ?

कर्म विपाकी—धर्म शास्त्रों वेद और क़ुरान का हुक्म है कि इसे.....

धर्म राज—तुम्हें हुक्म सुनाने का अधिकार नहीं. इसके बारे में कुछ कहना हो तो कहो.

कर्मविपाकी—कहना तो बहुत कुछ है महाराज ! पर क्या कहूँ. इसने संसार में कोई भी तो अच्छा काम किया होता. जो बातें मैंने कही हैं वह संसार के सब से पुराने, वृद्ध सनातन धर्म में अधर्म समझी गई हैं, मुसलमान उन्हें मज़हब के खिलाफ़ कहते हैं, सिक्खों का धर्म ग्रंथ भी उन्हें पाप कहता है. आप अकेले मेरी बात पर विश्वास न करते हों तो पंडित गपोड़ानन्द जी शास्त्री, मौलाना दरोग़बयान और भाई घमंडा सिंह ज्ञानी से भी गवाही ले लें. वह ज़रूर मेरी बातों का पूरा पूरा समर्थन करेंगे.

चित्रगुप्त—(धर्म राज से) महाराज ! गपोड़ानन्द पंडित अपने यजमान के श्राद्ध में बहुत खा जाने के कारन हैज़े में मर कर आज ही आया है.

धर्म राज—पेश करो.

चोबदार—(चित्रगुप्त का इशारा पाकर ज़ोर से चिल्लाता है) कोई गपोड़ानन्द हाज़िर है. गपोड़ा नन्द हाज़िर है ?

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—उपस्थितम्, आय रहे हैं, जो है सो......हाज़िर हैं......हाज़िर.

[गपोड़ानन्द आता है. लाल किनारे की मैली धोती मोटी तोंद पर लटक रही है. रामनामी अंगोछा कंधों पर और माथे पर साइन बोर्ड की तरह टीका. मोटे होठों के

مثل پڑھنا بھول جاتا ہے اور اُنکی طرف دیکھکر کہتا ہے) کیا میں جھوٹ کہتا ہوں ؟

دھرم راج—بس ؟ کہہ چکے ؟

کرم وپاکی—نہیں مہاراج ! (غصہ پی کر پھر مثل پڑھتا ہے) اِسلئے کبھی بھوگ نہیں لگوایا کبھی ستیہ نارائن کی کتھا نہیں کروئی' کبھی پیر فقیروں کی نیاز نہیں کرائی' باپ کا شردھ کرانے میں ٹال مٹول کرتا رہا' ماتا کا پرساد بٹوانے میں حیلے بہانے کرتا رہا اور تیرتھ یاترا کے لئے تو پیسے ہوتے ہوئے بھی نہیں نکلا.........

(اب تو درباریوں کی ہنسی روکے نہیں رکتی. دیویاں ہنستے ہنستے لوٹ پوٹ ہو جاتی ہیں . چوبدار "شانتی' شانتی" کی آواز لگاتے ہیں)

دھرم راج—اور کوئی اپرادھ ؟

کرم وپاکی—اِس نے اپنے سسور کے سالے کی بھتیجی کے بیاہ میں دہیز نہیں دینے دیا .

دھرم راج—کچھ اور ؟

کرم وپاکی—دھرم شاستروں' وید اور قرآن کا حکم ہے کہ اِسے...... ......

دھرم راج—تمہیں حکم سنانے کا ادھیکار نہیں . اِسکے بارے میں کچھ کہنا ہو تو کہو .

کرم وپاکی—کہنا تو بہت کچھ ہے مہاراج ! پر کیا کہوں . اِسنے سنسار میں کوئی بھی تو اچھا کام کیا ہوتا. جو باتیں میں نے کہی ہیں وہ سنسار کے سب سے پرانے' بوڑھے سناتن دھرم میں ادھرم سمجھی گئی ہیں' مسلمان اُسے مذھب کے خلاف کہتے ہیں' سکھوں کا دھرم گرنتھ بھی انہیں پاپ کہتا ہے . آپ اکیلے میری بات پر وشواس نہ کرتے ہوں تو پنڈت گپوڑانند جی شاستری' مولانا دروغ بیان اور بھائی گھمنڈا سنگھ گیانی سے بھی گواہی لے لیں . وہ ضرور میری باتوں کا پورا پورا سمرتھن کرینگے .

چترگپت— (دھرم راج سے) مہاراج ! گپوڑانند پنڈت اپنے یجمان کے شرادھ میں بہت کھا جانے کے کارن ہیضے میں مر کر آج ہی آیا ہے .

دھرم راج—پیش کرو

چوبدار—(چترگپت کا اِشارہ پاکر زور سے چلاتا ہے) کوئی گپوڑا نند حاضر ہے . گپوڑا نند حاضر ہے ؟

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—اُپستھتم' آ رہے ہیں' جو ہے سو...... حاضر ہیں...... حاضر .

[گپوڑا نند آتا ہے . لال کنارے کی میلی دھوتی موٹی توند پر لٹک رہی ہے . رام نامی انگوچھا کندھوں پر اور ماتھے پر سائن بورڈ کی طرح ٹیکا . موٹے ہونٹوں کے

दीवे मिस्सी लगा कर काले किये हुए दांत, नाक सुंघनी से भरी हुई और सुंघनी की डिबिया धोती में खोंसी हुई. खोपड़ी सफ़ा चट. लम्बी चोटी में बेल पत्र गुंथे हुए. पीठ पर पापों का बोझ, कंधों पर धर्म शास्त्र की किताबें लदी हुई और दम फूला हुआ. जल्दी जल्दी चलने से धोती की गांठ खुलने लगती है, उसे संभालने लगता है तो कंधे से किताबें गिर पड़ती हैं. धर्म राज के आगे आकर संभल कर खड़ा हो कर धर्म राज को प्रनाम करता है.]

गपोड़ा नन्द—मेरा नाम श्रीमान पंडित गपोड़ानन्द शास्त्री, व्याकरनाचार्य, महा महो पाध्याय, कथा वाचक, ज्योतिश मार्तन्ड, काव्यतीर्थ......

चित्रगुप्त—चुप रहो.

गपोड़ा नन्द—(धर्म राज से) देखो सरकार, कायस्थ हो कर कुलीन ब्राह्मन को डांटता है.

धर्म राज—जो बात पूछी जाय उसका जवाब दो.

गपोड़ा नन्द—पूछो महाराज ! बार बार पूछो. धर्म शास्त्र सम्बन्धी पूछो, ज्योतिश सम्बन्धी पूछो, भाग्य का हाल पूछो, व्याकरन के सूत्र पूछो, न्याय की गुत्थियां को सुलझान का हल पूछो, मुझे क्या नहीं आता. मैं पंडित हूं. चारों धाम परस है. नित्य गंगा स्नान करता हूं. शास्त्रार्थ में मुझे किसी ने जीता नहीं. मैं स्वर्ग का पूरा अधिकारी हूँ.

धर्म राज—(गपोड़ा नन्द से) बहुत मत बोलो, जो बात पूछी जाय उसी का जवाब दो.

गपोड़ा नन्द—जो आज्ञा महाराज !

[धर्म कुछ कहने के लिये उठना चाहता है पर कमज़ोर होने के कारन उठ नहीं सकता. देवदूत उसकी मदद करते हैं.]

धर्म राज—(धर्म से) क्यों बाबाजी, आप भी कुछ कहना चाहते हैं ?

धर्म—हाँ महाराज.

धर्मराज—उठने की ज़रूरत नहीं. जो कहना हो बैठे बैठे ही कहिये.

धर्म—(बहुत धीमी आवाज़ में) सरकार, इस गपोड़ा नन्द की कृपा से मेरी यह गति हुई है. इसने मेरी असली सूरत छिपा दी. भोले लोगों को धर्म शास्त्रों के उलटे अर्थ बताये, मेरे नाम पर न जाने कितने ढकोसले खड़े किये, इसने खुद कभी मुझे अच्छी तरह समझने का जतन नहीं किया और दूसरों को भी मेरा ग़लत अर्थ बताया. धर्म-भूमि भारत पर जहां राम, कृष्न, बुद्ध और महावीर ने मेरी शिक्षा दी, अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाया वहां

لیپھ مسّی لگاکر کالے کئے ہوئے دانت ناک سونگھنی سے بھری ہوئی اور سونگھنی کی ڈبیا دھوتی میں کھونسی ہوئی . کھوپڑی صفاچٹ' لمبی چوٹی میں بیل پتر گندھے ہوئے' پیٹھ پر پاپوں کا بوجھ' کندھوں پر دھرم شاستر کی کتابیں لدی ہوئی اور دم پھولا ہوا . جلدی جلدی چلنے سے دھوتی کی گانٹھ کھلنے لگتی ہے' اسے سنبھالنے لگتا ہے تو کندھے سے کتابیں گر پڑتی ہیں . دھرم راج کے آگے آکر سنبھل کر کھڑا ہوکر دھرم راج کو پرنام کرتا ہے .]

گپوڑانند—میرا نام شری مان پنڈت گپوڑانند شاستری' ویاکرنا چاریہ' مہامہوپادھیائے' کتھا واچک' جیوتش مارتنڈ' کاویہ تیرتھ..........

چتر گپت—چپ رہو .

گپوڑا نند—(دھرم راج سے) دیکھو سرکار' کائستھ ہوکر کلین براہمن کو ڈانٹتا ہے .

دھرم راج—جو بات پوچھی جائے اُس کا جواب دو .

گپوڑا نند—پوچھو مہاراج ! بار بار پوچھو . دھرم شاستر سمبندھی پوچھو' جیوتش سمبندھی پوچھو' بھاگیہ کا حال پوچھو' ویاکرن کے سوتر پوچھو' نیائے کی گتھیوں کو سلجھانے کا حل پوچھو' مجھے کیا نہیں آتا . میں پنڈت ہوں . چاروں دھام پرسے ہیں . نتیہ گنگا اسنان کرتا ہوں . شاستراتھ میں مجھے کسی نے جیتا نہیں . میں سورگ کا پورا ادھیکاری ہوں .

دھرم راج—(گپوڑا نند سے) بہت مت بولو . جو بات پوچھی جائے اُسی کا جواب دو .

گپوڑا نند—جو آگیا مہا راج !

[دھرم کچھ کہنے کے لئے اُٹھنا چاہتا ہے' پر کمزور ہونے کے کارن اُٹھ نہیں سکتا . دیو دوت اُس کی مدد کرتے ہیں .]

دھرم راج—(دھرم سے) کیوں بابا جی' آپ بھی کچھ کہنا چاہتے ہیں ؟

دھرم—ہاں مہاراج .

دھرم—اُٹھنے کی ضرورت نہیں، جو کہنا ہو بیٹھے بیٹھے ہی کہئے .

دھرم—(بہت دھیمی آواز میں) سرکار' اِس گپوڑا نند کی کرپا سے میری گت ہوئی ہے' اِس نے میری اصلی صورت چھپادی' بھولے لوگوں کو دھرم شاستروں کے اُلٹے ارتھ بتائے' میرے نام پر نہ جانے کتنے ڈھکوسلے کھڑے کئے' اِس نے خود کبھی مجھے اچھی طرح سمجھنے کا جتن نہیں کیا اور دوسروں کو بھی میرا غلط ارتھ بتایا . دھرم بھومی بھارت پر جہاں رام' کرشن' بدھ اور مہاویر نے میری شکشا دی' اہنسا اور پریم کا پاٹھ پڑھایا وہاں

गपोड़ा नन्द और इनके जैसे दूसरे नाम के पंडितों ने मनुष्यों को आपस में एक दूसरे से नफरत करना सिखाया, मेरे नाम पर लोगों को मारकाट करना सिखाया और इस प्रकार मेरा असली रूप बिलकुल बिगाड़ कर मेरे गलत रूप को संसार के सामने पेश करते रहे. (यह कहते कहते गला भर आता है और आँखों में आँसू आ जाते हैं.)

गपोड़ा नन्द—(अपने आप से) यह बूढ़ा कहाँ से आ मरा. (धर्म राज से) महाराज ! इसकी बातों में न आना. यह महा झूठा है. मैं तो इसे जानता भी नहीं कि यह कौन है.

(दरबार में फिर हँसी होती है. गपोड़ा नन्द मचल जाते हैं.)

धर्म राज—बस गपोड़ा नन्द, चुप रहो.

गपोड़ा नन्द—अब नहीं बोलूँगा सरकार. कान पकड़ता हूँ. (दोनों हाथों से कान पकड़ता है. देवियाँ हँसती हैं.)

धर्म राज—गपोड़ा नन्द ' सुधारक को जानते हो ?

गपोड़ा नन्द—(अपने आप) ओह ! उसने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा (जोर से) सुधारक, कौन सुधारक ? वह नास्तिक ? वह तो बड़ा दुष्ट...

धर्म राज—फिर तुम बहकने लगे. हम जो कहते हैं वह सुनो. अधिक मत बोलो. बताओ, सुधारक ने धर्म के विरुद्ध कोई काम किया है ?

गपोड़ा नन्द—आप भी महाराज, अनोखी बात कहते हो. वह कौन सा काम है जो इसने धर्म के अनुकूल किया है. इसने नास्तिकता का प्रचार किया है, लोगों को धर्म के खिलाफ भड़काता रहा है, ऊंच और नीच का भेद मिटाने के लिये लड़ता रहा है, सब धर्मों को एक बताकर सब की अच्छी शिक्षा पर चलने का उपदेश देता रहा है, अहिन्सा जैसी निकम्मी चीज को अच्छी बतला कर शत्रुओं से भी प्रेम करने का बेतुका उपदेश देता रहा है, अछूतों को पवित्र देव स्थानों में प्रविष्ट करा के उनकी पवित्रता को नष्ट करने को यह अच्छा काम समझता रहा है. वह कौन सा बुरा काम है जो इसने नहीं किया. यह...यह...जो है.. सो नरक का भागी है.

धर्म राज—अच्छा जाओ.

(गपोड़ा नन्द डरता डरता और धर्म को गुस्से से घूरता हुआ चला जाता है.)

धर्म राज—(चोबदार से) मौलवी दरोग बयान को पेश करो.

گھوڑا نند اور اِن کے جیسے دوسرے نام کے پنڈتوں نے مانشیوں کو آپس میں ایک دوسرے سے نفرت کرنا سکھایا' میرے نام پر لوگوں کو مار کاٹ کرنا سکھایا اور اس پرکار میرا اصلی روپ بالکل بگاڑ کر میرے غلط روپ کو سنسار کے سامنے پیش کرتے رہے ۔ (یہ کہتے کہتے گلا بھر آتا ہے اور آنکھوں میں آنسو آجاتے ہیں ۔)

گھوڑا نند—(اپنے آپ سے) یہ بوڑھا کہاں سے آ مرا ۔ (دھرم راج سے) مہاراج ! اِس کی باتوں میں نہ آنا ۔ یہ مہا جھوٹا ہے ۔ میں تو اِسے جانتا بھی نہیں کہ یہ کون ہے ۔ (دربار میں پھر ہنسی ہوتی ہے ۔ گھوڑا نند مچل جاتے ہیں ۔)

دھرم راج—بس گھوڑا نند ۔ چپ رہو ۔

گھوڑا نند—اب نہیں بولوں گا سرکار ۔ کان پکڑتا ہوں ۔

(دونوں ہاتھوں سے کان پکڑتا ہے ۔ دیویاں ہنستی ہیں ۔)

دھرم راج—گھوڑا نند ' سدھارک کو جانتے ہو ؟

گھوڑا نند—(اپنے آپ) اوہ ! اُسنے یہاں بھی پیچھا نہیں چھوڑا ۔ (زور سے) سدھارک' کون سدھارک ؟ وہ ناستک ؟ وہ تو بڑا دشٹ......

دھرم راج—پھر تم بہکنے لگے ۔ ہم جو کہتے ہیں وہ سنو ۔ ادھک مت بولو ۔ بتاؤ' سدھارک نے دھرم کے ورودھ کوئی کام کیا ہے ؟

گھوڑا نند—آپ بھی مہاراج انوکھی بات کہتے ہو وہ کون سا کام ہے جو اِس نے دھرم کے انوکول کیا ہے ۔ اُس نے ناستکتا کا پرچار کیا ہے' لوگوں کو دھرم کے خلاف بھڑکاتا رہا ہے' اونچ اور نیچ کا بھید مٹانے کے لئے لڑتا رہا ہے' سب دھرموں کو ایک سمان بتلا کر سب کی اچھی شکشا پر چلنے کا اُپدیش دیتا رہا ہے ۔ اہنسا جیسی نکمی چیز کو اچھا بتلا کر شترؤوں سے بھی پریم کرنے کا بے تکا اُپدیش دیتا رہا ہے' اچھوتوں کو پوتر دیواستھانوں میں پرویشٹ کرا کر اُن کی پوترتا کو نشٹ کرنے کو یہ اچھا کام سمجھتا رہا ہے ۔ وہ کون سا برا کام ہے جو اِس نے نہیں کیا ۔ یہ......یہ......جو ہے......سو نرک کا بھاگی ہے ۔

دھرم راج—اچھا جاؤ ۔

(گھوڑا نند ڈرتا ڈرتا اور دھرم کو غصے سے گھورتا ہوا چلا جاتا ہے ۔)

دھرم راج—(چوبدار سے) مولوی دروغ بیان کو پیش کرو ۔

चोबदार—(चिल्लाकर) चलो कोई दरोग़ बयान हाज़िर है. दरोग़ बयान हाज़िर है !

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—आता हूँ बे... कमबख़्त को बोलने की भी तमीज़ नहीं. दरोग़ बयान दरोग़ बयान चिल्ला रहा है. न मौलवी दरोग़ बयान कहता न मौलाना, बद तमीज़ कहीं का.

[ढीला पाजामा, तुरकी टोपी, हरी शेरवानी पर काला चोग़ा पहने हुए, दाढ़ी में मेंहदी लगाये, मूछें होंटों पर कतरे हुए, हाथ में छुरा, बग़ल में किताबें, पीठ पर बेगुनाहों के ख़ून का बोझ, चेहरा डरावना, आंखों में बेरहमी, माथे पर बल डाले और पान चबाते हुए दरोग़ बयान आता है.]

धर्मराज—मौलवी दरोग़ बयान.

दरोग़ बयान—जनाब.

धर्मराज—सुधारक को जानते हो ?

दरोग़ बयान—कौन सुधारक ? वह हिन्दुओं का ग़ुलाम, काफ़िरों का नमकख़्वार, कहने को मुसलमानों का दोस्त लेकिन हक़ीक़त में दुश्मन. जिसके बहकाने में आकर मेरे ही मज़हब के कुछ सरफिरों ने मेरे नाम सदाक़त अली को बदल कर दरोग़ बयान रख दिया और वह नाम ऐसा मशहूर हुआ कि आप भी उसी नाम से याद फ़रमाते हैं, यह सब इसी की शरारत . . .

धर्मराज—मौलवी साहब ! जो बात पूछी जाय सिर्फ़ उसका जवाब दीजिये.

दरोग़ बयान—वही अर्ज़ कर रहा हूँ जनाब. यह सुधारक अपने को क़ौम का ख़ादिम कहता था और हम जैसे क़ौम के सच्चे ख़ादमों को ग़द्दार और अंगरेज़ों का एजेन्ट कहता था. क़दम क़दम पर हाकिम वक़्त के फ़रमानों की मुख़ालफ़त करता था और लोगों को अंगरेज़ों की इन्साफ़ पसन्द हकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा करता था. इसने बहुत से मुसलमानों को भी बहका लिया था और एक पूरा सूबा इसके इशारों पर नाचने लगा था. यह हिन्दुओं की तरह मुसलमान शेरों को भी भेड़ बनाने की कोशिश कर रहा था. इसने कितने ही शरीफ़ आदमियों को चोरों डाकुओं की तरह जेल भिजवाया और आख़िर कार शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाने वाले अंगरेज़ों को मुल्क से निकाल कर दम लिया. यह मज़हब का दुश्मन है, इसलाम के अलावा दूसरे मज़हबों की सचाई पर भी एतक़ाद रखता है. ख़ुदा इसे हमेशा दोज़ख़ की आग में जलाये. (इस बार धर्मराज के रूप में कुछ कहना चाहता है. उठना चाहता है मगर कमज़ोरी के कारन उठ नहीं पाता. आख़िर बैठे ही बैठे कहता है.)

چوبدار—(چلا کر) چلو کوئی دروغ بیان حاضر ہے . دروغ بیان حاضر ہے !

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—آتا ہوں بے...... .... کمبخت کو بولنے کی بھی تمیز نہیں . دروغ بیان' دروغ بیان چلا رہا ہے . نہ مولوی دروغ بیان کہتا ہے نہ مولانا . بدتمیز کہیں کا .

[ڈھیلا پاجامہ' ترکی ٹوپی' ہری شیروانی پر کالا چوغہ پہنے ہوئے' ڈاڑھی میں مہندی لگائے' مونچھیں ہونٹوں پر کترے ہوئے' ہاتھ میں چھرا' بغل میں کتابیں' پیٹھ پر بے گناہوں کے خون کا بوجھ' چہرا ڈراونا' آنکھوں میں بیرحمی' ماتھے پر بل ڈالے پان چباتے ہوئے دروغ بیان آتا ہے .]

دھرم راج—مولوی دروغ بیان .

دروغ بیان—جناب .

دھرم راج—سدھارک کو جانتے ہو ؟

دروغ بیان—کون سدھارک ؟ وہ ہندوؤں کا غلام' کافروں کا نمک خوار' کہنے کو مسلمانوں کا دوست لیکن حقیقت میں دشمن . جس کے بہکانے میں آکر میرے ہی مذہب کے کچھ سر پھروں نے میرے نام صداقت علی کو بدل کر دروغ بیان رکھ دیا اور وہ نام ایسا مشہور ہوا کہ آپ بھی اسی نام سے یاد فرماتے ہیں . یہ سب اسی کی شرارت......

دھرم راج—مولوی صاحب ! جو بات پوچھی جائے صرف اسکا جواب دیجئے .

دروغ بیان—وہی عرض کر رہا ہوں جناب . یہ سدھارک اپنے کو قوم کا خادم کہتا تھا اور ہم جیسے قوم کے سچے خادموں کو غدار اور انگریزوں کا ایجنٹ کہتا تھا . یہ قدم قدم پر حاکم وقت کے فرمانوں کی مخالفت کرتا تھا اور لوگوں کو انگریزوں کی انصاف پسند حکومت کے خلاف بغاوت پر آمادہ کرتا تھا . اس نے بہت سے مسلمانوں کو بھی بہکا لیا تھا اور ایک پورا صوبہ اس کے اشاروں پر ناچنے لگا تھا . یہ ہندوؤں کی طرح مسلمان شیروں کو بھی بھیڑ بنانے کی کوشش کر رہا تھا . اس نے کتنے ہی شریف آدمیوں کو چوروں ڈاکوؤں کی طرح جیل بھجوایا اور آخرکار شیر اور بکری کو ایک گھاٹ پانی پلانے والے انگریزوں کو ملک سے نکال کر دم لیا . یہ مذہب کا دشمن ہے' اسلام کے علاوہ دوسرے مذہبوں کی سچائی پر بھی اعتقاد رکھتا ہے . خدا اسے ہمیشہ دوزخ کی آگ میں جلائے . (اس بار دھرم دین کے روپ میں کچھ کہنا چاہتا ہے . اٹھنا چاہتا ہے مگر کمزوری کے کارن اٹھ نہیں پاتا . آخر بیٹھے ہی بیٹھے کہتا ہے .)

दीन—इस दरोग़ बयान ने मुझे कहीं का न रक्खा, इसने मुझे सारी दुनिया में बदनाम कर दिया. मेरे रसूल हज़रत मोहम्मद ने कहा था कि हर इनसान बराबर है लेकिन यह इनसानों को छोटा बड़ा बनाता रहा. उन्होंने इत्तहाद का सबक़ दिया और यह फूट डालता रहा. उन्होंने फ़रमाया था दुशमन से भी मुहब्बत करो और यह दोस्तों को भी दुशमन बनाता रहा. उन्होंने फ़साद से बचने की नसीहत की लेकिन यह गाय बाजे, तंज़ीम और तबलीग़ के नाम पर फ़साद फैलाता रहा. उन्होंने ग़ुलामों को आज़ाद करना और कराना बहुत बड़ा नेकी का काम बताया लेकिन इसने तमाम मुसलिम मुल्कों को ग़ुलाम बनाने वाले अंगरेज़ों की हिमायत की और उनसे आज़ादी हासिल करने की कोशिश करने वालों पर कुफ़्र के फ़तवे लगाता रहा. इसने क़ुरान पाक के ग़लत मानी बतला कर भोले मुसलमानों को तमाम उम्र गुमराह किया और इसलाम की हक़ीक़ी (सच्ची) तालीम को भुला कर मुसलमानों को रस्म रिवाज की पूजा सिखाई. मुख़्तसर यह कि इसने हर वह बात कही जो इसलाम के ख़िलाफ़ थी और हमेशा अपने को सच्चा मुसलमान कहता रहा. इसने मेरी सूरत को बिगाड़ कर रख दिया और लोगों को यक़ीन दिलाता रहा कि यही मेरी असली शक्ल है.

दरोग़ बयान— (दीन से) बड़े मियाँ, क्यों कुफ़्र बक रहे हो. मेरे साथ तुम्हारा वास्ता ही क्या रहा. मैं अगर तुम्हारी ख़िदमत में लगता तो क्या भूखों मरता. मौलवी बाप का बेटा हूं इसलिये मौलवी कहलाता हूं. बचपन में मेरे दादा ने ज़रूर तुम्हारी बड़ी तारीफ़ की थी. लेकिन बड़े होने पर मैंने महसूस किया कि तुम्हारी तालीम पर चल कर मैं न ख़ुद इज़्ज़त से जी सकता हूँ न अपने कुन्बे की शान से परवरिश कर सकता हूँ. मुझे तुम्हारे कहने पर चल कर तकिये की ईंट और टाट के बिछौने पर सोना होता, ख़ुद भूके रह कर पड़ोसियों का पेट भरना होता और अपने गाली देने वाले को दुआएँ देनी होतीं तो मैं तुम्हारा सहारा लेता. लेकिन मैं गद्दों पर सोता था और मुझे क़ालीन की ज़रूरत थी, मैं तांगे पर चलता था मुझे मोटर की ज़रूरत थी, मैं ख़ां साहब की जगह ख़ान बहादुरों से रिश्ता जोड़ना चाहता था, मुझे अपने पक्के मकान को पंच मंज़िला कोठी बनाना था इसलिये मैंने पुराने इसलाम को छोड़ कर बीसवीं सदी के इसलाम को अपनाया. मैं मुसलमानों को हिन्दुओं का ग़ुलाम नहीं देखना चाहता था इसलिये मैंने हिन्दुओं के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाई. मैं अपनी तौहीन नहीं बरदाश्त कर सकता था इसलिये मैंने दुशमनों से मुक़दमे बाज़ी की और अदालत में सच बोलने से काम नहीं चल सकता था इसलिये झूट भी बोला. मैं हाकिमे वक़्त से बग़ावत को गुनाह समझता था इसलिये

دین—اس دروغ بیان نے مجھے کہیں کا نہ رکھا، اس نے مجھے ساری دنیا میں بدنام کر دیا۔ میرے رسول حضرت محمد نے کہا تھا کہ ہر انسان برابر ہے لیکن یہ انسانوں کو چھوٹا بڑا بناتا رہا۔ انہوں نے اتحاد کا سبق دیا اور یہ پھوٹ ڈالتا رہا۔ انہوں نے فرمایا تھا دشمن سے بھی محبت کرو اور یہ دوستوں کو بھی دشمن بناتا رہا۔ انہوں نے فساد سے بچنے کی نصیحت کی لیکن یہ گائے باجے، تنظیم اور تبلیغ کے نام پر فساد پھیلاتا رہا۔ انہوں نے غلاموں کو آزاد کرنا اور کرانا بہت بڑا نیکی کا کام بتایا لیکن اس نے تمام مسلم ملکوں کو غلام بنانے والے انگریزوں کی حمایت کی اور ان سے آزادی حاصل کرنے کی کوشش کرنے والوں پر کفر کے فتوے لگاتا رہا۔ اس نے قرآن پاک کے غلط معنی بتلا کر بھولے مسلمانوں کو تمام عمر گمراہ کیا اور اسلام کی حقیقی (سچی) تعلیم کو بھلا کر مسلمانوں کو رسم رواج کی پوجا سکھائی۔ مختصر یہ کہ اس نے ہر وہ بات کہی جو اسلام کے خلاف تھی اور ہمیشہ اپنے کو سچا مسلمان کہتا رہا۔ اس نے میری صورت کو بگاڑ کر رکھ دیا اور لوگوں کو یقین دلاتا رہا کہ یہی میری اصلی شکل ہے۔

دروغ بیان—(دین سے) بڑے میاں، کیوں کفر بک رہے ہو۔ میرے ساتھ تمہارا واسطہ ہی کیا رہا۔ میں اگر تمہاری خدمت میں لگتا تو کیا بھوکوں مرتا۔ مولوی باپ کا بیٹا ہوں اس لئے مولوی کہلاتا ہوں۔ بچپن میں میرے دادا نے ضرور تمہاری بڑی تعریف کی تھی لیکن بڑے ہونے پر میں نے محسوس کیا کہ تمہاری تعلیم پر چل کر میں نہ خود عزت سے جی سکتا ہوں نہ اپنے کنبے کی شان سے پرورش کر سکتا ہوں۔ مجھے تمہارے کہنے پر چل کر تکیے کی اینٹ اور ٹاٹ کے بچھونے پر سونا ہوتا، خود بھوکے رہکر پڑوسیوں کا پیٹ بھرنا ہوتا اور اپنے گالی دینے والے کو دعائیں دینی ہوتیں تو میں تمہارا سہارا لیتا۔ لیکن میں گدوں پر سوتا تھا اور مجھے قالین کی ضرورت تھی، میں تانگے پر چلتا تھا اور مجھے موٹر کی ضرورت تھی، میں خانصاحب کی جگہ خان بہادروں سے رشتہ جوڑنا چاہتا تھا، مجھے اپنے پکے مکان کو پانچ منزلہ کوٹھی بنانا تھا اس لئے میں نے پرانے اسلام کو چھوڑ کر بیسویں صدی کے اسلام کو اپنایا۔ میں مسلمانوں کو ہندوؤں کا غلام نہیں دیکھنا چاہتا تھا اس لئے میں نے ہندوؤں کے خلاف نفرت پھیلائی۔ میں اپنی توہین نہیں برداشت کر سکتا تھا اس لئے میں نے اپنے دشمنوں سے مقدمے بازی کی اور عدالت میں سچ بولنے سے کام نہیں چل سکتا تھا اس لئے جھوٹ بھی بولا۔ میں حاکم وقت سے بغاوت کو گناہ سمجھتا تھا اس لئے

उसे लोगों को अंग्रेज़ों की मुखालफत से रोका और यही वजह है कि मुझे हकूमत ने शम्सुल उलमा और खान बहादुर का खिताब दिया. और अगर यह सुधारक उन्हें निकालने में कामयाब न हो गया होता तो मुझे सर का खिताब भी मिल जाता और जागीर भी अता होती. मगर अफसोस...(दरोग बयान यह कहता हुआ लाल आंखों से दीन को घूरता धर्म राज की इजाज़त लिये बग़ैर चला जाता है.)

धर्म राज—भाई घमंडा सिंह ज्ञानी को हाज़िर करो.

चोबदार—(ऊंची आवाज़ में) भाई घमंडा सिंह हाज़िर है, कोई घमंडा सिंह हाज़िर है !

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—ओय कौन है भई...आता हूँ...ओय आ रहा हूँ.

[एक मैली सी कच्छ, फटा हुआ नीला चोला, नीली पगड़ी जिस पर मैल के दाग़ दूर ही से दिखाई दे रहे हैं. मैले चिकटे बाल जैसे सर्दी भर न धोए गए हों, मोटी सी तोंद, दाढ़ी में धूल लगी हुई, बिना म्यान की चिथड़ों में लिपटी हुई कृपान, हांपता कांपता 'वाह गुरु, वाह गुरु' करता हुआ सिंहासन के एक तरफ़ खड़ा हो जाता है.]

घमंडा सिंह—हमें क्यों बुलाया गया है ? क्या कोई भोग कराना है या कड़ाह प्रशाद बँट रहा है (धर्म की तरफ़ देख कर) अरे यह खुर्रांट अभी तक मरा नहीं. ओय बुड्ढे, मरने से पहले अपना भोग डलवाले तब मरना. इसी कारन हम यहाँ आये हैं. फिर ख़बर नहीं कोई पाठी मिले या न मिले.

धर्मराज—बहुत मत बोलो. जो पूछा जाय उसका जवाब दो.

घमंडा सिंह—ओय हम बोल क्या रहे हैं जी. हम तो जी...बोलने में तो हम अकालियों के आगे भी नहीं डरे. हम को तो जी...बस...क्या नाम कि..ज्ञानी शेरसिंह जी...हम को जी कभी कभी बोलते समय चुप करा देते थे.. पर जी यहाँ तो हम तुम्हारा भी कहना मानेंगे... हम जी बोलते कहाँ हैं.

धर्मराज—सुधारक को जानते हो ?

घमंडा सिंह—जी, हम उसके बाप को जानते हैं. वह दुश्ट महा पापी, उसे कौन नहीं जानता. उसने तो जी हमारे पंजाब में बड़ा ऊधम मचाया है. कहता था कि बनिये, लाला, सिक्ख और मुसलमान सब बराबर हैं. हमारी कृपान को कहता था कि वह बेकार चीज़ है, इसे चलाना नहीं चाहिये. वह धर्म का दुश्मन था. कहता था कि दिखावे के लिये धर्म को न मानो. उससे पूछो कौनसा काम दिखावे के लिये नहीं किया जाता. क्या लाट साहब और वज़ीरों की बड़ी बड़ी कोठियाँ दिखावे के लिये नहीं होतीं, क्या उनकी चमकती मोटरें

میں نے لوگوں کو انگریزوں کی مخالفت سے روکا. اور یہی وجہ ہے کہ مجھے حکومت نے شمس العلماء اور خان بہادر کا خطاب دیا. اور اگر یہ سدھارک انہیں نکالنے میں کامیاب نہ ہو گیا ہوتا تو مجھے سر کا خطاب بھی مل جاتا اور جاگیر بھی عطا ہوتی. مگر افسوس ...(دروغ بیان یہ کہتا ہوا لال آنکھوں سے دین کو گھورتا دھرم راج کی اجازت لئے بغیر چلا جاتا ہے .)

دھرم راج—بھائی گھمنڈا سنگھ گیانی کو حاضر کرو .

چوبدار—(اونچی آواز میں) بھائی گھمنڈا سنگھ حاضر ہے' کوئی گھمنڈا سنگھ حاضر ہے !

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—اوئے کون ہے بھئی... آتا ہوں.. اوئے آ رہا ہوں .

[ایک میلی سی کچھ' پھٹا ہوا نیلا چولا' نیلی پگڑی جس پر میل کے داغ دور ہی سے دکھائی دے رہے ہیں . میلے چکٹے بال جیسے سردی بھر نہ دھوئے گئے ہوں' موٹی سی توند' داڑھی میں دھول لگی ہوئی' بنا میان کی چیتھڑوں میں لپٹی ہوئی کرپان' ہانپتا کانپتا 'واہگرو' واہ گرو' کرتا ہوا سنگھاسن کے ایک طرف کھڑا ہو جاتا ہے .]

گھمنڈا سنگھ—ہمیں کیوں بلایا گیا ہے ؟ کیا کوئی بھوگ کرانا ہے یا کڑاہ پرشاد بٹ رہا ہے (دھرم کی طرف دیکھکر) ارے یہ خرانٹ ابھی تک مرا نہیں . ارے بڈھے' مرنے سے پہلے اپنا بھوگ ڈلوا لے تب مرنا . اسی کارن ہم یہاں آئے ہیں . پھر خبر نہیں کوئی پاٹھی ملے یا نہ ملے .

دھرم راج—بہت مت بولو . جو پوچھا جائے اس کا جواب دو .

گھمنڈا سنگھ—اوئے ہم بول کیا رہے ہیں جی . ہم تو جی.......... بولنے میں تو ہم اکالیوں کے آگے بھی نہیں ڈرے . ہم کو تو جی ....بس.........کیا نام کہ......... گیانی شیر سنگھ جی......... ہم کو جی کبھی کبھی بولتے سمے چپ کرا دیتے تھے ....پر جی یہاں تو ہم تمہارا بھی کہنا مانیں گے..........ہم جی بولتے کہاں ہیں .

دھرم راج—سدھارک کو جانتے ہو ؟

گھمنڈا سنگھ—جی' ہم اس کے باپ کو جانتے ہیں . وہ دشٹ مہا پاپی' اسے کون نہیں جانتا . اس نے تو جی ہمارے پنجاب میں بڑا اودھم مچایا ہے . کہتا تھا کہ بنئے' لالہ' سکھ اور مسلمان سب برابر ہیں . ہماری کرپان کو کہتا تھا کہ وہ بیکار چیز ہے . اسے چلانا نہیں چاہئے . وہ دھرم کا دشمن تھا . کہتا تھا کہ دکھاوے کے لئے دھرم کو نہ مانو. اس سے پوچھو کون سا کام دکھاوے کے لئے نہیں کیا جاتا . کیا لاٹ صاحب اور وزیروں کی بڑی بڑی کوٹھیاں دکھاوے کے لئے نہیں ہوتیں' کیا ان کی چمکتی موٹریں

दिखावे की नहीं होती, क्या उसका दूध का सफ़ेद लिबास दिखावे का नहीं होता. वह कहता था मसजिद, मंदिर, गुरुद्वारे सब में भगवान रहते हैं. ऐसा होता तो क्या हम मूरख थे जो अलग गुरुद्वारे बनवाते. जी वह खुद महा मूरख है. हम तो जी कभी उसके फंदे में नहीं आये. नहीं तो कब के पुलिस की लाठियाँ खाकर जेल हो आए होते. हम तो किसी को मारकर ही जेल जाना अपनी शान समझते हैं. उसकी एक बात भी तुक की नहीं होती थी जी, वह कहता था सब आदमी बराबर हैं, सब धर्म सच्चे हैं, सब महान पुरुषों को एक समान मानना चाहिये. सब धर्म ग्रंथों का आदर करो, प्रीत मंडल बनाओ और गुरुद्वारों की आमदनी से खेती के काम खोलो. किसी भूखे को खिलाते समय यह न देखो कि उसका धर्म क्या है. पर जी, वह आप कैसा था, बताऊँ—एक बार हम भूखे थे. सोचा कुछ अफीम मिल जाती तो काम चलता. उसके पास गए कि अपना सिक्ख भाई है उससे कहें. पर जी जानते हो उसने क्या जवाब दिया—बोला अफीम न खाया करो. भूखे हो तो भी किसी के सामने हाथ न फैलाओ. गुरु साहब ने तम्बाकू के साथ शराब और अफीम की भी मनाही की है. यह बुरी बात है. बुरी बात का बच्चा. हमें गुरु साहब का उपदेश सुनाता है. हम गुरु साहब की सब बात मानते हैं. हमारी दाढ़ी देखो जी कितनी बड़ी है, केश देख लो, कच्छा देखो, कड़ा देखो, कंघा देखो, कृपान देखो. और हम क्या मानें. क्या उसके कहने से हम नशा पानी भी छोड़ देते. मुसलमानों को अपने गांव की मसजिद में अज़ान देने देते? हलाल करने देते? हम तो जी यह मानत हैं कि हिन्दू मुसलमान कमाये और खाए खालसा... ......बस जी, सुधारक का नाम हमारे सामने मत लो. हम उसका नाम नहीं सुनना चाहते.........और जी. क्या यहाँ थोड़ी अफीम मिल सकती है? मिल जाय तो बड़ी दया होगी कृपा निधान. बहुत दिनों से चक्खी तक नहीं. वाह गुरु भला करें जी तुम्हारा. वाह गुरु वाह गुरु. और जी अगर यहाँ अफीम न मिलती हो तो हमें वापस पंजाब भेज दो.

(धर्म राज के इशारे पर चोबदार घमंडा सिंह को ढकेल कर ले जाता है.)

धर्म राज—(सुधारक से) यहां तो सभी लोग तुम्हारे खिलाफ़ हैं. ऐसा क्यों है?

सुधारक—(बड़े विनम्र भाव से हाथ जोड़ कर) महाराज! यह लोग हमेशा मेरे खिलाफ़ रहे हैं.

धर्म राज—फिर तुम्हारे साथ कौन है?

सुधारक—महाराज! मेरा साथ उन नौजवानों ने दिया जिनकी निगाह और दिमाग़ तंग नहीं थे, उन किसानों ने दिया जिन्हें ज़मींदार चूस रहे थे, उन मज़दूरों ने दिया

دکھاوے کی نہیں ہوتیں، کیا اُن کا دودھ سا سفید لباس دکھاوے کا نہیں ہوتا. وہ کہتا تھا مسجد، مندر، گوردوارے سب میں بھگوان رہتے ہیں. ایسا ہوتا تو کیا ہم مورکھ تھے جو الگ گردوارے بنواتے. جی وہ خود مہا مورکھ ہے. ہم تو جی کبھی اُسکے پھندے میں نہیں آئے. نہیں تو کب کے پولیس کی لاٹھیاں کھا کر جیل ہو آئے ہوتے. ہم تو کسی کو مار کر ہی جیل جانا اپنی شان سمجھتے ہیں. اُسکی ایک بات بھی تک کی نہیں ہوتی تھی جی، وہ کہتا تھا سب آدمی برابر ہیں، سب دھرم سچے ہیں، سب مہا پرشوں کو ایک سمان ماننا چاہئے. سب دھرم گرنتھوں کا آدر کرو. پریت منڈل بناؤ اور گوردواروں کی آمدنی سے کھیتی کے کام کھولو. کسی بھوکے کو کھلاتے سمے یہ نہ دیکھو کہ اُس کا دھرم کیا ہے. پر جی، وہ آپ کیسا تھا بتاؤں—ایک بار ہم بھوکے تھے. سوچا کچھ افیم مل جاتی تو کام چلتا. اس کے پاس گئے کہ اپنا سکھ بھائی ہے اُس سے کہیں. پر جی جانتے ہو اس نے کیا جواب دیا—بولا افیم نہ کھایا کرو. بھوکے ہو تو بھی کسی کے سامنے ہاتھ نہ پھیلاؤ. گرو صاحب نے تمباکو کے ساتھ شراب اور افیم کی بھی منائی کی ہے. یہ بری بات ہے. بری بات کا بچہ. ہمیں گرو صاحب کا اُپدیش سناتا ہے. ہم گرو صاحب کی سب بات مانتے ہیں. ہماری داڑھی دیکھو جی کتنی بڑی ہے، کیس دیکھ لو، کچھا دیکھو، کڑا دیکھو، کنگھا دیکھو، کرپان دیکھو. اور ہم کیا مانیں. کیا اُس کے کہنے سے ہم نشہ پانی بھی چھوڑ دیتے. مسلمانوں کو اپنے گاؤں کی مسجد میں اذان دینے دیتے؟ حلال کرنے دیتے؟ ہم تو جی یہ مانتے ہیں کہ ہندو مسلمان کمائے اور کھائے خالصہ ......بس جی، سدھارک کا نام ہمارے سامنے مت لو. ہم اُس کا نام نہیں سننا چاہتے.... اور جی کیا یہاں تھوڑی افیم مل سکتی ہے؟ مل جائے تو بڑی دیا ہوگی کرپا ندھان. بہت دنوں سے چکھی تک نہیں. واہ گرو بھلا کریں جی تمہارا. واہ گرو واہ گرو. اور جی، اگر یہاں افیم نہ ملتی ہو تو ہمیں واپس پنجاب بھیج دو.

(دھرم راج کے اشارے پر چوبدار گھمنڈا سنگھ کو دھکیل کر لے جاتا ہے)

دھرم راج—(سدھارک سے) یہ تو سبھی لوگ تمہارے خلاف ہیں. ایسا کیوں ہے؟

سدھارک—(بڑے ونمر بھاؤ سے ہاتھ جوڑکر) مہاراج! یہ لوگ ہمیشہ میرے خلاف رہے ہیں.

دھرم راج—پھر تمہارے ساتھ کون ہے؟

سدھارک—مہاراج! میرا ساتھ اُن نوجوانوں نے دیا جنکی نگاہ اور دماغ تنگ نہیں تھے، اُن کسانوں نے دیا جنہیں زمیندار چوس رہے تھے، اُن مزدوروں نے دیا

जिन्हें पूँजी पतियों ने अपने ऐश के लिये जानवर बना रक्खा था, उन तमाम लोगों ने दिया जिन्हें ग़ुलामी पसन्द नहीं थी, जो आज़ादी से प्रेम करते थे, जिन्हें भारत माता से प्यार था और जो अपने स्वाभिमान, अपनी मर्यादा, अपनी परम्पराओं और अपनी जन्म भूमि की रक्षा करना चाहते थे. आप उनसे......

धर्म राज—बस बस. हमें तुम्हारे बारे में सब पता है और तुमने जिस तरह अपने देश और देश वासियों की सेवा की है उसकी हमे ख़बर है. तुम ने इसके लिये जो कष्ट सहे उसकी हम क़द्र करते हैं और इसलिये हम तुम्हें मुक्त करते हैं. तुम जहां चाहो जा सकते हो. तुम्हारे लिये स्वर्ग का द्वार भी खुला है और मृत्यु लोक का मार्ग भी साफ़ है.

मुबारक--(फिर हाथ जोड़ कर निगाह नीची किये हुए) महाराज ! आपकी इस कृपा के लिये मैं बहुत बहुत आभारी हूं. मैं स्वर्ग में बड़े आनन्द से रहूँगा. पर मैं अभी आनन्द नहीं चाहता. जब तक धरती का एक एक प्राणी आनन्द से जीवन न बिता सके, मैं ख़ुद आनन्द मनाना पाप समझता हूँ. यह ठीक है कि मेरा देश स्वतंत्र हो गया पर अभी देश की बहुत सी समस्याएं हल नहीं हो सकी हैं. हमारे विदेशी हाकिम मेरे देश को खोखला और कंगाल बना कर गये हैं. अभी मेरे देश वासी पेट भर भोजन और ज़रूरत भर कपड़ा नहीं पाते. अभी तक मेरे देश में पूँजी वाद का बोल बाला है और मज़दूर किसानों का ख़ून चूसा जा रहा है. मैं जब तक अपने देश में फिर से दूध घी की नदी बहते न देख लूँ, मेरे लिये अच्छा भोजन हराम है. और महाराज ! अब मैं अपने देश को ही नहीं देखता, मैं सारे संसार को प्रीत की लड़ी में पिरोया देखना चाहता हूँ. मैं चाहता हूँ कि पूरब और पच्छिम, उत्तर और दक्खिन के लोग एक हो जाएं. उनमें प्रेम हो, भाई चारा हो, एक का दुख सब का दुख और एक का सुख सबका सुख बन जाये. जब विज्ञान आदमी के नाश का नहीं बल्कि विकास का साधन बन जाय. जब सम्राजवाद और पूंजीवाद किसी क़ौम या किसी आदमी को ग़ुलाम न बनाएं. आज संसार में बहुत से 'वाद' चल रहे हैं. हर एक अपने को अच्छा और दूसरे को बुरा कहता है. पर मैं ऐसा संसार चाहता हूँ जहां सिर्फ़ एक धर्म हो—मानव धर्म, और एक वाद हो—मानव वाद. नफ़रत, दुश्मनी और बुराइयों का बिलकुल ख़ात्मा हो जाय और संसार में हर तरफ़ प्रेम ही प्रेम हो और पृथ्वी ही स्वर्ग बन जाय.

جنہیں پونجی پتیوں نے اپنے عیش کے لئے جانور بنا رکھا تھا، اُن تمام لوگوں نے دیا جنہیں غلامی پسند نہیں تھی، جو آزادی سے پریم کرتے تھے، جنہیں بھارت ماتا سے پیار تھا اور جو اپنے سوابھمان، اپنی مریادا، اپنی پرمپراؤں اور اپنی جنم بھومی کی رکشا کرنا چاہتے تھے. آپ اُن سے.......

دھرم راج—بس بس ہمیں تمہارے بارے میں سب پتہ ہے اور تم نے جس طرح اپنے دیش اور دیش واسیوں کی سیوا کی ہے اسکی ہمیں خبر ہے. تم نے اسکے لئے جو کشٹ سہے اُسکی ہم قدر کرتے ہیں اور اِس لئے ہم تمہیں مکت دیتے ہیں. تم جہاں چاہو جاسکتے ہو. تمہارے لئے سورگ کا دوار بھی کھلا ہے اور مرتیو لوک کا مارگ بھی صاف ہے.

مبارک—(پھر ہاتھ جوڑ کر نگاہ نیچی کئے ہوئے) مہاراج ! آپ کی اِس کرپا کے لئے میں بہت بہت آبھاری ہوں. میں سورگ میں بڑے آنند سے رہوں گا. پر میں ابھی آنند نہیں چاہتا. جب تک دھرتی کا ایک ایک پرانی آنند سے جیون نہ بتاسکے، میں خود آنند منانا پاپ سمجھتا ہوں. یہ ٹھیک ہے کہ میرا دیش سوتنتر ہوگیا پر ابھی دیش کی بہت سی سمسیائیں حل نہیں ہوسکی ہیں. ہمارے ودیشی حاکم میرے دیش کو کھوکھلا اور کنگال بناکر گئے ہیں. ابھی میرے دیش واسی پیٹ بھر بھوجن اور ضرورت بھر کپڑا نہیں پاتے. ابھی تک میرے دیش میں پونجی واد کا بول بالا ہے اور مزدور کسانوں کا خون چوسا جارہا ہے. میں جب تک اپنے دیش میں پھر سے دودھ گھی کی ندی بہتے نہ دیکھ لوں میرے لئے اچھا بھوجن حرام ہے. اور مہاراج ! اب میں اپنے دیش کو ہی نہیں دیکھتا، میں سارے سنسار کو پریت کی لڑی میں پرویا دیکھنا چاہتا ہوں. میں چاہتا ہوں کہ پورب اور پچھم، اُتر اور دکھن کے لوگ ایک ہو جائیں. اُن میں پریم ہو، بھائی چارہ ہو، ایک کا دکھ سب کا دکھ اور ایک کا سکھ سب کا سکھ بن جائے. جب وگیان آدمی کے ناش کا نہیں بلکہ وکاس کا سادھن بن جائے. جب سامراج واد اور پونجی واد کسی قوم یا کسی آدمی کو غلام نہ بنائیں. آج سنسار میں بہت سے 'واد' چل رہے ہیں. ہر ایک اپنے کو اچھا اور دوسرے کو برا کہتا ہے. پر میں ایسا سنسار چاہتا ہوں جہاں صرف ایک دھرم ہو—مانو دھرم، اور ایک واد ہو—مانو واد. نفرت، دشمنی اور برائیوں کا بالکل خاتمہ ہو جائے اور سنسار میں ہر طرف پریم ہی پریم ہو اور پرتھوی ہی سورگ بن جائے.

विद्यार्थी समाज का फ़र्ज़—मज़दूर बनिये

(धीरेन्द्र मजूमदार)

[हाल ही में वालोड, ज़िला सूरत में कुल गुजरात विद्यार्थी कांग्रेस का पांचवां सालाना जलसा हुआ. इस मौक़े पर धीरेन्द्र भाई ने उनको जो संदेसा भेजा था वह हम 'सर्वोदय' से लेकर नीचे दे रहे हैं. धीरेन्द्र भाई आजकल कुल हिन्द चर्खा संघ के सदर हैं.]

आज दुनिया में जो घोर अशांति छा रही है, उसका कारन है, समाज के अन्दर एक दूसरे को चूसना या शोशन. उसका सबूत है समाज के अन्दर मुख़्तलिफ़ दरजे. समाज हुज़ूर और मज़दूर के दो वर्गों में तक़सीम हो गया है. इस वजह से हुज़ूर वर्ग लगातार मज़दूर वर्ग को चूसता रहा है. चूसने का यह नया दस्तूर नहीं है. जिस्मानी मेहनत से पैदा करने वाले मज़दूर की सम्पत्ति दलाली करके खाने वाले हुज़ूर के पास चले आने का पुराना तरीक़ा कब से शुरू हुआ है यह जानना ज़रा मुश्किल है, लेकिन इस पुराने तरीक़े का विकास होते होते दुनिया आज ऐसी हालत में पहुंच गई है कि भेद भाव की इस आग से समाज भस्म होना चाहता है.

इस हालत से निकलने के लिये दुनिया भर की इन्सानियत पुकार रही है. यही कारन है कि दुनिया में चारों तरफ़ से वर्गहीन या बिना दरजों के समाज की मांग आ रही है. यह बात सब विद्यार्थी समाज भी मानता है. लेकिन वह जो नहीं मानता है, उस तरफ़ ही आपको विचार करना होगा. वह यह तो मानता ही है कि मज़दूर के कंधे पर से हुज़ूर उतर जायें या मज़दूर हुज़ूर को अपने कंधे पर से नीचे पटक दे और इस तरह सरमायादार का नाश हो. यही नारा वह लगाते हैं, लेकिन उन्हें इन वर्गों या दरजों के फ़र्क़ की असली तसवीर से भी वाक़फ़ियत होना चाहिये. शोशन का सही नक़्शा यह है कि जिस्मानी मेहनत करके दौलत पैदा करने वाले मज़दूर के कंधे पर व्यवस्थापक या मैनेजर नाम धारी बाबू यानी छोटे हुज़ूर बैठे हुए हैं. उनके कंधे पर बड़ा हुज़ूर यानी सरमायादार बैठा है. आज यह छोटे हुज़ूर चाहते हैं कि हमारे कंधे पर से यह बड़े हुज़ूर हट जाएं, लेकिन हम मज़दूर के कंधे पर बैठे रहें. पर ऐसा इन्साफ़ नहीं चल सकता. दुनिया में एक ही इन्साफ़ चलेगा, कंधे पर बैठने का या उतरने का. अगर बाबू लोग चाहते हैं कि वह मज़दूर के कंधे पर बैठे रहें, तो उन्हें अपने कंधे पर बड़े हुज़ूर को

ودیارتھی سماج کا فرض—مزدور بنئے

(دھیریندر مزوم دار)

[حال ہی میں والوڈ ضلع سورت میں کل گجرات ودیارتھی کانگریس کا پانچواں سالانہ جلسہ ہوا۔ اس موقعے پر دھیریندر بھائی نے ان کو جو سندیسہ بھیجا تھا وہ ہم 'سروودے' سے لیکر نیچے دے رہے ہیں۔ دھیریندر بھائی آجکل کل ہند چرخہ سنگھ کے صدر ہیں]

آج دنیا میں جو گھور اشانتی چھا رہی ہے، اس کا کارن ہے، سماج کے اندر ایک دوسرے کو چوسنا یا شوشن۔ اسکا ثبوت ہے سماج کے اندر مختلف درجے۔ سماج حضور اور مزدور کے دو ورگوں میں تقسیم ہوگیا ہے۔ اسوجہ سے حضور ورگ لگاتار مزدور ورگ کو چوستا رہا ہے۔ چوسنے کا یہ نیا دستور نہیں ہے۔ جسمانی محنت سے پیدا کرنے والے مزدور کی سمپتی دلالی کر کے کھانے والے حضور کے پاس چلے جانے کا پرانا طریقہ کب سے شروع ہوا ہے یہ جاننا ذرا مشکل ہے، لیکن اس پرانے طریقے کا وکاس ہوتے ہوتے دنیا آج ایسی حالت میں پہونچ گئی ہے کہ بھید بھاو کی اس آگ سے سماج بھسم ہونا چاہتا ہے۔

اس حالت سے نکلنے کے لئے دنیا بھر کی انسانیت پکار رہی ہے۔ یہی کارن ہے کہ دنیا میں چاروں طرف سے ورگ ہین یا بنا درجوں کے سماج کی مانگ آ رہی ہے۔ یہ بات سب ودیارتھی سماج بھی مانتا ہے۔ لیکن وہ جو نہیں مانتا ہے، اس طرف ہی آپ کو وچار کرنا ہوگا۔ وہ یہ تو مانتا ہی ہے کہ مزدور کے کندھے پر سے حضور اتر جائیں یا مزدور حضور کو اپنے کندھے پر سے نیچے پٹک دے اور اسطرح سرمایہ دار کا ناش ہو۔ یہی نعرہ وہ لگاتے ہیں، لیکن انہیں ان ورگوں یا درجوں کے فرق کی اصلی تصویر سے بھی واقفیت ہونا چاہئے۔ شوشن کا صحیح نقشہ یہ ہے کہ جسمانی محنت کر کے دولت پیدا کرنے والے مزدور کے کندھے پر ویوستھاپک یا منیجر نام دھاری بابو یعنی چھوٹے حضور بیٹھے ہوئے ہیں۔ ان کے کندھے پر بڑا حضور یعنی سرمائے دار بیٹھا ہے۔ آج یہ چھوٹے حضور چاہتے ہیں کہ ہمارے کندھے پر سے یہ بڑے حضور ہٹ جائیں، لیکن ہم مزدور کے کندھے پر بیٹھے رہیں۔ پر ایسا انصاف نہیں چل سکتا۔ دنیا میں ایک ہی انصاف چلیگا، کندھے پر بیٹھنے کا یا اترنے کا۔ اگر بابو لوگ چاہتے ہیں کہ وہ مزدور کے کندھے پر بیٹھے رہیں، تو انہیں اپنے کندھے پر بڑے حضور کو

बिठाना होगा, और अगर वह चाहते हैं कि उनके कंधे पर से सरमायादार उतर जायें तो उन्हें भी मजदूर के कंधे पर से उतर कर जिस्मानी मेहनत का काम करना होगा.

आप सब विद्यार्थी ज़ियादातर इस छोटे ऊपर जमाअत के हैं. अगर आप चाहते हैं कि समाज में बराबरी की इज़्ज़त हो तो आप सब को अपनी जमाअत बदल कर के मजदूर बनना होगा.

मुझे उम्मीद है कि इन बातों पर ध्यान रख कर आप अपने काम का सिलसिला क़ायम करेंगे.

ग़ैर जानिबदार समाज का प्रोग्राम

[हमारे पाठकों को मालूम होगा नवम्बर के महीने में आचार्य विनोबाजी अपने भूमि दान यज्ञ के सिलसिले में देहली पहुँचे और वहां बारह रोज़ क़याम किया. एक दिन उन्होंने दिल्ली के रचनात्मक कारकुनों के सामने जो तक़रीर की उसका कुछ हिस्सा 'सर्वोदय' से लेकर हम नीचे दे रहे हैं.—एडीटर]

एक ग़ैर जानिबदार जमायत की ज़रूरत

देश की मौजूदा हालत पर रोशनी डालते हुए मैंने बताया था कि हमारे यहां एक तो अधिकारी या हाकिम पक्ष रहेगा जो लोगों की तरफ़ से अकसरियत के आधार पर राज काज की ज़िम्मेदारी उठाएगा. और दूसरा एक मुख़ालिफ़ पक्ष होगा जो उनके साथ जवाबी सहयोग करेगा. यानी जहां मदद या हिमायत की ज़रूरत मालूम हो वहां सरकार का साथ देगा और जहां मुख़ालिफ़त की ज़रूरत हो वहां मुख़ालिफ़त करेगा. यह दोनो दल राज काजी दायरे में काम करेंगे. इनके अलावा तीसरा एक ग़ैर जानिबदार समाज होना चाहिये जिसकी गिनती न हाकिम दल में होगी और न मुख़ालिफ़ दल में, बल्कि यह एक अलग जमायत होगी, जिसकी अपनी एक ख़सूसियत होगी और वह जमायत सेवा के काम में लगी रहेगी. इस तरह की जमायत जितनी बड़ी और मज़बूत होगी, राजतन्त्र और लोकतन्त्र दोनों उतने ही पाक साफ़ और मर्यादा में रहेंगे. यह जो तीसरा ग़ैर जानिबदार समाज होगा, उसका एक बड़ा भारी देश भर का प्रोग्राम होगा. उस प्रोग्राम के कुछ पहलू, मैं आप लोगों के सामने

بٹھانا ہوگا اور اگر وہ چاہتے ہیں کہ اُن کے کندھے پر سے سرمایہ‌دار اُتر جائیں تو اُنہیں بھی مزدور کے کندھے پر سے اُتر کر جسمانی محنت کا کام کرنا ہوگا .

آپ سب ودیارتھی زیادہ تر اس چھوٹے حضور جماعت کے ہیں . اگر آپ چاہتے ہیں کہ سماج میں برابری کی عزت ہو تو آپ سب کو اپنی جماعت بدل کر کے مزدور بننا ہوگا .

مجھے اُمید ہے کہ ان باتوں پر دھیان رکھکر آپ اپنے کام کا سلسلہ قائم کرینگے .

غیر جانبدار سماج کا پروگرام

[ہمارے پاٹھکوں کو معلوم ہوگا نومبر کے مہینے میں آچاریہ ونوبا جی اپنے بھودان یگیہ کے سلسلے میں دہلی پہنچے اور وہاں بارہ روز قیام کیا . ایک دن اُنہوں نے دلی کے رچناتمک کارکنوں کے سامنے جو تقریر کی اُس کا کچھ حصہ ' سروودے ' سے لیکر ہم نیچے دے رہے ہیں . —ایڈیٹر]

ایک غیر جانبدار جماعت کی ضرورت .

دیش کی موجودہ حالت پر روشنی ڈالتے ہوئے میں نے بتایا تھا کہ ہمارے یہاں ایک تو ادھیکاری یا حاکم پکش رہے گا جو لوگوں کی طرف سے اکثریت کے آدھار پر راج کاج کی ذمہ داری اُٹھائیگا . اور دوسرا ایک مخالف پکش ہوگا جو اُن کے ساتھ جوابی سہیوگ کریگا . یعنی جہاں مدد یا حمایت کی ضرورت معلوم ہو وہاں سرکار کا ساتھ دیگا اور جہاں مخالفت کی ضرورت ہو وہاں مخالفت کریگا . یہ دونوں دل راج کاجی دائرے میں کام کرینگے . ان کے علاوہ تیسرا ایک غیر جانبدار سماج ہونا چاہئے جسکی گنتی نہ حاکم دل میں ہوگی اور نہ مخالف دل میں ' بلکہ یہ ایک الگ جماعت ہوگی ' جس کی اپنی ایک خصوصیت ہوگی اور وہ جماعت سیوا کے کام میں لگی رہے گی . اس طرح کی جماعت جتنی بڑی اور مضبوط ہوگی ' راج تنتر اور لوک تنتر دونوں اتنے ہی پاک صاف اور مریادا میں رہینگے . یہ جو تیسرا غیر جانبدار سماج ہوگا ' اس کا ایک بڑا بھاری دیش بھر کا پروگرام ہوگا . اس پروگرام کے کچھ پہلو ' میں آپ لوگوں کے سامنے

आज रखने की सोच रहा हूं. मुझे उम्मीद है कि इससे आप को अपने काम में मदद मिलेगी.

जीवन बेहतरी का काम.

इन जमायत के लोगों का बुनियादी और पहला काम यह होगा कि वह जीवन की बेहतरी के लिये कोशिश करें. वह अपनी ज़ाती जीवन की बेहतरी के साथ-साथ अपने खानदान, दोस्त और जान पहचान वाले या दूसरों सब की बेहतरी का ध्यान लगातार रखेंगे. अगर झूट या असत्य कहीं अपने में छिप रहा है तो बारीकी से उसकी तलाश करेंगे, उस झूट को खत्म कर देंगे और यह भी देखेंगे कि दिल के किसी कोने में अगर डर के अंकुर रह गए हों तो वह किस तरह के हैं? डर कई तरह के होते हैं. इन डरों में से कौन सी तरह के डर हैं, जो दिल में राज कर रहे हैं? उन सब अंकुर को देख कर उन से मुक्ति पाने की कोशिश वह करेंगे. यानी हमेशा निडर बनने की उनकी कोशिश रहेगी. वह हर काम शिस्त या संयम में रह कर करेंगे. ज़बान संयम, काम संयम, मन संयम, यह उनकी रोज़ाना की साधना रहेगी. उनको चाहिए कि अपनी गुज़र औक़ात जहां तक हो सके अपनी जिस्म की मेहनत पर चलायें. वह अपने तजरबे निजी, खानदानी और सामाजिक तीनों तरह के दायरे में करेंगे. यह सारा जीवन बेहतरी का बुनियादी काम पहला काम होगा.

पढ़ाई पर ज़ोर.

दूसरी बात उन्हें यह करनी होगी कि लगातार पढ़ते रहना होगा. लोक जीवन की जितनी छोटी बड़ी शाखें हैं, उन सब के बारे में वह पढ़ेंगे. हर तरह की ठीक-ठीक जानकारी उनके पास रहेगी. यह नहीं कि वह बेकार की जानकारी हासिल करेंगे बल्कि जो जानकारी समाजी और निजी जीवन की भीतरी और बाहरी तरक़्क़ी के लिये ज़रूरी है उस को वह हासिल करते रहेंगे. जब इस तरह मेहनत से काम होता रहता है, तभी स्वराज तरक़्क़ी करता है. स्वराज में ऐसे मेहनती पढ़ने वालों की बहुत ज़रूरत रहती है. बिना पढ़ाई के कोई समाज गहरा काम नहीं कर पाएगा. मैं देख रहा हूं कि इस तरफ़ ज़ियादा काम नहीं हो रहा है. मैं इसे बुनियादी काम तो नहीं कहूंगा, लेकिन ज़रूरी और अहमियत का कहूंगा.

दुखियों की सेवा का काम.

तीसरी बात यह करनी होगी कि उन्हें समाज के उन लोगों की तरफ़ ध्यान देना होगा जो समाज से खारिज समझे जाते हैं और जिनकी परवाह न समाज को है और न सरकार को. इस तरह के जितने काम हैं उनकी तरफ़ इस नई

آج رکھنے کی سوچ رہا ہوں. مجھے امید ہے کہ اس سے آپ کو اپنے کام میں مدد ملیگی .

جیون بہتری کا کام .

اس جماعت کے لوگوں کا بنیادی اور پہلا کام یہ ہوگا کہ وہ جیون کی بہتری کے لئے کوشش کریں . وہ اپنی ذاتی جیون کی بہتری کے ساتھ ساتھ اپنے خاندان، دوست اور جان پہچان والے یا دوسروں سب کی بہتری کا دھیان لگاتار رکھینگے. اگر جھوٹ یا استیہ کہیں اپنے میں چھپ رہا ہے تو باریکی سے اس کی تلاش کرینگے، اس جھوٹ کو ختم کر دینگے . اور یہ بھی دیکھینگے کہ دل کے کسی کونے میں اگر ڈر کے انکر رہ گئے ہوں تو وہ کس طرح کے ہیں ؟ ڈر کئی طرح کے ہوتے ہیں . ان ڈروں میں سے کون سی طرح کے ڈر ہیں، جو دل میں راج کر رہے ہیں ؟ ان سب انکر کو دیکھکر ان سے مکتی پانے کی کوشش وہ کرینگے . یعنی ہمیشہ نڈر بننے کی ان کی کوشش رہے گی . وہ ہر کام شسٹ یا سنیم میں رہ کر کرینگے . زبان سنیم، کام سنیم، من سنیم، یہ ان کی روزانہ کی سادھنا رہے گی . ان کو چاہئے کہ اپنی گذر اوقات جہاں تک ہو سکے اپنے جسم کی محنت پر چلائیں . وہ اپنے تجربے نجی، خاندانی اور سماجی تینوں طرح کے دائرے میں کرینگے . یہ سارا جیون بہتری کا بنیادی کام پہلا کام ہوگا.

پڑھائی پر زور .

دوسری بات انہیں یہ کرنی ہوگی کہ روزانہ لگاتار پڑھتے رہنا ہوگا . لوک جیون کی جتنی چھوٹی بڑی شاخیں ہیں، ان سب کے بارے میں وہ پڑھینگے . ہر طرح کی ٹھیک ٹھیک جانکاری ان کے پاس رہیگی . یہ نہیں کہ وہ بیکار کی جانکاری حاصل کرینگے . بلکہ جو جانکاری سماجی اور نجی جیون کی بھیتری اور باہری ترقی کے لئے ضروری ہے اس کو وہ حاصل کرتے رہینگے . جب اس طرح محنت سے کام ہوتا ہے تبھی سوراج ترقی کرتا ہے . سوراج میں ایسے محنتی پڑھنے والوں کی بہت ضرورت رہتی ہے . بنا پڑھائی کے کوئی سماج گہرا کام نہیں کر پائیگا . میں دیکھ رہا ہوں کہ اس طرف زیادہ کام نہیں ہو رہا ہے . میں اسے بنیادی کام تو نہیں کہونگا، لیکن ضروری اور اہمیت کا کہونگا .

دکھیوں کی سیوا کا کام .

تیسری بات یہ کرنی ہوگی کہ انہیں سماج کے ان لوگوں کی طرف دھیان دینا ہوگا جو سماج سے خارج سمجھے جاتے ہیں اور جن کی پروا نہ سماج کو ہے اور نہ سرکار کو . اس طرح کے جتنے کام ہیں ان کی طرف اس نئی

जमायत के लोगों को मुख़ातिब होना चाहिये. उनका फ़र्ज़ है कि बिना किसी फल की उम्मीद के, बेलाग तबियत से अपने काम में लगे रहें. उन्हें समझ लेना चाहिये कि उनके इस काम का नतीजा देर में निकलेगा और इस लिये उन्हें ज़रा भी घबड़ाने या उतावलेपन की ज़रूरत नहीं है सचमुच वह लोग चारों तरफ़ के फैले अंधेरे में एक दीपक की तरह काम करेंगे जिसे अंधेरे का कोई लिहाज़ ही नहीं रहता.

इनकार और सत्याग्रह.

उनका चौथा काम होगा—ग़लती को दूर करना चाहे वह ग़लतियाँ समाजी जीवन में दिखलाई पड़ें या सरकारी कामों में. यह ज़रूरी नहीं कि ग़लती को दूर करना या उसका इनकार ज़ाहिरी तौर पर किया जाय. लेकिन जहां ज़ाहिरा तौर पर इनकार करने का मौक़ा आए, वहां बिना किसी राग मोह के साफ़ साफ़ शब्दों में उसे जनता के सामने रखना और उसमे अपनी शख़्सियत ज़ाहिर करना उनका काम होगा इस तरह समाजी और सरकारी कामों के बारे में विचार करते हुए उनमें कहीं चूक मालूम पड़े तो उसे ज़ाहिर करना उनका फ़र्ज़ होगा.

कभी कभी उन चूकों को दूर करने के लिये अमली मुक़ाबले का मौक़ा भी आ सकता है. वह इस तरह ख़ुद बख़ुद किया जायेगा कि जिनके विरोध में होगा उन्हें भी प्यारा लगेगा क्योंकि उनकी सेवा के लिये ही वह होगा. उसे मुक़ाबले का नाम देने के बजाये हथियारी कार्रवाई कहना ही ठीक रहेगा, क्योंकि हथियारी कार्रवाई जिस पर की जाती है उसे भी वह प्यारी होती है. इसे सत्याग्रह भी कह सकते हैं. लेकिन आज सत्याग्रह का अर्थ गिर गया है. अच्छे से अच्छे शब्द भी नालायक़ हाथों में गिर जाते हैं और मामूली से मामूली शब्द भी अच्छे हाथों में उठ जाते हैं. मतलब यह कि ज़बान से इनकार और अमल में सत्याग्रह यह इस समाज का एक प्रोग्राम होगा.

सवालों के अहिन्सक हल.

इसके अलावा पांचवां काम उनका यह रहेगा कि समाजी जीवन में जो भारी मसले खड़े हुआ करते हैं, उनका अहिंसक हल खोज निकालें. उन्हें साबित करना होगा कि अहिंसक और नैतिक तरीक़े से वह मसले हल हो सकते हैं. अगर वह ऐसा साबित कर सके तो नैतिक और अहिंसक तरीक़ों पर लोगों का एतक़ाद या श्रद्धा बैठ सकती है. लोगों को नैतिक तरीक़े प्यारे तो होते ही हैं, लेकिन सामने नतीजा देखे बग़ैर उनका यक़ीन जम नहीं सकता. इस तरह इस समाज का पांचवाँ काम होगा आँखों देखे तजरबे से लोगों का यक़ीन साबित बनाना.

جماعت کے لوگوں کو مخاطب ہونا چاہئے ۔ اُن کا فرض ہے کہ بنا کسی پھل کی اُمید کے' بیلاگ طبیعت سے اپنے کام میں لگے رہیں ۔ انہیں سمجھ لینا چاہئے کہ ان کے اس کام کا نتیجہ دیر میں نکلیگا اور اس لئے انہیں ذرا گھبرانے یا اتاولے پن کی ضرورت نہیں ہے ۔ سچ مچ یہ لوگ چاروں طرف کے پھیلے اندھیرے میں دیپک کی طرح کام کرینگے جسے اندھیرے کا کوئی لحاظ ہی نہیں رہتا ۔

انکار اور ستیاگرہ ۔

اُن کا چوتھا کام ہوگا غلطی کو دور کرنا چاہے وہ غلطیاں انہیں سماجی جیون میں دکھلائی پڑیں یا سرکاری کاموں میں یہ ضروری نہیں کہ غلطی کو دور کرنا یا اُس کا انکار ظاہری طور پر کیا جائے ۔ لیکن جہاں ظاہرہ طور پر انکار کرنے کا موقعہ آئے' وہاں بنا کسی راگ موہ کے صاف صاف شبدوں میں اسے جنتا کے سامنے رکھنا اور اُس میں اپنی شخصیت ظاہر کرنا اُن کا کام ہوگا ۔ اس طرح سماجی اور سرکاری کاموں کے بارے میں وچار کرتے ہوئے اُن میں کہیں چوک معلوم پڑے تو اسے ظاہر کرنا اُن کا فرض ہوگا ۔

کبھی کبھی اُن چوکوں کو دور کرنے کے لئے عملی مقابلے کا موقعہ بھی آسکتا ہے ۔ وہ اس طرح خود بخود کیا جائیگا کہ جن کے ورودھ میں ہوگا انہیں بھی پیارا لگیگا کیونکہ اُن کی سیوا کے لئے ہی وہ ہوگا ۔ اسے مقابلے کا نام دینے کے بجائے ہتھیاری کارروائی کہنا ہی ٹھیک رہیگا' کیونکہ ہتھیاری کارروائی جس پر کی جاتی ہے اُسے بھی وہ پیاری ہوتی ہے ۔ اِسے ستیاگرہ بھی کہہ سکتے ہیں ۔ لیکن آج ستیاگرہ کا ارتھ گرگیا ہے ۔ اچھے سے اچھے شبد بھی نالائق ہاتھوں میں گر جاتے ہیں اور معمولی سے معمولی شبد بھی اچھے ہاتھوں میں اُٹھ جاتے ہیں ۔ مطلب یہ کہ زبان سے انکار اور عمل میں ستیاگرہ' یہ اس سماج کا ایک پروگرام ہوگا ۔

سوالوں کے اہنسک حل ۔

اِس کے علاوہ پانچواں کام ان کا یہ رہیگا کہ سماجی جیون میں جو بھاری مسئلے کھڑے ہوا کرتے ہیں' اُن اہنسک حل وہ کھوج نکالیں ۔ اُنہیں ثابت کرنا ہوگا کہ اہنسک اور نیتک طریقے سے وہ مسئلے حل ہو سکتے ہیں ۔ اگر وہ ایسا ثابت کرسکے تو نیتک اور اہنسک طریقوں پر لوگوں کا اعتقاد یا سردھا بیٹھ سکتی ہے ۔ لوگوں کو نیتک طریقے پیارے تو ہوتے ہی ہیں' لیکن سامنے نتیجہ دیکھے بغیر اُن کا یقین جم نہیں سکتا ۔ اس طرح اس سماج کا پانچواں کام ہوگا ۔ آنکھوں دیکھے تجربے سے لوگوں کا یقین ثابت بنانا ۔

भू यज्ञः-सर्वोदय का पांचवां काम.

इस तरह का पंच पहलू काम सर्वोदय समाज को करना होगा. मैंने अपनी ताक़त भर पांचों तरह के कामों में हाथ बटाया है. अभी जो काम मैंने उठाया है, वह पांचवां है. भूमि का सवाल हल करने में ग़लत और ग़ैर अख़लाक़ी तरीक़े परदेसों में अपनाए गये हैं, जिन्हें यह लोग यश कहते हैं और इस तरफ़ कुछ खिंचाव हमारे पढ़े लिखों में भी है. उन तरीक़ों से दिमाग़ साफ़ हो और अच्छे नैतिक तरीक़ों से भूमि का मसला हल हो, ऐसी कोशिश मैं कर रहा हूँ. मैं जानता हूं कि यह मुश्किल काम है. आसान समझ कर इसे मैंने नहीं उठाया है. यह इतना मुश्किल है कि अपनी अक़्ल से मैं इसे नहीं उठा सकता था, बल्कि वह सहज ही मेरे पास आ पहुंचा है. मैं तो इसे परमेश्वर का आदेश मानता हूं और जब आ पहुंचा है तो उतनी क़ाबलियत है या नहीं, इसे शक की निगाह से सोचना या हिचकिचाना ठीक नहीं समझता हूँ. मुझे मान लेना चाहिये कि जिस ताक़त ने यह काम हमारे सामने ला खड़ा किया है, वही ताक़त उसके पूरा करने के लिये भी ज़रूरी बल देगी इस यक़ीन और भरोसे से, बहुत नम्रता के साथ मैंने यह काम उठाया है और मैं इस वक़्त सर्वोदय में मानने वाले हर शख़्स से हमदर्दी और मदद चाहता हूं.

इस तरह ग़ैर जानिबदार समाज के यह पांच काम होंगे—जीवन बेहतरी, पढ़ाई और जानकारी, दुखियों की सेवा, इनकार व सत्याग्रह और समाज के मसलों का अहिंसक हल.

بھویگیہ: سرودے کا پانچواں کام ۔

اس طرح کا پنچ پہلو کام سرودے سماج کو کرنا ہوگا. میں نے اپنی طاقت بھر پانچوں طرح کے کاموں میں ہاتھ بٹایا ہے . ابھی جو کام میں نے اٹھایا ہے' وہ پانچواں ہے . بھومی کا سوال حل کرنے میں غلط اور غیر اخلاقی طریقے پردیشوں میں اپنائے گئے ہیں' جنہیں یہ لوگ یش کہتے ہیں اور اس طرف کچھ کھینچاؤ ہمارے پڑھے لکھوں میں بھی ہے . ان طریقوں سے دماغ صاف ہو اور اچھے نیتک طریقوں سے بھومی کا مسئلہ حل ہو' ایسی کوشش میں کر رہا ہوں . میں جانتا ہوں کہ یہ مشکل کام ہے . آسان سمجھ کر اسے میں نے نہیں اٹھایا ہے . یہ اتنا مشکل ہے کہ اپنی عقل سے میں اسے نہیں اٹھا سکتا تھا' بلکہ وہ سہج ہی میرے پاس آ پہونچا ہے . میں تو اسے پرمیشور کا آدیش مانتا ہوں اور جب آ پہونچا ہے تو اتنی قابلیت ہے یا نہیں' اسے شک کی نگاہ سے سوچنا یا ہچکچانا ٹھیک نہیں سمجھتا ہوں . مجھے مان لینا چاہئے کہ جس طاقت نے یہ کام ہمارے سامنے لا کھڑا کیا ہے' وہی طاقت اسکے پورا کرنے کے لئے بھی ضروری بل دیگی . اس یقین اور بھروسے سے' بہت نمرتا کے ساتھ میں نے یہ کام اٹھایا ہے اور میں اس وقت سرودے میں ماننے والے ہر شخص سے ہمدردی اور مدد چاہتا ہوں .

اس طرح غیر جانبدار سماج کے یہ پانچ کام ہونگے ——جیون بہتری' پڑھائی اور جانکاری' دکھیوں کی سیوا' انکار و ستیاگرہ اور سماج کے مسئلوں کا اہنسک حل .

बैलगाड़ी और सरकार

[अक्तूबर के 'नया हिन्द' में डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का बैलगाड़ी सम्बन्धी लेख 'ग्राम उद्योग पत्रिका' से लेकर हमने दिया था. उस लेख पर हिन्द सरकार के होम महकमे के सेक्रेटरी ने कुमारप्पा जी को जो ख़त लिखा है और उसका जो जवाब, कुमारप्पा जी ने दिया है वह 'ग्राम उद्योग पत्रिका' से लेकर हम नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

होम सेक्रेटरी का ख़त.

हमें सितम्बर महीने की 'ग्राम उद्योग पत्रिका' की एक कापी मिली है जिसमें आपने लिखा है कि सरकार का

بیل گاڑی اور سرکار

[اکتوبر کے ' نیا ہند ' میں ڈاکٹر جے . سی . کمارپا کا بیل گاڑی سمبندھی لیکھ ' گرام ادیوگ پتریکا' سے لیکر ہم نے دیا تھا . اس لیکھ پر ہند سرکار کے ہوم محکمے کے سکریٹری نے کمارپا جی کو جو خط لکھا ہے اور اس کا جو جواب کمارپا جی نے دیا ہے وہ 'گرام ادیوگ پتریکا' سے لے کر ہم نیچے دے رہے ہیں —ایڈیٹر]

ہوم سکریٹری کا خط

ہمیں ستمبر مہینے کی 'گرام ادیوگ پتریکا' کی ایک کاپی ملی ہے جس میں آپ نے لکھا ہے کہ سرکار کا کچھ

कुछ सड़कों पर बैलगाड़ी आने की मनाही कर देना एक अफ़सोस नाक और बुरी बात है. आपने यह भी बताया है कि इस तरह की पाबन्दियों से यह ज़ाहिर होता है कि जुदा जुदा लोगों में क्योंकर बे-सोचे-समझे भेद भाव बरता जाता है. लेकिन पाबन्दी का जो मक़सद है उसके सिलसिले में आपको कुछ ग़लतफ़हमी सी हुई दीखती है और इसलिये मैं बताना चाहता था कि असली बात क्या है.

आप यह तो मानते ही हैं कि आमद-रफ़्त के क़ायदों में बुनियादी ख़याल चलने वालों की हिफ़ाज़त का रहता है. इस सिलसिले में यह सवाल उठता है कि सड़कों पर आना-जाना एक-सा कैसे बना रहे और भीड़ जमा न होने पाये. इस बारे में बहुत से देशों में तजुरबे के बाद यह तय पाया कि तेज़ चाल और धीमी चाल की सवारियों को अलग अलग रखा जाये. ज़ाहिर है कि यह बंटवारा सब सड़कों पर नहीं किया जा सकता. लेकिन इसके यह माने नहीं होते कि जहां किया जा सकता है वहां भी नहीं किया जाये.

आपने देखा होगा कि नई दिल्ली में कुछ सड़कों पर साईकिलों के लिये अलग पगडंडियां सी बना दी गई हैं. इसके कारन अगर कोई यह समझ बैठे कि साईकिल सवार को नीचा समझा गया और उसे सड़क पर (जहां तेज़ सवारी यानी मोटर-बस-ट्रक वग़ैरा चला करती हैं) नहीं चलने दिया गया तो यह ज़ियादती होगी. यही असूल बैलगाड़ियों पर लागू है जिसकी वजह से कुछ सड़कों पर उन्हें आने की इजाज़त नहीं है. अव्वल तो वह बहुत धीरे धीरे चलती हैं. दूसरे उनसे राहगीर को ख़तरा है क्योंकि अगर जानवर अचानक डर के मारे ज़रा भी बिदका और थोड़ा सा बे-क़ाबू हुआ तो पास में पैदल आने जाने वालों और दूसरी सवारियों को काफ़ी नुक़सान पहुंच सकता है. यही वजह है कि तंग सड़कों पर या ज़रा चौड़ी सड़कों पर भी जहां तेज़ सवारियां चला करती हैं बैलगाड़ी की इजाज़त नहीं है. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं लगाया जा सकता कि बैलगाड़ी वाले का हक़ छीना जा रहा है—जो असर आपके लेख से पैदा होता है. आपने अपने लेख में कहा है कि आप सड़क पर लारियां जाने की मनाही करवा देना पसंद करेंगे जहां उनसे सबको ख़तरा है. बात असल में यह है कि इस तरह की सड़कें हमारे देश में पहले से मौजूद हैं जिन पर लारी चलाने की इजाज़त नहीं है.

मुझे उम्मीद है कि इस ख़त से आपको यक़ीन हो जायेगा कि जो पाबन्दियां लागू की गई हैं उनका सिर्फ़ एक ही मक़सद है—आमद-रफ़्त की संभाल.

کچھ سڑکوں پر بیل گاڑی جانے کی مناہی کر دینا ایک افسوس ناک اور بری بات ہے ۔ آپ نے یہ بھی بتایا ہے کہ اِسطرح کی پابندیوں سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ جدا جدا لوگوں میں کیوں کر بے سوچے سمجھے بھید بھاؤ برتا جاتا ہے ۔ لیکن پابندی کا جو مقصد ہے اُس کے سلسلے میں آپ کو کچھ غلط فہمی سی ہوئی دیکھتی ہے اور اِس لئے میں بتانا چاہتا تھا کہ اصلی بات کیا ہے ۔

آپ یہ تو مانتے ہی ہیں کہ آمدرفت کے قاعدوں میں بنیادی خیال چلنے والوں کی حفاظت کا رہتا ہے ۔ اِس سلسلے میں یہ سوال اُٹھتا ہے کہ سڑکوں پر آنا جانا ایک سا کیسے بنا رہے اور بھیڑ جمع نہ ہونے پائے ۔ اِس بارے میں بہت سے دیشوں میں تجربے کے بعد یہ طے پایا کہ تیز چال اور دھیمی چال کی سواریوں کو الگ الگ رکھا جائے ۔ ظاہر ہے کہ یہ بٹوارا سب سڑکوں پر نہیں کیا جا سکتا ۔ لیکن اس کے یہ معنے نہیں ہوتے کہ جہاں کیا جا سکتا ہے وہاں بھی نہیں کیا جائے ۔

آپ نے دیکھا ہوگا کہ نئی دلی میں کچھ سڑکوں پر سائیکلوں کے لئے الگ پگڈنڈیاں سی بنا دی گئی ہیں ۔ اس کے کارن اگر کوئی یہ سمجھ بیٹھے کہ سائیکل سوار کو نیچا سمجھا گیا اور اُسے سڑک پر (جہاں تیز سواری یعنی موٹر بس ۔ ٹرک ، وغیرہ چلا کرتی ہیں) نہیں چلنے دیا گیا تو یہ زیادتی ہوگی ۔ یہی اصول بیل گاڑیوں پر لاگو ہے جس کی وجہ سے کچھ سڑکوں پر انہیں آنے کی اجازت نہیں ہے ۔ اول تو وہ بہت دھیرے دھیرے چلتی ہیں ، دوسرے ان سے راہگیر کو خطرہ ہے کیونکہ اگر جانور اچانک ڈر کے مارے ذرا بھی بدکا اور تھوڑا سا بے قابو ہوا تو پاس میں پیدل آنے جانے والوں اور دوسری سواریوں کو کافی نقصان پہنچ سکتا ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ تنگ سڑکوں پر یا ذرا چوڑی سڑکوں پر جہاں تیز سواریاں چلا کرتی ہیں بیل گاڑی کی اجازت نہیں ہے ۔ اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں لگایا جا سکتا کہ بیل گاڑی والے کا حق چھینا جا رہا ہے — جو اثر آپ کے لیکھ سے پیدا ہوتا ہے ۔ آپ نے اپنے لیکھ میں کہا ہے کہ آپ سڑک پر لاریاں جانے کی مناہی کروا دینا پسند کریں گے جہاں اُن سے سب کو خطرہ ہے ۔ بات اصل میں یہ ہے کہ اس طرح کی سڑکیں ہمارے دیش میں پہلے سے موجود ہیں جن پر لاری چلانے کی اجازت نہیں ہے ۔

مجھے اُمید ہے کہ اس خط سے آپ کو یقین ہو جائیگا کہ جو پابندیاں لاگو کی گئی ہیں اُن کا صرف ایک ہی مقصد ہے — آمدرفت کی سنبھال ۔

कुमारप्पा जी का जवाब.

माफ़ कीजिये मुझे लगता है कि आपकी सफ़ाई न तो इतिहास के लिहाज़ से सही है और न उस पर विश्वास ही जमता है. शायद बीस साल पहले एक आन्दोलन चलाया गया कि अच्छी सड़कों पर रबड़ की टायर वाली गाड़ियां ही चलाई जायें, और यह कहा गया कि बैलगाड़ियों के पहियों के लोहे से उन सड़कों को बहुत नुकसान पहुंचता है. तब से सड़कों पर पाबन्दी लगाना शुरू कर दी गई. यह है असली वजह न कि आमद-रफ्त का संभाल जो कि आप बताते हैं.

अलग साईकिल पगडंडियों का आपका हवाला बेतुका है और जो मुकाबला आपने किया है वह भी भौंडा है. साइकिल के रास्ते जो अलग बनाये तो उन्हीं सड़क पर बनाये गये जिस पर मोटर वग़ैरा चलते हैं. उसमें कोई मनाही या पाबन्दी की बात नहीं है बल्कि सड़क का कुछ हिस्सा एक ख़ास जमाअत (साईकिल सवार) के लिये मुक़र्रर कर दिया गया.

और न दूसरे देशों का हवाला देना ही ठीक होगा. हमें तो अपनी ज़रूरतों के मुताबिक़ अपने सवाल हल करने हैं. आंख मींच कर दूसरों की नक़ल नहीं करनी है.

आपने जो जानवर के बिदकने की बात कही उससे पता चलता है आपकी दलील कितनी खोखली है. क्या यह जानवर दूसरी सड़कों पर नहीं बिदक सकते ? अगर आपकी बात का सही मतलब निकाला जाये तो यही होगा कि किसी सड़क पर मोटर व जानवर-गाड़ी एक साथ नहीं चल सकते.

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस तरह की वाहियात बातें कह कर और बे-सिर-पैर की दलीलें देकर आप जो जनता को बेवकूफ़ बनाना चाहते हैं वह धोके की टट्टी है.

आप एक घिसे-घिसाये प्रोफ़ेसर सरीखे लगते हैं. मेरी ख़्वाहिश है आप फिर से इस विषय पर एक लेख लिखिये मेहरबां ! मेहरबां !

[होम सेक्रेट्री की दलील अगर पूरी उतारी जाये तो तेज़ सवारी वाली सड़कों पर 'इन्सान' जैसी सुस्त सवारी की भी गुंजायश नहीं हो सकती. और शायद इस पूरी पाबन्दी के बाद ही हमारी सरकार आमद-रफ्त का सवाल लाजवाब ढंग से हल कर सकेगी. न रहेगा बांस न बजेगी बांसरी !—एडीटर]

کمارپا جی کا جواب .

معاف کیجئے مجھے لگتا ہے کہ آپ کی صفائی نہ تو اتہاس کے لحاظ سے صحیح ہے اور نہ اُس پر وشواس ہی جمتا ہے . شائد بیس سال پہلے ایک آندولن مچایا گیا کہ اچھی سڑکوں پر ربر کی ٹائر والی گاڑیاں ہی چلائی جائیں' اور یہ کہا گیا کہ بیل گاڑیوں کے پہیوں کے لوہے سے اُن سڑکوں کو بہت نقصان پہنچتا ہے . تب سے سڑکوں پر پابندی لگانا شروع کردی گئی . یہ ہے اصلی وجہ نہ کہ آمد رفت کا سنبھال جو کہ آپ بتاتے ہیں .

الگ سائیکل پگڈنڈیوں کا آپکا حوالہ بے تکا ہے اور جو مقابلہ آپ نے کیا ہے وہ بھی بھونڈا ہے . سائیکل کے راستے جو الگ بنائے تو اُسی سڑک پر بنائے گئے جس پر موٹر وغیرہ چلتے ہیں . اس میں کوئی منادی یا پابندی کی بات نہیں ہے بلکہ سڑک کا کچھ حصہ ایک خاص جماعت (سائیکل سوار) کے لئے مقرر کردیا گیا .

اور نہ دوسرے دیشوں کا حوالہ دینا ہی ٹھیک ہوگا . ہمیں تو اپنی ضرورتوں کے مطابق اپنے سوال حل کرنے ہیں . آنکھ مونچ کر دوسروں کی نقل نہیں کرنی ہے .

آپ جو جانور کے بدکنے کی بات کہی اس سے پتہ چلتا ہے آپ کی دلیل کتنی کھوکھلی ہے . کیا یہ جانور دوسری سڑکوں پر نہیں بدک سکتے ؟ اگر آپ کی بات کا صحیح مطلب نکالا جائے تو یہی ہوگا کہ کسی سڑک پر موٹر و جانور گاڑی ایک ساتھ نہیں چل سکتے .

میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ اِس طرح کی لغویات باتیں کہکر اور بے سر پیر کی دلیلیں دے کر آپ جو جنتا کو بیوقوف بنانا چاہتے ہیں وہ دھوکے کی ٹٹی ہے .

آپ ایک گھسے گھسائے پروفیسر سریکھے لگتے ہیں . میری خواہش ہے آپ پھر سے اِس وشے پر ایک لیکھ لکھئے . مہربان ! مہربان !

[ہوم سکریٹری کی دلیل اگر پوری اُتاری جائے تو تیز سواری والی سڑکوں پر 'انسان' جیسی سست سواری کی بھی گنجائش نہیں ہوسکتی . اور شاید اِس پوری پابندی کے بعد ہی ہماری سرکار آمدرفت کا سوال لاجواب ڈھنگ سے حل کر سکیگی . نہ رہے گا بانس نہ بجے گی بانسری !—ایڈیٹر]

हमारा उनका दिल एक है

(जी. रामचन्द्रन)

पिछले अक्तूबर के महीने में मैं झरग्राम (बंगाल) गया था जहां एक अंतरक़ौमी सैमीनार में शिरकत की— उसमें कई देशों के लोग शामिल हुए थे. पाकिस्तान की तरफ़ से ढाका से तीन मुसलमान जवानों ने शिरकत की थी. यह तीनों बहुत ही नेक, होशियार और फुरतीले मालूम पड़ते थे. उनकी आंखों में चमक थी और उन्हें चीज़ों की जानकारी का शौक़ था. मैंने उनसे रचनात्मक प्रोग्राम के बारे में ख़ास तौर से बातें कीं और बताया कि हम वर्धा में क्या कर रहे हैं. उन्होंने इसमें बहुत दिलचस्पी ली और इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने इम्तहान के बाद जुलाई 1952 में वर्धा आने का वादा किया.

उन तीन में से एक को अपने यहां के बड़े वज़ीर लियाक़त अली ख़ां की पालिसी से बड़ा असन्तोश था और वह उसकी बहुत नुक़्ताचीनी करता था, ठीक उसी तरह जैसे हम यहां अपने देश में बड़े वज़ीर नेहरू की पालिसी की नुक़्ताचीनी करते हैं. लेकिन इस बारे में हमारी राय एक थी कि मौजूदा हालात में यह ख़ुशी की बात है कि हिन्दुस्तान की हकूमत की बागडोर जवाहरलाल नेहरू के हाथों में है और पाकिस्तान की लियाक़त अली ख़ां के हाथों में. इस बारे में भी हमारी राय एक थी कि यह दोनों बड़े वज़ीर खुले दिमाग़ के हैं और तरक़्क़ी पसन्द राजकाजी नेता हैं जिन्होंने अपनी आला क़ाबलियत और दानिशमन्दी से अपने अपने देशों के सिरफिरों और तंग ज़हनियत वालों की दाल नहीं गलने दी है. जब हम विदा हुए तो बहुत अच्छे दोस्त बन चुके थे.

इसके बाद अचानक ख़बर आई कि पाकिस्तान के बड़े वज़ीर गोली से मार डाले गये. मुझे यह संगीन और दर्दनाक ख़बर रेल में मिली जब मैं वर्धा लौट रहा था. रेल में बैठे हुए मुसाफ़िर इसी पर बात करने लगे. एक ने कहा कि पाकिस्तानी बड़े वज़ीर ने जो सैकड़ों-हज़ारों का क़त्ल कराया था इसका फल उन्हें परमात्मा ने दिया. मैंने एक चुनौती के साथ कहा कि तब तो गांधीजी की मौत भी इसी तरह से काम की सज़ा समझी जानी चाहिये. मेरी बात सुनकर वह भाई चुप हो गये.

वर्धा पहुँचने पर मैंने अपने तीनों दोस्तों को ख़त लिखे जिन में उनके ज़बरदस्त नुक़सान पर अफ़सोस ज़ाहिर किया और रेल की बात चीत का भी ज़िकर किया. उन तीनों ने मुझे जवाब भेजे हैं. उनकी चिट्ठियों में से कुछ

ہمارا اُن کا دل ایک ہے

(جی . رام چندرن)

پچھلے اکتوبر کے مہینے میں میں جھرگرام (بنگال) گیا تھا جہاں ایک انٹر قومی سیمینار میں شرکت کی —اُس میں کئی دیشوں کے لوگ شامل ہوئے تھے . پاکستان کی طرف سے ڈھاکہ سے تین مسلمان جوانوں نے شرکت کی تھی . یہ تینوں بہت ہی نیک، ہوشیار اور پھرتیلے معلوم پڑتے تھے . اُن کی آنکھوں میں چمک تھی اور انہیں چیزوں کی جانکاری کا شوق تھا . میں نے اُن سے رچناتمک پروگرام کے بارے میں خاص طور سے باتیں کی اور بتایا کہ ہم وردھا میں کیا کر رہے ہیں . انہوں نے اِس میں بہت دلچسپی لی اور اِتنے پربھاوت ہوئے کہ انہوں نے اپنے امتحان کے بعد جولائی 1952 میں وردھا آنے کا وعدہ کیا .

اُن تین میں سے ایک کو اپنے یہاں کے بڑے وزیر لیاقت علی خاں کی پالیسی سے بڑا اسنتوش تھا اور وہ اُس کی بہت نکتہ چینی کرتا تھا' ٹھیک اُسی طرح جیسے ہم یہاں اپنے دیش میں بڑے وزیر نہرو کی پالیسی کی نکتہ چینی کرتے ہیں . لیکن اِس بارے میں ہماری رائے ایک تھی کہ موجودہ حالات میں یہ خوشی کی بات ہے کہ ہندستان کی حکومت کی باگ‌ڈور جواہر لال نہرو کے ہاتھوں میں ہے اور پاکستان کی لیاقت علی خاں کے ہاتھوں میں . اِس بارے میں بھی ہماری رائے ایک تھی کہ یہ دونوں بڑے وزیر کھلے دماغ کے ہیں اور ترقی پسند راج کاجی نیتا ہیں جنہوں نے اپنی اعلیٰ قابلیت اور دانش مندی سے اپنے اپنے دیشوں کے سر پھروں اور تنگ ذہنیت والوں کی دال نہیں گلنے دی ہے . جب ہم وداع ہوئے تو بہت اچھے دوست بن چکے تھے .

اِس کے بعد اچانک خبر آئی کہ پاکستان کے بڑے وزیر گولی سے مار ڈالے گئے . مجھے یہ سنگین اور دردناک خبر ریل میں ملی جب میں وردھا لوٹ رہا تھا . ریل میں بیٹھے ہوئے مسافر اِسی پر بات کرنے لگے . ایک نے کہا کہ پاکستانی بڑے وزیر نے جو سیکڑوں ہزاروں کا قتل کرایا تھا اِس کا پھل اُنہیں پرماتما نے دیا . میں نے ایک چنوتی کے ساتھ کہا کہ تب تو گاندھی جی کی موت بھی اِسی طرح کے کام کی سزا سمجھی جانی چاہئے. میری بات سن کر وہ بھائی چپ ہوگئے .

وردھا پہنچنے پر میں نے اپنے تینوں دوستوں کو خط لکھے جن میں اُن کے زبردست نقصان پر افسوس ظاہر کیا . اور ریل کی بات چیت کا بھی ذکر کیا . اُن تینوں نے مجھے جواب بھیجے ہیں. اُن کی چٹھیوں میں سے کچھ

हिस्से में नीचे दे रहा हूँ. इस से पता चलता है कि हमारा उनका दिल एक है, और अगर हमारे दोनों देशों के नौजवानों को मौका मिले तो हम दोनों अच्छे और गहरे दोस्त बन सकते हैं. शायद जवानी का जोर ऐसी ही चीज़ है जो क़ौमी हदों को आर-पार से काट कर दिलों को एक कर दे सकती है.

1. लियाक़त अली ख़ां की दर्दनाक मौत पर आपके सदमे को जान कर मेरा अपना सदमा कुछ कम पड़ा. आप उस भारत के नमूने हैं जो चाहता है कि हमारे दोनों देशों में सच्चा और नज़दीकी रिश्ता रहे. हमें और आपको उन लोगों में से होना चाहिये जो यह दिखा सकें कि दोनों देशों में दोनों क़ौमें इतने पास पास ख़ुशी के साथ रह सकती हैं.

मुझे गांधीवादी अर्थ शास्त्र में बहुत दिलचस्पी है. क्या इस सिलसिले में आप कुछ किताबें मेरे पास भेज सकेंगे. ? कम से कम सर्वोदय प्लान तो भेज ही दीजिये. इसका मैंने बहुत नाम सुना है.

मैं वर्धा ज़रूर आना चाहता हूँ. मेरे साथ वह दोनों दोस्त भी होंगे. मुझे सैमीनार की, आपकी याद नहीं भूलेगी. मैं आपको भारत की सच्ची औलाद मानता हूँ. उस सैमीनार से हमें काफ़ी अच्छी बातें सीखने को मिलीं. मेरी दुआयें आपके और आपके साथ वर्धा में जो काम करते हैं उनके साथ हैं.

2. हमारे बड़े वज़ीर की मौत पर आपका दुख जानकर मुझे ज़ाती तौर पर और मेरे दोस्तों को थोड़ी-बहुत तसल्ली हुई और हमारा ग़म कम हुआ. मुझे यक़ीन है कि आपकी, मेरी और बहुत से दूसरे भाई-बहनों की जो तमन्ना है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लोग भाई चारे और मेल से रहें वह एक न एक दिन ज़रूर पूरी होगी. सिरफिरों और तंग नज़र वालों का ज़माना अब ख़त्म होने वाला है. ऐसे पागलों की सनक और जुनून का क्या कहा जाय जो आज महात्माजी की जान लेकर हिन्दुस्तान को चोट पहुँचाते हैं और कल लियाक़त को मार कर पाकिस्तान को मुसीबत में डालते हैं. यह चोट पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को ही नहीं पहुँचती बल्कि सारी दुनिया को पहुंचती है. तीन बरस के अरसे में ही दुनिया एक बड़ा ज़बरदस्त हिंदू और एक बेहतरीन दिमाग़ वाला राजकाजी नेता खो बैठी है महज़ इन पागलों की वजह से. आप समझ सकते हैं कि यहां के लोगों को कितना गहरा धक्का लगा है. वह एक दम बयान से बाहर है. मेरा ख़्याल है कि हिन्दुस्तान के ज़्यादातर लोगों को भी धक्का लगा और दुख हुआ. हमारे राजकाजी भेदभाव होते हुए भी इस बात का होना बहुत माने रखता है.

حصے میں نیچے دے رہا ہوں . ان سے پتہ چلتا ہے کہ ہمارا ان کا دل ایک ہے' اور اگر ہمارے دونوں دیشوں کے نوجوانوں کو موقع ملے تو ہم دونوں اچھے اور گہرے دوست بن سکتے ہیں . شاید جوانی کا زور ایسی ہی چیز ہے جو قومی حدوں کو آرپار سے کاٹ کر دلوں کو ایک کردے سکتی ہے .

1. لیاقت علی خاں کی دردناک موت پر آپ کے صدمے کو جان کر میرا اپنا صدمہ کچھ کم ہوا . آپ اس بھارت کے نمونے ہیں جو چاہتا ہے کہ ہمارے دونوں دیشوں میں سچا اور نزدیکی رشتہ رہے . ہمیں اور آپ کو ان لوگوں میں سے ہونا چاہئے جو یہ دکھا سکیں کہ دونوں دیشوں میں دونوں قومیں اتنے پاس پاس خوشی کے ساتھ رہ سکتی ہیں .

مجھے گاندھی وادی ارتھ شاستر میں بہت دلچسپی ہے . کیا اس سلسلے میں آپ کچھ کتابیں میرے پاس بھیج سکیںگے ؟ کم سے کم سرودے پلان تو بھیج ہی دیجئے . اس کا میں نے بہت نام سنا ہے .

میں وردھا ضرور آنا چاہتا ہوں . میرے ساتھ وہ دونوں دوست بھی ہوںگے . مجھے سیمینار کی' آپ کی یاد نہیں بھولےگی . میں آپ کو بھارت کی سچی اولاد مانتا ہوں . اس سیمینار سے ہمیں کافی اچھی باتیں سیکھنے کو ملیں . میری دعائیں آپ کے اور آپ کے ساتھ وردھا میں جو کام کرتے ہیں ان کے ساتھ ہیں .

2. ہمارے بڑے وزیر کی موت پر آپکا دکھ جان کر مجھے ذاتی طور پر اور میرے دوستوں کو تھوڑی بہت تسلی ہوئی اور ہمارا غم کم ہوا . مجھے یقین ہے کہ آپ کی' میری اور بہت سے دوسرے بھائی بہنوں کی یہ جو تمنا ہے کہ ہندستان اور پاکستان کے لوگ بھائی چارے اور میل سے رہیں وہ ایک نہ ایک دن ضرور پوری ہوگی . سر پھروں اور تنگ نظر والوں کا زمانہ اب ختم ہونے والا ہے . ایسے پاگلوں کی سنک اور جنون کا کیا کہا جائے جو آج مہاتما جی کی جان لیکر ہندستان کو چوٹ پہنچاتے ہیں اور کل لیاقت کو مار کر پاکستان کو مصیبت میں ڈالتے ہیں . یہ چوٹ پاکستان اور ہندستان کو ہی نہیں پہنچتی بلکہ ساری دنیا کو پہنچتی ہے . تین برس کے عرصے میں ہی دنیا ایک بڑا زبردست ہندو اور ایک بہترین دماغ والا راج کاجی نیتا کھو بیٹھی ہے محض ان پاگلوں کی وجہ سے . آپ سمجھ سکتے ہیں کہ یہاں کے لوگوں کو کتنا گہرا دھکا لگا ہے . وہ ایک دم بیان سے باہر ہے . میرا خیال ہے کہ ہندستان کے زیادہ تر لوگوں کو بھی دھکا لگا اور دکھ ہوا . ہمارے راج کاجی بھید بھاؤ ہوتے ہوئے بھی اس بات کا ہونا بہت معنی رکھتا ہے .

हिन्दुस्तान के चुनाव में वहां पर सब को बहुत दिलचस्पी है. आप हिन्दुस्तान वाले बड़े ख़ुशक़िसमत हैं कि चंद महीनों के अन्दर एक ख़ालिस लोकशाही पार्लियामेन्ट खड़ी कर लेंगे. मैं आपसे अगले साल जुलाई के बाद इम्तहान ख़त्म होने पर वर्धा में मिलूंगा.

3. हमदर्दी से भरी आपकी चिट्ठी पाकर मेरे अन्दर ख़ुशी की लहर दौड़ गई. यह वह चीज़ है जो हमारे दिलों और देशों को सचमुच मिलाती है. मुझे तो ऐसा महसूस हुआ कि हम एक दूसरे के बहुत ही नज़दीक आ गये हैं—सिर्फ़ इस वजह से नहीं कि आपने हमारे साथ हमदर्दी दिखलाई बल्कि यह और भी गहरे जाती है.

मैंने 'स्टेट्स मैन' में पढ़ा कि हिन्दुस्तान के आगे के फिर-बनाव के सम्बन्ध में लाखों-करोड़ों ग़रीबों की तरफ़ से प्लानिंग कमीशन से बात करने के वास्ते विनोबा जी दिल्ली आये हैं. मुझे यक़ीन है कि उन्हें अपने काम में कामयाबी मिलेगी.

कुमारप्पाजी के चीन जाने की ख़बर भी मैंने पढ़ी. मेहरबानी करके अपने साथियों से मेरा मुहब्बत भरा सलाम कहियेगा.

—'ग्राम उद्योग पत्रिका' से

अक्सर पूछा जाता है कि मैं यंत्र या मशीन, के ख़िलाफ़ हूं या नहीं ?

"जब मैं समझता हूँ कि मेरा शरीर ही एक बड़ी नाज़ुक मशीन है तब यंत्रों—मशीनों के ख़िलाफ़ होकर मैं कहां रह सकता हूं ?...मेरा विरोध यंत्रों के सम्बन्ध में फैले हुये दीवानेपन के साथ है, यंत्रों के साथ नहीं. मेहनत का बचाव करने वाली मशीनों के बारे में लोगों का जो दीवानापन है उसी से मेरा विरोध है. मेहनत की बचत इस हद तक की जा रही है कि हज़ारों को आख़िर भूकों मरना पड़ता है और उन्हें बदन ढकने तक को कुछ नहीं मिलता. मैं भी वक़्त और मेहनत की बचत ज़रूर चाहता हूं, लेकिन वह मुट्ठी भर आदमियों के लिये नहीं, बल्कि तमाम इन्सानी समाज के लिए. वक़्त और मेहनत का बचाव करके मुट्ठी भर आदमी दौलतमंद हो बैठें, यह मेरे लिये नाक़ाबिल बरदाश्त है. मैं तो चाहता हूँ कि हर एक का समय और मेहनत बच जाये, सब को खाना मिल सके, सब पहन-ओढ़ सकें, सब की तरक़्क़ी यानी 'सर्वोदय' हो. यही मेरी तमन्ना है. आज यंत्रों के कारन लाखों की पीठ पर मुट्ठी भर आदमी सवार हो बैठे हैं और उन्हें सता रहे हैं, क्योंकि इन मशीनों के चलाने की जड़ में लालच है, धन की लालसा है और जन-कल्यान की भावना का कहीं पता ही नहीं है."

—गांधीजी

ہندستان کے چناؤ میں وہاں پر سب کو بہت دلچسپی ہے ۔ آپ ہندستان والے بڑے خوش قسمت ہیں کہ چند مہینوں کے اندر ایک خالص لوک شاہی پارلیامنٹ کھڑی کر لینگے ۔ میں آپ سے اگلے سال جولائی کے بعد امتحان ختم ہونے پر وردھا میں ملونگا ۔

3. ہمدردی سے بھری آپ کی چٹھی پا کر میرے اندر خوشی کی لہر دوڑ گئی ۔ یہ وہ چیز ہے جو ہمارے دلوں اور دیشوں کو سچ مچ ملاتی ہے ۔ مجھے تو ایسا محسوس ہوا کہ ہم ایک دوسرے کے بہت ہی نزدیک آگئے ہیں—صرف اس وجہ سے نہیں کہ آپ نے ہمارے ساتھ ہمدردی دکھلائی بلکہ یہ اور بھی گہرے جاتی ہے ۔

میں نے اسٹیٹس مین میں پڑھا کہ ہندستان کے آگے کے پھر بناؤ کے سمبندھ میں لاکھوں کروڑوں غریبوں کی طرف سے پلاننگ کمیشن سے بات کرنے کے واسطے ونوبا جی دلی آئے ہیں ۔ مجھے یقین ہے کہ انہیں اپنے کام میں کامیابی ملیگی ۔

کمارپا جی کے چین جانے کی خبر بھی میں نے پڑھی ۔ مہربانی کر کے اپنے ساتھیوں سے میرا محبت بھرا سلام کہیگا ۔

—'گرام ادیوگ پتریکا' سے

اکثر پوچھا جاتا ہے کہ میں ینتر یا مشین کے خلاف ہوں یا نہیں ؟

"جب میں سمجھتا ہوں کہ میرا شریر ہی ایک بڑی نازک مشین ہے تب ینتروں—مشینوں کے خلاف ہوکر میں کہاں رہ سکتا ہوں ؟......میرا وِرودھ ینتروں کے سمبندھ میں پھیلے ہوئے دیوانے پن کے ساتھ ہے، ینتروں کے ساتھ نہیں ۔ محنت کا بچاؤ کرنے والی مشینوں کے بارے میں لوگوں کا جو دیوانہ پن ہے اسی سے میرا ورودھ ہے ۔ محنت کی بچت اس حد تک کی جا رہی ہے کہ ہزاروں کو آخر بھوکوں مرنا پڑتا ہے اور انہیں بدن ڈھکنے تک کو کچھ نہیں ملتا ۔ میں بھی وقت اور محنت کی بچت ضرور چاہتا ہوں، لیکن وہ مٹھی بھر آدمیوں کے لئے نہیں، بلکہ تمام انسانی سماج کے لئے ۔ وقت اور محنت کا بچاؤ کرکے مٹھی بھر آدمی دولت مند ہو بیٹھیں، یہ میرے لئے ناقابل برداشت ہے ۔ میں تو چاہتا ہوں کہ ہر ایک کا سمے اور محنت بچ جائے، سب کو کھانا مل سکے، سب پہن اوڑھ سکیں، سب کی ترقی یعنی 'سروودے' ہو ۔ یہی میری تمنا ہے ۔ آج ینتروں کے کارن لاکھوں کی پیٹھ پر مٹھی بھر آدمی سوار ہو بیٹھے ہیں اور انہیں ستا رہے ہیں، کیونکہ ان مشینوں کے چلانے کی جڑ میں لالچ ہے، دھن کی لالسا ہے اور جن کلیان کی بھاونا کا کہیں پتہ ہی نہیں ہے ۔"—گاندھی جی

बच्चों की दुनिया

इस्लाम
20.6.1906

राधे,

कल मैं बहुत काम होने के सबब से चिट्ठी नहीं लिख सका. परसों की चिट्ठी में जल्दी शादी करने के नुक़्सान लिखे गये थे. आज एक आदमी की कहानी सुनो जिस को यह ही मालूम न था कि डर क्यों कर लगा करता है.

एक अमीर के दो लड़के थे. बड़ा लड़का तो एक मामूली आदमी था मगर छोटे लड़के में एक बड़ी खूबी यह थी कि उसको डर बिल्कुल किसी बात या चीज़ से कभी नहीं लगता था. अंधेरी रातों को जब कि घटा छूब छाई हुई हो और हाथ तक दिखाई न देता हो, बड़ा लड़का तो घर से बाहर भी न निकलता था मगर छोटा लड़का जहां कहें वहां चला जाता था और जो काम कहो वह ही रात ही रात में कर आया करता था. और जब कोई कहता कि हमें तो डर लगे है तो वह पूछा करता था कि डर खबर नहीं क्यों डर लगा करे है. कोई मुझे भी तो बताओ कि क्यों कर डरूं. डरना शायद कोई बड़ी अच्छी चीज़ होगी कि जिस को देखो वह यही कहता है कि मुझे उस बात या काम या चीज़ से डर लगता है. मगर मुझे कोई डरना नहीं सिखाता. यह बात छोटे लड़के की सुनकर कभी कोई कुछ मुश्किल काम अंधेरी रात में करने को उसे बताता कभी कोई. मगर वह लड़का सब काम फ़ौरन कर आता और ज़रा भी न डरता था. क्योंकि असल में देखा जाय तो डरना बिल्कुल ही फ़िज़ूल है और उससे बिल्कुल कुछ फ़ायदा नहीं है, नुक़्सान ही नुक़्सान है.

एक दिन एक पादरी साहब उस लड़के के घर आए और उन्होंने जब सुना कि छोटा लड़का डरना सीखना चाहता है तो उन्होंने कहा कि अच्छा तू मेरे साथ चल, मैं तुझको बड़ी जल्दी डरना सिखा दूंगा. लड़के ने कहा अच्छा. शाम को पादरी साहब के घर पहुँचा और पादरी साहब ने कहा कि तुम ठीक आधी रात के वक़्त गिरजा घर में जो घंटा है उसको ऊपर जा कर बजाना. लड़के ने कहा बहुत अच्छा. चुनांचे लड़का बारह बजे से कुछ

بچوں کی دنیا

اسلام .
20-6-1906

رادھے،

کل میں بہت کام ہونے کے سبب سے چٹھی نہیں لکھ سکا . پرسوں کی چٹھی میں جلدی شادی کرنے کے نقصان لکھے گئے تھے . آج ایک آدمی کی کہانی سنو جس کو یہ ہی معلوم نہ تھا کہ ڈر کیوں کر لگا کرتا ہے .

ایک امیر کے دو لڑکے تھے. بڑا لڑکا تو ایک معمولی آدمی تھا مگر چھوٹے لڑکے میں ایک بڑی خوبی یہ تھی کہ اس کو ڈر بالکل کسی بات یا چیز سے کبھی نہیں لگتا تھا . اندھیری راتوں کو جب کہ گھٹا خوب چھائی ہوئی ہو اور ہاتھ تک دکھائی نہ دیتا ہو، بڑا لڑکا تو گھر سے باہر بھی نہ نکلتا تھا مگر چھوٹا لڑکا جہاں کہیں وہاں چلا جاتا تھا اور جو کام کہو وہ ہی رات ہی رات میں کر آیا کرتا تھا . اور جب کوئی کہتا کہ ہمیں تو ڈر لگے ہے تو وہ پوچھا کرتا تھا کہ ڈر خبر نہیں کیوں ڈر لگا کرے ہے . کوئی مجھے بھی تو بتاؤ کہ کیوں کر ڈروں . ڈرنا شاید کوئی بڑی اچھی چیز ہوگی کہ جس کو دیکھو وہ یہ ہی کہتا ہے کہ مجھے اس بات یا کام یا چیز سے ڈر لگتا ہے . مگر مجھے کوئی ڈرنا نہیں سکھاتا . یہ بات چھوٹے لڑکے کی سن کر کبھی کوئی کچھ مشکل کام اندھیری رات میں کرنے کو اسے بتاتا کبھی کوئی . مگر وہ لڑکا سب کام فوراً کر آتا اور ذرا بھی نہ ڈرتا تھا . کیونکہ اصل میں دیکھا جائے تو ڈرنا بالکل ہی فضول ہے اور اس سے بالکل کچھ فائدہ نہیں ہے، نقصان ہی نقصان ہے .

ایک دن ایک پادری صاحب اس لڑکے کے گھر آئے اور انہوں نے جب سنا کہ چھوٹا لڑکا ڈرنا سیکھنا چاہتا ہے تو انہوں نے کہا کہ اچھا تو میرے ساتھ چل، میں تجھکو بڑی جلدی ڈرنا سکھا دونگا . لڑکے نے کہا اچھا . شام کو پادری صاحب کے گھر پہنچا اور پادری صاحب نے کہا کہ تم ٹھیک آدھی رات کے وقت گرجا گھر میں جو گھنٹا ہے اس کو اوپر جاکر بجانا . لڑکے نے کہا بہت اچھا . چنانچہ لڑکا بارہ بجے سے کچھ

पहले उठकर सीधा गिरजा घर को गया और ज़ीना चढ़कर ऊपर आ पहुँचा और घंटे की डोरी खेंच कर बजाने लगा. इतने में देखता क्या है कि सामने की तरफ़ जो गिरजे का दूसरा ज़ीना था उसके ऊपर वाले दरवाज़े में कोई सफ़ेद सफ़ेद शकल खड़ी है और उसका मुंह बिलकुल काला और आंखें लाल लाल हैं. यह देखकर लड़का ज़रा भी न डरा. बल्कि उसने पुकार कर पूछा कि तू कौन है ? उस शकल ने कुछ जवाब न दिया. लड़के ने फिर पूछा कि तू कौन है ? शकल ने फिर भी कुछ जवाब न दिया. लड़के ने कहा अगर तू जवाब न देगी तो मैं तुझे सीढ़ियों से नीचे धक्का दे दूँगा. शकल फिर भी चुप रही. यह देख लड़का [जो कि रोज़ वर्ज़िश करते रहने के कारन ख़ासा ताक़तवर था] शकल की तरफ़ दौड़ा. शकल ने उसको डराने के लिये एक बड़े ज़ोर की चीख़ मारी. मगर लड़के ने कुछ परवाह न की और ऐसे ज़ोर से धक्का दिया कि वह शकल लुढ़कती पुढ़कती सीढ़ियों के नीचे जा पड़ी. और लड़का घंटा बजा कर पादरी साहब के घर में आकर अपने कमरे में सो गया. जब सुबह हुई तो पादरी साहब नदारद. उनकी मेम ने लड़के से पूछा कि पादरी साहब कहां हैं ? लड़के ने कहा मुझे क्या ख़बर. पूछते पूछते एक नौकर ने कहा के पादरी साहब को साढ़े ग्यारह बजे रात के मैंने बाहर जाते देखा था. फिर ख़बर नहीं कि वापिस आए या न आए. इस पर लड़के को याद आया कि कहीं उस शकल के भेस में पादरी साहब ही को मैंने धक्का न दे दिया हो, यह सोच वह गिरजा गया और जाकर देखा कि पादरी साहब पीछे की तरफ़ के ज़ीने के नीचे पड़े हैं और पास ही उनका काले मुँह और लाल आंखों का चेहरा पड़ा है. थोड़े दिन बाद जब पादरी साहब अच्छे हुये तो उन्होंने कहा कि भाई तुम अपने घर जाओ, मैं तुम्हें डरना नहीं सिखा सकता.

इस्लाम
21. 6. '06

राधे,

कल की चिट्ठी में ऐसे आदमी की कहानी लिखी थी जिसको डर ही न लगता था. राधे, कल की चिट्ठी लिखी तो थी मगर डाक जाने के वक़्त लिफ़ाफ़े में बन्द कर कर भेजने की याद न रही. इस वास्ते कल की और आज की दोनों चिट्ठियां एक ही ख़त में भेजी जाती हैं.

राधे, आज तुम्हारे चाचा की चिट्ठी से मालूम हुआ कि जीजा तो पहाड़ पर यानी शिमले जाना चाहते नहीं हैं. अब तुम बताओ कि तुम किस तरह करोगी. तुम्हारा तो पहाड़ पर जा कर रहना बड़ा ज़रूरी है ताकि एक दफ़े वहां की ताज़ी और साफ़ हवा के असर से तुम्हारा शरीर

پہلے اٹھکر سیدھا گرجا گھر کو گیا اور زینہ چڑھکر اوپر جا پہونچا اور گھنٹے کی ڈوری کھینچکر بجانے لگا . اتنے میں دیکھتا کیا ھے کہ سامنے کی طرف جو گرجے کا دوسرا زینہ تھا اُس کے اوپر والے دروازے میں کوئی سفید سفید شکل کھڑی ھے اور اُس کا منھ بالکل کالا اور آنکھیں لال لال ھیں . یہ دیکھکر لڑکا ذرا بھی نہ ڈرا . بلکہ اس نے پکار کر پوچھا کہ تو کون ھے ؟ اس شکل نے کچھ جواب نہ دیا . لڑکے نے پھر پوچھا کہ تو کون ھے ؟ شکل نے پھر بھی کچھ جواب نہ دیا . لڑکے نے کہا اگر تو جواب نہ دے گی تو میں تجھے سیڑھیوں سے نیچے دھکا دے دونگا . شکل پھر بھی چپ رھی . یہ دیکھ لڑکا [جو کہ روز ورزش کرتے رھنے کے کارن خاصہ طاقتور تھا] شکل کی طرف دوڑا . شکل نے اس کو ڈرانے کے لئے ایک بڑے زور کی چیخ ماری . مگر لڑکے نے کچھ پرواہ نہ کی اور ایسے زور سے دھکا دیا کہ وہ شکل لڑھکتی پڑھکتی سیڑھیوں کے نیچے جا پڑی . اور لڑکا گھنٹا بجا کر پادری صاحب کے گھر میں آ کر اپنے کمرے میں سو گیا . جب صبح ھوئی تو پادری صاحب ندارد . ان کی میم نے لڑکے سے پوچھا کہ پادری صاحب کہاں ھیں ؟ لڑکے نے کہا مجھے کیا خبر . پوچھتے پوچھتے ایک نوکر نے کہا کہ پادری صاحب کو ساڑھے گیارہ بجے رات کے میں نے باھر جاتے دیکھا تھا . پھر خبر نہیں کہ واپس آئے یا نہ آئے . اس پر لڑکے کو یاد آیا کہ کہیں اُس شکل کے بھیس میں پادری صاحب ھی کو میں نے دھکا نہ دے دیا ہو' یہ سوچ وہ گرجا گیا اور جاکر دیکھا کہ پادری صاحب پیچھے کی طرف کے زینے کے نیچے پڑے ھیں اور پاس ھی ان کا کالے منھ اور لال آنکھوں کا چہرہ پڑا ھے . تھوڑے دن بعد جب پادری صاحب اچھے ھوئے تو انھوں نے کہا کہ بھائی تم اپنے گھر جاؤ' میں تمھیں ڈرنا نہیں سکھا سکتا.

اسلام
21. 6. '06

رادھے'

کل کی چٹھی میں ایسے آدمی کی کہانی لکھی تھی جس کو ڈر ھی نہ لگتا تھا . رادھے' کل کی چٹھی لکھی تو تھی مگر ڈاک جانے کے وقت لفافے میں بندکر کر بھیجنے کی یاد نہ رھی . اس واسطے کل کی اور آج کی دونوں چٹھیاں ایک ھی خط میں بھیجی جاتی ھیں .

رادھے' آج تمھارے چاچا کی چٹھی سے معلوم ھوا کہ جیجا تو پہاڑ پر یعنی شملے جانا چاھتے نہیں ھیں . اب تم بتاؤ کہ کس طرح کروگی . تمھارا تو پہاڑ پر جاکر رھنا بڑا ضروری ھے تاکہ ایک دفعہ وھاں کی تازی اور صاف ھوا کے اثر سے تمھارا شریر

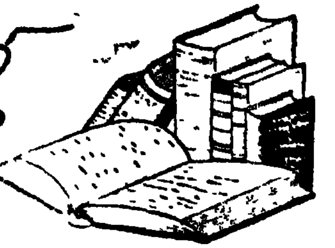
दुरुस्त हो जावे. इसलिये या तो तुम अपनी दादी से कहो कि वह भी चलें या तुम ख़ुद चाचा और चाची के साथ जाने को तैयार हो जाओ. इन दोनों बातों में से एक ज़रूर होनी चाहिये. और सब से अच्छी तो यह ही बात है कि तुम अपने मन को अक़्ल के कहने पर हमेशा चलाओ. देखो चाचा ने तुम से लाहौर चलने को कहा तो पहले तुम ने हां कर ली, मगर फिर सिर्फ़ इस सबब से नहीं गईं कि तुम्हारा मन अकेले यानी बग़ैर दादी के चाचा चाची के साथ जाने को न चाहा. लेकिन इस बात में तुम्हारा मन अक़्ल के तो बिल्कुल बरख़िलाफ़ था क्योंकि अगर तुम लाहौर चली जातीं तो वहां नई नई बातें और नई नई चीज़ें देखने से तुम्हारा दिल ज़रूर ख़ुश होता. और इसलिये तुम्हे जो बीमारी थी उसको भी ज़रूर फ़ायदा होता. चाचा तुम्हें वहां ऐसी ऐसी लड़कियों से भी मिलाते जिन्होंने ख़ूब पढ़ा है और जिनकी शादी छोटी उम्र में नहीं हुई, बड़ी उम्र में होगी. इसी तरह अब शिमले जाने की बात है. अगर तुम्हारी बुआ दादी वग़ैरा सब चले जाएं तब तो बहुत ही अच्छी बात है. लेकिन अगर सब किसी सबब से न जा सकें तो फिर तुम्हें तो ज़रूर चाचा चाची के साथ जाना चाहिये. क्योंकि हर एक आदमी को अपनी अक़्ल के मुताबिक़ काम करना चाहिये, न कि मन के. और न आदमी को किसी में ऐसा मन लगाना चाहिये कि उससे अलग होने ही को मन न चाहे. इस वास्ते तुम्हें असल में इस तरह करना चाहिये कि ख़ुद तो चाचा के साथ जब उनकी छुट्टियां हों तो उसी वक़्त चली जाओ. और फिर भय्या को जब छुट्टियां होंगी तो वह भी किसी के साथ तुम्हारे पास आ सकता है.

राधे, सब से बड़ी बात जो तुम्हें सीखनी है और हर एक आदमी को सीखना चाहिये वह यह है कि किसी काम या बात या चीज़ या आदमी या जानवर में ऐसा और इस तरह मन न लगाओ कि जब अक़्ल के मुताबिक़ उसको छोड़ना ज़रूरी हो तो भी छोड़ने को दिल न करे और छोड़ा न जाए. जो आदमी इस तरह अपना मन कभी किसी में कभी किसी में लगाते रहते हैं उनको हमेशा कभी कुछ रंज होता है, कभी कुछ फ़िकर और उनकी तबियत कभी भी बिल्कुल ख़ुश और शान्ति में नहीं रहती. मगर जो आदमी रफ़्ता रफ़्ता यह आदत डाल लेते हैं उनको कभी कोई रंज या दुख या अफ़सोस नहीं होगा, चाहे उन पर कितनी ही मुसीबत भी पड़े फिर भी वह हमेशा ख़ुश रहते हैं और उनके दिल में इस बात का इत्मीनान रहता है कि जो कुछ उन्होंने किया भगवान की मरज़ी के मुताबिक़ किया है. फिर अफ़सोस किस बात का?

خوب درست ہو جاوے۔ اس لئے یا تو تم اپنی دادی سے کہو کہ وہ بھی چلیں یا تم خود چاچا اور چاچی کے ساتھ جانے کو تیار ہو جاؤ۔ ان دونوں باتوں میں سے ایک ضرور ہونی چاہئے۔ اور سب سے اچھی تو یہ ہی بات ہے کہ تم اپنے من کو عقل کے کہنے پر ہمیشہ چلاؤ۔ دیکھو چاچا نے تم سے لاہور چلنے کو کہا تو پہلے تم نے ہاں کرلی، مگر پھر صرف اِس سبب سے نہیں گئیں کہ تمہارا من اکیلے یعنی بغیر دادی کے چاچا چاچی کے ساتھ جانے کو نہ چاہا۔ لیکن اس بات میں تمہارا من عقل کے تو بالکل برخلاف تھا کیونکہ اگر تم لاہور چلی جاتیں تو وہاں نئی نئی باتیں اور نئی نئی چیزیں دیکھنے سے تمہارا دل ضرور خوش ہوتا۔ اور اس لئے تمہیں جو بیماری تھی اُس کو بھی ضرور فائدہ ہوتا۔ چاچا تمہیں وہاں ایسی ایسی لڑکیوں سے بھی ملاتے جنہوں نے خوب پڑھا ہے اور جن کی شادی چھوٹی عمر میں نہیں ہوئی، بڑی عمر میں ہوگی۔ اسی طرح اب شملے جانے کی بات ہے، اگر تمہاری بوا دادی وغیرہ سب چلے جائیں تب تو بہت ہی اچھی بات ہے۔ لیکن اگر سب کسی سبب سے نہ جاسکیں تو پھر تمہیں تو ضرور چاچا چاچی کے ساتھ جانا چاہئے۔ کیونکہ ہر ایک آدمی کو اپنی عقل کے مطابق کام کرنا چاہئے، نہ کہ من کے۔ اور نہ آدمی کو کسی میں ایسا من لگانا چاہئے کہ اُس سے الگ ہونے ہی کو من نہ چاہے۔ اس واسطے تمہیں اصل میں اس طرح کرنا چاہئے کہ خود تو چاچا کے ساتھ جب اُنکی چھٹیاں ہوں تو اُسی وقت چلی جاؤ اور پھر بھیا کو جب چھٹیاں ہونگی تو وہ بھی کسی کے ساتھ تمہارے پاس آ سکتا ہے۔

رادھے، سب سے بڑی بات جو تمہیں سیکھنی ہے اور ہر ایک آدمی کو سیکھنا چاہئے وہ یہ ہے کہ کسی کام یا بات یا چیز یا آدمی یا جانور میں ایسا اور اس طرح من نہ لگاؤ کہ جب عقل کے مطابق اُس کو چھوڑنا ضروری ہو تو بھی چھوڑنے کو دل نہ کرے اور چھوڑا نہ جائے۔ جو آدمی اِس طرح اپنا من کبھی کسی میں کبھی کسی میں لگاتے رہتے ہیں اُن کو ہمیشہ کبھی کچھ رنج ہوتا ہے، کبھی کچھ فکر اور اُن کی طبیعت کبھی بھی بالکل خوش اور شانتی میں نہیں رہتی۔ مگر جو آدمی رفتہ رفتہ یہ عادت ڈال لیتے ہیں اُن کو کبھی کوئی رنج یا دکھ یا افسوس نہیں ہوگا، چاہے اُن پر کتنی ہی مصیبت بھی پڑے پھر بھی وہ ہمیشہ خوش رہتے ہیں اور اُن کے دل میں اس بات کا اطمینان رہتا ہے کہ جو کچھ انہوں نے کیا بھگوان کی مرضی کے مطابق کیا ہے۔ پھر افسوس کس بات کا؟

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

दि एकोनामिक्स आफ़ पीस

एडीटर—एस. के. जार्ज और जी. रामचंद्रन;

निकालने वाले—अखिल भारत ग्राम उद्योग संघ, वर्धा;

लिखावट—अंगरेज़ी ;

सफ़े—378; काग़ज़ हाथ का; तसवीरें 33;

दाम—दस रुपए.

दरअसल यह किताब एक अभिनन्दन ग्रंथ है जो आचार्य जे. सी.कुमारप्पा की साठवीं सालगिरह पर उनके साथियों और प्रेमियों ने मगनवाड़ी में उन्हें पेश किया. कुमारप्पाजी क्या हैं—एक इन्सान जिसने अपना जीवन लगा दिया है एक काम में. किस काम में—आज की दुनिया में जो लड़ाई, शोशन और वैर की आर्थिक नीति है उसकी जगह भाई चारे, सहयोग और प्रेम की आर्थिक नीति क़ायम करने के काम में. इस अर्थ नीति को आम तौर से गांधी अर्थ नीति कहा जाता है. यह वही अर्थ नीति है जिसके सहारे दुनिया में सच्ची शान्ति मुसतक़िल तौर पर क़ायम हो सकती है. इस तरह कुमारप्पाजी शान्ति की अर्थनीति के अलमबरदार हैं. शायद इसी वजह से उनको जो अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया उसका नाम 'शान्ति की अर्थ नीति' रखा गया और यह ठीक ही किया गया.

किताब को पांच हिस्सों में बांटा गया है—(1) कुमारप्पा जी की जीवन सम्बन्धी झलक, (2) उनकी स्पीचों और लेखों का संग्रह, (3) इन्क़लाबी तामीर (4) आज के सवाल, और (5) श्रद्धांजलि.

पहले हिस्से में शुरू का लेख कुमारप्पा जी की बड़ी बहन का लिखा हुआ है जिसमें उनके बचपन के जीवन की झलक मिलती है और साफ़ पता चलता है कि जोसफ़ चल्लादुराई एक दिन चलकर ज़रूर बड़ा आदमी होगा. इस हिस्से के दूसरे लेख रामचंद्रन जी (जो आजकल ग्राम उद्योग संघ के मंत्री हैं) और विनायक जी (जो मगनवाड़ी के पुराने तजुरबेकार कार्य कर्ता हैं और जिनका काफ़ी समय कुमारप्पा जी के साथ घूमने-फिरने में बीता है)

دی ایکونامکس آف پیس

ایڈیٹر—ایس . کے . جارج اور جی . رام چندرن :

نکلنے والے—اکھل بھارت گرام اُدیوگ سنگھ' وردھا :

لکھاوٹ—انگریزی :

صفحے—378 : کاغذ ہاتھ کا : تصویریں 33 :

دام—دس روپے .

دراصل یہ کتاب ایک ابھینندن گرنتھ ہے جو آچاریہ ... سی . کماریپا کی ساٹھویں سالگرہ پر اُن کے ساتھیوں ... پریمیوں نے مگن واڑی میں اُنھیں بھینٹ کیا . کماریپا ... کیا ہیں—ایک انسان جس نے اپنا جیون لگا دیا ... ایک کام میں . کس کام میں—آج کی دنیا میں جو ... ائی' شوشن اور بیر کی آرتھک نیتی ہے اُسکی جگہ ... بھائی چارے' سہیوگ اور پریم کی آرتھک نیتی قائم کرنے ... کام میں . اِس ارتھ نیتی کو عام طور سے گاندھی ارتھ ... نیتی کہا جاتا ہے یہ وہی ارتھ نیتی ہے جسکے سہارے ... دنیا میں سچی شانتی مستقل طور پر قائم ہوسکتی ... اِسطرح کماریپا جی شانتی کی ارتھ نیتی کے علمبردار ... ہیں . شاید اِسی وجہ سے اُن کو جو ابھینندن گرنتھ ... بھینٹ کیا گیا اُسکا نام ' شانتی کی ارتھ نیتی ' رکھا ... گیا اور یہ ٹھیک ہی کیا گیا .

کتاب کو پانچ حصوں میں بانٹا گیا ہے—(1) ... کماریپا جی کی جیون سمبندھی جھلک (2) اُن کی ... بھاشنوں اور لیکھوں کا سنگرہ (3) انقلابی تعمیر (4) ... آج کے سوال' اور (5) شردھا نجلی .

پہلے حصے میں شروع کا لیکھ کماریپا جی کی بڑی ... بہن کا لکھا ہوا ہے جس میں اُن کے بچپن کے جیون کی ... جھلک ملتی ہے اور صاف پتہ چلتا ہے کہ جوسف چلا ... دُرائی ایک دن چلکر ضرور بڑا آدمی ہوگا . اِس حصے کے ... دوسرے لیکھ رام چندرن جی (جو آجکل گرام اُدیوگ ... سنگھ کے منتری ہیں) اور ونائیک جی (جو مگن واڑی ... کے پرانے تجربہ کار کاریہ کرتا ہیں اور جن کا کافی سمے ... کماریپا جی کے ساتھ گھومنے پھرنے میں بیتا ہے)

लिखे हैं. विनायक जी ने तमिल भाषा में कुमारप्पा जी
ी जीवनी भी लिखी है.

दूसरा हिस्सा सब से बड़ा है, 130 सफ़ों का. समें धर्म-मज़हब, अर्थ-शास्त्र और राजनीति-स्यासत पर मारप्पा जी के विचार दिये गये हैं. और जो उनकी किताबों, खों और स्पीचों से लिये गये हैं. इनको पढ़ने पर मालूम ता है कि अहिंसक अर्थ शास्त्र किस गहराई के साथ मारप्पा जी की नस-नस में समाया हुआ है और किस सानी और अनोखे ढंग से वह उसकी पैरवी करते हैं. मारा ख़याल है कि इनमें से कुछ चीज़ें तो दुनिया के र्थ शास्त्र व राजनीति शास्त्र में हमेशा अमर रहेंगी.

लेकिन लेखों-स्पीचों के इस संग्रह के बारे में हम इतना रूर कहेंगे कि धर्म वाले हिस्से में जैसे यह बता दिया गया है क कौन चीज़ कहां से ली गई है उस तरह अर्थ-शास्त्र और जनीति-स्यासत वालों में नहीं बताया गया है. इसके लावा सफ़े 44 और 48 पर किताबों के हवाले ग़लत दये गये हैं.

इन्क़लाबी तामीर वाले हिस्से से उस नये हिन्दुस्तान ी तसवीर सामने आती है जो शान्ति की अर्थ नीति के आधार पर खड़ा किया जा रहा है. महात्मा गांधी ने तामीरी काम के अलग अलग पहलुओं को अलग अलग सस्थाओं और कारकुनों के हाथ में सौंप दिया था. ादी, हरिजन सेवा, ग्रामोद्योग, नई तालीम, गो सेवा, हिन्दुस्तानी प्रचार, औरतहि सेवा इनमें ख़ास हैं. नमें से हर एक में अब तक कितना काम हुआ, अब या हो रहा है, और आगे का क्या प्रोग्राम है यह इस हस्से से बख़ूबी पता चल जाता है. हमारी राय है क इस हिस्से को अलग किताब की शकल में निकालना ाहिये ताकि देश को मालूम हो कि महात्मा गांधी के बाद नके बनाये रास्ते पर क्या काम हो रहा है. लेकिन इस हस्से में गांधी स्मारक निधि का कुछ भी चर्चा न होना टकता है.

किताब के चौथे हिस्से में आज की दुनिया से ताल्लुक़ खने वाले कुछ सवालों पर ख़ासी अच्छी रोशनी डाली ई है—जैसे विश्व-शान्ति को ख़तरा, नई तालीम की कार, सर्वोदय और कम्यूनिज़म, कन्ट्रोल, पच्छिम का ख़, सरकार और ग्रामोद्योग, गांव वालों की हालत वग़ैरा. आख़री हिस्से में कुमारप्पा जी को श्रद्धांजलि देते हुए ाका साहेब कालेलकर, किशोरलाल भाई मशरूवाला, ीमती रामेश्वरी नेहरू वग़ैरह के सुन्दर लेख हैं.

किताब मगनवाड़ी में बने हाथ के काग़ज़ पर छापी ई है. इसमें कुमारप्पा जी से सम्बन्ध रखने वाली 33

نے لکھے ھیں ۔ ونائیک جی نے تامل بھاشا میں کماریپا جی کی جیونی بھی لکھی ھے ۔

دوسرا حصہ سب سے بڑا ہے، 130 صفحوں کا ۔ اس میں دھرم-مذھب، ارتھ شاستر اور راج نیتی-سیاست پر کماریپا جی کے وچار دیئے گئے ھیں جو اُن کی کتابوں، لیکھوں اور اسپیچوں سے لئے گئے ھیں ۔ ان کو پڑھنے پر معلوم ہوتا ہے کہ اہنسک ارتھ شاستر کس گہرائی کے ساتھ کماریپا جی کی نس نس میں سمایا ہوا ہے اور کس آسانی اور انوکھے ڈھنگ سے وہ اُسکی پیروی کرتے ھیں ۔ ہمارا خیال ہے کہ اِن میں سے کچھ چیزیں تو دنیا کے ارتھ شاستر و راج نیتی شاستر میں ہمیشہ امر رہینگی ۔

لیکن لیکھوں-اسپیچوں کے اِس سنگرہ کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہیں گے کہ دھرم والے حصے میں جیسے یہ بتا دیا گیا ہے کہ کون چیز کہاں سے لی گئی ہے اُس طرح ارتھ شاستر اور راج نیتی سیاست والوں میں نہیں بتایا گیا ہے ۔ اِس کے علاوہ صفحے 44 اور 48 پر کتابوں کے حوالے غلط دیئے گئے ھیں ۔

انقلابی تعمیر والے حصے سے اُس نئے ہندستان کی تصویر سامنے آتی ہے جو شانتی کی ارتھ نیتی کے آدھار پر کھڑا کیا جا رہا ہے ۔ مہاتما گاندھی نے تعمیری کام کے الگ الگ پہلوؤں کو الگ الگ سنستھاؤں اور کارکنوں کے ہاتھ میں سونپ دیا تھا ۔ کھادی، ہریجن سیوا، گرامودیوگ، نئی تعلیم، گو سیوا، ہندستانی پرچار، عورتھیں سیوا اِن میں خاص ھیں ۔ ان میں سے ہر ایک میں اب تک کتنا کام ہوا، اب کیا ہو رہا ہے اور آگے کا کیا پروگرام ہے یہ اس حصے سے بخوبی پتہ چل جاتا ہے ۔ ہماری رائے ہے کہ اس حصے کو ایک کتاب کی شکل میں نکلنا چاہئے تاکہ دیش کو معلوم ہو کہ مہاتما گاندھی کے بعد اُن کے بتائے راستے پر کیا کام ہو رہا ہے لیکن اِس حصے میں گاندھی سمارک ندھی کا کچھ بھی چرچہ نہ ہونا کھٹکتا ہے ۔

کتاب کے چوتھے حصے میں آج کی دنیا سے تعلق رکھنے والے کچھ سوالوں پر خاصی اچھی روشنی ڈالی گئی ہے — جیسے وشو شانتی کو خطرہ، نئی تعلیم کی پکار، سروودے اور کمیونزم، کنٹرول، پچھم کا رخ، سرکار اور گرامودیوگ، گاؤں والوں کی حالت وغیرہ ۔ آخری حصے میں کماریپا جی کو شردھانجلی دیتے ہوئے کاکا صاحب کالیلکر، کشور لال بھائی مشرو والا، شریمتی رامیشوری نہرو وغیرہ کے سندر لیکھ ھیں ۔

کتاب مگن واڑی میں بنے ہاتھ کے کاغذ پر چھاپی گئی ہے ۔ اس میں کماریپا جی سے سمبندھ رکھنے والی 33

तसवीरें हैं. इधर हाल ही में कुमारप्पा जी चीन गये थे, उनके वहां के सफ़र के भी कई चित्र दिये गये हैं.

पूरी किताब देख जाने के बाद सवाल उठता है कि जब हिन्दुस्तान की सरकार विदेशी—ख़ास कर अमरीकी—पैसा और "एक्सपर्ट" ले लेकर देश की जनता को मशीनों, कारख़ानों और फ़ौज को ग़ुलाम बनाने पर उतारू है, तो उस हालत में 'शान्ति की अर्थनीति' की कहां तक गुंजायश है और उसके पैरोकार कहां तक सरकार की रविश और सरगर्मियों का मुक़ाबला करके देश को सही अर्थ नीति पर ला सकेंगे. और इस अर्थ नीति को क़ायम करने के वास्ते मुसीबतों का सामना करने के लिये वह पूरी तरह तैयार हैं या नहीं ? धीमे से आवाज़ आती है कि तैयार हो रहे हैं और जब विनोबा या कुमारप्पा जैसी हस्तियां मौजूद हों तब तो डरने या घबराने की कोई बात ही नहीं है.

हमारी सिफ़ारिश है कि इस किताब का देश की भाशाओं में अनुवाद हो कर ख़ूब प्रचार किया जाना चाहिये.

हम दोनों सम्पादकों को बधाई देते हैं जिन्होंने इतनी मेहनत और लगन से यह अभिनन्दन ग्रंथ तैयार किया है. यह उनकी एक ठोस रचनात्मक सेवा है. आख़िर में हम कुमारप्पा जी को उनकी साठवीं सालगिरह पर बधाई देते हैं और मालिक से विनती करते हैं कि उनके नेक इरादों को पूरा करे.

—सुरेश रामभाई

टुवर्ड्स नानवायलेन्ट सोशलिज़्म

(महात्मा गांधी के लेखों व स्पीचों का संग्रह)

एडीटर—भारतन कुमारप्पा ; निकालने वाले—नवजीवन, अहमदाबाद; लिखावट अंगरेजी, सफ़े 165; दाम दो रुपये.

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद महात्मा गांधी के लेखों व स्पीचों का अलग अलग विशयों पर अलग अलग संग्रह निकाल कर कई बरस से देश की एक क़ुदरती मांग को पूरा कर रहा है. सम्पादन का काम भाई भारतन कुमारप्पा के सिपुर्द है. उनके कई संग्रहों पर हम पिछले महीनों में अपने ख़याल ज़ाहिर कर चुके हैं.

इस संग्रह में सोशलिज़्म और कम्यूनिज़्म से ताल्लुक़ रखने वाली चीज़ें जमा कर दी गई हैं. पाठक की आसानी के लिये किताब को ग्यारह हिस्सों में बांटा गया है, जैसे मक़सद, नैतिक शर्तें, बराबर बंटवारा, उद्योग-धन्धे, कम से कम मज़दूरी, पूंजी और मेहनत, हड़ताल, क़ुली और किसान, पूंजीपति व ज़मींदार, ग़रीब, कम्यूनिज़्म.

...یروں ھیں . اِدھر حال ھی میں کمارپا جی چین
...لے تھے' اُن کے وھاں کے سفر کے بھی کئی چتر دئیے
...ئے ھیں .

پوری کتاب دیکھ جانے کے بعد سوال اُٹھتا ہے کہ
...ب ھندستان کی سرکار ودیشی—خاص کر امریکی—
...یسہ اور " ایکس پرٹ " لے لیکر دیش کی جنتا کو
...شینوں' کارخانوں اور فوج کو غلام بنانے پر اُتارو ہے' تو
...س حالت میں ' شانتی کی ارتھ نیتی ' کی کہاں تک
...نجائش ہے اور اس کے پیروکار کہاں تک سرکار کی روش
...ور سرگرمیوں کا مقابلہ کر کے دیش کو صحیح ارتھ نیتی
...پر لا سکینگے . اور اِس ارتھ نیتی کو قائم کرنے کے واسطے
...مصیبتوں کا سامنا کرنے کے لئے—وہ پوری طرح تیار ھیں
...یا نہیں ؟ دھیمے سے آواز آتی ہے کہ تیار ہو رہے ھیں اور
...جب ونوبا یا کمارپا جیسی ھستیاں موجود ہوں تب تو
...ڈرنے یا گھبرانے کی کوئی بات ھی نہیں ہے .

ھماری سفارش ہے کہ اس کتاب کا دیش کی بھاشاؤں
...میں انوواد ہو کر خوب پرچار کیا جانا چاھئے .

ہم دونوں سمپادکوں کو بدھائی دیتے ھیں جنھوں نے
...اتنی محنت اور لگن سے یہ ابھینندن گرنتھ تیار کیا ہے .
...یہ اُن کی ایک ٹھوس رچناتمک سیوا ہے . آخر میں ہم
...کمارپا جی کو اُن کی ساٹھویں سال گرہ پر بدھائی دیتے
...ھیں اور مالک سے بنتی کرتے ھیں کہ اُن کے نیک ارادوں
...کو پورا کرے .

—سریش رام بھائی

ٹووَرڈس نان وائلنٹ سوشلزم

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں و اسپیچوں کا سنگرہ)

ایڈیٹر—بھارتن کمارپا؛ نکالنے والے—نوجیون'
...احمدآباد؛ لکھاوٹ—انگریزی؛ صفحے 165؛ دام دو روپئے .

...نوجیون ٹرسٹ' احمدآباد مہاتما گاندھی کے لیکھوں
...و اسپیچوں کا الگ الگ وشیوں پر الگ الگ سنگرہ
...نکال کر کئی برس سے دیش کی ایک قدرتی مانگ کو
...پورا کر رھا ہے . سمپادن کا کام بھائی بھارتن کمارپا کے
...سپرد ہے . اُن کے کئی سنگرہوں پر ہم پچھلے مہینوں
...میں اپنے خیال ظاہر کرچکے ھیں .

اِس سنگرہ میں سوشلزم اور کمیونزم سے تعلق رکھنے
...والی چیزیں جمع کردی گئی ھیں . پاٹھک کی آسانی
...کے لئے کتاب کو گیارہ حصوں میں بانٹا گیا ہے' جیسے
...مقصد' نیتک شرطیں' برابر بٹوارا' ادیوگ دھندے'
...کم سے کم مزدوری' پونجی اور محنت' ہڑتال' قلی اور
...کسان' پونجی پتی و زمیندار' غریب' کمیونزم .

अर्थ-शास्त्र के सवालों, देश की मौजूदा राजनीति और प्लानिंग के मसलों में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन के लिये यह किताब बहुत उपयोगी साबित होगी. जो यह जानना चाहते हों कि आर्थिक पहलू से महात्मा जी के रामराज का क्या मतलब है उन्हें यह किताब जरूर पढ़नी चाहिये.

—सुरेश रामभाई

दि स्टोरी आफ़ दि बाईबिल

लेखक—एस. के. जार्ज;

निकालने वाले—नवजीवन, अहमदाबाद;

लिखावट—अंगरेजी;

सफ़े 217, दाम चार रुपए.

वेद और क़ुरान शरीफ़ की तरह बाईबिल (या इन्जील) दुनिया की उन गिनी चुनी किताबों में है जिनके सहारे लाखों करोड़ों को अपनी रूहानी ख़ुराक नसीब होती रही है. बाईबिल और ईसा के ऊपर योरप की भाषाओं में जहां बेशुमार किताबें लिखी गई हैं हमारे देश की भाषाओं में उतना ही कम. ऐसा होना कुछ तो क़ुदरती है क्योंकि हिन्दुस्तान में ईसाई मज़हब विदेशी शासकों के साथ नत्थी था. मगर इसकी ख़ास वजह यह है कि क्या ईसाई धर्म, क्या ईसा का निजी जीवन—दोनों चीज़ों से हम हिन्द के रहने वाले हिन्दू मुसलमान भाइयों की जानकारी बहुत कम है. लेकिन अब तक—अंगरेज़ी राज में—ईसाई स्कूलों में इन्जील लाज़मी तौर पर पढ़ाई जाती थी और इसलिये उनमें तालीम पाने वाले हिन्दुस्तानी बच्चों को कुछ जानकारी हो जाती थी. मगर आज़ादी के बाद यह चीज़ अब शायद न रहेगी जिसका नतीजा यह हो सकता है (हालांकि होना तो इसका उलटा चाहिये) कि इन्जील की जानकारी रखने वालों की तादाद और भी गिर जाये. इसलिये हम श्री एस. के. जार्ज की इस किताब का स्वागत करते हैं जिस से थोड़े में ही यह झलक मिल जाती है कि इन्जील की कहानी क्या है और उससे हमें क्या सबक़ मिलता है.

लेखक ने इन्जील की कहानी को बारह छोटे छोटे अध्यायों में बांट दिया है. हर अध्याय के आख़िर में इन्जील से लेकर कुछ हिस्से या वाक्या दिये गये हैं जिनसे उसके अमृत का थोड़ा बहुत रस भी मिल जाता है. इस तरह यह किताब एक संग्रह का भी काम देती है.

इसके अलावा इस किताब में ईसा के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बड़ी सुन्दर सुन्दर नौ तसवीरें हैं जो शान्ति निकेतन के एक कलाकार श्री विनायक मासोजी

ارتھ شاستر کے سوالوں، دیش کی موجودہ راج نیتی اور پلاننگ کے مسئلوں میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کے لئے یہ کتاب بہت اُپیوگی ثابت ہوگی۔ جو یہ جاننا چاہتے ہوں کہ آرتھک پہلو سے مہاتما جی کے رام راج کا کیا مطلب ہے انہیں یہ کتاب ضرور پڑھنی چاہئے۔

—سریش رام بھائی

دی اِسٹوری آف دی بائبل

لیکھک—ایس. کے. جارج؛
نکالنے والے—نوجیون، احمد آباد؛
لکھاوٹ—انگریزی؛
صفحے 217؛ دام چار روپئے۔

وید اور قرآن شریف کی طرح بائبل (یا انجیل) دنیا کی اُن گنی چنی کتابوں میں ہے جنکے سہارے لاکھوں کروڑوں کو اپنی روحانی خوراک نصیب ہوتی رہی ہے۔ بائبل اور عیسیٰ کے اوپر یورپ کی بھاشاؤں میں جہاں بے شمار کتابیں لکھی گئی ہیں ہمارے دیش کی بھاشاؤں میں اُتنی ہی کم۔ ایسا ہونا کچھ تو قدرتی ہے کیونکہ ہندستان میں عیسائی مذہب ودیشی شاسکوں کے ساتھ نتھی تھا۔ مگر اس کی خاص وجہ یہ ہے کہ کیا عیسائی دھرم، کیا عیسیٰ کا نجی جیون—دونوں چیزوں سے ہم ہند کے رہنے والے ہندو مسلمان بھائیوں کی جانکاری بہت کم ہے۔ لیکن اب تک—انگریزی راج میں—عیسائی اسکولوں میں انجیل لازمی طور پر پڑھائی جاتی تھی اور اس لئے اُن میں تعلیم پانے والے ہندستانی بچوں کو کچھ جانکاری ہو جاتی تھی۔ مگر آزادی کے بعد یہ چیز اب شاید نہ رہیگی جسکا ایک نتیجہ یہ ہو سکتا ہے (حالانکہ ہونا تو اس کا اُلٹا چاہئے) کہ انجیل کی جانکاری رکھنے والوں کی تعداد اور بھی گر جائے۔ اس لئے ہم شری ایس. کے. جارج کی اس کتاب کا سواگت کرتے ہیں جس سے تھوڑے میں ہی یہ جھلک مل جاتی ہے کہ انجیل کی کہانی کیا ہے اور اُس سے ہمیں کیا سبق ملتا ہے۔

لیکھک نے انجیل کی کہانی کو بارہ چھوٹے چھوٹے ادھیائوں میں بانٹ دیا ہے۔ ہر ادھیائے کے آخر میں انجیل سے لیکر کچھ حصے یا واقعہ دیئے گئے ہیں جن سے اس کے امرت کا تھوڑا بہت رس بھی مل جاتا ہے۔ اس طرح یہ کتاب ایک سنگرہ کا بھی کام دیتی ہے۔

اسکے علاوہ اس کتاب میں عیسیٰ کے جیون سے سمبندھ رکھنے والی بڑی سندر سندر نو تصویریں ہیں جو شانتی نکیتن کے ایک کلاکار شری ونایک ماسو جی

के हाथों का कमाल है. इस तरह इस किताब से तीन तरह का आनन्द मिलता है.

लेकिन हम एक बात जरूर कहेंगे कि इन्जील की कहानी जो लेखक ने दी है वह अंगरेजी जानने वाले मामूली हिन्दुस्तानी पाठक को भारी पड़ेगी. आखिर में ईसाई इतिहास का एक चार्ट और दो नक्शे जो दिये गये हैं उनसे समझने में मदद जरूर मिलती है मगर ज़ियादा नहीं और भूल भूलैयों में पड़ जाने का अंदेशा रहता है. हमें आशा है कि दूसरी बार लेखक इसको सहज समझ में आने वाली और ज़ियादा आसान करने की कोशिश करेंगे.

—सुरेश रामभाई

सुदूर दक्खिन पूर्व

लिखने वाले—सेठ गोविन्द दास

निकालने वाले—आदर्श प्रकाशन, जबलपुर.

लिखावट—हिन्दी, सफ़ा 164, पांच रुपया आठ आना.

किसी देश के बारे में भूगोल, इतिहास या दर्शन और साहित्य की किताबें पढ़ कर पूरी जानकारी हासिल नहीं की जा सकती. इस कमी को वहां के निवासियों और उनके रोज़ाना के जीवन के बारे में पूरी जानकारी ही पूरी कर सकती है. इसी लिये यात्रा पर लिखी किताबों का साहित्य में बड़ा महत्व रहा है. दुख है कि हिन्दी साहित्य में यात्रा पर लिखी किताबों की बहुत बड़ी कमी है. इस बात का और भी दुख है कि आज जब आए दिन प्रतिनिधि मंडल विदेशों को जाया करते हैं तो भी हमारे साहित्य की यह कमी पूरी नहीं होती. यात्रा के इस तरह के वर्नन हमारी आंखें हो सकते हैं जिनकी रोशनी से हम बाहर की दुनिया को देख और समझ सकते हैं.

सेठ गोविन्द दास जी की पुस्तक "सुदूर दक्खिन पूर्व" में न्यूज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया वग़ैरा देशों का वर्नन है. लेकिन हमें अफ़सोस है कि इस किताब में आप बीती अधिक है और जग बीती कम. हम जानना चाहते हैं कि इन देशों के लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इन देशों की समस्याएं क्या हैं, दुनिया की राजनीति को यह लोग किस दृष्टिकोन से देखते हैं, और कामनवेल्थ पारलियामेन्ट्री एसोसीएशन और दूसरी ऐसी ही बैठकों में लोग किस तरह समस्याओं पर सोचते और कैसे कैसे विचार ज़ाहिर करते हैं. कहीं कहीं सेठ जी ने कोशिश की है लेकिन वह अपने में इतना खो गए हैं कि दूसरी जरूरी बातों पर उचित ध्यान दे ही नहीं पाए. कैनबरा की 10 दिसम्बर सन '50 की कानफ्रेन्स के बारे में ज़रूर उन्हों ने अपनी सच्ची राय लिखी है जिस से हम को काफ़ी रोशनी मिलती है:

"लड़ाई ही सब के दिवस (दिन) की चिन्ता और रात्री (रात) का स्वप्न हो और हर बात में अमरीका के

کے ہاتھوں کا کمال ہیں. اس طرح اس کتاب سے تین طرح کا آنند ملتا ہے.

لیکن ہم ایک بات ضرور کہینگے کہ انجیل کی کہانی جو لیکھک نے دی ہے وہ انگریزی جاننے والے معمولی ہندستانی پاٹھک کو بھاری پڑیگی. آخیر میں عیسائی اتہاس کا ایک چارٹ اور دو نقشے جو دیئے گئے ہیں اُن سے سمجھنے میں مدد ضرور ملتی ہے مگر زیادہ نہیں اور بھول بھلیوں میں پڑ جانے کا اندیشہ ہے. ہمیں آشا ہے کہ دوسری بار لیکھک اسکو سہج سمجھ میں آنے والی اور زیادہ آسان کرنے کی کوشش کرینگے.

—سریش رامبھائی

سدور دکھن پورو

لکھنے والے—سیٹھ گووند داس

نکالنے والے - آدرش پرکاشن' جبل پور.

لکھاوٹ ہندی' صفحہ 164' دام پانچ روپیہ آٹھ آنہ.

کسی دیش کے بارے میں بھوگول' اتہاس یا درشن اور ساہتیہ کی کتابیں پڑھکر پوری جانکاری حاصل نہیں کی جا سکتی. اس کمی کو وہاں کے نواسیوں اور اُن کے روزانہ جیون کے بارے میں پوری جانکاری ہی پوری کر سکتی ہے. اسی لئے یاترا پر لکھی کتابوں کا ساہتیہ میں بڑا مہتو رہا ہے. دکھ ہے کہ ہندی ساہتیہ میں یاترا پر لکھی کتابوں کی بہت بڑی کمی ہے. اِس بات کا اور بھی دکھ ہے کہ آج جب آئے دن پرتیندھی منڈل ودیشوں کو جایا کرتے ہیں تو بھی ہمارے ساہتیہ کی یہ کمی پوری نہیں ہوتی. یاترا کے اسطرح کے ورنن ہماری آنکھیں ہوسکتے ہیں جن کی روشنی ہم باہر کی دنیا کو دیکھ اور سمجھ سکتے ہیں.

سیٹھ گووند داس جی کی پستک "سدور دکھن پورو" میں نیوزیلینڈ' آسٹریلیا وغیرہ دیشوں کا ورنن ہے. لیکن ہمیں افسوس ہے کہ اِس کتاب میں آپ بیتی ادھک ہے اور جگ بیتی کم. ہم جاننا چاہتے ہیں اِن دیشوں کے لوگ ہمارے بارے میں کیا سوچتے ہیں' اِن دیشوں کی سمسیائیں کیا ہیں' دنیا کی راجنیت کو یہ لوگ کس درشٹی کون سے دیکھتے ہیں' کامن ویلتھ پارلیامنٹری ایسوسی ایشن اور دوسری ایسی ہی بیٹھکوں میں لوگ کس طرح سمسیاؤں پر سوچتے اور کیسے کیسے وچار ظاہر کرتے ہیں. کہیں کہیں سیٹھ جی نے کوشش کی ہے لیکن وہ اپنے میں اتنا کھو گئے ہیں کہ دوسری ضروری باتوں پر اُچت دھیان دے ہی نہیں پائے. کینبرا کی 10 دسمبر سن '50 کی کانفرنس کے بارے میں ضرور اُنہوں نے اپنی سچی رائے لکھی ہے جس سے ہم کو کافی روشنی ملتی ہے:

"لڑائی ہی سب کے دوس (دن) کی چنتا اور راتری (رات) کا سپن ہو اور ہر بات میں امریکہ کے

इशारे पर यदि आवश्यकता हो तो लोग नहीं, सारा देश नंगे हो कर भंगा नाच नहीं, नग्न (नंगा) महाताण्डव (नाच) करे. जो यह न करे वह शान्ति का उपासक नहीं. जो इस पर आलोचनात्मक विचार तक करना चाहे वह संसार विरोधी, बुज़दिल, निकम्मा."

इस किताब का दाम बहुत ही ज़ियादा है. इसलिये यह आम जन्ता की पहुँच के बाहर होगई है. यह ज़रूरी है कि यात्रा वर्णन हमारी जनता के सामने आएं और बहुत ही सस्ते दामों में आएं जिनसे अधिक से अधिक लोग फ़ायदा उठा सकें. —मुजीब रिज़वी

जीवन साहित्य—भूदान यज्ञ अंक

सम्पादक—श्री हरि भाऊ उपाध्याय और श्री यशपाल जैन,

निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली;

लिखावट—हिन्दी;

सफ़े 96 दाम बारह आने; सालाना चन्दा चार रुपए.

'जीवन साहित्य' की हिन्दी दुनिया में अपनी अनोखी शान है. कई बरस की सच्ची और लगातार सेवा के बल पर इसने अपनी ख़ास जगह भी बना ली है.

इसके ख़ास नम्बर तो मानो एक तरह से किताब ही होते हैं जो समझने और गुनने के लायक़ रहते हैं. हाल ही में शान्ति अंक और प्राकृतिक चिकित्सा अंक इसने निकाले हैं. अब यह भूदान यज्ञ अंक है.

भूदान यज्ञ हिन्दुस्तान में ही नहीं दुनिया के इतिहास में एक नई चीज़ है. विनोबा जी इस यज्ञ के ज़रिये से जहां एक तरफ़ सवालों के हल करने के पच्छिमी तर्ज़ को चुनौती देते हैं वहां दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान को भी उलहना देते हैं कि अगर वह हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहेगा और मेहनत से काम नहीं करेगा तो उसे न माया मिलेगी न राम.

'जीवन साहित्य' के इस नम्बर में भूदान यज्ञ के जुदा जुदा पहलुओं पर रोशनी डाली गई है—जिससे उसकी सच्ची जानकारी हासिल करने में मदद मिलती है. ज़ियादा तर लेख उन भाई-बहनों के हैं जो इस यज्ञ में विनोबा जी के साथ हैं और उसको कामयाब बनाने में अपने तन-मन धन से लगे हुये हैं. इसकी वजह से यह नम्बर दिल को कहीं ज़ियादा छूने वाला और असर दार बन गया है.

हमें उम्मीद है कि हिन्दी पढ़ने वाले भाई बहन इस भूदान यज्ञ अंक को अपनायेंगे और 'जीवन साहित्य' को मौक़ा देंगे कि वह दिन दूना रात चौगुना अच्छा साहित्य निकाल कर अहिंसक समाज के बनने बनाने में मदद दे.

—सुरेश रामभाई

اشارے پر یدی آوشیکتا ہو تو لوگ نہیں، سارا دیش ننگے ہوکر ننگا ناچ نہیں، نگن (ننگا) مہاتانڈو (ناچ) کرے. جو یہ نہ کرے وہ شانتی کا اپاسک نہیں، جو اِس پر آلوچناتمک وچارنک کرنا چاہے وہ سنسار ورودھی، بزدل، نکما".

اِس کتاب کا دام بہت ہی زیادہ ہے اِس لئے یہ عام جنتا کی پہونچ باہر ہوگئی ہے. یہ ضروری ہے کہ یاترا ورنن ہماری جنتا کے سامنے آئیں اور بہت ہی سستے داموں میں آئیں جن سے ادھک سے ادھک لوگ فائدہ اُٹھاسکیں. ——مجیب رضوی

جیون ساھتیہ—بھودان یگیہ انک

سمپادک—شری ہری بھاؤ اُپادھیائے اور شری یش پال جین؛

نکالنے والے—سستا ساھتیہ منڈل، نئی دلی:

لکھاوٹ—ھندی؛ صفحے 96؛ دام—بارہ آنے؛ سالانہ چندہ چار روپئے.

' جیون ساھتیہ ' کی ھندی دنیا میں اپنی انوکھی شان ہے. کئی برس کی سچی اور لگاتار سیوا کے بل پر اِس نے اپنی خاص جگہ بھی بنا لی ہے.

اِس کے خاص نمبر تو مانو ایک طرح سے کتاب ہی ہوتے ہیں جو سمجھنے اور گننے کے لائق رہتے ہیں. حال ہی میں شانتی انک اور پراکرتک چکتسا انک اس نے نکالے ہیں. اب یہ بھودان یگیہ انک ہے.

بھودان یگیہ ھندستان میں ہی نہیں دنیا کے اتہاس میں ایک نئی چیز ہے. ونوبا جی اس یگیہ کے ذریعے سے جہاں ایک طرف سوالوں کے حل کرنے کے پچھمی طرز کو چنوتی دیتے ہیں وہاں دوسری طرف ھندستان کو بھی اُلہنا دیتے ہیں کہ اگر وہ ہاتھ پر ہاتھ رکھکر بیٹھا رہے گا اور محنت سے کام نہیں کرے گا تو اُسے مایا ملےگی نہ رام.

' جیون ساھتیہ ' کے اِس نمبر میں بھودان یگیہ کے جدا جدا پہلوؤں پر روشنی ڈالی گئی ہے—جس سے اُس کی سچی جانکاری حاصل کرنے میں مدد ملتی ہے. زیادہ تر لیکھ اُن بھائی بہنوں کے ہیں جو اس یگیہ میں ونوبا جی کے ساتھ ہیں اور اُس کو کامیاب بنانے میں اپنے تن من دھن سے لگے ہوئے ہیں اس کی وجہ سے یہ نمبر دل کو کہیں زیادہ چھونے والا اور اثردار بن گیا ہے.

ہمیں اُمید ہے کہ ھندی پڑھنے والے بھائی بہن اس بھودان یگیہ انک کو اپنائینگے اور 'جیون ساھتیہ' کو موقع دینگے کہ وہ دن دونا رات چوگنا اچھا ساھتیہ نکال کر اہنسک سماج کے بننے بنانے میں مدد دے.

——سریش رام بھائی

देश विदेश की डायरी

(16 दिसम्बर 1951 से 15 जनवरी 1952 तक)

दिसम्बर

16. कोरिया में सुलह की बात चीत जारी है. इन्डोनेसिया की जनता की आज़ादी के लिये मांग और जद्दो जिहद. उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर ज़िले में कोयले की कानों का पता चला.

17. पाकिस्तान के सूबा सरहद में मार्शल ला का एलान.

18. पच्छिम देशों के बनाये सुलह नामे का मसविदा दूसरों का राज़ जानने की एक कोशिश है—यूनो की बैठक में रूसी नुमायन्दे विशिन्सकी की शिकायत. डाक्टर ग्राहम अपनी जाँच-खोज की रिपोर्ट सिक्योरिटी कौंसिल को देंगे.

19. अमरीका के सिक्रेट्री मिस्टर ऐचीसन का इक़रार कि अरब मिस्र वग़ैरा में हालत ज़ियादा संगीन है. कोरिया की लड़ाई में कितने फ़ौजी क़ैदी किसके पास हैं—लिस्ट का एलान. हिन्दुस्तान और इंगलैंड क्रिकेट की दूसरी बाज़ी में (जो दिल्ली में हुई) बराबर रहे.

20. लिबिया बड़े दिन यानी 24 दिसम्बर को आज़ाद हो जायेगा. पेरिस में यूनो कमेटी ने काले-गोरे के सवाल पर बहस की. पख़्तूनों ने अपनी आज़ादी के लिये डाक्टर ग्राहम को एक मेमोरन्डम पेश किया. अनाज के मामले में हिन्दुस्तान बरसों तक स्वावलम्बी नहीं हो सकता—वर्ल्डबैन्क मिशन के मुखिया का एलान.

21. मिस्र के स्वेज़ नहर वाले इलाक़े इस्माइलिया नामी मुक़ाम में अंगरेज़ी हाकिम ने करफ़्यू का एलान किया. ईरान के 38 डिप्टियों ने मजलिस का बाईकाट किया. डाक्टर ग्राहम ने सिक्योरिटी कौंसिल में रिपोर्ट पेश की.

22. मिस्र अपना मामला यूनो में नहीं रखेगा—सरकारी मिनिस्टर का एलान. ईरान के राजकाजी हलक़ों में सनसनी.

23. कोरिया की बातचीत में कोई तरक़्क़ी नहीं. हिन्द आर्थिक कान्फ्रेंस के सदर डाक्टर डे ने पटना में कहा कि हिन्दुस्तान में गिरानी बहुत बढ़ गई है और लोगों की आमदनी का बंटवारा बहुत बे मेल है.

24. मिस्र और रूस में छिपे छिपे ख़ासी बात चीत चल रही है—मिस्री अख़बार का एलान.

دیش ودیش کی ڈائری

(16 دسمبر 1951 سے 15 جنوری 1952 تک)

دسمبر

16 کوریا میں صلح کی بات چیت جاری ہے. انڈونیشیا کی جنتا کی آزادی کے لئے مانگ اور جدو جہد . اتر پردیش کے مرزا پور ضلع میں کوئلہ کی کانوں کا پتہ چلا .

17. پاکستان کے صوبہ سرحد میں مارشل لا کا اعلان .

18. پچھم دیشوں کے بنائے صلح نامے کا مسودا دوسروں کا راز جاننے کی ایک کوشش ہے—یونو کی بیٹھک میں روسی نمائندے وشنسکی کی شکایت . ڈاکٹر گراہم اپنی جانچ کھوج کی رپورٹ سیکورٹی کونسل کو دینگے .

19. امریکہ کے سکریٹری مسٹر ایچیسن کا اقرار کہ عرب مصر وغیرہ میں حالت زیادہ سنگین ہے . کوریا کی لڑائی میں کتنے فوجی قیدی کس کے پاس ہیں—لسٹ کا اعلان . ہندستان اور انگلینڈ کرکٹ کی دوسری بازی میں (جو دلی میں ہوئی) برابر رہے .

20. لیبیا بڑے دن یعنی 24 دسمبر کو آزاد ہو جائیگا . پیرس میں یونو کمیٹی نے کالے گورے کے سوال پر بحث کی . پختونوں نے اپنی آزادی کے لئے ڈاکٹر گراہم کو ایک میمورنڈم پیش کیا . اناج کے معاملے میں ہندستان برسوں تک سواولمبی نہیں ہوسکتا—ورلڈ بینک مشن کے مکھیا کا اعلان .

21. مصر کے سویز نہر والے علاقہ اسمعلیہ نامی مقام میں انگریزی حاکم نے کرفیو کا اعلان کیا . ایران کے 38 ڈپٹیوں نے مجلس کا بائی کاٹ کیا . ڈاکٹر گراہم نے سکیورٹی کونسل میں رپورٹ پیش کی .

22. مصر اپنا معاملہ یونو میں نہیں رکھیگا—سرکاری منسٹر کا اعلان . ایران کے راج کاجی حلقوں میں سنسنی.

23. کوریا کی بات چیت میں کوئی ترقی نہیں . ہند آرتھک کانفرنس کے صدر ڈاکٹر ڈے نے پٹنہ میں کہا کہ ہندستان میں گرانی بہت بڑھ گئی ہے اور لوگوں کی آمدنی کا بٹوارا بہت بے میل ہے .

24. مصر اور روس میں چھپے چھپے خاصی بات چیت چل رہی ہے—مصری اخبار کا اعلان .

25. सिक्योरिटी कौंसिल को चाहिये कि काश्मीर का मामला बराह रास्त खुद तै करे—पाकिस्तानी बड़े वज़ीर का एलान. गोआ का सवाल कुछ अरसे में शान्ति के साथ अपने आप हल हो जायगा—पंडित जवाहरलाल का पहलगाम में भाषण.

26. मिस्र में बड़े अंगरेज़ी अफ़सर—लार्ड अर्सकिन ने बदला लेने की धमकी दी. चीन पर च्यांग फ़ौज के हमले की तैयारी—अमरीकी सलाहकार नक़्शे बना रहे हैं. ईरान ने खर्च की कमी की वजह से लन्दन, रोम और दिल्ली से अपने राजदूत वापिस बुला लिये.

27. ईरान में मजलिस के खास इजलास के लिये विरोधी पार्टी की मांग. मिस्र वाले हेग अदालत का फ़ैसला नहीं मान सकते—उनके देश में अंगरेज़ों का ज़बरदस्ती रहना नामुमकिन. काश्मीर के मामले में किसी के आंखें दिखाने पर हिन्दुस्तान डर नहीं सकता—पंडित जवाहर लाल की चेतावनी.

28. दक्खिन अफ़रीका का काला क़ानून रद्द किया जाना चाहिये—दक्खिन अफ़रीका हिन्द कांग्रेस के सदर डाक्टर दादू का एलान. कम्यूनिस्ट फ़ौज अपना रवैया नहीं बदल सकती—पेकिंग रेडियो की खबर.

29. हिन्दुस्तान में बढ़िया बारीक कपड़े का दाम रुपये में पाँच आने क़रीब बढ़ जायेगा.

30. मिस्र के मामले में पड़ने के लिये अमरीका की कोशिश. बंगाल के जादवपुर कालिज में डाक्टर राधा कृष्णन की हिन्द सरकार को चेतावनी.

31. कोरिया में सुलह हो जाने पर भी अमरीका को आगे की एहतियात के ख्याल से फ़ौज रखना पड़ेगी—सरकारी सेक्रेट्री एचीसन का बयान. इस साल नदियों को बांधने के काम में हिन्द सरकार ने 54 करोड़ रुपये का क़र्ज़ सूबे की सरकारों को दिया. आंध्र देश में सत्याग्रह के लिये स्वामी सीताराम की तैयारी.

जनवरी.

1. मिस्र में अंगरेज़ी और देशी सिपाहियों में गोलाबारी. वर्ल्ड बैंक जो भी सुझाव पेश करे वह हमारी 'क़ौमी मांग' के अन्दर रहना चाहिये—ईरान के बड़े वज़ीर डाक्टर मुसाद्दिक़ का एलान. कलकत्ते में बज बज नाम की जगह पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कोम गाटा मारू के शहीदों की यादगार का उद्घाटन किया.

2. यूनो की राज काजी कमेटी में दक्खिन अफ़रीका सरकार की पालिसी पर बहस. मिस्र में बन्दूक़बारी जारी.

25. سکیورٹی کونسل کو چاہئے کہ کشمیر کا معاملہ براہ راست خود طے کرے—پاکستانی بڑے وزیر کا اعلان. گوآ کا سوال کچھ عرصے میں شانتی کے ساتھ اپنے آپ حل ہو جائیگا—پنڈت جواہر لال کا پہل گم میں بھاشن.

26. مصر میں بڑے انگریزی افسر—لارڈ ارسکن نے بدلا لینے کی دھمکی دی. چین پر چیانگ فوج کے حملے کی تیاری—امریکی صلاح کار نقشے بنا رہے ہیں. ایران نے خرچ کی کمی کی وجہ سے لندن، روم اور دلی سے اپنے راج دوت واپس بلا لئے.

27. ایران میں مجلس کے خاص اجلاس کے لئے ورودھی پارٹی کی مانگ. مصر والے ہیگ عدالت کا فیصلہ نہیں مان سکتے—ان کے دیش میں انگریزوں کا زبردستی رہنا ناممکن. کشمیر کے معاملے میں کسی کے آنکھیں دکھانے پر ہندستان ڈر نہیں سکتا—پنڈت جواہر لال کی چیتاونی.

28. دکھن افریقہ کا کالا قانون رد کیا جانا چاہئے. دکھن افریقہ ہند کانگریس کے صدر ڈاکٹر دادو کا اعلان. کمیونسٹ فوج اپنا رویا نہیں بدل سکتی—پیکنگ ریڈیو کی خبر.

29. ہندستان میں بڑھیا باریک کپڑے کا دام روپے میں پانچ آنے قریب بڑھ جائیگا.

30. مصر کے معاملے میں پڑنے کے لئے امریکہ کی کوشش. بنگال کے جادو پور کالج میں ڈاکٹر رادھا کرشنن کی ہند سرکار کو چیتاونی.

31. کوریا میں صلح ہوجانے پر بھی امریکہ کو آگے کی احتیاط کے خیال سے فوج رکھنا پڑے گی—سرکاری سکریٹری ایچیسن کا بیان. اس سال ندیوں کو باندھنے کے کام میں ہند سرکار نے 54 کروڑ روپے کا قرض صوبے کی سرکاروں کو دیا. آندھر دیش میں ستیاگرہ کے لئے سوامی سیتارام کی تیاری.

جنوری

1. مصر میں انگریزی اور دیشی سپاہیوں میں گولہ باری. ورلڈ بینک جو بھی سجھاؤ پیش کرے وہ ہماری 'قومی مانگ' کے اندر رہنا چاہئے—ایران کے بڑے وزیر ڈاکٹر مصادق کا اعلان. کلکتے میں بج بج نام کی جگہ پر پنڈت جواہر لال نہرو نے کوما گاٹا مارو کے شہیدوں کی یادگار کا ادگھاٹن کیا.

2. یونو کی راج کاجی کمیٹی میں دکھن افریقہ سرکار کی پالیسی پر بحث. مصر میں بندوق باری جاری.

3. कोरिया की लड़ाई ख़त्म करने के लिये सिक्यूरिटी कौन्सिल के आगे रूस की तजवीज़. वर्ल्ड बैन्क की शर्तें मानने से डाक्टर मुसादिक़ का इन्कार.

4. स्वेज़ नहर के इलाक़े में लड़ाई फिर जारी. सूबा सरहद में खुले रेफ़रेन्डम (रायज़नी) के लिये एक अफ़ग़ानी हुक्काम की मांग.

5. ब्रिटेन के बड़े वज़ीर मिस्टर चर्चिल अमरीका पहुँचे. अन्तर-क़ौमी सुलह के लिये मार्शल स्टालिन अमरीकी या अंगरेज़ नेताओं से मिलने को तैयार. चीन पर हवाई और समुन्द्री चढ़ाई करने के लिये (अगर कोरिया की बातचीत कामयाब न हो तो) अमरीका की तैयारी. अमरीका से कई-करोड़ रुपया उधार लेने के लिये हिन्दुस्तान और अमरीका में माहेदा.

6. अमरीका में "क़ौमी" लुटेरों के ख़िलाफ़ "सफ़ाई" का नश्तर. नैपाल के बड़े वज़ीर दिल्ली आये. भू-दान यज्ञ के सिलसिले में घूमते हुए विनोबा जी काशीपुर (ज़िला नैनीताल) पहुँचे.

7. कोरिया की बात चीत यकायक ख़त्म. कोरिया और इन्डोचीन की लड़ाई "सारे आलम की" लड़ाई है—जनरल आई जेनहावर. अमरीका "तोप और मक्खन" दोनों बनायेगा—एक डिफ़ेन्स डाइरेक्टर का बयान.

8. वाशिंगटन में मिस्टर चर्चिल और मिस्टर ट्रूमैन में बातचीत. यूनो की राजकाजी कमेटी की मांग कि हर मुल्क कुछ यूनिट यूनो के लिये आगे के हमलों के मुक़ाबले के वास्ते दे.

9. राज पति ट्रूमैन ने अमरीकी कांगरेस से कहा—ग़ैर कम्यूनिस्टी मुल्कों को फ़ौजी और आर्थिक मदद देना चाहिये. स्वेज़ नहर के इलाक़े में घमासान लड़ाई. अमरीका को अरब मुल्कों से बराबरी के दर्जे पर बात करना चाहिये—अरब लीग के सेक्रेटरी का एलान.

10. फ़्रांस में बड़े वज़ीर का इस्तीफ़ा. यूनो की आर्थिक कमेटी ने ज़मीन सुधार क़ानून पास किये जाने की सिफ़ारिश की. यूनो की ट्रस्टी शिप कमेटी ने ठहराव पास किया कि विदेशी ताक़तों को वह तारीख़ें मुक़र्रर कर देना चाहिये जिन तक वह अपने मातहत ट्रस्टी देशों को आज़ाद कर देंगी. स्वामी सीताराम आंध्र देश के लिये 12 फ़रवरी से सत्याग्रह शुरू करेंगे.

11. लन्दन शहर में 13 आदमियों ने "आपरेशन गांधी" के नाम से लड़ाई के ख़िलाफ़, अंगरेज़ी वार आफ़िस के सामने, प्रदर्शन किया. दक्खिन पूरब एशिया की हिफ़ाज़त के लिये वाशिंगटन में फ़ौजी बात चीत शुरू

3. کوریا کی لڑائی ختم کرنے کے لئے سیکیورٹی کونسل کے آگے روس کی تجویز. ورلڈ بینک کی شرطیں ماننے سے ڈاکٹر مصادق کا انکار.

4. سویز نہر کے علاقے میں لڑائی پھر جاری. صوبہ سرحد میں کھلے ریفرینڈم (رائے زنی) کے لئے ایک افغانی حکام کی مانگ.

5. برٹین کے بڑے وزیر مسٹر چرچل امریکہ پہونچے. انتر قومی صلح کے لئے مارشل اسٹالن امریکی یا انگریز نیتاؤں سے ملنے کو تیار. چین پر ہوائی اور سمندری چڑھائی کرنے کے لئے (اگر کوریا کی بات چیت کامیاب نہ ہو تو) امریکہ کی تیاری. امریکہ سے کئی کروڑ روپیہ ادھار لینے کے لئے ہندستان اور امریکہ میں معاہدہ

6. امریکہ میں "قومی" لٹیروں کے خلاف "صفائی" کا نشتر. نیپال کے بڑے وزیر دلی آئے. بھودان یگیہ کے سلسلے میں گھومتے ہوئے ونوباجی کاشی‌پور (ضلع نینی تال) پہونچے.

7. کوریا کی بات چیت یکایک ختم. کوریا اور انڈوچین کی لڑائی "سارے عالم کی" لڑائی ہے—جنرل آئزن ہوور. امریکہ "توپ اور مکھن" دونوں بنائیگا—ایک ڈفینس ڈائرکٹر کا بیان.

8. واشنگٹن میں مسٹر چرچل اور مسٹر ٹرومین میں بات چیت. یونو کی راج کاجی کمیٹی کی مانگ کہ ہر ملک کچھ یونٹ یونو کے لئے آگے کے حملوں کے مقابلے کے واسطے دے.

9. راج پتی ٹرومین نے امریکی کانگریس سے کہا—غیر کمیونسٹی ملکوں کو فوجی اور آرتھک مدد دینا چاہئے. سویز نہر کے علاقے میں گھماسان لڑائی. امریکہ کو عرب ملکوں سے برابری کے درجے پر بات کرنا چاہئے—عرب لیگ کے سکریٹری کا اعلان.

10. فرانس میں بڑے وزیر کا استعفیٰ. یونو کی آرتھک کمیٹی نے زمین سدھار قانون پاس کئے جانے کی سفارش کی. یونو کی ٹرسٹی شپ کمیٹی نے ٹھہراؤ پاس کیا کہ ودیشی طاقتوں کو وہ تاریخیں مقرر کر دینا چاہئے جن تک وہ اپنے ماتحت ٹرسٹی دیشوں کو آزاد کر دینگی. سوامی سیتارام آندھر دیش کے لئے 12 فروری سے ستیاگرہ شروع کرینگے.

11. لندن شہر میں 13 آدمیوں نے "آپریشن گاندھی" کے نام سے لڑائی کے خلاف، انگریزی وار آفس کے سامنے، پردرشن کیا. دکھن پورب ایشیا کی حفاظت کے لئے واشنگٹن میں فوجی بات چیت شروع

जिसमें अमरीका, इंगलैण्ड और फ्रांस शरीक हुए. नेपाल की नई पीढ़ी में कम्यूनिज्म का जोर बढ़ रहा है—बड़े वज़ीर कोयराला का बयान.

12. ट्यूनीसिया के नेताओं ने कहा कि हमारे मामले में फ्रांस को दखल देने की गुंजायश नहीं. इंगलैण्ड योरोपियन फ़ेडरेशन में शामिल नहीं हो सकता. अपनी मदद के लिये हिन्दुस्तान की आस्ट्रेलिया से बात चीत. इलाहाबाद के एक बन्द कमरे में 9 यात्री मरे पाये गये.

13. मिस्र में गोला बारी फिर शुरू. 21 जनवरी तक ईरान के अन्दर अंगरेज़ों के सब दफ़्तर व कन्सलेट बन्द हो जायें—ईरान सरकार का अंगरेज़ों को हुक्म. मिस्टर चर्चिल कुछ बात चीत करने के लिये कनाडा गये.

14. चीन के शहर मुकडन के ऊपर अमरीकी जहाज़ उड़े. पहली मार्च तक अमरीका स्पेन को मदद देने के लिये उससे राज़ीनामा कर लेगा. एक शहीद विद्यार्थी के जनाज़े का क़ाहिरा में दो-तीन मील लम्बा जुलूस. क्रिकेट के मेल में कानपुर में अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानियों को हरा दिया. उत्तर प्रदेश के पूरबी ज़िलों में अनाज की बेहद तंगी—स्पेशल ट्रेनें दौड़ाई जा रही हैं.

15. लन्दन में अंगरेज़ी कामन वेल्थ के अर्थ-मिनिस्टरों की बातचीत शुरू. फ़ारमूसा में छै लाख सिपाही तैयार—ज़रूरत है हथियार व सामान की—च्यांग सरकार के एक हाकिम का बयान.

جسمیں امریکہ، انگلینڈ اور فرانس شریک ہوئے. نیپال کی نئی پیڑھی میں کمیونزم کا زور بڑھ رہا ہے—بڑے وزیر کوئرالا کا بیان .

12. ٹیونیسیا کے نیتاؤں نے کہا کہ ہمارے معاملے میں فرانس کو دخل دینے کی گنجائش نہیں. انگلینڈ یوروپین فیڈریشن میں شامل نہیں ہوسکتا. اپنی مدد کے لئے ہندستان کی آسٹریلیا سے بات چیت الہ آباد کے ایک بند کمرے میں 9 یاتری مرے پائے گئے .

13 مصر میں گولا باری پھر شروع . 21 جنوری تک ایران کے اندر انگریزوں کے سب دفتر و کنسلیٹ بند ہوجائیں—ایران سرکار کا انگریزوں کو حکم . مسٹر چرچل کچھ بات چیت کرنے کے لئے کناڈا گئے .

14. چین کے شہر مکڈن کے اوپر امریکی جہاز اڑے . پہلی مارچ تک امریکہ اسپین کو مدد دینے کے لئے اس سے راضی نامہ کرلیگا . ایک شہید ودیارتھی کے جنازے کا قاہرہ میں دو تین میل لمبا جلوس کریکٹ کے میل میں کانپور میں انگریزوں نے ہندستانیوں کو ہرا دیا . اتر پردیش کے پوربی ضلعوں میں اناج کی بے حد تنگی —اسپیشل ٹرینیں دوڑائی جارہی ہیں

15 لندن میں انگریزی کامن ویلتھ کے ارتھ منسٹروں کی بات چیت شروع . فارموسا میں چھ لاکھ سپاہی تیار—ضرورت ہے ہتھیار و سامان کی—چیانگ سرکار کے ایک حاکم کا بیان .

हमारी राय

ہماری رائے

हाल का चुनाव--

हाल का चुनाव हिन्दुस्तान के इतिहास में बिलकुल एक नई घटना थी. साढ़े सतरह करोड़ वोटरों में से कम से कम पांच सात करोड़ का भी, जिन में मर्द, औरतें, बूढ़े, अंधे और अपाहिज तक शामिल थे, अपनी अपनी जगहों से हिल कर वोट देने जाना, और यह समझना कि वह देश के एक बड़े काम में हिस्सा ले रहे हैं, और महसूस करना कि आख़िर वह भी राज का एक अंग हैं और मुल्क की क़िस्मत को इधर से उधर फेर सकते हैं, एक बहुत बड़ी बात थी. रासकुमारी से हिमालय तक और बंगाल से पंजाब तक इतना बड़ा त्योहार, पर्व या मेला इस देश में आज तक कभी नहीं हुआ था.

इस चुनाव से देश के अन्दर बेदारी भी काफ़ी बढ़ी है. करोड़ों बालिग़ आदमियों पर तो असर है ही, नाबालिग़ बच्चों पर असर की एक छोटी सी आँखों देखी घटना हमारे एक दोस्त ने सुनाईः--

एक पोलिंग स्टेशन पर वोटिंग हो रही थी. कुछ बच्चे एक तरफ़ खड़े तमाशा देख रहे थे. उनमें से एक ने दूसरे से कहा—"हमारी उमर अभी तेरह बरस की है. पांच साल बाद अगला चुनाव होगा. तब तक हम अठारह के हो जायंगे. दो साल बढ़ा के लिखा देंगे तो अगले चुनाव में हम भी वोट देंगे." दूसरे लड़के ने कहा—"हमारी उमर तो अभी ग्यारह बरस की ही है, हम कब वोट दे सकेंगे ?" पहले ने जवाब दिया—"तुम्हें तो अभी तीसरे चुनाव में वोट देने का हक़ मिलेगा."

घटना छोटी सी है पर काफ़ी अर्थ भरी. अंगरेज़ी राज के जाने और मुल्क को सियासी आज़ादी मिलने से कोई भी और अच्छा नतीजा पैदा हुआ हो या न हुआ हो इसमें कोई शक नहीं कि बालिग़ मताधिकार और उसके अधीन हाल का चुनाव नई आज़ादी का एक बहुत बड़ा नतीजा है जिस पर देश को बधाई दी जा सकती है.

इस तरह के चुनावों में योरप के देशों के अन्दर जहां वोटरों की गिनती हमारे यहां से बेहद कम होती है आम

حال کا چناؤ—

حال کا چناؤ ہندستان کے اتہاس میں بالکل ایک نئی گھٹنا تھی ۔ ساڑھے سترہ کروڑ ووٹروں میں سے کم سے کم پانچ سات کروڑ کا بھی، جن میں مرد، عورتیں، بوڑھے، اندھے اور اپاہج تک شامل تھے، اپنی اپنی جگہوں سے ہلکر ووٹ دینے جانا، اور یہ سمجھنا کہ وہ دیش کے ایک بڑے کام میں حصہ لے رہے ہیں، اور محسوس کرنا کہ آخر وہ بھی راج کا ایک انگ ہیں اور ملک کی قسمت کو اِدھر سے اُدھر پھیر سکتے ہیں، ایک بہت بڑی بات تھی ۔ راس کماری سے ہمالیہ تک اور بنگال سے پنجاب تک اتنا بڑا تیوہار، پرب یا میلہ اِس دیش میں آج تک کبھی نہیں ہوا تھا ۔

اِس چناؤ سے دیش کے اندر بیداری بھی کافی بڑھی ہے ۔ کروڑوں بالغ آدمیوں پر تو اثر ہے ہی، نابالغ بچوں پر اثر کی ایک چھوٹی سی آنکھوں دیکھی گھٹنا ہمارے ایک دوست نے سنائی :—

ایک پولنگ اسٹیشن پر ووٹنگ ہو رہی تھی ۔ کچھ بچے ایک طرف کھڑے تماشہ دیکھ رہے تھے ۔ اُن میں سے ایک نے دوسرے سے کہا—" ہماری عمر ابھی تیرہ برس کی ہے ۔ پانچ سال بعد اگلا چناؤ ہوگا ۔ تب تک ہم اٹھارہ کے ہو جائیں گے ۔ دو سال بڑھا کے لکھا دیں گے تو اگلے چناؤ میں ہم بھی ووٹ دینگے ۔" دوسرے لڑکے نے کہا—" ہماری عمر تو ابھی گیارہ برس کی ہی ہے ۔ ہم کب ووٹ دے سکیں گے ؟" پہلے نے جواب دیا—" تمہیں تو ابھی تیسرے چناؤ میں ووٹ دینے کا حق ملے گا ۔"

گھٹنا چھوٹی سی ہے پر کافی ارتھ بھری ۔ انگریزی راج کے جانے اور ملک کو سیاسی آزادی ملنے سے کوئی بھی اور اچھا نتیجہ پیدا ہوا ہو یا نہ ہوا ہو اس میں کوئی شک نہیں کہ بالغ متا دھیکار اور اُس کے ادھین حال کا چناؤ نئی آزادی کا ایک بہت بڑا نتیجہ ہے جس پر دیش کو بدھائی دی جا سکتی ہے ۔

اِس طرح کے چناؤوں میں یورپ کے دیشوں کے اندر جہاں ووٹروں کی گنتی ہمارے یہاں سے بے حد کم ہوتی ہے عام

पर काफ़ी दंगे-फ़िसाद, और नाजायज़ हरकतें ी हैं. हमारे चुनाव से पहले भी बहुत से लोगों को डर कि देश का यह पहला चुनाव अमन से नहीं गुज़र कता. इधर उधर कुछ छोटी मोटी छेड़ छाड़ और भूलें हुईं. एक हलका सा मज़ाक़ हमें इस समय याद आ ा है और वह भी दिल्ली में बड़े बड़े नेताओं के रहते. ा भर के अख़बारों में छपा कि हमारे दोस्त डाक्टर फ़ुद्दीन किचलू ने दिल्ली में चुनाव के एक बड़े जलसे में ाशन दिया और कहा कि कांगरेस ही लोगों के खाने ने की और दूसरी कठिनाइयों को दूर कर सकती है सलिये लोगों को चाहिये कि कांगरेस ही को वोट दें ौरा. उनका यह भाषण भी तीन पैराग्राफ़ के अन्दर दूर र के अख़बारों में छप गया. डाक्टर किचलू के विचारों ो जानते हुए हमें इस ख़बर पर कुछ अचरज हुआ था. ब हम दिल्ली गए तो हमने ख़ुद डाक्टर किचलू से पूछा. ालूम हुआ कि वह अपने बंगले से निकल कर कभी सी जलसे में गए ही नहीं. हां, उन्होंने ख़ुद बहुत हैरान कर अपना भाषण अख़बारों में पढ़ा था. ख़ैर! हो कता है इसी तरह की और भी बातें कई जगह हुई हों ौर हुई होंगी. आख़िर देश इतना बड़ा देश है और सब ा सदाचार का आदर्श एक सा ऊंचा भी नहीं होता. पर ारों तरफ़ निगाह डालते हुए और सारे देश को देखते हुए समें भी कोई शक नहीं कि हमारा यह पहला चुनाव बहुत ी शान्ति, सुन्दरता और ईमानदारी के साथ पूरा हुआ.

इस कामयाबी का श्रेय देश की आम जनता की पुरानी मानदारी की परम्परा और महात्मा गांधी के असर को है ही, पर इसके साथ साथ अगर किसी एक आदमी ो इसका श्रेय दिया जा सकता है तो वह जवाहर लाल ी को. ख़ास कर कांगरेस कारकरताओं, कांगरेसी रकारों और उन के अफ़सरों की तरफ़ से अगर इतनी र जानिबदारी और ईमानदारी बरती जा सकी तो वह वाहर लाल जी की ही वजह से. हम यह नहीं कहते कि ांगरेस वालों या सरकारी अफ़सरों की तरफ़ से कहीं ई बेजा बात हुई ही नहीं. हमारा मतलब केवल यह है क कुल मिलाकर देखते हुए इस सारे चुनाव में सब पार- यों और हर विचार के लोगों को पूरा अवसर दिया या और कुल मिला कर काफ़ी ईमानदारी और ग़ैर ानिबदारी से काम हुआ जिस पर देश को उचित अभि- न हो सकता है.

अब हम यह देखें कि इस चुनाव से मोटे मोटे नतीजे ा निकल सकते हैं. हमारे विचार से इस चुनाव में यह त बातें साफ़ चमक गईं:—

(1) मरकज़ में और अलग अलग सूबों में कुल मिलाकर

طور پر کافی دنگے فساد، اور نا جائز حرکتیں ہوئی ہیں۔ ہمارے چناؤ سے پہلے بھی بہت سے لوگوں کو ڈر تھا کہ دیش کا یہ پہلا چناؤ امن سے نہیں گزر سکتا۔ اِدھر اُدھر کچھ چھوٹی موٹی چھیڑ چھاڑ اور بھولیں بھی ہوئیں۔ ایک ہلکا سا مذاق ہمیں اِس سمے یاد آ رہا ہے اور وہ بھی دلی میں بڑے بڑے نیتاؤں کے رہتے۔ دیش بھر کے اخباروں میں چھپا کہ ہمارے دوست ڈاکٹر سیف الدین کچلو نے دلی میں چناؤ کے ایک بڑے جلسے میں بھاشن دیا اور کہا کہ کانگریس ہی لوگوں کے کھانے پینے کی اور دوسری کٹھنائیوں کو دور کر سکتی ہے۔ اس لئے لوگوں کو چاہئے کہ کانگریس ہی کو ووٹ دیں وغیرہ۔ اُن کا وہ بھاشن بھی تین پیراگراف کے اندر دور دور کے اخباروں میں چھپ گیا۔ ڈاکٹر کچلو کے وچاروں کو جانتے ہوئے ہمیں اِس خبر پر کچھ اچرج ہوا تھا۔ جب ہم دلی گئے تو ہم نے خود ڈاکٹر کچلو سے پوچھا۔ معلوم ہوا کہ وہ اپنے بنگلے سے نکل کر کبھی کسی جلسے میں گئے ہی نہیں۔ ہاں، اُنہوں نے خود بہت حیران ہو کر اپنا بھاشن اخباروں میں پڑھا تھا۔ خیر! ہو سکتا ہے کہ اسی طرح کی اور بھی باتیں کئی جگہ ہوئی ہوں اور ہوئی ہوں گی۔ آخر دیش اتنا بڑا دیش ہے اور سب کا سداچار کا آدرش ایک سا اونچا بھی نہیں ہوتا۔ پر چاروں طرف نگاہ ڈالتے ہوئے اور سارے دیش کو دیکھتے ہوئے اِسمیں بھی کوئی شک نہیں کہ ہمارا یہ پہلا چناؤ بہت ہی شانتی، سندرتا اور ایمانداری کے ساتھ پورا ہوا۔

اِس کامیابی کا شریہ دیش کی عام جنتا کی پرانی ایمانداری کی پرمپرا اور مہاتما گاندھی کے اثر کو تو ہے ہی، پر اسکے ساتھ ساتھ اگر کسی ایک آدمی کو اِسکا شریہ دیا جا سکتا ہے تو وہ جواہر لال جی کو۔ خاص کر کانگریس کارکرتاؤں، کانگریسی سرکاروں اور اُن کے افسروں کی طرف سے اگر اتنی غیر جانبداری اور ایمانداری برتی جاسکی تو وہ جواہر لال جی کی ہی وجہ سے۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ کانگریس والوں یا سرکاری افسروں کی طرف سے کہیں کوئی بیجا بات ہوئی ہی نہیں۔ ہمارا مطلب کیول یہ ہے کہ کل ملا کر دیکھتے ہوئے اِس سارے چناؤ میں سب پارٹیوں اور وچار کے لوگوں کو پورا اوسر دیا گیا اور کل ملا کر کافی ایمانداری اور غیر جانبداری سے کام ہوا جس پر دیش کو اُچت ابھیمان ہو سکتا ہے۔

اب ہم ذرا یہ دیکھیں کہ اِس چناؤ سے موٹے موٹے نتیجے کیا نکل سکتے ہیں۔ ہمارے وچار سے اِس چناؤ میں یہ سات باتیں صاف چمک گئیں:—

(1) مرکز میں اور الگ الگ صوبوں میں کل ملا کر

सब से अधिक जीत कांग्रेसी उम्मीदवारों की ही रही. सरकारें एक दो जगह को छोड़ कर कांग्रेस की ही बनेंगी. पर कुल जितने वोट पड़े उनमें से कांग्रेसियों को कम वोट और ग़ैर कांग्रेसियों को सब मिला कर अधिक वोट मिले. इस तरह देखा जाय तो जनता कांग्रेस के हक़ में कम और कांग्रेस के ख़िलाफ़ अधिक है. और भी जिस तरह से वोटिंग हुआ, जिस तरह के विचार जगह जगह लोगों ने ख़ास कर कांग्रेस को वोट देने वालों तक ने, प्रकट किये, उससे साफ़ ज़ाहिर है कि देश की आम जनता पिछले चार साल के कांग्रेसी राज और छोटे बड़े कांग्रेसी हाकिमों से काफ़ी दुखी और नाराज़ है. जनता का फ़ैसला कांग्रेस के लिये यह है—"इन चार साल के अन्दर तुम काफ़ी नालायक़ और राज करने के नाक़ाबिल साबित हुए. तुमसे रिआया को आराम की जगह तकलीफ़ पहुँची. तुम हमारी मुसीबतों को हल नहीं कर सके. लेकिन हमें कोई दूसरा दिखाई भी नहीं देता जिस पर तुम से अधिक भरोसा हो सके. तुम्हारा मुल्क पर किसी ज़माने का बहुत एहसान भी है. इस लिये हम तुम्हें यह एक मौक़ा और देते हैं. तुम अगर संभल सको तो संभल जाओ और अगले पांच साल में कुछ करके दिखा दो." देश की कांग्रेस को यह ज़बरदस्त चेतावनी है.

(2) दूसरे यह कि देश की साम्प्रादयिक शक्तियों से कुछ लोग बेजा तौर पर डरे हुए थे, उन्हें इन शक्तियों का कुछ अजीब अन्दाज़ा था. चुनाव ने साम्प्रदायिक शक्तियों के इस बुलबुले को पूरी तरह फोड़ दिया. शायद सैकड़ा पीछे जितनी ज़मानतें जन संघ, हिन्दू महासभा और राम राज परिशद के उम्मीदवारों की ज़ब्त हुई हैं उतनी किसी दूसरी पारटी की नहीं हुईं. चुनाव ने दिखा दिया कि मुल्क की आम जनता इस तरह की नफ़रतों और आपसी झगड़ों को पसन्द नहीं करती. हिन्दू हों या मुसलमान या कोई भी, आम जनता का दिल अभी सूखा नहीं है. उसमें प्रेम और इनसानी भाई चारे की काफ़ी नमी है. यों तो थोड़े से भी बहके हुए या सरफिरे आदमी किसी भी शहर या मुल्क के अमन को ख़तरे में डाल सकते हैं और किसी को भी क़त्ल करवा सकते हैं या कहीं भी आग लगवा सकते हैं. लेकिन देश के आम लोग और देश का असली दिल इस ज़हर से पाक है. केवल सच्ची तालीम, अपने बहके हुए भाइयों को समझाने बुझाने और मुल्क को थोड़ा संभल कर चलने की ज़रूरत है.

(3) सब से ज़ियादा कमज़ोर और कम समझ इस चुनाव में वह भाई साबित हुए जो मार्क्स के उसूलों का दम भी भरते हैं और मार्क्स के उसूलों पर चलने की कोशिश करने वाले दुनिया के दो सब से बड़े देशों की झूठी सच्ची बुराई भी करते फिरते हैं. आज़ादी का दम भी भरते

ب سے ادھک جیت کانگریسی امیدواروں کی ہی
ی . سرکاریں ایک دو جگہ کو چھوڑ کر کانگریس کی
ی بنیں گی . پر کل جتنے ووٹ پڑے اُن میں سے
نگریسیوں کو کم اور غیر کانگریسیوں کو سب ملا کر ادھک
ٹ ملے . اس طرح دیکھا جائے تو جنتا کانگریس کے
ق میں کم اور کانگریس کے خلاف ادھک ہے . اور بھی جس
رح سے ووٹنگ ہوا' جسطرح کے وچار جگہ جگہ لوگوں نے
اص کر کانگریس کو ووٹ دینے والوں تک نے پرکٹ کئے
س سے صاف ظاہر ہے کہ دیش کی عام جنتا پچھلے
چار سال کے کانگریسی راج اور چھوٹے بڑے کانگریسی
حاکموں سے کافی دکھی اور ناراض ہے . جنتا کا فیصلہ
نگریس کے لئے یہ ہے—'' اِن چار سال کے اندر تم کافی
لائق اور راج کرنے کے ناقابل ثابت ہوئے . تم سے رعایا کو
رام کی جگہ تکلیف پہنچی . تم ہماری مصیبتوں کو
ل نہیں کر سکے . لیکن ہمیں کوئی دوسرا دکھائی
ی نہیں دیتا جس پر تم سے ادھک بھروسہ ہو سکے .
ہارا ملک پر کسی زمانے کا بہت احسان بھی ہے . اِس
ے ہم تمہیں یہ ایک موقع اور دیتے ہیں . تم اگر
نبھل سکو تو سنبھل جاؤ اور اگلے پانچ سال میں کچھ
کے دکھا دو '' دیش کی کانگریس کو یہ زبردست
چیتاونی ہے .

(2) دوسرے یہ دیش کی سامپردایک شکتیوں سے
چھ لوگ بیجا طور پر ڈرے ہوئے تھے ' انہیں اِن شکتیوں
کچھ عجیب اندازہ تھا. چناؤ نے سامپردایک شکتیوں
. اس بلبلے کو پوری طرح پھوڑ دیا . شاید سیکڑہ پیچھے
تنی ضمانتیں جن سنگھ' ہندو مہاسبھا اور رام راج
رشد کے امیدواروں کی ضبط ہوئی ہیں اتنی کسی
سری پارٹی کی نہیں ہوئیں . چناؤ نے دکھا دیا کہ
لک کی عام جنتا اِسطرح کی نفرتوں یا آپسی جھگڑوں
پسند نہیں کرتی . ہندو ہوں یا مسلمان یا کوئی بھی'
م جنتا کا دل ابھی سوکھا نہیں ہے . اُسمیں پریم اور
سانی بھائی چارے کی کافی نمی ہے . یوں تو تھوڑے سے
ی بہکے ہوئے یا سر پھرے آدمی کسی بھی شہر یا ملک
امن کو خطرے میں ڈال سکتے ہیں اور کسی کو بھی قتل
را سکتے ہیں یا کہیں بھی آگ لگوا سکتے ہیں . لیکن
ش کے عام لوگ اور دیش کا اصلی دل اِس زہر سے پاک
. کیول سچی تعلیم' اپنے بہکے ہوئے بھائیوں کو سمجھانے
جھانے اور ملک کو تھوڑا سنبھل کر چلنے کی ضرورت ہے .

(3) سب سے زیادہ کمزور اور کم سمجھ اِس چناؤ
ں وہ بھائی ثابت ہوئے جو مارکس کے اصولوں کا دم
ی بھرتے ہیں اور مارکس کے اصولوں پر چلنے کی کوشش
ے والے دنیا کے دو سب سے بڑے دیشوں کی جھوٹی
چی برائی بھی کرتے پھرتے ہیں . آزادی کا دم بھی بھرتے

और दुनिया की आबादी के इस समय के सब से बड़े दुश्मन मुल्कों के साथ साज़ बाज़ भी करते हैं. साम्प्रदायिकता से ऊपर होने का दावा भी करते हैं और ज़रा सा मौक़ा मिल जाने पर पाकिस्तान पर चढ़ाई का शोर भी मचाते हैं वग़ैरा वग़ैरा. इस चुनाव ने यह दिखा दिया कि मौक़ा परस्ती इतनी अच्छी, ऊँची या काम की चीज़ नहीं है जितनी उसूल परस्ती.

(4) चौथी बात इस चुनाव ने यह भी पूरी तरह दिखला दी कि इस समय देश के अन्दर की अगर कोई पारटी आगे चल कर कांगरेस की जगह लेती दिखाई देती है तो वह अच्छी हो या बुरी कम्युनिस्ट पारटी ही है. जेल में पड़े हुए या नज़रबन्द लोगों पर चारों तरफ़ से वोटों की बौछार होना और सब से ज़ियादा फ़ी सदी वोट उन्हीं इलाक़ों में पड़ना जहाँ कम्युनिस्टों का ज़ोर बताया जाता है कोई मामूली चीज़ नहीं है. देखने वालों के लिये इससे हवा के रुख़ का पता चलता है.

(5) पांचवीं बात चुनाव के नतीजों से यह भी मालूम होती है कि जगह जगह अगर ग़ैर कांगरेसी शक्तियाँ आपस में फट जाने की जगह मिल कर खड़ी हो सकतीं यानी सब ग़ैर कांगरेसी शक्तियाँ कांगरेसी उम्मीदवार के मुक़ाबले में एक ही ग़ैर कांगरेसी उम्मीदवार पर ज़ोर लगा सकतीं तो मुमकिन है चुनाव के नतीजे बिलकुल उलट जाते.

(6) छटे इस चुनाव ने इस सचाई को भी अच्छी तरह साबित कर दिया कि आम लोगों, ख़ास कर बे पढ़े लोगों के न केवल दिल पढ़े लिखे लोगों के दिलों से अधिक शुद्ध होते हैं बल्कि उनकी क़ुदरती सूझ बूझ और सादा समझ भी पढ़े लिखे लोगों की अक़्ल से अधिक ठीक काम करती है. दिल का असर आदमी के दिमाग़ पर भी पड़ता है. जात परस्ती, प्रान्त परस्ती, फ़िरक़ा परस्ती, ग़लत तरह की मज़हबी कट्टरता, चालाकी और बेईमानी जितनी पढ़े लिखे लोगों में मिलती है उतनी आम बे पढ़े या कम पढ़े लोगों में नहीं मिलती. अपनी सादा समझ से वह सचाई को भी अधिक जल्दी और अधिक ठीक ठीक ताड़ जाते हैं. हम एक छोटी सी घटना बयान करते हैं.

एक बड़ी उमर का अंधा मुसलमान वोटर इलाहाबाद के एक पोलिंग बूथ पर वोट देने गया. पोलिंग अफ़सर उसकी मदद के लिये उसके साथ अन्दर गया. वोटर ने कहा—"मुझे हँसिया वाला बक्स बता दीजिये. मैं उसमें अपना वोट डालूँगा." पोलिंग अफ़सर ने हँसिया वाले बक्स पर वोटर का हाथ रख दिया. वोटर ने फिर कहा—"देखिये साहब, मैं आप से फिर पूछता हूँ. आप मुझे सच सच बताइये कि हँसिया वाला बक्स कौन सा है. मैं उसी

ہیں اور دنیا کی آبادی کے اِس سمے کے سب سے بڑے دشمن ملکوں کے ساتھ ساز باز بھی کرتے ہیں. سامپردایکتا سے اوپر ہونے کا دعویٰ بھی کرتے ہیں اور ذرا سا موقع مل جانے پر پاکستان پر چڑھائی کا شور بھی مچاتے ہیں وغیرہ وغیرہ . اِس چناؤ نے یہ دکھا دیا کہ موقع پرستی اِتنی اچھی، اونچی یا کام کی چیز نہیں ہے جتنی اصول پرستی .

(4) چوتھی بات اِس چناؤ نے یہ بھی پوری طرح دکھلا دی کہ اِس سمے دیش کے اندر کی اگر کوئی پارٹی آگے چلکر کانگریس کی جگہ لیتی دکھائی دیتی ہے تو وہ اچھی ہو یا بری کمیونسٹ پارٹی ہی ہے . جیل میں پڑے ہوئے یا نظر بند لوگوں پرچاروں طرف سے ووٹوں کی بوچھار ہونا اور سب سے زیادہ فی صدی ووٹ اُنہیں علاقوں میں پڑنا جہاں کمیونسٹوں کا زور بتایا جاتا ہے کوئی معمولی چیز نہیں ہے . دیکھنے والوں کے لئے اِس سے ہوا کے رخ کا پتہ چلتا ہے .

(5) پانچویں بات چناؤ کے نتیجوں سے یہ بھی معلوم ہوتی ہے کہ جگہ جگہ اگر غیر کانگریسی شکتیاں آپس میں پھٹ جانے کی جگہ ملکر کھڑی ہو سکتیں یعنی سب غیر کانگریسی شکتیاں کانگریسی اُمیدوار کے مقابلے میں ایک ہی غیر کانگریسی اُمیدوار پر زور لگا سکتیں . تو ممکن ہے چناؤ کے نتیجے بالکل اُلٹ جاتے .

(6) چھٹے اِس چناؤ نے اِس سچائی کو بھی اچھی طرح ثابت کر دیا کہ عام لوگوں، خاص کر بے پڑھے لوگوں کے نہ کیول دل پڑھے لکھے لوگوں کے دلوں سے ادھک شدھ ہوتے ہیں بلکہ اُن کی قدرتی سوجھ بوجھ اور سادہ سمجھ بھی پڑھے لکھے لوگوں کی عقل سے ادھک ٹھیک کام کرتی ہے . دل کا اثر آدمی کے دماغ پر بھی پڑتا ہے . جات پرستی، پرانت پرستی، فرقہ پرستی، غلط طرح کی مذہبی کٹرتا، چالاکی اور بےایمانی جتنی پڑھے لکھے لوگوں میں ملتی ہے اُتنی عام بے پڑھے یا کم پڑھے لوگوں میں نہیں ملتی . اپنی سادہ سمجھ سے وہ سچائی کو بھی ادھک جلدی اور ادھک ٹھیک ٹھیک تاڑ جاتے ہیں . ہم ایک چھوٹی سی گھٹنا بیان کرتے ہیں .

ایک بڑی عمر کا اندھا مسلمان ووٹر الٰہ‌آباد کے ایک پولنگ بوتھ پر ووٹ دینے گیا . پولنگ افسر اُسکی مدد کے لئے اُسکے ساتھ اندر گیا . ووٹر نے کہا—"مجھے ھنسیا والا بکس بتا دیجئے . میں اُس میں اپنا ووٹ ڈالوں گا." پولنگ افسر نے ھنسیا والے بکس پر ووٹر کا ہاتھ رکھدیا . ووٹر نے پھر کہا— "دیکھئے صاحب، میں آپ سے پھر پوچھتا ہوں . آپ مجھے سچ سچ بتائیے کہ ھنسیا والا بکس کون سا ہے . میں اُسی

मैं अपना वोट डालना चाहता हूं. मैं अंधा हूं. अगर आप मुझे धोका देंगे तो मैं क़यामत के दिन आपका दामन पकड़ूँगा." पोलिंग अफ़सर ने फिर वोटर को यक़ीन दिलाया कि यही हँसिया वाला बक्स है. वोटर ने तीसरी बार कहा—"मैं आपसे फिर एक बार पूछता हूं. मुझे इसलिये भरोसा नहीं होता कि आख़िर आप कांगरेस सरकार के नौकर हैं. देखिये, मुझे धोका न दीजिये. ठीक बताइये, हँसिया वाला बक्स कौन सा है. नहीं तो मैं क़यामत के दिन आप का दामन पकड़ूँगा." पोलिंग अफ़सर ने तीसरी बार वोटर को विश्वास दिलाया. इस पर वोटर ने "अच्छा साहब, यह लीजिये" कह कर उसी बक्स में अपना वोट डाल दिया. वोटर के दिल की सफ़ाई और पोलिंग अफ़सर का धीरज दोनों इस मामले में तारीफ़ के क़ाबिल हैं.

(7) सातवीं और आख़िरी बात जो देश के इस पहले चुनाव में दिखाई दे रही थी यह थी कि महात्मा गांधी के इस देश में तरह तरह की पारटियाँ चुनाव में हिस्सा ले रही थीं, गांधी जी की दुहाई दे कर उससे बा-बेजा फ़ायदा उठा लेने वाले भी थे पर गांधी वादी यानी गांधी जी के उसूलों को सच्चाई से मानने और उन पर अमल करने की कोशिश करने वाले चुनाव के मैदानों में कहीं ख़ुर्दबीन से देखने पर भी दिखाई नहीं देते थे.

हो सकता है इसका एक कारन यह हो कि इस तरह के चुनाव अपने ढंग की एक बड़ी अच्छी चीज़ होते हुए भी गांधी जी के राजकाजी सिद्धान्तों के अनुसार ठीक चीज़ नहीं हैं. हमारा विधान और हमारी इस समय की सरकार का ढांचा अधिक तर इंगलैंड की पारलीमेन्ट्री हुकूमत पर ढला हुआ है. गांधी जी इस तरह की पारली-मेन्ट्री हुकूमत को मुल्क के लिये एक गहरा ख़तरा मानते थे. इस तरह के चुनाव हलक़े जिनमें बीस बीस लाख आदमियों से जो दूर दूर तक गांव में फैले हुए हैं यह उम्मीद करना कि वह हमेशा एक ऐसे आदमी के बारे में जिसकी उन्हें निजी जानकारी भी नहीं है सचाई, समझ और ग़ैर जानिबदारी से राय दे सकें, एक ग़लत आशा करना है. इसके अलावा ऐसे चुनाव के लिये जिसमें लाखों वोटरों के लिये हज़ारों रुपए ख़र्च करके परचियाँ छपवानी पड़ें किसी ग़रीब आदमी का खड़ा हो सकना भी नामुमकिन है. इस तरह के चुनाव आख़ीर में जाकर पूँजी पति मुल्कों को ही ठीक बैठते हैं. सच्चे लोकराज के लिये नीचे के चुनाव के दायरे बहुत छोटे छोटे और बहुत बड़ी तादाद में होने चाहियें. और फिर गाँव, तहसील, ज़िला, सूबा और मुल्क नीचे से ऊपर तक इस तरह के हलक़े होने चाहियें कि नीचे के चुने हुए लोग अपने से ऊपर के लोगों को चुनें. इसी से मिलता जुलता चुनाव का

ن اپنا ووٹ ڈالنا چاھتا ھوں. میں اندھا ھوں . اگر آپ
یں دھوکہ دینگے تومیں قیامت کے دن آپ کا دامن پکڑوں
" پولنگ افسر نے پھر ووٹر کو یقین دلایا کہ یہی ھنسیا والا
س ہے . ووٹر نے تیسری بار کہا—"میں آپ سے پھر ایک
ر پوچھتا ھوں . مجھے اس لئے بھروسہ نہیں ھوتا کہ آخر
پ کانگریس سرکار کے نوکر ھیں . دیکھئے' مجھے دھوکہ نہ
یجئے . ٹھیک بتایئے' ھنسیا والا بکس کون سا ھے .
ہیں تو میں قیامت کے دن آپ کا دامن پکڑوں گا ."
لنگ افسر نے تیسری بار ووٹر کو وشواس دلایا . اس پر
ٹر نے "اچھا صاحب' یہ لیجئے" کہکر اُسی بکس میں
نا ووٹ ڈال دیا . ووٹر کے دل کی صفائی اور پولنگ
سر کا دھیرج دونوں اِس معاملے میں تعریف کے قابل
ں .

(7) ساتویں اور آخری بات جو دیش کے اِس پہلے
ناؤ میں دکھائی دے رھی تھی یہ تھی کے مہاتما
دھی کے اِس دیش میں طرح طرح کی پارٹیاں چناؤ
ں حصہ لے رھی تھیں' گاندھی جی کی دھائی دیکر
ں سے جا بیجا فائدہ اُٹھا لینے والے بھی تھے پر گاندھی
ی یعنی گاندھی جی کے اصولوں کو سچائی سے ماننے
ر اُن پر عمل کرنے کی کوشش کرنے والے چناؤ کے میدانوں
ں کہیں خوردبین سے دیکھنے پر بھی دکھائی نہیں
تے تھے .

ھوسکتا ھے اس کا ایک کارن یہ ھو کہ اِس طرح کے
ناؤ اپنے ڈھنگ کی ایک بڑی اچھی چیز ھوتے ھوئے
ی گاندھی جی کے راج کاجی سدھانتوں کے انوسار ٹھیک
یز نہیں ھیں . ھمارا ودھان اور ھماری اِس سمے کی
کار کا ڈھانچہ ادھک تر انگلینڈ کی پارلیمنٹری
کومت پر ڈھلا ھوا ھے . گاندھی جی اِس طرح کی
ارلیمنٹری حکومت کو ملک کے لئے ایک گہرا خطرہ
نتے تھے . اِس طرح کے چناؤ حلقے جن میں بیس
س لاکھ آدمیوں سے جو دور دور تک گاؤں میں پھیلے
ئے ھیں یہ امید کرنا کہ وہ ھمیشہ ایک ایسے آدمی
بارے میں جس کی اُنھیں نجی جانکاری بھی نہیں
سچائی' سمجھ اور غیر جانبداری سے رائے دے سکیں'
ک غلط آشا کرنا ھے . اسکے علاوہ ایسے چناؤ کے لئے جس
یں لاکھوں ووٹروں کے لئے ھزاروں روپے خرچ کرکے پرچیاں
چھپوانی پڑیں کسی غریب آدمی کا کھڑا ھوسکنا بھی
ممکن ھے . اِس طرح کے چناؤ آخیر میں جاکر پونجی
ی ملکوں کو ھی ٹھیک بیٹھتے ھیں . سچے لوکراج کے
ے نیچے کے چناؤ کے دائرے بہت چھوٹے چھوٹے اور بہت
ی تعداد میں ھونے چاھئیں . اور پھر گاؤں' تحصیل'
لع' صوبہ اور ملک نیچے سے اوپر تک اس طرح کے
لقے ھونے چاھئیں کہ نیچے کے چنے ھوئے لوگ اپنے سے
پر کے لوگوں کو چنیں . اِسی سے ملتا جلتا چناؤ کا

…ता सोवियत रूस और नये चीन में है. और कम से कम चुनाव के मामले में यही असूल गांधीजी के लोक सेवक संघ का है. पर हम यह एक दूसरी बहस में पड़ गए. हम अभी सिर्फ़ हाल के चुनाव की बात कर रहे थे. हम इस सफल चुनाव पर देश वासियों को मुबारक बाद देते हैं. और हमारे विचार से देश का आगे का भला इसी में है कि जो लोग गांधीजी के असूलों, विचारों और आदर्शों को मानते हैं वह दुनिया की दूसरी बढ़ती हुई ताक़तों से डर कर और अलग रह कर नहीं बल्कि उन्हें समझने की कोशिश करके और बिना अपने असूलों से इंच भर भी हटे जहाँ तक हो सके उनसे मिल कर देश को अपनी सेवाओं से लाभ उठाने का पूरा अवसर दें.

1-2-'52 — सुन्दरलाल

ہندستان سوویت روس اور نئے چین میں ہے ۔ اور کم سے کم چناؤ کے معاملے میں یہی اصول گاندھی جی کے لوک سیوک سنگھ کا ہے ۔ پر ہم یہ ایک دوسری بحث میں پڑ گئے ۔ ہم ابھی صرف حال کے چناؤ کی بات کر رہے تھے. ہم اس سپھل چناؤ پر دیش واسیوں کو مبارکباد دیتے ہیں ۔ اور ہمارے وچار سے دیش کا آگے کا بھلا اسی میں ہے کہ جو لوگ گاندھی جی کے اصولوں وچاروں اور آدرشوں کو مانتے ہیں وہ دنیا کی دوسری بڑھتی ہوئی طاقتوں سے ڈر کر اور الگ رہ کر نہیں بلکہ انہیں سمجھنے کی کوشش کرکے اور بنا اپنے اصولوں سے انچ بھر ہٹے جہاں تک ہو سکے ان سے مل کر دیش کو اپنی سیواؤں سے لابھ اٹھانے کا پورا اوسر دیں ۔

1-2-'52 — سندر لال

'आपरेशन गांधी'

बारह जनवरी को एक बड़ी दिलचस्प और अनोखी ख़बर दुनिया भर के अख़बारों में छपी. उसका ख़ुलासा यह है—

लन्दन, 11 जनवरी—वार आफ़िस (जंगी महकमे के दफ़्तर) के सामने आज 13 अंगरेज़ जो अपने को "अहिंसक मुक़ाबला करने वाले" यानी सत्याग्रही कहते थे पकड़े गये. वह अमन शांति के लिये एक प्रदर्शन कर रहे थे और उनका नारा था "आपरेशन गांधी." यह लोग वार आफ़िस के सामने पगडंडी पर बैठे हुए थे और उनका कहना था कि "पूरब या पच्छिम, किसी के लिये भी, कोई जंग या हिंसक आन्दोलन किया जायगा तो उसमें शिरकत करने से हम इनकार करते हैं."

यह प्रदर्शन थोड़ी देर तक रहा. पहले जब पुलिस ने लोगों को हटाया तो उनकी जगह दूसरे आ पहुंचे लेकिन आख़िर में 13 जने—सात मर्द छै औरतें—स्काटलैंड हवालात ले आये गये जहां उन पर यह जुर्म लगाया जायगा कि उन्होंने "पुलिस के काम में रुकावट डाली और पगडंडी का रास्ता रोक लिया."

इस प्रदर्शन में परचे बांटे गये जिनमें कहा गया कि "हम अपने देश की हिफ़ाज़त उसी तरह करना चाहते हैं जिस तरह गांधी ने अपने देश की हिफ़ाज़त की. अहिंसक मुक़ाबले के ज़रिये गांधी ने बिना लड़ाई के हिन्दुस्तान आज़ाद कर लिया. उनका सीधा-सादा तरीक़ा यह था—सब की इज़्ज़त करो और बुराई के साथ सहयोग करने से इनकार कर दो."

"आपरेशन गांधी अंगरेज़ क़ौम की आत्मा से अपील करता है कि मौजूदा जंग को धिक्कारा जाये. इस जंग से

'آپریشن گاندھی'

بارہ جنوری کو ایک بڑی دلچسپ اور انوکھی خبر دنیا بھر کے اخباروں میں چھپی اس کا خلاصہ یہ ہے—

لندن، 11 جنوری—وار آفس (جنگی محکمے کے دفتر) کے سامنے آج 13 انگریز جو اپنے کو "اہنسک مقابلہ کرنے والے" یعنی ستیاگرہی کہتے تھے پکڑے گئے. وہ امن شانتی کے لئے ایک پردرشن کر رہے تھے اور ان کا نعرہ تھا "آپریشن گاندھی" یہ لوگ وار آفس کے سامنے پگڈنڈی پر بیٹھے ہوئے تھے اور ان کا کہنا تھا کہ "پورب یا پچھم کسی کے لئے بھی کوئی جنگ یا ہنسک آندولن کیا جائیگا تو اس میں شرکت کرنے سے ہم انکار کرتے ہیں"

یہ پردرشن تھوڑی دیر تک رہا پہلے جب پولس نے لوگوں کو ہٹایا تو ان کی جگہ دوسرے آ پہنچے . لیکن آخر میں 13 جنے—سات مرد چھ عورتیں—اسکاٹلینڈ حوالات لے جائے گئے جہاں ان پر یہ جرم لگایا جائیگا کہ انہوں نے "پولس کے کام میں رکاوٹ ڈالی اور پگڈنڈی کا راستہ روک لیا."

اس پردرشن میں پرچے بانٹے گئے جن میں کہا گیا کہ "ہم اپنے دیش کی حفاظت اسی طرح کرنا چاہتے ہیں جس طرح گاندھی نے اپنے دیش کی حفاظت کی . اہنسک مقابلے کے ذریعے گاندھی نے بنا لڑائی کے ہندستان آزاد کرلیا . ان کا سیدھا سادہ طریقہ یہ تھا—سب کی عزت کرو اور برائی کے ساتھ سہیوگ کرنے سے انکار کر دو ."

"آپریشن گاندھی انگریز قوم کی آتما سے اپیل کرتا ہے کہ موجودہ جنگ کو دھتکارا جائے . اس جنگ سے

न हमारे मुल्क की हिफ़ाज़त हो सकेगी, न हमारी शान बाक़ी रहेगी और न हमारा जीवन-तर्ज़ ही क़ायम रह सकेगा."

हमें नहीं मालूम कि इन तेरह भाई-बहनों को क्या सज़ा दी गई या क्या सलूक उनके साथ किया गया. शायद *नक़्क़ारख़ाने में उनकी तूती की आवाज़ किसी ने नहीं सुनी.*

ऊपर की घटना के दो हफ़्ते के अंदर ही एक ख़बर बीच इटली के शहर पेरूगिया से आई कि वहा पर 30 जनवरी को—महात्मा गांधी के बलिदान के दिन—एक अंतर क़ौमी जलसा होगा जिस में पूरब और पच्छिम. सारे आलम के लोगों से बिनती की जायेगी कि अहिंसा का रास्ता—जिसके लिये प्रेरना मिलती है पूरब में महात्मा गांधी से और पच्छिम में संत फ्रांसिस से—अपनाया जावे. यह जलसा प्रोफ़ेसर ऐल्डो केपीटिनी की कोशिश से किया जायेगा. प्रोफ़ेसर केपीटिनी धर्म शास्त्र, इतिहास, फ़लसफ़ा और तालीम के मसलों पर नामी लिखने वाले हैं. वह मुसोलिनी के ज़माने में दो बार जेल मे बंद कर दिये गये थे. क्योंकि उन्होंने सरकारी पारटी में मिलने से इनकार किया था और "आज़ाद ख़यालों की सोसाइटी" बनाया करते थे.

प्रोफ़ेसर केपीटिनी ने 30 जनवरी के जलसे के सिलसिले में बारह हज़ार ख़त भेजे. बहुत से देशो से उन्हें अपने ख़त के सन्तोश जनक जवाब मिले हैं.

ख़ास बात यह है कि यह जलसा 30-31 दोनों दिन के लिये रखा गया. 31 तारीख़ को संत फ्रांसिस की समाधि पर जाने का प्रोग्राम था जो पास ही एसीसी नाम के गाव में है जहां उन्होंने सन 1226 में शरीर छोड़ा था.

प्रोफ़ेसर केपीटिनि ने इस जलसे के लिये चार काम ख़ास रखे हैं.

1. अहिंसा के उसूल और तरीक़ों को देख-समझ कर ऐसे सुझाव बनाना जिन से लड़ाई न हो और इन्सान इन्सान में भाई चारे की नई लहर पैदा हो.

2. इन सुझावों को तरतीब देकर यूनो के आगे, बिना किसी गुट में मिले पेश करना.

3. अहिंसा के लिये दुनिया भर में एक तहरीक चलाना.

4. अहिंसा और इन्सानी प्रेम के ज़रिये पूरब और पच्छिम के लोगों को पास लाना और इस तरह दुनिया को आज़ाद करने और उसमें नयी जान डालने के लिये एक रास्ता क़ायम करना.

نہ ہمارے ملک کی حفاظت ہو سکیگی' نہ ہماری شان باقی رہیگی اور نہ ہمارا جیون طرز ہی قائم رہ سکیگا "

ہمیں نہیں معلوم کہ ان تیرہ بھائی بہنوں کو کیا سزا دی گئی یا کیا سلوک ان کے ساتھ کیا گیا. شائد نقارخانہ میں ان کی طوطی کی آواز کسی نے نہیں سنی.

اوپر کی گھٹنا کے دو ہفتے کے اندر ہی ایک خبر بیچ اٹلی کے شہر پیروگیا سے آئی کہ وہاں پر 30 جنوری کو—مہاتما گاندھی کے بلیدان کے دن—ایک انٹر قومی جلسہ ہوگا جس میں پورب اور پچھم' سارے عالم کے لوگوں سے بنتی کی جائیگی کہ اہنسا کا راستہ—جس کے لئے پریرنا ملتی ہے پورب میں مہاتما گاندھی سے اور پچھم میں سنت فرانسس سے—اپنایا جاوے. یہ جلسہ پروفیسر ایلڈو کیپیٹنی کی کوشش سے کیا جائیگا. پروفیسر کیپیٹنی دھرم شاستر' اتہاس' فلسفہ اور تعلیم کے مسئلوں پر نامی لکھنے والے ہیں. وہ مسولنی کے زمانے میں دو بار جیل میں بند کر دئے گئے تھے. کیونکہ انہوں نے سرکاری پارٹی میں ملنے سے انکار کیا تھا اور "آزاد خیالوں کی سوسائٹی" بنایا کرتے تھے.

پروفیسر کیپیٹنی نے 30 جنوری کے جلسے کے سلسلے میں بارہ ہزار خط بھیجے. بہت سے دیشوں سے انہیں اپنے خط کے سنتوش جنک جواب ملے ہیں.

خاص بات یہ ہے کہ یہ جلسہ 30-31 دونوں دن کے لئے رکھا گیا. 31 تاریخ کو سنت فرانسس کی سمادھی پر جانے کا پروگرام تھا جو پاس ہی ایسیسی نام کے گاؤں میں ہے جہاں انہوں نے سن 1226 میں شریر چھوڑا تھا.

پروفیسر کیپیٹنی نے اس جلسے کے لئے چار کام خاص رکھے ہیں.

1. اہنسا کے اصول اور طریقوں کو دیکھ سمجھ کر ایسے سجھاؤ بنانا جنسے لڑائی نہ ہو اور انسان انسان میں بھائی چارے کی نئی لہر پیدا ہو.

2. ان سجھاؤں کو ترتیب دے کر یونو کے آگے' بنا کسی گٹ میں ملے' پیش کرنا.

3. اہنسا کے لئے دنیا بھر میں ایک تحریک چلانا.

4. اہنسا اور انسانی پریم کے ذریعے پورب اور پچھم کے لوگوں کو پاس پاس لانا اور اس طرح دنیا کو آزاد کرنے اور اس میں نئی جان ڈالنے کے لئے ایک راستہ قائم کرنا.

इस जलसे के होने न होने या उसकी कार्रवाई की कोई खबर हमारे देखने में नहीं आई.

ऊपर की दोनों चीजें दुनिया के इतिहास में नई हैं और उनसे कम से कम यह जाहिर होता है कि पच्छिम के समझदार और विचारशील लोगों के दिल में क्या भाव छिपे हुए हैं. आज उनकी भले कद्र न हो क्योंकि उनका कोई संगठन नहीं है. लेकिन दुनिया धीरे धीरे इसी रास्ते जा रही है और "आपरेशन गांधी" ही वह आपरेशन या नश्तर है जो इन्सानी समाज के रोगों और फोड़ों को अच्छा कर सकेगा. मगर यह चीरा तभी पूरा असर दिखायेगा जब राजकाजी के साथ साथ आर्थिक और समाजी और दूसरे सब दायरों में इससे काम लिया जाये.

5. 2. '52 —सुरेश रामभाई

आग से खेल

आज कल पेरिस में यूनो और उसकी अनेक छोटी बड़ी कमेटियों, कौन्सिलों की बैठकें हो रही हैं. राजकाजी कमेटी की एक बैठक में 28 जनवरी को बरमा के नुमायन्दे, यू मिन्ट. थाइन ने कहा कि बरमा की आजादी के लिये एक नया खतरा पैदा हो गया है. वह यह कि बरमा के उत्तरी हिस्से में च्यांग काई शेक की कुछ चीनी पलटन है जो आजाद चीन के यूनान सूबे पर छुट पुट हमले करती रहती है. बरमी भाई ने यह भी बताया कि इस पलटन को बाहर से लगातार मदद मिल रही है. यह मदद तीन तरह की है—हथियारों की मदद, सिपाहियों की मदद और रहनुमाई. यह मदद फारमूसा और थाई लैन्ड दोनों जगह से मिल रही है.

इसके दूसरे ही दिन 29 जनवरी को उस कमेटी ने एक दूसरा ठहराव पास किया जिसमें च्यांगी चीन यानी फारमूसा की सरकार के नुमायन्दे की रूस के खिलाफ एक शिकायत ठीक ठहराई गई. वह शिकायत यह थी कि जापान के हथियार डालने के बाद रूस ने 1945 वाले रूस-चीन सुलहनामे के मुताबिक अमल नहीं किया. 24 देशों के वोट इस ठहराव के माफिक पड़े, 9-खिलाफ और 25 चुप रहे.

हम जरा यह भी याद कर लें कि 1945 वाला रूस चीन समझौता क्या था. वह यह था कि जापान के हथियार डालने के बाद चीन पर अगर कोई हमला करेगा तो रूस चीन को मदद देगा. इस समझौते की बिना पर हजरत च्यांग काई-शेक यह उम्मीद करते थे कि आजाद चीन और च्यांग काई-शेक की लड़ाई में रूस च्यांग को असल चीन मान कर आजाद चीन के खिलाफ च्यांग काई-शेक की मदद करेगा और रूस का ऐसा न करना समझौते को तोड़ना हुआ! कहने की जरूरत नहीं कि इस ठहराव में च्यांग काई-शेक की तरफ से पैरवी अमरीका ने की थी.

اس جلسے کے ہونے نہ ہونے یا اس کی کاروائی کی کوئی خبر ہمارے دیکھنے میں نہیں آئی.

اوپر کی دونوں چیزیں دنیا کے اتہاس میں نئی ہیں اور ان سے کم سے کم یہ ظاہر ہوتا ہے کہ پچھم کے سمجھدار اور وچار شیل لوگوں کے دل میں کیا بھاو چھپے ہوئے ہیں. آج ان کی بھلے قدر نہ ہو کیونکہ ان کا کوئی سنگھٹن نہیں ہے لیکن دنیا دھیرے دھیرے اسی راستے جا رہی ہے اور "آپریشن گاندھی" ہی وہ آپریشن یا نشتر ہے جو انسانی سماج کے روگوں اور پھوڑوں کو اچھا کر سکیگا. مگر یہ چیرا تبھی پورا اثر دکھائیگا جب راج کاجی کے ساتھ ساتھ آرتھک اور سماجی اور دوسرے سب دائروں میں بھی اس سے کام لیا جائے.

—سریش رام بھائی 5. 2. '52

آگ سے کھیل

آجکل پیرس میں یو نو اور اسکی انیک چھوٹی بڑی کمیٹیوں، کونسلوں کی بیٹھکیں ہو رہی ہیں. راج کاجی کمیٹی کی ایک بیٹھک میں 28 جنوری کو برما کے نمائندے یو. منٹ. تھائین نے کہا کہ برما کی آزادی کے لئے ایک نیا خطرہ پیدا ہوگیا ہے. وہ یہ کہ برما کے اتری حصے میں چیانگ کائی شیک کی کچھ چینی پلٹن ہے جو آزاد چین کے یونان صوبے پر چھٹ پٹ حملے کرتی رہتی ہے. برمی بھائی نے یہ بھی بتایا کہ اس پلٹن کو باہر سے لگاتار مدد مل رہی ہے. یہ مدد تین طرح کی ہے—ہتھیاروں کی مدد سپاہیوں کی مدد اور رہنمائی. یہ مدد فارموسا اور تھائی لینڈ دونوں جگہ سے مل رہی ہے.

اسکے دوسرے ہی دن 29 جنوری کو اس کمیٹی نے ایک دوسرا ٹھہراؤ پاس کیا جسمیں چیانگی چین یعنی فارموسا کی سرکار کے نمائندے کی روس کے خلاف ایک شکایت ٹھیک ٹھہرائی گئی. وہ شکایت یہ تھی کہ جاپان کے ہتھیار ڈالنے کے بعد روس نے 1945 والے روس چین صلح نامے کے مطابق عمل نہیں کیا 24 دیشوں کے ووٹ اس ٹھہراؤ کے موافق پڑے، 9 خلاف اور 25 چپ رہے.

ہم ذرا یہ بھی یاد کر لیں کہ 1945 والا روس چین سمجھوتا کیا تھا. وہ یہ تھا کہ جاپان کے ہتھیار ڈالنے کے بعد چین پر اگر کوئی حملہ کرے گا تو روس چین کو مدد دے گا. اس سمجھوتے کی بنا پر حضرت چیانگ کائی شیک یہ امید کرتے تھے کہ آزاد چین اور چیانگ کائی شیک کی لڑائی میں روس چیانگ کو اصل چین مان کر آزاد چین کے خلاف چیانگ کائی شیک کی مدد کرے گا اور روس کا ایسا نہ کرنا سمجھوتے کا توڑنا ہوا! کہنے کی ضرورت نہیں کہ اس ٹھہراؤ میں چیانگ کائی شیک کی طرف سے پیروی امریکہ نے کی تھی.

हाल में यह खबर भी मिली है कि फारमूसा के कुछ समुन्द्री गुरीला लोगों ने आजाद चीन के फूकियन इलाके पर हमला किया और 120 कम्यूनिस्ट मार डाले और 110 गिरफ़्तार कर लिये.

ऊपर की तीनों घटनाओं से साफ़ पता चलता है कि फ़ारमूसा टापू में पड़े हुए जनरल च्यांग काई-शेक को चैन नहीं पड़ रहा है और वह बिला किसी वजह से आजाद चीन पर समुन्दर के रास्ते सामने से और खुश्की के रास्ते पीछे बरमा में से हमले कर रहे हैं.

लेकिन जनरल साहब के सर पर हाथ किसका रखा है? सब जानते हैं—अमरीका का. इसके अलावा लन्दन के अखबार 'डेली एक्सप्रेस' में उसके वाशिंगटन वाले खबर दाता की रिपोर्ट छपी है कि च्यांग के लोगों को जो मदद पहुँचाई जा रही है वह उन हवाई जहाज़ों के ज़रिये जिन्हें अमरीकी पाईलट चला रहे हैं. इनमें से कुछ पाईलट अमरीकी फ़ौज में रह भी चुके हैं. इससे ज़ाहिर है कि अमरीका इन सारे हंगामें में ज़रूर शरीक है. अमरीका की इस शिरकत और दिलचस्पी की वजह से उसकी यह हरकत पैरिस, लन्दन, पेकिंग और दूसरे बड़े बड़े शहरों में चर्चा और चिन्ता की चीज़ बन गई है. फिर अमरीका की कठपुतली, पराधीन जापान के प्राइम मिनिस्टर योशीदा के इस कहने ने, कि जापान आज़ाद चीन के बजाये च्यांगी चीन के साथ समझौता करेगा, लोगों के दिलों में और भी शक-शुबा पैदा कर दिया है.

बरमा के यूनो डेलीगेट ने इसे "आग से खेल" कहा है. सचमुच अमरीका इस तरह च्यांगी पलटन को मदद दे कर, जापान को अपने इशारे पर नचा कर और आज़ाद चीन पर चढ़ाई करवा कर, आग के साथ खेल रहा है. शायद वह अपनी दौलत के नशे में चूर है. शायद उसे यह गुमान है कि जब पूरब में थाई लैन्ड और हिन्दुस्तान से लेकर पच्छिम में इंगलैन्ड तक उसके डालर देवता को खुश करने के लिये तरह तरह के चढ़ावे चढ़ाये जा रहे हैं तब कौन उसका बाल बाका कर सकता है.

लेकिन आग का खेल आग का ही खेल ठहरा. उसमें कोई सही सलामत नहीं निकल सका है. इन्जील में कहा गया है कि जो तलवार के सहारे जीते हैं वह तलवार के ही घाट उतार दिये जाते हैं.

हम चाहते हैं कि अमरीका ज़रा होश में आये और संभल कर क़दम उठाये. साथ ही साथ हिन्द सरकार से कहना चाहते हैं कि वह भी आंख खोल कर मौजूदा हालत को देखे और हिन्दुस्तान को अमरीका की गोद में न फेंके.

5. 2. '52 —सुरेश रामभाई

حال میں یہ خبر بھی ملی ہے کہ فارموسا کے کچھ سمندری گوریلا لوگوں نے آزاد چین کے فوکین علاقے پر حملہ کیا اور 120 کمیونسٹ مار ڈالے اور 110 گرفتار کر لئے۔

اوپر کی تینوں گھٹناؤں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ فارموسا ٹاپو میں پڑے ہوئے جنرل چیانگ کائی شیک کو چین نہیں پڑ رہا ہے اور وہ بلا کسی وجہ کے آزاد چین پر سمندر کے راستے سامنے سے اور خشکی کے راستے پیچھے برما میں سے حملے کر رہے ہیں۔

لیکن جنرل صاحب کے سر پر ہاتھ کس کا رکھا ہے؟ سب جانتے ہیں—امریکہ کا۔ اس کے علاوہ لندن کے اخبار "ڈیلی ایکسپریس" میں اس کے واشنگٹن والے خبر داتا کی رپورٹ چھپی ہے کہ چیانگ کے لوگوں کو جو مدد پہنچائی جا رہی ہے وہ ان ہوائی جہازوں کے ذریعے جنہیں امریکی پائیلٹ چلا رہے ہیں۔ ان میں سے کچھ پائیلٹ امریکی فوج میں رہ بھی چکے ہیں۔ اس سے ظاہر ہے کہ امریکہ اس سارے ہنگامے میں ضرور شریک ہے۔ امریکہ کی اس شرکت اور دلچسپی کی وجہ سے اس کی یہ حرکت پیرس، لندن، پیکنگ اور دوسرے بڑے شہروں میں چرچا اور چنتا کی چیز بن گئی ہے۔ پھر امریکہ کی کٹھ پتلی، پرادھین جاپان کے پرائم منسٹر یوشیدا کے اس کہنے نے، کہ جاپان آزاد چین کے بدلے چیانگی چین کے ساتھ سمجھوتا کرے گا، لوگوں کے دلوں میں اور بھی شک شبہ پیدا کر دیا ہے۔

برما کے یونو ڈیلیگیٹ نے اسے "آگ سے کھیل" کہا ہے۔ سچ مچ امریکہ اس طرح چیانگی پلٹن کو مدد دے کر، جاپان کو اپنے اشارے پر نچا کر اور آزاد چین پر چڑھائی کروا کر، آگ کے ساتھ کھیل رہا ہے۔ شاید وہ اپنی دولت کے نشے میں چور ہے۔ شاید اسے یہ گمان ہے کہ جب پورب میں تھائی لینڈ اور ہندستان سے لے کر پچھم میں انگلینڈ تک اس کے ڈالر دیوتا کو خوش کرنے کے لئے طرح طرح کے چڑھاوے چڑھائے جا رہے ہیں تب کون اس کا بال بانکا کر سکتا ہے۔

لیکن آگ کا کھیل آگ کا ہی کھیل ٹھہرا۔ اس سے کوئی صحیح سلامت نہیں نکل سکا ہے۔ انجیل میں کہا گیا ہے کہ جو تلوار کے سہارے جیتے ہیں وہ تلوار کے ہی گھاٹ اتار دیئے جاتے ہیں۔

ہم چاہتے ہیں کہ امریکہ ذرا ہوش میں آئے اور سنبھل کر قدم اٹھائے۔ ساتھ ہی ساتھ ہند سرکار سے کہنا چاہتے ہیں کہ وہ بھی آنکھ کھول کر موجودہ حالت کو دیکھے اور ہندستان کو امریکہ کی گود میں نہ پھینکے۔

—سریش رام بھائی 5-2-52

हिन्द अमरीकी समझौता या ग़ुलामी-नामा?

लन्दन के एक मशहूर और अच्छे अख़बार 'न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन" ने 1951 के साल पर एक सरसरी निगाह डालते हुए कहा है कि यह साल विदेशों में अमरीकी राज व असर क़ायम होने व फैलने की शुरुआत का पहला साल है. 1952 में इस अमरीकी राज व असर ने हिन्दुस्तान में भी अपनी जड़ें जमाना शुरू कर दीं. और 5 जनवरी 1952 को एक काग़ज़ पर नई दिल्ली में अमरीका की तरफ़ से अमरीकी राजदूत ने और हिन्दुस्तान की तरफ़ से बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल ने दस्तख़त किये जो हिन्द-अमरीकी समझौते के नाम से सारी दुनिया में ब्राडकास्ट किया गया है. हिन्दुस्तान के राजपति ने पार्लियामेन्ट में अपनी कल की स्पीच में इस समझौते का स्वागत किया है. इस समझौते पर राय ज़ाहिर करने के पहले यह समझ लेना ज़रूरी है कि इस समझौते के पीछे मक़सद क्या हैं यानी दोनों सरकारों ने यह समझौता क्यों किया. दूसरे यह भी जान लें कि इसकी शर्तें क्या क्या हैं.

मक़सद

यह समझौता उसी तरह के तकनीकी सहयोग और प्रोग्राम का एक हिस्सा है जिसमें 28 दिसम्बर 1950 को एक राज़ीनामा किया जा चुका है. यह राज़ीनामा 'पाइन्ट फ़ोर राज़ीनामा' कहलाता है. इसके मुताबिक़ अमरीकी तकनीकी माहिरों के हिन्दुस्तान में काम करने और हिन्दुस्तानियों की अमरीका में तकनीकी तालीम व ट्रेनिंग के लिये बारह लाख डालर की मदद अमरीका ने दी थी.

1. इस नये समझौते में दोनों सरकारों ने यह इच्छा ज़ाहिर की है कि हिन्दुस्तान के समूचे आर्थिक विकास में मिल कर काम करें और इसकी रफ़्तार तेज़ी के साथ बढ़े.

2. दोनों सरकारें मानती हैं कि आर्थिक विकास के मामले में दोनों देशों के बीच तकनीकी जानकारी और तरीक़ों के अदल बदल से दोनों को फ़ायदा होगा. दोनों सरकारें मानती हैं कि अन्तर क़ौमी मेलमिलाप और भाई चारे के काम में एक साथ क़दम बढ़ाने चाहियें, दुनिया में अमन क़ायम रखने के लिये दोनों मिल कर ऐसे काम करें जिनसे अन्तर क़ौमी झगड़े और मनमुटाव के कारन ख़त्म हों.

ऊपर के मक़सद को हासिल करने के लिये यह समझौता किया गया है. इसकी शर्तें यह हैं.

शर्तें

1. इस समझौते के मुताबिक़ अमल दरामद हिन्दुस्तान की सरकार की तरफ़ से एक बाक़ायदा मिनिस्ट्री

ہماری راے

ہند امریکی سمجھوتہ یا غلامی نامہ؟

لندن کے ایک مشہور اور اچھے اخبار "نیو اسٹیٹس مین اینڈ نیشن" نے 1951 کے سال پر ایک سرسری نگاہ ڈالتے ہوئے کہا ہے کہ یہ سال بدیشوں میں امریکی راج و اثر قائم ہونے و پھیلنے کی شروعات کا پہلا سال ہے 1952 میں اس امریکی راج و اثر نے ہندوستان میں بھی اپنی جڑیں جمانا شروع کر دیں. اور 5 جنوری 1952 کو ایک کاغذ پر نئی دلی میں امریکہ کی طرف سے امریکی راجدوت نے اور ہندوستان کی طرف سے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نے دستخط کئے جو ہند امریکی سمجھوتے کے نام سے ساری دنیا میں براڈکاسٹ کیا گیا ہے. ہندوستان کے راج پتی نے پارلیمنٹ میں اپنی کل کی اسپیچ میں اس سمجھوتے کا سواگت کیا ہے. اس سمجھوتے پر رائے ظاہر کرنے کے پہلے یہ سمجھ لینا ضروری ہے کہ اس سمجھوتے کے پیچھے مقصد کیا ہیں یعنی دونوں سرکاروں نے یہ سمجھوتہ کیوں کیا. دوسرے یہ بھی جان لیں کہ اسکی شرطیں کیا کیا ہیں.

مقصد.

یہ سمجھوتہ اسی طرح کے تکنیکی سہیوگ اور پروگرام کا ایک حصہ ہے جسمیں 28 دسمبر 1950 کو ایک راضی نامہ کیا جا چکا ہے. یہ راضی نامہ 'پائنٹ فور ایک راضی نامہ' کہلاتا ہے. اس کے مطابق امریکی تکنیکی ماہروں کے ہندوستان میں کام کرنے اور ہندوستانیوں کی امریکہ میں تکنیکی تعلیم و ٹریننگ کے لئے بارہ لاکھ ڈالر کی مدد امریکہ نے دی تھی.

1. اس نئے سمجھوتے میں دونوں سرکاروں نے یہ اچھا ظاہر کی ہے کہ ہندوستان کے سمپورن آرتھک وکاس میں مل کر کام کریں اور اسکی رفتار تیزی کے ساتھ بڑھے.

2. دونوں سرکاریں مانتی ہیں کہ آرتھک وکاس کے معاملے میں دونوں دیشوں کے بیچ تکنیکی جانکاری اور طریقوں کے ادل بدل سے دونوں کو فائدہ ہوگا. دونوں سرکاریں مانتی ہیں کہ انتر قومی میل ملاپ اور بھائی چارے کے کام میں ایک ساتھ قدم بڑھانے چاہئیں. دنیا میں امن قائم رکھنے کے لئے دونوں مل کر ایسے کام کریں جن سے انتر قومی جھگڑے اور من مٹاؤ کے کارن ختم ہوں.

اوپر کے مقصد کو حاصل کرنے کے لئے یہ سمجھوتہ کیا گیا ہے. اسکی شرطیں یہ ہیں.

شرطیں.

1. اس سمجھوتے کے مطابق عمل درآمد ہندوستان کی سرکار کی طرف سے ایک باقاعدہ منسٹری

करेगी और अमरीकी सरकार की तरफ़ से टैकनिकल कोआपरेशन ऐडमिनिस्ट्रेशन नाम की निज़ामत करेगी. इस निज़ामत का एक नुमायन्दा हिन्दुस्तान में रहेगा जो डायरेक्टर कहलायेगा और वही अमरीकी सरकार की तरफ़ से सारा काम चलायेगा. इस डायरेक्टर और उसके कारिन्दों वग़ैरा को अमरीकी सरकार मुक़र्रर करेगी, जिसमें हिन्द सरकार का कोई दख़ल नहीं रहेगा. यह डायरेक्टर और उनका दल-बल अमरीकी राजदूती मिशन की तरह रहेगा, यानी जो हक़ और सहूलियतें अमरीकी सरकार के राजदूत को हमारे देश में हासिल हैं वही इन डायरेक्टर साहब को रहेंगी. दूसरे लफ़्ज़ों में, इनके किसी काम या अमल पर कोई क़ानूनी या ग़ैर क़ानूनी कार्रवाई हिन्द सरकार नहीं कर सकेगी.

2. यह निज़ामत तकनीकी प्रोग्राम को अन्जाम देने के लिये कुछ माहिरों और कारीगरों की एक टोली हिन्दुस्तान में भेजेगी. इस टोली को अमरीकी डायरेक्टर और अमरीकी सरकार चुनेगी. हिन्द सरकार का यह फ़र्ज़ होगा कि डायरेक्टर और उनकी टोली वग़ैरह को काम करने की पूरी सहूलियतें दे ताकि इस समझौते का जो मक़सद है वह पूरा किया जा सके. इस टोली के लोगों को भी वही हक़ और सुविधायें रहेंगी जो अमरीकी राजदूती मिशन के लोगों को हासिल हैं.

3. समझौते के मुताबिक़ दो ख़ज़ाने या फ़न्ड क़ायम किये जायेंगे—'ए' और 'बी'. 'ए' फ़न्ड अमरीका में रहेगा, 'बी' हिन्दुस्तान में. 'ए' फ़न्ड में 30 जून 1952 तक अमरीकी सरकार 24 करोड़ रुपया (पांच करोड़ डालर) जमा कर देगी और 'बी' फ़न्ड में हिन्द सरकार 25 करोड़ रुपये से ज़ियादा की रक़म 'ए' फ़न्ड के ख़र्च की मदद के लिये अलग रख देगी. इसके अलावा अमरीकी सरकार लगभग चालीस लाख डालर का ख़र्च अलग से बर्दाश्त करेगी. यह ख़र्च अमरीकी माहिरों पर और उन हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों या कारकुनों पर किया जायेगा जो हिन्दुस्तान के बाहर काम काज या ट्रेनिंग वग़ैरह के लिये भेजे जायेंगे. अपने यहां के ग़ैर सरकारी या निजी कारख़ानों वग़ैरा से जो मदद अमरीकी सरकार लेगी उसका ख़र्च भी फ़न्ड 'ए' या 'बी' में न पड़कर इसी मद से दिया जायेगा. फ़न्ड 'बी' में हिन्द सरकार के जमा किये हुए पैसे के अलावा दो तरह की रक़मों से इज़ाफ़ा होता रहेगा. एक उन चीज़ों की बिक्री से जो इस समझौते के मुताबिक़ अमरीका से आएंगी और बिक्री के लायक़ होंगी, दूसरे उन रक़मों की वापसी से जो फ़न्ड 'ए' से सूबों की सरकारों या निजी भारती व्योपारियों को मदद के तौर पर दी जायेंगी.

4. फ़न्ड 'ए' पर देख भाल और इन्तज़ाम हिन्द और अमरीकी सरकारों का मिला जुला रहेगा. हिन्द

کریگی اور امریکی سرکار کی طرف سے ٹیکنیکل کو آپریشن ایڈ منسٹریشن نام کی نظامت کریگی . اس نظامت کا ایک نمائندہ ہندستان میں رہیگا جو ڈائرکٹر کہلائیگا اور وہی امریکی سرکار کی طرف سے سارا کام چلائیگا . اس ڈائرکٹر اور اسکے کارندوں وغیرہ کو امریکی سرکار مقرر کریگی' جس میں ہند سرکار کا کوئی دخل نہیں رہیگا . یہ ڈائرکٹر اور اُن کا دل بل امریکی راج دوتی مشن کی طرح رہیگا' یعنی جو حق اور سہولتیں امریکی سرکار کے راج دوت کو ہمارے دیش میں حاصل ہیں وہی ان ڈائرکٹر صاحب کو رہینگے . دوسرے لفظوں میں' اِن کے کسی کام یا عمل پر کوئی قانونی یا غیر قانونی کاروائی ہند سرکار نہیں کر سکیگی .

2. یہ نظامت تکنیکی پروگرام کو انجام دینے کے لئے کچھ ماہروں اور کاریگروں کی ایک ٹولی ہندستان میں بھیجیگی . اِس ٹولی کو امریکی ڈائرکٹر اور امریکی سرکار چنیگی . ہند سرکار کا یہ فرض ہوگا کہ ڈائرکٹر اور اُن کی ٹولی وغیرہ کو کام کرنے کی پوری سہولتیں دے تاکہ اس سمجھوتے کا جو مقصد ہے وہ پورا کیا جاسکے . اِس ٹولی کے لوگوں کو بھی وہی حق اور سوودھائیں رہینگی جو امریکی راجدوتی مشن کے لوگوں کو حاصل ہیں .

3. سمجھوتے کے مطابق دو خزانے یا فنڈ قائم کئے جائینگے—'اے' اور 'بی'. 'اے' فنڈ امریکہ میں رہیگا' 'بی' ہندستان میں . 'اے' فنڈ میں 30 جون 1952 تک امریکی سرکار 24 کروڑ روپیہ (پانچ کروڑ ڈالر) جمع کر دیگی اور 'بی' فنڈ میں ہند سرکار 25 کروڑ روپئے سے زیادہ کی رقم 'اے' فنڈ کے خرچ کی مدد کے لئے الگ رکھ دیگی . اِس کے علاوہ امریکی سرکار لگ بھگ چالیس لاکھ ڈالر کا خرچ الگ سے برداشت کریگی یہ خرچ امریکی ماہروں پر اور اُن ہندستانی ودیارتھیوں یا کارکنوں پر کیا جائیگا جو ہندستان کے باہر کام کاج یا ٹریننگ وغیرہ کے لئے بھیجے جائینگے . اپنے یہاں کے غیر سرکاری یا نجی کارخانوں وغیرہ سے جو مدد امریکی سرکار لیگی اُس کا خرچ بھی فنڈ 'اے' یا 'بی' میں نہ پڑ کر اسی مد سے دیا جائیگا . فنڈ 'بی' میں ہند سرکار کے جمع کئے ہوئے پیسے کے علاوہ دو طرح کی رقموں سے اضافہ ہوتا رہیگا . ایک اُن چیزوں کی بکری سے جو اس سمجھوتے کے مطابق امریکہ سے آئینگی اور بکری کے لائق ہونگی' دوسرے اُن رقموں کی واپسی سے جو فنڈ 'اے' سے صوبوں کی سرکاروں یا نجی بھارتی بیوپاریوں کو مدد کے طور پر دی جائینگی .

4. فنڈ 'اے' پر دیکھ بھال اور انتظام ہند اور امریکی سرکاروں کا ملا جلا رہیگا . ہند

सरकार की तरफ़ से एक अफ़सर और दूसरी तरफ़ से डायरेक्टर साहब यह काम करेंगे. यह फ़न्ड उन्हीं कामों में ख़र्च किया जा सकेगा जिन पर दोनों की एक राय हो. इसी तरह 'बी' फ़न्ड का भी कोई हिस्सा बिना दोनों की एक राय के ख़र्च नहीं किया जा सकेगा.

5. फ़न्ड 'ए' में से जो पैसा ख़र्च के वास्ते दिया जायेगा वह देनगी (Grant) या उधारी (Loan) दोनों रूप में दिया जायेगा. लेकिन यह कहीं नहीं बताया गया है कि यह उधारी किस तरह से वसूल की जायगी.

6. अमरीकी सरकार जो मदद करेगी और उसके सिलसिले में जो प्रोग्राम वग़ैरा होंगे, इन में जो पैसा लगाया जायेगा या इनकी वजह से जो आमदनी होगी उस में से किसी पर या उसके ख़िलाफ़ कोई आदमी, कारख़ाना या सरकार किसी तरह की कोई क़ानूनी या ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाई नहीं कर सकेगी.

7. रुपया ख़र्च करने के लिये हिन्द सरकार एक सेन्ट्रल कमेटी बनायेगी जिसमें सात आदमियों से ज़ियादा न होंगे. लेकिन इस कमेटी की किसी सिफ़ारिश पर तब तक अमल नहीं किया जायेगा जब तक अमरीकी डायरेक्टर की रज़ामन्दी न मिल जाय.

काम.

इस समझौते में यह नहीं बताया गया है कि यह रुपया किन ख़ास ख़ास कामों में ख़र्च किया जायगा. लेकिन जो चर्चा अख़बारों में चल रही है उससे पता चलता है कि यह दो तरह के कामों में ख़र्च किया जायगा. पहले, अनाज और दूसरी चीज़ों की पैदावार बढ़ाना. दूसरे, देश में जगह जगह बस्तियां बसाना यानी कम्यूनिटी स्कीमें क़ायम करना. इस तरह की एक बस्ती अमरीकी इन्तज़ाम में उत्तर प्रदेश के इटावा ज़िले में क़ायम करने की ख़बर भी छपी है. उसके नमूने पर ही—कहा गया है—सारे देश में बस्तियां बसाई जायेंगी लेकिन जो समझौता इस वक़्त हमारे सामने है उसमें यह बातें क़लमबन्द नहीं की गई हैं. इसलिये हम इस पर कुछ न कह कर आगे बढ़ें.

आर्थिक नतीजे.

ऊपर हमने देखा कि इस समझौते के मक़सद क्या हैं और इसकी शर्तें क्या हैं. अब हम इन शर्तों से पैदा होने वाले आर्थिक नतीजों पर विचार करते हैं.

पहली व दूसरी शर्तों से साफ़ ज़ाहिर होता है—

1. अब हमारे देश में अमरीकी व्यापारी माहिरों का एक ऐसा तांता लग जायेगा जैसा अब तक कभी नहीं हुआ.

سرکار کی طرف سے ایک افسر اور دوسری طرف سے ڈائریکٹر صاحب یہ کام کرینگے . یہ فنڈ انہیں کاموں میں خرچ کیا جاسکیگا جن پر دونوں کی رائے ایک ہو . اسی طرح 'بی' فنڈ کا بھی کوئی حصہ بنا دونوں کی ایک رائے کے خرچ نہیں کیا جا سکیگا .

5. فنڈ 'اے' میں سے جو پیسہ خرچ کے واسطے دیا جائیگا وہ دینگی (Grant) یا اُدھاری (Loan) دونوں روپ میں دیا جائیگا . لیکن یہ کہیں نہیں بتایا گیا ہے کہ یہ اُدھاری کس طرح سے وصول کی جائیگی .

6. امریکی سرکار جو مدد کریگی اور اس کے سلسلے میں جو پروگرام وغیرہ ہونگے' ان میں جو پیسہ لگایا جائیگا یا ان کی وجہ سے جو آمدنی ہوگی اس میں سے کسی پر یا اس کے خلاف کوئی آدمی' کارخانہ یا سرکار کسی طرح کی کوئی قانونی یا غیر قانونی کاروائی نہیں کر سکیگی .

7 روپیہ خرچ کرنے کے لئے ہند سرکار ایک سینٹرل کمیٹی بنائیگی جس میں سات آدمیوں سے زیادہ نہ ہونگے. لیکن اس کمیٹی کی کسی سفارش پر تب تک عمل نہیں کیا جائیگا جب تک امریکی ڈائرکٹر کی رضامندی نہ مل جائے .

کام .

اس سمجھوتے میں یہ نہیں بتایا گیا ہے کہ یہ روپیہ کن خاص خاص کاموں میں خرچ کیا جائیگا . لیکن جو چرچہ اخباروں میں چل رہی ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ دو طرح کے کاموں میں خرچ کیا جائیگا . پہلے' اناج اور دوسری چیزوں کی پیداوار بڑھانا' دوسرے' دیش میں جگہ جگہ بستیاں بسانا یعنی کمیونٹی اسکیمیں قائم کرنا . اس طرح کی ایک بستی امریکی انتظام میں اتر پردیش کے اٹاوہ ضلعے میں قائم کرنے کی خبر بھی چھپی ہے . اس کے نمونے پر ہی—کہا گیا ہے—سارے دیش میں بستیاں بسائی جائینگی . لیکن جو سمجھوتہ اس وقت ہمارے سامنے ہے اس میں یہ باتیں قلمبند نہیں کی گئی ہیں . اس لئے ہم اس پر کچھ نہ کہکر آگے بڑھیں .

آرتھک نتیجے .

اوپر ہم نے دیکھا کہ اس سمجھوتے کے مقصد کیا ہیں اور اسکی شرطیں کیا ہیں . اب ہم ان شرطوں سے پیدا ہونے والے آرتھک نتیجوں پر وچار کرتے ہیں—

پہلی و دوسری شرطوں سے صاف ظاہر ہوتا ہے—

1. اب ہمارے دیش میں امریکی بیوپاری ماہروں کا ایسا تانتا لگ جائیگا جیسا اب تک کبھی نہیں ہوا .

2. वह अमरीकी जो स्याह-सफ़ेद करना चाहेंगे उसमें हिन्दुस्तान का कोई आदमी या संस्था या सरकार दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगी.

3. तीसरी शर्त से ज़ाहिर होता है कि अमरीका के पांच करोड़ डालर में से एक छदाम भी अमरीकी सरकार की मरज़ी के ख़िलाफ़ ख़र्च नहीं किया जा सकेगा. यह वह देनगी या दान है जिसे देकर दाता अपने को मुक्त नहीं समझ लेता. बल्कि वह दान दानी के क़ब्ज़े में ही रहता है जिसे वह अपने निजी पैसे की तरह, अपने मन के मुताबिक़, लेकिन दूसरे के मत्थे मढ़ कर, ख़र्च करता है.

4. चौथी शर्त के लिहाज़ से हिन्दुस्तान के निजी फ़न्ड 'बी' के ऊपर भी ख़र्च का सारा अख़्तियार पांच साल तक—या जब तक यह समझौता रहे—अमरीका का हो गया. दूसरे लफ़्ज़ों में, पराया पैसा क्या मिला अपना पैसा भी फंस गया.

5. पांचवीं शर्त में बताया गया है कि फ़न्ड 'ए' में जो हिस्सा या हिस्से सूबों की सरकारों या दूसरे लोगों को दिये जायेंगे वह देनगी या उधारी के रुपए होंगे. लेकिन यह नहीं बताया गया कि उधारी वाले हिस्से की वसूलयाबी की सूरत क्या होगी. इसके माने हैं कि जो पाबन्दियां या शर्तें अमरीकी सरकार इस सिलसिले में लागू करना चाहे वह कर सकती है और फिर उनका जो भी नतीजा हो.

6 यह सबसे संगीन और ख़तरनाक शर्त है. इससे मतलब यह निकलता है कि अमरीकी हकूमत हमारे देश में देख भाल कर, अपनी मरज़ी के मुताबिक़, इस तरह के नये काम-धंदे खोल, बना या बिगाड़ सकेगी जिससे उसको अपने पक्के माल की खपत के लिये या अपने कारख़ानों के वास्ते कच्चे माल के लिये, हमेशा को, बज़ार या साधन मिल जायें और अमरीकी आर्थिक संगठन को कभी किसी तरह की कोई अड़चन न हो. दूसरे लफ़्ज़ों में इस शर्त की मुराद यह है कि हिन्दुस्तान की खेती, हिन्दुस्तान के उद्योग-धंदे, हिन्दुस्तान की कला-दस्तकारी, हिन्दुस्तान की तिजारत-ब्यापार, हिन्दुस्तान के बाज़ार—और हिन्दुस्तान के घर—हर पहलू से, अमरीका के मुहताज बन जायें.

7. और सातवीं शर्त का मन्शा यह है कि जहां जहां पांव पड़े संतन के तहां तहां बंटाधार. यानी, हमारे देश के फिर-बनाव या फिर-बसाव या बेहतरी-तरक़्क़ी के किसी काम में अमरीका का अगर धेला भी ख़र्च हुआ तो वह काम, वह प्रोग्राम और उस काम में लगा हमारा पैसा और उसमें काम करने वाले आदमी इन सबकी

2. یہ امریکی جو سیاہ سفید کرنا چاہینگے اُس میں ہندستان کا کوئی آدمی یا سنستھا یا سرکار دخل اندازی نہیں کر سکیگی۔

3. تیسری شرط سے ظاہر ہوتا ہے کہ امریکہ کے پانچ کروڑ ڈالر میں سے ایک چھدام بھی امریکی سرکار کی مرضی کے خلاف خرچ نہیں کیا جا سکیگا۔ یہ وہ دینگی یا دان ہے جسے دیکر داتا اپنے کو مکت نہیں سمجھ لیتا' بلکہ یہ دان دانی کے قبضے میں ہی رہتا ہے جسے وہ اپنے نجی پیسے کی طرح' اپنے من کے مطابق' لیکن دوسرے کے متھے مڑھکر' خرچ کرتا ہے۔

4. چوتھی شرط کے لحاظ سے ہندستان کے نجی فنڈ 'بی' کے اوپر بھی خرچ کا سارا اختیار پانچ سال تک— یا جب تک یہ سمجھوتہ رہے—امریکہ کا ہو گیا۔ دوسرے لفظوں میں' پرایا پیسہ کیا ملا اپنا پیسہ بھی پھنس گیا۔

5. پانچویں شرط میں بتایا گیا ہے کہ فنڈ 'اے' میں جو حصہ یا حصے صوبوں کی سرکاروں یا دوسرے لوگوں کو دیئے جائینگے وہ دینگی یا اُدھاری کے روپے ہونگے۔ لیکن یہ نہیں بتایا گیا کہ اُدھاری والے حصے کی وصولیابی کی صورت کیا ہوگی' اس کے معنی ہیں کہ جو پابندیاں یا شرطیں امریکی سرکار اس سلسلے میں لاگو کرنا چاہے وہ کر سکتی ہے اور پھر اُن کا جو بھی نتیجہ ہو۔

6. یہ سب سے سنگین اور خطرناک شرط ہے۔ اس سے مطلب یہ نکلتا ہے کہ امریکی حکومت ہمارے دیش میں دیکھ بھال کر' اپنی مرضی کے مطابق' اس طرح کے نئے کام دھندے کھول' بنا یا بگاڑ سکیگی جس سے اُس کو اپنے پکے مال کی کھپت کے لئے یا اپنے کارخانوں کے واسطے کچے مال کے لئے' ہمیشہ کو' بازار یا سادھن مل جائیں اور امریکہ آرتھک سنگٹھن کو کبھی کسی طرح کی کوئی اڑچن نہ ہو' دوسرے لفظوں میں اس شرط کی مراد یہ ہے کہ ہندستان کی کھیتی' ہندستان کے اُدیوگ دھندے' ہندستان کی کلا دستکاری' ہندستان کی تجارت بیاپار' ہندستان کے بازار' اور ہندستان کے گھر' ہر پہلو سے امریکہ کے محتاج بن جائیں۔

7. اور ساتویں شرط کا منشا یہ ہے کہ جہاں جہاں پاؤں پڑے سنتن کے تہاں تہاں بنٹا دھار۔ یعنی' ہمارے دیش کے پھر بساؤ یا بہتری ترقی کے کسی کام میں امریکہ کا دھیلا بھی خرچ ہوا تو وہ کام' وہ پروگرام اور اس کام میں لگا ہمارا پیسہ اور اس میں کام کرنے والے آدمی—ان سب کی

तक़दीर का फ़ैसला फिर हमारे या हमारी सरकार के हाथों में न रह कर अमरीकी डायरेक्टर और अमरीकी सरकार के हाथों में पहुंच गया.

इन सातों नतीजों का निचोड़ यह है कि अमरीका जो इमदाद दे रहा है वह एक पक्की लागत की पूंजी जैसी है जिसके ज़रिये वह हिन्दुस्तान में अपना आर्थिक जाल फैला कर अपने आर्थिक बड़प्पन को हमेशा के लिये बनाये रखना चाहता है. यह एक लागत की पूंजी है जिसके ज़रिये वह हिन्दुस्तान के करोड़ों ग़रीबों-नंगों के बल पर अपना आर्थिक क़िला खड़ा रखना चाहता है.

एक मिसाल से बात साफ़ हो जायेगी हालांकि वह मिसाल ज़ियादा दूर तक नहीं जाती. आजकल हमारे यहां चाय का रिवाज बहुत बढ़ गया है और आज चाय के बिना हमारे अकसर पढ़े-लिखों का काम नहीं चलता. लेकिन यह चाय की आदत कैसे डाली गई. कुछ बरस पहले तक हिन्दुस्तान भर में चाय मुफ़्त पिलाई जाती थी और चाय की पुड़ियाँ मुफ़्त बांटी जाती थीं पर चाय कम्पनियां चाय केवल मुफ़्त में या दान में नहीं पिला रही थीं. शुरू की मुफ़्त तक़सीम पर ख़र्च एक तरह से उनका लागत पूंजी ही थी जिस से थोड़े अरसे में दुगना-चौगुना वसूल होने लग गया या जैसे चीन में अफ़ीम का रिवाज अंगरेज़ों ने शुरू में मुफ़्त खिला खिला कर डाला था—इसी तरह यह 'एड' अमरीका की तरफ़ से अपने व्यापार और सामान के लिये एक ऐसा ख़र्च है जिसके बिना आगे की आमदनी का रास्ता नहीं खुलता.

अब हम राजकाजी नतीजों पर विचार करें.

राजकाजी नतीजे.

1. इस समझौते के दोनों मक़सदों को देखने से फ़ौरन ख़याल पैदा होता है कि हिन्दुस्तान की सरकार ने दुनिया के अन्दर क़ौमी मनमुटाव या मेल मिलाप को उसी चश्मे से देखना मन्ज़ूर कर लिया जो अमरीकी सरकार की आंखों पर चढ़ा है.

2. कौन नहीं जानता कि यह मदद अमरीका के ख़ज़ाने से पहली मदद नहीं है. अमरीका कई बरस से योरप के जुदा जुदा देशों को 'मार्शल एड' नाम से मदद दे चुका है. योरप में अपना रंग जमा लेने के बाद अब अमरीका एशिया—ख़ास कर दक्खिन एशिया और दक्खिन पूरबी एशिया की तरफ़ मुड़ रहा है. फिर, एशिया के इसी हिस्से में सही या ग़लत, उसे कम्यूनिज़्म का हौवा छाया होता रहा है जिसकी वजह से अमरीका महसूस करता है कि अपने ढंग की "लोकशाही" के बचाने के लिये हर मुमकिन क़दम उठाये. दुनिया को मालूम है कि चीन में इसी "लोकशाही" (?) को बचाने के लिये अमरीका

تقدیر کا فیصلہ پھر ہمارے یا ہماری سرکار کے ہاتھوں میں نہ رہکر امریکی ڈائرکٹر اور امریکی سرکار کے ہاتھوں میں پہونچ گیا۔

ان ساتوں نتیجوں کا نچوڑ یہ ہے کہ امریکہ جو امداد دے رہا ہے وہ ایک پکی لاگت کی پونجی جیسی ہے جس کے ذریعے وہ ہندستان میں اپنا آرتھک جال پھیلا کر اپنے آرتھک بڑپن کو ہمیشہ کے لئے بنائے رکھنا چاہتا ہے۔ یہ ایک لاگت کی پونجی ہے جس کے ذریعے وہ ہندستان کے کروڑوں غریبوں ننگوں کے بل پر اپنا آرتھک قلعہ کھڑا رکھنا چاہتا ہے۔

ایک مثال سے بات صاف ہو جائے گی حالانکہ وہ مثال زیادہ دور تک نہیں جاتی۔ آجکل ہمارے یہاں چائے کا رواج بہت بڑھ گیا ہے اور آج چائے کے بنا ہمارے اکثر پڑھے لکھوں کا کام نہیں چلتا۔ لیکن یہ چائے کی عادت کیسے ڈالی گئی۔ کچھ برس پہلے تک ہندستان بھر میں چائے مفت پلائی جاتی تھی اور چائے کی پڑیاں مفت بانٹی جاتی تھیں۔ پر چائے کمپنیاں چائے کیول مفت میں یا دان میں نہیں پلا رہی تھیں۔ شروع کی مفت تقسیم پر خرچ ایک طرح سے ان کا لاگت پونجی ہی تھی جس سے تھوڑے عرصے میں دگنا چوگنا وصول ہونے لگ گیا یا جیسے چین میں افیم کا رواج انگریزوں نے شروع میں مفت کھلا کھلا کر ڈالا تھا—اسی طرح یہ "ایڈ" امریکہ کی طرف سے اپنے بیوپار اور سامان کے لئے ایک ایسا خرچ ہے جس کے بنا آگے کی آمدنی کا راستہ نہیں کھلتا۔

اب ہم راجکاجی نتیجوں پر وچار کریں۔

راجکاجی نتیجے۔

1. اس سمجھوتے کے دونوں مقصدوں کو دیکھنے سے فوراً خیال پیدا ہوتا ہے کہ ہندستان کی سرکار نے دنیا کے اندر قومی من مٹاؤ یا میل ملاپ کو اسی چشمے سے دیکھنا منظور کر لیا جو امریکی سرکار کی آنکھوں پر چڑھا ہے۔

2. کون نہیں جانتا کہ یہ مدد امریکہ کے خزانے سے پہلی مدد نہیں ہے۔ امریکہ کئی برس سے یورپ کے جدا جدا دیشوں کو "مارشل ایڈ" نام سے مدد دے چکا ہے۔ یورپ میں اپنا رنگ جما لینے کے بعد اب امریکہ ایشیا—خاص کر دکھن ایشیا اور دکھن پوربی ایشیا کی طرف مڑ رہا ہے۔ پھر ایشیا کے اسی حصے میں صحیح یا غلط اسے کمیونزم کا ہوا چھایا دیکھ رہا ہے جس کی وجہ سے امریکہ محسوس کرتا ہے کہ اپنے ڈھنگ کی "لوک شاہی" کے بچانے کے لئے ہر ممکن قدم اٹھائے۔ دنیا کو معلوم ہے کہ چین میں اسی "لوک شاہی" (؟) کو بچانے کے لئے امریکہ

से जनरल च्यांग काई शेक की मदद की और फारमूसा में अब भी उनकी मदद कर रहा है. लिहाजा हिन्दुस्तान को मदद देना या यह "दया" दिखाना राजनीति से खाली नहीं है.

3. यहां हमें अपने देश की मशहूर मसल याद आ रही है—*आम के आम गुठलियों के दाम*. सब जानते हैं कि अमरीका में साइन्स की दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी हो रही है. आज एक मशीन हजारों लाखों की तादाद में तैयार होती है, कल दूसरी नई मशीन बनने पर पुरानी मशीन खारिज हो जाती है. आखिर पुराना स्टाक कहां जाये? अगर नया माल नहीं बनाते हैं तो अमरीका के मजदूर क्या खायें और वहां के पूंजीपतियों का गुजारा कैसे हो? मशीन तो उस शैतान की तरह है जिसे या तो काम दीजिये नहीं तो वह मालिक को ही खाने को तैयार हो जाती है. इस तरह 'एड' के नाम पर पुराना माल निकल जाता है जो अपने देश में टके के मोल भी न बिकता. साथ ही साथ दूसरे देश का रुपया फांस कर उसकी गर्दन पर चढ़ बैठने का मौक़ा मिल जाता है, और एहसान मुफ्त में रहा.

समझौता या ग़ुलामीनामा?

इस तरह इस समझौते को राजकाजी निगाह से देखने पर पता चलता है कि यह हिन्दुस्तान के गले में फन्दा डालने की कोशिश है. हमारी समझ में नहीं आता कि इस हिन्द अमरीकी समझौते को समझौता कहें या ग़ुलामी नामा. इसमें कोई शक नहीं मालूम होता कि अगर यह समझौता पूरी तरह अमल में आया तो हिन्दुस्तान क्या आर्थिक, क्या राजकाजी, सभी पहलुओं से अमरीकी शिकंजे में जकड़ जायेगा.

अफ़सोस कि हमारी सरकार को बाहर से भीक मांग मांग कर गुज़र चलाने की आदत पड़ती जा रही है. आज कोलम्बो प्लैन के नाम पर, कल वर्ल्ड बैन्क के नाम पर, परसों पाइन्ट फ़ोर के नाम पर, फिर फ़ाइव इयर प्लान के नाम पर वग़ैरा वग़ैरा. यह आदत देश के लिये बहुत ही खतरनाक है. यह ऐसी आदत है जो फिर छोड़े नहीं छूटेगी और आखरी दम के साथ जायेगी. चुनाव के बाद अब नई सरकार बनने वाली है. क्या हम उम्मीद करें कि वह चेतेगी और महसूस करेगी:—

ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं, लेकिन अमरीका (या कोई ग़ैर सरकार क्यों न हो) उनकी मदद करता है जो अपने को ग़ुलाम बनाते हैं!

6. 2. 1952. —सुरेश रामभाई

نے جنرل چیانگ کائی شیک کی مدد کی اور فارموسا میں اب بھی اُن کی مدد کر رہا ہے. لہذا ہندستان کو مدد دینا یا یہ "دیا" دکھانا راج نیتی سے خالی نہیں ہے.

3. یہاں ہمیں اپنے دیش کی مشہور مثل یاد آ رہی ہے—آم کے آم گٹھلیوں کے دام. سب جانتے ہیں کہ امریکہ میں سائنس کی دن دونی رات چوگنی ترقی ہو رہی ہے. آج ایک مشین ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں تیار ہوتی ہے، کل دوسری نئی مشین بننے پر پرانی مشین خارج ہو جاتی ہے. آخر پرانا اسٹاک کہاں جائے؟ اگر نیا مال نہیں بناتے ہیں تو امریکہ کے مزدور کیا کھائیں اور وہاں کے پونجی پتیوں کا گذارا کیسے ہو؟ مشین تو اُس شیطان کی طرح ہے جسے یا تو کام دیجئے نہیں تو وہ مالک کو ہی کھانے کو تیار ہو جاتی ہے. اِس طرح 'ایڈ' کے نام پر پرانا مال نکل جاتا ہے جو اپنے دیش میں ٹکے کے مول بھی نہ بکتا. ساتھ ہی ساتھ دوسرے دیش کا روپیہ پھانس کر اُس کی گردن پر چڑھ بیٹھنے کا موقع مل جاتا ہے، اور احسان مفت میں رہا.

سمجھوتہ یا غلامی نامہ؟

اِس طرح اِس سمجھوتے کو راج کاجی نگاہ سے دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ یہ ہندستان کے گلے میں پھندا ڈالنے کی کوشش ہے. ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ اِس ہند امریکی سمجھوتے کو سمجھوتہ کہیں یا غلامی نامہ. اِس میں کوئی شک نہیں معلوم ہوتا کہ اگر یہ سمجھوتہ پوری طرح عمل میں آیا تو ہندستان کیا آرتھک، کیا راج کاجی، سبھی پہلوؤں سے امریکی شکنجے میں جکڑ جائے گا!

افسوس کہ ہماری سرکار کو باہر سے بھیک مانگ مانگ کر گذر چلانے کی عادت پڑتی جا رہی ہے. آج کولمبو پلین کے نام پر، کل ورلڈ بینک کے نام پر، پرسوں پائنٹ فور کے نام پر، پھر فائیو ایئر پلان کے نام پر وغیرہ وغیرہ. یہ عادت دیش کے لئے بہت ہی خطرناک ہے. یہ ایسی عادت ہے جو پھر چھوڑے نہیں چھوٹے گی اور آخری دم کے ساتھ جائے گی. چناؤ کے بعد اب نئی سرکار بننے والی ہے. کیا ہم اُمید کریں کہ وہ چیتے گی اور محسوس کرے گی:—

ایشور اُن کی مدد کرتا ہے جو اپنی مدد خود کرتے ہیں، لیکن امریکہ (یا کوئی غیر سرکار کیوں نہ ہو) اُن کی مدد کرتا ہے جو اپنے کو غلام بناتے ہیں!

—سریش رام بھائی 6.2.1952

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंग्रेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़ लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

चीन की आवाज़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नए चीन ने अपने नए लोकराज की दूसरी साल गिरह मनाई थी. ख़ुशी के उस मौक़े पर चीन की कई संस्थाओं की दावत पर हिन्दुस्तान से पंडित सुन्दरलाल की सिदारत में एक मिशन भी गया था जिसने हिंदुस्तान की आम जनता की तरफ़ से शिरकत की.

चीन में इस मिशन का बहुत शानदार और ज़ोरदार स्वागत किया गया. पिछले दो बरस में चीन के रहने वालों ने जो किया उसकी मिसाल इतिहास में ढूंढने पर मुश्किल से ही मिल सकती है. लेकिन उन्होंने क्या किया—इसकी झलक आपको इस छोटी-सी किताब में मिलेगी.

चालीस पन्नों से ऊपर की किताब, दाम सिर्फ़ चार आना.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

چین کی آواز

لیکھک—پنڈت سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین نے اپنے نئے لوک راج کی دوسری سالگرہ منائی تھی۔ خوشی کے اس موقعے پر چین کی کئی سنستھاؤں کی دعوت پر ہندستان سے پنڈت سندر لال کی صدارت میں ایک مشن بھی گیا تھا جس نے ہندستان کی عام جنتا کی طرف سے شرکت کی۔

چین میں اس مشن کا بہت شاندار اور زوردار سواگت کیا گیا۔ پچھلے دو برس میں چین کے رہنے والوں نے جو کیا اس کی مثال اتہاس میں ڈھونڈنے پر مشکل سے ہی مل سکتی ہے۔ لیکن انہوں نے کیا کیا—اس کی جھلک آپ کو اس چھوٹی سی کتاب میں ملے گی۔

چالیس پنوں سے اوپر کی کتاب دام صرف چار آنے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد۔

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का नीचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग १५ ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब ५०० आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरह दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक बर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

لیکھک — پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ ۱۵ خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب ۵۰۰ آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ۔

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے۔ قیمت صرف دو آنے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر "نیا ہند" 145، مٹھی گنج، الہ آباد

गांधी बाबा

लेखक—बेगम कुदसिया जैदी.

बच्चों के दिल को हरने वाली, कहानियों की शक्ल में महात्मा गांधी की यह नन्हीं सी जीवनी पढ़ते ही बनता है. इसमें आप देखेंगे कि किस तरह सीधे सादे ढंग से दादी नानी अपने बच्चों के दिल पर, बात की बात में, गांधी बाबा की पूरी तसवीर नक़्श कर देती हैं.

अपने ढंग की हिन्दी में लाजवाब किताब, क़रीब सत्तर सफ़े, रंग-बिरंगी छपाई, मोटा-ख़ूबसूरत काग़ज़, बीसियों रंगीन तस्वीरें, मज़बूत सुन्दर जिल्द, दाम सिर्फ़ तीन रुपये.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिये अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधीजी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके बताने पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की भड़काई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک — بیگم قدسیہ زیدی

بچوں کے دل کو ہرنے والی' کہانیوں کی شکل میں مہاتما گاندھی کی یہ ننھی سی جیونی پڑھتے ہی بنتا ہے. اِس میں آپ دیکھیں گے کہ کسطرح سیدھے سادے ڈھنگ سے ماں دادی نانی اپنے بچوں کے دل پر' بات کی بات میں' گاندھی بابا کی پوری تصویر نقش کر دیتی ہیں .

اپنے ڈھنگ کی ہندی میں لاجواب کتاب' قریب ستر صفحے' رنگ برنگی چھپائی' موٹا خوبصورت کاغذ' بیسیوں رنگین تصویریں' مضبوط سندر جلد' دام صرف تین روپے .

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے 'اور 'اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے

پینتیس پنے کی کتاب' دام صرف چار آنے .

آج کے شہید

لیکھک — شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی بھڑکائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی . کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج' الہ آباد

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में सन 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिंदुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रिया मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उर्दू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उर्दू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उर्दू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उर्दू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल गहराइयों को छुयेगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उर्दू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. साफ़ छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

فرقہ‌بندی پر باپو

سمپادک—شری شری‌کرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سُندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی ۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا— سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریہ مٹیں گی ۔

قریب سوا سو صفحے کی سُندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے ۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے ۔ اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی ۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل گہرائیوں کو چھوئیگی ۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا ۔ سُندر جلد ۔ بڑھیا کاغذ ۔ صاف چھپائی ۔ دام صرف تین روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد.

हि[illegible]

ہندستانی کلچر سوسائٹی

[illegible]

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना [illegible] प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों [illegible] का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, [illegible]तों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िरक़ों में [illegible] का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; [illegible] प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल [illegible]; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; [illegible]क्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद [illegible]मान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री वी० जी० [illegible]र, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम [illegible]न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम [illegible]श पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के मुताबिक़ मेम्बरी [illegible] कर दी गई है. "नया हिन्द" [illegible]

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب مذہبوں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی [illegible] ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے [illegible]

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हजरत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जाएगा कि ईसाई धर्म की खास तालीम क्या है और हजरत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना जोर दिया है.

आज हम योरप और अमरीका के लोगों को एक तरफ अपने को ईसा का पैरो कहते और दूसरी तरफ कमजोर कौमों को गुलाम बनाने के लिये एटम बम और हाइड्रोजन बम की रचना करते देख सोचने लगते हैं कि क्या ईसाई धर्म में यह सब जुल्म और नाइन्साफी जायज है ? लेकिन इस किताब को पढ़ कर इस तरह के सारे भ्रम दूर हो जाएँगे और इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जाएगी.

यह किताब कुमारप्पा जी ने सन 1944 में जबलपुर जेल में लिखी थी. इसके बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राय है—

> "मैं अपने अनुभव के बल पर कह सकता हूँ कि प्रोफेसर कुमारप्पा ने इन सफ़ों में गास्पेल (इंजील) का जो मतलब लगाया है वह सच्चा और सही है..."

महात्मा जी ने यह भी कहा था कि—

> "हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो मेरी सिफारिश है कि इसे पढ़े .. "

अंगरेजी में इस किताब के कई एडीशन निकल चुके हैं. अब यह इसका सरल और बामुहावरा हिन्दुस्तानी अनुवाद निकल रहा है. किताब के आखीर में 'ईसा के जीवन के कुछ किस्से' देकर अनुवादक ने इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया कागज, करीब सवा सौ सफ़्हे की किताब का दाम सिर्फ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

آج ہم یورپ اور امریکہ کے لوگوں کو ایک طرف اپنے کو عیسیٰ کا پیرو کہتے اور دوسری طرف کمزور قوموں کو غلام بنانے کے لئے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کی رچنا کرتے دیکھ سوچنے لگتے ہیں کہ کیا عیسائی دھرم میں یہ سب ظلم اور ناانصافی جائز ہے ؟ لیکن اس کتاب کو پڑھکر اس طرح کے سارے بھرم دور ہوجائیں گے اور انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آجائیگی.

یہ کتاب کمارپا جی نے سن 1944 میں جبل پور جیل میں لکھی تھی. اسکے بارے میں راشٹر پتا مہاتما گاندھی کی رائے ہے—

> "میں اپنے انوبھو کے بل پر کہہ سکتا ہوں کہ پروفیسر کمارپا نے ان صفحوں میں گاسپل (انجیل) کا جو مطلب لگایا ہے وہ سچا اور صحیح ہے......"

مہاتما جی نے یہ بھی کہا تھا کہ—

> "ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے......"

انگریزی میں اس کتاب کے کئی ایڈیشن نکل چکے ہیں. اب یہ اس کا سرل اور بامحاورہ ہندستانی انوواد نکل رہا ہے. کتاب کے آخر میں 'عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے' دیکر انوادک نے اسکی شوبھا اور بھی بڑھا دی ہے.

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ram bhai, at the Naya Hind Press ,145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द

نیا ہند

[Issue] नम्बर के ख़ास लेख

نمبر کے خاص لیکھ

हमारा गाँव—

सुरेश रामभाई

[हिन्दुस्]तानी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

मार्च 1952 مارچ

कीमत दस आना

قیمت دس آنہ

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 12 | मार्च, सन '52 | नम्बर 3

نمبر 3 | مارچ' سن '52 | جلد 12

जात आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

"मन माला"

(स्वामी मारहरवी)

मन धरम आत्म, मन परम आत्म, मन ही सीता, मन ही राम
मन ही मूरत, मन ही पुजारी, मन ही राधा, मन ही श्याम

मन ही बूँद और मन ही सागर, मन ही साहिल मन ही मौज
मन ही नैया, मन ही खेवैया, उछले, डूबे, मन की मौज

मन ही चिंता, मन ही विपता, मन ही से अंधियारा होए
मन का छाला फूट बहे तो सारे जग उजियारा होए

अमृत का भरपूर खज़ाना, विष का है वह रूख पुराना
यह भी मन है, वह भी मन है, एक अमर और एक दिवाना

मन की पहेली मन ही बूझे और न बूझे दूजा कोए
मन मूरख ही शीश नवाये, मन चाहे तो पूजा होए

मन की हैं चित चोर निगाहें, मीठी सी रसखोर निगाहें
ढीट, चतुर, मुंहज़ोर निगाहें, इत टूटें, उत डोर हिलायें

मन पोथी न स्वामी बांचे, मन के रोग न वैद जाने
मन की पीर हरे ना कोई, अब क्या होए विधना जाने

"من مالا"

(سوامی مارہروی)

من دھرم آتم' من پرم آتم' من ہی سیتا' من ہی رام
من ہی مورت' من ہی پجاری' من ہی رادھا' من ہی شیام

من ہی بوند اور من ہی ساگر' من ہی ساحل' من ہی موج
من ہی نیا' من ہی کھویا' اچھلے' ڈوبے' من کی موج

من ہی چنتا' من ہی بپتا' من ہی سے اندھیارا ہوئے
من کا چھالا پھوٹ بہے تو سارے جگ اجیارا ہوئے

امرت کا بھرپور کھزانا' بس کا ہے یہ روکھ پرانا
یہ بھی من ہے' وہ بھی من ہے' ایک امر اور ایک دوانا

من کی پہیلی من ہی بوجھے اور نہ بوجھے دوجا کوئے
من مورکھ ہی شیش نوائے' من چاہے تو پوجا ہوئے

من کی ہیں چت چور نگاہیں' میٹھی سی رسخور نگاہیں
ڈھیٹ' چتر' منہ زور نگاہیں' ات ٹوٹیں' ات ڈور ہلائیں

من پوتھی نہ سوامی بانچے' من کے روگ نہ بید جانے
من کی پیر ہرے نہ کوئی' اب کیا ہوئے بدھنا جانے

ज्ञान या मारफ़त का रास्ता

(२) ख़ुदी और ख़ुदा

(डाक्टर भगवानदास)

हम ज़रा यह देखें कि दुनिया के बड़े बड़े धर्मों और महापुरुषों ने आत्मा और ईश्वर को क्या कह कर और किन शब्दों में बयान किया है, और उनके अलग अलग बयान कहां तक मिलते हैं.

योग वाशिष्ठ में लिखा है :—

सर्वस्य एव जनस्य अस्य
विष्णुर् अभ्यंतरे स्थितः
तम् परित्यज्य ये यान्ति
बहिर्विष्णुम् नराधमाः

यानी ईश्वर सब लोगों के दिलों के अन्दर मौजूद है. उस अन्दर के विश्नु को छोड़ कर जो लोग बाहर के विश्नु को ढूंढने जाते हैं वे अधम यानी बहुत गिरे हुए हैं

भागवत का कहना है :—

"जो आदमी सब जानदारों के अन्दर भगवान को देखता है, सब को भगवान का रूप समझता है और भगवान के अन्दर सब जानदारों को देखता है वही भगवान का मानने वाला और सब से अच्छा भक्त है."

इन बयानों से आदमी के अन्दर की आत्मा यानी रूह और विश्वात्मा यानी रूहे कुल या परमात्मा में कोई फ़रक़ भी मालूम नहीं होता.

उपनिशदों में बार बार आता है—"एकम् एव अद्वितीय" जो "वहदहू लाशरीक" का लफ्ज़ी तरजुमा है. यानी यह कि ईश्वर एक है, उस जैसा दूसरा कोई नहीं.

सूफ़ी कहता है—

हर गियाहे कि बर ज़मीं रोयद
वहदहू लाशरीक लहू गोयद

यानी घास का हर तिनका जो ज़मीन पर उगता है, यही पुकार पुकार कर कहता है कि 'अल्ला एक है, उसका कोई शरीक नहीं.'

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है—"उस एक ईश्वर के सिवा मैं और किसी और को जानता ही नहीं."

वजूद सिर्फ़ उसी एक ईश्वर का है, वही सच है, वही हक़ है और वही असल हक़ीक़त है जो पिछले अगले और हाल के तीनों कालों में और आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह एक सा मौजूद है जिसमें कोई तबदीली नहीं

گیان یا معرفت کا راستہ

(2) خودی اور خدا

(ڈاکٹر بھگوان داس)

ہم ذرا یہ دیکھیں کہ دنیا کے بڑے بڑے دھرموں اور مہاپرشوں نے آتما اور ایشور کو کیا کہکر اور کن شبدوں میں بیان کیا ہے ' اور اُن کے الگ الگ بیان کہاں تک ملتے ہیں .

یوگ واشِشٹھ میں لکھا ہے :—

سروسیہ ایوجنسیہ اسیہ
وشنور ابھینترے استھتہ
تم پریتیجیہ یے یانتی
باہرو شنم نرادھماہ

یعنی ایشور سب لوگوں کے دلوں کے اندر موجود ہے . اُس اندر کے وشنو کو چھوڑ کر جو باہر کے وشنو کو ڈھونڈھنے جاتے ہیں وہ ادھم یعنی بہت گرے ہوئے ہیں .

بھاگوت کا کہنا ہے :—

" جو آدمی سب جانداروں کے اندر بھگوان کو دیکھتا ہے ' سب کو بھگوان کا روپ سمجھتا ہے اور بھگوان کے اندر سب جانداروں کو دیکھتا ہے وہ ہی بھگوان کا ماننے والا اور سب سے اچھا بھکت ہے ."

اِن بیانوں سے آدمی کے اندر کی آتما یعنی روح اور وشو آتما یعنی روح کل یا پرم آتما میں کوئی فرق بھی معلوم نہیں ہوتا .

اُپنشدوں میں بار بار آتا ہے—"ایکم ایو ادویتیہ" جو وحدہٗ لاشریک کا لفظی ترجمہ ہے . یعنی یہ کہ ایشور ایک ہے اُس جیسا دوسرا کوئی نہیں .

صوفی کہتا ہے—

ہر گیاہے کہ بر زمیں روید
وحدہٗ لاشریک لہ گوید

یعنی گھاس کا ہر تنکا جو زمین پر اُگتا ہے ' یہی پکار پکار کر کہتا ہے کہ 'اللہ ایک ہے ' اُسکا کوئی شریک نہیں.'

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے—"اُس ایک ایشور کے سوا میں اور کسی اور کو جانتا ہی نہیں ."

وجود صرف اُسی ایک ایشور کا ہے ' وہی سچ ہے ' وہی حق ہے اور وہی اصل حقیقت ہے جو پچھلے اگلے اور حال کے تینوں کالوں میں اور آگے ' پیچھے ' اوپر ' نیچے سب جگہ ایک سا موجود ہے جس میں کوئی تبدیلی نہیں

ती. इसके खिलाफ़ जो भी किसी वक्त है और किसी
क्त नहीं है या जो इस समय है और फिर नहीं रहेगा
सका वजूद केवल धोका है.

बरट्रंड रसल इंगलिस्तान के एक मशहूर फ़िलासफ़ी और
द्वान हैं. वह एक जगह लिखते हैं—"मैं देखता हूँ कि
ा बेटा अभी तक इस बात को किसी तरह समझ ही
ीं पाता कि कोई वक्त ऐसा भी था जब वह मौजूद न
ा. जब मैं उससे मिस्र के मीनारों के बनने की या कोई
सी तरह की बात करता हूँ तो वह हमेशा यह पूछता है
क वह खुद उन दिनों क्या करता था. और जब मैं उससे
ह कहता हूं कि तुम उन दिनों मौजूद नहीं थे तो मेरा बेटा
छटपटा जाता है. उसकी समझ काम नहीं करती."
लेकिन सच यह है कि बरट्रंड रसल की निस्बत उस बच्चे
की आत्मा असलियत को ज़ियादा समझती है. चेतनता,
रूह या आत्मा मान ही नहीं सकती कि कोई ऐसा वक्त भी
था जब वह नहीं थी. या कोई ऐसा वक्त भी होगा जब
वह नहीं रहेगी. चेतनता के, रूह के या आत्मा के ऊपर
अमर होने की छाप अमिट रूप से लगी हुई है. जब मैं
यह कहता हूँ कि यह सूरज या यह तारे इतने करोड़ बरस
हुए पैदा हुए थे और यह इतने करोड़ बरस तक रहेंगे तो
वह सारा आगे पीछे का ज़माना और यह सारी अरबों
खरबों मील की जगह मेरी चेतनता के अन्दर आ जाती है.
नहीं तो मेरे कहने का कुछ अर्थ ही नहीं होता. इन्हीं मानों
में सरमद ने कहा है—

मुल्ला गोयद कि बफ़लक शुद अहमद
'सरमद' गोयद कि फ़लक ब अहमद दर शुद

यानी मुल्ला कहता है कि मोहम्मद साहब आसमान
पर गए थे. सरमद कहता है कि आसमान मोहम्मद साहब
के अन्दर समा गया था.

भागवत में लिखा है—

"आत्मा न कभी पैदा होती है, न मरती है न कभी
घटती बढ़ती है."

क़ुरान के "लम यलिद वलम यूलद" का भी यही
असली मतलब है:

आत्मा को 'स्वयं प्रभा' यानी 'नूर ही नूर' कहा गया
है क्योंकि वह खुद अपने से रोशन है. कोई दूसरा उसे
रोशन नहीं कर सकता.

उपनिषदों में यह बात बार बार और तरह तरह से
बयान की गई है. लिखा है—"आत्मा को सुनने की इच्छा
हुई, उसने कान की शक्ल ले ली. देखने की इच्छा हुई,
उसने आंख की शक्ल ले ली, सूँघने की इच्छा हुई, उसने
नाक की शक्ल ले ली."

ہوتی. اس کے خلاف جو بھی کسی وقت ہے اور کسی وقت
نہیں ہے یا جو اس سمے ہے اور پھر نہیں رہے گا اسکا وجود
کیول دھوکا ہے .

برٹرنڈ رسل انگلستان کے ایک مشہور فلاسفی اور
ودوان ہیں . وہ ایک جگہ لکھتے ہیں—" میں دیکھتا
ہوں کہ میرا بیٹا ابھی تک اس بات کو کسی طرح سمجھ
ہی نہیں پاتا کہ کوئی وقت ایسا بھی تھا جب وہ موجود
نہ تھا . جب میں اس سے مصر کے میناروں کے بننے کی
یا کوئی اسی طرح کی بات کرتا ہوں تو وہ ہمیشہ یہ
پوچھتا ہے کہ وہ خود ان دنوں کیا کرتا تھا . اور جب
میں اس سے یہ کہتا ہوں کہ تم ان دنوں موجود نہیں
تھے تو میرا بیٹا چھٹپٹا جاتا ہے اسکی سمجھ کام نہیں
کرتی ." لیکن سچ یہ ہے کہ برٹرنڈ رسل کی نسبت اس
بچے کی آتما اصلیت کو زیادہ سمجھتی ہے . چیتنتا' روح
یا آتما مان ہی نہیں سکتی کہ کوئی ایسا وقت بھی تھا
جب وہ نہیں تھی . یا کوئی ایسا وقت بھی ہوگا جب وہ
نہیں رہے گی . چیتنتا کے' روح کے یا آتما کے اوپر امر ہونے
کی چھاپ امٹ روپ سے لگی ہوئی ہے . جب میں یہ
کہتا ہوں کہ یہ سورج یا یہ تارے اتنے کروڑ برس ہوئے
پیدا ہوئے تھے اور یہ اتنے کروڑ برس تک رہیں گے تو وہ سارا
آگے پیچھے کا زمانہ اور یہ ساری اربوں کھربوں میل کی
جگہ میری چیتنتا کے اندر آ جاتی ہے . نہیں تو میرے
کہنے کا کچھ ارتھ ہی نہیں ہوتا . انہیں معنوں میں
سرمد نے کہا ہے—

ملا گوید کہ بر فلک شد احمد
سرمد گوید کہ فلک و احمد ورشد

یعنی ملا کہتا ہے کہ محمد صاحب آسمان پر گئے تھے
سرمد کہتا ہے کہ آسمان محمد صاحب کے اندر سما
گیا تھا .

بھاگوت میں لکھا ہے—

" آتما نہ کبھی پیدا ہوتی ہے' نہ مرتی ہے نہ کبھی
گھٹتی بڑھتی ہے ."

قرآن کے " لم یلد ولم یولد " کا بھی یہی اصلی
مطلب ہے .

آتما کو ' سویم پربھا ' یعنی ' نور ہی نور ' کہا گیا ہے .
کیونکہ وہ خود آپ سے روشن ہے . کوئی دوسرا اسے روشن
نہیں کر سکتا .

اپنشدوں میں یہ بات بار بار اور طرح طرح سے بیان کی
گئی ہے . لکھا ہے—" آتما کو سننے کی اچھا ہوئی'
اس نے کان کی شکل لے لی' دیکھنے کی اچھا ہوئی' اس
نے آنکھ کی شکل لے لی' سونگھنے کی اچھا ہوئی اس نے
ناک کی شکل لے لی ."

एक जगह उपनिषद में लिखा है—"जो यह समझता है कि वह आत्मा को जानता है वह उसे नहीं जानता. और जो समझता है कि वह उसे नहीं जानता वही उसे जानता है. हम नहीं जानते कि हम जानते हैं या नहीं हम अपने को, अपनी आत्मा को जानते हैं और फिर भी हम क्या जानते हैं ? तो क्या हम उसे नहीं जानते ? लेकिन बिला शक हम जानते हैं. हम यह कैसे कह सकते हैं कि हम अपने को नहीं जानते. सच यह है कि अगर हम कुछ भी जानते हैं तो केवल यही जानते हैं कि हम हैं. बिला शक या शुबहा पूरी तरह हम हैं. हम यहां हैं और इस समय हैं."

सूफ़ी कहता है—

ऐ बरतर अज़ ख़यालो क़यासो गुमानो वह्म
वज़ हरचे गुफ़्ता एमो शुनीदेमो ख़्वांदा एम

यानी वह अल्लाह ख़याल से, क़यास से, गुमान से, वहम से, और जो कुछ हम कहते हैं, सुनते हैं या पढ़ते हैं सब से ऊपर है.

वह आलमगीर आत्मा, विश्व आत्मा, रूहे कुल या परम आत्मा सचमुच अद्वितीय यानी लासानी है. उस जैसा कोई नहीं. बल्कि उसके सिवा, मासिवा अल्लाह, ग़ैर अज़ ख़ुदा, आत्मनः इतर, ब्रह्मनः अन्यत् कुछ है ही नहीं. सब एक दूसरे के विरुद्ध दिखाई देने वाली चीज़ें उसी में हैं. वह मजमूअ-ए-ज़िद्दैन है, वह 'सर्व विरुद्ध धर्माश्रय' है.

पारसी गाथा में लिखा है—"अहुरमज़्द के सिवा कोई दूसरा नहीं."

गीता में भगवान ने कहा है—"ऐ अर्जुन ! मैं ही आत्मा हूं. मैं सब जानदारों के अन्दर की जान हूँ. मैं ही सब का शुरू हूं, सब का बीच हूं और मैं ही सब का आख़िर हूँ."

क़ुरान कहता है—"हुवल् अव्वल हुवल् आख़िर हुवज़् ज़ाहिर हुवल् बातिन, हुवा बिकुल्ले शैइन अलीम." यानी वही अव्वल है, वही आख़िर है, वही ज़ाहिर है. वही बातिन (गुप्त) है और वही सब चीज़ों का जानने वाला है.

इंजील में भी ठीक यही बात इन्हीं लफ़्ज़ों में कही गई है. लिखा है—"मैं ही शुरू हूँ और मैं ही आख़िर हूँ...मेरे सिवा कोई नहीं.. मैं ही 'अलिफ़' हूँ और मैं ही 'ये'...... मैं वह रोशनी हूं जो हर आदमी को रोशन करती है, मैं न हूं तो तुम कुछ नहीं कर सकते."

पारसी किताब में लिखा है—"पहले और पीछे वही अहुरमज़्द है और कोई नहीं है ......उसने ही हम सबको रूप दिया है......अहुरमज़्द ही शुरू है, वही आख़िर है."

ایک جگہ اپنشد میں لکھا ہے—"جو یہ سمجھتا ہے کہ وہ آتما کو جانتا ہے وہ اسے نہیں جانتا . اور جو سمجھتا ہے کہ وہ اسے نہیں جانتا وہی اسے جانتا ہے . ہم نہیں جانتے کہ ہم جانتے ہیں یا نہیں. ہم اپنے کو' اپنی آتما کو جانتے ہیں اور پھر بھی ہم کیا جانتے ہیں ؟ تو کیا ہم اسے نہیں جانتے ؟ لیکن بلا شک ہم جانتے ہیں . ہم یہ کیسے کہہ سکتے ہیں کہ ہم اپنے کو نہیں جانتے . سچ یہ ہے کہ اگر ہم کچھ بھی جانتے ہیں تو کیول یہی جانتے ہیں کہ ہم ہیں . بلا شک یا شبہ پوری طرح ہم ہیں. ہم یہاں ہیں اور اس سمے ہیں ."

صوفی کہتا ہے—

اے برتر از خیال و قیاس و گمان و وہم
وز ہر چہ گفتہ ایم و شنیدیم وخواندہ ایم

یعنی وہ اللہ خیال سے' قیاس سے' گمان سے' وہم سے اور جو کچھ ہم کہتے ہیں' سنتے ہیں یا پڑھتے ہیں سب سے اوپر ہے .

وہ عالمگیر آتما' وشو آتما' روح کل یا پرم آتما سچ مچ ادوتیہ یعنی لاثانی ہے. اس جیسا کوئی نہیں. بلکہ اسکے سوا' ماسوا اللہ' غیر از خدا' آتمن اتر' برہمنہ انیت کچھ ہے ہی نہیں . سب ایک دوسرے کے ورودھ دکھائی دینے والی چیزیں اسی میں ہیں . وہ مجموعۂ ضدین ہے' وہ 'سرو ورودھ دھرم آشریہ' ہے .

پارسی گاتھا میں لکھا ہے—"اہرمزد کے سوا کوئی دوسرا نہیں ."

گیتا میں بھگوان نے کہا ہے—" اے ارجن ' میں ہی آتما ہوں . میں سب جانداروں کے اندر کی جان ہوں. میں ہی سب کا شروع ہوں ' سب کا بیچ ہوں اور میں ہی سب کا آخیر ہوں .

قرآن کہتا ہے—" ھوالاول ھوالآخر ھوالظاہر ھوالباطن' وھوا بکل شیئی علیم ' یعنی وہی اول ہے' وہی آخر ہے' وہی ظاہر ہے' وہی باطن (گپت) ہے اور وہی سب چیزوں کا جاننے والا ہے .

انجیل میں بھی ٹھیک یہی بات انہیں لفظوں میں کہی گئی ہے . لکھا ہے—" میں ہی شروع ہوں اور میں ہی آخیر ہوں..........میرے سوا کوئی نہیں ....میں ہی 'الف' ہوں اور میں ہی 'ی'......... میں وہ روشنی ہیں جو ہر آدمی کو روشن کرتی ہے' میں نہ ہوں تو تم کچھ نہیں کر سکتے ."

پارسی کتاب میں لکھا ہے—" پہلے اور پیچھے وہی اہرمزد ہے اور کوئی نہیں ہے . ...اس نے ہی ہم سب کو روپ دیا ہے............. .....اہرمزد ہی شروع ہے' وہی آخیر ہے ."

वही 'अहद' है. उसकी बाबत न 'है' कहा जा सकता है न 'नहीं'. वह 'ज़ाते मुतलक़' है. 'निरगुन' और 'निरविशेश' है.

बौद्ध धर्म की किताबों 'असंग' और 'मध्यमिका कारिका' में लिखा है:—

"वह न नहीं है और न है. न वह इस तरह है और न किसी और तरह. वह न पैदा होता है, न बढ़ता है न घटता है और न मरता है. उस पर कोई धब्बा नहीं जो लगाया जा सके. वह सदा पाक है—यही निशानी है उसकी जिसकी कोई निशानी नहीं. वह सब के ऊपर है. उसे छिपाया नहीं जा सकता. न उसे ज़ाहिर किया जा सकता है. वह मर नहीं सकता. वह पैदा नहीं हो सकता. न उसे ख़तम किया जा सकता है. वह कोई एक चीज़ नहीं है. न वह बहुत सी चीज़ें है. न वह आता है, न जाता है. न उसका वजूद है न ग़ैर वजूद है. न दोनों बातें हैं न वह दोनों से अलग है! यह अजीबो ग़रीब राज़ इन चारों हालतों से ऊपर, यही हक़ है. यही सच है. जो लोग (महात्मा बुद्ध के बताए हुए) बीच के रास्ते से चलते हैं, वही इस हक़ीक़त को जान सकते और बता सकते हैं."

जैनियों की किताब 'स्याद वाद' में कहा गया है:—

"शायद वह है, शायद वह नहीं है. शायद है भी और नहीं भी है. शायद उसे बयान किया जा सकता है शायद नहीं बयान किया जा सकता. शायद दोनों बातें हैं. शायद दोनों बातें हैं."

उपनिषद् में आता है :—

"वह चलता है, वह नहीं चलता. वह सब से दूर है. वह सब से नज़दीक है. वह सबके अन्दर है, वह सब के बाहर है."

चीन के 'ताओ' धर्म की किताब 'ताओ तेह किंग' में लिखा है :—

"वह अकेला खड़ा है और उसमें कोई तबदीली नहीं होती. वह घट घट में घूमता है और फिर भी वह सदा एक हालत में रहता है. उसे दुनिया की माँ कहा जा सकता है."

जैन किताब में लिखा है :—

"मैं उस निरंजन को नमस्कार करता हूं जो अनेक में एक है और एक में अनेक. और जो न एक है न अनेक." (भूधर) ?

शेख़ सादी ने गुलिस्तां में लिखा है :—

"ऐ तू, जिसकी कहीं कोई जगह नहीं है, फिर भी मैं हैरान हूं कि तू हर जगह है. तू हमेशा इस जहान में ज़ाहिर होता रहता है लेकिन फिर भी मेरी आँखें तुझे नहीं देख पातीं."

وہی 'احد' ہے۔ اسکی بابت نہ 'ہے' کہا جا سکتا ہے نہ 'نہیں'۔ وہ 'ذاتِ مطلق' ہے۔ 'نرگن' اور 'نروشیش' ہے۔

بودھ دھرم کی کتابوں 'اسنگ' اور 'مدھیمکاکارکا' میں لکھا ہے:—

"وہ نہ نہیں ہے اور نہ ہے۔ نہ وہ اسطرح ہے اور نہ کسی اور طرح۔ وہ نہ پیدا ہوتا ہے، نہ بڑھتا ہے نہ گھٹتا ہے اور نہ مرتا ہے۔ اس پر کوئی دھبہ نہیں جو لگایا جا سکے۔ وہ سدا پاک ہے—یہی نشانی ہے اسکی جسکی کوئی نشانی نہیں۔ وہ سب کے اوپر ہے۔ اسے چھپایا نہیں جا سکتا۔ نہ اسے ظاہر کیا جاسکتا ہے۔ وہ مر نہیں سکتا۔ وہ پیدا نہیں ہو سکتا۔ نہ اسے ختم کیا جا سکتا ہے۔ وہ کوئی ایک چیز نہیں ہے۔ نہ وہ بہت سی چیزیں ہے۔ نہ وہ آتا ہے، نہ جاتا ہے۔ نہ اسکا وجود ہے نہ غیر وجود ہے۔ نہ دونوں باتیں ہیں نہ وہ دونوں سے الگ ہے! یہ عجیب وغریب راز ان چاروں حالتوں سے اوپر، یہی حق ہے۔ یہی سچ ہے۔ جو لوگ (مہاتما بدھ کے بتائے ہوئے) بیچ کے راستے سے چلتے ہیں، وہی اس حقیقت کو جان سکتے اور بتا سکتے ہیں۔"

جینیوں کی کتاب 'سیادواد' میں کہا گیا ہے :—

"شاید وہ ہے، شاید وہ نہیں ہے۔ شاید ہے بھی اور نہیں بھی ہے۔ شاید اسے بیان کیا جا سکتا ہے شاید نہیں بیان کیا جا سکتا۔ شاید دونوں باتیں ہیں۔ شاید دونوں باتیں ہیں۔"

اپنشد میں آتا ہے:—

"وہ چلتا ہے، وہ نہیں چلتا۔ وہ سب سے دور ہے، وہ سب سے نزدیک ہے۔ وہ سب کے اندر ہے، وہ سب کے باہر ہے۔"

چین کے 'تاؤ' دھرم کی کتاب 'تاؤ تہ کنگ' میں لکھا ہے:—

"وہ اکیلا کھڑا ہے اور اس میں کوئی تبدیلی نہیں ہوتی۔ وہ گھٹ گھٹ میں گھومتا ہے اور پھر بھی وہ سدا ایک حالت میں رہتا ہے۔ اسے دنیا کی ماں کہا جا سکتا ہے۔"

جینی کتاب میں لکھا ہے :—

"میں اس نرنجن کو نمسکار کرتا ہوں جو انیک میں ایک ہے اور ایک میں انیک۔ اور جو نہ ایک ہے نہ انیک" (بھودھر) ؟

شیخ سعدی نے گلستاں میں لکھا ہے :—

"اے تو، جسکی کہیں کوئی جگہ نہیں ہے، پھر بھی میں حیران ہوں کہ تو ہر جگہ ہے۔ تو ہمیشہ اس جہان میں ظاہر ہوتا رہتا ہے لیکن پھر بھی میری آنکھیں تجھے نہیں دیکھ پاتیں۔"

ताओ धर्म की किताब में लिखा है:—

"ताओ का न कोई शुरू है और न आखिर. ताओ कानों से नहीं सुना जा सकता. जो सुना जा सकता है वह ताओ नहीं है. ताओ दिखाई नहीं दे सकता. जो देखा जा सकता है वह ताओ नहीं है. ताओ को शब्दों में ज़ाहिर नहीं किया जा सकता. जो शब्दों में ज़ाहिर किया जा सकता है वह ताओ नहीं है. उसका कोई रूप नहीं. फिर भी वह हर रूप को रूप देता है. उसका कोई नाम नहीं. फिर भी वह सब नामों से पुकारा जा सकता है."

गुरु गोविन्द सिंह ने कहा है:—

चक्र, चिन्ह, अरु बरन जाति
अरु पाति नहि न जिहु
रूप, रंग अरु रेखा, भेखा
कोई कहि न सकत जिहु
अचल मूर्ति, अनुभव प्रकाशा
अमृत ओज कहि जै
कोटि इन्द्र इन्द्रान
शाह शाहान गनिजै
त्रिभुवन महीप, सुर, नर, असुर
नेति नेति बन त्रन कहत
तव सर्व नाम कित्थइ कवन
कर्म नाम बरनत सुमत
एक मूर्ति अनेक दर्शन
कीन रूप अनेक
खेल खेल अखेल खेलन
अन्त को फिर एक

यानी ऐ तू जिसकी न कोई अलामत है न निशानी, न कोई रंग है न कोई जात पात. न कोई रूप है न कोई सूरत, न लिबास. न कोई जिसे बयान कर सकता है. जो अचल है, जो रूह के अन्दर अनुभव से ही जाना जा सकता है. जिसे अमृत यानी आबे हयात का चश्मा कहा जा सकता है. जो करोड़ों इन्द्रों का इन्द्र और बादशाहों का बादशाह है. जो तीनों दुनियाओं का राजा है, जिसे देवता, आदमी, असुर और फूल, पत्ते तक कहते हैं कि 'वह यह भी नहीं है' 'वह वह भी नहीं है.' तेरे नाम और काम कौन बयान कर सकता है? सब नाम तेरे नाम हैं. सब काम तेरे काम हैं. तू एक है, तेरे दर्शन अनेक हैं. तूने अनेक रूप धारन कर रक्खे हैं. तू तरह तरह के खेल खेलता है और आखिर में फिर अकेला एक है.

वेदान्त की किताबों में आत्मा या ईश्वर को "अनिर्वचनीयम" कहा गया है. यानी वह जिसे किसी तरह वचन से बयान नहीं किया जा सकता.

تاؤ دھرم کی کتاب میں لکھا ہے :—

'' تاؤ کا نہ کوئی شروع ہے اور نہ آخیر . تاؤ کانوں سے نہیں سنا جا سکتا . جو سنا جا سکتا ہے وہ تاؤ نہیں ہے. تاؤ دکھائی نہیں دے سکتا. جو دیکھا جا سکتا ہے وہ تاؤ نہیں ہے. تاؤ کو شبدوں میں ظاہر نہیں کیا جا سکتا . جو شبدوں میں ظاہر کیا جا سکتا ہے وہ تاؤ نہیں ہے . اُس کا کوئی روپ نہیں . پھر بھی وہ ہر روپ کو روپ دیتا ہے . اُسکا کوئی نام نہیں . پھر بھی وہ سب ناموں سے پکارا جا سکتا ہے .''

گرو گوبند سنگھ نے کہا ہے :—

چکر، چنھ، اَرو برن جاتی
اَرو پاتی نہیں نہ جیہو
روپ، رنگ اَرو ریکھا، بھیکھا
کوئی کہی نہ سکت جیہو
اچل مورتی، انوبھو پرکاش
امرت اوج کہی جے
کوٹی اندر اندران
شاہ شاہان گنیجے
تربھوون مہیپ سور، نر، اسر
نیتی نیتی بن ترن کہت
تو سرو نام کتھئی کون
کرم نام ورنت سمت
ایک مورتی انیک درشن
کین روپ انیک
کھیل کھیل اکھیل کھیلن
انت کو پھر ایک .

یعنی اے تو جس کی نہ کوئی علامت ہے نہ نشانی، نہ کوئی رنگ ہے نہ کوئی جات پات. نہ کوئی روپ ہے نہ کوئی صورت، نہ لباس . نہ کوئی جسے بیان کر سکتا ہے . جو اچل ہے، جو روح کے اندر انوبھو سے ہی جانا جا سکتا ہے . جسے امرت یعنی آبِ حیات کا چشمہ کہا جا سکتا ہے . جو کروڑوں اندروں کا اندر اور بادشاہوں کا بادشاہ ہے . جو تینوں دنیاؤں کا راجا ہے، جسے دیوتا، آدمی، اسور اور پھول، پتے تک کہتے ہیں کہ 'وہ یہ بھی نہیں ہے' 'وہ یہ بھی نہیں ہے.' تیرے نام اور کام کون بیان کر سکتا ہے ؟ سب نام تیرے نام ہیں . سب کام تیرے کام ہیں. تو ایک ہے، تیرے درشن انیک ہیں . تو نے انیک روپ دھارن کر رکھے ہیں . تو طرح طرح کے کھیل کھیلتا ہے اور آخیر میں پھر اکیلا ایک ہے .

ویدانت کی کتابوں میں آتما یا ایشور کو '' انروچنیم '' کہا گیا ہے . یعنی وہ جسے کسی طرح زبان سے بیان نہیں کیا جا سکتا .

वह आत्मा, वह सब जानों की हक़ीक़त, वह हक़ीक़ी 'मैं' वह क्या चीज़ है जिसे कोई बयान नहीं कर सकता. दर असल वह आत्मा ही यानी सब जानों की हक़ीक़त ही वह चीज़ है जिसे बयान कर सकना नामुमकिन है. वह सब चीज़ों को साबित करती है, इसे कोई साबित नहीं कर सकता. किसी ने इसे पैदा होते या मरते नहीं देखा. जिस्म पैदा होते और मरते देखे जाते हैं, इस हक़ीक़त को पैदा होते या मरते अगर कोई देख सकता होता तो वह ख़ुद ही देख सकती थी. पर ख़ुद अपने को पैदा होते या मरते कैसे देखा जा सकता है. दूसरे का 'मैं' मेरा 'मैं' कैसे हो सकता है. वह मेरे 'मैं' को कैसे जान सकता है. ज़ाहिर है ख़ुद अपने शुरू या अपने ख़ातमे को जान सकना नामुमकिन है. हक़ीक़त यह है कि हक़ीक़त एक है, जान एक है, उसमें कोई शुरू या आख़िर नहीं. उसमें कोई यहां या वहां नहीं. उसके कोई टुकड़े या हिस्से नहीं, कोई मैं या तू नहीं. यह जुदाई का ख़याल, यह अपने और पराए का ख़याल, अलग अलग जानों का ख़याल, यही तफ़रक़ा है, यही भेद है, यही जाल है, यही माया है. ठीक उसी तरह जिस तरह समन्दर के अन्दर अनगिनत बुलबुलों, झागों और लहरों का दिखाई देना महज़ एक धोखा है. समन्दर एक है और वह सब भी एक हैं. ग़ैरियत कहीं है ही नहीं. हूं तो सिर्फ़ मैं हूं, दूसरा कोई नहीं. इन तमाम माद्दी जिस्मों के अन्दर एक ही जान काम कर रही है. उसके ज़हूर के ढंग, ज़हूर के दरजे, ज़हूर की क़िस्में अलग अलग और अनगिनत हैं सूरतें बहुत हैं हक़ीक़त एक. कभी वह सोता दिखाई देता है, कभी जागता. कभी एक शक्ल उतार फेंकता है, कहीं दूसरी शक्ल अख़्तियार करता है. उसका अपना शुरू या आख़िर कहीं नहीं. उसका छोर और ओर नहीं. न यहाँ, न वहां. न जब न तब. चन्द घड़ियाँ पहले या करोड़ों साल आगे पीछे उसका कहीं कोई सिरा नहीं. वह इधर भी बे अन्त है और उधर भी बे अन्त. सारी जगह उसके अन्दर है, सारा वक़्त और ज़माना उसके अन्दर समाया हुआ है. वह जगह और वक़्त दोनों को पार किये हुए है. सचमुच वह असल हक़ीक़त नाक़ाबिले बयान है वही आत्मा है, वही परमात्मा, अल्लाह, ईश्वर है.

इसी को 'हस्तिये मुतलक़' यानी 'सत्ता सामन्य' कहा गया है. यही 'जिन्सी आला' यानी 'परा जाति' है. विचार के एक सिरे पर वह है और दूसरे सिरे पर ऐटम, ज़र्रे, एलेक्ट्रोन, प्रोटोन, अणु, परमाणु हैं. इस फ़रक़ को 'तशख़ीसी अदना' यानी 'परविशेष' कहते हैं. लेकिन देश में या काल में, ज़मीन में या ज़मान में न कोई ऐसी छोटी से छोटी चीज़ मिल सकती है जिसके फिर टुकड़े न हो सकें और न कोई ऐसी बड़ी से बड़ी मिल सकती है जिस से

یہ آتما' یہ سب جانوں کی حقیقت' یہ حقیقی 'میں' یہ کیا چیز ہے جسے کوئی بیان نہیں کرسکتا. در اصل یہ آتما ہی یعنی سب جانوں کی حقیقت ہی وہ چیز ہے جسے بیان کر سکنا ناممکن ہے. یہ سب چیزوں کو ثابت کرتی ہے' اسے کوئی ثابت نہیں کرسکتا. کسی نے اسے پیدا ہوتے یا مرتے نہیں دیکھا. جسم پیدا ہوتے اور مرتے دیکھے جاتے ہیں' اس حقیقت کو پیدا ہوتے یا مرتے اگر کوئی دیکھ سکتا ہوتا تو یہ خود ہی دیکھ سکتی تھی. پر خود اپنے کو پیدا ہوتے یا مرتے کیسے دیکھا جاسکتا ہے. دوسرے کا 'میں' میرا 'میں' کیسے ہو سکتا ہے. وہ میرے 'میں' کو کیسے جان سکتا ہے. ظاہر ہے خود اپنے شروع یا اپنے خاتمے کو جان سکنا ناممکن ہے. حقیقت یہ ہے کہ حقیقت ایک ہے' جان ایک ہے' اس میں کوئی شروع یا آخر نہیں. اس میں کوئی یہاں یا وہاں نہیں. اسکے کوئی ٹکڑے یا حصے نہیں' کوئی میں یا تو نہیں. یہ جدائی کا خیال' یہ اپنے اور پرائے کا خیال' الگ الگ جانوں کا خیال' یہی تفرقہ ہے' یہی بھید ہے' یہی جال ہے' یہی مایا ہے. ٹھیک اسی طرح جس طرح سمندر کے اندر ان گنت بلبلوں' جھاگوں اور لہروں کا دکھائی دینا محض ایک دھوکا ہے. سمندر ایک ہے اور وہ سب بھی ایک ہیں. غیریت کہیں ہے ہی نہیں. ہوں تو صرف میں ہوں' دوسرا کوئی نہیں. ان تمام مادی جسموں کے اندر ایک ہی جان کام کر رہی ہے. اسکے ظہور کے ڈھنگ' ظہور کے درجے' ظہور کی قسمیں الگ الگ اور ان گنت ہیں. صورتیں بہت ہیں حقیقت ایک. کبھی وہ سوتا دکھائی دیتا ہے' کبھی جاگتا. کبھی ایک شکل اتار پھینکتا ہے' کہیں دوسری شکل اختیار کرتا ہے. اسکا اپنا شروع یا آخر کہیں نہیں. اسکا کہیں اور چھور نہیں. نہ یہاں' نہ وہاں. نہ جب نہ تب. چند گھڑیاں پہلے یا کروڑوں سال آگے پیچھے اسکا کہیں کوئی سرا نہیں. وہ اِدھر بھی بےانت ہے اور اُدھر بھی بےانت. ساری جگہ اسکے اندر ہے' سارا وقت اور زمانہ اسکے اندر سمایا ہوا ہے. وہ جگہ اور وقت دونوں کو پار کئے ہوئے ہے. سچ مچ وہ اصل حقیقت ناقابل بیان ہے یہی آتما ہے' یہی پرماتما' اللہ' ایشور ہے.

اسی کو 'ہستی مطلق' یعنی 'ستا سامانیہ' کہا گیا ہے. یہی 'جنس اعلیٰ' یعنی 'پرا جاتی' ہے. وچار کے ایک سرے پر یہ ہے' اور دوسرے سرے پر ایٹم' ذرے' الیکٹرون' پروٹون' انو' پرمانو ہیں. اس فرق کو تشخیص ادنیٰ یعنی 'پرویشیش' کہتے ہیں. لیکن دیش میں یا کال میں' زمین میں یا زمان میں نہ کوئی ایسی چھوٹی سے چھوٹی چیز مل سکتی ہے جسکے پھر ٹکڑے نہ ہوسکیں اور نہ کوئی ایسی بڑی سے بڑی مل سکتی ہے جس سے

बड़ी का फिर सवाल न किया जा सके. इसलिये वह छोटी और बड़ी दोनों एक हैं. 'मैं' ही 'यह' हूं और 'मैं' ही 'वह'. 'है' का सबूत सिर्फ़ 'हूँ' ही है. मैं हर जगह हूँ, हर वक़्त हूँ. 'हूं' 'है' का सबूत 'है' 'हूं' का नहीं. सिर्फ़ एक ही ऐसा वजूद है जिसकी बाबत हमें कोई शक नहीं हो सकता. वहाँ शक का इमकान ही नहीं. और वह वजूद मेरा वजूद है. बाक़ी सब चीज़ों का वजूद उतना ही है जितना मैं उन्हें हूं. किसी भी अलाहदा वजूद का क्या सबूत हो सकता है सिवाय मेरे 'हूँ' के. इस 'हूँ' के कोई टुकड़े हो ही नहीं सकते. इसका ग़ैर कोई है ही नहीं. जिसे यह देखे या समझे वही इसके अन्दर समाया हुआ है. इसके 'अब' 'यहां' और 'इस तरह' में ही 'सब जगह' 'सब कभी' और 'सब तरह' समाए हुए हैं. मैं इन सबको घेरे हुए हूँ.

सूफ़ी कहता है—

> चूँ हक़ीक़त रा मुजव्विज़ हम तुई
> ऐन हक़, ईन स्त ऐनुल हक़ तुई

यानी चूँकि तू ही हक़ीक़त को समझने वाला है इसलिये असल हक़ीक़त यही है कि तूही हक़ यानी असलियत है.

क़ुरान कहता है—

"अल्लाह का वजूद, उसका इल्म सब चीज़ों को घेरे हुए है. सब चीज़ें और सब जानदार उसके अन्दर समाए हुए हैं. सब में वही है. तुम जहाँ कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ है."

उपनिशद् कहता है—"वह छोटे से भी छोटा और बड़े से भी बड़ा है."

एक दूसरी जगह उपनिशद् का कहना है—

"यह आत्मा यानी मेरा आत्मा वही सब कामों का करने वाला है. सब इच्छाएँ, सब ख़ुशबूएँ, सब रस यानी ज़ायक़े, सब आना जाना, सब प्रेम लगाव इसी के अन्दर हैं. इसके सब तरफ़ मुँह हैं, सब तरफ़ हाथ, सब तरफ़ पैर, सब तरफ़ सर, सब तरफ़ गरदनें, सब तरफ़ आँखें और सब तरफ़ कान. वही सब जानता है, सब सुनता है, सब जानदारों के अन्दर है, सबको बनाता है, सब में रमा हुआ है, सबको क़ायम किये हुए, सबको ख़तम करने वाला है. सबकी जान इसी की जान से है. यह जान ही जान है. यह बेअन्त है, यह सबको संभाले है, सबकी मौत इसका सोना है. जो कोई जो कुछ भी जानता है वह वही जानता है. यानी जो कुछ जानता हूं मैं ही जानता हूं. एक ही तो आत्मा है सबके अन्दर, सबसे अलग, सब का ईश्वर, सब में मिला. वही एक सब है. वही मैं हूं."

بڑی کا پھر سوال نہ کیا جاسکے . اسلئے یہ چھوٹی اور بڑی دونوں ایک ھیں . 'میں' ھی 'یہ' ھوں اور 'میں' ھی 'وہ' 'ھے' کا ثبوت صرف 'ھوں' ھی ہے . میں ھر جگہ ھوں' ھر وقت ھوں . 'ھوں' 'ھے' کا ثبوت ھے 'ھے' 'ھوں' کا نہیں . صرف ایک ھی ایسا وجود ھے جسکی بابت ھمیں کوئی شک نہیں ھوسکتا . جہاں شک کا امکان ھی نہیں . اور وہ وجود میرا وجود ہے باقی سب چیزوں کا وجود اتنا ھی ھے جتنا میں انہیں ھوں. کسی بھی علیحدہ وجود کا کیا ثبوت ھوسکتا ہے سوائے میرے 'ھوں' کے . اس 'ھوں' کے کوئی ٹکڑے ھو ھی نہیں سکتے . اسکا غیر کوئی ھے ھی نہیں . جسے یہ دیکھے یا سمجھے وھی اسکے اندر سمایا ھوا ھے . اسکے 'اب' 'یہاں' اور 'اسطرح' میں ھی 'سب جگہ' 'سب کبھی' اور 'سب طرح' سمائے ھوئے ھیں میں ان سبکو گھیرے ھوئے ھوں .

صوفی کہتا ھے—

> چوں حقیقت را مجوز ھم توئی
> عین حق، ایں است عین الحق توئی

یعنی چونکہ تو ھی حقیقت کو سمجھنے والا ھے اس لئے اصل حقیقت یہی ھے کہ تو ھی حق یعنی اصلیت ہے .

قرآن کہتا ھے—

"اللہ کا وجود' اس کا علم سب چیزوں کو گھیرے ھوئے ھے . سب چیزیں اور سب جاندار اسکے اندر سمائے ھوئے ھیں . سب میں وھی ھے . تم جہاں کہیں بھی ھو وہ تمہارے ساتھ ھے ."

اپنشد کہتا ھے—"وہ چھوٹے سے بھی چھوٹا اور بڑے سے بھی بڑا ھے ."

ایک دوسری جگہ اپنشد کا کہنا ھے—

"یہ آتما یعنی میرا آتما یہی سب کاموں کا کرنے والا ھے سب اچھائیں' سب خوشبوئیں' سب رس یعنی ذائقے' سب آنا جانا' سب پریم لگاؤ اسی کے اندر ھیں . اسکے سب طرف منہ ھیں' سب طرف ھاتھ' سب طرف پیر' سب طرف سر' سب طرف گردنیں' سب طرف آنکھیں اور سب طرف کان . یہی سب جانتا ھے' سب سنتا ھے' سب جانداروں کے اندر ھے' سب کو بناتا ھے' سب میں رما ھوا ھے' سبکو قائم کئے ھوئے' سب کو ختم کرنے والا ھے . سبکی جان اسی کی جان سے ھے . یہ جان ھی جان ھے . یہ بےانت ھے . یہ سب کو سنبھالے ھے' سب کی موت اسکا سونا ھے . جو کوئی جو کچھ بھی جانتا ھے' وہ یہی جانتا ھے . یعنی جو کچھ جانتا ھوں میں ھی جانتا ھوں . ایک ھی تو آتما ھے . سب کے اندر' سب سے الگ' سب کا ایشور' سب میں ملا . یہی ایک سب ھے . یہی میں ھوں ."

मैं जब कहता हूँ, मैं इनसान हूँ तब मैं अपने को सब इनसानों के साथ, कुल दो सौ करोड़ इनसानों के साथ एक कर लेता हूँ. जब मैं कहता हूँ मैं हिन्दुस्तानी हूँ तो मेरा आत्मा फ़ौरन सिकुड़ कर 35 करोड़ तक रह जाता है जब मैं कहता हूँ मैं भगवानदास उर्फ़ अब्दुल क़ादिर हूँ तो मेरा आत्मा और भी तेज़ी के साथ सिकुड़ कर मन डेढ़ मन हाड़ मांस के एक ढेर तक महदूद हो जाता है. फिर मैं कहता हूँ मैं एक जानदार हूँ तब फिर मेरा आत्मा यकायक फैल कर सारी दुनिया को अपने अन्दर समा लेता है. क्योंकि दुनिया में कोई ज़र्रा भी बिना जान के नहीं है. कोई ज़र्रा नहीं जिसमें जान, रूह या आत्मा रमा हुआ न हो.

अगर हम तफ़रक़ों के अन्दर भी मेल की बातों को खोजें और मेल के अन्दर एकता को देखें तो हमारा आत्मा किस तरह फैल जाता है, हमारा दिमाग़ कितना वसीअ हो जाता है और दिल कितना बड़ा हो जाता है. साइन्स और फ़लसफ़ा दोनों को तरक़्क़ी करने में इससे कितनी मदद मिलती है. इसके ख़िलाफ़ अगर हम बजाय मेल की बातों के, बजाय उन बातों के जो हमें एक दूसरे के नज़दीक लाती हैं, ऐसी बातों को खोजते रहें जो हम में अलग अलग हैं, जो हमें एक दूसरे से फाड़ती हैं तो हमारी निगाह, हमारा नज़रिया कितना सिकुड़ जाता है, हमारा दिमाग़ कितना छोटा हो जाता है, हमारी हमदर्दी कितनी घट जाती है और सच्चे ज्ञान, सच्ची मारफ़त को समझ सकना हमारे लिये कितना मुश्किल हो जाता है इसकी एक मिसाल नीचे दी जाती है.

एक बहुत बड़े और अच्छे मौलवी दोस्त ने मुझे लिखा कि इसलाम की ज़रूरी बातें यह हैं :—(1) एक अल्लाह को मानना, (2) हज़रत मोहम्मद को उनका ख़ास पैग़म्बर और बाक़ी सब पैग़म्बरों को मानना, (3) क़ुरान को अल्लाह का कलाम मानना, (4) आख़िरत यानी क़यामत के दिन को मानना, (5) अल्लाह को सब चीज़ों का जानने वाला मानना, (6) नमाज़ पढ़ना, (7) रोज़े रखना, (8) ज़कात देना. (9) हज करना, (10) जहाद करना, और (11) तीन त्योहार ईदुलफ़ित्र, ईदुज्जुहा और मोहर्रम मनाना.

इसी तरह के एक बड़े विद्वान पंडित ने मुझे बताया कि हिन्दू धर्म की ज़रूरी बातें यह हैं: (1) एक परमेश्वर को मानना, (2) श्रीकृष्ण को उनका ख़ास अवतार और दूसरे सब अवतारों को मानना, (3) वेद को ईश्वर की बानी मानना, (4) कर्म और पुनर्जन्म के क़ानूनों के मुताबिक़ यमराज के फ़ैसले को मानना, (5) यमराज के मुताबिक़ दफ़्तर चित्रगुप्त की बाबत यह मानना कि

میں جب کہتا ہوں: میں انسان ہوں تب میں اپنے کو سب انسانوں کے ساتھ کل دو سو کروڑ انسانوں کے ساتھ ایک کر لیتا ہوں. جب میں کہتا ہوں میں ہندستانی ہوں تو میرا آتما فوراً سکڑ کر 35 کروڑ تک رہ جاتا ہے. جب میں کہتا ہوں میں بھگوان داس عرف عبدالقادر ہوں تو میرا آتما اور بھی تیزی کے ساتھ سکڑ کر من ڈیڑھ من ہاڑ ماس کے ایک ڈھیر تک محدود ہو جاتا ہے. پھر میں کہتا ہوں میں ایک جاندار ہوں تب پھر میرا آتما یکایک پھیل کر ساری دنیا کو اپنے اندر سما لیتا ہے. کیونکہ دنیا میں کوئی ذرہ بھی بنا جان کے نہیں ہے کوئی ذرہ نہیں جس میں جان، روح یا آتما رما ہوا نہ ہو.

اگر ہم تفرقوں کے اندر بھی میل کی باتوں کو کھوجیں اور میل کے اندر ایکتا کو دیکھیں تو ہمارا آتما کس طرح پھیل جاتا ہے ہمارا دماغ کتنا وسیع ہو جاتا ہے اور دل کتنا بڑا ہو جاتا ہے. سائنس اور فلسفہ دونوں کو ترقی کرنے میں اس سے کتنی مدد ملتی ہے. اس کے خلاف اگر ہم بجائے میل کی باتوں کے، بجائے اُن باتوں کے جو ہمیں ایک دوسرے کے نزدیک لاتی ہیں، ایسی باتوں کو کھوجتے رہیں جو ہم میں الگ الگ ہیں، جو ہمیں ایک دوسرے سے پھاڑتی ہیں تو ہماری نگاہ، ہمارا نظریہ کتنا سکڑ جاتا ہے، ہمارا دماغ کتنا چھوٹا ہو جاتا ہے، ہماری ہمدردی کتنی گھٹ جاتی ہے اور سچے گیان، سچی معرفت کو سمجھ سکنا ہمارے لئے کتنا مشکل ہو جاتا ہے. اس کی ایک مثال نیچے دی جاتی ہے.

ایک بہت بڑے اور اچھے مولوی دوست نے مجھے لکھا کہ اسلام کی ضروری باتیں یہ ہیں :— (1) ایک اللہ کو ماننا، (2) حضرت محمد کو اُن کا خاص پیغمبر اور باقی سب پیغمبروں کو ماننا، (3) قرآن کو اللہ کا کلام ماننا، (4) آخرت یعنی قیامت کے دن کو ماننا، (5) اللہ کو سب چیزوں کا جاننے والا ماننا، (6) نماز پڑھنا، (7) روزے رکھنا، (8) زکوٰۃ دینا، (9) حج کرنا، (10) جہاد کرنا اور (11) تین تیوہار عیدالفطر، عیدالضحیٰ اور محرم منانا.

اسی طرح کے ایک بڑے ودوان پنڈت نے مجھے بتایا کہ ہندو دھرم کی ضروری باتیں یہ ہیں : (1) ایک پرمیشور کو ماننا، (2) شری کرشن کو اُن کا خاص اوتار اور دوسرے سب اوتاروں کو ماننا، (3) وید کو ایشور کی بانی ماننا، (4) کرم اور پنر جنم کے قانونوں کے مطابق یمراج کے فیصلے کو ماننا، (5) یمراج کے مطابق دفتر چترگپت کی بابت یہ ماننا کہ

वह सब की बाबत सब कुछ जानते हैं और सबकी ठीक ठीक मिसलें रखते हैं, (6) संध्या करना, (7) व्रत उपवास करना ख़ास कर एकादशी का व्रत रखना, (8) दान देना, (9) तीर्थ यात्रा करना, (10) धर्म रक्षा करना, (11) कई मौसमी और इतिहासी त्योहार मनाना जैसे होली, निर्जला एकादशी, देव शायनी, श्रावनी, देव उठान, दिवाली, मकर स्नान, राम नवमी, कृष्न अष्टमी वग़ैरा और (12) वर्णाश्रम धर्म को मानना.

इस तरह दीन धर्म की ज़रूरी ज़रूरी बातों के दो सेट हमारे पास तैयार हो गए. उनके अलग अलग मतलब निकालने के भी दो तरीक़े हैं. अगर हम उन्हें फ़रक़ की आंख से देखें, उस आँख से जो ऊपरी रंग रूप में ही फँस जाती है तो सदियों के लिये एक दूसरे से लड़ने और एक दूसरे का सर फोड़ने के लिये मसाला तैयार हो जाता है. लेकिन अगर उन्हीं ज़रूरी चीज़ों को हम मेल की आँख से देखें, उस आँख से देखें जो रंग रूप से नीचे उतर कर असल हक़ीक़त तक जाने की कोशिश करती है तो हमें एक दूसरे से हाथ मिलाने, एक दूसरे को गले लगाने और एक दूसरे के दिलों को शाद और ख़ुश करने के लिये बेअन्त और बुनियादी मसाला मिल जाता है.

चरक में लिखा है—

"अगर हम सब अलग अलग भावों यानी तत्वों के मेल मिलाप की तरफ़ निगाह रक्खें तो इससे सबकी बढ़ोती और तरक़्क़ी होती है. लेकिन अगर हम उनके केवल फ़रक़ों की तरफ़ निगाह रक्खें तो सब सिकुड़ कर तंग और बेकार हो जाते हैं. आदमी के अन्दर यह दोनों झुकाव मौजूद हैं. बुद्धिमान आदमी मेल और एकता की तरफ़ बढ़ता है."

हज़रत मोहम्मद सब अलग अलग मज़हब वालों से कहा करते थे कि "आओ तुम और हम मिलकर उन बातों पर मेल करलें जो हम में और तुम में एक सी हैं"

ऊपर कही हुई ज़रूरी बातों के दोनों अलग अलग सेट अगर हम बुनियादी एकता और मेल की तरफ़ निगाह रखकर बयान करें तो उनका एकपन हमें साफ़ दिखाई दे जाता है. वह यह हैं :—

(1) एक ईश्वर अल्लाह को मानना, (2) सब का भला सोचने और करने वाली उन सब ऊँची और महान आत्माओं को मानना जो अलग अलग क़ौमों में समय समय पर जन्म लेती रही हैं और जिन्हें इनसानी क़ौम के सच्चे प्रेमी और 'हादी' माना जाता है, (3) उन सब पाक किताबों को मानना जिनके अन्दर वह ज्ञान महफ़ूज़ है जो इनसान के लिये सब से मुफ़ीद ज्ञान है, (4) हर

وہ سب کی بابت سب کچھ جانتے ھیں اور سبکی ٹھیک ٹھیک مِسلیں رکھتے ھیں، (6) سادھیا کرنا، (7) برت اپواس کرنا خاص کر ایکادشی کا برت رکھنا، (8) دان دینا، (9) تیرتھ یاترا کرنا، (10) دھرم رکھشا کرنا، (11) کئی موسمی اور اِتہاسی تیوھار منانا جیسے ھولی، نرجلا ایکادشی، دیو شاینی، شراونی، دیو اُٹھان، دیوالی، مکراشنان، رام نومی، کرشن اشٹمی وغیرہ اور (12) ورن آشرم دھرم کو ماننا۔

اسطرح دین دھرم کی ضروری باتوں کے دو سیٹ ھمارے پاس تیار ھوگئے۔ اُنکے الگ الگ مطلب نکالنے کے بھی دو طریقے ھیں۔ اگر ھم اُنھیں فرق کی آنکھ سے دیکھیں، اُس آنکھ سے جو اوپری رنگ روپ میں ھی پھنس جاتی ھے تو صدیوں کے لئے ایک دوسرے سے لڑنے اور ایک دوسرے کا سر پھوڑنے کے لئے مسالہ تیار ھو جاتا ھے۔ لیکن اگر اُنھیں ضروری چیزوں کو ھم میل کی آنکھ سے دیکھیں، اُس آنکھ سے دیکھیں جو رنگ روپ سے نیچے اتر کر اصل حقیقت تک جانے کی کوشش کرتی ھے تو ھمیں ایک دوسرے سے ھاتھ ملانے، ایک دوسرے کو گلے لگانے اور ایک دوسرے کے دلوں کو شاد اور خوش کرنے کے لئے بےانت اور بنیادی مسالہ مل جاتا ھے۔

چرک میں لکھا ھے—

"اگر ھم سب الگ الگ بھاووں یعنی تتوں کے میل ملاپ کی طرف نگاہ رکھیں تو اِس سے سب کی بڑھوتی اور ترقی ھوتی ھے۔ لیکن اگر ھم اُن کے کیول فرقوں کی طرف نگاہ رکھیں تو سب سکڑ کر تنگ اور بیکار ھو جاتے ھیں۔ آدمی کے اندر یہ دونوں جھکاؤ موجود ھیں۔ بدھی مان آدمی میل اور ایکتا کی طرف بڑھتا ھے۔"

حضرت محمد سب الگ الگ مذھب والوں سے کہا کرتے تھے کہ "آؤ تم اور ھم مل کر اُن چیزوں پر میل کرلیں جو ھم میں اور تم میں ایک سی ھیں۔"

اوپر کہی ھوئی ضروری باتوں کے دونوں الگ الگ سیٹ اگر ھم بنیادی ایکتا اور میل کی طرف نگاہ رکھکر بیان کریں تو اُن کا ایک پن ھمیں صاف دکھائی دے جاتا ھے۔ وہ یہ ھیں :—

(1) ایک ایشور اللہ کو ماننا، (2) سب کا بھلا سوچنے اور کرنے والی اُن سب اونچی اور مہان آتماؤں کو ماننا جو الگ الگ قوموں میں سمے سمے پر جنم لیتی رھی ھیں اور جنھیں انسانی قوم کے سچے پریمی اور ھادی مانا جاتا ھے، (3) اُن سب پاک کتابوں کو ماننا جن کے اندر وہ گیان محفوظ ھے جو انسان کے لئے سب سے مفید گیان ھے، (4) ھر

काम के सबब और नतीजे, अमल और रद्दे अमल के इस क़ानून को मानना जिसके अनुसार पाप की सज़ा और नेकी का इनाम मिले बग़ैर नहीं रह सकता चाहे वक़्त कितना ही लगे और इस दुनिया में मिले या दूसरी दुनिया में, (5) उस ईश्वर अल्लाह को सब चीज़ों का जानने वाला और बिना रिआयत सब के साथ इनसाफ़ करने वाला मानना, (6) दुआ मांगते रहना, (7) अपनी इन्द्रियों और ख़ासकर ज़बान को क़ाबू में रखना, (8) ठीक ठीक दान देना, (9) उस ईश्वर अल्लाह की क़ुदरत के सब ख़ास ख़ास ज़हूरों और स्थानों की अदब और भक्ति के साथ सैर यात्रा करना, (10) नेकी और भलाई की बढ़ती और बुराई से रक्षा करना, (11) एक दूसरे के साथ हमदर्दी और मुहब्बत दिखाने और बढ़ाने के लिये मिलकर ख़ुशी और रंज, त्योहार और मेले ठेले मनाना और उनमें मेल ही की ग़रज़ से अपने अपने ऊपर ज़रूरी रोक थाम रखना और (12) एक इस तरह का समझदारी का समाजी संगठन क़ायम करना जिसमें सब को ठीक ठीक और अपने अपने लिये मुनासिब काम मिल सके, सबको रोज़ी मिल सके और सब को ज़िन्दगी की ज़रूरतें और ऐश आराम की चीज़ें मिल सकें. इसमें अलग अलग आदमियों की अलग अलग तबीयतों का और क़ाबलियतों का ध्यान रखना ज़रूरी है. हमें यह भी याद रखना चाहिये कि 'यम' और 'अलक़ाबिज़' दोनों के एक ही मानी हैं, 'चित्र गुप्त' और 'अलमोहसी' दोनों के एक ही मानी हैं. जो यहाँ 'चित्र' का मतलब है वही 'लौहेमहफ़ूज़' के मानी हैं. उस ईश्वर अल्लाह, परमेश्वर के हाफ़िज़े में सचमुच पिछले अगले और हाल तीनों ज़मानों की सब बातें और सब चीज़ें महफ़ूज़ हैं.

हमारे अन्दर एक दूसरे से अलहदगी, ख़ुदी, ग़ैरियत, मैं मैं हूँ और तुम तुम हो, का ख़याल इतना मज़बूत है, हमारे अलग अलग जिस्मों की वजह से पैदा हुई यह भेद बुद्धि इतनी बलवान है कि पहले पहल इन सब जिस्मों के अन्दर रमी हुई एक जान और एक हक़ीक़त को देख सकना, समझ सकना और महसूस कर सकना बहुत मुश्किल मालूम होता है. लेकिन हक़ीक़त में सब मज़हबों की, सब दीन धर्म की यही जान और यही बुनियाद है. इस तरह की मुश्किल बातें सब इल्मों और सब साइंसों में मिलती हैं. उस तरफ़ ध्यान देने, सोचने और मन को लगाने से यह मुश्किल धीरे धीरे हल हो जाती है.

मिसालों से कभी कभी समझने में बहुत आसानी होती है. मेरे हाथों और पैरों की उंगलियाँ, मेरे हाथ पैर, आँख नाक और वह करोड़ों अनु, 'सेलज़' या ज़िन्दा ज़र्रे जिन से मैं यानी मेरा जिस्म बना हुआ है सब एक दूसरे से अलग हैं और सब अपनी अपनी जगह आज़ाद हैं.

کرم کے سبب اور نتیجے' عمل اور رد عمل کے اس قانون کو ماننا جس کے انوسار پاپ کی سزا اور نیکی کا انعام ملے بغیر نہیں رہ سکتا چاہے وقت کتنا ہی لگے اور اس دنیا میں ملے یا دوسری دنیا میں' (5) اس ایشور اللہ کو سب چیزوں کا جاننے والا اور بنا رعایت سب کے ساتھ انصاف کرنے والا ماننا' (6) دعا مانگتے رہنا' (7) اپنی اندریوں اور خاص کر زبان کو قابو میں رکھنا' (8) ٹھیک ٹھیک دان دینا' (9) اس ایشور اللہ کی قدرت کے سب خاص خاص ظہوروں اور استھانوں کی ادب اور بھکتی کے ساتھ سیر یاترا کرنا' (10) نیکی اور بھلائی کی بڑھتی اور برائی سے رکشا کرنا' (11) ایک دوسرے کے ساتھ ہمدردی اور محبت دکھانے اور بڑھانے کے لئے ملکر خوشی اور رنج' تیوہار اور میلے ٹھیلے منانا اور ان میں میل ہی کی غرض سے اپنے اپنے اوپر ضروری روک تھام رکھنا اور (12) ایک اس طرح کا سمجھداری کا سماجی سنگھٹن قائم کرنا جس میں سبکو ٹھیک ٹھیک اور اپنے اپنے لئے مناسب کام مل سکے' سب کو روزی مل سکے اور سب کو زندگی کی ضرورتیں اور عیش آرام کی چیزیں مل سکیں. اس میں الگ الگ آدمیوں کی الگ الگ طبیعتوں کا اور قابلیتوں کا دھیان رکھنا ضروری ہے. ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ 'یم' اور 'القابض' دونوں کے ایک ہی معنی ہیں 'چتر گپت' اور 'المحصی' دونوں کے ایک ہی معنی ہیں. جو یہاں 'چتر' کا مطلب ہے وہی 'لوح محفوظ' کے معنی ہیں اس ایشور اللہ' پرمیشور کے حافظے میں سچ مچ پچھلے' اگلے اور حال تینوں زمانوں کی سب باتیں اور سب چیزیں محفوظ ہیں.

ہمارے اندر ایک دوسرے سے علیحدگی' خودی' غیریت' میں میں ہوں اور تم تم ہو' کا خیال اتنا مضبوط ہے' ہمارے الگ الگ جسموں کی وجہ سے پیدا ہوئی یہ بھید بدھی اتنی بلوان ہے کہ پہلے پہل ان سب جسموں کے اندر رمی ہوئی ایک جان اور ایک حقیقت کو دیکھ سکنا' سمجھ سکنا اور محسوس کر سکنا بہت مشکل معلوم ہوتا ہے. لیکن حقیقت میں سب مذہبوں کی' سب دین دھرم کی یہی جان اور یہی بنیاد ہے. اس طرح کی مشکل باتیں سب علموں اور سب سائنسوں میں ملتی ہیں. اس طرف دھیان دینے' سوچنے اور من کو لگانے سے یہ مشکل دھیرے دھیرے حل ہو جاتی ہے.

مثالوں سے کبھی کبھی سمجھنے میں بہت آسانی ہوتی ہے. میرے ہاتھوں اور پیروں کی انگلیاں' میرے ہاتھ پیر' آنکھ' ناک اور وہ کروڑوں انو' 'سیلز' یا زندہ ذرے جن سے میں یعنی میرا جسم بنا ہوا ہے سب ایک دوسرے سے الگ ہیں اور سب اپنی اپنی جگہ آزاد ہیں.

लेकिन फिर क्या सच मुच वह एक दूसरे से अलग हैं? क्या सच मुच वह एक दूसरे से आज़ाद हैं? मेरा 'मैं' मेरा वजूद यानी मेरी जान उन सब के अन्दर रमी हुई है और उन सब को मिलाए और संभाले हुए है. अगर इस ऊपरी अनेकता और दुनिया के इस रंग बिरंगेपन के अन्दर एक बुनियादी एकता इधर से उधर तक समाई हुई न होती तो 'हम' 'हमदर्दी' 'सब का भला' 'सब की मिलकियत' 'सब चीज़' जैसे फ़िक़रे न बन सकते और न किसी की समझ में आते. इस छिपी हुई एकता को बाहर लाना, ज़ाहिर करना और सब इनसानों को उसकी ज़ियादा से ज़ियादा जानकारी कराना और उसका यक़ीन दिलाना, यही दीन धर्म या मज़हब का असली मक़सद है.

मज़हब के इस असल मक़सद को पूरा करने के लिये वैराग्य यानी मुजानिबत, विशाद यानी बेज़ारी, करुना यानी रहम, दिल की सफ़ाई, बेग़रज़ी, परोपकार, दुनिया से अलहदगी, 'सेरी अज़ दुनिया', दिल बरदाश्तगी और सब के साथ दया और मोहब्बत, इस बात की लगन कि यह सब बेकस रूहें भी हमारी तरह अंधेरे में टक्करें खाती हुई रोशनी हासिल करें और इस ख़ौफ़नाक भूल भुलैयाँ से निकल सकें—इन सब बातों के दिल में पैदा होने की ज़रूरत है. इन बातों से दिल और दिमाग़ की वह हालत पैदा होगी जिसमें आत्मा परमआत्मा के अन्दर और अहंकार या ख़ुदी सब के भले की ख़्वाहिश के अन्दर फ़ना हो जाती है और सिर्फ़ ख़ुदा ही ख़ुदा रह जाता है. कुछ लोग इसे रूहानी बेदारी कहते हैं. यही ज्ञान योग से पैदा होता है. अंधेरी दुनिया के ऊपर यह ज्ञान निकलते हुए सूरज की तरह चमकने लगता है. आहिस्ता आहिस्ता सुबह के हलके रंग दिन की तेज़ रोशनी में बदल जाते है. और यह रोशनी सारी दुनिया की ज़िन्दगी का जुज़ बनकर दुनिया के भले के लिये काम आती है.

एक मानी में यह बिलकुल सच है कि ऐसी हालत में इनसान के अन्दर ईश्वर उतर आता है. ख़ुदी निकल जाती है तो ख़ुदा उसकी जगह ले लेता है. आदमी की सारी ज़िन्दगी चमक उठती है. साथ ही यह भी सच है कि अलग अलग साइन्सों और इल्मों के नीचे दरजे के ज्ञान में भी योग अपना असर पैदा करता है. साइन्स की हर नई खोज और हर नई ईजाद से खोज करने वाले और ईजाद करने वाले को इसी तरह का आनन्द आता है. दिल और दिमाग़ की मुख़्तलिफ़ हालतों में और नीचे ऊँचे सब दरजों पर योग का यह शग़ल जारी रहता है. योग सूत्र में लिखा है कि "सख़्ती से नरमी, साराग से वैराग्य, क्रूरता से करुना, तकब्बुर से हिल्म और ग़रूर से इनकेसार की तरफ़ दिल का बदलना बिलकुल

لیکن پھر کیا سچ مچ وہ ایک دوسرے سے الگ ہیں؟ کیا سچ مچ وہ ایک دوسرے سے آزاد ہیں؟ میرا 'میں' میرا وجود یعنی میری جان اُن سب کے اندر رمی ہوئی ہے اور اُن سب کو ملائے اور سنبھالے ہوئے ہے. اگر اِس اوپری انیکتا اور دنیا کے اس رنگ برنگے پن کے اندر ایک بنیادی ایکتا اِدھر سے اُدھر تک سمائی ہوئی نہ ہوتی تو 'ہم' 'ہمدردی' 'سبکا بھلا' 'سب کی ملکیت' 'سب کی چیز' جیسے فقرے نہ بن سکتے اور نہ کسی کی سمجھ میں آتے. اس چھپی ہوئی ایکتا کو باہر لانا، ظاہر کرنا اور سب انسانوں کو اِسکی زیادہ سے زیادہ جانکاری کرانا اور اس کا یقین دلانا یہی دین دھرم یا مذہب کا اصلی مقصد ہے.

مذہب کے اس اصل مقصد کو پورا کرنے کے لئے ویراگیہ یعنی مجانبت، وشاد یعنی بیزاری، کرونا یعنی رحم، دل کی صفائی، بے غرضی، پرو پکار، دنیا سے علیحدگی، 'سیری از دنیا'، دل برداشتگی اور سب کے ساتھ دیا اور محبت، اس بات کی لگن کہ یہ سب بیکس روحیں بھی ہماری طرح اندھیرے میں ٹکریں کھاتی ہوئی روشنی حاصل کریں اور اس خوفناک بھول بھلیاں سے نکل سکیں — اِن سب باتوں کے دل میں پیدا ہونے کی ضرورت ہے. اِن باتوں سے دل اور دماغ کی وہ حالت پیدا ہوگی جس میں آتما پرم آتما کے اندر اور اہنکار یا خودی سب کے بھلے کی خواہش کے اندر فنا ہوجاتی ہے اور صرف خدا ہی خدا رہ جاتا ہے. کچھ لوگ اِسے روحانی بیداری کہتے ہیں. یہی گیان یوگ سے پیدا ہوتا ہے. اندھیری دنیا کے اوپر یہ گیان نکلتے ہوئے سورج کی طرح چمکنے لگتا ہے. آہستہ آہستہ صبح کے ہلکے رنگ دن کی تیز روشنی میں بدل جاتے ہیں اور یہ روشنی ساری دنیا کی زندگی کا جز بنکر دنیا کے بھلے کے لئے کام آتی ہے.

ایک معنی میں یہ بالکل سچ ہے کہ ایسی حالت میں انسان کے اندر ایشور اتر آتا ہے. خودی نکل جاتی ہے تو خدا اسکی جگہ لے لیتا ہے. آدمی کی ساری زندگی چمک اٹھتی ہے. ساتھ ہی یہ بھی سچ ہے کہ الگ الگ سائنسوں اور علموں کے نیچے درجے کے گیان میں بھی یوگ اپنا اثر پیدا کرتا ہے. سائنس کی ہر نئی کھوج اور ہر نئی ایجاد سے کھوج کرنے والے اور ایجاد کرنے والے کو اسی طرح کا آنند آتا ہے. دل اور دماغ کی مختلف حالتوں میں اور نیچے اونچے سب درجوں پر یوگ کا یہ شغل جاری رہتا ہے. یوگ سوتر میں لکھا ہے کہ ' سختی سے نرمی' ساراگیہ سے ویراگیہ' کروتا سے کرونا' تکبر سے حلم اور غرور سے انکسار کی طرف دل کا بدلنا بالکل

ज़रूरी है. इससे पहले कि ख़ुदा ईश्वर दिल में आकर बैठ सके." हमदर्दी और अपनापन रूहानी प्रेम से पैदा होते हैं और इस तरह का प्रेम ही ईश्वर है.

ईश्वर अल्लाह सीधे सादे बेगुनाह, मासूम और बच्चों की तरह भोले और प्यारे, साफ़ दिल लोगों के बहुत नज़दीक है. बुद्धिमान आदमी दोबारा बच्चा हो जाता है. इसीलिये वह अल्लाह के बहुत नज़दीक पहुँच जाता है. वह जान बूझ कर दिल की सादगी को पसन्द करता है. क्योंकि उसने देख लिया है कि चालाक और टेढ़े होने में कितनी बुराइयाँ हैं. उसकी आत्मा फिर अपनी क़ुदरती हालत में आजाती है. क्योंकि उसने तजरबे से मालूम कर लिया है कि ज़िन्दगी के बनावटी तरीक़े कितने ग़लत हैं. उसने उन्हें अपने से अलग करके ग़लत तरह के इल्म और ग़लत तरह की होशियारी को अपने दिल और दिमाग़ से बाहर कर दिया है.

इंजील में लिखा है:—"जब तक तुम बदल कर फिर से छोटे बच्चों की तरह न हो जाओगे तब तक तुम ईश्वर के राज में दाख़िल नहीं हो सकते."

उपनिषद में लिखा है—"विद्वान ब्राह्मण को चाहिये कि पांडित्य विद्या के बोझ से दिल को हटा कर दलीलों और पेचीदा कड़वी बहसों से मुँह मोड़ कर फिर बालक की तरह सरल और सादा बन जावे. इसके बाद फिर ख़ामोश हो कर अपने अन्दर सोचे, अपनी आत्मा के साथ बातें करे और फिर आख़िर में उस हालत से भी निकल कर आत्मा के क़ुदरती रूप में आकर परम आत्मा के साथ एक हो जावे."

रूह के क़ौसे-उरूज या सफ़रे-अब्द के ज़रिये ईश्वर अल्लाह की तरफ़ फिर से जाने की यही सीढ़ियाँ हैं. सूफ़ी लोग इस सफ़र को इन्हीं नामों से पुकारते हैं. इस के ख़िलाफ़ सफ़र क़ौसे-नज़ूल है जिसे सफ़रे-हक़ भी कहते हैं. दूसरे शब्दों में जो दिल के सख़्त हैं वह ख़ुदा को नहीं देख सकते, क्योंकि वह प्रेम को महसूस नहीं कर सकते और प्रेम ही ख़ुदा का सब से बड़ा रूप है, प्रेम ही ख़ुदा है. अहंकार दिल को सख़्त कर देता है. प्रेम उसे नरम करता है. इसी को बेख़ुदी, निरअहंकार और निस्वार्थता भी कहते हैं. आत्मा के विकास में समय आने पर यह हालत सब के अन्दर पैदा होती है. हम में से हर एक को इसके अन्दर से गुज़रना है.

इसी सचाई को और तरह भी ज़ाहिर किया जा सकता है. आदमी को चाहिये कि अपने को दूसरे इनसानों से अलग न समझे, और न ख़ुद अपने वजूद के अलग अलग पहलुओं को एक दूसरे से अलग समझे. उसे चाहिये कि अपने सारे वजूद को एक जाने. उसके विचारों, उसके शब्दों, और उसके कामों में कोई बात एक दूसरे के

ضروری ہے . اس سے پہلے کہ خدا ایشور دل میں آکر بیٹھ سکے." ہمدردی اور اپنا پن روحانی پریم سے پیدا ہوتے ہیں اور اِس طرح کا پریم ہی ایشور ہے .

ایشور اللہ سیدھے سادے بے گناہ' معصوم اور بچوں کی طرح بھولے اور پیارے' صاف دل لوگوں کے بہت نزدیک ہیں . بدھی مان آدمی دوبارہ بچہ ہوجاتا ہے . اسی لئے وہ اللہ کے بہت نزدیک پہنچ جاتا ہے . وہ جان بوجھکر دل کی سادگی کو پسند کرتا ہے . کیونکہ اس نے دیکھ لیا ہے کہ چالاک اور ٹیڑھے ہونے میں کتنی برائیاں ہیں . اسکی آتما پھر اپنی قدرتی حالت میں آجاتی ہے . کیونکہ اس نے تجربے سے معلوم کر لیا ہے کہ زندگی کے بناوٹی طریقے کتنے غلط ہیں . اس نے انہیں اپنے سے الگ کر کے غلط طرح کے علم اور غلط طرح کی ہوشیاری کو اپنے دل اور دماغ سے باہر کر دیا ہے .

انجیل میں لکھا ہے :—" جب تک تم بدل کر پھر سے چھوٹے بچوں کی طرح نہ ہوجاؤ گے تب تک تم ایشور کے راج میں داخل نہیں ہوسکتے ."

اپنشد میں لکھا ہے—" ودوان براہمن کو چاہئے کہ پانڈتیہ ودیا کے بوجھ سے دل کو ہٹا کر دلیلوں اور پیچیدہ کڑوی بحثوں سے منہ موڑ کر پھر بالک کی طرح سرل اور سادہ بن جاوے . اسکے بعد پھر خاموش ہو کر' اپنے اندر سوچے' اپنی آتما کے ساتھ باتیں کرے اور پھر آخیر میں اس حالت سے بھی نکل کر آتما کے قدرتی روپ میں آکر پرم آتما کے ساتھ ایک ہوجاوے ."

روح کے قوس عروج یا سفر عبد کے ذریعے ایشور اللہ کی طرف پھر سے جانے کی یہی سیڑھیاں ہیں . صوفی لوگ اِس سفر کو انہیں ناموں سے پکارتے ہیں . اس کے خلاف سفر قوس نزول ہے جسے سفر حق بھی کہتے ہیں . دوسرے شبدوں میں جو دل کے سخت ہیں وہ خدا کو نہیں دیکھ سکتے کیونکہ وہ پریم کو محسوس نہیں کرسکتے اور پریم ہی خدا کا سب سے بڑا روپ ہے' پریم ہی خدا ہے . اہنکار دل کو سخت کر دیتا ہے . پریم اسے نرم کرتا ہے . اِسی کو بے خودی' نر اہنکار اور نسوارتھتا بھی کہتے ہیں . آتما کے وکاس میں سمے آنے پر یہ حالت سب کے اندر پیدا ہوتی ہے . ہم میں سے ہر ایک کو اِسکے اندر سے گزرنا ہے

اِسی سچائی کو اور طرح بھی ظاہر کیا جا سکتا ہے . آدمی کو چاہئے کہ اپنے کو دوسرے انسانوں سے الگ نہ سمجھے' اور نہ خود اپنے وجود کے الگ الگ پہلوؤں کو ایک دوسرے سے الگ سمجھے . اسے چاہئے کہ اپنے سارے وجود کو ایک جانے . اس کے وچاروں' اس کے شبدوں اور اس کے کاموں میں کوئی بات ایک دوسرے کے

खिलाफ़ न हो. उसका दिल, उसका दिमाग़ और उसकी संकल्प शक्ति (इरादा) तीनों पूरी तरह मिले हुए बाजों की तरह एक सा राग अलाप रहे हों. उसका मज़हब यानी उसका धर्म, उसके सारे वजूद में रमा हुआ हो. विचारों, शब्दों और कामों तीनों पर उसके मज़हब का अंकुश हो. सातों दिन उसके लिये ऐसे ही पाक हों जैसे इतवार, मंगल या जुमा. उसका दिल और दिमाग़ दोनों उसके क़ाबू में हों. वह अपने भावों या जज़बात को इस तरह की ढील न दे कि ये उसके पैरों को उखाड़ दें. वह सोच समझ कर ठीक और अच्छे भाव ही अपने अन्दर पैदा होने दे. उसकी अपनी अलग ज़िन्दगी, उसकी व्यापक आत्मा की ज़िन्दगी के साथ यानी इन्सानी क़ौम बल्कि सब जानदारों की ज़िन्दगी के साथ मिलकर चले. दिल की सख़्ती और अहंकार को मिटा दे. उसकी जगह निर्वेद, विशाद, वैराग्य और महा करुणा को अपने अन्दर क़ायम करे. जिसका मतलब है सब के दुखों के साथ दुखने वाला दिल. सच मुच जो लोग दिल के सख़्त हैं वह ख़ुदा को नहीं देख सकते. जो दिल के नरम, दीन और मुनकसिर मिज़ाज हैं वह ही ख़ुदा का दीदार हासिल कर सकते हैं. वह ही अपने इस मिट्टी के जिस्म पर राज कर सकते हैं और फिर किसी दिन इस ज़मीन पर राज कर सकते हैं. यह तब होगा जब अधिकतर इनसान मानव विकास का यह ज़बरदस्त पाठ पढ़ चुकेंगे और स्वार्थ की जगह परमार्थ को दे चुकेंगे. यहीं ज़मीन के ऊपर फिर से सतजुग का आना होगा. "बुराई की जड़ अपने दिल के अन्दर खोजो—और उसे उखाड़ कर फेंको. यह वह पौधा है जो युग युग में बढ़ता रहता है. जो कोई सच्चे धर्म के पथ पर चलना चाहे उसे अपने दिल के अन्दर से इस पौधे की जड़ों को उखाड़ कर फेंकना होगा. तब एक बार दिल लहू लोहान हो जायगा. आदमी की सारी ज़िन्दगी ख़त्म दिखाई देगी. इस कठिन आज़मायश में से हमें निकलना ही है. हर आदमी ख़ुद अपने लिये ही धर्म का रास्ता है, ख़ुद अपने लिये ही हक़ है और अपने लिये ही ज़िन्दगी है. यह तब ही हो सकता है जब अपने पूरे वजूद को मज़बूती के साथ पकड़ ले और रूहानी बेदारी की पूरी ताक़त के साथ यह समझ ले कि वह अलग वजूद में नहीं हूं. मैं वह हूं जिसने इतनी तकलीफ़ के साथ अपने को पहचाना है. अपने इस नए वजूद के ज़रिये ही मैं धीरे धीरे इस छोटी और अलग ज़िन्दगी के पार बड़ी और हक़ीक़ी ज़िन्दगी में क़दम रख सकता हूं."

यह हालत ज़बरदस्ती किसी पर नहीं लाई जा सकती. वक़्त आनेपर यह ख़ुद ब ख़ुद अन्दर से पैदा होती है, फिर आत्मा इसी तरह खिलती है जिस तरह फूल अपने वक़्त पर खिलता है. लेकिन माली इसके खिलने के लिये हालतें पैदा

خلاف نہ ہو ۔ اسکا دل' اسکا دماغ اور اسکی سنکلپ شکتی (ارادہ) تینوں پوری طرح ملے ہوئے باجوں کی طرح ایک سا راگ الاپ رہے ہوں ۔ اسکا مذہب یعنی اسکا دھرم اس کے سارے وجود میں رما ہوا ہو ۔ وچاروں' شبدوں اور کاموں تینوں پر اس کے مذہب کا انکش ہو' ساتوں دن اس کے لئے ایسے ہی پاک ہوں جیسے اتوار' منگل یا جمعہ ۔ اسکا دل اور دماغ دونوں اس کے قابو میں ہوں ۔ وہ اپنے بھاؤں یا جذبات کو اسطرح کی ڈھیل نہ دے کہ یہ اس کے پیروں کو اکھاڑ دیں ۔ وہ سوچ سمجھکر ٹھیک اور اچھے بھاؤ ہی اپنے اندر پیدا ہونے دے ۔ اسکی اپنی الگ زندگی' اسکی ویاپک آتما کی زندگی کے ساتھ یعنی انسانی قوم بلکہ سب جانداروں کی زندگی کے ساتھ مل کر چلے ۔ دل کی سختی اور اہنکار کو مٹا دے ۔ اسکی جگہ نرویدھ' وشاد' ویراگیہ اور مہا کرونا کو اپنے اندر قائم کرے جس کا مطلب ہے سب کے دکھوں کے ساتھ دکھنے والا دل ۔ سچ مچ جو لوگ دل کے سخت ہیں وہ خدا کو نہیں دیکھ سکتے ۔ جو دل کے نرم' دین اور منکسر مزاج ہیں وہ ہی خدا کا دیدار حاصل کر سکتے ہیں ۔ وہ ہی اپنے اس مٹی کے جسم پر راج کر سکتے ہیں اور پھر کسی دن اس زمین پر راج کر سکتے ہیں ۔ یہ تب ہوگا جب ادھک تر انسان مانو وکاس کا یہ زبردست پاٹھ پڑھ چکیں گے اور سوارتھ کی جگہ پرمارتھ کو دے چکیں گے ۔ وہی زمین کے اوپر پھر سے ست جگ کا آنا ہوگا ۔ "برائی کی جڑ اپنے دل کے اندر کھوجو—اور اسے اکھاڑ کر پھینکو ۔ یہ وہ پودا ہے جو یگ یگ میں بڑھتا رہتا ہے ۔ جو کوئی سچے دھرم کے پتھ پر چلنا چاہے اسے اپنے دل کے اندر سے اس پودے کی جڑوں کو اکھاڑ کر پھینکنا ہوگا ۔ تب ایک بار دل لہو لہان ہوجائیگا ۔ آدمی کی ساری زندگی ختم دکھائی دیگی ۔ اس کٹھن آزمائش میں سے ہمیں نکلنا ہی ہے ۔ ہر آدمی خود اپنے لئے ہی دھرم کا راستہ ہے' خود اپنے لئے ہی حق ہے اور اپنے لئے ہی زندگی ہے ۔ یہ تبھی ہو سکتا ہے جب اپنے پورے وجود کو مضبوطی کے ساتھ پکڑ لے اور روحانی بیداری کی پوری طاقت کے ساتھ یہ سمجھ لے کہ یہ الگ وجود میں نہیں ہوں ۔ میں وہ ہوں جس نے اتنی تکلیف کے ساتھ اپنے کو پہچانا ہے ۔ اپنے اس نئے وجود کے ذریعے ہی میں دھیرے دھیرے اس چھوٹی اور الگ زندگی کے پار بڑی اور حقیقی زندگی میں قدم رکھ سکتا ہوں ۔"

یہ حالت زبردستی کسی پر نہیں لائی جا سکتی ۔ وقت آنے پر یہ خود بخود اندر سے پیدا ہوتی ہے' پھر آتما اسی طرح کھلتا ہے جس طرح پھول اپنے وقت پر کھلتا ہے ۔ لیکن مالی اس کے کھلنے کے لئے حالتیں پیدا

कर सकता है. पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी के लोगों को भूगोल की रूप रेखा सिखाते हैं. लड़का बड़ा होकर पृथ्वी की नई नई जगहों को जाकर देखने का काम खुद ही करता है. इसी तरह असल बुनियादी धर्म की तालीम बाप बेटे को दे सकता है. बेटे के दिमाग में वह चीज़ बीज की तरह पड़ी रहेगी. वक्त आने पर उस में जड़ें निकलेंगी, अंकुर फूटेंगे, शाखें फूटेंगी, पत्ते, कली, फूल और फल लगेंगे, तब सुनी देखी हो जायेगी.

चीनी 'सर्वोदय'

(जे. सी. कुमारप्पा)

हम लोग चीन में केवल छ हफ्ते रहे लेकिन चीनियों की प्रोग्राम बनाने की कुशलता के कारन इन छ हफ्तों में हमने इतनी चीज़ें देखीं जिन्हें देखने के लिये आम तौर से छ महीने लग जाते हैं. हमारा दिन भर का कार्य क्रम भरा रहता था. उन्होंने हममें से हर एक को अपनी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक चीज़ें देखने दीं और सब के लिये सहूलियतें भी कर दीं. मैंने वहां जो कुछ देखा और मुझ पर जो छाप पड़ी उसका सरसरी तौर पर यहां मैं चर्चा करूंगा.

करीब दो साल पहले तक चीन के अन्दर घरेलू व बाहरी लड़ाइयां जारी थीं और उनके कारन देश में भुखमरी के आसार नज़र आने लग गए थे. इसलिये वहां जो कुछ तरक्की नज़र आती है वह पिछले दो बरस में ही हुई है.

चीन में जाते ही पहली बात जो किसी का ध्यान खेंचती है वह है वहाँ की सफाई. पुराने ज़माने में कैन्टन और शंघाई जैसे बड़े बड़े शहर गंदगी के लिये काफी बदनाम थे, पर इस समय हमें वहां—हिन्दुस्तान में हर जगह मिलने वाली—मक्खियां कहीं नहीं दिखाई दीं. इतने थोड़े समय में इतने ऊंचे दरजे की सफाई हासिल करना सचमुच एक चमत्कार ही कहा जायेगा.

दूसरी बात जो लोगों के ध्यान में आती है वह है वहां के वातावरण में पेट्रोल की गंध का न होना, न धुंआ और मोटर गाड़ियों की खड़खड़ाहट. सड़कों पर मोटरें करीब करीब दिखती ही न थीं. कुछ सरकारी लारियां और मोटरें ही सड़कों पर चलती हुई दिखाई देतीं. वहां के लोग अक्सर साइकिल, सायकिल रिक्शा, ट्राम या बस की सवारियों का इस्तेमाल करते हैं.

کر سکتا ہے۔ پرانی پیڑھی کے لوگ نئی پیڑھی کے لوگوں کو بھوگول کی روپ ریکھا سکھاتے ہیں۔ لڑکا بڑا ہوکر پرتھوی کی نئی نئی جگہوں کو جا کر دیکھنے کا کام خود ہی کرتا ہے۔ اسی طرح اصل بنیادی دھرم کی تعلیم باپ بیٹے کو دے سکتا ہے۔ بیٹے کے دماغ میں وہ چیز بیج کی طرح پڑی رہیگی۔ وقت آنے پر اس میں جڑیں نکلیں گی، انکر پھوٹیں گے، شاخیں پھوٹیں گی، پتّے، کلی، پھول اور پھل لگیں گے، تب سنی دیکھی ہو جائیگی۔

چینی 'سرودے'

(جے. سی. کمارپّا)

ہم لوگ چین میں کیول چھ ہفتے رہے لیکن چینیوں کی پروگرام بنانے کی کشلتا کے کارن اِن چھ ہفتوں میں ہم نے اتنی چیزیں دیکھیں جنہیں دیکھنے کے لئے عام طور سے چھ مہینے لگ جاتے ہیں۔ ہمارا دن بھر کا کاریہ کرم بھرا رہتا تھا۔ انہوں نے ہم میں سے ہر ایک کو اپنی اپنی مرضی کے مطابق چیزیں دیکھنے دیں اور سب کے لئے سہولتیں بھی کر دیں۔ میں نے وہاں جو کچھ دیکھا اور مجھ پر جو چھاپ پڑی اُسکی سرسری طور پر یہاں میں چرچا کرونگا۔

قریب دو سال پہلے تک چین کے اندر گھریلو و باہری لڑائیاں جاری تھیں اور اُن کے کارن دیش میں بھکمری کے آثار نظر آنے لگ گئے تھے۔ اِس لئے یہاں جو کچھ ترقی نظر آتی ہے وہ پچھلے دو برس میں ہی ہوئی ہے۔

چین میں جاتے ہی پہلی بات جو کسی کا دھیان کھینچتی ہے وہ ہے وہاں کی صفائی۔ پرانے زمانے میں کینٹن اور شنگھائی جیسے بڑے بڑے شہر گندگی کے لئے کافی بدنام تھے، پر اس سمے ہمیں وہاں—ہندستان میں ہر جگہ ملنے والی—مکھیاں کہیں نہیں دکھائی دیں۔ اتنے تھوڑے سمے میں اتنے اونچے درجے کی صفائی حاصل کرنا سچ مچ ایک چمتکار ہی کہا جائیگا۔

دوسری بات جو لوگوں کے دھیان میں آتی ہے وہ ہے یہاں کے واتاورن میں پٹرول کی گندھ کا نہ ہونا، نہ دھواں اور موٹر گاڑیوں کی کھڑکھڑاہٹ۔ سڑکوں پر موٹریں قریب قریب دکھتی ہی نہ تھیں۔ کچھ سرکاری لاریاں اور موٹریں ہی سڑکوں پر چلتی ہوئی دکھائی دیتیں۔ یہاں کے لوگ اکثر بائیسکل، سائیکل رکشا، ٹرام یا بس کی سواریوں کا استعمال کرتے ہیں۔

यहां लोगों के बदन पर कपड़े बहुत ही कम—ज़रूरत के लायक़—दिखाई दिये. यहां की दुकानों में ऐशो आराम की चीज़ों बनिस्बत रोज़ के ख़र्च की चीज़ों की ही भरमार दिखाई दी. चीज़ों की क़ीमतें कुछ ज़रूर ऊंची दिखाई दीं, लेकिन सरकारी क़ीमत बांधने की नीति के कारन उनमें उतार चढ़ाव मालूम नहीं होता था. वह एक सी बनी रहतीं.

ख़ुराक की चीज़ें, जिनमें फल भी शुमार हैं, ख़ूब तादाद में मिलती थीं. उनकी क़ीमत भी सस्ती थी. ज़मीन के बन्दोबस्त में जो सुधार किये गए थे उनसे किसान संतुष्ट थे और अनाज की पैदावार बढ़ाने में उन्होंने अपनी सारी ताक़त लगा दी थी.

ऊंची नीची आमदनी के बीच का फ़र्क़ काफ़ी कम कर दिया गया था. इसकी वजह से ग़रीब और अमीरों में बहुत कम भेद रह गया था.

यहां का लगान फ़सल में ही वसूल किया जाता है. सरकारी नौकरों की तनख़ा का कुछ हिस्सा इन फ़सलों के स्टाक में से दिया जाता है, और इस स्टाक के कारन सरकार क़ीमतों पर अपना क़ाबू रखती है और बाज़ार को भी संभाले रहती है.

कैन्टन में एक ही साल के अन्दर बेकारों को और वेश्याओं को किसी न किसी अच्छे रोज़गार में लगा कर बेकारी और वेश्यापन बंद कर दिये गए. इस तरह समाज में ख़ारिज मर्द औरतें नेक बाशिन्दे बन गए.

'लोगों की अदालतों' में इन्साफ़ बहुत जल्द होता है और आसानी से बिना टके कौड़ी के ख़र्च किये हो जाता है.

रेल के सफ़र में लोगों को बहुत सुभीता रहता है. गाड़ियां वक़्त से चला करती हैं.

फ़ौजी और पुलीस के लोगों का जनता से प्रेम का सम्बन्ध है. जब वह ड्यूटी पर नहीं होते तब गांव वालों को खेती के काम में मदद करते हैं.

बच्चों की तालीम का ख़ासा इन्तज़ाम किया गया है. उन्हें मुफ़्त ख़ुराक दी जाती है और उनकी देख भाल अच्छी तरह की जाती है.

यह सब बातें इतने कम अरसे में कर ली गईं कि यक़ीन नहीं आता, मगर यह हुआ कैसे ?

च्यांग काई शेक के ज़माने में बुर्जुआ लोग या नौकर शाही अपनी इच्छा-सहूलियत के अनुसार प्रोग्राम बनाती थी. माओ-त्से तुंग और उनके साथियों ने देखा कि इसमें देश का भला नहीं है. उन्हें महसूस हुआ कि आम जनता

یہاں لوگوں کے بدن پر کپڑے بہت ہی کم—ضرورت کے لائق—دکھائی دیئے . یہاں کی دوکانوں میں عیش و آرام کی چیزوں کی بنسبت روز کے خرچ کی چیزوں کی ہی بھرمار دکھائی دی . چیزوں کی قیمتیں کچھ ضرور اونچی دکھائی دیں، لیکن سرکاری قیمت باندھنے کی نیتی کے کارن اُن میں اُتار چڑھاؤ معلوم نہیں ہوتا تھا . وہ ایک سی بنی رہتیں .

خوراک کی چیزیں، جن میں پھل بھی شمار ہیں، خوب تعداد میں ملتی تھیں . اُن کی قیمت بھی سستی تھی . زمین کے بندوبست میں، جو سدھار کئے گئے تھے اُن سے کسان سنتشٹ تھے اور اناج کی پیداوار بڑھانے میں اُنہوں نے اپنی ساری طاقت لگا دی تھی .

اونچی نیچی آمدنی کے بیچ کا فرق کافی کم کر دیا گیا تھا. اِس کی وجہ سے غریب اور امیروں میں بہت کم بھید رہ گیا تھا .

یہاں کا لگان فصل میں ہی وصول کیا جاتا ہے . سرکاری نوکروں کی تنخواہ کا کچھ حصہ ان فصلوں کے اسٹاک میں سے دیا جاتا ہے، اور اِس اسٹاک کے کارن سرکار قیمتوں پر اپنا قابو رکھتی ہے اور بازار کو بھی سنبھالے رکھتی ہے .

کینٹن میں ایک ہی سال کے اندر بیکاروں کو اور ویشیاؤں کو کسی نہ کسی اچھے روزگار میں لگا کر بیکاری اور ویشیاپن بند کر دیئے گئے . اس طرح سماج میں خارج مرد عورتیں نیک باشندے بن گئے .

'لوگوں کی عدالتوں' میں انصاف بہت جلد ہوتا ہے اور آسانی سے بنا ٹکے کوڑی کے خرچ کئے ہو جاتا ہے .

ریل کے سفر میں لوگوں کو بہت سبھیتا رہتا ہے . گاڑیاں وقت سے چلا کرتی ہیں .

فوجی اور پولیس کے لوگوں کا جنتا سے پریم کا سمبندھ ہے . جب وہ ڈیوٹی پر نہیں ہوتے تب گاؤں والوں کو کھیتی کے کام میں مدد کرتے ہیں .

بچوں کی تعلیم کا خاصہ انتظام کیا گیا ہے . انہیں مفت خوراک دی جاتی ہے اور اُن کی دیکھ بھال اچھی طرح کی جاتی ہے .

یہ سب باتیں اتنے کم عرصے میں کر لی گئیں کہ یقین نہیں آتا مگر یہ ہوا کیسے ؟

چانگ کائی شیک کے زمانے میں بورژوا لوگ یا نوکر شاہی اپنی اِچھا سہولیت کے انوسار پروگرام بناتی تھی . ماؤتسے تنگ اور اُن کے ساتھیوں نے دیکھا کہ اِس میں دیش کا بھلا نہیں ہے . اُنہیں محسوس ہوا کہ عام جنتا

की ज़रूरतों को पहली जगह देनी चाहिये. वह चाहते थे कि आम जनता तक लोक राज की बुनियाद पहुँचे ताकि वह खुद यह तय कर सके कि उसका हित किस में है. इस तरह किसान और मज़दूर जो प्रोग्राम बनायें वही नौकर शाही पर लागू होना चाहिये. इसे वह 'लोक राजी तानाशाही' कहते और पहला क़दम मानते हैं. यह जो उन्होंने किया तो लोगों के सहयोग से और इसी वजह से वह चांग काई शेक के ज़माने की नौकरशाही तानाशाही को ख़त्म कर सके. आज वहां हालत यह है कि उनके यहां के अदना से अदना आदमी की काफ़ी हिफ़ाज़त और देख भाल की जाती है. लेकिन इसके यह माने नहीं कि वहां के लोग आप से आप सब कुछ कर ले जायेंगे. उनके पीछे मंजे हुए और तपे हुये नेता हैं जो उन्हें रास्ता बता रहे हैं.

उनके प्रोग्राम का दूसरा क़दम समाजवाद है, जिसमें तमाम काम सरकार की तरफ़ से होगा या उसके कन्ट्रोल में रहेगा.

उम्मीद है कि इसके बाद वह साम्यवाद या कम्यूनिज़्म की तरफ़ बढ़ेंगे. उस वक़्त सरकार की जगह जनता सारा काम संभालेगी. कम्यूनिज़्म का उनका आदर्श है—एक क़ौमी मिला जुला ख़ानदान या परिवार बनाना. ऐसा जब हो जायगा तभी चीन अपने को सच्चा कम्यूनिस्ट कहेगा. आज की हालत में वह ख़ुद को इस लायक़ नहीं समझते कि अपने को कम्यूनिस्ट कहें. अलबत्ता कुछ ऊंचे दर्जे के नेताओं को जो 'पहुँच' गये हैं कम्यूनिस्ट कहा जा सकता है.

इस निगाह से जब हम हिन्दुस्तान की तरफ़ देखते हैं तो लगता है कि हम भी राम राज के लिये काम करते हैं. लेकिन हम अभी तक नौकरशाही तानशाही के दर्जे से नहीं निकल पाये हैं. हम विदेशी नौकरशाही तानाशाही में से खिसक कर राष्ट्री नौकरशाही तानाशाही में आ गये हैं. लेकिन यह हालत बदल कर लोकराजी तानाशाही क़ायम होनी है. उसके बाद भी हमें दो मंज़िलें और तय करनी बाक़ी होंगी.

चीनी लोगों ने अहिंसक तरीक़ों के उपयोग के बारे में विचार नहीं किया है. इसलिये आज वह गांधी वादी मार्ग से काफ़ी दूर हैं. मगर इसके बावजूद, देश भक्ति की उनकी तड़प अमल करने के लायक़ है और उन्होंने जो कुछ हासिल किया वह तारीफ़ के क़ाबिल है. मेरे ख़्याल से उनका मक़सद भी 'सर्वोदय' ही है, सिर्फ़ अहिंसा पर हमारे जैसा इसरार वह नहीं रखते. इन्क़लाब में जो हिंसा इस्तेमाल की गई उसे सुनकर हममें से कुछ लोग दंग रह जाते हैं. पर चीनी लोगों ने अहिंसा की कोई क़सम नहीं खाई थी और किसी भी क़िस्म की सरकार क्यों न हो उसे

کی ضرورتوں کو پہلی جگہ دینی چاہئے۔ وہ چاہتے ہیں کہ عام جنتا تک لوک راج کی بنیاد پہونچے تاکہ وہ خود یہ طے کر سکے کہ اس کا ہت کس میں ہے۔ اس طرح کسان اور مزدور جو پروگرام بنائیں وہی نوکر شاہی پر لاگو ہونا چاہئے۔ اسے وہ 'لوک راجی تانا شاہی' کہتے اور پہلا قدم مانتے ہیں۔ یہ جو انہوں نے کیا تو لوگوں کے سہیوگ سے اور اسی وجہ سے وہ چانگ کائی شیک کے زمانے کی نوکر شاہی تاناشاہی کو ختم کر سکے۔ آج وہاں حالت یہ ہے کہ ان کے یہاں کے ادنیٰ سے ادنیٰ آدمی کی کافی حفاظت اور دیکھ بھال کی جاتی ہے۔ لیکن اس کے یہ معنی نہیں کہ وہاں کے لوگ آپ سے آپ سب کچھ کر لے جائیں گے۔ ان کے پیچھے منجھے ہوئے اور تپے ہوئے نیتا ہیں جو انہیں راستہ بتا رہے ہیں۔

ان کے پروگرام کا دوسرا قدم سماج واد ہے جس میں تمام کام سرکار کی طرف سے ہوگا یا اس کے کنٹرول میں رہے گا۔

امید ہے کہ اس کے بعد وہ سامیہ واد یا کمیونزم کی طرف بڑھیں گے۔ اس وقت سرکار کی جگہ جنتا سارا کام سنبھالے گی۔ کمیونزم کا ان کا آدرش ہے—ایک قومی ملا جلا خاندان یا پریوار بنانا۔ ایسا جب ہو جائے گا تبھی چین اپنے کو سچا کمیونسٹ کہے گا۔ آج کی حالت میں وہ خود کو اس لائق نہیں سمجھتے کہ اپنے کو کمیونسٹ کہیں۔ البتہ اونچے درجے کے نیتاؤں کو جو 'پہونچ' گئے ہیں کمیونسٹ کہا جا سکتا ہے۔

اس نگاہ سے جب ہم ہندوستان کی طرف دیکھتے ہیں تو لگتا ہے کہ ہم بھی رام راج کے لئے کام کرتے ہیں۔ لیکن ہم ابھی تک نوکر شاہی تانا شاہی کے درجے سے نہیں نکل پائے ہیں۔ ہم ودیشی نوکر شاہی تانا شاہی میں سے کھسک کر راشٹری نوکر شاہی تانا شاہی میں آگئے ہیں۔ لیکن یہ حالت بدل کر لوک راجی تانا شاہی قائم ہونی ہے۔ اس کے بعد بھی ہمیں دو منزلیں اور طے کرنی باقی ہوں گی۔

چینی لوگوں نے اہنسک طریقوں کے اپیوگ کے بارے میں وچار نہیں کیا ہے۔ اس لئے آج وہ گاندھی وادی مارگ سے کافی دور ہیں۔ مگر اس کے باوجود دیش بھکتی کی ان کی تڑپ عمل کرنے لائق ہے اور انہوں نے جو کچھ حاصل کیا وہ تعریف کے قابل ہے۔ میرے خیال سے ان کا مقصد بھی 'سرودے' ہی ہے، صرف اہنسا پر ہمارے جیسا اصرار وہ نہیں رکھتے۔ انقلاب میں جو ہنسا استعمال کی گئی اسے سن کر ہم میں سے کچھ لوگ دنگ رہ جاتے ہیں۔ پر چینی لوگوں نے اہنسا کی کوئی قسم نہیں کھائی تھی اور کسی بھی قسم کی سرکار کیوں نہ ہو اسے

हिंसा करनी ही होती है. हमें उम्मीद है कि कुछ समय के बाद चीनी लोगों के नेता महसूस करेंगे कि हिंसा का रास्ता दीखने में छोटा और मंजिल पर जल्दी पहुँचाने वाला भले मालूम हो, मगर असल में उससे कोई सवाल हल नहीं हुआ करते. काश! मगर चीनी लोग कहीं अहिंसा की बुनियाद पर अपना प्रोग्राम बनाये होते तब तो दुनिया के जबरदस्त रहनुमा बन जाते.

रूस का कम्यूनिज्म मजदूरों या प्रोलिटेरियट से शुरू हुआ और वहीं वह खत्म भी हो गया. वहां जार और उसके दरबार के कारन मादूदी या भौतिक आदर्श ही लोगों के सामने था. इसलिये उसके बाद की बोल्शेविक सरकार ने बड़े पैमाने पर माल बनाने वाले कारखाने चलाने पर जोर दिया, मगर चीन ने किसानों से शुरू किया और उनके पांव मजबूत करना तय किया है. और यही ठीक है. उन्होंने असली किसानों या जमीन कसने वालों को काफी जमीन बांटी है. और उसका इन्तिजाम उन्हीं पर छोड़ दिया है. मालदार किसानों तक का बाल भी बांका न किया गया.

आज की चीनी सरकार का खानगी मिल्कियत, मुनाफा और खानगी रोजगार के प्रति जो रुख है इस पर से उसे कम्यूनिस्ट नहीं कहा जा सकता. उसके मरकजी मन्त्रियों मे सिर्फ 31°/. मंत्री कम्यूनिस्ट हैं. इसलिये आज के चीन को कम्यूनिस्ट कहना बिलकुल गलत है. चीन में खास कर शांघाई में ऐसे कई अखबार हैं जो दूसरे विचार जाहिर करते हैं. यह जरूर है कि चीन में कम्यूनिस्ट लोग जबरदस्त हैं और काफी असर रखते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह ही सर्वेसर्वा हैं.

चीन ने रूस के अनुभवों से काफी फायदा उठाया है पर आंख मींच कर उसकी नकल नहीं की है. जहां और जब जरूरत पड़े तब चीन की सरकार को मदद देने के लिये रूस के माहिर वहां मौजूद हैं सही, पर वह बड़े या आका बनकर देश पर कोई हकूमत नहीं चला सकते. रूस के फौजी माहिर भी चीनी अफसरों के मातहत ही हैं. मोटे तौर पर कह सकते हैं कि चीन अपने सवालों को समझ बूझ कर अपनी अकल के मुताबिक हल करने की कोशिश कर रहा है.

हमें चाहिये कि चीन के तजुर्बों से और उन्होंने जो कुछ हासिल किया है उससे सबक सीखें और गांधी जी के दिखाई हुई 'सत्य और अहिंसा' की लासानी और जबरदस्त जोत में अपनी हालत के मुताबिक अपने सवालों को हल करें.

हम चीन को बधाई देते हैं और विश्वास करते हैं कि अपने तरीके से वह अपने मकसद पर पहुँच जायगा.

—'ग्राम उद्योग पत्रिका' से

هنسا کرنی ہی ہوتی ہے ۔ ہمیں اُمید ہے کہ کچھ سمے کے بعد چینی لوگوں کے نیتا محسوس کرینگے کہ ہنسا کا راستہ دیکھنے میں چھوٹا اور منزل پر جلدی پہنچانے والا بھلے معلوم ہو مگر اصل میں اُس سے کوئی سوال حل نہیں ہوا کرتے ۔ کاش ! اگر چینی لوگ کہیں اہنسا کی بنیاد پر اپنا پروگرام بنائے ہوتے تب تو دنیا کے زبردست رہنما بن جاتے ۔

روس کا کمیونزم مزدوروں یا پرولیٹیریٹ سے شروع ہوا اور وہیں وہ ختم بھی ہوگیا ۔ وہاں زار اور اُسکے دربار کے کارن مادّی یا بھوتک آدرش ہی لوگوں کے سامنے تھا ۔ اسلئے اُسکے بعد کی بولشویک سرکار نے بڑے پیمانے پر مال بنانے والے کارخانے چلانے پر زور دیا، مگر چین نے کسانوں سے شروع کیا اور اُن کے پاؤں مضبوط کرنا طے کیا ہے ۔ اور یہی ٹھیک ہے ۔ اُنہوں نے اصلی کسانوں یا زمین کسنے والوں کو کافی زمین بانٹی ہے ۔ اور اس کا انتظام اُنہیں پر چھوڑ دیا ہے ۔ مالدار کسانوں تک کا بال بھی بانکا نہ کیا گیا ۔

آج کی چینی سرکار کا خانگی ملکیت، منافع اور خانگی روزگار کے پرتی جو رخ ہے اِس پر سے اُسے کمیونسٹ نہیں کہا جاسکتا ۔ اُسکے مرکزی منتریوں میں صرف 31° منتری کمیونسٹ ہیں ۔ اس لئے آج کے چین کو کمیونسٹ کہنا بالکل غلط ہے ۔ چین میں خاص کر شنگھائی میں ایسے کئی اخبار ہیں جو دوسرے وچار ظاہر کرتے ہیں ۔ یہ ضرور ہے کہ چین میں کمیونسٹ لوگ زبردست ہیں اور کافی اثر رکھتے ہیں لیکن اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ وہ ہی سروے سروا ہیں ۔

چین نے روس کے انوبھوں سے کافی فائدہ اُٹھایا ہے پر آنکھ میچ کر اُسکی نقل نہیں کی ہے ۔ جہاں اور جب ضرورت پڑے تب چین کی سرکار کو مدد دینے کے لئے روس کے ماہر وہاں موجود ہیں صحیح، پر وہ بڑے یا آقا بنکر دیش پر کوئی حکومت نہیں چلا سکتے ۔ روس کے فوجی ماہر بھی چینی افسروں کے ماتحت ہی ہیں ۔ موٹے طور پر کہہ سکتے ہیں کہ چین اپنے سوالوں کو سمجھ بوجھ کر اپنی عقل کے مطابق حل کرنے کی کوشش کر رہا ہے ۔

ہمیں چاہئے کہ چین کے تجربوں سے اور انہوں نے جو کچھ حاصل کیا ہے اس سے سبق سیکھیں اور گاندھی جی کے دکھائی ہوئی 'ستیہ اور اہنسا' کی لاثانی اور زبردست جوت میں اپنی حالت کے مطابق اپنے سوالوں کو حل کریں ۔

ہم چین کو بدھائی دیتے ہیں اور وشواس کرتے ہیں کہ اپنے طریقے سے وہ اپنے مقصد پر پہنچ جائیگا ۔

—'گرام ادیوگ پتریکا' سے

चीन की आर्थिक तरक़्क़ी के दो साल

(के. चिया लुंग)

चीन में नये लोकराज को क़ायम हुए दो साल बीते हैं. इस अरसे में वहां की आर्थिक हालतें बुनियादी तौर पर बदल गई हैं और एक नया का नया समाज ही खड़ा हो गया है.

पुराने ज़माने से चीन एक खेतिहर मुल्क चला आता है. लेकिन किसान न अपनी ज़मीन के मालिक थे न अपनी मेहनत की कमाई चैन से खा सकते थे. उनके ऊपर ज़मींदारों का राज था जो बैठे बैठे मौज करते थे साथ ही साथ वह विदेशी साम्राज्यशाही ताक़तों के चक्कर में फंसते चले गये और उनकी फ़रमाबरदारी में ही अपनी बेहतरी समझने लगे. नतीजा यह हुआ कि जनता की हालत दिन दूना रात चौगुनी ख़राब होती चली गई. लेकिन नये लोकराज के क़ायम होने पर यह रफ़्तार ख़त्म हुई और मुल्क ने करवट बदली. पुरानी सूरतें बहुत तेज़ी से बदल रही हैं और क्या खेती, क्या उद्योग धन्धे, सब ही की काया पलट गई है. पैदावार और माल की निकासी जो आज हो रही है वह उस दर्जे को पहुंच गई है जो जापानियों के आने के पहले यहां थी, बल्कि अकसर बातों में उनको भी मात कर दिया है. पुराने कारोबारों को नये सिरे से जमा लिया गया है और नई तामीर ज़ोरों के साथ हो रही है. एक ख़ुशहाल और नई लोकराजी अर्थ नीति के बढ़ने, फूलने फलने के लिये एक ठोस बुनियाद इस तरह बन गई है.

चीन के आर्थिक संगठन को जो नई शकल दी जा सकी है इसकी वजह वह जीत है जो चीन के इन्क़लाब ने कम्यूनिस्ट पारटी की रहनुमाई में हासिल की. इससे पता चलता है कि चीन की जनता ख़ुद अपनी तक़दीर की मालिक बन गई है. साम्राज्यशाही, पूँजीशाही, नौकरशाही और ज़मींदारशाही की मिली हुई ताक़तों को उस जनता ने न सिर्फ़ लड़ाई के मैदान में ही हरा कर कुचल डाला है, बल्कि आर्थिक दायरे में भी ख़ूब पछाड़ा है. इस फ़तह के बाद वह तेज़ी के साथ एक ऐसा आर्थिक संगठन खड़ा कर रहे हैं जो उनके लिये मुफ़ीद और कारामद साबित हो—नये लोकराज की अर्थ नीति का तरीक़ा.

यह तरीक़ा जो अब तक बरता गया है उससे उसकी ऊंचाई ज़ाहिर हो चुकी है. इसकी बदौलत समाज में पैदावार करने वाली अनेकों ताक़तें, जिनके दम अब तक घुटे हुए से थे, आज़ाद हो गई हैं और पैदावार तेज़ी के साथ बढ़ रही है. इस तरीक़े से यह भी ज़ाहिर हो गया है कि क़ौमी आर्थिक निज़ाम में हुकूमत कितना महत्व भरा

چین کی آرتھک ترقی کے دو سال

(کے. چیالنگ)

چین میں نئے لوک راج قائم ہوئے دو سال بیتے ہیں. اِس عرصے میں وہاں کی آرتھک حالتیں بنیادی طور پر بدل گئی ہیں اور ایک نیا کا نیا سماج ہی کھڑا ہوگیا ہے.

پرانے زمانے سے چین ایک کھیتی ہر ملک چلا آتا ہے. لیکن کسان نہ اپنی زمین کے مالک تھے نہ اپنی محنت کی کمائی چین سے کھا سکتے تھے. اُن کے اوپر زمینداروں کا راج تھا جو بیٹھے بیٹھے موج کرتے تھے. ساتھ ہی ساتھ وہ ودیشی سامراج شاہی طاقتوں کے چکر میں پھنستے چلے گئے اور اُن کی فرمانبرداری میں ہی اپنی بہتری سمجھنے لگے. نتیجہ یہ ہوا کہ جنتا کی حالت دن دونی رات چوگنی خراب ہوتی چلی گئی لیکن نئے لوک راج کے قائم ہونے پر یہ رفتار ختم ہوئی اور ملک نے کروٹ بدلی. پرانی صورتیں بہت تیزی سے بدل رہی ہیں اور کیا کھیتی، کیا ادیوگ دھندے، سب ہی کی کایا پلٹ گئی ہے. پیداوار اور مال کی نکاسی جو آج ہو رہی ہے وہ اُس درجے کو پہنچ گئی ہے جو جاپانیوں کے آنے کے پہلے یہاں تھی، بلکہ اکثر چیزوں میں اُن کو بھی مات کر دیا ہے. پرانے کاروباروں کو نئے سرے سے جمع لیا گیا ہے اور نئی تعمیر زوروں کے ساتھ ہو رہی ہے. ایک خوش حال اور نئی لوک راجی ارتھ نیتی کے بڑھنے، پھولنے پھلنے کے لئے ایک ٹھوس بنیاد اس طرح بن گئی ہے.

چین کے آرتھک سنگٹھن کو جو نئی شکل دی جاسکی ہے اِسکی وجہ وہ جیت ہے جو چین کے انقلاب نے کمیونسٹ پارٹی کی رہنمائی میں حاصل کی. اس سے پتہ چلتا ہے کہ چین کی جنتا خود اپنی تقدیر کی مالک بن گئی ہے. سامراج شاہی، پونجی شاہی، نوکر شاہی اور زمیندار شاہی کی ملی ہوئی طاقتوں کو اُس جنتا نے نہ صرف لڑائی کے میدان میں ہی ہرا کر کچل ڈالا ہے، بلکہ آرتھک دائرے میں بھی خوب پچھاڑا ہے. اس فتح کے بعد وہ تیزی کے ساتھ ایک ایسا آرتھک سنگٹھن کھڑا کر رہے ہیں جو اُن کے لئے مفید اور کارآمد ثابت ہو—نئے لوک راج کی ارتھ نیتی کا طریقہ

یہ طریقہ جو اب تک برتا گیا ہے اُس سے اُسکی اونچائی ظاہر ہوچکی ہے. اِسکی بدولت سماج میں پیداوار کرنے والی انیکوں طاقتیں، جن کے دم اب تک گھٹے ہوئے سے تھے، آزاد ہوگئی ہیں اور پیداوار تیزی کے ساتھ بڑھ رہی ہے. اس طریقے سے یہ بھی ظاہر ہوگیا ہے کہ قومی آرتھک نظام میں حکومت کتنا مہتو بھرا

असर रखती है और उसके सहारे दूसरे आर्थिक संगठनों को—सहयोग के, किसानी और दस्तकारी के, निजी पैसे वालों के, सरकारी और निजी मिले जुले पैसे वालों के—अपने पूरे विकास और जनता की सेवा करने में कितनी मदद मिलती है. इस तरह शान्ति और साबित क़दमी के साथ लगातार सोशलिज़्म या समाजवाद की तरफ़ बढ़ा जा सकता है.

खेती सुधार.

देहातों के अन्दर खेती सुधार के ज़रिये क़रीब 31 करोड़ आदमियों की हालत बदल दी गई है. क़ौमी अक़लियतों को छोड़ कर बाक़ी सारे इलाक़े में 1952 की गर्मियों तक सारे चीन में यह सुधार कर दिया जायेगा.

एक ही सपाटे के अन्दर इस ज़मीन सुधार से पुराने ज़मींदारी या नीम ज़मींदारी ढंग को जड़ से उखाड़ फेंका गया जिसने सदियों से किसानों को दबा रखा था और जो पैदावार को बढ़ने नहीं देता था. इस सुधार के पहले ज़मींदार और मालदार किसान जिनकी तादाद दस फ़ी सदी से ज़ियादा नहीं थी सत्तर से अस्सी फ़ी सदी ज़मीन के मालिक थे. ज़मीन का बाक़ी बीस से तीस फ़ी सदी हिस्सा ग़रीब किसानों, मजदूरों, बीच के किसानों और दूसरों के पास था जिन की आबादी 90 फ़ी सदी के क़रीब थी. किसानों को लगान की शक्ल में आधी या कभी कभी 70 फ़ी सदी फ़सल से हाथ धो बैठना पड़ता था. फिर उनसे ज़बरदस्ती मज़दूरी भी कराई जाती थी. इसके अलावा उनका शोषण करने के और और तरीक़े भी थे. इसका नतीजा यह था कि चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने पर भी ग़रीब किसान न तो ज़मींदार के चंगुल से निकल पाते थे और न अपना पेट ही भर सकते थे.

लेकिन ज़मीन सुधार ने देहात की आर्थिक हालत में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ कर दिया है. वह ज़मीन जो ज़मींदार लोग शोषण के लिये अपने पास रखे हुए थे उनसे ले ली गई और बे-ज़मीन वालों या कम ज़मीन वाले किसानों को दे दी गई. ज़मींदार वर्ग का वहां अब पता ही नहीं रह गया है.

इन तबदीलियों की वजह से पैदावार ताक़तों का मानो सोता ही खुल गया है. काम करने वाली मदद के जोश का कुछ ठिकाना ही नहीं है. खेती में दिन दिन नये सुधार हो रहे हैं और खेती-मदद का संगठन दिन दिन बेहतर बनता जा रहा है. इन सब चीज़ों के कारन—फिर ऊपर से जनता की सरकार का ज़बरदस्त हाथ—पैदावार

اثر رکھتی ہے اور اس کے سہارے دوسرے آرتھک سنگٹھنوں کو—سہیوگ کے، کسانی اور دستکاری کے، نجی پیسے والوں کے، سرکاری اور نجی ملے جلے پیسے والوں کے—اپنے پورے وکاس اور جنتا کی سیوا کرنے میں کتنی مدد ملتی ہے. اس طرح شانتی اور ثابت قدمی کے ساتھ لگاتار سوشلزم یا سماج واد کی طرف بڑھا جا سکتا ہے.

کھیتی سدھار.

دیہاتوں کے اندر کھیتی سدھار کے ذریعے قریب 31 کروڑ آدمیوں کی حالت بدل دی گئی ہے. قومی اقلیتوں کو چھوڑ کر باقی سارے علاقے میں 1952 کی گرمیوں تک سارے چین میں یہ سدھار کر دیا جائیگا.

ایک ہی سپاٹے کے اندر اس زمین سدھار سے پرانے زمینداری یا نیم زمینداری ڈھنگ کو جڑ سے اکھاڑ پھینکا گیا جس نے صدیوں سے کسانوں کو دبا رکھا تھا اور جو پیداوار کو بڑھنے نہیں دیتا تھا. اس سدھار کے پہلے زمیندار اور مالدار کسان جن کی تعداد دس فیصدی سے زیادہ نہیں تھی ستر سے اسی فیصدی زمین کے مالک تھے. زمین کا باقی بیس سے تیس فیصدی حصہ غریب کسانوں، مزدوروں، بیچ کے کسانوں اور دوسروں کے پاس تھا جن کی آبادی 90 فیصدی کے قریب تھی. کسانوں کو لگان کی شکل میں آدھی یا کبھی کبھی 70 فیصدی فصل سے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑتا تھا. پھر ان سے زبردستی مزدوری بھی کرائی جاتی تھی. اس کے علاوہ ان کا شوشن کرنے کے اور طریقے بھی تھے. اس کا نتیجہ یہ تھا کہ چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہانے پر بھی غریب کسان نہ تو زمیندار کے چنگل سے نکل پاتے تھے اور نہ اپنا پیٹ ہی بھر سکتے تھے.

لیکن زمین سدھار نے دیہات کی آرتھک حالت میں زمین آسمان کا فرق کر دیا ہے. وہ زمین جو زمیندار لوگ شوشن کے لئے اپنے پاس رکھے ہوئے تھے ان سے لے لی گئی اور بے زمین والوں یا کم زمین والے کسانوں کو دے دی گئی. زمیندار ورگ کا وہاں اب پتہ ہی نہیں رہا ہے.

ان تبدیلیوں کی وجہ سے پیداوار طاقتوں کا مانو سوتا ہی کھل گیا ہے. کام کرنے والی مدد کے جوش کا کچھ ٹھکانہ ہی نہیں ہے. کھیتی میں دن دن نئے سدھار ہو رہے ہیں اور کھیتی مدد کا سنگٹھن دن دن بہتر بنتا جا رہا ہے. ان سب چیزوں کے کارن—پھر اوپر سے جنتا کی سرکار کا زبردست ہاتھ—پیداوار

जो भारी इज़ाफ़ा हुआ है वह नीचे के आंकड़ों से साफ़ जाता है—

पैदावार में तरक्क़ी (पहले की बढ़ती से बढ़ती पैदावार को, जो 1936 या 1947 में हुई, 100 मान कर)

नाम	पैदावार 1950 में	तख़मीना पैदावार 1951 में
ग़ल्ला	87.0	92.8
कपास	83.7	133.0
तम्बाकू	24.1	130.5
पटसन	114.7	227.1

इन आंकड़ों से पता चलता है कि कितनी तरक्क़ी पैदावार में हुई है. लेकिन जब हम यह सोचते हैं कि लड़ाई के और कोमिंटांग के कुराज के ज़माने में देश की पैदावार 1936—जिस साल जापान ने लड़ाई शुरू की थी—के मुक़ाबले बारह आने भर, और कहीं कहीं तो दस आने भर रह गई थी तब तो इन आंकड़ों से आंखें और भी खुल जाती हैं.

आज चीन के पास अपने खाने और पहनने के लिये काफ़ी सामान हो गया है. यह हुआ है अपनी मेहनत के बल पर, अपने साधनों के बल पर. यही नहीं, अनाज का बड़ा भंडार भी जमा है जो आड़े वक़्त काम आये. इसी का नतीजा है 1951 के शुरू के छै महीनों में चीन ने हिन्दुस्तान से राज़ी नामा किया जिस के मातहत पांच लाख टन से ऊपर ग़ल्ला यहां भेजा गया.

हमें यह समझ लेना चाहिये कि चीन की देहाती अर्थनीति इस वक़्त किसानों की निजी अर्थनीति के आधार पर क़ायम है. ज़मीन और खेती के औज़ार आम तौर से लोगों की निजी मिलकियत ही हैं. लेकिन इस देश में खेती अर्थनीति का जो आगे विकास होने जा रहा है वह चीनी इन्क़लाब के नये लोकशाही ढर्रे पर होगा और इस इन्क़लाब के रहनुमा मज़दूर लोग हैं जो किसानों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं. यह बीच की हालत है जिस के बाद समाजवाद क़ायम होगा. जनता की सरकार ने एक नहीं अनेकों ऐसे राजकाजी और आर्थिक क़दम उठाये हैं जिनसे देहाती अर्थनीति उठ कर एक ऊंचे दर्जे पर पहुंचेगी और मुश्तरका तौर पर जिसे लोग चलावेंगे. एक बड़े पैमाने पर प्रोपेगन्डा, प्रचार करके और काम काजी तालीम फैला कर किसानों को बतलाने की कोशिश है कि नया लोकशाही आर्थिक ढंग ही वह चीज़ है जिससे उनके हितों की—चाहे वह उनके मौजूदा समय के हित हों या आगे आने वाले समय के—अच्छी तरह हिफ़ाज़त हो सकती है.

दूसरी तरफ़ से सरकार ने लगान, टैक्स और क़ीमतों को भी आज़ाद नहीं छोड़ा है. उन पर क़ाबू रखने की

میں جو بھاری اضافہ ہوا ہے وہ نیچے کے آنکڑوں سے صاف ہو جاتا ہے—

پیداوار میں ترقی (پہلے کی بڑھتی سے بڑھتی پیداوار کو، جو 1936 یا 1947 میں ہوئی، 100 مان کر)

نام	پیداوار 1950 میں	تخمینہ پیداوار 1951 میں
غلہ	87.3	92 8
کپاس	83.7	133.0
تمباکو	24 1	130.5
پٹسن	114 7	227 1

ان آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ کتنی ترقی پیداوار میں ہوئی ہے. لیکن جب ہم یہ سوچتے ہیں کہ لڑائی کے اور کومنتانگ کے کوراج کے زمانے میں دیش کی پیداوار 1936—جس سال جاپان نے لڑائی شروع کی تھی—کے مقابلے بارہ آنے بھر اور کہیں کہیں تو دس آنے بھر رہ گئی تھی تب تو ان آنکڑوں سے آنکھیں اور بھی کھل جاتی ہیں۔

آج چین کے پاس اپنے کھانے اور پہننے کے لئے کافی سامان ہو گیا ہے. یہ ہوا ہے اپنی محنت کے بل پر، اپنے سادھنوں کے بل پر. یہی نہیں اناج کا تو وہاں بھنڈار بھی جمع ہے جو آڑے وقت کام آئے. اس کا نتیجہ ہے 1951 کے شروع کے چھ مہینوں میں چین نے ہندستان سے راضی نامہ کیا جس کے ماتحت پانچ لاکھ ٹن سے اوپر غلہ یہاں بھیجا گیا.

ہمیں یہ سمجھ لینا چاہئے کہ چین کی دیہاتی ارتھ نیتی اس وقت کسانوں کی نجی ارتھ نیتی کے آدھار پر قائم ہے. زمین اور کھیتی کے اوزار عام طور سے لوگوں کی نجی ملکیت ہی ہیں. لیکن اس دیش میں کھیتی ارتھ نیتی کا جو آگے وکاس ہونے جا رہا ہے وہ چینی انقلاب کے نئے لوک شاہی طور پر ہوگا. اور اس انقلاب کے رہنما مزدور لوگ ہیں جو کسانوں سے کندھے سے کندھا ملا کر چل رہے ہیں. یہ بیچ کی حالت ہے جس کے بعد سماج واد قائم ہوگا. جنتا کی سرکار نے ایک نہیں انیکوں ایسے راج کاجی اور آرتھک قدم اٹھائے ہیں جن سے دیہاتی ارتھ نیتی اٹھ کر ایک اونچے درجے پر پہونچے گی اور مشترکہ طور پر جسے لوگ چلائیں گے. ایک بڑے پیمانے پر پروپیگنڈا، پرچار کر کے اور کام کاجی تعلیم پھیلا کر کسانوں کو بتلانے کی کوشش ہے کہ نیا لوک راجی آرتھک ڈھنگ ہی وہ چیز ہے جس سے ان کے ہتوں کی—چاہے وہ ان کے موجودہ سمے کے ہت ہوں یا آگے آنے والے سمے کے—اچھی طرح حفاظت ہو سکتی ہے.

دوسری طرف سے سرکار نے لگان، ٹیکس اور قیمتوں کو بھی آزاد نہیں چھوڑا ہے. ان پر قابو رکھنے کی

वजह से किसानों की काश्त का सिलसिला देश की समूची योजनाओं में पुर होकर उनका जानदार हिस्सा बन गया है. सरकार की रहनुमाई करने के कई तरीक़े हैं. अकसर तो वह सारी पैदावार ख़रीद लेती है या किसानों को उधार देती है या और तरह से इमदाद देती है. मिसाल के तौर पर 1951 में जब देश को ज़ियादा कपास की ज़रूरत थी तो कपास की पैदावार बढ़ाने के लिये अपील निकाल दी गई. कपास उगाने वालों में से जिनको पैसे की ज़रूरत थी उन्हें पैसा दिया गया. सरकार की तरफ़ से व्योपार करने वाली कम्पनियां सब की सब कपास ख़रीद लेती थीं. ख़रीदने का भाव ऐसा रहता था जिससे पैदा करने वाले किसानों को फ़ायदा हो—एक केट्टी (यानी आध सेर के क़रीब) कपास के बदले आठ केट्टी ग़ल्ला. इस तरह से कपास की पैदावार उस निशाने को पहुंच गई या उससे भी बढ़ गई जो पहले से रखा गया था. इस से सरकार का और किसानों का सब का भला हुआ.

साथ ही साथ जनता की सरकार ने क़ुदरती मुसीबतों और आफ़तों से भी कामयाबी के साथ मोर्चा लिया है. बड़े बड़े पैमाने पर सिंचाई के ज़रिये बनाये गये हैं जैसे हुआई प्रोजेक्ट. 1950 और 1951 में इन प्रोजेक्टों में नई सरकार ने जो पैसा ख़र्च किया वह उससे कहीं ज़ियादा था जो कोमिनटांग सरकार ने अपने 22 बरस के राज में ख़र्च किया था.

इसके अलावा सरकार ने और तरह से भी किसानों का हौसला बढ़ाया है. आपसी-मदद की टोलियां बनवाईं और दूसरी तरह से सहयोग किया. इस से काम तेज़ी से हुआ और क्योंकि मिल जुल कर हुआ इस वजह से नतीजे कहीं ज़ियादा अच्छे निकले. मिसाल के तौर पर, शान्सी सूबे के उत्तरी हिस्से के उन इलाक़ों में जहां आपसी-मदद वाली टोलियां काम करती थीं, पैदावार उन इलाक़ों के मुक़ाबले दस से पचीस फ़ी सदी ज़ियादा हुई जहां किसान ख़ुद अकेले काम करते थे. आज कल किसानों की एक बड़ी तादाद ने आपसी-मदद की टोलियां बना ली हैं. उत्तर-पूर्वी चीन में 70 फ़ीसदी किसानों की इस तरह की टोलियां हैं, उत्तर चीन में 55 फ़ीसदी की. इसके अलावा चीन में इस वक़्त दो-सौ से ज़ियादा खेतिहर को-आपरेटिव हैं. कुछ खेतों पर खेती सरकार की तरफ़ से भी होती है. लेकिन उनकी तादाद बहुत थोड़ी है और वह तजुर्बे के लिये ज़ियादातर है.

इन सब सरगर्मियों का नतीजा यह हुआ कि 1951 में रबड़ के अलावा बाक़ी सब चीज़ें चीन ने अपनी ज़रूरत के लायक़ पैदा कर लीं. क्या खेती-पैदावार के लिहाज़ से क्या कारख़ानों के वास्ते कच्चे माल के लिहाज़ से सब में

وجہ سے کسانوں کی کاشت کا سلسلہ دیش کی سموچی یوجناؤں میں پر ہوکر اُن کا جاندار حصہ بن گیا ہے. سرکار کی رہنمائی کرنے کے کئی طریقے ہیں. اکثر تو وہ ساری پیداوار خرید لیتی ہے یا کسانوں کو اُدھار دیتی ہے یا اور طرح سے اِمداد دیتی ہے. مثال کے طور پر 1951 میں جب دیش کو زیادہ کپاس کی ضرورت تھی تو کپاس کی پیداوار بڑھانے کے لئے اپیل نکال دی گئی. کپاس اگانے والوں میں سے جن کو پیسے کی ضرورت تھی انہیں پیسہ دیا گیا. سرکار کی طرف سے بیوپار کرنے والی کمپنیاں سب کی سب کپاس خرید لیتی تھیں. خریدنے کا بھاؤ ایسا رہتا تھا جس سے پیدا کرنے والے کسانوں کو فائدہ ہو—ایک کیٹی (یعنی آدھ سیر کے قریب) کپاس کے بدلے آٹھ کیٹی غلہ. اِس طرح سے کپاس کی پیداوار اُس نشانے کو پہونچ گئی یا اُس سے بھی بڑھ گئی جو پہلے سے رکھا گیا تھا. اس سے سرکار کا اور کسانوں کا سب کا بھلا ہوا.

ساتھ ہی ساتھ جنتا کی سرکار نے قدرتی مصیبتوں اور آفتوں سے بھی کامیابی کے ساتھ مورچہ لیا ہے. بڑے بڑے پیمانے پر سنچائی کے ذریعے بنائے گئے ہیں جیسے ہوآئی پروجیکٹ. 1950 اور 1951 میں ان پروجیکٹوں میں نئی سرکار نے جو پیسہ خرچ کیا وہ اُس سے کہیں زیادہ تھا جو کومنٹانگ سرکار نے اپنے 22 برس کے راج میں خرچ کیا تھا.

اِسکے علاوہ سرکار نے اور طرح سے بھی کسانوں کا حوصلہ بڑھایا ہے. آپسی مدد کی ٹولیاں بنوائیں اور دوسری طرح سے سہیوگ کیا. اس سے کام تیزی سے ہوا اور کیونکہ مل جل کر ہوا اس وجہ سے نتیجے کہیں زیادہ اچھے نکلے. مثال کے طور پر، شانسی صوبے کے اُتری حصے کے اُن علاقوں میں جہاں آپسی مدد والی ٹولیاں کام کرتی تھیں، پیداوار اُن علاقوں کے مقابلے دس سے پچیس فی صدی زیادہ ہوئی جہاں کسان خود اکیلے کام کرتے تھے. آجکل کسانوں کی ایک بڑی تعداد نے آپسی مدد کی ٹولیاں بنائی ہیں. اُتر پوربی چین میں 70 فی صدی کسانوں کی اس طرح کی ٹولیاں ہیں، اُتر چین میں 55 فی صدی کی. اِسکے علاوہ چین میں اس وقت دو سو سے زیادہ کھیتی ہر کوآپریٹو ہیں. کچھ کھیتوں پر کھیتی سرکار کی طرف سے بھی ہوتی ہے. لیکن اُن کی تعداد بہت تھوڑی ہے اور وہ تجربے کے لئے زیادہ تر ہے.

اِن سب سرگرمیوں کا نتیجہ یہ ہوا کہ 1951 میں ربڑ کے علاوہ باقی سب چیزیں چین نے اپنی ضرورت کے لائق پیدا کرلیں. کیا کھیتی پیداوار کے لحاظ سے کیا کارخانوں کے واسطے کچے مال کے لحاظ سے سب میں

चीन पूरी तरह या क़रीब-क़रीब पूरी तरह स्वावलम्बी बन गया.

देहाती इलाक़ों की जो मुसीबत थी, लोग जो क़र्ज़ों के बोझ से दबे रहते थे वह चीज़ अब काफ़ूर हो गई. किसानों की माल ख़रीदने की ताक़त लगातार बढ़ती जा रही है. कारख़ानों के माल की मांग बढ़ रही है. किसान लोग देश-व्यापी पैदावार सम्बन्धी मुक़ाबलों में बड़ी ख़ुशी के साथ हिस्सा लेते हैं.

सौ बातों की एक बात यह है कि ज़मीन सुधार की बदौलत देहातों के अंदर से ज़मींदार शाही उठ गई है. किसान को ज़मीन का मालिक बना कर एक नया लोक-राजी देहाती निज़ाम वहां पर अब क़ायम हो गया है. और यह खेती का विकास व तरक़्क़ी लगातार बेहतरीन बढ़ाव पर ही है. इसके अन्दर देश के नेताओं ने बड़ी मदद दी है. दूसरी चीज़ जो इस में ख़ासी मददगार साबित हुई है वह है कारख़ानों, विदेशी व्योपार और अर्थ-माल के दूसरे दायरों में नई लोकराजी सरकार का हावी होना. इन पर हम अभी विचार करेंगे.

सनती फिर-बनाव.

हम कह चुके हैं कि देहातों के अन्दर ज़मींदारी और नीम-ज़मींदारी की सूरतों की वजह से न अनाज की पैदावार बढ़ सकती थी और न कारख़ानों को ज़रूरत के मुताबिक़ कच्चा माल ही मिल सकता था. इनकी वजह से चीन के घरेलू बाज़ार का गला मानो घुट-सा गया था. साथ ही साथ इसका लाज़मी नतीजा यह हुआ कि चीन का सनती विकास रुक गया. फिर बाहर के साम्राज्यशाही देशों ने तो जले पर नमक छिड़कने का काम किया.

सच यह है कि विदेशी पूंजी ने हमारी ख़ास ख़ास सनतों और उद्योग-धन्धों पर अपना सिक्का जमा लिया था. अकसर तो उसका इशारा ही बन गये थे. एक वक़्त ऐसा था जब जापानी और अंग्रेज़ी पैसा हमारे यहां के कोयले, लोहे, कपड़े, तम्बाकू और साबुन के कारख़ानों को सोलह आने अपने क़ाबू में किये हुए था. इस तरह ज़ाहिर या छिपे ढंग से साम्राज्यशाही ताक़तों और उनके चीनी दलालों ने—नौकर शाही के मनाने वाले पूंजीपति और ज़मींदार—पुराने चीन की सनत को ग़ारत करके उसे विदेशी पूंजीपतियों के हाथ का खिलौना बना दिया था. इसी वजह से हल्की दस्तकारियां तो यहां चलाई जाती थीं और भारी सामान या मशीनरी वग़ैरा बाहर से ही आया करते थे. यह सब जानकर किया गया था ताकि देश दूसरों का मोहताज बना रहे और कभी अपने पैरों पर खड़ा न हो सके. थोड़े बहुत कारख़ाने जो थे वह समुद्र के पास वाले शहरों में थे जिन पर विदेशियों का

چین پوری طرح یا قریب قریب پوری طرح سواولمبی بن گیا .

دیہاتی علاقوں کی جو مصیبت تھی، لوگ جو قرضوں کے بوجھ سے دبے رہتے تھے وہ چیز اب کافور ہوگئی. کسانوں کی مال خریدنے کی طاقت لگاتار بڑھتی جا رہی ہے . کارخانوں کے مال کی مانگ بڑھ رہی ہے . کسان لوگ دیش ویاپی پیداوار سمبندھی مقابلوں میں بڑی خوشی کے ساتھ حصہ لیتے ہیں .

سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ زمین سدھار کی بدولت دیہاتوں کے اندر سے زمیندار شاہی اٹھ گئی ہے . کسان کو زمین کا مالک بناکر ایک نئی لوک راجی دیہاتی نظام وہاں پر اب قائم ہوگیا ہے . اور یہ کھیتی کا وکاس و ترقی لگاتار بہترین بڑھاوے پر ہی ہے . اسکے اندر دیش کے نیتاؤں نے بڑی مدد دی ہے . دوسری چیز جو اس میں خاصی مددگار ثابت ہوئی ہے وہ ہے کارخانوں، ودیشی بیوپار اور ارتھ مال کے دوسرے دائروں میں نئی لوک راجی سرکار کا حاوی ہونا . ان پر ہم ابھی وچار کرینگے .

صنعتی پھر بناؤ .

ہم کہہ چکے ہیں کہ دیہاتوں کے اندر زمینداری اور نیم زمینداری کی صورتوں کی وجہ سے نہ اناج کی پیداوار بڑھ سکتی تھی اور نہ کارخانوں کو ضرورت کے مطابق کچا مال ہی مل سکتا تھا . ان کی وجہ سے چین کے گھریلو بازار کا گلا مانو گھٹ سا گیا تھا . ساتھ ہی ساتھ اسکا لازمی نتیجہ یہ ہوا کہ چین کا صنعتی وکاس رک گیا . پھر باہر کے سامراج شاہی دیشوں نے توجلے پر نمک چھڑکنے کا کام کیا .

سچ یہ ہے کہ ودیشی پونجی نے ہماری خاص خاص صنعتوں اور ادیوگ دھندوں پر اپنا سکہ جما لیا تھا . اکثر تو اسکا اشارہ ہی بن گئے تھے . ایک وقت ایسا تھا جب جاپانی اور انگریزی پیسہ ہمارے یہاں کے کوئلے، لوہے، کپڑے، تمباکو اور صابن کے کارخانوں کو سولہ آنے اپنے قابو میں کئے ہوئے تھا . اس طرح ظاہر یا چھپے ڈھنگ سے سامراج شاہی طاقتوں اور اسکے چینی دلالوں نے—نوکر شاہی کے منانے والے پونجی پتی اور زمیندار—پرانے چین کی صنعت کو غارت کرکے اسے ودیشی پونجی پتیوں کے ہاتھ کا کھلونا بنا دیا تھا . اسی وجہ سے ہلکی دستکاریاں تو یہاں چلائی جاتی تھیں اور بھاری سامان یا مشینری وغیرہ باہر سے ہی آیا کرتے تھے . یہ سب جانکر کیا گیا تھا تاکہ دیش دوسروں کا محتاج بنا رہے اور کبھی اپنے پیروں پر کھڑا نہ ہوسکے. تھوڑے بہت کارخانے جو تھے وہ سمندر کے پاس والے شہروں میں تھے جن پر ودیشیوں کا

दूर था. फिर इससे अगर कैश पहुँचता था तो कुछ खास गिने चुने लोगों को जो हुकूमत व व्योपार में अपना असर जमाये हुए थे. आम जनता के लिहाज़ से इन कारखानों का होना न होना बराबर था. 1948 में शंघाई शहर की तीन हज़ार फैक्ट्रियों में रेशम, लचकदार पलंग, डिब्बा बन्द खाना, खुशबूदार सामान वग़ैरा जैसी ऐश की चीज़ें बनती थीं जिनको मामूली आदमी सपने में भी नहीं खरीद सकता था.

मगर आज़ादी के नये आन्दोलन ने इन सब साम्राज-शाही परदेसियों को ठिकाने पर लगा दिया और उनके सब अधिकार व रियायतें खत्म कीं. चीन की सनत जो साम्राजशाही और नौकरशाही पूँजी परस्तों के हाथ में जनता को चूसने का एक ज़रिया थी अब वह जनता की सेवक बन गई. देश की कुल पैदावार का दस फ़ीसदी हिस्सा अब कारखानों में तैयार हो रहा है. नये लोकराजी निज़ाम में कारखानों व सनत का फिर से संगठन किया जा रहा है. उसके तरीक़े हम नीचे दे रहे हैं.

नौकर शाह पूँजीपतियों के पास जो कारोबार थे और वह कारोबार भी जो जापानी साम्राजशाहों से उन्होंने ले लिये थे अब ज़ब्त कर लिये गये और जनता की सरकार ने उनको अपने हाथ में लिया. भारी सनत का क़रीब तेरह आने भर माल और हलकी सनत का क़रीब पांच आने भर माल अब सरकार बना रही है. मौजूदा कारखानों और फ़ैक्ट्रियों की निकासी का क़रीब आधा हिस्सा सरकारी कारखानों से निकल रहा है.

खास बात यह है कि इन सरकारी कारखानों को—जो सोशलिस्ट ढंग पर चलाये जा रहे हैं—एक ठोस शक्ल देने की कोशिश सरकार लगातार कर रही है. उनकी तरफ़ वह बेहद ध्यान दे रही है. उनमें उसने काफ़ी पैसा लगाया है. इसमें कोई शक नहीं है कि यह चीज़ और बढ़ेगी और यह जल्दी ही चीन के जीवन का एक ज़बरदस्त हिस्सा बन कर सारे देश की अर्थनीति को नये लोकराज के रास्ते पर चलने में मदद देगी.

ग़ुलाम या नीम-ग़ुलाम देशों में अकसर ऐसा होता रहा है कि विदेशी ताक़त वहां के उद्योग-धन्धों को हमेशा अपाहिज बनाये रखती है. मिसाल के तौर पर चीन में कच्चा लोहा तो काफ़ी तादाद में पैदा होता था मगर वह बाहर भेज दिया जाता था. बजाये इसके कि कच्चे लोहे को पक्के लोहे में चीन में ही बदला जाये पक्का लोहा विदेशों से आता था. लेकिन आज कुल काम—खान में से कच्चा लोहा निकालने से उसे गला-तपाकर पक्की शक्ल में तैयार करना—चीन में ही हो जाता है. इस तरह से कच्चे-पक्के माल के बीच की जो खाई थी उसे एक दम

ہی تھا . پھر اس سے اگر کوئی پہنچتا تھا تو کچھ خاص گنے چنے لوگوں کو جو حکومت و بیوپار میں اپنا اثر جمائے ہوئے تھے . عام جنتا کے لحاظ سے ان کارخانوں کا ہونا نہ ہونا برابر تھا . 1948 میں شنگھائی شہر کی تین ہزار فیکٹریوں میں ریشم، لچکدار پلنگ، ڈبا بند کھانا، خوشبودار سامان وغیرہ جیسی عیش کی چیزیں بنتی تھیں جنکو معمولی آدمی سپنے میں بھی نہیں خرید سکتا تھا .

مگر آزادی کے نئے آندولن نے ان سب سامراج شاہی پردیسیوں کو ٹھکانے پر لگا دیا اور ان کے سب ادھیکار و رعایتیں ختم کیں . چین کی صنعت جو سامراج شاہی اور نوکر شاہ پونجی پرستوں کے ہاتھ میں جنتا کو چوسنے کا ایک ذریعہ تھی اب وہ جنتا کی سیوک بن گئی . دیش کی کل پیداوار کا دس فیصدی حصہ اب کارخانوں میں تیار ہو رہا ہے . نئے لوک راجی نظام میں کارخانوں و صنعت کا پھر سے سنگٹھن کیا جا رہا ہے . اس کے طریقے ہم نیچے دے رہے ہیں .

نوکر شاہ پونجی پتیوں کے پاس جو کاروبار تھے اور وہ کاروبار بھی جو جاپانی سامراج شاہوں سے انہوں نے لے لئے تھے اب ضبط کر لئے گئے اور جنتا کی سرکار نے ان کو اپنے ہاتھ میں لیا . بھاری صنعت کا قریب تیرہ آنے بھر مال اور ہلکی صنعت کا قریب پانچ آنے بھر مال اب سرکار بنا رہی ہے . موجودہ کارخانوں اور فیکٹریوں کی نکاسی کا قریب آدھا حصہ سرکاری کارخانوں سے نکل رہا ہے .

خاص بات یہ ہے کہ ان سرکاری کارخانوں کو—سوشلسٹ ڈھنگ پر چلائے جا رہے ہیں—ایک ٹھوس شکل دینے کی کوشش سرکار لگاتار کر رہی ہے . ان کی طرف وہ بے حد دھیان دے رہی ہے . ان میں اس نے کافی پیسہ لگایا ہے . اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ یہ چیز اور بڑھے گی اور یہ جلدی ہی چین کے جیون کا ایک زبردست حصہ بن کر سارے دیش کی ارتھ نیتی کو نئے لوک راج کے راستے پر چلنے میں مدد دے گی .

غلام یا نیم غلام دیشوں میں اکثر ایسا ہوتا رہا ہے کہ ودیشی طاقت وہاں ادیوگ دھندوں کو ہمیشہ اپاہج بنائے رکھتی ہے . مثال کے طور پر چین میں کچا لوہا تو کافی تعداد میں پیدا ہوتا تھا مگر یہ باہر بھیج دیا جاتا تھا . بجائے اس کے کہ کچے لوہے کو پکے لوہے میں چین میں ہی بدلا جائے پکا لوہا ودیشوں سے آتا تھا . لیکن آج کل کام—کھان میں سے کچا لوہا نکالنے سے لیکر اسے گلا تپا کر پکی شکل میں تیار کرنا—چین میں ہی ہو جاتا ہے . اس طرح سے کچے پکے مال کے بیچ کی جو کھائی تھی اسے ایک دم

बाद दिया गया है. देश की ज़रूरी सनअती पैदावार अब संभल गयी है. इसकी वजह से चीन का आगे का विकास योजना के मुताबिक और ढंग से हो सकेगा.

चीन के इस सारे फिर-बनाव में, वहां के कुछ उद्योग-कारख़ानों को जो पहले चलते थे मगर अब मुरदार पड़े थे, तेज़ी के साथ चालू कर दिये गये हैं. उन में माल की निकासी काफ़ी हो रही है और अकसर में तो पैदावार पहले से कहीं ज़ियादा बढ़ी चढ़ी है. कुछ धंधे धीरे धीरे तरक़्क़ी कर रहे हैं. कुछ ऐसे जिनकी ज़रूरत नहीं थी बन्द कर दिये गये हैं. सब में ज़ियादा ज़ोर के साथ जो काम चल रहा है वह है खेती के औज़ार बनाना. और भोग-विलास की चीज़ों की तैयारी बहुत कम होगई है.

चीन की आर्थिक ग़ुलामी या नीम-ग़ुलामी की जगह अब आज़ादी का बोल बाला है. नये लोकराजी ढंग पर सब संगठन किया जा रहा है. उद्योग-धंधों की हैरतनाक तरक़्क़ी का अन्दाज़ नीचे के आंकड़ों से लगाया जा सकता है :—

1950 और 1951 में कुछ ख़ास ख़ास धन्दों में निकासी.

(बड़ी दीवार के उत्तर में 1943 के और दक्खिन में 1936 के आंकड़ों को 100 मानकर)

	उद्योग	निकासी सन 1950	तख़मीना निकासी सन् 1951
1.	पिग लोहा	48·5	64·0
2.	स्टील लोहा	68·5	97·0
3.	लोहे का माल	67·0	120·0
4.	सिमेन्ट	65·7	107·0
5.	तांबा	253·0	333·0
6.	शीशा	119·5	138·0
7.	कास्टिक सोडा	82·1	244·0
8.	ख़ालिस सोडा	97·1	124·0
9.	सूत	100·3	105·9
10.	सूती माल	108·7	113·5
11.	काग़ज़	114·5	155·0
12.	टायर	66·0	196·0

इस तरह देश में उद्योग-धन्धे और कारख़ाने बढ़ाने की बुनियाद डाली जा रही है. इसके बल पर देश सोलह आने आर्थिक तौर से आज़ाद हो सकेगा और लोग ख़ुशी से अपना जीवन बिता सकेंगे.

जहां तक कारख़ानों में काम करने वाले मज़दूरों की बात है उनके उत्साह का कोई ठिकाना ही नहीं है. पैदावार बढ़ाने के लिये देश भर में होड़ लगी हुई है. सरकार की

بانٹ دیا گیا ہے. دیش کی ضروری صنعتی پیداوار اب سنبھل گئی ہے. اس کی وجہ سے چین کا آگے کا وکاس یوجنا کے مطابق اور ڈھنگ سے ہو سکیگا.

چین کے اس سارے پھر بناؤ میں، وہاں کے کچھ ادیوگ کارخانوں کو جو پہلے چلتے تھے مگر اب مردار پڑے تھے، تیزی کے ساتھ چالو کر دئے گئے ہیں. ان میں مال کی نکاسی کافی ہو رہی ہے اور اکثر میں تو پیداوار پہلے سے کہیں زیادہ بڑھی چڑھی ہے. کچھ دھندھے دھیرے دھیرے ترقی کر رہے ہیں. کچھ ایسے جنکی ضرورت نہیں تھی بند کر دئے گئے ہیں. سب میں زیادہ زور کے ساتھ جو کام چل رہا ہے وہ ہے کھیتی کے اوزار بنانا. اور بھوگ بلاس کی چیزوں کی تیاری بہت کم ہوگئی ہے.

چین کی آرتھک غلامی یا نیم غلامی کی جگہ اب آزادی کا بول بالا ہے. نئے لوک راجی ڈھنگ پر سب سنگٹھن کیا جا رہا ہے. ادیوگ دھندوں کی حیرتناک ترقی کا اندازہ نیچے کے آنکڑوں سے لگایا جا سکتا ہے:—

1950 اور 1951 میں کچھ خاص خاص دھندوں میں نکاسی.

(بڑی دیوار کے اتر میں 1943 کے اور دکھن میں 1936 کے آنکڑوں کو 100 مان کر)

	ادیوگ	نکاسی سن 1950	تخمینہ نکاسی سن 1951
1.	پگ لوہا	48·5	64·0
2.	اسٹیل لوہا	68·5	97·0
3.	لوہے کا مال	67·0	120·0
4.	سیمنٹ	65·7	107·0
5.	تانبا	253·0	333·0
6.	شیشہ	119·5	138·0
7.	کاسٹک سوڈا	82·1	244·0
8.	خالص سوڈا	97·1	124·0
9.	سوت	100·3	105·9
10.	سوتی مال	108·7	113·5
11.	کاغذ	114·5	155·0
12.	ٹائر	66·0	196·0

اسی طرح دیش میں ادیوگ دھندے اور کارخانے بڑھانے کی بنیاد ڈالی جا رہی ہے. اسکے بل پر دیش سولہ آنے آرتھک طور سے آزاد ہو سکیگا اور لوگ خوشی سے اپنا جیون بتا سکینگے.

جہاں تک کارخانوں میں کام کرنے والے مزدوروں کی بات ہے ان کے اتساہ کا کوئی ٹھکانا ہی نہیں ہے. پیداوار بڑھانے کے لئے دیش بھر میں ہوڑ لگی ہوئی ہے. سرکار کی

तरफ़ से इस बारे में ख़ास प्रोग्राम हैं—हाल की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि इस प्रोग्राम में बाईस लाख से ऊपर मर्द-औरत शरीक हैं. 1950 में मज़दूरों की तरफ़ से जो सुझाव आये, उनमें से क़रीब पचीस हज़ार अपना लिये गये. इससे उनको और भी ख़ुशी हुई और उनका काम पहले से ज़ियादा बेहतर और ऊंची तादाद में होने लगा. इसकी वजह से चीज़ों की लागत घटी और पैदावार और भी बढ़ी. अक्तूबर 1951 तक उत्तर-पूरब चीन के सरकारी कारख़ानों में मज़दूरों ने जो पैदावार बढ़ा कर और लागत घटा कर देश की दौलत में इज़ाफ़ा किया है उसकी क़ीमत क़रीब एक करोड़ टन अनाज की क़ीमत के बराबर बैठेगी.

विदेशी व्योपार में नया दौर.

अन्दरूनी कारोबार और व्योपार में तबदीली के साथ साथ चीन के बाहरी कारोबार और विदेशी व्योपार में भी बुनियादी फ़र्क़ पैदा हो गया है. एक सदी के ऊपर से चीन एक ऐसा अड्डा बन गया था जहां साम्राजशाही ताक़तें अपना पक्का माल लाकर पाट देती थीं और वहां का कच्चा माल सस्ते भाव पर ले जाती थीं. इसके अलावा कस्टम्स (विदेशी चुंगी) का इन्तज़ाम भी विदेशियों या उनके चीनी दलालों के हाथों में था. मगर अब वह अपने असली मालिकों यानी चीनी लोगों के हाथ में आ गया है. इसका बन्दोबस्त इस तरह किया जाता है जिससे चीन की खेती और कारख़ाने बढ़ें और उसके आर्थिक बनाव में सुभीता हो.

इस नई पालिसी का नतीजा यह है कि आज चीन में सिर्फ़ वही चीज़ें बाहर से आती हैं जिनकी सचमुच ज़रूरत है. ग़ैर-ज़रूरी सामान अब नहीं मंगाया जाता. जो चीज़ ज़ियादातर बाहर से आती है वह है मशीन और मशीनरी का सामान. इस सूरत में पहले की सूरत के मुक़ाबले ज़मीन आसमान का फ़र्क़ पैदा हो गया है.

सन 1932 में च्यांग-काई-शेक के पिछलग्गू राज में चावल, गेहूं और शक्कर तक बाहर से आते थे. अन्दर आने वाले माल यानी आयात का 20·75 फ़ी सदी इस तरह ख़र्च हो जाता था, दूसरे 19·88 फ़ी सदी में कपास, कपड़ा और सूती माल शामिल था. इस तरह 40 फ़ी सदी आयात खाने-पीने, कपड़े की चीज़ों में निकल जाती थी जो कि चीन जैसे खेतिहर मुल्क के लिये बड़ी शरम की बात है.

चार बरस बाद 1936 में जनता की विदेशी पूँजी को कोमिनटांग सरकार ने पानी की तरह बहाना शुरू किया. आयात का 76·32 फ़ी सदी पक्के और अध पक्के माल में ख़त्म कर दिया, 6·37 फ़ी सदी मशीनरी व औज़ार में, और 9·37 फ़ीसदी कीमिया सामान में.

طرف سے اس بارے میں خاص پروگرام ہیں—حال کی ایک رپورٹ سے پتہ چلتا ہے کہ اس پروگرام میں بائیس لاکھ سے اوپر مرد عورت شریک ہیں۔ 1950 میں مزدوروں کی طرف سے جو سجھاؤ آئے، ان میں سے قریب پچیس ہزار اپنا لئے گئے۔ اس سے ان کو اور بھی خوشی ہوئی اور ان کا کام پہلے سے زیادہ بہتر اور اونچی تعداد میں ہونے لگا۔ اس کی وجہ سے چیزوں کی لاگت گھٹی اور پیداوار اور بھی بڑھی۔ اکتوبر 1951 تک اتر پورب چین کے سرکاری کارخانوں میں مزدوروں نے جو پیداوار بڑھا کر اور لاگت گھٹا کر دیش کی دولت میں اضافہ کیا ہے اس کی قیمت قریب ایک کروڑ ٹن اناج کی قیمت کے برابر بیٹھے گی۔

ودیشی بیوپار میں نیا دور۔

اندرونی کاروبار اور بیوپار میں تبدیلی کے ساتھ ساتھ چین کے باہری کاروبار اور ودیشی بیوپار میں بھی بنیادی فرق پیدا ہوگیا ہے۔ ایک صدی کے اوپر سے چین ایک ایسا اڈا بن گیا تھا جہاں سامراجی شاہی طاقتیں اپنا پکا مال لا کر پاٹ دیتی تھیں اور وہاں کا کچا مال سستے بھاؤ پر لے جاتی تھیں۔ اس کے علاوہ کسٹمس (ودیشی چنگی) کا انتظام بھی ودیشیوں یا ان کے چینی دلالوں کے ہاتھوں میں تھا۔ مگر اب وہ اپنے اصلی مالکوں یعنی چینی لوگوں کے ہاتھ میں آگیا ہے۔ اس کا بندوبست اسطرح کیا جاتا ہے جس سے چین کی کھیتی اور کارخانے بڑھیں اور اسکے آرتھک بناؤ میں سبھیتا ہو۔

اس نئی پالیسی کا نتیجہ یہ ہے کہ آج چین میں صرف وہی چیزیں باہر سے آتی ہیں جن کی سچ مچ ضرورت ہے۔ غیر ضروری سامان اب نہیں منگایا جاتا ہے۔ جو چیز زیادہ تر باہر سے آتی ہے وہ ہے مشین اور مشینری کا سامان۔ اس صورت میں پہلے کی صورت کے مقابلے زمین آسمان کا فرق پیدا ہوگیا ہے۔

سن 1932 میں چیانگ کائی شیک کے پچھلگو راج میں چاول، اور گیہوں شکر تک باہر سے آتے تھے۔ اندر آنے والے مال یعنی آیاتی کا 20·75 فیصدی اسطرح خرچ ہوجاتا تھا، دوسرے 19·88 فیصدی میں کپاس، کپڑا اور سوتی مال شامل تھا۔ اسطرح 40 فیصدی آیاتی کھانے پینے، کپڑے کی چیزوں میں نکل جاتی تھی جو کہ چین جیسے کھیتی ہر ملک کے لئے بڑی شرم کی بات ہے۔

چار برس بعد 1936 میں جنتا کی ودیشی پونجی کو کومنٹانگ سرکار نے پانی کی طرح بہانا شروع کیا۔ آیاتی کا 26·32 فیصدی پکے اور ادھ پکے مال میں ختم کر دیا، 6·37 فیصدی مشینری و اوزار میں، اور 9·37 فیصدی کیمیا سامان میں۔

कोमिनतांग राज के ज़माने में—1945 से लेकर उस वक़्त तक जब वह आज़ाद हुए—बाज़ार पटे पड़े थे ऐसे अमरीकी माल से जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, जैसे कपड़ा, प्लास्टिक का सामान, सिगरेट, पेटेन्ट दवायें, साबुन दांतों का पेस्ट, मोज़े, होंठों की पालिश और चिकना कागज़ थी चीन के अपने देहाती धन्धे तो एक दम चौपट थे. लेकिन 1949 में जनता के हाथ में ताक़त आने पर यह सूरत बिलकुल बदल गई. अब जो चीज़ें बाहर से आती हैं वह हैं कारखानों के लिये कच्चा माल, मशीनरी वग़ैरा. चीन के विदेशी व्योपार की नई दिशा का इससे अन्दाज़ा अच्छी तरह लगाया जा सकता है कि अन्दर आने वाले माल में 97 फ़ी सदी मशीनरी व मशीनरी का सामान था जो सबका सब रूस से आया.

दूसरी तरफ़, जनता की सरकार की यह लगातार कोशिश रहती है कि अपनी ज़रूरत से ज़ियादा जो खेती या जानवरों से मिलने वाला माल हो या धातु और दस्तकारी की चीज़ें हों वह बाहर भेज दी जायें. इसी वजह से 1950 में हमने जितना माल बाहर भेजा उतना पिछले बीस साल में कभी न भेजा था. यही सूरत 1951 में रही. अगर 1936 में बाहर जाने वाले निकासी की तादाद को 100 मानें, तो 1950 में यह 134 पर पहुंची और 1951 में 160 पर. अन्दर आने वाले कुल आयाती का 70·52 फ़ी सदी हिस्सा सरकारी कारखानों में गया और जाने वाले निकासी का 53·29 फ़ी सदी वहां से गया.

कहने की ज़रूरत नहीं कि पहले चीन का ज़ियादातर व्योपार पूंजीशाही और साम्राज्यशाही देशों से चलता था. 1936 में चीन के विदेशी व्यापार का 22·54 फ़ी सदी (क़रीब एक चौथाई) अमरीका से होता था और आधे फ़ी सदी से भी कम (सौ रुपये में पांच आने के क़रीब) रूस से. 1946 में अमरीका का हिस्सा 53·10 हो गया. लेकिन 1950 में यह नक़्शा एक दम पलट दिया गया. नये चीन का रूस से व्यापार बढ़ कर 23·36 फ़ी सदी हो गया. यही सूरत अब भी जारी है—

1950 और 1951 में चीन का विदेशी व्योपार.

(तख़मीना)

देश	आयाती 1950	आयाती 1951
रूस	19·84 फ़ी सदी	44·70 फ़ी सदी
नये राज वाले देश	1·37 "	25·33 "
पूंजी पति देश	78·79 "	29·97 "
देश	निकासी 1950	निकासी 1951
रूस	26·58 फ़ी सदी	51·51 फ़ी सदी
नये राज वाले देश	3·87 "	26·43 "
पूंजी पति देश	69·55 "	22·06 "

کومنتانگ راج کے زمانے میں—1945 سے لیکر اس وقت تک جب وہ آزاد ہوئے—بازار پٹے پڑے تھے ایسے امریکی مال سے جس کی کوئی ضرورت نہیں تھی، جیسے کپڑا، پلاسٹک کا سامان، سگریٹ، پیٹنٹ دوائیں، صابن، دانتوں کا پیسٹ، موزے، ہونٹوں کی پالش اور چکنا کاغذ بھی چین کے اپنے دیہاتی دھندے تو ایک دم چوپٹ تھے. لیکن 1949 میں جنتا کے ہاتھ میں طاقت آنے پر یہ صورت بالکل بدل گئی. اب جو چیزیں باہر سے آتی ہیں وہ ہیں کارخانوں کے لئے کچا مال، مشینری وغیرہ. چین کے ودیشی بیوپار کی نئی روش کا اس سے اندازہ اچھی طرح لگایا جا سکتا ہے کہ اندر آنے والے مال میں 97 فی صدی مشینری و مشینری کا سامان تھا جو سب کا سب روس سے آیا.

دوسری طرف، جنتا کی سرکار کی یہ لگاتار کوشش رہتی ہے کہ اپنی ضرورت سے زیادہ جو کھیتی کا یا جانوروں سے ملنے والا مال ہو یا دھاتو اور دستکاری کی چیزیں ہوں وہ باہر بھیج دی جائیں. اسی وجہ سے 1950 میں ہم نے جتنا مال باہر بھیجا اتنا پچھلے بیس سال میں کبھی نہ بھیجا تھا. یہی صورت 1951 میں رہی. اگر 1936 میں باہر جانے والے نکاسی کی تعداد کو 100 مانیں، تو 1950 میں یہ 134 پر پہنچی اور 1951 میں 160 پر. اندر آنے والی کل آیاتی کا 70·52 فی صدی حصہ سرکاری کارخانوں میں گیا اور نکاسی کا 53.29 فی صدی وہاں سے گیا—

کہنے کی ضرورت نہیں کہ پہلے چین کا زیادہ تر بیوپار پونجی شاہی اور سامراج شاہی دیشوں سے چلتا تھا. 1936 میں چین کے ودیشی بیوپار کا 22·54 فی صدی (قریب ایک چوتھائی) امریکہ سے ہوتا تھا اور آدھے فی صدی سے بھی کم (سو روپئے میں پانچ آنے کے قریب) روس سے. 1946 میں امریکہ کا حصہ 53·10 ہو گیا. لیکن 1950 میں یہ نقشہ ایک دم پلٹ دیا گیا. نئے چین کا روس سے بیوپار بڑھ کر 23·36 فی صدی ہو گیا. یہی صورت اب بھی جاری ہے—

1950 اور 1951 میں چین کا ودیشی بیوپار.

(تخمینہ)

دیش	آیاتی 1950	آیاتی 1951
روس	19·84 فی صدی	44·70 فی صدی
نئے راج والے دیش	1·37 "	25·33 " "
پونجی پتی دیش	78·79 "	29·97 " "
دیش	نکاسی 1950	نکاسی 1951
روس	26·58 فی صدی	51·51 فی صدی
نئے راج والے دیش	3.87 " "	26·43 " "
پونجی پتی دیش	69·55 " "	22·06 " "

एक बात और ध्यान देने की है कि पूँजी पति देश जो चीन से लेन देन करते थे तो उसको गुलाम रखने और मोहताज बनाने के ख़याल से. लेकिन अब जो रूस और दूसरे जनराजवादी देशों से चीन ने नये समझौते किये हैं वह दोस्ती, बराबरी और आपसी बेहतरी के आधार पर किये हैं. मिसाल के तौर पर, रूस से जो मशीनरी और मशीन सामान हमें मिलता है वह पूंजी पति देशों से लिये जाने वाले सामान के मुक़ाबले 20 फ़ी सदी के क़रीब सस्ता पड़ता है.

इन तबदीलियों का यह नतीजा है कि 73 बरस में पहली बार चीन का विदेशी व्योपार घाटे की जगह मुनाफ़े का रहा. साथ ही साथ व्योपार की कुल तादाद 1950 में जितनी थी उतनी पिछले बीस बरस में कभी न रही.

पाठक जानते होंगे कि अमरीका और अंगरेज़ साम्राज-शाहों की मिली-भगत की वजह से कुछ देशों ने आजकल चीन से लेन-देन बन्द कर दिया है. लेकिन इस ज़ियादती से हमारे जीवन या हमारी आर्थिक हालत में रत्ती भर भी फ़रक़ नहीं पड़ सका है. चीन को आर्थिक गुलाम बनाने और डराने-धमकाने की अपनी कोशिश में वह बुरी तरह नाकामयाब रहे. लेकिन, चीन अपने रास्ते पर अटल है. वह वही है जो हमारे मुश्तरका प्रोग्राम की 57 वीं धारा में दिया हुआ है, यानी "विदेशी सरकारों और लोगों से व्यापारी सम्बन्ध क़ायम करना और उनको बराबरी और आपसी बेहतरी की बुनियाद पर बढ़ाना."

इस नीति की वजह से चीन के विदेशी व्योपार के साथ साथ अन्दरूनी व्योपार और संगठन में कमाल की तरक़्क़ी हुई है, जिस की तफ़सील में हम इस वक़्त नहीं जायेंगे.

जैसे, आमदरफ़्त के मामले में सारी रेलें सरकार के पास हैं. किराये की जो दरें 1950 में थीं वह पहले से कहीं कम थीं. नदियों और साहिल के पास की आमद रफ़्त—जो पहले परदेसियों के हाथों में थी—का 41.2 फ़ी सदी सरकार के पास है. देश भर की 30 फ़ी सदी मोटर लारियां सरकार चला रही है.

इसी तरह से सिक्के (करेन्सी) और साहूकारे (बैंकिंग) में जो सुधार किये हैं उन्होंने आर्थिक फिर-बनाव में बुनियादी मदद दी है. चीन के इतिहास में पहली बार, सारे देश में सिक्का एकसा चलता है और इसकी हालत डांवा डोल न हो कर क़ायम व ठोस है. बारह साल से जो भाव चढ़ते चले जा रहे थे वो 1950 के शुरू में पूरी तरह रुक गये और सरकार उन पर हावी हुई. आज हालत यह है कि कुल मनीमार्केट (सिक्का बाज़ार) सरकार के क़ाबू में है.

ایک بات اور دھیان دینے کی ہے کہ پونجی پتی دیش جو چین سے لین دین کرتے تھے تو اُسکو غلام رکھنے اور محتاج بنانے کے خیال سے. لیکن اب جو روس اور دوسرے جن راج وادی دیشوں سے چین نے نئے سمجھوتے کئے ہیں وہ دوستی، برابری اور آپسی بہتری کے آدھار پر کئے ہیں. مثال کے طور پر، روس سے جو مشینری اور مشین سامان ہمیں ملتا ہے وہ پونجی پتی دیشوں سے لئے جانے والے سامان کے مقابلے 20 فی صدی کے قریب سستا پڑتا ہے.

اِن تبدیلیوں کا یہ نتیجہ ہے کہ 73 برس میں پہلی بار چین کا ودیشی بیوپار گھاٹے کی جگہ منافے کا رہا. ساتھ ہی ساتھ بیوپار کی کل تعداد 1950 میں جتنی تھی اُتنی پچھلے بیس برس میں کبھی نہ رہی.

پاٹھک جانتے ہوں گے کہ امریکہ اور انگریز سامراج شاہوں کی ملی بھگت کی وجہ سے کچھ دیشوں نے آج کل چین سے لین دین بند کر دیا ہے. لیکن اِس زیادتی سے ہمارے جیون یا ہماری آرتھک حالت میں رتی بھر بھی فرق نہیں پڑ سکا ہے. چین کو آرتھک غلام بنانے اور ڈرانے دھمکانے کی اپنی کوشش میں وہ بری طرح ناکامیاب رہے. لیکن، چین اپنے راستے پر اٹل ہے. وہ وہی ہے جو ہمارے مشترکہ پروگرام کی 57 ویں دھارا میں دیا ہوا ہے یعنی "ودیشی سرکاروں اور لوگوں سے بیوپاری سمبندھ قائم کرنا اور اُن کو برابری اور آپسی بہتری کی بنیاد پر بڑھانا."

اِس نیتی کی وجہ سے چین کے ودیشی بیوپار کے ساتھ ساتھ اندرونی بیوپار اور سنگٹھن میں کمال کی ترقی ہوئی ہے، جس کی تفصیل میں ہم اِس وقت نہیں جائیں گے.

جیسے، آمدورفت کے معاملے میں ساری ریلیں سرکار کے پاس ہیں. کرائے کی جو دریں 1950 میں تھیں وہ پہلے سے کہیں کم تھیں. ندیوں اور ساحل کے پاس کی آمدورفت—جو پہلے پردیسیوں کے ہاتھوں میں تھی—کا 41.2 فی صدی سرکار کے پاس ہے. دیش بھر کی 30 فی صدی موٹر لاریاں سرکار چلا رہی ہے.

اِسی طرح سے سکے (کرینسی) اور ساہوکارے (بینکنگ) میں جو سدھار کئے ہیں اُنہوں نے آرتھک پھر بناؤ میں بنیادی مدد دی ہے. چین کے اتہاس میں پہلی بار، سارے دیش میں سکہ ایک سا چلتا ہے اور اِس کی حالت ڈانوا ڈول نہ ہو کر قائم و ٹھوس ہے. بارہ سال سے جو بھاؤ چڑھتے چلے جا رہے تھے جو 1950 کے شروع میں پوری طرح رک گئے اور سرکار اُن پر حاوی ہوئی. آج حالت یہ ہے کہ کل منی مارکیٹ (سکہ بازار) سرکار کے قابو میں ہے.

सहयोग यानी कोआपरेटिव का आन्दोलन भी खूब तेज़ी से बढ़ा है. कोआपरेटिव सोसाइटियों के मेम्बरों की तादाद 1949 में पचास लाख थी लेकिन जून 1951 में पांच करोड़ एक लाख हो गई. सहयोगी अर्थनीति के ढंग पर काम करने से—जो नीम-सोशलिस्ट है—देश के आर्थिक निज़ाम का वह हिस्सा जो सरकार के हाथ में है बहुत अच्छे ढंग से तरक़्क़ी कर रहा है.

इन सब चीज़ों की वजह से जनता आर्थिक दौलत के लेहाज़ से सचमुच चंगी होती जा रही है. सट्टेबाज़ी और माल के ढेर-के-ढेर जमा कर लेना बीते ज़माने की बातें हो गई हैं. अन्दरूनी व्योपार को फैलने और पनपने में बहुत सहूलियत हो गई है. इस व्योपार का 16 फ़ीसदी 1950 में सरकार के हाथों में था और 1951 में 22 फ़ीसदी.

जो कुछ चीन में इन दो बरस में हो सका है वह अपनी जगह काफ़ी है. लोगों के रहन-सहन के दर्जे में भारी तरक़्क़ी हो गई है. लेकिन नई लोकराजी अर्थनीति के इस क़ायम होने को हम उसकी मंज़िल की केवल शुरुआत मानते हैं. देश के आर्थिक विकास की तरफ़ कारख़ाने वग़ैरा बढ़ाने की अभी ज़बरदस्त दरकार है. ज़ियादा से ज़ियादा दायरे पर अभी सरकार को हावी होना है. सरकारी हो या निजी मिल्कियत वाला, सब को जनता की सेवा सच्चे व ठोस ढंग पर करना है. तभी हम नये लोकराज के आगे के मक़सदों की तरफ़ ज़ियादा तेज़ी के साथ बढ़ सकेंगे और लोग मुस्तक़िल तौर पर अमन-चैन से और ख़ुशी-ख़ुशी अपना जीवन बिता सकेंगे.

—'पीपुल्स चाइना' से आज़ाद अनुवाद.

سہیوگ یعنی کوآپریٹو کا آندولن بھی خوب تیزی سے بڑھا ہے۔ کوآپریٹو سوسائٹیوں کے ممبروں کی تعداد 1949 میں پچاس لاکھ تھی' لیکن جون 1951 میں پانچ کروڑ ایک لاکھ ہوگئی۔ سہیوگی ارتھ نیتی کے ڈھنگ پر کام کرنے سے—جو نیم سوشلسٹ ہے—دیش کے آرتھک نظام کا وہ حصہ جو سرکار کے ہاتھ میں ہے بہت اچھے ڈھنگ سے ترقی کر رہا ہے۔

ان سب چیزوں کی وجہ سے جنتا آرتھک حیثیت کے لحاظ سے سچ مچ چنگی ہوتی جا رہی ہے۔ سٹے بازی اور مال کے ڈھیر کے ڈھیر جمع کر لینا بیتے زمانے کی باتیں ہوگئی ہیں۔ اندرونی بیوپار کو پھیلنے اور پنپنے میں بہت سہولیت ہوگئی ہے۔ اس بیوپار کا 16 فیصدی 1950 میں سرکار کے ہاتھوں میں تھا اور 1951 میں 22 فیصدی۔

جو کچھ چین میں ان دو برس میں ہو سکا ہے وہ اپنی جگہ کافی ہے۔ لوگوں کے رہن سہن کے درجے میں بھاری ترقی ہوگئی ہے۔ لیکن نئی لوک راجی ارتھ نیتی کے اس قائم ہونے کو ہم اس کی منزل کی کیول شروعات مانتے ہیں۔ دیش کے آرتھک وکاس کی طرف کارخانے وغیرہ بڑھانے کی ابھی زبردست درکار ہے۔ زیادہ سے زیادہ دائرے پر ابھی سرکار کو حاوی ہونا ہے۔ سرکاری ہو یا نجی ملکیت والا' سب کو جنتا کی سیوا سچے و ٹھوس ڈھنگ پر کرنی ہے۔ تبھی ہم نئے لوک راج کے آگے کے مقصدوں کی طرف زیادہ تیزی کے ساتھ بڑھ سکیں گے اور لوگ مستقل طور پر امن چین سے اور خوشی خوشی اپنا جیون بتا سکیں گے۔

—'پیپلس چائنا' سے آزاد انوواد۔

आज का नेपाल

(ओम प्रकाश पालीवाल)

“आप हैं भाई टंकप्रसाद जी, नेपाल के जनवादी मुत्तहिदा मोर्चा (यूनाइटेड डैमोक्रेटिक फ्रंट) के प्रधान”—यह कह कर मेरे दोस्त सुभाष भाई ने एक ठिगने क़द वाले गेहुएं रंग के नौजवान का पंडित सुन्दरलाल जी से परिचय कराया. साथ में नेपाली नेशनल कांग्रेस के मंत्री भाई हरिकृष्ण जी भी थे. भाई टंकप्रसाद जी की उम्र चालीस साल की थी, और जब यह मालूम हुआ कि वह देश भक्ति के 'अपराध' में दस साल की सज़ा काट चुके हैं तो मेरे मन में ख़ुशी, तारीफ़ और हैरत के भाव उठने लगे.

آج کا نیپال

(اوم پرکاش پالیوال)

''آپ ہیں بھائی ٹنک پرساد جی' نیپال کے جنوادی مشترکہ مورچہ (یونائیٹڈ ڈیموکریٹک فرنٹ) کے پردھان''—یہ کہ کر میرے دوست سبھاش بھائی نے ایک ٹھگنے قد والے گیہوئیں رنگ کے نوجوان کا پنڈت سندرلال جی سے پریچے کرایا۔ ساتھ میں نیپالی نیشنل کانگریس کے منتری بھائی ہری کرشن جی بھی تھے۔ بھائی ٹنک پرساد جی کی عمر چالیس سال کی تھی' اور جب یہ معلوم ہوا کہ وہ دیش بھگتی کے 'اپرادھ' میں دس سال کی سزا کاٹ چکے ہیں تو میرے من میں خوشی' تعریف اور حیرت کے بھاو اٹھنے لگے۔

फरवरी के दूसरे हफ्ते में नैपाल के ये जन नेता इलाहाबाद और लखनऊ आये थे. लखनऊ के अस्पताल में नैपाली, नेशनल कांगरेस के सदर डाक्टर रैगमी का इलाज हो रहा है. इनके साथी इलाहाबाद आये जहां उन्होंने पंडित सुन्दरलाल जी से नैपाल चलने का अनुरोध किया.

नैपाल हमारा निकट पड़ोसी देश है. फिर भी हम उसके बारे में कितना कम जानते हैं !

हिन्दुस्तान के उत्तर और तिब्बत के दक्खिन में एशिया का शायद जो सबसे छोटा राज है इसी का नाम नेपाल है. इसका रकबा 54.000 वर्ग मील है और आबादी 6,282 000 है. लम्बाई में हद से हद 500 मील और चौड़ाई में 150 मील है. यहां गुरखा, नेवार और किरात तीन खास जातियाँ हैं. राजधानी काठमांडू है जो हिन्दुस्तान की सरहद से सिर्फ 75 मील पर है. आजकल काठमांडू से पटना और कलकत्ते तक हवाई जहाज हफ्ते में पांच दिन आते जाते हैं.

नैपाल के मौजूदा राजा का नाम महाराजाधिराज त्रिभुवन वीर विक्रम जंग बहादुर शाह है. सन 1867 से इस राज में असली ताकत राजा की बजाय बड़े वज़ीर की चली आ रही थी. ये बड़े वज़ीर पीढ़ी दर पीढ़ी एक बेलगाम शासक की तरह राज करते आ रहे थे. काठमांडू में इन्होंने अपने महल बनाये जो देश की सारी दौलत, शान शौकत और फौजी ताकत का केन्द्र बन गये. दूसरी तरफ नैपाल की आम जनता एक दरदनाक ग़रीबी का शिकार रही. उसकी तालीम, तन्दुरुस्ती और दूसरी तरह के विकास की किसी ने चिन्ता नहीं की.

हिन्दुस्तान और एशिया के दूसरे हिस्सों के राजकाजी आन्दोलनों ने धीरे-धीरे नैपाली जनता पर अपना असर डालना शुरू किया. आज जितनी पारटियां नैपाल में हैं उनमें से करीब करीब सभी पर हिन्दुस्तान की राजनीति का गहरा असर पड़ा है. नैपाल के कई नेताओं की तालीम हिन्दुस्तान में हुई है और कुछ का यहां के नेताओं से सम्बन्ध भी रहा है. प्रजा परिशद नैपाल की सबसे पुरानी संस्था है. जब कांगरेस हिन्दुस्तान में अंगरेजी हकूमत के खिलाफ लड़ रही थी, प्रजा परिशद नैपाल में जनवाद और राजकाजी सुधारों के लिये आन्दोलन कर रही थी. वहां नागरिक आज़ादी जैसी कोई चीज नाम को नहीं थी. उस दौरान में प्रजा परिशद के पांच नेताओं को फांसी पर लटका दिया गया. कुछ महज इसलिये बच गये कि वह ब्राह्मन थे. जिस समय अंगरेजी हकूमत हिन्दुस्तान से अपना टंडीरा बांध रही थी नैपाल प्रजा परिशद के नेता जेल में बन्द थे, भाई टंकप्रसाद जी भी इन्हीं में शामिल थे.

فروری کے دوسرے ہفتے میں نیپال کے یہ جن نیتا الہ آباد اور لکھنؤ آئے تھے . لکھنؤ کے اسپتال میں نیپالی' نیشنل کانگریس کے صدر ڈاکٹر ریگمی کا علاج ہو رہا ہے. ان کے ساتھی الہ آباد آئے جہاں انہوں نے پنڈت سندر لال جی سے نیپال چلنے کا انورودھ کیا .

نیپال ہمارا نکٹ پڑوسی دیش ہے . پھر بھی ہم اس کے بارے میں کتنا کم جانتے ہیں !

ہندستان کے اتر اور تبت کے دکھن میں ایشیا کا شاید جو سب سے چھوٹا راج ہے اسی کا نام نیپال ہے . اسکا رقبہ 54,000 ورگ میل ہے اور آبادی 6,282,000 ہے . لمبائی میں حد سے حد 500 میل اور چوڑائی میں 150 میل ہے . یہاں گورکھا' نیوار اور کیرات تین خاص جاتیاں ہیں. راجدھانی کاٹھمانڈو ہے جو ہندستان کی سرحد سے صرف 75 میل پر ہے . آج کل کاٹھمانڈو سے پٹنہ اور کلکتے تک ہوائی جہاز ہفتے میں پانچ دن آتے جاتے ہیں .

نیپال کے موجودہ راجا کا نام مہاراجا دھراج تربھوون ویر بکرم جنگ بہادر شاہ ہے . سن 1867 سے اس راج میں اصلی طاقت راجا کی بجائے بڑے وزیر کی چلی آ رہی تھی . یہ بڑے وزیر پیڑھی در پیڑھی ایک بے لگام شاسک کی طرح راج کرتے آ رہے تھے . کاٹھمانڈو میں انہوں نے اپنے محل بنائے جو دیش کی ساری دولت' شان شوکت اور فوجی طاقت کا کیندر بن گئے . دوسری طرف نیپال کی عام جنتا ایک دردناک غریبی کا شکار رہی . اسکی تعلیم' تندرستی اور دوسری طرح کے وکاس کی کسی نے چنتا نہیں کی .

ہندستان اور ایشیا کے دوسرے حصوں کے راج کاجی آندولن نے دھیرے دھیرے نیپالی جنتا پر اپنا اثر ڈالنا شروع کیا . آج جتنی پارٹیاں نیپال میں ہیں ان میں سے قریب قریب سبھی پر ہندستان کی راج نیتی کا گہرا اثر پڑا ہے . نیپال کے کئی نیتاؤں کی تعلیم ہندستان میں ہوئی ہے اور کچھ کا یہاں کے نیتاؤں سے سمبندھ بھی رہا ہے . پرجا پریشد نیپال کی سب سے پرانی سنستھا ہے . جب کانگریس ہندستان میں انگریزی حکومت کے خلاف لڑ رہی تھی' پرجا پریشد نیپال میں جنواد اور راج کاجی سدھاروں کے لئے آندولن کر رہی تھی. وہاں ناگرک آزادی جیسی کوئی چیز نام کو نہیں تھی . اس دوران میں پرجا پریشد کے پانچ نیتاؤں کو پھانسی پر لٹکا دیا گیا . کچھ محض اسلئے بچ گئے کہ وہ براہمن تھے. جس سمے انگریزی حکومت ہندستان سے اپنا ٹنڈیلا باندھ رہی تھی نیپال پرجا پریشد کے نیتا جیل میں بند تھے . بھائی ٹنک پرساد جی بھی انہیں میں شامل تھے .

जब प्रजा परिषद पर दमन हो रहा था, कलकत्ते में 1946 में कुछ लोगों ने नेपाली नेशनल कांग्रेस नाम की एक संस्था कायम की. इसमें एक डाक्टर रेग्मी थे जो गांधी-वादी तरीकों में यकीन करते थे. हिन्दुस्तान की राजनीति में गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन का उन पर गहरा असर पड़ा था. वह चाहते थे कि शांतिमय तरीकों से सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर राजकाजी तब्दीली लाई जाय. नेपाली नेशनल कांग्रेस कायम करने वालों में श्री बद्रीप्रसाद कोइराला का खास हाथ था. कहा जाता है कि वह हिन्दुस्तान की सोशलिस्ट पार्टी के मेम्बर रह चुके हैं.

15 अगस्त 1947 में हिन्दुस्तान में जो तब्दीली हुई उसका असर नेपाल पर पड़ना लाज़मी था. नेपाली नेशनल कांग्रेस के प्रोग्राम में कुछ खामियां महसूस करते हुए 1948 में श्री महेन्द्र विक्रम सिंह और श्री सूरजप्रसाद ने डेमोक्रेटिक कांग्रेस नाम का एक नया दल बनाया. इसे बनाने वालों में राना परिवार के वह लोग थे जो नेपाल से बाहर रहते थे. इधर नेपाली नेशनल कांग्रेस के दल कोइराला और रेग्मी दल में धीरे धीरे मत भेद पैदा हुए. इन दोनों दलों का झगड़ा यहां तक बढ़ा कि कोइराला दल नेशनल कांग्रेस से अलहदा हो गया.

मार्च 1950 में कलकत्ते में इस कोइराला दल और श्री महेन्द्र विक्रम सिंह व श्री सूरज प्रसाद की कायम की हुई डेमोक्रेटिक कांग्रेस का मिला जुला सम्मेलन हुआ. इसी सम्मेलन में मौजूदा नेपाली कांग्रेस की बुनियाद पड़ी. डेमोक्रेटिक कांग्रेस खतम हो गई. यह नेपाली कांग्रेस ही आज नेपाल की हकूमत करने वाली पारटी है. इसके नेताओं में दोनों कोइराला भाइयों का नाम खास है. एक का नाम है श्री बद्री प्रसाद कोइराला और दूसरे का श्री मैत्री प्रसाद कोइराला है. श्री बद्री प्रसाद कोइराला 1947 में पहली बार नेपाल गये और वहां विराट नगर वाली हड़ताल का समर्थन किया. हड़ताल कम्यूनिस्टों ने कराई थी. इस मौके पर श्री बद्री प्रसाद कोइराला गिरफ्तार कर लिये गये, पर बाद में छोड़ दिये गये.

हिन्दुस्तान में जो लोग नेपाली कांग्रेस को यहां की कांग्रेस के पाये की राजकाजी पारटी समझते हैं वह भूल करते हैं. नेपाली कांग्रेस को कायम हुए कुल दो साल हुए हैं. नेपाल की जनता में न इसकी जड़ें हैं और न अभी तक इसके चुनाव ही हुए हैं. अब मार्च में जनकपुर में इसका पहला जलसा होने वाला है. इसके मुकाबले में प्रजापरिषद वहां की पुरानी संस्था है जिसके पीछे त्याग और देश भक्ति का इतिहास है.

नेपाली कांग्रेस को हिन्दुस्तान के कुछ कांग्रेसी नेताओं का आशीर्वाद ज़रूर मिला पिछले एक साल के

جب پرجا پریشد پر یہ دمن ہو رہا تھا کلکتے میں 1946 میں کچھ لوگوں نے نیپالی نیشنل کانگریس نام کی ایک سنستھا قائم کی. ان میں ایک ڈاکٹر ریگمی تھے جو گاندھی وادی طریقوں میں یقین کرتے تھے. ہندستان کی راج نیتی میں گاندھی جی کے ستیاگرہ آندولن کا ان پر گہرا اثر پڑا تھا. وہ چاہتے تھے کہ شانتی مئے طریقوں سے ستیہ اور اہنسا کی بنیاد پر راج کاجی تبدیلی لائی جائے. نیپالی نیشنل کانگریس قائم کرنے والوں میں شری بدری پرساد کوئرالا کا خاص ہاتھ تھا. کہا جاتا ہے کہ یہ ہندستان کی سوشلسٹ پارٹی کے ممبر رہ چکے ہیں.

15 اگست 1947 سے ہندستان میں جو تبدیلی ہوئی اسکا اثر نیپال پر پڑنا لازمی تھا. نیپالی نیشنل کانگریس کے پروگرام میں کچھ خامیاں محسوس کرتے ہوئے 1948 میں شری مہیندر بکرم سنگھ اور شری سورج پرساد نے ڈیموکریٹک کانگریس نام کا ایک نیا دل بنایا. اسے بنانے والوں میں رانا پریوار کے وہ لوگ تھے جو نیپال سے باہر رہتے تھے. ادھر نیپالی نیشنل کانگریس کے کوئرالا دل اور ریگمی دل میں دھیرے دھیرے مت بھید پیدا ہوئے. ان دونوں دلوں کا جھگڑا یہاں تک بڑھا کہ کوئرالا دل نیشنل کانگریس سے علیحدہ ہوگیا.

مارچ 1950 میں کلکتے میں اس کوئرالا دل اور شری مہیندر بکرم سنگھ و شری سورج پرساد کی قائم کی ہوئی ڈیموکریٹک کانگریس کا ملا جلا سمیلن ہوا. اسی سمیلن میں موجودہ نیپالی کانگریس کی بنیاد پڑی. ڈیموکریٹک کانگریس ختم ہوگئی. یہ نیپالی کانگریس ہی آج نیپال کی حکومت کرنے والی پارٹی ہے. اسکے نیتاؤں میں دونوں کوئرالا بھائیوں کا نام خاص ہے. ایک کا نام ہے شری بدری پرساد کوئرالا اور دوسرے کا شری میتری پرساد کوئرالا ہے. شری بدری پرساد کوئرالا 1947 میں پہلی بار نیپال گئے اور وہاں ورات نگر والی ہڑتال کا سمرتھن کیا. ہڑتال کمیونسٹوں نے کرائی تھی. اس موقعہ پر شری بدری پرساد کوئرالا گرفتار کر لئے گئے پر بعد میں چھوڑ دئے گئے.

ہندستان میں جو لوگ نیپالی کانگریس کو یہاں کی کانگریس کے پائے کی راج کاجی پارٹی سمجھتے ہیں وہ بھول کرتے ہیں. نیپالی کانگریس کو قائم ہوئے کل دو سال ہوئے ہیں. نیپال کی جنتا میں نہ اسکی جڑیں ہیں اور نہ ابھی تک اسکے چناؤ ہی ہوئے ہیں. اب مارچ میں جنک پور میں اسکا پہلا جلسہ ہونے والا ہے. اسکے مقابلے میں پرجا پریشد وہاں کی پرانی سنستھا ہے جسکے پیچھے تیاگ اور دیش بھکتی کا اتہاس ہے.

نیپالی کانگریس کو ہندستان کے کچھ کانگریسی نیتاؤں کا آشیرواد ضرور ملا. پچھلے ایک سال کے

अन्दर नेपाल में जो उथल पुथल हुई है उसने सारे हिन्दुस्तान की जनता का ध्यान खींचा है. बड़े वज़ीर जनरल मोहन शमशेर जंग की बे-लगामशाही के खिलाफ़ जो हवा पैदा हुई थी, नेपाली कांग्रेस के नेताओं ने उससे पूरा लाभ उठाया. इन्होंने एक मुक्ति सेना (आज़ाद फ़ौज) बनाई और 11 नवम्बर 1959 को राणाशाही के खिलाफ़ हमला बोल दिया. डाक्टर के. आई. सिंह. इसी आज़ाद फ़ौज के कमांडर थे.

ब्रिटिश सरकार ने नेहरू सरकार पर दबाव डाला कि वह इस झगड़े को खतम करावे. उसे डर था कि नेपाल का जनवादी आन्दोलन कहीं बढ़ते बढ़ते नेपाल को पूरी तौर पर कम्यूनिस्ट खेमे में रूस और चीन के साथ न मिला दे. हिन्दुस्तान की हकूमत ने भी अपना हित इसी में देखा कि वह नेपाली कांग्रेस के नेताओं और बड़े वज़ीर मोहन शमशेर जंग में समझौता करा दें आखिर 18 फ़रवरी 1951 को नेपाली कांग्रेस और राणा में समझौता हो गया. लेकिन असल में कोई तब्दीली नहीं हुई. राणाशाही के अधिकारों में कोई कमी नहीं आई. श्री बद्री प्रसाद कोइराला होम मिनिस्टर हो गये और कुछ सुधारों का ऐलान किया गया ताकि जनवाद का बढ़ता हुआ आन्दोलन शांत हो जावे.

बहुत जल्दी ही जनता को अनुभव हो गया कि यह समझौता उसके हित में नहीं हुआ. हालत पहिले जैसी ही रही नेपाली कांग्रेस के अन्दर भी कुछ लोग ऐसे समझौते के खिलाफ़ थे जिस में बड़े वज़ीर की ताक़त ज्यों की त्यों बनी रहे और सिर्फ़ दिखाने के लिये कुछ और मिनिस्टर शामिल कर लिये जावें. डाक्टर के. आई. सिंह शुरू से इस तरह के समझौते के खिलाफ़ थे. नेपाल की कम्यूनिस्ट पारटी, विद्यार्थी संघ, किसान सभा प्रजापरिषद्, वगैरा तरक्क़ी पसंद राज-काजी पारटियों ने पूरी नागरिक आज़ादी और सच्चे जनवादी सुधारों की आवाज़ उठाई. 6 नवम्बर 1951 को काठमांडू में विद्यार्थियों ने एक बहुत बड़ा जलूस निकाला. पुलिस ने निहत्थे विद्यार्थियों पर गोली चलाई. एक विद्यार्थी की जान चली गई, कई घायल हुए. जनता में बग़ावत की भावना और गहरी पकड़गई.

आखिरकार श्री बद्री प्रसाद कोइराला को इस्तीफ़ा देना पड़ा. 16 नवम्बर को नई मिनिस्ट्री का ऐलान हुआ. लोग जनरल मोहन शमशेर जंग को किसी भी हालत में नहीं चाहते थे. इस बार श्री बद्री प्रसाद कोइराला के भाई श्री मैत्री प्रसाद कोइराला बड़े वज़ीर बनाये गए. लेकिन इस कैबिनेट में राणा खान्दान के दो आदमी बने रहे, एक जनरल मोहन शमशेर जंग के लड़के, दूसरे उनके साले. राजा ने अपने ऐलान में कहा कि लोगों के नागरिक अधिकारों की

اندر نیپال میں جو اتھل پتھل ہوئی ہے اسنے سارے ہندستان کی جنتا کا دھیان کھینچا ہے . بڑے وزیر جنرل موہن شمشیر جنگ کی بے لگام شاہی کے خلاف جو ہوا پیدا ہوئی تھی' نیپالی کانگریس کے نیتاؤں نے اس سے پورا لابھ اٹھایا . انہوں نے ایک مکتی سینا (آزاد فوج) بنائی اور 11 نومبر 1950 کو راناشاہی کے خلاف حملہ بول دیا . ڈاکٹر کے . آئی . سنگھ اسی آزاد فوج کے کمانڈر تھے .

برٹش سرکار نے نہرو سرکار پر دباؤ ڈالا کہ وہ اس جھگڑے کو ختم کرائے . اسے ڈر تھا کہ نیپال کا جنوادی آندولن کہیں بڑھتے بڑھتے نیپال کو پوری طور پر کمیونسٹ خیمے میں روس اور چین کے ساتھ نہ ملا دے . ہندستان کی حکومت نے بھی اپنا ہت اسی میں دیکھا کہ وہ نیپالی کانگریس کے نیتاؤں اور بڑے وزیر موہن شمشیر جنگ میں سمجھوتہ کرا دیں . آخر 18 فروری 1951 کو نیپالی کانگریس اور رانا میں سمجھوتہ ہو گیا لیکن اصل میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی . راناشاہی کے ادھیکاروں میں کوئی کمی نہیں آئی . شری بدری پرساد کوئرالا ہوم منسٹر ہو گئے اور کچھ سدھاروں کا اعلان کیا گیا تاکہ جنواد کا بڑھتا ہوا آندولن شانت ہو جائے .

بہت جلدی ہی جنتا کو انوبھو ہو گیا کہ یہ سمجھوتہ اسکے ہت میں نہیں ہوا . حالت پہلے جیسی ہی رہی . نیپالی کانگریس کے اندر بھی کچھ لوگ ایسے سمجھوتے کے خلاف تھے جس میں بڑے وزیر کی طاقت جیوں کی تیوں بنی رہے اور صرف دکھاوے کے لئے کچھ اور منسٹر شامل کر لئے جائیں . ڈاکٹر کے . آئی . سنگھ شروع سے اس طرح کے سمجھوتے کے خلاف تھے . نیپال کی کمیونسٹ پارٹی' ودیارتھی سنگھ' کسان سبھا' پرجا پریشد' وغیرہ ترقی پسند راج کاجی پارٹیوں نے پوری ناگرک آزادی اور سچے جنوادی سدھاروں کی آواز اٹھائی . 6 نومبر 1951 کو کاٹھمانڈو میں ودیارتھیوں نے ایک بہت بڑا جلوس نکالا . پولیس نے نہتے ودیارتھیوں پر گولی چلائی . ایک ودیارتھی کی جان چلی گئی' کئی گھائل ہوئے . جنتا میں بغاوت کی بھاونا اور گہری پڑ گئی .

آخرکار شری بدری پرساد کوئرالا کو استعفیٰ دینا پڑا . 16 نومبر کو نئی منسٹری کا اعلان ہوا لوگ جنرل موہن شمشیر جنگ کو کسی بھی حالت میں نہیں چاہتے تھے . اس بار شری بدری پرساد کوئرالا کے بھائی شری میتری پرساد کوئرالا بڑے وزیر بنائے گئے . لیکن اس کیبنٹ میں رانا خاندان کے دو آدمی بنے رہے . ایک جنرل موہن شمشیر جنگ کے لڑکے' دوسرے انکے سالے . راجا نے اپنے اعلان میں کہا کہ لوگوں کے ناگرک ادھیکاروں کی

रक्षा की जायगी, इन्साफ़ और अदालती मामलों में सरकारी कारिन्दे दख़ल नहीं देंगे और 1952 के आख़ीर तक विधान असेम्बली के चुनाव करा देने के लिये इन्तज़ाम हो जायेगा.

फ़िरक़ा-परस्त पारटियां.

अभी तक हमने नेपाल की तीन मौजूदा राजनैतिक पार्टियों का ज़िकर किया है. (1) प्रजापरिषद (2) नेपाली नेशनल कांगरेस और (3) नेपाली कांगरेस. नेपाल में कुछ फ़िरक़ापरस्त पार्टियां भी हैं. गोरखा दल उनमें ख़ास है. यह एक फ़िरक़ावाराना जमात है जो रानाओं के इशारे पर चलती है. इन लोगों का कहना है कि सिर्फ़ गोरखा दल ही नेपाल को कम्यूनिज़्म से बचा सकता है. इसकी तुलना हिन्दुस्तान के राष्ट्री स्वयं सेवक संघ से की जा सकती है. तराई में रहने वाले लोगों ने एक तराई कांगरेस बना ली है. यह लोग हिन्दुस्तानी हैं. इन संस्थाओं से पूरे देश की एकता और मज़बूती को ख़तरा रहता है. गोरखादल की कार्रवाइयां तो इतनी ख़तरनाक हो गई थीं कि वह ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया.

डाक्टर के. आई. सिंह.

हाल में नेपाल से आने वाली ख़बरों में डाक्टर के. आई. सिंह का नाम बड़े आतंक से लिया रहता है. उनका कुछ हवाला देना उचित होगा. डाक्टर के. आई. सिंह पच्छिमी नेपाल के बेहरी नाम के गांव में पैदा हुए थे. वह बर्मा में रह चुके हैं जहां वह नेताजी सुभाष बोस की आज़ाद हिन्द फ़ौज में शामिल थे. यहां नेपाल कांगरेस की मुक्ति सेना के कमांडर बने और कोइराला का साथ दिया.

राना की फ़ौजों के ख़िलाफ़ नेपाली कांगरेस की तरफ़ से इन्होंने ही भैरवा नाम की जगह पर मोर्चा लिया था. नेपाली कांगरेस ने जब राना से समझौता कर लिया तो इन्होंने नेपाली कांगरेस से भी विद्रोह कर दिया क्योंकि वह इस तरह के दिखावटी सुधार के ख़िलाफ़ थे.

डाक्टर के. आई. सिंह के पास मुक्ति सेना के क़रीब ढाई सौ हथियारबंद सिपाही थे. भैरवनाथ शुक्ला नाम के एक ज़ालिम ज़मींदार ने कुछ गुंडे पाल रखे थे जो तरह तरह का ज़ुल्म करते थे. इस ज़मींदार ने एक ग़रीब आदमी को ज़िन्दा जलवा दिया. इस पर डाक्टर के. आई. सिंह के साथियों ने ज़मींदार के लड़के को क़त्ल कर दिया और उसके कुछ गुंडों का भी सफ़ाया कर दिया. ज़मींदार का लड़का गोरखपुर के कलक्टर का दामाद था. गोरखपुर के कलक्टर ने भी नेहरू के सामने अपना दुखड़ा रोया. नेपाल सरकार भी डाक्टर के. आई. सिंह को गिरफ़्तार करना चाहती थी. नेहरू सरकार ने इन्हें पकड़ने के लिये हिन्दुस्तानी फ़ौज भेजी और वह गिरफ़्तार कर

رکھا کی جائیگی، انصاف اور عدالتی معاملوں میں سرکاری کارندے دخل نہیں دینگے اور 1952 کے آخر تک ودھان اسمبلی کے چناؤ کرا دینے کے لئے انتظام ہو جائیگا ۔

کچھ فرقہ پرست پارٹیاں ۔

ابھی تک ہم نے نیپال کی تین موجودہ راج نیتک پارٹیوں کا ذکر کیا ہے ۔ (1) پرجا پریشد (2) نیپالی نیشنل کانگریس اور (3) نیپالی کانگریس ۔ نیپال میں کچھ فرقہ پرست پارٹیاں بھی ہیں ۔ گورکھا دل ان میں خاص ہے ۔ یہ ایک فرقہ وارانہ جماعت ہے جو راناؤں کے اشارے پر چلتی ہے ۔ ان لوگوں کا کہنا ہے کہ صرف گورکھا دل ہی نیپال کو کمیونزم سے بچا سکتا ہے ۔ اس کی تلنا ہندستان کے راشٹری سویم سیوک سنگھ سے کی جا سکتی ہے ۔ ترائی میں رہنے والے لوگوں نے ایک ترائی کانگریس بنا لی ہے یہ لوگ ہندستانی ہیں ۔ ان سنستھاؤں سے پورے دیش کی ایکتا اور مضبوطی کو خطرہ رہتا ہے ۔ گورکھا دل کی کاروائیاں تو اتنی خطرناک ہو گئیں تھیں کہ وہ غیر قانونی قرار دے دیا گیا ۔

ڈاکٹر کے ۔ آئی سنگھ ۔

حال میں نیپال سے آنے والی خبروں میں ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کا نام بڑے آتنک سے لیا جاتا رہا ہے ان کا کچھ حوالہ دینا اچت ہوگا ۔ ڈاکٹر کے ۔ آئی سنگھ پچھمی نیپال کے بیہری نام کے گاؤں میں پیدا ہوئے تھے ۔ یہ برما میں رہ چکے ہیں جہاں وہ نیتاجی سبھاش بوس کی آزاد ہند فوج میں شامل تھے ۔ یہاں نیپالی کانگریس کی مکتی سینا کے کمانڈر بنے اور کوئرالا کا ساتھ دیا ۔

راناکی فوجوں کے خلاف نیپالی کانگریس کی طرف سے انہوں نے ہی بھیروا نام کی جگہ پر مورچہ لیا تھا ۔ نیپالی کانگریس نے جب رانا سے سمجھوتہ کر لیا تو انہوں نے نیپالی کانگریس سے بھی ودروہ کر لیا ۔ کیونکہ یہ اس طرح کے دکھاوٹی سدھار کے خلاف تھے ۔

ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کے پاس مکتی سینا کے قریب ڈھائی سو ہتھیار بند سپاہی تھے ۔ بھیرو ناتھ شکلا نام کے ایک ظالم زمیندار نے کچھ غنڈے پال رکھے تھے جو طرح طرح کا ظلم کرتے تھے ۔ اس زمیندار نے ایک غریب آدمی کو زندہ جلوا دیا ۔ اس پر ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کے ساتھیوں نے زمیندار کے لڑکے کو قتل کر دیا اور اسکے کچھ غنڈوں کا بھی صفایا کر دیا ۔ زمیندار کا لڑکا گورکھپور کے کلکٹر کا داماد تھا ۔ گورکھپور کے کلکٹر نے بھی نہرو کے سامنے اپنا دکھڑا رویا ۔ نیپال سرکار بھی ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کو گرفتار کرنا چاہتی تھی ۔ نہرو سرکار نے انہیں پکڑنے کے لئے ہندستانی فوج بھیجی اور وہ گرفتار کر

लिये गये. पर कुछ समय बाद ही इनके साथी इन्हें जेल से भगा लाये. तब ये अपने साथियों को लेकर उत्तर की तरफ चले. नेपाल सरकार ने फिर इन्हें पकड़ने के लिये फौज भेजी. मगर वह फौज इन्हें गिरफ्तार न कर सकी. तब फौज के कमांडर ने इन्हें धोखा देकर पकड़ना चाहा. इस कमांडर ने एक सुलह का झंडा डाक्टर के. आई. सिंह के पास भेजा. इस पर वह चले आये. उसी वक्त इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और सिंह दरबार में कैद कर दिया गया. यही इमारत आज कल सेक्रेटेरियेट है.

डाक्टर के. आई. सिंह को इस तरह धोखा देकर पकड़ने की घटना से इनके हमदर्दों में बड़ी उत्तेजना फैली. नेपाली कांगरेस के अन्दर और बाहर बहुत से लोग इन्हें 'हीरो' मानने लगे. कुछ लोगों ने 'प्रोग्रेसिव नेपाली कांगरेस' के नाम से सरकार को अल्टीमेटम दिया कि वह डाक्टर के. आई. सिंह को फौरन रिहा कर दे वरना बगावत हो जायगी. पांचवे दिन गड़बड़ी शुरू हुई. मुक्तिसेना के साथियों ने रात के 12 बजे डाक्टर के. आई. सिंह को छुड़ा लिया और सिंह दरबार पर जितने भी हथियार व मोटरगन वगैरह थे सब पर कब्जा कर लिया.

डाक्टर के. आई. सिंह का नेपाली कांगरेस और उसकी मुक्ति सेना या रक्षा दल के अलावा किसी पारटी से कोई सम्बन्ध नहीं था. यह बात बिलकुल निराधार है कि कम्यूनिस्ट पारटी की जानिब से यह हथियार बन्द बगावत कराई गई. डाक्टर के. आई. सिंह को नेपाली कांगरेस से शिकायत था कि वह सिर्फ मिनिस्ट्री की गद्दियों के लिये समझौता कर बैठी है. इस बार जब वह छूटे तो उन्होंने प्रजापरिषद् के नेता श्री टंक प्रसाद जी और नेपाली कम्यूनिस्ट पारटी के मंत्री श्री मनमोहन अधिकारी को बुलाया. श्री मनमोहन अधिकारी नहीं आये. तब डाक्टर के. आई. सिंह ने श्री टंक प्रसाद और श्री गनेशमान सिंह (जो मौजूदा सरकार में खुराक मिनिस्टर हैं) को राजा के पास सुलह का पैगाम लेकर भेजा. सुलह की शर्तों में तीन खास मांगें थीं :—

(1) नेपाल में सब पार्टियों की मिली जुली सरकार बने.

(2) नेपाल में, आर्थिक और राजकाजी सुधारों की एक पंच साला योजना सभी जनवादी पारटियां मिल कर बनायें और उसे अमल में लाया जाय.

(3) चीन और हिन्दुस्तान जैसे सभी जनवादी देशों से बराबरी के रिश्ते पर अच्छे सम्बन्ध कायम किये जायं.

ऊपरी तौर पर राजा ने यह सब बातें मंजूर की पर अन्दर ही अन्दर वह डाक्टर के. आई. सिंह को गिरफ्तार

لئے گئے ۔ پر کچھ سمے بعد ہی ان کے ساتھی انہیں جیل سے بھگا لائے ۔ تب یہ اپنے ساتھیوں کو لے کر اُتر کی طرف چلے ۔ نیپال سرکار نے پھر انہیں پکڑنے کے لئے فوج بھیجی ۔ مگر وہ فوج انہیں گرفتار نہ کر سکی ۔ تب فوج کے کمانڈر نے انہیں دھوکا دے کر پکڑنا چاہا ۔ اس کمانڈر نے ایک صلح کا جھنڈا ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کے پاس بھیجا ۔ اس پر وہ چلے آئے ۔ اسی وقت انہیں گرفتار کر لیا گیا اور سنگھ دربار میں قید کر دیا گیا ۔ یہی عمارت آج کل سکریٹیریٹ ہے ۔

ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کو اسطرح دھوکا دے کر پکڑنے کی گھٹنا سے ان کے ہمدردوں میں بڑی اُتیجنا پھیلی ۔ نیپالی کانگریس کے اندر اور باہر بہت سے لوگ انہیں 'ہیرو' ماننے لگے ۔ کچھ لوگوں نے 'پروگریسو نیپالی کانگریس' کے نام سے سرکار کو الٹیمیٹم دیا کہ وہ ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کو فوراً رہا کر دے ورنہ بغاوت ہوجائیگی ۔ پانچویں دن گڑبڑی شروع ہوئی ۔ مکتی سینا کے ساتھیوں نے رات کے بارہ بجے ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کو چھڑا لیا اور سنگھ دربار پر جتنے بھی ہتھیار و موٹرگن وغیرہ تھے سب پر قبضہ کر لیا ۔

ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کا نیپالی کانگریس اور اس کی مکتی سینا یا رکشا دل کے علاوہ کسی پارٹی سے کوئی سمبندھ نہیں تھا ۔ یہ بات بالکل نرادھار ہے کہ کمیونسٹ پارٹی کی جانب سے یہ ہتھیار بند بغاوت کرائی گئی ۔ ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کی نیپالی کانگریس سے شکایت تھی کہ وہ صرف منسٹری کی گدیوں کے لئے سمجھوتا کر بیٹھی ہے ۔ اس بار جب وہ چھوٹے تو انہوں نے پرجا پریشد کے نیتا شری ٹنک پرساد جی اور نیپالی کمیونسٹ پارٹی کے منتری شری من موہن ادھیکاری کو بلایا ۔ شری من موہن ادھیکاری نہیں آئے ۔ تب ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ نے شری ٹنک پرساد اور شری گنیش مان سنگھ (جو موجودہ سرکار میں خوراک منسٹر ہیں) کو راجا کے پاس صلح کا پیغام لے کر بھیجا ۔ صلح کی شرطوں میں تین خاص مانگیں تھیں :—

(1) نیپال میں سب پارٹیوں کی ملی جلی سرکار بنے ۔

(2) نیپال میں، آرتھک اور راج کاجی سدھاروں کی ایک پنچ سالہ یوجنا سبھی جن وادی پارٹیاں مل کر بنائیں اور اسے عمل میں لایا جائے ۔

(3) چین اور ہندستان جیسے سبھی جن وادی دیشوں سے برابری کے رشتے پر اچھے سمبندھ قائم کئے جائیں ۔

اوپری طور پر راجا نے یہ سب باتیں منظور کیں پر اندر ہی اندر وہ ڈاکٹر کے ۔ آئی ۔ سنگھ کو گرفتار

करना चाहते थे. डाक्टर के. आई. सिंह अब इनकी चालों में नहीं आने वाले थे. वह अपने हथियार बन्द साथियों को लेकर सरकारी फ़ौज के सामने से बेधड़क होकर शान के साथ निकल गये. किसी की भी चूं करने की हिम्मत नहीं हुई. कहा जाता है कि वह अब तिब्बत पहुंच गये हैं.

डाक्टर के. आई. सिंह की बग़ावत की बिना पर नेपाल में कम्यूनिस्ट पारटी को ग़ैर क़ानूनी क़रार कर दिया गया है. असलियत यह है कि कम्यूनिस्ट पारटी का डाक्टर के. आई. सिंह की बग़ावत से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा. लेकिन नागरिक आज़ादी, सब पारटियों की मिली जुली सरकार, जनवादी, आर्थिक प्रोग्राम और चीन जैसे जनवादी देशों से बराबरी के अच्छे रिश्ते क़ायम करना वग़ैरा चीज़ें सभी तरक़्क़ीशील दलों की मांग है. प्रजा परिषद नेपाली कम्यूनिस्ट पारटी, नेपाल ट्रेड यूनियन कांग्रेस, प्रोग्रेसिव स्टडी सर्किल, किसान संघ, महिला संघ, विद्यार्थी संघ, शान्ति कमेटी और समाज सुधार लीग ने मिल कर एक मुश्तरका मोर्चा बनाया है. उम्मीद है कि नेपाली नेशनल कांग्रेस भी इस मोर्चे में जल्दी शामिल होगी. यह मोर्चा नेपाल में एक नई लोकशाही क़ायम करना चाहता है.

चीन ने जिस नई लोकशाही को जन्म दिया है वह एशिया के सभी छोटे मोटे देशों के लिये एक मिसाल है. इस नई लोकशाही में मज़दूर और किसान समाज की सब पहलुओं से रहनुमाई करते हैं. नये चीन में मज़दूर वर्ग के अन्दर स्कूल मास्टर, डाक्टर, सरकारी और ग़ैर सरकारी नौकर, क्लर्क, ग़रज़ कि वह सभी लोग शामिल हैं जो बदन या दिमाग़ से मेहनत करके अपनी रोज़ी कमाते हैं. इस तरह की नई लोकशाही को कामयाब बनाने के लिये सब जनवादी पार्टियों का मुश्तरका मोर्चा बहुत ज़रूरी है. नेपाल में इस मोर्चे का पैदा होना इस बात का सबूत है कि नेपाल की जनता सही तरफ़ क़दम बढ़ा रही है.

कहानी

घर-दुल्हनी

(खलील जिब्रान)

वह आदमी कितना अभागा है जो किसी औरत से प्यार करने लगता है, उसे अपने जीवन का साथी समझ कर अपनी मेहनत के पसीने और दिल के ख़ून से उसके क़दमों को धोता है; उसके हाथों में अपनी मेहनत मज़दूरी रख देता है और फिर अचानक उसे मालूम होता है कि उस औरत का दिल, जिसे वह अपना बनाना चाहता था किसी और का हो चुका है.

کرنا چاہتے تھے۔ ڈاکٹر کے۔ آئی۔ سنگھ اب اِنکی چالوں میں نہیں آنے والے تھے۔ وہ اپنے ہتھیار بند ساتھیوں کو لے کر سرکاری فوج کے سامنے سے بیدھڑک ہو کر شان کے ساتھ نکل گئے۔ کسی کی بھی چوں کرنے کی ہمت نہیں ہوئی۔ کہا جاتا ہے کہ وہ اب تبت پہونچ گئے ہیں۔

ڈاکٹر کے۔ آئی۔ سنگھ کی بغاوت کی بنا پر نیپال میں کمیونسٹ پارٹی کو غیر قانونی قرار کر دیا گیا ہے۔ اصلیت یہ ہے کہ کمیونسٹ پارٹی کا ڈاکٹر کے۔ آئی۔ سنگھ کی بغاوت سے کوئی تعلق نہیں رہا۔ لیکن ناگرک آزادی، سب پارٹیوں کی ملی جلی سرکار، جن وادی، آرتھک پروگرام اور چین جیسے جن وادی دیشوں سے برابری کے اچھے رشتے قائم کرنا وغیرہ چیزیں سبھی ترقی شیل دلوں کی مانگ ہے۔ پرجا پریشد، نیپالی کمیونسٹ پارٹی، نیپال ٹریڈ یونین کانگریس، پروگریسیو اسٹڈی سرکل، کسان سنگھ، مہیلا سنگھ، ودیارتھی سنگھ، شانتی کمیٹی اور سماج سدھار لیگ نے مل کر ایک مشترکہ مورچہ بنایا ہے۔ اُمید ہے کہ نیپالی نیشنل کانگریس بھی اِس مورچے میں جلدی شامل ہوگی۔ یہ مورچہ نیپال میں ایک نئی لوک شاہی قائم کرنا چاہتا ہے۔

چین نے جس نئی لوک شاہی کو جنم دیا ہے وہ ایشیا کے سبھی چھوٹے موٹے دیشوں کے لئے ایک مثال ہے۔ اس نئی لوک شاہی میں مزدور اور کسان سماج کی سب پہلوؤں سے رہنمائی کرتے ہیں۔ نئے چین میں مزدور شریڈی کے اندر اسکول ماسٹر، ڈاکٹر، سرکاری اور غیر سرکاری نوکر، کلرک غرض کہ وہ سبھی لوگ شامل ہیں جو بدن یا دماغ سے محنت کر کے اپنی روزی کماتے ہیں۔ اِس نئی طرح لوک شاہی کو کامیاب بنانے کے لئے سب جن وادی پارٹیوں کا مشترکہ مورچہ بہت ضروری ہے۔ نیپال میں اِس مورچے کا پیدا ہونا اِس بات کا ثبوت ہے کہ نیپال کی جنتا صحیح طرف قدم بڑھا رہی ہے۔

کہانی

گھر دلہنی

(خلیل جبران)

وہ آدمی کتنا ابھاگا ہے جو کسی عورت سے پیار کرنے لگتا ہے، اسے اپنے جیون کا ساتھی سمجھ کر اپنی محنت کے پسینے اور دل کے خون سے اُسکے قدموں کو دھوتا ہے؛ اُسکے ہاتھوں میں اپنی محنت مزدوری لا کر رکھتا ہے اور پھر یکایک اُسے معلوم ہوتا ہے کہ اُس عورت کا دل، جسے وہ اپنا بنانا چاہتا تھا کسی اور کا ہو چکا ہے۔

वह औरत भी कितनी अभागी है, जो अपनी जवानी की मदहोशी से जाग कर देखती है कि जिस घर में जिस आदमी की धन दौलत, ज़रो ज़ेवर और मेहरबानी के एहसान से वह दबी हुई है वह उसके दिल में प्रेम की जगमग जोत नहीं जला सकता; और न भगवान की उस आसमानी सुरा से उसकी रूह को तर कर सकता है जो मर्द की आँखों से औरत के दिल में बरसती है.

अपनी जवानी के दिनों से ही मैं रशीद को जानता हूँ. उसके पिता लेबनान के रहने वाले थे लेकिन जन्म और वतन के लिहाज़ से वह देहली था. बड़े दौलतमंद ख़ानदान का था जिस में पुराने ज़माने की शान शौकत अब भी मौजूद थी. वह अपने पुरखों की शानदार कहानियाँ बड़े चाव से सुनाया करता था. पुराने रीत रिवाज में उसके यहाँ कोई फ़र्क़ नहीं आया था.

रशीद दिल का भोला और दयालु तबीयत का था. लेकिन, सीरिया के और लोगों की तरह चीज़ की गहराई तक न पहुँच कर बाहरी बातों में ही खो जाता था. दिल के कोने में बजने वाली झंकार उसे नहीं सुनाई पड़ती. ज़ाहिर के शोरग़ुल में वह अपने भावों को बहा देता. उन बेकार बातों में दिल की राहत ढूंढता जो सच्ची जज़्बाती ख़ुशियों से और दुनिया को समझने की राह से आदमी को दूर ले जाकर ऊपरी बातों में भुलाए रखती हैं. वह उन आदमियों में से था जो मुहब्बत और नफ़रत दोनों में जल्दबाज़ी करते हैं और बाद में पछताते हैं. रशीद की इन आदतों के कारन उसका और वर-दुल्हनी का साथ हो गया. अभी दोनों के दिल प्रेम के उस शामियाने के नीचे मिल भी नहीं पाए थे जो शादी के बंधन को ख़ुशी में तब्दील कर देता है.

× × × ×

बहुत दिनों से मैं बेरूत शहर से बाहर गया हुआ था. लौटनेपर रशीद से मिलने गया. देह में सुस्ती और चेहरे पर ज़र्दी छाई हुई थी. मुर्झाए चेहरे की उदासी ग़मगीन आँखों की रंजीदगी टूटे हुए दिल और कुचले हुए अरमानों की कहानी कह रही थी. मैंने इधर-उधर की चीज़ों से उसके ग़म का कारन जानना चाहा पर कुछ मालूम न हो सका. इसलिये मैंने उसी से पूछा—“इस ग़म का कारन क्या है, दोस्त! वह ख़ुशी जो तुम्हारे चेहरे पर नूर की तरह चमकती थी कहाँ गई? क्या मौत ने तुम से कोई प्यारा छीन लिया है? या रात के अंधेरे में दिन की दौलत लुट गई है? एक दोस्त के नाते तुमसे पूछ रहा हूँ कि कौन सा ग़म तुम्हारी रूह को जकड़े हुए है और कौन सा घुन है जो तुम्हारे देह को खाए जा रहा है?”

یہ عورت بھی کتنی ابھاگی ہے، جو اپنی جوانی کی مدہوشی سے جاگ کر دیکھتی ہے کہ جس گھر میں جس آدمی کے دھن دولت، زر و زیور اور مہربانی کے احسان سے وہ دبی ہوئی ہے وہ اسکے دل میں پریم کی جگ مگ جوت نہیں جلا سکتا؛ اور نہ بھگوان کی اس آسمانی سورا سے اسکی روح کو تر کر سکتا ہے جو مرد کی آنکھوں سے عورت کے دل میں برستی ہے .

اپنی جوانی کے دنوں سے ہی میں رشید کو جانتا ہوں . اسکے پتا لبنان کے رہنے والے تھے لیکن جنم اور وطن کے لحاظ سے وہ دہلوی تھا . بڑے دولتمند خاندان کا تھا جس میں پرانے زمانے کی شان شوکت اب بھی موجود تھی . وہ اپنے پرکھوں کی شاندار کہانیاں بڑے چاؤ سے سنایا کرتا تھا. پرانے ریت رواج میں اسکے یہاں کوئی فرق نہیں آیا تھا .

رشید دل کا بھولا اور دیالو طبیعت کا آدمی تھا . لیکن، سیریا کے اور لوگوں کی طرح چیز کی گہرائی تک نہ پہنچ کر باہری باتوں میں ہی کھو جاتا تھا . دل کے کونے میں بجنے والی جھنکار اسے نہیں سنائی پڑتی . ظاہر کے شور غل میں وہ اپنے بھاؤں کو بہا دیتا . ان بیکار باتوں میں دل کی راحت ڈھونڈتا جو سچی جذباتی خوشیوں سے اور دنیا کو سمجھنے کی راہ سے آدمی کو دور لیجا کر اوپری باتوں میں بھلائے رکھتی ہیں . وہ ان آدمیوں میں سے تھا جو محبت اور نفرت دونوں میں جلد بازی کرتے ہیں اور بعد میں پچھتاتے ہیں . رشید کی ان عادتوں کے کارن اسکا اور ودا-صفی کا ساتھ ہوگیا . ابھی دونوں کے دل پریم کے اس شامیانے کے نیچے مل بھی نہیں پائے تھے جو شادی کے بندھن کو خوشی میں تبدیل کر دیتا ہے .

× × × ×

بہت دنوں سے میں بیروت شہر سے باہر گیا ہوا تھا . لوٹنے پر رشید سے ملنے گیا . دیہہ میں سستی اور چہرے پر زردی چھائی ہوئی تھی . مرجھائے چہرے کی اداسی غمگین آنکھوں کی رنجیدگی ٹوٹے ہوئے دل اور کچلے ہوئے ارمانوں کی کہانی کہہ رہی تھی . میں نے ادھر ادھر کی چیزوں سے اس کے رنج و غم کا کارن جاننا چاہا پر کچھ معلوم نہ ہوسکا . اس لئے میں نے اسی سے پوچھا —" اس غم کا کارن کیا ہے، دوست ! وہ خوشی جو تمہارے چہرے پر نور کی طرح چمکتی تھی کہاں گئی ؟ کیا موت نے تم سے کوئی پیارا چھین لیا ہے؟ یا رات کے اندھیرے میں دن کی دولت لٹ گئی ہے؟ ایک دوست کے ناتے تم سے پوچھ رہا ہوں کہ کون سا غم تمہاری روح کو جکڑے ہوئے ہے اور کون سا گھن ہے جو تمہارے دیہہ کو کھائے جا رہا ہے؟"

उसने गमगीन नज़र उठा कर मेरी तरफ देखा. उसके दिल में पहले पिछले खुशहाली दिनों की याद कौंधी और फिर यकायक चुप हो गई. दुख और मायूसी से वह बोला—

"अगर किसी दोस्त की जुदाई का ग़म हो तो आदमी और दोस्तों को पाकर तसल्ली कर लेता है. अगर दौलत लुट जाती है तो भी उसको इतना रंज नहीं होता क्योंकि वह जानता है कि जिस मेहनत से दौलत कमाई थी वही मेहनत उसे फिर लायेगी. वह इस नुकसान को भी भूल जाता है. लेकिन, अगर दिल की राहत खो जाए तो आदमी को कहाँ पनाह मिल सकती है और कैसे तसल्ली हो सकती है? मौत हाथ बढ़ा कर कुल्हाड़ा चलाती है और घायल कर देती है लेकिन रात बीतते बीतते जिन्दगी फिर अपनी गोद में ले लेती है और हम फिर खुशी से मुस्कराने लगते हैं. बदनसीबी सामने आता है और डरावनी आँखों से हमें देखती है, गर्दन दबोचकर पछाड़ देता है, अपने भारी भरकम पैरों से हमें कुचल कर हँसती हुई चल देती है. लेकिन, फिर माफ़ी मांगती हुई लौट आती है, हमें अपनी रेशमी उंगलियों से उठाती है और दिल के कानों में उम्मीद की लोरियाँ सुनाती है. रात का अंधेरा अपने साथ कई तरह की मुसीबतें लाता है पर सुबह का आना उन्हीं मुसीबतों को रफ़ा दफ़ा कर देता है. और हम आशा का दामन थाम कर आगे बढ़ते हैं. लेकिन, अगर बदनसीबी की सूरत कुछ और ही हो और ऐसा पंछी जिसे तुम मुहब्बत से अपने दिल के दाने और आँखों के पानी से पाल रहे हो, जिस का पिंजरा तुम्हारा सीना और आत्मा घोंसला है, और ऐसे जब कि उस पंछी के परों को तुम दुलार से सहला रहे हो वह अचानक तुम्हारे हाथ से आसमान में उड़ जाए और किसी और के पिंजरे पर जा बैठे जहाँ से वह कभी वापस नहीं आयेगा तो बताओ तुम क्या करोगे? क्योंकर धीरज धरोगे और क्योंकर तसल्ली होगी?"

रशीद के यह आखिरी शब्द दुख से भर्राये हुए थे. वह हवा में काँपती हुई नाज़ुक टहनी की तरह काँप रहा था. अपने हाथों को उसने इस तरह फैलाया गोया वह किसी चीज़ को पकड़ कर टुकड़े टुकड़े कर देगा. उसका खून खौल उठा और पूरे चेहरे का मातम रंग से उभर आया, आँखें चमकती रहीं और एक टक देखती रह गईं. ऐसा लगा जैसे उसे कोई शैतान दिखाई दे रहा हो जो उसकी ज़िन्दगी लेने आया है. उसने मेरी ओर निगाह घुमाई; चेहरा बदल गया, दुबला देह जो गुस्से से तमतमा रहा था दुख से कांपने लगा. रोते रोते उसने कहा—

"वह एक औरत है. वह एक ऐसी औरत है जिसे मैंने गरीबी और गुलामी से छुड़ाया और अपने खजाने उसके लिए खोल दिए. दुनिया की औरतें उससे रश्क

اُس نے شکستہ نظر اُٹھا کر میری طرف دیکھا۔ اُسکے دل میں پہلے پچھلے خوش حالی دنوں کی یاد کوندی اور پھر یکایک چپ ہوگئی۔ دکھ اور نا اُمیدی سے وہ بولا—

"اگر کسی دوست کی جدائی کا غم ہو تو آدمی اور دوستوں کو پا کر تسلی کر لیتا ہے۔ اگر دولت لٹ جاتی ہے تو بھی اُسکو اتنا رنج نہیں ہوتا کیونکہ وہ جانتا ہے کہ جس محنت سے دولت کمائی تھی وہی محنت اُسے پھر لائے گی۔ وہ اِس نقصان کو بھی بھول جاتا ہے۔ لیکن اگر دل کی راحت کھو جائے تو آدمی کو کہاں پناہ مل سکتی ہے اور کیسے تسلی ہو سکتی ہے؟ موت ہاتھ بڑھا کر کلہاڑا چلاتی ہے اور گھائل کر دیتی ہے لیکن رات بیتتے بیتتے زندگی پھر اپنی گود میں لے لیتی ہے اور ہم پھر خوشی سے مسکرانے لگتے ہیں۔ بدقسمتی سامنے آتی ہے اور ڈراؤنی آنکھوں سے ہمیں دیکھتی ہے، گردن دبوچ کر پچھاڑ دیتی ہے، اپنے بھاری بھرکم پیروں سے ہمیں کچل کر ہنستی ہوئی چل دیتی ہے۔ لیکن پھر معافی مانگتی ہوئی لوٹ آتی ہے، ہمیں اپنی ریشمی انگلیوں سے اٹھاتی ہے اور دل کے کانوں میں امید کی لوریاں سناتی ہے۔ رات کا اندھیرا اپنے ساتھ کئی طرح کی مصیبتیں لاتا ہے پر صبح کا آنا انہیں مصیبتوں کو رفع دفع کر دیتا ہے۔ اور ہم آشا کا دامن تھام کر آگے بڑھتے ہیں۔ لیکن اگر بدقسمتی کی صورت کچھ اور ہی ہو اور ایسا پنچھی جسے تم محبت سے اپنے دل کے دانے اور آنکھوں کے پانی سے پال رہے ہو، جس کا پنجرہ تمہارا سینہ اور آتما گھونسلہ ہے، اور ایسے جبکہ اس پنچھی کے پروں کو تم پیار سے سہلا رہے ہو وہ اچانک تمہارے ہاتھ سے آسمان میں اڑ جائے اور کسی اور کے پنجرے پر جا بیٹھے جہاں سے وہ کبھی واپس نہیں آئے گا تو بتاؤ تم کیا کرو گے؟ کیونکر دھیرج دھرو گے اور کیونکر تسلی ہوگی؟"

رشید کے یہ آخری شبد دکھ سے بھرائے ہوئے تھے۔ وہ ہوا میں کانپتی ہوئی نازک ٹہنی کی طرح کانپ رہا تھا۔ اپنے ہاتھوں کو اُس نے اِس طرح پھیلایا گویا وہ کسی چیز کو پکڑ کر ٹکڑے ٹکڑے کر دیگا۔ اُس کا خون کھول اٹھا اور پورے چہرے کا لہو سرخ رنگ سے ابھر آیا۔ آنکھیں چمکتی رہیں اور ایک ٹک دیکھتی رہ گئیں۔ ایسا لگا جیسے اسے کوئی شیطان دکھائی دے رہا ہو جو اُسکی زندگی لینے آیا ہے۔ اُس نے میری اور نگاہ گھمائی؛ چہرہ بدل گیا، دبلا دیہہ جو غصے سے تمتما رہا تھا دکھ سے کانپنے لگا۔ روتے روتے اُس نے کہا—

"وہ ایک عورت ہے۔ وہ ایک ایسی عورت ہے جسے میں نے غریبی اور غلامی سے چھڑایا اور اپنے خزانے اُس کے لئے کھول دیئے۔ دنیا کی عورتیں اُس سے رشک

करने लगी. उसके कीमती कपड़े, कार व ज़ेवर, गाड़ी घोड़े देख कर लोग हैरत करने लगे. वह औरत जिससे मेरे दिल ने मुहब्बत की, जिसके क़दमों को इस दिल ने अपने प्यार से धोया; जिसके लिए यह आत्मा झुकी और प्रेम की डालियाँ लगाईं; जिसके लिए मैं प्यारा दोस्त, सच्चा साथी और ईमानदार पति था वह मुझ से दग़ा कर गई है. मुझे छोड़ कर वह किसी और के घर चली गई है जिसके साथ रातों के साए में ज़िल्लत की रोटियाँ तोड़ेगी और बदनामी का पानी पीएगी. वह औरत जिससे मुझे मुहब्बत थी, वह ख़ूबसूरत चिड़िया जिसे मैंने जिगर का टुकड़ा बनाया था, वह फ़रिश्ता जिसे मैं अपने प्रेम और अरमानों के स्वर्ग में रखना चाहता था भयानक शैतान बन गया है. जो ख़ुद भी नरक के दुख भोग रहा है और मुझे भी दुखी बना रहा है."

वह चुप हो गया. अपने मुँह को ढक लिया. फिर उसने एक आह भर कर कहा—"यह है मेरी दर्द भरी कहानी. अब और कुछ न पूछो मुझ से. मेरी इस बदनसीबी को बोली न दो. इसे गूंगा ही बना रहने दो. शायद धीरे धीरे यह गूंगापन बढ़ जाय और मुझे शांति और अमन तक पहुँचा सके."

मैं अपनी जगह से उठा. मेरी आँखें आँसुओं से भर आईं और हमदर्दी के भाव दिल को चीरने लगे. मैंने चुपचाप विदा ली और वहाँ से चल पड़ा. क्योंकि न तो मेरे पास उसके घायल दिल पर मरहम रखने वाली बोली थी और न वह ज्ञान ही था कि मैं उसकी आत्मा के अंधेरे को दूर करके रोशनी पहुँचा सकूं.

× × × ×

कुछ दिनों बाद मैं वर-दुलहनी से पहली बार उसके टूटे फूटे घर में मिला. जब मैंने उसकी चमकीली आँखों को देखा और उसकी सुरीली आवाज़ सुनी तो सोचने लगा—क्या यह औरत बुरी हो सकती है? क्या यह मुमकिन है कि ऐसे बिल्लौर जैसे साफ़ चेहरे के नीचे बद-शक्ल और पापी दिल छिपा हो? तो क्या सचमुच यह मक्कार और धूर्त औरत है? क्या यह वैसी ही औरत है जैसी औरत के बारे में मैं अक्सर सोचा करता हूँ और धिक्कारा करता हूँ. जो सुन्दर पंछी की तरह दूसरे का ध्यान खींचती है और नागिन की तरह डस लेती है. फिर मैंने अपने ख़यालों को लौटाया और अपने से पूछा—अगर इस सुन्दरी ने रशीद को दुख नहीं दिया है तो वह कौन सी चीज़ है जिसके कारन वह दुखी है? क्या यह नहीं देखा गया है कि ज़ाहिर की ख़ूबसूरती एक छिपी हुई भयानक मुसीबत का सबब और रंज का कारन होती है? चाँद जो रात के सितारों को जगमगाता है क्या वही समुन्दर में तूफ़ान पैदा करके ज्वार भाटा नहीं लाता?

کرنے لگیں۔ اس کے قیمتی کپڑے، کار و زیور، گاڑی گھوڑے دیکھ کر لوگ حیرت کرنے لگے۔ وہ عورت جس سے میرے دل نے محبت کی، جس کے قدموں کو اس دل نے اپنے پیار سے دھویا؛ جس کے لئے یہ آتما جھکی اور پریم کی ڈالیاں لگائیں؛ جس کے لئے میں پیارا دوست، سچا ساتھی اور ایماندار پتی تھا وہ مجھ سے دغا کر گئی ہے۔ مجھے چھوڑ کر وہ کسی اور کے گھر چلی گئی ہے جس کے ساتھ فریبی کے سائے میں ظلمت کی روٹیاں توڑے گی اور بدنامی کا پانی پئے گی۔ وہ عورت جس سے مجھے محبت تھی، وہ خوبصورت چڑیا جسے میں نے جگر کا ٹکڑا بنایا تھا، وہ فرشتہ جسے میں اپنے پریم اور ارمانوں کے سورگ میں رکھنا چاہتا تھا، بھیانک شیطان بن گیا ہے۔ جو خود بھی نرک کے دکھ بھوگ رہا ہے اور مجھے بھی دکھی بنا رہا ہے۔"

وہ چپ ہو گیا۔ اپنے منہ کو ڈھک لیا۔ پھر اس نے ایک آہ بھر کر کہا—"یہ ہے میری درد بھری کہانی۔ اب اور کچھ نہ پوچھو مجھ سے۔ میری اس بدقسمتی کو بولی نہ دو۔ اسے گونگی ہی بنی رہنے دو۔ شاید دھیرے دھیرے یہ گونگا پن بڑھ جائے اور مجھے شانتی اور امن تک پہنچا سکے۔"

میں اپنی جگہ سے اٹھا۔ میری آنکھیں آنسوؤں سے بھر آئیں اور ہمدردی کے بھاؤ دل کو چیرنے لگے۔ میں نے چپ چاپ ودا لی اور وہاں سے چل پڑا۔ کیونکہ نہ تو میرے پاس اس کے گھائل دل پر مرہم رکھنے والی بولی تھی اور نہ وہ گیان ہی تھا کہ میں اس کی آتما کے اندھیرے کو دور کر کے روشنی پہنچا سکوں۔

× × × ×

کچھ دنوں بعد میں وردالحانی سے پہلی بار اس کے ٹوٹے پھوٹے گھر میں ملا۔ جب میں نے اس کی چمکیلی آنکھوں کو دیکھا اور اس کی سریلی آواز سنی تو میں سوچنے لگا—کیا یہ عورت بری ہو سکتی ہے؟ کیا یہ ممکن ہے کہ ایسے بلور جیسے صاف چہرے کے نیچے بدشکل اور پاپی دل چھپا ہو؟ تو کیا سچ مچ یہ مکار اور دھورت عورت ہے؟ کیا یہ ویسی ہی عورت ہے جیسی عورت کے بارے میں میں اکثر سوچا کرتا ہوں اور دھتکارا کرتا ہوں۔ جو سندر پنچھی کی طرح دوسرے کا دھیان کھینچتی ہے اور ناگن کی طرح ڈس لیتی ہے۔ پھر میں نے اپنے خیالوں کو لوٹایا اور اپنے سے پوچھا—اگر اس سندری نے رشید کو دکھ نہیں دیا ہے تو وہ کون سی چیز ہے جس کے کارن وہ دکھی ہے؟ کیا یہ نہیں دیکھا گیا ہے کہ ظاہر کی خوبصورتی ایک چھپی ہوئی بھیانک مصیبت کا سبب اور رنج کا کارن ہوتی ہے؟ چاند جو رات کے ستاروں کو چمکاتا ہے کیا وہی سمندر میں طوفان پیدا کر کے جوار بھاٹا نہیں لاتا؟

मैं उसके पास बैठ गया. मुझे जैसे मेरे सवालों का पता मिल गया. मुझे उलझन से बचाने के लिये वह अपनी हथेली पर चांद का टुकड़ा रखकर मुरली की सी साफ़ आवाज़ में बोली—"मेरी तुम से कोई मुलाक़ात नहीं हुई है दोस्त! लेकिन तुम्हारे ख़्वाबों और ख़यालों का कुछ पता मुझे औरों से मिल चुका है. तुम्हें मैं दुखी औरतों का हमदर्द समझती हूँ. तुम औरतों की मजबूरियों और उनके अरमानों को समझते हो. इसीलिए आज मैं तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखाना चाहती हूँ कि तुम सब कुछ देख सको और दूसरों से कह सको कि वरदुलहनी कोई धूर्त और मक्कार औरत नहीं थी. उस समय मैं अठारह साल की थी जब भाग्य ने मुझे रशीद के घर में ला पटका जो चालीस साल का था. वह मुझे बहुत प्यार से रखता था. लोगों का कहना है कि उसकी नियत भी नेक थी. इसके बाद उसने मुझे अपनी बीवी बना लिया. उसका मकान बहुत आलीशान था. कई नौकर चाकर मेरी सेवा के लिये थे. मुझे उसने क़ीमती रेशमी कपड़े और हीरे जवाहिरात के गहने पहनाए. नुमाइशी चीज़ की तरह वह मुझे अपने यार-दोस्तों के यहाँ दिखाने ले जाता. जब लोग मुझे ताज्जुब और हैरत से देखते तो उसकी आँखों में जीत की हँसी खिल उठती. अगर यार-दोस्तों की बीवियाँ मुझसे मुहब्बत से पेश आतीं तो शान से उसका सिर ऊँचा हो जाता. पर जब कोई पूछ बैठता कि—"यह रशीद की औरत है या गोद ली हुई लड़की?" तो वह सुनी अनसुनी कर देता. और जब कोई कहता कि—"अगर रशीद ने जवानी में शादी की होती तो उसका पहला लड़का वरदुलहनी से भी बड़ा हुआ होता तो" भी वह टाल जाता.

"यह सब उस समय हो चुका था जब मैं बचपन की गहरी नींद से उठ भी नहीं पाई थी. मेरे दिल में प्रेम का दीप जल ही न पाया था. हाँ, यह सब उस समय की बात है जब मैं सुन्दर कपड़ों से तन को ढकने में, सुन्दर गाड़ी में बैठने में और क़ीमती क़ालीनों पर चलने में ही ख़ुशी महसूस करती थी. पर जब मैं जागी और मैंने जवानी की रोशनी देखी तो मुझे मालूम हुआ कि मेरे जिस्म में एक ऐसी आग जल रही है जिसकी लपटें मुझे जला कर राख किये दे रही हैं. फिर मैंने देखा कि मेरे परों में उड़ने की ताक़त आ गई है और वे मुझे इस ज़मीन से उठा कर प्रेम के परी लोक में ले जा सकते हैं. लेकिन वे पर फड़फड़ाकर उन रीति रिवाज की ज़ंजीरों में उलझ जाते हैं जो मेरे तन को जकड़े हुए हैं. वे पुरानी ज़ंजीरें न जाने कब से चली आ रही हैं. मैंने जाग कर देखा कि एक औरत की ख़ुशी और ज़िन्दगी इसलिए नहीं है कि वह किसी मर्द की लौंडी बनी रहे. न वह इसलिए है कि मर्द की दया पर बचाये

میں اُس کے پاس بیٹھ گیا۔ مجھے جیسے میرے خیالوں کا پتہ مل گیا۔ مجھے اُلجھن سے بچانے کے لئے وہ اپنی ہتھیلی پر چاند سا ٹکڑا رکھ کر مرلی کی سی صاف آواز میں بولی—"میری تم سے کوئی ملاقات نہیں ہوئی ہے دوست! لیکن تمہارے خوابوں اور خیالوں کا کچھ پتہ مجھے اوروں سے مل چکا ہے۔ تمہیں میں دکھی عورتوں کا ہمدرد سمجھتی ہوں۔ تم عورتوں کی مجبوریوں اور اُن کے ارمانوں کو سمجھتے ہو۔ اسی لئے آج میں تمہیں اپنا دل کھول کر دکھانا چاہتی ہوں کہ تم سب کچھ دیکھ سکو اور دوسروں سے کہہ سکو کہ وردالعصلی کوئی عیار اور مکار عورت نہیں تھی۔ اُس سمے میں اٹھارہ سال کی تھی جب بھاگیہ نے مجھے رشید کے گھر میں لا پٹکا جو چالیس سال کا تھا۔ وہ مجھے بہت پیار سے رکھتا تھا۔ لوگوں کا کہنا ہے کہ اُس کی نیت بھی نیک تھی۔ اس کے بعد اُس نے مجھے اپنی بیوی بنا لیا۔ اُس کا مکان بہت عالیشان تھا۔ کئی نوکر چاکر میری سیوا کے لئے تھے۔ مجھے اُس نے قیمتی ریشمی کپڑے اور ہیرے جواہرات کے گہنے پہنائے۔ نمائشی چیز کی طرح وہ مجھے اپنے یار دوستوں کے یہاں دکھانے لے جاتا۔ جب لوگ مجھے تعجب اور حیرت سے دیکھتے تو اُس کی آنکھوں میں جیت کی ہنسی کھل اُٹھتی۔ اگر یار دوستوں کی بیویاں مجھ سے محبت سے پیش آتیں تو شان سے اُس کا سر اونچا ہو جاتا۔ پر جب کوئی پوچھ بیٹھتا کہ "یہ رشید کی عورت ہے یا گود لی ہوئی لڑکی؟" تو وہ سنی ان سنی کر دیتا اور جب کوئی کہتا کہ "اگر رشید نے جوانی میں شادی کی ہوتی تو اُس کا پہلا لڑکا وردالعصلی سے بھی بڑا ہوا ہوتا۔" تو بھی وہ ٹال جاتا۔

"یہ سب اُس سمے ہو چکا تھا جب میں بچپن کی گہری نیند سے اُٹھ بھی نہیں پائی تھی۔ میرے دل میں پریم کا دیپ جل ہی نہ پایا تھا۔ ہاں یہ سب اُس سمے کی بات ہے جب میں سندر کپڑوں سے تن کو ڈھکنے میں، سندر گاڑی میں بیٹھنے میں اور قیمتی قالینوں پر چلنے میں ہی خوشی محسوس کرتی تھی۔ پر جب میں جاگی اور میں نے جوانی کی روشنی دیکھی تو مجھے معلوم ہوا کہ میرے جسم میں ایک ایسی آگ جل رہی ہے جس کی لپٹیں مجھے جلا کر راکھ کئے دے رہی ہیں۔ پھر میں نے دیکھا کہ میرے پروں میں اُڑنے کی طاقت آ گئی ہے اور وہ مجھے اس زمین سے اُٹھا کر پریم کے پری لوک میں لے جا سکتے ہیں۔ لیکن وہ پھڑپھڑا کر ریت رواج کی زنجیروں میں پھنس جاتے ہیں جو میرے تن کو جکڑے ہوئے ہیں۔ وہ پرانی زنجیریں نہ جانے کب سے چلی آ رہی ہیں۔ میں نے جاگ کر دیکھا کہ ایک عورت کی خوشی اور زندگی اس لئے نہیں ہے کہ وہ کسی مرد کی لونڈی بنی رہے، نہ وہ اس لئے ہے کہ مرد کی دیا پر پلتی

रहे. औरत की चाह इसलिए है कि मर्द के दिल को प्रेम की डोर से बांध सके, और उसके दिल में अपनी मुहब्बत की धुन छेड़ सके. अब मुझे यह सब अनुभव हुआ तो मैं अपने को रशीद के घर में चोर समझने लगी जो दिन को उनके टुकड़े खाती है और रात के अंधेरे में मुंह छिपा लेती है. मुझे लगा कि जो दिन मैं उसके यहाँ काटूंगी वह झूठे होंगे और मेरी आत्मा मेरे माथे पर यह बात जलते हुए अंगारों से लिख देगी कि "मैं झूठी हूँ." मैं उसकी मेहरबानी के बदले में अपने दिल का प्यार नहीं दे सकती थी. मैंने उससे प्रेम करने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकाम रही. क्योंकि प्रेम एक ऐसी ताक़त है जो हमारे दिलों को बनाता है, हमारा दिल उस ताक़त को पैदा नहीं कर सकता. मैंने भगवान से बहुत बहुत दुआ मांगी रात के सन्नाटों में, उससे प्रार्थना की कि वह मेरे दिल में ऐसी ताक़त दे दे कि मैं उस आदमी की हो सकूं जिसको उसने मेरा पति बना दिया है. लेकिन उसको यह भी मंज़ूर नहीं था. क्योंकि हमारे दिलों में उसके हुक्म से प्रेम मुहब्बत बरसता है न कि हमारे भीख मांगने पर. और इस तरह मैंने उस घर में दो साल गुज़ारे जहां मैं जंगलों के परिंदों की आज़ादी पर तरसती थी और शहर की औरतें मेरी पाबंदी पर. अपने इकलौते बेटे की मौत पर जिस तरह एक मां रोती है उसी तरह मैं अपने अरमानों को दम तोड़ते देखकर रोती थी. फिर एक दिन मैंने उस अंधेरे में एक जवान की आंखों में चमकती हुई रोशनी देखी जो ज़िन्दगी के राज पथ पर अकेला ही बढ़ा चला जा रहा था और अपने ग़रीब घर में किताबों की धुन में लगा था. मैंने अपनी आंखें मूंद लीं जिससे उन किरनों को न देख सकूं और अपने मन से कहने लगी—'ऐ दिल! तेरी क़िस्मत में तो सिर्फ़ क़ब्र का अंधेरा है, इसलिए मत ललचा कि तुझे रोशनी मिले.' फिर मुझे एक तराना सुनाई दिया जिसकी मीठी आवाज़ ने मुझे तड़पा दिया और जिसकी पवित्रता ने मुझे अपने आप में ले लिया. मैंने अपने कान बंद कर लिए और कहा—'ऐ दिल! तेरी क़िस्मत में नरक की डरावनी आवाज़ें ही लिखी हैं, इसलिए मत ललचा कि तुझे गीत सुनने को मिले.' मैंने अपनी आंखें बन्द कर लीं कि मैं देख न सकूं, अपने कान बन्द कर लिए कि सुन न सकूं. लेकिन फिर भी मुझे वह रोशनी दिखाई देती रही और मेरे कान वह तराना सुनते रहे. पहले तो मैं सहमी जैसे कोई भिखारी राजमहल के पास पड़ा हुआ हीरा देखे और डर के मारे उसे उठा न सके और न अपनी ग़रीबी के सबब वहां से टल हट सके. मैं उस प्यासे की तरह बिलख रही थी जो मीठे पानी के कुंए को दरिन्दों से घिरा पाये और निराश होकर धरती पर गिर पड़े."

رہے. عورت کی خواہش یہ ہے کہ مرد کے دل کو پریم کی ڈور سے باندھ سکے اور اُس کے دل میں اپنی محبت کی سُرا انڈیل سکے. جب مجھے یہ سب انوبھو ہوا تو میں اپنے کو رشید کے گھر میں چور سمجھنے لگی جو دن کو اُس کے ٹکڑے کھاتی ہے اور رات کو اندھیرے میں منہ چھپا لیتی ہے. مجھے لگا کہ جو دن میں اُس کے یہاں کاٹوں گی وہ جھوٹے ہونگے اور میری آتما میرے ماتھے پر یہ بات جلتے ہوئے انگاروں سے لکھ دے گی کہ "میں جھوٹی ہوں." میں اُسکی مہربانی کے بدلے میں اپنے دل کا پیار نہیں دے سکتی تھی. میں نے اُس سے پریم کرنے کی بہت کوشش کی لیکن ناکام رہی. کیونکہ پریم ایک ایسی طاقت ہے جو ہمارے دلوں کو بناتی ہے، ہمارا دل اُس طاقت کو پیدا نہیں کر سکتا. میں نے بھگوان سے بہت بہت دعا مانگی، رات کے سناٹوں میں اُس سے پرارتھنا کی کہ وہ میرے دل میں ایسی طاقت دے دے کہ میں اُس آدمی کی ہو سکوں جسکو اُس نے میرا پتی بنا دیا ہے. لیکن اُسکو یہ بھی منظور نہیں تھا. کیونکہ ہمارے دلوں میں اُس کے حکم سے پریم محبت برستی ہے نہ کہ ہمارے بھیک مانگنے پر. اور اِسطرح میں نے اُس گھر میں دو سال گذارے جہاں میں جنگلوں کے پرندوں کی آزادی پر ترستی تھی اور شہر کی عورتیں میری پابندی پر. اپنے اکلوتے بیٹے کی موت پر جس طرح ایک ماں روتی ہے اُسی طرح میں اپنے ارمانوں کو دم توڑتے دیکھکر روتی تھی. پھر ایک دن میں نے اُس اندھیرے میں ایک جوان کی آنکھوں میں چمکتی ہوئی روشنی دیکھی جو زندگی کے راج پتھ پر اکیلا ہی بڑھا چلا جا رہا تھا اور اپنے غریب گھر میں کتابوں کی دھن میں لگا تھا. میں نے اپنی آنکھیں موند لیں جس سے اُن کرنوں کو نہ دیکھ سکوں اور اپنے من سے کہنے لگی—'اے دل! تیری قسمت میں تو صرف قبر کا اندھیرا ہے، اِس لئے مت للچا کہ تجھے روشنی ملے.' پھر مجھے ایک ترانہ سنائی دیا جسکی میٹھی آواز نے مجھے تڑپا دیا اور جس کی پوترتا نے مجھے اپنے آپ میں لے لیا. میں نے اپنے کان بند کر لئے اور کہا—'اے دل! تیری قسمت میں نرک کی ڈراونی آوازیں ہی لکھی ہیں، اس لئے مت للچا کہ تجھے گیت سننے ملیں.' میں نے اپنی آنکھیں بند کر لیں کہ میں دیکھ نہ سکوں، اپنے کان بند کر لئے کہ سن نہ سکوں. لیکن پھر بھی مجھے وہ روشنی دکھتی رہی اور میرے کان وہ ترانہ سنتے رہے. پہلے تو میں سہمی جیسے کوئی بھکاری راج محل کے پاس پڑا ہوا ہیرا دیکھے اور ڈر کے مارے اُسے اُٹھا نہ سکے اور نہ اپنی غریبی کے سبب وہاں سے ہٹ ہی سکے. میں اُس پیاسے کی طرح بلک رہی جو میٹھے پانی کے کنوئیں کو درندوں سے گھرا پائے اور نراس ہو کر دھرتی پر گر پڑے."

वरदुल कुछ देर के लिए चुप होगई. उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं जैसे पिछली जिन्दगी उसके सामने खड़ी हो और उसमें उससे आँखें मिलाने की ताब न हो. फिर वह कहने लगी—

"जो लोग इस दुनिया में आते हैं और जिन्दगी के राज़ समझे बिना ही चले जाते हैं वह नहीं जानते कि औरत का दर्द क्या है. उसकी आत्मा उस दोराहे पर खड़ी है जिनमें से एक राह सच्चे प्रेमी से मिलाती है और दूसरी रीत रिवाज की राह है जो कैदखाने की तरफ जाती है. यह दुख भरी कहानी औरत के आंसुओं और खून से लिखी गई है जिसे पढ़कर मर्द हँसता है क्योंकि वह उसे समझता ही नहीं. और अगर समझता है तो वही हँसी उसकी फिलासफी बन जाती है और गुस्से में वह औरत के सर बदनामी का बोझ डाल देता है. यह दुख अंधेरी रातों में हर औरत के दिल पर आता है जो मर्द की खाट से बँधी है, शादी का मतलब समझने से पहले ही वह उसका पति हो जाता है. औरत अपनी आत्मा को किसी और के सामने फड़फड़ाते देखती है जिसे वह दिल से चाहती है और प्रेम की पूरी पवित्रता और खूबसूरती से चाहती है. यह जद्दोजहद औरत की कमजोरी और मर्द की ताकत के कारण चल रही है और तब तक बन्द नहीं होगा जब तक कमजोरी ताकत की गुलामी से नहीं छूटती. मर्द के निकम्मे कानून और हृदय की पवित्र भावनाओं में यह लड़ाई चल रही है. कल मैं उस हालत में थी जहां डर ने मुझे करीब करीब मुर्दा कर दिया था और आंसुओं ने रोशनी को धुंधला कर दिया था. लेकिन मैं उठ खड़ी हुई. अपनी दूसरी बहनों की सी बुज़दिली को दूर फेंककर अपने परों को आज़ाद कर लिया ताकि कमजोरी और गुलामी से छूट सकूं. मैं प्रेम और मुक्ति के खुले आसमान में ऊपर उड़ चली. आज मैं उस आदमी के साथ खुश हूं जिसे मेरे दिल ने पसन्द किया. मुझे वह ईश्वरी मशाल मिल गई है जो सदा से जल रही है और सदा जलती रहेगी. अब दुनिया की कोई ताकत मुझ से मेरी खुशी नहीं छीन सकती क्योंकि दो दिल गले मिल कर प्रेम के उस शामियाने के नीचे खड़े हैं जो इस खुशी का फव्वारा है."

वरदुल ने मेरी तरफ इस तरह देखा जैसे वह मेरे सीने को चीर कर मेरे दिल में अपनी बात के असर को देखना चाहती हो. लेकिन इस डर से कि कहीं वह चुप न हो जाय मैं कुछ नहीं बोला. अपनी आवाज़ में पिछली यादों की उदासी और मुक्ति की मिठास को भर कर वह बोली—

"लोग तुम से कहेंगे कि वरदुल एक झूठी और आवारा औरत है जो अपनी नापाक ख्वाहिशों के लिए उस आदमी को छोड़ कर चल दी जिसने उसे अपनी बनाकर अपने घर

وردل کچھ دیر کے لئے چپ ہوگئی۔ اس نے اپنی آنکھیں بند کر لیں جیسے پچھلی زندگی اس کے سامنے کھڑی ہو اور اس میں اس سے آنکھیں ملانے کی تاب نہ ہو۔ پھر وہ کہنے لگی—

"جو لوگ اس دنیا میں آتے ہیں اور زندگی کے راز سمجھے بنا ہی چلے جاتے ہیں وہ نہیں جانتے کہ عورت کا درد کیا ہے۔ اس کی آتما اس دوراہے پر کھڑی ہے جن میں سے ایک راہ سچے پریمی سے ملاتی ہے اور دوسری ریت رواج کی راہ ہے جو قید خانے کی طرف جاتی ہے۔ یہ دکھ بھری کہانی عورت کے آنسوؤں اور خون سے لکھی گئی ہے جسے پڑھکر مرد ہنستا ہے کیونکہ وہ اسے سمجھتا ہی نہیں۔ اور اگر سمجھتا ہے تو یہی ہنسی فلسفہ بن جاتی ہے اور غصے میں وہ عورت کے سر بدنامی کا بوجھ لاد دیتا ہے۔ یہ دکھ اندھیری راتوں میں ہر عورت کے دل پر بیتتا ہے جو مرد کی کھاٹ سے بندھی ہے، شادی کا مطلب سمجھنے سے پہلے ہی وہ اسکا پتی ہو جاتا ہے۔ عورت اپنی آتما کو کسی اور کے سامنے پھڑپھڑاتے دیکھتی ہے جسے وہ دل سے چاہتی ہے اور پریم کی پوری پوترتا اور خوبصورتی سے چاہتی ہے۔ یہ جدوجہد عورت کی کمزوری اور مرد کی طاقت کے کارن چل رہی ہے اور تب تک بند نہیں ہوگی جب تک کمزوری طاقت کی غلامی سے نہیں چھوٹتی۔ مرد کے نکمے قانون اور ہردے کی پوتر بھاؤناؤں میں لڑائی یہ چل رہی ہے۔ کل میں اس حالت میں تھی جہاں ڈر نے مجھے قریب قریب مردہ کر دیا تھا اور آنسوؤں نے روشنی کو دھندلا کر دیا تھا۔ لیکن میں اٹھ کھڑی ہوئی۔ اپنی دوسری بہنوں کی بزدلی کو دور پھینک کر اپنے پروں کو آزاد کر لیا تاکہ کمزوری اور غلامی سے چھوٹ سکوں۔ میں پریم اور مکتی کے کھلے آسمان میں اوپر اڑ چلی۔ آج میں اس آدمی کے ساتھ خوش ہوں جسے میرے دل نے پسند کیا۔ مجھے وہ ایشوری مشعل مل گئی ہے جو سدا سے جل رہی ہے اور سدا جلتی رہیگی۔ اب دنیا کی کوئی طاقت مجھسے میری خوشی نہیں چھین سکتی کیونکہ دو دل گلے ملکر پریم کے اس شامیانے کے نیچے کھڑے ہیں جو اس خوشی کا فوارہ ہے۔"

وردل نے میری طرف اسطرح دیکھا جیسے وہ میرے سینے کو چیر کر میرے دل میں اپنی بات کے اثر کو دیکھنا چاہتی ہو۔ لیکن اس ڈر سے کہ کہیں وہ چپ نہ ہوجائے میں کچھ نہیں بولا۔ اپنی آواز میں پچھلی یادوں کی اداسی اور مکتی کی مٹھاس کو بھر کر وہ بولی—

"لوگ تم سے کہیں گے کہ وردل ایک جھوٹی اور آوارہ عورت ہے جو اپنی ناپاک خواہشوں کے لئے اس آدمی کو چھوڑ کر چل دی جس نے اسے اپنی بنا کر اپنے گھر

की मालिका बना दिया था. वह कहेंगे कि वह बेशर्म है और उसने शादी के शाही ताज की तौहीन की है और उसके बदले में नरक के कँटीले घिनौने ताज को अपनाया है. लोग कहेंगे कि मैंने सचाई की पोशाक छोड़कर ज़िल्लत और पाप के लिबास को पहना है. वह और भी बहुत कुछ कहेंगे क्योंकि पुरखों के भूत अब भी उनके जिस्म में ज़िन्दा हैं. वह उन गुफाओं की तरह हैं जो बिना समझे बूझे ही आवाज़ को गुंजाती हैं. वह उन पाक क़ानूनों को जानते ही नहीं जो भगवान की दुनिया में चल रहे हैं और न उनमें सच्चा ईमान ही है. वह नहीं जानते कि कौन गुनहगार है और कौन बेगुनाह. सिर्फ़ बाहरी बातों को देखते हैं और दिल की बात उनकी कमज़ोर आंखों से छिपी रह जाती है. वह ग़लत इन्साफ़ करते हैं. उनके सामने गुनहगार और बेगुनाह, भले और बुरे एक से हैं. मैं एक पापी और काफ़र थी जब कि रीत रिवाज की बिना पर रशीद मुझ से मिलता था न कि उस दैवी नियम से जो दो दिलों को प्रेम की डोर में बांध देता है. मैं अपनी और भगवान की नज़र में एक पतित और नापाक औरत थी जब मैं उसकी रोटियों के बदले में अपना तन दे रही थी. लेकिन अब मैं पाक हूं क्योंकि प्रेम के क़ानून ने मुझे आज़ाद कर दिया है. अब मैं ईमानदार और सच्ची हूं क्योंकि अपने तन से रोटी कपड़ों का सौदा नहीं करती. लोग मुझे ईमानदार समझते थे जब कि मैं पापिन थी. और आज वे मुझे पापिन समझते हैं जब कि मैं ईमानदार हूं. क्योंकि वह लोग दिलों को अपने जिस्म के पैमाने से नापते हैं और अमर आत्माओं को फ़ानी गज़ों से.''

वरदुल ने खिड़की की ओर देखा और शहर की तरफ़ इशारा किया. जैसे उसे शहर की गलियों और घरों के आंगन छतों पर छल-कपट की छाया दिखाई दे रही हो. वह नफ़रत से कांपती हुई आवाज़ में बोली—"इन आलीशान इमारतों की तरफ़ देखो जहां दौलत और ताक़त रहती है. इनकी दीवारों में रेशमी पर्दों के बीच बदचलनी और मक्कारी बसती है और सोने से पटी छतों के नीचे झूठ और फ़रेब पनपता है. ज़रा ग़ौर से देखो इन महलों को जिनसे शान शौकत टपकता है. ये सिवा अंधी गुफाओं के कुछ नहीं है जहां गंदगी जमा होती है. ये ईंट और चूने की क़ब्रें हैं जहां कमनसीब औरतों का फ़रेब आंखों के काजल और होंटों की सुर्ख़ी के पीछे शरन पाता है. इनके कोनों में आदमी की ख़ुदपरस्ती और ज़ुल्म-सितम सोने चांदी की चमक दमक के पीछे छिपे हैं. इन महलों की दीवारें बड़ी शान से ऊँची उठाई गई हैं लेकिन अगर वह छलकपट की गर्म सांसों को महसूस कर सकें जो उनसे उठ रही हैं तो डगमगाकर ज़मीन पर आ गिरेंगी. वह वह

کی مالکہ بنا دیا تھا۔ وہ کہیں گے کہ وہ بےشرم ہے اور اُس نے شادی کے شاہی تاج کی توہین کی ہے اور اُس کے بدلے میں نرک کے کانٹے گھناؤنے تاج کو اپنایا ہے۔ لوگ کہیں گے کہ میں نے سچائی کی پوشاک کو چھوڑ کر ذلت اور پاپ کے لباس کو پہنا ہے۔ وہ اور بھی بہت کچھ کہیں گے کیونکہ پرکھوں کے بھوت اب بھی اُن کے جسموں میں زندہ ہیں۔ وہ اُن گپھاؤں کی طرح ہیں جو بنا سمجھے بوجھے ہی آواز کو گونجاتی ہیں۔ وہ اُن پاک قانونوں کو جانتے ہی نہیں جو بھگوان کی دنیا میں چل رہے ہیں اور نہ اُن میں سچا ایمان ہی ہے۔ وہ نہیں جانتے کہ کون گناہگار ہے اور کون بےگناہ۔ صرف باہری باتوں کو دیکھتے ہیں اور دل کی بات اُن کی کمزور آنکھوں سے چھپی رہ جاتی ہے۔ وہ غلط انصاف کرتے ہیں۔ اُن کے سامنے گناہگار اور بےگناہ، بھلے اور بُرے ایک سے ہیں۔ میں ایک پاپی اور کافر تھی جبکہ ریت رواج کی بنا پر رشید مجھ سے ملتا تھا نہ کہ اُس دیوی نیم سے جو دو دلوں کو پریم کی ڈور میں باندھ دیتا ہے۔ میں اپنی اور بھگوان کی نظر میں ایک پتت اور ناپاک عورت تھی جب میں اُسکی روٹیوں کے بدلے میں اپنا تن دے رہی تھی۔ لیکن اب میں پاک ہوں کیونکہ پریم کے قانون نے مجھے آزاد کر دیا ہے۔ اب میں ایماندار اور سچی ہوں کیونکہ اپنے تن سے روٹی کپڑوں کا سودا نہیں کرتی۔ لوگ مجھے ایماندار سمجھتے تھے جبکہ میں پاپن تھی اور آج وہ مجھے پاپن سمجھتے ہیں جبکہ میں ایماندار ہوں۔ کیونکہ وہ لوگ دلوں کو اپنے جسم کے پیمانے سے ناپتے ہیں اور امر آتماؤں کو فانی گزوں سے۔"

وردل نے کھڑکی کی اور دیکھا اور شہر کی طرف اشارہ کیا۔ جیسے اُسے شہر کی گلیوں اور گھروں کے آنگن اور چھتوں پر چھل کپٹ کی چھایا دکھائی دے رہی ہو۔ وہ نفرت سے کانپتی ہوئی آواز میں بولی—" اِن عالیشان عمارتوں کی طرف دیکھو جہاں دولت اور طاقت رہتی ہے۔ اُن کی دیواروں میں ریشمی پردوں کے بیچ بدچلنی اور مکاری بستی ہے اور سونے سے پٹی چھتوں کے نیچے جھوٹ اور فریب پنپتا ہے۔ ذرا غور سے دیکھو اِن محلوں کو جن سے شان شوکت ٹپکتی ہے۔ وہ سوا اندھی گپھاؤں کے کچھ نہیں ہیں جہاں گندگی جمع ہوتی ہے۔ یہ اینٹ اور چونے کی قبریں ہیں جہاں کم نصیب عورتوں کا فریب آنکھوں کے کاجل اور ہونٹوں کی سرخی کے پیچھے شرن پاتا ہے۔ اِن کے کونوں میں آدمی کی خودپرستی اور ظلم ستم سونے چاندی کی چمک دمک کے پیچھے چھپے ہیں۔ اِن محلوں کی دیواریں بڑی شان سے اونچی اُٹھائی گئی ہیں لیکن اگر وہ چھل کپٹ کی گرم سانسوں کو محسوس کر سکیں جو اُن سے اٹھ رہی ہیں تو ہوا ہوا کو زمین پر آ گریں گی۔ یہ وہ

मकान हैं जिनकी तरफ बेचारा देहाती ललचाई आंखों से देखता है; लेकिन उसे अगर यह मालूम हो जाय कि इन महलों के रहनेवालों के दिलों में प्रेम और मुहब्बत का एक कन भी नहीं है जिससे उसके साथी देहातियों के दिल भरे पुरे हैं तो वह इन को धिक्कारता हुआ अपने खेतों को लौट आवेगा."

उसने मेरा हाथ पकड़कर खिड़की के कोने की तरफ ले आकर उन मकानों और कोठियों की ओर इशारा किया—

"आओ तुम्हें मैं इन लोगों के वह राज़ बताऊं जिनके कारन मुझे उनके जैसा बनने की चाह नहीं रही. उस कोठी को देखो जिस के खंबे संगमरमर के बने हैं और कांच की खिड़कियां हैं. इसमें एक धनी रहता है जिसे अपने लालची बाप की दौलत मिली है और साथ ही गन्दी-गलियों की तहज़ीब और ज़िन्दगी. दो साल हुए उसने एक ऐसी औरत से शादी की है जिसके बाप के बारे में वह इसके सिवा कुछ नहीं जानता था कि वह शहर का एक धनी मानी आदमी है. उनकी सुहागरात के चिराग़ गुल भी नहीं होने पाए थे कि वह अपनी बीवी से ऊब कर बाज़ारी औरतों के पास चला गया जैसे शराबी खाली बोतल छोड़ कर चल देता है. पहले तो वह दुख में रोती रही; लेकिन बाद में उसने भी किसी तरह खुद को समझाया और अपनी ग़लती को मान लिया वह भी जान गई कि उसके आंसू इतने सस्ते नहीं हैं कि ऐसे बेवफ़ा आदमी के लिए बहाए जावें. अब वह एक जवान से मेल जोल रख रही है जो सूरत से सुन्दर और बातों का मीठा है. उसके दिल में अपने दिल के अरमानों को उंडेल रही है और उसकी जेबों में अपने पति की दौलत भर रही है. उसके पति का उससे अब कोई वास्ता नहीं है क्योंकि वह भी तो उसकी राह में नहीं आती.

"उस महल को देखो जिसके चारों तरफ बाग़ लगा है. इसमें एक ऐसा आदमी रहता है जिसका खानदान मशहूर है और किसी ज़माने में वह इस मुल्क के राजा थे. आज दौलत की कमी और लड़कों की काहिली और जाहिली के कारन वह शान नहीं रही है. कई साल पहले इसने एक ऐसी औरत से शादी की जिस के पास धन था, पर रूप और जवानी नहीं थी. धन दौलत को हथिया कर उसने उसे भुला दिया और किसी और सुन्दरी को घर ले आया. पहली बीवी नाउम्मीदी से होंठ चबाती रह गई और दुख में घुलने लगी. अब वह सारे दिन बनाव सिंगार में लगी रहती है. अब वह भड़कीले रेशमी कपड़े पहनती है ताकि किसी मेहमान की आंखों में खुब जाए. लेकिन सिवाय आइने में अपनी परछाईं के उसकी किसी से चार आंखें

ہو گا[illegible]

محلوں میں جن کی طرف بیچارہ دیہاتی سجل آنکھوں سے دیکھتا ہے؛ لیکن اسے اگر یہ معلوم ہو جائے کہ اِن محلوں کے رہنے والوں کے دلوں میں پریم اور محبت کا ایک کن بھی نہیں ہے جس سے اُس کے ساتھی دیہاتیوں کے دل بھرے پورے ہیں تو وہ اِن کو دھتکارتا ہوا اپنے کھیتوں کو لوٹ جاوے گا.'

اُس نے میرا ہاتھ پکڑ کر کھڑکی کے کونے کی طرف جا کر اُن مکانوں اور کوٹھیوں کی اور اِشارہ کیا—

"آؤ تمہیں میں اِن لوگوں کے وہ راز بتاؤں جن کے کارن مجھے اُن کے جیسا بننے کی چاہ نہیں رہی. اُس کوٹھی کو دیکھو جس کے کھمبے سنگ مر مر کے بنے ہیں اور کانچ کی کھڑکیاں ہیں. اس میں ایک دھنی رہتا ہے جسے اپنے لوبھی باپ کی دولت ملی ہے اور ساتھ ہی گندی گلیوں کی تہذیب اور زندگی. دو سال ہوئے اُس نے ایک ایسی عورت سے شادی کی ہے جس کے باپ کے بارے میں وہ اس کے سوا کچھ نہیں جانتا تھا کہ وہ شہر کا ایک دھنی مانی آدمی ہے. اُن کی سہاگ رات کے چراغ گل بھی نہیں ہونے پائے تھے کہ وہ اپنی بیوی سے اوب کر بازاری عورتوں کے پاس چلا گیا جیسے شرابی خالی بوتل چھوڑ کر چل دیتا ہے. پہلے تو وہ دکھ میں روتی رہی، لیکن بعد میں اُس نے بھی کسی طرح خود کو سمجھایا اور اپنی غلطی کو مان لیا وہ بھی جان گئی کہ اِس کے آنسو اتنے سستے نہیں ہیں کہ ایسے بیوفا آدمی کے لئے بہائے جاویں. اب وہ ایک جوان سے میل جول رکھ رہی ہے جو صورت سے سندر اور بولی کا میٹھا ہے. اُس کے دل میں اپنے دل کے ارمانوں کو انڈیل رہی ہے اور اُسکی جیبوں میں اپنے پتی کی دولت بھر رہی ہے. اُس کے پتی کو اُس سے اب کوئی واسطہ نہیں ہے کیونکہ وہ بھی تو اسکی راہ میں نہیں آتی.

"اُس محل کو دیکھو جس کے چاروں طرف باغ لگا ہے. اِس میں ایک ایسا آدمی رہتا ہے جس کا خاندان مشہور ہے اور کسی زمانے میں وہ اِس ملک کے راجہ تھے. آج دولت کی کمی اور لڑکوں کی کاہلی اور جاہلی کے کارن وہ شان نہیں رہی ہے. کئی سال پہلے اِس نے ایک ایسی عورت سے شادی کی جس کے پاس مال دھن تھا پر روپ اور جوانی نہیں تھی. دھن دولت کو ہتھیا کر اِس نے اُسے بھلا دیا اور کسی اور سندری کو گھر لے آیا. پہلی بیوی ناامیدی سے ہونٹ چباتی رہ گئی اور دکھ میں گھلنے لگی. اب وہ سارے دن بناؤ سنگار میں لگی رہتی ہے. اب وہ بھڑکیلے ریشمی کپڑے پہنتی ہے تاکہ کسی مہمان کی آنکھوں میں کھب جائے. لیکن سوائے آئنے میں اپنی پرچھائیں کے اُسکی کسی سے چار آنکھیں

[illegible] घर है जिसके चेहरे खूबसूरत हैं पर आत्मा बदसूरत है. पहले पति की मौत के बाद वह उसकी ज़मीन जायदाद, धन दौलत की मालिक हो गई. फिर उसने एक ऐसे आदमी से शादी कर ली जो दिल, दिमाग़ और जिस्म से ताक़तवर नहीं है ताकि उसकी आड़ में अपनी नापाक ख्वाहिशें पूरी कर सके और लोगों के तानों से बची रहे.

"ज़रा इस कोठी को देखो जिसका दरवाज़ा बहुत बुलंद है और मेहराब बहुत सुन्दर है. इस में एक ऐसा आदमी रहता है जिसे दुनिया की फ़ानी चीज़ों से अधिक मुहब्बत है और दिन रात काम में ही लगा रहता है. उसकी औरत ऐसी है जिस में रूप है, जवानी है और जो बहुत नाज़ुक तबीयत की है. उसमें कुछ ऐसी चीज़ है कि रूह और देह घुलमिल से गए हैं जैसे किसी गीत में छिपा हुआ खूबसूरत ख़याल होता है. वह धरती पर इसीलिए पैदा हुई थी कि प्रेम से जिए और प्रेम के लिये मरे. लेकिन अपनी और हमजोलियों की तरह उसकी जवानी से पहले ही बाप ने एक नाक़िस शादी का जुआ उसकी गर्दन पर रख दिया. आज वह ऐसी रोगी है जिसका देह दबे हुए स्नेह की गरमी से मोम की तरह दिन ब दिन गल-सा रहा है. वह मिटी जा रही है जैसे खुशबू की हलकी सी बयार अंधड़ में खो जाती है. उसे अंदर की एक ऐसी चीज़ ख़त्म किये डाल रही है जो ख़याल में तो आती है पर दिखाई नहीं देती. वह मौत के लिये दुआ मांगती है कि इस नरक से छूट जाय ताकि उस आदमी के ज़ुल्म न सहने पड़ें जो दिन को दौलत बटोरता है और रात को अपनी दौलत की संभाल करता है. रात दिन उसे बड़ी कटी सुनाता है कि वह बांझ है और उसने इतनी बड़ी जायदाद के लिये कोई वारिस नहीं पैदा किया जो उसका नाम जगाए रखता.

"उस मकान को देखो जो बाग़ के बीच अकेला खड़ा है. इसमें एक ऊँचे विचारों का कवि रहता है. उसकी पत्नी बड़ी क्रूर और ओछी है. वह उसकी कविताओं का मज़ाक़ उड़ाती है क्योंकि कुछ समझती ही नहीं. उसकी किताबों का अपमान करती है क्योंकि वह उसके लिए बेमानी हैं. इस लिए वह कवि उससे दूर सा हट गया है और किसी दूसरी औरत से जा मिला है जो बड़े कोमल और सुन्दर विचारों कि सी है. वह कवि के दिल में अपने प्रेम से नई रोशनी करती है और उसकी मीठी मुस्कान कवि के अमर गीतों को जन्म देती है."

वरदुक कुछ देर के लिए चुप हो गई. वह खिड़की के पास बैठ गई जैसे उन काली कोठरियों में घूमते घूमते थक गई हो. फिर वह कहने लगी—

"वह वह जगहें हैं जहां जाना मुझे मंज़ूर नहीं था. यह वह घर हैं जिनमें मैं ज़िंदा दफ़न होना नहीं चाहती

نہیں ہوتیں۔ یہ [illegible] میں جن کے چہرے خوبصورت ہیں پر آتما بدشکل ہے۔ پہلے پتی کی موت کے بعد وہ اسکی زمین جائیداد دھن دولت کی مالک ہوگئی۔ پھر اس نے ایک ایسے آدمی سے شادی کر لی جو دل، دماغ اور جسم سے طاقتور نہیں ہے تاکہ اسکی آڑ میں اپنی ناپاک خواہشیں پوری کر سکے اور لوگوں کے طعنوں سے بچی رہے۔

" ذرا اس کوٹھی کو دیکھو جس کا دروازہ بہت بلند ہے اور محراب بہت سندر ہے۔ اس میں ایک ایسا آدمی رہتا ہے جسے دنیا کی فانی چیزوں سے ادھک محبت ہے اور دن رات کام میں ہی لگا رہتا ہے۔ اسکی عورت ایسی ہے جس میں روپ ہے، جوانی ہے اور جو بہت نازک طبیعت کی ہے۔ اس میں کچھ ایسی چیز ہے کہ روح اور دیہہ گھل مل سے گئے ہیں جیسے کسی گیت میں چھپا ہوا خوبصورت خیال ہوتا ہے۔ وہ دھرتی پر اسی لئے پیدا ہوئی تھی کہ پریم سے جئے اور پریم کے لئے مرے۔ لیکن اپنی اور ہمجولیوں کی طرح اسکی جوانی سے پہلے ہی باپ نے ایک ناقص شادی کا جوا اسکی گردن پر رکھ دیا۔ آج وہ ایسی روگی ہے جس کا دیہہ دبے ہوئے سنیہہ کی گرمی سے موم کی طرح دن بہ دن گل سا رہا ہے۔ وہ مٹی جا رہی ہے جیسے خوشبو کی ہلکی سی بہار اندھڑ میں کھو جاتی ہے۔ اسے اندر کی ایک ایسی چیز ختم کئے ڈال رہی ہے جو خیال میں تو آتی ہے پر دکھائی نہیں دیتی۔ وہ موت کے لئے دعا مانگتی ہے کہ اس نرک سے چھوٹ جائے تاکہ اس آدمی کے ظلم نہ سہنے پڑیں جو دن کو دولت بٹورتا ہے اور رات کو اپنی دولت کی سنبھال کرتا ہے۔ رات دن اسے جلی کٹی سناتا ہے کہ وہ بانجھ ہے اور اس نے اتنی بڑی جائیداد کے لئے کوئی وارث نہیں پیدا کیا جو اس کا نام جگائے رکھتا۔

"اس مکان کو دیکھو جو باغ کے بیچ اکیلا کھڑا ہے۔ اس میں ایک اونچے وچاروں کا کوی رہتا ہے۔ اسکی پتنی بڑی کرور اور اوچھی ہے۔ وہ اسکی کویتاؤں کا مذاق اڑاتی ہے کیونکہ کچھ سمجھتی ہی نہیں۔ اسکی کتابوں کا اپمان کرتی ہے کیونکہ وہ اس کے لئے بے معنی ہیں۔ اس لئے وہ کوی اس سے دور سا ہٹ گیا ہے اور اسی دوسری عورت سے جا ملا ہے جو بڑے کومل اور سندر وچاروں کی استری ہے۔ وہ کوی کے دل میں اپنے پریم سے نئی روشنی کرتی ہے اور اسکی میٹھی مسکان کوی کے امر گیتوں کو جنم دیتی ہے۔"

وردک کچھ دیر کے لئے چپ ہوگئی۔ وہ کھڑکی کے پاس بیٹھ گئی جیسے ان کالی کوٹھریوں میں گھومتے گھومتے تھک گئی ہو۔ پھر وہ کہنے لگی—

"یہ وہ جگہیں ہیں جہاں جانا مجھے منظور نہیں تھا۔ یہ وہ گھر ہیں جن میں میں زندہ دفن نہیں ہونا چاہتی

थी. जिन लोगों के रास्तों से बचकर मैंने आज़ादी पाई है, जिनके झूठ को मैंने उतार फेंका है उनके देश आपस में मिलते हैं दिल नहीं मिलते. उनको राह दिखाने वाला कोई नहीं है. मैं क्या गाथ हूँ. मुझे तो दया आती है. मुझे उनसे नफ़रत नहीं पर उनके झूठ और छल कपट से नफ़रत है. मैंने तुम्हें सचाई दिखा दी है. उनकी बुराई करने की ग़रज़ से नहीं बल्कि सचाई को ज़ाहिर करने के लिए मैंने तुम्हें बताया है कि कल तक मैं उनकी कैदी थी और आज आज़ाद हूँ. वह नासमझ लोग मेरी बुराई करते हैं क्योंकि मैंने उनकी दुनिया का सहारा छोड़कर अपनी आत्मा का दामन पकड़ा है और उनके अंधेरों को छोड़कर रोशनी को अपना सहारा बनाया है. जिसमें ईमान, सचाई और इंसाफ़ है. उन्होंने मुझे अपने गिरोह से अलग कर दिया है, कोई हर्ज नहीं. झूठ और अत्याचार के खिलाफ़ बग़ावत करने वाली आत्माएं तो सदा से समाज से अलग रही हैं. कल तक मैं वह दस्तरख़्वान थी जिस पर भूख लगने पर रशीद आ बैठता था. हम साथ रहते थे लेकिन हम लोगों के दिल सदा दूर दूर रहते थे जैसे दो अजनबी अलग अलग खड़े हों. और जब मुझे इस बात का ज्ञान हुआ तो मैं इस गुलामी से नफ़रत करने लगी. मैंने इस गुलामी को क़बूल करने की बहुत कोशिश की पर मेरे मन ने उस मूरत के सामने झुकना मंज़ूर न किया जिसको काले हाथों ने बनाया है मैंने जंजीरें तोड़ डालीं पर तब तक उन्हें फेंक नहीं सकी जब तक प्रेम की मुरली नहीं सुनाई दी. फिर, मैं रशीद के घर से उसी तरह चली आई जिस तरह कोई क़ैदी जेलखाने को छोड़ देता है. रशीद का सारा माल धन, ज़ेवर, नौकर चाकर, गाड़ी घोड़े सभी कुछ छोड़ कर मैं अपने प्रेम के झोंपड़े में चली आई जो दिखावटी फ़र्नीचर से ख़ाली है लेकिन आत्मा को शांति देने वाले साज़ सामान से भरा है. मुझे विश्वास है कि जो कुछ मैंने किया ठीक किया है क्योंकि भगवान की मर्ज़ी यह नहीं थी कि मैं अपने पर कटवाकर धरती पर आ गिरूँ और अपना मुँह छिपा कर ख़ून के आँसू रोती रहूँ और कहूँ—'यह है मेरा ज़िन्दगी!' उसकी मर्ज़ी यह भी नहीं थी कि मैं अपने दिन दुख से बिता कर रात को उससे दुआ माँगूँ कि 'जल्द सुबह हो; और जब सुबह हो जाए तो यह प्रार्थना करूँ कि जल्दी दिन ख़त्म हो. न भगवान की यह मर्ज़ी है कि इंसान दुखी और पीड़ित रहे क्योंकि उसके अंदर में सुख की चाह भरी है. इंसान की ख़ुशहाली ही भगवान को भी पसन्द है. यह है मेरी कहानी और यह है मेरा शिकायत उस आसमान वाले और धरती वालों से. मैं अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाऊँगी लेकिन लोग अपने कान बन्द कर लेंगे पर नहीं सुनेंगे क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं उनके दिल में बाग़ी न बन जाएँ और समाज की बुनियाद हिल उठे.

تھی . جن لوگوں کے راستوں سے بچ کر میں نے آزادی پائی ہے' جنکے جھوٹ کو میں نے اُتار پھینکا ہے انکے دیش آپس میں ملتے ہیں دل نہیں ملتے . ان کو راہ دکھانے والا کوئی نہیں ہے . میں کیا رتے ہوں . مجھے تو دیا آتی ہے . مجھے ان سے نفرت نہیں پر ان کے جھوٹ اور چھل کپٹ سے نفرت ہے . میں نے تمہیں سچائی دکھا دی ہے . ان کی برائی کرنے کی غرض سے نہیں بلکہ سچائی کو ظاہر کرنے کے لئے میں نے تمہیں بتایا ہے کہ کل تک میں انکی قیدی تھی اور آج آزاد ہوں . وہ ناسمجھ لوگ میری برائی کرتے ہیں کیونکہ میں نے ان کی دنیا کا سہارا چھوڑ کر اپنی آتما کا دامن پکڑا ہے اور انکے اندھیروں کو چھوڑ کر روشنی کو اپنا سہارا بنایا ہے . جس میں ایمان' سچائی اور انصاف ہے . انہوں نے اپنے گروہ سے مجھے الگ کر دیا ہے' کوئی حرج نہیں . جھوٹ اور اتیاچار کے خلاف بغاوت کرنے والی آتمائیں تو سدا سے سماج سے الگ رہی ہیں . کل تک میں وہ دسترخوان تھی جس پر بھوک لگنے پر رشید آ بیٹھتا تھا . ہم ساتھ رہتے تھے لیکن ہم لوگوں کے دل سدا دور دور رہتے تھے . جیسے دو اجنبی الگ الگ کھڑے ہوں . اور جب مجھے اس بات کا گیان ہوا تو میں اس غلامی سے نفرت کرنے لگی . میں نے اس غلامی کو قبول کرنے کی بہت کوشش کی پر میرے من نے اس مورت کے سامنے جھکنا منظور نہ کیا جسکو کالے ہاتھوں نے بنایا ہے . میں نے زنجیریں توڑ ڈالیں پر تب تک ان کو پھینک نہیں سکی جب تک پریم کی مرلی نہیں سنائی دی پھر' میں رشید کے گھر سے اسی طرح چلی آئی جس طرح کوئی قیدی جیل خانے کو چھوڑ دیتا ہے . رشید کا سارا مال دھن' زیور' نوکر چاکر' گاڑی گھوڑے سبھی کچھ چھوڑ کر میں اپنے پریم کے جھونپڑے میں چلی آئی جو دکھاوٹی فرنیچر سے خالی ہے لیکن آتما کو شانتی دینے والے ساز سامان سے بھرا ہے . مجھے وشواس ہے کہ جو کچھ میں نے کیا ٹھیک کیا ہے کیونکہ بھگوان کی مرضی یہ نہیں تھی کہ میں اپنے پر کٹوا کر دھرتی پر آ گروں اور اپنا منہ چھپا کر خون کے آنسو روتی رہوں اور کہوں—'یہ ہے میری زندگی!' اسکی مرضی یہ بھی نہیں تھی کہ میں اپنے دن دکھ سے بتا کر رات کو اس سے دعا مانگوں کہ 'جلد صبح ہو؛ اور جب صبح ہو جائے تو یہ پرارتھنا کروں کہ 'جلد دن ختم ہو؛ نہ بھگوان کی یہ مرضی ہے کہ انسان دکھی اور پیڑت رہے کیونکہ اسکے اندر میں سکھ کی چاہ بھری ہے . انسان کی خوشحالی ہی بھگوان کو بھی پسند ہے . یہ ہے میری کہانی اور یہ ہے میری شکایت اس آسمان والے اور دھرتی والوں سے . میں انیائے کے خلاف آواز اٹھاؤں گی لیکن لوگ اپنے کان بند کر لیں گے اور نہیں سنیں گے کیونکہ انہیں ڈر ہے کہ کہیں ان کے دل میں باغی نہ بن جائیں اور سماج کی بنیاد ہل اٹھے .

यह है वह ऊबड़ खाबड़ और ना-हमवार रास्ता जिस पर चल कर मैं इस ऊँचाई पर पहुँची हूँ. अगर आज मौत भी आ जाए तो मुझे डर नहीं है. मैं अपने सिरजनहार के सामने निडर खड़ी हो सकूँगी और अपनी दूध सी सफ़ेद चादर दिखा सकूँगी. मैंने जो कुछ किया है अपनी आत्मा के आदेश से किया है जिसमें उसकी रोशनी जगमगा रही है. मैं दिल की पुकार और अपने कन्हैया की मुरली के पीछे चली हूँ. यह है मेरी कहानी जिसे बेरहम के निवासी जिन्दगी के लिए शाप और समाज के लिए ज़ख्म समझते हैं. लेकिन यह लोग उस दिन रोया करेंगे जब उनके दिलों में प्रेम की शमा रोशन होगी. तब हरेक राही मेरी क़ब्र के पास खड़ा होकर कहेगा—'यहां वह सो रही है जिसने अपने प्रेम की आत्मा को निकम्मे क़ानूनों के बंधन से छुड़ाया ताकि वह प्रेम के अपने क़ानूनों पर चलकर जी सके; उसने अपना मुंह सूरज की ओर किया ताकि मुर्दों और कांटों में उलझा हुई अपनी परछाई न देखे'."

बरदुल ने अपनी कहानी ख़त्म ही की थी कि दरवाज़ा खुला और एक जवान अन्दर आया. वह बड़ा सुन्दर जवान था. उसका बदन छरहरा था, आंखों में एक चमक थी और होंठों पर मुस्कराहट थिरक रही थी. बरदुल ने प्यार से उसका हाथ पकड़ लिया और मेरा परिचय कराया. उसका नाम जब उसने लिया तो उसके इशारों से मैं समझ गया कि यही वह जवान है जिसके लिए उसने दुनिया के छोड़ दिया है और उसके क़ानूनों और रीत रिवाजों को ठुकरा दिया है.

हम लोग बैठ गए. उस समय ऐसा लगा जैसे फ़रिश्ते झरोकों से झांक रहे हों और इस जोड़ी को देख रहे हों. मैंने भी जो कभी नहीं देखा था आज देख लिया. और फिर मुझे दम भर में बरदुल की कहानी समझ में आ गई. उस समाज के ख़िलाफ़ शिकायत का मतलब समझ पड़ा जो बाग़ी कहे जाने वाले बे-गुनाहों को बग़ावत का सबब समझे बिना सज़ा देता है. इन दोनों में एक ही ईश्वरी आत्मा बस रही थी दोनों के बीच प्रेम का देवता खड़ा था जिसकी शरन में वह दुनिया वालों की निन्दा और बुराई से बचे थे. जिन्दगी में पहली बार मैंने देखा कि इन दोनों के बीच आनन्द के देवता साकार खड़े थे.

मैंने उठकर उनसे विदा ली और उस झोंपड़ी से चल दिया जिसे प्रेम और मुहब्बत ने अमन का घर बना दिया था और उन मकानों से गुज़रा जिनके भेद बरदुल ने मुझे सुनाए थे. मुझे उसकी बातें और उसकी सचाई याद आने लगी. शहर से बाहर होते होते मुझे रशीद की याद आई और उसकी दुखी सूरत मेरी आंखों के सामने फिर गई. मैं सोचने लगा—वह दुखी है, लेकिन क्या कोई

ہے وہ اوبڑ کھابڑ ناہموار راستہ جس پر چل کر میں اس اونچائی پر پہنچی ہوں اگر آج موت بھی آجائے تو مجھے ڈر نہیں ہے۔ میں اپنے سرجن ہار کے سامنے نڈر کھڑی ہو سکوں گی اور اپنی دودھ سی سفید چادر دکھا سکوں گی۔ میں نے جو کچھ کیا ہے اپنی آتما کے آدیش سے کیا ہے جس میں اسی کی روشنی چمک رہی ہے۔ میں دل کی پکار اور اپنے کنہیا کی مرلی کے پیچھے چلی ہوں۔ یہ ہے میری کہانی جسے بیروت کے نواسی زندگی کے لئے شراپ اور سماج کے لئے زخم سمجھتے ہیں۔ لیکن یہ لوگ اس دن رویا کرینگے جس دن انکے دلوں میں پریم کی شمع روشن ہوگی۔ تب ہر ایک راہی میری قبر کے پاس کھڑا ہوکر کہے گا—'یہاں وہ سو رہی ہے جس نے اپنے پریم کو آدمی کے نکمے قانونوں کے بندھن سے چھڑایا تاکہ وہ پریم کے اپنے قانونوں پر چل کر جی سکے۔ اسنے اپنا منہ سورج کی اور کیا تاکہ مردوں اور کانٹوں میں الجھی ہوئی اپنی پرچھائیں نہ دیکھے'۔"

وردل نے اپنی کہانی ختم ہی کی تھی کہ دروازہ کھلا اور ایک جوان اندر آیا۔ وہ بڑا سندر جوان تھا۔ اسکا بدن چھرہرا تھا' آنکھوں میں ایک چمک تھی اور ہونٹوں پر مسکراہٹ تھرک رہی تھی۔ وردل نے پیار سے اس کا ہاتھ پکڑ لیا اور میرا پریچے کرایا۔ اس کا نام جب اسنے لیا تو اسکے اشاروں سے میں سمجھ گیا کہ یہی وہ جوان ہے جسکے لئے اسنے دنیا نے چھوڑ دیئے ہیں اور اسکے قانونوں اور ریت رواجوں کو ٹھکرا دیا ہے۔

ہم لوگ بیٹھ گئے۔ اس سمے ایسا لگا جیسے فرشتے جھروکوں سے جھانک رہے ہیں اور اس جوڑی کو دیکھ رہے ہوں۔ میں نے بھی جو کبھی نہیں دیکھا تھا آج دیکھ لیا۔ اور پھر مجھے دم بھر میں وردل کی کہانی سمجھ میں آگئی۔ اس سماج کے خلاف شکایت کا مطلب سمجھ پڑا جو باغی کہے جانے والے بے گناہوں کو بغاوت کا سبب سمجھے بنا سزا دیتا ہے۔ ان دونوں میں ایک ہی ایشوری آتما بس رہی تھی۔ دونوں کے بیچ پریم کا دیوتا کھڑا تھا جس کی شرن میں وہ دنیا والوں کی نندا اور برائی سے بچے تھے۔ زندگی میں پہلی بار میں نے دیکھا کہ ان کے دونوں کے بیچ آنند کے دیوتا ساکار کھڑے تھے۔

میں نے اٹھکر ان سے ودائی لی اور اس جھونپڑی سے چل دیا جسے پریم اور محبت نے امن کا گھر بنا دیا تھا اور ان مکانوں سے گزرا جنکے بھید وردل نے مجھے سنائے تھے۔ مجھے اسکی باتیں اور اسکی سچائی یاد آنے لگی۔ شہر سے باہر ہوتے ہوتے مجھے رشید کی یاد آئی اور اسکی دکھی صورت میری آنکھوں کے سامنے پھر گئی۔ میں سوچنے لگا—وہ دکھی ہے: لیکن کیا کوئی

उसकी इस शिकायत को सुनेगा जो वह बरदुल के खिलाफ कर रहा है? क्या उस औरत ने कोई खता की है जब वह अपनी आज़ाद आत्मा की आवाज़ पर चल दी? क्या रशीद ने उस औरत पर ज़ुल्म नहीं किया जब उसने ज़बरदस्ती उससे शादी की थी. इस में किसने किस पर ज़ुल्म किया? कौन गुनहगार है और कौन निर्दोष?

मैं अपने विचारों में खोया चला जा रहा था और सदा से होती आने वाली इस घटना के बारे में सोच रहा था—अकसर खुदग़रज़ी के कारन औरत अपने ग़रीब पति को छोड़कर मालदार आदमी के पीछे चल देती है, उसे धन दौलत और ऐश आराम की चाह अन्धा बना देती है और वह बे-शरमी और पतन की राह अपनाती है. लेकिन क्या बरदुल भी ऐसी ही खुदग़रज़ थी जब उसने एक धनवान को छोड़ कर एक ग़रीब नौ-जवान का दामन पकड़ा? जब वह रशीद के घर में थी तब भी चुप चाप अपनी उन नौ-जवानों से मेल रख सकती थी जो उसके लिये गुलामी तक स्वीकार कर लेते. बरदुल दुखी थी, उसे सुख की तलाश थी. वह उसे मिल गया. यही वह सच है जिसे समाज बुरा कहता है और क़ानून जुर्म बताता है.

मैं फिर सोचने लगा—लेकिन क्या एक औरत आज़ाद है कि अपने पति को दुखी करके अपनी खुशी खरीद सके? और इसके जवाब में मेरी आत्मा ने सवाल किया—तो क्या एक मर्द अपनी बीवी के प्रेम को गुलाम बना सकता है इसलिये कि वह खुद सुखी रह सके?

(अनुवादक—मदनलाल जैन)

اسکی اس شکایت کو سنے گا جو وہ وردل کے خلاف کر رہا ہے؟ کیا اس عورت نے کوئی خطا کی ہے جب وہ اپنی آزاد آتما کی آواز پر چل دی؟ کیا رشید نے اس عورت پر ظلم نہیں کیا جب اسنے زبردستی اس سے زبردستی شادی کی تھی۔ اس میں کس نے کس پر ظلم کیا؟ کون گنہگار ہے اور کون نردوش؟

میں اپنے وچاروں میں کھویا چلا جا رہا تھا اور سدا سے ہوتی آنے والی اس گھٹنا کے بارے میں سوچ رہا تھا—اکثر خود غرضی کے کارن عورت اپنے غریب پتی کو چھوڑ کر مالدار آدمی کے پیچھے چل دیتی ہے، اسے دھن دولت اور عیش آرام کی چاہ اندھا بنا دیتی ہے اور وہ بے شرمی اور پتن کی راہ اپناتی ہے۔ لیکن کیا وردل بھی ایسی ہی خود غرض تھی جب اسنے ایک دھنوان کو چھوڑ کر ایک غریب نوجوان کا دامن پکڑا؟ جب وہ رشید کے گھر میں تھی تب بھی چپ چاپ اپنی ان نوجوانوں سے میل رکھ سکتی تھی جو اسکے لئے غلامی تک سویکار کرلیتے۔ وردل دکھی تھی اسے سکھ کی تلاش تھی۔ وہ اسے مل گیا۔ یہی وہ سچ ہے جسے سماج برا کہتا ہے اور قانون جرم بتاتا ہے۔

میں پھر سوچنے لگا—لیکن کیا ایک عورت آزاد ہے کہ اپنے پتی کو دکھی کرکے اپنی خوشی خرید سکے؟ اور اسکے جواب میں میری آتما نے سوال کیا—تو کیا ایک مرد اپنی بیوی کے پریم کو غلام بنا سکتا ہے اسلئے کہ وہ خود سکھی رہ سکے؟

(انوواد—مدن لال جین)

'सर्वोदय' से

आत्म कल्याण का रास्ता

दक्खिन के चुनाव का सबक़.

अब तक मुझे भूल न जाय मैं क़रीब इकसठ-बासठ हज़ार एकड़ ज़मीन मिल चुकी है. मेरा यह काम लोगों के दिलों को समझाने का और उनके भीतर जो ईश्वर है, उसको जगाने का है. यह मेरा भक्ति का रास्ता है. भक्ति वाले रास्ते में भगवान को जगाने का काम भक्त करता है. जागने पर जो काम करता है, वह आप भगवान ही कर लेता है. यह इस काम के बारे में मेरी भावना है. मेरा

'سرودے' سے

آتم کلیان کا راستہ

دکھن کے چناؤ کا سبق۔

اب تک مجھے بھودان یگیہ میں قریب اکسٹھ باسٹھ ہزار ایکڑ زمین مل چکی ہے۔ میرا یہ کام لوگوں کے دلوں کو سمجھانے کا اور ان کے بھیتر جو ایشور ہے، اسکو جگانے کا ہے۔ یہ میرا بھگتی کا راستہ ہے۔ بھگتی والے راستے میں بھگوان کو جگانے کا کام بھگت کرتا ہے۔ جاگنے پر جو کام کرتا ہے، وہ آپ بھگوان ہی کر لیتا ہے۔ یہ اس کام کے بارے میں میری بھاونا ہے۔ میرا

जानता हूँ कि हिन्दुस्तान का मसला गरीबी का मसला है और जब तक वह हल नहीं होगा, इस देश में शान्ति नहीं हो सकती. अभी आपने देखा कि चुनाव का एक बड़ा भारी प्रयोग हिन्दुस्तान में चल रहा है. इतने बड़े पैमाने पर चुनाव हिन्दुस्तान में ही क्या, और कहीं भी इसके पहले नहीं हुए. इस चुनाव ने सब लोगों को बिना किसी भेद भाव के वोट का अधिकार दिया. यह नहीं सोचा कि कौन कितना पढ़ा लिखा है. यह भी नहीं सोचा कि कौन कितना लगान देता है. औरत मर्द के भेद का भी कोई ध्यान नहीं दिया, और न जातपात का भेद रखा. इस तरह बिना भेद भाव के यह आम चुनाव हिन्दुस्तान में हो रहे हैं. यह चीज़ ही ऐसी है कि अगर हम इसके मानी ठीक समझ लेंगे और समाज की रचना उसके मुआफ़िक़ करने की सोचेंगे तो उससे उलटफेर हो सकता है. और अगर हम इसका मतलब पूरा नहीं समझेंगे और समाज का ढांचा जैसा आज है वैसा ही रहने देंगे तो यह चुनाव हमारे समाज में उथल पुथल मचाये बिना नहीं रहेंगे. जब लोगों से आप वोट मांगते हैं और लोगों को मालिक समझ कर अधिकार देते हैं कि हर पांच साल के बाद वह अपना नौकरी को बदल सकते हैं, और इस तरह ताक़त दे कर उन्हें जगाते भी हैं, तो अगर हम ही ठीक मौक़े पर न जागेंगे तो वह पुराना ढांचा ढह जाने वाला ही है. लेकिन फिर जिस तरीक़े से वह ढहेगा, उससे समाज में शान्ति नहीं रह सकेगी. जो काम मैंने शुरू किया है, उससे हमारे समाज में किसी भी तरह की उथल पुथल हुए बिना एक क्रान्ति, एक इन्क़लाब आ सकता है. आपने देखा कि दक्खिनी हिन्दुस्तान में कई लोग खड़े हुए थे. उनमें कांगरेस वालों के खिलाफ़ कम्यूनिस्ट भी खड़े थे और लोगों ने उन्हें भी वोट दिया. यह घटना कुछ सबक़ देती है या नहीं, आप देखें. जो सबक़ उससे मुझे लेना था वह मैं पहले ही ले चुका हूँ!

बे-इज़्ज़त बे-लज़्ज़त ज़िन्दगी.

हिन्दुस्तान की जनता बहुत नम्र है, सहनशील है. अगर उसकी मुश्किलों हम अपना मुश्किलें मानते हैं, उसका दुख अपना दुख समझते हैं और अगर हम अपनी तरफ़ से उन मसलों को सुलझाते हैं और उनके दुखों को दूर करते हैं तो समाज रचना तो बदलेगी ही, बदलने की कार्रवाई में द्वेष या जलन की भावना भी नहीं बढ़ेगी, और न घबराहट ही पैदा होगी. समाज की रचना में उलट फेर होते रहे हैं. समाज का ढांचा तीनों मौसमों में बदलता रहा है. समाज का रूप भी मौसमों के मुताबिक़ बदलता रहता है. हम खुद अपने जीवन में देखते हैं कि बचपन से हम जवानी में आते हैं और यह भी देखते हैं

مسئلہ کہ ہندستان کا مسئلہ غریبی کا مسئلہ ہے
اور جب تک وہ حل نہیں ہوتا اس دیش میں
شانتی نہیں ہو سکتی۔ ابھی آپ نے دیکھا کہ
چناؤ کا ایک بڑا بھاری پریوگ ہندستان میں
چل رہا ہے۔ اتنے بڑے پیمانے پر چناؤ ہندستان
میں ہی کیا اور کہیں بھی اس کے پہلے نہیں ہوئے۔
اس چناؤ نے سب لوگوں کو بنا کسی بھید بھاؤ کے ووٹ
کا ادھیکار دیا۔ یہ نہیں سوچا کہ کون کتنا پڑھا لکھا ہے۔
یہ بھی نہیں سوچا کہ کون کتنا لگان دیتا ہے۔ عورت
مرد کے بھید کا بھی کوئی دھیان نہیں دیا اور نہ جات
پات کا بھید رکھا۔ اس طرح بنا بھید بھاؤ کے یہ عام چناؤ
ہندستان میں ہو رہے ہیں۔ یہ چیز ہی ایسی ہے کہ
اگر ہم اس کے معنی ٹھیک سمجھ لینگے اور سماج کی
رچنا اس کے موافق کرنے کی سوچینگے تو اس سے الٹ پھیر
ہو سکتا ہے۔ اور اگر ہم اس کا مطلب پورا نہیں سمجھینگے
اور سماج کا ڈھانچہ جیسا آج ہے ویسا ہی رہنے دینگے
تو یہ چناؤ ہمارے سماج میں اتھل پتھل مچائے بنا
نہیں رہینگے۔ جب لوگوں سے آپ ووٹ مانگتے ہیں اور
لوگوں کو مالک سمجھ کر ادھیکار دیتے ہیں کہ ہر پانچ سال
کے بعد وہ اپنی نوکری کو بدل سکتے ہیں، اور اس طرح
طاقت دے کر انہیں جگاتے بھی ہیں، تو اگر ہم ہی ٹھیک
موقع پر نہ جاگینگے تو وہ پرانا ڈھانچہ ڈھے جانے والا ہی
ہے۔ لیکن پھر جس طریقے سے وہ ڈھے گا اس سے سماج میں
شانتی نہیں رہ سکے گی۔ جو کام میں نے شروع کیا ہے
اس سے ہمارے سماج میں کسی بھی طرح کی اتھل پتھل
ہوئے بنا ایک کرانتی، ایک انقلاب آ سکتا ہے۔ آپ نے
دیکھا کہ دکھنی ہندستان میں کئی لوگ کھڑے ہوئے
تھے۔ ان میں کانگریس والوں کے خلاف کمیونسٹ بھی
کھڑے تھے اور لوگوں نے انہیں بھی ووٹ دیا۔ یہ گھٹنا
کچھ سبق دیتی ہے یا نہیں، آپ دیکھیں۔ جو سبق
اس سے مجھے لینا تھا وہ میں پہلے ہی لے چکا ہوں!

بے عزت بے لذت زندگی۔

ہندستان کی جنتا بہت نمر ہے، سہنشیل ہے۔ اگر
اس کی مشکلوں ہم اپنی مشکلیں مانتے ہیں، اس کا دکھ
اپنا دکھ سمجھتے ہیں اور اگر ہم اپنی طرف سے ان
مسئلوں کو سلجھاتے ہیں اور ان کے دکھوں کو دور کرتے
ہیں تو سماج رچنا تو بدلے گی ہی، بدلنے کی کارروائی
میں دویش یا جلن کی بھاونا بھی نہیں بڑھیگی، اور نہ
گھبراہٹ ہی پیدا ہوگی۔ سماج کی رچنا میں الٹ پھیر
ہوتے رہے ہیں۔ سماج کا ڈھانچہ تینوں موسموں میں بدلتا رہا
ہے۔ سماج کا روپ بھی موسموں کے مطابق بدلتا رہتا
ہے۔ ہم خود اپنے جیون میں دیکھتے ہیں کہ بچپن سے
ہم جوانی میں آتے ہیں، اور یہ بھی دیکھتے ہیں

कि जवानी की मस्ती हमेशा टिकती नहीं, बुढ़ापा आता ही है. दुनिया का यह रोज़ का चलने वाला धंधा अगर हम न समझें और बदलाव की तयारी न करें तो बदलाव तो आवेगा ही; लेकिन हमें उसे लाचारी से मानना होगा. अगर कोई यह समझे कि बुढ़ापा कभी आवेगा ही नहीं, तो वह पछतावेगा. और अगर अक्ल से पहले ही समझले, तो बुढ़ापे में दूसरों पर बोझ नहीं पड़ेगा, वरना बुढ़ापा तो आवेगा, लेकिन बुरी तरह आवेगा. इसका कारन यह है कि आज कल आश्रम धर्म का ठीक पालन नहीं होता है. शास्त्र जानने वालों ने जो समाजी इन्तज़ाम या व्यवस्था की थी, वह अब नहीं रही. इन्द्रियां बिलकुल खत्म न होने तक लोग गृहस्थ आश्रम को नहीं छोड़ते. आखिर जब इन्द्रियां लड़खड़ाने लगती हैं, शरीर कमज़ोर हो जाता है, तब लाचार होकर भोग छूटते हैं. लेकिन फिर भी वासना तो क़ायम ही रहती है. क्या इससे यह बेहतर नहीं होता कि ज्ञान पूर्वक भोगों को छोड़ दिया जाये, ताकि जीवन में कुछ इज्ज़त भी बनी रहे ? आज न तो इज्ज़त है और न लज्ज़त !

बहते पानी को ठीक मुड़ाव दीजिये.

यही देखो न ! हिन्दुस्तान में अंगरेज़ों का राज था. अगर वह ज़बरदस्ती यहाँ का राज पकड़े रहते तो उन्हें जाना तो ज़रूर पड़ता, लेकिन दुश्मनी क़ायम रहती. मगर वह समझदार और सोचने वाले थे, इसलिए ज़ोर से अपना पांव हटा लिया. नतीजा यह हुआ कि आज भी उनके हमारे सम्बंध अच्छे हैं. जो बुरा बर्ताव आपस में हो सकता था, उससे वह मुक्त रहे और आख़िर में नाम भी कमा लिया. इसी तरह अगर वह राजा लोग भी ज़िद पकड़ते और अपनी रियासतों को न छोड़ते तो उनकी भी बुरी हालत होती. आज वह बच गये हैं और अगर ठीक सेवा में लग जाते हैं तो इज्ज़त भी हासिल कर सकते हैं. मैंने समाज के बदलाव की यह दो मिसालें दीं. इस तरह समाज में बदलाव तो अकसर होते ही रहते हैं, लेकिन बदलाव करना है यह समझ कर अगर ग़ौर से काम किया जाये तो मन के मुताबिक़ बदलाव होता है; वरना बदलाव तो होता ही है, लेकिन मन के मुताबिक़ नहीं होता. बहते पानी को ठीक राह से ले जाया जाय तो अपनी कल्पना का सुन्दर मन को हरने वाला बग़ीचा तैयार हो सकता है, वरना पानी तो बहेगा ही; बग़ीचा नहीं बन पावेगा.

हिन्दुस्तान की ही यह ख़ासियत है.

ऐसी हालत में, जब कि हिन्दुस्तान में ग़रीबी बहुत ज़ियादा है, उद्योग-धंधे नहीं हैं और ज़मीन की मांग है तो यह नहीं हो सकता कि लोग ख़ामोश रहें. पिछले दिनों दुनिया में बदलाव भी काफ़ी हुए हैं. नये नये विचार भी ज़ाहिर हुवे हैं. तब यह नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तान

کہ جوانی کی مستی ہمیشہ ٹکتی نہیں، بڑھاپا آتا ہی ہے۔ دنیا کا یہ روز کا چلنے والا دھندا اگر ہم نہ سمجھیں اور بدلاؤ کی تیاری نہ کریں تو بدلاؤ تو آئیگا ہی؛ لیکن ہمیں اُسے لاچاری سے ماننا ہوگا۔ اگر کوئی یہ سمجھے کہ بڑھاپا کبھی آئیگا ہی نہیں، تو وہ پچھتائے گا۔ اور اگر عقل سے پہلے ہی سمجھ لے، تو بڑھاپے میں دوسروں پر بوجھ نہیں پڑیگا، ورنہ بڑھاپا تو آئیگا، لیکن بری طرح آئیگا۔ اِس کا کارن یہ ہے کہ آجکل آشرم دھرم کا ٹھیک پالن نہیں ہوتا ہے۔ شاستر جاننے والوں نے جو سماجی انتظام یا ویوستھا کی تھی، وہ اب نہیں رہی۔ اندریاں بالکل ختم نہ ہونے تک لوگ گرہستھ آشرم کو نہیں چھوڑتے۔ آخر جب اِندریاں لڑکھڑانے لگتی ہیں، شریر کمزور ہو جاتا ہے، تب لاچار ہو کر بھوگ چھوٹتے ہیں۔ لیکن پھر بھی واسنا تو قائم ہی رہتی ہے۔ کیا اِس سے یہ بہتر نہیں ہوتا کہ گیان پوروک بھوگوں کو چھوڑ دیا جائے، تاکہ جیون میں کچھ عزت بھی بنی رہے؟ آج نہ تو عزت ہے اور نہ لذت!

بہتے پانی کو ٹھیک موڑ دیجئے۔

یہی دیکھو نہ! ہندستان میں انگریزوں کا راج تھا۔ اگر وہ زبردستی یہاں کا راج پکڑے رہتے تو انہیں جانا تو ضرور پڑتا، لیکن دشمنی قائم رہتی۔ مگر وہ سمجھدار اور سوچنے والے تھے، اِس لئے دھیرے سے اپنا پاؤں ہٹا لیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آج بھی اُن کے ہمارے سمبندھ اچھے ہیں۔ جو برا برتاؤ آپس میں ہو سکتا تھا، اُس سے وہ مکت رہے اور آخر میں نام بھی کما لیا۔ اِسی طرح اگر یہ راجہ لوگ بھی ضد پکڑتے اور اپنی ریاستوں کو نہ چھوڑتے تو اُن کی بھی بری حالت ہوتی۔ آج وہ بچ گئے ہیں اور اگر ٹھیک سیوا میں لگ جاتے ہیں تو عزت بھی حاصل کر سکتے ہیں۔ میں نے سماج کے بدلاؤ کی یہ دو مثالیں دیں۔ اِس طرح سماج میں بدلاؤ تو اکثر ہوتے ہی رہتے ہیں، لیکن بدلاؤ کرنا ہے یہ سمجھ کر اگر غور سے کام کیا جائے تو من کے مطابق بدلاؤ ہوتا ہے؛ ورنہ بدلاؤ تو ہوتا ہی ہے، لیکن من کے مطابق نہیں ہوتا۔ بہتے پانی کو ٹھیک راہ سے لے جایا جائے تو اپنی کلپنا کا سندر من کو ہرنے والا باغیچہ تیار ہو سکتا ہے، ورنہ پانی تو بہے گا ہی؛ باغیچہ نہیں بن پائیگا۔

ہندستان کی ہی یہ خاصیت ہے۔

ایسی حالت میں، جبکہ ہندستان میں غریبی بہت زیادہ ہے، اُدیوگ دھندے نہیں ہیں اور زمین کی مانگ ہے تو یہ نہیں ہو سکتا کہ لوگ خاموش رہیں۔ پچھلے دنوں دنیا میں بدلاؤ بھی کافی ہوئے ہیں۔ نئے نئے وچار بھی ظاہر ہوئے ہیں۔ تب یہ نہیں ہو سکتا کہ ہندستان

ही दुनिया से अछूता रह सके. फिर ग़रीबी इतनी है कि दुनिया के और किसी भी देश से उसकी तुलना नहीं की जा सकती. और यह भी नहीं हो सकता कि हुकूमत आते ही रचना बदल दी जा सके. इसलिये हमें अभी से ठीक क़दम उठा कर इन्साफ़ अक़्ल से और प्रेम भाव से ज़मीन का मसला हल करना चाहिए. कोई सुने न सुने, लोगों को इस बारे में समझाना मेरा काम है. जिस तरह प्रेम से लड़की की शादी की जाती है, वैसे ही ज़मीन भी ज़रूरत वालों को प्रेम से देने की बात मैं कह रहा हूँ. इसका नतीजा यह होगा कि ज़मीन का यह मसला हल होगा और दुनिया भी देखेगी कि हिन्दुस्तान का अपना एक तरीक़ा है और वह दुनिया से निराला है.

26 जनवरी के 'हरिजन' अख़बार में भूदान के बारे में इंगलैन्ड के एक अख़बार का एक लेख छपा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि "यह बात हिन्दुस्तान में ही मुमकिन हो सकती है कि मांगने से ज़मीन मिले." अगरचे मैं नहीं मानता कि और जगह यह मुमकिन नहीं है, फिर भी लेखक का यह कहना शायद ग़लत न हो कि हिन्दुस्तान की तरह और जगहों में यह मुमकिन न हो. और फिर मेरी आवाज़ तो बहुत कमज़ोर है—न मैं मंत्री हूं, न मैं तंत्री, न यंत्री हूं, न मेरे पास कोई संस्था है. आज मैं अकेला घूम रहा हूँ. दो चार दोस्त मुझे कहीं साथी मिल जाते हैं. लोग मेरी कमज़ोर आवाज़ भी प्रेम से सुन लेते हैं. बच्चे भी नारा लगाते हैं कि "भूदान यज्ञ सफल करेंगे." इसलिए जब वह अंग्रेज़ लेखक कहता है कि इस तरह भूदान मिलना हिन्दुस्तान में ही मुमकिन है, तो वह ग़लत नहीं कहता है.

परमेश्वर के ख़िलाफ़ इन्सान नहीं, शैतान ही खड़ा हो सकता है.

मैं जिस व्यापक भावना से यह मसला हल करना चाहता हूं, उस तरीक़े से अगर यह मसला हल हुआ तो जो बदलाव आवेगा, उसे अच्छी ख़ूबसूरत शक्ल मिलेगी, वरना शक्ल तो बनेगी, लेकिन वह ख़ूबसूरत नहीं बनेगी, बदसूरत बनेगी. उसमें हमारी कोई कला ज़ाहिर नहीं होगी. कला का काम यह है कि दिल में अहसान मानते हुए ग़रीबों से प्यार करें. हमने ग़रीबों को ज़मीन से जुदा रखा, यह पाप जैसा समझना चाहिये और उसके धो डालने में हमें लग जाना चाहिए. तब जो सूरत बनेगी, वह पूजा के लायक़ होगी. तब हम अपनी सरकार ऐसी बना सकेंगे, जिसमें कोई किसी के कंधे पर सवार नहीं होगा, कोई किसी का शासन नहीं करेगा. हर आदमी यह सोचेगा कि मैं अपनी फ़िक्र नहीं करूंगा. अगर मेरी फ़िक्र कोई करे तो समाज करे. अगर न करे

ہی دنیا سے اچھوتا رہ سکے. پھر غریبی اتنی ہے کہ دنیا کے اور کسی بھی دیش سے اسکی تلنا نہیں کی جا سکتی. اور یہ بھی نہیں ہوسکتا کہ حکومت آتے ہی رچنا بدل دی جا سکے. اس لئے ہمیں ابھی سے ٹھیک قدم اٹھا کر انصاف عقل سے اور پریم بھاؤ سے زمین کا مسئلہ حل کرنا چاہئے. کوئی سنے نہ سنے، لوگوں کو اس بارے میں سمجھانا میرا کام ہے. جس طرح پریم سے لڑکی کی شادی کی جاتی ہے، ویسے ہی زمین بھی ضرورت والوں کو پریم سے دینے کی بات میں کہہ رہا ہوں. اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ زمین کا یہ مسئلہ حل ہوگا اور دنیا بھی دیکھے گی کہ ہندستان کا اپنا ایک طریقہ ہے اور وہ دنیا سے نرالا ہے.

26 جنوری کے 'ہریجن' اخبار میں بھودان کے بارے میں انگلینڈ کے ایک اخبار کا ایک لیکھ چھپا ہے، جس میں انہوں نے کہا ہے کہ "یہ بات ہندستان میں ہی ممکن ہوسکتی ہے کہ مانگنے سے زمین ملے." اگرچہ میں نہیں مانتا کہ اور جگہ یہ ممکن نہیں ہے، پھر بھی لیکھک کا یہ کہنا شاید غلط نہ ہو کہ ہندستان کی طرح اور جگہوں میں یہ ممکن نہ ہو. اور پھر میری آواز تو بہت کمزور ہے—نہ میں منتری ہوں، نہ میں تنتری، نہ ینتری ہوں، نہ میرے پاس کوئی سنستھا ہے. آج میں اکیلا گھوم رہا ہوں. دو چار دوست مجھے کہیں ساتھی مل جاتے ہیں. لوگ میری کمزور آواز بھی پریم سے سن لیتے ہیں. بچے بھی نعرہ لگاتے ہیں کہ "بھودان یگیہ سپھل کریں گے." اس لئے جب وہ انگریز لیکھک کہتا ہے کہ اس طرح بھودان ملنا ہندستان میں ہی ممکن ہے، تو وہ غلط نہیں کہتا ہے.

پرمیشور کے خلاف انسان نہیں، شیطان ہی کھڑا ہو سکتا ہے.

میں جس ویاپک بھاؤنا سے یہ مسئلہ حل کرنا چاہتا ہوں، اس طریقے سے اگر یہ مسئلہ حل ہوا تو جو بدلاؤ آئیگا، اسے اچھی خوبصورت شکل ملے گی، ورنہ شکل تو بنیگی، لیکن وہ خوبصورت نہیں بنیگی، بدصورت بنیگی. اسمیں ہماری کوئی کلا ظاہر نہیں ہوگی. کلا کا کام یہ ہے کہ دل میں احسان مانتے ہوئے غریبوں سے پیار کریں. ہم نے غریبوں کو زمین سے جدا رکھا، یہ پاپ جیسا سمجھنا چاہئے اور اس کے دھو ڈالنے میں ہمیں لگ جانا چاہئے. تب جو صورت بنے گی، وہ پوجا کے لائق ہوگی. تب ہم اپنی سرکار ایسی بنا سکیں گے، جس میں کوئی کسی کے کندھے پر سوار نہیں ہوگا، کوئی کسی کا شاسن نہیں کریگا. ہر آدمی یہ سوچے گا کہ میں اپنی فکر نہیں کرونگا. اگر میری فکر کوئی [illegible] تو سماج کرے. اگر نہ کرے

तो भले न करे. इस तरह की व्यवस्था को सर्वोदय व्यवस्था कहते हैं. स्वराज के बाद अब हमें ऐसा सर्वोदय समाज कायम करना है.

लीन यू टांग ने कहा है कि यह मुल्क, हिन्दुस्तान, 'गाड इन्टाक्सीकेटेड' (ईश्वर में मतवाला) मुल्क है. यह सही है कि हिन्दुस्तान में परमेश्वर के नाम से जितना प्रचार होता है, उतना किसी और नाम से नहीं होता. तेलंगाना में कम्यूनिज़्म का प्रचार बहुत ज़ियादा हुआ है, फिर भी जहां जहां मैं गया सवेरे से शाम तक राम भजन चलता था. तीन तीन मील लोग लेने और पहुंचाने के लिए भजन गाते हुए आते थे. तब मैंने कहा था कि कम्यूनिस्ट आवेंगे और जावेंगे, सरकारें भी आवेंगी और जावेंगी; लेकिन राम नाम अखंड रहेगा. मैंने यह लगन वहां देखी. कम्यूनिस्ट तो ईश्वर को नहीं मानते, फिर भी उनके केन्द्रों में मैंने यह लगन देखी. और ठीक भी है. लोग ऐसी लगन क्यों नहीं रखेंगे? ईश्वर पर उनका भरोसा है. वह ईश्वर को पिता मानते हैं. और आखिर पिता अपने बच्चों के लिए क्या चाहता है? यही कि सब लड़के सुख से रहें. ईश्वर तो पिता माता दोनों है और क्योंकि वह है इसलिये पिता माता को भी प्रेम मिलता है. वह क्या चाहेगा? क्या वह यह नहीं चाहेगा कि सब सुखी रहें? इसमें सोचने की क्या बात है?

ज़रा सा देखने से ही मालूम होगा कि राजा रंक सब के सामने भगवान सूर्य नारायन जैसे रूप से रोशनी देते हैं, उसी तरह हवा, पानी और ज़मीन भी सब के लिये समान पैदा की है. लेकिन हवा और पानी तो सब को मिलते हैं, लेकिन ज़मीन कुछ लोगों के पास है, कुछ लोगों के पास नहीं. क्या परमेश्वर की ऐसी मरज़ी हो सकती है कि जो लोग खुद काश्त नहीं कर सकते, उनके पास ज़ियादा ज़मीन हो और जो काश्त करते हैं, उनके पास न हो? क्या ईश्वर की मरज़ी यह हो सकती है कि जो ज़मीन उसने बनाई वह कुछ लोगों के पास तो बहुत ज़ियादा रहे और कई लोगों के पास बिलकुल ही न रहे? एक के पास पांच एकड़ ही हो और दूसरे के पास पांच सौ एकड़ हो? क्या ईश्वर की खुशी यह हो सकती है कि जिस गंगा को उसने बनाया उसमें एक तो पानी पीवे, पर दूसरा न पी सके? ज़ाहिर है कि अगर ऐसा होगा तो यह सब ईश्वर की इच्छा के खिलाफ़ होगा. अगर एक नदी के बहाव के खिलाफ़ तैरना भी मुश्किल होता है, तो परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ़ खड़ा रहना कितना मुश्किल हो सकता है? परमेश्वर के खिलाफ़ कौन खड़ा हो सकता है? वही, जो शैतान है, दानव है; फिर भले ही वह इन्सान मानव के रूप में क्यों न दिखाई देता हो।

تو بھلے نہ کرے۔ اِسطرح کی ویوستھا کو سروودے ویوستھا کہتے ہیں۔ سوراج کے بعد اب ہمیں ایسا سروودے سماج قائم کرنا ہے۔

لِن یوتانگ نے کہا ہے کہ یہ ملک، ہندستان، 'گاڈ انٹاکسی کیٹیڈ' (ایشور میں متوالا) ملک ہے۔ یہ صحیح ہے کہ ہندستان میں پرمیشور کے نام سے جتنا پرچار ہوتا ہے، اُتنا کسی اور نام سے نہیں ہوتا۔ تلنگانہ میں کمیونزم کا پرچار بہت زیادہ ہوا ہے، پھر بھی جہاں جہاں میں گیا سویرے سے شام تک رام بھجن چلتا تھا۔ تین تین میل لوگ لینے اور پہونچانے کے لئے بھجن گاتے ہوئے آتے تھے۔ تب میں نے کہا تھا کہ کمیونسٹ آئینگے اور جائینگے، سرکاریں بھی آئینگی اور جائینگی؛ لیکن رام نام اکھنڈ رہیگا۔ میں نے یہ لگن وہاں دیکھی۔ کمیونسٹ تو ایشور کو نہیں مانتے، پھر بھی اُن کے کیندروں میں میں نے یہ لگن دیکھی۔ اور ٹھیک بھی ہے۔ لوگ ایسی لگن کیوں نہیں رکھینگے؟ ایشور پر اُن کا بھروسہ ہے۔ وہ ایشور کو پتا مانتے ہیں۔ اور آخر پتا اپنے بچوں کے لئے کیا چاہتا ہے؟ یہی کہ سب لڑکے سکھ سے رہیں۔ ایشور تو پتا ماتا دونوں ہے۔ اور کیونکہ وہ ہے اِس لئے پتا ماتا کو بھی پریم ملتا ہے۔ وہ کیا چاہیگا؟ کیا وہ یہ نہیں چاہیگا کہ سب سکھی رہیں؟ اِس میں سوچنے کی کیا بات ہے؟

ذرا سا دیکھنے سے ہی معلوم ہوگا کہ راجہ رنک سب کے سامنے بھگوان سوریہ نارائن جیسے روپ سے روشنی دیتے ہیں، اُسی طرح ہوا، پانی اور زمین بھی سب کے لئے سمان پیدا کی ہے۔ لیکن ہوا اور پانی تو سب کو ملتے ہیں، لیکن زمین کچھ لوگوں کے پاس ہے، کچھ لوگوں کے پاس نہیں۔ کیا پرمیشور کی ایسی مرضی ہوسکتی ہے کہ جو لوگ خود کاشت نہیں کر سکتے، اُن کے پاس زیادہ زمین ہو اور جو کاشت کرتے ہیں، اُن کے پاس نہ ہو؟ کیا ایشور کی مرضی یہ ہو سکتی ہے کہ جو زمین اُس نے بنائی وہ کچھ لوگوں کے پاس تو بہت زیادہ رہے اور کئی لوگوں کے پاس بالکل ہی نہ رہے؟ ایک کے پاس پانچ ایکڑ ہی ہو اور دوسرے کے پاس پانچ سو ایکڑ ہو؟ کیا ایشور کی خوشی یہ ہو سکتی ہے کہ جس گنگا کو اُس نے بنایا اُسمیں ایک تو پانی پیوے، پر دوسرا نہ پی سکے؟ ظاہر ہے کہ اگر ایسا ہوگا تو یہ سب ایشور کی اِچھا کے خلاف ہوگا۔ اگر ایک ندی کے بہاؤ کے خلاف تیرنا بھی مشکل ہوتا ہے، تو پرمیشور کی اِچھا کے خلاف کھڑا رہنا کتنا مشکل ہو سکتا ہے؟ پرمیشور کے خلاف کون کھڑا ہو سکتا ہے؟ وہی، جو شیطان ہے، دانو ہے؛ پھر بھلے ہی وہ انسان منو کے روپ میں کیوں نہ دکھائی دیتا ہو!

हिन्दुस्तान का राजा कौन ?

इसलिये हमें जितनी जमीन जोतनी हो उतनी हम रखें, ज़ियादा न रखें. लोग अपने को जमीन का मालिक समझते हैं जब कि ज़मीन परमेश्वर ने पैदा की है. जिस चीज़ का मालिक ईश्वर है, उसके लिये खुद को जो ईश्वर या मालिक या भोगी कहता है, उसे गीता ने असुर कहा है. इस तरीक़े से सुख कैसे होगा ? उससे तो झगड़े बढ़ेंगे आज हमारे देश में नई नई पार्टियां निकल रही हैं. जिधर देखो उधर पार्टी ही पार्टी खड़ी हो रही है. इसका कारन यह चुनाव नहीं है. चुनाव तो यों ही है. वजह तो यह है कि हिन्दुस्तान में लोगों को असन्तोश है जिसकी जड़ किसी आदमी में नहीं, समाज रचना में है. उस समाज रचना को बदलने के लिये हमें जो कुछ करना चाहिये वह अगर हम नहीं करते हैं और उल्टे लोगों को दोश देते हैं तो वह हमारी ग़लती है. असल में समाज की आर्थिक और समाजी रचना आज बिल्कुल बिगड़ चुकी है, और यही वजह है कि आपस में बैर भाव बढ़ रहा है. ब्राह्मन अपने को ऊंचा समझता है. छत्री समझता है कि हकूमत हमारे हाथ में होनी चाहिये और इस तरह हर जात वाले अपने लिये राज काजी हक़ की बात करने लगे हैं और यह मानने लगे हैं कि अपना सब भला है, और दूसरे का सब बुरा है. नतीजा यह होता है कि न हम समाजी ढांचा बदल पाते हैं और न आर्थिक. राज काजी हकूमत हमें ज़रूर मिली है; लेकिन बदलाव हम तब ला सकते हैं जब हम पहचान लें कि आज की समाजी और आर्थिक रचना बिगड़ी हुई है. पचास एकड़ वाला अगर कहे कि 'मेरे पास तो पचास एकड़ ही हैं, उनमें से मैं दस एकड़ कैसे दे सकता हूं ? मुझे तकलीफ़ होगी.' तो मैं पूछता हूं कि बुढ़ापे में भी आपको तकलीफ़ होगी या नहीं ? आदमी बग़ैर पानी एकादशी का व्रत करता है तो उसे जिस्मानी तकलीफ़ होती है, लेकिन आदमी की तसल्ली सिर्फ़ जिस्मानी सुख से नहीं होती, उसे मानसिक सुख की भी ज़रूरत है. जो शख़्स पचास एकड़ में से दस एकड़ देगा, उसके पास चालीस ही एकड़ बचेंगे. यह बात ठीक है, लेकिन वह इन चालीस में भी उतनी फ़सल निकाल सकता है जितनी पचास में निकालता था. घर में पांच लड़के होते हुये भी छटा लड़का पैदा होने पर और जायदाद छोटी होने पर भी, अगर वह छटा जायदाद का हक़दार हो सकता है, तो दरिद्र नरायन को छटा क्यों नहीं मानते हैं ? इसलिये मैं सबको समझाता हूं कि अगर घर में पांच लोग देखते हैं तो एक न दिखने वाले को भी शामिल कर लो और उसके लिए छटा हिस्सा मुझे दे दो. शास्त्रों ने भी छटा हिस्सा राजा को देने का कहा है. हिन्दुस्तान का राजा कौन है, इसका जवाब मुझे दे दो ! जब अपने बांट

ہندستان کا راجہ کون ؟

اسلئے ہمیں جتنی زمین جوتنی ہو اُتنی ہم رکھیں' زیادہ نہ رکھیں ۔ لوگ اپنے کو زمین کا مالک سمجھتے ہیں جبکہ زمین پرمیشور نے پیدا کی ہے ۔ جس چیز کا مالک ایشور ہے' اس کے لئے خود کو جو ایشور یا مالک یا بھوگی کہتا ہے' اسے گیتا نے اسر کہا ہے ۔ اس طریقے سے سکھ کیسے ہوگا ؟ اس سے تو جھگڑے بڑھینگے ۔ آج ہمارے دیش میں نئی نئی پارٹیاں نکل رہی ہیں جدھر دیکھو اُدھر پارٹی ہی پارٹی کھڑی ہو رہی ہے ۔ اسکا کارن یہ چناؤ نہیں ہے ۔ چناؤ تو یوں ہی ہے ۔ وجہ تو یہ ہے کہ ہندستان میں لوگوں کو اسنتوش ہے جسکی جڑ کسی آدمی میں نہیں' سماج رچنا میں ہے ۔ اس سماج رچنا کو بدلنے کے لئے ہمیں جو کچھ کرنا چاہئے وہ اگر ہم نہیں کرتے ہیں اور الٹے لوگوں کو دوش دیتے ہیں تو وہ ہماری غلطی ہے ۔ اصل میں سماج کی آرتھک اور سماجی رچنا آج بالکل بگڑ چکی ہے' اور یہی وجہ ہے کہ آپس میں بیر بھاؤ بڑھ رہا ہے ۔ براہمن اپنے کو اونچا سمجھتا ہے ۔ چھتری سمجھتا ہے کہ حکومت ہمارے ہاتھ میں ہونی چاہئے اور اسطرح ہر جات والے اپنے لئے راج کاجی حق کی بات کرنے لگے ہیں اور یہ ماننے لگے ہیں کہ اپنا سب بھلا ہے' دوسرے کا سب برا ہے. نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ نہ ہم سماجی ڈھانچہ بدل پاتے ہیں اور نہ آرتھک. راج کاجی حکومت ہمیں ضرور ملی ہے؛ لیکن بدلاؤ ہم تب لا سکتے ہیں جب ہم پہچان لیں کہ آج کی سماجی اور آرتھک رچنا بگڑی ہوئی ہے ۔ پچاس ایکڑ والا اگر کہے کہ ' میرے پاس تو پچاس ایکڑ ہی ہیں' انمیں سے میں دس ایکڑ کیسے دے سکتا ہوں ؟ مجھے تکلیف ہوگی.' تو میں پوچھتا ہوں کہ بڑھاپے میں بھی آپ کو تکلیف ہوگی یا نہیں ؟ آدمی بغیر پانی ایکادشی کا برت کرتا ہے تو اسے جسمانی تکلیف ہوتی ہے' لیکن آدمی کی تسلی صرف جسمانی سکھ سے نہیں ہوتی' اسے مانسک سکھ کی بھی ضرورت ہے ۔ جو شخص پچاس ایکڑ میں سے دس ایکڑ دیگا' اسکے پاس چالیس ہی ایکڑ بچینگے ۔ یہ بات ٹھیک ہے' لیکن وہ ان چالیس میں سے بھی اتنی فصل نکال سکتا ہے جتنی پچاس میں نکالتا تھا ۔ گھر میں پانچ لڑکے ہوتے ہوئے بھی چھٹا لڑکا پیدا ہونے پر اور جائداد چھوٹی ہونے پر بھی' اگر وہ چھٹا جائداد کا حقدار ہو سکتا ہے' تو دردر ناراین کو چھٹا کیوں نہیں مانتے ہیں ؟ اسلئے میں سب کو سمجھاتا ہوں کہ اگر گھر میں پانچ لوگ دیکھتے ہیں تو ایک نہ دیکھنے والے کو بھی شامل کر لو اور اسکے لئے چھٹا حصہ مجھے دیدو ۔ شاستروں نے بھی چھٹا حصہ راجہ کو دینے کا کہا ہے ۔ ہندستان کا راجہ کون ہے' اسکا جواب مجھے دیدو ! جب اپنے بانٹ

हक अधिकार उसको दिया गया है और जब देश में ग़रीबों की तादाद ही ज़्यादा है, तो मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान का राजा ग़रीब ही है—दरिद्र नारायन ही हमारा राजा है. किसी यूनिवर्सिटी का डिग्री लिया आदमी और कोई दूसरा करोड़पति हिन्दुस्तान का राजा नहीं हो सकता. इसलिये उस राजा को अपना हक़ दीजिये, छटा हिस्सा दीजिये. जब आप अपनी ज़मीन का छटा हिस्सा ग़रीब को देंगे तो वह आपके लिये मरने को भी तैयार होगा. ययाति के पांच लड़कों में से उसे अपनी जवानी देने के लिये सिर्फ़ एक लड़का तैयार हुआ था. आपके लड़कों में से तो शायद एक भी राज़ी न हो, लेकिन वह ग़रीब, जिसे आप ज़मीन देंगे, आपके लिये जान भी देने को तैयार होगा. ऐसा अच्छा दोस्त हम कमाते हैं और बदले में देते क्या हैं? सिर्फ़ यही न कि बीस में से चार एकड़? इसलिये इस सारे सवाल को भूदान की आंख से नहीं, आत्मकल्यान की आंख से सोचियेगा.

गंगा-जमुना और राम कृष्न वाले आर्यवर्त से.

मेरे भाइयो, इन दिनों आपके गांव में कई चुनाव सभायें हुई होंगी, जिनमें एक पार्टी ने दूसरे पार्टी की बुराई भी की होगी. उन सभाओं में मानो एक बुराई-मेला ही लग गया होगा. ख़ुद की तारीफ़ और दूसरे की बुराई का दर्शन उसमें आप को होता रहा होगा. पर आज एक फ़क़ीर आपके पास आ पहुँचा है जो आपके सामने केवल भगवान के गुनगान ही करना चाहता है, कर रहा है. आप को भगवान का लड़का समझकर सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ समझाने के लिए आपके पास आया है. दोष किस में नहीं होते? दोष सबमें होते हैं और मुझमें भी हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि आप में क्या क्या ताक़तें छिपी हुई हैं, जो आप ख़ुद नहीं जानते. आप को मालूम है कि एक कुत्ता से भी वाल्मीकि जैसा महान ऋषि बन सका. अरे, आप ही तो वह लोग हैं जो पत्थर से भी भगवान बना सकते हैं. पत्थर को भगवान बनाने की ताक़त जिन में है, मेरी निगाह में तो वह बहुत तारीफ़ के लायक़ हैं. इसलिए अगर आप अपने स्वरूप को समझेंगे तो जो चाहेंगे कर सकेंगे. अगर हम अपनी आंख बन्द कर लेते हैं तो दुनिया में ऐसी कौन सी ताक़त है जो हमारी आंख में ज़बरदस्ती आ घुसे? यानी ताक़त को ख़त्म करने की ताक़त आप में है. यह ज्ञान आप को हो जायेगा तो आप जैसा चाहेंगे बदल कर सकते हैं. जहाँ यह विचार आपके दिल में जगह कर लेगा, वहाँ आप सरकार की तरफ़ देखते बैठे नहीं रहेंगे, आप ख़ुद बदलाव ला सकेंगे. यह सारी ताक़त आप में है और इसलिए मैं आप से इस भूदान यज्ञ में आहुति चढ़ाने के लिए कह रहा हूँ. आज तो मुझे ज़मीन तो मिल रहा है, लेकिन मेरा आवाज़ में

کا اسکو دیا گیا ہے اور جب دیش میں غریبوں کی تعداد ہی زیادہ ہے، تو میں کہنا چاہتا ہوں کہ ہندستان کا راجہ غریب ہی ہے—دریدر نارائن ہی ہمارا راجہ ہے. کسی یونیورسٹی کا ڈگری لیا آدمی اور کوئی دوسرا کروڑپتی ہندستان کا راجہ نہیں ہوسکتا اسلئے اس راجہ کو اپنا حق دیجئے، چھٹا حصہ دیجئے. جب آپ اپنی زمین کا چھٹا حصہ غریب کو دینگے تو وہ آپ کے لئے مرنے کو بھی تیار ہوگا. یعاتی کے پانچ لڑکوں میں سے اسے اپنی جوانی دینے کے لئے صرف ایک لڑکا تیار ہوا تھا. آپ کے لڑکوں میں سے تو شاید ایک بھی راضی نہ ہو، لیکن یہ غریب، جسے آپ زمین دینگے، آپ کے لئے جان بھی دینے کو تیار ہوگا. ایسا اچھا دوست ہم کماتے ہیں اور بدلے میں دیتے کیا ہیں؟ صرف یہی نہ کہ بیس میں سے چار ایکڑ؟ اسلئے اس سارے سوال کو بھودان کی آنکھ سے نہیں، آتم کلیان کی آنکھ سے سوچیئےگا.

گنگا جمنا اور رام کرشن والے آریہ ورت سے.

میرے بھائیو، ان دنوں آپ کے گاؤں میں کئی چناؤ سبھائیں ہوئیں ہونگی، جن میں ایک پارٹی نے دوسرے پارٹی کی برائی بھی کی ہوگی. ان سبھاؤں میں مانو ایک برائی میلہ ہی لگ گیا ہوگا. خود کی تعریف اور دوسرے کی برائی کا درشن اسمیں آپ کو ہوتا رہا ہوگا. پر آج ایک فقیر آپ کے پاس آپہونچا ہے جو آپ کے سامنے کیول بھگوان کے گن گان ہی کرنا چاہتا ہے، کر رہا ہے. آپ کو بھگوان کا لڑکا سمجھکر صرف اپنا فرض سمجھانے کے لئے آپ کے پاس آیا ہے. دوش کسمیں نہیں ہوتے؟ دوش سب میں ہوتے ہیں اور مجھمیں بھی ہیں، لیکن میں جانتا ہوں کہ آپ میں کیا کیا طاقتیں چھپی ہوئی ہیں، جو آپ خود نہیں جانتے. آپ کو معلوم ہے کہ ایک کتا سے بھی والمیکی جیسا مہان رشی بن سکا. ارے، آپ ہی تو وہ لوگ ہیں جو پتھر سے بھی بھگوان بنا سکتے ہیں. پتھر کو بھگوان بنانے کی طاقت جن میں ہے، میری نگاہ میں تو وہ بہت تعریف کے لائق ہیں. اسلئے اگر آپ اپنے سوروپ کو سمجھینگے تو جو چاہینگے کر سکینگے. اگر ہم اپنی آنکھ بند کر لیتے ہیں تو دنیا میں ایسی کون سی طاقت ہے جو ہماری آنکھ میں زبردستی آگھسے؟ یعنی طاقت کو ختم کرنے کی طاقت آپ میں ہے. یہ گیان آپ کو ہو جائیگا تو، آپ جیسا چاہینگے بدل کر سکتے ہیں. جہاں یہ وچار آپ کے دل میں جگہ کر لیگا، وہاں آپ سرکار کی طرف دیکھتے بیٹھے نہیں رہینگے، آپ خود بدلاؤ لا سکینگے. یہ ساری طاقت آپ میں ہے اور اسلئے میں آپ سے اس بھودان یگیہ میں آہوتی چڑھانے کے لئے کہ رہا ہوں. آج بھی مجھے زمین تو مل رہی ہے، لیکن میری آواز میں

आप भी कुछ रजोगुण तमोगुण रखते हैं. जब मेरी आवाज़ से पूरी तरह सतोगुण ज़ाहिर होगा, तब मैं जो मांगूंगा वह आप को देना होगा. आज आप इस काम की शुरूआत कीजियेगा. चुनाव में जो ताक़त आप लोगों ने लगाई, उससे आधी भी अगर इस काम में लगावें तो दो माह में यह काम पूरा हो सकता है. और दो माह भी क्यों ? मैं अभी पीलीभीत में था तो मैंने देखा कि वहां पर लोगों ने बारह हज़ार एकड़ मुझे दिये. अगर आप पांच सात दिन भी पूरी ताक़त के साथ काम करें तो आपके ज़िले का कोटा पूरा हो सकता है. *गंगा* और जमुना के इस सूबे में यह काम पूरा हो जाये तो इससे सारे हिन्दुस्तान को प्रेरना मिल सकेगी. अभी जब मैं ऋषीकेश था तो वहां गंगा का जो नज़ारा मैंने देखा वह कितना अजीब था ! मेरी हालत बयान करने के लायक़ नहीं रही. इसलिये मैं कहता हूं कि यह सूबा, जिसे आर्यावर्त कहते हैं और जिसने राम, कृश्न और बुद्ध जैसी विभूतियों को जन्म दिया है सारे हिन्दुस्तान को प्रेरना दे सकता है.●

—विनोबा

آپ بھی کچھ رجوگن تموگن رکھتے ہیں. جب میری آواز سے پوری طرح ستوگن ظاہر ہوگا تب میں جو مانگونگا وہ آپکو دینا ہوگا. آج آپ اس کام کی شروعات کیجیئےگا. چناؤ میں جو طاقت آپ لوگوں نے لگائی، اس سے آدھی بھی اگر اس کام میں لگاویں تو دو ماہ میں یہ کام پورا ہوسکتا ہے. اور دو ماہ بھی کیوں ؟ میں ابھی پیلی بھیت میں تھا تو میں نے دیکھا کہ وہاں پر لوگوں نے بارہ ہزار ایکڑ مجھے دیئے. اگر آپ پانچ سات دن بھی پوری طاقت کے ساتھ کام کریں تو آپ کے ضلع کا کوٹا پورا ہوسکتا ہے. گنگا اور جمنا کے اس صوبے میں یہ کام پورا ہوجائے تو اس سے سارے ہندستان کو پریرنا مل سکیگی. ابھی جب میں رشی کیش تھا تو وہاں گنگا کا جو نظارہ میں نے دیکھا وہ کتنا عجیب تھا ! میری حالت بیان کرنے کے لائق نہیں رہی. اسلئے میں کہتا ہوں کہ یہ صوبہ، جسے آریہ ورت کہتے ہیں اور جس نے رام، کرشن اور بدھ جیسی بھوتیوں کو جنم دیا ہے سارے ہندستان کو پریرنا دے سکتا ہے.●

—ونوبا

अमरीकी फन्दा

(जे. सी. कुमारप्पा)

[5 जनवरी 1952 वाले हिन्द-अमरीकी समझौते पर हम अपनी राय फ़रवरी नम्बर में दे चुके हैं. यहां हम 'ग्राम उद्योग पत्रिका' से लेकर इसी पर डाक्टर कुमारप्पा की क़ीमती राय दे रहे हैं. जैसा इस नम्बर में छपे गये हमारे एक नोट से ज़ाहिर होगा कुमारप्पा जी की इस अनमोल राय को ही हिन्दुस्तान में अमरीकी राजदूत ने बम्बई में एक प्रेस कांफ्रेन्स के दौरान में "बेवक़ूफ़ी" की चीज़ कह कर शान बघारी है—एडीटर]

क़रीब एक माह पहले अमरीका और हिन्दुस्तान के बीच एक समझौते पर दस्तख़त किये गए हैं जिसके अनुसार अमरीका ने हिन्दुस्तान के विकास के लिये पांच करोड़ डालर की देनगी देना मंज़ूर किया है. अमरीका दुनिया के दूसरे हिस्सों को, अपने पैसे के पंजुए में जकड़ चुका है. ब्रिटेन का ख़ासियत थी राज काजी साम्राज्यवाद, अमरीका का तासीर है आर्थिक साम्राज्यवाद. इस आर्थिक मदद से

●28 जनवरी को मैन पुरी में शाम की प्रार्थना के बाद एक स्पीच में.

امریکی پھندا

(جے . سی . کمارپا)

[5 جنوری 1952 والے ہند امریکی سمجھوتے پر ہم اپنی رائے فروری نمبر میں دے چکے ہیں . یہاں ہم ' گرام ادیوگ پتریکا' سے لیکر اسی پر ڈاکٹر کمارپا کی قیمتی رائے دے رہے ہیں . جیسا اس نمبر میں دیئے گئے ہمارے ایک نوٹ سے ظاہر ہوگا کمارپا جی کی اس انمول رائے کو ہی ہندستان میں امریکی راجدوت نے بمبئی میں ایک پریس کانفرنس کے دوران میں ' بیوقوفی" کی چیز کہکر شان بگھاری ہے—ایڈیٹر]

قریب ایک ماہ پہلے امریکہ اور ہندستان کے بیچ ایک سمجھوتے پر دستخط کئے گئے ہیں جس کے انوسار امریکہ نے ہندستان کے وکاس کے لئے پانچ کروڑ ڈالر کی دینگی دینا منظور کیا ہے . امریکہ دنیا کے دوسرے حصوں کو، اپنے پیسے کے چنگل میں جکڑ چکا ہے . برٹین کی خاصیت تھی راج کاجی سامراج واد، امریکہ کی تاثیر ہے آرتھک سامراج واد . اس آرتھک مدد سے

●28 جنوری کو مینپوری میں شام کی پرارتھنا کے بعد ایک اسپیچ میں .

क्या दुनिया के मसलों पर हम अपनी आज़ाद राय दे सकेंगे? देहातों के या शहरों के विकास के नाम पर दी जाने वाली मदद कैसा जाल है यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये.

इस पाँच करोड़ डालर की मदद से न अघाकर हिन्दुस्तान में अमरीकी राजदूत मिस्टर चेस्टर बाउल्स फरमाइश करते हैं कि हिन्दुस्तान की 'तरक्की' के लिये दस अरब डालर की मदद दी जाय! अमरीका से माहिर और जानकार लोगों का आना शुरू हो ही गया है.

यह सब बातें खतरे से भरी हुई हैं. अमरीकनों के आने से देश में सब जगह पैसे की कद्र बढ़ेगी और ट्रेक्टरों की भरमार होगी. अगर हम अपनी खेती को मिट्टी के तेल और उससे चलने वाली मशीनों के सुपुर्द कर देंगे तो हम साफ़ तौर पर अमरीका के चंगुल में फंस जायेंगे. आगे चलकर अगर हम अमरीका की कुछ बातों का विरोध करने की सोचेंगे तो हमारा 'अक्ल ठिकाने लाने के लिये' अमरीका हमें तेल देना बन्द कर देगा. उस हालत में अगर हमें भूखा नहीं रहना हो तो उनकी गुलामी सर आँखों पर कबूल करनी होगी. पिछली लड़ाई के पहले मद्रास के आस पास के जिलों के कुछ दौलतमंद किसानों ने अपने अपने खेतों में तेल से चलने वाले पम्प लगाये थे. लेकिन लड़ाई के ज़माने में तेल मिलना बंद हो जाने पर उनका सारा काम का काम ठप हो गया. उनमें से कुछ तो बिलकुल तबाह ही हो गये.

जो चीज़ें हमारे पास नहीं हैं, या जिन्हें हम पैदा नहीं कर सकते, उन पर हमारी आर्थिक रचना खड़ा करना खुद को बरबाद कर लेने जैसा है. जापान के तजरुबे से हमें सबक सीखना चाहिये. पिछली लड़ाई में जापान को हार इसलिये नहीं माननी पड़ी कि वह एटम बम से घबरा गया था, बल्कि इसलिये माननी पड़ी क्योंकि उसके पास लड़ाई जारी रखने के लिये पेट्रोल का स्टाक न था. हीरोशिमा पर एटम बमों का फेंका जाना तो उसके लिये एक अच्छा खासा बहाना हो गया.

हमें अपने पैरों पर खड़े रहकर जितनी तरक्की या विकास करते बने उसी से संतोष करना चाहिये, फिर वह चाहे थोड़ा ही क्यों न हो. इसमें जल्दबाज़ी करने से अपनी जान को खतरा है.

आखिर में हमें यह कहना है कि इस तरह से हमको सावधान रहना चाहिये क्योंकि हम इसके पंजे से सहज ही नहीं निकल सकते हैं. यह मदद हमारे गले का फंदा साबित होगी जो हमारी नई ली हुई आज़ादी को ही खतरे में डाल देगा.

کیا دنیا کے مسئلوں پر ہم اپنی آزاد رائے دے سکیں گے؟ دیہاتوں کے یا شہروں کے وکاس کے نام پر دی جانے والی مدد کیسا جال ہے یہ ہمیں اچھی طرح سمجھ لینا چاہئے۔

اس پانچ کروڑ ڈالر کی مدد سے نہ اگھا کر ہندستان میں امریکی راج دوت مسٹر چیسٹر باؤلس فرمائش کرتے ہیں کہ ہندستان کی 'ترقی' کے لئے دس ارب ڈالر کی مدد دی جائے! امریکہ سے ماہر اور جانکار لوگوں کا آنا شروع ہو ہی گیا ہے۔

یہ سب باتیں خطرے سے بھری ہوئی ہیں۔ امریکنوں کے آنے سے دیش میں سب جگہ پیسے کی قدر بڑھے گی اور ٹریکٹروں کی بھر مار ہوگی۔ اگر ہم اپنی کھیتی کو مٹی کے تیل اور اس سے چلنے والی مشینوں کے سپرد کر دیں گے تو ہم صاف طور پر امریکہ کے چنگل میں پھنس جائیں گے۔ آگے چل کر اگر ہم امریکہ کی کچھ باتوں کا ورودھ کرنے کی سوچیں گے تو ہماری 'عقل ٹھکانے لانے کے لئے' امریکہ ہمیں تیل دینا بند کر دے گا۔ اس حالت میں اگر ہمیں بھوکا نہیں رہنا ہو تو ان کی غلامی سر آنکھوں پر قبول کرنی ہوگی۔ پچھلی لڑائی کے پہلے مدراس کے آس پاس کے ضلعوں کے کچھ دولت مند کسانوں نے اپنے اپنے کھیتوں میں تیل سے چلنے والے پمپ لگائے تھے۔ لیکن لڑائی کے زمانے میں تیل ملنا بند ہو جانے پر ان کا سارا کام کا کام ٹھپ ہو گیا۔ ان میں سے کچھ تو بالکل تباہ ہی ہو گئے۔

جو چیزیں ہمارے پاس نہیں ہیں، یا جنہیں ہم پیدا نہیں کر سکتے، ان پر ہماری آرتھک رچنا کھڑی کرنا خود کو برباد کر لینے جیسا ہے۔ جاپان کے تجربے سے ہمیں سبق سیکھنا چاہئے۔ پچھلی لڑائی میں جاپان کو ہار اسلئے نہیں ماننی پڑی کہ وہ ایٹم بم سے گھبرا گیا تھا، بلکہ اسلئے ماننی پڑی کیونکہ اس کے پاس لڑائی جاری رکھنے کے لئے پٹرول کا اسٹاک نہ تھا۔ ہیروشما پر ایٹم بموں کا پھینکا جانا تو اس کے لئے ایک اچھا خاصہ بہانا ہوگیا۔

ہمیں اپنے پیروں پر کھڑے رہ کر جتنی ترقی یا وکاس کرتے بنے اسی سے سنتوش کرنا چاہئے، پھر وہ چاہے تھوڑا ہی کیوں نہ ہو۔ اس میں جلدی بازی کرنے سے اپنی جان کو خطرہ ہے۔

آخر میں ہمیں یہ کہنا ہے کہ اسطرح سے ہم کو ساودھان رہنا چاہئے کیونکہ ہم اس کے پنجے سے سہج ہی نہیں نکل سکتے ہیں۔ یہ مدد ہمارے گلے کا پھندا ثابت ہوگی جو ہماری نئی لی ہوئی آزادی کو ہی خطرے میں ڈال دے گا۔

बच्चों की दुनिया

लड़की की तालीम

इस्लाम
21-6-1906

राधे,

कल की चिट्ठी में ऐसे आदमी की कहानी लिखी थी जिसको डर ही न लगता था. आज तुम्हारे चाचा की चिट्ठी से मालूम हुआ कि तुम्हारी दादी पहाड़ पर यानी शिमले जाना नहीं चाहती हैं. अब बताओ कि तुम क्या करोगी. तुम्हारा पहाड़ पर जा कर रहना बहुत ज़रूरी है ताकि एक दफ़ा वहां की ताज़ी और साफ़ हवा के असर से तुम्हारा ख़ून दुरुस्त हो जावे. इसलिए या तो तुम अपनी दादी से कहो कि वह भी चलें, या तुम ख़ुद चाचा चाची के साथ जाने को तैयार हो जाओ. इन दोनों बातों में से एक ज़रूर होनी चाहिए. और सब से अच्छी तो यही बात है कि तुम अपने मन को अक़्ल के कहने पर हमेशा चलाओ. देखो चाचा ने जब तुमसे लाहौर चलने को कहा तब पहले तो तुमने हां कर ली, मगर फिर सिर्फ़ इस सबब से नहीं गईं कि तुम्हारा मन अकेले जाने को न चाहा. लेकिन इस बात में तुम्हारा मन अक़्ल के बिलकुल ख़िलाफ़ चला क्योंकि अगर तुम लाहौर चली जाती तो वहां नई नई बातें और नई नई चीज़ें देखने से तुम्हारा दिल ज़रूर ख़ुश होता, और चाचा तुम्हें वहां ऐसी ऐसी लड़कियों से भी मिलाते जिन्होंने ख़ूब पढ़ा है और जिन की शादी छोटी उम्र में न होकर बड़ी उम्र में होगी. इसी तरह अब शिमले जाने की बात है. हर एक को अपनी अक़्ल के मुताबिक़ काम करना चाहिए न कि मन की मौज के मुताबिक़. और न किसी चीज़ में ऐसा मन लगाना चाहिए कि अलग होने को जी ही न चाहे.

सब से बड़ी बात जो तुम्हें सीखनी है और जो हर आदमी को सीखना चाहिए, वह यह है कि किसी काम या बात या चीज़ में ऐसा और इस तरह मन न लगाओ कि जब अक़्ल के मुताबिक़ उसको छोड़ना ज़रूरी हो तो छोड़ने को दिल न करे और छोड़ा न जा सके. जो आदमी

بچوں کی دنیا

لڑکی کی تعلیم

اسلم
21-6-1906

ھے،

کل کی چٹھی میں ایسے آدمی کی کہانی لکھی تھی س کو ڈر ہی نہ لگتا تھا. آج تمہارے چاچا کی چٹھی معلوم ہوا کہ تمہاری دادی پہاڑ پر یعنی شملے جانا ہیں چاہتی ہیں. اب بتاؤ کہ تم کیا کروگی. ہارا پہاڑ جاکر رہنا بہت ضروری ہے تاکہ ایک دفعہ ل کی تازی اور صاف ہوا کے اثر سے تمہارا خون درست جاوے. اسلئے یا تو تم اپنی دادی سے کہو کہ وہ ی چلیں، یا تم خود چاچا چاچی کے ساتھ جانے کو ر ہو جاؤ. اِن دونوں باتوں میں سے ایک ضرور ہونی ہئے. اور سب سے اچھی تو یہی بات ہے کہ تم اپنے ن کو عقل کے کہنے پر ہمیشہ چلاؤ. دیکھو چاچا نے ب تم سے لاہور چلنے کو کہا تب پہلے تو تم نے ہاں ی، مگر پھر صرف اِس سبب سے نہیں گئیں کہ تمہارا ن اکیلے جانے کو نہ چاہا. لیکن اِس بات میں تمہارا ن عقل کے بالکل خلاف چلا کیونکہ اگر تم لاہور چلی تی تو وہاں نئی نئی باتیں اور نئی نئی چیزیں یکھنے سے تمہارا دل ضرور خوش ہوتا، اور چاچا تمہیں ل ایسی ایسی لڑکیوں سے بھی ملاتے جنہوں نے خوب ا ہے اور جن کی شادی چھوٹی عمر میں نہ ہوکر بڑی ر میں ہوگی. اسی طرح اب شملے جانے کی بات ہے. ایک کو اپنی عقل کے مطابق کام کرنا چاہئے نہ کہ کو موج کے مطابق. اور نہ کسی چیز میں ایسا من ا چاہئے کہ الگ ہونے کو جی ہی نہ چاہے.

سب سے بڑی بات جو تمہیں سیکھنی ہے اور جو ہر ی کو سیکھنی چاہئے، وہ یہ ہے کہ کسی کام یا بات چیز میں ایسا اور اس طرح من نہ لگاؤ کہ جب ل کے مطابق اُس کو چھوڑنا ضروری ہو تو چھوڑنے دل نہ کرے اور چھوڑا نہ جاسکے. جو آدمی

ास तरह [illegible] मन कभी किसी में और कभी किसी में
गाते रहते हैं, उनको हमेशा ही कभी कुछ रंज होता है,
ा कभी कुछ फिकर पड़ी रहती है और उनकी तबियत
भी भी खुश नहीं रहती. मगर जो आदमी धीरे धीरे यह
ादत डाल लेते हैं कि जो काम किया खूब अच्छी तरह
ोच समझ कर ठीक ठीक किया और फिर अगर उसमें
ोई बात ऐसी हो गई जो मन को बुरी मालूम हुई तो कुछ
रवाह न की, उनको कभी कोई रंज या दुख या अफसोस
हीं होता. ऐसे लोगों पर चाहे कितनी ही मुसीबत क्यों न
ड़े वह हमेशा खुश रहते हैं और उनके दिल में इस बात का
तमीनान रहता है कि जो कुछ हमने किया भगवान की
र्जी के मुताबिक किया है फिर अफसोस किस बात का.

रत्ना टिक्का

22-6-1906

ाधे,

कल की चिट्ठी में मैंने लिखा कि तुम्हें अब अपनी
क्ल के मुताबिक सब काम करने की आदत डालनी
ाहिए. और अपने मन को हर एक काम और बात में
क्ल के मुताबिक चलाना चाहिए. कुछ बातें तो मन
ा चाहा करता है कि जो अक्ल के मुताबिक ही होती हैं.
से तुम्हारा मन चाहा होगा कि रोज हवा खोरी के वास्ते
ायँ और खुली और ताजी हवा में खूब दौड़ें. फिर तुम्हारा
न चाहा होगा कि पहाड़ों पर जावें, दरियाओं की सैर
रें और समुन्दर को भी देखें कि कैसा है. रेल में बैठ
र शहरों में फिरें और देखें कि वहां क्या क्या हो रहा है.
ापान में जा कर देखें कि वहां की औरतें कसरत के
रिये ऐसी ताकतवर कैसे हो गई कि मर्दों को भी पछाड़
. चीन में जाकर देखें कि वहाँ की औरतों और लड़कियों
पैर में जूते पहना कर बचपन ही से छोटे किस वास्ते कर
े हैं. और जो तरह तरह की नई नई बातें देखें, मालूम
ें और उनसे फायदा उठावें. यह सब बातें तो ऐसी हैं
अक्ल के खिलाफ नहीं हैं, और अगर कोई आदमी
च समझ कर इन कामों को करना शुरू करे तो उसका
भी खुश होगा और अक्ल भी कहेगी कि ठीक काम
ा. मगर कुछ काम ऐसे भी हैं जिन के करने के लिए मन
चाहा करता है मगर अक्ल से उनकी नहीं पटती है.
से तुम्हारा मन चिट्ठी लिखने को बिल्कुल नहीं चाहता
र अक्ल से तुम्हें जरूर मालूम होता होगा कि सब
ट्ठियों का जवाब देना चाहिए. पहले तो इसमें यह फायदा
कि तुम्हें लिखने की आदत हो जायगी. दूसरे, अगर तुम
: एक चिट्ठी का जवाब दो तो तुम्हें मालूम होता रहेगा
तुमने चिट्ठियों को अच्छी तरह समझ कर पढ़ा या नहीं,

اس طرح اپنا من کبھی کسی میں اور کبھی کسی میں لگاتے
رہتے ہیں، ان کو ہمیشہ ہی کبھی کچھ رنج ہوتا ہے، کبھی
کچھ فکر پڑی رہتی ہے اور ان کی طبیعت کبھی بھی
خوش نہیں رہتی۔ مگر جو آدمی دھیرے دھیرے یہ
عادت ڈال لیتے ہیں کہ جو کام کیا خوب اچھی طرح سوچ
سمجھ کر ٹھیک ٹھیک کیا اور پھر اگر اس میں کوئی
بات ایسی ہو گئی جو من کو بری معلوم ہوئی تو کچھ
پرواہ نہ کی، ان کو کبھی کوئی رنج یا دکھ یا افسوس
نہیں ہوتا۔ ایسے لوگوں پر چاہے کتنی ہی مصیبت
کیوں نہ پڑے وہ ہمیشہ خوش رہتے ہیں اور ان کے
دل میں اس بات کا اطمینان رہتا ہے کہ جو کچھ ہم
نے کیا بھگوان کی مرضی کے مطابق کیا ہے پھر افسوس
کس بات کا۔

رتنہ تیما

22-6-1906

رادھے،

کل کی چٹھی میں میں نے لکھا تھا کہ تمہیں اب اپنی
عقل کے مطابق سب کام کرنے کی عادت ڈالنی چاہئے۔
اور اپنے من کو ہر ایک کام اور بات میں عقل کے مطابق
چلانا چاہئے۔ کچھ باتیں تو من ایسی چاہا کرتا ہے کہ
جو عقل کے مطابق ہی ہوتی ہیں۔ جیسے تمہارا من
چاہا ہوگا کہ روز ہوا خوری کے واسطے جائیں اور کھلی
اور تازی ہوا میں خوب دوڑیں۔ پھر تمہارا من چاہا
ہوگا کہ پہاڑوں پر جائیں، دریاؤں کی سیر کریں اور
سمندر کو بھی دیکھیں کہ کیسا ہے۔ ریل میں بیٹھ کر
شہروں میں پھریں اور دیکھیں کہ وہاں کیا کیا ہو رہا ہے۔
جاپان میں جاکر دیکھیں کہ وہاں کی عورتیں کسرت
کے ذریعے ایسی طاقتور کیسے ہو گئیں کہ مردوں کو
بھی پچھاڑ دیں۔ چین میں جاکر دیکھیں کہ وہاں کی
عورتوں اور لڑکیوں کے پیر میں جوتے پہناکر بچپن ہی سے
چھوٹے کس واسطے کر دیتے ہیں۔ اور بھی طرح طرح کی
نئی نئی باتیں دیکھیں، معلوم کریں اور ان سے فائدہ
اٹھائیں۔ یہ سب باتیں تو ایسی ہیں جو عقل کے
خلاف نہیں ہیں، اور اگر کوئی آدمی سوچ سمجھ کر
ان کاموں کو کرنا شروع کرے تو اس کا من بھی خوش
ہوگا اور عقل بھی کہیگی کہ ٹھیک کام ہوا۔ مگر کچھ
کام ایسے بھی ہیں جن کے کرنے کے لئے من تو چاہا کرتا ہے
مگر عقل سے انکی نہیں پٹتی۔ جیسے تمہارا من چٹھی
لکھنے کو بالکل نہیں چاہتا مگر عقل سے تمہیں ضرور معلوم
ہوتا ہوگا کہ سب چٹھیوں کا جواب دینا چاہئے۔ پہلے تو اس
میں یہ فائدہ ہے کہ تمہیں لکھنے کی عادت ہو جائیگی۔ دوسرے،
اگر تم ہر ایک چٹھی کا جواب دو تو تمہیں معلوم ہوتا
رہیگا کہ تم نے چٹھیوں کو اچھی طرح سمجھ کر پڑھا یا نہیں،

और पढ़ा तो उसकी बाबत क्या सोचा. क्या क्या बातें तुम्हारी समझ में आईं, और क्या क्या नहीं आईं. अगर यह सब कुछ मालूम होता रहे तो इन चिट्ठियों में बहुत ज़ियादा अच्छी अच्छी और फ़ायदे वाली बातें लिखी जा सकें. मगर तुम इस काम में बिल्कुल ही अपने मन के बस में रहती हो और इस से बड़ा नुकसान होता है. फिर इसके अलावा तुम्हारा मन यह चाहता है कि सब काम छिछोरपने से करो. नीचे अगर कोई किताब या कापी ढूंढने गईं तो वहां ही अटक गईं. थोड़ी देर तलाश करने से अगर किताब या कापी नहीं मिली तो और बातों में लग गईं, और अगर अलमारी खुली पड़ी है, तो बिल्ली ने आकर दूध वग़ैरा पी डाला और चीज़ें इधर उधर कर दीं. इसी तरह जब नींद खुली तो उठने को दिल न चाहा और पड़ी रहीं. यह सब बातें तुम मन के कहने पर चल कर करती हो. मगर यह सब अक़ल के ख़िलाफ़ है. और अगर तुम डायरी रोज़ लिखो और हर रोज़ कम से कम एक ख़राब आदत को छोड़ने का इरादा करो और फिर उसको छोड़ दो तो थोड़े ही अरसे में तुम्हारी सब ख़राब आदतें छूट जायेंगी.

गीत

(बहन शकीला चौधरी)

तू काहे न बोले

तू काहे न बोले प्यारे तू काहे न बोले ?

तेरे प्रेम का मारा चातक डाली डाली डोले
डाली डाली डोले अपने हृदय के पट खोले
हृदय के पट खोले दुनिया नैन तराज़ू तोले
उसकी मधुर सुहानी बानी कानन अमृत घोले
प्यारे तू काहे न बोले ?

तेरे प्रेम की मारी मछली जल में डूबा जायें
जल में डूबा जायें, डूबा जायें और रह जायें
दरिया से उठ उठ कर लहरें तट से सर टकरायें
प्रेम का मांझी बीच भंवर में असुओं मोती रोले
प्यारे तू काहे न बोले ?

اور پڑھا تو اس کی بابت کیا سوچا. کیا کیا باتیں تمہاری سمجھ میں آئیں، اور کیا کیا نہیں آئیں. اگر یہ سب کچھ معلوم ہوتا رہے تو ان چٹھیوں میں بہت زیادہ اچھی اچھی اور فائدے والی باتیں لکھی جاسکیں. مگر تم اس کام میں بالکل ہی اپنے من کے بس میں رہتی ہو اور اس سے بڑا نقصان ہوتا ہے. پھر اسکے علاوہ تمہارا من یہ چاہتا ہے کہ سب کام چھچھورپنے سے کرو. نیچے اگر کوئی کتاب یا کاپی ڈھونڈھنے گئیں تو وہاں ہی اٹک گئیں. تھوڑی دیر تلاش کرنے سے اگر کتاب یا کاپی نہیں ملی تو اور باتوں میں لگ گئیں، اور اگر الماری کھلی پڑی ہے، تو بلی نے آکر دودھ وغیرہ پی ڈالا اور چیزیں ادھر ادھر کردیں. اسی طرح جب نیند کھلی تو اٹھنے کو دل نہ چاہا. اور پڑی رہیں. یہ سب باتیں تم من کے کہنے پر چل کر کرتی ہو. مگر یہ سب عقل کے خلاف ہے. اور اگر تم ڈائری روز لکھو اور ہر روز کم سے کم ایک خراب عادت کو چھوڑنے کا ارادہ کرو اور پھر اسکو چھوڑ دو تو تھوڑے ہی دنوں میں تمہاری سب خراب عادتیں چھوٹ جائینگی.

گیت

(بہن شکیلہ چودھری)

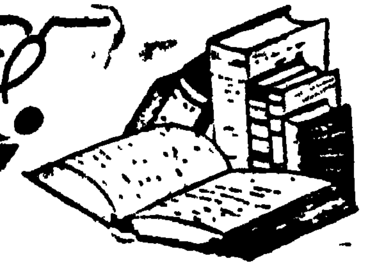
تو کاہے نہ بولے

تو کاہے نہ بولے پیارے تو کاہے نہ بولے ؟

تیرے پریم کا مارا چاتک ڈالی ڈالی ڈولے
ڈالی ڈالی ڈولے اپنے ہردے کے پٹ کھولے
ہردے کے پٹ کھولے دنیا نین ترازو تولے
اس کی مدھر سہانی بانی کانن امرت گھولے
پیارے تو کاہے نہ بولے ؟

تیرے پریم کی ماری مچھلی جل میں ڈوبا کھائیں
جل میں ڈوبا کھائیں، ڈوبا کھائیں اور رہ جائیں
دریا سے اٹھ اٹھ کر لہریں تٹ سے سر ٹکرائیں
پریم کا مانجھی بیچ بھنور میں انسوں موتی رولے
پیارے تو کاہے نہ بولے ؟

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

जवानो

लेखक—महात्मा भगवानदीन, निकालने वाले—पूर्वोदय प्रकाशन, दरिया गंज, दिल्ली. लिखावट—हिन्दी, सफ़े 228, दाम तीन रुपये.

हर नौजवान चाहता है कि अपना विकास करे और अपने देश की सेवा करके उसके नाम को ऊंचा करे. मगर बड़ा सवाल यह है—ख़ास कर हिन्दुस्तान में—कि क्या करे और कैसे करे. सरकार जिस रास्ते चल रही है वह है मिलों और बड़े कारख़ानों और बाहर से भीक मांगने का रास्ता, दिल चाहता है कि कुछ ऐसा काम हो जिससे ग़रीबों का सचमुच भला हो. लेकिन जब करने पर आता है तो 'नोन-तेल-लकड़ी' का सवाल एक तरफ़ से और 'कन्ट्रोल' का जीवन दूसरी तरफ़ से उसका ईमान से रहना भी मुश्किल कर देते हैं. वह अपने आदर्शों को भूल-सा जाता है और किसी तरह गाड़ी चलाने की सोचता है. धर्म की किताबों से उसे उलझन होती है, महापुरुषों के वचन उसे सुहाते नहीं—यह सब ख़याली दुनिया की चीज़ें लगती हैं. लेकिन अपने अन्दर भी उसे तसल्ली नहीं है, विश्वास नहीं है. वह भटक गया दीखता है, चारों तरफ़ अंधेरा ही दीखता है और कोई सूरत नज़र नहीं आती.

देश के ऐसे वातावरण में 'जवानो' नाम की किताब एक ज़बरदस्त चिराग़ है.

एक बार शुरू करने पर बिना ख़त्म किये दिल को चैन ही नहीं मिलने वाली है. किताब क्या है—उपन्यास भी है, जीवनी भी है, दर्शन भी है. पढ़ने वाले को हर सफ़े पर ऐसा महसूस होगा कि उसके ही जीवन के सवालों और मुश्किलों को लेकर यह लिखी गई है और एक ऐसा आईना पेश कर दिया गया है जिसमें देख कर सारे दाग़ धब्बे पोंछकर या धो-कर अपने को ख़ुशनुमा बनाया जा सकता है. बरसों नहीं, सदियों पुराने ग़लत और बेकार ढेर के ख़याल इस किताब को देख कर हिल जावे

جوانو

جوانو—لیکھک مہاتما بھگوان دین' نکالنے والے—پوروُدے پرکاشن' دریا گنج' دلی. لکھاوٹ—ہندی' صفحے 228' دام تین روپے.

ہر نوجوان چاہتا ہے کہ اپنا وکاس کرے اور اپنے دیش کی سیوا کر کے اسکے نام کو اونچا کرے. مگر بڑا سوال یہ ہے— خاصکر ہندستان میں—کہ کیا کرے اور کیسے کرے سرکار جس راستے چل رہی ہے وہ ہے ملوں اور بڑے کارخانوں اور باہر سے بھیک مانگنے کا راستہ' دل چاہتا ہے کہ کچھ ایسا کام ہو جس سے غریبوں کا سچ مچ بھلا ہو. لیکن جب کرنے پر آتا ہے تو 'نون تیل لکڑی' کا سوال ایک طرف سے اور 'کنٹرول' کا جیون دوسری طرف سے اس کا ایمان سے رہنا بھی مشکل کر دیتے ہیں. وہ اپنے آدرشوں کو بھول سا جاتا ہے اور کسی طرح گاڑی چلانے کی سوچتا ہے. دھرم کی کتابوں سے اسے الجھن ہوتی ہے' مہاپرشوں کے بچن اسے سہاتے نہیں—یہ سب خیالی دنیا کی چیزیں لگتی ہیں. لیکن اپنے اندر بھی اسے تسلی نہیں ہے' وشواس نہیں ہے. وہ بھٹک گیا دیکھتا ہے' چاروں طرف اندھیرا ہی دیکھتا ہے اور کوئی صورت نظر نہیں آتی.

دیش کے ایسے واتاورن میں 'جوانو' نام کی کتاب ایک زبردست چراغ ہے.

ایک بار شروع کرنے پر بنا ختم کئے دل کو چین ہی نہیں ملنے والی ہے. کتاب کیا ہے—اپنیاس بھی ہے' جیونی بھی ہے' درشن بھی ہے. پڑھنے والے کو ہر صفحے پر ایسا محسوس ہوگا کہ اس کے ہی جیون کے سوالوں اور مشکلوں کو لے کر یہ لکھی گئی ہے اور ایک ایسا آئینہ پیش کر دیا گیا ہے جس میں دیکھکر سارے داغ دھبے پونچھ کر یا دھو کر اپنے کو خوشنما بنایا جا سکتا ہے. برسوں نہیں' صدیوں پرانے غلط اور بے سر پیر کے خیال اس کتاب کو دیکھکر ہل جائے

है और आदमी महसूस करता है कि मैं क्या हो सकता था मगर क्यों न हो पाया और अगर चाहूँ तो अब भी हो सकता हूँ. लेखक ने मानों अपना सारा जीवन, सारा अनुभव इसमें उंडेल कर रख दिया है और उसकी बुलन्दी, गहराई और पहुंच पाठक को मजबूर करती है कि होश में आये और इतमिनान के साथ अपना क़दम उठाये तो कामयाबी उसके हाथ है.

जो हाल किताब में दिये विचारों का है वही उसकी भाषा का. वह वह भाषा है जिसे हर कोई मर्द या औरत, बूढ़ा या जवान, पढ़ा या अनपढ़, शहराती या देहाती, सभी आसानी के साथ समझ सकते हैं. कहने की ज़रूरत नहीं कि इस तरह ही चीज़ें हमारे देश में कम निकला करती हैं और फिर हिन्दी-हिन्दुस्तानी में तो बहुत ही कम.

हमें यक़ीन है कि यह किताब हिन्दी-हिन्दुस्तानी साहित्य का एक अनहोना और अनमोल हीरा है जिसकी क़द्र आये दिन बढ़ेगी.

—सुरेश रामभाई

और किताबें

हिन्दी.

1. उत्तर की दीवारें.

लेखक; दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर; अनुवादिका शकुन्तला देवी; नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; पहला एडीशन, सफ़े 84, दाम चौदह आना.

2. जैन जागरन के अग्रदूत.

लेखक, अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भारतीय ज्ञान पीठ काशी; पहला एडीशन, सफ़े 619, दाम पांच रुपये.

3. जीवन का मूल्य.

लेखक—रामकिशोर 'पथिक' 'विशारद;' शिक्षार्थी साहित्य प्रकाशन वर्धा; पहला एडीशन, सफ़े 48, दाम आठ आने.

उरदू.

4. नया भूपाल.

सम्पादक, जगनमल; भूपाल; हफ़्तेवारी परचा, दाम की कापी एक आना, सालाना चन्दा पौने चार रुपये.

अंग्रेज़ी.

5. कन्ट्रोल्स ए स्टडी.

निकालने वाले; फ़ैडरेशन आफ़ इण्डियन चैम्बर्स आफ़ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री, नई दिल्ली; पहला एडीशन, सफ़े 98

ہیں اور آدمی محسوس کرتا ہے کہ میں کیا ہو سکتا تھا مگر کیوں نہ ہو پایا اور اگر چاہوں تو اب بھی ہو سکتا ہوں۔ لیکھک نے مانو اپنا سارا جیون، سارا انوبھو اس میں انڈیل کر رکھدیا ہے اور اس کی بلندی، گہرائی اور پہنچ پاٹھک کو مجبور کرتی ہے کہ ہوش میں آئے اور اطمینان کے ساتھ اپنا قدم اٹھائے تو کامیابی اسکے ہاتھ ہے۔

جو حال کتاب میں دیئے وچاروں کا ہے وہی اسکی بھاشا کا۔ یہ وہ بھاشا ہے جسے ہر کوئی مرد یا عورت، بوڑھا یا جوان، پڑھا یا ان پڑھ، شہراتی یا دیہاتی، سبھی آسانی کے ساتھ سمجھ سکتے ہیں۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ اس طرح کی چیزیں ہمارے دیش میں کم نکلا کرتی ہیں اور پھر ہندی ہندستانی میں تو بہت ہی کم۔

ہمیں یقین ہے کہ یہ کتاب ہندی ہندستانی ساہتیہ کا ایک ان ہونا اور انمول ہیرا ہے جس کی قدر آئے دن بڑھے گی۔

—سریش رام بھائی

اور کتابیں

ہندی۔

1. اُتر کی دیواریں۔

لیکھک، دتاتریہ بال کرشن کالیلکر؛ انوادکا شکنتلا دیوی؛ نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 84، دام چودہ آنہ۔

2. جین جاگرن کے اگردوت۔

لیکھک، ایودھیا پرساد گوئلیہ؛ بھارتی گیان پیٹھ کاشی؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 619، دام پانچ روپے۔

3. جیون کا مولیہ۔

لیکھک—رام کشور 'پتھک' 'وشارد'؛ شکشارتھی ساہتیہ پرکاشن وردھا؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 48، دام آٹھ آنے۔

اردو۔

نیا بھوپال۔

سمپادک، جگن مل؛ بھوپال؛ ہفتہ واری پرچہ، دام فی کاپی ایک آنہ، سالانہ چندہ پونے چار روپے۔

انگریزی۔

5. کنٹرولس اے اسٹڈی۔

نکالنے والے؛ فیڈریشن آف انڈین چیمبرس آف کامرس اینڈ انڈسٹری، نئی دلی؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 98۔

6. सेविन मंथ्स विद् महात्मा गांधी.

लेखक, कृष्णदास, संपादक रिचर्ड बी. ग्रेग; नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद; पहला एडीशन, सफ़े 272 दाम चार रुपये.

7. राइचस स्ट्रगल.

लेखक, महादेव हरिभाई देसाई; पहला एडीशन, सफ़े 97, दाम डेढ़ रुपये.

8. एजुकेशनल स्टेटिस्टिक्स इन्डियन स्टेट्स 1945–46 पार्ट II.

निकालने वाले, मिनिस्ट्री आफ़ एजुकेशन गवर्नमेन्ट आफ़ इन्डिया, नई दिल्ली, सफ़े 80, दाम एक रुपये चौदह आने.

9. एजुकेशनल स्टेटिस्टिक्स इन्डियन स्टेट्स 1946–47 पार्ट II.

सफ़े 66, दाम चार रुपये दस आने.

10. एजुकेशन इन इन्डिया 1947-48

सफ़े 167, दाम छै रुपये दो आने.

11. एजुकेशन इन दी स्टेट्स आफ़ इन्डियन यूनियन 1948-49 (ए स्टेटिकल सर्वे)

सफ़े 196, दाम आठ रुपये चार आने.

12. एजुकेशन इन सेन्टरली एडमिनिस्टर्ड. इनस्टिट्यूशनस इन इन्डिया 1948-49

सफ़े 112, दाम पांच रुपये चार आने.

13. एजुकेशनल कास्टिंग स्टेटिसटिक्स इन्डिया 1949;

सफ़े 124, दाम छै रुपया आठ आने.

14. मैसेज.

एडीटर, सियाउल हसन फ़ारूक़ी; कैर बाज़ार, दिल्ली; सफ़े 16, दाम चार आने, सालाना चन्दा दस रुपये.

---

6. سیون منتھس ود مہاتما گاندھی .

لیکھک، کرشن داس؛ سمپادک رچرڈ بی. گریگ؛ نوجیون پبلشنگ ہاؤس، احمدآباد؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 272، دام چار روپے .

7. رائٹیس اسٹرگل .

لیکھک، مہادیو ہری بھائی دیسائی؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 97، دام ڈیڑھ روپے .

8. ایجوکیشنل اسٹیٹکس انڈین اسٹیٹس 1945–46 پارٹ II .

نکالنے والے، منسٹری آف ایجوکیشن گورنمنٹ آف انڈیا، نئی دلی؛ صفحے 80، دام ایک روپے چودہ آنے .

9. ایجوکیشنل اسٹیٹسٹکس اسٹیٹس 1946–47. پارٹ II.

صفحے 66، دام چار روپے دس آنے .

10. ایجوکیشن ان انڈیا 1947–48 .

صفحے 167، دام چھ روپے دو آنے .

11. ایجوکیشن ان دی اسٹیٹس آف انڈین یونین 1948–49 (اے اسٹیٹسٹکل سروے)

صفحے 196، دام آٹھ روپے چار آنے .

12. ایجوکیشن ان سنٹرلی ایڈمنسٹرڈ . انسٹیٹیوشنس ان انڈیا 1948–49 .

صفحے 112، دام پانچ روپے چار آنے .

13. ایجوکیشنل کاسٹنگ اسٹیٹسٹکس انڈیا 1949:

صفحے—124، دام چھ روپے آٹھ آنے .

14. میسج .

ایڈیٹر، ضیاالحسن فاروقی؛ قیصر بازار، دلی؛ صفحے 16، دام چار آنے، سالانہ چندہ دس روپے .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

जनवरी.

16. जापान नेशनलिस्ट चीन से भी एक सुलह नामा करेगा. स्वेज़ नहर के इलाके में घमासान लड़ाई. हिन्दुस्तान ने नैपाल को 15 करोड़ रुपया क़र्ज़ दिया. मलाया में नये अंगरेज़ी कमिश्नर मुक़र्रर किये गए.

17. यूनो सिक्योरिटी कौंसिल में रूस ने काशमीर के मसले पर अपनी राय ज़ाहिर की. इलाहाबाद में प्रोफ़ेसर नील रतन धर ने बताया कि विलायत वाले कीमियाई खाद का इस्तेमाल कम करते आ रहे हैं.

18. इण्डोनेसिया में मज़दूरों ने हड़ताल कर दी. बर्मा में बाग़ियों ने एक शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया.

19. गोंडा और बहराइच के ज़िलों में अनाज की कमी. यूनो की जनरल असेम्बली में ठहराव पास हुआ कि दक्खिन अफ़्रीका दक्खिन पच्छिम अफ़्रीका की हस्ती में तब्दीली नहीं कर सकता.

20. फ़्रान्स में नई हकूमत बनी. जनरल च्यांग की फ़ौजें बरमा की हद के अन्दर से नये चीन पर लुक छिप कर हमला कर रही हैं.

21. आर्थिक मदद की एशिया और मिडिल ईस्ट के मुल्कों को ज़रूरत है—अमरीकी राजपति ट्रूमैन का एलान. काशमीर से फ़ौजें हटने के सिलसिले में सिक्युरिटी कौंसिल ने डेवर्स प्लान को ज़ाहिर किया.

22. इंगलिस्तान और अमरीकी सरकार ने तय किया कि वह इण्डोनेशिया के मामले में फ़्रांस का साथ देंगे.

23. नैपाल की राज धानी काठमांडू में "हथियार बन्द बग़ावत." हिन्दुस्तान को वर्ल्ड बैंक रुपया क़र्ज़ देगा. रूस मिडिल ईस्ट मुल्कों को आर्थिक और राजकाजी मदद देने को तैयार है.

24. नैपाल में तमाम ताक़त बड़े वज़ीर ने अपने हाथ में ले ली. अमरीकी हवाई जहाज़ उत्तरी पूर्वी चीन पर उड़ते पाये गये—पेकिंग रेडियो का एलान. बम्बई में अन्तर क़ौमी फ़िल्मी त्योहार शुरू हुआ.

جنوری۔

16. جاپان نیشنلسٹ چین سے بھی ایک صلح نامہ کریگا۔ سویز نہر کے علاقے میں گھماسان لڑائی۔ ہندستان نے نیپال کو 15 کروڑ روپیہ قرض دیا۔ ملایا میں نئے انگریزی کمشنر مقرر کئے گئے۔

17. یونو سکیورٹی کونسل میں روس نے کشمیر کے مسئلے پر اپنی رائے ظاہر کی۔ الہ آباد میں پروفیسر نیل رتن دھر نے بتایا کہ ولایت والے کیمیائی کھاد کا استعمال کم کرتے جا رہے ہیں۔

18. انڈونیشیا میں مزدوروں نے ہڑتال کر دی۔ برما میں باغیوں نے ایک شہر پر قبضہ کر لیا۔

19. گونڈا اور بہرائچ کے ضلعوں میں اناج کی کمی۔ یونو کی جنرل اسمبلی میں ٹھہراؤ پاس ہوا کہ دکھن افریقہ دکھن پچھم افریقہ کی ہستی میں تبدیلی نہیں کر سکتا۔

20. فرانس میں نئی حکومت بنی۔ جنرل چیانگ کی فوجیں برما کی حد کے اندر سے نئے چین پر لک چھپ کر حملہ کر رہی ہیں۔

21. آرتھک مدد کی ایشیا اور مڈل ایسٹ کے ملکوں کو ضرورت ہے—امریکی راج پتی ٹرومین کا اعلان۔ کشمیر سے فوجیں ہٹنے کے سلسلے میں سکیورٹی کونسل نے ڈیورس پلان کو ظاہر کیا۔

22. انگلستان اور امریکی سرکار نے طے کیا کہ وہ انڈونیشیا کے معاملے میں فرانس کا ساتھ دینگے۔

23. نیپال کی راجدھانی کھٹمنڈو میں "ہتھیار بند بغاوت۔" ہندستان کو ورلڈ بینک روپیہ قرض دے گا۔ روس مڈل ایسٹ ملکوں کو آرتھک اور راج کاجی مدد دینے کو تیار ہے۔

24. نیپال میں تمام طاقت بڑے وزیر نے اپنے ہاتھ میں لے لی۔ امریکی ہوائی جہاز اتری پوربی چین پر اڑتے پائے گئے—پیکنگ ریڈیو کا اعلان۔ بمبئی میں انتر قومی فلمی تیوہار شروع ہوا۔

25. नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया. क़ाहिरा में ख़तरे की हालत.

26. भारत में लोक राज दिन ज़ोर शोर से मनाया गया. ट्युनीसिया में हालत ख़तरनाक.

27. मिस्र में मार्शल ला का एलान. अगर बर्तानिया मौजूदा रफ़्तार से ख़र्च करता रहेगा तो अगस्त के तीसरे हफ़्ते तक दिवालिया बन जायेगा—अंगरेज़ी हुकूमत के एक पार्लियामेन्ट्री सेक्रेटरी का एलान.

28. बादशाह फ़ारूक़ ने नहस पाशा की सरकार को बरख़ास्त कर दिया. अली मेहर ने दूसरी सरकार बनाई.

29. इंगलिस्तान अब भी मिस्र से बात चीत करने को तैयार है—विदेशी मिनिस्टर ईडन का बयान. मद्रास के बारह ज़िलों में खाने की कमी.

30. रूस ने मांग की कि बरमा से च्यांग फ़ौज हटनी चाहिये. महात्मा गांधी की चौथी बरसी मुल्क भर में मनाई गई. मरकज़ी सरकार नदी विकास योजनाओं में अब तक 108 करोड़ रुपया ख़र्च कर चुकी है.

31. सेक्योरिटी कौंसिल ने डाक्टर ग्राहम से काश्मीर के मामले में अपनी जांच जारी रख कर 31 मार्च तक रिपोर्ट देने को कहा. हिन्दुस्तान पचास लाख टन ग़ल्ला बाहर से मंगायेगा—रिज़र्व बैंक का एलान.

फ़रवरी.

1. ब्रिटेन और फ़्रांस उत्तर एटलांटिक सुलह दल में जर्मनी के शामिल होने का विरोध करेंगे. अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट में सरकार के ख़िलाफ़ लेबर दल का ठहराव कामयाब नहीं हुआ.

2. मिस्र से बर्तानिया बात चीत दुबारा शुरू करेगा. कम्यूनिज़्म के पैर हिन्दुस्तान में जम चुके हैं—चुनाव नतीजे के ऊपर अंगरेज़ी अख़बार मैनचेस्टर गार्जियन की राय. दिल्ली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी का इजलास.

3. हिन्दुस्तान में हर साल पांच लाख आदमी टी. बी. के शिकार होते हैं.

4. ट्युनीसिया का मसला यू. एन. ओ. कौंसिल में उठाया जायेगा. तुरकी से एक प्रेस डेलीगेशन हिन्दुस्तान आया.

5. यू. एन. ओ. असेम्बली का छठा इजलास पेरिस में ख़त्म हुआ. तेल कारख़ाने चलवाने के लिये पूर्वी जर्मनी के जानकारों को ईरान ने दावत दी. अमरीका 30 करोड़ डालर की इमदाद इंगलैण्ड को देगा. नई दिल्ली में पुरानी पार्लियामेन्ट के आख़िरी इजलास में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद का भाषण.

25. نیپال کی کمیونسٹ پارٹی کو غیرقانونی قرار دے دیا گیا ۔ قاہرہ میں خطرہ کی حالت ۔

26. بھارت میں لوک راج دن زور شور سے منایا گیا ۔ ٹیونیسیا میں حالت خطرناک ۔

27. مصر میں مارشل لا کا اعلان ۔ اگر برطانیہ موجودہ رفتار سے خرچ کرتا رہے گا تو اگست کے تیسرے ہفتے تک دیوالیہ ہو جائیگا—انگریزی حکومت کے ایک پارلیمنٹری سکریٹری کا اعلان ۔

28. بادشاہ فاروق نے نحاس پاشا کی سرکار کو برخاست کر دیا ۔ علی مہر نے دوسری سرکار بنائی ۔

29. انگلستان اب بھی مصر سے بات چیت کرنے کو تیار ہے—ودیش منسٹر ایڈن کا بیان ۔ مدراس کے بارہ ضلعوں میں کھانے کی کمی ۔

30. روس نے مانگ کی کہ برما سے چیانگ فوج ہٹنی چاہئے ۔ مہاتما گاندھی کی چوتھی برسی ملک بھر میں منائی گئی ۔ مرکزی سرکار ندی وکاس یوجناؤں میں اب تک 108 کروڑ روپیہ خرچ کر چکی ہے ۔

31. سکیورٹی کونسل نے گراہم سے کاشمیر کے معاملے میں اپنی جانچ جاری رکھکر 31 مارچ تک رپورٹ دینے کو کہا ۔ ہندستان پچاس لاکھ ٹن غلہ باہر سے منگائے گا—ریزرو بینک کا اعلان ۔

فروری ۔

1. برطانیہ اور فرانس اتر اٹلانٹک صلح دل میں جرمنی کے شامل ہونے کا ورودھ کرینگے ۔ انگریزی پارلیامنٹ میں سرکار کے خلاف لیبر دل کا ٹھہراؤ کامیاب نہیں ہوا ۔

2. مصر سے برطانیہ بات چیت دوبارا شروع کریگا ۔ کمیونزم کے پیر ہندستان میں جم چکے ہیں—چناؤ نتیجے کے اوپر انگریزی اخبار مینچسٹر گارجین کی رائے ۔ دلی میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کا اجلاس ۔

3. ہندستان میں ہر سال پانچ لاکھ آدمی ٹی ۔ بی ۔ کے شکار ہوتے ہیں ۔

4. ٹیونیسیا کا مسئلہ یو ۔ این ۔ او ۔ کونسل میں اٹھایا جائیگا ۔ ترکی سے ایک پریس ڈیلی گیشن ہندستان آیا ۔

5. یو ۔ این ۔ او ۔ اسمبلی کا چھٹا اجلاس پیرس میں ختم ہوا ۔ تیل کارخانے چلوانے کے لئے پوربی جرمنی کے جانکاروں کو ایران نے دعوت دی ۔ امریکہ 30 کروڑ ڈالر کی امداد انگلینڈ کو دیگا ۔ نئی دلی میں پرانی پارلیامنٹ کے آخری اجلاس میں راشٹرپتی راجندر پرساد کا بھاشن ۔

6. इंगलैण्ड के राजा किंग जार्ज गुज़र गये. उनकी बेटी एलिज़बेथ अब अंगरेज़ी राजगद्दी की महारानी बनेंगी. 'अनाज और उपजाओ' आंदोलन की जांच के लिये नई दिल्ली की सरकार ने कमेटी मुक़र्रर की.

7. फ़्रांस सरकार का इसरार कि अगर कोई योरपी फ़ौज नहीं बनी तो जर्मनी फिर सर उठावेगा.

8. मद्रास में पुरानी मिनिस्ट्री ने इस्तीफ़ा दिया और एक काम चलाऊ आरज़ी मिनिस्ट्री गवर्नर ने क़ायम की.

9. जापानी फ़ौज में अगले साल कम से कम तीन लाख सिपाही होंगे. पूर्वी पाकिस्तान में उर्दू के साथ बंगाली को क़ौमी ज़बान मानने की तहरीक शुरू.

10. कोरिया की लड़ाई के सिलसिले में दोनों फ़रीक़ों में बात चीत. क्रिकेट के खेल में विलायत की टीम को हिन्दुस्तानी टीम ने पहली बार मद्रास में हराया.

11. राजा जार्ज की क्रिया कर्म के बाद अंगरेज़ी सरकार मिस्र से फिर बात चीत शुरू कर देगी. हिन्दुस्तान जल्दी ही जापान से बाक़ायदा सम्बंध क़ायम कर लेगा— पार्लियामेन्ट में बड़े वज़ीर नेहरू का एलान.

12. हिन्द पार्लियामेन्ट में बड़े वज़ीर ने कहा कि कश्मीर के मामले में हमारा रुख़ वही है जो पहले था. मद्रास में कांग्रेस के ख़िलाफ़ जीतने वालों का मिला जुला इजलास.

13. नई दिल्ली में पार्लियामेन्ट में माल वज़ीर ने स्टर्लिंग समझौते वाली चिट्ठी पत्री पेश की.

14. मद्रास में किसान मज़दूर प्रजा पारटी और कम्युनिस्ट पारटी ने एक मुत्तहिदा लोकशाही दल बनाया. कांग्रेस को नये सिरे से संगठन करने के लिये कांग्रेस सदर का तमाम सूबा कमेटियों को दस्ती ख़त.

15. चीन के बड़े वज़ीर ने अमरीका और ब्रिटेन पर विश्व शान्ति में रुकावट डालने का इल्ज़ाम लगाया. दक्खिन अफ़्रीक़ा में वहाँ के हिन्दुस्तानी लोग काले क़ानून के ख़िलाफ़ 6 अप्रेल से आंदोलन शुरू करेंगे.

6. انگلینڈ کے راجہ کنگ جارج گذر گئے ۔ ان کی بیٹی ایلزبتھ اب انگریزی راج گدی کی مہارانی بنیں گی ۔ 'اناج اور اپجاؤ' آندولن کی جانچ کے لئے نئی دلی کی سرکار نے کمیٹی مقرر کی ۔

7. فرانس سرکار کا اصرار کہ اگر کوئی یورپی فوج نہیں بنی تو جرمنی پھر سر اٹھائے گا ۔

8 مدراس میں پرانی منسٹری نے استعفیٰ دیا اور ایک کام چلاؤ عارضی منسٹری گورنر نے قائم کی ۔

9. جاپانی فوج میں اگلے سال کم سے کم تین لاکھ سپاہی ہونگے ۔ پوربی پاکستان میں اردو کے ساتھ بنگالی کو قومی زبان ماننے کی تحریک شروع ۔

10. کوریا کی لڑائی کے سلسلے میں دونوں فریقوں میں بات چیت. کرکٹ کے کھیل میں ولایت کی ٹیم کو ہندستانی ٹیم نے پہلی بار مدراس میں ہرایا ۔

11. راجہ جارج کی کریا کرم کے بعد انگریزی سرکار مصر سے پھر بات چیت شروع کر دیگی ۔ ہندستان جلدی ہی جاپان سے باقاعدہ سمبندھ قائم کر لیگا—پارلیامنٹ میں بڑے وزیر نہرو کا اعلان ۔

12. ہند پارلیامنٹ میں بڑے وزیر نے کہا کہ کشمیر میں ہمارا رخ وہی ہے جو پہلے تھا ۔ مدراس میں کانگریس کے خلاف جیتنے والوں کا ملا جلا اجلاس ۔

13. نئی دلی میں پارلیامنٹ میں مال وزیر نے اسٹرلنگ سمجھوتے والی چٹھی پتری پیش کی ۔

14. مدراس میں کسان مزدور پرجا پارٹی اور کمیونسٹ پارٹی نے ایک متحدہ لوک شاہی دل بنایا ۔ کانگریس کو نئے سرے سے سنگٹھن کرنے کے لئے کانگریس صدر کا تمام صوبہ کمیٹیوں کو دستی خط ۔

15. چین کے بڑے وزیر نے امریکہ اور برٹین پر وشو شانتی میں رکاوٹ ڈالنے کا الزام لگایا ۔ دکھن افریقہ میں وہاں کے ہندستانی لوگ کالے قانون کے خلاف 6 اپریل سے آندولن شروع کرینگے ۔

हमारी राय

ہماری رائے

पूर्वी एशिया

आज दुनिया की सभी बड़ी बड़ी ताक़तों की आंखें पूर्वी एशिया की तरफ़ लगी हुई हैं. इसके साथ इन सब का नफ़ा नुक़सान भी लगा हुआ है इस वजह से यह एक तरह का अखाड़ा सा बन गया है. वहां की हालत तभी अच्छी तरह समझ में आ सकती है जब हम पिछली जंग के बाद से जो बातें हुई हैं उन पर एक निगाह डालें. इनमें सबसे ख़ास चीज़ है अमरीका का एक नई शक्ल में सामने आना और पूर्वी एशिया पर हावी होने की कोशिश करना. पिछली जंग के पहले—यानी सन 1939 तक—एशिया के सभी देश अमरीका को इज़्ज़त की निगाह से देखते थे. वह समझते थे कि अमरीका एक ख़ुशहाल देश है जिसे अपना राज या असर फैलाने की ज़रा भी इच्छा नहीं है. यही नहीं, एशिया के सभी देश ख़ास कर वह जो योरप की ताक़तों के ख़िलाफ़ अपनी आज़ादी के लिये कोशिश कर रहे थे. अमरीका की तरफ़ बड़ी उम्मीदों से देखते थे क्योंकि उन्हें अमरीका से नैतिक और तरह तरह की दूसरी इमदादें मिल जाती थीं. लोग जानते थे कि पच्छिम के बड़े देशों में अमरीका ही है जिसने 1917 के रूसी इन्क़िलाब के बाद नई रूसी सरकार को सब से पहले माना और अमरीका ही वह देश था जिसने सब से पहले उन तानाशाह हुकूमतों को बुरा कहा जो पहले इटली में और बाद में जर्मनी में क़ायम हुईं. जब जापान ने चीन पर और इटली ने अबीसीनिया पर हमले किये तो अमरीका ने दोनों को खुले आम बुरा कहा. कमाल यह है कि अमरीका ने ऐसे वक़्त इन मुल्कों को बुरा कहा जब योरप की ज़ियादातर ताक़तें इन हमला करने वाले मुल्कों से या तो हमदर्दी रखती थीं या चुपचाप मन ही मन ख़ुश होकर तमाशा देखती थीं. स्पेन की घरेलू लड़ाई की बाबत यह बात अच्छी तरह साबित हो चुकी है कि अगर बर्तानिया और फ़्रांस जनरल-फ़्रान्को की मदद न करते तो वह लड़ाई चल ही न पाती. अमरीका ने जनरल फ़्रान्को की बग़ावत की हमेशा मुख़ालफ़त की. अमरीका के नौजवान वालन्टियर

پوربی ایشیا

آج دنیا کی سبھی بڑی بڑی طاقتوں کی آنکھیں پوربی ایشیا کی طرف لگی ہوئی ہیں۔ اسکے ساتھ ان سب کا نفع نقصان بھی لگا ہوا ہے۔ اس وجہ سے یہ ایک طرح کا اکھاڑا سا بن گیا ہے۔ یہاں کی حالت تبھی اچھی طرح سمجھ میں آسکتی ہے جب ہم پچھلی جنگ کے بعد سے جو چیزیں ہوئی ہیں ان پر ایک نگاہ ڈالیں۔ ان میں سب سے خاص چیز ہے امریکہ کا ایک نئی شکل میں سامنے آنا اور پوربی ایشیا پر حاوی ہونے کی کوشش کرنا۔ پچھلی جنگ کے پہلے - یعنی سن 1939 تک— ایشیا کے سبھی دیش امریکہ کو عزت کی نگاہ سے دیکھتے تھے۔ وہ سمجھتے تھے کہ امریکہ ایک خوشحال دیش ہے جسے اپنا راج یا اثر پھیلانے کی ذرا بھی اچھا نہیں ہے۔ یہی نہیں، ایشیا کے سبھی دیش خاص کر وہ جو یورپ کی طاقتوں کے خلاف اپنی آزادی کے لئے کوشش کر رہے تھے امریکہ کی طرف بڑی امیدوں سے دیکھتے تھے کیونکہ انہیں امریکہ سے نیتک اور طرح طرح کی دوسری امدادیں مل جاتی تھیں۔ لوگ جانتے تھے کہ پچھم کے بڑے دیشوں میں امریکہ ہی ایک ایسا دیش ہے جس نے 1917 کے روسی انقلاب کے بعد نئی روسی سرکار کو سب سے پہلے مانا اور امریکہ ہی وہ دیش تھا جس نے سب سے پہلے ان تاناشاہ حکومتوں کو برا کہا جو پہلے اٹلی میں اور بعد میں جرمنی میں قائم ہوئیں۔ جب جاپان نے چین پر اور اٹلی نے ابیسینیا پر حملے کئے تو امریکہ نے دونوں کو کھلے عام برا کہا۔ کمال یہ ہے کہ امریکہ نے ایسے وقت ان ملکوں کو برا کہا جب یورپ کی زیادہ تر طاقتیں ان حملہ کرنے والے ملکوں سے یا تو ہمدردی رکھتی تھیں یا چپ چاپ من ہی من خوش ہوکر تماشہ دیکھتی تھیں۔ اسپین کی گھریلو لڑائی کی بابت یہ بات اچھی طرح ثابت ہو چکی ہے کہ اگر برطانیہ اور فرانس جنرل فرانکو کی مدد نہ کرتے تو وہ لڑائی چل ہی نہ پاتی۔ امریکہ نے جنرل فرانکو کی بغاوت کی ہمیشہ مخالفت کی۔ امریکہ کے نوجوان والنٹیر

उस अन्दर क़ौमी फ़ौज में सबसे आगे थे जिसने सेन सरकार की तरफ़ लड़कर (जो उस वक़्त कम्यूनिस्ट सरकार थी) ख़ून-पसीना एक कर दिया.

एशिया का बच्चा बच्चा जानता है कि हिन्दुस्तान और चीन के राष्ट्री आन्दोलनों से अमरीका के लोगों को हमेशा हमदर्दी रही है. इन कारनों से एशिया वालों के दिलों में अमरीका के लिये बहुत जगह थी. और यह बात लड़ाई के शुरू होने के बाद उस वक़्त भी क़ायम रही जब अमरीका एशिया की सबसे बड़ी ताक़त जापान का गहरा दुश्मन बन गया था. अमरीका के सिपाही घर पर चाहे कितने ही नेक और समझदार नागरिक की तरह रहते हों लेकिन दुनिया की सबसे अधिक निर्दय जंग ने उन्हें संग-दिल दरिन्दे बना दिया था. अमरीकी सिपाहियों के रूप में एशिया ने अमरीका को पहली बार नज़दीक से देखा. इस कड़वे तजरबे के होते हुए भी अमरीका से एशियाई जनता की हमदर्दी बनी रही.

दूसरी बड़ी लड़ाई.

सन 1944 में अमरीका के राजपति रूज़वेल्ट इस दुनिया से गुज़र गये. प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट एक बड़ी हस्ती थे. उनके सामने एक आदर्श था. उस आदर्श को उन्होंने पहले एटलान्टिक चारटर में अमली जामा पहनाया और फिर यूनो के चारटर में उसे शामिल किया. उन्होंने जिस कामयाबी और ख़ूबी के साथ मित्र राष्ट्रों को मिलाये रखा वह किसी भी दूसरे के बूते की चीज़ नहीं थी. अपना सा जोश और अपनी सी लगन उन्होंने इन ताक़तों के अन्दर भी पैदा कर दी थी. उन्होंने जंग को एक ऊंचे व पाक मक़सद वाली जंग की शकल दे दी थी. इसके बग़ैर जंग केवल एक मार काट व धींगा मुश्ती हो कर रह जाती. लेकिन हमें अफ़सोस के साथ कहना है कि रूज़वेल्ट की आंख बन्द होने के बाद जंग का सचमुच यही रूप रह गया. उनके जाते ही जब जंग ख़त्म भी नहीं हो पाई थी अमरीका की पालिसी ने पल्टा खाया.

इसकी बुनियादी वजह यह थी कि दुनिया ने और ख़ास कर अमरीका ने देखा कि जरमनी के ख़िलाफ़ जान की बाज़ी लगाने में रूस ने कमाल कर दिखाया है और उम्मीद से ज़ियादा कामयाबी हासिल कर ली है. रूस की इस जीत ने अमरीका की सारी स्कीमों पर पानी फेर दिया और अमरीका के कान खड़े हो गये. ऐसा होना लाज़मी था. अमरीका एक बड़ा-बड़ा पूंजीवादी देश है. उसको डर हुआ कि अगर यही हालत रही तो सब जगह कम्युनिज़्म के फैल जाने का ख़तरा है. आगे की घटनाओं से साबित हुआ कि यह ख़तरा ठीक था.

اس اندر قومی فوج میں سب سے آگے تھے جس نے سین سرکار کی طرف لڑ کر (جو اس وقت کمیونسٹ سرکار تھی) خون پسینہ ایک کر دیا۔

ایشیا کا بچہ بچہ جانتا ہے کہ ہندستان اور چین کے راشٹری آندولنوں سے امریکہ کے لوگوں کو ہمیشہ ہمدردی رہی ہے۔ ان کارنوں سے ایشیا والوں کے دلوں میں امریکہ کے لئے بہت جگہ تھی۔ اور یہ بات لڑائی کے شروع ہونے کے بعد اس وقت بھی قائم رہی جب امریکہ ایشیا کی سب سے بڑی طاقت جاپان کا گہرا دشمن بن گیا تھا۔ امریکہ کے سپاہی گھر پر چاہے کتنے ہی نیک اور سمجھدار ناگرک کی طرح رہتے ہوں لیکن دنیا کی سب سے ادھک نردے جنگ نے انہیں سنگدل درندے بنا دیا تھا۔ امریکی سپاہیوں کے روپ میں ایشیا نے امریکہ کو پہلی بار نزدیک سے دیکھا۔ اس کڑوے تجربے کے ہوتے ہوئے بھی امریکہ سے ایشیائی جنتا کی ہمدردی بنی رہی۔

دوسری بڑی لڑائی۔

سن 1944 میں امریکہ کے راج پتی روزویلٹ اس دنیا سے گزر گئے۔ پریسیڈینٹ روزویلٹ ایک بڑی ہستی تھے۔ ان کے سامنے ایک آدرش تھا۔ اس آدرش کو انہوں نے پہلے اٹلانٹک چارٹر میں عملی جامہ پہنایا اور پھر یونو کے چارٹر میں اسے شامل کیا۔ انہوں نے جس کامیابی اور خوبی کے ساتھ متر راشٹروں کو ملائے رکھا وہ کسی بھی دوسرے کے بوتے کی چیز نہیں تھی۔ اپنا سا جوش اور اپنی سی لگن انہوں نے ان طاقتوں کے اندر بھی پیدا کر دی تھی۔ انہوں نے جنگ کو ایک اونچے و پاک مقصد والی جنگ کی شکل دے دی تھی۔ اس کے بغیر جنگ کیول ایک مارکاٹ و دھینگا مشتی ہو کر رہ جاتی۔ لیکن ہمیں افسوس کے ساتھ کہنا ہے کہ روزویلٹ کی آنکھ بند ہونے کے بعد جنگ کا سچ مچ یہی روپ رہ گیا۔ ان کے جاتے ہی جب جنگ ختم بھی نہیں ہو پائی تھی امریکہ کی پالیسی نے پلٹا کھایا۔

اسکی بنیادی وجہ یہ تھی کہ دنیا نے اور خاص کر امریکہ نے دیکھا کہ جرمنی کے خلاف جان کی بازی لگانے میں روس نے کمال کر دکھایا ہے اور امید سے زیادہ کامیابی حاصل کر لی ہے۔ روس کی اس جیت نے امریکہ کی ساری اسکیموں پر پانی پھیر دیا اور امریکہ کے کان کھڑے ہو گئے۔ ایسا ہونا لازمی تھا۔ امریکہ ایک بڑا چڑھا پونجی وادی دیش ہے۔ اس کو ڈر ہوا کہ اگر یہی حالت رہی تو سب جگہ کمیونزم کے پھیل جانے کا خطرہ ہے۔ آگے کی گھٹناؤں سے ثابت ہوا کہ یہ خطرہ ٹھیک تھا۔

कम्युनिज़्म की बाढ़.

जंग के बाद योरप दो हिस्सों में बंट गया. इनमें से एक हिस्से पर कम्युनिज़्म का बोल बाला था और दूसरे हिस्से में भी जैसे इटली और फ़्रान्स के अन्दर कम्युनिस्ट पार्टियां ज़ोर पकड़ रही थीं. इंगलैंड में सोशलिस्टों ने हुकूमत बनाई. उधर पूरब में चीन के अन्दर जो घरेलू लड़ाई चल रही थी उसमें कम्यूनिस्टों का पल्ला भारी रहा. थोड़े ही दिनों में माओत्से तुंग की रहनुमाई में चीनी फ़ौज ने सारे चीन पर क़ब्ज़ा कर लिया. च्यांग काई शेक, जो अब मुँह दिखाने लायक़ भी नहीं रह गए थे, अपनी बची हुई फ़ौज लेकर चम्पत हो गए. और फ़ारमूसा के टापू में पनाह ली. इसके अलावा और भी घटनाएं हुईं—हिन्दुस्तान, बरमा और इन्डोनेशिया का आज़ाद होना. इन नए आज़ाद देशों ने अपने व्यवहार से ज़ाहिर कर दिया कि वह सभी देशों से चाहे वह कम्यूनिस्ट हों या ग़ैर कम्यूनिस्ट दोस्ती के ताल्लुक़ रखेंगे. उधर फ़्रांसीसी हिन्द चीन में डाक्टर हो-ची-मीन्ह की नेताई में एक ज़बरदस्त आंदोलन उठा जिसका झुकाव भी कम्यूनिज़्म की तरफ़ था. जापानियों की हार के बाद मलाया में अंगरेज़ों का राज फिर से क़ायम हो गया था. अंगरेज़ों की इस ग़ुलामी के ख़िलाफ़ वहां एक तहरीक शुरू हुई. इस तहरीक के पीछे भी कम्यूनिस्ट असर बताया जाता है.

इस तरह दूसरी जंग के बाद क्या योरप, क्या एशिया हर जगह का लोकमत कम्यूनिज़्म की तरफ़ झुका. इसका अमरीका ने ज़बरदस्त असर लिया और कम्यूनिज़्म की इस बाढ़ को अपने लिये एक चुनौती समझा. अमरीका ने सोचा कि अगर आज एशिया कम्यूनिस्ट हो जाता है तो कल योरप की बारी है क्योंकि पच्छिम योरप के देशों की हालत वैसे ही ख़स्ता हो रही है—न वहां काफ़ी आदमी हैं न सामान. और अगर योरप कम्यूनिज़्म के घेरे में आ गया तब अमरीका को अपनी पूँजीशाही बनाये रखना सचमुच कठिन हो जायेगा. अमरीका के उन बड़े लोगों ने जिनके हाथ में वहां का सोना है और जो वहां की 87फ़ी सदी दौलत के मालिक हैं—कम्यूनिज़्म के हौवे के आने का दुन्द मचाया और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे कि "एशिया में कम्यूनिज़्म को रोको." बस, अब अमरीका की विदेशी पालिसी ने पलटा खाना शुरू किया.

अमरीका की नई पालीसी.

इस नई पालीसी का पहला नतीजा यह हुआ कि चीन के साथ अमरीका के सम्बन्ध एक दम बदल गए. जैसा ऊपर कहा जा चुका है माओ-त्से-तुंग की फ़ौज ने च्यांग काई शेक की इस फ़ौज को जिसके पीछे धन, हथियारों

کمیونزم کی باڑھ.

جنگ کے بعد یورپ دو حصوں میں بٹ گیا. ان میں سے ایک حصے پر کمیونزم کا بول بالا تھا اور دوسرے حصے میں بھی جیسے اٹلی اور فرانس کے اندر کمیونسٹ پارٹیاں زور لگا رہی تھیں. انگلینڈ میں سوشلسٹوں نے حکومت بنائی. ادھر پورب میں چین کے اندر جو گھریلو لڑائی چل رہی تھی اس میں کمیونسٹوں کا پلہ بھاری رہا. تھوڑے ہی دنوں میں ماؤتسے تنگ کی رہنمائی میں چینی فوج نے سارے چین پر قبضہ کر لیا. چیانگ کائی شیک، جو اب منہ دکھانے لائق بھی نہیں رہ گئے تھے، اپنی بچی کھچی فوج لے کر چمپت ہو گئے اور فارموسا کے ٹاپو میں پناہ لی. اس کے علاوہ اور بھی گھٹنائیں ہوئیں—ہندستان، برما اور انڈونیشیا کا آزاد ہونا. ان نئے آزاد دیشوں نے اپنے بیوہار سے ظاہر کر دیا کہ وہ سبھی دیشوں سے چاہے وہ کمیونسٹ ہوں یا غیر کمیونسٹ دوستی کے تعلق رکھیں گے. ادھر فرانسیسی ہند چین میں ڈاکٹر ہوچی منہ کی رہنمائی میں ایک زبردست آندولن اٹھا جس کا جھکاؤ بھی کمیونزم کی طرف تھا. جاپانیوں کی ہار کے بعد ملایا میں انگریزوں کا راج پھر سے قائم ہو گیا تھا. انگریزوں کی اس غلامی کے خلاف وہاں ایک تحریک شروع ہوئی. اس تحریک کے پیچھے بھی کمیونسٹ اثر بتایا جاتا ہے.

اس طرح دوسری جنگ کے بعد کیا یورپ، کیا ایشیا ہر جگہ کا لوک مت کمیونزم کی طرف جھکا. اس کا امریکہ نے زبردست اثر لیا اور کمیونزم کی اس باڑھ کو اپنے لئے ایک چنوتی سمجھا. امریکہ نے سوچا کہ اگر آج ایشیا کمیونسٹ ہو جاتا ہے تو کل یورپ کی باری ہے کیونکہ پچھم یورپ کے دیشوں کی حالت ویسے ہی خستہ ہو رہی ہے—نہ وہاں کافی آدمی ہیں نہ سامان. اور اگر یورپ کمیونزم کے گھیرے میں آگیا تب امریکہ کو اپنی پونجی شاہی بنائے رکھنا سچ مچ کٹھن ہو جائے گا. امریکہ کے ان بڑے لوگوں نے جن کے ہاتھ میں وہاں کا سونا ہے اور جو وہاں کی 87 فی صدی دولت کے مالک ہیں—کمیونزم کے ہوے کے آ جانے کا دند مچایا اور چلا چلا کر کہنے لگے کہ "ایشیا میں کمیونزم کو روکو." بس، اب امریکہ کی ودیشی پالیسی نے پلٹا کھانا شروع کیا.

امریکہ کی نئی پالیسی.

اس نئی پالیسی کا پہلا نتیجہ یہ ہوا کہ چین کے ساتھ امریکہ کے سمبندھ ایک دم بدل گئے. جیسا اوپر کہا جا چکا ہے ماؤتسے تنگ کی فوج نے چیانگ کائی شیک کی اس فوج کو جس کے پیچھے دھن، ہتھیاروں

और माहरों सब तरह की अमरीकी मदद थी, हरा दिया. इस जीत की जहां बहुत सी वजहें थीं वहां एक यह भी थी कि अपने हाकिमों और जनरलों के कहने पर अमरीका ने च्यांग काई शेक सरकार को बीच में मदद देना बन्द कर दिया था क्योंकि वह समझ गए थे कि च्यांग काई शेक की सरकार से ज़ियादा निकम्मी, नाक़ाबिल और गिरी हुई सरकार नहीं हो सकती थी. लेकिन अब फिर रुख़ बदला. चीन में माओ की सरकार पूरी तरह क़ायम हो जाने के बाद भी अमरीका ने उसे नहीं माना. यह बात अंतर क़ौमी क़ानून, लोकलाज और शराफ़त के ख़िलाफ़ है. अमरीका अब भी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ और न वह नए चीन की सरकार को मान रहा है.

चीन की नई सरकार.

यह वह नई चीनी सरकार है जिसकी तारीफ़ चीन में जाने वाले हर योरपी और एशियाई ने की है. सब जानते हैं कि माओ के पहले चीन में इतनी अच्छी सरकार कभी नहीं क़ायम हुई थी. हमने ख़ुद वहां की हालत देखी और हम कह सकते हैं कि हद दर्जे की कठिनाइयों के होते हुए नए चीन ने दो बरस में कमाल कर दिखाया है—और बरसों पुराने रोग जड़ से ख़त्म कर दिए हैं—ग़रीबी, सरकारी हाकिमों और व्यापारियों की बेईमानी, बेरोज़गारी, भिकमंगी और पैदावार की कमी. नए राज ने चीन को एक ठोस शक्ल दे दी है. जैसा वह पहले कभी नहीं था. नए चीन के ज़मीन सुधार क़ानून पर तो वहां के किसान—जिनकी हालत किसी भी पूंजी शाही देश के किसानों से अच्छी नहीं थी—ख़ुशी से फूले नहीं समाते.

इस नई हुकूमत में चीन फिर बनाव और संगठन के प्रोग्राम में दिलो जान से लग गया है. इस हुकूमत को हिन्दुस्तान ने माना, बरतानिया ने माना, योरप के दूसरे देशों ने भी माना मगर अमरीका नहीं मानता. चूंकि अमरीका ने बहुत से देशों को अपनी तरफ़ मिला रखा है इस वजह से संसार के सभी देशों की पंचायत यानी यूनो में नया चीन अभी तक नहीं बैठ पाया. तारीफ़ यह है कि अमरीकी सरकार च्यांग काई शेक की सरकार को फ़ारमूसा में फिर मदद दे रही है, धन सामान और हथियार उनके पास पहुंचा रही है. चीन को फिर से जीतने के लिए खुलेआम तैयारी हो रही है, अमरीका के एक नामी अख़बार ने एक अंक में पूरा नक़्शा खींच कर यह दिखाया कि अमरीका सन 1952 में किस तरह चीन पर हमला करके नई सरकार को ख़त्म कर देगा. चीन के पास ही जापान में तो अमरीकनों का सोलह आना क़ब्ज़ा है ही. वह जापान को उस रास्ते पर ले जा रहे हैं जिससे कि वह नए चीन पर और दक्खिन या दक्खिन पूरबी एशिया पर

اور ماہروں سب طرح کی امریکی مدد تھی' ہرا دیا. اِس جیت کی جہاں بہت سی وجہیں تھیں وہاں ایک یہ بھی تھی کہ اپنے حاکموں اور جنرلوں کے کہنے پر امریکہ نے چیانگ کائی شیک سرکار کو بیچ میں مدد دینا بند کر دیا تھا کیونکہ وہ سمجھ گئے تھے کہ چیانگ کائی شیک کی سرکار سے زیادہ نکمی' ناقابل اور گری ہوئی سرکار نہیں ہوسکتی تھی. لیکن اب پھر رخ بدلا. چین میں ماؤ کی سرکار پوری طرح قائم ہو جانے کے بعد بھی امریکہ نے اُسے نہیں مانا. یہ بات انتر قومی قانون' لوک لاج اور شرافت کے خلاف ہے. امریکہ اب بھی اپنی جگہ سے ٹس سے مس نہ ہوا اور نہ وہ نئے چین کی سرکار کو مان رہا ہے.

چین کی نئی سرکار.

یہ وہ نئی چینی سرکار ہے جس کی تعریف چین میں جانے والے یورپی اور ایشیائی نے کی ہے. سب جانتے ہیں کہ ماؤ کے پہلے چین میں اتنی اچھی سرکار کبھی نہیں قائم ہوئی تھی. ہم نے خود وہاں کی حالت دیکھی اور ہم کہہ سکتے ہیں کہ حد درجہ کی کٹھنائیوں کے ہوتے ہوئے نئے چین نے دو برس میں کمال کر دکھایا ہے—اور برسوں پرانے روگ جڑ سے ختم کر دئیے ہیں—غریبی' سرکاری حاکموں اور بیوپاریوں کی بےایمانی' بیکاری' بھکمنگی اور پیداوار کی کمی. نئے راج نے چین کو ایک ٹھوس شکل دے دی ہے. جیسا وہ پہلے کبھی نہیں تھا. نئے چین کے زمین سدھار قانون پر تو وہاں کے کسان—جن کی حالت کسی بھی پونجی شاہی دیش کے کسانوں سے اچھی نہ تھی—خوشی سے پھولے نہیں سماتے.

اِس نئی حکومت میں چین پھر بناؤ اور سنگٹھن کے پروگرام میں دل و جان سے لگ گیا ہے. اِس حکومت کو ہندستان نے مانا' برطانیہ نے مانا' یورپ کے دوسرے دیشوں نے بھی مانا مگر امریکہ نہیں مانتا. چونکہ امریکہ نے بہت سے دیشوں کو اپنی طرف ملا رکھا ہے اِس وجہ سے سنسار کے سبھی دیشوں کی پنچائیت یعنی یونو میں نیا چین ابھی تک نہیں بیٹھ پایا. تعریف یہ ہے کہ امریکی سرکار چیانگ کائی شیک کی سرکار کو فارموسا میں پھر مدد دے رہی ہے' دھن سامان اور ہتھیار اُن کے پاس پہونچا رہی ہے. چین کو پھر سے جیتنے کے لئے کھلے عام تیاری ہو رہی ہے. امریکہ کے ایک نامی اخبار نے ایک انک میں پورا نقشہ کھینچ کر یہ دکھایا کہ امریکہ سن 1952 میں اس طرح چین پر حملہ کرکے نئی سرکار کو ختم کر دے گا. چین کے پاس ہی جاپان میں تو امریکنوں کا سولہ آنہ قبضہ ہے ہی. وہ جاپان کو اُس راستے پر لے جارہے ہیں جس سے کہ وہ نئے چین پر اور دکھن یا دکھن پوربی ایشیا پر

लड़ाई करने के लिये एक फ़ौजी और माली अड्डे का काम है. यहां हमें उस जापानी सुलहनामे का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं है जो ख़तरे से भरा हुआ है. उस सुलहनामे के कर्ता धर्ता मिस्टर डलिस ने हाल में यह साफ़ कहा है कि हम चीन में कम्यूनिस्ट सरकार नहीं रहने देंगे और वहां की हुकूमत को बदले बिना चैन नहीं पायेंगे.

जनवादी आन्दोलनों को दबाने के लिए अमरीकी सहायता.

इसी तरह अमरीका का योरप की साम्राज्य शाही ताक़तों के प्रति जो रुख़ था उसमें अब पहले के मुक़ाबिले ज़मीन आसमान का फ़र्क़ हो गया है. इंगलैंड, फ़्रांस और हालैंड की एशिया में जगह जगह हुकूमतें हैं, या असर है या उन्हें कुछ ख़ास रियायतें हासिल हैं. अमरीका ने महसूस किया कि अगर एशिया में कम्यूनिज़्म को रोकना है तो यह साम्राज्यशाही ताक़तें एशिया में बनी रहें. अमरीका ने उनको अपनी ढाल समझा और यह तय किया कि हर तरह से उनकी मदद की जाये. अमरीका ने यह भी महसूस किया कि इन ताक़तों का आर्थिक ढांचा एशिया की ज़मीन पर राज करने या रियायतें लूटने की बिना पर खड़ा हुआ है. इसलिये अगर इन योरपी ताक़तों को कम्यूनिज़्म के ख़िलाफ़ खड़ा करना है तो इनकी हुकूमतें क़ायम रहनी चाहियें. इसका नतीजा यह है कि अमरीका की हमदर्दी और हर तरह की मदद—मलाया में, हिन्द चीन में, और सब जगह—साम्राज्य शाही सरकारों को मिल रही है.

कोरिया की लड़ाई.

1950 में कोरिया में घरेलू लड़ाई छिड़ गई. अमरीका से न रहा गया और उसने देखा कि अगर ज़्यादा ख़ामोश रहने में कम्यूनिज़्म सारे एशिया पर आप से आप हावी हो जायगा. अमरीका झट से दक्खिन कोरिया में कूद पड़ा. सिक्यूरिटी कौंसिल के उत्तरी कोरिया को हमलावर क़रार देने के पहले ही अमरीका ने लड़ाई छेड़ दी. आज भी यह तय नहीं है कि हमला पहले किसने किया. उत्तर कोरिया वालों के पास दस्तावेज़ें और दूसरी दलीलें हैं जिनसे पता चलता है कि लड़ाई दक्खिन कोरिया ने शुरू की थी. इन दलीलों का कोई ठीक जवाब अभी तक नहीं दिया जा सका है. साथ ही साथ कौन नहीं जानता कि दक्खिन कोरिया वाली सिंगमनरी सरकार के हिमायती अमरीका के अलावा शायद ही और कहीं हों. फिर मार्के की बात यह है कि सिक्यूरिटी कौंसिल की बैठक में शरीक होने वाले देशों ने उत्तर कोरिया को हमलावर तो कहा मगर उनमें से कोई भी—जिनमें इंगलैंड भी शामिल है—इस बात

لڑائی کرنے کے لئے ایک فوجی اور مالی اڈے کا کام ہے . یہاں ہمیں اُس جاپانی صلح نامے کا ذکر کرنے کی ضرورت نہیں ہے جو خطرے سے بھرا ہوا ہے . اُس صلح نامے کے کرتا دھرتا مسٹر ڈلس نے حال میں یہ صاف کہا ہے کہ ہم چین میں کمیونسٹ سرکار نہیں رہنے دیں گے اور وہاں کی حکومت کو بدلے بنا چین نہیں پائیں گے .

جن وادی آندولنوں کو دبانے کے لئے امریکی سہائتا .

اسی طرح امریکہ کا یورپ کی سامراج شاہی طاقتوں کے پرتی جو رخ تھا اُس میں اب پہلے کے مقابلے زمین آسمان کا فرق ہو گیا ہے . انگلینڈ فرانس اور ہالینڈ کی ایشیا میں جگہ جگہ حکومتیں ہیں یا اثر ہے یا اُنہیں کچھ خاص رعایتیں حاصل ہیں . امریکہ نے محسوس کیا کہ اگر ایشیا میں کمیونزم کو روکنا ہے تو یہ سامراج شاہی طاقتیں ایشیا میں بنی رہیں . امریکہ نے اُن کو اپنی ڈھال سمجھا اور یہ طے کیا کہ ہر طرح سے اُن کی مدد کی جائے . امریکہ نے یہ بھی محسوس کیا کہ ان طاقتوں کا آرتھک ڈھانچہ ایشیا کی زمین پر راج کرنے یا رعایتیں لوٹنے کی بنا پر کھڑا ہوا ہے . اس لئے اگر ان یورپی طاقتوں کو کمیونزم کے خلاف کھڑا کرنا ہے تو ان کی حکومتیں قائم رہنی چاہئیں . اس کا نتیجہ یہ ہے کہ امریکہ کی ہمدردی اور ہر طرح کی مدد—ملایا میں، ہند چین میں، اور سب جگہ—سامراج شاہی سرکاروں کو مل رہی ہے .

کوریا کی لڑائی .

1950 میں کوریا میں گھریلو لڑائی چھڑ گئی . امریکہ سے نہ رہا گیا اور اُس نے دیکھا کہ اور زیادہ خاموش رہنے میں کمیونزم سارے ایشیا پر آپ سے آپ حاوی ہو جائے گا . امریکہ جھٹ سے دکھن کوریا میں کود پڑا . سکیورٹی کونسل کے اتری کوریا کو حملہ آور قرار دینے کے پہلے ہی امریکہ نے لڑائی چھیڑ دی . آج بھی یہ طے نہیں ہے کہ حملہ پہلے کس نے کیا . اتر کوریا والوں کے پاس دستاویزیں اور دوسری دلیلیں ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ لڑائی دکھن کوریا نے شروع کی تھی . ان دلیلوں کا کوئی ٹھیک جواب ابھی تک نہیں دیا جا سکا ہے . ساتھ ہی ساتھ کون نہیں جانتا کہ دکھن کوریا والی سنگمنری سرکار کے حمایتی امریکہ کے علاوہ شاید ہی اور کہیں ہوں . پھر مارکے کی بات یہ ہے کہ سکیورٹی کونسل کی بیٹھک میں شریک ہونے والے دیشوں نے اتر کوریا کو حملہ آور تو کہا مگر ان میں سے کوئی بھی—جن میں انگلینڈ بھی شامل ہے—اس بات

के लिये तैयार नहीं हुआ कि इस फ़ैसले की हिमायत में फ़ौजी मदद भेजता. इन देशों ने कुछ फ़ौजें तब भेजीं जब उन्होंने देखा कि अमरीका बुरी तरह हार रहा है.

कम्यूनिज़्म की नैतिक शक्ति.

कोरिया की लड़ाई की एक और भी अहमियत है. इसने दिखा दिया, जैसा चीन दिखा चुका था कि एशिया में कम्यूनिज़्म केवल एक पोलिटिकल ताक़त ही नहीं है बल्कि एक नैतिक यानी अख़लाक़ी शक्ति है. वह ऐसा आबे हयात साबित हुआ है जिसने कमज़ोर और हिम्मत हारी हुई क़ौमों में जान डाल दी है, बला का जादू कर दिया है. कोरिया की ही मिसाल लें. कोई पचीस बरस पहले से यह जापान के क़ब्ज़े में था. दूसरी जंग के बाद इसके अचानक दो टुकड़े कर दिए गए. उत्तरी टुकड़े में रूसी असर रहा और दक्खिन में अमरीकी. तीन साल तक दोनों ताक़तें अपने अपने हिस्से की देख रेख करती रहीं और अपनी अपनी प्रजा को सिखा पढ़ा कर तैयार करती रहीं. पर जब उत्तर और दक्खिन में असली टक्कर हुई तब दक्खिन वाले झट से चारों ख़ाने चित्त गिर पड़े और उत्तर वाले इतने तेज़ निकले कि उन अमरीकनों तक के छक्के छुड़ा दिए जिनके पास दुनिया भर के साधन और सामान थे. अमरीकी अफ़सरों ने क़बूल किया है कि उत्तर कोरिया वालों की हिम्मत और सदाचार और उनकी जंगी क़ाबिलियत सब हैरत में डालने वाली थी. दक्खिन वालों की हालत एक दम उलटी है दुनिया के हर आदमी के दिल में सवाल उठता है कि यह इतना फ़र्क़ क्यों है? इसका बस एक ही जवाब हो सकता है, एक ही खरा और सच्चा जवाब. वह यह कि कम्यूनिज़्म में कम से कम एशियाई कम्यूनिज़्म में कुछ ऐसी चीज़ भी है जो केवल माद्दी नहीं है बल्कि जो नैतिक या रूहानी है और जो गिरे हुओं को उठा कर उनके अन्दर नया जोश, नई लहर और नई उमंगें पैदा कर देती है.

सच यह है कि कम्यूनिज़्म एशिया में एक नए धर्म, नए जीवन मार्ग के तौर पर आया है. इसके भक्त ईमानदार, मज़बूत और सच्चे हैं और उतने ही त्यागी जितने कि पुराने ज़माने के धार्मिक शहीद हुआ करते थे. यह एक सच्चाई है जिससे कोई इनकार नहीं कर सकता. कोरिया में लड़ने वाले अमरीकियों ने भी इसे क़बूल किया है कि वह एक भी उत्तर कोरिया वाले को हज़ार कोशिश करने पर भी अपना हमख़याल नहीं बना पाए. दूसरी तरफ़ यह भी सच है कि उत्तर कोरिया में बहुत सी अमरीकी फ़ौजी टोलियाँ हैं जिनके न सिर्फ़ ख़याल बदल कर उत्तर कोरिया वालों के मुआफ़िक़ हो गए हैं बल्कि जो ख़ुशी ख़ुशी और ज़ोर शोर से उनके साथ बनाव और संगठन के काम में

کے لئے تیار نہیں ہوا کہ اس فیصلے کی حمایت میں فوجی مدد بھیجتا ۔ ان دیشوں میں کچھ فوجیں تب بھیجیں جب انہوں نے دیکھا کہ امریکہ بری طرح ہار رہا ہے ۔

کمیونزم کی نیتک شکتی ۔

کوریا کی لڑائی کی ایک اور بھی اہمیت ہے ۔ اس نے دکھا دیا، جیسا چین دکھا چکا تھا کہ ایشیا میں کمیونزم کیول ایک پولیٹیکل طاقت ہی نہیں ہے بلکہ ایک نیتک یعنی اخلاقی شکتی ہے ۔ وہ ایسا آب حیات ثابت ہوا ہے جس نے کمزور اور ہمت ہاری ہوئی قوموں میں جان ڈال دی ہے، بلا کا جادو کر دیا ہے ۔ کوریا کی ہی مثال لیں ۔ کوئی پچیس برس پہلے سے یہ جاپان کے قبضے میں تھا ۔ دوسری جنگ کے بعد اس کے اچانک دو ٹکڑے کر دیئے گئے ۔ اتری ٹکڑے میں روسی اثر رہا اور دکھن میں امریکی ۔ تین سال تک دونوں طاقتیں اپنے اپنے حصے کی دیکھ ریکھ کرتی رہیں اور اپنی اپنی پرجا کو سکھا پڑھا کر تیار کرتی رہیں ۔ پر جب اتر اور دکھن میں اصلی ٹکر ہوئی تب دکھن والے جھٹ سے چاروں خانے چت گر پڑے اور اتر والے اتنے تیز نکلے کہ ان امریکنوں تک کے چھکے چھڑا دیئے جن کے پاس دنیا بھر کے سادھن اور سامان تھے ۔ امریکی افسروں نے قبول کیا ہے کہ اتر کوریا والوں کی ہمت اور سداچار اور ان کی جنگی قابلیت سب حیرت میں ڈالنے والی تھیں ۔ دکھن والوں کی حالت ایک دم الٹی ہے ۔ دنیا کے ہر آدمی کے دل میں سوال اٹھتا ہے کہ یہ اتنا فرق کیوں ہے؟ اسکا بس ایک ہی جواب ہوسکتا ہے، ایک ہی کھرا اور سچا جواب ۔ وہ یہ کہ کمیونزم میں کم سے کم ایشیائی کمیونزم میں کچھ ایسی چیز بھی ہے جو کیول مادی نہیں ہے بلکہ جو نیتک یا روحانی ہے اور جو گرے ہوؤں کو اٹھا کر ان کے اندر نیا جوش، نئی لہر اور نئی امنگیں پیدا کر دیتی ہے ۔

سچ یہ ہے کہ کمیونزم ایشیا میں ایک نئے دھرم، نئے جیون مارگ کے طور پر آیا ہے ۔ اس کے بھگت ایماندار، مضبوط اور سچے ہیں اور اتنے ہی تیاگی جتنے کہ پرانے زمانے کے دھارمک شہید ہوا کرتے تھے ۔ یہ ایک سچائی ہے جس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا ۔ کوریا میں لڑنے والے امریکیوں نے بھی اسے قبول کیا ہے کہ وہ ایک بھی اتر کوریا والے کو ہزار کوشش کرنے پر بھی اپنا ہم خیال نہیں بنا پائے ۔ دوسری طرف یہ بھی سچ ہے کہ اتر کوریا میں بہت سی امریکی فوجی ٹولیاں ہیں جن کے نہ صرف خیال بدل کر اتر کوریا والوں کے موافق ہوگئے ہیں بلکہ جو خوشی خوشی اور زور شور سے ان کے ساتھ بناؤ اور سنگٹھن کے کام میں

मदद कर रहे हैं. इसलिए एशिया वाले कम्यूनिज़्म को इस कसौटी पर कस कर देखते हैं कि इसने एशिया में क्या कर दिखाया है. और कुल मिला कर देखने पर उन्हें महसूस होता है कि कम्यूनिज़्म की नई ताक़त ने बुराई के मुक़ाबिले भलाई ही ज़ियादे की है.

डाक्टर होची मिन्ह की फ़्रांसीसी साम्राज से टक्कर.

यही है कम्यूनिज़्म के अन्दर छिपी हुई नैतिक और रूहानी ताक़त जो इन्डो चीन में हो-ची-मीन्ह और उनके साथियों को भी बल दे रही है. फ़्रांसीसियों ने उनको पस्त करने की कोशिश की मगर नाकाम रहे. 1950 में एक दफ़ा ऐसी सूरत हो गई थी कि फ़्रांसीसी हिन्द चीन से हट जाने की बात सोचने लग गए थे क्योंकि लड़ाई में पैसे और आदमी के लिहाज़ से न सिर्फ़ उनके देने पड़ रहे थे बल्कि वहां की लड़ाई को ख़ुद फ़्रांस की जनता बुरा कहने लग गई थी—पर ऐसे वक़्त अमरीकी पालिसी ने इस तरफ़ भी दिलचस्पी ली और फ़्रांसीसी फ़ौज को बेतहाशा अमरीकी मदद पहुँचना शुरू हो गई. उन्होंने फ़्रांसीसियों को हिन्द चीन से हटने न दिया. लड़ाई अभी तक चल रही है. जहां तक फ़्रांसीसियों का सवाल है वह एशिया की हवा से ही समझ गये होंगे कि आगे उनकी क़िस्मत में क्या लिखा है. यहां हम एक बात कहे बिना नहीं रह सकते कि हाल ही में जब फ़्रांस ने ब्रिटेन की कनज़रवेटिव सरकार से इशारतन जानना चाहा कि क्या वह हिन्द चीन में उनकी मदद करने को तैयार है तो चर्चिल साहब ने, जो पुराने घुटे हुए साम्राजवादी हैं, यह कहा, "मुझे ख़ुशी है कि हम हिन्दुस्तान से चले आये."

मलाया का आज़ादी आन्दोलन.

ज़रा और नज़दीक आइये. मलाया में भी आग सुलगती रही है. वहां हालत कुछ ज़ियादा टेढ़ी है. जंग के बाद जब अंगरेज़ हिन्दुस्तान और बर्मा से हट आये और लंका को भी उन्होंने आज़ादी के अधिकार दे दिये तो उम्मीद यह की जाती थी कि मलाया से भी अंगरेज़ हट जायेंगे—पर वहां वह चिपटे रहे—इसकी वजह यह बताई जाती है कि मलाया में काफ़ी तादाद अंगरेज़ों की है जिन्होंने वहां की क़ुदरती दौलत—जैसे रबड़, चाय, टीन वग़ैरा का इजारा ले रखा है. पहले यह कार-बार चीनी लोगों के हाथों में था जिनकी तादाद आज भी मलायनों से ज़ियादा है. पर उन्होंने कभी भी इस मुल्क में कोई ख़ास रिआयत या अधिकार पाने की कोशिश नहीं की.

पूरब और पच्छिम का व्यवहार.

यहां हम पूर्वी और पच्छिमी व्यवहार का मुक़ाबला किये बिना नहीं रह सकते. सदियों से मलाया और चीन

ہماری رائے

مدد کر رہے ہیں۔ اس لئے ایشیا والے کمیونزم کو اس کسوٹی پر کس کر دیکھتے ہیں کہ اس نے ایشیا میں کیا کر دکھایا ہے۔ اور کل ملا کر دیکھنے پر انہیں محسوس ہوتا ہے کہ کمیونزم کی نئی طاقت نے برائی کے مقابلے بھلائی ہی زیادہ کی ہے۔

ڈاکٹر ہوچی منہ کی فرانسیسی سامراج سے ٹکر۔

یہی ہے کمیونزم کے اندر چھپی ہوئی نیتک اور روحانی طاقت جو انڈوچین میں ہوچی منہ اور ان کے ساتھیوں کو بھی بل دے رہی ہے۔ فرانسیسیوں نے ان کو پست کرنے کی کوشش کی مگر ناکام رہے۔ 1950 میں ایک دفعہ ایسی صورت ہوگئی تھی کہ فرانسیسی ہند چین سے ہٹ آنے کی بات سوچنے لگ گئے تھے کیونکہ لڑائی میں پیسے اور آدمی کے لحاظ سے نہ صرف انہیں کے دینے پڑ رہے تھے بلکہ وہاں کی لڑائی کو خود فرانس کی جنتا برا کہنے لگی تھی—پر ایسے وقت امریکی پالیسی نے اس طرف بھی دلچسپی لی اور فرانسیسی فوج کو بے تحاشا امریکی مدد پہنچنا شروع ہوگئی۔ انہوں نے فرانسیسیوں کو ہندچین سے ہٹنے نہ دیا۔ لڑائی ابھی تک چل رہی ہے۔ جہاں تک فرانسیسیوں کا سوال ہے وہ ایشیا کی ہوا سے ہی سمجھ گئے ہونگے کہ آگے ان کی قسمت میں کیا لکھا ہے۔ یہاں ہم ایک بات کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ حال ہی میں جب فرانس نے برٹین کی کنزرویٹو سرکار سے اشارتاً جاننا چاہا کہ کیا وہ ہندچین میں ان کی مدد کرنے کو تیار ہے تو چرچل صاحب نے، جو پرانے گھٹے ہوئے سامراج وادی ہیں، یہ کہا: "مجھے خوشی ہے کہ ہم ہندستان سے چلے آئے۔"

ملایا کا آزادی آندولن۔

ذرا اور نزدیک آیئے۔ ملایا میں بھی آگ سلگ رہی ہے۔ یہاں حالت کچھ زیادہ ٹیڑھی ہے۔ جنگ کے بعد جب انگریز ہندستان اور برما سے ہٹ آئے اور لنکا کو بھی انہوں نے آزادی کے ادھیکار دے دیئے تو امید یہ کی جاتی تھی کہ ملایا سے بھی انگریز ہٹ آئینگے—پر وہاں وہ چپٹے رہے—اسکی وجہ یہ بتائی جاتی ہے کہ ملایا میں کافی تعداد انگریزوں کی ہے جنہوں نے وہاں کی قدرتی دولت جیسے ربڑ، چائے، ٹین وغیرہ کا اجارہ لے رکھا ہے۔ پہلے یہ کاروبار چینی لوگوں کے ہاتھوں میں تھا جن کی تعداد آج بھی ملایئوں سے زیادہ ہے۔ پر انہوں نے کبھی بھی اس ملک میں کوئی خاص رعایت یا ادھیکار پانے کی کوشش نہیں کی۔

پورب اور پچھم کا بیوہار۔

یہاں ہم پوربی اور پچھمی بیوہار کا مقابلہ کئے بنا نہیں رہ سکتے۔ صدیوں سے ملایا اور چین

में ताल्लुक रहा है लेकिन कभी भी किसी चीनी राजा या हाकिम ने मलाया में चीनी राज फैलाने की कोशिश नहीं की. चीन और मलाया में बहुत काफी ताल्लुक रहा मगर वह दोस्ताना और बराबरी का था. पच्छिम में इसका उलटा होता है. पच्छिम के लोग किसी भी देश में व्योपार करने के साथ साथ हुकूमत जमाना चाहते ही हैं.

मलाया की जनता पर अंगरेज़ों का दमन.

डेढ़-सौ साल से अंगरेज़ मलाया में हैं और कहते हैं कि हम महज़ ट्रस्टी हैं, हमारा काम है वहां कि जनता को ऊंचा उठाना. लेकिन आज भी हुकूमत की बागडोर अंगरेज़ों ही के हाथ में है. इसकी वजह से मलाया के असली बाशिन्दों में जो मलाया व चीनी दोनों हैं, आजमी तौर पर असन्तोष है. अब इधर हाल ही में मलाया की अंगरेज़ी सरकार ने चीनियों के ऊपर पाबन्दी लगाकर उनके नागरिक हक भी छीन लिये हैं. इन पाबन्दियों की वजह से वहां के चीनी घटिया दर्जे के नागरिक रह गये हैं. कमाल है कि चीनी लोग मलाया की आबादी में दूसरों से ज़ियादा, उद्योग धंदे और व्यापार के लिहाज़ से बढ़े हुए, राजकाजी समझ में भी आगे, सब में ज़ियादा मेहनती और जफ़ाकश और इसलिये सब में ज़ियादा खुशहाल, फिर भी अपने ही मलाया में उन्हें बाहर का आदमी समझा जाता है! यह चीनी लोग अपने को चीन के चीनियों से अलग मानते हैं और सचमुच वह सदियों से मलाया में रहते चले आये हैं और मलाया उनका है, वह मलाया के हैं. इन्हीं चीनियों ने जापानियों का डट कर मुक़ाबला किया था और जापानियों के हाथों तरह तरह की तकलीफें और मुसीबतें बर्दाश्त की थीं पर जापानियों के जाने के बाद जब अंगरेज़ फिर आये तो उन्होंने न इन चीनियों की कोई क़द्र की और न इनकी मदद से मलाया का कोई भला करने की कोशिश की. उल्टे उनसे बैर कर लिया और तरह तरह से तंग करना शुरू किया. इसका नतीजा यह हुआ कि जो गुरीला सरगर्मियां पहले जापानियों के ख़िलाफ़ की जाती थीं वह अब अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ की जाने लगीं.

इन सरगर्मियों में हिस्सा लेने वालों में कुछ लोग कम्यूनिस्ट ज़रूर हैं लेकिन अब तक इस बात का कोई सबूत नहीं मिला है कि नये चीन ने इन गुरीलों को किसी तरह से कोई भी मदद पहुँचाई हो बल्कि सच तो यह है कि इन गुरीलों में मलाया की ज़ियादातर आबादी की—जिसमें मलाया वाले भी हैं और चीनी भी—काफ़ी तादाद है. न कुछ ऐसा भी दीखता है कि मलाया को अंगरेज़ी अलमबरदार यह समझने लग गये हैं कि इस आन्दोलन की जड़ कहां से शुरू होती है. अभी हाल ही में मलाया के

میں تعلق رہا ہے لیکن کبھی بھی کسی چینی راجا یا حاکم نے ملایا میں چینی راج پھیلانے کی کوشش نہیں کی. چین اور ملایا میں بہت کافی تعلق رہا مگر وہ دوستانہ اور برابری کا تھا. پچھم میں اس کا الٹا ہوتا ہے. پچھم کے لوگ کسی بھی دیش میں بیوپار کرنے کے ساتھ ساتھ حکومت جمانا چاہتے ہی ہیں.

ملایا کی جنتا پر انگریزوں کا دمن.

ڈیڑھ سو سال سے انگریز ملایا میں ہیں اور کہتے ہیں کہ ہم محض ٹرسٹی ہیں، ہمارا کام ہے یہاں کی جنتا کو اونچا اٹھانا. لیکن آج بھی حکومت کی باگ ڈور انگریزوں ہی کے ہاتھ میں ہے. اسکی وجہ سے ملایا کے اصلی باشندوں میں جو ملایا و چینی دونوں ہیں، عام طور پر اسنتوش ہے. اب ادھر حال ہی میں ملایا کی انگریزی سرکار نے چینیوں کے اوپر پابندی لگا کر ان کے ناگرک حق بھی چھین لئے ہیں. ان پابندیوں کی وجہ سے وہاں کے چینی گھٹیا درجے کے ناگرک رہ گئے ہیں. کمال ہے کہ چینی لوگ ملایا کی آبادی میں دوسروں سے زیادہ، ادیوگ دھندے اور بیوپار کے لحاظ سے بڑھے ہوئے، راج کاجی سمجھ میں بھی آگے، سب میں زیادہ محنتی اور جفاکش اور اسلئے سب میں زیادہ خوش حال، پھر بھی اپنے ہی ملایا میں انہیں باہر کا آدمی سمجھا جاتا ہے! یہ چینی لوگ اپنے کو چین کے چینیوں سے الگ مانتے ہیں اور سچ مچ وہ صدیوں سے ملایا میں رہتے چلے آئے ہیں اور ملایا ان کا ہے، وہ ملایا کے ہیں. انہیں چینیوں نے جاپانیوں کا ڈٹ کر مقابلہ کیا تھا اور جاپانیوں کے ہاتھوں طرح طرح کی تکلیفیں اور مصیبتیں برداشت کی تھیں. پر جاپانیوں کے جانے کے بعد جب انگریز پھر آئے تو انہوں نے نہ ان چینیوں کی کوئی قدر کی اور نہ ان کی مدد سے ملایا کا کوئی بھلا کرنے کی کوشش کی. الٹے ان سے بیر کر لیا اور طرح طرح سے تنگ کرنا شروع کیا. اسکا نتیجہ یہ ہوا کہ جو گوریلا سرگرمیاں پہلے جاپانیوں کے خلاف کی جاتی تھیں وہ اب انگریزوں کے خلاف کی جانے لگیں.

ان سرگرمیوں میں حصہ لینے والوں میں کچھ لوگ کمیونسٹ ضرور ہیں لیکن اب تک اس بات کا کوئی ثبوت نہیں ملا ہے کہ نئے چین نے ان گوریلوں کو کسی طرح سے کوئی بھی مدد پہونچائی ہو. بلکہ سچ تو یہ ہے کہ ان گوریلوں میں ملایا کی زیادہ تر آبادی کی—جسمیں ملایا والے بھی ہیں اور چینی بھی—کافی تعداد ہے. کچھ ایسا بھی دیکھتا ہے کہ ملایا میں انگریزی علمبردار یہ سمجھنے لگ گئے ہیں کہ اس آندولن کی جڑ کہاں سے شروع ہوتی ہے. ابھی حال ہی میں ملایا کے

नये हाई कमिश्नर जनरल टेम्पलर ने कहा कि अगर आबादी में दस आने भर लोग मेरे साथ हो जायें तो मैं तीन महीने में मलाया का आन्दोलन खत्म कर दूंगा. लेकिन न तो नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी. क्योंकि दस आने भर जनता उसी सरकार के साथ शरीक होती है जिसमें बागडोर देश की असली बाकायदा चुने हुए जनता के सच्चे प्रतिनिधि लोगों के हाथ में हो और जहां ऐसा हुआ तो फौजी कार्रवाई की तिल भर ज़रूरत भी नहीं रह जाती.

भारत का अंगरेज़ों से समझौता.

हम एक और बात यहां पर ज़रूर कहेंगे कि हिन्द और अंगरेज़ी सरकारों में जो एक समझौता है जिसकी बिना पर अंगरेज़ी सरकार नेपाल से रंगरूट जमा कर के मलाया भेज देती है वह वहां के सवाल को सुलझाने में मदद नहीं करता. यह समझौता हिन्दुस्तान की शान के खिलाफ है और जितनी जल्दी हमारी सरकार इसे रद्द कर सके उतना ही अच्छा है.

एशिया उभर रहा है.

अब हम देखें कि थोड़े से में पूर्वी एशिया की सही तसवीर इस वक्त क्या है? लड़ाई के पहले जो पूर्वी एशिया की हालत थी उसमें और इस वक्त की हालत में कोई मिलान नहीं है. चीन आखिरकार जाग गया है और एशिया की सबसे मज़बूत ताकत होने का हौसला रखता है. मज़बूत, लेकिन जापान की तरह दूसरों पर हमला करने वाला और दुनिया की शान्ति का दुश्मन नहीं बल्कि अमन पसन्द और दुनिया की शान्ति का हिमायती और मददगार. वहां के आसार यह बताते हैं कि अगर चीन को कोई छेड़े नहीं तो वह अरसे तक चुपचाप अपने सुधार और विकास के काम में लगा रहेगा और सबसे दोस्ती के सम्बन्ध बनाये रखेगा.

कोरिया की हालत अभी तक लड़ाई में पड़ी हुई है. दक्खिन अमरीका के एक नुमाइन्दे ने यूनो असेम्बली की पेरिस वाली बैठक में हाल में कहा है—'अगर हम कोरिया में शान्ति कायम रखना चाहते हैं तो उन तरीकों से नहीं कायम हो सकती जो जनरल रिजवे अपना रहे हैं. कोरिया के सवाल का पक्का और ठीक हल यही है कि कोरिया वालों के बीच में बाहर का कोई न पड़े, वहां से तमाम विदेशी फौजें हटा ली जायें और यूनो की मातहती में वहां की आम जनता की राय ली जाये. हो सकता है कि जनता का फैसला कम्यूनिज़्म के माफिक हो या एक दम खिलाफ हो. लेकिन हमें इससे परेशानी नहीं होनी चाहिये क्योंकि क्या हमारा यह दावा नहीं है कि हम लोकराज के युग में रह रहे हैं जहां हर मुल्क की जनता को पूरा अधिकार है कि वह जैसी हुकूमत पसन्द करे वैसी कायम करे.'

کے نئے ہائی کمشنر جنرل ٹمپلر نے کہا کہ اگر آبادی میں دس آنے بھر لوگ میرے ساتھ ہوجائیں تو میں تین مہینے میں ملایا کا آندولن ختم کر دوں گا۔ لیکن نہ نو من تیل ہوگا نہ رادھا ناچیگی۔ کیونکہ دس آنے بھر جنتا اُسی سرکار کے ساتھ شریک ہوتی ہے جس میں باگ ڈور دیش کی اصلی باقاعدہ چنے ہوئے جنتا کے سچے پرتی ندھی لوگوں کے ہاتھ میں ہو اور جہاں ایسا ہوا تو فوجی کاروائی کی تل بھر ضرورت بھی نہیں رہ جاتی۔

بھارت کا انگریزوں سے سمجھوتہ۔

ہم ایک اور بات یہاں یہ ضرور کہیں گے کہ ہند اور انگریزی سرکاروں میں جو ایک سمجھوتہ ہے جس کی بنا پر انگریزی سرکار نیپال سے رنگروٹ جمع کر کرکے ملایا بھیج دیتی ہے وہ وہاں کے سوال کو سلجھانے میں مدد نہیں کرتا۔ یہ سمجھوتہ ہندستان کی شان کے خلاف ہے اور جتنی جلدی ہماری سرکار اِسے رد کر سکے اتنا ہی اچھا ہے۔

ایشیا اُبھر رہا ہے۔

اب ہم دیکھیں کہ تھوڑے سے میں پوربی ایشیا کی صحیح تصویر اِس وقت کیا ہے؟ لڑائی کے پہلے جو پوربی ایشیا کی حالت تھی اُس میں اور اِس وقت کی حالت میں کوئی میلان نہیں ہے۔ چین آخرکار جاگ گیا ہے اور ایشیا کی سب سے مضبوط طاقت ہونے کا حوصلہ رکھتا ہے۔ مضبوط، لیکن جاپان کی طرح دوسروں پر حملہ کرنے والا اور دنیا کی شانتی کا دشمن نہیں بلکہ امن پسند اور دنیا کی شانتی کا حمایتی اور مددگار۔ وہاں کے آثار یہ بتاتے ہیں کہ اگر چین کو کوئی چھیڑے نہیں تو وہ عرصے تک چپ چاپ اپنے سدھار اور وکاس کے کام میں لگا رہیگا اور سب سے دوستی کے سمبندھ بنائے رکھیگا

کوریا کی حالت ابھی تک لڑائی میں پڑی ہوئی ہے۔ دکھن امریکہ کے ایک نمائندے نے یونو اسمبلی کی پیرس والی بیٹھک میں حال میں کہا ہے—'اگر ہم کوریا میں شانتی قائم رکھنا چاہتے ہیں تو اُن طریقوں سے نہیں قائم ہوسکتی جو جنرل رجوے اپنا رہے ہیں۔ کوریا کے سوال کا پکا اور ٹھیک حل یہی ہے کہ کوریا والوں کے بیچ میں باہر کا کوئی نہ پڑے، وہاں سے تمام ودیشی فوجیں ہٹائی جائیں اور یونو کی ماتحتی میں وہاں کی عام جنتا کی رائے لی جائے۔ ہوسکتا ہے کہ جنتا کا فیصلہ کمیونزم کے موافق ہو یا ایک دم خلاف ہو۔ لیکن ہمیں اِس سے پریشانی نہیں ہونی چاہئے کیونکہ کیا ہمارا یہ دعویٰ نہیں ہے کہ ہم لوکراج کے یگ میں رہ رہے ہیں جہاں ہر ملک کی جنتا کو پورا ادھیکار ہے کہ وہ جیسی حکومت پسند کرے ویسی قائم کرے۔'

हिन्द चीन और मलाया में भी रुझान शायद कम्यूनिज़्म की तरफ़ ही है. लेकिन जिस तरह लोकराज या प्रजातंत्र की कई क़िस्में होती हैं उसी तरह कम्यूनिज़्म की भी हैं. पिछले चन्द बरसों में कम से कम एक झूट का तो भांडा फूट ही गया, और अगर दुनिया में शान्ति व अमन व चैन क़ायम रहना है तो हमेशा के लिये ही यह भांडा फूट जाना चाहिये. वह झूट यह है कि जो कोई भी देश कम्यूनिस्ट होगा वह लाज़मी तौर पर रूस के पंछुल्ले की तरह काम करेगा. यह उतनी ही ग़लत बात है जिस तरह यह कहना कि जो कोई भी लोकराजी देश होगा वह अमरीका का ग़ुलाम होगा. हमारे सामने यूगोस्लेविया की मिसाल मौजूद है. यूगोस्लेविया कम्यूनिस्ट ज़रूर है लेकिन रूस का साथी नहीं. कोई भी चाहे देख सकता है कि नया चीन रूस की कठपुतली नहीं है. हिन्द चीन और मलाया भी अगर कम्यूनिस्ट बनना चाहते हैं तो दुनिया की कोई दूसरी ताक़त उन्हें नहीं रोक सकती.

आज सवाल यह नहीं है कि कोई देश अपने लिये कम्यूनिस्ट कहा जाने वाला तर्ज़ पसन्द करता है या लोकशाही कहा जाने वाला तर्ज़ पसन्द करता है, या कोई और तीसरा तर्ज़ पसन्द करता है. सवाल असल में यह है कि दुनिया के हर देश को अपने मन मानी जीवन-तर्ज़ और अपने मन की सरकार पसन्द करने का अधिकार है या नहीं? इस पसन्द में अगर बाहर से कोई भी दख़ल अन्दाज़ी करे तो उसे अन्तरक़ौमी मुजरिम समझना चाहिये. कम्यूनिज़्म या ग़ैर-कम्यूनिज़्म को छोड़िये, दुनिया जानती है कि चांग-काई-शेक के राज में चीन की क्या बुरी हालत थी, दुनिया यह भी जानती है कि नये राज में चीन की साढ़े सैंतालीस करोड़ जनता की आर्थिक, समाजी और नैतिक तरक़्क़ी कहां से कहां पहुंच गई है. हर ग़ैर जानिबदार आदमी चीन में आकर क़बूल करेगा कि चीन शान्ति के लिये तड़प रहा है. उसके बड़े बड़े कारख़ाने और रोज़गार तक लड़ाई की तैयारी के लिये नहीं हैं बल्कि रोज़ की ज़रूरत का सामान बनाने के लिये. चीन चाहता है कि चैन से रहे और दूसरों को भी चैन से रहने दे. अगर हथियार के बल पर यह कोशिश की जाती है कि चीन के नये राज को हटा कर चांग काई शेक की हकूमत फिर से क़ायम कर दी जाये तो यह इन्सानियत के ख़िलाफ़ एक जुर्म होगा, एक ऐसा जुर्म होगा जिससे बदतर जुर्म इतिहास में अब तक इन्सान ने इन्सान के ख़िलाफ़ नहीं किया है. यह इन्सान के माथे पर कलंक का टीका होगा.

हम ऊपर देख चुके हैं कि किस तरह अमरीका और उसके हम-ख़याल सरकारें इस तरफ़ झुक रही हैं और

ہند چین اور ملایا میں بھی رجحان شاید کمیونزم کی طرف ہی ہے ۔ لیکن جس طرح لوک راج یا پرجا تنتر کی کئی قسمیں ہوتی ہیں اسی طرح کمیونزم کی بھی ہیں ۔ پچھلے چند برسوں میں کم سے کم ایک جھوٹ کا تو بھانڈا پھوٹ ہی گیا، اور اگر دنیا میں شانتی و امن چین قائم رہنا ہے تو ہمیشہ کے لئے ہی یہ بھانڈا پھوٹ جانا چاہئے ۔ وہ جھوٹ یہ ہے کہ جو کوئی بھی دیش کمیونسٹ ہوگا وہ لازمی طور پر روس کے پچھلگے کی طرح کام کریگا ۔ یہ اتنی ہی غلط بات ہے جس طرح یہ کہنا کہ جو کوئی بھی لوک راجی دیش ہوگا وہ امریکہ کا غلام ہوگا ۔ ہمارے سامنے یوگوسلاویا کی مثال موجود ہے ۔ یوگوسلاویا کمیونسٹ ضرور ہے لیکن روس کا ساتھی نہیں ۔ جو کوئی بھی چاہے دیکھ سکتا ہے کہ نیا چین روس کی کٹھ پتلی نہیں ہے ۔ ہند چین اور ملایا بھی اگر کمیونسٹ بننا چاہتے ہیں تو دنیا کی کوئی دوسری طاقت انہیں نہیں روک سکتی ۔

آج سوال یہ نہیں ہے کہ کوئی دیش اپنے لئے کمیونسٹ کہا جانے والا طرز پسند کرتا ہے یا لوک شاہی کہا جانے والا طرز پسند کرتا ہے، یا کوئی اور تیسرا طرز پسند کرتا ہے ۔ سوال اصل میں یہ ہے کہ دنیا کے ہر دیش کو اپنے من مانی جیون طرز اور اپنے من کی سرکار پسند کرنے کا ادھیکار ہے یا نہیں؟ اس پسند میں اگر باہر سے کوئی بھی دخل اندازی کرے تو اسے انتر قومی مجرم سمجھنا چاہئے ۔ کمیونزم یا غیر کمیونزم کو چھوڑئیے، دنیا جانتی ہے کہ چانگ کائی شیک کے راج میں چین کی کیا بری حالت تھی، دنیا یہ بھی جانتی ہے کہ نئے راج میں چین کی ساڑھے سینتالیس کروڑ جنتا کی آرتھک، سماجی اور نیتک ترقی کہاں سے کہاں پہونچ گئی ہے ۔ ہر غیر جانبدار آدمی چین میں جاکر قبول کریگا کہ چین شانتی کے لئے تڑپ رہا ہے ۔ اس کے بڑے بڑے کارخانے اور روزگار تک لڑائی کی تیاری کے لئے نہیں ہیں بلکہ روز کی ضرورت کا سامان بنانے کے لئے ۔ چین چاہتا ہے کہ چین سے رہے اور دوسروں کو بھی چین سے رہنے دے ۔ اگر ہتھیار کے بل پر یہ کوشش کی جاتی ہے کہ چین کے نئے راج کو ہٹاکر چیانگ کائی شیک کی حکومت پھر سے قائم کر دی جائے تو یہ انسانیت کے خلاف ایک جرم ہوگا ایک ایسا جرم ہوگا جس سے بدتر ظلم اتہاس میں ابتک انسان نے انسان کے خلاف نہیں کیا ہے ۔ یہ انسان کے ماتھے پر کلنک کا ٹیکہ ہوگا ۔

ہم اوپر دیکھ چکے ہیں کہ کس طرح امریکہ اور اسکے ہم خیال سرکاریں اس طرف جھک رہی ہیں اور

तैयारी ऐसी कर रही है कि दुनिया एक तीसरी ज़बरदस्त जंग में से गुज़रे. हमने यह भी देखा कि दुनिया में कौन कौन ताक़तें अमन या शान्ति के लिये काम कर रही हैं और कौन कौन जंग या तबाही के तरफ़ बढ़ रही हैं. हम को हालत ठीक ठीक समझ कर उसके मुताबिक़ अपना रास्ता बनाना चाहिये. एशिया ललकार कर कह रहा है कि "बाहर की ताक़तो ! एशिया को छोड़ो."

आज अमरीका अपने डालर के फन्दे में—क्या एशिया, क्या योरप सबको मदद के नाम पर—मार्शल मदद, पाइन्ट फोर मदद, टैकनिकल मदद वग़ैरह वग़ैरह—फांस रहा है. इस तरह वह उनकी कमर तोड़ रहा है और उनके अन्दर झगड़े-फ़साद के बीज बो रहा है. हमें इस सबसे ख़बरदार हो जाना चाहिये. एशिया के हर मुल्क को अपने पांव पर खड़े हो जाना चाहिये और सबको मिल कर, कन्धे से कन्धा लगा देना चाहिये ताकि न सिर्फ़ एशिया में बल्कि सारी दुनिया में शान्ति क़ायम हो, सब लोग फूलें-फलें, सब की तरक़्क़ी हो और सभी मिल जुलकर एक ख़ानदान की तरह रहें.

6-3-52 —सुन्दरलाल

(अंगरेज़ी से)

अमरीका और भारत—

भारत सरकार की ग़लती, भूल या कम-निगाही से यह देश और इसके बासी तेज़ी के साथ अमरीका के आर्थिक चंगुल में फंसते जा रहे हैं—जो देश के भविष्य के लिये बहुत ही ख़तरनाक है. श्री सुरेश रामभाई का एक नोट इस विषय पर फ़रवरी के 'नया हिन्द' में 'हिन्द-अमरीकी समझौता या ग़ुलामी नामा' नाम से निकल चुका है. उनमें दो नोट एक 'हमारे गांवों पर अमरीकी धावा' नाम से और दूसरा 'अमरीकी राजदूत और डाक्टर कुमारप्पा' नाम से इस अंक में जा रहे हैं इन तीनों नोटों से मैं पूरी तरह सहमत हूं. बल्कि नोटों में जो ख़तरा दिखाया गया है, असली ख़तरा उससे कहीं ज़ियादा गहरा है.

मुझे यक़ीन है कि 'नया हिन्द' के पाठक इन्हें ध्यान से पढ़ेंगे और गम्भीरता के साथ इन पर विचार करेंगे.

—सुन्दरलाल

हमारे गांवों पर अमरीकी धावा—

फ़ोर्ड की मोटरों से इस देश के लोग अच्छी तरह परिचित हैं. फ़ोर्ड साहब अपने समय के दुनिया के सब से बड़े मालदार थे असल फ़ोर्ड साहब मर चुके, उनकी कम्पनी अमरीका में चल रही है और दुनिया भर से

تیاری ایسی کر رہی ہیں کہ دنیا ایک تیسری زبردست جنگ میں سے گذرے ۔ ہم نے یہ بھی دیکھا کہ دنیا میں کون کون طاقتیں امن یا شانتی کے لئے کام کر رہی ہیں اور کون کون جنگ یا تباہی کی طرف بڑھ رہی ہیں ۔ ہمکو حالت ٹھیک ٹھیک سمجھ کر اُسکے مطابق اپنا راستہ بنانا چاہئے ۔ ایشیا للکار کر کہہ رہا ہے کہ "باہر کی طاقتو ! ایشیا کو چھوڑو ۔"

آج امریکہ اپنے ڈالر کے پھندے میں—'کیا ایشیا' کیا یورپ سب کو مدد کے نام پر—مارشل مدد' پائنٹ فور مدد' ٹیکنکل مدد وغیرہ وغیرہ—پھانس رہا ہے ۔ اس طرح وہ اُن کی کمر توڑ رہا ہے اور اُن کے اندر جھگڑے فساد کے بیج بو رہا ہے ۔ ہمیں اِس سب سے خبردار ہو جانا چاہئے ۔ ایشیا کے ہر ملک کو اپنے پاؤں پر کھڑے ہو جانا چاہئے اور سب کو مل کر' کندھے سے کندھا لگا دینا چاہئے تاکہ نہ صرف ایشیا میں بلکہ ساری دنیا میں شانتی قائم ہو' سب لوگ پھولیں پھلیں' سب کی ترقی ہو اور سبھی مل جل کر ایک خاندان کی طرح رہیں ۔

—سندرلال 6-3-52

(انگریزی سے)

امریکہ اور بھارت—

بھارت سرکار کی غلطی' بھول یا کم نگاہی سے یہ دیش اور اسکے واسی تیزی کے ساتھ امریکہ کے آرتھک چنگل میں پھنستے جا رہے ہیں—جو دیش کے بھوشیہ کے لئے بہت ہی خطرناک ہے ۔ شری سریش رام بھائی کا ایک نوٹ اِس وشے پر فروری کے 'نیا ہند' میں 'ہند امریکی سمجھوتہ یا غلامی نامہ' نام سے نکل چکا ہے ۔ اُن میں دو نوٹ ایک 'ہمارے گاؤں پر امریکی دھاوا' نام سے اور دوسرا 'امریکی راج دوت اور ڈاکٹر کمارپا' نام سے اِس انک میں جا رہے ہیں ۔ اِن تینوں نوٹوں سے میں پوری طرح سہمت ہوں ۔ بلکہ نوٹوں میں جو خطرہ دکھایا گیا ہے اصلی خطرہ اُس سے کہیں زیادہ گہرا ہے ۔

مجھے یقین ہے کہ 'نیا ہند' کے پاٹھک انہیں دھیان سے پڑھیں گے اور گمبھیرتا کے ساتھ اِن پر وچار کریں گے ۔

—سندرلال

ہمارے گاؤں پر امریکی دھاوا—

فورڈ کی موٹروں سے اس دیش کے لوگ اچھی طرح پریچت ہیں ۔ فورڈ صاحب اپنے سمے کے دنیا کے سب سے بڑے مالدار تھے ۔ اصل فورڈ صاحب مر چکے' اُن کی کمپنی امریکہ میں چل رہی ہے اور دنیا بھر سے

धन बटोर रही है. फोर्ड कम्पनी की दौलत के कुछ हिस्से को एक ट्रस्ट की शकल देकर फोर्ड फाउन्डेशन नाम की एक संस्था क़ायम की गई है, जो दान पुन्य के कामों में रुपया देती है. 23 जनवरी 1952 को इस अमरीकी संस्था और हिन्दुस्तान की सरकार में नई दिल्ली में एक समझौता हुआ. जिसकी ख़ास बातें यह हैं :—

1. इस समझौते के अनुसार फोर्ड फाउन्डेशन हिन्दुस्तान को बारह लाख डालर (क़रीब चालीस लाख रुपया) देगा जिसे इस देश में देहात प्रचार के काम में

2. जिस प्रोग्राम के लिये यह मदद दी जा रही है उसका शुरू का हिस्सा वैसा ही है जैसा कि हिन्द-सरकार की पंच-साला-प्लान का. शुरू में कुछ सूबों में पांच सिखाई सेन्टर खोले जायेंगे जिनमें ट्रेनिंग पाये हुए लोग देहात प्रचार में लगेंगे हर सूबे में कम से कम 15 विकास केन्द्र खोले जायेंगे जहां यह काम होगा. उम्मीद की जाती है कि अगले पांच साल के अन्दर इन पांचे सिखाई केन्द्रों में इतने लोग तालीम पालेंगे जो पंद्रह हज़ार गावों में फैल कर अपना प्रोग्राम चला सकें.

3. इन पांचों सिखाई केन्द्रों और पंद्रहों विकास केन्द्रों में आमतौर से ख़र्चा तो हिन्द-सरकार का होगा. पर फोर्ड फाउन्डेशन की पूंजी से उसमें मदद मिलती रहेगी.

हमारी सरकार अब तक बाहर से अनाज की भीक मांगती थी, रुपये-पैसे के टुकड़े मांगती थी, अब उसने हिन्द-वासियों को देहात सुधार के काम सिखाने के लिये भी अमरीका से माहिर और 'एक्सपर्ट' मांगना शुरू कर दिया. इसका मतलब यह हुआ कि हमारी सरकार महसूस करती है कि अगर देश के देहातों को सुधारना संभालना है तो अमरीकी ढंग से ही यह किया जा सकता है.

अमरीकी ढंग क्या है? अमरीकी माहिर आकर क्या सिखायेंगे? वही जो वे अपने देश में करते हैं. और अपने देश में वह क्या करते हैं? इसके जवाब में हम अमरीका ही की सुप्रीम कोर्ट के जज डगलस साहब के एक लेख का कुछ हिस्सा नीचे देते हैं जो 'न्यूयार्क टाइम्स मैगज़ीन' में छप चुका है—

"अमरीका से कुछ दिन के लिये बाहर जाकर जब कोई अमरीका वापिस आता है तो वह वहाँ यह देख कर हैरान रह जाता है कि ज़ियादातर अमरीकी अख़बारों में और वहां की संस्थाओं के बहुत से नेताओं में बरदाश्त का मादा नहीं रह गया है. वह हर चीज़ को नफ़रत की

دھن بٹور رھی ھے . فورڈ کمپنی کی دولت کے کچھ حصے کو ایک ٹرسٹ کی شکل دیکر فورڈ فاؤنڈیشن نام کی ایک سنستھا قائم کی گئی ھے' جو دان پن کے کاموں میں روپیہ دیتی ھے. 23 جنوری 1952 کو اِس امریکی سنستھا اور ھندستان کی سرکار میں نئی دلی میں ایک سمجھوتہ ہوا . جس کی خاص باتیں یہ ھیں :—

1 اِس سمجھوتے کے انوسار فورڈ فاؤنڈیشن ھندستان کو بارہ لاکھ ڈالر (قریب چالیس لاکھ روپیہ) دیگا جسے اِس دیش میں دیہات پرچار کے کام میں خرچ کیا جائے گا .

2. جس پروگرام کے لئے یہ مدد دی جا رھی ھے اس کا شروع کا حصہ ویسا ھی ھے جیسا کہ ھند سرکار کی پانچ سالہ پلان کا . شروع میں کچھ صوبوں میں پانچ سکھائی سینٹر کھولے جائینگے جن میں ٹریننگ پائے ہوئے لوگ دیہات پرچار میں لگینگے . ھر صوبے میں کم سے کم 15 وکاس کیندر کھولے جائینگے جہاں یہ کام ہوگا . امید کی جاتی ھے کہ اگلے پانچ سال کے اندر ان پانچ سکھائی کیندروں میں اتنے لوگ تعلیم پالینگے جو پندرہ ہزار گاؤں میں پھیلکر اپنا پروگرام چلا سکیں .

3. اِن پانچوں سکھائی کیندروں اور پندرھوں وکاس کیندروں میں عام طور سے خرچہ تو ھندسرکار کا ہوگا . پر فورڈ فاؤنڈیشن کی پونجی سے اس میں مدد ملتی رھے گی .

ھماری سرکار اب تک باھر سے اناج کی بھیک مانگتی تھی' روپے پیسے کے ٹکڑے مانگتی تھی' اب اُس نے ھند واسیوں کو دیہات سدھار کے کام سکھانے کے لئے بھی امریکہ سے ماھر اور 'ایکسپرٹ' مانگنا شروع کر دیا . اس کا مطلب یہ ہوا کہ ھماری سرکار محسوس کرتی ھے کہ اگر دیش کے دیہاتوں کو سدھارنا سنوارنا ھے تو امریکی ڈھنگ سے ھی یہ کیا جا سکتا ھے .

امریکی ڈھنگ کیا ھے ؟ امریکی ماھر آکر کیا سکھائینگے ؟ وھی جو وہ اپنے دیش میں کرتے ھیں اور اپنے دیش میں وہ کیا کرتے ھیں ؟ اس کے جواب میں ھم امریکہ ھی کی سپریم کورٹ کے جج ڈگلس صاحب کے ایک لیکھ کا کچھ حصہ نیچے دیتے ھیں جو 'نیویارک ٹائمس میگزین' میں چھپ چکا ھے—

'' امریکہ سے کچھ دن کے لئے باھر جا کر جب کوئی امریکہ واپس آتا ھے تو وہ یہاں یہ دیکھکر حیران رہ جاتا ھے کہ زیادہ تر امریکی اخباروں میں اور یہاں کی سنستھاؤں کے بہت سے نیتاؤں میں برداشت کا مادہ نہیں رہ گیا ھے . وہ ھر چیز کو نفرت کی

निगाह से देखते हैं——————मामूली मामूली निर्दोष कामों को भी वह गद्दारी समझते हैं. अगर किसी मामले में भी किसी जगह भी किसी आदमी की कोई बात इस की पालिसी से मेल खा गई तो उसके चारों तरफ़ शक का वातावरण खड़ा कर दिया जाता है..................

"वह लोग जो अमरीकी सरकार की जंग की बातों से इत्तफ़ाक़ नहीं करते उन पर शक किया जाता है. डर इतना बढ़ गया है कि लोगों में दीवानगी पैदा हो गई है. नेक और ईमानदार आदमियों से तोबा कराई जाती है. उनकी मिट्टी पलीद की जाती है.........डर के मारे जीवन के सभी पहलुओं में ज़्यादातर आदमी चुप रहते हैं या चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं. यह डर दिन दिन बढ़ रहा है—नौकरी से हटा दिये जाने का डर, तलाशी का या मुक़द्दमा चलाये जाने का डर, तोबा कराने का डर......नई पीढ़ी की ज़बान तो लगातार बन्द होती चली जा रही है. नये विचारों पर बहस-चर्चा की बजाये उन्हें दबा दिया जाता है."

इस अमरीकी ज़िन्दगी और अमरीकी जीवन-तर्ज़ के नामर्द और डरपोक माहिर हमारे देश में देहात-सुधार सिखायेंगे और हमारे गांव वालों का जीवन तर्ज़ ऊंचा उठायेंगे!

अंगरेज़ सरकार ने हमारे शहरों और उनके आस-पास धावा करके वहां की हवा ख़राब की थी. पर अमरीकी सरकार और अमरीकी सभ्यता के अलमबरदार हमारे देहातों और गांव गांव पर धावा करके उन्हें भी बरबाद करने पर तुले हुए हैं. पर क़सूर इन बिचारों का क्या है! बलिहारी है हमारी सरकार की जो यह फ़ेल कराती है और अपनी जहालत या भोलेपन से हमारे गांव की बची हुई ज़िन्दगी को भी बरबाद करके हमारे गांव वालों को अमरीकी ज़िन्दगी के अधकचरे और भद्दे नक़्क़ाल बना कर हमारी रही सही सभ्यता और रहे सहे धन दौलत दोनों को ख़त्म कर देने पर तुली हुई है.

—सुंदर रामभाई.

अमरीकी राजदूत और डाक्टर कुमारप्पा—

पिछले नम्बर में हम हाल के हिन्द-अमरीकी समझौते नामी ग़ुलामी नामे पर अपनी राय दे चुके हैं. इस ग़ुलामी-नामे की ताईद बड़े वज़ीर जवाहरलाल नेहरू और अमरीकी राजदूत [illegible] के साथ कर रहे हैं. अमरीकी राजदूत ने हाल ही में बम्बई में एक प्रेस कान्फ्रेंस की और उसमें बताया कि किस ऊंची भावना से अमरीका हिन्दुस्तान के फ़ायदे के लिए हर तरह से उसकी मदद कर रहा

نگاہ سے دیکھتے ہیں......معمولی معمولی بےقصور کاموں کو بھی وہ غداری سمجھتے ہیں. اگر کسی معاملے میں بھی کسی جگہ بھی کسی آدمی کی کوئی بات اس کی پالیسی سے میل کھا گئی تو اس کے چاروں طرف شک کا واتاورن کھڑا کر دیا جاتا ہے........

"وہ لوگ جو امریکی سرکار کی جنگ کی باتوں سے اتفاق نہیں کرتے ان پر شک کیا جاتا ہے. ڈر اتنا بڑھ گیا ہے کہ لوگوں میں دیوانگی پیدا ہو گئی ہے. نیک اور ایماندار آدمیوں سے توبہ کرائی جاتی ہے. ان کی مٹی پلید کی جاتی ہے.........ڈر کے مارے جیون کے سبھی پہلوؤں میں زیادہ تر آدمی چپ رہتے ہیں یا چکنی چپڑی باتیں کرتے ہیں. یہ ڈر دن دن بڑھ رہا ہے—نوکری سے ہٹا دیئے جانے کا ڈر، تلاشی کا یا مقدمہ چلائے جانے کا ڈر، توبہ کرانے کا ڈر............نئی پیڑھی کی زبان تو لگاتار بند ہوتی چلی جا رہی ہے. نئے وچاروں پر بحث چرچہ کی بجائے انہیں دبا دیا جاتا ہے."

اس امریکی زندگی اور امریکی جیون طرز کے نامرد اور ڈرپوک ماہر ہمارے دیش میں دیہات سدھار سکھائیں گے اور ہمارے گاؤں والوں کا جیون طرز اونچا اٹھائیں گے!

انگریز سرکار نے ہمارے شہروں اور ان کے آس پاس دھاوا کر کے وہاں کی ہوا خراب کی تھی. پر امریکی سرکار اور امریکی سبھیتا کے علمبردار ہمارے دیہاتوں اور گاؤں گاؤں پر دھاوا کر کے انہیں بھی برباد کرنے پر تلے ہوئے ہیں. پر قصور ان بچاروں کا کیا ہے! بلہاری ہے ہماری سرکار کی جو یہ فعل کراتی ہے اور اپنی جہالت یا بھولے پن سے ہمارے گاؤں کی بچی ہوئی زندگی کو بھی برباد کر کے ہمارے گاؤں والوں کو امریکی زندگی کے ادھکچرے اور بھدے نقلچی بنا کر ہماری رہی سہی سبھیتا اور رہے سہے دھن دولت دونوں کو ختم کر دینے پر تلی ہوئی ہے.

—سرینی رام بھائی

امریکی راجدوت اور ڈاکٹر کمارپا—

پچھلے نمبر میں ہم حال کے ہند امریکی سمجھوتہ یعنی غلامی نامہ پر اپنی رائے دے چکے ہیں. اس غلامی نامہ کی تائید بڑے وزیر جواہر لال نہرو اور امریکی راجدوت [illegible] کے ساتھ کر رہے ہیں. امریکی راجدوت نے حال ہی میں بمبئی میں ایک پریس کانفرنس کی اور اس میں بتایا کہ کس اونچی بھاونا سے امریکہ ہندوستان کے فائدے کے لئے ہر طرح سے اس کی مدد کر رہا

[illegible]

... के अमरीका या ब्रिटेन को यह सब पता था ... आज ... जारी पार्क ... और राजकाज ... मार काट और ... के आधार पर खड़ी है लेकिन इससे माल न अमरीका और ब्रिटेन का हो सकता है और न किसी दूसरे देश का ही. हमारे लिये तो यह छूने की चीज भी नहीं होनी चाहिये.

हम यहां इस इतिहास में नहीं जायेंगे कि पिछली जंग क्यों हुई, जापान का उसमें कितना और क्या कसूर था, जापान को क्या सजा मिलनी चाहिये, या सजा देने वाले फैसली कौन कौन हों. इतना कह देना काफी है कि पिछली जंग हमारी जंग नहीं थी, उसमें हम शरीक नहीं थे और न उसमें हम जीते न हारे. इसलिये हमें कोई हक नहीं है कि उसकी लूट में अपना हिस्सा बांटा करें.

मसल मशहूर है कि तैराक ही डूबते हैं. आज अगर आप किसी को लूटते हैं तो कल आप की बारी है. हिन्दुस्तान जो आज़ाद हुआ है वो अपनी ताकत से, अपनी मेहनत से और अपने ईमान से और आज़ाद हिन्दुस्तान सब को भाई भाई समझता है. उसे यह लूट नहीं चाहिये.

हम चाहते हैं कि हिन्द सरकार इस लूट के माल में से एक कानी कौड़ी बराबर चीज पर भी हाथ न लगाये. लेकिन अगर वह अमरीका के कहने पर इस शर्मनाक मिली भगत में शरीक होती है तो इस देश की इससे बढ़ कर कोई दूसरी जिल्लत नहीं हो सकती और इससे हमारी आज़ादी की इमारत की बुनियाद में दरारें पड़े बिना नहीं रहेगा.

8. 3. '52. —सुन्दर रामभाई

हमारे सिनेमा और नौजवान—

फरवरी के आखिरी हफ्ते में हमारे राजपति राजेन्द्र बाबू ने पूना में भाषण देते हुए नौजवानों से अपील की कि अपना चाल चलन अच्छा बनायें ताकि देश का कुछ कल्याण कर सकें. इसके कुछ दिन पहले राजपति और बड़े वज़ीर जवाहर लाल नेहरू के यह फोटो भी अखबारों में छपे थे जिनमें उनके साथ साथ हमारे देश के कई फिल्मी सितारे खड़े थे. इन्हीं फिल्मी सितारों की तस्वीरें क्या पूना, दिल्ली, हिन्दुस्तान के हर शहर या कस्बे में सड़कों और चौराहों पर हमारे नौजवानों

[illegible]

... (...) نہیں معلوم ... اگر ... لیا ہے تو اس ... لیا ہے یا نہیں ... کی بات اس دیش کے لئے ... نہیں ہو سکتی ... لوٹ کا مال ...

امریکہ یا برٹین کو پہلے سے پتا تھا ... آج کی ساری ... اور آج کاجی ... لوٹ مار کاٹ اور ... کے آدھار پر کھڑی ہے لیکن اس سے مال نہ امریکہ اور برٹین کا ہو سکتا ہے اور نہ کسی دوسرے دیش کا ہی. ہمارے لئے تو یہ چھونے کی چیز بھی نہیں ہونی چاہئے.

ہم یہاں اس اتہاس میں نہیں جائینگے کہ پچھلی جنگ کیوں ہوئی، جاپان کا اس میں کتنا اور کیا قصور تھا، جاپان کو کیا سزا ملنی چاہئے، یا سزا دینے والے منصف کون کون ہوں. اتنا کہ دینا کافی ہے کہ پچھلی جنگ ہماری جنگ نہیں تھی، اس میں ہم شریک نہیں تھے اور نہ اس میں ہم جیتے نہ ہارے. اس لئے ہمیں کوئی حق نہیں ہے کہ اس کی لوٹ میں اپنا حصہ بانٹا کریں.

مثل مشہور ہے کہ تیراک ہی ڈوبتے ہیں. آج اگر آپ کسی کو لوٹتے ہیں تو کل آپ کی باری ہے. ہندستان جو آزاد ہوا ہے تو اپنی طاقت سے، اپنی محنت سے اور اپنے ایمان سے اور آزاد ہندستان سب کو بھائی بھائی سمجھتا ہے. اسے یہ لوٹ نہیں چاہئے.

ہم چاہتے ہیں کہ ہند سرکار اس لوٹ کے مال میں سے ایک کانی کوڑی برابر چیز پر بھی ہاتھ نہ لگائے لیکن اگر وہ امریکہ کے کہنے پر اس شرمناک ملی بھگت میں شریک ہوتی ہے تو اس دیش کی اس سے بڑھکر کوئی دوسری ذلت نہیں ہو سکتی اور اس سے ہماری آزادی کی عمارت کی بنیاد میں دراڑیں پڑے بنا نہیں رہینگی.

—سندر رام بھائی 8-3-'52

ہمارے سنیما اور نوجوان—

فروری کے آخری ہفتے میں راج پتی راجیندر بابو نے پونا میں بھاشن دیتے ہوئے نوجوانوں سے اپیل کی کہ اپنا چال چلن اچھا بنائیں تاکہ دیش کی کچھ سیوا کر سکیں. اس کے کچھ دن پہلے راج پتی اور بڑے وزیر جواہر لال نہرو کے یہ فوٹو بھی اخباروں میں چھپے تھے جن میں اُن کے ساتھ ساتھ ہمارے دیش کے کئی فلمی ستارے کھڑے تھے. انہیں فلمی ستاروں کی ننگی تصویریں کیا پونا دلی، ہندستان کے ہر شہر یا قصبے میں سڑکوں اور چوراہوں پر ہمارے نوجوانوں

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुजफ्फर हुसैन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسین، بشمبھر ناتھ، سندر لال

मददगार एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

مددگار ایڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد ہنر

नम्बर के खास लेख

हमारी राय—

نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے—

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

अप्रैल 1952 اپریل

कीमत दस आना — قیمت دس آنہ

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अप्रैल 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اپریل 1952

कया किसमें — सफ़ा — صفحہ — فہرست

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने .

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال' ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर — مینیجر

नया हिन्द' — 'نیا ہند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद — 145' مٹھی گنج' الٰہ آباد .

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 12 | अप्रैल, सन् '52 | नम्बर 4

جلد 12 | اپریل، سن '52 | نمبر 4

जात आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

चलेगा कब तक अत्याचार

(भाई नौशर कमरानी)

अन्याय के बादल आए, छाए घन, घनघोर
बेबस जनता की नगरी में कूदें धम धम चोर
हमरी मेहनत हलकी करने खरचे तन मन जोर

खरचे तन मन जोर रे साथी खरचे तन मन जोर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार.

छीने कपड़ा, छीने रोटी, सब सरमायादार
रो रो कर परलोक सिधारे बेबस और लाचार
मांगें रोटी तो गिन गिन कर मारे है सरकार

मारे है सरकार रे साथी मारे है सरकार
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार.

फ़ाक़ों की मस्ती में आख़िर एक दिन होकर चूर
अंगारे आहों के लेकर उठेंगे मज़दूर
सरमायादारी के सर को कुचलेंगे मज़दूर

कुचलेंगे मज़दूर रे साथी कुचलेंगे मज़दूर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

बैंक तिजोरी और ख़ज़ाने, ख़ज़ाने हम ढोल
बेबस बेकस. भूखे नंगे कर देंगे सब गोल
खुल जाएगा उस दिन आख़िर सारा ढोल का पोल

सारा ढोल का पोल रे साथी सारा ढोल का पोल
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार.

چلیگا کب تک اتیاچار

(بھائی نوشر کمدانی)

انیائے کے بادل آئے، چھائے گھن، گھن گھور
بے بس جنتا کی نگری میں کودے دھم دھم چور
ہمری محنت ہلکی کرلے خرچے تن من زور

خرچے تن من زور رے ساتھی خرچے تن من زور
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

چھینے کپڑا، چھینے روٹی، سب سرمایہ دار
رو رو کر پرلوک سدھارے بے بس اور لاچار
مانگیں روٹی تو گن گن کر مارے ہے سرکار

مارے ہے سرکار رے ساتھی مارے ہے سرکار
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

فاقوں کی مستی میں آخر ایک دن ہوکر چور
انگارے آہوں کے لیکر اٹھینگے مزدور
سرمایہ داری کے سر کو کچلینگے مزدور

کچلینگے مزدور رے ساتھی کچلینگے مزدور
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

بینک تجوری اور خزانے، خزانے ہم ڈھول
بے بس بے کس، بھوکے ننگے کر دینگے سب گول
کھل جائیگا اس دن آخر سارا ڈھول کا پول

سارا ڈھول کا پول رے ساتھی سارا ڈھول کا پول
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

[illegible] टूटी हाथों की जंजीर
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन कर लेंगे तसख़ीर
तदबीरों से अपनी 'नौकर' बदलेंगे तक़दीर

बदलेंगे तक़दीर रे साथी बदलेंगे तक़दीर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

दुनिया की हर शै पर होगा जनता का अधिकार
ठंडा पड़ जाएगा इक दिन इन सब का ब्योपार
शैतानों का राज मिटाने आएंगे अवतार

आएंगे अवतार रे साथी आएंगे अवतार
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

घन बरसेगा कुटिया कुटिया झम झम झम झम झाम
हिन्दू मुसलिम सिख इसाई हों या पस्त अक़वाम
मंदिर एक किस्म का होगा जपने को हर नाम

जपने को हरनाम रे साथी जपने को हरनाम
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

सारे जग में लागू होंगे प्रभू के अहकाम
एक तरीक़े पर बोलेगी दुनिया हर हर नाम
साक़ी एक सुराही एक, होगा एक ही जाम

होगा एक ही जाम रे साथी होगा एक ही जाम
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

[illegible] ہاتھوں کی زنجیر
پورب پچھم اُتر دکھن کرلینگے تسخیر
تدبیروں سے اپنی 'نوکر' بدلینگے تقدیر

بدلینگے تقدیر رے ساتھی بدلینگے تقدیر
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

دنیا کی ہر شے پر ہوگا جنتا کا ادھیکار
ٹھنڈا پڑ جائیگا اک دن ان سب کا بیوپار
شیطانوں کا راج مٹانے آئینگے اوتار

آئینگے اوتار رے ساتھی آئینگے اوتار
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

گھن برسیگا کٹیا کٹیا جھم جھم جھم جھم جھام
ہندو مسلم سکھ عیسائی ہوں یا پست اقوام
مندر ایک قسم کا ہوگا جپنے کو ہر نام

جپنے کو ہر نام رے ساتھی جپنے کو ہر نام
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

سارے جگ میں لاگو ہونگے پربھو کے احکام
ایک طریقے پر بولیگی دنیا ہر ہر نام
ساقی ایک صراحی ایک، ہوگا ایک ہی جام

ہوگا ایک ہی جام رے ساتھی ہوگا ایک ہی جام
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

घन—बादल, सरमायादारी—पूंजीवाद, तसख़ीर—जीत, शै—चीज, पस्त अक़वाम—अछूत, अहकाम—हुक्म

گھن—بادل، سرمایہ‌داری—پونجی واد، تسخیر—جیت، شے—چیز، پست اقوام—اچھوت، احکام—حکم۔

खुदी और खुदा

(डाक्टर भगवान दास)

इससे पहिले के लेख में हम आत्मा और परमात्मा यानी रूह और खुदा दोनों के हक़ीक़ी वजूद के एक होने की बात कह चुके हैं. इसी का नाम अद्वैत यानी वहदतुल वजूद है. आदमी का यह महसूस करना कि वह ईश्वर ही का एक अंश है उसकी रूह उस नूरेकुल (ज्योतिर्मय) का ही एक चिनगारी है या वजूद के उसी समुन्दर की एक बूंद है, बहुत बड़ी और ऊंची बात है और यही ऐन हक़ीक़त है, लेकिन एक दूसरी निगाह से इस विचार के साथ एक बहुत बड़ा ख़तरा लगा हुआ है. यह विचार जितना लाभदायक हो सकता है उतना ही बल्कि उससे अधिक हानिकर भी हो सकता है. हर आदमी के अन्दर दो तरह का अपनापन होता है, एक उसकी आत्मा या रूह का अपनापन और दूसरा उसके जिस्म (शरीर) इन्द्रियों और वासनाओं का अपनापन. हर आदमी के अन्दर इन दोनों में बराबर खींचातानी होती रहती है. यही खींचातानी खुदा और खुदी, परमार्थ और स्वार्थ के बीच की लगातार खींचातानी है. डर इस बात का है कि आदमी खुदा के साथ अपनी एकता को महसूस करते करते कहीं जान बूझकर या अनजाने में इन्द्रियों यानी नफ़्से अम्मारा के साथ अपने को एक न मान बैठे. अगर ऐसा हुआ तो वह अपने भीतर खुदा की जगह शैतान को ला बैठाएगा और बरबादी के रास्ते पर चल पड़ेगा. रूहानी सचाइयों को समझने और अनुभव करने के लिये खुदी को जीत कर खुदा को उसकी जगह देना ज़रूरी है. इसके लिये इन्द्रियों यानी नफ़्स पर क़ब्ज़ा हासिल करना ज़रूरी है.

आदमी के अन्दर की इसी खींचातानी को उपनिषदों में इन्द्र और विरोचन की कहानी के रूप में बयान किया गया है. ईसाई किताबों और मुस्लिम रिवायतों में इसी को अज़ाज़ील यानी शैतान की गिरावट के रूप में बयान किया गया है. अज़ाज़ील शैतान का नाम है. अज़ाज़ील सब फ़रिश्तों का उस्ताद था. अज़ाज़ील शब्द के मानी भी बहुत अच्छे हैं यानी 'अल्लाह का बड़प्पन' लेकिन चीज़ों के ज़रा सा उलट जाने से नतीजा कुछ का कुछ निकल आता है. यहूदी किताबों के अनुसार शैतान अल्लाह का ख़ास फ़रमाबरदार फ़रिश्ता है, और अल्लाह ने लोगों को आज़माने, मज़बूत करने और तरक़्क़ी देने का काम ख़ास तौर पर उसके सुपुर्द कर रखा है. इसी तरह का काम हिन्दू किताबों में नारद के लिये रखा है. नारद के मानी

خودی اور خدا

(ڈاکٹر بھگوان داس)

اِس سے پہلے کے لیکھ میں ہم آتما اور پرماتما یعنی روح اور خدا دونوں کے حقیقی وجود کے ایک ہونے کی بات کہہ چکے ہیں ۔ اِسی کا نام ادیوت وادیعنی وحدۃالوجود ہے ۔ آدمی کا یہ محسوس کرنا کہ وہ ایشور ہی کا ایک انش ہے اُس کی روح اُس نورِ کل (جیوتر مئی) کی ہی ایک چنگاری ہے یا وجود کے اُسی سمندر کی ایک بوند ہے، بہت بڑی اور اونچی بات ہے اور یہی عین حقیقت ہے، لیکن ایک دوسری نگاہ سے اِس وچار کے ساتھ ایک بہت بڑا خطرہ لگا ہوا ہے ۔ یہ وچار جتنا لابھدائک ہو سکتا ہے اُتنا ہی بلکہ اُس سے ادھک ہانکر بھی ہو سکتا ہے ۔ ہر آدمی کے اندر دو طرح کا اپنا پن ہوتا ہے، ایک اُسکی آتما یا روح کا اپنا پن اور دوسرا اُسکے جسم (شریر) اندریوں اور واسناؤں کا اپنا پن ۔ ہر آدمی کے اندر اِن دونوں میں برابر کھینچاتانی ہوتی رہتی ہے ۔ یہی کھینچاتانی خدا اور خودی، پرمارتھ اور سوارتھ کے بیچ کی لگاتار کھینچاتانی ہے ۔ ڈر اِس بات کا ہے کہ آدمی خدا کے ساتھ اپنی ایکتا کو محسوس کرتے کرتے کہیں جان بوجھکر یا انجانے میں اندریوں یعنی نفس امارہ کے ساتھ اپنے کو ایک نہ مان بیٹھے ۔ اگر ایسا ہوا تو وہ اپنے بھیتر خدا کی جگہ شیطان کو لا بٹھائیگا اور بربادی کے راستے پر چل پڑے گا ۔ روحانی سچائیوں کو سمجھنے اور انوبھو کرنے کے لئے خودی کو جیت کر خدا کو اُسکی جگہ دینا ضروری ہے ۔ اِس کے لئے اندریوں یعنی نفس پر قبضہ حاصل کرنا ضروری ہے ۔

آدمی کے اندر کی اِسی کھینچاتانی کو اُپنشدوں میں اندر اور ویروچن کی کہانی کے روپ میں بیان کیا گیا ہے ۔ عیسائی کتابوں اور مسلم روایتوں میں اِسی کو عزازیل یعنی شیطان کی گراوٹ کے روپ میں بیان کیا گیا ہے ۔ عزازیل شیطان کا نام ہے ۔ عزازیل سب فرشتوں کا اُستاد تھا ۔ عزازیل شبد کے معنی بھی بہت اچھے ہیں یعنی ' اللہ کا بڑاپنا' لیکن چیزوں کے ذراسا اُلٹ جانے سے نتیجہ کچھ کا کچھ نکل آتا ہے ۔ یہودی کتابوں کے انوسار شیطان اللہ کا خاص فرمانبردار فرشتہ ہے، اور اللہ نے لوگوں کو آزمانے، مضبوط کرنے اور ترقی دینے کا کام خاص طور پر اُس کے سپرد کر رکھا ہے ۔ اِسی طرح کا کام ہندو پستکوں میں نارد سے لیا گیا ہے ۔ نارد کے معنی

मोह पैदा करता' है. बाहर विष्णु के भक्त हैं और उनका खास काम है राजाओं को एक दूसरे से लड़वाना. एक को दूसरे के सामने ज़लील करें या एक की दूसरे से बुराई करके. इन्द्र भी लोगों को और खास कर ऋषियों को आज़माने और आज़माइशों में डाल कर नीचा ले जाने का काम करते हैं. बौद्ध-धर्म में यही काम मार का है. मार का वही दर्जा है जो कामदेव का.

आदमी का यह धोखा क़रीब क़रीब वैसा ही है जैसा आजकल का कोई सरकारी मुलाज़िम या अफ़सर जनता के पैसे से अपने को जनता का नौकर और सेवक समझने की जगह अपने को उनका मालिक या आक़ा समझ बैठे. या कोई अमानतदार दूसरी क़ौम के माल का अपने को मालिक समझ बैठे. कुल और वर्ण से अपने को ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र समझने की जगह जन्म से अपनी जात मान बैठना भी इसी तरह की एक ग़लती है. इस तरह की ग़लती बड़ी से बड़ी बरकत को भी लानत बना देती है. इसीलिये पुराने ज़माने में वहदतुल वजूद यानी आत्मा और ईश्वर के एक होने की हक़ीक़त सबके सामने बयान नहीं की जाती थी. सब उसके हक़दार या पात्र नहीं होते. यह रूहानी हक़ीक़त जिसके अन्दर प्रेम और नम्रता की जगह नफ़रत और घमंड पैदा करे वह इसके हक़दार नहीं हैं.

पर आज ज़माना बदल गया है. लोगों की सूझ बूझ आम तौर पर बढ़ी हुई है. उसके साथ खुदी यानी अहंकार भी बढ़ता जा रहा है. इसलिये लोगों का ध्यान असलियत की तरफ़ खींचने की ज़रूरत है. मुमकिन है सोई हुई आत्माएं जग उठें. असली धर्म का यही मक़सद है, यानी लोगों को खुदी से हटाकर खुदा की तरफ़ ले चलना. स्वार्थ से हटाकर परमार्थ की तरफ़, अंधेरे से हटाकर रोशनी की तरफ़, असत्य से हटाकर सत्य की तरफ़ और बदी से हटा कर नेकी की तरफ़ ले चलें.

पारसी धर्म की किताब 'गाथा' में लिखा है :—

"ऐ अहुरमज़्द (अल्लाह) हमें इस क़ाबिल बना कि हम अपने दोनों अपनापों यानी नीचे के जिस्मानी अपनापे और ऊपर के रूहानी अपनापे में फ़र्क़ कर सकें. यह दोनों अपनापे जुड़वें ही पैदा हुए हैं. इनमें पहिला अपनापा बुराई की तरफ़ ले जाता है, और दूसरा सदा नेकी की तरफ़ ले जाता है. हमारे सब काम इन्हीं दो से पैदा होते हैं. इनमें से पहिला आदमी को आदमी से अलग करता है और दूसरा आदमी को आदमी से मिलाता है."

यही बात उपनिषदों में तरह तरह से कही गई है. लिखा है :—

"मन दो तरह का होता है, एक शुद्ध और दूसरा अशुद्ध. अशुद्ध मन काम वासना वाले अपने की तरफ़ ले जाता है

موہ پیدا کرنے والا ہے ۔ باہر وشنو کے بھگت ہیں اور ان کا خاص کام ہے راجاؤں کو ایک دوسرے سے لڑوانا ۔ ایک کو دوسرے کے سامنے ذلیل کریں یا ایک کی دوسرے سے برائی کر کے ۔ اندر بھی لوگوں کو اور خاص کر رشیوں کو آزمانے اور آزمائش کے ذریعے نیچا لے جانے کا کام کرتے ہیں ۔ بدھ دھرم میں یہی کام مار کا ہے ۔ مار کا وہی درجہ ہے جو کام دیو کا ۔

آدمی کا یہ دھوکا قریب قریب ویسا ہی ہے جیسا آج کل کا کوئی سرکاری ملازم یا افسر جنتا کے پیسے سے اپنے کو جنتا کا نوکر اور سیوک سمجھنے کی جگہ اپنے کو ان کا مالک یا آقا سمجھ بیٹھے یا کوئی امانت دار دوسری قوم کے مال کا اپنے کو مالک سمجھ بیٹھے ۔ کل اور ورن سے اپنے کو براہمن، چھتری، ویش یا شودر سمجھنے کی جگہ جنم سے اپنی جات مان بیٹھنا بھی اسی طرح کی ایک غلطی ہے ۔ اس طرح کی غلطی بڑی سے بڑی برکت کو بھی لعنت بنا دیتی ہے ۔ اسی لئے پرانے زمانے میں وحدت الوجود یعنی آتما اور ایشور کے ایک ہونے کی حقیقت سب کے سامنے بیان نہیں کی جاتی تھی ۔ سب اس کے حقدار یا پاتر نہیں ہوتے ۔ یہ روحانی حقیقت جن کے اندر پریم اور نمرتا کی جگہ نفرت اور گھمنڈ پیدا کرے وہ اس کے حقدار نہیں ہیں ۔

پر آج زمانہ بدل گیا ہے ۔ لوگوں کی سوجھ بوجھ عام طور پر بڑھی ہوئی ہے ۔ اس کے ساتھ خودی یعنی اہنکار بھی بڑھتا جا رہا ہے ۔ اس لئے لوگوں کا دھیان اصلیت کی طرف کھینچنے کی ضرورت ہے ۔ ممکن ہے سوئی ہوئی آتمائیں جاگ اٹھیں ۔ اصلی دھرم کا یہی مقصد ہے، یعنی لوگوں کو خودی سے ہٹا کر خدا کی طرف لے چلنا ۔ سوارتھ سے ہٹا کر پرمارتھ کی طرف، اندھیرے سے ہٹا کر روشنی کی طرف، استیہ سے ہٹا کر ستیہ کی طرف اور بدی سے ہٹا کر نیکی کی طرف لے چلیں ۔

پارسی دھرم کی کتاب 'گاتھا' میں لکھا ہے :—

" اے اہورمزد (اللہ) ہمیں اس قابل بنا کہ ہم اپنے دونوں اپناپوں یعنی نیچے کے جسمانی اپناپے اور اوپر کے روحانی اپناپے میں فرق کر سکیں ۔ یہ دونوں اپناپے جڑواں ہی پیدا ہوئے ہیں ۔ ان میں پہلا اپناپا برائی کی طرف لے جاتا ہے اور دوسرا سدا نیکی کی طرف لے جاتا ہے ۔ ہمارے سب کام انہیں دو سے پیدا ہوتے ہیں ۔ ان میں سے پہلا آدمی کو آدمی سے الگ کرتا ہے اور دوسرا آدمی کو آدمی سے ملاتا ہے ۔"

یہی بات اپنشدوں میں طرح طرح سے کہی گئی ہے ۔ لکھا ہے :—

" من دو طرح کا ہوتا ہے، ایک شدھ اور دوسرا اشدھ ۔ اشدھ من کام واسنا یعنی خواہش کی طرف لے جاتا ہے

और इसे [illegible] के मुताबिक नेकी और इसकी भलाई की तरफ़ ले जाता है."

कुरान में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों का ज़िक्र आता है. यहूदी किताबों में इन्हीं को होरोत और मोरोत कहा गया है. पारसी किताबों में हौरवात और अमेरेता. वेदों में इन्हीं को ऋत और अनृत कहा गया है. इन्हीं दोनों की कारस्तानी पर आदमी का ऊपर उठना या नीचे गिरना निर्भर है.

इस ख़तरे से हमेशा बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है. कहीं हम ख़ुदी या अहंकार को जो सचमुच हम में शैतान का अंश और सब बुराईयों की जड़ है, अपना असली आपा न समझ बैठें. यही हम में लोभ लालच [illegible] घमंड और दूसरों के ज़र ज़मीन की चाह पैदा करता है. चोरी, डकैती, व्यभिचार, क़त्ल और एक दूसरे पर हमले लड़ाइयाँ जंग और मज़हबी कट्टरता सब इसी से पैदा होते हैं. हमारे अंदर का ख़ुदा कहता रहता है—"ऐ भगवान! सब के दिलों में बैठे हुए परमात्मा तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नहीं." हमारे अन्दर का शैतान बोलता है "मेरी इच्छा पूरी हो तेरी नहीं." हमें लगातार इस शैतान से होशियार रहने की ज़रूरत है. ख़ुदा और शैतान दोनों हमारे अन्दर हैं.

हम इससे पहले के एक लेख में लिख चुके हैं कि साइंस अब सब के अंदर रमी हुई एक अटूट व्यापक चेतना से इनकार नहीं करती. यही [illegible] का परम आत्मा है, साइंस का शुरू का मौलिक चार्ज, [illegible] चार्ज या [illegible]. चेतना के वजूद से अब इनकार नहीं किया जाता. चेतना ही माद्दे के और इन्द्रियों के वजूद को साबित करती है. इन्द्रियाँ माद्दे का अहसास करती हैं. इन्द्रियाँ माद्दा चेतना को साबित नहीं कर सकतीं. यह चेतना ही सब को रोशन किये हुए है और ख़ुद अपने को रोशन किये हुए है.

उपनिषद में लिखा है—"ब्रह्म सब चीज़ों को घेरे हुए है और सबसे पार है. उसी की रोशनी से यह सब चीज़ें रोशन हैं."

क़ुरान में लिखा है—"अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है, अल्लाह ही ज़मीन और आसमानों का नूर है."

इंजील में लिखा है—"उस ईश्वर ही के अंदर सब चीज़ें रहती हैं, हरकत करती हैं और जीती हैं."

"आदमी और हर चीज़ को रोशन करने वाली रोशनी वह ईश्वर ही है."

चीन की किताब [illegible] में लिखा है—"वह ईश्वर सब जानता है, सब देखता है और तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे साथ है."

اور [illegible] میں کام کرتی اِنھیں سے ملا کر نیکی اور سب کی بھلائی کی طرف لے جاتا ہے۔"

قرآن میں ہاروت اور ماروت دو فرشتوں کا ذکر آتا ہے۔ یہودی کتابوں میں اِنھیں کو ہوروت اور موروت کہا گیا ہے۔ پارسی کتابوں میں ہوروات اور امیریتا۔ ویدوں میں اِنھیں کو رِتم اور انرِتم کہا گیا ہے۔ اِنھیں دونوں کی کارستانی پر آدمی کا اوپر اُٹھنا یا نیچے گرنا نربھر ہے۔

اِس خطرے سے ہمیشہ بہت ہوشیار رہنے کی ضرورت ہے۔ کہیں ہم خودی یا اہنکار کو جو سچ مچ ہم میں شیطان کا انش اور سب برائیوں کی جڑ ہے، اپنا اصلی آپا نہ سمجھ بیٹھیں۔ یہی ہم میں لوبھ لالچ غرور گھمنڈ اور دوسروں کے زر زمین کی چاہ پیدا کرتا ہے۔ چوری، ڈکیتی، ویبھی چار، قتل اور ایک دوسرے پر حملے، لڑائی جھگڑے اور مذہبی کٹّرتا سب اِسی سے پیدا ہوتے ہیں۔ ہمارے اندر کا خدا کہتا رہتا ہے—"اے بھگوان! سب کے دلوں میں بیٹھے ہوئے پرم آتما تیری اِچھا پوری ہو، میری نہیں۔" ہمارے اندر کا شیطان بولتا ہے "میری اِچھا پوری ہو تیری نہیں۔" ہمیں لگاتار اِس شیطان سے ہوشیار رہنے کی ضرورت ہے۔ خدا اور شیطان دونوں ہمارے اندر ہیں۔

ہم اِس سے پہلے کے ایک لیکھ میں لکھ چکے ہیں کہ سائنس اب سب کے اندر رمی ہوئی ایک اٹوٹ ویاپک چیتنا سے انکار نہیں کرتی۔ یہی روح کُل یا پرم آتما ہے۔ سائنس کا شروع کا بنیادی چارج، جزو یا مادہ ختم ہو چکا۔ چیتنا کے وجود سے اب انکار نہیں کیا جاتا۔ چیتنا ہی مادے کے اور اِندریوں کے وجود کو ثابت کرتی ہے۔ اِندریاں مادے کو محسوس کرتی ہیں۔ اِندریاں مادہ چیتنا کو ثابت نہیں کر سکتے۔ یہ چیتنا ہی سب کو روشن کئے ہوئے ہے اور یہی خود اپنے کو روشن کئے ہوئے ہے۔

اُپنشد میں لکھا ہے:—"برہم سب چیزوں کو گھیرے ہوئے ہے اور سب سے پار ہے۔ اُسی کی روشنی سے یہ سب چیزیں روشن ہیں۔"

قرآن میں لکھا ہے:—"اللہ سب چیزوں کو گھیرے ہوئے ہے۔ اللہ ہی زمین اور آسمانوں کا نور ہے۔"

انجیل میں لکھا ہے:—"اُس ایشور ہی کے اندر سب چیزیں رہتی ہیں، حرکت کرتی ہیں اور جیتی ہیں۔"

"آدمی اور ہر چیز کو روشن کرنے والی روشنی وہ ایشور ہی ہے۔"

چین کی کتاب [illegible] میں لکھا ہے:—

"وہ ایشور سب سمجھتا ہے، سب دیکھتا ہے اور تمہارے سب کاموں میں تمہارے ساتھ ہے۔"

[illegible] है वही चेतना, ईश्वर की चेतना, आदमी की चेतना, आत्मा की चेतना सब चीजों को अपने में लिये हुए सबको घेरे हुए और सब को रोशन किये हुए है. जानना ही होना है.

सब नाम उसके नाम हैं. सब नामों के पीछे वही एक असलियत है देवी भागवत में लिखा है:—'शैव लोग उसको शिव कह कर पूजा करते हैं, वेदान्ती लोग उसी को ब्रह्म कहते हैं, बौद्ध उसी को बुद्ध कहते हैं, नैयायिक यानी मुन्तक़ी उसी को कर्ता कहते हैं, जैन उसी को अरहंत कहते हैं और मीमांसा वाले उसी को कर्म कहते हैं. वही हरि तीनों लोकों का मालिक है, वही सबकी इच्छाएं पूरी करने वाला है, कोई उसे तप कहता है कोई ज्ञान, कोई प्रकृति, कोई शक्ति; लोग उसे तरह तरह से बयान करने और समझने की कोशिश करते हैं. है वह एक ही हक़ीक़त. अलग अलग मुल्कों और अलग अलग भाषाओं में उसे अलग अलग नामों से पुकारा गया है. ब्रह्म और ब्रह्मा में वही फ़रक़ है—अगर फ़रक़ है तो—जो सूफ़ियों की इस सलाह में अहद और अल्लाह में है. ब्रह्म नाम पारसी किताबों और बौद्ध किताबों दोनों में आता है. अरबी 'हक़' और 'यहिया' इबरानी 'यहोवा' और सामवेद का 'ओऽम्' और 'ओहऽहो' ऐसे ही फ़ीनीशियन 'ईयाओ' सब एक ही शब्द हैं.

यही वह क़ुदरती आवाज़ें हैं जो शुरू के आदमी के मुंह से निकलती हैं. इन्हीं से वह अपने अंदर के अचरज को प्रगट करता है.

ठीक इसी तरह के नाम चीनी धर्म की किताबों और जैन धर्म की किताबों में भी आते हैं. चीनी महापुरुष कनफ़्यूशस ने लिखा है:—"ताओ (ख़ुदा) को अपनी आत्मा के अन्दर ढूंढ़ो और तुम्हें बाक़ी सब बातें अपने आप मालूम हो जायंगी. धर्मात्मा, आदमी अनेक में एक और एक में अनेक, यानी कसरत में वहदत और वहदत में कसरत को देखता है. वह एक सदा एक रस है. वही हमारा आपा है वही सब का आपा है. उससे बढ़ कर कोई जानने की चीज़ नहीं. उसे जान लिया तो सबको जान लिया.

ظاہر ہے [illegible] آتما کی چیتنا سب چیزوں کو اپنے میں لئے ہوئے سب کو گھیرے ہوئے اور سب کو روشن کئے ہوئے ہے۔ جاننا ہی ہونا ہے۔

سب نام اسی کے نام ہیں۔ سب ناموں کے پیچھے وہی ایک اصلیت ہے۔ دیوی بھاگوت میں لکھا ہے:— "شیو لوگ اسکی شو کہکر پوجا کرتے ہیں، ویدانتی لوگ اسی کو برہمہ کہتے ہیں، بودھ اسی کو بودھ کہتے ہیں، نیائیک یعنی منطقی اسی کو کرتا کہتے ہیں، جین اسی کو ارہنت کہتے ہیں اور میمانسا والے اسی کو کرم کہتے ہیں۔ وہی ہری تینوں لوکوں کا مالک ہے، وہی سب کی اچھائیں پوری کرنے والا ہے، کوئی اسے تپ کہتا ہے کوئی گیان، کوئی پرکرتی، کوئی شکتی؛ لوگ اسے طرح طرح سے بیان کرنے اور سمجھنے کی کوشش کرتے ہیں۔ ہے وہ ایک ہی حقیقت۔ الگ الگ ملکوں اور الگ الگ بھاشاؤں میں اسے الگ الگ ناموں سے پکارا گیا ہے۔ برہمہ اور برہما میں وہی فرق ہے—اگر فرق ہے تو—جو صوفیوں کی اس صلح میں احد اور اللہ میں ہے۔ برہم نام پارسی کتابوں اور بودھ کتابوں دونوں میں آتا ہے۔ عربی 'حق' اور 'یحیی' عبرانی 'یہوا' اور سام وید کا 'اوم' اور 'اوہوہو' ایسے ہی فینیشین 'ای یاؤ' سب ایک ہی شبد ہیں۔

یہی وہ قدرتی آوازیں ہیں جو شروع کے آدمی کے منہ سے نکلتی ہیں۔ انہیں سے وہ اپنے اندر کے اچرج کو پرکٹ کرتا ہے۔

ٹھیک اسی طرح کے نام چینی دھرم کے کتابوں اور جین دھرم کی کتابوں میں بھی آتے ہیں۔ چینی مہاپورش کونفیوشس نے لکھا ہے—" تاؤ (خدا) کا اپنی آتما کے اندر ڈھونڈھو اور تمہیں باقی سب باتیں اپنے آپ معلوم ہو جائینگی۔ دھرماتما آدمی انیک میں ایک اور ایک میں انیک، یعنی کثرت میں وحدت اور وحدت میں کثرت کو دیکھتا ہے۔ وہ ایک سدا ایک رس ہے۔ وہی ہمارا آپا ہے وہی سب کا آپا ہے۔ اس سے بڑھکر کوئی جاننے کی چیز نہیں۔ اسے جان لیا تو سب کو جان لیا۔

बापू

[30 जनवरी 1952 को आल इण्डिया रेडियो, इलाहाबाद पर पंडित सुन्दरलाल जी की तक़रीर]

इस देश के राजकाजी मंच पर महात्मा गांधी ऐसे समय सामने आते हैं जिस समय देश को विदेशियों की गुलामी से आज़ाद करने की कोशिश करने वालों में गहरी निराशा छाई हुई थी. अंगरेज़ी राज से भारत को आज़ाद करने की कोशिशों का सूत्रपात हमें अठारहवीं सदी के आख़िर में सबसे पहले हैदर और टीपू की कोशिशों में मिलता है. यह कोशिशें नाकाम गईं. उसके बाद सन् 1857 की आज़ादी की मशहूर लड़ाई आती है, वह भी असफल रही. उन्नीसवीं सदी के आख़ीर के दिनों में पंजाब की कूका की बग़ावत और सरहद पर मुसलमान मुजाहिदों की तहरीक मिलती है. वह भी कोई ख़ास नतीजा पैदा न कर सकी. उन्नीसवीं सदी के आख़ीर में शायद कोई भी छोटा या बड़ा हिन्दुस्तानी यह सपना देखने का साहस न कर सकता था कि यह मुल्क कभी भी अंगरेज़ों के पंजे से आज़ाद हो सकेगा. यह वह समय था जब कि बड़े से बड़े साहसी देशभक्त अधिक से अधिक यही उम्मीद कर सकते थे कि वह अंगरेज़ी राज की छत्रछाया में कुछ पदवियां लें या अपने मुल्क वालों के लिये कुछ और छोटी मोटी रियायतें या सहूलियतें हासिल कर लें. बीसवीं सदी के शुरू में बंगाल के दो टुकड़े हुए, भारत की सोई हुई आत्मा को एक गहरी ठेस लगी. आज़ादी के कुछ नये मतवाले इधर उधर दिखाई देने लगे. रूस जापान युद्ध के नतीजे से उनकी और भी हिम्मत बढ़ी. पर उस समय के देशभक्तों के सामने मिसालें थीं इटली, आयरलैंड और रूस के आज़ादी के संग्रामों की: बम, रिवाल्वर, गुप्त हत्यायें और राजकाजी डाकों के सिवा उन्हें कोई और उपाय न सूझता था. हां, इसके साथ थोड़ी बहुत अंगरेज़ी माल के बायकाट की कोशिश भी की. लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और अरविन्द बाबू इस आन्दोलन के ख़ास नेता थे. इन तरीक़ों से देश में कुछ बेदारी पैदा हुई. अंगरेज़ हाकिमों की अक़ल को भी कुछ धक्का लगा पर चार पांच बरस के अन्दर ही साफ़ दिखाई दे गया कि इन तरीक़ों से देश को आज़ाद कर सकना बिल्कुल नामुमकिन था. जैसा हम कह चुके हैं 1915 के आस पास महात्मा गांधी के दक्खिन अफ़्रीका से भारत आने का समय आज़ादी की कोशिशें करने वालों के लिए गहरी निराशा का ज़माना था. जेल से लौटने के बाद लोकमान्य तिलक को कोई आगे की राह न सूझती थी. लाला लाजपतराय का दिल टूट चुका था. अरविन्द बाबू राजकाज से [illegible] में अपना नया काम शुरू कर चुके थे.

باپو

[30 جنوری 1952 کو آل انڈیا ریڈیو، الہ آباد پر پنڈت سندر لال جی کی تقریر]

اس دیش کے راج کاجی منچ پر مہاتما گاندھی ایسے سمے سامنے آتے ہیں جس سمے دیش کو ودیشیوں کی غلامی سے آزاد کرنے کی کوشش کرنے والوں میں گہری نراشا چھائی ہوئی تھی. انگریزی راج سے بھارت کو آزاد کرنے کی کوششوں کا سوتر پات ہمیں اٹھارویں صدی کے آخر میں سب سے پہلے حیدر اور ٹیپو کی کوششوں میں ملتا ہے. یہ کوششیں ناکام گئیں. اس کے بعد سن 1857 کی آزادی کی مشہور لڑائی آتی ہے، وہ بھی اسپھل رہی. انیسویں صدی کے آخیر کے دنوں میں پنجاب کی کوکا کی بغاوت اور سرحد پر مسلمان مجاہدوں کی تحریک ملتی ہے. وہ بھی کوئی خاص نتیجہ پیدا نہ کر سکی. انیسویں صدی کے آخیر میں شاید کوئی بھی چھوٹا یا بڑا ہندوستانی یہ سپنا دیکھنے کا ساہس نہ کر سکتا تھا کہ یہ ملک کبھی بھی انگریزوں کے پنجے سے آزاد ہو سکے گا. یہ وہ سمے تھا جبکہ بڑے سے بڑے ساہسی دیش بھکت ادھک سے ادھک یہی امید کر سکتے تھے کہ وہ انگریزی راج کی چھتر چھایا میں کچھ پدویاں لے لیں یا اپنے ملک والوں کے لئے کچھ اور چھوٹی موٹی رعایتیں یا سہولتیں حاصل کر لیں. بیسویں صدی کے شروع میں بنگال کے دو ٹکڑے ہوئے، بھارت کی سوئی ہوئی آتما کو ایک گہری ٹھیس لگی. آزادی کے کچھ نئے متوالے ادھر ادھر دکھائی دینے لگے. روس جاپان یدھ کے نتیجے سے ان کی اور بھی ہمت بڑھی. پر اس سمے کے دیش بھکتوں کے سامنے مثالیں تھیں اٹلی، آئرلینڈ اور روس کے آزادی کے سنگراموں کی: بم، ریوالور، گپت ہتیائیں اور راج کاجی ڈاکوں کے سوا انہیں کوئی اور اپائے نہ سوجھتا تھا. ہاں، ان کے ساتھ تھوڑی بہت انگریزی مال کے بائیکاٹ کی کوشش بھی تھی. لوک مانیہ تلک، لالہ لاجپت رائے اور اروند بابو اس آندولن کے خاص نیتا تھے. ان طریقوں سے دیش میں کچھ بیداری پیدا ہوئی. انگریز حاکموں کی اکل کو بھی کچھ دھکا لگا پر چار پانچ برس کے اندر ہی صاف دکھائی دے گیا کہ ان طریقوں سے دیش کو آزاد کر سکنا بالکل ناممکن تھا جیسا ہم کہہ چکے ہیں 1916 کے آس پاس مہاتما گاندھی کے دکھن افریقہ سے بھارت آنے کا سمے آزادی کی کوشش کرنے والوں کے لئے گہری نراشا کا زمانہ تھا. جیل سے لوٹنے کے بعد لوک مانیہ تلک کو کوئی آگے کی راہ نہ سوجھتی تھی. لالہ لاجپت رائے کا دل ٹوٹ چکا تھا. اروند بابو راج کاج سے الگ ہو کر [illegible] میں اپنا کام لے چکے تھے.

गांधी जी के इन उसूलों को 'सर्व धर्म समभाव' का नाम दिया जाता है. अपनी प्रार्थना के अन्दर उनका गीता, क़ुरान, इंजील, ज़िन्द अवस्ता सब को जगह देना और ईश्वर और अल्ला दोनों को उसको नाम मानना इसी सर्व धर्म समभाव के असली रूप हैं. भारत को और इनसानी समाज को गांधी जी की यह दूसरी बड़ी देन थी.

गांधी जी का यह सर्व धर्म समभाव कोई नई चीज़ नहीं है. दुनिया के सब धर्म आचार्य और दुनिया की सब धर्म पुस्तकें यही उपदेश देती रही हैं. ग़लत और संकीर्ण ढंग की धार्मिक तालीम ने और अंगरेज़ों की लिखी हुई इतिहास की झूठी पुस्तकों ने मिलकर हमारे अन्दर अंधविश्वासों, आपसी नफ़रतों और ज़हरीले साम्प्रदायिक भावों को जन्म दिया और उभारा. मुल्क को इससे काफ़ी नुक़सान पहुँचा, वह ज़हर अभी तक देश के जिस्म से निकला नहीं है. पर हालात साबित कर रहे हैं कि इस महान कार्य के लिये महात्मा गांधी का सच्चा बलिदान रामबाण की तरह अपना काम कर गया. हमारे अन्दर का यह ज़हर काफ़ी तेज़ी के साथ कम होता जा रहा है. और जिस दिन भी हमारा राष्ट्रीय शरीर इस ज़हर से बिलकुल पाक होगा उस दिन इसका सबसे बड़ा श्रेय महात्मा गांधी की ज़िन्दगी और उनकी क़ुरबानी को ही मिलेगा.

महात्मा गांधी जनता के आदमी थे. उनकी निगाह बार बार शहरों और शहरवालों से हटकर गांव और वहां की करोड़ों ग़रीब जनता की तरफ़ जाती थी. वह सारी दुनिया की जनता को, सारे इनसानी समाज को एक मानते थे. दुनिया की इस करोड़ों बल्कि अरबों जनता को ही वह 'दरिद्रनारायण' कह कर अपना उपास्य देव मानते थे. आम जनता यानी सब के भले को ही वह सर्वोदय का नाम देते थे. उनका ख़याल था कि सच्चा अहिंसात्मक इनसानी समाज गांव के आज़ाद धंधों को नष्ट करके बड़ी बड़ी मिलों के सहारे क़ायम नहीं हो सकता. इस बात में भी गांधी जी के विचारों के बारे में काफ़ी ग़लतफ़हमी है. गांधी जी सब मशीनों या मिलों के ख़िलाफ़ नहीं थे. साइन्स की अधिक से अधिक तरक़्क़ी के वह पूरी तरफ़दार थे. लेकिन उनका कहना है कि हमारे गांव की आज़ाद ज़िन्दगी, हमारे घरों और कुटुम्बों की ख़ुशी, गांव और खेतों की खुली हवा में प्रकृति के साथ हमारा सम्पर्क और जहां तक हो सके समाज को छोटी से छोटी इकाइयों के लिये स्वावलम्बी होना यानी अपनी ज़रूरतों के लिये दूसरों या बाहर वालों का मोहताज न होना, यह सब ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम हाथ से नहीं खोना चाहते. आदमी की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति और शान्ति के लिये यह लाज़मी

گاندھی جی کے ان اصولوں کو 'سروادھرم سمبھاؤ' کا نام دیا جاتا ہے۔ اپنی پرارتھنا کے اندر ان کا گیتا، قرآن، انجیل، ژند اوستا سب کو جگہ دینا اور ایشور اور الله دونوں کو اس کو نام ماننا اسی سرودھرم سمبھاؤ کے اصلی روپ ہیں۔ بھارت کو اور انسانی سماج کو گاندھی جی کی یہ دوسری بڑی دین تھی۔

گاندھی جی کا یہ سرودھرم سمبھاؤ کوئی نئی چیز نہیں ہے۔ دنیا کے سب دھرم آچاریہ اور دنیا کی سب دھرم پستکیں یہی اپدیش دیتی رہی ہیں۔ غلط اور سنکیرن ڈھنگ کی دھارمک تعلیم نے اور انگریزوں کی لکھی ہوئی اتہاس کی جھوٹی پستکوں نے ملکر ہمارے اندر اندھ وشواسوں، آپسی نفرتوں اور زہریلے سامپردائیک بھاؤں کو جنم دیا اور ابھارا۔ ملک کو اس سے کافی نقصان پہونچا، وہ زہر ابھی تک دیش کے جسم سے نکلا نہیں ہے۔ پر حالات ثابت کر رہے ہیں کہ اس مہان کاریہ کے لئے مہاتما گاندھی کا سچا بلیدان رام بان کی طرح اپنا کام کر گیا۔ ہمارے اندر کا یہ زہر کافی تیزی کے ساتھ کم ہوتا جا رہا ہے۔ اور جس دن بھی ہمارا راشٹریہ شریر اس زہر سے بالکل پاک ہوگا اس دن اس کا سب سے بڑا شریہ مہاتما گاندھی کی زندگی اور ان کی قربانی کو ہی ملے گا۔

مہاتما گاندھی جنتا کے آدمی تھے۔ ان کی نگاہ بار بار شہروں اور شہر والوں سے ہٹ کر گاؤں اور وہاں کی کروڑوں غریب جنتا کی طرف جاتی تھی۔ وہ ساری دنیا کی جنتا کو، سارے انسانی سماج کو ایک مانتے تھے۔ دنیا کی اس کروڑوں بلکہ اربوں جنتا کو ہی وہ 'دریدر نارائن' کہکر اپنا اپاسیہ دیو مانتے تھے۔ عام جنتا یعنی سب کے بھلے کو ہی وہ سروودے کا نام دیتے تھے۔ ان کا خیال تھا کہ سچا اہنساتمک انسانی سماج گاؤں کے آزاد دھندوں کو نشٹ کر کے بڑی بڑی ملوں کے سہارے قائم نہیں ہو سکتا۔ اس بات میں بھی گاندھی جی کے وچاروں کے بارے میں کافی غلط فہمی ہے۔ گاندھی جی سب مشینوں یا ملوں کے خلاف نہیں تھے۔ سائنس کی ادھک سے ادھک ترقی کے وہ پوری طرح طرفدار تھے۔ لیکن ان کا کہنا ہے کہ ہمارے گاؤں کی آزاد زندگی، ہمارے گھروں اور کٹمبوں کی خوشی، گاؤں اور کھیتوں کی کھلی ہوا میں پرکرتی کے ساتھ ہمارا سمپرک اور جہاں تک ہو سکے سماج کو چھوٹی سے چھوٹی اکائیوں کے لئے سواولمبی ہونا یعنی اپنی ضرورتوں کے لئے دوسروں یا باہر والوں کا محتاج نہ ہونا، یہ سب ایسی چیزیں ہیں جنہیں ہم ہاتھ سے نہیں کھونا چاہتے۔ آدمی کی نیتک اور [illegible] کے لئے یہ لازمی

और [illegible]. इन चीज़ों को [illegible] जाती हैं. उनका यह भी कहना था कि जब तक हमारे गांव आज़ाद और स्वावलम्बी न होंगे तब तक छीना-झपटी के बाज़ार का नाश न होगा, यह शोषण और अत्याचार का नाश मिट नहीं सकता और न जंगों की संभावना दूर हो सकती है. इसलिये बड़ी बड़ी मशीनों और कारखानों के उपयोग चंद धंधों में एक हद और ठीक हद तक चाहते थे. उनका कहना था कि हमारी ज़िन्दगी की आम दिन की ज़रूरत की चीज़ें ख़ासकर हमारा खाना और कपड़ा घरेलू धंधों से ही तैयार होना चाहिये. बाकी बहुत सी चीज़ों के वह मशीनों से बनने के हक़ में थे. मिसाल के लिये कागज़ का बनाया जाना वह मशीनों से ही ठीक मानते थे. गांधीवाद या गांधी जी के विचारों का यही ख़ास आर्थिक यानी माली पहलू है. दुनिया को महात्मा गांधी की यह तीसरी बड़ी देन है.

इस देश में भी अभी हमारे राजकाजी नेता गांधी जी के इन आर्थिक विचारों की ठीक ठीक क़द्र नहीं कर पा रहे हैं लेकिन इस बात के लक्षण काफ़ी मौजूद हैं कि इस तरफ़ भी दुनिया के विचारवान अर्थशास्त्रियों का ध्यान धीरे धीरे झुकता जा रहा है. लोग इस बात को महसूस करने लगे हैं कि जब तक ज़िन्दगी की मामूली ज़रूरतों के लिये हमें बड़े बड़े कल कारख़ानों का सहारा लेना पड़ता है तब तक युद्ध का डर दुनिया से नहीं मिट सकता.

महात्मा गांधी अपने ज़माने के इनसानी एकता और शान्ति के सबसे बड़े पुजारी थे. युद्ध को वह दुनिया से हमेशा के लिये मिटा देना चाहते थे. दुनिया की इस समय की ख़राबियों के उनके बताए हुए इलाज कोई अनोखे इलाज नहीं हैं, फिर भी वह हमें अभी बहुत आगे ज़माने की सूचना दे रहे हैं. हमें विश्वास है कि केवल अपने देश में ही नहीं बाहर की तरक़्क़ी पसन्द दुनिया में भी, गांधी जी के बताए हुए उसूलों और उनके दिखाए हुए रास्ते की क़द्र बढ़ेगी. दुनिया इस बात को समझेगी कि महात्मा गांधी कोई कोरे आदर्शवादी या रजअत पसन्द प्रतिक्रियावादी या गैरअमली इनसान नहीं थे बल्कि अच्छे से अच्छे मानों में इस ज़माने के एक ऊंचे दर्जे के विचारक दुनिया के सबसे होशियार अमली सुधारक और एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी थे.

اور روحانی ترقی، ان چیزوں کو ضروری مانتے تھے۔ ان کا یہ کہنا تھا کہ جب تک ہمارے گاؤں آزاد اور سوالمبی نہ ہونگے تب تک لوٹ کھسوٹ کی آگ شانت نہ ہوگی، لوٹ کھسوٹ اور سلطنت کی پیاس مٹ نہیں سکتی اور نہ جنگوں کی سمبھاونا دور ہو سکتی ہے۔ اس لئے وہ بڑی مشینوں اور جہازوں کے اپیوگ مختلف دھندوں میں ایک حد اور ٹھیک حد تک چاہتے تھے۔ ان کا کہنا تھا کہ ہماری زندگی کی آئے دن کی ضرورت کی چیزیں خاص کر ہمارا کھانا اور کپڑا گھریلو دھندوں سے ہی تیار ہونا چاہئے۔ باقی بہت سی چیزوں کے وہ مشینوں سے بننے کے حق میں تھے۔ مثال کے لئے کاغذ کا بنایا جانا وہ مشینوں سے ہی ٹھیک مانتے تھے۔ گاندھی واد یا گاندھی جی کے وچاروں کا یہی خاص آرتھک یعنی مالی پہلو ہے۔ دنیا کو مہاتما گاندھی کی یہ تیسری بڑی دین ہے۔

اس دیش میں بھی ابھی ہمارے راج کاجی نیتا گاندھی جی کے ان آرتھک وچاروں کی ٹھیک ٹھیک قدر نہیں کر پا رہے ہیں لیکن اس بات کے لکشن کافی موجود ہیں کہ اس طرف بھی دنیا کے وچاروان ارتھ شاستریوں کا دھیان دھیرے دھیرے مڑتا جا رہا ہے۔ لوگ اس بات کو محسوس کرنے لگے ہیں کہ جب تک زندگی کی معمولی ضرورتوں کے لئے ہمیں بڑے بڑے کل کارخانوں کا سہارا لینا پڑتا ہے تب تک یدھ کا ڈر دنیا سے نہیں مٹ سکتا۔

مہاتما گاندھی اپنے زمانے کے انسانی ایکتا اور شانتی کے سب سے بڑے پجاری تھے۔ یدھ کو وہ دنیا سے ہمیشہ کے لئے مٹا دینا چاہتے تھے۔ دنیا کی اس سمے کی مصیبتوں کے ان کے بتائے ہوئے علاج کوئی انوکھے علاج نہیں ہیں، پھر بھی وہ ہمیں ابھی بہت آگے زمانے کی سوچنا دے رہے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ کیول اپنے دیش میں ہی نہیں باہر کی ترقی پسند دنیا میں بھی گاندھی جی کے بتائے ہوئے اصولوں اور ان کے دکھائے ہوئے راستے کی قدر بڑھے گی۔ دنیا اس بات کو سمجھے گی کہ مہاتما گاندھی کوئی کورے آدرش وادی یا رجعت پسند پرتی کریا وادی یا غیر عملی انسان نہیں تھے بلکہ اچھے سے اچھے معنی میں اس زمانے کے ایک اونچے درجے کے وچارک دنیا کے سب سے ہوشیار عملی سدھارک اور ایک بہت بڑے کرانتی کاری تھے۔

इस्लाम की सीख

[तारीख 6-11-'51 को अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में विनोबा जी का भाषण.]

आज मुझे बहुत खुशी है कि मैं आप लोगों के बीच आ सका हूँ. इस जगह के बारे में मैंने बहुत सुन रखा था और कभी यहां आने का मौका मिलेगा, ऐसा भी मान रखा था. जब तक गांधीजी थे, वह देश में घूमते थे. इसलिये तब तक मैंने देश में घूमने का सोचा ही नहीं. वह मुल्क से जो काम लेना चाहते थे लेते थे, उन कामों में जो कुछ मुझसे हो सकता था, उसमें मैं लगा रहता और उसी में मुझे खुशी होती थी और शांति मिलती थी. लेकिन गांधी जी के जाने के बाद कुछ ऐसी हालत पैदा हो गई, जिसके कारन लोगों ने कहा और मुझे भी लगा कि मुझे देश में घूमना चाहिये. पहले साल दो साल मैंने इधर उधर घूमकर देख लिया. कुछ सेवा का काम करने का मौका मिला. खासकर मेवात में तो कुछ ठीक काम हो सका.

तेलंगाना का काम.

फिर मैं अपने आश्रम में पहुँचा और सोचने लगा कि इस देश में शान्ति का तरीका चलाना हो और देश की तरक्की भी शांति के तरीके से करनी हो, तो रेल में घूमने फिरने से कोई नतीजा नहीं निकल सकता. क्योंकि मुझे तो लोगों के दिलों में घुसना था. पर रेलवे और मोटर के सफर से वह काम नहीं हो सकता था. इसलिये मैंने पैदल चलना तय किया. यह नहीं कि मैंने ऐसा कोई व्रत ले लिया कि 'और किसी साधन का इस्तेमाल ही नहीं करूंगा' लेकिन पैदल चलकर देहात देहात में प्रेम का पैगाम लोगों को सुनाना मैंने जरूरी समझा. आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि मुझे पिछले दिनों तेलंगाना में जाने का मौका मिला था. वहां की हालत का बयान मैं लफ्जों में नहीं कर सकता. सारे लोग डरे हुए थे. जमींदार लोग देहात छोड़ कर भाग गये थे, शहरों में जा कर रहते थे. धनवान लोग भी भाग गये थे. जान-माल को काफी नुकसान पहुँच चुका था. कम्युनिस्टों से लोग तंग आ चुके थे. इधर रात को कम्युनिस्ट आकर सताते थे, तो दिन में मिलिटरी और पुलिस परेशान करती थी. इस तरह जनता दोनों से तंग आ चुकी थी. ऐसी हालत में मैं वहां पहुंचा. मैं यहां सारा किस्सा बयान नहीं करूंगा. इतना ही कह देना काफी होगा कि मैंने, जितनी मुझसे हो सकती थी, सबकी सेवा करने की कोशिश की. जमीनवालों की, गरीबों की, कम्युनिस्टों की, किसानों

اسلام کی سیکھ

[تاریخ 6-11-'51 کو علیگڑھ یونیورسٹی میں ونوبا جی کا بھاشن .]

آج مجھے بہت خوشی ہے کہ میں آپ لوگوں کے بیچ آسکا ہوں ۔ اِس جگہ کے بارے میں میں نے بہت سن رکھا تھا اور کبھی یہاں آنے کا موقع ملیگا' ایسا بھی مان رکھا تھا ۔ جب تک گاندھی جی تھے' وہ دیش میں گھومتے تھے ۔ اِسلئے تب تک میں نے دیش میں گھومنے کا سوچا ہی نہیں ۔ وہ ملک سے جو کام لینا چاہتے تھے لیتے تھے' اُن کاموں میں جو کچھ مجھ سے ہو سکتا تھا' اُس میں میں لگا رہتا اور اُسی میں مجھے خوشی ہوتی تھی اور شانتی ملتی تھی ۔ لیکن گاندھی جی کے جانے بعد کچھ ایسی حالت پیدا ہوگئی' جس کے کارن لوگوں نے کہا اور مجھے بھی لگا کہ مجھے دیش میں گھومنا چاہئے. پہلے سال دو سال میں نے اِدھر اُدھر گھوم کر دیکھ لیا. کچھ سیوا کا کام کرنے کا موقع ملا. خاصکر میوات میں تو کچھ ٹھیک کام ہوسکا.

تیلنگانا کا کام

پھر میں اپنے آشرم میں پہنچا اور سوچنے لگا کہ اس دیش میں شانتی کا طریقہ چلانا ہو اور دیش کی ترقی بھی شانتی کے طریقے سے کرنی ہو' تو ریل میں گھومنے پھرنے سے کوئی نتیجہ نہیں نکل سکتا. کیونکہ مجھے تو لوگوں کے دلوں میں گھسنا تھا. پر ریلوے اور موٹر کے سفر سے یہ کام نہیں ہو سکتا تھا. اس لئے میں نے پیدل چلنا طے کیا یہ نہیں کہ میں نے ایسا کوئی برت لیا کہ 'اور کسی سادھن کا استعمال ہی نہیں کرونگا' لیکن پیدل چلکر دیہات دیہات میں پریم کا پیغام لوگوں کو سنانا میں نے ضروری سمجھا. آپ میں سے کچھ لوگ جانتے ہونگے کہ مجھے پچھلے دنوں تیلنگانا میں جانے کا موقع ملا تھا. وہاں کی حالت کا بیان میں لفظوں میں نہیں کر سکتا. سارے لوگ ڈرے ہوئے تھے. زمیندار لوگ دیہات چھوڑکر بھاگ گئے تھے' شہروں میں جاکر رہتے تھے . دھنی وان لوگ بھی بھاگ گئے تھے . جان مال کو کافی نقصان پہنچ چکا تھا . کمیونسٹوں سے لوگ تنگ آچکے تھے . اِدھر رات کو کمیونسٹ آکر ستاتے تھے' تو دن میں ملٹری اور پولیس پریشان کرتی تھی . اِس طرح جنتا دونوں سے تنگ آ چکی تھی . ایسی حالت میں میں وہاں پہنچا . میں یہاں سارا قصہ بیان نہیں کرونگا . اِتنا ہی کہ دینا کافی ہوگا کہ میں نے' جتنی مجھ سے ہو سکتی تھی' سب کی سیوا کرنے کی کوشش کی . [illegible] کی' غریبوں کی' کمیونسٹوں کی' کسانوں کی'

[illegible] की; क्योंकि उनकी जितनी कोशिश दूर करने की हो सकती थी उतनी मैंने की थी, इसलिये ग़रीबों के लिये हमदर्द होना लाज़िमी था. पर श्रीमानों का भी मैं दोस्त था और कम्युनिस्टों का भी. कम्युनिस्ट छिपकर रहते थे. जंगली जानवरों की जिस तरह तलाश होती है, वैसी उनकी भी तलाश होती थी. मैं सोच रहा था कि कोई ऐसा रास्ता निकले जिससे शांति क़ायम हो सके. तब मेरे ध्यान में आया कि यहां ज़मीन का एक ऐसा मसला है, जिसके हल होने से शांति क़ायम हो सकती है.

सरकार ने शांति क़ायम करने के लिये वहां मिलिटरी भेज रखी थी, जिस पर पांच करोड़ रुपया सालाना खर्च होता था. लेकिन ऐसे मसले मिलिटरी से हल नहीं हो सकते. जहां सिर्फ़ शेरों का शिकार करने का सवाल हो वहां मिलिटरी काम कर सकती है. लेकिन जहां विचार का मुक़ाबला करना हो वहां विचार से ही यह काम हो सकता था.

ज़मीन की बात.

तो यह ज़मीन का मसला मेरे ध्यान में आ गया था. लेकिन ज़मीन मांगना कोई आसान बात नहीं है. ज़मीन के लिये बाप बेटों में झगड़े होते हैं. और फिर जैसे-जैसे आबादी बढ़ती जा रही है, ज़मीन की क़ीमतें भी बढ़ती जा रही हैं. इसलिये ज़मीन मांगने की हिम्मत करना बहुत मुश्किल काम है. लेकिन मैंने परमात्मा का नाम लेकर ज़मीन मांगना शुरू कर दिया. जो परमेश्वर सबके दिलों में मौजूद है उसकी हस्ती श्रीमानों के दिलों में भी होनी चाहिये. अगर हमारे दिलों में परमेश्वर जागता है, तो सबके दिलों में वह ज़रूर जागेगा. इसलिये लोगों को समझाने की जितनी ताक़त मेरे पास थी, वह सब मैंने लगा दी. आखिर लोगों के दिल पिघल गये. वहां की हालत पूरी सुधर गई, ऐसा नहीं कह सकते; पर इसमें शक नहीं कि हालत काफ़ी सुधरी है.

भगवान अधूरा काम नहीं करता.

फिर मैं वर्धा आया और खेती के काम में लग गया. बारिश के बाद उत्तर दिशा में ज़मीन मांगते-मांगते गांव गांव घूमता हुआ अब चला आ रहा हूं. मैं मानता हूं कि मुझे परमेश्वर ने मांगने की प्रेरणा दी है और जब उसने मुझे मांगने की प्रेरणा दी तो वह औरों को देने की प्रेरणा भी देगा. वह अधूरा काम नहीं करता. बच्चे को पैदा करता है तो मां के पास दूध का इन्तज़ाम भी कर देता है. यह नहीं हो सकता कि वह भूख को पैदा करे और खुराक पैदा न करे. इसलिये मेरा विश्वास है कि यह जो ज़मीन मांगने का काम शुरू हुआ है उससे न सिर्फ़ हिन्दुस्तान पर [illegible] दुनिया को रास्ता मिलेगा.

کمیونسٹوں کی' مصیبت جتنی بھی دور کی [illegible] کی سیوا کی' کیونکہ مجھ سے جتنی کوشش خود غریب بھلے کی ہو سکتی تھی اتنی میں نے کی تھی' اس لئے غریبوں کے لئے ہمدرد ہونا لازمی تھا. پر شریمانوں کا بھی میں دوست تھا اور کمیونسٹوں کا بھی. کمیونسٹ چھپ کر رہتے تھے. جنگلی جانوروں کی جس طرح تلاش ہوتی ہے' ویسی ان کی بھی تلاش ہوتی تھی. میں سوچ رہا تھا کہ کوئی ایسا راستہ نکلے جس سے شانتی قائم ہوسکے. تب میرے دھیان میں آیا کہ یہاں زمین کا ایک ایسا مسئلہ ہے جس کے حل ہونے سے شانتی قائم ہو سکتی ہے.

سرکار نے شانتی قائم کرنے کے لئے وہاں ملیٹری بھیج رکھی تھی' جس پر پانچ کروڑ روپیہ سالانہ خرچ ہوتا تھا. لیکن ایسے مسئلے ملیٹری سے حل نہیں ہوسکتے. جہاں صرف شیروں کا شکار کرنے کا سوال ہو وہاں ملیٹری کام کرسکتی ہے. لیکن جہاں وچار کا مقابلہ کرنا ہو وہاں وچار سے ہی وہ کام ہوسکتا تھا.

زمین کی بات.

تو یہ زمین کا مسئلہ میرے دھیان میں آگیا تھا. لیکن زمین مانگنا کوئی آسان بات نہیں ہے. زمین کے لئے باپ بیٹے میں جھگڑے ہوتے ہیں. اور پھر جیسے جیسے آبادی بڑھتی جارہی ہے زمین کی قیمتیں بھی بڑھتی جارہی ہیں' اس لئے زمین مانگنے کی ہمت کرنا بہت مشکل کام ہے. لیکن میں نے پرماتما کا نام لے کر زمین مانگنا شروع کر دیا. جو پرمیشور سب کے دلوں میں موجود ہے اس کی ہستی شریمانوں کے دلوں میں بھی ہونی چاہئے. اگر ہمارے دلوں میں پرمیشور جاگتا ہے' تو سب کے دلوں میں وہ ضرور جاگے گا. اس لئے لوگوں کو سمجھانے کی جتنی طاقت میرے پاس تھی' وہ سب میں نے لگا دی. آخر لوگوں کے دل پگھل گئے. وہاں کی حالت پوری سدھر گئی' ایسا نہیں کہہ سکتے؛ پر اس میں شک نہیں کہ حالت کافی سدھری ہے.

بھگوان ادھورا کام نہیں کرتا.

پھر میں وردھا آیا اور کھیتی کے کام میں لگ گیا. بارش کے بعد اتر دشا میں زمین مانگتے مانگتے گاؤں گاؤں گھومتا ہوا اب چلا جا رہا ہوں. میں مانتا ہوں کہ مجھے پرمیشور نے مانگنے کی پریرنا دی ہے' اور جب اس نے مجھے مانگنے کی پریرنا دی تو وہ لوگوں کو دینے کی پریرنا بھی دے گا. وہ ادھورا کام نہیں کرتا. بچے کو پیدا کرتا ہے تو ماں کے پاس دودھ کا انتظام بھی کر دیتا ہے. یہ نہیں ہوسکتا کہ وہ بھوک تو پیدا کرے اور خوراک پیدا نہ کرے. اس لئے میرا وشواس ہے کہ یہ جو زمین مانگنے کا کام شروع ہوا ہے اس سے نہ صرف ہندوستان ہی جاگے گا بلکہ ساری دنیا کو راستہ ملیگا

यह चन्द शब्द मैंने अपने ख़ुद के बारे में कहे. अब आप लोगों के लिये कुछ बातें कह दूं.

अपने पर क़ाबू पाने का हल.

आप सब लोग तालिबे-इल्म हैं, विद्यार्थी हैं. बग़ैर पढ़े इन्सान की तरक़्क़ी नहीं हो सकती. इस वास्ते अपनी ज़िन्दगी के कुछ साल पूरे पढ़ाई में ही लगा देते हैं, यह ठीक है. लेकिन इल्म के साथ और भी कोई चीज़ है जिसके बग़ैर ख़ाली इल्म किसी काम का नहीं. मैं अपने अनुभव से और बड़ों के अनुभव से कह सकता हूँ कि सब इल्मों में बड़ा इल्म अपने ख़ुद पर क़ाबू पाना है. विद्यार्थियों को और सब को यह इल्म हासिल करना चाहिये. इसके साथ ही सब इल्म कारगर होते हैं. इसके बग़ैर सब बेकार हैं. घोड़े पर अगर क़ाबू है तो सवार के लिये घोड़ा कारगर है. लेकिन अगर क़ाबू न रहा तो घोड़ा ही सवार हो जाता है. यही हालत हमारे बारे में है. अपने पर क़ाबू पाने का रास्ता बचपन से ही पकड़ सकते हैं. इंद्रियों पर क़ाबू पाना, मन पर क़ाबू पाना बहुत ज़रूरी है. अगर हम समझें कि हम ही मन हैं तो मन को हम दुरुस्त नहीं कर सकते. इसलिये यह पहचानने की ज़रूरत है कि हम मन नहीं हैं बल्कि मन हमारा नौकर है और हम मन के मालिक हैं. बहुत से लोग अपने को आज़ाद मानते हैं. वह कहते हैं कि हम किसी का नहीं मानेंगे. हम किसी के ग़ुलाम नहीं हैं, अपने मन की करेंगे. मैं कहता हूं कि ठीक बात है पर आप को अपने मन के मुआफ़िक़ नहीं करना चाहिए, अपने ख़ुद के मुआफ़िक़ करना चाहिए. मन के मुआफ़िक़ करने का अर्थ है "नौकर के मुआफ़िक़ करना". मन में तो अच्छाईयां और बुराइयां दोनों ही होती हैं. लेकिन हमें मन को नेक बनाना है. इसलिए अच्छाइयों को बढ़ाना है, उन पर अमल करना है और बुराइयों को निकालना है. अगर हम मन को नेता बनाते हैं तो हम आज़ाद नहीं रहेंगे, ग़ुलाम बन जायेंगे. अकसर लोग सोचते हैं कि हमें अपने जज़्बात के मुआफ़िक़ काम करना चाहिये. जज़्बात यानी भावनायें भाप की तरह होती हैं. भाप अगर इंजन में बन्द रहती है तो ताक़त पैदा करती है. अगर खोल दी जाती है तो हवा में गुम हो जाती है और ताक़त की शक्ल नहीं ले सकती. इसलिये करना यह चाहिये कि भावनाओं को पकड़े रहना चाहिये, सब्र से काम लेना चाहिये. अगर सब्र रखते हैं तो जज़्बात रोकी हुई भाप के मुआफ़िक़ कारगर हो सकते हैं. बहादुर वह हैं जिन्होंने अपने जज़्बात पर क़ाबू पा लिया, जो सोच विचार कर काम करते हैं. इसलिये पहला काम अपने जज़्बात पर क़ाबू पाना और उन्हें ठीक रास्ते पर ले जाना है—उस रास्ते, जिस रास्ते से कामयाब लोग गये हैं. उनके

یہ چند شبد میں نے اپنے خود کے بارے میں کہے۔ اب آپ لوگوں کے لئے کچھ باتیں کہ دوں۔

اپنے پر قابو پانے کا حل۔

آپ سب لوگ طالب علم ہیں، ودیارتھی ہیں۔ بغیر پڑھے انسان کی ترقی نہیں ہوسکتی۔ اس واسطے اپنی زندگی کے کچھ سال پورے پڑھائی میں ہی لگا دیتے ہیں، یہ ٹھیک ہے۔ لیکن علم کے ساتھ اور بھی کوئی چیز ہے جس کے بغیر خالی علم کسی کام کا نہیں۔ میں اپنے انوبھو سے اور بڑوں کے انوبھو سے کہ سکتا ہوں کہ سب علموں میں بڑا علم اپنے خود پر قابو پانا ہے۔ ودیارتھیوں کو اور سب کو یہ علم حاصل کرنا چاہئے۔ اس کے ساتھ ہی سب علم کارگر ہوتے ہیں۔ اس کے بغیر سب بیکار ہیں۔ گھوڑے پر اگر قابو ہے تو سوار کے لئے گھوڑا کارگر ہے۔ لیکن اگر قابو نہ رہا تو گھوڑا ہی سوار ہو جاتا ہے۔ یہی حالت ہمارے بارے میں ہے۔ اپنے پر قابو پانے کا راستہ بچپن سے ہی پکڑ سکتے ہیں۔ اندریوں پر قابو پانا، من پر قابو پانا بہت ضروری ہے۔ اگر ہم سمجھیں کہ ہم ہی من ہیں تو من کو ہم درست نہیں کرسکتے۔ اس لئے یہ پہچاننے کی ضرورت ہے کہ ہم من نہیں ہیں بلکہ من ہمارا نوکر ہے اور ہم من کے مالک ہیں۔ بہت سے لوگ اپنے کو آزاد مانتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ ہم کسی کا نہیں مانیں گے۔ ہم کسی کے غلام نہیں ہیں، اپنے من کی کریں گے۔ میں کہتا ہوں کہ ٹھیک بات ہے پر آپ کو اپنے من کے موافق نہیں کرنا چاہئے، اپنے خود کے موافق کرنا چاہئے۔ من کے موافق کرنے کا ارتھ ہے ''نوکر کے موافق کرنا''۔ من میں تو اچھائیاں اور برائیاں دونوں ہی ہوتی ہیں۔ لیکن ہمیں من کو نیک بنانا ہے۔ اس لئے اچھائیوں کو بڑھانا ہے، ان پر عمل کرنا ہے اور برائیوں کو نکالنا ہے۔ اگر ہم من کو نیتا بناتے ہیں تو ہم آزاد نہیں رہیں گے، غلام بن جائیں گے۔ اکثر لوگ سوچتے ہیں کہ ہمیں اپنے جذبات کے موافق کام کرنا چاہئے۔ جذبات یعنی بھاونائیں بھاپ کی طرح ہوتی ہیں۔ بھاپ اگر انجن میں بند رہتی ہے تو طاقت پیدا کرتی ہے۔ اگر کھول دی جاتی ہے تو ہوا میں گم ہو جاتی ہے اور طاقت کی شکل نہیں لے سکتی۔ اس لئے کرنا یہ چاہئے کہ بھاوناؤں کو پکڑے رہنا چاہئے، صبر سے کام لینا چاہئے۔ اگر صبر رکھتے ہیں تو جذبات روکی ہوئی بھاپ کے موافق کارگر ہوسکتے ہیں۔ بہادر وہ ہیں جنہوں نے اپنے جذبات پر قابو پالیا، جو سوچ وچار کر کام کرتے ہیں۔ اس لئے پہلا کام اپنے جذبات پر قابو پانا اور انہیں ٹھیک راستے پر لے جانا ہے— اس راستے، جس راستے سے کامیاب لوگ گئے ہیں۔ ان کے

(लड़कियों से) [illegible] है. मैं आशा करता हूँ कि आप लोग इस पर ध्यान देंगे, यह असली शिक्षा है. किताबी शिक्षा से यह नहीं हो सकेगा. किताबी शिक्षा से लोग गुलाम बन जाते हैं.

पैदावार बढ़ाइये.

दूसरी बात जो मुझे आपसे कहनी है वह पैदावार बढ़ाने के बारे में है. हमारे देश में आज पैदावार की बहुत कमी है. खाने का दूध, अनाज, फल, कपड़ा—जिधर देखो उधर सब तरह की कमी ही कमी है. और हर तरह से जरूरत इस बात की है कि पैदावार बढ़े. ऐसी हालत में हम लोगों का फर्ज हो जाता है कि हम भले वह काम करते हों, जो दुनिया की निगाह में बढ़िया हों, लेकिन बिना पैदावार किये हिन्दुस्तान का यह मसला हल होना संभव नहीं है. आप चाहे जैसी योजना बनाइये, अगर सारे लोग उसे कामयाब बनाने को तैयार नहीं होते हैं तो वह योजना कागज पर ही रह जाती है. इसलिये हम सभी को, चाहे वह विद्यार्थी हों या प्रोफेसर, व्यापारी हों या जमींदार, कुछ न कुछ पैदावार करनी चाहिये. इसलिये गांधी जी ने हमारे सामने चरखा रखा था जिसे छोटे-बड़े सभी इस्तेमाल कर सकते हैं. लेकिन उनका मकसद सिर्फ चरखे से ही नहीं था. जो लोग कुदाली चला सकते हैं वह कुदाली भी चलावें. जो चक्की चला सकते हैं चक्की चलावें, बगीचे में काम कर सकते हैं तो करें. लेकिन पैदावार बढ़ाने में हाथ बंटाना सब का फर्ज है.

परमेश्वर ने हर एक को दिमाग दिया है, हर एक को हाथ दिये हैं और सूझ भी दी है. अगर उसकी यह मंशा होती कि कुछ लोग पैदावार ही करते रहें और कुछ लोग दिमागी काम करते रहें तो कुछ को वह सिर्फ हाथ ही हाथ देता और कुछ को सिर ही सिर; क्योंकि वह सब तरह की ताकत रखता है. लेकिन उसने ऐसा नहीं किया. सबको सूझ दी और काम करने के लिये हाथ भी दिये. यह नहीं हो सकता कि कुछ लोग केवल लिखने पढ़ने का ही काम करते रहें और कुछ को हाथ का ही काम करना पड़े. जब हम अपने मुल्क में सब तरह की चीजों की कमी महसूस करते हैं—कपड़े की, दूध की, अनाज की—तो मैं आप लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब को कुछ न कुछ पैदावार करना ही चाहिये.

युनिवर्सिटी कलचर का नमूना हो.

तीसरी बात यह है कि जिस जगह हम अभी आये हैं उससे हमारे देश वाले बहुत सी आशाएँ रखते हैं. यह एक युनिवर्सिटी का मुकाम है इसकी शुरुआत एक अच्छे विचार से हुई है. हमारे देश का इतिहास बनाने में इस युनिवर्सिटी ने काफी हिस्सा लिया है. यहीं बड़े

(لڑکیوں سے) ہم لوگوں کی طرح کام لیں ... میں آشا کرتا ہوں کہ آپ لوگ اس پر دھیان دیں گے، یہ اصلی ودیا ہے۔ کتابی ودیا سے یہ نہیں ہو سکے گا۔ کتابی ودیا سے لوگ غلام بن جاتے ہیں۔

پیداوار بڑھائیے۔

دوسری بات جو مجھے آپ سے کہنی ہے وہ پیداوار بڑھانے کے بارے میں ہے۔ ہمارے دیش میں آج پیداوار کی بہت کمی ہے۔ گھر کا دودھ، اناج، پھل، کپڑا—جدھر دیکھو ادھر سب طرح کی کمی ہی کمی ہے۔ اور ہر طرح ضرورت اس بات کی ہے کہ پیداوار بڑھے۔ ایسی حالت میں ہم لوگوں کا فرض ہو جاتا ہے کہ ہم بھلے وہ کام کرتے ہوں، جو دنیا کی نگاہ میں ضروری ہوں، لیکن بنا پیداوار کئے ہندوستان کا یہ مسئلہ حل ہونا سمبھو نہیں ہے۔ آپ چاہے جیسی یوجنا بنائیے، اگر سارے لوگ اسے کامیاب بنانے کو تیار نہیں ہوتے ہیں تو وہ یوجنا کاغذ پر ہی رہ جاتی ہے۔ اس لئے ہم سبھی کو، خواہ وہ ودیارتھی ہوں یا پروفیسر، بیوپاری ہوں یا زمیندار، کچھ نہ کچھ پیداوار کرنی چاہئے۔ اس لئے گاندھی جی نے ہمارے سامنے چرخہ رکھا تھا جسے چھوٹے بڑے سبھی استعمال کر سکتے ہیں۔
لیکن ان کا مقصد صرف چرخے سے ہی نہیں تھا۔ جو لوگ کدالی چلا سکتے ہیں وہ کدالی بھی چلائیں۔ جو چکی چلا سکتے ہیں چکی چلائیں، باغیچے میں کام کر سکتے ہیں تو کریں۔ لیکن پیداوار بڑھانے میں ہاتھ بٹانا سب کا فرض ہے۔

پرمیشور نے ہر ایک کو دماغ دیا ہے، ہر ایک کو ہاتھ دئے ہیں اور سوجھ بھی دی ہے۔ اگر اس کی یہ منشا ہوتی کہ کچھ لوگ پیداوار ہی کرتے رہیں اور کچھ لوگ دماغی کام کرتے رہیں تو کچھ کو وہ صرف ہاتھ ہی ہاتھ دیتا اور کچھ کو سر ہی سر؛ کیونکہ وہ سب طرح کی طاقت رکھتا ہے۔ لیکن اس نے ایسا نہیں کیا۔ سب کو سوجھ دی اور کام کرنے کے لئے ہاتھ بھی دئے۔ یہ نہیں ہو سکتا کہ کچھ لوگ کیول لکھنے پڑھنے کا ہی کام کرتے رہیں اور کچھ کو ہاتھ کا ہی کام کرنا پڑے۔ جب ہم اپنے ملک میں سب طرح کی چیزوں کی کمی محسوس کرتے ہیں—کپڑے کی، دودھ کی، اناج کی—تو میں آپ لوگوں سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ ہم سب کو کچھ نہ کچھ پیداوار کرنا ہی چاہئے۔

یونیورسٹی کلچر کا نمونہ ہو۔

تیسری بات یہ ہے کہ جس جگہ ہم ابھی آئے ہیں اس سے ہمارے دیش والے بہت سی امیدیں رکھتے ہیں۔ یہ ایک یونیورسٹی کا مقام ہے۔ اس کی شروعات ایک اچھے وچار سے ہوئی ہے۔ ہمارے دیش کا اتہاس بنانے میں اس یونیورسٹی نے کافی حصہ لیا ہے۔ ہمیں یہاں

अपनी तहजीब और कल्चर का दर्शन होना चाहिये और उसका नमूना मिलना चाहिये. इस देश में इस्लाम आया. उसने अपनी खूबियां बख्शीं, ईसाई मत आया, उसने भी कुछ खूबियां दीं. सब ने अपनी अपनी खुसूसियत दी. हर एक में कुछ न कुछ गुण होते हैं, कमियां भी होती हैं, बुराइयां भी होती हैं. खूबियां लेने और बुराइयां छोड़ने का यह काम युनिवर्सिटी कर सकती है.

मुसलमानों की देन.

हिन्दू और मुसलमान दोनों की खूबियों से हमारा यह देश बना बना है. हर जमात ने बुरे-भले दोनों तरह के काम किये हैं. बुराइयों को भुलाना, अच्छाइयों को बढ़ाना, इसी में देश का भला है. हिन्दुओं को यह नहीं समझना चाहिये कि उन्होंने ही इस मुल्क को बनाया है. मुसलमानों ने भी इस मुल्क को काफी देन दी है. यह भी सोचना चाहिये कि आखिर यह सब लोग यहीं के तो हैं. मुसलमानों को भी यह सोचना चाहिये कि हिन्दू और हम एक ही हैं. हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी साधू संत हुए हैं. दोनों के धर्म किताबों को दोनों को गौर से पढ़ना चाहिये.

मांस खाना छोड़िये.

हर धर्म की कुछ न कुछ खुसूसियत होती है. मैं मानता हूं कि हमारे समाज को एक न एक दिन बिना मांस के खुराक पर पहुंचना है. मैं जानता हूं कि अनाज की कमी के कारन इन दिनों में यह बात मुश्किल है, लेकिन कभी न कभी गोश्त छोड़ना होगा जैसे जैनियों ने छोड़ दिया है; और हिन्दू धर्म की इस खूबी को अपनाना होगा. ईसाई लोगों ने हिन्दुस्तान के कोढ़ियों की सेवा की. उनके जीवन में सेवा की भावना बहुत है. ईसा के जीवन में भी यह भावना पाई जाती है. ईसाइयों का यह गुण भी हमें लेना चाहिये.

इस्लाम में अच्छे भाईचारे की भावना है. हमें यह गुण भी लेना चाहिये. मेरा मतलब यह है कि हर धर्म ने समाज को कुछ न कुछ अच्छी चीजें दी हैं. हमें चाहिये कि उनको समझें और उन्हें अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें. मैं आशा करता हूं कि हम इस मुल्क में प्रेम का वातावरन पैदा करने में कामयाब हो सकेंगे.

सब रसूल एक हैं.

एक बात और. मैंने इस्लाम को कुछ पढ़ा है. मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उसका आलिम बन गया हूं. लेकिन कुरान शरीफ को समझने की कोशिश मैंने की है. इस्लाम का कलमा "ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मदुर् रसूलिल्लाह..." मैं बहुत पसंद करता हूं. इसके एक हिस्से में कहा गया है कि अल्लाह एक है. इस बात को सभी मान सकते हैं. आगे कहा गया है कि मुहम्मद 'अल्लाह' का

بھی [illegible] ملنا چاہئے۔ اس دیش میں اسلام آیا۔ اس نے اپنی خوبیاں بخشیں، عیسائی مت آیا اس نے بھی کچھ خوبیاں دیں۔ سب نے اپنی اپنی خصوصیت دیں۔ ہر ایک میں کچھ نہ کچھ گن ہوتے ہیں، کمیاں بھی ہوتی ہیں، برائیاں بھی ہوتی ہیں۔ خوبیاں لینے اور برائیاں چھوڑنے کا یہ کام آپ کی یونیورسٹی کر سکتی ہے۔

مسلمانوں کی دین۔

ہندو اور مسلمان دونوں کی خوبیوں سے ہمارا یہ دیش بڑا بنا ہے۔ ہر جماعت نے برے بھلے دونوں طرح کے کام کئے ہیں۔ برائیوں کو بھلانا، اچھائیوں کو بڑھانا اسی میں دیش کا بھلا ہے۔ ہندوؤں کو یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ انہوں نے ہی اس ملک کو بنایا ہے۔ مسلمانوں نے بھی اس ملک کو کافی دین دی ہے۔ یہ بھی سوچنا چاہئے کہ آخر یہ سب لوگ یہیں کے تو ہیں۔ مسلمانوں کو بھی یہ سوچنا چاہئے کہ ہندو اور ہم ایک ہی ہیں۔ ہندوؤں کی طرح مسلمانوں میں بھی سادھو سنت ہوئے ہیں۔ دونوں کے دھرم کتابوں کو دونوں کو غور سے پڑھنا چاہئے۔

مانس کھانا چھوڑئے۔

ہر دھرم کی کچھ نہ کچھ خصوصیت ہوتی ہے۔ میں مانتا ہوں کہ ہمارے سماج کو ایک نہ ایک دن بنا مانس کے خوراک پر پہنچنا ہے۔ میں جانتا ہوں کہ اناج کی کمی کے کارن ان دنوں میں یہ بات مشکل ہے، لیکن کبھی نہ کبھی گوشت چھوڑنا ہوگا جیسے جینیوں نے چھوڑ دیا ہے؛ اور ہندو دھرم کی اس خوبی کو اپنانا ہوگا۔ عیسائی لوگوں نے ہندوستان کے کوڑھیوں کی سیوا کی۔ ان کے جیون میں سیوا کی بھاونا بہت ہے۔ عیسیٰ کے جیون میں بھی یہ بھاونا پائی جاتی ہے۔ عیسائیوں کا یہ گن بھی ہمیں لینا چاہئے۔

اسلام میں اچھے بھائی چارے کی بھاونا ہے۔ ہمیں یہ گن بھی لینا چاہئے۔ میرا مطلب یہ ہے کہ ہر دھرم نے سماج کو کچھ نہ کچھ اچھی چیزیں دی ہیں۔ ہمیں چاہئے کہ ان کو سمجھیں اور انہیں اپنے جیون میں اتارنے کی کوشش کریں۔ میں آشا کرتا ہوں کہ ہم اس ملک میں پریم کا واتاورن پیدا کرنے میں کامیاب ہو سکیں گے۔

سب رسول ایک ہیں۔

ایک بات اور۔ میں نے اسلام کو کچھ پڑھا ہے۔ میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ میں اس کا عالم بن گیا ہوں۔ لیکن قرآن شریف کو سمجھنے کی کوشش میں نے کی ہے۔ اسلام کا کلمہ "لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ........" میں بہت پسند کرتا ہوں۔ اس کے ایک حصے میں کہا گیا ہے کہ اللہ ایک ہے۔ اس بات کو سبھی مان سکتے ہیں۔ آگے کہا گیا ہے کہ محمد اللہ کا

रसूल है [illegible] मतलब यह मानते हैं कि मुहम्मद ही एक अल्लाह का रसूल है. लेकिन यह अर्थ गलत है. इस्लाम ने तो यह कहा कि "ला नुफ़र्रिकु बैन-अहदिम् मिर्रुसुलिह्" यानी दुनिया में जितने रसूल आये हैं उन सब में हम कोई फर्क नहीं करते. यह इस्लाम का एक बुनियादी यकीन है. इसलिये मुहम्मद अल्लाह का रसूल है, इस वचन का सीधा अर्थ इतना ही है कि ईश्वर की जगह कोई नहीं ले सकता, मुहम्मद भी नहीं ले सकते. वह अल्लाह के एक रसूल की तरह हैं.

मुहम्मद यानी भगवान का ही एक रूप.

यहां मुहम्मद का अर्थ सिर्फ मुहम्मद नहीं समझना चाहिये, बल्कि राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, जरथुस्त वगैरा सब का मिलान उसमें समझ लेना चाहिए. इस तरह अगर कलमे के इस हिस्से का हम व्यापक अर्थ लें, तो यह कलमा सारी दुनिया के लिये सही हो सकता है. हां, कुछ लोग यह जरूर कह सकते हैं कि हमारे लिये मुहम्मद पैगम्बर काफी हैं. बच्चे के लिये उसका अपना अब्बा या पिता काफी होता है. दूसरों के पिता की भी वह इज्जत करेगा, लेकिन अपने पिता में अकीदत या निष्ठा उसके लिये पूरा सहारा या आधार दे सकती है. वैसी ही यह बात है. जैसे सिक्खों ने कहा कि हमारे लिये दस गुरु हो गये हैं और इसके आगे कोई गुरु नहीं होगा. यह उनके लिये ठीक हो सकता है लेकिन सारी दुनिया के ख्याल से यह नहीं कहा जायगा कि आगे कोई गुरु होने वाला ही नहीं है. परमेश्वर की कुदरत के लिये हम इस तरह की कोई मर्यादा नहीं बना सकते. अपने अपने विश्वास की एक मर्यादा होती है. इसलिये अपने निज के लिये कोई एकाध गुरु, पैगम्बर या मार्ग दर्शक काफी हो सकता है और ऐसा हम कह भी सकते हैं. लेकिन उसका अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि उसमें किसी दूसरे रहबर या गुरु की गुंजाइश ही न रखी जाय. इसी तरह व्यापक दृष्टि रखने पर सब धर्मों का मेल हो सकता है.

इस तरह आप देखेंगे तो पायेंगे कि हिन्दुस्तान के इस्लाम ने एक खास काम किया है, एक खास देन दी है. मैं बाहर के इस्लाम की बात नहीं कहता. उसी तरह ईसाई धर्म के बारे में है. मैंने मलाबार में देखा है कि वहां के लोग शंकराचार्य के विचारों के साथ ईसा के विचारों का मेल कर देते हैं. इसलिये मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान का एक खास इस्लाम है, और हिन्दुस्तान का एक खास ईसाई धर्म भी है.

प्यारे भाइयों, मैंने जो कुछ कहा, खालिस प्रेम से कहा. वैसे ही कहा है जैसे अपने से कहता हूं.

—विनोबा.

رسول ہے اس کے معنی کیا سمجھے جائیں؟ کچھ لوگ اس کا مطلب یہ بتاتے ہیں کہ محمد ہی ایک اللہ کا رسول ہے لیکن یہ ارتھ غلط ہے۔ اسلام نے تو یہ کہا ہے کہ "لانفرق بین احد من رسلہ" یعنی دنیا میں جتنے رسول آئے ہیں ان سب میں ہم کوئی فرق نہیں کرتے۔ یہ اسلام کا ایک بنیادی یقین ہے۔ اسی لئے محمد اللہ کا رسول ہے' اس وچن کا سیدھا ارتھ اتنا ہی ہے کہ ایشور کی جگہ کوئی نہیں لے سکتا' محمد بھی نہیں لے سکتے۔ وہ اللہ کے ایک رسول کی طرح ہیں۔

محمد یعنی بھگوان کا ہی ایک روپ۔

یہاں محمد کا ارتھ صرف محمد نہیں سمجھنا چاہئے' بلکہ رام' کرشن' بدھ' مہاویر' عیسی' زرتشت وغیرہ سب کا ملن اس میں سمجھ لینا چاہئے۔ اس طرح اگر کلمے کے اس حصے کا ہم ویاپک ارتھ لیں' تو یہ کلمہ ساری دنیا کے لئے صحیح ہو سکتا ہے۔ ہاں' کچھ لوگ یہ ضرور کہہ سکتے ہیں کہ ہمارے لئے محمد پیغمبر کافی ہیں۔ بچے کے لئے اس کا اپنا ابا یا پتا کافی ہوتا ہے۔ دوسروں کے پتا کی بھی وہ عزت کرے گا' لیکن اپنے پتا میں عقیدت یا نشٹھا اس کے لئے پورا سہارا یا آدھار دے سکتی ہے۔ ویسی ہی یہ بات ہے۔ جیسے سکھوں نے کہا کہ ہمارے لئے دس گرو ہو گئے ہیں اور اس کے آگے کوئی گرو نہیں ہوگا۔ وہ ان کے لئے ٹھیک ہو سکتا ہے لیکن ساری دنیا کے خیال سے یہ نہیں کہا جائے گا کہ آگے کوئی گرو ہونے والا ہی نہیں ہے۔ پرمیشور کی قدرت کے لئے ہم اس طرح کی کوئی مریادا نہیں بنا سکتے۔ اپنے اپنے وشواس کی ایک مریادا ہوتی ہے۔ اس لئے اپنے نج کے لئے کوئی ایک آدھ گرو' پیغمبر یا مارگ درشک کافی ہو سکتا ہے اور ایسا ہم کہہ بھی سکتے ہیں۔ لیکن اس کا ارتھ یہ نہیں ہونا چاہئے کہ اس میں کسی دوسرے رہبر یا گرو کی گنجائش ہی نہ رکھی جائے۔ اسی طرح ویاپک درشٹی رکھنے پر سب دھرموں کا میل ہو سکتا ہے۔

اس طرح آپ دیکھیں تو پائیں گے کہ ہندستان کے اسلام نے ایک خاص کام کیا ہے' ایک خاص دین دی ہے۔ میں باہر کے اسلام کی بات نہیں کہتا۔ اسی طرح عیسائی دھرم کے بارے میں ہے۔ میں نے مالابار میں دیکھا ہے کہ وہاں کے لوگ شنکراچاریہ کے وچاروں کے ساتھ عیسی کے وچاروں کا بھی میل کر دیتے ہیں۔ اس لئے میرا ماننا ہے کہ ہندستان کا ایک خاص اسلام ہے' اور ہندستان کا ایک خاص عیسائی دھرم بھی ہے۔

پیارے بھائیو' میں نے جو کچھ کہا' خالص پریم سے کہا' ویسے ہی کہا ہے جیسے اپنے سے کہتا ہوں۔

—ونوبا

जापान के उद्योग-धन्धे और हिन्दुस्तान

(जे. सी. कुमारप्पा)

[हाल ही में जापानी एक्सपर्टों का एक डेलीगेशन हमारे देश में आया था जिसने हिन्दुस्तान के कारखाने देखे और हिन्द जापान के बीच व्योपारी तालुक़ क़ायम करने के लिये हिन्द सरकार से बात चीत भी की. हमें उम्मीद है कि जापान से कोई राज़ी नामा करने के पहले हिन्द सरकार खूब सोच समझ लेगी. हम नीचे डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का एक गम्भीर लेख ग्राम उद्योग पत्रिका से लेकर दे रहे हैं. डाक्टर कुमारप्पा दिसम्बर के महीना में जापान का दौरा करके लौटे हैं. उनके यह सुझाव बहुत ग़ौर करने लायक़ हैं.—एडीटर]

इधर कुछ अरसे से इस बात की बड़ी चर्चा चल रही है कि जिस तरह छोटे पैमाने पर उद्योग-धन्धे चला कर जापान ने अपने यहां की पैदावार बढ़ा ली है उसकी नक़ल हिन्दुस्तान भी करे. कोशिश यह हो रही है कि जापानी औज़ार, हथियार और मशीनें यहां मंगाई जायें और उन्हें अपनाया जावे. लेकिन यह किसी को ख़याल नहीं है कि जापान का आर्थिक संगठन कैसा है. आया वह उसके जीवन का हिस्सा है या नहीं, उसके इतिहास, परम्परा और रीति-रिवाज से मेल खाता है या नहीं. बनावटी तौर पर जापानी हालतों को यहां पर हू-बहू पैदा कर देने से हमारा कुछ भी भला नहीं होने वाला है. हमारे देश में जो देहाती उद्योग-धन्धे नहीं चल रहे हैं इसकी वजह यह है कि क्या सरकार, क्या जनता किसी को इसकी कोई परवाह ही नहीं है. काग़ज़ की नाव कितनी ही ख़ूबसूरत क्यों न हो चल नहीं सकती.

हम देखते हैं कि जापानियों ने पच्छिमी पहनावा वग़ैरह अपना लिया है. फिर भी उनकी घरेलू ज़िन्दगी अब तक पुराने ढर्रे पर चली जाती है. शायद वहां की तालीम या समाजी लोकाचार का यह असर हो कि एक राष्ट्र की हैसियत से जापानी लोग देहाती उद्योग-धन्धों की चीज़ों की बहुत क़द्र करते हैं. उनके मकान हाथ के बने काग़ज़ से सजाये जाते हैं, फ़र्श पर मूंज या बांस की चटाइयां बिछाई जाती हैं और खाने के बरतन लिखावटदार चीनी मिट्टी के रहते हैं. घर पर लोग कोट-पतलून या फ़्राक न पहन कर ढीला जापानी लिबास इस्तेमाल करते हैं. पैरों में वह लोग घास और [illegible] की बनी [illegible] या [illegible]

جاپان کے ادیوگ دھندے اور ہندستان

(جے. سی. کمارپا)

[حال ہی میں جاپانی ایکسپرٹوں کا ایک ڈیلی گیشن ہمارے دیش میں آیا تھا جس نے ہندستان کے کارخانے دیکھے اور ہند جاپان کے بیچ بیوپاری تعلق قائم کرنے کے لئے ہند سرکار سے بات چیت بھی کی. ہمیں امید ہے کہ جاپان سے کوئی راضی نامہ کرنے کے پہلے ہند سرکار خوب سوچ سمجھ لے گی. ہم نیچے ڈاکٹر جے. سی. کمارپا کا ایک گمبھیر لیکھ گرام ادیوگ پتریکا سے لے کر دے رہے ہیں. ڈاکٹر کمارپا دسمبر کے مہینے میں جاپان کا دورہ کر کے لوٹے ہیں. ان کے یہ سجھاؤ بہت غور کرنے لائق ہیں—ایڈیٹر]

ادھر کچھ عرصے سے اس بات کی بڑی چرچا چل رہی ہے کہ جس طرح چھوٹے پیمانے پر ادیوگ دھندے چلا کر جاپان نے اپنے یہاں کی پیداوار بڑھا لی ہے اس کی نقل ہندستان بھی کرے. کوشش یہ ہو رہی ہے کہ جاپانی اوزار، ہتھیار اور مشینیں یہاں منگائی جائیں اور انہیں اپنایا جائے. لیکن یہ کسی کو خیال نہیں ہے کہ جاپان کا آرتھک سنگٹھن کیسا ہے. آیا یہ اس کے جیون کا حصہ ہے یا نہیں، اس کے اتہاس، پرمپرا اور رسم و رواج سے میل کھاتا ہے یا نہیں. بناوٹی طور پر جاپانی حالتوں کو یہاں پر ہو بہو پیدا کر دینے سے ہمارا کچھ بھی بھلا نہیں ہونے والا ہے. ہمارے دیش میں جو دیہاتی ادیوگ دھندے نہیں چل رہے ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ کیا سرکار، کیا جنتا کسی کو ان کی کوئی پرواہ ہی نہیں ہے. کاغذ کی ناؤ کتنی ہی خوبصورت کیوں نہ ہو چل نہیں سکتی.

ہم دیکھتے ہیں کہ جاپانیوں نے پچھمی پہناوا وغیرہ اپنا لیا ہے. پھر بھی ان کی گھریلو زندگی اب تک پرانے طرز پر چلی جاتی ہے. شاید وہاں کی تعلیم یا سماجی لوکاچار کا یہ اثر ہو کہ ایک راشٹر کی حیثیت سے جاپانی لوگ دیہاتی ادیوگ دھندوں کی چیزوں کی بہت قدر کرتے ہیں. ان کے مکان ہاتھ کے بنے کاغذ سے سجائے جاتے ہیں، فرش پر مونج یا بانس کی چٹائیاں بچھائی جاتی ہیں اور کھانے کے برتن لکھاوٹدار چینی مٹی کے رہتے ہیں. گھر پر لوگ کوٹ پتلون یا فراک نہ پہن کر ڈھیلا جاپانی لباس استعمال کرتے ہیں. پیروں میں وہ [illegible] کی بنی لکڑی یا [illegible]

तरह की [illegible] है [illegible]
मांग को [illegible] है [illegible]
के बारे में यह लोग खुद के भी बनाये 'केन' इस्तेमाल करते हैं, खुद के टोप ओढ़ते हैं और खुद के थैलों में सामान रखते हैं. आम तौर से, हम लोगों के मुकाबले इनकी आदत ऐसी चीज़ें इस्तेमाल करने की कहीं ज़ियादा है. हमारे देश में तो हाथ की बनी चीज़ को नीची निगाह से देखा जाता है. पर खुशी की बात है कि जापानियों के शौक इतने नीचे नहीं गिरे हैं. यह लोग जो मशीन की बनी चीज़ें इस्तेमाल करते हैं तो व्यापार और आमदनी के ख्याल से न कि अपनी पसंद की वजह से. इस क़ौमी मांग के कारन देहाती उद्योग-धन्धों की चीज़ों की वहां पर बहुत काफी गुंजाइश रहती है. अगर हम देहाती उद्योग-धन्धों को बढ़ाना चाहते हैं तो हम पहला काम यह करें कि इन धन्धों में बनने वाले माल के लिये बढ़ता हुआ बाज़ार खड़ा करें. पर हमारे यहां तो एक दम उल्टी दिलचस्पी पैदा की जाती है. इसलिये माल तैयार करने के जापानी ढंग को अपनाने के पेश्तर यह ज़रूरी है कि हम उनके दैनिक जीवन से एक-दो सबक सीखें, ताकि हम भी हाथ की बनी चीज़ की कद्र कर सकें और यह समझ सकें कि इन से जीवन को सरस और हरा-भरा बनाने में कितनी मदद मिलती है.

जापान में घूम फिर कर और वहां के उद्योगों को देखकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि शायद ही कोई ऐसी दस्तकारी वहां की है जो हम ज्यों-की-त्यों अपने यहां दाखिल कर सकें. बहुत एहतियात के साथ हम को समझना होगा कि हमारे यहां का वातावरण कैसा है, क्या क्या साधन हमारे पास हैं, हमारे यहां लोगों के रुझान और रीति-रिवाज कैसे हैं. जो कोई भी दस्तकारी हम शुरू करें उसे यहां की हालतों के मुताबिक बैठाना चाहिये. इस तरह अगर अपनी आर्थिक व्यवस्था में हम माकूल तब्दीलियां करना चाहते हैं तो उसके पहले कुछ बातों का पूरा हो जाना निहायत ज़रूरी है. वह हम नीचे दे रहे हैं—

1. सरकार और जनता के बीच वह चौड़ी खाई नहीं होनी चाहिये जो आर्थिक, समाजी और तालीमी लिहाज़ से हमारे देश में मौजूद है. इस का इलाज यही है कि जापान में जो समता का हिसाब है वह यहां भी लागू कर दिया जावे और तालीम सबको दी जावे.

2. जापानियों की तरह हम भी अपनी चीज़ों की कद्र करना सीखें. सरकारी हलकों में इस बात पर खास ध्यान दिये जाने की ज़रूरत है.

3. हमारे यहां चीज़ों की जो मांग [illegible]
[illegible]

[illegible] پیروں کی چیز بنتی ہیں۔ یہ ہاتھ کے [illegible]
بانس کی چھتریاں استعمال کرتے ہیں۔ [illegible]
حفاظت کے واسطے یہ لوگ پیروں کے بنی ہوئی [illegible]
استعمال کرتے ہیں، پیروں کے ٹوپ اوڑھتے ہیں اور
پیروں کے تھیلوں میں سامان رکھتے ہیں۔ عام طور سے
ہم لوگوں کے مقابلے ان کی عادت ایسی چیزیں استعمال
کرنے کی کہیں زیادہ ہے۔ ہمارے دیش میں تو ہاتھ کی
بنی چیز کو نیچی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ پر خوشی کی
بات ہے کہ جاپانیوں کے شوق اتنے نیچے نہیں گرے ہیں۔
یہ لوگ جو مشین کی بنی چیزیں استعمال کرتے ہیں
تو بیوپار اور آمدنی کے خیال سے نہ کہ اپنی پسند کی
وجہ سے۔ اس قومی مانگ کے کارن دیہاتی ادیوگ
دھندوں کی چیزوں کی وہاں پر بہت کافی گنجائش
رہتی ہے۔ اگر ہم دیہاتی ادیوگ دھندوں کو بڑھانا
چاہتے ہیں تو ہم پہلا کام یہ کریں کہ ان دھندوں میں
بننے والے مال کے لئے بڑھتا ہوا بازار کھڑا کریں۔ پر
ہمارے یہاں تو ایک دم الٹی دلچسپی پیدا کی جاتی
ہے۔ اس لئے مال تیار کرنے کے جاپانی ڈھنگ کو اپنانے
کے پہلے یہ ضروری ہے کہ ہم ان کے دینک جیون سے
ایک دو سبق سیکھیں تاکہ ہم بھی ہاتھ کی بنی چیز
کی قدر کرسکیں اور یہ سمجھ سکیں کہ ان سے جیون
کو سرس اور ہرا بھرا بنانے میں کتنی مدد ملتی ہے۔

جاپان میں گھوم پھر کر اور وہاں کے ادیوگوں کو
دیکھ کر میں اس نتیجے پر پہنچا کہ شاید ہی کوئی
ایسی دستکاری وہاں کی ہے جو ہم جوں کی توں یہاں داخل
کرسکیں۔ بہت احتیاط کے ساتھ ہم کو سمجھنا ہوگا
کہ ہمارے یہاں کا واتاورن کیسا ہے، کیا کیا سادھن ہمارے
پاس ہیں، ہمارے یہاں لوگوں کے رجحان اور رسم ورواج
کیسے ہیں۔ جو کوئی بھی دستکاری ہم شروع کریں اسے
یہاں کی حالتوں کے موافق بٹھانا چاہئے۔ اس طرح اگر
اپنی آرتھک ویوستھا میں ہم مناسب تبدیلیاں
کرنا چاہتے ہیں تو اس کے پہلے کچھ باتوں کا پورا ہو
جانا انتہائی ضروری ہے۔ وہ ہم نیچے دے رہے ہیں—

1. سرکار اور جنتا کے بیچ وہ چوڑی کھائی نہیں
ہونی چاہئے جو آرتھک، سماجی اور تعلیمی لحاظ سے
ہمارے دیش میں موجود ہے۔ اس کا علاج یہی ہے کہ
جاپان میں جو برابری کا حساب ہے وہ یہاں بھی لاگو کر
دیا جائے اور تعلیم سب کو دی جائے۔

2. جاپانیوں کی طرح ہم بھی اپنی چیزوں کی
قدر کرنا سیکھیں۔ سرکاری حلقوں میں اس بات پر خاص
دھیان دیئے جانے کی ضرورت ہے۔

3. ہمارے یہاں چیزوں کی جو مانگ پیدا ہو
اس کا [illegible] اور [illegible]

[illegible] यह सोचना हमारी अपनी जरूरत के मुताबिक चलना चाहिये. आजकल तो हम वही वह नमूने और फैशन अपनाये हुए हैं जो अंगरेजों ने जारी किये थे और हम उन्हीं के ढांचे पर अपनी आर्थिक रचना कर रहे हैं.

4. खोज और छानबीन हो पर देहाती उद्योग-धन्धों के सम्बन्ध में हो. आजकल इस तरफ रत्ती भर भी काम नहीं किया जा रहा है.

5. अगर मांग ऐसी चीजों की हो जैसे बाइसकिल, सिलाई-मशीन, घड़ी-घंटे वगैरह और नये कारखाने जमाने की जरूरत पड़े तो सरकार को चाहिये कि इस मौके से फायदा उठा कर अपने उन पुराने कारीगरों को काम पर लगा दे, जैसे लोहार, जुलैया, सुनार वगैरह जो बेरोजगार हैं. यह कारखाने ट्रेनिंग सेन्टर और नमूना-मंडल का काम दे सकेंगे.

6. जहां तक खेती का वास्ता है हमें सिंचाई का जापानी ढंग अख्तियार कर लेना चाहिये. हमें चाहिये कि दरियाओं को मुहाने पर ही बांध लें, पहाड़ी झरनों पर डाम बना लें और नहरें निकाल कर बिना कुछ लगान लिये खेतों में पानी पहुंचायें.

7. नमूना खेतों, फिल्म और लेक्चरों के जरिये किसानों को समझाया जाये और बताया जाये कि क्या क्या नई तरक्की हुई है.

8. मुकाबले करा करा कर और अच्छी पैदावार के लिये इनाम बांट बांट कर काश्तकार को बढ़ावा दिया जाये.

9. बिना किसी जानकार आदमी के बताये कोई कीमिया खाद हरगिज इस्तेमाल न की जाये. जानकार लोगों को चाहिये कि हर जमीन की मिट्टी देखें, उसे जांचें और फिर बतायें किस किस्म की और कितनी खाद उस जमीन में दी जानी चाहिये.

10. कारखानों के वास्ते कच्चा माल देने वाली फसलों के मुकाबले उन पर टैक्स लगा कर अनाज की फसलों को बढ़ावा दिया जाये ताकि दोनों तरह की खेती साथ साथ चले.

11. जमीन का मालिक जोतने वाला ही होना चाहिये. जमींदारों के पास जमीन बेशी है वह काश्तकारों में बांट दी जाये.

12. लगान नकदी के बजाये जिन्स में वसूल किया जाये और वह भी तब जब यह हिसाब लगा लिया जाये कि काश्तकार और उसके खानदान के मुनासिब खर्च के बाद कितना उसके पास बचता है.

13. सरकार को चाहिये कि खेती-बाड़ी और देहाती धंधों की चीजों के बिकने में मदद दे और [illegible] जाने में सुविधा पहुंचाये.

[illegible] کے مطابق چلنا چاہئے۔ آج کل تو ہم لوگ وہ نمونے اور فیشن اپنائے ہوئے ہیں جو انگریزوں نے جاری کئے تھے اور ہم انہیں کے ڈھانچے پر اپنی آرتھک رچنا کر رہے ہیں۔

4. کھوج اور چھان بین ہو پر دیہاتی ادیوگ دھندوں کے سمبندھ میں ہو۔ آج کل اس طرف رتی بھر بھی کام نہیں کیا جا رہا ہے۔

5. اگر مانگ ایسی چیزوں کی ہو جیسے بائیسکل، سلائی مشین، گھڑی گھنٹے وغیرہ اور نئے کارخانے جمانے کی ضرورت پڑے تو سرکار کو چاہئے کہ اس موقعہ سے فائدہ اٹھا کر اپنے ان پرانے کاریگروں کو کام پر لگا دے، جیسے لوہار، جلاہا، سنار وغیرہ جو بے روزگار ہیں۔ یہ کارخانے ٹریننگ سینٹر اور نمونا منڈل کا کام دے سکینگے۔

6. جہاں تک کھیتی کا واسطہ ہے ہمیں سینچائی کا جاپانی ڈھنگ اختیار کر لینا چاہئے۔ ہمیں چاہئے کہ دریاؤں کو مہانے پر ہی باندھ لیں، پہاڑی جھرنوں پر ڈام بنا لیں اور نہریں نکال کر بنا کچھ لگان لئے کھیتوں میں پانی پہنچائیں۔

7. نمونہ کھیتوں، فلم اور لکچروں کے ذریعہ کسانوں کو سمجھایا جائے اور بتایا جائے کہ کیا کیا نئی ترقی ہوئی ہے۔

8. مقابلے کرا کرا کر اور اچھی پیداوار کے لئے انعام بانٹ بانٹ کر کاشتکار کو بڑھاوا دیا جائے۔

9. بنا کسی جانکار آدمی کے بتائے کوئی کیمیا کھاد ہرگز استعمال نہ کی جائے۔ جانکار لوگوں کو چاہئے کہ ہر زمین کی مٹی دیکھیں، اسے جانچیں اور پھر بتائیں کہ کس قسم کی اور کتنی کھاد اس زمین میں دی جانی چاہئے۔

10. کارخانوں کے واسطے کچا مال دینے والی فصلوں کے مقابلے ان پر ٹیکس لگا کر اناج کی فصلوں کو بڑھاوا دیا جائے تاکہ دونوں طرح کی کھیتی ساتھ ساتھ چلے۔

11. زمین کا مالک جوتنے والا ہی ہونا چاہئے۔ زمینداروں کے پاس جتنی زمین بیشی ہے وہ کاشتکاروں میں بانٹ دی جائے۔

12. لگان نقدی کے بجائے جنس میں وصول کیا جائے اور وہ بھی تب جب یہ حساب لگا لیا جائے کہ کاشتکار اور اس کے خاندان کے مناسب خرچ کے بعد کتنا اس کے پاس بچتا ہے۔

13. سرکار کو چاہئے کہ کھیتی باڑی اور دیہاتی دھندوں کی چیزوں کے بکنے میں مدد دے اور [illegible]

14. [illegible] जाती है कि [illegible] काम के आधार पर उनको तालीम दी जाये. इस तरह और दूसरी तरहों से जो लोग साल बेकार रहें उनकी मदद सरकार को करना चाहिए और देश की बेहतरी के लिये अपना फ़र्ज़ निभाना चाहिये.

इस प्रोग्राम को अमल में लाने के लिये हमें न तो जापान की ज़ियादा मशीनरी चाहिये न वहां के ज़ियादा माहिर. हमें अपनी ही धरती पर उन्हें पैदा करना है. ज़रूरत ही पड़े तो हम इक्का-दुक्का मशीनें ले आयें या माहिर की कमी हो तो कुछ माहिर बुला लें, लेकिन इससे ज़ियादा के फेर में हमें नहीं पड़ना चाहिये.

आख़िर में हमें याद रखना चाहिये कि अपनी आर्थिक नीति के कारण ही जापान ग़ुलाम बन गया. वह अपने देहात को ज़ियादा दौलतमन्द न बना सका बल्कि उसे अनाज तक बाहर से मंगाना पड़ा. इसलिये आंख बंद करके हमें उनकी नक़ल नहीं करनी है. हमें अपने सवाल अपने ही ढंग से हल करने हैं, चाहे देर क्यों न लग जाये. मसल मशहूर है कि जल्दी का काम शैतान का होता है.

[illegible] اس سسٹم کو عمل میں لانے کے لئے [illegible] ہونا چاہئے کہ ان کی تعلیم کے آدھار پر سب کو تعلیم دی جائے ۔ اس طرح اور دوسری طرحوں سے جو لوگ سال بھر بیکار رہیں ان کی مدد سرکار کو کرنا چاہئے اور دیش کی بہتری کے لئے اپنا فرض نبھانا چاہئے ۔

اس پروگرام کو عمل میں لانے کے لئے ہمیں نہ تو جاپان کی زیادہ مشینری چاہئے نہ وہاں کے زیادہ ماہر ۔ ہمیں اپنی ہی دھرتی پر انہیں پیدا کرنا ہے ۔ ضرورت ہی پڑے تو ہم ایکا دکا مشینیں لے آئیں یا ماہر کی کمی ہو تو کچھ ماہر بلا لیں لیکن اس سے زیادہ کے پھیر میں ہمیں نہیں پڑنا چاہئے ۔

آخر میں ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ اپنی آرتھک نیتی کے کارن ہی جاپان غلام بن گیا ۔ وہ اپنے دیہات کو زیادہ دولت مند نہ بنا سکا بلکہ اسے اناج تک باہر سے منگانا پڑا ۔ اس لئے آنکھ بند کر کے ہمیں ان کی نقل نہیں کرنی ہے ۔ ہمیں اپنے سوال اپنے ہی ڈھنگ سے حل کرنے ہیں چاہے دیر کیوں نہ لگ جائے ۔ مثل مشہور ہے کہ جلدی کا کام شیطان کا ہوتا ہے ۔

तियुनिस और मराक़ो में साम्राजी दमन

(अल्बेर पैतूक)

तियुनिस और मराको अफ़्रीका के उत्तरी किनारे पर फ्रांस की दो नौआबादियां हैं. तियुनिस की आबादी 34 लाख से ऊपर है, उनमें से तीस लाख से ज़ियादा अरब क़ौमों के लोग हैं. फ्रांसीसी मराको की आबादी लगभग 85 लाख है, जिन में से कोई अस्सी लाख अरब हैं.

इन दोनों मुल्कों का इतिहास वही है जो तमाम नौ-आबादियों का हुआ करता है. उन्नीसवीं सदी के बीच तियुनिस के लोग एक लम्बे झगड़े के बाद तुर्कों की ग़ुलामी से छुटकारा पाने में कामयाब हुए. लेकिन साम्राजी ताक़तों ने अपने असर के इलाक़े नये सिरे से तक़सीम किये और फ्रांसीसी फ़ौजों ने तियुनिस पर हमला कर दिया. सन् 1881 में तियुनिस के हाकिम को ग़ुलामी के एक समझौते पर दस्तख़त करने पर मजबूर कर दिया गया. इस समझौते के अनुसार तियुनिस फ्रांस की छत्र-छाया [illegible]

تیونس اور مراکو میں سامراجی دمن

(لسترے پیتوف)

تیونس اور مراکو افریقہ کے اتری کنارے پر فرانس کی دو نو آبادیاں ہیں ۔ تیونس کی آبادی 34 لاکھ سے اوپر ہے، ان میں سے تیس لاکھ سے زیادہ عرب قوموں کے لوگ ہیں ۔ فرانسیسی مراکو کی آبادی لگ بھگ 85 لاکھ ہے، جن میں سے کوئی اسی لاکھ عرب ہیں ۔

ان دونوں ملکوں کا اتہاس وہی ہے جو تمام نو آبادیوں کا ہوا کرتا ہے ۔ انیسویں صدی کے بیچ میں تیونس کے لوگ ایک لمبے سنگھرش کے بعد ترکوں کی غلامی سے چھٹکارا پانے میں کامیاب ہوئے ۔ لیکن سامراجی طاقتوں نے اپنے اثر کے علاقے نئے سرے سے تقسیم کر لئے اور فرانسیسی فوجوں نے تیونس پر حملہ کر دیا ۔ سنہ 1881 میں تیونس کے حاکم کو غلامی کے ایک سمجھوتے پر دستخط کرنے پر مجبور کر دیا گیا ۔ اس سمجھوتے کے انوسار تیونس فرانس کی چھتر چھایا میں آ گیا یعنی فرانس کی نو آبادی بن گیا ۔

[illegible] सन 1912 में इनका भी यही हाल हुआ. मराको के सुल्तान को भी एक समझौते पर ज़बरदस्ती दस्तख़त करना पड़ा और मुल्क का अधिकतर इलाक़ा फ़्रांस की "हिफ़ाज़त" में आ गया. एक छोटा सा हिस्सा स्पेन के क़ब्ज़े में रहने दिया गया और तंजा को अन्तर क़ौमी बन्दरगाह बना दिया गया.

ग़ुलामी के इन समझौतों के अनुसार फ़्रांस को अपनी फ़ौजें इन इलाक़ों में लाने और अपनी पुलिस रखने के अधिकार दे दिये गये. दोनों मुल्कों को विदेशों से किसी तरह का सम्बन्ध क़ायम करने के हक़ से महरूम कर दिया गया. क़ानून बनाने और मुल्क का इन्तज़ाम करने के सारे अख़्तियार फ़्रांसीसी अफ़सरों के हाथों में चले गये. इन दोनों देशों में फ़्रांसीसी हुकूमत के दो बड़े प्रतिनिधि मुक़र्रर किये गये जो रेज़ीडेन्ट जनरल कहलाते हैं. तमाम अफ़सर उन्हीं के मातहत हैं.

बाद में यूरपी मुल्कों की नौ-आबादियों की जो गत हुई वही त्युनिस और फ़्रांसीसी मराको की भी हुई.

यों तो दूसरी लड़ाई के पहले ही अमरीका ने इन मुल्कों में अपने क़दम जमाने शुरू कर दिये थे लेकिन सन 1942 में अमरीकी फ़ौजें मराको की धरती पर उतरीं और तभी से इस मुल्क पर अमरीकी क़ब्ज़े की बाक़ायदा शुरुआत हुई. दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद मार्शल एड के बोझ से दबे हुए फ़्रांस को त्युनिस और मराको में अमरीकी साम्राज्य को हाथ पांव फैलाने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा मौक़ा देना पड़ा. अख़बारों की सूचना के अनुसार मराको की आर्थिक ज़िन्दगी पर अमरीका व्यापार मंडल के सदर [illegible] की हुकमरानी है. मराको की चीनी, चाय और सूती कपड़े की तिजारत का साठ फ़ीसदी हिस्सा इसी मंडल के क़ब्ज़े में है. लड़ाई के एतबार से ज़रूरी कच्चे माल जैसे टीन, सीसा, मैंगनीज़, कोबाल्ट और यूरेनियम पर अमरीकियों ने क़ब्ज़ा जमा लिया है. मराको में यूरेनियम की खुदाई पर ख़ास ध्यान दिया जा रहा है. त्युनिस में अमरीका के माली दिलचस्पियों का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि लड़ाई से पहले के ज़माने के मुक़ाबले में पिछले साल अमरीका को वहां से दस गुना ज़्यादा माल मिला.

एक नई जंग शुरू करने के अमरीकी मंसूबों में इन दोनों मुल्कों का एक महत्त्व पूर्ण स्थान है. रोज़ाना "न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून" ने साफ़ साफ़ शब्दों में लिखा है कि मराको की स्थिति और स्वाभाविक गठजोड़ में [illegible] की लड़ाई के एतबार से बड़ी अहमियत हासिल

[illegible] سنہ 1912 میں [illegible] بھی یہی حال ہوا . مراکو کے سلطان کو بھی ایک سمجھوتے پر جبراً دستخط کرنا پڑا اور ملک کا بیشتر علاقہ فرانس کی "حفاظت" میں آیا . ایک چھوٹا سا حصہ اسپین کے قبضہ میں رہنے دیا گیا اور طنجہ کو انٹر قومی بندرگاہ بنا دیا گیا .

غلامی کے ان سمجھوتوں کے انوسار فرانس کو اپنی فوجیں ان علاقوں میں لانے اور اپنی پولیس رکھنے کے ادھیکار دیئے گئے . دونوں ملکوں کو بدیشوں سے کسی طرح کا سمبندھ قائم کرنے کے حق سے محروم کر دیا گیا . قانون بنانے اور ملک کا انتظام کرنے کے سارے اختیار فرانسیسی افسروں کے ہاتھوں میں چلے گئے . ان دونوں دیشوں میں فرانسیسی حکومت کے دو بڑے پرتیندھی مقرر کئے گئے جو ریزیڈنٹ جنرل کہلاتے ہیں . تمام افسر انہیں کے ماتحت ہیں .

بعد میں یوروپی ملکوں کی نو آبادیوں کی جو گت ہوئی وہی تیونس اور فرانسیسی مراکو کی بھی ہوئی .

یوں تو دوسری لڑائی کے پہلے ہی امریکہ نے اِن ملکوں میں اپنے قدم جمانے شروع کر دیئے تھے لیکن سنہ 1942 میں امریکی فوجیں مراکو کی دھرتی پر اتریں اور تب ہی سے اس ملک پر امریکی قبضہ کی باقاعدہ شروعات ہوئی . دوسری بڑی لڑائی کے بعد مارشل ایڈ کے بوجھ سے دبے ہوئے فرانس کو تیونس اور مراکو میں امریکی سامراج کو ہاتھ پاؤں پھیلانے کے لئے زیادہ سے زیادہ جگہ دینی پڑی . اخباروں کی سوچنا کے انوسار مراکو کی مالی زندگی پر امریکی بیوپار منڈل کے صدر [illegible] کی حکمرانی ہے . مراکو کی چینی، چائے اور سوتی کپڑے کی تجارت کا ساٹھ فیصدی حصہ اسی منڈل کے قبضہ میں ہے . لڑائی کے اعتبار سے ضروری کچھ مال جیسے ٹین، سیسہ، مینگنیز، کوبالٹ اور یورینیم پر امریکیوں نے قبضہ جما لیا ہے . مراکو میں یورینیم کی کھدائی پر خاص دھیان دیا جا رہا ہے . تیونس میں امریکہ کے مالی دلچسپیوں کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ لڑائی سے پہلے کے زمانے کے مقابلے میں پچھلے سال امریکہ کو وہاں سے دس گنا زیادہ مال ملا .

ایک نئی جنگ شروع کرنے کے امریکی منصوبوں میں ان دونوں ملکوں کا ایک مہتوپورن استھان ہے . روزانہ "نیویارک ہیرالڈ ٹریبیون" نے صاف صاف شبدوں میں [illegible] کہ مراکو کی استھتی اور [illegible] لڑائی کے اعتبار سے بڑی اہمیت حاصل

है. ट्यूनिसिया [illegible] की तरह के लिए है [illegible] के बदले अमरीकी कम्पनियों के अड्डे पर दोनों मुल्कों को [illegible] शामिल कर लिया है. अमरीका के हुक्म पर ट्यूनिसिया और मराको दोनों मुल्कों में हवाई अड्डे और लड़ाई के लिये सड़कें और रेलवे लाइनें बनाई जा रही हैं. मराको में कई आणविक हवाई और समुद्री अड्डे बनाने का इरादा है. यहाँ कम से कम पैंतीस हज़ार से ज़ियादा अमरीकी फ़ौजी और दस हज़ार अमरीकी 'एक्सपर्ट' यानी माहिर मौजूद हैं.

ट्यूनिसिया और मराको की जनता की ज़िन्दगी दुख और मुसीबत की ज़िन्दगी है. इसको अमरीकी और फ़्रांसीसी साम्राज्यशाहों की दुहरी गुलामी सहना पड़ रही है. विदेशियों की इस गुलामी ने ट्यूनिसिया और मराको की जनता को मुफ़लिसी और फ़ाक़ों-मुसीबतों की ज़िन्दगी बसर करने पर मजबूर कर दिया है. खाने पीने और रोज़ाना इस्तेमाल की चीज़ें मंहगी होती जा रही हैं. मिसाल के लिये ट्यूनिसिया में एक आदमी का औसत खर्च जंग के पहले के ज़माने से 25 गुना बढ़ गया है. फ़्रांसीसी हुक्काम हज़ारों किसानों को ज़मीन से बेदख़ल कर रहे हैं और उनकी झोंपड़ियाँ, फ़सलें और इमारतें बेधड़क बरबाद कर देते हैं. लोगों को फ़ाक़ा करने पर मजबूर कर दिया जाता है. पिछले चंद बरसों में फ़्रांसीसी साम्राज्यशाहों ने जिनकी यहाँ कुल तीन फ़ी सदी के क़रीब आबादी है मराक़शियों से बीस फ़ीसदी से ज़ियादा, उम्दा और उपजाऊ ज़मीन छीन ली. मराको के किसानों की तबाही और बरबादी का अन्दाज़ा इस तरह लगाया जा सकता है कि इस मुल्क में पन्द्रह लाख किसानों के पास अपनी ज़मीन नहीं है. इस तरह यहाँ के एक चौथाई किसान बे-ज़मीन हैं. ट्यूनिसिया और मराको के लोग हद दर्जे की ग़रीबी और दुख की ज़िन्दगी बसर करते हैं. रहने को छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ हैं जो पुराने और ज़ंग लगे टीन के डब्बों को काट-काट कर और जोड़ जोड़ कर बनाई जाती हैं.

ग़रीबी की वजह से इन दोनों मुल्कों में हर साल हज़ारों छोटे बच्चे बीमारियों की भेंट हो जाते हैं. दूध-पीते बच्चों की मौत ख़ास तौर पर बहुत होती है. विदेशी हाकिम जनता की तंदुरुस्ती बेहतर करने के सम्बन्ध में कुछ नहीं कर रहे हैं. सन 1949 में ट्यूनिसिया में 87 डाक्टर थे. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक मराको में एक लाख [illegible] हज़ार की देहाती आबादी के लिए सिर्फ़ एक डाक्टर है.

तालीम की हालत भी बहुत ही ख़राब है. ट्यूनिसिया में [illegible] फ़ी सदी लोग अनपढ़ हैं. [illegible]

ہے۔ تیونس اور مراکو کی جنتا کی رضا کے بغیر ان کو فرانسیسی سامراجی شاہوں نے اور امریکی ملکوں کے فوجی اڈوں پر دونوں ملکوں کو اٹلانٹک گروپ میں شامل کرلیا ہے۔ امریکہ کے حکم پر تیونس اور مراکو دونوں ملکوں میں ہوائی اڈے اور لڑائی کے لئے سڑکیں اور ریلوے لائنیں بنائی جا رہی ہیں۔ مراکو میں کوئی [illegible] ہوائی اور سمندری اڈے بنانے کا ارادہ ہے۔ یہاں کم سے کم 35 ہزار سے زیادہ امریکی فوجی اور دس ہزار امریکی 'ایکسپرٹ' یعنی ماہر موجود ہیں۔

تیونس اور مراکو کی جنتا کی زندگی دکھ اور مصیبت کی زندگی ہے۔ اس کو امریکی اور فرانسیسی سامراجی شاہوں کی دوہری غلامی سہنا پڑ رہی ہے۔ بدیشیوں کی اس غلامی نے تیونس اور مراکو کی جنتا کو بھوک مری اور فاقوں مصیبتوں کی سی زندگی بسر کرنے پر مجبور کردیا ہے۔ کھانے پینے اور روزانہ استعمال کی چیزیں مہنگی ہوتی جا رہی ہیں۔ مثال کے لئے تیونس میں ایک آدمی کا اوسط خرچ جنگ سے پہلے کے زمانے سے 25 گنا بڑھ گیا ہے۔ فرانسیسی حکام ہزاروں کسانوں کو زمین سے بے دخل کر رہے ہیں اور زمینیں، جھونپڑیاں، فصلیں اور عمارتیں بے دھڑک برباد کر دیتے ہیں۔ لوگوں کو فاقہ کرنے پر مجبور کردیا جاتا ہے۔ پچھلے چند برسوں میں فرانسیسی سامراجی شاہوں نے جن کی یہاں کل تین فیصدی کے قریب آبادی ہے مراکشیوں سے بیس فیصدی سے زیادہ عمدہ اور اپجاؤ زمین چھین لی۔ مراکو کے کسانوں کی تباہی اور بربادی کا اندازہ اس طرح لگایا جاسکتا ہے کہ اس ملک میں پندرہ لاکھ کسانوں کے پاس اپنی زمین نہیں ہے۔ اس طرح یہاں ایک چوتھائی کسان بے زمین ہیں۔ تیونس اور مراکو کے لوگ حد درجہ کی غریبی اور دکھ کی زندگی بسر کرتے ہیں۔ رہنے کو چھوٹی چھوٹی جھونپڑیاں ہیں جو پرانے اور زنگ لگے ٹین کے ڈبوں کو کاٹ کاٹ کر اور جوڑ جوڑ کر بنائی جاتی ہیں۔

غریبی کی وجہ سے ان دونوں ملکوں میں ہر سال ہزاروں ننھے بچے بیماریوں کی بھینٹ ہو جاتے ہیں۔ دودھ پیتے بچوں کی موت خاص طور پر بہت ہوتی ہے۔ بدیشی حاکم جنتا کی تندرستی بہتر کرنے کے سلسلے میں کچھ نہیں کر رہے ہیں۔ سن 1949 میں تیونس میں 87 ڈاکٹر تھے۔ آنکڑوں کے مطابق مراکو میں ایک لاکھ [illegible] ہزار کی دیہاتی آبادی کے لئے صرف ایک ڈاکٹر ہے۔

تعلیم کی حالت بھی بہت ہی خراب ہے۔ تیونس میں [illegible] فیصدی لوگ ان پڑھ ہیں۔ بچوں کی [illegible]

के बाद "[illegible]" [illegible] और [illegible] "[illegible]"
ने जो आंकड़े दिखाए हैं वह यह कि मराको में सन् 1950 में स्कूल जाने की उम्र वालों में कुल आठ फ़ी सदी बच्चे स्कूलों में दाख़िल थे.

जब से तिऊनिस और मराको पर फ़्रांसीसी और अमरीकी साम्राजी राज कर रहे हैं तब ही से इन मुल्कों की जनता भी विदेशी ग़ुलामी से छुटकारा पाने के लिए बराबर संघर्ष कर रही है. दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद राष्ट्रीय आज़ादी का आंदोलन ख़ास तौर पर बढ़ा है. इस आन्दोलन का एक ख़ास पहलू यह है कि इसका मक़सद न सिर्फ़ नौआबादियाती ग़ुलामी से छुटकारा हासिल करना है बल्कि अम्न शांति के लिये कोशिश करना और तिऊनिस और मराको की धरती को अमरीका की जंगी कार्रवाइयों का अड्डा न बनने देना है.

आज़ादी के आन्दोलन को कुचलने के लिये फ़्रांसीसी साम्राज्यवादों ने मराको में इन्तहाई कठोर क़ानून लागू कर दिये हैं और जनता को अन्य सिद्ध अधिकारों तक से महरूम कर दिया है. फ़्रांसीसी अफ़सरों से इजाज़त हासिल किये बग़ैर अंजुमन या यूनियन बनाने या मज़हबी त्योहारों और शादी ब्याह, मौत वग़ैरा के मौक़ा पर भी दस से ज़ियादा की तादाद में एक जगह जमा होने की मनाही कर दी गई है. मुल्क में तरक़्क़ी पसन्द राजकाजी पार्टियों और दूसरे जन संगठनों और सेवकों की अंजुमनों को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया है.

25 फ़रवरी सन् 1951 को फ़्रांसीसी साम्राजियों ने मराको के सुल्तान से एक ख़ास समझौते पर दस्तख़त करा लिये जिसमें सुल्तान ने मान लिया है कि मराको में "फ़्रांसीसियों की मौजूदगी बिल्कुल ठीक है." और वचन दिया है कि फ़्रांसीसी जो "सुधार" करना चाहेंगे उन्हें वे रोक टोक करने दिया जायगा. सुल्तान से यह फ़्रांसीसी मांग भी मनवा ली गई है कि वह उन मराक़शी ऊंचे अफ़सरों को निकाल दें जो क़ौमी आज़ादी के आन्दोलनों की मदद कर रहे थे. इसके बाद फ़्रांसीसी साम्राजियों ने तरक़्क़ी पसन्द विचार के तमाम लोगों की गिरफ़्तारियाँ शुरू कर दीं और कभी कभी ऐसा भी हुआ कि इन गिरफ़्तारियों के साथ साथ क़त्ल व ख़ून और लूट मार भी हुई.

फ़्रांसीसी साम्राज्यवादों की इन कार्रवाइयों का जवाब मराको की जनता ने प्रदर्शनों और आम-सभाओं में आवाज़ें उठा कर दिया. इन सभाओं में हर तबक़े के हिसाब से ज़ियादा लोग शामिल हुए. बहुत से स्थानों पर जनता और फ़्रांसीसी फ़ौज व पुलिस के बीच टक्करें हुईं. क़ौमी आज़ादी के आन्दोलन को कुचलने के दौरान में फ़्रांसीसियों ने मराको के बहुत से स्थानों पर और गांव [illegible]

[illegible] "[illegible]" کے [illegible] اور فرانسیسی
"[illegible]" نے جو اعداد و شمار دکھائے ہیں وہ یہ کہ مراکو میں سن 1950 میں اسکول جانے کی عمر والوں میں کل آٹھ فیصدی بچے اسکول میں داخل تھے۔

جب سے تیونس اور مراکو پر فرانسیسی اور امریکی سامراجی راج کر رہے ہیں تب ہی سے ان ملکوں کی جنتا بھی بدیسی غلامی سے چھٹکارا پانے کے لئے برابر سنگھرش کر رہی ہے۔ دوسری بڑی لڑائی کے بعد راشٹری آزادی کا آندولن خاص طور پر بڑھا ہے۔ اس آندولن کا ایک خاص پہلو یہ ہے کہ اس کا مقصد نہ صرف نوآبادیاتی غلامی سے چھٹکارا حاصل کرنا ہے بلکہ جگ شانتی کے لئے کوشش کرنا اور تیونس اور مراکو کی دھرتی کو امریکہ کی جنگی کاروائیوں کا اڈا نہ بننے دینا ہے۔

آزادی کے آندولن کو کچلنے کے لئے فرانسیسی سامراج شاہوں نے مراکو میں انتہائی سخت قانون لاگو کر دیئے ہیں اور جنتا کو جنم سدھ ادھیکاروں تک سے محروم کر دیا ہے۔ فرانسیسی افسروں سے اجازت حاصل کئے بغیر انجمن یا یونین بنانے، یا مذہبی تہواروں اور شادی بیاہ، موت وغیرہ کے موقع پر بھی دس سے زیادہ کی تعداد میں ایک جگہ جمع ہونے کی مناہی کر دی گئی ہے۔ ملک میں ترقی پسند راج کاجی پارٹیوں اور دوسرے جن سنگٹھنوں اور سیوکوں کی انجمنوں کو غیر قانونی قرار دے دیا گیا ہے۔

25 فروری سن 1951 کو فرانسیسی سامراجیوں نے مراکو کے سلطان سے ایک خاص سمجھوتے پر دستخط کرا لئے جس میں سلطان نے مان لیا ہے کہ مراکو میں "فرانسیسیوں کی موجودگی بالکل ٹھیک ہے" اور وچن دیا ہے کہ فرانسیسی جو "سدھار" کرنا چاہیں گے انہیں بے روک ٹوک کرنے دیا جائیگا۔ سلطان سے یہ فرانسیسی مانگ بھی منوا لی گئی ہے کہ وہ ان مراکشی اونچے افسروں کو نکال دیں جو قومی آزادی کے آندولنوں کی مدد کر رہے تھے۔ اس کے بعد فرانسیسی سامراجیوں نے ترقی پسند وچار کے تمام لوگوں کی گرفتاریاں شروع کر دیں اور کبھی کبھی ایسا بھی ہوا کہ ان گرفتاریوں کے ساتھ ساتھ قتل و خون اور لوٹ مار بھی ہوئی۔

فرانسیسی سامراج شاہوں کی ان کاروائیوں کا جواب مراکو کی جنتا نے پردرشنوں اور عام جلسوں میں آوازیں اٹھا کر دیا۔ ان جلسوں میں ہر طبقے کے حساب سے زیادہ لوگ شامل ہوئے۔ بہت سے استھانوں پر جنتا اور فرانسیسی فوج و پولیس کے بیچ ٹکریں ہوئیں۔ قومی آزادی کے آندولن کو کچلنے کے دوران میں فرانسیسی [illegible] مراکو کے بہت سے استھانوں [illegible] اور گاؤں [illegible]

तौर पर ज़माने के सूबे में शहरों और गांवों पर हवाई जहाज़ों से बम बारी की.

तिवुनिस में फ़्रांसीसी लोग "दमन" और "लालच देने" की नीति पर अमल कर रहे हैं. सन 1947 में सारे देश के आम हड़ताल के आन्दोलन के बाद फ़्रांसीसी हकूमत को शासन में सुधार करने का वादा करना पड़ा. इसी क़िस्म का एक और वादा फ़्रांसीसी हकूमत ने अगस्त सन 1950 में भी किया. एलान हुआ कि तिवुनिसी वज़ीरों के अख़्तियार बढ़ाने के अलावा वह इस मुल्क को धीरे धीरे "अन्दरूनी ख़ुद अख़्तियारी" देने के सम्बन्ध में बात चीत शुरू करने को भी तैयार है. लेकिन बाद की घटनाओं से ज़ाहिर हो गया कि फ़्रांसीसी हकूमत अपना वादा पूरा करने का कोई इरादा नहीं रखती थी बल्कि वह आस लगाए हुए थी कि इन चालबाज़ियों के ज़रिया क़ौमी आज़ादी के आन्दोलन में फूट डालने में कामयाबी हासिल कर लेगी.

फ़्रांसीसी हकूमत के वादों से प्रभावित होकर तिवुनिस के लीडर तिवुनिसी मंत्री मंडल में शामिल हो गए लेकिन लम्बी बात चीत के बाद 15 दिसम्बर सन 1951 को फ़्रांसीसी हकूमत ने एक एलान जारी किया जिस में तिवुनिस की तमाम मांगें रद्द कर दी गईं और कह दिया गया कि निगरानी के अख़्तियारात ज्यों के त्यों क़ायम रहेंगे. तिवुनिसी जनता फ़्रांसीसी हकूमत की इस कार्रवाई से बहुत नाराज़ हुई. और नए आन्दोलन से उसने उसका जवाब दिया. मुल्क भर में प्रदर्शन किए गए, आम जलसे और हड़तालें हुईं. 21 से 23 दिसम्बर 1951 तक जो आम हड़ताल हुई उसमें तमाम लोगों ने बिना राजकाजी भेद-भाव के हिस्सा लिया.

तिवुनिस की हालत दिन पर दिन ज़ियादा ख़तरनाक होती जा रही है. मुल्क के कोने कोने में हड़तालें प्रदर्शन और पुलिस व फ़ौज, से टक्करें हो रही हैं. फ़्रांसीसी हाकिम बरबरता से तिवुनिसी जनता की शक्ति को ख़त्म करने की कोशिश कर रहे हैं. पुलिस और फ़ौज प्रदर्शन करने वाले निहत्थे लोगों पर गोलियां चला देती है क़ौमी आज़ादी के आन्दोलन के नेताओं और आन्दोलन में हिस्सा लेने वालों को पूरे तिवुनिस में बड़े पैमाने पर गिरफ़्तार किया जा रहा है. गिरफ़्तार होने वालों में तिवुनिस की कम्यूनिस्ट पारटी के लीडर भी हैं. फ़्रांसीसियों की दमन की कार्रवाई सब से पहले कम्यूनिस्ट पारटी ही के ख़िलाफ़ की जाती है. दूसरे क़ैदियों में "नव दस्तूर" पारटी, आज़ादी और अमन के लिये आन्दोलन करने वाली तिवुनिसी कमेटी और तिवुनिस के मेहनत करने वालों की जनरल फ़ेडेरेशन के नेता हैं. तिवुनिसी और मराको

طور پر ساحل کے صوبے میں شہروں اور گاؤں پر ہوائی جہازوں سے بمباری کی ۔

تیونس میں فرانسیسی لوگ " دمن " اور " لالچ دینے " کی نیتی پر عمل کر رہے ہیں ۔ سن 1947 میں سارے دیش کے عام ہڑتال کے آندولن کے بعد فرانسیسی حکومت کو شاسن میں سدھار کرنے کا وعدہ کرنا پڑا ۔ اسی قسم کا ایک اور وعدہ فرانسیسی حکومت نے اگست سن 1950 میں بھی کیا ۔ اعلان ہوا کہ تیونسی وزیروں کے اختیار بڑھانے کے علاوہ وہ اس ملک کو دھیرے دھیرے " اندرونی خود اختیاری " دینے کے سمبندھ میں بات چیت شروع کرنے کو بھی تیار ہے ۔ لیکن بعد کی گھٹناؤں سے ظاہر ہوگیا کہ فرانسیسی حکومت اپنا وعدہ پورا کرنے کا کوئی ارادہ نہیں رکھتی تھی بلکہ یہ آس لگائے ہوئے تھی کہ ان چالبازیوں کے ذریعہ قومی آزادی کے آندولن میں پھوٹ ڈالنے میں کامیابی حاصل کر لے گی ۔

فرانسیسی حکومت کے وعدوں سے پربھاوت ہو کر تیونس کے لیڈر تیونسی منتری منڈل میں شامل ہوگئے لیکن لمبی بات چیت کے بعد 15 دسمبر سن 1951 کو فرانسیسی حکومت نے ایک اعلان جاری کیا جس میں تیونس کی تمام مانگیں رد کر دی گئیں اور کہدیا گیا کہ نگرانی کے اختیارات جوں کے توں قائم رہینگے ۔ تیونسی جنتا فرانسیسی حکومت کی اس کارروائی سے بہت ناراض ہوئی اور نئے آندولن سے اس نے اسکا جواب دیا ۔ ملک بھر میں پردرشن کئے گئے، عام جلسے اور ہڑتالیں ہوئیں ۔ 21 سے 23 دسمبر سن 1951 تک جو عام ہڑتال ہوئی اسمیں تمام لوگوں نے بنا راج کاجی بھید بھاؤ کے حصہ لیا ۔

تیونس کی حالت دن پر دن زیادہ خطرناک ہوتی جا رہی ہے ۔ ملک کے کونے کونے میں ہڑتالیں، پردرشن اور پولیس و فوج سے ٹکریں ہو رہی ہیں ۔ فرانسیسی حاکم بربرتا سے تیونسی جنتا کی شکتی کو ختم کرنے کی کوشش کر رہے ہیں ۔ پولیس اور فوج پر درشن کرنے والے نہتے لوگوں پر گولیاں چلا دیتی ہے ۔ قومی آزادی کے آندولن کے نیتاؤں اور آندولن میں حصہ لینے والوں کو پورے تیونس میں بڑے پیمانے پر گرفتار کیا جا رہا ہے ۔ گرفتار ہونے والوں میں تیونس کی کمیونسٹ پارٹی کے لیڈر ہیں ۔ فرانسیسیوں کی دمن کی کارروائی سب سے پہلے کمیونسٹ پارٹی ہی کے خلاف کی جاتی ہے ۔ دوسرے قیدیوں میں " نو دستور " پارٹی، آزادی اور امن کے لئے آندولن کرنے والی تیونسی کمیٹی اور تیونس کے محنت کرنے والوں کی جنرل فیڈریشن کے نیتا ہیں ۔ تیونس اور مراکو

पर फ़्रांसीसियों के वहशियाना ज़ुल्म के ख़िलाफ़ सारी दुनिया के लोगों में ग़म और ग़ुस्सा की लहर दौड़ गई है. फ़्रांस की मेहनत करने वाली आम जनता ख़ास तौर पर इस कार्रवाई के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा का प्रदर्शन कर रही है.

پرانسیسیوں کے وحشیانہ ظلم کے خلاف ساری دنیا کے لوگوں میں غم اور غصہ کی لہر دوڑ گئی ہے . فرانس کی محنت کرنے والی عام جنتا خاص طور پر اس کارروائی کے خلاف غصہ کا پردرشن کر رہی ہے .

शान्ति ज़िन्दाबाद!

(मुजीब रिज़वी)

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के मार्क्सिस्ट क्लब की तरफ़ से एक मीटिंग था. श्री सत्येन्द्र बाबू बोलने वाले थे.

मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता था. बात असल में यह है मैं उन्हें सुनने भी नहीं गया था. मैं उन अनुभवों को सुनने गया था जो उन्हें रूस में हुए थे. मेरे मन में रोज़ अख़बार पढ़ पढ़ कर तरह तरह के विचार उठते थे. मैं जानना चाहता था कि रूस की हालत सचमुच कैसी है. विश्वास और अविश्वास के मिले जुले भाव मेरे मन में उठ रहे थे. सब से अधिक जिस चीज़ के बारे में मैं जानना चाहता था वह था रूस का शान्ति आन्दोलन. इस बीच में मैं कई लेख इस विषय पर पढ़ चुका था. सब का सार एक ही था—शान्ति आन्दोलन भी स्तालिन का एक जादू है, रूसी शान्ति आन्दोलन असल में जंग आन्दोलन है.................वग़ैरा वग़ैरा.

मैं रूस से मोहब्बत करने लगा था. क्योंकि जब अमरीका वग़ैरा ऐसे बड़े देश ऐटम बम बनाने और हथियार इकट्ठा करने की दौड़ लगा रहे हैं, कोरिया में बीमारी के कीड़ों के बम फेंक रहे हैं, तो सिर्फ़ रूस ही ऐसा देश है जो शान्ति शान्ति चिल्लाता है. मुझे शान्ति चाहिये. अपने देश के लिये, अपने विश्वास के लिये, अपनी मां के लिये, अपनी बहन के लिये, और अपने लिये! मैं उसका दोस्त हूं जो शान्ति का दोस्त है, जो शान्ति क़ायम करने की बात करता है—लेकिन हमारे अख़बार हमें रोज़ यह बताते हैं कि रूस तो हत्यारों का देश है, वह शान्ति चाह ही नहीं सकता—मैं यही जानने गया था. मजूमदार साहब रूस होकर आये हैं. वह रूस के अनुभव बताने वाले थे. मैं अपनी जिज्ञासा साथ लेकर गया था. मैं यह पूछने गया था कि क्या रूस में भी शान्ति आन्दोलन कोई हिन्द सरकार की स्कीमों की तरह की चीज़ है, क्या वहां के लोग शान्ति नहीं चाहते, क्या वह लोग जंग चाहते हैं

شانتی زندہ باد!

(مجیب رضوی)

الہ آباد یونیورسٹی کے مارکسسٹ کلب کی طرف سے ایک میٹنگ تھی . شری ستیندر بابو بولنے والے تھے .

میں ان کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتا تھا . بات اصل میں یہ ہے میں انہیں سننے بھی نہیں گیا تھا ' میں ان انوبھووں کو سننے گیا تھا جو انہیں روس میں ہوئے تھے . میرے من میں روز اخبار پڑھ پڑھ کر طرح طرح کے وچار اٹھتے تھے . میں جاننا چاہتا تھا کہ روس کی حالت سچ مچ کیسی ہے . وشواس اور اوشواس کے ملے جلے بھاؤ میرے من میں اٹھ رہے تھے . سب سے ادھک جس چیز کے بارے میں میں جاننا چاہتا تھا وہ تھا روس کا شانتی اندولن . اس بیچ میں میں کئی لیکھ اس وشے پر پڑھ چکا تھا . سب کا سار ایک ہی تھا - شانتی آندولن بھی اسٹالن کا ایک جادو ہے ' روسی شانتی آندولن اصل میں جنگ آندولن ہے ....وغیرہ وغیرہ .

میں روس سے محبت کرنے لگا تھا . کیونکہ جب امریکہ وغیرہ ایسے بڑے دیش ایٹم بم بنانے اور ہتھیار اکٹھا کرنے کی دوڑ لگا رہے ہیں ' کوریا میں بیماری کے کیڑوں کے بم پھینک رہے ہیں ' تو صرف روس ہی ایسا دیش ہے جو شانتی شانتی چلاتا ہے . مجھے شانتی چاہئے اپنے دیش کے لئے ' اپنے وشواس کے لئے ' اپنی ماں کے لئے ' اپنی بہن کے لئے ' اور اپنے لئے ! میں اس کا دوست ہوں جو شانتی کا دوست ہے ' جو شانتی قائم کرنے کی بات کرتا ہے — لیکن ہمارے اخبار ہمیں روز یہ بتاتے ہیں کہ روس تو ہتیاروں کا دیش ہے ' وہ شانتی چاہ ہی نہیں سکتا — میں یہی جاننے گیا تھا . مزمدار صاحب روس ہوکر آئے ہیں ' وہ روس کے انوبھو بتانے والے تھے . میں اپنی جگیاسا ساتھ لیکر گیا تھا . میں یہ پوچھنے گیا تھا کہ کیا روس میں بھی شانتی آندولن کوئی ہند سرکار کی اسکیموں کی طرح کی چیز ہے ' کیا وہاں کے لوگ شانتی نہیں چاہتے ' کیا وہ لوگ جنگ چاہتے ہیں —

—जंग—जिससे सब पर तबाही आती है, खून की नदियां बहती हैं, बाग उजड़ते हैं, नस्लें उजड़ती हैं......

मैं चाहता था कि फ़ौरन ही अपने सारे सवाल पूछ डालूं. लेकिन अपनी जिज्ञासा पर मुझे अंकुश लगाना पड़ा. सत्येन्द्र बाबू ने बोलना शुरू कर दिया था. उनकी मीठी बंगला भाषा, उनका भाव, दिल पर असर करने वाले जुमले और उनकी सच्चाई बिना प्रभावित किये नहीं रह सकती. उन्होंने तक़रीर करते करते दो घटनायें सुनाईं.

"गर्मियों की छुट्टियां थीं, पायनियर कैम्प लगे हुए थे. शहर के लड़के देहात आ गए थे, और देहात के लड़के शहर में. रूस के यह बालक नागरिक खेल रहे थे और सीख रहे थे. इनको फूलों के बारे में बताया जा रहा था, किसानों के बारे में जानकारी दी जा रही थी, मज़दूर जीवन से इनका परिचय कराया जा रहा था. वह सब ख़ुश थे और ख़ूब खाते थे. रूस में जहां भी जाइये खिलाये पिलाये बिना वह आपको छोड़ेंगे ही नहीं. मैं रूस की सैर करता हुआ एक पायनियर कैम्प में आ पहुँचा. पहले मैं उन लड़कों के साथ खेलता रहा. उन बच्चों की भोली सूरतें कभी नहीं भुलाई जा सकतीं. कितने अच्छे और कितने शांत थे वह सब! खाने का समय आया. उस कैम्प की महिला मुझे खाने के कमरे में ले गईं. एक कुरसी पर मुझे बैठा दिया और ख़ुद मेरे बग़ल में बैठ गईं. लड़के सलीक़े से अपनी अपनी जगहों पर बैठ कर भोज उड़ाने लगे.

खाते खाते मैंने उस महिला से पूछा—"क्या आपकी शादी हो चुकी है"?

उस लड़की के सुर्ख़ गालों पर पीलाहट छा गई. आंखों में नमी छलछला उठी. उसने भरे दिल से जवाब दिया—"जी, मैं बेवा हूं." फिर एक सेकन्ड के लिये ख़ामोशी छाई रही. उसके मुँह पर मेरी आंखें गड़ी थीं. मैंने देखा कि जैसे वह अपने दिल पर क़ाबू पाने और धीरता से सारी कठिनाइयों का मुक़ाबला करने की कोशिश कर रही हो. उसने मरी हुई मुस्कराहट में जान डालने की कोशिश करते हुए फिर कहना शुरू किया:

"मेरा पति बहुत ही बहादुर था, वह देश भक्त था, देश की सेवा करता हुआ वह मारा गया. मुझे उस पर गर्व है, मुझे उसकी बहादुरी पर फ़ख़्र है. हिटलर के ख़िलाफ़, बर्बरता के ख़िलाफ़ उसने लड़ाई लड़ी और मुझे अकेला छोड़ कर चला गया—मुझे बड़ी तसल्ली है कि मेरा पति कायर नहीं था. मुझे पति की बहादुरी के लिये यह दो सुनहरे मैडल मिले हैं.........."

कहते कहते उस लड़की ने अपने पास से निकाल कर दोनों मैडल मेरे सामने रख दिये.

جنگ ــ جس سے سب پر تباہی آتی ہے، خون کی ندیاں بہتی ہیں، باغ اُجڑتے ہیں، نسلیں اُجڑتی ہیں......

میں چاہتا تھا کہ فوراً ہی اپنے سارے سوال پوچھ ڈالوں. لیکن اپنی جگیاسا پر مجھے انکش لگانا پڑا. ستیندر بابو نے بولنا شروع کردیا تھا. اُن کی میٹھی بنگلہ بھاشا، اُن کا بھاؤ، دل پر اثر کرنے والے جملے اور اُن کی سچائی بنا پربھاوت کئے نہیں رہ سکتی. اُنہوں نے تقریر کرتے کرتے دو گھٹنائیں سنائیں:

"گرمیوں کی چھٹیاں تھیں، پائنیر کیمپ لگے ہوئے تھے. شہر کے لڑکے دیہات آگئے تھے، اور دیہات کے لڑکے شہر میں. روس کے یہ بالک ناگرک کھیل رہے تھے اور سیکھ رہے تھے. اِن کو پھولوں کے بارے میں بتایا جارہا تھا، کسانوں کے بارے میں جانکاری دی جا رہی تھی، مزدور جیون سے اِن کا پریچے کرایا جا رہا تھا. وہ سب خوش تھے اور خوب کھاتے تھے. روس میں جہاں بھی جائیے کھلائے پلائے بنا وہ آپ کو چھوڑیں گے ہی نہیں. میں روس کی سیر کرتا ہوا ایک پائنیر کیمپ میں جا پہونچا. پہلے میں اُن لڑکوں کے ساتھ کھیلتا رہا. اُن بچوں کی بھولی صورتیں کبھی نہیں بھلائی جا سکتیں. کتنے اچھے اور کتنے شانت تھے وہ سب! کھانے کا سمے آیا. اُس کیمپ کی مہلا مجھے کھانے کے کمرے میں لے گئیں. ایک کرسی پر مجھے بٹھا دیا اور خود میرے بغل میں بیٹھ گئیں. لڑکے سلیقے سے اپنی اپنی جگہوں پر بیٹھ کر بھوج اُڑانے لگے.

کھاتے کھاتے میں نے اُس مہلا سے پوچھا—"کیا آپ کی شادی ہوچکی ہے؟"

اُس لڑکی کے سرخ گالوں پر پیلاہٹ چھاگئی. آنکھوں میں نمی چھلچھلا اٹھی. اُس نے بھرے دل سے جواب دیا—"جی، میں بیوہ ہوں". پھر ایک سیکنڈ کے لئے خاموشی چھائی رہی. اُس کے منہ پر میری آنکھیں گڑی تھیں. میں نے دیکھا کہ جیسے وہ اپنے دل پر قابو پانے اور دھیرتا سے ساری کٹھنائیوں کا مقابلہ کرنے کی کوشش کر رہی ہو. اُس نے مری ہوئی مسکراہٹ میں جان ڈالنے کی کوشش کرتے ہوئے پھر کہنا شروع کیا:

"میرا پتی بہت ہی بہادر تھا، وہ دیش بھکت تھا، دیش کی سیوا کرتا ہوا وہ مارا گیا. مجھے اُس پر گرو ہے، مجھے اُس کی بہادری پر فخر ہے. ہٹلر کے خلاف، بربرتا کے خلاف اُس نے لڑائی لڑی اور مجھے اکیلا چھوڑ کر چلا گیا—مجھے بڑی تسلی ہے کہ میرا پتی کایر نہیں تھا. مجھے پتی کی بہادری کے لئے یہ دو سنہرے میڈل ملے ہیں.........."

کہتے کہتے اُس لڑکی نے اپنے پاس سے نکال کر دونوں میڈل میرے سامنے رکھ دئیے.

मैंने जिज्ञासा पूर्वक उन चमचमाते सोने के टुकड़ों को उठा लिया. मेरे लिये उन मिडलों की कोई क़ीमत रही हो या न रही हो लेकिन उनकी क़ीमत मैं उस लड़की की आंखों से आंक रहा था. एक बहादुर पति की पत्नी को उसकी सरकार का यह आदर चिन्ह था. एक आशा थी, इन मिडलों की क़ीमत बहुत थी. यदगार ही क़ीमत आंक सकते हैं!

"आप इनको हमेशा साथ रखती हैं." मैंने भावुक स्वर में पूछा.

"यह सोने के मिडिल नहीं हैं, यह गोलियां हैं जो मेरे पति को मुझ से छीन चुकी हैं. यह मिडल उन गोलियों की तरह मेरी पसली में घुसे रहते हैं. यह हर समय मुझे याद दिलाते रहते हैं—शांति ! शान्ति !! लड़ाई बहुतों का सोहाग लूट ले जाती है, मुल्क बरबाद हो जाते हैं. मैं शान्ति के लिये लड़ती हूँ, मैं शान्ति चाहती हूं. सिर्फ़ इस लिये क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मेरी तरह मेरी बहनें और बेटियां भी सोहाग से महरूम हो जायें...."

उसके चेहरे से पीलाहट हट गई थी, मुख पर वीरता और गम्भीरता की रेखाएं खिंच गई थीं. मैंने उसकी बात काट कर पूछा—"आप के यहां दूसरी शादी करना तो बहुत ही स्वभाविक है, आप जवान हैं, दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेतीं."

"जी दूसरी शादी करने में मैं कोई हर्ज नहीं समझती. मैं जब बुद्धि से पूछती हूँ तो मुझे मेरा बेचापन बेमतलब मालूम होता है. दिल लेकिन नहीं मानता. मेरी भावनायें मुझे इजाज़त नहीं देतीं—मेरे पति की याद मुझ से अलग नहीं हो सकती, मैं उसे कभी नहीं भूल सकती, मैं उस साथ बिताए जीवन को हरगिज़ हरगिज़ नहीं भुला सकती. देश की रस्म हमें दूसरी शादी की इजाज़त देती है लेकिन मेरा दिल इजाज़त नहीं देता. हम आज़ाद हैं, हम अपने दिल और दिमाग़ से काम लेते हैं, रस्म के ग़ुलाम नहीं हो सकते......."

उद्गार भरे शब्दों में अपने दिल का ग़ुबार निकालते निकालते उस महिला ने बच्चों की तरफ़ आंख फेरी और फिर बोली—"अगर मैं दूसरी शादी कर भी लेती तो भी क्या होता ? मेरे बच्चे होते, मैं मां बन जाती......लेकिन मैं तो इतने सारे बच्चों की मां हूँ, यह सब मेरे बच्चे हैं, यह सब मेरे लाल हैं."

और उसने उठकर एक बच्ची को छाती से लगा लिया, मां का प्यार उमड़ पड़ा.

सत्येन्द्र बाबू की कहानी में मैं खोया हुआ था. मैं उनका मुँह देखता रहा और सोचता रहा. क्या यह कहानी उसी देश की है जहां कहा जाता है कि सब चीज़ें माद्दी होती हैं, सबके विचार माद्दी होते हैं, क्या यह महिला

میں نے جگیاسا پورک اُن چمچماتے سونے کے ٹکڑوں کو اٹھا لیا. میرے لئے اُن مڈلوں کی کوئی قیمت رہی ہو یا نہ رہی ہو لیکن اُن کی قیمت میں اُس لڑکی کی آنکھوں سے آنک رہا تھا. ایک بہادر پتی کی پتنی کو اُس کی سرکار کا یہ آدر چنہ تھا. ایک آشا تھی' اِن مڈلوں کی قیمت بہت تھی. اُدگار ہی قیمت آنک سکتے ہیں!

"آپ اِن کو ہمیشہ ساتھ رکھتی ہیں." میں نے بھاوک سور میں پوچھا.

"یہ سونے کے مڈل نہیں ہیں' یہ گولیاں ہیں جو میرے پتی کو مجھ سے چھین چکی ہیں. یہ مڈل اُن گولیوں کی طرح میری پسلی میں گھسے رہتے ہیں. یہ ہر سمے مجھے یاد دلاتے رہتے ہیں—شانتی! شانتی!! لڑائی بہنوں کا سہاگ لوٹ لے جاتی ہے' ملک برباد ہو جاتے ہیں. میں شانتی کے لئے لڑتی ہوں' میں شانتی چاہتی ہوں. صرف اس لئے کیونکہ میں نہیں چاہتی کہ میری طرح میری بہنیں اور بیٹیاں بھی سہاگ سے محروم ہو جائیں............ ..."

اُس کے چہرے سے پیلاہٹ ہٹ گئی تھی' مکھ پر ویرتا اور گمبھیرتا کی ریکھائیں کھنچ گئی تھیں. میں نے اُس کی بات کاٹ کر پوچھا—"آپ کے یہاں دوسری شادی کرنا تو بہت ہی سوبھاوک ہے' آپ جوان ہیں' دوسری شادی کیوں نہیں کرلیتیں".

"جی' دوسری شادی کرنے میں میں کوئی ہرج نہیں سمجھتی. میں جب بدھی سے پوچھتی ہوں تو مجھے میرا بیوہ پن بے مطلب معلوم ہوتا ہے. دل لیکن نہیں مانتا. میری بھاونائیں مجھے اجازت نہیں دیتیں—میرے پتی کی یاد مجھ سے الگ نہیں ہو سکتی' میں اُسے کبھی نہیں بھول سکتی' میں اُس کے ساتھ بتائے جیون کو ہرگز ہرگز نہیں بھلا سکتی. دیش کی رسم ہمیں دوسری شادی کی اجازت دیتی ہے لیکن میرا دل اجازت نہیں دیتا. ہم آزاد ہیں' ہم اپنے دل اور دماغ سے کام لیتے ہیں' رسم کے غلام نہیں ہوسکتے..."

اُدگار بھرے شبدوں میں اپنے دل کا غبار نکالتے نکالتے اُس مہیلا نے بچوں کی طرف آنکھ پھیری اور پھر بولی—"اگر میں دوسری شادی کر بھی لیتی تو بھی کیا ہوتا؟ میرے بچے ہوتے' میں ماں بن جاتی.........لیکن میں تو اتنے سارے بچوں کی ماں ہوں' یہ سب میرے بچے ہیں' یہ سب میرے لال ہیں."

اور اُس نے اُٹھکر ایک بچی کو چھاتی سے لگا لیا' ماں کا پیار اُمڈ پڑا.

ستیندر بابو کی کہانی میں میں کھویا ہوا تھا. میں اُن کا منہ دیکھتا رہا اور سوچتا رہا. کیا یہ کہانی اسی دیش کی ہے جہاں کہا جاتا ہے کہ سب چیزیں مادی ہوتی ہیں. سب کے وچار مادی ہوتے ہیں' کیا یہ مہیلا

इस देश की है जो शांति का ढोंग रचता है लेकिन व्यवहार में लड़ाई की तैयारी करता है लेकिन असलियत को क्या किया जाए. यह सच्ची और साधारण जनता उसी देश की है, रूस की है. वह भी शांति चाहते हैं इसलिये कि इन की महिलाओं की पसलियों में हत्या की गोलियां अब भी घुसी हुई हैं. क्योंकि वह लोग बर्बरता के खिलाफ लड़ रहे थे, पिस रहे थे, बरबाद हो रहे थे. क्योंकि वह लोग नाइट क्लबों में शराब में डूबे नाच नहीं रहे थे, रंग रलियां नहीं मना रहे थे !

मैं न जाने क्या-क्या सोच गया. सत्येन्द्र बाबू की भी ज़बान बन्द नहीं हुई. मेरा दिमाग़ मेरे पास नहीं था कि मैं सुन सकता कि उन्होंने इस घटना के बाद और क्या क्या कहा. लेकिन जब मैं वास्तविक दुनिया में लौटा तो मुझे दूसरी घटना सत्येन्द्र बाबू कहते सुनाई दिये:—

"स्तालिनग्राद के शहीद चौक में मैं टहल रहा था. चारों तरफ खुशनुमा फूल खिले थे. एक बच्चे की मौत के बाद दूसरे बच्चे को पाकर मां के मुँह पर मुस्कराहट छा जाती है. स्तालिन ग्राद की वर्तमान तबाही का भयानक दृश्य देख चुकने के बाद इस शांति को पाकर शायद मुस्करा उठी थी. हर वस्तु पर बहार थी. आम आदमी वहां विहार कर रहे थे. वहां सब दिखाई पड़ रहा था—कोई भूखा नहीं, कोई भुखमरा नहीं, कोई फ़कीर नहीं, कोई गुदड़ी पहने हुये नहीं. सब खुश थे. बच्चे खेल रहे थे. उनको पता था या नहीं कि यह शांति का वातावरण उनके बुजुर्गों ने अपनी जान पर खेल कर उनके लिये पैदा किया है ! मैं भावनाओं के समुन्द्र में डुबकियां लगा रहा था—एक बूढ़ी महिला एक बच्चे की उंगली पकड़ मेरी तरफ आती दिखाई पड़ी. मेरा चेहरा मोहरा देखकर उसने मुझे पहचान लिया और आते ही कहा—"आप हिन्दुस्तान से आए हैं."

"जी माता" मैंने उत्तर दिया.

वह कुछ देर तक इधर उधर की बातें करती रहीं और फिर बोलीं "यह दूर का दृश्य आपको दिखाई पड़ता है न. वहां बड़ी भयानक लड़ाई हुई थी.............मेरे दो बेटे वहीं हो मार गए थे, मेरी बहू भी वहीं शहीद हुई थी.........वह बड़े बहादुर थे."

मुझसे बात करते करते उस औरत ने उस तरफ देखा और इस तरह का भाव ज़ाहिर किया जैसे उन सब को आशीर्वाद दे रही हो और फिर उसने मुझ से कहा—"मैंने हिन्दुस्तान कभी देखा नहीं है लेकिन उसके बारे में मैं बहुत कुछ जानती हूँ. मुझे पता है कि भारत की संस्कृति बहुत पुरानी है."

"आप क्या काम करती हैं" मैंने पूछा.

اس دیش کی ہے جو شانتی کا ڈھونگ رچتا ہے لیکن عمل میں لڑائی کی تیاری کرتا ہے . لیکن اصلیت کو کیا کیا جائے یہ سچی اور سادھارن جنتا اسی دیش کی ہے، روس کی . وہ بھی شانتی چاہتے ہیں اس لئے کہ ان کی مہلاؤں کی پسلیوں میں ہتیا کی گولیاں اب بھی گھسی ہوئی ہیں، کیوں کہ یہ لوگ بربرتا کے خلاف لڑ رہے تھے، پس رہے تھے، برباد ہو رہے تھے . کیونکہ یہ لوگ نائٹ کلبوں میں شراب میں ڈوبے ناچ نہیں رہے تھے، رنگ رلیاں نہیں منا رہے تھے !

میں نہ جانے کیا کیا سوچ گیا . ستیندر بابو کی بھی زبان بند نہیں ہوئی . میرا دماغ میرے پاس نہیں تھا کہ میں سن سکتا کہ انہوں نے گھٹنا کے بعد اور کیا کیا کہا . لیکن جب میں واستوک دنیا میں لوٹا تو مجھے دوسری گھٹنا ستیندر بابو کہتے سنائی دیئے :—

"استالن گراڈ کے شہید چوک میں میں ٹہل رہا تھا . چاروں طرف خوشنما پھول کھلے تھے . ایک بچے کی موت کے بعد دوسرے بچے کو پاکر ماں کے منہ پر مسکراہٹ چھا جاتی ہے . استالن گراڈ کی زبردست تباہی کا بھیانک درشیہ دیکھ چکنے کے بعد اس شانتی کو پاکر شاید مسکرا اٹھی تھی . ہر وستو پر بہار تھی . عام آدمی وہاں وہار کر رہے تھے . وہاں روس دکھائی پڑ رہا تھا—کوئی بھوکا نہیں، کوئی مسکا نہیں، کوئی فقیر نہیں، کوئی گدڑی پہنے ہوئے نہیں، سب خوش تھے . بچے کھیل رہے تھے . ان کو پتہ تھا یا نہیں کہ یہ شانتی کا واتاورن ان کے بزرگوں نے اپنی جان پر کھیل کر ان کے لئے پیدا کیا ہے ! میں بھاؤناؤں کے سمندر میں ڈبکیاں لگا رہا تھا—ایک بوڑھی مہلا ایک بچے کی انگلی پکڑے میری طرف آتی دکھائی دی . میری شکل دیکھتے ہی اس نے مجھے پہچان لیا اور آتے ہی کہا—"آپ ہندستان سے آئے ہیں"

"جی ماتا" میں نے اتر دیا .

وہ کچھ دیر تک ادھر ادھر کی باتیں کرتی رہیں اور پھر بولیں "یہ دور کا درشیہ آپ کو دکھائی پڑتا ہے نہ . یہاں بڑی بھیانک لڑائی ہوئی تھی..........میرے دو لال یہاں ہی مارے گئے تھے، میری بہو بھی یہیں شہید ہوئی تھی..... وہ بڑے بہادر تھے."

مجھ سے بات کرتے کرتے اس عورت نے اس طرف دیکھا اور اس طرح کا بھاؤ ظاہر کیا جیسے ان سب کو آشیرباد دے رہی ہو اور پھر اس نے مجھ سے کہا—"میں نے ہندستان کبھی دیکھا نہیں ہے لیکن اس کے بارے میں میں بہت کچھ جانتی ہوں . مجھے پتہ ہے کہ بھارت کی سنسکرتی بہت پرانی ہے."

"آپ کیا کام کرتی ہیں" میں نے پوچھا .

"मैं शान्ति के आन्दोलन में काम करती हूँ". उसने मेरी तरफ़ ताज्जुब से देखते हुये कहा—"क्या आप के यहां औरतें शान्ति आन्दोलन में तन मन से नहीं लगी हुई हैं"

मैं खिसिया सा गया लेकिन तुरन्त कह पड़ा—"असल बात यह है कि हमारे यहां लड़ाई के क़दम नहीं आये थे. हमने मौत की भयानक शकल तो देखी है, अकाल में हमारे लाखों आदमी मरे हैं, लेकिन लड़ाई से हम दो चार नहीं हुये. इस लिये हमारी स्त्रियां शांति आन्दोलन में बहुत आगे नहीं हैं......."

"ठीक कहते हैं आप, लेकिन उन्हें शान्ति के लिये आगे आना चाहिये. शान्ति हम सब को चाहिये. लड़ाई! ओफ़ कितना भयानक दृश्य होता है. यह चौक, यह फूल, यह दृश्य, यह फ़िज़ा सब का ख़ातमा हो गया था. संगीत की तानों के बजाय गोलों की आवाज़ सुनाई पड़ती थी. स्तालिनग्राड बिल्कुल तबाह हो गया था. लेकिन हमने सब कुछ बना लिया. स्तालिनग्राड को हम फिर दुल्हन बना रहे हैं—उस भयंकर स्तालिनग्राड को हम आज भी नहीं भूल सकते."

बोलते बोलते उसने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और चिमटा कर बोली—"मेरे लाल को शान्ति चाहिये, हम इन बच्चों को फ़ौजी तालीम नहीं देते, हम इनको लड़ाई के तरीक़े नहीं सिखाते. हम तबाही और बरबादी के क़िस्से सुनाकर इनको शान्ति के लिये तैयार करते हैं..........हम लड़ाई का कोई काम नहीं करते, कर भी कैसे सकते हैं, हम उन दृश्यों को नहीं भूल सकते. हमने जो पहली सड़क बनाई है उसका नाम "शान्ति रोड" रखा है. हमें शान्ति चाहिये. इन बच्चों के लिये शान्ति चाहिये."

वह कहे जा रही थी और मैं ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था. उसने बच्चे को फिर प्यार से नीचे उतारा और मेरी तरफ़ देख कर बोली "आप भारत की महिलाओं से जाकर कहियेगा कि उनकी एक रूसी बहन ने उनसे मांग की है कि वह शान्ति आन्दोलन में काम करें. उन्हें भी शान्ति चाहिये, हमें भी शान्ति चाहिये"

मेरा सिर श्रद्धा से उस बूढ़ी रूसी औरत के सामने झुक गया. कोई देवी थी जो शान्ति का सन्देश दे रही थी!

सत्यव्रत बाबू देर तक बोलते रहे. और न जाने क्या क्या उन्होंने कहा होगा लेकिन मेरे लिए तो सिर्फ़ यह दो घटनायें ही काफ़ी थीं. मेरा अविश्वास ख़तम हो गया था. मैं रूस के हर नर-नारी—मज़दूर, किसान, सिपाही—को यह कहते सुन रहा था—'शान्ति ज़िन्दाबाद' और उसी भावुक वातावरण में चुपके चुपके मेरे होंठ भी हिले और उनसे आवाज़ निकली "शान्ति ज़िन्दाबाद! शान्ति ज़िन्दाबाद!

"میں شانتی کے آندولن میں کام کرتی ہوں." اس نے میری طرف تعجب سے دیکھتے ہوئے کہا—"کیا آپ کے یہاں عورتیں شانتی آندولن میں تن من سے نہیں لگی ہوئی ہیں."

میں سٹپٹا سا گیا. لیکن ترنت کہہ پڑا—"اصل بات یہ ہے کہ ہمارے یہاں لڑائی کے قدم نہیں آئے تھے. ہم نے موت کی بھیانک شکل تو دیکھی ہے، اکال میں ہمارے لاکھوں آدمی مرے ہیں، لیکن لڑائی سے ہم دو چار نہیں ہوئے. اس لئے ہماری استریاں شانتی آندولن میں بہت آگے نہیں ہیں......"

"ٹھیک کہتے ہیں آپ، لیکن انہیں شانتی کے لئے آگے آنا چاہئے. شانتی ہم سب کو چاہئے. لڑائی! اوف کتنا بھیانک درشیہ ہوتا ہے. یہ چوک، یہ پھول، یہ درشیہ، یہ فضا سب خاتمہ ہوگیا تھا. سنگیت کی تانوں کے بجائے گولوں کی آواز سنائی پڑتی تھی. اسٹالن گراڈ بالکل تباہ ہوگیا تھا. لیکن ہم نے سب کچھ بنا لیا. اسٹالن گراڈ کو ہم پھر دلہن بنا رہے ہیں—اس بھیانک اسٹالن گراڈ کو ہم آج بھی نہیں بھول سکتے."

بولتے بولتے اس نے اس بچے کو گود میں اٹھا لیا اور چمٹا کر بولی—"میرے لال کو شانتی چاہئے، ہم ان بچوں کو فوجی تعلیم نہیں دیتے، ہم ان کو لڑائی کے طریقے نہیں سکھاتے. ہم تباہی اور بربادی کے قصے سنا کر ان کو شانتی کے لئے تیار کرتے ہیں...........ہم لڑائی کا کوئی کام نہیں کرتے، کر بھی کیسے سکتے ہیں، ہم ان درشیوں کو نہیں بھول سکتے. ہم نے جو پہلی سڑک بنائی ہے اس کا نام "شانتی روڈ" رکھا ہے. ہمیں شانتی چاہئے. ان بچوں کے لئے شانتی چاہئے." وہ کہے جا رہی تھی اور میں دھیان سے اس کی باتیں سن رہا تھا. اس نے بچے کو پھر سے پیار سے نیچے اتارا اور میری طرف دیکھ کر بولی "آپ بھارت کی مہیلاؤں سے جا کر کہئے کہ ان کی ایک روسی بہن نے ان سے مانگ کی ہے کہ وہ شانتی آندولن میں کام کریں. انہیں بھی شانتی چاہئے، ہمیں بھی شانتی چاہئے."

میرا سر شردھا سے اس بوڑھی روسی عورت کے سامنے جھک گیا. کوئی دیوی تھی جو شانتی کا سندیش دے رہی تھی!

ستیہ برت بابو دیر تک بولتے رہے. اور نہ جانے کیا کیا انہوں نے کہا ہوگا. لیکن میرے لئے تو صرف یہ دو گھٹنائیں ہی کافی تھیں. میرا اوشواس ختم ہوگیا تھا. میں روس کے ہر نر ناری—مزدور، کسان، سپاہی—کو یہ کہتے سن رہا تھا—'شانتی زندہ باد' اور اسی بھاوک واتاورن میں چپکے چپکے میرے ہونٹ بھی ہلے اور ان سے آواز نکلی "شانتی زندہ باد! شانتی زندہ باد!

यही कलजुग है !

सेकण्ड क्लास वेटिंग रूम में बैठा मैं एक किताब पढ़ रहा था. एक साहब मेरे पास बैठे अचानक, न जाने क्यों, मेरा पढ़ना रोक कर बोले कि आजकल के ब्राह्मन सब के सब बेहद असन्तोषी हो गये हैं, कितना भी उन्हें खिलाओ, कितनी भी दक्षिणा दो, उन्हें सन्तोष नहीं होता. मुझे अपनी किताब पढ़ने में इतना आनन्द आ रहा था कि मैं उन्हें टालने के लिये फौरन कह बैठा: 'हां, आप कहते तो ठीक हैं.' इस जवाब से उनकी कुछ तसल्ली नहीं हुई और वह फिर बोले कि मैं ठीक ही नहीं कहता बल्कि अपने अनुभव के बल पर कहता हूं कि मुझे एक भी ब्राह्मन सन्तोषी नहीं मिला. मैं उनकी इस बात का जवाब दूं कि पास बैठे हुये एक मुसलमान सज्जन बोल उठे, "अगर बीच में बोलना बेअदबी न हो तो मैं कुछ अर्ज करूं?"

हम दोनों एक साथ बोल उठे, "ज़रूर, ज़रूर फ़रमाइये."

'मैंने एक सन्तोषी ब्राह्मन को अपनी आँखों से देखा है, उसे जानता हूँ. अगर आप इजाज़त दें तो मैं उसका किस्सा अर्ज़ करूँ."

मैंने घड़ी निकाल कर देखा, साढ़े आठ बजे थे. जिस गाड़ी से जाना था वह साढ़े नौ बजे आती थी. मैं बोला अभी तो गाड़ी आने में काफ़ी देर है. आप उस सन्तोषी ब्राह्मन का किस्सा ज़रूर सुनाइये.

'सुनाइये साहब, ज़रूर सुनाइये', मेरे साथी ने यह कहकर मेरा साथ दिया, इस कलजुग में, और सन्तोषी ब्राह्मन !'

'कलजुग मैं जानता नहीं, उसमें सन्तोषी ब्राह्मन हैं या नहीं, मैं तो हिन्दुस्तान की बात करता हूँ और सो भी बलिया जिले के एक गांव की बात. वहीं का वह सन्तोषी ब्राह्मन है. मैं आरा (बिहार) का रहने वाला हूँ. सैयद हफ़ीज़ मेरा नाम है. मेरी पहली मुलाकात उस ब्राह्मन से बम्बई में हुई. मुलाकात के दो महीने के भीतर ही उनसे मेरी इतनी दोस्ती हो गई कि अब उसे दोस्त कहना, न पहचानना और न उसके गांव वालों का. अब वह मेरा छोटा भाई है और उसकी इकलौती लड़की मेरी लड़की और उसका शौहर मेरा दामाद है. शादी होने के बाद कई बार वह दोनों मेरे मेहमान रह चुके हैं. और अब दोनों घरानों में इतनी राहोरस्म हो गई है कि त्योहार

یہی کل جگ ہے !

سیکنڈ کلاس ویٹنگ روم میں بیٹھا میں ایک کتاب پڑھ رہا تھا۔ ایک صاحب میرے پاس بیٹھے اچانک، نہ جانے کیوں، میرا پڑھنا روک کر بولے کہ آج کل کے براہمن سب کے سب بےحد اسنتوشی ہوگئے ہیں، کتنا بھی انہیں کھلاؤ، کتنا بھی دکشنا دو، انہیں سنتوش نہیں ہوتا۔ مجھے اپنی کتاب پڑھنے میں اتنا آنند آ رہا تھا کہ میں انہیں ٹالنے کے لئے فوراً کہہ بیٹھا: 'ہاں آپ کہتے تو ٹھیک ہیں۔' اس جواب سے ان کی کچھ تسلی نہیں ہوئی اور وہ پھر بولے کہ میں ٹھیک ہی نہیں کہتا بلکہ اپنے انوبھو کے بل پر کہتا ہوں کہ مجھے ایک بھی براہمن سنتوشی نہیں ملا۔ میں ان کی اس بات کا جواب دوں کہ پاس بیٹھے ہوئے ایک مسلمان سجن بول اٹھے، "اگر بیچ میں بولنا بےادبی نہ ہو تو میں کچھ عرض کروں؟"

ہم دونوں ایک ساتھ بول اٹھے، "ضرور، ضرور فرمائیے۔"

"میں نے ایک سنتوشی براہمن کو اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے، اسے جانتا ہوں، اگر آپ اجازت دیں تو میں اس کا قصہ عرض کروں۔"

میں نے گھڑی نکال کر دیکھا، ساڑھے آٹھ بجے تھے۔ جس گاڑی سے جانا تھا وہ ساڑھے نو بجے آتی تھی۔ میں بولا ابھی تو گاڑی آنے میں کافی دیر ہے۔ آپ اس سنتوشی براہمن کا قصہ ضرور سنائیے۔

'سنائیے صاحب، ضرور سنائیے' میرے ساتھی نے یہ کہہ کر میرا ساتھ دیا، اس کل جگ میں اور سنتوشی براہمن!'

'کل جگ میں جانتا نہیں، اس میں سنتوشی براہمن ہیں یا نہیں، میں تو ہندوستان کی بات کرتا ہوں اور سو بھی بلیا ضلع کے ایک گاؤں کی بات۔ وہیں کا وہ سنتوشی براہمن ہے۔ میں آرہ (بہار) کا رہنے والا ہوں۔ سید حفیظ میرا نام ہے، میری پہلی ملاقات اس براہمن سے بمبئی میں ہوئی۔ ملاقات کے دو مہینے کے بھیتر ہی اس سے میری اتنی دوستی ہوگئی کہ اب اسے دوست کہنا، نہ اسے پہچانتا اور نہ اس کے گاؤں والوں کو۔ اب وہ میرا چھوٹا بھائی ہے اور اس کی اکلوتی لڑکی میری لڑکی ہے اور اس کا شوہر میرا داماد ہے۔ شادی ہونے کے بعد سے کئی بار وہ دونوں میرے مہمان رہ چکے ہیں۔ اور اب ان دونوں گھرانوں میں اتنی راہ رسم ہوگئی ہے کہ تہوار

का कोई ब्याह शादी कभी खाली नहीं जाता जिस में मैं शरीक न होऊँ या वह मेरे यहां न आवें.'

'यह सब तो ठीक है, हमें तो आप यह सुनाइये कि उस ब्राह्मन को आप सन्तोषी क्यों कहते हैं ?'

'जी हां, मैं उसी को अर्ज करने जा रहा हूँ, लीजिये सुनिये.

'मेरा कारोबार बम्बई में होता है. वहीं एक चाल में मेरा मकान है. उस चाल में कई मारवाड़ी और गुजराती सेठ रहते हैं. एक दिन का जिक्र है. मैंने एक बुड्ढे आदमी को पास के दो-तीन मकानों में से थोड़ी थोड़ी देर में दाखिल होते और निकलते देखा. मैं समझ ही न पाया कि माजरा क्या है ? खुद तो मेरी हिम्मत न हुई कि मैं उन बूढ़े भाई से पूछूं, इसलिये मैंने अपने नौकर लखीची को उसका हाल जानने के लिये भेजा. उसने थोड़ी देर में आकर यह खबर दी कि वह एक ब्राह्मन है और अपनी लड़की की शादी के सिलसिले में कुछ पैसा जमा करने आया है. पर उसको कहीं भी कामयाबी नहीं हुई. यह सुनकर न जाने क्यों यकायक मेरे दिल में उसके लिये हमदर्दी पैदा हो गई और मैंने फौरन ही लखीची को भेज कर उन्हें अपने पास बुलवा भेजा. वह अब मेरे कमरे में आ पहुंचे और मैंने उनसे बात चीत करना शुरू कर दी.

'भाई साहब क़सूर माफ हो मैंने आपको इसलिये तकलीफ दी कि मैं बड़ी देर से देख रहा हूं कि आप कभी किसी मकान में दाखिल होते हैं और कभी किसी मकान में और हर मकान से दस पांच मिनट में बाहर आ जाते हैं, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ?'

'हां, भाई साहब, पूछने में कोई हर्ज नहीं' पर असली बात मैं आप के नौकर से कह चुका हूँ.'

'बेशक, उस बात का कुछ इशारा तो मिल गया है. पर क्या मैं उस बात को तफ़सील से जान सकता हूँ ?'

'क्यों नहीं, जब मैं भीख मांगने ही निकला हूँ तब आप से कहते भी मुझे लज्जा क्यों होने लगी !'

'तो फिर कह डालिये.'

'देखिये ! मैं बलिया के पास एक गांव का रहनेवाला हूं, जाति का ब्राह्मन हूँ. खेती का काम करता हूँ. बारह बरस काशी में वेद-वेदांग पढ़कर भी मुझे पंडिताई का काम न रुचा. खेती के काम में मुझे आनन्द आता है. मैं और मेरी घर वाली दोनों उसी काम में लगे रहते हैं. मेरे एक बेटी है, उसकी उम्र चौदह बरस की है. खेत से मेरी आमदनी इतनी ही होती है जिससे हम तीनों प्राणियों का गुज़र हो सके. लड़की अब सयानी हो गई. उसके ब्याह

یا کوئی بیاہ شادی کبھی خالی نہیں جاتا جس میں میں شریک نہ ہوں یا وہ میرے یہاں نہ آئیں .'

'یہ سب تو ٹھیک ہے' ہمیں تو آپ یہ سنائیے کہ اُس براھمن کو آپ سنتوشی کیوں کہتے ہیں ؟'

'جی ہاں میں اُسی کو عرض کرنے جا رہا ہوں' لیجئے سنئے .

'میرا کاروبار بمبئی میں ہوتا ہے . وہیں ایک چال میں میرا مکان ہے . اُس چال میں کئی مارواڑی اور گجراتی سیٹھ رہتے ہیں . ایک دن کا ذکر ہے . میں نے ایک بڈھے آدمی کو پاس کے دو تین مکانوں میں سے تھوڑی تھوڑی دیر میں داخل ہوتے اور نکلتے دیکھا . میں سمجھ ہی نہ پایا کہ ماجرہ کیا ہے ؟ خود تو میری ہمت نہ ہوئی کہ میں اُن بوڑھے بھائی سے پوچھوں' اس لئے میں نے اپنے نوکر لکھیچی کو اُس کا حال جاننے کے لئے بھیجا . اُس نے تھوڑی دیر میں آکر یہ خبر دی کہ وہ ایک براھمن ہے اور اپنی لڑکی کی شادی کے سلسلے میں کچھ پیسہ جمع کرنے آیا ہے . پر اس کو کہیں بھی کامیابی نہیں ہوئی . یہ سن کر نہ جانے کیوں یکایک میرے دل میں اس کے لئے ہمدردی پیدا ہوگئی . اور میں نے فوراً ہی لکھیچی کو بھیجکر انہیں اپنے پاس بلوا بھیجا . وہ اب میرے کمرے میں آ پہنچے اور میں نے اُن سے بات چیت کرنا شروع کردی .'

'بھائی صاحب قصور معاف ہو' میں نے آپکو اِس لئے تکلیف دی کہ میں بڑی دیر سے دیکھ رہا ہوں کہ آپ کبھی کسی مکان میں داخل ہوتے ہیں اور کبھی کسی مکان میں اور ہر مکان سے دس پانچ منٹ میں باہر آ جاتے ہیں . کیا میں پوچھ سکتا ہوں کہ آپ ایسا کیوں کر رہے ہیں ؟'

'ہاں بھائی صاحب' پوچھنے میں کوئی حرج نہیں' پر اصلی بات آپ کے نوکر سے کہہ چکا ہوں .'

'بے شک اُس بات کا کچھ اشارہ تو مل گیا ہے . پر کیا میں اُس بات کو تفصیل سے جان سکتا ہوں ؟'

'کیوں نہیں جب میں بھیک مانگنے ہی نکلا ہوں تب آپ سے کہتے ہی مجھے لجا کیوں ہونے لگی !'

'تو پھر کہہ ڈالئے .'

' دیکھئے ! میں بلیا کے پاس ایک گاؤں کا رہنے والا ہوں . ذات کا براھمن ہوں . کھیتی کا کام کرتا ہوں . بارہ برس کاشی میں وید ویدانگ پڑھکر بھی مجھے پنڈتائی کا کام نہ روچا . کھیتی کے کام میں مجھے آنند آتا ہے . میں اور میری گھر والی دونوں اُسی کام میں لگے رہتے ہیں . میرے ایک بیٹی ہے' اُسکی عمر چودہ برس کی ہے . کھیت سے میری آمدنی اتنی ہی ہوتی ہے جس سے ہم تینوں پرانیوں کا گذر ہو سکے . لڑکی اب سیانی ہوگئی . اُس کے بیاہ

का जवाब समझ आया. ज्यों-त्यों कर एक लड़का तय किया. उसका बाप दो सौ रुपये मांगता है. मैंने खेत के काम से घर खर्च से बचाकर सौ रुपये जमा कर रखे हैं. लड़की के ब्याह के लिये हिसाब लगाया. चार सौ रुपये का बजट बनाया. दो सौ नक़द देने के लिये और दो सौ ऊपर का खर्च जिस में कपड़े-लत्ते, गहना-पाती और मेहमानों की ख़ातिरदारी सब शामिल है. लोगों ने समझ तो यह रखा है कि भीख मांगना ब्राह्मन का पेशा है, पर खेती करते-करते मुझे भीख मांगने से नफ़रत हो गई है. उमर भर कभी भीख मांगी नहीं, पर ब्राह्मनी के हठ करने पर अपने कुछ यजमानों से भीख मांगने के लिये बम्बई आना ही पड़ा. दो-तीन घरों में मैं गया. वह मुझ को दस-दस बीस-बीस देने को तैयार हैं. मैं एक ही घर से दो सौ रुपये लेना चाहता हूँ जिसके लिये कोई तैयार नहीं. इसलिये मैं हर घर में दस-पन्द्रह मिनट ठहरता हूँ और नाकामयाब बाहर आ जाता हूं. दो-एक यजमान और बचे हैं, उनसे मिलकर घर लौट आऊंगा. ऐसा मालूम होता है कि ख़ाली हाथ ही घर पहुँचूंगा. ब्राह्मनी के कहने से मैंने अपनी-सी कोशिश कर ली. अब जैसा लड़की का भाग्य वैसा होगा. यह है मेरी कथा.'

'लतीफ़ी ! मेरी कैशबॉक्स तो लाओ,' मैंने अपने नौकर को हुक्म दिया.

वह कैशबाक्स उठा लाया और मैंने उसमें से सौ-सौ के पांच नोट निकाले और अपने दोनों हाथों में रख उन बुज़ुर्ग की नज़र किये.

यह देख कर उन बुज़ुर्ग के दोनों हाथ उठे, जुड़े, ऊपर की तरफ़ हुये, उन्होंने मालिक को धन्यवाद दिया, और पांच मिनट कुछ सोचा, और उनका सारा बदन मुझे सुकड़ता-सा मालूम हुआ. उन्होंने अपने जुड़े हुये हाथ खोले और मेरे हाथ से पांचों नोट उठाकर उनमें से तीन गिनकर ले लिये और दो मुझे वापिस करने लगे.

'मैं तो यह पांचों नोट आपके नाम से निकाल चुका,' मैं बोला.

'यह आपकी मेहरबानी है पर मुझे तो तीन की ज़रूरत है,' वह बोले.

'पर मैं आपके नाम से निकाली हुई रक़म में से एक पैसा भी कैसे वापस ले सकता हूँ ?'

'पर मैं ज़रूरत से ज़ियादा ले भी कैसे सकता हूं. मेरा ईश्वर मुझ से क्या कहेगा. ज़रूरत की भीख मांगी जा सकती है, ली जा सकती है, काम में लाई जा सकती है, ज़रूरत से ज़ियादा क़बूल करना मेरे धरम में पाप है.'

'महाराज, आप तो ठीक कहते हैं, पर मेरे धरम का भी तो कुछ ख़याल रखिये. मैं तो यह पांचों नोट आपको

کا سوال سامنے آیا. جیوں تیوں کر ایک لڑکا طے کیا. اُس کا باپ دو سو روپے مانگتا ہے. میں نے کھیت کے کام سے گھر خرچ سے بچا کر سو روپے جمع کر رکھے ہیں. لڑکی کے بیاہ کے لئے حساب لگایا. چار سو روپے کا بجٹ بنایا. دو سو نقد دینے کے لئے اور دو سو اوپر کا خرچ جس میں کپڑے لتے، گہنا پاتی اور مہمانوں کی خاطرداری سب شامل ہے. لوگوں نے سمجھ تو یہ رکھا ہے کہ بھیک مانگنا براہمن کا پیشہ ہے، پر کھیتی کرتے کرتے مجھے بھیک مانگنے سے نفرت ہو گئی ہے. عمر بھر کبھی بھیک مانگی نہیں، پر براہمنی کے ہٹھ کرنے پر اپنے کچھ یجمانوں سے بھیک مانگنے کے لئے بمبئی آنا ہی پڑا. دو تین گھروں میں میں گیا. وہ مجھکو دس دس بیس بیس دینے کو تیار ہیں. میں ایک ہی گھر سے دو سو روپے لینا چاہتا ہوں جس کے لئے کوئی تیار نہیں. اس لئے میں ہر گھر میں دس پندرہ منٹ ٹھہرتا ہوں اور ناکامیاب باہر آجاتا ہوں. دو ایک یجمان اور بچے ہیں، اُن سے ملکر گھر لوٹ جاونگا. ایسا معلوم ہوتا ہے کہ خالی ہاتھ ہی گھر پہنچونگا. براہمنی کے کہنے سے میں نے اپنی سی کوشش کر لی. اب جیسا لڑکی کا بھاگیہ ویسا ہوگا. یہ ہے میری کتھا.'

'لطیفی! میری کیش باکس تو لاؤ' میں نے اپنے نوکر کو حکم دیا.

وہ کیش باکس اُٹھا لیا اور میں نے اُس میں سے سو سو کے پانچ نوٹ نکالے اور اپنے دونوں ہاتھوں میں رکھ اُن بزرگ کی نظر کئے.

یہ دیکھکر اُن بزرگ کے دونوں ہاتھ اٹھے، جڑے، اوپر کی طرف ہوئے، اُنہوں نے مالک کو دھنیواد دیا، اور پانچ منٹ کچھ سوچا، اور اُن کا سارا بدن مجھے سکڑتا سا معلوم ہوا. اُنہوں نے اپنے جڑے ہوئے ہاتھ کھولے اور میرے ہاتھ سے پانچوں نوٹ اُٹھا کر اُن میں سے تین گن کر لے لئے اور دو مجھے واپس کرنے لگے.

'میں تو یہ پانچوں نوٹ آپ کے نام سے نکال چکا' میں بولا.

'یہ آپ کی مہربانی ہے پر مجھے تو تین کی ضرورت ہے' وہ بولے.

'پر میں آپ کے نام سے نکلی ہوئی رقم میں سے ایک پیسہ بھی کیسے واپس لے سکتا ہوں؟'

'پر میں ضرورت سے زیادہ لے بھی کیسے سکتا ہوں. میرا ایشور مجھ سے کیا کہیگا. ضرورت کی بھیک مانگی جا سکتی ہے، لی جا سکتی ہے، کام میں لائی جا سکتی ہے، ضرورت سے زیادہ قبول کرنا میرے دھرم میں پاپ ہے.'

'مہاراج، آپ تو ٹھیک کہتے ہیں، پر میرے دھرم کا بھی تو کچھ خیال رکھئے. میں تو یہ پانچوں نوٹ آپ کو

दे चुका. अब इनमें से एक भी मेरा नहीं है. आप इन दो नोटों को, जिन्हें आप ज़रूरत से ज़ियादा समझते हैं, किसी और काम में लगा दीजिये.'

'आप कहते तो ठीक हैं, पर मैं क्या करूँ ? मैं पैदायशी ब्राह्मन हूं और खेती करता हूँ. दोनों ही के नाते मुझे ज़रूरत से ज़ियादा लेने का अधिकार नहीं और बे ज़रूरत की चीज़ को लेकर उसे खर्च करने की सोचना मुझे कुछ जँचता नहीं. और फिर भीक से पाई रकम को किसी दूसरे को दे डालने में मज़ा भी क्या है ?'

'महाराज, आपको अपने मज़े का तो हर तरह ख़याल, पर मेरी तकलीफ़ का ज़रा भी ख़याल नहीं. मैं जिस रक़म को दे चुका उसे कैसे वापस ले लूँ. और अगर ले लूं तो मेरे दिल को कितनी तकलीफ़ होगी.'

'भाई साहब, मैं यह तो कैसे कहूँ कि आप जो कुछ कह रहे हैं वह सच नहीं है, पर मैंने तो आते ही आपके सामने अपनी सारी कहानी सच-सच सुना दी थी और अपनी ज़रूरत भी बता दी थी; फिर आप मुझे ज़ियादा लेने के लिये क्यों मजबूर करते हैं.'

'देखिये आप मुझे भाई कहकर बोलते हैं. अब आप और हम भाई-भाई हैं. अब न आप दान लेनेवाले और न मैं दान देनेवाला. अब आप इस रक़म को दान हरगिज़ न समझिये, यह तो मैं अपनी भतीजी के ब्याह में खर्च करने के लिये आपको दे रहा हूँ.'

'जब यह बात है तब आपको रुपये वापिस ले लेने चाहियें. और मुझे ज़रूरत से ज़ियादा लेने के लिये ज़ोर नहीं देना चाहिये. मैं ब्याह में ज़ियादा खर्च करके ऐसी बात क्यों करूँ जिसे मैं आगे न निभा सकूँ. और फिर जब आप इस रक़म को दान ही नहीं मानते तब इसको वापिस लेने में क्यों आनाकानी ?'

'अच्छा एक काम कीजिये. आप यह दो नोट न लीजिये. मेरी तरफ़ से ये दोनों नोट मेरी भतीजी को दे दीजिये.'

'भाई साहब, यह न हो सकेगा. मैं ज़रूरत से ज़ियादा एक पैसा भी न ले सकूंगा.'

'अब मैं आप से क्या कहूं. मैं उन बुज़ुर्ग ब्राह्मन को किसी तरह तीन सौ से ऊपर एक पैसा लेने के लिये राज़ी न कर सका. हाँ, यह दूसरी बात है कि मैं वक़्त निकालकर उनकी लड़की के ब्याह के मौक़े पर उनके गाँव पहुँच गया. और फिर बड़ी मुश्किल से इस बात में कामयाब हो सका कि मैं जो कुछ नक़द, ज़ेवर, कपड़ा उस लड़की के लिये ले गया था, उसे दे सका. हाँ, मेरे गांव पहुँचने का यह नतीजा ज़रूर हुआ कि बारात को जैसे ही यह सारा क़िस्सा मालूम हुआ तो लड़के ने अपने बाप से इस बात पर ज़िद की कि

دے چکا ۔ اب ان میں سے ایک بھی میرا نہیں ہے ۔ آپ ان دو نوٹوں کو' جنہیں آپ ضرورت سے زیادہ سمجھتے ہیں کسی اور کام میں لگا دیجئے ۔'

' آپ کہتے تو ٹھیک ہیں' پر میں کیا کروں ؟ میں پیدائشی براہمن ہوں اور کھیتی کرتا ہوں ۔ دونوں ہی کے ناطے مجھے ضرورت سے زیادہ لینے کا ادھیکار نہیں اور بے ضرورت کی چیز کو لیکر پھر اُسے خرچ کرنے کی سوچنا مجھے کچھ جنچتا نہیں ۔ اور پھر بھیک سے پائی رقم کو کسی دوسرے کو دے ڈالنے میں مزا بھی کیا ہے ؟

' مہاراج' آپ کو اپنے مزے کا تو ہر طرح خیال' پر میری تکلیف کا ذرا بھی خیال نہیں ۔ میں جس رقم کو دے چکا اُسے کیسے واپس لے لوں ۔ اور اگر لے لوں تو میرے دل کو کتنی تکلیف ہوگی ۔'

' بھائی صاحب' میں یہ کیسے کہوں کہ آپ جو کچھ کہہ رہے ہیں وہ سچ نہیں ہے' پر میں نے تو آتے ہی آپ کے سامنے اپنی ساری کہانی سچ سچ سنا دی تھی اور اپنی ضرورت بھی بتا دی تھی؛ پھر آپ مجھے زیادہ لینے کے لئے کیوں مجبور کرتے ہیں ۔

' دیکھئے آپ مجھے بھائی کہکر بولتے ہیں ۔ اب آپ اور ہم بھائی بھائی ہیں ۔ اب نہ آپ دان لینے والے اور نہ میں دان دینے والا ۔ اب آپ اِس رقم کو دان ہرگز نہ سمجھئے' یہ تو میں اپنی بھتیجی کے بیاہ میں خرچ کرنے کے لئے آپ کو دے رہا ہوں ۔'

' جب یہ بات ہے تب آپ کو روپے واپس لے لینے چاہئے ۔ اور مجھے ضرورت سے زیادہ لینے کے لئے زور نہیں دینا چاہئے ۔ میں بیاہ میں زیادہ خرچ کر کے ایسی بات کیوں کروں جسے میں آگے نہ نبھا سکوں ۔ اور پھر جب آپ اِس رقم کو دان ہی نہیں مانتے تب اِس کو واپس لینے میں کیوں آنا کانی ؟'

' اچھا ایک کام کیجئے ۔ آپ یہ دو نوٹ نہ لیجئے ۔ میری طرف سے یہ دونوں نوٹ میری بھتیجی کو دے دیجئے ۔

' بھائی صاحب' یہ نہ ہوسکیگا ۔ میں ضرورت سے زیادہ ایک پیسہ بھی نہ لے سکونگا ۔'

' اب میں آپ سے کیا کہوں ۔ میں اُن بزرگ براہمن کو کسی طرح تین سو سے اوپر ایک پیسہ لینے کے لئے راضی نہ کر سکا ۔ ہاں' یہ دوسری بات ہے کہ میں وقت نکال کر اُن کی لڑکی کے بیاہ کے موقع پر اُن کے گاؤں پہنچ گیا ۔ اور پھر بڑی مشکل سے اِس بات میں کامیاب ہوسکا کہ میں جو کچھ نقد' زیور' کپڑا اس لڑکی کے لئے لے گیا تھا' اُسے دے سکا ۔ ہاں' میرے گاؤں پہنچنے کا یہ نتیجہ ضرور ہوا کہ باراتی کو جیسے ہی یہ سارا قصہ معلوم ہوا تو لڑکے نے اپنے باپ سے اس بات پر ضد کی کہ

वो सौ रुपये, जो जमादारनी की शक्ल में तय हुए थे, न लिये जायें. और उसके बाद इस बात पर राज़ी भी हो गये. राज़ी हो जाने के बाद उन बुज़ुर्ग से एक नई बात का पता और चला और वह यह कि उनकी ब्राह्मनी उनसे ज़ियादा सनातनी थी. यह दूसरी बात है कि वह पढ़ी-लिखी न होने की वजह से पुराने संस्कारों में विश्वास रखती थी और ग़लत रस्म-रिवाज को ही धरम मानती थी, इसलिये उन बुज़ुर्ग को समझाने में थोड़ी दिक़्क़त हुई. और वह यह बात थी कि जैसे ही बुज़ुर्ग घर पहुँचे और उन्होंने एक मुसलमान से दान लेकर आने की बात अपनी ब्राह्मनी से कही तो वह एकदम बिगड़ गई और उन्होंने उस रुपये को छूने तक से इन्कार कर दिया. बुज़ुर्ग वेद वेदांग के जानकार थे इसलिये उसको आसानी से समझा सके और पूरी तरह राज़ी कर सके. आगे का हाल तो आप जानते ही हैं. जब मैं उनके गाँव में पहुंचा तो क्या ब्राह्मनी, क्या उनकी लड़की, क्या गांव वाले, क्या बाराती और क्या नौशाह सभी ने मुझे इस तरह अपनाया मानों मैं इन्हीं में से एक हूं और फिर जनाब, आज के दिन तक उस घराने से मेरे घराने की राहोरस्म ऐसी चली आ रही है मानो हम सब एक ही धरम और एक ही जाति के हों.'

क्या अब भी आप समझते हैं कि यह कलजुग है ?

'राष्ट्र भारती' से —भगवानदीन

سو سو روپے' جو قرار داری کی شکل میں طے ہوئے تھے' نہ لئے جائیں. اور اس کے بعد اس بات پر راضی بھی ہوگئے. راضی ہوجانے کے بعد اُن بزرگ سے ایک نئی بات کا پتہ اور چلا اور وہ یہ کہ اُن کی براہمنی ان سے زیادہ سناتنی تھیں' یہ دوسری بات ہے کہ وہ پڑھی لکھی نہ ہونے کی وجہ سے پرانے سنسکاروں میں وشواس رکھتی تھیں اور غلط رسم رواج کو ہی دھرم مانتی تھیں' اس لئے ان بزرگ کو سمجھانے میں تھوڑی دقت ہوئی. اور وہ یہ بات تھی کہ جیسے ہی بزرگ گھر پہنچے اور انہوں نے ایک مسلمان سے دان لیکر آنے کی بات اپنی براہمنی سے کہی تو وہ ایک دم بگڑ گئیں اور انہوں نے اُس روپے کو چھونے تک سے انکار کر دیا. بزرگ وید ویدانگ کے جانکار تھے اس لئے اُس کو آسانی سے سمجھا سکے اور پوری طرح راضی کر سکے. آگے کا حال تو آپ جانتے ہی ہیں. جب میں اُن کے گاؤں میں پہنچا تو کیا براہمنی' کیا اُن کی لڑکی' کیا گاؤں والے' کیا باراتی اور کیا نوشہ سبھی نے مجھے اِس طرح اپنایا مانوں میں انہیں میں سے ایک ہوں اور پھر جناب' آج کے دن تک اُس گھرانے سے میرے گھرانے کی راہ و رسم ایسی چلی آ رہی ہے مانوں ہم سب ایک ہی دھرم اور ایک ہی جات کے ہوں.'

کیا اب بھی آپ سمجھتے ہیں کہ یہ کلجگ ہے ؟

'راشٹر بھارتی' سے —بھگوان دین

'हरिजन' से

खुराक में खोज और सरकार

(किशोर लाल मशरूवाला)

[आजकल आए दिन हमारे सरकारी हुक्काम बताया करते हैं कि खुराक के मामले में देश में बड़ी बड़ी खोजें की जा रही हैं और वह वक़्त क़रीब है कि जब इस तरह खुराक के हमारे सब सवाल हल हो जायेंगे. लेकिन कौन नहीं जानता कि हमारे देश में जो खोज का काम होता है वह जनता से कितनी दूर रह कर किया जाता है और उसमें किसी व्यापारी वग़ैरह को भले फ़ायदा होता हो जनता को तो हरगिज़ नहीं होता. इस सम्बन्ध में हाल ही में 'हरिजन' में श्री किशोरलाल भाई मशरूवाला ने एक चुभता हुआ लेख लिखा है. हम उसी का अनुवाद नीचे दे रहे हैं.—एडीटर]

हमारे देश में ठीक और पूरी खुराक में कुछ ज़रूरी चीज़ों की बहुत कमी है. राष्ट्र के ज़ियादा बड़े हिस्से को

'ہریجن' سے

خوراک میں کھوج اور سرکار

(کشور لال مشرو والا)

[آج کل آئے دن ہمارے سرکاری حکام بتایا کرتے ہیں کہ خوراک کے معاملے میں دیش میں بڑی بڑی کھوجیں کی جا رہی ہیں اور وہ وقت قریب ہے جب اِسطرح خوراک کے ہمارے سب سوال حل ہو جائیں گے. لیکن کون نہیں جانتا کہ ہمارے دیش میں جو کھوج کا کام ہوتا ہے وہ جنتا سے کتنی دور رہ کر کیا جاتا ہے اور اُس میں کسی بیوپاری وغیرہ کو بھلے فائدہ ہوتا ہو جنتا کو تو ہرگز نہیں ہوتا. اِس معاملہ میں حال ہی میں 'ہریجن' میں شری کشور لال بھائی مشرووالا نے ایک چبھتا ہوا لیکھ لکھا ہے ہم اُسی کا انوواد نیچے دے رہے ہیں.—ایڈیٹر]

ہمارے دیش میں ٹھیک اور پوری خوراک میں کچھ ضروری چیزوں کی بہت کمی ہے. راشٹر کے زیادہ بڑے حصے کو

तादाद और परवरिश की दृष्टि से पूरा अनाज नहीं मिलता. जिन लोगों को भर पेट अनाज मिल जाता है, वह भी परवरिश के लिहाज से भूकों ही मरते हैं. नतीजा यह है कि राष्ट्र जो ख़ुराक खाता है, उसका एक हिस्सा बिल्कुल ख़राब जाता है, क्योंकि अच्छी तरह हज़म न होने के कारन उससे लोगों को कोई फ़ायदा नहीं मिलता.

व्योपारियों का फ़ायदा.

इस लिये जब ख़ुराक की खोज करने वाले वैज्ञानिक तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाली ख़ुराक की कोई ऐसी नई चीज़ सुझाते हैं, जो कसरत से मिलने वाली लेकिन अनजानी या ग़ैर मामूली वनस्पति से तैयार की जा सकती हो, तो वह भुक्कड़ राष्ट्र को नया सन्देश देने वाले फ़रिश्ते से मालूम होने चाहियें. राष्ट्र के सेवक इन खोजकर्ताओं से इस तरह का कोई घरेलू तरीक़ा जानना चाहते हैं जिसकी मदद से वह किसी वनस्पति से पोशक ख़ुराक तैयार कर सकें. वह चाहते हैं कि इस तरह वे वनस्पतियाँ काम में आ जायें जो न खाने लायक़ या न हज़म होने लायक़ मानी जाती हैं और आस पास बेकार पड़ी रहती हैं, या जिन्हें वह परती ज़मीन पर या डांवाडोल फ़सल देने वाली ज़मीन पर आसानी से पैदा कर सकते हैं. जिस मक़सद को सामने रखकर हमारे माहिर लोग खोज करते हैं, उसके कारन उनके सारे काम की मिट्टी पलीद हो जाती है—कभी कभी तो वह ग़रीबों के लिए नुक़सान देह भी साबित होता है. उनका काम इन्सान के भोजन की वानगियों सूची की में एक नई चीज़ ज़रूर जोड़ देता है. पर ऐसी चीज़ों से वह लोग ही फ़ायदा उठा सकते हैं, जो दूसरे रास्तों से रोज़ी कमाते हैं और बाज़ार में ऊपर से सस्ती दिखने वाली बनावटी ख़ुराक ख़रीदते हैं. जो लोग ऐसा कर सकते हैं उनमें से ज़ियादातर उन चीज़ों के अलावा यह चीज़ें खाते, हैं, जिनको अमीर और ग़रीब दोनों ख़ुराक के तौर पर काम में लाते हैं. अगर माहिरों के ज़रिये तलाश की हुई तैयार की हुई नई चीज़ें ऐसी हों जो अनाज, दाल, ख़ालिस ख़ुराकों के पूरे हिस्सों को ग़रीबों के खाने के लिए छोड़ दें तो यह कोशिश ज़रूर की जानी चाहिए. लेकिन माहिरों की यह खोजें ग़रीबों के लिए नई ख़ुराक पैदा नहीं करतीं. वह सिर्फ़ ऐश व आराम और शौक़ की नई चीज़ें व वानगियां पैदा करती हैं, व्योपार और रोज़गार को जन्म देती हैं फिर इन चीज़ों के बनाने में साइन्सी आधार के तौर पर अक्सर उन चीज़ों को काम में लाते हैं जिन्हें एक समय ग़रीब लोग ही मुसीबत के वक़्त अपनी ख़ुराक की कमी पूरी करने के लिए काम में लाते थे. यह माहिर लोग इस तरह ग़रीबों को मामूली कन्द मूल, फूलों और अनाजों से

تعداد اور پرورش کی درشٹی سے پورا اناج نہیں ملتا ۔ جن لوگوں کو بھر پیٹ اناج مل جاتا ہے' وہ بھی پرورش کے لحاظ سے بھوکوں ہی مرتے ہیں ۔ نتیجہ یہ ہے کہ راشٹر جو خوراک کھاتا ہے' اس کا ایک حصہ بالکل خراب جاتا ہے' کیونکہ اچھی طرح ہضم نہ ہونے کے کارن اس سے لوگوں کو کوئی فائدہ نہیں ملتا ۔

بیوپاریوں کا فائدہ ۔

اس لئے جب خوراک کی کھوج کرنے والے وگیانک تندرستی بڑھانے والی خوراک کی کوئی ایسی نئی چیز سجھاتے ہیں' جو کثرت سے ملنے والی لیکن ان جانی یا غیر معمولی بنسپتی سے تیار کی جاسکتی ہو' تو وہ بھوکے راشٹر کو نیا سندیش دینے والے فرشتے سے معلوم ہونے چاہئیں۔ راشٹر کے سیوک ان کھوجیوں سے اس طرح کا کوئی گھریلو طریقہ جاننا چاہتے ہیں جس کی مدد سے وہ کسی بنسپتی سے پوشک خوراک تیار کر سکیں ۔ وہ چاہتے ہیں کہ اس طرح وہ بنسپتیاں کام میں آجائیں جو نہ کھانے لائق یا نہ ہضم ہونے لائق مانی جاتی ہیں اور آس پاس بیکار پڑی رہتی ہیں' یا جنہیں وہ پرتی زمین پر یا ڈانواڈول فصل دینے والی زمین پر آسانی سے پیدا کر سکتے ہیں۔ جس مقصد کو سامنے رکھکر ہمارے ماہر لوگ کھوج کرتے ہیں' اسکے کارن ان کے سارے کام کی مٹی پلید ہو جاتی ہے--کبھی کبھی تو وہ غریبوں کے لئے نقصان دیہ بھی ثابت ہوتا ہے ۔ ان کا کام انسان کے بھوجن کی بانگیوں کی سوچی میں ایک نئی چیز ضرور جوڑ دیتا ہے ۔ پر ایسی چیزوں سے وہ لوگ ہی فائدہ اٹھا سکتے ہیں' جو دوسرے راستوں سے روزی کماتے ہیں اور بازار میں اوپر سے سستی دیکھنے والی بناوٹی خوراک خریدتے ہیں ۔ جو لوگ ایسا کر سکتے ہیں' ان میں سے زیادہ تر ان چیزوں کے علاوہ یہ چیزیں کھاتے ہیں' جن کو امیر اور غریب دونوں خوراک کے طور پر کام میں لاتے ہیں ۔ اگر ماہروں کے ذریعہ تلاش کی ہوئی یا تیار کی ہوئی نئی چیزیں ایسی ہوں جو اناج' دال' خالص دودھ اور اصلی گھی تیل جیسی معمولی خوراکوں کے پورے حصوں کو غریبوں کے کھانے کے لئے چھوڑ دیں تو یہ کوشش ضرور کی جانی چاہئے ۔ لیکن ماہروں کی یہ کھوجیں غریبوں کے لئے نئی خوراک پیدا نہیں کرتیں ۔ وہ صرف عیش و آرام اور شوق کی نئی چیزیں وبانگیاں پیدا کرتی ہیں' بیوپار اور روزگار کو جنم دیتی ہیں ۔ پھر ان چیزوں کے بنانے میں سائنسی آدھار کے طور پر اکثر ان چیزوں کو کام میں لاتے ہیں جنہیں ایک سمے غریب لوگ ہی مصیبت کے وقت اپنی خوراک کی کمی پوری کرنے کے لئے کام میں لاتے تھے ۔ یہ ماہر لوگ اس طرح غریبوں کو معمولی کند مول' پھلوں اور اناجوں سے

भी महसूस कर देते हैं, क्योंकि अपनी खोज के ज़रिये वह इन से बनी हुई नई चीज़ों को ख़ुशहाल लोगों के सामने लुभावने रूप में पेश करते हैं. यह ख़ुश हाल लोग नई चाशनियों के न होने पर भी कोई तकलीफ़ नहीं उठाते थे. नतीजा यह है कि एक वक़्त जो सिर्फ़ ग़रीब आदमी की ही ख़ुराक थी उसे अब अमीर और ऊंचे बीच वाले दर्जे के लोग भी चाहने लगते हैं. इस तरह इन चीज़ों के लिए बाज़ार खड़ा हो जाता है. उनसे व्यापारियों को अच्छे दाम मिलते हैं—खाने के ख़ास अनाजों वग़ैरह से भी ज़ियादा अच्छे दाम. समय बीतने पर इन चीज़ों की मांग इस हद तक बढ़ जाती है कि किसान अनाज, दाल वग़ैरह जैसी बा क़ायदा ख़ुराक की चीज़ें पैदा करने के बजाय यह चीज़ें पैदा करने लगते हैं. इस तरह यह ख़ुराकी फ़सलों के बजाय व्योपारी फ़सलें बन जाती हैं.

चावल की बरबादी.

चावल और मूंगफली उस तरीक़े की दो दर्दनाक मिसालें हैं जिनसे साइन्स ने ग़रीब आदमी की ख़ुराक के मामलों में मदद पहुँचाने के बजाय नुक़सान ही पहुँचाया है. पहले विज्ञान ने चावल के भूसी निकालने की मशीनरी को ईजाद किया. मज़दूरों का काम मशीन ने छीन लिया जिसकी वजह से मशीन का निकला चावल सस्ता मालूम हुआ. लेकिन क्योंकि इसके लिए बड़ी बड़ी मशीनों की ज़रूरत होती थी इसलिए सिर्फ़ पूंजीवाला व्योपारी ही इससे फ़ायदा उठा सकता था. विज्ञान ने इसके साथ साथ चावल को पालिश करने का काम भी कर डाला. इससे चावल आंखों को ज़ियादा चटकीला और जीभ को ज़ियादा मीठा लगने लगा. इस तरह भूसी निकालने का काम ख़ालिस व्यापार और रोज़गार बन गया. साइन्स ने यह जानने की परवाह नहीं की कि इसका ग़रीबों पर क्या असर पड़ता है. उनके हाथ से छूट कर चावल की भूसी निकालने का धन्धा छिन गया. साथ ही भूसी और ताक़तदेह चावल भी पेट से छिन गया.

ज़ियादा तजरबे और खोज से विज्ञान को पता चला कि मशीनों की मदद से भूसी निकाला हुआ मोती सा चमकने वाला चावल पोषण की निगाह से निकम्मा है. अगर कोई पोषक चीज़ या तत्व उसके साथ जोड़ा न जाए, तो वह तन्दुरुस्ती का नुक़सान पहुँचाता है. इसलिये चावल को मिल में कूट कर भूसी निकालने और पालिश करने से उसमें ख़ुराक के विचार से जो कमियां पैदा होती हैं, उन्हें दूर करने के लिए साइन्स ने ज़ियादा बनावटी तरीक़े जांचे और बाहर से चावल के साथ पोषक तत्व जोड़े. इस तरह दोबारा उसने ग़रीबों को ज़ियादा ख़ुराक और उसे ख़रीदने के साधन देने के बजाय पूंजी पतियों को

بھی محسوس کر دیتے ہیں، کیونکہ اپنی کھوج کے ذریعہ وہ اِن سے بنی ہوئی نئی چیزوں کو خوش حال لوگوں کے سامنے لبھاونے روپ میں پیش کرتے ہیں۔ یہ خوش حال لوگ نئی چاشنیوں کے نہ ہونے پر بھی کوئی تکلیف نہیں اٹھاتے تھے۔ نتیجہ یہ ہے کہ ایک وقت جو صرف غریب آدمی کی ہی خوراک تھی اُسے اب امیر اور اُونچے بیچ والے درجے کے لوگ بھی چاہنے لگتے ہیں۔ اِس طرح اِن چیزوں کے لئے بازار کھڑا ہو جاتا ہے۔ اُن سے بیوپاریوں کو اچھے دام ملتے ہیں— کھانے کے خاص اناجوں وغیرہ سے بھی زیادہ اچھے دام۔ سمے بیتنے پر اِن چیزوں کی مانگ اِس حد تک بڑھ جاتی ہے کہ کسان اناج، دال وغیرہ جیسی باقاعدہ خوراک کی چیزیں پیدا کرنے کے بجائے یہ چیزیں پیدا کرنے لگتے ہیں۔ اِس طرح یہ خوراکی فصلوں کے بجائے بیوپاری فصلیں بن جاتی ہیں۔

چاول کی بربادی۔

چاول اور مونگ پھلی اُس طریقے کے دو دردناک مثالیں ہیں جن سے سائنس نے غریب آدمی کو خوراک کے معاملے میں مدد پہونچانے کے بجائے نقصان ہی پہونچایا ہے۔ پہلے وگیان نے چاول کی بھوسی نکالنے کی مشینری کو ایجاد کیا۔ مزدوروں کا کام مشین نے چھین لیا جس کی وجہ سے مشین کا نکلا چاول سستا معلوم ہوا۔ لیکن کیونکہ اِس کے لئے بڑی بڑی مشینوں کی ضرورت ہوتی تھی اسلئے صرف پونجی والا بیوپاری ہی اِس سے فائدہ اٹھا سکتا تھا۔ وگیان نے اِس کے ساتھ ساتھ چاول کو پالش کرنے کا کام بھی کر ڈالا۔ اس سے چاول آنکھوں کو زیادہ چمکیلا اور جیبھ کو زیادہ میٹھا لگنے لگا۔ اِس طرح بھوسی نکالنے کا کام خالص بیوپار اور روزگار بن گیا۔ سائنس نے یہ جاننے کی پرواہ نہیں کی کہ اِس کا غریبوں پر کیا اثر پڑتا ہے۔ اُن کے ہاتھ سے چھوٹ کر چاول کی بھوسی نکالنے کا دھندا چھن گیا۔ ساتھ ہی، بھوسی اور طاقت دیہ چاول بھی پیٹ سے چھن گیا۔

زیادہ تجربے اور کھوج سے وگیان کو پتہ چلا کہ مشینوں کی مدد سے بھوسی نکلا ہوا موتی جیسا چمکنے والا چاول پوشن کی نگاہ سے نکما ہے۔ اگر کوئی پوشک چیز یا تتو اُس کے ساتھ جوڑا نہ جائے، تو وہ تندرستی کو نقصان پہنچاتا ہے۔ اِس لئے چاول کو مل میں کوٹ کر بھوسی نکالنے اور پالش کرنے سے اُس میں خوراک کے وچار سے جو کمیاں پیدا ہوتی ہیں، اُنہیں دور کرنے کے لئے سائنس نے زیادہ بناوٹی طریقے کھوجے اور باہر سے چاول کے ساتھ پوشک تتو جوڑے۔ اِس طرح دوبارہ اُس نے غریبوں کو زیادہ خوراک اور اُسے خریدنے کے سادھن دینے کے بجائے پونجی پتیوں کو

अपना व्योपार-रोज़गार बढ़ाने का नया साधन मुहय्या कर दिया. हम जानते हैं कि देश में काफ़ी चावल के होते हुए भी हिन्दुस्तान के लोग भूक से तड़प तड़प कर मर गए, क्योंकि ऊपर से सस्ते दिखाई देने वाले चावल ख़रीदने के पैसे भी उनके पास नहीं थे. क्या इन माहिरों से यह उमीद की जा सकती है कि चावल को मिल में साफ़ करने और पालिश करने से उनमें से जो कमियां पैदा होती हैं, उनको पूरा करने के लिए वह कोई नया ख़ुराकी सामान देंगे या उस चावल में ही पोशक तत्व बढ़ाएंगे ?

मूँग फली से रोज़गार

यही या इससे भी ज़ियादा दुख भरी कहानी मूँग फली की है. यह एक मीठी और ठोस चीज़ है, जिसे लोग ख़ास मौक़ों पर काम में लाते थे. सब कोई जानते थे कि मूंगफली में तेल होता है, लेकिन इस मतलब के लिये कभी उसकी खेती नहीं की जाती थी. गांव की घानी में वह आसानी से पेरी नहीं जा सकती थी. भारत में रिवाज भी तेल के रोज़गार के ख़िलाफ़ था. तेल, दूध और कुछ दूसरी चीज़ें बेचना शान के ख़िलाफ़ माना जाता था. वह घरेलू ख़र्च की चीज़ें समझी जाती थीं. किसी ज़रूरत मन्द पड़ोसी को वह चीज़ें मुफ़्त दी जा सकती थीं, लेकिन इन्हें कोई बेचता नहीं था. इसलिये तिलहन की खेती बड़े पैमाने पर नहीं की जाती थी. यह फ़सलें अनाजों के साथ साथ थोड़ी मिक़दार में बो दी जाती थीं.

साइन्स ने तेल निकालने की मशीनें ईजाद कीं. कारख़ानों में रोज़ सैकड़ों हज़ारों मन तिलहन पेरी जाने लगी. 'इस तरह व्योपारी तेल उद्योग ने गांव के घरेलू तेली की जगह ले ली और तिलहन की फ़सल का महत्व पहले से कहीं ज़ियादा बढ़ गया. तेल निकालने वाली मशीन तो पत्थरों को भी पेर सकती है. बशर्ते कि उसमें तेल हो. तो फिर मूंगफली को पेरना कौन आफ़त का काम है ? इसलिये तेल की मिल को तिल, राई या सरसों के छोटे दानों की ज़रूरत न रही. उसके लिये मूंग फली के बड़े दानों से ज़ियादा सुभीता था. इस तरह मूंगफली फ़ायदे वाली व्योपारिक फ़सल बन गई.

बनस्पति की ईजाद और घी का ख़ात्मा

लेकिन इतनी बड़ी मिक़दार में तैयार किया हुआ तेल आसानी से नहीं बिक सकता. खाने के काम में लाने से पहले उसे महीनों रखना पड़ता है. लेकिन इस अरसे में वह बिगड़ जाता है. इसलिये रोज़गार के सामने जो सवाल खड़ा हुआ, उसे के हल करने के लिये फिर साइन्स को दावत दी गई. वह आई और उसने व्योपार को तेल साफ़ करने के साधन दिये. तेल को साफ़ करने का मतलब है उसकी गंध, स्वाद,

اپنا بیوپار روزگار بڑھانے کا نیا سادھن مہیا کر دیا ۔ ہم جانتے ہیں کہ دیش میں کافی چاول کے ہوتے ہوئے بھی ہندستان کے لوگ بھوک سے تڑپ تڑپ کر مر گئے، کیونکہ اوپر سے سستے دکھائی دینے والے چاول خریدنے کے پیسے بھی ان کے پاس نہیں تھے ۔ کیا ان ماہروں سے یہ امید کی جا سکتی ہے کہ چاول کو مل میں صاف کرنے اور پالش کرنے سے ان میں سے جو کمیاں پیدا ہوتی ہیں، ان کو پورا کرنے کے لئے وہ کوئی نیا خوراکی سامان دیں گے یا اس چاول میں ہی پوشک تتو بڑھائیں ۔

مونگ پھلی سے روزگار ۔

یہی یا اس سے بھی زیادہ دکھ بھری کہانی مونگ پھلی کی ہے ۔ یہ ایک میٹھی اور ٹھوس چیز ہے، جسے لوگ خاص موقعوں پر کام میں لاتے تھے ۔ سب کوئی جانتے تھے کہ مونگ پھلی میں تیل ہوتا ہے، لیکن اس مطلب کے لئے کبھی اس کی کھیتی نہیں کی جاتی تھی ۔ گاؤں کی گھانی میں وہ آسانی سے پیری نہیں جا سکتی تھی ۔ بھارت میں رواج بھی تیل کے روزگار کے خلاف تھا ۔ تیل، دودھ اور کچھ دوسری چیزیں بیچنا شان کے خلاف مانا جاتا تھا ۔ وہ گھریلو خرچ کی چیزیں سمجھی جاتی تھیں ۔ کسی ضرورت مند پڑوسی کو یہ چیزیں مفت دی جا سکتی تھیں، لیکن انہیں کوئی بیچتا نہیں تھا ۔ اس لئے تلہن کی کھیتی بڑے پیمانے پر نہیں کی جاتی تھی ۔ یہ فصلیں اناجوں کے ساتھ ساتھ تھوڑی مقدار میں بو دی جاتی تھیں ۔

سائنس نے تیل نکالنے کی مشینیں ایجاد کیں ۔ کارخانوں میں روز سیکڑوں ہزاروں من تلہن پیری جانے لگی ۔ اس طرح بیوپاری تیل ادیوگ نے گاؤں کے گھریلو تیلی کی جگہ لے لی اور تلہن کی فصل کا مہتو پہلے سے کہیں زیادہ بڑھ گیا ۔ تیل نکالنے والی مشین تو پتھروں کو بھی پیر سکتی ہے، بشرطیکہ اس میں تیل ہو ۔ تو پھر مونگ پھلی کو پیرنا کون آفت کا کام ہے ۔ اس لئے تیل کی مل کو تل، رائی یا سرسوں کے چھوٹے دانوں کی ضرورت نہ رہی ۔ اس کے لئے مونگ پھلی کے بڑے دانوں سے زیادہ سوبھیتا تھا ۔ اس طرح مونگ پھلی فائدہ والی بیوپاری فصل بن گئی ۔

بنسپتی کی ایجاد اور گھی کا خاتمہ ۔

لیکن اتنی بڑی مقدار میں تیار کیا ہوا تیل آسانی سے نہیں بک سکتا ۔ کھانے کے کام میں لانے سے پہلے اسے مہینوں رکھنا پڑتا ہے ۔ لیکن اس عرصے میں وہ بگڑ جاتا ہے ۔ اسلئے روزگار کے سامنے جو سوال کھڑا ہوا اسکو حل کرنے کے لئے پھر سائنس کو دعوت دی گئی ۔ وہ آئی اور اس نے بیوپار کو تیل صاف کرنے کے سادھن دیئے ۔ تیل کو صاف کرنے کا مطلب ہے اس کی گندھ، سواد،

विटामिन वग़ैरह को मारना. इस करतूत से तेल ज़ियादा से ज़ियादा बे-गुण बन जाता है. ज़ियादा छान बीन से साइन्स ने पाया कि यह साफ़ तेल जमाया भी जा सकता है और घी के जैसा रूप दे कर काम में लाया जा सकता है—घी क्या, वही घी जो हम लोगों को बड़ा प्यारा है. अगर असल घी के साथ मिला दिया जाय तो यह मिलावटी चीज़ घी से टक्कर लेती है और व्योपारिक होड़ में असल घी को नाकों चने चबा सकती है. व्योपार की भलाई में साइन्स ने कैसी बढ़िया खोज की ! कमाल है.

लेकिन कुछ दिन बाद पता चला कि साफ़ करने के फेर में इस सस्ते 'घी' के वह सब तत्व बरबाद हो जाते हैं जो तन्दुरुस्ती और पोषण के ख़याल से बहुत ज़रूरी हैं. इसलिये उसके साथ थोड़ा कलंक लग गया. जिसे मिटाना ज़रूरी था और तभी रोज़गार पनप सकता था. अब साइन्स को फिर न्योता दिया गया और उसने झूठी ख़ुशबूदार चीज़ें, विटामिन वग़ैरा इस तेल में सफ़ाई के साथ भिड़ा दीं. जहां तक हुआ असली घी और जमे तेल का सारा बाहरी भेद मिटा दिया गया. व्योपार की मदद में लगे साइन्स ने घी के बाज़ार में घुस कर जमे हुए तेल को घी का ताक़तवर रक़ीब बना दिया. घी पैदा करने वाले लोग यानी दूध देने वाले ढोरों के पालने वाले लोग क़ुदरती तौर पर सिर्फ़ गांवों में ही होते हैं. इस जमे तेल के व्योपार ने उनकी रोज़ी—छीन कर उनको कहीं का न रखा. बलिहारी है ख़ुराक में ऐसी खोज की !

खोज का असली मक़सद

हमें साइन्स से प्यार करना और उसे बढ़ाना चाहिये. इन्सानी सुख की बढ़ोतरी के लिये यह ज़रूरी है. ख़ुराक की खोज ज़रूर की जानी चाहिये. पर होशियारी के साथ. उसका मक़सद व्योपार और रोज़गार को फैलाना नहीं, बल्कि ग़रीबों की मदद होना चाहिये.

وٹامن' وغیرہ کو مارنا۔ اس کرتوت سے تیل زیادہ سے زیادہ بے گن ہی جاتا ہے۔ زیادہ چھان بین سے سائنس نے پایا کہ یہ صاف تیل جمایا بھی جا سکتا ہے اور گھی کے جیسا روپ دے کر کام میں لیا جا سکتا ہے—گھی کیا' وہی گھی جو ہم لوگوں کو بڑا پیارا ہے۔ اگر اصل گھی کے ساتھ ملا دیا جائے تو یہ ملاوٹی چیز گھی سے ٹکر لیتی ہے اور بیوپارک ہوڑ میں اصل گھی کو ناکوں چنے چبا سکتی ہے۔ بیوپار کی بھلائی میں سائنس نے کیسی بڑھیا کھوج کی! کمال ہے۔

لیکن کچھ دن بعد پتہ چلا کہ صاف کرنے کے پھیر میں اس سستے 'گھی' کے وہ سب تتو برباد ہوجاتے ہیں جو تندرستی اور پوشن کے خیال سے بہت ضروری ہیں۔ اس لئے اسکے ساتھ تھوڑا کلنک لگ گیا۔ جسے مٹانا ضروری تھا اور تبھی روزگار پنپ سکتا تھا۔ اب سائنس کو پھر نیوتا دیا گیا اور اسنے جھوٹی خوشبودار چیزیں وٹامن وغیرہ اس تیل میں صفائی کے ساتھ بھرو دیں۔ جہاں تک ہوا اصلی گھی اور جمے تیل کا سارا باہری بھید مٹا دیا گیا۔ بیوپار کی مدد میں لگے سائنس نے گھی کے بازار میں گھسکر جمے ہوئے تیل کو گھی کا طاقت ور رقیب بنا دیا۔ گھی پیدا کرنے والے لوگ یعنی دودھ دینے والے ڈھوروں کے پالنے والے لوگ قدرتی طور پر صرف گاؤں میں ہی ہوتے ہیں۔ اس جمے تیل کے بیوپار نے اُن کی روزی— چھین کر اُن کو کہیں کا نہ رکھا۔ بلہاری ہے خوراک میں ایسی کھوج کی!

کھوج کا اصلی مقصد۔

ہمیں سائنس سے پیار کرنا اور اسے بڑھانا چاہئے۔ انسانی سکھ کی بڑھوتری کے لئے وہ ضروری ہے۔ خوراک کی کھوج ضرور کی جانی چاہئے۔ پر ہوشیاری کے ساتھ۔ اس کا مقصد بیوپار اور روزگار کو پھیلانا نہیں' بلکہ غریبوں کی مدد ہونا چاہئے۔

सर्वोदय अर्थशास्त्र

(श्रीकृष्णदास जाजू)

["नया हिन्द" के इस नम्बर के क़रीब साथ साथ 'सर्वोदय अर्थशास्त्र" नाम की एक किताब भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद से निकल रही है जो हमारे ही प्रेस में छपी है. इसके लिखने वाले भाई भगवान दासजी केला हैं जिनके नाम से हिन्दी वाले बख़ूबी वाक़िफ़ हैं और जो पिछले तीस बरस से हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं. 'सर्वोदय अर्थशास्त्र" अपने ढंग की हिन्दी में पहली किताब है. इसकी भूमिका हमारे भाई श्रीकृष्णदास जाजू जी ने लिखी है जो देश की तामीरी दुनिया की एक मशहूर हस्ती हैं. वह भूमिका हम नीचे दे रहे हैं.

—एडीटर]

शास्त्र का काम आम तौर से यह समझा जाता है कि मौक़े महल की जांच करके उसकी जुदा-जुदा घटनाओं के सब क़ायदे नियम बनाए जाएं, यानी जो कुछ है उसे क़ायदे क़ानून में बांधा जाय. क्या होना चाहिए इस विषय का शास्त्र अलग माना जाता है. सवाल यह है कि अर्थ या दौलत के साथ जो रवैया आम तौर से इन्सान बरत रहा है उसी की चर्चा करने वाला अर्थशास्त्र हमारे लिये काफ़ी है या नहीं ? यह बात सही है कि आदमी के ज़िन्दा रहने के लिये कई चीज़ों की ज़रूरत है और अर्थ या रुपये-पैसे से इसका लाज़मी ताल्लुक़ है. उसकी इन्द्रियों का क़ुदरती रुझान भी भोगों की तरफ़ है और उन्हें पूरा करने के लिये पैसे की ज़रूरत है. मगर क्या इन इन्द्रियों को बेलगाम छोड़कर उनकी मांग के मुताबिक़ चीज़ें पाने की उधेड़ बुन में ही लगे रहने में इन्सान का सच्चा कल्यान है ? इन्द्रियों के अलावा आदमी के अन्दर अक़्ल या बुद्धि और समझ भी है. उनके ज़रिये वह आगे का विचार कर अपने ठोस और टिकाऊ फ़ायदे या हित के ख़याल से इन्द्रियों को क़ाबू या संयम में रख सकता है. यह विषय इस दायरे में आता है कि आदमी का दौलत से सम्बन्ध क्या हो. असली सवाल यह है कि आदमी दौलत के लिये बना है या दौलत आदमी के लिये.

सब लोग मंज़ूर करेंगे कि दौलत आदमी के लिये बनी है. पर जब हम इस सवाल को कि दौलत का आदमी से क्या रिश्ता होना चाहिये अर्थशास्त्र से अलग कर देते हैं तो फिर दौलत हावी हो जाती है न कि आदमी. कई अर्थशास्त्री क्या होना चाहिए यह सवाल नीति शास्त्र का मान कर इसे अर्थशास्त्र से अलग रखते हैं. इस वजह से

سروودے ارتھ شاستر

(شری کرشن داس جاجو)

["نیا ھند" کے اس نمبر کے قریب ساتھ ساتھ "سروودے ارتھ شاستر" نام کی ایک کتاب بھارتیہ گرنتھ مالا' دارا گنج' الہ آباد سے نکل رھی ھے جو ھمارے ھی پریس میں چھپی ھے . اسکے لکھنے والے بھائی بھگوان داس جی کیلا ھیں جنکے نام سے ھندی والے بخوبی واقف ھیں اور جو پچھلے تیس برس سے ھندی ساھتیہ کی سیوا کر رھے ھیں . "سروودے ارتھ شاستر" اپنے ڈھنگ کی ھندی میں پہلی کتاب ھے . اس کی بھومکا ھمارے بھائی شری کرشن داس جاجو جی نے لکھی ھے جو دیش کی تعمیری دنیا کی ایک مشہور ھستی ھیں . یہ بھومکا ھم نیچے دے رھے ھیں .

—ایڈیٹر]

شاستر کا کام عام طور سے یہ سمجھا جاتا ھے کہ موقع محل کی جانچ کرکے اسکی جدا جدا گھٹناؤں کے سب قاعدہ نیم بنائے جائیں' یعنی جو کچھ ھے اس قاعدہ قانون میں باندھا جائے . کیا ھونا چاھئے اس وشے کا شاستر الگ مانا جاتا ھے . سوال یہ ھے کہ ارتھ یا دولت کے ساتھ جو رویہ عام طور سے انسان برت رھا ھے اسی کی چرچہ کرنے والا ارتھ شاستر ھمارے لئے کافی ھے یا نہیں ؟ یہ بات معلوم ھے کہ آدمی کے زندہ رھنے کے لئے کئی چیزوں کی ضرورت ھے اور ارتھ یا روپیہ پیسہ سے اسکا لازمی تعلق ھے . اسکی اندریوں کا قدرتی رجحان بھی بھوگوں کی طرف ھے اور انہیں پورا کرنے کے لئے پیسہ کی ضرورت ھے . مگر کیا ان اندریوں کو بے لگام چھوڑ کر انکی مانگ کے مطابق چیزیں پانے کی ادھیڑبن میں ھی لگے رھنے میں انسان کا سچا کلیان ھے ؟ اندریوں کے علاوہ آدمی کے اندر عقل یا بدھی اور سمجھ بھی ھے . ان کے ذریعہ وہ آگے کا وچار کر اپنے ٹھوس اور ٹکاؤ فائدہ یا ھت کے خیال سے اندریوں کو قابو یا سنیم میں رکھ سکتا ھے . یہ وشے اس دائرہ میں آتا ھے کہ آدمی کا دولت سے سمبندھ کیا ھو . اصلی سوال یہ ھے کہ آدمی دولت کے لئے بنا ھے یا دولت آدمی کے لئے .

سب لوگ منظور کرینگے کہ دولت آدمی کے لئے بنی ھے . پر جب ھم اس سوال کو کہ دولت کا آدمی سے کیا رشتہ ھونا چاھئے ارتھ شاستر سے الگ کر دیتے ھیں تو پھر دولت حاوی ھو جاتی ھے نہ کہ آدمی . کئی ارتھ شاستری کیا ھونا چاھئے یہ سوال نیتی شاستر کا مان کر اسے ارتھ شاستر سے الگ رکھتے ھیں . اس وجہ سے

पश्चिमी अर्थशास्त्र [illegible] दौलत की महिमा में ही व्यस्त रहा दिखता है, अगर आज आदमी की कुदरती तबियत को देखकर ही अर्थ या दौलत का विचार करना हो तो उसकी रचना बहुत कुछ वैसी होगी जो पश्चिमी अर्थशास्त्र ने हमारे सामने रखी है. पर इन्सानी कौम के भले के लिहाज़ से अर्थ के मुकाबले इन्सानियत को बड़ी व ऊंची जगह मिलनी चाहिये. दौलत पर ज़ोर देने के कारन पश्चिमी अर्थशास्त्र इन्सानियत के ख्याल से एक मानी में अनर्थशास्त्र बन गया है.

आदमी सुख चाहता है. दौलत का मतलब भी सुख ही होना चाहिये. पश्चिमी अर्थशास्त्र की किताबों में इस बात की कोई खास चर्चा हमें नहीं मिलती कि इन्सान का सच्चा सुख किस में है. कहीं कुछ थोड़ीसी हो भी तो उसे नीति शास्त्र का या असूली या ख्याली आदर्श शास्त्र का हिस्सा मान कर अर्थशास्त्र में शामिल नहीं किया गया. इसका नतीजा यह है कि अर्थशास्त्र के अन्दर अर्थ या दौलत का मतलब भोग लालसा को पूरा करना ही रहा. कहीं कहीं पश्चिमी तहज़ीब की तारीफ ही यह बताई गई है—'इन्सान की ज़रूरतों को बढ़ाना और उन्हें पूरा करना'. क्या इस तरीके से इन्सान को सच्चा सुख नसीब हो सकता है ? जिस्म और मन को तन्दुरुस्त रखने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनके बारे में कोई झगड़ा नहीं. इससे आगे बढ़ कर जब मन की मौज या मस्ती या तरह तरह के भोगों के लिये जद्दोजहद करने में ही बेहतरी समझी जाए तो गहराई में जा कर इस सवाल का जवाब देना होगा कि क्या तरह तरह के ऐश आराम की चीज़ों में आदमी का सच्चा सुख बढ़ाने की ताक़त है या नहीं—इस मामले में आदमी की कुदरती तबियत के भरोसे कैसे रह सकते हैं ? विवेक या सूझ बूझ का जीवन ही हमारी रहनुमाई कर सकता है. दुनिया के रिशी मुनियों ने तरह तरह के प्रयोग करने के बाद अपने तजरबे के बल पर यह लुब्बे लुबाब निकाला है कि—

न जातु कामा कामानाम् उपभोगेन शाम्यति.
हविषा कृष्णा वर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते.

(वासना या लालसा विषयों के भोग से शान्त नहीं होती, उलटे आहुति डाली हुई आग की तरह बढ़ती जाती है.)

क्या यह तजुरबा गलत है ? अगर सही है जैसा कि हर एक को कबूल करना पड़ेगा तो मानना होगा कि पश्चिमी अर्थशास्त्र गलत नींव पर खड़ा है. इन्सान की बेहतरी व कल्याण के लिहाज़ से उसकी रचना अनुभव के तजरबे की बिना पर की जानी चाहिये.

پچھمی ارتھ شاستر صرف دولت کی مہما میں ہی الجھا رہا دیکھتا ہے ۔ اگر عام آدمی کی قدرتی طبیعت کو دیکھ کر ہی ارتھ یا دولت کا وچار کرنا ہو تو اسکی رچنا بہت کچھ ویسی رہے گی جو پچھمی ارتھ شاستر نے ہمارے سامنے رکھی ہے ۔ پر انسانی قوم کے بھلے کے لحاظ سے ارتھ کے مقابلے انسانیت کو بڑی و اونچی جگہ ملنی چاہئے ۔ دولت پر زور دینے کے کارن پچھمی ارتھ شاستر انسانیت کے خیال سے ایک معنی میں انرتھ شاستر بن گیا ہے ۔

آدمی سکھ چاہتا ہے ۔ دولت کا مطلب بھی سکھ ہی ہونا چاہئے ۔ پچھمی ارتھ شاستر کی کتابوں میں اس بات کی کوئی خاص چرچا ہمیں نہیں ملتی کہ انسان کا سچا سکھ کس میں ہے ۔ کہیں کچھ تھوڑی سی ہو بھی تو اسے نیتی شاستر کا یا اصولی یا خیالی آدرش شاستر کا حصہ مان کر ارتھ شاستر میں شامل نہیں کیا گیا ۔ اس کا نتیجہ یہ ہے کہ ارتھ شاستر کے اندر ارتھ یا دولت کا مطلب بھوگ لالسا کو پورا کرنا ہی رہا ۔ کہیں کہیں پچھمی تہذیب کی تعریف ہی یہ بتائی گئی ہے— ' انسان کی ضرورتوں کو بڑھانا اور انہیں پورا کرنا ۔' کیا اس طریقہ سے انسان کو سچا سکھ نصیب ہو سکتا ہے ؟ جسم اور من کو تندرست رکھنے کے لئے جن چیزوں کی ضرورت ہے ان کے بارے میں کوئی جھگڑا نہیں ۔ پر اس سے آگے بڑھ کر جب من کی موج یا مستی یا طرح طرح کے بھوگوں کے لئے جدوجہد کرنے میں ہی بہتری سمجھی جائے تو گہرائی میں جا کر اس سوال کا جواب دینا ہوگا کہ کیا طرح طرح کے عیش آرام کی چیزوں میں آدمی کا سچا سکھ بڑھانے کی طاقت ہے یا نہیں—اس معاملے میں آدمی کی قدرتی طبیعت کے بھروسے کیسے رہ سکتے ہیں ؟ وویک یا سمجھ بوجھ کا جیون ہی ہماری رہنمائی کر سکتا ہے ۔ دنیا کے رشی منیوں نے طرح طرح کے پریوگ کرنے کے بعد اپنے تجربے کے بل پر یہ لب لباب نکالا ہے کہ—

نہ جاتو کاما کاما نام اپبھوگین شامیتی
ہوشا کرشن ورتمیو بھوئیہ ایوابھیوردھتے

(واسنا یا لالسا وشیوں کے بھوگ سے شانت نہیں ہوتی الٹے آہوتی ڈالی ہوئی آگ کی طرح بڑھتی جاتی ہے)

کیا یہ تجربہ غلط ہے ؟ اگر صحیح ہے جیسا کہ ہر ایک کو قبول کرنا پڑیگا تو ماننا ہوگا کہ پچھمی ارتھ شاستر غلط نیو پر کھڑا ہے ۔ انسان کی بہبودی و کلیان کے لحاظ سے اس کی رچنا انوبھو کے تجربہ کی بنا پر کی جانی چاہئے ۔

सर्वोदय अर्थशास्त्र

(श्रीकृष्णदास जाजू)

["नया हिन्द" के इस नम्बर के क़रीब साथ साथ 'सर्वोदय अर्थशास्त्र" नाम की एक किताब भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद से निकल रही है जो हमारे ही प्रेस में छपी है. इसके लिखने वाले भाई भगवानदासजी केला हैं जिनके नाम से हिन्दी वाले बखूबी वाक़िफ़ हैं और जो पिछले तीस बरस से हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं. 'सर्वोदय अर्थशास्त्र" अपने ढंग की हिन्दी में पहली किताब है. इसकी भूमिका हमारे भाई श्रीकृष्णदास जाजू जी ने लिखी है जो देश की तामीरी दुनिया की एक मशहूर हस्ती हैं. यह भूमिका हम नीचे दे रहे हैं.

—एडीटर]

शास्त्र का काम आम तौर से यह समझा जाता है कि मौक़े महल की जांच करके उसकी जुदा-जुदा घटनाओं के सब क़ायदे नियम बताए जाएं, यानी जो कुछ है उसे क़ायदे क़ानून में बांधा जाय. क्या होना चाहिए इस विशय का शास्त्र अलग माना जाता है. सवाल यह है कि अर्थ या दौलत के साथ जो रवैया आम तौर से इन्सान बरत रहा है उसी की चर्चा करने वाला अर्थशास्त्र हमारे लिये काफ़ी है या नहीं ? यह बात सही है कि आदमी के ज़िन्दा रहने के लिये कई चीज़ों की ज़रूरत है और अर्थ या रुपये-पैसे से इसका लाज़मी ताल्लुक़ है. उसकी इन्द्रियों का क़ुदरती झुकाव भी भोगों की तरफ़ है और उन्हें पूरा करने के लिये पैसे की ज़रूरत है. मगर क्या इन इन्द्रियों को बेलगाम छोड़कर उनकी मांग के मुताबिक़ चीज़ें पाने की उधेड़ बुन में ही लगे रहने में इन्सान का सच्चा कल्यान है ? इन्द्रियों के अलावा आदमी के अन्दर अक़्ल या बुद्धि और समझ भी है. उनके ज़रिये वह आगे का विचार कर अपने ठोस और टिकाऊ फ़ायदे या हित के ख़याल से इन्द्रियों को क़ाबू या संयम में रख सकता है. यह विशय इस दायरे में आता है कि आदमी का दौलत से सम्बन्ध क्या हो. असली सवाल यह है कि आदमी दौलत के लिये बना है या दौलत आदमी के लिये.

सब लोग मंज़ूर करेंगे कि दौलत आदमी के लिये बनी है. पर जब हम इस सवाल को कि दौलत का आदमी से क्या रिश्ता होना चाहिये अर्थशास्त्र से अलग कर देते हैं तो फिर दौलत हावी हो जाती है न कि आदमी. कई अर्थशास्त्री क्या होना चाहिए यह सवाल नीति शास्त्र का मान कर इसे अर्थशास्त्र से अलग रखते हैं. इस वजह से

سرووُدے ارتھ شاستر

(شری کرشن داس جاجو)

["نیا ہند" کے اس نمبر کے قریب ساتھ ساتھ "سرووُدے ارتھ شاستر" نام کی ایک کتاب بھارتیہ گرنتھ مالا' داراگنج' الہ آباد سے نکل رہی ہے جو ہمارے ہی پریس میں چھپی ہے۔ اسکے لکھنے والے بھائی بھگوان داس جی کیلا ہیں جنکے نام سے ہندی والے بخوبی واقف ہیں اور جو پچھلے تیس برس سے ہندی ساہتیہ کی سیوا کر رہے ہیں۔ "سرووُدے ارتھ شاستر" اپنے ڈھنگ کی ہندی میں پہلی کتاب ہے۔ اس کی بھومکا ہمارے بھائی شری کرشن داس جاجو جی نے لکھی ہے جو دیش کی تعمیری دنیا کی ایک مشہور ہستی ہیں۔ یہ بھومکا ہم نیچے دے رہے ہیں۔

—ایڈیٹر]

شاستر کا کام عام طور سے یہ سمجھا جاتا ہے کہ موقع محل کی جانچ کرکے اسکی جدا جدا گھٹناؤں کے سب قاعدہ نیم بتائے جائیں' یعنی جو کچھ ہے اس قاعدہ قانون میں باندھا جائے۔ کیا ہونا چاہئے اس وشے کا شاستر الگ مانا جاتا ہے۔ سوال یہ ہے کہ ارتھ یا دولت کے ساتھ جو رویہ عام طور سے انسان برت رہا ہے اسی کی چرچہ کرنے والا ارتھ شاستر ہمارے لئے کافی ہے یا نہیں ؟ یہ بات معلوم ہے کہ آدمی کے زندہ رہنے کے لئے کئی چیزوں کی ضرورت ہے اور ارتھ یا روپیہ پیسہ سے اسکا لازمی تعلق ہے۔ اسکی اندریوں کا قدرتی رجحان بھی بھوگوں کی طرف ہے اور انہیں پورا کرنے کے لئے پیسہ کی ضرورت ہے۔ مگر کیا ان اندریوں کو بے لگام چھوڑ کر انکی مانگ کے مطابق چیزیں پانے کی ادھیڑبن میں ہی لگے رہنے میں انسان کا سچا کلیان ہے ؟ اندریوں کے علاوہ آدمی کے اندر عقل یا بدھی اور سمجھ بھی ہے۔ انکے ذریعہ وہ آگے کا وچار کر اپنے ٹھوس اور ٹکاؤ فائدہ یا ہت کے خیال سے اندریوں کو قابو یا سنیم میں رکھ سکتا ہے۔ یہ وشے اس دائرہ میں آتا ہے کہ آدمی کا دولت سے سمبندھ کیا ہو۔ اصلی سوال یہ ہے کہ آدمی دولت کے لئے بنا ہے یا دولت آدمی کے لئے۔

سب لوگ منظور کرینگے کہ دولت آدمی کے لئے بنی ہے۔ پر جب ہم اس سوال کو کہ دولت کا آدمی سے کیا رشتہ ہونا چاہئے ارتھ شاستر سے الگ کر دیتے ہیں تو پھر دولت حاوی ہو جاتی ہے نہ کہ آدمی۔ کئی ارتھ شاستری کیا ہونا چاہئے یہ سوال نیتی شاستر کا مان کر اسے ارتھ شاستر سے الگ رکھتے ہیں۔ اس وجہ سے

پچھمی ارتھ شاستر

पश्चिमी अर्थशास्त्र मज़मून दौलत की महिमा में ही उलझा रहा दिखता है. अगर आम आदमी की कुदरती तबियत को देखकर ही अर्थ या दौलत का विचार करना हो तो उसकी रविश बहुत कुछ वही रहेगी जो पश्चिमी अर्थशास्त्र ने हमारे सामने रखी है. पर इन्सानी क़ौम के भले के लिहाज़ से अर्थ के मुक़ाबले इन्सानियत को बड़ी व ऊंची जगह मिलनी चाहिये. दौलत पर ज़ोर देने के कारन पश्चिमी अर्थशास्त्र इन्सानियत के ख़याल से एक मानी में अनर्थशास्त्र बन गया है.

आदमी सुख चाहता है. दौलत का मतलब भी सुख ही होना चाहिये. पश्चिमी अर्थशास्त्र की किताबों में इस बात की कोई ख़ास चर्चा हमें नहीं मिलती कि इन्सान का सच्चा सुख किस में है. कहीं कुछ थोड़ीसी हो भी तो उसे नीति शास्त्र का या उसूली या ख़याली आदर्श शास्त्र का हिस्सा मान कर अर्थशास्त्र में शामिल नहीं किया गया. इसका नतीजा यह है कि अर्थशास्त्र के अन्दर अर्थ या दौलत का मतलब भोग लालसा को पूरा करना ही रहा. कहीं कहीं पश्चिमी तहज़ीब की तारीफ़ ही यह बताई गई है—'इन्सान की ज़रूरतों को बढ़ाना और उन्हें पूरा करना'. क्या इस तरीक़े से इन्सान को सच्चा सुख नसीब हो सकता है? जिस्म और मन को तन्दुरुस्त रखने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनके बारे में कोई झगड़ा नहीं. इससे आगे बढ़ कर जब मन की मौज या मस्ती या तरह तरह के भोगों के लिये जद्दोजहद करने में ही बेहतरी समझी जाए तो गहराई में जा कर इस सवाल का जवाब देना होगा कि क्या तरह तरह के ऐश आराम की चीज़ों में आदमी का सच्चा सुख बढ़ाने की ताक़त है या नहीं— इस मामले में आदमी की कुदरती तबियत के भरोसे कैसे रह सकते हैं? विवेक या सूझ बूझ का दीपक ही हमारी रहनुमाई कर सकता है. दुनिया के ऋषि मुनियों ने तरह तरह के प्रयोग करने के बाद अपने तजरबे के बल पर यह लुब्बे लुबाब निकाला है कि—

न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति.
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते.

(वासना या लालसा विषयों के भोग से शान्त नहीं होती, उलटे आहुति डाली हुई आग की तरह बढ़ती जाती है.)

क्या यह तजुरबा ग़लत है? अगर सही है जैसा कि हर एक को क़बूल करना पड़ेगा तो मानना होगा कि पश्चिमी अर्थशास्त्र ग़लत नींव पर खड़ा है. इन्सान की बहबूदी व कल्याण के लिहाज़ से उसकी रचना इस तजरबे की बिना पर की जानी चाहिये.

پچھمی ارتھ شاستر زیادہ تر دولت کی مہما میں ہی الجھا رہا دکھتا ہے. اگر عام آدمی کی قدرتی طبیعت کو دیکھ کر ہی ارتھ یا دولت کا وچار کرنا ہو تو اس کی روش بہت کچھ وہی رہے گی جو پچھمی ارتھ شاستر نے ہمارے سامنے رکھی ہے. پر انسانی قوم کے بھلے کے لحاظ سے ارتھ کے مقابلے انسانیت کو بڑی و اونچی جگہ ملنی چاہئے. دولت پر زور دینے کے کارن پچھمی ارتھ شاستر انسانیت کے خیال سے ایک معنی میں انرتھ شاستر بن گیا ہے.

آدمی سکھ چاہتا ہے. دولت کا مطلب بھی سکھ ہی ہونا چاہئے. پچھمی ارتھ شاستر کی کتابوں میں اس بات کی کوئی خاص چرچا ہمیں نہیں ملتی کہ انسان کا سچا سکھ کس میں ہے. کہیں کچھ تھوڑی سی ہو بھی تو اسے نیتی شاستر کا یا اصولی یا خیالی آدرش شاستر کا حصہ مان کر ارتھ شاستر میں شامل نہیں کیا گیا. اس کا نتیجہ یہ ہے کہ ارتھ شاستر کے اندر ارتھ یا دولت کا مطلب بھوگ لالسا کو پورا کرنا ہی رہا. کہیں کہیں پچھمی تہذیب کی تعریف ہی یہ بتائی گئی ہے— 'انسان کی ضرورتوں کو بڑھانا اور انہیں پورا کرنا.' کیا اس طریقہ سے انسان کو سچا سکھ نصیب ہو سکتا ہے؟ جسم اور من کو تندرست رکھنے کے لئے جن چیزوں کی ضرورت ہے ان کے بارے میں کوئی جھگڑا نہیں. پر اس سے آگے بڑھ کر جب من کی موج یہ مستی یا طرح طرح کے بھوگوں کے لئے جدوجہد کرنے میں ہی بہتری سمجھی جائے تو گہرائی میں جا کر اس سوال کا جواب دینا ہوگا کہ کیا طرح طرح کے عیش آرام کی چیزوں میں آدمی کا سچا سکھ بڑھانے کی طاقت ہے یا نہیں— اس معاملے میں آدمی کی قدرتی طبیعت کے بھروسے کیسے رہ سکتے ہیں؟ وویک یا سمجھ بوجھ کا دیپک ہی ہماری رہنمائی کر سکتا ہے. دنیا کے رشی منیوں نے طرح طرح کے پریوگ کرنے کے بعد اپنے تجربے کے بل پر یہ لب لباب نکالا ہے کہ—

نہ جا تو کاما کاما نام اپبھوگین شامیتی
ہوشا کرشن ورتمیو بھویہ ایوابھیوردھتے.

(واسنا یا لالسا وشیوں کے بھوگ سے شانت نہیں ہوتی، الٹے آہوتی ڈالی ہوئی آگ کی طرح بڑھتی جاتی ہے)

کیا یہ تجربہ غلط ہے؟ اگر صحیح ہے جیسا کہ ہر ایک کو قبول کرنا پڑیگا تو ماننا ہوگا کہ پچھمی ارتھ شاستر غلط نیو پر کھڑا ہے. انسان کی بہبودی و کلیان کے لحاظ سے اس کی رچنا اس تجربے کی بنا پر کی جانی چاہئے.

अर्थ-शास्त्र की किताबों में जो विचार पाए जाते हैं वह ज़ियादातर पच्छिमी राष्ट्रों के आर्थिक या माली बन्दोबस्त को लेकर क़ायम किये गये हैं. मशीन युग शुरू होने पर वहां जो केन्द्रीय या मरकज़ी और पूंजी पर माली बन्दोबस्त क़ायम किया गया इसी पर वह अर्थशास्त्र खड़ा किया गया है. वक़्त के साथ कुछ तब्दीली ज़रूर हुई लेकिन बुनियादी ढांचा जैसा का तैसा बना रहा. इसमें बड़े बड़े केन्द्री कारख़ानों की तूती बोलती है जिनमें बनी हुई चीज़ें दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचती हैं. इतना ही नहीं, बल्कि जहां ज़रूरत नहीं है वहां भी तरह तरह की तरकीबों-चालों से लाद दी जाती हैं. फिर उनके लिये कच्चा माल दुनिया भर से बटोर कर और कई देशों को अपने क़ाबू में रखने की ज़रूरत पैदा होती है. इस तरह बड़े बड़े वर्ग-भेद खड़े हो जाते हैं जिनके कारन झगड़े-लड़ाइयां होती हैं, छोटे पिसे जाते हैं और ग़रीबों को चूसा जाता है. एक दूसरे को चित कर देना तो उसकी ख़ासियत ही है. नतीजा यह है कि कुछ थोड़े आदमियों के हाथ में बड़े बड़े कारोबार आ जाते हैं और क़ानूनी तौर से भले न हो, पर असली तौर से उनका ही हुक्म चलता है और उनकी तूती बोलती है. यह चन्द लोग आपस में संगठन कर कर एक ताक़त खड़ी कर लेते हैं और दुनिया में मन चाही उथल-पुथल कर सकते हैं. सब देशों में प्रजातन्त्र या लोकराज की दुहाई तो दी जाती है; पर जहां का आर्थिक बन्दोबस्त सारी जनता के हाथ में न होकर एक केन्द्र या मरकज़ के पंजे में आ जाता है और उसे क़ानून की ओट भी मिल जाती है तो वह प्रजातंत्र सचमुच एक दिखावट रह जाता है. आज के पेचीदे समाज में राजकाजी और आर्थिक इन्तज़ाम का बहुत असर पड़ा करता है. अगर उनका ठीक मेल न हो तो समाज का सच्चा हित कैसे सध सकता है ! इस इन्तज़ाम में अमीरों का ही बोलबाला रहता है. ग़रीबों को उनकी मर्ज़ी पर मजबूर रहना पड़ता है, न कि अपने बुनियादी इन्सानी हक़ों पर. इस पूंजीवाद की आंच को कुछ हलका करने के लिये अब राज का कारोबार 'वेलफ़ेयर स्टेट' नाम से चलने लगा है. समाजवाद भी आ खड़ा हुआ है और मुक़ाबले पर हिन्सात्मक साम्यवाद या कम्यूनिज़्म तो है ही.

समाज की सुख-शान्ति के लिये अर्थशास्त्र पैसे की जगह इन्सानियत पर खड़ा होना चाहिये. आदमी को इन्सान के जैसी मुनासिब आज़ाद जगह मिलनी चाहिये. कमज़ोर या मज़बूत, सब को इज़्ज़त के साथ रहने का मौक़ा मिलना चाहिये. सब तरह के बनावटी भेद-भाव मिट कर व्यवहार में जहां तक हो सके बराबरी आनी चाहिये और मुक़ाबले या हिर्स के बदले सहकार या

ارتھ شاستر کی کتابوں میں جو وچار پائے جاتے ہیں وہ زیادہ تر پچھمی راشٹروں کے آرتھک یا مالی بندوبست کو لیکر قائم کئے گئے ہیں. مشین یگ شروع ہونے پر وہاں جو کیندری یا مرکزی اور پونجی پر مالی بندوبست قائم کیا گیا اسی پر وہ ارتھ شاستر کھڑا کیا گیا ہے. وقت کے ساتھ کچھ تبدیلی ضرور ہوئی لیکن بنیادی ڈھانچہ جیسا کا تیسا بنا رہا. اسمیں بڑے بڑے کیندری کارخانوں کی طوطی بولتی ہے جن میں بنی ہوئی چیزیں دنیا کے ایک چھور سے دوسرے چھور تک پہونچتی ہیں. اتنا ہی نہیں، بلکہ جہاں ضرورت نہیں ہے وہاں بھی طرح طرح کی ترکیبوں چالوں سے لاد دی جاتی ہیں. پھر ان کے لئے کچا مال دنیا بھر سے بٹور کر اور کئی دیشوں کو اپنے قابو میں رکھنے کی ضرورت پیدا ہوتی ہے. اس طرح بڑے بڑے ورگ بھید کھڑے ہوجاتے ہیں جن کے کارن جھگڑے لڑائیاں ہوتی ہیں، چھوٹے پسے جاتے ہیں اور غریبوں کو چوسا جاتا ہے. ایک دوسرے کو چت کر دینا تو اسکی خاصیت ہی ہے. نتیجہ یہ ہے کہ کچھ تھوڑے آدمیوں کے ہاتھ میں بڑے بڑے کاروبار آ جاتے ہیں اور قانونی طور سے بھلے نہ ہو، پر عملی طور سے ان کا ہی حکم چلتا ہے اور ان کی طوطی بولتی ہے. یہ چند لوگ آپس میں سنگٹھن کر کر ایک طاقت کھڑی کر لیتے ہیں اور دنیا میں من چاہی اتھل پتھل کر سکتے ہیں. سب دیشوں میں پرجا تنتر یا لوک راج کی دہائی تو دی جاتی ہے؛ پر جہاں کا آرتھک بندوبست ساری جنتا کے ہاتھ میں نہ ہو کر ایک کیندر یا مرکز کے پنجے میں آ جاتا ہے اور اسے قانون کی اوٹ بھی مل جاتی ہے تو وہ پرجا تنتر سچ مچ ایک دکھاوٹ رہ جاتا ہے. آج کے پیچیدہ سماج میں راج کاجی اور آرتھک انتظام کا بہت اثر پڑا کرتا ہے. اگر ان کا ٹھیک میل نہ ہو تو سماج کا سچا ہت کیسے سدھ سکتا ہے! اس انتظام میں امیروں کا ہی بول بالا رہتا ہے. غریبوں کو ان کی مرضی پر مجبور رہنا پڑتا ہے، نہ کہ اپنے بنیادی انسانی حقوں پر. اس پونجی واد کی آنچ کو کچھ ہلکا کرنے کے لئے اب راج کا کاروبار 'ویلفیئر اسٹیٹ' نام سے چلنے لگا ہے. سماج واد بھی آ کھڑا ہوا ہے اور مقابلے پر ہنساتمک سامیہ واد یا کمیونزم تو ہے ہی.

سماج کی سکھ شانتی کے لئے ارتھ شاستر پیسے کی جگہ انسانیت پر کھڑا ہونا چاہئے. آدمی کو انسان کے جیسی مناسب آزاد جگہ ملنی چاہئے. کمزور یا مضبوط، سب کو عزت کے ساتھ رہنے کا موقع ملنا چاہئے. سب طرح کے بناوٹی بھید بھاؤ مٹ کر ویوہار میں جہاں تک ہو سکے برابری [illegible] اور مقابلے یا حرص کے بدلے سہکار یا

रहन-सहन, आदमी की अपनी बुनियादी जरूरतों के बारे में स्वावलम्बी बने बिना उसकी सच्ची आजादी मुमकिन नहीं. इसलिये रोज की जरूरत की चीजों की तैयारी विकेन्द्री ढंग पर होना चाहिये. हुकूमत या राजसत्ता भी जहां तक मुमकिन हो विकेन्द्री होनी चाहिये. अपनी जरूरतें बढ़ाने के बजाये, मन और शरीर को तन्दुरुस्त रखते हुए, कम से कम चीजों से काम चलाना चाहिये.

अगर अर्थशास्त्र के नियम असली घटनाओं के आधार पर बनाना है तो जाहिर है तो ऊपर लिखे मुताबिक सर्वोदय समाज का ऐसा कोई ढांचा नहीं है जिस को देख कर उसके नियम पक्के रूप में बनाये जा सकें. लेकिन क्योंकि सर्वोदय व्यवस्था या तनजीम दुनिया के फायदे कल्याण के लिये है इसलिये उसकी आर्थिक व्यवस्था या तनजीम क्या होनी चाहिये इसका विचार करना जरूरी हो गया है. उसमें आम आदमी की कुदरती इच्छाओं के बदले इन्सान के बेहतरीन हिस्से यानी इन्सानियत का विचार करना होगा. यहां नीति-शास्त्र का सम्बन्ध आ जाता है. यह कहना ठीक नहीं होगा कि अर्थशास्त्र में नीतिशास्त्र लाने की जरूरत नहीं क्योंकि वह अर्थ या दौलत किसी काम की नहीं जिसमें नीति या इन्साफ न हो. आदमी के दिल के टुकड़े नहीं हो सकते. अगर वह पैसा कमाने में नीति या इन्साफ को अहमियत नहीं देता है तो उसका असर उसके सारे जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता. कहीं-कहीं ऐसी आवाज़ सुनाई देती है कि अगर पब्लिक काम करने में इन्सान की जिन्दगी नेक-पाक हो तो उसकी खानगी जिन्दगी की तरफ देखने की हमें क्या ज़रूरत. दूसरी जगह नेकी रखनी चाहिये पर राजकाज में वह बात चल नहीं सकती और उसकी ज़रूरत भी नहीं. ऐसी विचार धारा और अर्थ या दौलत का नीति या इन्साफ से सम्बन्ध टूटना दिनों दिन अनीति या ज़ियादती बढ़ने का कारण बन रहा है.

सर्वोदय की निगाह से जो विचार खड़े होते हैं उनमें से अर्थशास्त्र सम्बन्धी कुछ विचार ऊपर लिखे गये हैं. सर्वोदय का मुकम्मल अर्थशास्त्र लिख डालना आसान नहीं है. कहीं ऐसे समाज का एक फैले हुए पैमाने पर नमूना हो और कुछ अरसे तक उसकी जांच की जाये तब कहीं उस शास्त्र के नियम हाथ आ सकते हैं, पर वह भी अधूरी शक्ल में. सर्वोदय समाज की शक्ल क्या हो इस बारे में अब तक कुछ मुख्तसर विचार ज़रूर किया गया है पर उसकी पूरी तसवीर नहीं खींची जा सकती. आज की हालत में इतनी ही चर्चा की जा सकती है कि अर्थशास्त्र के चालू विचारों में सर्वोदय के लिहाज़ से क्या फर्क होना चाहिये. इस किताब में यह किया गया है. मौजूदा

سہن کم۔ آدمی کو اپنی بنیادی ضرورتوں کے بارے میں سوالمبی بنے بنا سچی آزادی ممکن نہیں۔ اسلئے روز کی ضرورت کی چیزوں کی تیاری وکیندری ڈھنگ پر ہونا چاہئے۔ حکومت یا راج ستا بھی جہاں تک ممکن ہو وکیندری ہونی چاہئے۔ اپنی ضرورتیں بڑھانے کے بجائے' من اور شریر کو تندرست رکھتے ہوئے' کم سے کم چیزوں سے کام چلانا چاہئے۔

اگر ارتھ شاستر کے نیم اصلی گھٹناؤں کے آدھار پر بنانا ہے تو ظاہر ہیں تو اوپر لکھے مطابق سرودے سماج کا ایسا کوئی ڈھانچہ نہیں ہے جس کو دیکھکر اس کے نیم پکے روپ میں بنائے جا سکیں۔ لیکن کیونکہ سرودے ویوستھا یا تنظیم دنیا کے فائدے کلیان کے لئے ہے اس لئے اسکی آرتھک ویوستھا یا تنظیم کیا ہونی چاہئے اسکا وچار کرنا ضروری ہوگیا ہے۔ اسمیں عام آدمی کی قدرتی اچھاؤں کے بدلے انسان کے بہترین حصے یعنی انسانیت کا وچار کرنا ہوگا۔ یہاں نیتی شاستر کا سمبندھ آجاتا ہے۔ یہ کہنا ٹھیک نہیں ہوگا کہ ارتھ شاستر میں نیتی شاستر لانے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہ ارتھ یا دولت کسی کام کی نہیں جس میں نیتی یا انصاف نہ ہو۔ آدمی کے دل کے ٹکڑے نہیں ہوسکتے۔ اگر وہ پیسہ کمانے میں نیتی یا انصاف کو اہمیت نہیں دیتا ہے تو اس کا اثر اس کے سارے جیون پر پڑے بنا نہیں رہ سکتا۔ کہیں کہیں ایسی آواز سنائی دیتی ہے کہ اگر پبلک کام کرنے میں انسان کی زندگی نیک پاک ہو تو اسکی خانگی زندگی کی طرف دیکھنے کی ہمیں کیا ضرورت۔ دوسری جگہ نیکی رکھنی چاہئے پر راج کاج میں یہ بات چل نہیں سکتی اور اسکی ضرورت بھی نہیں۔ ایسی وچار دھارا اور ارتھ یا دولت کا نیتی یا انصاف سے سمبندھ ٹوٹنا دنوں دن نیتی یا زیادتی بڑھنے کا کارن بن رہا ہے۔

سرودے کی نگاہ سے جو وچار کھڑے ہوتے ہیں ان میں سے ارتھ شاستر سمبندھی کچھ وچار اوپر لکھے گئے ہیں۔ سرودے کا مکمل ارتھ شاستر لکھ ڈالنا آسان نہیں ہے۔ کہیں ایسے سماج کا ایک پھیلے ہوئے پیمانے پر نمونہ ہو اور کچھ عرصے تک اسکی جانچ کی جائے تب کہیں اس شاستر کے نیم ہاتھ آ سکتے ہیں' پر وہ بھی ادھوری شکل میں۔ سرودے سماج کی شکل کیا ہو اس بارے میں اب تک کچھ مختصر وچار ضرور کیا گیا ہے' پر اسکی پوری تصویر نہیں کھینچی جا سکتی۔ آج کی حالت میں اتنی ہی چرچہ کی جا سکتی ہے کہ ارتھ شاستر کے چالو وچاروں میں سرودے کے لحاظ سے کیا فرق ہونا چاہئے۔ اس کتاب میں یہ کیا گیا ہے۔ موجودہ

अर्थशास्त्र की खास खास बातों को लेकर उनमें क्या फर्क किया जाना चाहिये इसकी चर्चा की गई है. जिसे समाजी और आर्थिक रूप-रंग को ध्यान में रख कर मौजूदा अर्थ-शास्त्र के नियम लिखे गये हैं उससे सर्वोदयी रचना बिल्कुल जुदा होने के कारन, मामूली किताबों के विचार सारे के सारे काम में लाये जा सकते हैं या किसी कमी-बेशी के साथ, यह तो सर्वोदयी समाज का बराहे रास्त तजुर्बा करने से ही तय किया जा सकेगा. इस तरह शायद इस किताब में शुरू से आखीर तक तबदीली करना पड़ जाये, फिर भी इसमें कोई शंका नहीं कि यह किताब सर्वोदयी अर्थ-रचना जानने की इच्छा रखने वालों के बहुत काम की होगी.

हमारे पढ़ने वालों या विद्यार्थियों के सामने पुराने विचारों की ही किताबें आती हैं और उन्हें अपने इम्तिहानों के लिये उन्हीं को घोटना पड़ता है. अब उनके कानों में 'सर्वोदय' शब्द पड़ने लगा है. पर उनके सामने ऐसा मसाला नहीं के बराबर है जिससे यह पता चले कि अर्थशास्त्र के लिहाज़ से सर्वोदय की शक्ल कैसी होगी. इस दिशा में विद्यार्थियों के लिये यह किताब खासकर उपयोगी साबित होगी.

समाज की सुघड़ और नई रचना करने की ज़िम्मेदारी बहुत-कुछ मास्टरों, अध्यापकों प्रोफेसरों पर है. इन्हें सर्वोदय अर्थशास्त्र की विचार धारा से वाकिफ़ होना ज़रूरी है. उम्मीद है कि वह भी इस किताब से काफी फ़ायदा उठायेंगे.

—श्रीकृष्णदास जाजू

ارتھ شاستر کی خاص خاص باتوں کو لیکر ان میں کیا فرق کیا جانا چاہئے اسکی چرچہ کی گئی ہے. جس سماجی اور آرتھک روپ رنگ کو دھیان میں رکھکر موجودہ ارتھ شاستر کے نیم لکھے گئے ہیں اس سے سروودئی رچنا بالکل جدا ہونے کے کارن معمولی کتابوں کے وچار سارے کے سارے کام میں لائے جاسکتے ہیں یا کسی کمی بیشی کے ساتھ' یہ تو سروودئی سماج کا براہ راست تجربہ کرنے سے ہی طے کیا جا سکیگا. اس طرح شائد اس کتاب میں شروع سے آخیر تک تبدیلی کرنا پڑ جائے' پھر بھی اس میں کوئی شنکا نہیں کہ یہ کتاب سروودئی ارتھ رچنا جاننے کی اچھا رکھنے والوں کے بہت کام کی ہوگی.

ہمارے پڑھنے والوں یا ودیارتھیوں کے سامنے پرانے وچاروں کی ہی کتابیں آتی ہیں اور انہیں اپنے امتحانوں کے لئے انہیں کو گھوٹنا پڑتا ہے. اب ان کے کانوں میں 'سروودے' لفظ پڑنے لگا ہے. پر اُن کے سامنے ایسا مسالہ نہیں کے برابر ہے جس سے یہ پتہ چلے کہ ارتھ شاستر کے لحاظ سے سروودے کی شکل کیسی ہوگی. اس دشا میں ودیارتھیوں کے لئے یہ کتاب خاص کر اپیوگی ثابت ہوگی.

سماج کی سگھڑ اور نئی رچنا کرنے کی ذمہ داری بہت کچھ ماسٹروں' ادھیاپکوں پروفیسروں پر ہے. انہیں سروودے ارتھ شاستر کی وچار دھارا سے واقف ہونا ضروری ہے. امید ہے کہ وہ بھی اس کتاب سے کافی فائدہ اٹھائینگے.

—شری کرشن داس جاجو

"......सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सब तरफ धार है. उसे जैसे चाहो वैसे काम में लाया जा सकता है. काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लाई जाती है, दोनो उससे सुखी होते हैं. खून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है. उस पर न तो कभी जंग लगता है, और न कोई उसे चुरा ही सकता है......"

—महात्मा गांधी

"..........ستیاگرہ ایک ایسی تلوار ہے جس کے سب طرف دھار ہے. اسے جیسے چاہو ویسے کام لیا جا سکتا ہے. کام میں لانے والا اور جس پر وہ کام میں لائی جاتی ہے' دونوں اس سے سکھی ہوتے ہیں. خون نہ بہا کر بھی وہ بڑی کارگر ہوتی ہے. اس پر نہ تو کبھی زنگ لگتا ہے' اور نہ کوئی اسے چرا ہی سکتا ہے............"

—مہاتما گاندھی

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

हरिजन बच्चे का रोना

(शंकर राजू नायडू)

हे गांधी बाबा! कैसे मैं
जीकर दिनों को काटूं?
ओ! मेरे बापू! बापू! ओ मेरे बापू!
सभी लोग मुझ से कहते हैं—
'दूर हो! दूर हो!
गंदे हरिजन नीच जाति के
अछूत हो! अछूत हो!'
क्या मुझ में भी जान नहीं?
दिल तो वैसा ही मेरा
मैं भी मनुष्य हूं, बापू! ओ मेरे बापू!
मैं भंगी बन रोज सफाई
करता हूं, करता हूं
मैं तन मन को जन सेवा में
रखता हूं, रखता हूं
पर मिलता क्या भोजन है?
खाना तो दूर रहे, हा!
सूखा बना हूं, बापू! ओ मेरे बापू!
नहीं चाहता मैं राग रंग
बापू मैं! बापू मैं!
नहीं चाहता पकवान भंग
बापू मैं! बापू मैं!
चाहूं मैं, बस भूक मिटे,
कपड़ा लत्ता रक्खे, पर
नंगा खड़ा हूं, बापू! ओ मेरे बापू!

ہریجن بچے کا رونا

(شنکر راجو نائیڈو)

ہے گاندھی بابا! کیسے میں
جی کر دنوں کو کاٹوں؟
او! میرے باپو! باپو! او میرے باپو
سبھی لوگ مجھ سے کہتے ہیں—
'دور ہو! دور ہو!'
گندے ہریجن نیچ جات کے
اچھوت ہو! اچھوت ہو!
کیا مجھ میں بھی جان نہیں؟
دل تو ویسا ہی میرا
میں بھی منش ہوں، باپو! او میرے باپو!
میں بھنگی بن روز صفائی
کرتا ہوں، کرتا ہوں
میں تن من کو جن سیوا میں
رکھتا ہوں، رکھتا ہوں
پر ملتا کیا بھوجن ہے؟
کھانا تو دور رہے، ہا!
سوکھا بنا ہوں، باپو! او میرے باپو!
نہیں چاہتا میں، راگ رنگ
باپو میں! باپو میں!
نہیں چاہتا پکوان بھنگ
باپو میں! باپو میں!
چاہوں میں، بس بھوک مٹے،
کپڑا لتا رکھے، پر
ننگا کھڑا ہوں، باپو! او میرے باپو!

मां

(बेनी माधव प्रसाद)

इलाहाबाद के ज़िले में फूलपुर एक क़सबा है. यहां कलकौवे का मेला लगता है. दूर दूर से नागा और साधू आते हैं. नागा रहते तो बिल्कुल नंगे हैं लेकिन उनके पास सामान बहुत होता है. हाथियों पर चढ़ चढ़ कर आते हैं. मेले में हर तरह का सामान होता है. कहीं बांसुरी बजा कर कोई सांप नचाता है, कोई पलना झूलता है, कोई मिठाई की दुकान की तरफ़ लपकता है, बच्चे गुब्बारे और बाजे ख़रीदते हैं. सब बच्चे अपने मां बाप के साथ घूमते रहते हैं. रामू भी मेला देखने गया था. उसकी मां उसकी उंगली पकड़े चली आ रही थी. वह दोनों एक हाथी के पास से गुज़रे. हाथी का दिमाग़ कुछ ख़राब हो गया था. उसने सूंड बढ़ा कर रामू को पकड़ लिया. सूंड पर लटका कर हाथी ने रामू को ऊपर उठाया और चाहता था कि सूंड की ऐंठन से उसकी हड्डी पसली तोड़ डाले. एक हथनी सामने खड़ी थी. वह ज़ोर से चिंघाड़ी और बेतहाशा भागती हुई उस हाथी से भिड़ गई. उसने अपनी सूंड हाथी के सूंड पर मारनी शुरू कर दी, जिससे हाथी उसको मार न सका. महावत ने अंकुश मार मार कर हाथी को बेचैन कर दिया और वह रामू को छोड़ कर चिंघाड़ मार कर भाग निकला. हथनी रामू के मुंह पर अपना सूंड हिला हिला कर उसे प्यार करने लगी. ऐसा लग रहा था कि जैसे रामू उसी का बच्चा हो.

× × ×

जब चुन्नू एक साल का ही था तभी उसकी मां मर गई. वह किसी तरह बहलता ही नहीं था. हर समय रोता रहता था. बहुत सी औरतों ने उसे दूध पिलाने की कोशिश की. उसने किसी का दूध नहीं पिया. हर तरह के जतन किये गये. शीशी में दूध भर कर पिलाया गया. फिर भी उसने सारा दूध उगल दिया. घर वालों को चिन्ता पैदा हो गई. न वह दूध पीता था और न किसी तरह चुप होता था. चुन्नू के पिता उसको लेकर एक दिन घर से बाहर निकले. उनके दरवाज़े पर ही एक बकरी चर रही थी. उन्होंने चुन्नू को बहलाने के लिये बकरी को दिखाया. चुन्नू ने इशारा किया कि वह बकरी पकड़ना चाहता है. उसके पिता उसे बकरी के पास ले गये. चुन्नू बकरी को पास बुलाता था. पहले बकरी अपनी जगह पर खड़ी रही और टकटकी बांधे चुन्नू को देखती रही. फिर 'मैं मैं' करने लगी और चुन्नू के पास आ गई. चुन्नू हंस दिया और बाप की गोद से झुक कर बाहर निकल जाने की कोशिश करने लगा. उसके पिता ने उसे गोद से उतार

ماں

(بینی مادھو پرساد)

الہ‌آباد کے ضلع میں پھولپور ایک قصبہ ہے . یہاں ککوا کا میلہ لگتا ہے . دور دور سے ناگا اور سادھو آتے ہیں . ناگا رہتے تو بالکل ننگے ہیں لیکن اُن کے پاس سامان بہت ہوتا ہے . ہاتھیوں پر چڑھ چڑھ کر آتے ہیں . میلے میں ہر طرح کا سامان ہوتا ہے . کہیں بانسری بجا کر کوئی سانپ نچاتا ہے ' کوئی پلنا جھولتا ہے ' کوئی مٹھائی کی دوکان کی طرف لپکتا ہے ' بچے غبارے اور باجے خریدتے ہیں . سب بچے اپنے ماں باپ کے ساتھ گھومتے رہتے ہیں . رامو بھی میلہ دیکھنے گیا تھا . اُسکی ماں اُسکی انگلی پکڑے چلی جا رہی تھی . وہ دونوں ایک ہاتھی کے پاس سے گذرے . ہاتھی کا دماغ کچھ خراب ہوگیا تھا . اُسنے سونڈ بڑھا کر رامو کو پکڑ لیا . سونڈ پر لٹکا کر ہاتھی نے رامو کو اوپر اُٹھایا اور چاہتا تھا کہ سونڈ کی اینٹھن سے اُسکی ہڈی پسلی توڑ ڈالے . ایک ہتھنی سامنے کھڑی تھی . وہ زور سے چنگھاڑی اور بے تحاشہ بھاگتی ہوئی اُس ہاتھی سے بھڑ گئی . اُس نے اپنی سونڈ ہاتھی کے سونڈ پر مارنی شروع کر دی جس سے ہاتھی اُس کو مار نہ سکا. مہاوت نے انکش مار مار کر ہاتھی کو بے چین کر دیا اور وہ رامو کو چھوڑ کر چنگھاڑ مار کر بھاگ نکلا . ہتھنی رامو کے منہ پر اپنا سونڈ ہلا ہلا کر اُسے پیار کرنے لگی . ایسا لگ رہا تھا کہ جیسے رامو اُسی کا بچہ ہو .

× × ×

جب چنو ایک سال کا ہی تھا تبھی اُسکی ماں مر گئی . وہ کسی طرح بہلتا ہی نہیں تھا . ہر سمے روتا رہتا تھا . بہت سی عورتوں نے اُسے دودھ پلانے کی کوشش کی . اُس نے کسی کا دودھ نہیں پیا . ہر طرح کے جتن کئے گئے . شیشی میں دودھ بھر کر پلایا گیا . پھر بھی اُس نے سارا دودھ اُگل دیا . گھر والوں کو چنتا پیدا ہوگئی . نہ وہ دودھ پیتا تھا اور نہ کسی طرح چپ ہوتا تھا . چنو کے پتا اُسکو لے کر ایک دن گھر سے باہر نکلے . اُن کے دروازے پر ہی ایک بکری چر رہی تھی . اُنہوں نے چنو کو بہلانے کے لئے بکری کو دکھایا . چنو نے اشارہ کیا کہ وہ بکری پکڑنا چاہتا ہے . اُس کے پتا اُسے بکری کے پاس لے گئے . چنو بکری کو پاس بلاتا تھا . پہلے بکری اپنی جگہ پر کھڑی رہی اور ٹکٹکی باندھے چنو کو دیکھتی رہی . پھر 'میں میں' کرنے لگی اور چنو کے پاس آ گئی . چنو ہنس دیا اور باپ کی گود سے جھک کر باہر نکل جانے کی کوشش کرنے لگا . اُس کے پتا نے اُسے گود سے اتار

दिया. बकरी अपना मुँह नीचा करके चुन्नू को सूँघने लगी. चुन्नू बड़ा खुश था रह रह कर हँसता था और बकरी के मुँह नाक, आँख सब पर हाथ फेर फेर कर कुछ जानने की कोशिश करता था. अभी कुछ देर भी न हुई थी कि चुन्नू के पिता ने देखा खेलते खेलते चुन्नू ने बकरी का थन पकड़ लिया. बकरी उछलने कूदने के बजाये सीधी खड़ी रही. उसने थन में दूध उतार लिया और इस तरह जुगाली करने लगी जैसे अपने ही बच्चों को दूध पिला रही हो. चुन्नू ने उसके थन को पकड़ कर खूब दूध पिया. वह दूध पीता जाता था और बकरी उसके सर को अपनी जीभ से चाटती जाती थी. अब चुन्नू को एक मां मिल गई. चुन्नू के पिता ने बकरी को खरीद लिया. बकरी सारा दिन घर में रहती. खुली रहती तो भी जंगल में न जाती. जब भी चुन्नू के रोने की आवाज उसके कान में पड़ती तो वह में में करती हुई दौड़ पड़ती और चुन्नू को दूध पीने का इशारा करती. ऐसे बकरी छः महीने में सूख जाती है. लेकिन वह बकरी सालों दूध देती रही चुन्नू के साथ वह खेलती भी थी. चुन्नू उसे ही मां समझने लगा था. चुन्नू बड़ा हो गया और वह खाना खाने लगा. लेकिन तो भी बिना बकरी के साथ खेले उसे चैन न आता था. बकरी भी परेशान हो जाती थी. चुन्नू कुछ दिनों के लिये बहुत सख्त बीमार हो गया. एक ज्योतिषी ने उसके पिता को बताया कि जब तक यह काली बकरी आप के घर में है तब तक चुन्नू अच्छा नहीं हो सकता. पिता ने बकरी को बेच दिया. चुन्नू जब खाट से उठा तो व्याकुल हो कर वह बकरी को ढूँढने लगा. पिता ने उससे कहा कि वह तो मर गई है. चुन्नू ने सब को शक की निगाह से देखा और रो पड़ा. अपनी बकरी याद उसे हमेशा सताती रही.

दیا — بکری اپنا منہ نیچا کر کے چنو کو سونگھنے لگی. چنو بڑا خوش تھا . رہ رہ کر ہنستا تھا اور بکری کے منہ ناک، آنکھ سب پر ہاتھ پھیر پھیر کر کچھ جاننے کی کوشش کرتا تھا . ابھی کچھ دیر بھی نہ ہوئی تھی کہ چنو کے پتا نے دیکھا کھیلتے کھیلتے چنو نے بکری کا تھن پکڑ لیا . بکری اچھلنے کودنے کے بجائے سیدھی کھڑی رہی . اس نے تھن میں دودھ اتار لیا اور اسطرح جگالی کرنے لگی جیسے اپنے ہی بچوں کو دودھ پلا رہی ہو . چنو نے اس کے تھن کو پکڑ کر خوب دودھ پیا. وہ دودھ پیتا جاتا تھا اور بکری اس کے سر کو اپنی جیبھ سے چاٹتی جاتی تھی . اب چنو کو ایک ماں مل گئی . چنو کے پتا نے بکری کو خرید لیا . بکری سارا دن گھر میں رہتی کھلی رہتی تو بھی جنگل میں نہ جاتی . جب بھی چنو کے رونے کی آواز اس کے کان میں پڑتی تو وہ میں میں کرتی ہوئی دوڑ پڑتی اور چنو کو دودھ پینے کا اشارہ کرتی . ایسے بکری چھ مہینے میں سوکھ جاتی ہے . لیکن یہ بکری سالوں دودھ دیتی رہی . چنو کے ساتھ وہ کھیلتی بھی تھی . چنو اسے ہی ماں سمجھنے لگا تھا . چنو بڑا ہوگیا اور وہ کھانا کھانے لگا . لیکن تو بھی بنا بکری کے ساتھ کھیلے اسے چین نہ آتا تھا . بکری بھی پریشان ہوجاتی تھی. چنو کچھ دنوں کے لئے بہت سخت بیمار ہوگیا . ایک جوتشی نے اس کے پتا کو بتایا کہ جب تک یہ کالی بکری آپ کے گھر میں ہے تب تک چنو اچھا نہیں ہوسکتا . پتا نے بکری کو بیچ دیا . چنو جب کھاٹ سے اٹھا تو بیاکل ہوکر وہ بکری کو ڈھونڈھنے لگا . پتا نے اس سے کہا کہ وہ تو مر گئی ہے . چنو نے سب کو شک کی نگاہ سے دیکھا اور رو پڑا اپنی بکری کی یاد اسے ہمیشہ ستاتی رہی .

चुटकुले

(चेतनकुमार शर्मा)

कुर्री लखनऊ जिला में एक थाना है. यहां के लोग बहुत मशहूर हैं. अगर आप किसी कुर्री वाले से यह पूछिये कि तुम कुर्री में रहते हो तो वह आप पर बिगड़ पड़ेगा. कुर्री वाले समझते हैं कि वह सबसे ज़ियादा बद-नाम हैं. यहां एक इन्जीनियर साहब थे. उन्होंने एक सड़क पर एक मील में 9 फर्लांग लगा दिये. वह सड़क अब भी मौजूद है. कुर्री की कहानी है.

چٹکلے

(چیتن کمار شرما)

کرسی لکھنؤ ضلع میں ایک تھانہ ہے — یہاں کے لوگ بہت مشہور ہیں . اگر آپ کسی کرسی والے سے یہ پوچھئے کہ تم کرسی میں رہتے ہو تو وہ آپ پر بگڑ پڑے گا . کرسی والے سمجھتے ہیں کہ وہ سب سے زیادہ بدنام ہیں . وہاں ایک انجینئر صاحب تھے انہوں نے ایک سڑک پر ایک میل میں 9 فرلانگ لگا دیئے . وہ سڑک اب بھی موجود ہے . وہیں کی کہانی ہے!

एक पुराने तहसीलदार साहब बीमार पड़े. उनके लड़के [illegible] दूसरे शहर में पढ़ते थे—तार देकर उन्हें बाप की देख भाल के लिये बुलाया गया. उन्होंने बड़े लगन से बाप की सेवा की. एक दिन डाक्टर साहब ने नई दवा पिलाने को कहा और चलते समय लड़के से कहते गये कि दवा पिलाने से पहले खूब हिला लीजियेगा. अस्पताल से दवा आ गई. लड़के ने बीमार बाप के बाजू को पकड़ कर खूब झकझोरा. बाप ने जब तकलीफ की शिकायत की तो उसने कहा कि डाक्टर साहब कह गये हैं कि जितना हिला हिला कर दवा पिलाई जायेगी उतना ही फायदा होगा. तीन चार रोज़ के बाद डाक्टर साहब फिर आये और उन्होंने तहसीलदार साहब से हाल पूछा. उन्होंने कहा कि डाक्टर साहब दवा असर तो कर रही है लेकिन लड़का जब दिन में तीन चार बार झकझोरता है तो सारा बदन टूट जाता है, हड्डी हड्डी में दर्द होने लगता है. डाक्टर साहब ज़ोर से हंसने लगे और उन्होंने कहा—मैंने आपको हिलाने के लिये नहीं कहा था बल्कि यह कहा था कि दवा को हिला लिया जाये.

× × ×

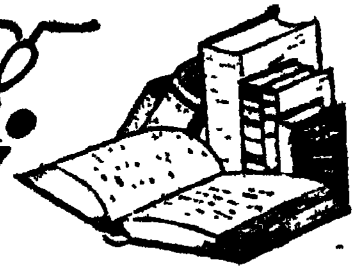
एक बार औरंगज़ेब बादशाह शिकारपुर गया. वहां के लोगों ने बड़े धूम धाम से अपने बादशाह का स्वागत किया. औरंगज़ेब दोपहर को खाना खाकर अपने साथियों के साथ दूसरी जगह के लिये रवाना हो गया. शिकारपुर के रहने वालों में दावत की चर्चा चल पड़ी. किसी ने कहा कि दावत तो बहुत अच्छी हुई और बादशाह खुश भी हुआ लेकिन एक ग़लती हो गई क़ोरमा में नमक कम था. सब पर जैसे ओस पड़ गई. सारे बुद्धिमान इस ग़लती ठीक करने के तरीक़े की खोज में जुट गये. एक लाल बुझक्कड़ ने बहुत चिन्ता के बाद कहा कि अब सवारों के हाथ नमक बादशाह की ख़िदमत में भेज दिया जाये. और उससे प्रार्थना की जाये कि वह ऊपर से नमक खा कर क़ोरमे में नमक की कमी को पूरा कर दें. दो आदमी तेज़ घोड़े पर नमक लेकर चल दिये. दो सवारों को इस तरह पीछे आते देख कर औरंगज़ेब को ख़तरा लगा और वह रुक गया. दोनों सवार पास पहुंच कर घोड़े से उतर कर बादशाह के पास गये और अदब से कहा कि "हुज़ूर माफ़ कर दें, ग़लती से क़ोरमे में नमक की कमी हो गई थी. हम लोग बहुत शर्मिन्दा हैं. नमक हाज़िर है आप कमी को पूरा कर लीजिये." औरंगज़ेब बहुत हंसा. सवार बारबार प्रार्थना करने लगे. दिल रखने के लिये उसने नमक ऊपर से खा लिया.

ایک پرانے تحصیلدار صاحب بیمار پڑے ۔ ان کے لڑکے [illegible] میں پڑھتے [illegible] کو انہیں باپ کی دیکھ بھال کے لئے بلایا گیا ۔ انہوں نے بڑے لگن سے باپ کی سیوا کی ۔ ایک دن ڈاکٹر صاحب نے نئی دوا پلانے کو کہا اور چلتے سمے لڑکے سے کہتے گئے کہ دوا پلانے سے پہلے خوب ہلا لیجئے گا ۔ اسپتال سے دوا آ گئی ۔ لڑکے نے بیمار باپ کے بازو کو پکڑ کر خوب جھنجھوڑا ۔ باپ نے جب تکلیف کی شکایت کی تو اُس نے کہا کہ ڈاکٹر صاحب کہہ گئے ہیں کہ جتنا ہلا ہلاکر دوا پلائی جائے گی اتنا ہی فائدہ ہوگا ۔ تین چار روز کے بعد ڈاکٹر صاحب پھر آئے اور انہوں نے تحصیلدار صاحب سے حال پوچھا ۔ انہوں نے کہا کہ ڈاکٹر صاحب دوا اثر تو کر رہی ہے لیکن لڑکا جب دن میں تین چار بار جھنجھوڑتا ہے تو سارا بدن ٹوٹ جاتا ہے، ہڈی ہڈی میں درد ہونے لگتا ہے ۔ ڈاکٹر صاحب زور سے ہنسنے لگے اور انہوں نے کہا— میں نے آپ کو ہلانے کے لئے نہیں کہا تھا بلکہ یہ کہا تھا کہ دوا کو ہلا لیا جائے ۔

× × × ×

ایک بار اورنگ زیب بادشاہ شکار پور گیا ۔ وہاں کے لوگوں نے بڑے دھوم دھام سے اپنے بادشاہ کا سواگت کیا ۔ اورنگ زیب دوپہر کو کھانا کھا کر اپنے ساتھیوں کے ساتھ دوسری جگہ کے لئے روانہ ہوگیا ۔ شکار پور کے رہنے والوں میں دعوت کی چرچا چل پڑی ۔ کسی نے کہا کہ دعوت تو بہت اچھی ہوئی اور بادشاہ خوش بھی ہوا لیکن ایک غلطی ہوگئی ۔ قورمہ میں نمک کم تھا ۔ سب پر جیسے اوس پڑ گئی ۔ سارے بدھیمان اس غلطی کو ٹھیک کرنے کے طریقے کی کھوج میں جٹ گئے—ایک لال بجھکڑ نے بہت چنتا کے بعد کہا کہ اب سواروں کے ہاتھ نمک بادشاہ کی خدمت میں بھیج دیا جائے اور اُس سے پرارتھنا کی جائے کہ وہ اوپر سے نمک کھا کر قورمہ میں نمک کی کمی کو پورا کر لیں ۔ دو آدمی تیز گھوڑے پر نمک لے کر چل دیئے ۔ دو سواروں کو اِسطرح پیچھے آتے دیکھکر اورنگ زیب کو خطرہ لگا اور وہ رک گیا ۔ دونوں سوار پاس پہونچ کر گھوڑے سے اُتر کر بادشاہ کے پاس گئے اور ادب سے کہا کہ " حضور معاف کر دیں ۔ غلطی سے قورمہ میں نمک کی کمی ہوگئی تھی ۔ ہم لوگ بہت شرمندہ ہیں ۔ نمک حاضر ہے آپ کمی کو پورا کر لیجئے—" اورنگ زیب بہت ہنسا ۔ سوار بار بار پرارتھنا کرنے لگے دل رکھنے کے لئے اس نے نمک اوپر سے کھا لیا ۔

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

अन्टू दि लास्ट

मूल लेखक—महात्मा गांधी.

अनुवादक—वालजी गोविन्द जी देसाई.

निकालने वाले—नवजीवन अहमदाबाद.

लिखावट—अंगरेजी. सफ़े-64, दाम छै आने.

महात्मा गांधी के जीवन पर जिन चंद किताबों का इन्किलाबी असर हुआ था, वह उनमें से एक है, अंगरेजी लेखक जान रस्किन की किताब—'अन्टू दि लास्ट' जो अब अमर हो गई है. 24 घंटे के रेल सफ़र में गांधी जी ने इसे पढ़ा और उसके बाद अपने जीवन को नई राह पर लगा दिया जिसे उन्होंने 'सर्वोदय' (सब का उदय या उरूज) नाम दिया.

रस्किन की इस किताब का निचोड़ महात्मा जी ने 'सर्वोदय' नाम की एक छोटी-सी किताब गुजराती में लिख कर दुनिया को पेश किया था. अब भाई वालजी गोविन्द जी देसाई ने इसका अंगरेजी में उल्था किया है. इस तरह हम इस किताब को रस्किन की बड़ी किताब का निचोड़ कह सकते हैं. अनुवादक ने कोशिश भी इस बात की है कि जहां तक बन पड़े रस्किन के लफ़्ज़ों को कायम रखा जावे.

किताब के अन्दर जो विचार दिये गये हैं उनके बारे में कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाना है. जो यह जानना चाहते हैं कि असली अर्थशास्त्र क्या है और धर्म या राजनीति से उसका क्या सम्बन्ध है उन्हें यह छोटी-सी किताब ज़रूर पढ़नी चाहिये.

हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों से हमारी सिफ़ारिश है कि इस छोटी-सी किताब को हर सेकेन्डरी स्कूल या कालिज में जगह दी जावे.

—सुरेश रामभाई.

انٹو دی لاسٹ

مول لیکھک—مہاتما گاندھی۔

انوادک— بال جی گوبند جی دیسائی۔

نکالنے والے—نوجیون احمدآباد۔

لکھاوٹ—انگریزی. صفحے—64 دام—چھ آنے۔

مہاتما گاندھی کے جیون پر جن چند کتابوں کا انقلابی اثر ہوا تھا یہ ان میں سے ایک ہے۔ انگریزی لیکھک جان رسکن کی کتاب—'انٹو دی لاسٹ' جو اب امر ہو گئی ہے۔ 24 گھنٹے کے ریل سفر میں گاندھی جی نے اسے پڑھا اور اس کے بعد اپنے جیون کو نئی راہ پر لگا دیا جسے انہوں نے 'سروودے' (سب کا ادے یا عروج) نام دیا۔

رسکن کی اس کتاب کا نچوڑ مہاتما جی نے 'سروودے' نام کی ایک چھوٹی سی کتاب گجراتی میں لکھکر دنیا کو پیش کیا تھا۔ اب بھائی بال جی گوبند جی دیسائی نے اس کا انگریزی میں الٹھا کیا ہے۔ اس طرح ہم اس کتاب کو رسکن کی بڑی کتاب کا نچوڑ کہ سکتے ہیں۔ انوادک نے کوشش بھی اس بات کی کی ہے کہ جہاں تک بن پڑے رسکن کے لفظوں کو قائم رکھا جائے۔

کتاب کے اندر جو وچار دیئے گئے ہیں ان کے بارے میں کچھ بھی کہنا سورج کو دیپک دکھانا ہے۔ جو یہ جاننا چاہتے ہیں کہ اصلی ارتھ شاستر کیا ہے اور دھرم یا راج نیتی سے اسکا کیا سمبندھ ہے انہیں یہ چھوٹی سی کتاب ضرور پڑھنا چاہئے۔

ہندستانی ودیارتھیوں سے ہماری سفارش ہے کہ اس چھوٹی سی کتاب کو ہر سیکنڈری اسکول یا کالج میں جگہ دی جائے۔

—سریش رام بھائی

मेरे साथी

लिखने वाले—महात्मा भगवान दीन, निकालने वाले—भारत जैन महा मंडल, लिखावट हिन्दी, सफ़े 127 क़ीमत एक रुपया.

महात्मा भगवान दीन महात्मा भी हैं और साथ ही आदमी भी हैं. महात्माओं में वह इसलिये ऊंचे हैं क्योंकि वह आदमी हैं और आदमियों में वह इसलिए ऊंचे हैं कि वह महात्मा हैं. वह आदमियों की भाशा में, आदमियों की समझ में आने वाले ढंग से, महात्मा पन की बातें करते हैं. वह लगभग सत्तर साल के बूढ़े हैं फिर भी उनके हर क़दम में एक नया पन है, एक नई अदा है. उनकी लेखनी पुरानी चीज़ों को नए और आसान ढंग से लिखना जानती है. उनके हर लेख में नया विचार, नई शैली, भाशा का नया लोच दिखाई पड़ता है. वह कहानी भी लिखते हैं, कविता भी लिखते हैं और पत्रकार भी हैं. ढंग चाहे कोई भी हो, विशय कोई भी हो पर वह दुनिया का, मानव का एक अपना नया नक़्शा सामने रख देते हैं.

'मेरे साथी' उन लोगों की जीवन कथा है जो महात्मा भगवानदीन जी के साथ रहे हैं, जिन्होंने उन्हें बहुत से कामों में अपना सहयोग दिया है. इस किताब के दो भाग हैं. हम ढूंढ कर थक गए लेकिन यह पता न चल सका कि यह किताब 'मेरे साथी' के दोनों हिस्सों में से कौन सा हिस्सा है. इस भाग में आठ आदमियों के जीवन की झलक महात्मा जी ने एक ख़ास दृश्टिकोण से दी है. इन कथाओं के आठों पात्र जैनी हैं और समाज के बाग़ी हैं. इनके जीवन से प्रेरना मिलती है—रूढ़ियों से बग़ावत करने की, सच्चाई के लिए डटने की, कश्ट उठाने की. 'मेरे साथी' ऐसा उपन्यास है जिसके आठो हीरों के सामने सिर्फ़ एक ही लक्ष्य है—इन्सानियत या मानवता. अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिये अगर कहीं जैनी कठ मुल्लाओं के रूढ़ी वाद ने उनके क़दम रोके तो वह उन्हें ठुकराकर, बग़ावत करके आगे बढ़ गए.

महात्मा जी ने इस किताब में कुछ लोगों की जीवन कथा ही नहीं लिखी बल्कि इस बहाने उन्होंने समाज का खोखला पन भी दिखाया है. इन्सान के स्वाभिमान और बड़प्पन पर भी रोशनी डाली है, रोज़ के जीवन में आने वाली समस्याओं का अपना हल भी पेश किया है, बालक के मनोविज्ञान पर भी लेखनी उठाई है.

हर एक का जीवन एक सुन्दर कहानी है. बस ऐसे लेखक की ज़रूरत रहती है जो कहानी को सुन्दर ढंग से लिख सके 'मेरे साथी' के पात्रों की तो बहुत ही सुन्दर और

میرے ساتھی

لکھنے والے—مہاتما بھگوان دین، نکالنے والے—بھارت جین مہا منڈل، لکھاوٹ ہندی، صفحے 127 قیمت ایک روپیہ۔

مہاتما بھگوان دین مہاتما بھی ہیں اور ساتھ ہی آدمی بھی ہیں۔ مہاتماؤں میں وہ اس لئے اونچے ہیں کیونکہ وہ آدمی ہیں اور آدمیوں میں وہ اس لئے اونچے ہیں کہ وہ مہاتما ہیں۔ وہ آدمیوں کی بھاشا میں، آدمیوں کی سمجھ میں آنے والے ڈھنگ سے، مہاتما پن کی باتیں کرتے ہیں۔ وہ لگ بھگ ستر سال کے بوڑھے ہیں پھر بھی ان کے ہر قدم میں ایک نیا پن ہے، ایک نئی ادا ہے۔ ان کی لیکھنی پرانی چیزوں کو نئے اور آسان ڈھنگ سے لکھنا جانتی ہے۔ ان کے ہر لیکھ میں نیا وچار، نئی شیلی، بھاشا کا نیا لوچ دکھائی پڑتا ہے۔ وہ کہانی بھی لکھتے ہیں، کویتا بھی لکھتے ہیں اور پترکار بھی ہیں۔ ڈھنگ چاہے کوئی بھی ہو، وشے کوئی بھی ہو پر وہ دنیا کا، مانو کا ایک اپنا نیا نقشہ سامنے رکھ دیتے ہیں۔

'میرے ساتھی' ان لوگوں کی جیون کتھا ہے جو مہاتما بھگواندین جی کے ساتھ رہے ہیں، جنہوں نے انہیں بہت سے کاموں میں اپنا سہیوگ دیا ہے۔ اس کتاب کے دو بھاگ ہیں۔ ہم ڈھونڈ کر تھک گئے لیکن یہ پتہ نہ چل سکا کہ یہ کتاب 'میرے ساتھی' کے دونوں حصوں میں سے کونسا حصہ ہے۔ اس بھاگ میں آٹھ آدمیوں کے جیون کی جھلک مہاتما جی نے ایک خاص درشٹی کون سے دی ہے۔ ان کتھاؤں کے آٹھوں پاتر جینی ہیں اور سماج کے باغی ہیں۔ ان کے جیون سے پریرنا ملتی ہے—روڑھیوں سے بغاوت کرنے کی، سچائی کے لئے ڈٹنے کی، کشٹ اٹھانے کی۔ 'میرے ساتھی' ایسا اپنیاس ہے جس کے آٹھوں ہیرو کے سامنے صرف ایک ہی لکش ہے—انسانیت یا مانوتا۔ اپنی منزل تک پہنچنے کے لئے اگر کہیں جینی کٹھ ملاؤں کے روڑھی واد نے ان کے قدم روکے تو وہ انہیں ٹھکرا کر، بغاوت کرتے آگے بڑھ گئے۔

مہاتما جی نے اس کتاب میں کچھ لوگوں کی جیون کتھا ہی نہیں لکھی بلکہ اس بہانے انہوں نے سماج کا کھوکھلا پن بھی دکھایا ہے۔ انسان کے سوابھیمان اور بڑپن پر بھی روشنی ڈالی ہے، روز کے جیون میں آنے والی سمسیاؤں کا اپنا حل بھی پیش کیا ہے، بالک کے منووگیان پر بھی لیکھنی اٹھائی ہے۔

ہر ایک کا جیون ایک سندر کہانی ہے۔ بس ایسے لیکھک کی ضرورت رہتی ہے جو کہانی کو سندر ڈھنگ سے لکھ سکے۔ 'میرے ساتھی' کے پاتروں کو بہت ہی سندر اور

अदीब के [illegible] है, उन्हीं बातों का नतीजा है कि इन खामियों के [illegible] भगवानदीन जी ऐसा लेखक मिल गया.

हमें आशा है कि भारत जैन महामंडल जल्द ही महात्मा भगवानदीन जी की दूसरी रचनाएं भी हमारे सामने पेश कर सकेगा और उनकी लेखनी से प्रेरणा लेने का मौक़ा दे सकेगा.

—सुदीप तिवारी

वारदात

लिखने वाले—प्रेमचन्द; निकालने वाले—मकतबे जामिया लिमिटेड जामिया नगर, देहली. लिखावट उर्दू, सफ़ा 212, क़ीमत दो रुपया.

'वारदात' के सम्बन्ध में इतना लिखना काफ़ी है कि यह प्रेमचन्द की चीज़ है. इस किताब में प्रेमचन्द की तेरह कहानियां जमा की गई हैं पर 'वारदात' नाम की कोई कहानी नहीं है. फिर भी इसका नाम वारदात रखा गया है. क्योंकि यह सारी कहानियां ऐसी वारदातें हैं जो हर एक जीवन के मैदान में घटा करती हैं. प्रेमचन्द को गये हुए भी बहुत दिन बीत गये और इस पर यह कहानियां तो और भी पुरानी हैं. फिर भी कहानी की घटना स्थल, कहानी के पात्र, कहानी का विषय, सब आज का मालूम होता है और इसीलिये पढ़ने वाला इनमें अपने माहौल और अपनी ज़िन्दगी का रंग पाता है. ब मुश्किल तमाम कांग्रेस सरकार एक लचकदार हिन्दू कोडबिल पास करना चाहती थी पर इससे बहुत से पंडों पांडों और दकिया-नूसों को हिन्दू धर्म ख़तरे में मालूम पड़ने लगा. और कोडबिल अब तक पास नहीं हुआ और न मालूम कभी होगा या नहीं. समाज के ठेकेदार "बदनसीब मां" को हमेशा बदनसीब बनाये रखना चाहते हैं और उसको कोई अधिकार देना नहीं चाहते. जो बेचारी गृहस्थी बटोरे उसका ही उस पर कोई अधिकार नहीं, सदा दूसरों का मुंह ताकना पड़ता है. हमारी सलाह है कि हिन्दू कोडबिल के विरोधी ठंडे दिल से प्रेमचन्द की कहानी "बदनसीब मां" को पढ़ें. तब उनके दिमाग़ खुलेंगे और दिल साफ़ होंगे और उन्हें इन्साफ़ सूझेगा.

प्रेमचन्द के इस संग्रह में समाज को गंदी हालत में दिखाया गया है, हर तबके की ग़लत धारणाओं की धज्जियां उड़ाई है पर यह नहीं बताया गया कि इस बुरे समाज को कैसे ठीक बनाया जाये. फिर भी जब तक यह समाज [illegible] है, [illegible] बाक़ी हैं,

[illegible] سے بھی کہتی ہے . پڑھنے والوں کا سوبھاگیہ ہے کہ اِن کھامیوں کو مہاتما بھگوان دین جی ایسا لیکھک مل گیا .

ہمیں آشا ہے کہ بھارت جین مہا منڈل جلد ہی مہاتما بھگوان دین جی کی دوسری رچنائیں بھی ہمارے سامنے پیش کر سکے گا اور اُن کی لیکھنی سے پریرنا لینے کا موقع دے سکے گا .

—مجیب رضوی

واردات

لکھنے والے—پریم چند، نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ جامعہ نگر، دہلی . لکھاوٹ اُردو، صفحہ 212، قیمت دو روپیہ .

'واردات' کے سمبندھ میں اتنا لکھنا کافی ہے کہ یہ پریم چند کی چیز ہے . اس کتاب میں پریم چند کی تیرہ کہانیاں جمع کی گئی ہیں پر 'واردات' نام کی کوئی کہانی نہیں ہے . پھر بھی اِس کا نام واردات رکھا گیا ہے . کیونکہ یہ ساری کہانیاں ایسی وارداتیں ہیں جو ہر ایک جیون کے میدان میں گھٹا کرتی ہیں . پریم چند کو گئے ہوئے بھی بہت دن بیت گئے اور اُس پر یہ کہانیاں تو اور پرانی ہیں . پھر بھی کہانی کی گھٹنا استھل، کہانی کے پاتر، کہانی کا وِشے، سب آج کا معلوم ہوتا ہے اور اسی لئے پڑھنے والا اِن میں اپنے ماحول اور اپنی زندگی کا رنگ پاتا ہے . بہ مشکل تمام کانگریس سرکار ایک لچکدار ہندو کوڈبل پاس کرنا چاہتی تھی پر اس سے ہی بہت سے پنڈتوں، پنڈوں اور دقیانوسوں کو ہندو دھرم خطرے میں معلوم پڑنے لگا . اور کوڈبل اب تک پاس نہیں ہوا اور معلوم کبھی نہ ہوگا یا نہیں . سماج کے ٹھیکیدار "بدنصیب ماں" کو ہمیشہ بدنصیب بنائے رکھنا چاہتے ہیں اور اُس کو کوئی ادھیکار دینا نہیں چاہتے . جو بیچاری گرہستی بٹورے اُس کا ہی اُس پر کوئی ادھیکار نہیں، سدا دوسروں کا منہ تاکنا پڑتا ہے . ہماری صلاح ہے کہ ہندو کوڈبل کے ورودھی ٹھنڈے دل سے پریم چند کی کہانی "بدنصیب ماں" کو پڑھیں . تب اُن کے دماغ کھلیں گے اور دل صاف ہونگے اور اُنہیں انصاف سوجھے گا .

پریم چند کے اِس سنگرہ میں سماج کو گندی حالت میں دکھایا گیا ہے، ہر طبقے کی غلط دھارناؤں کی دھجیاں اڑائی ہے پر یہ نہیں بتایا گیا کہ اِس برے سماج کو کیسے ٹھیک بنایا جائے . پھر بھی جب تک یہ سماج ایسا چلتا ہے، اس کی اتنی سیدھی رسمیں باقی ہیں،

... होगी, उसे बाबा ... अपने घर, अपने कुनबे और अपने गांव की समस्याओं को साफ साफ देख सकेगा और उसके दिल में ऐसी जमीन तैयार होगी जिसमें सही बीज बोकर समाज को हरा-भरा बनाया जा सकेगा.

—मुजीब रिज़वी

... اپنے گھر، اپنے کنبے اور اپنے گاؤں کی سمسیاؤں کو صاف صاف دیکھ سکے گا اور اس کے دل میں ایسی زمین تیار ہوگی جس میں صحیح بیج بوکر سماج ہرا بھرا بنایا جاسکے گا۔

—مجیب رضوی

भू-दान-यज्ञ

(विनोबाजी की दो भाषणों का संग्रह) निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल; पहली बार, 1951; सफे 32, दाम चार आने.

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ के नाम से हजारों-लाखों भाई बहन वाकिफ हो गये हैं. पर यह असल में चीज क्या है, उसका मकसद क्या है, उसका रास्ता क्या है—इन बातों की जानकारी हर किसी को नहीं है. सस्ता साहित्य मंडल ने विनोबाजी की दो खास भाषण जमा करके यह बताने का काम खूबसूरत ढंग से किया है. साथ में कविवर मैथिली शरण जी की एक कविता और दो छोटे नोट भी जोड़ दिये हैं. महात्मा गांधी का कहना कि "श्री विनोबा भावे कौन हैं?" और दूसरा काका साहेब कालेलकर का विनोबा जी की भूमि दान यात्रा—जिन से इस छोटी-सी किताब की कीमत और भी बढ़ जाती है. बढ़िया छपाई, कागज और कवर—चार आने का यह गुटका बड़े काम की चीज है.

بھودان یگیہ

(ونوباجی کی دو بھاشنوں کا سنگرہ)

نکالنے والے—سستا ساہتیہ منڈل؛ پہلی بار' 1951؛ صفحے 32' دام چار آنے۔

ونوباجی کے بھودان یگیہ کے نام سے ہزاروں لاکھوں بھائی بہن واقف ہوگئے ہیں۔ پر یہ اصل میں چیز کیا ہے' اس کا مقصد کیا ہے' اس کا راستہ کیا ہے—ان باتوں کی جانکاری ہر کسی کو نہیں ہے۔ سستا ساہتیہ منڈل نے ونوباجی کی دو خاص بھاشن جمع کرکے یہ بتانے کا کام خوبصورت ڈھنگ سے کیا ہے۔ ساتھ میں کوِور میتھلی شرن جی کی ایک کویتا اور دو چھوٹے نوٹ بھی جوڑ دئے ہیں۔ مہاتما گاندھی کا کہنا کہ "شری ونوبا بھاوے کون ہیں؟" اور دوسرا کاکا صاحب کالیلکر کا 'ونوباجی کی بھودان یاترا'—جن سے اس چھوٹی سی کتاب کی قیمت اور بھی بڑھ جاتی ہے۔ بڑھیا چھپائی' کاغذ اور کور—چار آنے کا یہ گٹکا بڑے کام کی چیز ہے۔

राज घाट की संनिधि में

(13 अक्तूबर से 23 नवम्बर तक दिल्ली में दिये विनोबा जी के प्रवचन); निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली पहली बार, 1952; सफे 80, दाम चौदह आने.

दिल्ली वालों को अपने शहर की बहुत-सी बातों की याद रहेगी उनमें से एक यह भी कि विनोबा जी जमुना के किनारे बापू की समाधि राजघाट के पास आकर ग्यारह दिन ठहरे और अपने भूदान-यज्ञ का सन्देश दिया. इन ग्यारह दिन में उन्होंने शाम की प्रार्थना के बाद जो प्रवचन दिये उनको एक जगह जमा करके सस्ता साहित्य मंडल ने बड़ा उपकार किया है. इस छोटी-सी किताब से पता चलता है कि भूदान यज्ञ का भेद क्या है और उसके कामयाब होने पर हमारे देश के बड़े बड़े सवाल किस तरह हल हो सकते हैं. सरकारी प्लानिंग कमीशन से विनोबा जी का जो समझौता है वह भी एक

راج گھاٹ کی سنندھی میں

(13 نومبر سے 23 نومبر تک دلی میں دیئے ونوبا جی کے پروچن؛ نکالنے والے' سستا ساہتیہ منڈل' نئی دلی؛ پہلی بار' 1952؛ صفحے 80' دام چودہ آنے۔

دلی والوں کو اپنے شہر کی جہاں بہت سی باتوں کی یاد رہے گی ان میں سے ایک یہ بھی کہ ونوبا جی جمنا کے کنارے باپو جی سمادھی راج گھاٹ کے پاس آکر گیارہ دن ٹھہرے اور اپنے بھودان یگیہ کا اپدیش دیا۔ ان گیارہ دنوں میں انہوں نے شام کی پرارتھنا کے بعد جو پروچن دیئے ان کو ایک جگہ جمع کرکے سستا ساہتیہ منڈل نے بڑا اپکار کیا ہے۔ اس چھوٹی سی کتاب سے پتہ چلتا ہے کہ بھودان یگیہ کا بھید کیا ہے اور اس کے کامیاب ہونے پر ہمارے دیش کے بڑے بڑے سوال کس طرح حل ہو سکتے ہیں۔ سرکاری پلاننگ کمیشن سے ونوبا جی کا جو سمجھوتہ ہوا ہے وہ بھی ایک

[illegible] में [illegible] है अगर हिन्द सरकार [illegible] विनोबा जी की राय [illegible] खेती—[illegible] और [illegible] समाज में स्वावलम्बी [illegible] आना—तो [illegible] अमरीका वगैरा के टुकड़ों पर न तकना पड़ता और न विदेश [illegible] से हिन्दुस्तान का बंटाधार होता.

—सुरेश रामभाई

एक आदर्श महिला

(स्वर्गीय अवंतिका बाई गोखले)

लेखक—श्री विनायक तिवारी; निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पहलीबार, 1951; सफ़े 82, दाम एक रुपया.

देश की बदकिस्मती है कि आज इण्डिया नेशनल कांग्रेस जैसी संस्थाओं की ओहदेदार औरतें अपना वक्त बरबाद करती हैं [illegible] में, फूल नुमायश (प्रदर्शन) वगैरा में उन्हें अपनी उन लाखों-करोड़ों बहनों की कभी याद नहीं आती जिनको न तो दो जून रोटी नसीब होती है न तन पर पूरा-सा कपड़ा. पर महात्मा जी की रहनुमाई में ऐसी बहनें भी मैदान में आईं जो दुखी समाज की सेवा करना अपना फर्ज समझती थीं और उनके ही हित में अपना हित मानती थीं. इन बहनों में बड़ी ऊंची जगह है महाराष्ट्र की पुरानी सेवक—सौभाग्यवती अवंतिका बाई गोखले की जिनका 1949 में 67 बरस की उमर में देहान्त हुआ.

जब गांधीजी ने 1917 में बिहार में बिगुल बजाया तभी से आप सेवा के काम में लग गईं और आखरी दम तक लगी रहीं. आपकी सेवा और निर्मल जीवनी सब के लिये एक मिसाल है. हमें उम्मीद है कि इस किताब का खूब प्रचार होगा और देश के युवक हमारे भाई-बहन इससे कुछ सबक लेंगे.

—सुरेश रामभाई

और किताबें

हिन्दी

नवजीवन, अहमदाबाद

1. उस पार के पड़ोसी, लेखक—काका कालेलकर; पहलीबार 1952, सफ़े 311, दाम तीन रुपया आठ आना.

2. [illegible] का चमत्कार, लेखक—मनुबहन गांधी; पहलीबार 1952, सफ़े 132, दाम [illegible] रुपया.

[illegible] صاف صاف آ جاتا ہے ۔ ونوبا جی کی [illegible] کے معاملے میں [illegible] کھیتی— سب کو ہم دیکھا اور اناج میں سوالمبی ہو جاتا—تو آج امریکہ وغیرہ کے ٹکروں پر نہ ترسنا پڑتا اور نہ ودیشی ایکسپرٹوں سے ہندستان کا ناش ہوتا ۔

—سریش رام بھائی

ایک آدرش مہلا

(سورگیہ اونتکا بائی گوکھلے)—

لیکھک—شری ونایک تواری؛ نکالنے والے—سستا ساہتیہ منڈل، نئی دلی؛ پہلی بار، 1951؛ صفحے 82، دام ایک روپیہ ۔

دیش کی بدقسمتی ہے کہ آج انڈیا نیشنل کانگریس جیسی سنستھاؤں کی عہدے دار عورتیں اپنا وقت برباد [illegible] میں خوبصورتی سمجھیں کپڑے میں، پھول نمائش (پردرشنی) وغیرہ میں انہیں اپنی ان لاکھوں کروڑوں بہنوں کی کبھی یاد نہیں آتی جن کو نہ دو جون روٹی نصیب ہوتی ہے نہ تن پر پورا سا کپڑا ۔ پر مہاتما جی کی رہنمائی میں ایسی بہنیں بھی میدان میں آئیں جو دکھی سماج کی سیوا کرنا اپنا فرض سمجھتی تھیں اور ان کے ہت میں اپنا ہت مانتی تھیں ۔ ان بہنوں میں بڑی اونچی جگہ ہے مہاراشٹر کی پرانی سیوک—سوبھاگیہ وتی اونتکا بائی گوکھلے کی جن کا 1949 میں 67 برس کی عمر میں دیہانت ہوا ۔

جب گاندھی جی نے 1917 میں بہار میں بگل بجایا تبھی سے آپ سیوا کے کام میں لگ گئیں اور آخری دم تک لگی رہیں ۔ آپ کی سیوا اور نرمل جیون سب کے لئے ایک مثال ہے ۔ ہمیں امید ہے کہ اس کتاب کا خوب پرچار ہوگا اور دیش کے یووک ہمارے بھائی بہن اس سے کچھ سبق لیں گے ۔

—سریش رام بھائی

اور کتابیں

ہندی

نوجیون، احمدآباد

1. اس پار کے پڑوسی، لیکھک—کاکا کالیلکر؛ پہلی بار 1952؛ صفحے—311؛ دام تین روپے آٹھ آنے

2. [illegible] کا چمتکار، لیکھک—[illegible]؛ پہلی بار 1952؛ صفحے—132؛ دام [illegible] روپیہ ۔

सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

3. अमिट रेखाएँ, लेखक—सत्यवती मल्लिक, पहली बार. 1952 सफे 246, कीमत तीन रुपये.

4. रीढ़ की हड्डी, सम्पादक—विष्णु प्रभाकर, पहली बार 1952 सफा 147, दाम एक रुपये आठ आना.

भारत जैन महा मंडल, वर्धा

5. जीवन जौहरी लेखक—रिषभदास रांका; पहला प्रकाशन, सफे 167, दाम एक रुपया चार आना.

6. समाज और जीवन, सम्पादक—जमना लाल जैन; पहला प्रकाशन, सफे 114, दाम एक रुपया.

7. उज्ज्वल-प्रवचन, सम्पादक—रतन कुमार जैन, पहला प्रकाशन; सफे 86, दाम दस आने.

8. तत्त्वार्थसूत्र, विवेचन कर्ता—पंडित सुखलाल जी संघवी, दूसरा प्रकाशन, सफे 410, दाम पांच रुपये आठ आना.

9. आदर्श विवाह-विधि, सम्पादक—रिषभ दास रांका; पहला प्रकाशन. सफे 28, दाम पाँच आने.

10. प्यारे राजा बेटा, लेखक—रिषभदास रांका; पहला प्रकाशन, सफे 96, दाम दस आने.

11. बुद्ध और महावीर, लेखक—किशोरलाल घ० मशरूवाला; पहला प्रकाशन, सफे 148, दाम एक रुपया.

12. मणि भद्र, लेखक—श्री 'सुशील'; दूसरा प्रकाशन, सफे 143. दाम एक रुपया चार आना.

13. धर्म और संस्कृति, संकलन कर्ता—जमना लाल जैन, साहित्य रत्न, पहलीबार, 1952, सफे 143 दाम सवा रुपये.

14. गांधी गौरव, लेखक—गोकुलचन्द शर्मा निकालने वाले—नवयुग साहित्य प्रकाशन, दिल्ली पहली बार 1951 सफे 112 दाम एक रुपया.

15. अशोक वन, लेखक—गोकुलचन्द शर्मा, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, पहलीबार 1951, सफे 176, दाम डेढ़ रुपया.

16. शैतान, लेखक खलील जिब्रान, अनुवादक—श्री नरेन्द्र चौधरी; पहलीबार 1952, सफे 88, दाम एक रुपया.

अंगरेज़ी

17. गांधी जीज़ आटोबायोग्राफ़ी (एब्रिज्ड) लेखक—भारतन कुमारप्पा, निकालने वाले—नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, सफे 294, दाम दो रुपया.

18. हिंद स्वराज [illegible], लेखक—एम. के. गांधी, सफे 172, दाम दो रुपया.

سستا ساہتیہ منڈل دلی

3. [illegible] لیکھک— ستیہ وتی ملک؛ پہلی بار؛ 1952 صفحے 246؛ قیمت تین روپئے۔

4. ریڑھ کی ہڈی؛ سمپادک—وشنو پربھاکر؛ پہلی بار 1952 صفحے 147؛ دام ایک روپیہ آٹھ آنہ۔

بھارت جین مہامنڈل؛ وردھا

5. جیون جوہری؛ لیکھک—رشبھ داس رانکا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 167؛ دام ایک روپیہ چار آنہ۔

6. سماج اور جیون؛ سمپادک—جمنا لال جین؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 114؛ دام ایک روپیہ۔

7. اُجول پروچن؛ سمپادک—رتن کمار جین؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 86؛ دام دس آنے۔

8. تتوارتھ سوتر؛ وویچن کرتا—پنڈت سکھ لال جی سنگھوی؛ دوسرا ایڈیشن؛ صفحے 410؛ دام—پانچ روپیہ آٹھ آنہ۔

9. آدرش وواہ ودھی؛ سمپادک—رشبھ داس رانکا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 28؛ دام پانچ آنے۔

10. پیارے راجہ بیٹا؛ لیکھک—رشبھ داس رانکا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 96؛ دام دس آنے۔

11. بدھ اور مہاویر؛ لیکھک—کشور لال گ مشروالا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 148؛ دام ایک روپیہ۔

12. منی بھدر؛ لیکھک—شری 'سشیل'؛ دوسرا ایڈیشن؛ صفحے 143؛ دام ایک روپیہ چار آنہ۔

13. دھرم اور سنسکرتی؛ سنکلن کرتا جمنا لال جین؛ ساہتیہ رتن؛ پہلی بار 1952؛ صفحے 143 دام سوا روپئے۔

14. گاندھی گورو؛ لیکھک—گوکل چند شرما؛ نکالنے والے—نویگ ساہتیہ پرکاشن؛ دلی؛ پہلی بار 1951؛ صفحے 112؛ دام ایک روپیہ۔

15. اشوک بن؛ لیکھک—گوکل چند شرما؛ ہندی پرکاشن مندر؛ الہ آباد؛ پہلی بار 1951؛ صفحے 176؛ دام ڈیڑھ روپیہ۔

16. شیطان؛ لیکھک خلیل جبران؛ انوادک—شری نریندر چودھری؛ پہلی بار 1952؛ صفحے 88؛ دام ایک روپیہ۔

انگریزی:

17. گاندھی جیز آٹو بائیو گرافی (ایبرجڈ) لیکھک—بھارتن کمارپا؛ نکالنے والے—نوجیون پبلشنگ ہاؤس؛ صفحے 294؛ دام دو روپیہ۔

18. ہند سوراج [illegible] لیکھک—ایم. کے. گاندھی؛ صفحے 172؛ دام دو روپیہ۔

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

...री.

16. अगर हिन्दुस्तान कम्यूनिस्ट हो गया तो दुनिया की आज़ादी ख़तरे में पड़ जायेगी—अमरीकी नायब ... सेक्रेटरी का ऐलान. उत्तर अटलांटिक दल में तुर्की और ईरान को शरीक होने की दावत.

17. वर्ल्ड बैंक और ईरान की बात चीत टूट गई. कोई समझौता न हो सका. आपसी मदद के लिये नेपाल हिन्दुस्तान में राज़ीनामा.

18. लन्दन में अमरीका, हालैंड और फ्रांस के विदेशी मिनिस्टरों की बैठक. उत्तर प्रदेश की लोकल बाडीज़ (म्यूनिसिपैलिटी वग़ैरा) के हिसाब-किताब में तरह तरह गड़बड़ियां, ग़बन व अन्धेर—जांच करने वालों की सालाना रिपोर्ट.

19. चीन ने ल्हासा में फ़ौजी हेडक्वार्टर क़ायम किये. नई दिल्ली में अनाज मिनिस्टरों की बैठक.

20. अंगरेज़ों ने भी एटम-बम बना लिया. आस्ट्रेलिया में उसका तजुर्बा किया जायेगा. यू. पी. में चावल के राशन में कटौती की जायेगी—यू. पी. सप्लाई मिनिस्टर का दिल्ली में बयान.

21. लिस्बन में उत्तर अटलांटिक दल की ताक़तों की मीटिंग. साढ़े पंद्रह लाख जवानों की फ़ौज खड़ी करने की तैयारी. ब्रिटेन के विदेश मंत्री ईडेन का मिस्री ... को ख़त. दिल्ली में बड़े बज़ार के ... ... की शुरुआत.

22. जापान में अमरीकी फ़ौज रखने पर टोकियो के ... में नाराज़गी. ट्यूनिस की मस्जिद में 15 औरतों ने हड़ताल शुरू कर दी. नई दिल्ली पार्लियामेन्ट में रेलवे बजट पेश—25 करोड़ की आमदनी. पूर्वी पाकिस्तान में भाषा के सवाल पर झगड़े—विद्यार्थियों पर गोली, ... मारे गये.

23. [illegible]

فروری ۔

16. اگر ہندستان کمیونسٹ ہوگیا تو دنیا کی آزادی خطرے میں پڑ جائے گی—امریکی نائب اسسٹنٹ سکریٹری کا اعلان ۔ اتر اٹلانٹک دل میں ترکی اور ایران کو شریک ہونے کی دعوت ۔

17. ورلڈ بینک اور ایران کی بات چیت ٹوٹ گئی‘ کوئی سمجھوتہ نہ ہوسکا ۔ آپسی مدد کے لئے نیپال و ہندستان میں راضی نامہ ۔

18. لندن میں امریکہ‘ ہالینڈ اور فرانس کے ودیشی منسٹروں کی بیٹھک ۔ اتر پردیش کی لوکل باڈیز (میونسپلٹی وغیرہ) کے حساب کتاب میں طرح طرح کی گڑبڑیاں غبن و اندھیر—جانچ کرنے والوں کی سالانہ رپورٹ ۔

19. چین نے لہاسہ میں فوجی ہیڈ کوارٹر قائم کئے ۔ نئی دلی میں اناج منسٹروں کی بیٹھک ۔

20. انگریزوں نے بھی ایٹم بم بنا لیا ۔ آسٹریلیا میں اس کا تجربہ کیا جائے گا ۔

یو ۔ پی میں چاول کے راشن میں کٹوتی کی جائے گی—یو ۔ پی سپلائی منسٹر کا دلی میں اعلان ۔

21. لسبن میں اتر اٹلانٹک دل کی طاقتوں کی میٹنگ ۔ ساڑھے پندرہ لاکھ جوانوں کی فوج کھڑی کرنے کی تیاری ۔ برطانیہ کے ودیش منتری ایڈن کا مصری ... کو خط ۔ دلی میں بڑے بزار کے ... ... کی شروعات ۔

22. جاپان میں امریکی فوج رکھنے پر ٹوکیو کے ... میں ناراضگی ۔ تیونس کی مسجد میں 15 عورتوں نے ہڑتال شروع کردی ۔ نئی دلی پارلیمنٹ میں ریلوے بجٹ پیش—25 کروڑ کی آمدنی ہوئی ۔ پاکستان میں بھاشا کے سوال پر جھگڑے—ودیارتھیوں پر گولی‘ ... مارے گئے ۔

23. [illegible]

24. [illegible] बड़े वज़ीर नेहरू ने कानपुर में मुलाज़िम बीमा स्कीम की शुरूआत की और सब लोगों से सहयोग की अपील की.

25. फ्रांस ने "उसूली तौर पर" तिवू'निस में जनता की खुद मुख्तारी का ख्याल मंज़ूर किया. चीनी बड़े वज़ीर चू-आंइ की शिकायत कि अमरीका ने कोरिया में "कीड़े" छोड़े. बम्बई में एक प्रेस कान्फ्रेंस के दौरान में अमरीकी राजदूत ने प्रसिद्ध गांधीवादी अर्थशास्त्री डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा को "बहुत बेवकूफ आदमी" कहा क्योंकि कुमारप्पाजी अमरीकी मदद को हिन्दुस्तान के गले में "फन्दा" मानते हैं.

26. अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट में लेबर मोरचा हार गया—चर्चिल की विदेशी नीति पास हो गई. जनता हिसाब किताब कमेटी ने पार्लियामेन्ट को रिपोर्ट पेश की—बहुत सी कमियों की शिकायत.

27. यूनो के सेक्रेट्री मिस्टर लाई ने कहा कि दुनिया की हालत पहले से बेहतर है. मरहूम अमरीकी राष्ट्रपति रूज़वेल्ट की बीवी मिसेज़ इलानेर रूज़वेल्ट नई दिल्ली पहुंची.

28. बड़े वज़ीर नेहरू ने नई दिल्ली में प्रेस कान्फ्रेंस की.

29. फ्रांसीसी सरकार ने इस्तीफ़ा दिया. पार्लियामेन्ट में फाइनेन्स बिल पेश किया गया. एहतियाती नज़रबन्दी कानून छै माह तक के लिये और बढ़ा दिया गया.

मार्च.

1. मिस्र में अली मेहर पाशा ने इस्तीफ़ा दिया. बादशाह फ़ारूक़ ने हिलाली पाशा से मिनिस्ट्री बनाने को कहा. हाँग कांग की हद के करीब अंगरेज़ों के खिलाफ़ बलवा.

2. बर्मा में च्यांग काई शेक की फ़ौजों में अमरीकी कम्पनियां खानगी जहाज़ों के ज़रिये सामान पहुँचा रही हैं. पंडित नेहरू ने सिन्दरी (बिहार) में अंगरेज़ी खाद बनाने का कारखाना खोला.

3. वर्ल्ड बैंक के सदर ब्लैक का एलान कि हिन्दुस्तान की हवा बाहरी पूंजी के लिये मुनासिब है. हिन्दु अमरीकी समझौते में प्लानिंग कमीशन सेन्ट्रल कमेटी का काम करेगा.

4. उत्तरी जापान में हवा चला और ज्वार आया. अफ़्रीका की नेशनल कांग्रेस ने बड़े वज़ीर डाक्टर मलान को लिखा कि वे अप्रैल से हम काले कानून तोड़ेंगे. 31 जनवरी तक हिन्दुस्तान में 13 लाख 28 हज़ार टन गेहूँ अमरीका से आ चुका. [illegible]

24. ہندستان میں [illegible] بڑے وزیر نہرو نے کانپور میں ملازم بیما اسکیم کی شروعات کی اور سب لوگوں سے سہیوگ کی اپیل کی۔

25. فرانس نے "اصولی طور پر" ٹیونس میں جنتا کی خود مختاری کا خیال منظور کیا۔ چینی بڑے وزیر چوں آئی کی شکایت کہ امریکہ نے کوریا میں "کیڑے" چھوڑے۔ بمبئی میں ایک پریس کانفرنس کے دوران میں امریکی راج دوت نے پرسدھ گاندھی وادی ارتھ شاستری ڈاکٹر جے۔ سی۔ کماریپا کو "بہت بیوقوف آدمی" کہا کیونکہ کماریپا جی امریکی مدد کو ہندستان کے گلے میں "پھندا" مانتے ہیں۔

26. انگریزی پارلیامنٹ میں لیبر مورچہ ہار گیا۔ چرچل کی ودیشی نیتی پاس ہو گئی۔ جنتا حساب کتاب کمیٹی نے پارلیامنٹ کو رپورٹ پیش کی۔ بہت سی خامیوں کی شکایت۔

27. یونو کے سکریٹری مسٹر لائی نے کہا کہ دنیا کی حالت پہلے سے بہتر ہے۔ مرحوم امریکی راشٹرپتی روزویلٹ کی بیوی مسز الینر روزویلٹ نئی دلی پہونچی۔

28. بڑے وزیر نہرو نے نئی دلی میں پریس کانفرنس کی۔

29. فرانسیسی سرکار نے استعفیٰ دیا۔ پارلیامنٹ میں فائننس بل پیش کیا گیا۔ احتیاطی نظر بندی قانون چھ ماہ کے لئے اور بڑھا دیا گیا۔

مارچ۔

1. مصر میں علی مہر پاشا نے استعفیٰ دیا۔ بادشاہ فاروق نے ہلالی پاشا سے منسٹری بنانے کو کہا۔ ہانگ کانگ کی حد کے قریب انگریزوں کے خلاف بلوا۔

2. برما میں چیانگ کائی شیک کی فوج میں امریکی کمپنیاں ذاتی جہازوں کے ذریعے سامان پہونچا رہی ہیں۔ پنڈت نہرو نے سندری (بہار) میں انگریزی کھاد بنانے کا کارخانہ کھولا۔

3. ورلڈ بینک کے صدر بلیک کا اعلان کہ ہندستان کی ہوا باہری پونجی کے لئے مناسب ہے۔ ہند امریکی سمجھوتے میں پلاننگ کمیشن سنٹرل کمیٹی کا کام کرے گا۔

4. اتری جاپان میں ہوا چلا اور جوار بھاٹا۔ افریقہ کی نیشنل کانگریس نے بڑے وزیر ڈاکٹر ملن کو لکھا کہ وہ اپریل سے ہم کالا قانون توڑیں گے۔ 31 جنوری تک ہندستان میں 13 لاکھ 28 ہزار ٹن گیہوں امریکہ سے آچکا۔ [illegible]

5. हिन्दुस्तान की पहली पार्लियामेन्ट खत्म हुई. नई पार्लियामेन्ट का पहला इजलास मई में होगा.

6. मास्को पार्लियामेन्ट में रूस का बजट पेश—फौज पर कुल बजट का केवल 23 फी सदी खर्च. ब्रिटेन के मजदूर दल वालों में ताना तानी.

7. अमरीकी राष्ट्रपति का बयान कि हिन्दुस्तान को हथियार से नहीं बल्कि आर्थिक और तकनीकी मदद ही कम्यूनिज्म से बचा सकते हैं. बम्बई के पास से 19640 तोला सोना एक ट्रक में पकड़ा गया.

8. इन्डोचीन में फ्रांसीसियों के वास्ते और ज्यादा अमरीकी मदद चाहिये—ट्रूमन.

9. लोक राज के नाकामयाब होने पर कम्यूनिज्म आ जायेगा—मिसेज रूजवेल्ट. राष्ट्र सीमा के अकाल-ग्रस्त इलाके में फूड मिनिस्टर मुन्शी का दौरा. सरकार चीजों के भाव पर निगाह लगातार रखे है—इन्डस्ट्री मिनिस्टर मेहताब.

10. कम्यूनिस्टों को हमारी शर्तों के लिये मजबूर किया जावे—यूनो ट्रस डेलीगेट टर्नर ज्वाय का बयान. हिन्दुस्तान में पेन्सिलीन नाम की दवा बनाने का कारखाना खुला. सारे देश के रुई बाजार पर संकट.

11. कोरिया सुलह की बात चीत अटक गई. अंग्रेजी पार्लियामेन्ट में नया 'पौंड बचाऊ' बजट पेश. रूस ने जर्मनी के मामले में चार बड़ों की कान्फ्रेंस की तजवीज पेश की.

12. लड़ाई का खतरा कम होता जा रहा है—मार्शल टीटो. ट्रावनकोर कोचीन में कांग्रेस मिनिस्ट्री बन गई.

13. हिन्दुस्तान को अमरीकी मदद की सख्त जरूरत—अमरीकी सेक्रेटरी ऐचीसन का बयान.

14. विश्व आर्थिक कान्फ्रेंस में रूसी नुमायन्दे ने अमरीका पर "कीड़े" फेंकने का इलजाम लगाया. लखनऊ की असेम्बली में बजट पेश किया गया.

15. मिस्री बड़े वजीर ने वफद पार्टी पर "बगावत भड़काने" का इलजाम लगाया. मूँगफली, अनाज वगैरा पर से सरकार ने कन्ट्रोल हटा दी. मद्रास बजट में काल मदद के लिये पांच करोड़ रुपये की तजवीज. बंगाल गवर्नर मुकर्जी सिर्फ पांच सौ रुपया माहवार तनखा लेंगे.

5. هندستان کی پہلی پارلیامنٹ ختم ہوئی۔ نئی پارلیامنٹ کا پہلا اجلاس مئی میں ہوگا۔

6. ماسکو پارلیامنٹ میں روس کا بجٹ پیش— فوج پر کل بجٹ کا کیول 23 فی صدی خرچ۔ برطانیہ کے مزدور دل والوں میں تناتنی۔

7. امریکی راج پتی کا اعلان کہ هندستان کو ہتھیار سے نہیں بلکہ آرتھک اور تکنیکی مدد ہی کمیونزم سے بچا سکتے ہیں۔ بمبئی کے پاس سے 19640 تولہ سونا ایک ٹرک میں پکڑا گیا۔

8. انڈوچین میں فرانسیسیوں کے واسطے اور زیادہ امریکی مدد چاہئے— ٹرومین۔

9. لوک راج کے ناکامیاب ہونے پر کمیونزم آجائے گا— مسز روزویلٹ۔ راشٹر سیما کے اکال زدہ علاقے میں فوڈ منسٹر منشی کا دورہ۔ سرکار چیزوں کے بھاؤ پر نگاہ لگاتار رکھے ہے— انڈسٹری منسٹر مہتاب۔

10. کمیونسٹوں کو ہماری شرطوں کے لئے مجبور کیا جائے— یونو ٹرس ڈیلی گیٹ ٹرنر جوائے کا اعلان۔ هندستان میں پنسلین نام کی دوا بنانے کا کارخانہ کھلا۔ سارے دیش کی روئی بازار پر سنکٹ۔

11. کوریا صلح کی بات چیت اٹک گئی۔ انگریزی پارلیامنٹ میں 'نیا پونڈ بچاؤ' بجٹ پیش۔ روس نے جرمنی کے معاملے میں چار بڑوں کی کانفرنس کی تجویز پیش کی۔

12. لڑائی کا خطرہ کم ہوتا جا رہا ہے— مارشل ٹیٹو۔ ٹراونکور کوچین میں کانگریس منسٹری بن گئی۔

13. هندستان کو امریکی مدد کی سخت ضرورت ہے— امریکی سکریٹری ایچیسن کا اعلان۔

14. وشو آرتھک کانفرنس میں روسی نمائندے نے امریکہ پر "کیڑے" پھینکنے کا الزام لگایا۔ لکھنؤ کی اسمبلی میں بجٹ پیش کیا گیا۔

15. مصری بڑے وزیر نے وفد پارٹی پر "بغاوت بھڑکانے" کا الزام لگایا۔ مونگ پھلی، اناج وغیرہ پر سے سرکار نے کنٹرول ہٹا دی۔ مدراس بجٹ میں اکال مدد کے لئے پانچ کروڑ روپئے کی تجویز۔ بنگال کے گورنر مکرجی صرف پانچ سو روپیہ ماہوار تنخواہ لیں گے۔

हमारी राय / ہماری رائے

चुनाव और मुसलमान

जिसे पच्छिम की ज़बान में लोकराज या डिमाक्रेसी कहा जाता है उसकी बुनियाद में चुनाव है और चुनाव माने बहुगिनत का ज़बरदस्ती से कमगिनत के ऊपर अपना रंग व असर क़ायम करना और उसे अपना ताबेदार बनाना. मिसाल के लिये हमारे देश में अभी चुनाव हुये हैं. जहां जहां कांगरेस जीती वहां के लिये कहा गया कि लोकराज या डिमाक्रेसी की विजय हुई और जहां कांगरेस हारी वहां लोकराज की हार समझी गई. इसी तरह जिसने कांगरेस के लिये वोट दिया वह लोकराज का अलमबरदार समझा गया और जिसने कांगरेस के ख़िलाफ़ वोट दिया वह लोकराज का दुशमन, कम्यूनेस्ट, फ़िरक़ापरस्त या निकम्मा समझा गया.

अपनी इस राय की सफ़ाई में हम यू. पी. के शिक्षा मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी के उस बयान की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहते हैं, जिसमें उन्होंने यू. पी. के मुसलमानों से—ख़ासकर शहराती मुसलमानों से—अपनी शिकायत ज़ाहिर की है. उनको शिकायत है कि बनारस के ग़ैर-मोमिन सुन्नी मुसलमानों ने 'डटकर' कांगरेस के ख़िलाफ़ वोट दिया; उनको शिकायत है कि इलाहाबाद में मुसलमानों की ज़बरदस्त तादाद ने कांगरेसी हिन्दू के ख़िलाफ़ एक कम्युनिस्ट मुसलमान के हक़ में वोट दिया; उनको शिकायत है कि बरेली में एक हलक़े में जहां मुसलमान वोटर 40 की सदी थे उनमें से मुश्किल से एक तिहाई ने कांगरेसी हिन्दू के हक़ में वोट डाले. सम्पूर्णानन्द जी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि चुनाव से फ़िरक़ा वाराना ताल्लुक़ात पर चोट पहुंची है और इसमें एक खाई पड़ गई है जिसे पाटने की ज़रूरत है.

खाई कैसे पटे या सम्पूर्णानन्द जी के जैसे शब्द से वह कहां तक पाटी जा सकती है इसकी चर्चा तो हम आगे चल कर करेंगे. पहले हम यह जानना चाहते हैं कि [illegible]

چناؤ اور مسلمان

جسے پچھم کی زبان میں لوک راج یا ڈیماکریسی کہا جاتا ہے اس کی بنیاد میں چناؤ ہے اور چناؤ معنی بہوگنت کا زبردستی سے کم گنت کے اوپر اپنا رنگ و اثر قائم کرنا اور اسے اپنا تابعدار بنانا۔ مثال کے لئے ہمارے دیش میں ابھی چناؤ ہوئے ہیں۔ جہاں جہاں کانگریس جیتی وہاں کے لئے کہا گیا کہ لوک راج یا ڈیماکریسی کی جے ہوئی اور جہاں کانگریس ہاری وہاں لوک راج کی ہار سمجھی گئی۔ اسی طرح جس نے کانگریس کے لئے ووٹ دیا وہ لوک راج کا علمبردار سمجھا گیا اور جس نے کانگریس کے خلاف ووٹ دیا وہ لوک راج کا دشمن، کمیونسٹ، فرقہ پرست یا نکما سمجھا گیا۔

اپنی اس رائے کی صفائی میں ہم یو۔پی۔ کے شکشا منتری شری سمپورنانند جی کے اس بیان کی طرف دھیان دلانا چاہتے ہیں جس میں انہوں نے یو۔پی۔ کے مسلمانوں سے—خاصکر شہراتی مسلمانوں سے—اپنی شکایت ظاہر کی ہے۔ ان کو شکایت ہے کہ بنارس کے غیر مومن سنی مسلمانوں نے 'کس کر' کانگریس کے خلاف ووٹ دیا؛ ان کو شکایت ہے کہ الہ آباد میں مسلمانوں کی زبردست تعداد نے کانگریسی ہندو کے خلاف ایک کمیونسٹ مسلمان کے حق میں ووٹ دیا؛ ان کو شکایت ہے کہ بریلی میں ایک حلقے میں جہاں مسلمان ووٹر 40 فی صدی تھے ان میں سے مشکل سے ایک تہائی نے کانگریسی ہندو کے حق میں ووٹ ڈالے۔ سمپورنانند جی اس نتیجے پر پہنچے ہیں کہ چناؤ سے فرقہ وارانہ تعلقات پر چوٹ پہنچی ہے اور اس میں کھائی پڑ گئی ہے جسے پاٹنے کی ضرورت ہے۔

کھائی کیسے پٹے یا سمپورنانند جی کے جیسے [illegible] سے وہ کہاں تک پاٹی جا سکتی ہے اس کی چرچا تو ہم آگے چل کر کریں گے۔ پہلے ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ [illegible]

[illegible] मुसलमानों ने इस के ख़िलाफ़ वोट डाला था हिन्दुओं ने उनके हक़ में वोट डाला. मालूम कैसे हुआ ? हम जानना चाहते हैं कि क्या वोट गिनते वक़्त या गिनने के बाद हिन्दू मुसलमान के हिसाब से कोई तमीज़ की गई है या नहीं ? अगर की गई है तो किस के हुक्म से और किस क़ानून के मुताबिक़ और इसकी ख़बर खुले आम प्रेस को क्यों न दी गई ? हमारा ख़याल है कि सम्पूर्णानन्द जी के बयान से साफ़ शक पैदा होता है कि वोट गिनने में उस ग़ैर जानिबदारी और इन्साफ़ से काम नहीं लिया गया जो कि लोकराज या डिमॉक्रेसी का पहला तक़ाज़ा है.

इसके बाद हम सम्पूर्णानन्द जी की शिकायत पर आते हैं. हम जानना चाहते हैं कि उन्हें मुसलमानों से यह शिकायत क्यों है कि उन्होंने कांग्रेस के हक़ में वोट नहीं डाला. क्या सम्पूर्णानन्द जी यह समझते हैं कि पाकिस्तान बन जाने के बाद हिन्दुस्तान के मुसलमान की आज़ाद हस्ती ख़त्म हो गई और वह सिर्फ़ हिन्दू का भिखारी बन कर ही रह सकता है ? अगर यह नहीं, तो क्या वह यह समझते हैं कि हिन्दुस्तान में जितने मुसलमान ज़िन्दा हैं वह हुकूमत की बदौलत और मेहरबानी से और इसलिये उन्हें हुकूमत की हां में हां मिलाना चाहिये. अगर यह भी नहीं तो क्या सम्पूर्णानन्द जी यह समझते हैं कि हिन्दुस्तान के मुसलमान की ख़ैरियत इसी में है कि वह आंख बन्द करके कांग्रेस का साथ देता रहे और भले बुरे में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं करे ? किसी के दिल का हाल तो वही जानता है, पर अगर यह ख़याल किसी हिन्दू के दिल में बैठ रहे हैं तो हम कहेंगे वह हिन्दू नहीं है, अगर किसी कांग्रेसी के दिल में बैठ रहे हैं तो वह कांग्रेसी नहीं है और अगर किसी इन्सान के दिल में बैठ रहे हैं तो वह इन्सान नहीं है.

हम पूछते हैं कि किसी को क्या अख़्तियार है कि हम से दरयाफ़्त करे कि तुमने एक कांग्रेसी हिन्दू को वोट न देकर एक कम्यूनिस्ट मुसलमान को क्यों वोट दिया. हमने जिसे चाहा वोट दिया अपनी मरज़ी, अपनी तबियत, अपनी पसंद के मुताबिक़ वोट दिया और इसलिये दिया क्योंकि यह हमारा महज़ विधान से मिला हक़ नहीं बल्कि जन्म जात हक़ है. हम चाहे चीफ़ मिनिस्टर के हक़ में हैं या ख़िलाफ़ आप बीच में बोलने वाले कौन ? और अगर आप यह सवाल हमसे पूछते हैं और बीच में बोलते हैं तो आपका सैक्युलर बाना झूठा है, आपका चुनाव झूठा है, आपका लोकराज झूठा है, और उसके अलमबरदार लोकशाही के नहीं बल्कि फ़ासिज़्म के पुजारी हैं.

ऐसे [illegible] है कि [illegible], इसके

[illegible] نے اس کے خلاف ووٹ ڈالا ہندوؤں نے اُن کے حق میں ووٹ ڈالا۔ معلوم کیسے ہوا ؟ ہم جاننا چاہتے ہیں کہ کیا ووٹ گنتے وقت یا گننے کے بعد ہندو مسلمان کے لحاظ سے کوئی تمیز کی گئی ہے یا نہیں؟ اگر کی گئی ہے تو کس کے حکم سے اور کس قانون کے مطابق اور اس کی خبر کھلے عام پریس کو کیوں نہ دی گئی ؟ ہمارا خیال ہے کہ سمپورنانند جی کے بیان سے صاف شک پیدا ہوتا ہے کہ ووٹ گننے میں اس غیر جانبداری اور انصاف سے کام نہیں لیا گیا جو کہ لوک راج یا ڈیماکریسی کا پہلا تقاضہ ہے۔

اس کے بعد ہم سمپورنانند جی کی شکایت پر آتے ہیں۔ ہم جاننا چاہتے ہیں کہ انہیں مسلمانوں سے یہ شکایت کیوں ہے کہ انہوں نے کانگریس کے حق میں ووٹ نہیں ڈالا۔ کیا سمپورنانند جی یہ سمجھتے ہیں کہ پاکستان بن جانے کے بعد ہندوستان کے مسلمان کی آزاد ہستی ختم ہو گئی اور وہ صرف ہندو کا بھکاری ہو کر ہی رہ سکتا ہے ؟ اگر یہ نہیں تو کیا وہ یہ سمجھتے ہیں کہ ہندوستان میں جتنے مسلمان زندہ ہیں وہ حکومت کی بدولت اور مہربانی سے اور اس لئے انہیں حکومت کی ہاں میں ہاں ملانا چاہئے۔ اگر یہ بھی نہیں تو کیا سمپورنانند جی یہ سمجھتے ہیں کہ ہندوستان کے مسلمان کی خیریت اسی میں ہے کہ وہ آنکھ بند کر کے کانگریس کا ساتھ دیتا رہے اور بھلے برے میں ذرا بھی فرق نہیں کرے ؟ کسی کے دل کا حال تو وہی جانتا ہے، پر اگر یہ خیال کسی ہندو کے دل میں دبے رہے ہیں تو ہم کہیں گے وہ ہندو نہیں ہے، اگر کسی کانگریسی کے دل میں دبے رہے ہیں تو وہ کانگریسی نہیں ہے اور اگر کسی انسان کے دل میں دبے رہے ہیں تو وہ انسان نہیں ہے۔

ہم پوچھتے ہیں کہ کسی کو کیا اختیار ہے کہ ہم سے دریافت کرے کہ تم نے ایک کانگریسی ہندو کو ووٹ نہ دے کر ایک کمیونسٹ مسلمان کو کیوں ووٹ دیا۔ ہم نے جسے چاہا ووٹ دیا اپنی مرضی، اپنی طبیعت، اپنی پسند کے مطابق ووٹ دیا اور اس لئے دیا کیونکہ یہ ہمارا محض ودھان سے ملا حق نہیں بلکہ جنم جات حق ہے۔ ہم چاہے چیف منسٹر کے حق میں ہوں یا خلاف آپ بیچ میں بولنے والے کون ؟ اور اگر آپ یہ سوال ہم سے پوچھتے ہیں اور بیچ میں بولتے ہیں تو آپ کا سیکولر بانا جھوٹا ہے، آپ کا چناؤ جھوٹا ہے، آپ کا لوک راج جھوٹا ہے اور اس کے علمبردار لوک شاہی کے پجاری نہیں بلکہ فسطائیت کے پجاری ہیں۔

[illegible] محسوس ہوتا ہے کہ ایک بہت [illegible]

तजरबेकार और पहुँचे हुए नेता या मिनिस्टर [illegible] सम्पूर्णानन्द इस तरह की कीचड़ उछाल कर दूसरों के मुँह पर कालिख लगाते हैं. हमें कोई शुबा नहीं कि अगर इनका यह ढंग बना रहा या दूसरे मिनिस्टरों ने इनसे तालीम ली तो पंडित जवाहरलाल नेहरू के लोकराज या सेकुलर स्टेट के महल को गिराने में पहली चोट इन्हीं से पहुँचेगी. ऐसी हालत में कांग्रेस का फिरके बन्दी या जात-पांत पर अपनी हर बैठक में ठहराव लाना और पास करना कराना बेमाने हो जाता है. सेकुलर स्टेट का महल बनाने के लिये जवाहरलाल जैसे ऊपर से चुनाई करते जायेंगे तो श्री सम्पूर्णानन्द जैसे नीचे से ईंटें हटाते जायेंगे.

बाबू सम्पूर्णानन्द जी के बयान का निचोड़ यही है कि मुसलमानों को किसी तरह डरा धमकाकर उन्हें हमेशा के लिये कांग्रेस का ताबेदार बना लिया जावे. उनकी तमन्ना है कि आगे चुनावों में किसी को वोट कांग्रेस को मिले या न मिले कम से कम मुसलमान आंख बन्द करके सदा कांग्रेस की पेटी में ही अपनी पर्ची डालता रहे. कांग्रेस सदर और बड़े वज़ीर नेहरू का ध्यान हम इस वाक़ये की तरफ़ दिलाना चाहते हैं और उन्हें सोचना चाहिये कि क्या इस तरह के भेद भाव रखने वाला कोई शख्स किसी लोकराज या सेकुलर स्टेट में मिनिस्टर रहने के लायक है या नहीं ?

20. 3. 1952 —सुरेश रामभाई

यू. पी. सरकार और भूमिदान—

इधर कई महीने से विनोबा जी हमारे उत्तर प्रदेश में घूम रहे हैं उनकी अनोखी साधना लोगों के दिल में जगह कर रही है और उनका भूमिदान यह एक अहिंसक इन्क़लाब का निशान बनता जा रहा है.

हम बड़ी एहतियात से यह भी देख रहे हैं कि यू. पी. की कांग्रेस संस्था और कांग्रेस सरकार पर विनोबा जी की कामयाबी का क्या असर पड़ रहा है. हमें लगा कि विनोबा जी का इस तरह गांव गांव घूमने और बात की बात में लोगों से ज़मीनें ले लेने से कांग्रेस या सरकार (असली रूप से दोनों एक ही हैं और कोई फ़र्क़ की सूरत नहीं) को ऐसा महसूस होता है मानो उनके तले से ज़मीन निकलती जाती है. कौन नहीं जानता कि यू. पी. में ज़मींदारी खात्मा तहरीक 1937 से चल रही है पर पंद्रह बरस में जो काम सरकार पूरी ताक़त लगा कर भी न कर सकी वह विनोबा जी आसानी से करते चले जा रहे हैं. इस लिये आगे [illegible] विनोबा की यू. पी. सरकार से [illegible]

نہرو کا لوک راج [illegible]
سمپورنانند اس طرح کی کیچڑ اچھال کر دوسروں کے منہ پر کالکھ لگاتے ہیں۔ ہمیں کوئی شبہ نہیں کہ اگر ان کا یہ ڈھنگ بنا رہا یا دوسرے منسٹروں نے ان سے تعلیم لی تو پنڈت جواہر لال نہرو کے لوک راج یا سیکولر اسٹیٹ کے محل کو گرانے میں پہلی چوٹ انہیں سے پہونچےگی۔ ایسی حالت میں کانگریس کا فرقہ بندی یا جات پات پر اپنی ہر بیٹھک میں ٹھہراؤ لانا اور پاس کرنا کرانا بے معنی ہو جاتا ہے۔ سیکولر اسٹیٹ کا محل بنانے کے لئے جواہر لال جیسے اوپر سے چنائی کرتے جائیں گے تو شری سمپورنانند جیسے نیچے سے اینٹیں ہٹاتے جائیں گے۔

بابو سمپورنانند جی کے بیان کا نچوڑ یہی ہے کہ مسلمانوں کو کس طرح ڈرا دھمکا کر انہیں ہمیشہ کے لئے کانگریس کا تابعدار بنا لیا جائے۔ اُن کی تمنا ہے کہ آگے چناؤں میں کسی کا ووٹ کانگریس کو ملے یا نہ ملے کم سے کم مسلمان آنکھ بند کرکے صدا کانگریس کی پیٹی میں ہی اپنی پرچی ڈالتا رہے۔ کانگریس صدر اور بڑے وزیر نہرو کا دھیان ہم اس واقعہ کی طرف دلانا چاہتے ہیں اور انہیں سوچنا چاہئے کہ کیا اس طرح کے بھید بھاؤ رکھنے والا کوئی شخص کسی لوک راج یا سیکولر اسٹیٹ میں منسٹر رہنے کے لائق ہے یا نہیں؟

20 . 3 . 1952 —سریش رام بھائی

یو۔ پی۔ سرکار اور بھومی دان

ادھر کئی مہینے سے ونوبا جی ہمارے اتر پردیش میں گھوم رہے ہیں۔ ان کی انوکھی سادھنا لوگوں کے دل میں جگہ کر رہی ہے اور ان کا بھومی دان یہ ایک اہنسک انقلاب کا نشان بنتا جا رہا ہے۔

ہم بڑی احتیاط سے یہ بھی دیکھ رہے ہیں کہ یو پی کی کانگریس سنستھا اور کانگریس سرکار پر ونوبا جی کی کامیابی کا کیا اثر پڑ رہا ہے۔ ہمیں لگا کہ ونوبا جی کا اس طرح گاؤں گاؤں گھومنے اور بات کی بات میں لوگوں سے زمینیں لے لینے سے کانگریس یا سرکار (عملی روپ سے دونوں ایک ہی ہیں اور کوئی فرق کی صورت نہیں) کو ایسا محسوس ہوتا ہے مانو اس کے تلے سے زمین نکلتی جاتی ہے۔ کون نہیں جانتا کہ یو۔ پی۔ میں زمینداری خاتمہ تحریک 1937 سے چل رہی ہے پر پندرہ برس میں جو کام سرکار پوری طاقت لگا کر بھی نہ کر سکی وہ ونوبا جی آسانی سے کرتے چلے جا رہے ہیں۔ اس لئے [illegible]

[illegible] चुनौती [illegible] और जब बाबा ने दूसरी [illegible] बार को उन्होंने [illegible] में ऐलान किया कि मैं यू. पी. [से] पांच लाख एकड़ ले कर नहीं लूंगा तो सरकार के [सिर] पर और भी ज़बरदस्त प्रहार हो गई. मगर वह एकदम चुप रही.

पर धीरे धीरे उसने नीति में तब्दीली शुरू की. कांग्रेस वाले निजी रूप में भूदान यज्ञ का समर्थन करने लगे. इसके बाद प्रदेश कांग्रेस कमेटी से ज़िला कमेटियों को ख़त जारी हुए कि विनोबा जी का मदद कीजिये. फिर अब आज की ताज़ी ख़बर है जो हम नीचे दे रहे हैं—

"लखनऊ, अप्रैल 4 उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश की 36,000 गांव पंचायतों को हिदायत दी है कि पांच एकड़ फी गांव ज़मीन जमा करके आचार्य विनोबा भावे के "भूमिदान यज्ञ" में मदद करें.

"30 मार्च से एक पखवाड़ा उत्तर प्रदेश में मनाया जा रहा है ताकि बे ज़मीन वाले मज़दूरों में बांटने के लिये पांच लाख एकड़ ज़मीन मिल जावे.

"पख वाड़े के ख़त्म होने पर यह ज़मीन बनारस के पास जो सेवापुरी आश्रम है वहां पर आचार्य विनोबा भावे को भेंट दी जावेगी"

(अमृत बाज़ार पत्रिका 5 अप्रैल)

यू. पी. सरकार का यह फ़र्मान क्या मान रखता है ? संक्षेप में कहें तो—

1. दुनिया को दिखाना कि इस सरकार को महात्मा गांधी या विनोबाजी के उसूलों में कितना गहरा विश्वास है.

2. भूमिदान यज्ञ की कामयाबी का सेहरा अपने सिर पर बांधना.

3. भूमिदान यज्ञ के नाम पर पंचायतों को अपनी कठपुतली बना कर निकम्मा कर देना.

4. महात्मा गांधी या विनोबा जी के नाम पर गांव वालों से ज़बरदस्ती ज़मीन लेना और जो न दे उसके साथ ख़ूब ज़्यादती करना..............

5. रचनात्मक कार्य कर्ताओं को बता देना कि तुम किसी मतलब के नहीं हो और सरकार के बिना कुछ नहीं कर सकते.

6. विनोबा जी पर अहसान कि उनका संकल्प पूरा करने में कितनी भारी मदद सरकार ने दी.

7. इस तरह गांव वालों, कार्य कर्ताओं और सब पर रंग जमा कर अपनी मनमानी करते रहना.

मनमानी करते रहने से हमारा मतलब है हर बड़ा [illegible] और [illegible] करना कि [illegible] लिए जावें,

[illegible] بلکل چپ رہی ہیں ۔ اور جب پہلی دوسری [illegible] کو نہوں نے متھرا میں اعلان کیا کہ میں یو ۔ پی ۔ سے پانچ لاکھ ایکڑ سے کم نہیں لونگا تو سرکار کے سر پر اور بھی زبردست سوار ہوگئی۔ مگر وہ ایکدم چپ رہی ۔

پر دھیرے دھیرے اس نے نیتی میں تبدیلی شروع کی ۔ کانگریس والے نجی روپ میں بھودان یگیہ کا سمرتھن کرنے لگے ۔ اس کے بعد پردیش کانگریس کمیٹی سے ضلع کمیٹیوں کو خط جاری ہوئے کہ ونوبا جی کی مدد کیجئے ۔ پھر اب آج کی ایک تازی خبر ہے جو ہم نیچے دے رہے ہیں ۔

" لکھنؤ' اپریل 4 اتر پردیش سرکار نے پردیش کی 36,000 گاؤں پنچایتوں کو ہدایت دی ہے کہ پانچ ایکڑ فی گاؤں زمین جمع کر کے آچاریہ ونوبا بھاوے کے " بھومی یگیہ " میں مدد دیں ۔

" 30 مارچ سے ایک پکھواڑا اتر پردیش میں منایا جا رہا ہے تا کہ بے زمین والے مزدوروں میں بانٹنے کے لئے پانچ لاکھ ایکڑ زمین مل جائے ۔

" پکھواڑے کے ختم ہونے پر یہ زمین بنارس کے پاس جو سیواپوری اشرم ہے وہاں پر آچاریہ ونوبا بھاوے کو بھینٹ دی جائیگی ۔"

(امرت بازار پتریکا—5 اپریل)

یو ۔ پی ۔ سرکار کا یہ فرمان کیا معنی رکھتا ہے ؟ سنکشیپ میں کہیں تو —

1. دنیا کو دکھانا کہ اس سرکار کو مہاتما گاندھی یا ونوبا جی کے اصولوں میں کتنا گہرا وشواس ہے ۔

2. بھومی دان یگیہ کی کامیابی کا سہرا اپنے سر پر باندھنا ۔

3. بھومی دان یگیہ کے نام پر پنچایتوں کو اپنی کٹھ پتلی بنا کر نکما کر دینا ۔

4. مہاتما گاندھی یا ونوبا جی کے نام پر گاؤں والوں سے زبردستی زمین لینا اور جو نہ دے اس کے ساتھ خوب زیادتی کرنا ......

5. رچناتمک کاریہ کرتاؤں کو بتا دینا کہ تم کسی مطلب کے نہیں ہو اور سرکار کے بنا کچھ نہیں کر سکتے ۔

6. ونوبا جی پر احسان کہ ان کا سنکلپ پورا کرنے میں کتنی بھاری مدد سرکار نے دی ۔

7. اس طرح گاؤں والوں کاریہ کرتاؤں اور سب پر رنگ جما کر اپنی من مانی کرتے رہنا ۔

من مانی کرتے رہنے سے ہمارا مطلب ہے ہر وہ [illegible] اور اس طرح کرنا کہ گاؤں سب [illegible]

फौज वाले झगड़े हो जावें. अगर यू. पी. सरकार भी गांधी वाले प्यारे होते, 'अगर उसे महात्मा गांधी या विनोबा जी के उसूलों में विश्वास होता तो उसका फ़र्ज़ था कि 'भूदान यज्ञ' में हाथ बंटाने का ढोंग न रच के नीचे लिखे काम करती—

1. सूबे के अन्दर मिल के कपड़े की जगह खादी का प्रचार करती और हर सरकारी मुलाज़िम को खादी पहनवाता.

2. क़ुदरती इलाज के साधन जमा कर देती और जान-लेवा बीमारी-फैलाऊ अस्पताल या डाक्टर न बढ़ाती;

3. न्याय के सीधे सादे रास्ते क़ायम करके हाईकोर्ट और अदालतें बन्द करती जिन्हें महात्मा जी ने गुलामी की बेड़ियाँ कहा है.

4. अंगरेज़ी राज के नौकर उपजाऊ स्कूल कालिज यूनिवर्सिटी बन्द करके नई तालीम के मदरसे या विद्यालय खुलवाती और सूबे के पढ़ुवा लड़के लड़कियों के दिल के अन्दर काम करने की मुहब्बत व इज़्ज़त पैदा करती.

5. हिन्दुस्तानी (हिन्दी और उर्दू दोनों लिखावटों) का प्रचार करके हिन्दू-मुसलमान को एक दूसरे के नज़दीक लाती और लोगों के दिल को हरा भरा बनाती.

6. मिनिस्टरों की तलब व बंगले व भत्ते मोटे मोटे न रख कर पाँच सौ की हद बना देती.

7. झगड़े बदअमनी की हालत में पुलिस फ़ौज की बजाये शान्ति के साधन अपनाती वग़ैरा वग़ैरा.

लेकिन इतना करना तो दूर, इस यू. पी. सरकार ने अमरीका से एक एक्सपर्ट बुला कर अपने गांवोंका सत्यानाश करवाना शुरू कर दिया, ट्रैक्टर चलवा रही है, अंगरेज़ी नाच करवा रही है, हर बात में विदेश की नक़ल कर रही है—यहां तक कि माताओं-बेटियों को क़रीब क़रीब नंगा करके उनकी ख़ूबसूरती मैच भी कराने लगी।

कहां यह सब प्यारे प्यारे काम और कहां भूदान यज्ञ के लिये यह फ़रमान! इसी को कहते हैं हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और.

फिर अगर सरकार को भूदान करना ही है तो इस तरह सरकारी एलान निकाल कर हुकूमत की मशीनरी के ज़रिये ज़मीन लेना कहां का न्याय है? अगर यूं ज़बरदस्ती ज़मीन लेना हिंसा नहीं है और इन्साफ़ है तो फिर यू. पी. के [illegible] लाट साहब का लड़ाई में चन्दा जमा करना अहिंसा और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ था और क्यों पाप समझा जाता था? साफ़ है कि इस तरह फ़रमानों के डर से ज़मीनें छीनना हिंसा है, और अत्याचार है.

یوں والے پیارے ہوتے، اگر اسے مہاتما گاندھی یا ونوبا جی کے اصولوں میں وشواس ہوتا تو اس کا فرض تھا کہ 'بھو دان یگیہ' میں ہاتھ بٹانے کا ڈھونگ نہ رچ کے نیچے لکھے کام کرتی—

1. صوبہ کے اندر مل کے کپڑے کی جگہ کھادی کا پرچار کرتی اور ہر سرکاری ملازم کو کھادی پہنواتی۔

2. قدرتی علاج کے سادھن جمع کر دیتی اور جان لیوا بیماری پھیلاؤ اسپتال یا ڈاکٹر نہ بڑھاتی۔

3. نیائے کے سیدھے سادے راستے قائم کرکے ہائی کورٹ اور عدالتیں بند کرتی جنہیں مہاتما جی نے غلامی کی بیڑیاں کہا ہے۔

4. انگریزی راج کے نوکر اپجاؤ اسکول کالج یونیورسٹی بند کر کے نئی تعلیم کے مدرسے یا ودیالے کھلواتی اور صوبے کے پڑھوا لڑکے لڑکیوں کے دل کے اندر کام کرنے کی محبت و عزت پیدا کرتی۔

5. ہندستانی (ہندی اور اردو دونوں لکھاوٹوں) کا پرچار کر کے ہندو مسلمان کو ایک دوسرے کے نزدیک لاتی اور لوگوں کے دل کو ہرا بھرا بناتی۔

6. منسٹروں کی طلب و بنگلے و بھتے موٹے موٹے نہ رکھکر پانچ سو کی حد بنا دیتی۔

7. جھگڑے بدامنی کی حالت میں پولیس فوج کی بجائے شانتی کے سادھن اپناتی وغیرہ وغیرہ۔

لیکن اتنا کرنا تو دور، اس یو پی سرکار نے امریکہ سے ایکسپرٹ بلا کر اپنے گاؤں کا ستیاناس کروانا شروع کر دیا، ٹریکٹر چلوا رہی ہے، انگریزی ناچ کروا رہی ہے، ہر چیز میں ودیش کی نقل کر رہی ہے—یہاں تک کہ ماتاؤں بیٹیوں کو قریب قریب ننگا کر کے ان کی خوبصورتی میچ بھی کرانے لگی!

کہاں یہ سب پیارے پیارے کام اور کہاں بھودان یگیہ کے لئے یہ فرمان! اسی کو کہتے ہیں ہاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور۔

پھر اگر سرکار کو بھودان کرنا ہی ہے تو اس طرح سرکاری اعلان نکال کر حکومت کی مشینری کے ذریعے زمین لینا کہاں کا نیائے ہے؟ اگر یوں زبردستی زمین لینا ہنسا نہیں ہے اور انصاف ہے تو پھر یو پی کے [illegible] لاٹ صاحب کا لڑائی میں چندہ جمع کرنا اہنسا اور انصاف کے خلاف تھا اور کیوں پاپ سمجھی جاتی تھی۔ صاف ہے کہ اس طرح فرمانوں کے ڈر سے زمینیں چھیننا ہنسا ہے اور اتیاچار ہے۔

[illegible] यह जानना चाहते हैं कि क्या अन्य सरकार से इस तरह की मदद लेना जरूरी है, और क्या वह इसी तरह और जगह भी सरकारों की मदद कबूल करके पांच करोड़ एकड़ जमीन जमा करना चाहते हैं ? क्या इस तरह जमीनें जमा करके वह देश के अन्दर अहिंसक इन्किलाब का वातावरण पैदा कर सकेंगे और अपने अनेक सवालों को सही ढंग से हल करना सीख जायेंगे ?

हम यू. पी. सरकार को भी खबरदार कर देना चाहते हैं अगर उसने दो घोड़ों पर सवारी जारी रखी—एक तरफ से देशी विदेशी पूंजीपतियों और एक्सपर्टों के सहारे गावों का 'प्लानिंग' करके देहाती धंधों को कुचल देना और दूसरी तरफ से फरमान निकाल कर गरीबों दुखियों से जबरदस्ती जमीनें लेकर भू दान यज्ञ में आहुति चढ़ाना—तो उसकी हालत सांप-छछूंदर जैसी हुए बिना न रहेगी.

5. 4. 1932 —सुरेश रामभाई

खूबसूरती मेच—एक कलंक

पिछली तीसरी अप्रैल को बम्बई में एक वह चीज हुई जो देश के लिये निहायत शर्म की बात है. अखबारों में वह इस तरह छपी है—

"बम्बई, अप्रैल 3. 23 बरस वाली कलकत्ते की श्रीमती, इन्द्राणी रहमान एक खूबसूरती मेच में 'मिस इण्डिया' चुनी गईं .....अब यह 'मिस इण्डिया' कैलीफोर्निया (अमरीका) जायेंगी जहां 22 जून से होने वाली "मिस यूनिवर्स" मेच में शरीक होंगी.

"आज मेच के पहले फूलों की गाड़ें निकाली गईं. सुन्दरियां खुली मोटर में ब्रेबोर्न स्टेडियम में घुमाई गईं. वहां फौज और पुलिस के बाजे बज रहे थे और दस हजार की भीड़ थी.

"स्टेडियम के बाहर कुछ लोगों ने इसके खिलाफ प्रदर्शन किया. उनके हाथों में तख्ते थे जिन पर कुछ लिखा था, उनमें से एक पर था—'भारत मिस इण्डिया' नहीं चाहता."

"श्रीमती रहमान के सर पर 'मिस इण्डिया' का ताज कांग्रेस के सदर और पिछले बम्बई मेयर पाटिल साहब ने पहनाया........"

मेच में कुल दस बहनें शरीक थीं....."

बम्बई के इस बेशर्मी के तमाशे को "हिन्दुस्तान की बहुत अनोखी चीज" बताया गया है. इसके लिये हमें उन मासूम दस बहनों से कोई शिकायत नहीं है. वह बेचारी मासूम बहनें हैं जिन्हें यह नहीं मालूम कि इस मेच में शरीक होकर वह किन ताकतों का शिकार बनी हैं. न उन्हें यह मालूम कि इससे देश की इज्जत कैसे गिरती है.

[illegible] یہ جاننا چاہتے ہیں کہ کیا انہیں سرکار سے اس طرح کی مدد لینا منظور ہے؟ اور کیا وہ اسی طرح اور جگہ بھی سرکاروں کی مدد قبول کر کے پانچ کروڑ ایکڑ زمین جمع کرنا چاہتے ہیں ؟ کیا اس طرح زمین جمع کر کے وہ دیش کے اندر اہنسک انقلاب کا واتاورن پیدا کر سکیں گے اور اپنے انیک سوالوں کو صحیح ڈھنگ سے حل کرنا سیکھ جائیں گے ؟

ہم یوپی سرکار کو بھی خبردار کر دینا چاہتے ہیں اگر اس نے دو گھوڑوں پر سواری جاری رکھی—ایک طرف سے دیشی ودیشی پونجی پتیوں اور ایکسپرٹوں کے سہارے گاؤں کا ' پلاننگ ' کر کے دیہاتی دھندوں کو کچل دینا اور دوسری طرف سے فرمان نکال کر غریبوں دکھیوں سے زبردستی زمینیں لے کر بھودان یگیہ میں آہوتی چڑھانا—تو اس کی حالت سانپ چھچھوندر جیسی ہوئے بنا نہ رہے گی .

5-4-1952 —سریش رام بھائی

خوبصورتی میچ—ایک کلنک

پچھلی تیسری اپریل کو بمبئی میں ایک وہ چیز ہوئی جو دیش کے لئے نہایت شرم کی بات ہے. اخباروں میں وہ اس طرح چھپی ہے—

"بمبئی، اپریل 3 . 23 برس والی کلکتے کی شریمتی اندرانی رحمان ایک خوبصورتی میچ میں 'مس انڈیا' چنی گئیں.........اب یہ 'مس انڈیا' کیلیفورنیا (امریکہ) جائیں گی جہاں 22 جون سے ہونے والی "مس یونیورس" میچ میں شریک ہونگی .

"آج میچ سے پہلے پھولوں کی گاڑیں نکالی گئیں. سندریاں کھلی موٹر میں بریبورن اسٹیڈیم میں گھمائی گئیں . جہاں فوج اور پولیس کے باجے بج رہے تھے اور دس ہزار کی بھیڑ تھی.

"اسٹیڈیم کے باہر کچھ لوگوں نے اس کے خلاف مظاہرہ کیا . ان کے ہاتھوں میں تختے تھے جن پر کچھ لکھا تھا . ان میں سے ایک پر تھا—"بھارت 'مس انڈیا' نہیں چاہتا."

شریمتی رحمان کے سر پر 'مس انڈیا' تاج بمبئی کانگریس کے صدر اور پرانے بمبئی میئر پاٹل صاحب نے پہنایا.......

" میچ میں کل دس بہنیں شریک تھیں..... "

" بمبئی کے اس بے شرمی کے تماشے کو "ہندستان کی بہت انوکھی چیز" بتایا گیا ہے . اس کے لئے ہمیں ان معصوم دس بہنوں سے کوئی شکایت نہیں ہے . وہ بیچاری معصوم بہنیں ہیں جنہیں یہ نہیں معلوم کہ اس میچ میں شریک ہو کر وہ کن طاقتوں کا شکار بنی ہیں . نہ انہیں یہ معلوم کہ اس سے دیش کی عزت گرتی ہے .

पर [illegible] होती है जब लेडी [illegible] रामा राव जैसी बुजुर्ग यह कहे कि हिन्दुस्तान वाली को ही 'मिस यूनीवर्स' का दर्जा मिलना चाहिये क्योंकि हिन्दुस्तानी औरतों की अदा और खूबसूरती सदियों से सारी दुनिया ने कबूल की है और उसे लाजवाब समझा गया है. लेडी रामा राव ने यहां तक कहा कि जिसे हमने 'मिस इन्डिया' चुना है वह हिन्दुस्तान की कलचर और परम्परा की सच्ची नुमाइन्दा साबित होगी और जिस मकसद से हमारी कमेटी 'मिस इन्डिया' को 'मिस यूनिवर्स' मैच के लिये भेजना चाहती है वह मकसद पूरा होगा.

यह शब्द किसी फैशन परस्त अमरीकी या अंगरेज मेम के नहीं हैं बल्कि आल इन्डिया वीमेन्स कान्फ्रेंस की पिछले सद्र के. लेडी रामा राव और उनकी बिरादरी की बहनें अपनी ही दुनिया में आनन्द करती हैं जिनके और दूसरी बहनों के बीच में चीन के जैसी मोटी दीवार है. लेडी रामा राव का कोई वास्ता इन बहनों से नहीं जो यह भी नहीं जानतीं कि भर पेट खाना क्या होता है या धोती का एक जोड़ा किसे कहते हैं. लेडी रामा राव या उनकी बिरादरी वाली खूबसूरती मैच कराने वाली बहनें उनको फूहड़, बेवकूफ, देहाती और नासमझ भले कह लें और मज़ाक बना लें पर हमारी देहाती बहनें जानती हैं और सही जानती हैं कि खूबसूरती बदन के नाप से और बाहर की दिखावट से नहीं आंकी जा सकती बल्कि यह अन्दर दिल की और चालचलन की चीज है. यह देहाती बहनें जानती हैं कि गोरे चाम का मतलब हमेशा गोरा काम नहीं होता और लेडी रामा राव की बिरादरी से वे लाखों दर्जे अच्छी हैं, उस सजी धजी, पढ़ी लिखी बिरादरी से जिनको घंटों लगते हैं अपना रूप बनाने में और जिसे क्या भूख, क्या नींद, क्या सच्चा जीवन, कुछ भी असल में नसीब नहीं होता. लेडी रामा राव ने पोथियां पढ़ी हैं पर इन देहातियों ने जीवन की पोथी पढ़ी है और इसलिये वह समझती हैं कि असली खूबसूरती क्या है.

खूबसूरती के इन बेहूदाई भरे तमाशों में हाई कोर्ट के जज, नये मिनिस्टर, पुराने मिनिस्टर, रईस वगैरा किसी न किसी रूप में शरीक हुए हैं. हम यह मानने से इनकार करते हैं कि इन बहनों की तरह यह भी भोले भाले हैं और यह नहीं समझते कि इन मैचों के पीछे जो ताकतें काम कर रही हैं उनका असली मन्शा क्या है. कौन नहीं जानता कि इस खूबसूरती मैच को कराने में तीन अमरीकी व्योपारी कारखानों और एक हिन्दुस्तानी कारखाने का बड़ा हाथ है ? क्या यह कारखाने वाले अपनी जेब से पैसा खर्च करेंगे ? क्या यह मैच उनके लिये इश्तिहार

[illegible] جب لیڈی [illegible] راما راؤ جیسی بزرگ یہ کہیں کہ ہندستان والی کو ہی 'مس یونیورس' کا درجہ ملنا چاہئے کیونکہ ہندستانی عورتوں کی ادا اور خوبصورتی صدیوں سے ساری دنیا نے قبول کی ہے اور اسے لاجواب سمجھا گیا ہے. لیکن راما راؤ نے یہاں تک کہا کہ جسے ہم نے 'مس انڈیا' چنا ہے وہ ہندستان کی کلچر اور پرمپرا کی سچی نمائندہ ثابت ہوگی اور جس مقصد سے ہماری کمیٹی 'مس انڈیا' کو 'مس یونیورس' میچ کے لئے بھیجنا چاہتی ہے وہ مقصد پورا ہوگا.

یہ لفظ کسی فیشن پرست امریکی یا انگریز میم کے نہیں ہے بلکہ آل انڈیا ویمنس کانفرنس کی پچھلے صدر کے. لیکن راما راؤ اور ان کی برادری کی بہنیں اپنی ہی دنیا میں آنند کرتی ہیں جن کے اور دوسری بہنوں کے بیچ میں چین کے جیسی موٹی دیوار ہے. لیڈی راما راؤ کا کوئی واسطہ ان بہنوں سے نہیں جو یہ بھی نہیں جانتیں کہ بھر پیٹ کھانا کیا ہوتا ہے یا دھوتی کا ایک جوڑا کسے کہتے ہیں. لیکن راما راؤ یا ان کی برادری والی خوبصورتی میچ کرانے والی بہنیں ان کو 'پھوہڑ' 'بیوقوف' دیہاتی اور ناسمجھ بھلے کہ لیں اور مذاق بنالیں پر ہماری دیہاتی بہنیں جانتی ہیں اور صحیح جانتی ہیں کہ خوبصورتی بدن کے ناپ سے اور باہر کی دکھاوٹ سے نہیں آنکی جاسکتی بلکہ وہ اندر دل کی اور چال چلن کی چیز ہے. یہ دیہاتی بہنیں جانتی ہیں کہ گورے چام کا مطلب ہمیشہ گورا کام نہیں ہوتا اور لیڈی راما راؤ کی برادری سے وہ لاکھوں درجہ اچھی ہیں، اس سجی دھجی پڑھی لکھی برادری سے جس کو گھنٹوں لگتے ہیں اپنا روپ بنانے میں اور جسے کیا بھوک، کیا نیند، کیا سچا جیون کچھ بھی اصل میں نصیب نہیں ہوتا. لیکن راما راؤ نے پوتھیاں پڑھی ہیں پر ان دیہاتیوں نے جیون کی پوتھی پڑھی ہے اور اسلئے وہ سمجھتی ہیں کہ اصلی خوبصورتی کیا ہے.

خوبصورتی کے ان بیہودگی بھرے تماشوں میں ہائی کورٹ کے جج، نئے منسٹر، پرانے منسٹر، رئیس وغیرہ کسی نہ کسی روپ میں شریک ہوئے ہیں. ہم یہ ماننے سے انکار کرتے ہیں کہ ان بہنوں کی طرح یہ بھی بھولے بھالے ہیں اور یہ نہیں سمجھتے کہ ان میچوں کے پیچھے جو طاقتیں کام کر رہی ہیں ان کا اصلی منشا کیا ہے. کون نہیں جانتا کہ اس خوبصورتی میچ کو کرانے میں تین امریکی بیوپاری کارخانوں اور ایک ہندستانی کارخانے کا بڑا ہاتھ ہے؟ کیا یہ کارخانے والے اپنی جیب سے پیسہ خرچ کرینگے؟ کیا یہ میچ ان کے لئے اشتہار

नहीं है जिस में एक पैसा खर्च कर वह दो पैसा कमायेंगे ? व्योपारी हैं वाले, अपने मतलब के लिये वह सभी को क्यों न चोट दें—चाहे हाई कोर्ट का जज हो, या मिनिस्टर या विमेन्स कान्फ्रेंस की सदर या बम्बई कांग्रेस सदर या और कोई ?

हमें यकीन है कि 'मिस इण्डिया' मैच करा कर अमरीका ने हिन्दुस्तान की लाज नंगी करने की कोशिश की है. हमें डर है कि अमरीका वाले जानकर 'मिस इण्डिया' को 'मिस यूनिवर्स' मैच का पहला नहीं तो दूसरा इनाम जरूर देंगे ताकि यहां की मां बहनें अपनी लाज को ताक पर रख कर ज्यादा और ज़ियादा तादाद में शरीक हों और रहन सहन, वेश भूषा और खान-पान में अमरीका की रीस करें. फिर उनके सहारे से हिन्दुस्तान के बाजारों और घरों में अमरीका का माल पट जावे और देसी रोजगार धंधे चौपट हों ! इसीलिये हम कहते हैं कि खूबसूरती मैच हिन्दुस्तान की मां बहनों के माथे पर सुहाग का सिन्दूर नहीं बल्कि कलंक का टीका है. यह हमारे सबके लिये बहुत शरम की चीज़ है.

महात्मा गांधी अकसर कहा करते थे कि उन्हें योरप वालों की हकूमत से उतना डर नहीं है जितना उनके रहन सहन और उनकी गलत कलचर के इस देश में फैलने से. यह मिस इण्डिया मैच हमें तेजी के साथ हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तानी कलचर की उसी बरबादी की तरफ ले जा रहा है जिसकी तरफ महात्मा जी ने इशारा किया था. इसलिये अब भी हम चाहते हैं कि जो हुआ सो हुआ लेकिन अमरीका वाले मैच में हिन्दुस्तान से कोई बहन न भेजी जावे. लेडी रामा राव से हमारी अपील है कि जरा होश में आवें और याद करें कि किस मिट्टी में पाली पोसी गई हैं. बहन इन्द्राणी (मिस इण्डिया) से हमारी अपील है कि एक बार ठोकर खाई सो खाई, आइन्दा उसी गड्ढे में गिरने से क्या फायदा और कौन खूबसूरती की बात है ? सरकार से अपील करना बेकार सा लगता है क्योंकि अगर आज वह अमरीका का पैसा, अनाज वगैरा न खाती होती तो अमरीका वालों को यह हिम्मत नहीं हो सकती थी कि इस तरह हमारी मां बहनों को खुले आम, दस हजार मर्दों के सामने सरे बाजार घुमवाते !

यह हिन्दुस्तान की औरत जात की लाज का सवाल है, हिन्दुस्तान की लाज व आबरू का सवाल है. हमारी अर्ज है कि मिस यूनिवर्स मैच में हिन्दुस्तान से न कोई बहन शरीक हो, न उसे शरीक होते देखा चाहिये और यह जो तमाशा बम्बई व दूसरे बड़े शहरों में इस बार हुआ ऐसी कोई चीज़ इस देश में आइन्दा कभी नहीं होनी चाहिये.

4. 1952 —सुरेश रामभाई

[illegible]

نہیں ہے جس میں ایک پیسہ لگاکر وہ دو پیسہ کمائیں گے ؟ بیوپاری کے ناتے' اپنے مطلب کے لئے وہ سبھی کو کیوں نہ چوٹ لیں—چاہے ھائی کورٹ کا جج ہو' یا منسٹر یا ویمنس کانفرنس کی صدر یا بمبئی کانگریس صدر یا اور کوئی ؟

ھمیں یقین ہے کہ 'مس انڈیا' میچ کراکر امریکہ نے ھندستان کی لاج ننگی کرنے کی کوشش کی ہے . ھمیں ڈر ہے کہ امریکہ والے جان کر 'مس انڈیا' کو 'مس یونیورس' میچ کا پہلا نہیں تو دوسرا انعام ضرور دینگے تاکہ یہاں کی ماں بہنیں اپنی لاج کو طاق پر رکھ کر آئندہ اور زیادہ تعداد میں شریک ہوں اور رہن سہن' بھیس بھوشا اور کھان پان میں امریکہ کی ریس کریں . پھر اُن کے سہارے سے ھندستان کے بازاروں اور گھروں میں امریکہ کا مال پٹ جائے اور دیشی روزگار دھندے چوپٹ ہوں ! اِسی لئے ہم کہتے ہیں کہ خوبصورتی میچ ھندستان کی ماں بہنوں کے ماتھے پر سہاگ کا سندور نہیں بلکہ کلنک کا ٹیکہ ہے . یہ ھمارے سب کے لئے بہت شرم کی چیز ہے .

مہاتما گاندھی اکثر کہا کرتے تھے کہ اُنہیں یوروپ والوں کی حکومت سے اتنا ڈر نہیں ہے جتنا اُن کے رہن سہن اور اُن کی غلط کلچر کے اِس دیش میں پھیلنے سے . یہ مس انڈیا میچ ہمیں تیزی کے ساتھ ھندستان اور ھندستانی کلچر کی اُسی بربادی کی طرف لے جا رہا ہے جسکی طرف مہاتما جی نے اشارہ کیا تھا .

اس لئے اب بھی ہم چاہتے ہیں کہ جو ہوا سو ہوا لیکن امریکہ والے میچ میں ھندستان سے کوئی بہن نہ بھیجی جائے . لیڈی راما راؤ سے ھماری اپیل ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالی پوسی گئی ہیں . بہن اندرانی (مس انڈیا) سے ھماری اپیل ہے کہ ایک بار ٹھوکر کھائی سو کھائی' آئندہ اُسی گڈھے میں گرنے سے کیا فائدہ اور کون خوبصورتی کی بات ہے ؟ سرکار سے اپیل کرنا بیکار سا لگتا ہے کیونکہ اگر آج وہ امریکہ کا پیسہ' اناج وغیرہ نہ کھاتی ہوتی تو امریکہ والوں کی یہ ھمت نہیں ہوسکتی تھی کہ اِس طرح ھماری ماں بہنوں کو کھلے عام' دس ہزار مردوں کے سامنے سرے بازار گھمواتے !

یہ ھندستان کی عورت ذات کی لاج کا سوال ہے' ھندستان کی لاج و آبرو کا سوال ہے . ھماری عرض ہے کہ 'مس یونیورس' میچ میں ھندستان سے نہ کوئی بہن شریک ہو' نہ اُسے شریک ہوتے دیکھا چاہئے اور یہ جو تماشہ بمبئی و دوسرے بڑے شہروں میں اس بار ہوا ایسی کوئی چیز اس دیش میں آئندہ کبھی نہیں ہونی چاہئے .

—سریش رامبھائی 6. 4. 1952

सरकार और सहयोग

हाल के चुनाव के बाद से हमारे बड़े वज़ीर जवाहरलाल जी आये दिन अपीलें करते हैं कि देश की तरक़्क़ी के काम में सब लोग एक साथ जुट जायें. 24 फ़रवरी को कानपुर में मुलाज़िम बीमा स्कीम खोलते वक़्त उन्होंने कहा था कि "अगर समाज के सब हिस्से एक साथ मिलकर आगे क़दम बढ़ायें तो हम कामयाबी के साथ बड़ी बड़ी चीज़ें कर सकते हैं." 16 मार्च को पार्नेरा (गुजरात) नाम के गांव में एक रंग व दवाई फ़ैक्टरी (जिसमें अमरीकी पैसा भी लगा है) खोलते हुये उन्होंने कहा कि लोगों को देखना चाहिये कि "सरकार ने भी कुछ काम किया है" और उन लोगों के काम को "तबाह कुन" बताया जो "ख़ुर्दबीन से दूसरों के ऐब देखा करते हैं." फिर एक हफ़्ते के अन्दर ही कलकत्ते में, कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी में उन्होंने उन लोगों से अपील की जो पहले कांग्रेस में थे पर अब नहीं हैं. जवाहरलाल जी ने उनसे कहा कि देश को ख़ुशहाल बनाने के काम में हमारा साथ दीजिये. इसके बाद अप्रैल के शुरू में नांगल (पंजाब) में उन्होंने "पूरे छत्तीस करोड़ के आपसी सहयोग" की मांग की ताकि देश को बेहतरीन और ख़ुशनुमा बनाया जा सके.

ताज्जुब है कि जवाहरलाल जी जैसी हर दिल अज़ीज़ हस्ती अपीलें करती है पर हालत में [illegible] के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी असर नहीं पड़ता दीखता और जनता और सरकार के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है जिसकी तरफ़ अपनी चार साला रिपोर्ट में जवाहरलाल जी ने इशारा भी किया था. ज़रूरत इस बात की है कि इस खाई के कारणों पर ठंडे दिल से और ईमान के साथ विचार किया जावे, क्योंकि अगर यह खाई यूं ही बनी रहती है या बढ़ती रहती है तो इससे सरकार और जनता दोनों को नुक़सान है. सरकार को इस वजह से कि उसकी सारी मेहनत बेकार जायेगी और जनता को इस वजह से कि वह कहीं ज़्यादा बेदम और अपाहिज बन जायेगी.

जनता और सरकार के बीच सहयोग क्यों नहीं हो पा रहा है ? इसकी वजह केवल वह ऊंची तनख़ाहें और मोटे मोटे भत्ते ही नहीं हैं जो सन 1931 के कराची ठहराव को पैरों तले रौंद कर हमारे राष्ट्रपति और मिनिस्टर उड़ा रहे हैं. इसकी वजह केवल वह तानाशाह और मौक़ा परस्त नौकरशाही भी नहीं है जो अंगरेज़ों से हमें विरासत में मिली और आज भी ज्यों की त्यों चली जाती है. इसकी वजह केवल हमारे एम.एल. ए. या एम. पी. भी नहीं हैं जो सरकारी हुक्काम को मन लगा कर और आज़ादी के साथ काम नहीं करने देते. न इसकी वजह यही है कि

سرکار اور سہیوگ

حال کے چناؤ کے بعد سے ہمارے بڑے وزیر جواہر لال جی آئے دن اپیلیں کرتے ہیں کہ دیش کی ترقی کے کام میں سب لوگ ایک ساتھ جٹ جائیں ۔ 24 فروری کو کانپور میں ملازم بیما اسکیم کھولتے وقت انہوں نے کہا تھا کہ "اگر سماج کے سب حصے ایک ساتھ ملکر آگے قدم بڑھائیں تو ہم کامیابی کے ساتھ بڑی بڑی چیزیں کر سکتے ہیں ۔" 16 مارچ کو پارنیرا (گجرات) نام کے گاؤں میں ایک رنگ و دوائی فیکٹری (جس میں امریکی پیسہ بھی لگا ہے) کھولتے ہوئے انہوں نے کہا کہ لوگوں کو دیکھنا چاہئے کہ "سرکار نے بھی کچھ کام کیا ہے" اور ان لوگوں کے کام کو "تباہ کن" بتایا جو خوردبینی سے دوسروں کے عیب دیکھا کرتے ہیں ۔ پھر ایک ہفتے کے اندر ہی کلکتے میں، کل ہند کانگریس کمیٹی میں انہوں نے ان لوگوں سے اپیل کی جو پہلے کانگریس میں تھے ۔ پر اب نہیں ہیں ۔ جواہر لال جی نے ان سے کہا کہ دیش کو خوشحال بنانے کے کام میں ہمارا ساتھ دیجئے ۔ اس کے بعد اپریل کے شروع میں نانگل (پنجاب) میں انہوں نے "پورے چھتیس کروڑ کے آپسی سہیوگ" کی مانگ کی تاکہ دیش کو بہترین اور خوشنما بنایا جاسکے ۔

تعجب ہے کہ جواہر لال جی جیسی ہر دل عزیز ہستی اپیلیں کرتی ہے پر حالت میں [illegible] کے اوپر سفیدی برابر بھی اثر نہیں پڑتا دیکھتا اور جنتا اور سرکار کے بیچ کی کھائی بڑھتی ہی جا رہی ہے جس کی طرف اپنی چار سالہ رپورٹ میں جواہر لال جی نے اشارہ بھی کیا تھا ۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ اس کھائی کے کارنوں پر ٹھنڈے دل سے اور ایمان کے ساتھ وچار کیا جائے ۔ کیونکہ اگر یہ کھائی یوں ہی بنی رہتی ہے یا بڑھتی رہتی ہے تو اس سے سرکار اور جنتا دونوں کو نقصان ہے ۔ سرکار کو اس وجہ سے کہ اسکی ساری محنت بیکار جائیگی اور جنتا کو اس وجہ سے کہ وہ کہیں زیادہ بے دم اور اپاہج بن جائیگی ۔

جنتا اور سرکار کے بیچ سہیوگ کیوں نہیں ہو پا رہا ہے ؟ اسکی وجہ کیول وہ اونچی تنخواہیں اور موٹے بھتے ہی نہیں ہیں جو سن 1931 کے کراچی ٹھہراؤ کو پیروں تلے روند کر ہمارے راشٹرپتی اور منسٹر اڑا رہے ہیں اسکی وجہ کیول وہ تاناشاہ اور موقع پرست نوکر شاہی بھی نہیں ہے جو انگریزوں سے ہمیں وراثت میں ملی اور آج بھی جیوں کی تیوں چلی آتی ہے ۔ اس کی وجہ کیول ہمارے ایم. ایل. اے یا ایم. پی. بھی نہیں ہیں جو سرکاری حکام کو من لگا کر اور آزادی کے ساتھ کام نہیں [illegible]

हमारी नई सरकार के सामने अचानक नये नये सवाल जैसे शरणार्थी, कश्मीर वगैरह खड़े हो गये. और न हम यही कहते हैं कि इसकी वजह यह है कि अक्सर ऐसी हालत हमारे मन के मुताबिक नहीं थी. यह बातें भी कमो बेश इस खाई के बढ़ाने की जिम्मेदार रही हैं.

पर हमारी निगाह में इस खाई की एक और सबसे बड़ी वजह है—सरकार का जनता और जनता के सवालों की तरफ घमंड और लापरवाही का रुख. सरकार का पूरा रवैया तानाशाही और साहबी है. ज़ियादा ठोस भाषा में कहें, हमारी सरकार पूँजीवाद, कारखानेदारी और फ़ौजी बल में सोलह आने एतबार रखती है. हमारी सरकार पूंजीपतियों, कारखानेदार और फ़ौजी सरकार है. ग़ैर पूंजीवाद, गांववाद या विकेन्द्रीकरन और ग़ैर फ़ौजवाद से उसकी रूह फ़ना होती है इसीलिये सरकार की खूब पटती है बड़े बड़े पैसे वालों से, ऊंचे ऊंचे कारखाने वालों से और भारी भारी तोप बम वालों से. यही वजह है कि वह ऐसे कारखाने खड़े कर रही है जिनमें मसनूई (प्रि-फ़ैबरीकेटेड) मकान तैयार किये जायें न कि मिट्टी के झोंपड़े. हमारी सरकार को मिस्र और अमरीका की रुई से मिल में तैयार किया कपड़ा पसंद है न कि बुढ़िया के हाथ का कते सूत से जुलाहे का बुना खद्दर; चिपचिप, गन्दे गांव और झोपड़ी वाले शहर पसंद हैं न कि साफ़ सुथरे, स्वावलम्बी गांव; बदन नंगा किये, क्रीम पाउडर लगाये, सुन्दर दिखने वाली, खूबसूरती मैच में शरीक होने वाली फ़ैशन परस्त तितली या फ़िल्मी सितारा (जिनके साथ हाल में ही क्या राष्ट्रपति क्या बड़े वज़ीर ने तसवीरें खिंचवाई थीं) पसंद है न कि शर्मदार, लगन से काम करने वाली, मेहनती और सेवा मय देहाती बिटिया, वगैरा वगैरा. सरकार के इस दिवालिये रुझान की वजह से ही वह दिन दूने रात चौगुने मोहताज बनती जा रही है. विदेशी पूँजीपति व सरमायेदार की ओर उसे बाहर से भीख मांगना पड़ रही है अनाज की, मशीनों की, मामूली सामान की, पैसे की, एक्सपर्टों की वगैरा वगैरा. इस चक्कर में वह लगातार फंसती जा रही है और कोई चारा उसे नहीं दीखता. यह सिलसिला हमारी शान के खिलाफ है, हमारी कलचर के खिलाफ है और खिलाफ है हमारी परम्परा के.

ऐसी सूरत में हमारे बड़े वज़ीर जवाहरलाल यह आस लगाते हैं कि यह हिन्दुस्तान पूरी शान शौकत के साथ चमक उठेगा जिसके सपने महात्मा गांधी देखा करते थे और जिसे बनाने की उन्होंने कोशिश की. सच यह है कि जिस हिन्दुस्तान की तैयारी आज हमारी सरकार कर रही है वह उसका ठीक उलटा है जिसके सपने महात्मा गांधी देखा करते थे. उनके 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने कहा है कि "[illegible] असली [illegible] की गुलामी की हालत में है."

ہماری نئی سرکار کے سامنے اچانک نئے نئے سوال جیسے شرنارتھی، کشمیر وغیرہ کھڑے ہو گئے ۔ اور نہ ہم یہی کہتے ہیں کہ اسکی وجہ یہ ہے کہ اکثر ایسی حالت ہمارے من کے مطابق نہیں تھی ۔ یہ باتیں بھی کم و بیش اس کھائی کے بڑھانے کی ذمہ دار رہی ہیں ۔

پر ہماری نگاہ میں اس کھائی کی ایک اور سب سے بڑی وجہ ہے—سرکار کا جنتا اور جنتا کے سوالوں کی طرف گھمنڈ اور لاپرواہی کا رخ. سرکار کا پورا رویہ تاناشاہی اور صاحبی ہے ۔ زیادہ ٹھوس بھاشا میں کہیں، ہماری سرکار پونجی واد، کارخانے داری اور فوجی بل میں سولہ آنے اعتبار رکھتی ہے ۔ ہماری سرکار پونجی پتیوں، کارخانے دار اور فوجی سرکار ہے ۔ غیر پونجی واد، گاؤں واد یا وکیندریکرن اور غیر فوجواد سے اس کی روح فنا ہوتی ہے اسی لئے سرکار کی خوب پٹتی ہے بڑے بڑے پیسے والوں سے، اونچے اونچے کارخانے والوں سے اور بھاری بھاری توپ بم والوں سے ۔ یہی وجہ ہے کہ یہ ایسے کارخانے کھڑے کر رہی ہے جن میں مصنوعی (پری فیبریکیٹڈ) مکان تیار کئے جائیں نہ کہ مٹی کے جھونپڑے ۔ ہماری سرکار کو مصر اور امریکہ کی روئی سے مل میں تیار کیا کپڑا پسند ہے نہ کہ بڑھیا کے ہاتھ کا کتے سوت سے جولاہے کا بنا کھدر؛ چپ چپ، گندے گاؤں اور جھونپڑی والے شہر پسند ہیں نہ کہ صاف ستھرے، سوالمبی گاؤں؛ بدن ننگا کئے، کریم پاؤڈر لگائے، سندر دکھنے والی، خوبصورتی میچ میں شریک ہونے والی فیشن پرست تتلی یا فلمی ستارہ (جن کے ساتھ حال میں ہی کیا راشٹرپتی کیا بڑے وزیر نے تصویریں کھنچوائی تھیں) پسند ہے نہ کہ شرم دار، لگن سے کام کرنے والی، محنتی اور سیوا مے دیہاتی بٹیا، وغیرہ وغیرہ. سرکار کے اس دیوالیہ رجحان کی وجہ سے ہی وہ دن دونے رات چوگنے محتاج بنتی جا رہی ۔ ودیشی پونجی پتی و سرمایہ دار کی اور اُسے باہر سے بھیک مانگنا پڑ رہی ہے اناج کی، مشینوں کی، معمولی سامان کی، پیسے کی، ایکسپرٹوں کی، وغیرہ وغیرہ. اس چکر میں وہ لگاتار پھنستی جا رہی ہے اور کوئی چارہ اُسے نہیں دکھتا . یہ سلسلہ ہماری شان کے خلاف ہے ہماری کلچر کے خلاف ہے اور خلاف ہے ہماری پرمپرا کے .

ایسی صورت میں ہمارے بڑے وزیر جواہر لال یہ آس لگائے ہیں کہ یہ ہندستان پوری شان شوکت کے ساتھ چمک اٹھیگا جس کے سپنے مہاتما گاندھی دیکھا کرتے تھے اور جسے بنانے کی انہوں نے کوشش کی . سچ یہ ہے کہ جس ہندستان کی تیاری آج ہماری سرکار کر رہی ہے وہ اُس کا ٹھیک الٹا ہے جس کے سپنے مہاتما گاندھی دیکھا کرتے تھے . اور 'ہند سوراج' میں اُنھوں نے کہا ہے "[illegible] کا اصلی آج بھی غلامی کی حالت میں ہے."

इसी तरह बिना किसी डर शुबे के यह कहा जा सकता है कि गांधी का हिन्दुस्तान आज भी गुलामी की हालत में है. दो बातों की एक बात यह है कि हिन्दुस्तान आजाद है पर उसके रहने वाले गुलाम बनते जा रहे हैं. जवाहरलाल का हिन्दुस्तान आजाद हो सकता है पर गांधी का हिन्दुस्तान गुलाम है.

सरकार जो करती है वह जवाहरलाल के हिन्दुस्तान के लिये. देखिये विलायती खाद के सिन्द्री कारखाने को, रेलवे डिब्बों के चितरंजन कारखाने को, दामोदर के बांध वाले कारखाने को या रंग-रुवाई के पारनेरा वाले कारखाने को—या देखिये देश में इधर-उधर फैली ग्यारह खोज घरों या लेबरेट्रियों को. यह सब क्या हैं? यह सब घर-फूंक तमाशे हैं जिनकी मदद से फ़ायदा हो जावेगा। कुछ पूंजी-पतियों को, कुछ सरकारी अफसरों को और कुछ विदेशी एक्सपर्टों को. उन्हें मौका मिल जायेगा गांवों व गांव वालों को और अधिक चूसने, धन कमाने और निचोड़ने का. यह कारखाने और लेबरेटरियां हिन्दुस्तान के नाम पर कलंक हैं और कलंक साबित होंगी. असली हिन्दुस्तान की यह कल्पना के बाहर हैं, उसकी औकात और बिसात के बाहर हैं. इनकी वजह से बीमारियां फैलेंगी, रोग बढ़ेंगे, अकाल आवेंगे, बेगुनाहों की जानें जावेंगी और दुखियों की मिट्टी पलीद होगी.

अपनी सरकार की नुक्ताचीनी करने में किसे मज़ा आता है? और फिर जब चोटी पर राजेन्द्र बाबू और जवाहरलाल जैसे तजुर्बेकार लोग हों? लेकिन नुक्ता चीनी का इख्तियार एक फ़र्ज़ बन जाता है जब साफ़ साफ़ दीखता है कि रचना नाम से जो काम इन लोगों ने हाथ में उठाया है वह तबाही और बरबादी का काम है जिससे जनता का हित कोसों दूर है. अगर नई सरकार सचमुच जनता का सहयोग चाहती है तो उसके अलमबरदारों को हवा से उतर कर धरती पर आना चाहिये, धरती वालों की सी बात करनी चाहिये. सरकार को चाहिये कि अपने दिमाग़ को अपने नज़रिये को और अपने ढंग को पूरी तरह बदल दे.

अगर सरकार ऐसा न करके अपनी रफ़्तार जारी रखती है तो उसके और जनता के बीच की खाई बढ़ेगी और बढ़ती ही रहेगी.

4. 4 1952 —सुरेश रामभाई

اس طرح [illegible] کہا جا سکتا ہے کہ گاندھی کا ہندستان آج بھی غلامی کی حالت میں ہے ۔ دو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ ہندستان آزاد ہے پر اس کے رہنے والے غلام بنتے جا رہے ہیں ۔ جواہر لال کا ہندستان آزاد ہو سکتا ہے پر گاندھی کا ہندستان غلام ہے ۔

سرکار جو کرتی ہے وہ جواہر لال کے ہندستان کے لئے. دیکھئے ولایتی کھاد کے سندری کارخانے کو، ریلوے ڈبوں کے چترنجن کارخانے کو، دامودر کے ڈام والے کارخانے کو یا رنگ روئی کے پارنیرا والے کارخانے کو—یا دیکھئے دیش میں ادھر ادھر پھیلی گیارہ کھوج گھروں یا لیبریٹریوں کو ۔ یہ سب کیا ہیں ؟ یہ سب گھر پھونک تماشے ہیں جن کی مدد سے فائدہ ہوجائیگا کچھ پونجی پتیوں کو، کچھ سرکاری افسروں اور کچھ ودیشی ایکسپرٹوں کو ۔ انہیں موقع مل جائیگا گاؤں و گاؤں والوں کو اور ادھک چوسنے، دھن کمانے اور نچوڑنے کا ۔ یہ کارخانے اور لیبریٹریاں ہندستان کے نام پر بٹا ہیں اور بٹا ثابت ہونگی ۔ اصلی ہندستان کی یہ کلپنا کے باہر ہیں، اس کی اوقات اور بساط کے باہر ہیں ۔ ان کی وجہ سے بیماریاں پھیلینگی، روگ بڑھینگے، اکال آئینگے، بے گناہوں کی جانیں جائینگی اور دکھیوں کی مٹی پلید ہوگی ۔

اپنی سرکار کی نکتہ چینی کرنے میں کسے مزہ آتا ہے ؟ اور پھر جب چوٹی پر راجندر بابو اور جواہر لال جیسے تجربہ کار لوگ ہوں ؟ لیکن نکتہ چینی یا اعتراض ایک فرض بن جاتا ہے جب صاف صاف دکھتا ہے کہ رچنا نام سے جو کام ان لوگوں نے ہاتھ میں اٹھایا ہے وہ تباہی اور بربادی کا کام ہے جس سے جنتا کا ہت کوسوں دور ہے ۔ اگر نئی سرکار سچ مچ جنتا کا سہیوگ چاہتی ہے تو اس کے علمبرداروں کو ہوا سے اتر کر دھرتی پر آنا چاہئے، دھرتی والوں کی سی بات کرنی چاہئے ۔ سرکار کو چاہئے کہ اپنے دماغ، اپنے نظریئے کو اور اپنے ڈھنگ کو پوری طرح بدل دے ۔

اگر سرکار ایسا نہ کرکے اپنی رفتار جاری رکھتی ہے تو اس کے اور جنتا کے بیچ کی کھائی بڑھیگی اور بڑھتی ہی رہیگی ۔

—سریش رام بھائی 4-4-1952

इनसान [illegible] रहा है.

25 फ़रवरी सन 1952 को नए चीन के वाइस प्रीमियर और वर्ल्ड कौंसिल आफ़ पीस के वाइस प्रेसीडेन्ट श्री को. मो. जो ने वर्ल्ड कौंसिल आफ़ पीस के प्रेसीडेन्ट को एक ख़त भेजा जिसमें और बातों के साथ साथ लिखा था कि:—

"28 जनवरी से 17 फ़रवरी तक कोरिया के अन्दर लड़ने वाली अमरीकी फ़ौजों ने कोरियन और चीनी फ़ौजों के ऊपर और दूर दूर तक निहत्थी आबादियों के ऊपर फ़ौजी हवाई जहाज़ों से बहुत बड़ी तादाद में इस तरह के कीड़े फेंके जो प्लेग, हैज़ा, मोती झरा, गरदन तोड़ बुख़ार और दूसरी ख़तरनाक छूत की बीमारियों के जर्म्स से भरे हुए थे."

कोरिया और चीन में कीड़ा बीमारी बमबाज़ी.

4 मार्च को ख़बर आई कि अमरीकी फ़ौजें पुन ह्युन जोन के नज़दीक हैज़े और मोतीझरा से भरे हुए बम फेंक रही हैं.

6 मार्च को ख़बर आई कि दो अमरीकी बम फेंकने वाले हवाई जहाज़ों ने शी हुन डांग के उत्तर में और मांग चिन सान के उत्तर पश्चिम में 26 फ़रवरी की रात को साढ़े आठ और नौ बजे के दरमियान तरह तरह की ख़तरनाक बीमारियों के जर्म्स से भरे हुए बम फेंके. यह ख़बर 26 फ़रवरी की चली हुई दुनिया को 6 मार्च को मिली.

उसी 6 मार्च को सुबह पौने दस बजे चांद डोरी के दक्खिन पूरब में तरह तरह की बलाओं के बम फेंके गए. उसी दिन इसी तरह के कुछ बम सान-चुन शहर की आबादी के ऊपर फेंके गए. उसी दिन सात अमरीकी हवाई जहाज़ों ने सुक चुंग नगर के ऊपर और सब चोना नगर के पास जर्म्स से भरे हुए बम फेंके.

6 मार्च सुबह दस बजे से शाम को चार बजे तक अमरीकी हवाई जहाज़ों के चार और जत्थों ने जिनमें से एक एक में कई कई जहाज़ थे कितने ही नगरों और क़स्बों के ऊपर बीमारियों से भरे हुए बम फेंके. इन बमों की इक्कीस बाढ़ें फेंकी गईं.

इसी तारीख़ को रात को नौ बजे एक अमरीकी हवाई जहाज़ चीन के इलाक़े में संग ताओ के पास तक बढ़ आया और आस पास की आबादियों पर उसने जर्म भरे बम फेंके. इस हवाई जहाज़ के वापिस लौटते ही उन आबादियों में तरह तरह के कीड़े, मक्खियां, मकड़ियां, मकोड़े, झींगुर वग़ैरा चारों तरफ़ भर गए.

7 मार्च को ग्यारह बजे दिन के एक अमरीकी हवाई जहाज़ चीन के सांग को और कितने ही नगरों के ऊपर बढ़ आया और उसने बीमारियों से भरे हुए काफ़ी बम फेंके. उत्तर पूरब चीन में इस तरह के बहुत से बम फेंके गए और कई दिन तक फेंके जाते रहे.

انسان [illegible] جا رہا ہے

25 فروری سن 1952 کو نئے چین کے وائس پریمیر اور ورلڈ کونسل آف پیس کے وائس پریسیڈنٹ شری کو مو جو نے ورلڈ کونسل آف پیس کے پریسیڈنٹ کو ایک خط بھیجا جس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ لکھا تھا کہ :—

"28 جنوری سے 17 فروری تک کوریا کے اندر لڑنے والی امریکی فوجوں نے کورین اور چینی فوجوں کے اوپر اور دور دور تک نہتی آبادیوں کے اوپر فوجی ہوائی جہازوں سے بہت بڑی تعداد میں اس طرح کے کیڑے پھینکے جو پلیگ، ہیضہ، موتی جھارہ، گردن توڑ بخار اور دوسری خطرناک چھوتکی بیماریوں کے جرمس سے لدے ہوئے تھے."

کوریا اور چین میں کیڑا بیماری بم باری.

4 مارچ کو خبر آئی کہ امریکی فوجیں پن سن جون کے نزدیک ہیضے اور موتی جھرا سے لدے ہوئے بم پھینک رہی ہیں.

6 مارچ کو خبر آئی کہ دو امریکی بم پھینکنے والے ہوائی جہازوں نے سیشی ڈانگ کے اتر میں اور مانگ پن سان کے اتر پچھم میں 26 فروری کی رات کو ساڑھے آٹھ اور نو بجے کے درمیان طرح طرح کی خطرناک بیماریوں کے جرمس سے لدے ہوئے بم پھینکے. یہ خبر 26 فروری کی چلی ہوئی دنیا کو 6 مارچ کو ملی.

اسی 6 مارچ کو صبح پونے دس بجے چاند ڈوری کے دکھن پورب میں طرح طرح کی وباؤں کے بم پھینکے گئے. اسی دن اسی طرح کے کچھ بم سانگ پنگ شہر کی آبادی کے اوپر پھینکے گئے. اسی دن سات امریکی ہوائی جہازوں نے سک چونگ نگر کے اوپر اور سب چونا نگر کے پاس جرمس سے بھرے ہوئے بم پھینکے.

6 مارچ صبح دس بجے سے شام کو چار بجے تک امریکی ہوائی جہازوں کے چار اور جتھوں نے جن میں سے ایک ایک میں کئی کئی جہاز تھے کتنے ہی نگروں اور قصبوں کے اوپر بیماریوں سے لدے بم پھینکے. ان بموں کی اکیس باڑھیں پھینکی گئیں.

اسی تاریخ کو رات کو نو بجے ایک امریکی ہوائی جہاز چین کے علاقے میں سنگ تاؤ کے پاس تک بڑھ آیا اور اس پاس کی آبادیوں پر اس نے جرم بھرے بم پھینکے. اس ہوائی جہاز کے واپس لوٹتے ہی ان آبادیوں میں طرح طرح کے کیڑے، مکھیاں، مکڑیاں، مکوڑے، ٹڈے وغیرہ چاروں طرف بھر گئے.

7 مارچ کو گیارہ بجے دن کے ایک امریکی ہوائی جہاز چین کے سانگ کو اور بہت سی نگروں کے اوپر بڑھ آیا اور اس نے بیماریوں سے لدے ہوئے کافی بم پھینکے. اتر پورب چین میں اس طرح کے بہت سے بم پھینکے گئے اور کئی دن تک پھینکے جاتے رہے.

[illegible] तारीख़ को फिर एक अमरीकी जहाज़ चीन के [illegible]-यांग नगर पर बढ़ आया. इसने [illegible]-यांग पर और आस पास की आबादियों पर यहां तक कि मंचूरिया की राजधानी मुकडन पर भी खूब बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

7 तारीख़ को अमरीकी जहाज़ों ने एन सांग के दक्खिन पूरब में जर्म्स से भरे हुए कीड़े फेंके और फ़ून यांग के पूरब में ज़हर में बुझे हुए बिस्कुटों और खाने की चीज़ों के डिब्बे बरसाए. इसी दिन फ़ून यांग के ऊपर अमरीकी हवाई जहाज़ों ने बीमारियों के जर्म्स से लदे बम फेंके. इनमें पहला बम जिस मकान पर पड़ा उस मकान के अन्दर और चारों तरफ़ मक्खियों और मच्छरों का एक घना बादल बन गया. यह बम एक सिलेन्डर की शक्ल में था. हरे रंग का, मोटे दल वाला, उसके अन्दर चार ख़ाने थे वग़ैरा.

8 मार्च को चीन के आठ या नौ बड़े शहरों में अमरीकी हवाई जहाज़ों से फेंके हुए ज़हरीली बीमारियों से लदे हुए बेशुमार कन खजूरे, टिड्डे और मकड़ मिले.

9 मार्च को दोपहर को एक बजे फिर पान मुन जोन नगर के ऊपर दस बारह इसी तरह की ख़तरनाक बीमारियों के बम गोलों की बाढ़ें फेंकी गईं. इन बाढ़ों में जो जर्म्स फेंके गए वह मक्खियों और चींटियों से मिलते हुए कीड़ों के सहारे थे.

इसी दिन यह भी ख़बर आई कि अमरीकी हवाई जहाज़ों ने कोरिया से आगे बढ़ कर चीन के उत्तर पूरब से लेकर चीन के लाओ तुंग सूबे के सुंग-ताओ नगर तक बराबर इसी तरह के बम फेंके.

9 मार्च को आठ जत्थों में अमरीकी हवाई जहाज़ चीन के ग्यारह नगरों के ऊपर बढ़ आए और अट्ठाईस बाढ़ों में उन्होंने तरह तरह की ज़हरीली बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

10 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के आठ जत्थे फिर सात चीनी शहरों पर बढ़ आए और उन्होंने बयालीस बाढ़ों में ज़हरीली बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

11 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के चार जत्थों ने फिर सात शहरों और आस पास की आबादियों के ऊपर बढ़ कर सत्ताइस बाढ़ें इसी तरह की ज़हरीले बमों की फेंकीं. इन बमों से पीले और सफ़ेद रंग के चमकते हुए और निहायत ख़तरनाक ज़हर चारों तरफ़ हवा में भर जाते थे.

12 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के ग्यारह जत्थों ने—आन तुंग, [illegible]-चिन-ह, [illegible] ह [illegible], [illegible]-तुंग-[illegible],

اسی [illegible] کو پھر ایک امریکی جہاز چین کے [illegible] نگر پر چڑھ آیا . اس نے [illegible] پر اور آس پاس کی آبادیوں پر یہاں تک کہ منچوریا کی راجدھانی مکڈن پر بھی خوب بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے .

7 تاریخ کو امریکی جہازوں نے ان سانگ کے دکھن پورب میں جرمس سے بھرے ہوئے کیڑے پھینکے اور پھون یانگ کے پورب میں زہر میں بجھے ہوئے بسکٹوں اور کھانے کی چیزوں کے ڈبے برسائے . اسی دن پھون یانگ کے اوپر امریکی ہوائی جہازوں نے بیماریوں کے جرمس سے لدے بم پھینکے . ان میں پہلا بم جس مکان پر پڑا اس مکان کے اندر اور چاروں طرف مکھیوں اور مچھروں کا ایک گھنا بادل بن گیا . یہ بم ایک سلنڈر کی شکل میں تھا . ہرے رنگ کا موٹے دل والا' اسکے اندر چار خانے تھے وغیرہ .

8 مارچ کو چین کے آٹھ یا نو بڑے شہروں میں امریکی ہوائی جہازوں سے پھینکے ہوئے زہریلی بیماریوں سے لدے ہوئے بے شمار کن کھجورے' ٹڈے اور مکڑ ملے .

9 مارچ کو دوپہر کے ایک بجے پھر پان من جون نگر کے اوپر دس بارہ اسی طرح کی خطرناک بیماریوں کے بم گولوں کی باڑھیں پھینکی گئیں . ان باڑھوں میں جو جرمس پھینکے گئے وہ مکھیوں اور چیونٹیوں سے ملتے ہوئے کیڑوں کے سہارے تھے .

اسی دن یہ بھی خبر آئی کہ امریکی ہوائی جہازوں نے کوریا سے آگے بڑھ کر چین کے اتر پورب سے لیکر چین کے لیاؤ تنگ صوبے کے سنگ تاؤ نگر تک برابر اسی طرح کے بم پھینکے .

9 مارچ کو آٹھ جتھوں میں امریکی ہوائی جہاز چین کے گیارہ نگروں کے اوپر بڑھ آئے اور اٹھائیس باڑھوں میں انہوں نے طرح طرح کی زہریلی بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے .

10 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے آٹھ جتھے پھر سات چینی شہروں پر بڑھ آئے اور انہوں نے بیالیس باڑھوں میں زہریلی بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے .

11 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے چار جتھوں نے پھر سات شہروں اور آس پاس کی آبادیوں کے اوپر بڑھ کر ستائیس باڑھیں اس طرح کی زہریلے بموں کی پھینکیں . ان بموں سے پیلے اور سفید رنگ کے چمکتے ہوئے اور نہایت مہلک زہر چاروں طرف ہوا میں بھر جاتے تھے .

12 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے گیارہ جتھوں نے—آن تنگ، [illegible] ہو، [illegible]

...-याँग, [illegible], [illegible], सान-चू-ओ, ह्वांग चाई-सैंग के इलाकों और [illegible] और ह्वांग चाई सैंग को रेलवे स्टेशनों के बीच कोई छह जगह इसी तरह की बीमारी के बम गोलों और तरह तरह के ज़हरीली चीज़ों के फेंके.

यह सब ख़बरें 15 मार्च 1952 से पहले की हैं.

यह ख़बरें जब दुनिया के अख़बारों में छपीं तो अमरीकी सरकार ने एक बार इन्हें झूठी ख़बरें कहकर टालना चाहा. इस पर दुनिया की एक मशहूर अन्तर क़ौमी संस्था 'इन्टर नेशनल. एसोसियेशन आफ डेमोक्रेटिक लायर्स (International Association of Democratic Lawyers) ने अलग अलग मुल्कों के आठ बड़े बड़े और ग़ैर तरफ़दार लोगों का एक कमीशन तहक़ीक़ात के लिए कोरिया और चीन भेजा और उनके साथ जांचने के लिये कई डाक्टर और साइन्स दां भी भेजे. इस कमीशन के आठ मेम्बर यह थे :—इसके सद्र थे आस्ट्रिया के मिस्टर हैन्स वेनर और बाक़ी मेम्बर थे इटली के मिस्टर के बेलिंगरी, ब्राज़ील के मिस्टर डी ब्रिटो, इंगलिस्तान के मिस्टर गेस्टर, फ्रांस के मिस्टर जाकवर, बेलजियम के मिस्टर मोरेन्स, पोलैंड के मिस्टर वासक कोबज़ुका और चीन के मिस्टर पो-नियन.

इस कमीशन ने मौक़े पर जा कर जांच करके यह रिपोर्ट दी :—

"We are horrified beyond measure at the facts we have ascertained but in our opinion they are indisputable"

"यानी जिन सच्ची घटनाओं का हमने पता लगाया है उन्हें मालूम करके हम बेहद घबरा गए हैं लेकिन हमारी राय में इन घटनाओं की सच्चाई से कोई इनकार नहीं कर सकता."

अमरीका की पहले से तैयारी.

इस कमीशन ने रिपोर्ट दी कि अमरीकी हवाई जहाज़ों ने जो बम फेंके उन में प्लेग, हैज़ा, मोती झरा और दूसरी बीमारियों के जर्म भरे हुए थे. उन्होंने यह भी लिखा कि जहां जहां यह बम फेंके गए वहां वहां और उनके आस पास कुछ दिन के अन्दर ही प्लेग और हैज़ा ख़ूब फैले.

कहीं कहीं ऐसा भी हुआ कि अमरीकी हवाई जहाज़ रात को आबादियों के ऊपर चक्कर लगाते हुए दिखाई दिये. न कोई बम गिरता दिखाई दिया और न कोई आवाज़ हुई. पर सुबह को देखा गया तो तमाम आबादी और आस पास के इलाक़े लाखों करोड़ों तरह तरह के नए नए कीड़ों से भरे दिखाई दिये. लोगों में वबा हर दिन के बाद एक दम [illegible] शक्ल से फैलती है. यह कीड़े बर्फ़ के

پیونگ یانگ، [illegible]، سی آن، سان چو او، ہوانگ ہائی [illegible] کے علاقوں اور [illegible] اور ہوانگ ہائی کو ریلوے اسٹیشنوں کے بیچ بارہ جگہ اسی طرح کے بیماری سے لدے بم گولوں اور طرح طرح کے زہریلی چیزوں کے پھینکے ۔

یہ سب خبریں 15 مارچ 1952 سے پہلے کی ہیں ۔

یہ خبریں جب دنیا کے اخباروں میں چھپیں تو امریکی سرکار نے ایک بار انہیں جھوٹی خبریں کہہ کر ٹالنا چاہا ۔ اس پر دنیا کی ایک مشہور انتر قومی سنستھا انٹر نیشنل ایسوسی ایشن آف ڈیماکریٹک لائرس (International Association of Democratic Lawyers) نے الگ الگ ملکوں کے آٹھ بڑے اور غیر جانبدار لوگوں کا ایک کمیشن تحقیقات کے لئے کوریا اور چین بھیجا اور اُن کے ساتھ جانچ کے لئے کئی ڈاکٹر اور سائنسداں بھی بھیجے ۔ اس کمیشن کے آٹھ ممبر یہ تھے :—اس کے صدر تھے آسٹریا کے مسٹر ہینس ویلر اور باقی ممبر تھے اٹلی کے مسٹر کے ویلنگری، برازیل کے مسٹر ڈی بریتو، انگلستان کے مسٹر گیسٹر، فرانس کے مسٹر جولیر، بلجیم کے مسٹر موریلس، پولینڈ کے مسٹر واسل کو وزکا اور چین کے مسٹر پونین ۔

اس کمیشن نے موقعے پر جا کر جانچ کرکے یہ رپورٹ دی :—

"We are horrified beyond measure at the facts we have ascertained but in our opinion they are indisputable."

"یعنی جن سچی گھٹناؤں کا ہم نے پتہ لگایا ہے انہیں معلوم کرکے ہم بے حد گھبرا گئے ہیں لیکن ہماری رائے میں ان گھٹناؤں کی سچائی سے کوئی انکار نہیں کرسکتا۔"

امریکہ کی پہلے سے تیاری ۔

اس کمیشن نے رپورٹ دی کہ امریکی ہوائی جہازوں نے جو بم پھینکے ان میں پلیگ، ہیضہ، موتی جھرا اور دوسری بیماریوں کے جرم بھرے ہوئے تھے ۔ انہوں نے یہ بھی لکھا کہ جہاں جہاں یہ بم پھینکے گئے وہاں وہاں اور ان کے آس پاس کچھ دن کے اندر ہی پلیگ اور ہیضہ خوب پھیلے ۔

کہیں کہیں ایسا بھی ہوا کہ امریکی ہوائی جہاز رات کو آبادیوں کے اوپر چکر لگاتے ہوئے دکھائی دیئے ۔ نہ کوئی بم گرتا دکھائی دیا اور نہ کوئی آواز ہوئی ۔ پر صبح کو دیکھا گیا تو تمام آبادی اور آس پاس کے علاقے میں کروڑوں طرح طرح کے نئے نئے کیڑوں سے بھرا دکھائی دئے ۔ لوگوں میں وبا ہر دن کے بعد ایک دم خطرناک 'شکل' سے پھیلتی ہے ۔ یہ کیڑے برف کے

जैसे भी ज़िन्दा रहते और काम करते हैं. धूप के अन्दर पर [illegible] छायों की तरह चलते दिखाई देते हैं. इनमें कुछ कीड़े ऐसे हैं जो सत्तर सत्तर बरस के बूढ़ों ने यह कहा कि हम ने इस तरह के कीड़े अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखे. अख़बारों में इनके फ़ोटो भी छपे हैं.

जून सन् 1944 से अब तक के अमरीकी अख़बारों में इस तरह के काफ़ी बयान मिलते हैं जिनसे साफ़ पता चलता है कि अमरीका की सरकार कम से कम उसी वक़्त से इसी तरह के बमों की तैयारी में लगी हुई थी. अमरीकी अफ़सरों ने उसका एक फ़ायदा यह भी बताया है कि इससे आदमी मर जाते हैं लेकिन कारख़ानों, मशीनों, इमारतों, हवाई अड्डों, रेलवे लाइनों वग़ैरा को कोई नुक़सान नहीं पहुँचता और हमला करने वाली फ़ौज उन इलाक़ों के इन्सानों के मर जाने के बाद आसानी से जाकर इन सब चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर सकती है और इन्हें अपने काम में ला सकती है. एक अमरीकी अफ़सर ने एक जगह यह भी साफ़ कहा है कि यह तरीक़ा ऐटम बम के मुक़ाबले में से ज़्यादा कारगर और ज़्यादा सस्ता है. अमरीकी जरनैलों के यह बयान भी मौजूद हैं कि अगली जंग के लिए हमें इस तरह के सामान से पूरी तरह लैस हो जाना चाहिए ताकि इन हथियारों में दूसरा हम से बढ़ न जाए. अमरीकी सरकार के भी इस तरह के बयान मौजूद हैं जिनमें कहा गया है कि इन तरह तरह की बीमारियों के कीड़ों को पाल कर करोड़ों, अरबों और संखों की तादाद में उन्हें बढ़ाने के लिये अमरीका में बड़े बड़े कारख़ाने खोले गए जिनमें से केवल एक कारख़ाने में फ़रवरी सन 1949 में चार हज़ार मर्द और औरत काम करते थे. जिन्हें "अमरीका के हीरो" कहा जाता था. यह भी कहा गया कि इन ज़हरीले हथियारों से आदमी, जानवर और दरख़्त कोई नहीं बच सकेगा और इनमें कोई एक चीज़ ऐसी भी है कि जिससे 65 से ले के 100 करोड़ आदमी यानी दुनिया की आधी आबादी ख़त्म हो सकती है. यह भी बयान मिलता है कि अमरीका के कुछ बड़े से बड़े साइन्सदां इसी काम में लगे हुए हैं. यह भी कहा गया है कि इस तरह के तीन हज़ार से ऊपर क़िस्म के जर्म तैयार किए गए हैं और कोशिश की गई है कि उन्हें इस तरह तैयार किया जावे कि कोई इन्सान बीमार पड़ कर बच न सके. 8 जुलाई सन 1950 को एक साहब ने यह भी साफ़ कहा था कि अगर कोरिया की लड़ाई ज़्यादा देर तक चली तो हमें बीमारियों के बम वहाँ आज़माने पड़ेंगे. इस तरह के बयान सन 1946 से लेकर अब तक के अमरीका और इंगलैंड के अख़बारों से बेशुमार नक़ल किए जा सकते हैं.

18 जनवरी सन 1951 को जनरल रिजवे ने कहा

اور بھی زندہ [illegible] میں سمجھئے اندر یہ [illegible] سایوں کی طرح چلتے پھرتے دکھائی دیتے ہیں۔ ان میں کچھ کیڑے ایسے ہیں جو ستر ستر برس کے بوڑھوں نے یہ کہا کہ ہم نے اس طرح کے کیڑے اپنی زندگی میں کبھی نہیں دیکھے۔ اخباروں میں ان کے فوٹو بھی چھپے ہیں۔

جون سن 1946 سے اب تک کے امریکی اخباروں میں اس طرح کے کافی بیان ملتے ہیں جن سے صاف پتہ چلتا ہے کہ امریکہ کی سرکار کم سے کم اسی وقت سے اسی طرح کے بموں کی تیاری میں لگی ہوئی تھی۔ امریکی افسروں نے اس کا ایک فائدہ یہ بھی بتایا ہے کہ اس سے آدمی مر جاتے ہیں لیکن کارخانوں، مشینوں، عمارتوں، ہوائی اڈوں، ریلوے لائنوں وغیرہ کو کوئی نقصان نہیں پہنچتا اور حملہ کرنے والی فوج ان علاقوں کے انسانوں کے مر جانے کے بعد آسانی سے جاکر ان سب چیزوں پر قبضہ کر سکتی ہے اور انہیں اپنے کام میں لا سکتی ہے۔ ایک امریکی افسر نے ایک جگہ یہ بھی صاف کہا ہے کہ یہ طریقہ ایٹم بم کے مقابلے میں زیادہ کارگر اور زیادہ سستا ہے۔ امریکی جرنیلوں کے یہ بیان بھی موجود ہیں کہ اگلی جنگ کے لئے ہمیں اس طرح کے سامان سے پوری طرح لیس ہو جانا چاہئے تاکہ ان ہتھیاروں میں دوسرا ہم سے نہ بڑھ جائے۔ امریکی سرکار کے بھی اس طرح کے بیان موجود ہیں جن میں کہا گیا ہے کہ ان طرح طرح کی بیماریوں کے کیڑوں کو پال کر کروڑوں، اربوں اور سنکھوں کی تعداد میں انہیں بڑھانے کے لئے امریکہ میں بڑے بڑے کارخانے کھولے گئے جن میں سے کیول ایک کارخانے میں فروری سن 1949 میں چار ہزار مرد اور عورتیں کام کرتے تھے۔ جنہیں "امریکہ کے ہیرو" کہا جاتا تھا۔ یہ بھی کہا گیا کہ ان زہریلے ہتھیاروں سے آدمی، جانور اور درخت کوئی نہیں بچ سکیگا اور ان میں کوئی ایک چیز ایسی بھی ہے کہ جس کے 65 کروڑ سے 100 کروڑ آدمی یعنی دنیا کی آدھی آبادی ختم ہوسکتی ہے۔ یہ بھی بیان ملتا ہے کہ امریکہ کے کچھ بڑے سے بڑے سائنسدان اسی کام میں لگے ہوئے ہیں۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ اس طرح کے تین ہزار سے اوپر قسم کے جرم تیار کئے گئے ہیں اور کوشش کی گئی ہے کہ انہیں اس طرح تیار کیا جاوے کہ کوئی انسان بیمار پڑ کر بچ نہ سکے۔ 8 جولائی سن 1950 کو ایک صاحب نے یہ بھی صاف کہا تھا کہ اگر کوریا کی لڑائی زیادہ دیر تک چلی تو ہمیں بیماریوں کے بم وہاں آزمانے پڑینگے۔ اس طرح کے بیان سن 1946 سے لیکر اب تک کے امریکہ اور انگلینڈ کے اخباروں سے بیشمار نقل کئے جاسکتے ہیں۔

18 جنوری سن 1951 کو جنرل رجوے نے کہا

था :—"असली बात जो याद रखने की है वह है कि हम जितने ज़्यादा से ज़्यादा कोरियनों और चीनियों को मार सकें हमें मार डालने चाहियें."

अप्रैल सन् 1951 के अमरीकी रिसाले 'साइन्स डाइजेस्ट' के एक लेख "एपीडेमिक्स मेड टू आर्डर" 'जब चाहें वबा फैला दो' में लेखक ने लिखा था कि—"अगर हम यह याद कर लें कि पहली सारी बड़ी जंग में जितने आदमी मरे उससे ज़्यादा सन् 1918 के इनफ्लुएन्ज़ा से मरे तो हमें साफ़ दिखाई दे सकता है कि जंग में बीमारी के जर्मों के हथियारों से कितना बड़ा काम हो सकता है"

4 जुलाई सन 51 को अमरीका के दो बड़े साइन्सदानों ने घमंड के साथ कहा था कि अमरीका की मेरी लैंड रियासत के मुक़ाम कैम्प डेट्रिक में हथियार बंद फ़ौजों के पहरे में अमरीकी सरकार के हुक्म से इस तरह के बीमारियों के बम बनाने का काम ज़ोरों से जारी है. आज यानी सन 1952 में मेरी लैंड का यह कारख़ाना पहले से भी कहीं ज़्यादा ज़ोर के साथ काम कर रहा है.

यह भी बार बार कहा गया कि इस तरह के हथियार कोरिया में काम में लाये जा सकते हैं. जिनकी बदौलत अमरीका को बड़ी बड़ी फ़ौजें मैदान में भेजने की ज़रूरत न होगी. यह भी कहा गया था कि ख़ास कर कोरिया जैसे मैदान में एटम बम के मुक़ाबले में यह दूसरे बम ज़्यादा कारगर होंगे. अमरीका ही की तरफ़ से बताया गया है कि जो बीमारियां इन बमों से पैदा होती और फैलती हैं वह ख़ूब दूर तक और देर तक बढ़ती और फैलती रहती हैं. जिससे कोई यह भी नहीं कह सकता कि बीमारी हमारे बम से फैली या कुदरती तौर पर.

जून सन् 1943 में प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने एक बयान में कहा था :—

"मैं साफ़ साफ़ एलान करता हूं कि किसी तरह की किसी हालत में भी हम इस हथियार को तब तक इस्तेमाल नहीं करेंगे जब तक दुश्मन उसे इस्तेमाल न कर ले."

अक्तूबर सन 51 में न्यूयार्क के एक अख़बार में यह साफ़ लिखा गया कि प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट की सन 43 की यह बात अब आठ बरस के बाद अमल के क़ाबिल नहीं रह गई है वग़ैरा वग़ैरा.

5 अप्रैल सन 1952 को यह ख़बर भी दुनिया के अख़बारों में छप चुकी है कि इस तरह की वबायें चीन में ज़ोरों के साथ फैल रही हैं. पचास हज़ार से ऊपर मर चुके हैं, चार लाख से ऊपर बीमार हो चुके हैं और सारे चीन का एक तिहाई हिस्सा इन वबाओं के असर में आ चुका है. यह ख़बर यू. एन. ओ. के ज़रिये से दुनिया को दी गई है.

تھا :—"اصلی چیز کی بات یہ ہے کہ ہم جتنے زیادہ سے زیادہ کوریئنوں اور چینیوں کو مار سکیں ہمیں مار ڈالنے چاہئیں."

اپریل سن 1951 کے امریکی رسالے 'سائنس ڈائجسٹ' کے ایک لیکھ "ایپی ڈیمکس میڈ ٹو آرڈر" 'جب چاہیں وبا پھیلا لو' میں لیکھک نے لکھا تھا کہ—"اگر ہم یہ یاد کر لیں کہ پہلی ساری بڑی جنگ میں جتنے آدمی مرے اس سے زیادہ سن 1918 کے انفلوئنزا سے مرے تو ہمیں صاف دکھائی دے سکتا ہے کہ جنگ میں بیماری کے جرموں کے ہتھیاروں سے کتنا بڑا کام ہو سکتا ہے."

4 جولائی سن 51 کو امریکہ کے دو بڑے سائنسدانوں نے گھمنڈ کے ساتھ کہا تھا کہ امریکہ کی میری لینڈ ریاست کے مقام کیمپ ڈیٹرک میں ہتھیار بند فوجوں کے پہرے میں امریکی سرکار کے حکم سے اس طرح بیماریوں کے بم بنانے کا کام زوروں سے جاری ہے. آج یعنی سن 1952 میں میری لینڈ کا یہ کارخانہ پہلے سے بھی کہیں زیادہ زور کے ساتھ کام کر رہا ہے.

یہ بھی بار بار کہا گیا ہے اس طرح کے ہتھیار کوریا میں کام میں لائے جا سکتے ہیں. جن کی بدولت امریکہ کو بڑی بڑی فوجیں میدان میں بھیجنے کی ضرورت نہ ہوگی. یہ بھی کہا گیا تھا کہ خاص کر کوریا جیسے میدان میں ایٹم بم کے مقابلے میں یہ دوسرے بم زیادہ کارگر ہونگے. امریکہ ہی کی طرف سے بتایا گیا ہے کہ جو بیماریاں ان بموں سے پیدا ہوتی اور پھیلتی ہیں وہ خوب دور تک اور دیر تک بڑھتی اور پھیلتی رہتی ہیں. جس سے کوئی یہ بھی نہیں کہہ سکتا کہ بیماری ہمارے بم سے پھیلی یا قدرتی طور پر.

جون سن 1943 میں پریسیڈنٹ روزویلٹ نے ایک بیان میں کہا تھا :—

"میں صاف صاف اعلان کرتا ہوں کہ کسی طرح کی کسی حالت میں بھی ہم اس ہتھیار کو تب تک استعمال نہیں کرینگے جب تک دشمن اسے پہلے استعمال نہ کر لے."

اکتوبر سن 51 میں نیویارک کے اخبار میں یہ صاف نکل گیا کہ پریسیڈنٹ روزویلٹ کی سن 43 کی وہ بات اب آٹھ برس کے بعد عمل کے قابل نہیں رہ گئی ہے وغیرہ وغیرہ.

5 اپریل سن 1952 کو یہ خبر بھی دنیا کے اخباروں میں چھپ چکی ہے کہ اس طرح کی وبائیں چین میں زوروں کے ساتھ پھیل رہی ہیں. پچاس ہزار سے اوپر مر چکے ہیں چار لاکھ سے اوپر بیمار ہو چکے ہیں اور سارے چین کا تیسرا حصہ ان وباؤں کے اثر میں آ چکا ہے. یہ خبر یو. این. او. کے ذریعہ سے دنیا کو دی گئی ہے.

[illegible] कोरिया और चीन की सरकारों को यह भी लिखा है कि आप कहिये तो हम रोगियों के इलाज के लिये डाक्टर भेज सकते हैं।

एक नई ख़बर अमरीका से यह भी आई है कि वहां के इस तरह के बम तैयार करने वाले महकमे ने अपने काम को बढ़ाने के लिये सरकार से करोड़ों डालर और मांगे हैं.

ज़ाहिर है चीन और एशिया की इतनी ज़बरदस्त आबादी को क़ाबू में करने का अमरीकी सरकार के पास अब कोई और तरीक़ा नहीं रह गया है.

हमारा सबका फ़र्ज़,

समझ में नहीं आता कि इन ख़बरों पर हम क्या कहें. हम हैरान हैं कि अपने को मोहज़्ज़ब और सभ्य कहने वाला इनसान किधर जा रहा है. हमारी सारी इनसानी तहज़ीब, हमारी इनसानियत और हमारी हज़ारों बरस की मानव संस्कृति का क्या होने वाला है.

क्या अभी भी कोई सचमुच ऐसे आदमी हैं जिन्हें इस बात में कुछ शक रह गया हो कि अमरीकी सरकार कोरिया और चीन में निहत्थी बेगुनाह आबादियों के ऊपर इस तरह के बम फेंक रही है और दुनिया के करोड़ों इनसानों को जिस तरह भी हो मिटा डालने या अपने क़ाबू में करने के लिये कमर कसे हुए है.

हम सोच नहीं सकते कि इससे बढ़कर पाप दुनिया में और क्या हो सकता है और इस पाप का करने वाला अपने को इनसान कैसे कह सकता है.

हमें यह फ़िक़रे लिखते हुए कुछ अच्छा नहीं लग रहा है. हम मजबूर हैं और हैरान हैं कि दुनिया के अख़बार और दुनिया की सरकारें इस मामले में इतनी चुप क्यों हैं ?

हम बड़े दर्द और दुख के साथ यह पूछने पर भी मजबूर हैं कि हमारी अपनी भारत की सरकार इस मामले में चुप क्यों है ? दुनिया के और सभ्य देशों की सरकारें चुप क्यों हैं ? हमारी अपनी सरकार ने इससे पहले इससे कम अहम बातों पर सच्ची हिम्मत दिखलाई है. इस समय कम से कम चीज़ जो वह कर सकती है उसे करनी चाहिये और करना उसका इनसानी फ़र्ज़ है. वह यह है कि अमरीका के साथ अपने राजकाजी सम्बन्ध को तोड़ दे, अपने राजदूत अमरीका से वापिस बुला ले और तब तक दोबारा सम्बन्ध क़ायम न करे जब तक अमरीका की सरकार अपनी ग़लती को ग़लती मान कर इस पर पछतावा न करे और आगे के लिये ऐसी नापाक हरकतों

[illegible] لی نے [illegible] اور چین کی سرکاروں کو یہ بھی لکھا ہے کہ آپ کہئے تو ہم روگیوں کے علاج کے لئے ڈاکٹر بھیج سکتے ہیں!

ایک نئی خبر امریکہ سے یہ بھی آئی ہے کہ وہاں کے اس طرح کے بم تیار کرنے والے محکمے نے اپنے کام کو بڑھانے کے لئے سرکار سے کروڑوں ڈالر اور مانگے ہیں۔

ظاہر ہے چین اور ایشیا کی اتنی زبردست آبادی کو قابو میں کرنے کا امریکی سرکار کے پاس اب کوئی اور طریقہ نہیں رہ گیا ہے۔

<u>ہمارا سب کا فرض۔</u>

سمجھ میں نہیں آتا کہ ان خبروں پر ہم کیا کہیں۔ ہم حیران ہیں کہ اپنے کو مہذب اور سبھیہ کہنے والا انسان کدھر جا رہا ہے۔ ہماری ساری انسانی تہذیب، ہماری انسانیت اور ہماری ہزاروں برس کی مانو سنسکرتی کا کیا ہونے والا ہے۔

کیا ابھی بھی کوئی سچ مچ ایسے آدمی ہیں جنہیں اس بات میں کچھ شک رہ گیا ہو کہ امریکی سرکار کوریا اور چین میں نہتھی بے گناہ آبادیوں کے اوپر اس طرح کے بم پھینک رہی ہے اور دنیا کے کروڑوں انسانوں کو جس طرح بھی ہو مٹا ڈالنے یا اپنے قابو میں کرنے کے لئے کمر کسے ہوئے ہے۔

ہم سوچ نہیں سکتے کہ اس سے بڑھکر پاپ دنیا میں اور کیا ہو سکتا ہے اور اس پاپ کا کرنے والا اپنے کو انسان کیسے کہہ سکتا ہے۔

ہمیں یہ فقرے لکھتے ہوئے کچھ اچھا نہیں لگ رہا ہے۔ ہم مجبور ہیں اور حیران ہیں کہ دنیا کے اخبار اور دنیا کی سرکاریں اس معاملے میں اتنی چپ کیوں ہیں؟

ہم بڑے درد اور دکھ کے ساتھ یہ پوچھنے پر بھی مجبور ہیں کہ ہماری اپنی بھارت کی سرکار اس معاملے میں چپ کیوں ہے؟ دنیا کے اور سبھیہ دیشوں کی سرکاریں چپ کیوں ہیں؟ ہماری اپنی سرکار نے اس سے پہلے اس سے کم اہم باتوں پر سچی ہمت دکھلائی ہے۔ اس سمے کم سے کم چیز جو وہ کر سکتی ہے اسے کرنی چاہئے اور کرنا اسکا انسانی فرض ہے۔ وہ یہ ہے کہ امریکہ کے ساتھ اپنے راج کاجی سمبندھ کو توڑ دے، اپنے راجدوت امریکہ سے واپس بلا لے اور تب تک دوبارہ سمبندھ قائم نہ کرے جب تک امریکہ کی سرکار اپنی غلطی کو غلطی مان کر اس پر پچھتاوا نہ کرے اور آگے کے لئے ایسی ناپاک حرکتیں

करने का वक्त न है. यह वह कम से कम चीज़ है जो हमारी राय में भारत सरकार और दुनिया की सब सभ्य सरकारों को करनी चाहिये.

हमारी निगाह में इस समय न दुनिया का राजकाज है और न कोई राजकाजी दल. हमारी निगाह सिर्फ़ इन्सान, इन्सानी क़ौम, इन्सानी कल्चर और इन्सान की हज़ारों बरस की कमाई पर है.

एक बात हम अपने अमरीका के भाइयों और अमरीकी सरकार से और कह देना चाहते हैं. ज़ाहिर है हमारी बात का क्या असर होगा. हमारी बात किसी के कान तक पहुंचेगी भी या नहीं, यह भी हम नहीं जानते. हमें केवल अपना दिल हलका करना है और अपना फ़र्ज़ अदा करना है. हम ठंडे दिल से पूछना चाहते हैं कि अमरीकी सरकार के नेता इतने अन्धे क्यों हो रहे हैं. अगर किसी ज़माने की भी इस तरह की ताक़तों या चालों से दुनिया क़ाबू में आ सकती तो न हिन्दुस्तान से अंगरेज़ी राज गया होता, न चीन से मंचू हुकूमत या चांग काई शेक की हुकूमत मिटी होती, न रूस से ज़ार की सल्तनत गई होती और न दुनिया से हिटलर और मुसोलिनी मिटे होते. रेत में मुँह छिपा लेने से दुनिया के बढ़ते हुए तूफ़ान मिट नहीं जाते और न राजकाजी और अख़लाक़ी लहरें अपना काम करने से रुक सकती हैं. चीन आज़ाद रहेगा, कोरिया भी आज़ाद होगा, एशिया फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है और खड़ा होगा, दुनिया की जनता जाग रही है और जागेगी. इन बढ़ती हुई ताक़तों के सामने एटम बम हो या हाइड्रोजन बम, गैस बम हो या बीमारी बम बेकार साबित होंगे. दुनिया की जनता की आज़ादी और बहबूदी के इस बाग़ में नई और इन्सानी बहार आवेगी. फिर हम अपने दिलों को मैला क्यों करें? अपने ख़िलाफ़ द्वेष और अन्धेपन के बीज चारों तरफ़ क्यों बिखेरें और इस बाग़ के रहे सहे पौधे से दरख़्तों को क्यों झुलसावें? आख़िर में हम दुनिया का अमन चाहते हुए केवल यही दुआ कर सकते हैं—सब को सन्मति दे भगवान.

10. 4. '52 —सुन्दरलाल

ہماری رائے

نہ کرنے کا وچن نہ دے. یہ وہ کم سے کم چیز ہے جو ہماری رائے میں بھارت سرکار اور دنیا کی سب سبھیہ سرکاروں کو کرنی چاہئے.

ہماری نگاہ میں اس سمے نہ دنیا کا راج کاج ہے اور نہ کوئی راج کاجی دل. ہماری نگاہ صرف انسان، انسانی قوم، انسانی کلچر اور انسان کی ہزاروں برس کی کمائی پر ہے.

ایک بات ہم اپنے امریکہ کے بھائیوں اور امریکی سرکار سے اور کہہ دینا چاہتے ہیں. ظاہر ہے ہماری بات کا کیا اثر ہوگا. ہماری بات کسی کے کان تک پہنچیگی بھی یا نہیں، یہ بھی ہم نہیں جانتے. ہمیں کیول اپنا دل ہلکا کرنا ہے اور اپنا فرض ادا کرنا ہے. ہم ٹھنڈے دل سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ امریکی سرکار کے نیتا اتنے اندھے کیوں ہو رہے ہیں. اگر کسی زمانے کی بھی اس طرح کی طاقتوں یا چالوں سے دنیا قابو میں آ سکتی تو نہ ہندستان سے انگریزی راج گیا ہوتا، نہ چین سے منچو حکومت یا چانگ کائی شیک کی حکومت مٹی ہوتی، نہ روس سے زار کی سلطنت گئی ہوتی اور نہ دنیا سے ہٹلر اور مسولینی مٹے ہوتے. ریت میں منہ چھپا لینے سے دنیا کے بڑھتے ہوئے طوفان مٹ نہیں جاتے اور نہ راج کاجی اور اخلاقی لہریں اپنا کام کرنے سے رک سکتی ہیں. چین آزاد رہیگا، کوریا بھی آزاد ہوگا، ایشیا پھر سے اپنے پیروں پر کھڑا ہو رہا ہے اور کھڑا ہوگا، دنیا کی جنتا جاگ رہی ہے اور جاگیگی. ان بڑھتی ہوئی طاقتوں کے سامنے ایٹم بم ہو یا ہائیڈروجن بم، گیس بم ہو یا بیماری بم بیکار ثابت ہونگے. دنیا کی جنتا کی آزادی اور بہبودی کے اس باغ میں نئی اور انسانی بہار آئیگی. پھر ہم اپنے دلوں کو میلا کیوں کریں؟ اپنے خلاف دویش اور اندھے پن کے بیج چاروں طرف کیوں بکھیریں اور اس باغ کے رہے سہے پودے سے درختوں کو کیوں جھلسائیں؟ آخر میں ہم دنیا کا امن چاہتے ہوئے کیول یہی دعا کر سکتے ہیں— سب کو سنمتی دے بھگوان.

سندر لال 10-4-52

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंग्रेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़ लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—श्री सुरेश रामभाई.

नामी गांधी वादी डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा की इस किताब के अंगरेज़ी में कई एडीशन हो चुके हैं. इस में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जायेगी.

इस किताब के बारे में महात्मा गांधी का कहना है—

"हर आस्तिक चाहे वह ईसाई हो या और किसी धरम का मानने वाला हो मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े............"

हिन्दी में अपने ढंग की ये मिसाल किताब है. किताब के आख़ीर में "ईसा के जीवन के कुछ क़िस्से" देकर अनुवादक ने इस की शोभा और भी बढ़ा दी है.

ख़ूबसूरत जिल्द, बढ़िया काग़ज़, सवा सौ पन्नों की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوِوادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا ۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کماریپا ۔

انووادک—شری سریش رام بھائی ۔

نامی گاندھی وادی ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کماریپا کی اس کتاب کے انگریزی میں کئی ایڈیشن ہوچکے ہیں ۔ اس میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آجائے گی ۔

اس کتاب کے بارے میں مہاتما گاندھی کا کہنا ہے—

"ہر آستک چاہے وہ عیسائی ہو یا اور کسی دھرم کا ماننے والا ہو میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے......"

ہندی میں اپنے ڈھنگ کی بے مثال کتاب ہے ۔ کتاب کے آخیر میں "عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے" دیکر انوواد‌ک نے اس کی شوبھا اور بھی بڑھا دی ہے ۔

خوبصورت جلد، بڑھیا کاغذ، سوا سو پنوں کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबें, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घर, किताब घर, सभायें, कान्फ्रेंसें, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िरक़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि. अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा. भगवानदास और डा. अब्दुल हक़, गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा. भगवानदास, सेक्रेटरी—पं. सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा. सैयद महमूद, डा. ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि. [illegible], श्री बी. जी. खेर, पं. विश्वम्भरनाथ, [illegible] भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल.

मेम्बरी के बारे में के लिये लिखिये -

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

115, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں.

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا.

(3) پڑھائی گھر، کتاب گھر، سبھائیں، کانفرنسیں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا.

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری—پنڈت سندر لال.

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر محمد علی [illegible]، شری بی جی کھیر، پنڈت وشمبھر ناتھ، [illegible] بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری [illegible] پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی

115 مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے مطابق ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے. "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائے گا. الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی چھپی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے

चीन की आवाज़

(पंडित सुन्दरलाल की कुछ स्पीचों व [illegible] का [illegible]

पहली अक्तूबर 1951 को हमारे पड़ोस [illegible] ने अपने नये लोकराज की दूसरी [illegible] के इस मौके पर चीन की कई [illegible] की दावत पर हिन्दुस्तान से एक गैर सरकारी मिशन पंडित सुन्दरलाल का सदारत में गया था जिसने वहां जाकर [illegible] की आम जनता [illegible] में शिरकत की. पंडित [illegible] हिन्दुस्तान से 20 सितम्बर 1951 को रवाना हुए [illegible] दिन चीन में रह कर 2 नवम्बर को वापस आये.

चीन में इस मिशन का बहुत [illegible] स्वागत किया गया [illegible] कहीं भाई मिल रहे हों [illegible] मिशन को [illegible] कि एक [illegible] एक [illegible] है, चेहरे पर [illegible] में खुशी [illegible] किया वह एक [illegible] और [illegible] उन्होंने क्या किया—इसकी [illegible] किताब में मिलेगा.

चीन में [illegible] पंडित जी के [illegible] हुईं और फिर हिन्दुस्तान में लौटने पर [illegible] और अखबारों को जो बयान [illegible] किताब में जमा कर दिये गए हैं.

यह वह किताब है [illegible] हर [illegible] और [illegible] शौक से पढ़ेगा और [illegible]

बढ़िया, कागज़ पर [illegible], [illegible] किताब, दाम सिर्फ चार आना.

मिलने का पता—
मैनेजर, नया हिन्द, 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

چین کی آواز

[illegible]

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج [illegible]

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

नया हिन्द
نیا ہند

नम्बर के खास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

…नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

मई 1952 مئی

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

मई 1952

"نیا هند"

هندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماهواری پرچا

مئی 1952

क्या किसमें — सफ़ा

सर्वोदय सम्मेलन—सुन्दरलाल, नैनीताल से राजधानी हटाइये, विदेशी व्योपारियों का नया जाल, डाक्टरों का घटाव, ग़रीब भारत और ऊंची तनख़्वाहें, कश्मीर का नया क़दम—**सुरेश रामभाई.**

صفحہ — کیا کس میں

سروودے سمیلن—سندرلال، نینی تال سے راجدھانی ہٹائیے، ودیشی بیوپاریوں کا نیا جال، ڈاکٹروں کا گھٹاؤ، غریب بھارت اور اونچی تنخواہیں، کشمیر کا نیا قدم—سریش رام بھائی۔

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا هند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 12 मई सन् '52 नम्बर 5

نمبر 5 مئی سن '52 جلد 12

आज आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

"आकाश रंग"

(स्वामी मारहरवी)

धर्म आत्म, परम आत्म बदले रिशी, मुनी, अवतारी बदले
घर बदला, घर वाले बदले देश के सब नर नारी बदले
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

मत बदली, मत वाले बदले मद बदला मद वाले बदले
हरि बदला, हरि वाले बदले दुख सुख न्यारे न्यारे बदले
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

काहू मन संतोश नहीं है दीप बुझे कुछ होश नहीं है
कांटों ही को दोश नहीं है फूल भी अब निर्दोश नहीं है
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

निर्धन हैं धनवान से उलझे निर्बल हैं बलवान से उलझे
चातुर हैं नादान से उलझे मूरख हैं भगवान से उलझे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

मठ, मंदिर और ठाकुर द्वारे मस्जिद, गिरजा और गुरुद्वारे
काशी, प्रयाग और गुरुकुल द्वारे शांति नहीं अब वह हरिद्वारे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

ढलते ढलते सांझ सकारे गरहन में डूबे सूर्य हमारे
भक्ति जी! तुमने काज सुधारे देख लिये यह घुप अंधियारे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

स्वामी जी! सब नाम भले थे स्वार्थ हीं वह काम भले थे
मन में जिनके श्याम भले थे राम भले थे! राम भले थे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

"آکاش رنگ"

(سوامی مارہروی)

دھرم آتم، پرم آتم بدلے رشی، منی، اوتاری بدلے
گھر بدلا، گھر والے بدلے دیش کے سب نر ناری بدلے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

مت بدلی، مت والے بدلے مد بدلا، مد والے بدلے
ہری بدلا، ہری والے بدلے دکھ سکھ نیارے نیارے بدلے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

کسو من سنتوش نہیں ہے دیپ بجھے کچھ ہوش نہیں ہے
کانٹوں ہی کو دوش نہیں ہے پھول بھی اب نردوش نہیں ہے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

نردھن ہیں دھنوان سے الجھے نربل ہیں بلوان سے الجھے
چاتر ہیں نادان سے الجھے مورکھ ہیں بھگوان سے الجھے
کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

مٹھ، مندر اور ٹھاکر دوارے مسجد، گرجا اور گردوارے
کاشی، پریاگ اور گروکل دوارے شانت نہیں ابھی ہردوارے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

ڈھلتے ڈھلتے سانجھ سکارے گرہن میں ڈوبے سورج ہمارے
بھگتی جی تم نے کاج سدھارے دیکھ لئے یہ گھپ اندھیارے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

سوامی جی! سب نام بھلے تھے سوارتھ ہیں وہ کام بھلے تھے
من میں جن کے شیام بھلے تھے رام بھلے تھے! رام بھلے تھے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے۔

सत्य को सजावट क्यों ?

सत्य को सजाने की ज़रूरत नहीं. सजाने से सत्य की सुन्दरता कम हो जाती है. सत्य से सुन्दर दुनिया में दूसरी चीज़ नहीं. सत्यम्, शिवम् सुंदरम् का यह अर्थ नहीं कि यह तीन अलग अलग चीजें हैं. इसका अर्थ है, सत्य, शिव और सुन्दर है. सत्य को ईश्वर कहा जाता है, तब वह शिव सुन्दर नहीं होगा तो और कौन होगा ?

झूठ न सुन्दर होता है, न हो सकता है. जिन किताबों में काम की चीज़ कम रहती है, उनकी दूकानदार, जिल्द बड़ी ख़ूबसूरत बनाते हैं. उस जिल्द पर सोने से बेल बूटे निकालते हैं. झूठ बाज़ार में सजधज के बिना नहीं आ सकता.

झूठ को वेश की चाह होती है. उसको वर्दी पहन कर, पगड़ी बांधकर सामने आना पड़ता है. झूठ ऐसा न करे तो वह दुनिया में जगह नहीं बना सकता. झूठ के सजधज कर आने की वजह कुछ लोग सत्य को सजाने लगे हैं. इससे सत्य को, फ़ायदा न होकर, नुकसान हुआ है. सजावट की वजह सत्य को अब कोई यों ही सत्य नहीं मान लेता, कसौटी पर कस कर देखता है. जिसका मतलब है, सत्य सजावट की वजह से आदमी को पहली निगाह में झूठ मालूम पड़ता है. सजने की झूठ को ज़रूरत है. सजे हुए सत्य को परीक्षा की आग में हो कर निकलना ही पड़ेगा. यह ठीक है, सत्य परीक्षा में खरा उतरता है, पर सत्य को परीक्षा की ज़रूरत पड़े, यह सत्य को शोभा नहीं देता.

सजावट ने, जिसकी झूठ के लिये ज़रूरत थी, सत्य की कम क़दरी कर दी, उसको झूठ की पंगत में बिठा दिया.

दुनिया में ईमानदार, विचारवान कम हैं, और बुद्धिमान भी कम पाये जाते हैं. आज दुनिया का काम बहुमत से चल रहा है, तब सत्य को जगह कहाँ ? यों सत्य को सजा कर लाने का रिवाज चल पड़ा. इस रिवाज से सत्य की भलाई नहीं हुई. झूठ की भलाई ज़रूर हुई. सत्य दब गया, झूठ सारी दुनिया में फैल गया. इस झूठ से भरी दुनिया में अगर बहुमत की परवाह की जावे तो सत्य कभी हाथ नहीं लग सकता, इसलिये ईमानदार, समझदार, बुद्धिमान बहुमत की परवाह सत्य के मामले में नहीं करते. वह सत्य को कहे जाते हैं, दुनिया के सामने बराबर रखते हैं. भले ही सत्य बोलने, सत्य विचार फैलाने, या सत्य समझाने के दम पर कितनी ही आफ़त क्यों न आवे ?

ستیہ کی سجاوٹ کیوں ؟

ستیہ کو سجانے کی ضرورت نہیں . سجانے سے ستیہ کی سندرتا کم ہوجاتی ہے . ستیہ سے سندر دنیا میں دوسری چیز نہیں . ستیم، شوم سندرم کا یہ ارتھ نہیں کہ یہ تین الگ الگ چیزیں ہیں . اس کا ارتھ ہے، ستیہ شو اور سندر ہے . ستیہ کو ایشور کہا جاتا ہے، تب وہ شو سندر نہیں ہوگا تو اور کون ہوگا ؟

جھوٹ نہ سندر ہوتا ہے، نہ ہوسکتا ہے . جن کتابوں میں کام کی چیز کم رہتی ہے، ان کی دوکان دار، جلد بڑی خوبصورت بناتے ہیں . اس جلد پر سونے سے بیل بوٹے نکالتے ہیں . جھوٹ بازار میں سج دھج کے بنا نہیں آسکتا .

جھوٹ کو بھیس کی چاہ ہوتی ہے . اس کو وردی پہنکر، پگڑی باندھکر سامنے آنا پڑتا ہے . جھوٹ ایسا نہ کرے تو وہ دنیا میں جگہ نہیں بنا سکتا . جھوٹ کے سج دھج کر آنے کی وجہ کچھ لوگ ستیہ کو سجانے لگے ہیں . اس سے ستیہ کو، فائدہ نہ ہوکر، نقصان ہوا ہے . سج دھج کی وجہ ستیہ کو اب کوئی یونہی ستیہ نہیں مان لیتا، کسوٹی پر کس کر دیکھتا ہے . جس کا مطلب ہے، ستیہ سجاوٹ کی وجہ سے آدمی کی پہلی نگاہ میں جھوٹ معلوم پڑتا ہے . سجنے کی جھوٹ کو ضرورت ہے . سجے ہوئے ستیہ کو پریکشا کی آگ میں ہو کر نکلنا ہی پڑے گا . یہ ٹھیک ہے، ستیہ پریکشا میں کھرا اترتا ہے، پر ستیہ کو پریکشا کی ضرورت پڑے، یہ ستیہ کو شوبھا نہیں دیتا .

سجاوٹ نے، جس کی جھوٹ کے لئے ضرورت تھی، ستیہ کی کم قدری کر دی، اس کو جھوٹ کی پنگت میں بٹھا دیا .

دنیا میں ایماندار، وچاروان کم ہیں، اور بدھی مان بھی کم پائے جاتے ہیں . آج دنیا کا کام بہومت سے چل رہا ہے، تب ستیہ کو جگہ کہاں ؟ یوں ستیہ کو سجا کر لانے کا رواج چل پڑا . اس رواج سے ستیہ کی بھلائی نہیں ہوئی . جھوٹ کی بھلائی ضرور ہوئی . ستیہ دب گیا، جھوٹ ساری دنیا میں پھیل گیا . اس جھوٹ سے بھری دنیا میں اگر بہومت کی پرواہ کی جاوے تو ستیہ کبھی ہاتھ نہیں لگ سکتا، اس لئے ایماندار، سمجھدار، بدھی مان بہومت کی پرواہ ستیہ کے معاملے میں نہیں کرتے . وہ ستیہ کو کہے جاتے ہیں، دنیا کے سامنے برابر رکھتے ہیں . بھلے ہی ستیہ بولنے، ستیہ وچار پھیلانے، یا ستیہ سمجھانے میں کتنی ہی آفت کیوں نہ آئے ؟

कुछ [illegible] करते पर भी, अपने छोटे बच्चे से सच [illegible] बातें क्यों छिपाये रखना चाहते हैं, या छिपाते रहते हैं. उनका छोटा बच्चा छोटे विचारों के ढंग में फँसा होता है, फँसने को होता है, या फँसने की उम्मीद में होता है और वह देखते रहते हैं. इसे आप मेरा सौभाग्य समझिये कि मुझे ऐसी माँ मिली थी जो सच को मुझ से उस वक्त भी छिपा कर न रखना चाहती थी, जब मैं बारह बरस का था, वह सच बात क्या थी उसे सुनिये.

भादों के महीनों में, पर्व शुरू होने से पहले, एक दो दिन ऐसे होते थे, जब दोपहर के वक्त छोटे बच्चों को मंदिर में नहीं जाने दिया जाता था, दो चार अधेड़ और बड़े बूढ़े मंदिर के अन्दर रहते थे. अन्दर से दरवाजा बन्द कर लेते थे. तीन चार घंटे बराबर बच्चों के लिये अन्दर जाने की मनाही रहती थी. मैं बारह बरस का था, पर उमर के लिहाज से काफी समझदार था, मुझे भी अन्दर नहीं जाने दिया जाता था. यह रोक टोक मुझे बहुत अखरती थी.

इस रोक टोक के बारे में मैं अपने और साथियों से पूछता, लेकिन वह कुछ न बता सकते. सोलह सत्रह बरस के लड़के भी कुछ न बताते. या तो वह जानते न थे या जान बूझ कर बात छिपाते थे. बड़े बूढ़ों से जब यह बात पूछी गई, तब फटकार हाथ आई. वह लोग जो मन्दिर में बन्द हो कर काम करते थे, मेरे करीबी रिश्तेदार होते थे. मुझे प्यार करते थे, मुझे अच्छा लड़का समझते थे, पर यह भी वह न बताते थे कि वह किसलिये मन्दिर में बन्द रहते हैं. नहीं बताते थे, इतना ही नहीं, नाराज होकर कह बैठते थे "क्या पूछते हो?" यह सुन कर मैं अपना सा मुँह लेकर रह जाता.

मैं था तो बारह बरस का पर भूत प्रेत में बिलकुल विश्वास न करता था. मेरे माँ बाप को छोड़ कर सारा कुनबा भूत प्रेत का विश्वासी था. कुनबे के दो चार जने घराने भूत प्रेत बुलाने का काम करते थे. उन घरों में से किसी एक घर में छोटी दिवाली को अक्सर भूत बुलाये जाते थे. इस काम के लिये जो जगह चुनी जाती उसको अखाड़ा कहा जाता था. ऐसे अखाड़ों में, जहां तक बने, बच्चों को नहीं जाने दिया जाता था. लेकिन अगर कोई बच्चा आ ही जाय तो उसे निकाला नहीं जाता था, उसको उस मिठाई से भी वंचित नहीं रखा जाता था, जो अखाड़े में भूतों के आगे रख बाद में बांटी जाती थी.

मुझे उस मिठाई का बहुत लालच रहता था. और किसी न किसी तरह वहाँ पहुँच जाता था.

کچھ ماں باپ' سچائی کی قدر کرتے ہوئے بھی' اپنے چھوٹے بچے سے سچائی کو نہ جانے کیوں چھپائے رکھنا چاہتے ہیں' یا چھپاتے رہتے ہیں. ان کا چھوٹا بچہ چھوٹے وچاروں میں پھنس رہا ہوتا ہے' پھنسنے کو ہوتا ہے' یا پھنسنے کی امید میں ہوتا ہے اور وہ دیکھتے رہتے ہیں. اسے آپ میرا سوبھاگیہ سمجھئے کہ مجھے ایسی ماں ملی تھی جو سچائی کو مجھ سے اس وقت بھی چھپا کر نہ رکھنا چاہتی تھی' جب میں بارہ برس کا تھا' وہ سچائی بات کیا تھی آپ سنئے.

بھادوں کے مہینوں میں' پرو شروع ہونے سے پہلے' ایک دو دن ایسے ہوتے تھے' جب دوپہر کے وقت چھوٹے بچوں کو مندر میں نہیں آنے دیا جاتا تھا' دو چار ادھیڑ اور بڑے بوڑھے مندر کے اندر رہتے تھے. اندر سے دروازہ بند کر لیتے تھے. تین چار گھنٹے برابر بچوں کے لئے اندر آنے کی منائی رہتی تھی. میں بارہ برس کا تھا' پر عمر کے لحاظ سے کافی سمجھدار تھا' مجھے بھی اندر نہیں آنے دیا جاتا تھا. یہ روک ٹوک مجھے بہت اکھرتی تھی.

اس روک ٹوک کے بارے میں میں اپنے اور ساتھیوں سے پوچھتا' لیکن وہ کچھ نہ بتا سکتے. سولہ سترہ برس کے لڑکے بھی کچھ نہ بتاتے. یا تو وہ جانتے نہ تھے یا جان بوجھ کر بات چھپاتے تھے. بڑے بوڑھوں سے جب یہ بات پوچھی گئی' تب پھٹکار ہاتھ آئی. وہ لوگ جو مندر میں بند ہو کر کام کرتے تھے' میرے قریبی رشتہ دار ہوتے تھے. مجھے پیار کرتے تھے' مجھے اچھا لڑکا سمجھتے تھے' پر وہ بھی یہ نہ بتاتے تھے کہ وہ کس لئے مندر میں بند رہتے ہیں. نہیں بتاتے تھے' اتنا ہی نہیں' ناراض ہو کر کہہ بیٹھتے تھے "کیا پوچھتے ہو؟" یہ سن کر میں اپنا سا منہ لے کر رہ جاتا.

میں تھا تو بارہ برس کا پر بھوت پریت میں بالکل وشواس نہ کرتا تھا. میرے ماں باپ کو چھوڑ کر سارا کنبہ بھوت پریت کا وشواسی تھا. کنبے کے دو چار گھرانے بھوت پریت بلانے کا کام کرتے تھے. ان گھروں میں سے کسی ایک گھر میں چھوٹی دیوالی کو اکثر بھوت بلائے جاتے تھے. اس کام کے لئے جو جگہ چنی جاتی تھی اس کو اکھاڑا کہا جاتا تھا. ایسے اکھاڑوں میں' جہاں تک بنے' بچوں کو نہیں آنے دیا جاتا تھا. لیکن اگر کوئی بچہ آ ہی جائے تو اسے نکالا نہیں جاتا تھا' اس کو اس مٹھائی سے بھی ونچت نہیں رکھا جاتا تھا' جو اکھاڑے میں بھوتوں کے آگے رکھ پھر سیدھا میں بانٹی جاتی تھی.

مجھے اس مٹھائی کا بہت لالچ رہتا تھا. اور کسی نہ کسی طرح وہاں پہنچ جاتا تھا.

एक बार एक लड़के से भूत के बारे में बहस हो जाने पर मैं यह कह बैठा, "आज तुम्हारे बाप के सिर में कोई भूत न आने दूंगा." उस लड़के का बाप अखाड़े में भूत बुलाने का काम करता था. उस लड़के से शर्त हो गई. दिवाली का दिन था. रात काफी ठंडी हो चुकी थी. मैं एक कपड़ा ओढ़ कर और बांस की एक खपच्ची में एक सुई बांध कर अपने कपड़े में छुपाकर उस लड़के के साथ जिसे मैंने चुनौती दी थी, उसके घर पहुँचा. अखाड़े में ठीक उसके बाप के पीछे बैठ गया. वह लड़का मेरे बराबर बैठ गया. अखाड़े में लालटेन न थी. कोठरी के एक कोने में एक दिया जल रहा था. वह ऐसी जगह था जहाँ से वह मेरे ऊपर लड़के के बाप की परछाई डाल रहा था, यानी मैं कुछ अंधेरे में था. अखाड़े के और लोग मुझे ठीक ठीक न देख सकते थे.

मेरे पहुँचने के दो मिनट बाद लड़के के बाप ने एक भूत बुलाया. जैसे ही लड़के के बाप ने सिर हिलाना शुरू किया, मैंने चुपके से खपच्ची में बंधी सुई पीछे से लड़के के बाप के बदन में चुभा दी. खपच्ची झट नीचे छुपा ली. सिर हिलना बंद हो गया. लड़के के बाप ने दाएँ बाएँ गुस्सा होकर देखा, पर कुछ न समझा, फिर भूत बुलाया गया. वह आया, मैंने फिर सुई चुभाई, वह फिर भाग गया. फिर उसी तरह दाएँ बाएँ निगाह दौड़ाई गई, फिर भी कोई कुछ न समझा, आध घंटे की कोशिश के बाद लड़के के बाप को यह कहना पड़ा कि आज भूत सिर नहीं आएगा.

दूसरे दिन सारा भेद खुल गया. उस दिन के बाद से मुझे कभी अखाड़े में नहीं शामिल होने दिया गया. शायद यह भी एक कारन हो कि मुझे मंदिर में उस वक्त न जाने देते हों, जब किसी और लड़के को वहां जाने की इजाजत न थी.

जब मैं सब जगह से निराश हो गया तब अपनी मां से पूछ बैठा, मां, हम बच्चों को मंदिर में यह लोग क्यों नहीं जाने देते ? मां बोली, मंदिर तो तुम रोज जाते हो, कोई रोकता नहीं. कब किसने तुमको रोका ? मैं बोला, हर साल भादो की पूजा शुरू होने से पहिले दो तीन दिन दोपहर को कुछ लोग मंदिर में दरवाजा बंद करके बैठ जाते हैं, हम बच्चों को अन्दर नहीं जाने देते. दो एक दिन की बात होने से मैं हर साल तुम से पूछना भूल जाता था, इस साल भी कल ऐसा ही हुआ. और आज अभी मैं मंदिर से आ रहा हूं, कोई दरवाजा नहीं खोलता, कोई कुछ बताता भी नहीं, अम्मा, यह बात क्या है ?

अम्मा हंस पड़ी, बोली, अच्छा यह बात है ? बेटा बात कुछ नहीं, लोग दरवाजा बंद करके पूजा के लिए मंदिर की सफाई करते हैं, इसलिए बच्चों को नहीं आने देते.

ایک بار ایک لڑکے سے بھوت کے بارے میں بحث ہو جانے پر میں یہ کہہ بیٹھا، "آج تمہارے باپ کے سر میں کوئی بھوت نہ آنے دونگا۔" اس لڑکے کا باپ اکھاڑے میں بھوت بلانے کا کام کرتا تھا۔ اس لڑکے سے شرط ہو گئی۔ دیوالی کا دن تھا۔ رات کافی ٹھنڈی ہو چکی تھی۔ میں ایک کپڑا اوڑھ کر اور بانس کی ایک کھپچی میں ایک سوئی باندھ کر اپنے کپڑے میں چھپا کر اس لڑکے کے ساتھ جسے میں نے چنوتی دی تھی، اس کے گھر پہنچا۔ اکھاڑے میں ٹھیک اس کے باپ کے پیچھے بیٹھ گیا۔ وہ لڑکا میرے برابر بیٹھ گیا۔ اکھاڑے میں لالٹین نہ تھی۔ کوٹھری کے ایک کونے میں ایک دیا جل رہا تھا۔ وہ ایسی جگہ تھا جہاں سے وہ میرے اوپر لڑکے کے باپ کی پرچھائیں ڈال رہا تھا، یعنی میں کچھ اندھیرے میں تھا۔ اکھاڑے کے اور لوگ مجھے ٹھیک ٹھیک نہ دیکھ سکتے تھے۔

میرے پہنچنے کے دو منٹ بعد لڑکے کے باپ نے ایک بھوت بلایا۔ جیسے ہی لڑکے کے باپ نے سر ہلانا شروع کیا، میں نے چپکے سے کھپچی میں بندھی سوئی پیچھے سے لڑکے کے باپ کے بدن میں چبھا دی۔ کھپچی جھٹ نیچے چھپا لی۔ سر ہلنا بند ہو گیا۔ لڑکے کے باپ نے دائیں بائیں غصہ ہو کر دیکھا، پر کچھ نہ سمجھا، پھر بھوت بلایا گیا۔ وہ آیا، میں نے پھر سوئی چبھائی، وہ پھر بھاگ گیا۔ پھر اسی طرح دائیں بائیں نگاہ دوڑائی گئی، پھر بھی کوئی کچھ نہ سمجھا، آدھ گھنٹے کی کوشش کے بعد لڑکے کے باپ کو یہ کہنا پڑا کہ آج بھوت سر نہیں آئیگا۔

دوسرے دن سارا بھید کھل گیا۔ اس دن کے بعد سے مجھے کبھی اکھاڑے میں نہیں شامل ہونے دیا گیا۔ شائد یہ بھی ایک کارن ہو کہ مجھے مندر میں اس وقت نہ آنے دیتے ہوں، جب کسی اور لڑکے کو وہاں آنے کی اجازت نہ تھی۔

جب میں سب جگہ سے نراش ہو گیا تب اپنی ماں سے پوچھ بیٹھا، ماں، ہم بچوں کو مندر میں یہ لوگ کیوں نہیں آنے دیتے؟ ماں بولی، مندر تو تم روز جاتے ہو، کوئی روکتا نہیں۔ کب کس نے تم کو روکا؟ میں بولا، ہر سال بھادو کی پوجا شروع ہونے سے پہلے دو تین دن دوپہر کو کچھ لوگ مندر میں دروازہ بند کر کے بیٹھ جاتے ہیں، ہم لڑکوں کو اندر نہیں آنے دیتے۔ دو ایک دن کی بات ہونے سے میں ہر سال تم سے پوچھنا بھول جاتا تھا، اس سال بھی کل ایسا ہی ہوا۔ اور آج ابھی میں مندر سے آ رہا ہوں، کوئی دروازہ نہیں کھولتا، کوئی کچھ بتاتا بھی نہیں، اماں، یہ بات کیا ہے؟

اماں ہنس پڑی، بولی، اچھا یہ بات ہے؟ بیٹا بات کچھ نہیں، لوگ دروازہ بند کر کے پوجا کے لئے مندر کی صفائی کرتے ہیں، اس لئے بچوں کو نہیں آنے دیتے۔

मैं बोला, ... न सही, मैं तो सफाई के काम में पूरा हाथ बंटा सकता था और जब वह सेवी सजाते हैं तो मुझ से काम लेते हैं, दूसरों से भी काम लेते हैं.

अम्मा बोली, पर इस वक्त वह सेवी नहीं सजा रहे, भगवान की मूर्तियाँ साफ कर रहे हैं.

मैं बोला, यह काम भी मैं अच्छा कर सकता था.

अम्मा बोली, तुम अच्छा तो कर सकते थे, पर कहीं कोई मूरत टूट फूट जाती तो क्या होता ?

मैं बोला, और उन से टूट फूट जावे तो ?

अम्मा बोली, वह बहुत होशियारी से काम करते हैं. और इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का काम तुम्हें नहीं सौंप सकते.

मैं बोला, यह ठीक सही, वह मुझे काम न दें, मुझे अन्दर क्यों नहीं आने देते ? देखने क्यों नहीं देते ? दूसरे सफाई की तरह यह भी एक सफाई है. दूसरों में आने देते हैं, इसमें क्यों रोकते हैं ?

अम्मा बोली, वजह यह है कि धातु की मूर्तियों की सफाई करते वक्त उनको टेढ़े सीधे करके मांजना पड़ता है. कभी ज़रूरत पड़ जाय तो पांव का ज़ोर भी लगाना पड़ता है इसलिये वहां बच्चों को नहीं रहने देते.

मैं बोला, इसमें न रहने देने की क्या बात है ?

अम्मा बोली, बच्चे मूर्तियों को इस तरह मांजता देख कर खिलौना समझने लगेंगे; और सब आदर भाव खो बैठेंगे. भगवान मानना छोड़ देंगे और कभी अकेले में छोटी छोटी मूर्तियों के साथ ऐसे ही खेलने लगेंगे जैसे दूसरे खिलौनों के साथ.

मैं बोला, तो यह भगवान नहीं हैं ?

अम्मा बोली, भगवान नहीं, भगवान की मूरत है.

मैं बोला, भगवान की मूरत जैसे लालाजी की तस्वीर.

अम्मा बोली, तस्वीर नहीं, जैसे लालाजी की मूरत. लालाजी की मूरत को अगर वैसी कोई मूरत तुम्हारे घर में होती, तो तुम अच्छी तरह संभालकर रखते या नहीं ?

मैं बोला, संभाल कर तो रखता, पर धोक (साष्टांग नमस्कार) न देता.

अम्मा बोली, धोक तो तुम लालाजी को भी नहीं देते. पर भगवान अगर तुम्हारे लालाजी की तरह जीते जागते तुम्हारे सामने आ जायें तो तुम धोक देते या नहीं ?

मैं बोला, हां तब तो धोक देता.

अम्मा बोली, बस यही बात भगवान की मूरत की है.

میں بولا' پر مجھے نہ سہی' میں تو صفائی کے کام میں پورا ہاتھ بٹا سکتا تھا . اور جب وہ بھوگ سجاتے ہیں تو مجھ سے کام لیتے ہیں' دوسروں سے بھی کام لیتے ہیں .

اماں بولی' پر اس وقت وہ بھوگ نہیں سجا رہے' بھگوان کی مورتیاں صاف کر رہے ہیں .

میں بولا' یہ کام بھی میں اچھا کر سکتا تھا .

اماں بولی' تم اچھا تو کر سکتے تھے' پر کہیں سے کوئی مورت ٹوٹ پھوٹ جاتی تو کیا ہوتا ؟

میں بولا' اور ان سے ٹوٹ پھوٹ جاوے تو ؟

اماں بولی' وہ بہت ہوشیاری سے کام کرتے ہیں . اور اتنی بڑی ذمہ داری کا کام تمہیں نہیں سونپ سکتے .

میں بولا' یہ ٹھیک سہی' وہ مجھے کام نہ دیں' مجھے اندر کیوں نہیں آنے دیتے ؟ دیکھنے کیوں نہیں دیتے ؟ دوسرے صفائی کی طرح وہ بھی ایک صفائی ہے . دوسروں میں آنے دیتے ہیں' اس میں کیوں روکتے ہیں ؟

اماں بولی' وجہ یہ ہے کہ دھات کی مورتیوں کی صفائی کرتے وقت ان کو ٹیڑھے سیدھے کر کے مانجھنا پڑتا ہے . کبھی ضرورت پڑ جائے تو پاؤں کا زور بھی لگانا پڑتا ہے اس لئے وہاں بچوں کو نہیں رہنے دیتے .

میں بولا' اس میں نہ رہنے دینے کی کیا بات ہے ؟

اماں بولی' بچے مورتیوں کو اس طرح مانجھتا دیکھکر کھلونا سمجھنے لگینگے؛ اور سب آدر بھاؤ کھو بیٹھینگے . بھگوان ماننا چھوڑ دینگے اور کبھی اکیلے میں چھوٹی چھوٹی مورتیوں کے ساتھ ایسے ہی کھیلنے لگینگے جیسے دوسرے کھلونوں کے ساتھ .

میں بولا' تو وہ بھگوان نہیں ہیں ؟

اماں بولی' بھگوان نہیں' بھگوان کی مورت ہے .

میں بولا' بھگوان کی مورت جیسے لالہ جی کی تصویر .

اماں بولی' تصویر نہیں' جیسے لالہ جی کی مورت . لالہ جی کی مورت کو' اگر ویسی کوئی مورت تمہارے گھر میں ہوتی' تو تم اچھی طرح سنبھال کر رکھتے یا نہیں؟

میں بولا' سنبھال کر تو رکھتا' پر دھوک (سانشٹانگ نمسکار) نہ دیتا .

اماں بولی' دھوک تو تم لالہ جی کو بھی نہیں دیتے . پر بھگوان اگر تمہارے لالہ جی کی طرح جیتے جاگتے تمہارے سامنے آ جاتے تو تم دھوک دیتے یا نہیں ؟

میں بولا' ہاں تب تو دھوک دیتا .

اماں بولی' بس یہی بات بھگوان کی مورت کی ہے .

उन्हें रातको सोतेसे देखकर [illegible] मूर्तियों का आदर कम हो सकता है. अपने लालाजी को तुम रोज देखते हो उनसे बोलते बहुत करते भी हो, पर भगवान को तुमने कभी नहीं देखा, उनका नाम सुना है, उनकी कथा सुनी है, अपने लालाजी से और मुझसे तुमने भजन सीखे हैं, प्रार्थना सीखी है, भगवान की मूर्तियों को धोक देना सीखा है, पर सब सुना सीखा है. यह सुनी सीखी बातें तुम्हारे दिल से निकल सकती हैं, अगर तुम किसी को मूर्ति से पांव लगाते या बुरी तरह उलटते पुलटते देख लो.

मैं बोला, अम्मा, मंदिर के भगवान हमें इम्तहान में पास नहीं करा सकते ?

अम्मा बोली, नहीं, कभी नहीं करा सकते, इम्तहान में पास तो तुम मन लगाकर पढ़ने से होंगे, तुम्हारे लालाजी तुम्हें पढ़ाकर पास करा सकते हैं. उनकी तस्वीर या मूरत तुम्हें पास नहीं करा सकती, क्योंकि वह तुम्हें पढ़ा नहीं सकती. तुम अपने लालाजी की तस्वीर को नमस्कार करके खुद खुश हो सकते हो, मुझे खुश कर सकते हो, अच्छे लड़के समझे जा सकते हो, पर उस तस्वीर से पैसे मांगकर, पैसे नहीं पा सकते. इस तस्वीर से कुछ पूछो तो जवाब नहीं पा सकते.

अम्मा, तो भगवान से हमें कुछ नहीं मिलेगा ?

अम्मा बोली, कुछ क्यों नहीं मिलेगा ? उनकी कथा सुनने से तुम्हारे अन्दर तुम्हारा मन भलाई करने के लिये जोर मारेगा. और इतना मिलना क्या कम है ? देखो मुहल्ले के सब लड़के गाली देते हैं, तुम कभी गाली नहीं देते, क्योंकि तुम्हारे पिताजी कभी गाली नहीं देते, मैं गाली नहीं देती. देखो, तुम्हारे स्कूल के लड़के गिलोल रखते हैं, बेमतलब चिड़ियां कौवे मार डालते हैं, गिलोल तुम्हारे पास भी है, तुम वैसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे लालाजी वैसा नहीं करते, मैं वैसा नहीं करती. तुम अपने घर के नौकर को वैसा नहीं करने देते, हम सब ऐसा इसलिये नहीं करते कि हमारे भगवान ऐसा नहीं करते थे. हमने यह बात उनकी कथा सुनकर सीखी, तुम्हें सिखायी. उन्हीं भगवान के मंदिर में मूरत है. हम सब उनको धोक देते हैं, ठीक करते हैं और उनसे क्या चाहिये ?

मैं बोला, हम सब तो यह समझते थे कि मंदिर के भगवान सब कुछ कर सकते हैं, और अम्मा, जब भूल से मैं उनकी तरफ पीठ कर देता था तो रात को बड़े बड़े डरावने सपने आते थे. ऐसा क्यों होता था ?

अम्मा बोली, डरोगे तो डरावने सपने आवेंगे, किसी को डराओगे तो डरावने सपने आवेंगे. किसी को डराने की सोचोगे तो डरावने सपने आवेंगे. जो सपने डरावने तुम्हें आते वह डरने से आते.

[illegible] ہیں [illegible] ہو سکتا ہے۔ اپنے لالہ جی کو تم روز دیکھتے ہو ان سے تھوڑا بہت کرتے بھی ہو، پر بھگوان کو تم نے کبھی نہیں دیکھا، ان کا نام سنا ہے، ان کی کتھا سنی ہے، اپنے لالہ جی سے اور مجھ سے تم نے بھجن سیکھے ہیں، پرارتھنا سیکھی ہے، بھگوان کی مورتیوں کو ڈھوک دینا سیکھا ہے، پر سب سننا سیکھا ہے۔ یہ سنی سیکھی باتیں تمہارے دل سے نکل سکتی ہیں، اگر تم کسی کو مورتی سے پاؤں لگاتے یا بری طرح الٹتے پلٹتے دیکھ لو۔

میں بولا، اماں، مندر کے بھگوان ہمیں امتحان میں پاس نہیں کرا سکتے ؟

اماں بولی، نہیں کبھی نہیں کرا سکتے، امتحان میں پاس تو تم من لگا کر پڑھنے سے ہوگے، تمہارے لالہ جی تمہیں پڑھا کر پاس کرا سکتے ہیں۔ ان کی تصویر یا مورت تمہیں پاس نہیں کرا سکتی، کیونکہ وہ تمہیں پڑھا نہیں سکتی۔ تم اپنے لالہ جی کی تصویر کو نمسکار کر کے خود خوش ہو سکتے ہو، مجھے خوش کر سکتے ہو، اچھے لڑکے سمجھے جا سکتے ہو، پر اس تصویر سے پیسے مانگ کر، پیسے نہیں پا سکتے۔ اس تصویر سے کچھ پوچھو تو جواب نہیں پا سکتے۔

اماں، تو بھگوان سے ہمیں کچھ نہیں ملےگا ؟

اماں بولی، کچھ کیوں نہیں ملے گا ؟ ان کی کتھا سننے سے تمہارے اندر تمہارا من بھلائی کرنے کے لئے زور مارےگا۔ اور اتنا ملنا کیا کم ہے ؟ دیکھو محلے کے سب لڑکے گالی دیتے ہیں، تم کبھی گالی نہیں دیتے، کیونکہ تمہارے پتاجی کبھی گالی نہیں دیتے، میں گالی نہیں دیتی۔ دیکھو، تمہارے اسکول کے لڑکے غلیل رکھتے ہیں، بے مطلب چڑیاں کوے مار ڈالتے ہیں، غلیل تمہارے پاس بھی ہے، تم ویسا نہیں کرتے، کیونکہ تمہارے لالہ جی ویسا نہیں کرتے، میں ویسا نہیں کرتی۔ تم اپنے گھر کے نوکر کو ویسا نہیں کرنے دیتے، ہم سب ایسا اس لئے نہیں کرتے کہ ہمارے بھگوان ایسا نہیں کرتے تھے۔ ہم نے یہ بات ان کی کتھا سن کر سیکھی، تمہیں سکھائی۔ انہیں بھگوان کے مندر میں مورت ہے۔ ہم سب ان کو ڈھوک دیتے ہیں، ٹھیک کرتے ہیں اور ان سے کیا چاہئے ؟

میں بولا، ہم سب تو یہ سمجھتے تھے کہ مندر کے بھگوان سب کچھ کر سکتے ہیں، اور اماں، جب بھول سے میں ان کی طرف پیٹھ کر دیتا تھا تو رات کو بڑے بڑے ڈراؤنے سپنے آتے تھے۔ ایسا کیوں ہوتا تھا ؟

اماں بولی، ڈروگے تو ڈراؤنے سپنے آئیں گے، کسی کو ڈراؤگے تو ڈراؤنے سپنے آئیں گے۔ کسی کو ڈرانے کی سوچو گے تو ڈراؤنے سپنے آئیں گے۔ جو سپنے ڈراؤنے تمہیں آتے وہ ڈرنے سے آتے۔

[illegible] भगवान से नहीं डरना चाहिये ?

अम्मा बड़े प्यार से बोलीं, भगवान से डरने का क्या काम. वह हमारा डर दूर करने के लिए पैदा हुए. उनकी कथा सुन सुन कर हमारे कितने ही डर भाग गये. भगवान से नहीं डरा करते. डरना चाहिये किसी को दुख पहुंचाने से, किसी का जी दुखाने से, किसी की चीज छीन लेने से. और इसी तरह के दूसरे काम करने से.

अम्मा की इन बातों का असर उस उमर में तो कुछ मालूम न हुआ. इन बातों के बाद भी सब काम वैसे ही चलते रहे, जैसे हमेशा चलते थे. हां, उमर पाकर उस बात में अंकुर फूटे और सत्य के समझने में खूब मदद मिली.

सत्य छिपाना असत्य है. पर अगर किसी का कोई भेद तुम्हारे पास है, और अगर उसे न छिपाकर किसी दूसरे से कह दो तो वह न छिपाना असत्य होगा. व्यवहार में जो सत्य आ रहा है, इस किताब में हमने उसको सच नाम दिया है. पर जो गहरी असलियत है उसको हम सत्य कहकर लिखते हैं. वही असलियत वाला सत्य छिपाने की चीज नहीं. सबको बताने की चीज है. मेरी मां ने अपनी बुद्धि के अनुसार जितना सत्य वह जानती थीं सब का सब बड़े मीठे और सांचे ढंग से मुझे समझा दिया. मैं सत्य समझ गया और कोई ऐसी बुराई मुझमें न आने पाई जो दूसरी तरह समझाने से आ जाती.

सत्य के मामले में किसी का ख्याल रखने से या मुरव्वत की परवाह करने से, या सिद्धान्तों पर अड़ जाने से काम नहीं चलता. सत्य हमारी बुद्धि के अनुकूल जंचना चाहिये.

जब सत्य खोजने के लिये निकले तो उसे हर जगह खोजना चाहिये. जहां वह मिले वहीं चले जाना चाहिये. उसके लेने में सुख मानना चाहिये. ईमानदारों का यही रास्ता है. ईमानदारी इसी राह गई है. बुद्धिमानी इसी राह चलकर कुछ पा सकी.

दुनिया में आदमी ने हर जगह सत्य की खोज की. इतिहास इन खोजियों की कथा से भरा पड़ा है. सत्य की खोज की खातिर आदमी आगे बढ़ता है, उसकी हर बात में फंस कर नहीं रह जाता. सोने का खोजी जमीन खोदता खोदता सोने के पास पहुंचेगा. बीच की चीजें छोड़ता चला जायगा. सत्य का खोजी इसी तरह आगे बढ़ता चला जायगा. पर रास्ते में आये असत्य को सत्य समझ कर अपनी खोज नहीं छोड़ बैठेगा.

तरह तरह के खोजनेवाले अपनी अपनी खोज में लगे हुए हैं. एक सत्य के बाद दूसरे सत्य पर जाते उन्हें

نہیں ہوا؟ تو اماں جی بھگوان سے نہیں ڈرنا چاہئے؟

اماں بڑے پیار سے بولیں، بھگوان سے ڈرنے کا کیا کام۔ وہ ہمارا ڈر دور کرنے کے لئے پیدا ہوئے۔ ان کی کتھا سن سن کر ہمارے کتنے ہی ڈر بھاگ گئے۔ بھگوان سے نہیں ڈرا کرتے۔ ڈرنا چاہئے کسی کو دکھ پہونچانے سے، کسی کا جی دکھانے سے، کسی کی چیز چھین لینے سے۔ اور اسی طرح کے دوسرے کام کرنے سے۔

اماں کی ان باتوں کا اثر اس عمر میں تو کچھ معلوم نہ ہوا۔ ان باتوں کے بعد بھی سب کام ویسے ہی چلتے رہے، جیسے ہمیشہ چلتے تھے۔ ہاں، عمر پاکر اس بات میں انکر پھوٹے اور ستیہ کے سمجھنے میں خوب مدد ملی۔

ستیہ چھپانا استیہ ہے۔ پر اگر کسی کا کوئی بھید تمہارے پاس ہے، اور اگر اسے نہ چھپاکر کسی دوسرے سے کہ دو تو یہ نہ چھپانا استیہ ہوگا۔ ویوہار میں جو ستیہ آ رہا ہے، اس کتاب میں ہم نے اسکو سچ نام دیا ہے۔ پر جو گہری اصلیت ہے اس کو ہم ستیہ کہ کر لکھتے ہیں۔ وہی اصلیت والا ستیہ چھپانے کی چیز نہیں۔ سب کو بتانے کی چیز ہے۔ میری ماں نے اپنی بدھی کے انوسار جتنا ستیہ وہ جانتی تھیں سب کا سب بڑے میٹھے اور سیدھے ڈھنگ سے مجھے سمجھا دیا۔ میں ستیہ سمجھ گیا اور کوئی ایسی برائی مجھ میں نہ آنے پائی جو دوسری طرح سمجھانے سے آ جاتی۔

ستیہ کے معاملے میں کسی کا خیال رکھنے سے یا مروت کی پرواہ کرنے سے، یا سدھانتوں پر اڑ جانے سے کام نہیں چلتا۔ ستیہ ہماری بدھی کے انوکول جنچنا چاہئے۔

جب ستیہ کھوجنے کے لئے نکلے تو اسے ہر جگہ کھوجنا چاہئے۔ جہاں وہ ملے وہیں چلے جانا چاہئے۔ اس کے لینے میں سکھ ماننا چاہئے۔ ایمانداروں کا یہی راستہ ہے۔ ایمانداری اسی راہ گئی ہے۔ بدھیمانی اسی راہ چل کر کچھ پا سکی۔

دنیا میں آدمی نے ہر جگہ ستیہ کی کھوج کی۔ اتہاس ان کھوجیوں کی کتھا سے بھرا پڑا ہے۔ ستیہ کی کھوج کی خاطر آدمی آگے بڑھتا ہے، اس کی ہر بات میں پھنس کر نہیں رہ جاتا۔ سونے کا کھوجی زمین کھودتا کھودتا سونے کے پاس پہنچیگا۔ بیچ کی چیزیں چھوڑتا چلا جائیگا۔ ستیہ کا کھوجی اسی طرح آگے بڑھتا چلا جائیگا۔ پر راستے میں آئے استیہ کو ستیہ سمجھ کر اپنی کھوج نہیں چھوڑ بیٹھیگا۔

طرح طرح کے ڈھونڈنے والے اپنی اپنی کھوج میں لگے ہوئے ہیں۔ ایک ستیہ کے بعد دوسرے ستیہ پر جاتے انہیں

बात छिपाकर नहीं होती. वह सब वस्तु के सत्य का खोज करते हैं, और जो बातें की बात उनके हाथ लगती है वह दुनिया को दे डालते हैं. ऐसा करने से उनका साहस और बढ़ जाता है.

जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, वह क्या कह गये हैं? और जो आज हैं उन के क्या विश्वास हैं? सत्य के खोजी इन सब को ज्यों का त्यों नहीं मान लेते. उन सब बातों को अपनी कसौटी पर कसते हैं. ईमानदारी से उन बातों के बारे में अपने विचार सब के सामने रख देते हैं. जो सत्य के मित्र हैं ध्यान से वह उनकी सुनते हैं. जो सत्य के शत्रु हैं वह उन की बात न खुद सुनते हैं न औरों को सुनने देते हैं. जो ऐसा करते हैं उन को स्वार्थी समझना चाहिये. और यह समझना चाहिये कि वह भलाई की पगड़ी बांधकर दुनिया को धोके में रखना चाहते हैं.

यह कहना कि मेरा सोना ऐसा है, कि मैं इसे कभी आग में नहीं रखने दूंगा, यह बताता है कि सोना खरा नहीं है. वैसे ही किसी का यह कहना कि मेरे सिद्धान्त और मेरे ग्रंथ इतने पवित्र हैं और ऐसे आदमी के कहे हुए हैं जो सब कुछ जानते थे, इसलिये मैं किसी को उन सिद्धान्तों के विरुद्ध में कुछ न कहने दूंगा, इस बात का सबूत है कि वह सिद्धान्त खोटे हैं. इसी से परीक्षा के बिना उन्हें खरे और पवित्र कहलवाना उन ग्रन्थों की इज्जत बढ़ाना नहीं, उनके बारे में संदेह पैदा करना है.

सोना सजाता है, सजता नहीं. सत्य सजाता है, सजता नहीं. सत्य को सजाना सत्य को लजाना है.

—भगवानदीन

संस्कृत साहित्य के मुसलिम पंडित

(अली अकबर)

"ज्ञान हासिल करो चाहे उसकी खोज में तुम्हें चीन ही क्यों न जाना पड़े."—मुहम्मद

हिन्दुस्तान और इसलाम से पहले के अरब में व्योपारी नाता.

इतिहास के सफों से इसका काफी सबूत मिलता है कि मुसलमानों ने संस्कृत की सरपरस्ती की लेकिन इस बात पर अभी तक बहुत कम रोशनी पड़ी है कि कहां तक मुसलमान सुल्तानों और पंडितों ने संस्कृत को अपनाया, उसके साहित्य पर अपना अधिकार जमाया

...تا جھوٹ نہیں ... سب ... استعمال کرتے ہیں اور جو ... کی بات اُن کے ہاتھ لگتی ہے وہ دنیا کو دے ڈالتے ہیں۔ ایسا کرنے سے اُن کا ساہس اور بڑھ جاتا ہے۔

جو اب اس دنیا میں نہیں ہیں، وہ کیا کہہ گئے ہیں؟ اور جو آج ہیں اُن کے کیا وشواس ہیں؟ ستیہ کے کھوجی اِن سب کو جوں کا توں نہیں مان لیتے۔ اِن سب باتوں کو اپنی کسوٹی پر کستے ہیں۔ ایمانداری سے اُن باتوں کے بارے میں اپنے وچار سب کے سامنے رکھ دیتے ہیں۔ جو ستیہ کے متر ہیں دھیان سے وہ اُن کی سنتے ہیں۔ جو ستیہ کے شترو ہیں وہ اُن کی بات نہ خود سنتے ہیں نہ اوروں کو سننے دیتے ہیں۔ جو ایسا کرتے ہیں اُن کو سوارتھی سمجھنا چاہئے۔ اور یہ سمجھنا چاہئے کہ وہ بھلائی کی پگڑی باندھ کر دنیا کو دھوکے میں رکھنا چاہتے ہیں۔

یہ کہنا کہ میرا سونا ایسا ہے، کہ میں اسے کبھی آگ میں نہیں رکھنے دوں گا، یہ بتاتا ہے کہ سونا کھرا نہیں ہے۔ ویسے ہی کسی کا یہ کہنا کہ میرے سدھانت اور میرے گرنتھ اتنے پوتر ہیں اور ایسے آدمی کے کہے ہوئے ہیں جو سب کچھ جانتے تھے، اس لئے میں کسی کو اُن سدھانتوں کے ورودھ میں کچھ نہ کہنے دوں گا، اس بات کا ثبوت ہے کہ وہ سدھانت کھوٹے ہیں۔ اِسی سے پریکشا کے بنا اُنہیں کھرے اور پوتر کہلوانا اُن گرنتھوں کی عزت بڑھانا نہیں، اُن کے بارے میں سندیہ پیدا کرنا ہے۔

سونا سجاتا ہے، سجتا نہیں۔ ستیہ سجاتا ہے، سجتا نہیں۔ ستیہ کو سجانا ستیہ کو لجانا ہے۔

—بھگوان دین

سنسکرت ساہتیہ کے مسلم پنڈت

(علی اکبر)

"گیان حاصل کرو چاہے اُس کی کھوج میں تمہیں چین ہی کیوں نہ جانا پڑے۔"—محمد۔

ہندوستان اور اسلام سے پہلے کے عرب میں بیوپاری ناتا۔

اتہاس کے صفحوں سے اِس کا کافی ثبوت ملتا ہے کہ مسلمانوں نے سنسکرت کی سرپرستی کی لیکن اس بات پر ابھی تک بہت کم روشنی پڑی ہے کہ کہاں تک مسلمان سلطانوں اور پنڈتوں نے سنسکرت کو اپنایا، اُن کے ساہتیہ پر اپنا اختیار جتایا

और उसके [illegible] थी. इस लेख में थोड़े से में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि संस्कृत के कौन कौन से मुसलमान पंडित हुए और मुसलमानों ने किस तरह हिन्दू कल्चर और संस्कृत की सराहना की.

इस्लाम के पैदा होने से पहले भी अरब लोग हिन्दुस्तान से अनजान नहीं थे, और उसे 'अलहिन्द' कहा करते थे. अरब हिन्दुस्तान की तलवार की बहुत तारीफ़ किया करते थे और इस्लाम से पहले की अरबी कविताओं में हिन्दी तलवार का ज़िक्र कहीं न कहीं ज़रूर आ जाता था. पूरी तरह से यह बात साबित हो चुकी है कि इस्लाम से पहले के अरब हिन्दुस्तान से गहरे व्योपारी सम्बन्ध रखते थे और इस्लाम से पहले ही बहुत से अरबी सौदागर हिन्दुस्तान के पच्छिमी समुन्द्री किनारे पर आ कर बस गए थे और इस किनारे का नाम 'मालाबार' रख दिया था. सन 571 में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद के असर के फैलते ही अरब में नई सुबह की नई किरनें फूट पड़ीं, लोगों में ज्ञान हासिल करने की तड़प और हिम्मत पैदा हो गई और अरब लोग ज्ञान की खोज में दुनिया के दूर-दूर बसे देशों में फैल गए. हिन्दुस्तान में उन्हें संस्कृत साहित्य का अथाह ख़ज़ाना मिला और वह उसे अपनाने में लग गए. कुछ लोगों का कहना है कि वैदिक ही संस्कृत ज्ञान की वह शाखा है जिधर सबसे पहले अरबों ने ध्यान दिया. दुख की बात है कि ख़िलाफ़त के शुरू शुरू के ज़मानों में संस्कृत से अनुवाद किया हुआ अरबी साहित्य अब बहुत कम मिलता है फिर भी पुराने आंकड़ों से पता चलता है कि ज्योतिष, संगीत, खेती बाड़ी और धातु से ताल्लुक़ रखने वाली बहुत सी किताबों का उस ज़माने में संस्कृत से अरबी में अनुवाद किया गया. इससे साफ़ पता लगता है कि अनुवादक संस्कृत और अरबी दोनों भाषाओं के ज़रूर पूरे पंडित रहे होंगे. सबसे मज़े की बात यह है कि मुसलमानों ने 712 में मुहम्मद बिन क़ासिम के हमले से पहले ही साहित्य के यह सब रत्न अपना लिये थे.

अब्बासी ख़िलाफ़त के युग में मुसलमानों ने पूरब की हिकमत समझने के लिये संस्कृत को साधन बनाया.

सिन्ध की जीत के लगभग चालीस साल बाद सन 750 में दमिश्क़ में उमैया ख़िलाफ़त का ख़ात्मा हो गया और बग़दाद में अब्बासी ख़िलाफ़त क़ायम हुई. 'अलिफ़ लैला' का मशहूर शहर बग़दाद ज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया. दूसरा केन्द्र स्पेन का एक शहर क़ारडोवा था. संस्कृत ही ऐसी भाषा थी जिसमें पूरब के सारे ज्ञान भंडार भरे पड़े थे. इसलिए मुसलमानों ने ज़्यादा से ज़्यादा संस्कृत

اور اُس کے پرچار میں سہائتا دی . اس لیکھ میں تھوڑے سے میں یہ دکھانے کی کوشش کی گئی ہے کہ سنسکرت کے کون کون سے مسلمان پنڈت ہوئے اور مسلمانوں نے کس طرح ہندو کلچر اور سنسکرتی کی سراہنا کی .

اسلام کے پیدا ہونے سے پہلے بھی عرب لوگ ہندستان سے انجان نہیں تھے اور اسے ' الہند ' کہا کرتے تھے . عرب ہندستان کی تلوار کی بہت تعریف کیا کرتے تھے اور اسلام سے پہلے کی عربی کویتاؤں میں ہندی تلوار کا ذکر کہیں نہ کہیں ضرور آجاتا تھا . پوری طرح سے یہ بات ثابت ہو چکی ہے کہ اسلام سے پہلے کے عرب ہندستان سے گہرے بیوپاری سمبندھ رکھتے تھے اور اسلام سے پہلے ہی بہت سے عربی سوداگر ہندستان کے پچھمی سمندری کنارے پر آکر بس گئے تھے اور اس کنارے کا نام ' مالا بار ' رکھ دیا تھا . سن 571 میں اسلام کے پیغمبر حضرت محمد کے اثر کے پھیلتے ہی عرب میں نئی صبح کی نئی کرنیں پھوٹ پڑیں' لوگوں میں گیان حاصل کرنے کی تڑپ اور ہمت پیدا ہوگئی اور عرب لوگ گیان کی کھوج میں دنیا کے دور دور بسے دیشوں میں پھیل گئے . ہندستان میں انہیں سنسکرت ساہتیہ کا اتھاہ خزانہ ملا اور وہ اُسے اپنانے میں لگ گئے . کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ ویدک ہی سنسکرت گیان کی وہ شاخ ہے جدھر سب سے پہلے عربوں نے دھیان دیا . دکھ کی بات ہے کہ خلافت کے شروع شروع کے زمانوں میں سنسکرت سے انوواد کیا ہوا عربی ساہتیہ اب بہت کم ملتا ہے پھر بھی پرانے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ جیوتش' سنگیت' کھیتی باڑی اور دھات سے تعلق رکھنے والی بہت سی کتابوں کا اُس زمانے میں سنسکرت سے عربی میں انوواد کیا گیا . اس سے صاف پتہ لگتا ہے کہ انوادک سنسکرت اور عربی دونوں بھاشاؤں کے ضرور پورے پنڈت رہے ہونگے . سب سے مزے کی بات یہ ہے کہ مسلمانوں نے 712 میں محمد بن قاسم کے حملے سے پہلے ہی ساہتیہ کے یہ سب رتن اپنا لئے تھے .

عباسی خلافت کے یگ میں مسلمانوں نے پورب کی حکمت سمجھنے کے لئے سنسکرت کو سادھن بنایا .

سندھ کی جیت کے لگ بھگ چالیس سال بعد سن 750 میں دمشق میں امیہ خلافت کا خاتمہ ہوگیا اور بغداد میں عباسی خلافت قائم ہوئی . 'الف لیلہ' کا مشہور شہر بغداد گیان کا سب سے بڑا کیندر بن گیا. دوسرا کیندر اسپین کا ایک شہر قارڈوا تھا. سنسکرت ہی ایسی بھاشا تھی جس میں پورب کے سارے گیان بھنڈار بھرے پڑے تھے . اس لئے مسلمانوں نے زیادہ سے زیادہ سنسکرت

सीखने की तरफ़ ध्यान दिया. इस ज़माने तक सिन्ध में एक अरब राज क़ायम हो चुका था और अब्बासी ख़िलाफ़त की राजधानी बग़दाद और हिन्दुस्तान एक दूसरे के बहुत नज़दीक आ गए थे. अब्बासी ख़लीफ़ा, विज्ञान और कला के बहुत बड़े सरपरस्त थे. 773 में बग़दाद के उस समय के ख़लीफ़ा अलमंसूर को एक हिन्दुस्तानी यात्री ने ब्रह्मगुप्त की लिखी हुई ज्योतिष की दो संस्कृत किताबें 'ब्रह्म सिद्धान्त' और 'खण्डा खाद्यका' भेंट की थी. कुछ पंडितों का कहना है कि इन दोनों किताबों का ख़लीफ़ा की आज्ञा से मुहम्मद बिन इब्राहीम फ़िज़ारी ने संस्कृत से अरबी में अनुवाद किया और इन्हीं किताबों के असर से इस्लाम में ज्योतिष की वैज्ञानिक सीख की शुरुआत हुई. यह भी कहा जाता है कि महान ज्योतिषी और हिसाबिया मुहम्मद बिनमूसा की ज्योतिष कुँडली की बुनियाद भी इन्हीं किताबों पर है, लेकिन कुछ पंडितों की राय है कि ख़लीफ़ा मामून के हुक्म से मुहम्मद बिन मूसा ने 'ब्रह्म सिद्धांत' ही का अनुवाद संस्कृत से अरबी में किया था. 'कलेलादमना' अरबी गद्य की सबसे पुरानी किताब समझी जाती है. ख़लीफ़ा हारून के ज़माने में पहलवी भाषा से ईरान के एक नए मुसलमान अब्दुल्ला बिन मुक़फ़्फ़ा ने यह किताब अरबी में अनुवाद की थी, और हकीम बुर्ज़ू ने इस किताब को मशहूर राजा नौशेरवां के युग में संस्कृत से पहलवी भाषा में अनुवाद किया था. अरबी अनुवाद बहुत ही फैला क्योंकि पहलवी अनुवाद और संस्कृत की असली किताब ग़ायब हो गई थी.

'कलेला दमना' की शोहरत का इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि लगभग चालीस भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ जिस में योरपी भाषाओं के अलावा हिब्रू, तुर्की, एबिसीनिक भाषा, आईसलैंडी और मलाया की भाषा भी शामिल हैं. इसी किताब पर आधार करके 'अयार दानिश' नामी किताब लिखी गई थी. उसी का एक दूसरा अनुवाद मौलाना हुसैन वाइज़ अलकाशफ़ी ने भी किया था जिसका नाम 'अनवार सुहेली' है. यही क़िस्सा कुछ 'सिन्द बाद' का भी है. पहले इस किताब का संस्कृत से पहलवी में अनुवाद किया गया और बाद में पहलवी से इसका अनुवाद अरबी में हुआ. अरब के मशहूर इतिहासकार मसूदी ने लिखा है कि 'किताबुलसिंद बाद' हिन्दुस्तान की पैदावार है. फ़ारसी का 'सिंदबाद नामा' 'सीरिया का सिन्दबाद' अरबी की 'सात वज़ीर' हिब्रू का सिन्द बाद, यूनान की सेन्टीपस और योरप के और क़िस्से कहानियों की किताबें इसी संस्कृत किताब से मिलती जुलती हैं. इन किताबों की एक रंगी से पता चलता है कि मुसलमानों ने कितना गहरा ध्यान संस्कृत भाषा पर दिया और उसके प्रचार की कितनी ज़बरदस्त कोशिश की.

سیکھنے کی طرف دھیان دیا۔ اس زمانے تک سندھ میں ایک عرب راج قائم ہو چکا تھا اور عباسی خلافت کی راجدھانی بغداد اور ہندستان ایک دوسرے کے بہت نزدیک آگئے تھے۔ عباسی خلیفہ، وگیان اور کلا کے بہت بڑے سرپرست تھے۔ 773 میں بغداد کے اس سمے کے خلیفہ المنصور کو ایک ہندستانی یاتری نے برہم گپت کی لکھی ہوئی جیوتش کی دو سنسکرت کتابیں 'برہم سدھانت' اور 'کھنڈ کھادیہ' بھینٹ کی تھیں۔ کچھ پنڈتوں کا کہنا ہے کہ ان دونوں کتابوں کا خلیفہ کی آگیا سے محمد بن ابراہیم فزاری نے سنسکرت سے عربی میں انوواد کیا اور انھیں کتابوں کے اثر سے اسلام میں جیوتش کی ویگیانک سیکھ کی شروعات ہوئی۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ مہان جیوتشی اور حسابیہ محمد بن موسیٰ کی جیوتش کنڈلی کی بنیاد بھی انھیں کتابوں پر ہے، لیکن کچھ پنڈتوں کی رائے ہے کہ خلیفہ مامون کے حکم سے محمد بن موسیٰ نے 'برہم سدھانت' ہی کا انوواد سنسکرت سے عربی میں کیا تھا۔ 'کلیلہ ودمنہ' عربی گدیہ کی سب سے پرانی کتاب سمجھی جاتی ہے۔ خلیفہ ہارون کے زمانے میں پہلوی بھاشا سے ایران کے ایک نئے مسلمان عبداللہ بن مقفع نے یہ کتاب عربی میں انوواد کی تھی، اور حکیم برزو نے اس کتاب کو مشہور راجہ نوشیرواں کے یگ میں سنسکرت سے پہلوی بھاشا میں انوواد کیا تھا۔ عربی انوواد بہت ہی پھیلا کیونکہ پہلوی انوواد اور سنسکرت کی اصلی کتاب غائب ہوگئی تھی۔ 'کلیلہ ودمنہ' کی شہرت کا اس سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ لگ بھگ چالیس بھاشاؤں میں اس کا انوواد ہوا جس میں یورپی بھاشاؤں کے علاوہ ہیبرو، ترکی، ایبی سینک بھاشا، آئس لینڈی اور ملایا کی بھاشا بھی شامل ہیں۔ اسی کتاب پر آدھار کر کے 'عیار دانش' نامی کتاب لکھی گئی تھی۔ اسی کا ایک دوسرا انوواد مولانا حسین واعظ الکاشفی نے بھی کیا تھا جس کا نام 'انوار سہیلی' ہے۔ یہی قصہ کچھ 'سندباد' کا بھی ہے۔ پہلے اس کتاب کا سنسکرت سے پہلوی میں انوواد کیا گیا اور بعد میں پہلوی سے اس کا انوواد عربی میں ہوا۔ عرب کے مشہور اتہاس کار مسعودی نے لکھا ہے کہ 'کتاب السندباد' ہندستان کی پیداوار ہے۔ فارسی کا 'سندباد نامہ' سیریا کا 'سند باد' عربی کی 'سات وزیر' ہیبرو کا سند باد' یونان کی سینٹی پس اور یورپ کے اور قصے کہانیوں کی کتابیں اسی سنسکرت کتاب سے ملتی جلتی ہیں۔ ان کتابوں کی ایک رنگی سے پتہ چلتا ہے کہ مسلمانوں نے کتنا گہرا دھیان سنسکرت بھاشا پر دیا اور اس کے پرچار کی کتنی زبردست کوشش کی۔

बैतुल हुक्मा (यानी ज्ञान का घर) की बुनियाद.

खलीफा अलमामून ने 'बैतुल हुक्मा' नाम की एक संस्था बग़दाद में क़ायम की और यही संस्था मुसलमानों के ज्ञान हासिल करने का केन्द्र बनी. यहीं कला और विज्ञान की हर शाखा पर अच्छी से अच्छी किताबें दुनिया भर की भाषाओं से अरबी और फ़ारसी में अनुवाद की गई और बाद में उनका अनुवाद योरपी भाषाओं में करके कला और विज्ञान को योरप में फैलाया गया. संस्कृत के प्रचार में दूसरे ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में ख़लीफ़ा मामून का सबसे ज़ियादा हिस्सा है. इसी तरह महमूद ग़ज़नवी के ज़माने में भी संस्कृत साहित्य की ज्ञान हिन्दुस्तान में मुसलमान पंडित आये और उन्होंने संस्कृत को बढ़ाने में बहुत काम किया. मुसलमान पंडित ज्ञान की तड़प और पंडिताई के लिये बहुत मशहूर थे और उन्होंने संस्कृत भाषा पर अपना पूरा अधिकार जमा लिया था. मशहूर पंडित अबूरैहान बेरूनी सुलतान महमूद ग़ज़नवी के साथ हिन्दुस्तान आये थे. हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में जानकारी देने वाले पंडितों में उनका जवाब नहीं है. अलबेरूनी ने थोड़े अरसे में संस्कृत भाषा का पूरा ज्ञान हासिल कर लिया और संस्कृत के बड़े बड़े ग्रंथ अरबी और फ़ारसी में अनुवाद कर डाले और अरबी और फ़ारसी की ख़ास किताबों का तरजुमा संस्कृत में कर डाला. इसी पंडित ने अरबी और फ़ारसी के शब्दों और जुमलों का हू बहू संस्कृत में तरजुमा करने की कोशिश की. इस्लामी कलमें का उन्होंने अनुवाद किया था—अव्यक्त एकम मुहम्मद अवतार—अलबेरूनी की किताबों में हिन्दुस्तान से ताल्लुक़ रखने वाली किताब 'तारीख़ुल हिन्द' बहुत ही नायाब किताब है. इससे हिन्दू संस्कृति और कलचर के बारे में काफ़ी जानकारी मिलती है. और इस किताब के पढ़ने से उस समय की हालत मालूम होती है. लेखक ने यहां आ कर हिन्दू रीत रिवाज और संस्थाओं की हमदर्दी के साथ जांच पड़ताल की और उनका वर्णन 'अल हिन्द' में लिख कर छोड़ गया. अलबेरूनी इस मैदान में अकेला नहीं था. कहा जाता है कि मुहम्मद बिन इसराईल भी इसी मिशन को लेकर हिन्दुस्तान आया था और उसने ज्योतिष का ज्ञान हासिल किया था.

ख़िलजी और तुग़लक़ राज और संस्कृत साहित्य.

इस बीच में गुलाम ख़ानदान का राज ख़त्म हुआ और उसके बाद ख़िलजी बादशाहों का दौर दौरा हुआ. इनका भी असर ख़त्म हुआ और तुग़लक़ सलतनत क़ायम हो गई. यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि तुग़लक़ बादशाह मुहम्मद तुग़लक़ ने न सिर्फ़ संस्कृत साहित्य की

بیت الحکما (یعنی گیان کا گھر) کی بنیاد .

خلیفہ المامون نے ' بیت الحکما ' نام کی ایک سنستھا بغداد میں قائم کی اور یہی سنستھا مسلمانوں کے گیان حاصل کرنے کا کیندر بنی . یہیں کلا اور وگیان کی ہر شاخ پر اچھی سے اچھی کتابیں دنیا بھر کی بھاشاؤں سے عربی اور فارسی میں انوواد کی گئیں اور بعد میں ان کا انوواد یورپی بھاشاؤں میں کر کے کلا اور وگیان کو یورپ میں پھیلایا گیا . سنسکرت کے پرچار میں دوسرے خلیفاؤں کے مقابلے میں خلیفہ مامون کا سب سے زیادہ حصہ ہے . اسی طرح محمود غزنوی کے زمانے میں بھی سنسکرت ساہتیہ کی گیان ہندستان میں مسلمان پنڈت آئے اور انہوں نے سنسکرت کو بڑھانے میں بہت کام کیا . مسلمان پنڈت گیان کی تڑپ اور پنڈتائی کے لئے بہت مشہور تھے اور انہوں نے سنسکرت بھاشا پر اپنا پورا ادھیکار جمالیا تھا. مشہور پنڈت ابوریحان بیرونی سلطان محمود غزنوی کے ساتھ ہندستان آئے تھے . ہندستان کے سمبندھ میں جانکاری دینے والے پنڈتوں میں ان کا جواب نہیں ہے . البیرونی نے تھوڑے عرصے میں سنسکرت بھاشا کا پورا گیان حاصل کر لیا اور سنسکرت کے بڑے بڑے گرنتھ عربی اور فارسی میں انوواد کر ڈالے اور عربی اور فارسی کی خاص کتابوں کا ترجمہ سنسکرت میں کر ڈالا . اسی پنڈت نے عربی اور فارسی کے شبدوں اور جملوں کا ہوبہو سنسکرت میں ترجمہ کرنے کی کوشش کی . اسلامی کلمے کا انہوں نے انوواد کیا تھا— اویکتیہ ایکم محمد اوتار— البیرونی کی کتابوں میں ہندستان سے تعلق رکھنے والی کتاب ' تاریخ الہند ' بہت ہی نایاب کتاب ہے . اس سے ہندو سنسکرتی اور کلچر کے بارے میں کافی جانکاری ملتی ہے . اور اس کتاب کے پڑھنے سے اس سمے کی حالت معلوم ہوتی ہے . لیکھک نے یہاں آکر ہندو ریت رواج اور سنستھاؤں کی ہمدردی کے ساتھ جانچ پڑتال کی اور اس کا ورنن ' الہند ' میں لکھ کر چھوڑ گیا . البیرونی اس میدان میں اکیلا نہیں تھا . کہا جاتا ہے کہ محمد بن اسرائیل بھی اسی مشن کو لے کر ہندستان آیا تھا اور اس نے جیوتش کا گیان حاصل کیا تھا .

خلجی اور تغلق راج اور سنسکرت ساہتیہ .

اس بیچ میں غلام خاندان کا راج ختم ہوا اور اس کے بعد خلجی بادشاہوں کا دور دورا ہوا . ان کا بھی اثر ختم ہوا اور تغلق سلطنت قائم ہوگئی . یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ تغلق بادشاہ محمد تغلق نے نہ صرف سنسکرت ساہتیہ کی

सरस्वती की बल्कि वह खुद संस्कृत का मशहूर कवि और पंडित था. अलबेरूनी और इब्न बतूता दोनों ने लिखा है: सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ अकाल से परेशान हो कर अपनी फ़ौज फाटक समेत गंगा के किनारे क़न्नौज के क़रीब आ कर ठहर गया था. यहां पर एक शहर सा बस गया था. इसका नाम सुल्तान ने खुद ही 'स्वर्ग द्वारी' रख दिया. 'स्वर्ग द्वार' संस्कृत शब्द है और इससे पता चलता है कि संस्कृत के कलचर में सुल्तान को कितनी दिलचस्पी थी. अपनी गुजरात पर चढ़ाई का वर्णन खुद सुल्तान ने ही संस्कृत के अड़तीस श्लोकों में किया है. वह श्लोक आज भी मौजूद हैं. हिन्दी के मशहूर कवि जैन पर्वसूरी ने अपनी कविता में सुल्तान के संस्कृत के ज्ञान की सराहना की है. फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ को भी नगर कोट की चढ़ाई के मौक़े पर बहुत सी संस्कृत किताबें मिली थीं और उसने हुक्म दिया था कि वह सब फ़ारसी में अनुवाद कर दी जायें. अज़ीज़ुद्दीन ख़ालिद ख़ानी ने इन किताबों का अनुवाद किया था. अनुवाद की इस ग्रन्थ माला का नाम उसने 'दलायले फ़ीरोज़ शाही' रखा था. इसी के बाद उसने वाईलाजी की एक संस्कृत किताब का अनुवाद फ़ारसी में किया. जानवरों के इलाज से ताल्लुक़ रखने वाली एक दूसरी संस्कृत किताब का अनुवाद भी फ़ारसी में हुआ था. इस किताब के "दो शब्द" में अनुवादक ने लिखा है—"यह किताब सुल्तान ग़यासुद्दीन खिलजी के हुक्म से अनुवाद की गई है"—इस अनुवाद से पहले बग़दाद में इसी मज़मून पर एक दूसरी संस्कृत किताब का अनुवाद किया जा चुका था जिसका नाम 'किताब अलबतरा' है 'मजमउल तवारीख़' के लेखक ने लिखा है कि उनकी नज़र से हिन्दुओं के पुराने दर्शन का एक फ़ारसी अनुवाद गुज़रा जिसे अबुल हसन अली इब्न मुहम्मद अलजली न 417 हिजरी में किया था. हिन्दुस्तान की राजकाजी हालत रोज़ बदलती रही और एक के बाद दूसरी सलतनत बनती और मिटती रही लेकिन इस हालत के होते हुये भी मुसलमान सुलतानों ने संस्कृत को कभी नहीं भुलाया.

बंगाल के मुस्लिम सुलतान और संस्कृत साहित्य.

1398 में तैमूर लंग न हिन्दुस्तान पर हमला किया और दो सौ बरस पुरानी तुग़लक़ सलतनत के परख़चे उड़ा दिये. इस हमले से पहले ही तुग़लक़ सलतनत में बहुत सी खुद मुख़्तार रियासतें बन गई थीं—मालवा, गुजरात, बंगाल, जौनपुर, ख़ानदेश और दक्खिन हिन्दुस्तान में बहमनी राज और विजय नगर राज. पंद्रहवीं सदी में हिन्दुस्तान कई टुकड़ों में बंटा हुआ था. हिन्दुस्तानी ज्ञान भंडार को बढ़ाने में उस समय बंगाल ने बहुत बड़ा

سرسوتی کی بلکہ وہ خود سنسکرت کا مشہور کوی اور پنڈت تھا۔ البیرونی اور ابن بطوطہ دونوں نے لکھا ہے: سلطان محمد تغلق اکال سے پریشان ہوکر اپنی فوج پھاٹک سمیت گنگا کے کنارے قنوج کے قریب آکر ٹھہر گیا تھا۔ یہاں پر ایک شہر سا بس گیا تھا۔ اس کا نام سلطان نے خود ہی 'سورگ دواری' رکھ دیا۔ 'سورگ دوار' سنسکرت شبد ہے اور اس سے پتہ چلتا ہے کہ سنسکرت کے کلچر میں سلطان کو کتنی دلچسپی تھی۔ اپنی گجرات پر چڑھائی کا ورنن خود سلطان نے ہی سنسکرت کے اڑتیس اشلوکوں میں کیا ہے۔ یہ اشلوک آج بھی موجود ہیں۔ ہندی کے مشہور کوی جین پرو سوری نے اپنی کویتا میں سلطان کے سنسکرت کے گیان کی سراہنا کی ہے۔ فیروز شاہ تغلق کو بھی نگر کوٹ کی چڑھائی کے موقعے پر بہت سی سنسکرت کتابیں ملی تھیں اور اس نے حکم دیا تھا کہ یہ سب فارسی میں انوواد کردی جائیں۔ عزیزالدین خالد خانی نے ان کتابوں کا انوواد کیا تھا۔ انوواد کی اس گرنتھ مالا کا نام اس نے 'دلائل فیروز شاہی' رکھا تھا۔ اس کے بعد اس نے بائلاجی کی ایک سنسکرت کتاب کا انوواد فارسی میں کیا۔ جانوروں کے علاج سے تعلق رکھنے والی ایک دوسری سنسکرت کتاب کا انوواد بھی فارسی میں ہوا تھا۔ اس کتاب کے ''دو شبد'' میں انووادک نے لکھا ہے—''یہ کتاب سلطان غیاث الدین خلجی کے حکم سے انوواد کی گئی ہے'' —اس انوواد سے پہلے بغداد میں اسی مضمون پر ایک دوسری سنسکرت کتاب کا انوواد کیا جاچکا تھا جس کا نام 'کتاب البطرا' ہے۔ 'مجمع التواریخ' کے لیکھک نے لکھا ہے کہ ان کی نظر سے ہندوؤں کے پرانے درشن کا ایک فارسی انوواد گزرا جسے ابوالحسن علی ابن محمد الجلی نے 417 ہجری میں کیا تھا۔ ہندوستان کی راجکاجی حالت روز بدلتی رہی اور ایک کے بعد دوسری سلطنت بنتی اور مٹتی رہی لیکن اس حالت کے ہوتے ہوئے بھی مسلمان سلطانوں نے سنسکرت کو کبھی نہیں بھلایا۔

بنگال کے مسلم سلطان اور سنسکرت ساہتیہ۔

1398 میں تیمورلنگ نے ہندوستان پر حملہ کیا اور دو سو برس پرانی تغلق سلطنت کے پرخچے اڑا دیئے۔ اس حملے سے پہلے ہی تغلق سلطنت میں بہت سی خودمختار ریاستیں بن گئی تھیں—مالوہ، گجرات، بنگال، جونپور، خاندیش اور دکھن ہندوستان میں بہمنی راج اور وجے نگر راج۔ پندرہویں صدی میں ہندوستان کئی ٹکڑوں میں بٹا ہوا تھا۔ ہندوستانی گیان بھنڈار کو بڑھانے میں اس سمے بنگال نے بہت بڑا

हिस्सा लिया. हुसैनी खानदान का राज कायम होने से बंगाल में एक नया युग शुरू हुआ, इस खानदान का पहला सुलतान अलाउद्दीन हुसैन था जो बहुत ही योग्य आदमी था और कला और इमारत की कला की सरपरस्ती करता था. इसी सुलतान ने 'श्री कृष्ण विजय' के लेखक मालाधर बसु को 'भागवती पुरान' का अनुवाद करने का आदेश दिया था. नुसरत शाह दूसरा बंगाली सुलतान है जिसे बंगाल के मशहूर कवि विद्यापती ने अपना एक गीत समर्पित किया है. इसी सुलतान के हुक्म से सब से पहले महा भारत बंगला भाषा में लिखी गई थी. कला और ज्ञान का प्रेम केवल सुलतानों का ही हिस्सा नहीं था. हुसैन शाह के सेना पति परगुल खां ने भी इस तरह की बहुत सी संस्कृत किताबों के अनुवाद करवाये हैं. परगुल खां को संस्कृत से इतना प्रेम था कि रोज वह और उसके दरबारी फेनी के परगुल महल (जिला नोआखाली, पूर्वी पाकिस्तान) इकट्ठा होते थे और कवीन्द्र से महा भारत का अनुवाद सुनते थे. इस सेनापति के लड़के छुटी खां ने भी श्री करनन्दी को प्रोत्साहन दिया कि वह संस्कृत से अनुवाद का काम जारी रखें.

जब छुटी खां चटागांव का गवर्नर हो गया तो उसने महा भारत के 'अश्व मेध पर्व' का श्री करनन्दी से अनुवाद करवाया. यह बात ध्यान देने के काबिल है कि मुसलमानों के राज में ही बंगाल में संस्कृत ज्ञान की दो शाखें फूटीं—नवस्मृति और नव न्याय. हुसैन शाह ने 'सत्य पीर' नाम का एक धर्म भी चलाया था. इस धर्म का मकसद हिन्दू और मुसलमानों को मिलाना था. 'सत्य' एक संस्कृत शब्द है जिसका मतलब है सच्चाई और 'पीर' एक फारसी शब्द है जिसके माने हैं साधु सन्त. 'सत्य पीर' वह धर्म था जिसको हिन्दू मुसलमान दोनों पूजा करते थे, अभी तक बंगाली साहित्य में 'सत्य पीर' की भक्ति में लिखी कवितायें मिलती हैं. चौदहवीं और पंद्रहवीं सदी में बंगाल में मजहब ने कई करवटें लीं. इब्नबतूता ने चौदहवीं सदी में बंगाल का दौरा किया था उसका कहना है कि फखरुद्दीन के युग में बंगाल में मुसलमान फकीरों के 150 मज़ार थे. इसी युग में इस्लाम और हिन्दू धर्म बहुत नजदीक आये और इस नजदीकी से ऐसी ताकतें पैदा हुईं जिन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को एक बनाने में बड़ा काम किया और हिन्दू धर्म पर एक नया रंग चढ़ा दिया. फिर विष्णु वाद ने बंगाल में काफी तरक्की की और चैतन्य रिशी के ज़माने में तो विष्णु वाद को चार चांद लग गये.

चैतन्य रिशी ने भक्ति का संदेश सुनाया और अपने असर दार व्यक्तित्व से अपने पैरवों की आत्मा में बिजली

حصہ لیا. حسینی خاندان کا راج قائم ہونے سے بنگال میں ایک نیا یگ شروع ہوا، اِس خاندان کا پہلا سلطان علاؤالدین حسین تھا جو بہت ہی یوگیہ آدمی تھا اور کلا اور عمارت کی کلا کی سرپرستی کرتا تھا. اسی سلطان نے 'شری کرشن وجے' کے لیکھک مالا دھر بسو کو 'بھگوتی پران' کا انوواد کرنے کا آدیش دیا تھا. نصرت شاہ دوسرا بنگالی سلطان ہے جسے بنگال کے مشہور کوی ودیاپتی نے اپنا ایک گیت سمرپت کیا ہے. اسی سلطان کے حکم سے سب سے پہلے مہابھارت بنگلہ بھاشا میں لکھی گئی تھی. کلا اور گیان کا پریم کیول سلطانوں کا ہی حصہ نہیں تھا. حسین شاہ کے سیناپتی پرگل خاں نے بھی اس طرح کی بہت سی سنسکرت کتابوں کے انوواد کروائے ہیں. پرگل خاں کو سنسکرت سے اتنا پریم تھا کہ روز وہ اور اس کے درباری فینی کے پرگل محل (ضلع نواکھالی، پوربی پاکستان) میں اکٹھا ہوتے تھے اور کویندر سے مہابھارت کا انوواد سنتے تھے. اس سیناپتی کے لڑکے چھٹی خاں نے بھی شری کرنندی کو پروتساہن دیا کہ وہ سنسکرت سے انوواد کا کام جاری رکھیں.

جب چھٹی خاں چٹاگاؤں کا گورنر ہوگیا تو اس نے مہابھارت کے 'اشومیدھ پرو' کا شری کرنندی سے انوواد کروایا. یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ مسلمانوں کے راج میں ہی بنگال میں سنسکرت گیان کی دو شاخیں پھوٹیں— نو سمرتی اور نو نیائے. حسین شاہ نے 'ستیہ پیر' نام کا ایک دھرم بھی چلایا تھا. اس دھرم کا مقصد ہندو اور مسلمانوں کو ملانا تھا. 'ستیہ' ایک سنسکرت شبد ہے جس کا مطلب ہے سچائی اور 'پیر' ایک فارسی لفظ ہے جس کے معنی ہیں سادھو سنت. 'ستیہ پیر' وہ دھرم تھا جس کی ہندو مسلمان دونوں پوجا کرتے تھے. ابھی تک بنگالی ساہتیہ میں 'ستیہ پیر' کی بھکتی میں لکھی کویتائیں ملتی ہیں. چودھویں اور پندرھویں صدی میں بنگال میں مذہب نے نئی کروٹیں لیں. ابن بطوطہ نے چودھویں صدی میں بنگال کا دورہ کیا تھا اُس کا کہنا ہے کہ فخرالدین کے یگ میں بنگال میں مسلمان فقیروں کے 150 مزار تھے. اسی یگ میں اسلام اور ہندو دھرم بہت نزدیک آئے اور اس نزدیکی سے ایسی طاقتیں پیدا ہوئیں جنہوں نے ہندو اور مسلمانوں کو ایک بنانے میں بڑا کام کیا اور ہندو دھرم پر ایک نیا رنگ چڑھا دیا. وشنوواد نے بنگال میں کافی ترقی کی اور چیتنیہ رشی کے زمانے میں تو وشنوواد کو چار چاند لگ گئے.

چیتنیہ رشی نے بھکتی کا سندیش سنایا اور اپنے اثردار ویکتتو سے اپنے پیروؤں کی آتما میں بجلی

[illegible] थी. कृष्ण जी का नाम सारे बंगाल पर छा गया. हर तबके के औरत और मर्द सब भेद भाव को छोड़ कर केवल [illegible] के झंडे के नीचे आ गये. सब के सब प्रेम के धागे में बंध कर एक हो गये थे. इन नई ताक़तों ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की. यह वह ज़माना था जब देहली की तुग़लक़ सलतनत की चूल हिल गई थी. थोड़े दिनों के लिये लोदी राज ने देहली का फिर असर क़ायम कर दिया. इस ख़ानदान के दूसरे सुलतान सिकन्दर लोदी ने संस्कृत की एक किताब 'आम महा वैद्यक' (इलाज और दवाओं का विज्ञान) का अनुवाद फ़ारसी में करवाया और इस फ़ारसी अनुवाद का नाम 'तिब्बे सिकन्दरी' रखा. लेकिन कुछ पंडितों का ख़्याल है कि 'तिब्बे सिकन्दरी' अनुवाद नहीं है बल्कि इसको बहुत से हकीमों ने मिल कर और बहुत सोच विचार के बाद सिकन्दर लोदी के ज़माने में लिखा था. इस उथल पुथल के ज़माने में भी मुसलमानों ने संस्कृत से अपनी दिलचस्पी कम नहीं की और संस्कृत से इस प्रेम को उसी तरह मुग़लों के सुपुर्द कर दिया.

संस्कृत साहित्य के बढ़ाने में मुग़ल सलतनत का हिस्सा.

1526 की पानीपत की लड़ाई ने हिन्दुस्तान की तारीख़ का रुख़ पलट दिया. बाबर ने एक राज की स्थापना की जिसका लगभग दो सौ बरस तक देश पर बहुत गहरा असर रहा. बाबर ख़ुद ज़ियादा दिनों हिन्दुस्तान पर राज न कर सका लेकिन इस थोड़े अरसे में भी हिन्दू दर्शनों का सिक्का उसके दिल पर जम गया था. बाबर के पोते अकबर ने कला और विज्ञान की ख़ूब सरपरस्ती की. इसके युग में हिन्दुस्तान में ख़ुशहाली छा गई.

1585 में सम्राट अकबर ने 'तारीख़े बदायूनी' के लेखक अब्दुल क़ादिर को वाल्मीकी रामायन का फ़ारसी तरजुमा करने का काम सौंपा. 1589 में यह अनुवाद पूरा हो गया. बदायूनी ने लिखा है कि 'अथर्वेद' का अनुवाद करने के लिये अकबर ने अब्दुल क़ादिर और दक्खिन के एक नये मुसलमान को मुक़र्रर किया. बाद को उसके अर्थ की बात न समझ कर अब्दुल क़ादिर ने इस ज़िम्मेदारी से अपना कंधा हल्का कर लिया और उनकी जगह पर हाजी इब्राहीम सरहिन्दी को अनुवाद करने का काम सौंप दिया गया. इसके बाद अकबर ने अब्दुल क़ादिर से इच्छा ज़ाहिर की कि वह 'सिंहासन बत्तीसी' का फ़ारसी अनुवाद कर डालें. इस अनुवाद का नाम 'ख़िरद अफ़्ज़ा नामा' रखा गया. 1582 में अकबर ने नक़ीब ख़ां और अब्दुल क़ादिर को महा भारत का फ़ारसी अनुवाद का काम सुपुर्द किया. अकबर महा भारत के अनुवाद

ہوا تھی۔ کرشن جی کا نام سارے بنگال پر چھا گیا۔ ہر طبقے کے عورت اور مرد سب بھید بھاؤ کو چھوڑ کر [illegible] رشی کے جھنڈے کے نیچے آگئے۔ سب کے سب پریم کے دھاگے میں بندھ کر ایک ہوگئے تھے۔ ان نئی طاقتوں نے ہندو اور مسلمانوں کے بیچ کی کھائی کو پاٹنے کی کوشش کی۔ یہ وہ زمانہ تھا جب دہلی کی تغلق سلطنت کی چول ہل گئی تھی۔ تھوڑے دنوں کے لئے لودی راج نے دہلی کا پھر اثر قائم کردیا۔ اس خاندان کے دوسرے سلطان سکندر لودی نے سنسکرت کی ایک کتاب 'اکر مہاویدک' (علاج اور دواؤں کا وگیان) کا انوواد فارسی میں کروالیا اور اس فارسی انوواد کا نام 'طب سکندری' رکھا۔ لیکن کچھ پنڈتوں کا خیال ہے کہ 'طب سکندری' انوواد نہیں ہے بلکہ اسے بہت سے حکیموں نے مل کر اور بہت سوچ وچار کے بعد سکندر لودی کے زمانے میں لکھا تھا۔ اس اتھل پتھل کے زمانے میں بھی مسلمانوں نے سنسکرت سے اپنی دلچسپی کم نہیں کی اور سنسکرت سے اس پریم کو اسی طرح مغلوں کے سپرد کر دیا۔

سنسکرت ساہتیہ کے بڑھانے میں مغل سلطنت کا حصہ

1526 کی پانی پت کی لڑائی نے ہندوستان کی تاریخ کا رخ پلٹ دیا۔ بابر نے ایک راج کی استھاپنا کی جس کا لگ بھگ دو سو برس تک دیش پر بہت گہرا اثر رہا۔ بابر خود زیادہ دنوں ہندوستان پر راج نہ کرسکا لیکن اس تھوڑے عرصے میں بھی ہندو درشنوں کا سکہ اس کے دل پر جم گیا تھا۔ بابر کے پوتے اکبر نے کلا اور وگیان کی خوب سرپرستی کی۔ اس کے یگ میں ہندوستان میں خوشحالی چھاگئی۔

1585 میں سمراٹ اکبر نے 'تاریخ بدایونی' کے لیکھک عبدالقادر کو والمیکی رامائن کا فارسی ترجمہ کرنے کا کام سونپا۔ 1589 میں یہ انوواد پورا ہوگیا۔ بدایونی نے لکھا ہے کہ 'اتھروید' کا انوواد کرنے کے لئے اکبر نے عبدالقادر اور دکھن کے ایک نئے مسلمان کو مقرر کیا۔ بعد کو اتھرون کی بات نہ سمجھ کر عبدالقادر نے اس ذمہ داری سے اپنا کندھا ہلکا کر لیا اور ان کی جگہ پر حاجی ابراہیم سرہندی کو انوواد کرنے کا کام سونپ دیا گیا۔ اس کے بعد اکبر نے عبدالقادر سے اچھا ظاہر کی کہ وہ 'سنگھاسن بتیسی' کا فارسی انوواد کر ڈالیں۔ اس انوواد کا نام 'خردافزا نامہ' رکھا گیا۔ 1582 میں اکبر نے نقیب خاں اور عبدالقادر کو مہابھارت کا فارسی انوواد کا کام سپرد کیا۔ اکبر مہابھارت کے انوواد

करने में ख़ुद भी हिस्सा ले रहा था. रोज़ रात को वह इन दोनों पंडितों को ख़ुद ही अनुवाद की रूप रेखा समझाता था. महा भारत के दो पर्व का अनुवाद होने के बाद मुल्ला शेरी और हाजी थानेसरी भी इसी काम में लगा दिये गये. असल में यह पूरा अनुवाद नहीं था. बल्कि महा भारत की फ़ालतू चीज़ों को निकालने की यह एक कोशिश थी और उस का नाम 'रज़्म नामा' रखा गया था. इसके बहुत बाद क़रीब उन्नीसवीं सदी में महा भारत, रामायण और कालीदास की शकुन्तला, 'मेघदूत और विक्रम उर्वशी' का अनुवाद उर्दू में भी किया गया. नल और दमयन्ती की कहानी को लैला मजनूं की कहानी के ढंग पर फ़ारसी में लिखा गया और उस किताब का नाम 'नल-व-दमन' रखा गया. नसरुल्ला मुस्तफ़ा ने 'हरि वंश' का फ़ारसी में अनुवाद किया और मौलाना शाह मुहम्मद शाहाबादी ने संस्कृत से कश्मीरी तारीख़ का अनुवाद कर के उसका नाम 'रौज़ये ताहरीन' रखा. इस इतिहास की किताब का कल्हण की लिखी राज-तरंगिणी से कोई ताल्लुक़ नहीं है. राजतरंगिणी का अनुवाद कश्मीर के सुल्तान ज़ैनुल आब्दीन के ज़माने में मौलाना इमाम द्दीन ने किया था. नीलकंठ की लिखी ज्योतिष की किताब का अनुवाद मुहम्मद ख़ां गुजराती ने पूरा किया. लीलावती एक हिसाब की किताब है. और इस के लेखक भास्कर हैं. अकबरी दरबार के महाकवि फ़ैज़ी ने ख़ुद इस किताब का अनुवाद किया था.

कृष्ण जोशी, गंगाधारा, महाशय महानन्द वग़ैरा किताबों का अनुवाद 'अकबर नामा' और 'आईन अकबरी' के लेखक अबुल फ़ज़ल की देख रेख में कराया गया. अकबर ही के युग में फ़ारसी संस्कृत डिक्शनरी 'पारसी प्रकाश' भी तैयार हुई. इसके अलावा संस्कृत के कवि गोविन्द भट्ट का अकबर से ऐसा घना सम्बन्ध था कि वह अकबरी कालीदास कहलाते थे. शाहजहां के दरबार में भी संस्कृत के कवि जगन्नाथ पंडित राजा का बड़ा मान था. जानवरों के इलाज पर संस्कृत की एक किताब 'शालिहोत्र' का अनुवाद अब्दुल्ला फ़ीरोज़ जंग ने शाहजहां के युग में किया था. इस किताब में सोलह सौ संस्कृत श्लोक थे. ख़ुद शाहजहां का साला शाइस्ता ख़ां इतनी अच्छी संस्कृत जानता था कि वह संस्कृत में कविता करता था. शाइस्ता ख़ां के दरबार में चतुर्भुज एक मशहूर कवि थे उनकी किताब 'रस-कल्प द्रुम' अभी तक छप नहीं सकी. इस किताब में उन्होंने शाइस्ता ख़ां की छै कविताओं को भी लिखा है.

दारा शिकोह—महान संस्कृत पंडित.

दारा शिकोह शाहजहां का चहेता बेटा था. वह संस्कृत का बहुत बड़ा पंडित था और साहित्य की ख़ूब क़द्रदानी करता था. उसके लिये हिन्दू धर्म और इस्लाम

کرنے میں خود بھی حصہ لے رہا تھا . روز رات کو وہ اِن دونوں پنڈتوں کو خود ہی انوواد کی روپ ریکھا سمجھاتا تھا . مہا بھارت کے دو پروا انوواد ہونے کے بعد ملا شیر اور حاجی تھانیسری بھی اسی کام میں لگا دیئے گئے . اصل میں یہ پورا انوواد نہیں تھا بلکہ مہابھارت کی فالتو چیزوں کو نکالنے کی یہ ایک کوشش تھی اور اِس کا نام ' رزم نامہ ' رکھا گیا تھا . اِس کے بہت بعد قریب انیسویں صدی میں مہا بھارت' رامائن اور کالی داس کی شکنتلا' ' میگھدوت اور وکرم اُروشی' کا انوواد اُردو میں بھی کیا گیا . نل اور دمینتی کی کہانی کو لیلیٰ مجنوں کی کہانی کے ڈھنگ پر فارسی میں لکھا گیا اور اُس کتاب کا نام ' نل و داما ' رکھا گیا . نصراللہ مصطفیٰ نے ' ہری ونس ' کا فارسی میں انوواد کیا اور مولانا شاہ محمد شاہ آبادی نے سنسکرت سے کشمیر تاریخ کا انوواد کر کے اُس کا نام ' روضہ طاہرین ' رکھا . اِس اتہاس کی کتاب کا کلہنا کی لکھی راجترنگنی سے کوئی تعلق نہیں ہے . راجترنگنی کا انوواد کشمیر کے سلطان زین العابدین کے زمانے میں مولانا امام الدین نے کیا تھا . نیل کنٹھ کی لکھی جیوتش کی کتاب کا انوواد محمد خاں گجراتی نے پورا کیا . لیلاوتی ایک حساب کی کتاب ہے اور اس کے لیکھک بھاسکر ہیں . اکبری دربار کے مہاکوی فیضی نے خود اس کتاب کا انوواد کیا تھا .

کرشن جوشی' گنگا دھارا' اور مہاشے مہا نند وغیرہ کتابوں کا انوواد ' اکبر نامہ' اور ' آئین اکبری' کے لیکھک ابوالفضل کی دیکھ ریکھ میں کرایا گیا . اکبر ہی کے یگ میں فارسی سنسکرت ڈکشنری ' پراسی پرکاش ' بھی تیار ہوئی . اس کے علاوہ سنسکرت کے کوی گووند بھٹ کا اکبر سے ایسا گھنا سمبندھ تھا کہ وہ اکبری کالی داس کہلاتے تھے . شاہجہاں کے دربار میں بھی سنسکرت کے کوی جگن ناتھ پنڈت راجا کا بڑا مان تھا . جانوروں کے علاج پر سنسکرت کی ایک کتاب ' سلہوتری ' کا انوواد عبداللہ فیروز جنگ نے شاہجہاں کے یگ میں کیا تھا . اِس کتاب میں سولہ سو سنسکرت اشلوک تھے . خود شاہجہاں کا سالا شائستہ خاں اِتنی اچھی سنسکرت جانتا تھا کہ وہ سنسکرت میں کویتا کرتا تھا . شائستہ خاں کے دربار میں چتر بھج ایک مشہور کوی تھے . اُن کی کتاب ' رس کلپ درم ' ابھی تک چھپ نہیں سکی . اِس کتاب میں اُنہوں نے شائستہ خاں کی چھ کویتاؤں کو بھی لکھا ہے .

دارا شکوہ—مہان سنسکرت پنڈت .

دارا شکوہ شاہجہاں کا چہیتا بیٹا تھا . وہ سنسکرت کا بہت بڑا پنڈت تھا اور ساہتیہ کی خوب سرپرستی کرتا تھا . اُس کے لئے ہندو دھرم اور اسلام

धर्मों के बुनियादी सिद्धान्तों में कोई फ़र्क नहीं था और वह हमेशा ऐसा नुक्ता ढूंढने की कोशिश करता था जहाँ अलग अलग मालूम होने वाले विचार एक हो सकें. भगवत गीता और 'योग वशिष्ठ' का अनुवाद करने के बाद दाराशिकोह का ध्यान उपनिषदों की तरफ़ गया. उसने इनको पढ़ा और 'असरार अल अकबर' के नाम से इनका अनुवाद फ़ारसी में कर डाला. दारा ने इस अनुवाद के 'दो शब्द' में लिखा है कि मैं सूफ़ी-मुल्लाशाह काश्मीरी का चेला बन कर सूफ़ीवाद में जिस मन की शान्ती को ढूंढता फिरता था वह वेदों और उपनिषदों में मुझे मिल गई. इसके बाद 1654 में सूफ़ीवाद और वेदान्त की एकता को दिखाने के लिये उसने 'मजमउल बहरैन' नामी किताब लिखी. इस शहज़ादे ने और बहुत सी किताबें भी लिखी हैं. दारा की हीरे की अंगूठी और दूसरी क़ीमती चीज़ों पर 'प्रभु' खुदा रहता था. दुख की बात है कि राजगद्दी की लड़ाई में दारा की हार हुई और औरंगज़ेब सम्राट बन गया. उसके ज़माने में संस्कृत की तरक़्क़ी को काफ़ी धक्का लगा. औरंगज़ेब के बाद तो सिर्फ़ नाम के सुल्तान होने लगे और धीरे धीरे मुसलमान हुकूमत ही ख़त्म हो गई. लेकिन मुसलमानों का संस्कृत के बढ़ाने में इतना हिस्सा है कि संस्कृत में भी बहुत से अरबी, फ़ारसी और तुरकी शब्द शामिल हो गये हैं.

नीचे लिखे तरीक़ों से मुसलमान बादशाहों, हाकिमों और पंडितों ने संस्कृत की सेवा की और उसे मालामाल करने और दुनिया में उसकी अहमियत के फैलाने में बड़ा काम किया:

(1) संस्कृत के कवियों, फ़िलासफ़रों, ज्योतिषियों की सरपरस्ती की गई और उन्हें बड़ा मान दिया गया.

(2) ख़ुद भी संस्कृत में लिखने की कोशिश की गई.

(3) संस्कृत के साहित्य और यहां के कल्चर पर अरबी और फ़ारसी में किताबें लिखी गईं.

(4) संस्कृत के साहित्य का अरबी फ़ारसी में अनुवाद किया गया.

(5) बड़े बड़े संस्कृत के पंडितों को संस्कृत ग्रन्थों का अरबी फ़ारसी और बंगला में अनुवाद करने के लिये प्रोत्साहन दिया गया.

ऊपर के बयान की रोशनी से साफ़ हो जाता है कि ग्यारहवीं सदी से किस तरह हिन्दू मुस्लिम कल्चर मिल कर एक होने की तरफ़ बढ़ रहा है.

('इस्लामिक रिव्यु' के एक लेख का आज़ाद तरजुमा)

دھرم کے بنیادی سدھانتوں میں کوئی فرق نہیں تھا اور وہ ہمیشہ ایسا نکتہ ڈھونڈنے کی کوشش کرتا تھا جہاں مانوتا کو الگ الگ کرنے والے وچار ایک ہوسکیں. بھگوت گیتا اور 'یوگ وششٹھ' کا انوواد کرنے کے بعد دارا شکوہ کا دھیان اپنشدوں کی طرف گیا. اس نے ان کو پڑھا اور 'السرالاکبر' کے نام سے ان کا انوواد فارسی میں کر ڈالا. دارا نے اس انوواد کے 'دو شبد' میں لکھا ہے کہ میں صوفی ملا شاہ کشمیری کا چیلا بن کر صوفی واد میں جس من کی شانتی کو ڈھونڈتا پھرتا تھا وہ ویدوں اور اپنشدوں میں مجھے مل گئی. اس کے بعد 1654 میں صوفی واد اور ویدانت کی ایکتا کو دکھانے کے لئے اس نے 'مجمع البحرین' نامی کتاب لکھی. اس شہزادے نے اور بہت سی کتابیں بھی لکھی ہیں. دارا کی ہیرے کی انگوٹھی اور دوسری قیمتی چیزوں پر 'پربھو' کھدا رہتا تھا. دکھ کی بات ہے کہ راج گدی کی لڑائی میں دارا کو ہار ہوئی اور اورنگ زیب سمراٹ بن گیا. اس کے زمانے میں سنسکرت کی ترقی کو کافی دھکا لگا. اورنگ زیب کے بعد تو صرف نام کے سلطان ہونے لگے اور دھیرے دھیرے مسلمان حکومت ہی ختم ہوگئی. لیکن مسلمانوں کا سنسکرت کے بڑھانے میں اتنا حصہ ہے کہ سنسکرت میں بھی بہت سے عربی، فارسی اور ترکی شبد شامل ہوگئے ہیں.

نیچے لکھے طریقوں سے مسلمان بادشاہوں، حاکموں اور پنڈتوں نے سنسکرت کی سیوا کی اور اسے مالا مال کرنے اور دنیا میں اس کی اہمیت کے پھیلانے میں بڑا کام کیا:

(1) سنسکرت کے کویوں، فلاسفروں، جیوتشیوں کی سرپرستی کی گئی اور انہیں بڑا مان دیا گیا.

(2) خود بھی سنسکرت میں لکھنے کی کوشش کی گئی.

(3) سنسکرت کے ساہتیہ اور یہاں کے کلچر پر عربی اور فارسی میں کتابیں لکھی گئیں

(4) سنسکرت کے ساہتیہ کا عربی فارسی میں انوواد کیا گیا.

(5) بڑے بڑے سنسکرت کے پنڈتوں کو سنسکرت گرنتھوں کا عربی فارسی اور بنگلہ میں انوواد کرنے کے لئے پروتساہن دیا گیا.

اوپر کے بیان کی روشنی سے صاف ہو جاتا ہے کہ گیارھویں صدی سے کس طرح ہندو مسلم کلچر مل کر ایک ہونے کی طرف بڑھ رہا ہے.

('اسلامک ریویو' کے ایک لیکھ کا آزاد ترجمہ)

चीन ने अनाज का सवाल कैसे हल किया

(के चिया-लुंग)

[हमारे देश में आये दिन अकाल पड़ रहे हैं. आज बिहार में तो कल राजस्थान या गुजरात में, पूरबी उत्तर प्रदेश में, आंध्र या मद्रास में. नौकरशाही में पड़े और पले हमारे एक्सपर्ट और अर्थशास्त्री समझते हैं कि बाहर से अनाज मंगाने के सिवा कोई चारा ही नहीं है. पर यह उनकी ज़बरदस्त भूल है. चीन में कहीं ज़ियादा बदतर हालत थी. पर नई सरकार ने किस तरह आँख खोल कर काम किया और सारा घर संभाल लिया यह नीचे के लेख से पता चलेगा. क्या हमारी सरकार व अर्थशास्त्री चेतेंगे ?—एडीटर]

नये चीन के सब से बड़े और ख़ास कारनामों में एक यह है कि अनाज के मामले में आज उसे परदेसों का मुंह नहीं देखना पड़ता. पर यह करिश्मा हुआ कैसे ? इसकी एक बड़ी दिलचस्प कहानी है.

च्यांग काई शेक के ज़माने में चीन में जो चीज़ें बाहर से आती थीं उन में से सबसे ख़ास में अनाज की गिनती थी. हर साल क़रीब बीस लाख टन अनाज बाहर से आता था. इस आवाई को रोकने से क्या विदेशी, क्या चीन के अन्दरूनी बाज़ारों व ब्योपार पर असर पड़ना लाज़मी था. विदेशी बाज़ारों पर तो असर यह पड़ेगा कि वह उन ठिकानों की खोज ज़ोरों से करने लग जायेंगे जहां उनका माल किसी भी सूरत से पहुंचाया जा सके. अन्दरूनी बाज़ारों पर असर यह होगा कि अनाज ख़रीदने के लिये विदेशी एक्सचेंज में स्वाहा हो जाने वाला पैसा अब देश के उद्योग धन्धे बढ़ाने में लगाया जा सकेगा और लोगों की हालत सुधरेगी.

बहुत से नौकरशाह अर्थशास्त्री और समाज शास्त्री कहा करते थे (जैसे हिन्दुस्तान में आज भी कहते हैं) कि बढ़ती हुई आबादी की वजह से चीन अपने अनाज के सवाल को कभी हल कर ही नहीं सकता. वह बड़े दावे के साथ अपनी तान लगाते थे और सबूत में मालगुज़ारी महकमे की गवाही पेश करते थे. लेकिन जो असली जानकार थे उनको ऐसी बेसिर पैर की बातों पर कभी यक़ीन नहीं आया और उनका यही ख़याल था कि अगर चीन की [illegible] दिया जाये तो पैदावार में जो [illegible] यह सहज ही इतना अनाज

چین نے اناج کا سوال کیسے حل کیا

(کے . چیا للگ)

[ہمارے دیش میں آئے دن اکال پڑ رہے ہیں۔ آج بہار میں تو کل راجستھان یا گجرات میں، پوربی اتر پردیش میں، آندھر یا مدراس میں۔ نوکر شاہی میں پڑے اور پلے ہمارے ایکسپرٹ اور ارتھ شاستری سمجھتے ہیں کہ باہر سے اناج منگانے کے سوائے کوئی چارا ہی نہیں ہے، پر یہ اُن کی زبردست بھول ہے۔ چین میں کہیں زیادہ بدتر حالت تھی۔ پر نئی سرکار نے کس طرح آنکھ کھول کر کام کیا اور سارا گھر سنبھال لیا۔ یہ نیچے کے لیکھ سے پتہ چلیگا۔ کیا ہماری سرکار و ارتھ شاستری چیتینگے ؟—ایڈیٹر]

نئے چین کے سب سے بڑے اور خاص کارناموں میں ایک یہ ہے کہ اناج کے معاملے میں آج اسے پردیسوں کا منہ نہیں دیکھنا پڑتا۔ پر یہ کرشمہ ہوا کیسے ؟ اسکی ایک بڑی دلچسپ کہانی ہے۔

چیانگ کائی شیک کے زمانے میں چین میں جو چیزیں باہر سے آتی تھیں اُن میں سے سب سے خاص میں اناج کی گنتی تھی۔ ہر سال قریب بیس لاکھ ٹن اناج باہر سے آتا تھا۔ اس آمدائی کو روکنے سے کیا ودیشی، کیا چین کے اندرونی بازاروں و بیوپار پر اثر پڑنا لازمی تھا۔ ودیشی بازاروں پر تو اثر یہ پڑیگا کہ وہ اُن ٹھکانوں کی کھوج زوروں سے کرنے لگ جائینگے جہاں اُن کا مال کسی بھی صورت سے پہونچایا جا سکے۔ اندرونی بازاروں پر اثر یہ ہوگا کہ اناج خریدنے کے لئے ودیشی ایکسچینج میں سواہا ہوجانے والا پیسہ اب دیش کے اُدیوگ دھندے بڑھانے میں لگایا جاسکیگا اور لوگوں کی حالت سدھریگی۔

بہت سے نوکر شاہ ارتھ شاستری اور سماج شاستری کہا کرتے تھے (جیسے ہندستان میں آج بھی کہتے ہیں) کہ بڑھتی ہوئی آبادی کی وجہ سے چین اپنے اناج کے سوال کو کبھی حل کر ہی نہیں سکتا۔ وہ بڑے دعوے کے ساتھ اپنی تان لگاتے تھے اور ثبوت میں مالگزاری محکمے کی گواہی پیش کرتے تھے۔ لیکن جو اصلی جانکار تھے اُن کے ایسی بےسمجھ باتوں پر کبھی یقین نہیں آیا اور اُن کا یہی خیال تھا کہ اگر چین کی زمینداری کا طریقہ بدل دیا جائے تو پیداوار میں جو سب سے بڑی رکاوٹ ہے وہ سہج ہی اتنا اناج

[illegible] सरकार ने [illegible]
कर दे दिया दिया.

सन् 1960 में कुल अनाज की उपज का योग 12 करोड़ 50 लाख टन बताया गया जो पिछले साल की फसल के मुकाबले एक करोड़ 22 लाख 50 हजार टन ज्यादा थी. इस साल गेहूं की फसल ही दो करोड़ टन की हुई जो पारसाल के मुकाबले 33 लाख टन ज्यादा है. सिर्फ उन इलाकों को छोड़ कर जिनमें इस साल फिर से बाढ़ आ गई, हमारी खरीफ की फसल निहायत ही अच्छी है.

पिछली कई सदियों से चीन में हर आदमी पीछे अनाज की औसत सालाना तादाद 125 किलोग्राम पड़ती थी, जिससे मुश्किल से पेट भर सकता था. पर इस साल जो पैदावार का अन्दाज है उससे यह कहा जा सकता है कि चीन में रहने वाले हर मर्द, औरत और बच्चे के हिस्से में आने वाले अनाज की तादाद दूनी बढ़ जायेगी.

यह भी मान लें कि इस साल भी पार साल के जैसी आफतें और मुसीबतें आयेंगी तब भी हम यह कह सकते हैं कि सरकार अकाल को किसी हालत में न पड़ने देगी. पिछली जून 30 को—जाड़े की गेहूं की फसल पर लगान वसूल करने के पहले—सभी स्तरों के इन्तिज़ाम वाले सरकारी भंडारों में 11 लाख 87 हजार 450 टन जमा था. इतने अनाज से तो शांगहाई के पचास लाख आदमियों को करीब दो बरस तक खिलाया जा सकता है या शांगहाई, पेकिंग, टिन्टसिन और हांकाओ—चारों बड़े शहर—के लोगों को एक साल तक.

चीन के हाल के इतिहास में यह पहला मौका है जब बसन्त के आखीर में सरकार के पास इतनी तादाद में अनाज है. फिर काबिले तारीफ बात तो यह है कि यह उस हालत में हुआ है जब 1949 में कुदरती मुसीबतों की वजह से करीब 12 करोड़ मो ज़मीन के चार करोड़ रहने वालों पर बड़ी बुरी चोट आ गई थी.

सरकारी भंडारों में अनाज रहने की वजह से सरकार जो जब चाहती जहाँ चाहती भेज सकी. यही वजह है कि—चीन के मौजूदा इतिहास में पहली बार—इस साल फसल के पहले वाले मौसम में अनाज के दाम एक से बने रहे और चढ़े नहीं. किसानों के पास अनाज कम रह जाने पर उनके दाम अक्सर ऊंचे चढ़ने लगते हैं पर इस साल सरकार भंडारों से काफी अनाज भेज सकी जिससे इलाकों और आदमियों की कमी न पड़ी और दाम अपनी जगह पर कायम रहे.

پیدا کیا [illegible]
بات سچی [illegible]
کے حکومت [illegible] ایک سال کے [illegible]
رکھا تھا۔

سن 1950 میں کل اناج کی پیداوار کا جوڑ 12 کروڑ 50 لاکھ ٹن بتایا گیا جو پچھلے سال کی فصل کے مقابلے ایک کروڑ 22 لاکھ 50 ہزار ٹن زیادہ تھی۔ اس سال گیہوں کی فصل ہی دو کروڑ ٹن کی ہوئی جو پارسال کے مقابلے 33 لاکھ ٹن زیادہ ہے۔ صرف ان علاقوں کو چھوڑ کر جن میں اس سال پھر سے باڑھ آ گئی، ہماری خریف کی فصل نہایت ہی اچھی ہے۔

پچھلی کئی صدیوں سے چین میں ہر آدمی پیچھے اناج کی اوسط سالانہ تعداد 125 کلوگرام پڑتی تھی، جس سے مشکل سے پیٹ بھر سکتا تھا۔ پر اس سال جو پیداوار کا اندازہ ہے اس سے یہ کہا جا سکتا ہے کہ چین میں رہنے والے ہر مرد، عورت اور بچے کے حصے میں آنے والے اناج کی تعداد دونی بڑھ جائیگی۔

یہ بھی مان لیں کہ اس سال بھی پارسال کے جیسی آفتیں اور مصیبتیں آئینگی تب بھی ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ سرکار اکال کو کسی حالت میں نہ پڑنے دیگی۔ پچھلی جون 30 کو—جاڑے کی گیہوں کی فصل پر لگان وصول کرنے کے پہلے—سبھی ستروں کے دھنی والے سرکاری بھنڈاروں میں 11 لاکھ 87 ہزار 450 ٹن جمع تھا۔ اتنے اناج سے تو شنگھائی کے پچاس لاکھ آدمیوں کو قریب دو برس تک کھلایا جا سکتا ہے یا شنگھائی، پیکنگ، ٹنٹسن اور ہانکاؤ—چاروں بڑے شہر—کے لوگوں کو ایک سال تک۔

چین کے حال کے اتہاس میں یہ پہلا موقع ہے جب بسنت کے آخیر میں سرکار کے پاس اتنی تعداد میں اناج ہے۔ پھر قابل تعریف بات تو یہ ہے کہ یہ اس حالت میں ہوا ہے جب 1949 میں قدرتی مصیبتوں کی وجہ سے قریب 12 کروڑ مو زمین کے چار کروڑ رہنے والوں پر بڑی بھاری چوٹ آ گئی تھی۔

سرکاری بھنڈاروں میں اناج رہنے کی وجہ سے سرکار اسے جب چاہتا جہاں چاہتا بھیج سکی۔ یہی وجہ ہے کہ—چین کے موجودہ اتہاس میں پہلی بار—اس سال فصل کے پہلے والے موسم میں اناج کے دام ایک سے بنے رہے اور چڑھے نہیں۔ کسانوں کے پاس اناج کم رہ جانے پر اکثر دام اونچے چڑھنے لگتے ہیں پر اس سال سرکار بھنڈاروں میں کافی اناج بھیج سکی جس سے علاقوں اور آدمیوں کی کمی نہ پڑی اور دام اپنی جگہ پر قائم رہے۔

[illegible] करोड़ों रुपया यूं ही [illegible] है जबकी मशीनरी और दूसरी [illegible] होने से चीन में कहीं ज़्यादा कारखाने [illegible] होते और देश की सभी चीज़ों की पैदावार बढ़ जाती.

चीन में अनाज बाहर से मंगाने का दौर सन् 1721 से शुरू होता है. उस साल बादशाह कांग-सी ने जो मन्चू खानदान के थे—दक्खिन चीन के समुन्दरी शहरों के लिये स्याम से 22,500 टन चावल मंगवाया. तब से आज तक यह सिलसिला चला ही आ रहा है और हमारा देश दूसरों का दिन दूना रात चौगुना मोहताज बनता गया. पर मंचू खानदान के ज़माने में शायद ही किसी बरस साढ़े सात लाख टन से ज़्यादा अनाज आया हो पर च्यांगी राज के ज़माने में यह तादाद तीस लाख पर पहुँच गई. आंकड़ों से पता चलता है कि 1888 में चीन में बाहर से आने वाले माल में अनाज छठे नम्बर पर था पर 1930 में दूसरे दर्जे पर पहुँच गया और दो साल बाद चोटी पर !

बाहर से इस तरह अनाज मंगाने में हमारा कितना फारेन एक्सचेन्ज ज़ाया हो गया ? अपनी किताब The Re-making of China's Economy में नामी चीनी अर्थशास्त्री [illegible] का कहना है कि 1927 से लेकर 1929 में चीन को विदेशी व्योपार में जो घाटा उठाना पड़ा उसके आधे की वजह अनाज की आमद थी. China's Foreign Trade नाम की एक किताब शंघाई की कमर्शियल प्रेस ने निकाली है जिसमें बताया गया है कि 1932 में यह सूरत पहुँच गई कि बाहर से आने वाली चीज़ों में अनाज की तादाद 19.67 फी सदी थी और मशीनरी की सिर्फ 2.95. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि अनाज की वजह से चीन मशीनें कम मंगाता था बल्कि सच यह कि पिछलग्गू च्यांगी राज विदेशी साम्राज्यवादों और पूंजीपतियों के इशारे पर नाचता था ताकि चीन में वह बना रहे. इसलिये च्यांग का राज देश के विकास के रास्ते में खुद एक बड़ी भारी रुकावट था.

हमने देखा कि किस तरह से चीन के बाहर से अनाज लेने की वजह से उसके कारखाने वगैरा नहीं पनप सके. इससे दूसरा नुकसान हुआ चीन की देहाती अर्थनीति का बंटाधार हो जाना.

जब इतनी बड़ी तादाद में बाहर से अनाज आकर बाज़ारों में पट जाता था तो उसका भाव आप से आप गिर जाता था और किसान अपनी पैदावार को सस्ते भाव पर बेचने को मजबूर हो जाता था या उसे सड़ने देता था. इससे न सिर्फ उनकी माली हालत व रहन-सहन में [illegible] बल्कि [illegible] की सारी [illegible] मारा जाता था और

[illegible] چین کا [illegible] کروڑوں روپیہ یونہی نکل گیا . اگر اس کے بدلے میں ضروری مشینری اور دوسری چیزیں و سامان خریدے ہوتے تو چین میں کہیں زیادہ کارخانے کھل گئے ہوتے اور دیش کی سبھی چیزوں کی پیداوار بڑھ جاتی .

چین میں اناج باہر سے منگانے کا دور سن 1721 سے شروع ہوتا ہے . اس سال بادشاہ کانگ سی نے جو منچو خاندان کے تھے—دکھن چین کے سمندری شہروں کے لئے سیام سے 22,500 ٹن چاول منگایا . تب سے اب تک یہ سلسلہ چلا ہی آرہا ہے اور ہمارا دیش دوسروں کا دن دونا رات چوگنا محتاج بنتا گیا . پر منچو خاندان کے زمانے میں شائد ہی کسی برس ساڑھے سات لاکھ ٹن سے زیادہ اناج آیا ہو پر چیانگی راج کے زمانے میں یہ تعداد تیس لاکھ پر پہنچ گئی . آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ 1888 میں چین میں باہر سے آنے والے مال میں اناج چھٹے نمبر پر تھا پر 1930 میں دوسرے درجے پر پہنچ گیا اور دو سال بعد چوٹی پر !

باہر سے اس طرح اناج منگانے میں ہمارا کتنا فارن ایکسچینج ضائع ہوگیا؟ اپنی کتاب The Re-making of China's Economy میں نامی چینی ارتھ شاستری [illegible] کا کہنا ہے کہ 1927 سے لیکر 1929 میں چین کو ودیشی بیوپار میں جو گھاٹا اٹھانا پڑا اس کے آدھے کی وجہ اناج کی آمد تھی . China's Foreign Trade نام کی ایک کتاب شنگھائی کی کمرشیل پریس نے نکالی ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ 1932 میں یہ صورت پہنچ گئی کہ باہر سے آنے والی چیزوں میں اناج کی تعداد 19.67 فیصدی تھی اور مشینری کی صرف 2.95 . اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں ہے کہ اناج کی وجہ سے چین مشینیں کم منگاتا تھا بلکہ سچ یہ کہ پچھلگو چیانگی راج ودیشی سامراجیوں اور پونجی پتیوں کے اشارہ پر ناچتا تھا تاکہ چین میں وہ بنا رہے . اس لئے چیانگ کا راج دیش کے وکاس کے راستے میں خود ایک بڑی بھاری رکاوٹ تھا.

ہم نے دیکھا کہ کس طرح سے چین کے باہر سے اناج لینے کی وجہ سے اس کے کارخانے وغیرہ نہیں پنپ سکے . اس سے دوسرا نقصان ہوا چین کی دیہاتی ارتھ نیتی کا بنٹادھار ہو جانا .

جب اتنی بڑی تعداد میں باہر سے اناج آکر بازاروں میں لد جاتا تھا تو اس کا بھاؤ آپ سے آپ گر جاتا تھا اور کسان اپنی پیداوار کو سستے بھاؤ پر بیچنے کو مجبور ہوجاتا تھا یا اسے سڑنے دیتا تھا . اس سے نہ صرف اس کی مالی حالت و رہن سہن میں [illegible] بلکہ اس کا سارا جوش بھی مارا جاتا تھا اور

कारख़ानों में उसकी निकासी कम होती गई. दूसरा नतीजा यह भी हुआ कि उनकी ख़रीद-शक्ति कम होती गई जिसकी वजह से वह चीन के कारख़ानों का बना माल भी नहीं ख़रीद सकता था. इस तरह चीन की तरक़्क़ी और भी रुक गई.

अब ज़रा यह देखिये कि हमारा देसी अनाज किस तरह बाज़ार से ग़ायब हो जाता था. सन् 1932 में हूनान के सूबे में (जो चीन का चावल कुण्ड कहलाता है) चावल का पिकल छै सात डालर का मिलता था. उस वक़्त शंघाई में विदेश से आया चावल साढ़े सात डालर की पिकल बिकता था. फिर एक पिकल अनाज को हूनान से शंघाई तक पहुंचाने में उस वक़्त सवा तीन डालर लग जाते थे क्योंकि सरकार ने तरह तरह की चुँगियाँ व टैक्स लगा रखे थे. नतीजा यह हुआ कि हूनान के पास जो देसी चावल था वह समुन्द्र के पास के इलाक़ों में न पहुंच कर अन्दर ही पड़ा रहा जिससे दामों में मंदी आई और चावल पैदा करने वाले किसानों पर मार पड़ी.

वू हू अन्हवाई सूबे का एक ख़ास हिस्सा है जहां चावल कसरत से होता है. 1894 से 1904 के बीच में इस हिस्से से 3,37500 टन चावल हर साल बाहर जाता था. पर विदेशी अनाज की धक्कम-पेल मचने के कारन 1930-35 यह तादाद सिर्फ़ 1,42,500 पर आ गिरी—यानी 42 फ़ी सदी कमी हो गई.

बाहर अनाज की इस चढ़ाई ने चीन के हज़ारों-लाखों किसानों का दिवाला निकाल दिया और उन्हें अपनी ज़मीनों से हाथ धो बैठना पड़ा. वह या तो ज़मींदार के पैरों तले ग़ुलाम बन कर रह सकते थे या दूसरे के खेत पर मज़दूरी कर सकते थे या शहर में जाकर कारख़ानों की राह देखते थे. पर कारख़ाने वाले भी उन्हें चूसने में माहिर थे क्योंकि मज़दूरों की तादाद ज़ियादा थी और वह कम से कम—दुनिया भर में कम से कम—मज़दूरी उन्हें देते थे.

यह हालत थी जो नई सरकार को पुरानी सरकार से विरासत में मिली थी. ऐसी सूरत में हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जा सकता था. कुछ करना था और फ़ौरन करना था, देश के अनाज सवाल की गुत्थी को सुलझाना था. चारसाल जो कहीं कहीं अनाज कम पड़ गया था उसने हालत को और भी संगीन बना दिया था.

मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों और खेती माहरों ने जब ध्यान के साथ इस सवाल पर सोचा तो वह इस नतीजे पर पहुंचे कि असली मुश्किल अनाज की कमी नहीं है बल्कि माल को ठीक वक़्त पर ठीक जगह पहुंचाने की है. नई सरकार ने क़ायम होने के कुछ महीनों के ही भीतर एक योजना तैयार किया कि जितना अनाज जहां पर रहे, उसके मुताबिक़ सरकारी ख़र्च पर अनाज को देसी इलाक़ों

وجہ سے وہ چین کے کارخانوں کا بنا مال بھی نہیں خرید سکتا تھا ۔ اس طرح چین کی ترقی اور بھی رک گئی ۔

اب ذرا یہ دیکھئے کہ ہمارا دیسی اناج کس طرح بازار سے غائب ہو جاتا تھا ۔ سن 1932 میں ہونان کے صوبے میں (جو چین کا چاول کنڈ کہلاتا ہے) چاول کا ایک پکل چھ سات ڈالر کا بکتا تھا ۔ اس وقت شنگھائی میں ودیش سے آیا چاول ساڑھے سات ڈالر فی پکل بکتا تھا ۔ پھر ایک پکل اناج کو ہونان سے شنگھائی تک پہنچانے میں اس وقت سوا تین ڈالر لگ جاتے تھے کیونکہ سرکار نے طرح طرح کی چنگیاں و ٹیکس لگا رکھے تھے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ہونان کے پاس جو دیسی چاول تھا وہ سمندر کے پاس کے علاقوں میں نہ پہنچ کر اندر ہی پڑا رہا جس سے داموں میں مندی آئی اور چاول پیدا کرنے والے کسانوں پر مار پڑی ۔

ووہو انہوائی صوبے کا ایک خاص حصہ ہے جہاں چاول کثرت سے ہوتا ہے ۔ 1894 سے 1904 کے بیچ میں اس حصے سے 3,37500 ٹن چاول ہر سال باہر جاتا تھا ۔ پر ودیشی اناج کی دھکم پیل مچنے کے کارن 1930—1935 یہ تعداد صرف 1,42,500 پر آ گری—یعنی 42 فیصدی کی کمی ہوگئی ۔

باہر اناج کی اس چڑھائی نے چین کے ہزاروں لاکھوں کسانوں کا دیوالہ نکال دیا اور انہیں اپنی زمینوں سے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑا ۔ وہ یا تو زمیندار کے پیروں تلے غلام بن کر رہ سکتے تھے یا دوسرے کے کھیت پر مزدوری کر سکتے تھے یا شہر میں آ کر کارخانوں کی راہ دیکھتے تھے ۔ پر کارخانے والے بھی انہیں چوسنے میں ماہر تھے کیونکہ مزدوروں کی تعداد زیادہ تھی اور وہ کم سے کم—دنیا بھر میں کم سے کم—مزدوری انہیں دیتے تھے ۔

یہ حالت تھی جو نئی سرکار کو پرانی سرکار سے وراثت میں ملی تھی ۔ ایسی صورت میں ہاتھ پر ہاتھ دھر کر نہیں بیٹھا جا سکتا تھا ۔ کچھ کرنا تھا اور فوراً کرنا تھا ، دیش کے اناج سوال کی گتھی کو سلجھانا تھا ۔ چار سال جو کہیں کہیں اناج کم پڑ گیا تھا اس نے حالت کو اور بھی سنگین بنا دیا تھا ۔

•

مارکس وادی ارتھ شاستریوں اور کھیتی ماہروں نے جب دھیان کے ساتھ اس سوال پر سوچا تو وہ اس نتیجے پر پہنچے کہ اصلی مصیبت اناج کی کمی نہیں ہے بلکہ مال کو ٹھیک وقت پر ٹھیک جگہ پہنچانے کی ہے ۔ نئی سرکار نے قائم ہونے کے کچھ مہینوں کے ہی بھیتر ایک یوجنا تیار کی کہ جتنا اناج جہاں پر رہے ۔ اس کے [illegible]

[illegible] से भेजा गया और [illegible] इलाक़ों की तरफ़ [illegible] गेहूं वग़ैरा जा गई थी या [illegible] इलाक़ों की तरफ़ जहां लोग अपनी ज़रूरत के लायक़ अनाज नहीं उगा सकते थे. उधर पूर्वी चीन से 10 लाख 30 हज़ार टन, सेचुआन से 2 लाख टन, बीच चीन से 3 लाख टन अनाज दूसरे सूबों में भेजा गया. इसमें वह तादादें शामिल नहीं हैं जो व्यापारियों ने अपने आप ख़ुद पहुंचाई.

लेकिन असल में हुआ क्या? जब शंघाई में कांगसी के रास्ते 50 हज़ार टन ही पहुंचे थे—बाक़ी कोटे का एक चौथाई—कि वहां से आवाज़ आई अब और नहीं चाहिये क्योंकि इस अरसे में दूसरी जगहों से वहां अनाज आ पहुंचा और भंडार भर गये. इसी तरह यह देखा गया कि उत्तर पूर्वी चीन के कोटे के सिर्फ़ 80 फ़ी सदी को बड़ी दीवार के दक्खिन में भेजने की ज़रूरत पड़ी.

ज़ियादा जाँच करने पर पता चला कि पिछले साल की बाढ़ वग़ैरा के डर से घबराकर ना-तजुर्बेकार सरकारी मुलाज़िमों ने सताये हुए इलाक़ों की ज़रूरत का जोड़ बहुत ज़ियादा लगा लिया था. ख़ैरियत यह हुई कि यह ग़लती जल्दी ही पकड़ ली गई और अनाज बेकार न भेजना पड़ा. पर वैसे इलाक़े तो चाहते ही थे कि हमारा बोझ हलका हो, इसलिये सरकार ने इस माल को मौक़ों मौक़ों पर मुनासिब जगह रखवा दिया ताकि वक़्त ज़रूरत पर बाज़ार भाव क़ाबू रखने में काम आये. यही वजह है कि जून के आख़िर में सरकार के पास दस लाख टन अनाज बेशी मौजूद था.

अनाज के इस नये प्रोग्राम से सरकार ने बहुत से सबक़ सीखे और यह बात भी जान गई कि कहां कितने अनाज की ज़रूरत है, कहां कितने की पैदावार है. इन दोनों मसलों पर पहले बहुत कम सही जानकारी रहती थी. साथ ही साथ सरकार को यह भी तजुर्बा हो गया कि अनाज इधर से उधर पहुँचाने के लिये किस तरह सारे देश को एक सूत में पिरोया जा सकता है.

इस तजुर्बे के साथ सरकारी हुक्काम पूरे विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि चीन में कहीं भी अनाज की कमी का डर हो वह उसे चुटकियों में ख़त्म कर सकते हैं. वह यह भी भरोसे के साथ कह सकते हैं कि चीन को अब कभी भी बाहर से अनाज नहीं मंगाना पड़ेगा. वह अपनी ज़रूरत के लायक़ अनाज उगा सकता है और सब आदमियों के पास पहुँचा भी सकता है.

दो बरस के अन्दर हुए यह लेख लिखा गया था. इसकी एक एक बात सच्ची निकली और आज चीन अनाज के मामले में अपने आप का राजा है.

[illegible] شمالی علاقوں کی طرف لے جایا گیا اور ان علاقوں کی طرف بھی جہاں باجرہ وغیرہ اگائی جاتی یا روئی والے علاقوں کی طرف جہاں لوگ اپنی ضرورت کے لائق اناج نہیں اگا سکتے تھے ۔ اتر پوربی چین سے 10 لاکھ 30 ہزار ٹن، سیچوان سے 2 لاکھ ٹن، بیچ چین سے 3 لاکھ ٹن اناج دوسرے صوبوں میں بھیجا گیا ۔ ان میں وہ تعدادیں شامل نہیں ہیں جو بیوپاریوں نے اپنے آپ خود پہنچائیں ۔

لیکن اصل میں ہوا کیا ؟ جب شنگھائی میں کانگسی کے راستے 50 ہزار ٹن ہی پہونچے تھے—پہلی قسط کا ایک چوتھائی—کہ وہاں سے آواز آئی اب اور نہیں چاہئے کیونکہ اِس عرصے میں دوسری جگہوں سے وہاں اناج آ پہنچا اور بھنڈار بھر گئے ۔ اسی طرح یہ دیکھا گیا کہ اتر پوربی چین کے کوٹے کے صرف 80 فی صدی کو بڑی دیوار کے دکھن میں بھیجنے کی ضرورت پڑی ۔

زیادہ جانچ کرنے پر پتہ چلا کہ پچھلے سال کی باڑھ وغیرہ کے ڈر سے گھبرا کر ناتجربہ‌کار سرکاری ملازموں نے ستائے ہوئے علاقوں کی ضرورت کا جوڑ بہت زیادہ لگایا تھا ۔ خیریت یہ ہوئی کہ یہ غلطی جلدی ہی پکڑ لی گئی اور اناج بیکار نہ بھیجنا پڑا ۔ پر ویسے علاقے تو چاہتے ہی تھے کہ ہمارا بوجھ ہلکا ہو' اس لئے سرکار نے اس مال کو موقعوں موقعوں پر مناسب جگہ رکھوا دیا تاکہ وقت ضرورت پر بازار بھاؤ قابو رکھنے میں کام آئے ۔ یہی وجہ ہے کہ جون کے آخر میں سرکار کے پاس دس لاکھ ٹن اناج بیشی موجود تھا ۔

اناج کے اِس نئے پروگرام سے سرکار نے بہت سے سبق سیکھے اور یہ بھی جان گئی کہ کہاں کتنے اناج کی ضرورت ہے' کہاں کتنے کی پیداوار ہے ۔ ان دونوں مسئلوں پر پہلے بہت کم صحیح جانکاری رہتی تھی ۔ ساتھ ہی ساتھ سرکار کو یہ بھی تجربہ ہوگیا کہ اناج اِدھر سے اُدھر پہونچانے کے لئے کس طرح سارے دیش کو ایک سوت میں پرویا جاسکتا ہے ۔

اِس تجربے کے ساتھ سرکاری حکام پورے وشواس کے ساتھ یہ کہہ سکتے ہیں کہ چین میں کہیں بھی اناج کی کمی کا ڈر ہو وہ اسے چٹکیوں میں ختم کرسکتے ہیں ۔ وہ یہ بھی بھروسے کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ چین کو اب کبھی بھی باہر سے اناج نہیں منگانا پڑیگا ۔ وہ اپنی ضرورت کے لائق اناج اگا سکتا ہے اور سب آدمیوں کے پاس پہنچا بھی سکتا ہے ۔

دو برس کے اندر ہوئے یہ لیکھ لکھا گیا تھا ۔ اس کی ایک ایک بات سچی نکلی اور آج چین اناج کے معاملے میں اپنے آپ کا راجہ ہے ۔

कम्यूनिज़्म और सर्वोदय

(हंसराज 'रहबर')

[नवम्बर के 'नया हिन्द' में "सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" नाम से एक लेख छपा था इस पर हमारे कई पाठक साथियों ने अपनी राय भेजी है. उनमें से एक की राय हम जनवरी नम्बर में दे चुके हैं. दूसरी राय भाई हंसराज 'रहबर' की है जिसका खुलासा हम नीचे पेश कर रहे हैं. हम यहां पर बता दें कि भाई हंसराज की बहुत-सी बातों से हम इत्तफ़ाक़ नहीं करते पर उनके क़लम की क़द्र ज़रूर करते हैं—एडीटर]

"सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" लेख में कुछ ग़लत बातें कही गई हैं और इससे कई ग़लत फ़हमियां फैलने का भी अंदेशा है, सबसे पहले अगर लेख का नाम "सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" की बजाय "सर्वोदय और कम्यूनिज़्म" होता तो भ्रम पैदा होने की गुंजायश न रहती और दोनों विचार धाराओं के मानने वालों के साथ इनसाफ़ हो जाता.

कोई भी विचार धारा के किसी ख़ास आदमी के नाम पर मशहूर हो जाने से यह साबित नहीं होता कि वह उस आदमी के साथ जन्मी या उसके साथ मर गई. मार्क्सवाद के मुताबिक़ हर विचार धारा का एक आर्थिक आधार होता है. जब पूँजीवाद युग में बड़े बड़े कारख़ाने बनने से पैदावार का केन्द्री करन (Centralization) हुआ और हज़ारों लाखों मज़दूर एक जगह मिल कर काम करने लगे, तब इन कारख़ानों को किसी एक आदमी की जायदाद रहने के बजाय सब मज़दूरों यानी काम करने वालों की—समाज की साझी जायदाद बनाने का ख़याल पैदा हुआ. यही ख़याल बढ़ते बढ़ते समाजवाद, साइंटिफ़िक सोशलिज़्म और कम्यूनिज़्म बन गया. चूँकि इससे मेहनत करने वालों का भला होता था वह इसे मानने लगे और कारख़ाने के मालिकों पूंजीपतियों से उनकी जायदाद छिनती थी इसलिए वह इसका विरोध करने लगे. इससे यह बात भी साबित होती है कि जिस विचार धारा से जिन लोगों को फ़ायदा पहुँचता है वह उसका साथ देते हैं और जिन्हें नुक़सान पहुँचता है वह उसका विरोध करते हैं.

जिस तरह मार्क्सवादी विचार धारा मार्क्स से पहले पैदा हो चुकी थी और उसके बाद भी क़ायम है, इसी तरह गांधीवादी विचार धारा भी गांधीजी से बहुत पहले पैदा हुई थी और गांधीजी के बाद भी क़ायम है. यह दूसरी

کمیونزم اور سرودے

(ھنس راج 'رہبر')

[نومبر کے 'نیا ہند' میں "سرودے اور کمیونسٹ" نام سے ایک لیکھ چھپا تھا . اس پر ہمارے کئی پاٹھک ساتھیوں نے اپنی رائے بھیجی ہے . ان میں سے ایک کی رائے ہم جنوری نمبر میں دے چکے ہیں . دوسری رائے بھائی ھنس راج رہبر کی ہے جسکا خلاصہ ہم نیچے دے رہے ہیں . ہم یہاں یہ بتا دیں کہ بھائی ھنس راج کی بہت سی باتوں سے ہم اتفاق نہیں کرتے پر انکے قلم کی قدر ضرور کرتے ہیں—ایڈیٹر]

"سرودے اور کمیونسٹ" لیکھ میں کچھ غلط باتیں کہی گئی ہیں اور اس سے کئی غلط فہمیاں پھیلنے کا بھی اندیشہ ہے . اگر سب سے پہلے لیکھ کا نام "سرودے اور کمیونسٹ" کے بجائے "سرودے اور کمیونزم" ہوتا تو بھرم پیدا ہونے کی گنجائش نہ رہتی اور دونوں وچار دھاراؤں کے ماننے والوں کے ساتھ انصاف ہو جاتا .

کوئی وچار دھارا کے کسی خاص آدمی کے نام پر مشہور ہو جانے سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ وہ اس آدمی کے ساتھ جنمی تھی یا اس کے ساتھ مر گئی . مارکس واد کے مطابق ہر وچار دھارا کا ایک آرتھک آدھار ہوتا ہے . جب پونجی واد یگ میں بڑے بڑے کارخانے بننے سے پیداوار کا کیندری کرن (Centralization) ہوا اور ہزاروں لاکھوں مزدور ایک جگہ مل کر کام کرنے لگے، تب ان کارخانوں کو کسی ایک آدمی کی جائداد رہنے کے بجائے سب مزدوروں یعنی کام کرنے والوں کی—سماج کی ساجھی جائداد بنانے کا خیال پیدا ہوا . یہی خیال بڑھتے بڑھتے سماجواد، سائنٹفک سوشلزم اور کمیونزم بن گیا . چونکہ اس سے محنت کرنے والوں کا بھلا ہوتا تھا وہ اسے ماننے لگے اور کارخانے کے مالکوں پونجی پتیوں سے ان کی جائداد چھنتی تھی اس لئے وہ اس کا ورودھ کرنے لگے . اس سے یہ بات بھی ثابت ہوتی ہے کہ جس وچار دھارا سے جن لوگوں کو فائدہ پہونچتا ہے وہ اس کا ساتھ دیتے ہیں اور جنہیں نقصان پہونچتا ہے وہ اس کا ورودھ کرتے ہیں .

جس طرح مارکسوادی وچار دھارا مارکس سے پہلے پیدا ہو چکی تھی اور اس کے بعد بھی قائم ہے . اسی طرح گاندھی وادی وچار دھارا بھی گاندھی جی سے بہت پہلے پیدا ہوئی تھی اور گاندھی جی کے بعد بھی قائم ہے . یہ دوسری

[illegible] है कि [illegible] जी ने इसके लिये काम [illegible] और इसे [illegible] नया नाम भी दिया. अब जिन लोगों का इस विचार धारा से फायदा है या जो लोग इसे दूसरों का हित समझते हैं वह इसे गांधी जी के बाद मानेंगे, लेकिन जो लोग इसे अपने हित के खिलाफ समझते हैं वह जरूर ही इसका विरोध करेंगे. उनके खयाल के मुताबिक यह विचार धारा ऐसी आर्थिक व्यवस्था को कायम रखना चाहती है जो राजा को राजा, रंक को रंक, अमीर को अमीर और ग़रीब को ग़रीब बनाए रखना चाहती है. राजा और रंक, अमीर और मजदूर दोनों का वजूद रहते इनसान का विकास मुमकिन नहीं. जब राजा या अमीर बहुत से धन पर सांप बन कर बैठता है तब कुछ लोग रंक बनने पर मजबूर हो जाते हैं; पूंजीपति तब तक ही पूंजीपति है जब तक वह कारखाने—जाती जायदाद के जरिये मजदूर की मेहनत का शोषण करता है. सर्वोदय का शब्द रंक और मजदूर को सबके भले की झूठी तसल्ली देता है, असल में फायदा उससे राजा और पूंजीपति को होता है.

गांधी वाद का एक और नाम आदर्शवाद भी है. या यों कहा जा सकता है कि गांधीवाद का आधार आदर्शवाद है. यह बहुत पुराना फलसफा है और सारे मजहबों का आधार इसी फलसफे पर है. इस फलसफे के मुताबिक जड़ या माद्दे की उत्पत्ति चेतन से हुई है और जैसा कि सुरेश भाई ने भी लिखा है कि 'अगर चेतन न हो तो जड़ का पत्ता हरगिज नहीं चल सकता. यह चेतन ही जीवन है, सत्य है और सत्य ही असल चीज है. इसका मतलब यह है कि यह चेतन, सत्य या असल चीज परमात्मा है. जिस तरह मकड़ी अपने अन्दर से जाला बुनती है, उसी तरह परमात्मा जड़ और जीव संसार को जन्म देता है और सब जीव परमात्मा के रूप हैं, इसलिये किसी से नफरत करना पाप है. सब चीजें नाश हो कर उसी चेतन अर्थात् परमात्मा में जा मिलती हैं.'

इस विचार धारा के मुताबिक खयाल या विचार अपनी अलग हस्ती रखते हैं. जब लोगों पर अच्छे खयालों का असर होता है तो वह अच्छे बन जाते हैं और जब बुरे विचार हमला करते हैं तो बुरे बन जाते हैं. हर आदमी चूंकि चेतन, सत्य या परमात्मा के रूप हैं इसलिये वह बुनियादी तौर पर अच्छा है; इसलिये उपदेश से बुरे आदमी को भी सुधारा जा सकता है और ज़ालिम से ज़ालिम आदमी का भी दिल बदलना मुमकिन है. जुल्म और हिंसा के जवाब में हिंसा करने से जुल्म और हिंसा बढ़ती है. जुल्म और हिंसा को चुपचाप सह लेने से अहिंसा और भलाई बढ़ती है और बुराई और हिंसा करने वाले

پہچانا ہے کہ خاص حالات میں گاندھی جی نے اس کے لئے کام کیا اور اسے 'سروودے' کا نیا نام بھی دیا. اب جن لوگوں کا اس وچار دھارا سے فائدہ ہے یا جو لوگ اس سے دوسروں کا ہت سمجھتے ہیں وہ اسے گاندھی جی کے بعد بھی مانیں گے، لیکن جو لوگ اسے اپنے ہت کے خلاف سمجھتے ہیں وہ ضرور ہی اس کا ورودھ کریں گے. ان کے خیال کے مطابق یہ وچار دھارا ایسی آرتھک ویوستھا کو قائم رکھنا چاہتی ہے جو راجہ کو راجہ، رنک کو رنک، امیر کو امیر اور غریب کو غریب بنائے رکھنا چاہتی ہے. راجہ اور رنک، امیر اور مزدور دونوں کا وجود رہتے انسان کا وکاس ممکن نہیں. جب راجہ یا امیر بہت سے دھن پر سانپ بن کر بیٹھتا ہے تب کچھ لوگ رنک بننے پر مجبور ہوجاتے ہیں؛ پونجی پتی تب تک ہی پونجی پتی ہے جب تک وہ کارخانے ذاتی جائداد کے ذریعہ مزدور کی محنت کا شوشن کرتا ہے. سروودے کا شبد رنک اور مزدوروں کو سب کے بھلے کی جھوٹی تسلی دیتا ہے. اصل میں فائدہ اس سے راجہ اور پونجی پتی کو ہوتا ہے.

گاندھی واد کا ایک اور نام آدرش واد بھی ہے. یا یوں کہا جاسکتا ہے کہ گاندھی واد کا آدھار آدرش واد ہے. یہ بہت پرانا فلسفہ ہے اور سارے مذہبوں کا آدھار اسی فلسفے پر ہے. اس فلسفے کے مطابق جڑ یا مادّے کی اتپتی چیتن سے ہوئی ہے اور جیسا کہ سریش بھائی نے بھی لکھا ہے کہ 'اگر چیتن نہ ہو تو جڑ کا پتہ ہرگز نہیں چل سکتا. یہ چیتن ہی جیون ہے، ستیہ ہے اور ستیہ ہی اصل چیز ہے. اس کا مطلب یہ ہے کہ یہ چیتن، ستیہ یا اصل چیز پرماتما ہے. جس طرح مکڑی اپنے اندر سے جالا بنتی ہے، اسی طرح پرماتما جڑ اور جیو سنسار کو جنم دیتا ہے اور سب جیو پرماتما کا روپ ہیں، اس لئے کسی سے نفرت کرنا پاپ ہے. سب چیزیں ناش ہوکر اسی چیتن یعنی پرماتما میں جا ملتی ہیں.'

اس وچار دھارا کے مطابق خیال یا وچار اپنی الگ ہستی رکھتے ہیں. جب لوگوں پر اچھے خیالوں کا اثر ہوتا ہے تو وہ اچھے بن جاتے ہیں اور جب برے وچار حملہ کرتے ہیں تو برے بن جاتے ہیں. ہر آدمی چونکہ چیتن، ستیہ یا پرماتما کے روپ ہیں اس لئے وہ بنیادی طور پر اچھا ہے؛ اس لئے اپدیش سے برے آدمی کو بھی سدھارا جاسکتا ہے اور ظالم سے ظالم آدمی کا بھی دل بدلنا ممکن ہے. ظلم اور ہنسا کے جواب میں ہنسا کرنے سے ظلم اور ہنسا بڑھتی ہے. ظلم اور ہنسا کو چپ چاپ سہہ لینے سے اہنسا اور بھلائی بڑھتی ہے اور برائی اور ہنسا کرنے والے

का हित बदलने में मदद मिलती है. बुद्ध और ईसा इसी आदर्श पर चलकर महान बने और उन्होंने दुनिया का सुधार किया. बीसवीं सदी में महात्मा टालस्टाय और महात्मा गांधी ने इसी विचार धारा को अपनाया और इस पर अमल कर के दुनिया को बेहतर बनाया. अब आचार्य विनोबा भावे भी इसी विचार धारा द्वारा दुनिया का सुधार करना चाहते हैं और लोगों को हिंसा और हिंसक इनकलाब के रास्ते से रोक रहे हैं.

इसके खिलाफ मार्क्सवादी या कम्यूनिस्ट विचार धारा संसार का और विचारों का आधार माद्दे को मानती है. मार्क्सवादी विचार धारा के मुताबिक माद्दा जड़ है और सिर्फ जगह घेरता है. वह अपने आप हिलता डुलता नहीं. चेतन शक्ति उसे हरकत में लाती है. मार्क्सवाद कहता है कि माद्दा अपने आप हरकत करता है. इसमें दो विरोधी तत्व या अनसुर होते हैं. उनके आपस के संघर्ष से माद्दा हरकत करता है. इस संघर्ष और हरकत से माद्दे का विकास होता है और एक खास हालत में माद्दा सोचने लगता है और उसमें से जीव पैदा होता है. अब यह जीव अपनी रक्षा और खूराक के लिये संघर्ष करता है जिससे समाज का विकास होता है.

आदमी का जन्म इसी विकास के जरिये हुआ है और उसका दिमाग माद्दे की तरक्की याफ्ता शक्ल है. जैसे जैसे माद्दी हालात बदलते हैं आदमी का दिमाग और खयाल भी बदलता है. अब आदमी चूँकि सोच सकता है इसलिये जहां वह माद्दी हालात की पैदावार है वहां वह अपनी सोच और अमल से माद्दी हालात को भी तब्दील करता है. वह हर अमल और हर नई तब्दीली से सीखता है और यों माद्दी तरक्की करता है और अपने ज्ञान को भी आगे बढ़ाता है.

इसका मतलब है कि आदमी अपनी मेहनत से न सिर्फ चीजें पैदा करता है बल्कि उसका ज्ञान भी मेहनत ही से पैदा होता है. नए माद्दी हालात के साथ नए खयालात जन्म लेते हैं. इसलिये खयालात की कोई अटल हस्ती नहीं है, कोई बंधा हुआ असूल और कोई कभी न बदलने वाली एक सच्चाई भी नहीं है. मिटने वाले युग के साथ एक सच्चाई मिट जाती है और नए युग के साथ नई सच्चाई जन्म लेती है. जो नए युग की सच्चाई को सबसे पहले समझ कर उसे अपने ज्ञान का अंग बनाते हैं, अपने अमल से उसे आगे बढ़ाते हैं और उसके लिये दूसरे लोगों को संगठित करते हैं, वह वीर और महान कहलाते हैं.

इस युग की सच्चाई कम्युनिज्म को पूंजीवाद ने पैदा किया था. मार्क्स ने इसे सबसे पहले समझा, लेनिन,

[illegible] بدلنے [illegible] اصول پر [illegible] عیسیٰ نے دنیا کا سدھار کیا۔ بیسویں صدی میں مہاتما ٹالسٹائی اور مہاتما گاندھی نے اسی وچار دھارا کو اپنایا اور اس پر عمل کر کے دنیا کو بہتر بنایا۔ اب آچاریہ ونوبا بھاوے بھی اسی وچار دھارا دوارا دنیا کا سدھار کرنا چاہتے ہیں اور لوگوں کو ہنسا اور ہنسک انقلاب کے راستے سے روک رہے ہیں۔

اس کے خلاف مارکس وادی یا کمیونسٹ وچار دھارا سنسار کا اور وچاروں کا آدھار مادے کو مانتی ہے۔ مارکس وادی وچار دھارا کے مطابق مادہ جڑ ہے اور صرف جگہ گھیرتا ہے۔ یہ اپنے آپ ہلتا ڈلتا نہیں۔ چیتن شکتی اسے حرکت میں لاتی ہے۔ مارکس واد کہتا ہے کہ مادہ اپنے آپ حرکت کرتا ہے۔ اس میں دو ورودھی تتو یا عنصر ہوتے ہیں۔ ان کے آپس کے سنگھرش سے مادہ حرکت کرتا ہے۔ اس سنگھرش اور حرکت سے مادے کا وکاس ہوتا ہے اور ایک خاص حالت میں مادہ سوچنے لگتا ہے اور اس میں سے جیو پیدا ہوتا ہے۔ اب یہ جیو اپنی رکھشا اور خوراک کے لئے سنگھرش کرتا ہے جس سے سماج کا وکاس ہوتا ہے۔

آدمی کا جنم اسی وکاس کے ذریعے ہوا ہے اور اس کا دماغ مادے کی ترقی یافتہ شکل ہے۔ جیسے جیسے مادی حالات بدلتے ہیں آدمی کا دماغ اور خیال بھی بدلتا ہے۔ اب آدمی چونکہ سوچ سکتا ہے اس لئے جہاں وہ مادی حالات کی پیداوار ہے وہاں وہ اپنی سوچ اور عمل سے مادی حالات کو بھی تبدیل کرتا ہے۔ وہ ہر عمل اور ہر نئی تبدیلی سے سیکھتا ہے اور یوں مادی ترقی کرتا ہے اور اپنے گیان کو بھی آگے بڑھاتا ہے۔

اس کا مطلب ہے کہ آدمی اپنی محنت سے نہ صرف چیزیں پیدا کرتا ہے بلکہ اس کا گیان بھی محنت ہی سے پیدا ہوتا ہے۔ نئے مادی حالات کے ساتھ نئے خیالات جنم لیتے ہیں۔ اس لئے خیالات کی کوئی اٹل ہستی نہیں ہے، کوئی بندھا ہوا اصول اور کوئی کبھی نہ بدلنے والی ایک سچائی بھی نہیں ہے۔ مٹنے والے یگ کے ساتھ ایک سچائی مٹ جاتی ہے اور نئے یگ کے ساتھ نئی سچائی جنم لیتی ہے۔ جو نئے یگ کی سچائی کو سب سے پہلے سمجھ کر اسے اپنے گیان کا انگ بناتے ہیں، اور عمل سے آگے بڑھاتے ہیں اور اس کے لئے دوسرے لوگوں کو سنگٹھت کرتے ہیں، وہ ویر اور مہان کہلاتے ہیں۔

موجودہ یگ کی سچائی کمیونزم کو پونجی واد نے پیدا کیا [illegible] سب سے پہلے [illegible]

[illegible]ीन और [illegible] ने इसे अपने अमल से आगे [illegible]या इसलिये वह वीर और महान हैं.

मार्क्सवाद विचारों की अलग हस्ती नहीं मानता. खयालात माद्दी हालात से जन्म लेते हैं और जब वह हालात बदलते हैं तो खयालात भी बदलते हैं और सच्चाई भी बदलती है. मार्क्सवाद किसी अटल सच्चाई में विश्वास नहीं रखता बल्कि माद्दी हालात को समझते रहने और उनके साथ तब्दील होने को ही सच्चाई मानता है.

मार्क्सवादी यानी कम्यूनिस्ट चूँकि खयालात की अलग हस्ती नहीं मानते इसलिये वह समाज को बदलने के लिये आदमी को बदलने की बात नहीं कहते बल्कि आदमी को बदलने के लिये समाज को बदलने की बात कहते हैं क्योंकि नए और अच्छे माद्दी हालात में आदमी आप ही आप अच्छा बन जायेगा. जब लोगों को आम बाजार में चीज न मिले और अदालत या दफ्तर से उनका काम न निकले, तो वह चोर बाजारी में चीज खरीदने और रिश्वत देने पर मजबूर होते हैं, इसके लिये उन्हें दोषी ठहराना गलत है. जिस राजा, जमींदार और पूँजीपति का वजूद ही दूसरों की मेहनत पर है, उनका दिल बदलना मुमकिन नहीं. फिर यह दो चार आदमियों का सवाल नहीं बल्कि पूरे गिरोह या वर्ग का सवाल है. उसे तभी बदला जा सकता है जब उससे दूसरों की मेहनत चूसने के साधन छीन लिये जायें, केवल उपदेश से काम नहीं चलता. यही कारन है कि माओत्से तुंग ने दो साल में ही समाजी चोरी, रिश्वत और व्यभिचार को खत्म कर दिया और यहां दिल बदलने के उपदेश का असर उलटा हो रहा है, तबाही और बरबादी दिन दिन बढ़ रही है.

सर्वोदयी छीनने के नाम से घबराते हैं और कम्यूनिस्टों को हिंसावादी कहते हैं. हालांकि हिंसावादी वह हैं जो जमीन और कारखानों पर अपनी मिलकियत क़ायम रख कर दूसरों की मेहनत चूसते हैं और इस चूसने के कारन हजारों लाखों इन्सान हर रोज धीरे धीरे भूक और बीमारी से मरते रहते हैं. फिर यह लोग अपनी जमींदारी, जायदाद और शोषण के दूसरे साधनों की रक्षा के लिये पुलिस और फौज रखते हैं, जनता विरोधी क़ानून, अदालतें और जेलखाने बनाते हैं और दूसरों की मेहनत का चुराया हुआ करोड़ों रुपया हथियारों पर खर्च करते हैं. अगर इस ताकत का दुखी और मेहनतकश जनता ताकत ही से मुकाबला करे तो जनता और उसका साथ देने वाले कम्यूनिस्टों पर हिंसा का इलज़ाम क्यों? जनता और उसकी पारटी को संगठित होने और ताकत इस्तेमाल करने का और मनाही का मतलब यह है कि अगर शासक वर्ग का दिल न बदले तो वह मजे से शोषण

ایکتا اور ماؤتسے تنگ نے اسے اپنے عمل سے آگے بڑھایا اس لئے وہ ویر اور مہان ہیں ۔

مارکس واد وچاروں کی الگ ہستی نہیں مانتا ۔ خیالات مادی حالات سے جنم لیتے ہیں اور جب وہ حالات بدلتے ہیں تو خیالات بھی بدلتے ہیں اور سچائی بھی بدلتی ہے ۔ مارکس واد کسی اٹل سچائی میں وشواس نہیں رکھتا بلکہ مادی حالات کو سمجھتے رہنے اور اُن کے ساتھ تبدیل ہونے کو ہی سچائی مانتا ہے ۔

مارکس وادی یعنی کمیونسٹ چونکہ خیالات کی الگ ہستی نہیں مانتے اس لئے وہ سماج کو بدلنے کے لئے آدمی کو بدلنے کی بات نہیں کہتے بلکہ آدمی کو بدلنے کے لئے سماج کو بدلنے کی بات کہتے ہیں کیونکہ نئے اور اچھے مادی حالات میں آدمی آپ ہی آپ اچھا بن جائیگا ۔ جب لوگوں کو عام بازار میں چیز نہ ملے اور عدالت یا دفتر سے اُن کا کام نہ نکلے تو وہ چور بازاری میں چیز خریدنے اور رشوت دینے پر مجبور ہوتے ہیں، اس کے لئے انہیں دوشی ٹھہرانا غلط ہے ۔ جس راجہ، زمیندار اور پونجی پتی کا وجود ہی دوسروں کی محنت پر ہے، اُن کا دل بدلنا ممکن نہیں ۔ پھر یہ دو چار آدمیوں کا سوال نہیں بلکہ پورے گروہ یا ورگ کا سوال ہے ۔ اُسے تبھی بدلا جا سکتا ہے جب اُس سے دوسروں کی محنت چوسنے کے سادھن چھین لئے جائیں، کیول اُپدیش سے کام نہیں چلتا ۔ یہی کارن ہے کہ ماؤتسے تنگ نے دو سال میں ہی سماجی چوری، رشوت اور ویبھیچار کو ختم کر دیا اور یہاں دل بدلنے کے اُپدیش کا اثر الٹا ہو رہا ہے، تباہی اور بربادی دن دن بڑھ رہی ہے ۔

سرودیی چھیننے کے نام سے گھبراتے ہیں اور کمیونسٹوں کو ہنساوادی کہتے ہیں ۔ حالانکہ ہنساوادی وہ ہیں جو زمین اور کارخانوں پر اپنی ملکیت قائم رکھکر دوسروں کی محنت چوستے ہیں اور اِس چوسنے کے کارن ہزاروں لاکھوں اِنسان ہر روز دھیرے دھیرے بھوک اور بیماری سے مرتے رہتے ہیں ۔ پھر یہ لوگ اپنی زمینداری، جائداد اور شوشن کے دوسرے سادھنوں کی رکشا کے لئے پولیس اور فوج رکھتے ہیں، جنتا ورودھی قانون، عدالتیں اور جیلخانے بناتے ہیں اور دوسروں کی محنت کا چرایا ہوا کروڑوں روپیہ ہتھیاروں پر خرچ کرتے ہیں، اگر اِس طاقت کا دکھی اور محنت کش جنتا بھی طاقت ہی سے مقابلہ کرے تو جنتا اور اُس کا ساتھ دینے والے کمیونسٹوں پر ہنسا کا الزام کیوں؟ جنتا اور اُس کی پارٹی کو سنگٹھت ہونے اور طاقت استعمال کرنے کا اور مناہی کا مطلب یہ ہے کہ اگر مالک ورگ کا دل نہ بدلے تو وہ مزے سے شوشن

[illegible], और शोषण के कारण जो भूख, बेकारी और व्यभिचार फैलता है वह फैला करे और भूख के मारे करोड़ों इन्सान सिसक सिसक हर पल मरते हैं वह मरते रहें.

इस जरूरी बहस को पूरी तरह समझने के लिये मार्क्सवाद और आदर्शवाद का ऐतिहासिक सम्बन्ध जानना जरूरी है.

तारीख का मुताला हमें बताता है कि जब इन्सान पैदा हुआ तो उसने अपनी जीवन रक्षा के लिये कुदरत के खिलाफ संघर्ष शुरू किया. उसने रहने के लिये मकान बनाए, पहनने को कपड़े तैयार किये, पशुओं को पाला और सिखाया. यह दुनिया को अमल में बदलने का नया तरीका था.

लेकिन इस पहली हालत में दुनिया को बदलना मुश्किल था, इसलिये इन्सान ने अपने आप को खयालात और जज्बात में भी बदला; चांद, सूरज, बादल और धरती के बारे में कहानियां बनाईं. यह अपने आपको बदलने का तरीका है.

दुनिया को अमल से बदलने से माद्दीयत, माटीवाद या भौतिक वाद की विचार धारा बनी और अपने आप को खयालात में बदलने से आदर्शवाद की विचार धारा ने जन्म लिया.

शुरू से ही इन दोनों विचार धाराओं के जरिये आदमी कुदरत के खिलाफ और आदमी का आदमी के खिलाफ संघर्ष चलता रहा. हर देश में दोनों विचारों के फिलासफर पाये जाते हैं और दोनों विचार धाराएं एक दूसरे पर असर डालती रही हैं और इन्सान के विकास में मदद करती रही हैं. जैसे जैसे पैदावार के साधन और ढंग बदलते रहे आदर्शवादी और भौतिकवादी विचारधारा भी बदलती रही.

दुनिया में सिर्फ असलियत (Rational) का वजूद रहता है और जो चीज असलियत खो देती है उसका वजूद भी मिट जाता है. दुनिया में हर नई असलियत (Thesis) की एक विरोधी असलियत (Anti thesis) भी होती है. धीरे धीरे Thesis कमजोर और Anti thesis मजबूत होता जाता है. आखिर Thesis को खत्म कर के Anti thesis उसका स्थान लेता है. अब वह Anti thesis, Thesis बन जाता है और उसके स्थान पर नया Anti thesis जन्म लेता है. हेगल के इस उसूल के मुताबिक दुनिया में तबदीलियां और इनकलाब आते हैं.

इस उसूल को हेगल ने जहां छोड़ा था, फ्योरबाख ने उसे और आगे बढ़ाया और योरप के बादशाहों और ढोंगी पादरियों के खिलाफ जनता की लड़ाई को तेज करने में मदद दी. फ्योरबाख ईश्वर की हस्ती को मानता था और दायमी असलीयत या अटल सत्य को भी मानता

[illegible]
ہے وہ پھیلتا [illegible]
ک سسک کر پل پل مرتے رہیں وہ مرتے رہیں ۔

اِس ضروری بحث کو پوری طرح سمجھنے کے لئے مارکس
اور آدرش واد کا اتہاسک سمبندھ جاننا ضروری ہے ۔

تاریخ کا مطالعہ ہمیں بتاتا ہے کہ جب انسان پیدا
ا تو اُس نے اپنی جیون رکھشا کے لئے قدرت کے خلاف
نگھرش شروع کیا ۔ اُس نے رہنے کے لئے مکان بنائے'
نے کو کپڑے تیار کئے' پشوؤں کو پالا اور سکھایا ۔ یہ
یا کو عمل میں بدلنے کا نیا طریقہ تھا ۔

لیکن اِس پہلی حالت میں دنیا کو بدلنا مشکل
اِس لئے اِنسان نے اپنے آپ کو خیالات اور جذبات
ں بھی بدلا؛ چاند' سورج' بادل اور دھرتی کے بارے
ں کہانیاں بنائیں ۔ یہ اپنے آپ کو بدلنے کا طریقہ ہے ۔

دنیا کو عمل سے بدلنے سے مادیت' ماٹی واد یا بھوتک
کی وچار دھارا بنی اور اپنے آپ کو خیالات میں بدلنے
آدرش واد کی وچار دھارا نے جنم لیا ۔

شروع سے ہی اِن دونوں وچار دھاراؤں کے ذریعے آدمی
رت کے خلاف اور آدمی کا آدمی کے خلاف سنگھرش
لتا رہا ۔ ہر دیش میں دونوں وچاروں کے فلاسفر پائے
اتے ہیں اور دونوں وچار دھارائیں ایک دوسرے پر اثر
التی رہی ہیں اور انسان کے وکاس میں مدد کرتی
ی ہیں۔ جیسے جیسے پیداوار کے سادھن اور ڈھنگ بدلتے
ے آدرش وادی اور بھوتک وادی وچار دھارا بھی
لتی رہی ۔

دنیا میں صرف اصلیت (Rational) کا وجود
تا ہے اور جو چیز اصلیت کھو دیتی ہے اُسکا وجود
ی مٹ جاتا ہے ۔ دنیا میں ہر نئی اصلیت (Thesis)
ی ایک وِرودھی اصلیت (Anti Thesis) بھی ہوتی ہے.
ھیرے دھیرے Thesis کمزور اور Anti Thesis مضبوط
وتا جاتا ہے. آخر Thesis کو ختم کرکے Anti Thesis
سکا استھان لیتا ہے ۔ اب یہ Anti Thesis
Thesi بن جاتا ہے اور اُس کے استھان پر نیا
Anti Thesi جنم لیتا ہے ۔ ہیگل کے اِس اصول کے
طابق دنیا میں تبدیلیاں اور انقلاب آتے ہیں ۔

اس اصول کو ہیگل نے جہاں چھوڑا تھا' فیور باخ
نے اور آگے بڑھایا اور یورپ کے بادشاہوں اور
ونگی پادریوں کے خلاف جنتا کی لڑائی کو تیز کرنے
میں مدد دی ۔ فیور باخ ایشور کی ہستی کو مانتا
ا اور دائمی اصلیت یا اٹل سچائی کو بھی مانتا

इस कारण वह ... भौतिकवादी न होकर आदर्शवादी द्वंद्वात्मक विचार धारा को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहे जाते मार्क्स हैं. यह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पहले भौतिकवाद से मुख्तलिफ है. पहले भौतिकवादी माद्दे की हरकत को नहीं समझते थे और वह जिन्दगी का मकसद खाना पीना ही समझते थे. लेकिन मार्क्स ने बताया कि संसार की तमाम भौतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ एक नियम के मुताबिक हो रही हैं और हर नया युग उससे पहले के युग के मुकाबले में तरक्की कर रहा है. इन्सान की हर नई पीढ़ी को अपने से पहले की पीढ़ी का ज्ञान और अनुभव विरासत में मिलता है और हर नई पीढ़ी का इन्सान अपने अनुभव से नया ज्ञान सीखता है और दुनिया को बेहतर बनाता है. इस तरह आदमी का विकास जारी रहता है. और इन्सान जैसे जैसे आर्थिक उन्नति कर रहा है उसकी संस्कृति और सभ्यता का भी विकास हो रहा है. इन्सान अपने ज्ञान को और साइन्स की ईजादों को जितना अधिक निर्माण के लिये और सब के फायदे के लिये अमल में लायेगा उतना ही दुनिया से अंधकार मिटेगा, इन्सान का आध्यात्मिक या रूहानी विकास होगा, जितना समाज तरक्की करेगा उतना ही आदमी का व्यक्तित्व तरक्की करेगा. माली खुशहाली में ही आदमी की आत्मा खुशहाल और सम्पन्न रह सकती है. भूख और बीमारी से वह कमजोर और नाश होती है क्योंकि आत्मा माद्दे की तरक्की-याफ्ता शक्ल ही है और शरीर से अलग उसका कोई वजूद या हस्ती नहीं है.

यह मार्क्सवाद का फलसफा है. सुरेश भाई का यह कहना है कि उन्नीसवीं सदी दुनिया के इतिहास में सब से ज़ियादा माद्दापरस्त और माद्दा पसंद थी, लेकिन जिस तरह उन्नीसवीं सदी के विज्ञानी असूली किले को जगदीशचन्द्र बसु और आइन्स्टाइन ने ढा दिया उसी तरह मार्क्स और लेनिन के असूली किले को टालस्टाय ने ढा दिया, दुरुस्त नहीं. यह तो वही ज़मीन को चपटी मानने वाली बात है. हालांकि हकीकत यह है कि टालस्टाय के बाद रूस में मार्क्सवाद की जीत हुई और आज महात्मा गांधी के बाद चीन में हम उसकी जीत देख रहे हैं और इस विचार धारा का विस्तार दिन दिन बढ़ रहा है.

आखिर में कुछ ज़ियादा न कह कर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि गो सर्वोदयी और कम्यूनिस्टों का मकसद एक है, मगर उनकी विचार धारा और उनके साधन उन्हें पहले ही कदम पर अलग अलग कर देते हैं. सच्चाई किस के साथ है इसका फैसला तारीख हमारे सामने कर रही है.

تھا۔ لیکن وہ بھی بھوتک وادی نہ ہو کر آدرش وادی تھا۔ دونددآتمک وچار دھارا کو دونددآتمک بھوتک واد بتانے والا مارکس ہے۔ یہ دونددآتمک بھوتک واد پہلے بھوتک واد سے مختلف ہے۔ پہلے بھوتک وادی مادے کی حرکت کو نہیں سمجھتے تھے اور وہ زندگی کا مقصد کھانا پینا ہی سمجھتے تھے۔ لیکن مارکس نے بتایا کہ سنسار کی تمام بھوتک، آرتھک اور سماجک پرستھتیاں ایک نیم کے مطابق ہو رہی ہیں اور ہر نیا یگ اس سے پہلے کے یگ کے مقابلے میں ترقی کر رہا ہے۔ انسان کی ہر نئی پیڑھی کو اپنے سے پہلے کی پیڑھی کا گیان اور انوبھو ورثت میں ملتا ہے اور ہر نئی پیڑھی کا انسان اپنے انوبھو سے نیا گیان سیکھتا ہے اور دنیا کو بہتر بناتا ہے۔ اسطرح آدمی کا وکاس جاری رہتا ہے۔ اور انسان جیسے جیسے آرتھک اُنتی کر رہا ہے اُسکی سنسکرتی اور سبھیتا کا بھی وکاس ہو رہا ہے۔ انسان اپنے گیان کو اور سائنس کی ایجادوں کو جتنا ادھک نرمان کے لئے اور سب کے فائدے کے لئے عمل میں لائیگا اتنا ہی دنیا سے اندھکار مٹیگا، انسان کا ادھیاتمک یا روحانی وکاس ہوگا، جتنا سماج ترقی کریگا اتنا ہی آدمی کا ویکتتو ترقی کریگا۔ مالی خوشحالی میں ہی آدمی کی آتما خوشحال اور سمپن رہ سکتی ہے۔ بھوک اور بیماری سے وہ کمزور اور ناش ہوتی ہے کیونکہ آتما مادے کی ترقی یافتہ شکل ہی ہے اور شریر سے الگ اسکا کوئی وجود یا ہستی نہیں ہے۔

یہ مارکس واد کا فلسفہ ہے۔ سریش بھائی کا یہ کہنا کہ اُنیسویں صدی دنیا کے اتہاس میں سب سے زیادہ مادہ پرست اور مادہ پسند تھی، لیکن جس طرح اُنیسویں صدی کے وگیانی اصولی قلعے کو جگدیش چندر بسو اور آئنسٹائن نے ڈھا دیا اُسی طرح مارکس اور لینن کے مالی اصولی قلعے کو ٹالسٹائی نے ڈھا دیا، درست نہیں۔ یہ تو رہی زمین کو چپٹی ماننے والی بات ہے۔ حالانکہ حقیقت یہ ہے کہ ٹالسٹائی کے بعد روس میں مارکس واد کی جیت ہوئی اور آج مہاتما گاندھی کے بعد چین میں ہم اُسکی جیت دیکھ رہے ہیں اور اس وچار دھارا کا وچار دن دن بڑھ رہا ہے۔

آخر میں کچھ زیادہ نہ کہکر میں صرف اتنا ہی کہنا چاہتا ہوں کہ گو سروودئی اور کمیونسٹوں کا مقصد ایک ہے مگر اُن کی وچار دھارا اور اُن کے سادھن پہلے ہی قدم پر الگ الگ کر دیتے ہیں۔ سچائی کس کے ساتھ ہے اُس کا فیصلہ تاریخ ہمارے سامنے کر رہی ہے۔

इटावे का घर फूंक तमाशा

(ठाकुरदास बंग और सुरेश रामभाई)

[क्या हिन्दुस्तान में, क्या अमरीका में इटावा योजना की बड़ी चर्चा है. हाल ही में वर्धा के प्रोफेसर ठाकुरदास बंग, 'नया हिन्द' के सुरेश रामभाई कई साथियों के साथ इटावा गये जहां उन्होंने इस योजना को खूब देखा-समझा. उनकी रिपोर्ट हम नीचे दे रहे हैं. हमारा खयाल है देश के सामने इटावा योजना की पहलीबार सच्ची व साबित तसवीर पेश की जा रही है. हमें उम्मीद है कि हमारे प्रेमी व पाठक इसे ध्यान से पढ़ेंगे—एडीटर]

आजकल का जमाना 'विकास' या डेवलपमेन्ट का जमाना कहलाता है. हर मुल्क में विकास की योजनायें या डेवलपमेन्ट प्लान बन रहे हैं और चल रहे हैं. हमारे देश में भी विकास की तूती बोल रही है और जिसे देखिये उसके पास एक ऐसी योजना मौजूद है जिससे हमारे अभागे भाई बहनों के 'रहन सहन का दर्जा' ऊंचा उठ सकता है. इधर कुछ अरसे से एक नई योजना की बहुत जोरों से चर्चा चल रही है. इसका नाम है—इटावा विकास योजना. कहा जाता है कि इस योजना के नमूने पर सारे देश भर में ऐसी योजनायें चलाई जायेंगी और इसके वास्ते जानकारों की, मशीनरी की, रुपये-पैसे की, हर तरह की मदद देने का वादा अमरीका ने हाल के हिन्द-अमरीकी समझौते में कर लिया है. सरकारी और दूसरे हलकों का दावा है कि इस तरह इटावा जैसी योजना चलाने पर हमारे देश की हालत बहुत कुछ सुधर जायेगी.

लेकिन अब तक अखबारों से या दूसरे प्रचारों से जनता को यह नहीं बताया गया कि इटावा योजना चीज क्या है, इसमें क्या किया गया है और किस तरह इसकी नकल की जायेगी. इस योजना की कोई बेलाग जानकारी हमारे देखने में नहीं आई. इसलिये हमारी दिली इच्छा थी कि मौके पर जाकर जरा देखें-समझें कि इस योजना का क्या कमाल है और इससे सचमुच हमारा कितना फायदा है. इसलिये सेवापुरी (बनारस) में होने वाले (13,14,15 अप्रैल) सर्वोदय सम्मेलन के बाद हम दोनों इटावा आये जहां तीन दिन 18,19,20 अप्रैल रहे, और इस योजना को समझने की पूरी कोशिश की. हमारी टोली में कुल मिला कर कुछ सात भाई बहन थे—भाई पंडित प्रकाश पति जी जो, सेवा संघ, वर्धा के कार्य करता

اِٹاوے کا گھر پھونک تماشہ

(ٹھاکر داس بنگ اور سریش رام بھائی)

[کیا هندستان میں' کیا امریکہ میں اِٹاوہ
جنا کی بڑی چرچا ہے . حال ہی میں وردھا کے
روفیسر ٹھاکر داس بنگ' ' نیا هند ' کے سریش رام
ائی کئی ساتھیوں ساتھ اِٹاوہ گئے جہاں اُنہوں نے اِس
جنا کو خوب دیکھا سمجھا . اُن کی رپورٹ هم نیچے
ے رہے ہیں . ہمارا خیال ہے دیش کے سامنے اٹاوہ
جنا کی پہلی بار سچی و ثابت تصویر پیش کی جا
ی ہے . ہمیں اُمید ہے کہ ہمارے پریمی و پاٹھک
دھیان سے پڑھینگے—ایڈیٹر]

آجکل کا زمانہ ' وکاس ' یا ڈیولپمنٹ کا زمانہ کہلاتا
. هر ملک میں وکاس کی یوجنائیں یا ڈیولپمنٹ
ن بن رہے ہیں اور چل رہے ہیں . ہمارے دیش میں
ی وکاس کی طوطی بول رہی ہے اور جسے دیکھئے اُس
پاس ایک ایسی یوجنا موجود ہے جس سے ہمارے
ے بھائی بہنوں کے 'رہن سہن کا درجہ' اونچا اٹھ سکتا
اِدھر کچھ عرصہ سے ایک نئی یوجنا کی بہت زوروں
چرچہ چل رہی ہے. اس کا نام ہے—اٹاوہ وکاس یوجنا .
جاتا ہے کہ اِس یوجنا کے نمونہ پر سارے دیش
میں ایسی یوجنائیں چلائی جائینگی اور
کے واسطے جانکاروں کی' مشینری کی' روپے پیسے کی'
طرح کی مدد دینے کا وعدہ امریکہ نے حال کے هند
ریکی سمجھوتے میں کر لیا ہے . سرکاری اور دوسرے
وں کا دعویٰ ہے کہ اس طرح اٹاوہ جیسی یوجنا چلانے
ہمارے دیش کی حالت بہت کچھ سدھر جائیگی .

لیکن اب تک اخباروں سے یا دوسرے پرچاروں
جنتا کو یہ نہیں بتایا کہ اِٹاوہ یوجنا چیز کیا
' اس میں کیا کیا گیا ہے اور کس طرح
کی نقل کی جائیگی . اس یوجنا کی کوئی بیلاگ
کاری ہمارے دیکھنے میں نہیں آئی . اسی لئے ہماری
اِچھا تھی کہ موقعے پر جاکر ذرا دیکھیں سمجھیں تو کہ
یوجنا کا کیا کمال ہے اور اِس سے سچ مچ ہمارا کتنا
ہ ہے . اس لئے سیوا پوری (بنارس) میں ہونے والے
13,14,1 اپریل) سروودیہ سمیلن کے بعد هم دونوں
آئے جہاں تین دن 18,19,20 اپریل رہے'
اس یوجنا کو سمجھنے کی پوری کوشش کی . ہماری
میں کل ملا کر سات بھائی بہن تھے—بھائی
پرکاش پتی جو گرام سیوا سنگھ' وردھا کے کاریکرتا

है. और भाई ... वर्मा नगर व गांव के बीच गांव के निर्माणवाली योजना में काम कर रहे हैं, भाई प्रभाकर वासुदेव कालेलकर जो वर्धा संघ की काश्मीर शाखा के इन्चार्ज हैं, भाई मधुकर चौधरी जो गोविन्दराम सकसेरिया कामर्स कालिज, वर्धा में एम. काम. के विद्यार्थी हैं और योजना (Planning) के विषय में खास दिलचस्पी रखते हैं, और भाई गंगा प्रसाद गुप्त जो एक समझे-बूझे किसान हैं और मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में खेती करते हैं. सातवीं साथिन एक बहन थी—श्रीमती सुमन मानुधने एम. ए. जो अपने पति के साथ स्वावलम्बी खेती के प्रयोग में महा काल नाम के गांव में जो (वर्धा से मील दूर है) में करती है.

इटावा योजना के बारे में कुछ भी कहने के पहले हम इस योजना के अधिकारियों का शुक्रिया अदा करते हैं, खास कर भाई बैजनाथ सिंह का जो डिप्टी डेवलपमेन्ट अफ़सर हैं. जिस आदर व सत्कार के साथ यह सब भाई हमारे साथ पेश आये, इन्होंने हमारे लिये जो आसानियां मुहय्या कीं, जो अपना समय हमें दिया उसके लिये हम इनके आभारी हैं. साथ ही साथ हम योजना के प्राण और कर्ता धर्ता, मिस्टर अलबर्ट मेयर के भी हम अहसान मन्द हैं जिन्होंने अपना अनमोल समय दे कर योजना सम्बन्धी कुछ बात चीत हम से की.

योजना का जन्म.

इटावा योजना ने नवम्बर 1948 में जन्म लिया. इटावा नगर से 18 मील पूरब को महेवा नाम की एक बस्ती है. उसके आस-पास के 97 गांवों में यह योजना चल रही है. इटावा शहर खास मुक़ाम है इटावा ज़िले का जो उत्तर प्रदेश की इलाहाबाद कमिश्नरी के उत्तर पूर्वी सिरे पर है. इटावा के चारों तरफ़ कानपुर, फ़र्रुख़ाबाद, मैनपुरी और जालौन के ज़िले हैं. इटावा शहर ईस्ट इन्डियन रेलवे पर है और दिल्ली इलाहाबाद के क़रीब क़रीब बीच में पड़ता है. इटावा घी और तिलहन की मशहूर मंडी है.

इन 97 गांवों की आबादी 79,000 है और रक़बा 61,400 एकड़ है. इनमें से 45,500 एकड़ काश्त में है. इस इलाक़े की दक्खिनी हद जमुना नदी है और गंगा की एक नहर इसके बीच को होकर जाती है.

योजना क्या है?

इस योजना को सोचने और चलाने का श्रेय मिस्टर अलबर्ट मेयर को है जो अमरीका के रहने वाले हैं. आप पहले एक फ़ौजी की हैसियत से पिछली लड़ाई में हिन्दुस्तान आये थे. वैसे आप नगर बनाने की कला के एक बहुत ही मशहूर जानकार हैं. उत्तर प्रदेश की सरकार ने अपने

ہیں اور آجکل وردھا نگر و ہلس کے تیس گاؤں کے وکاس والی یوجنا میں کام کر رہے ہیں، بھائی پربھاکر واسودیو کالیلکر جو چرخہ سنگھ کا کشمیر شاخا کے انچارج ہیں، بھائی مدھوکر چودھری جو گووندرام سیکسریا کامرس کالج وردھا میں ایم. کام کے ودیارتھی ہیں اور یوجنا (Planning) کے وشے میں خاص دلچسپی رکھتے ہیں، اور بھائی گنگا پرساد گپت جو ایک سمجھے بوجھے کسان ہیں اور مدھیہ پردیش کے چھندواڑا ضلعے میں کھیتی کرتے ہیں. ساتویں ساتھی ایک بہن تھیں— شریمتی سمن مانودھنے ایم. اے. جو اپنے پتی کے ساتھ سواولمبی کھیتی کے پریوگ میں مہاکال نام کے گاؤں میں جو وردھا سے پانچ میل دور ہے) میں کام کرتی ہیں.

اٹاوہ یوجنا کے بارے میں کچھ بھی کہنے کے پہلے ہم اس یوجنا کے ادھیکاریوں کا شکریہ ادا کرتے ہیں، خاص کر بھائی بیج ناتھ سنگھ کا جو ڈپٹی ڈیولپمنٹ افسر ہیں. جس آدر و ستکار کے ساتھ یہ سب بھائی ہمارے ساتھ پیش آئے، انہوں نے ہمارے لئے جو آسانیاں مہیا کیں، جو اپنا سمے ہمیں دیا اس کے لئے ہم ان کے آبھاری ہیں. ساتھ ہی ساتھ اس یوجنا کے پران اور کرتا دھرتا مسٹر البرٹ میئر کے بھی ہم احسانمند ہیں جنہوں نے اپنا انمول سمے دے کر یوجنا سمبندھی کچھ بات چیت ہم سے کی.

یوجنا کا جنم.

اٹاوہ یوجنا نے نومبر 1948 میں جنم لیا. اٹاوہ نگر سے 18 میل پورب کو مہیوا نام کی ایک بستی ہے. اسکے آس پاس کے 97 گاؤں میں یوجنا چل رہی ہے. اٹاوہ شہر خاص مقام ہے اٹاوہ ضلعے کا جو اتر پردیش کی الہ آباد کمشنری کے اتر پوربی سرے پر ہے. اٹاوہ کے چاروں طرف کانپور، فرخ آباد، مینپوری اور جالون کے ضلعے ہیں. اٹاوہ شہر ایسٹ انڈین ریلوے پر ہے اور دلی الہ آباد کے قریب قریب بیچ میں پڑتا ہے. اٹاوہ گھی اور تلہن کی مشہور منڈی ہے.

ان 97 گاؤں کی آبادی 79,000 ہے اور رقبہ 61,400 ایکڑ ہے. ان میں سے 45,500 ایکڑ کاشت میں ہے. اس علاقے کی دکھنی حد جمنا ندی ہے. گنگا کی ایک نہر اسکے بیچ کو ہوکر جاتی ہے.

یوجنا کیا ہے؟

اس یوجنا کو سوچنے اور چلانے کا شریہ مسٹر البرٹ میئر کو ہے جو امریکہ کے رہنے والے ہیں. آپ پہلے ایک فوجی کی حیثیت سے پچھلی لڑائی میں ہندستان آئے تھے. ویسے آپ نگر بنانے کی کلا کے ایک بہت ہی پرسدھ جانکار ہیں. اتر پردیش کی سرکار نے اپنے

हुक्म नम्बर 10069-RI—XII C.D. C-561-48, तारीख 27 नवम्बर 1948 में इसकी मन्ज़ूरी दी. इस योजना अन्दर खेती, पशु पालन के कोआपरेशन, सिंचाई, औज़ार, इमारत और सफ़ाई, जन-सेहत, औरतों की सेवा, गांव शिरकत (जिसमें बालिग़ों की तालीम और तमाशा दिखाना वग़ैरा शामिल हैं) सम्बन्धी काम किये जाने की तजवीज़ इस सरकारी मन्ज़ूरी में की गई है.

योजना को चलाने के लिये सरकार ने एक बाक़ायदा निज़ाम खड़ा कर दिया है. इसकी बागडोर मिस्टर अलबर्ट मेयर के हाथों में है. योजना पर अमल-दरामद की ज़िम्मेदारी ज़िला विकास अफ़सर की है. वैसे तो उनके ऊपर इटावे ज़िले का ज़िला मजिस्ट्रेट व कलक्टर है जो पहले इस योजना में विकास अफ़सर का काम कर चुके हैं. विकास अफ़सर के नीचे चार अफ़सर हैं जो डिप्टी डेवलपमेन्ट अफ़सर कहलाते हैं. योजना सम्बन्धी काम को चार हिस्सों में बांट कर इनके सिपुर्द कर दिया गया है—खेती व पशु पालन, सिंचाई व औज़ार, ट्रेनिंग, और गांव प्रचार. इनके तले छै छोटे डेवलपमेन्ट अफ़सर हैं जो डेवलपमेन्ट इन्सपेक्टर कहलाते हैं, और उनके नीचे 24 ग्राम सेवक. सरकारी महकमों का जैसे सहयोग, खेती, विकास, पशु-पालन, सेहत वग़ैरा वग़ैरा के वह सारे अमलदार जो इलाक़े में मुलाज़िम हैं इसी स्कीम के मातहत काम कर रहे हैं. इस सरकारी पिंजड़े में जान डालने का काम मेयर साहब ने किया. उन्हीं की बदौलत इस मशीनरी में कुछ दम आ गया, दफ़्तरी लोटा फेरी झिकझिक से वह कुछ थोड़ा बाहर रह सकी और इस वजह से कुछ कर भी सकी, जब कि क्या देश के क्या सूबे के हर ज़िले के अन्दर मौजूद ऐसी सरकारी मशीनरियां एकदम नपुंसक पड़ी हुई हैं. साथ ही साथ यह भी कहना चाहिये कि अब तक सरकार ने किसी देसी या विदेशी जानकार या योजना-नवीस पर इतना विश्वास नहीं किया जितना तक़दीर के सिकन्दर मेयर साहब पर, और न कभी इतने ज़ोर-शोर के साथ किसी के सिपुर्द अपना सारा कारोबार किया. हम कह सकते हैं कि सरकार ने अपनी तरफ़ से मेयर साहब को महेवा का बेताज का राजा बना रखा है.

योजना से काम

इस योजना की शुरूआत में और ख़ुसूसियत के साथ जो काम किया गया वह था बढ़िया बीज बांटना, ख़ासकर गेहूं और आलू के. सनई के जैसी हरी खाद के बीज और कीमियाई (विलायती) खाद भी दिये गये. साथ ही साथ यह भी बताया गया कि बढ़िया और ख़ास औज़ारों से किस तरह काम लिया जाता है. उन औज़ारों को इस्तेमाल करने की आसानी भी गांव वालों को, अगर वह चाहें,

حکم نمبر 48-561-C. D-CXII—RI-10069 تاریخ 27 نومبر 1948 میں اس کی منظوری دی . اس یوجنا کے اندر کھیتی، پشو پالن کے کوآپریشن، سنچائی، اوزار، عمارت اور صفائی، جن صحت، عورتوں کی سیوا، گاؤں شرکت (جس میں بالغوں کی تعلیم اور تماشہ دکھانا وغیرہ شامل ہیں) سمبندھی کام کئے جانے کی تجویز اس سرکاری منظوری میں کی گئی ہے .

یوجنا کو چلانے کے لئے سرکار نے ایک باقاعدہ نظام کھڑا کر دیا ہے . اس کی باگڈور مسٹر البرٹ میئر کے ہاتھوں میں ہے . یوجنا پر عمل درآمد کی ذمہ داری ضلع وکاس افسر کی ہے . ویسے تو ان کے اوپر اٹاوے ضلع کا ضلع مجسٹریٹ و کلکٹر ہے جو پہلے اس یوجنا میں وکاس افسر کا کام کر چکے ہیں . وکاس افسر کے نیچے چار افسر ہیں جو ڈپٹی ڈیولپمنٹ افسر کہلاتے ہیں . یوجنا سمبندھی کام کو چار حصوں میں بانٹ کر ان کے سپرد کر دیا گیا ہے—کھیتی و پشو پالن، سنچائی و اوزار، ٹریننگ اور گاؤں پرچار . ان کے بعد چھ چھوٹے ڈیولپمنٹ افسر ہیں جو ڈیولپمنٹ انسپکٹر کہلاتے ہیں، اور ان کے نیچے 24 گرام سیوک ہیں . سرکاری محکموں کا جیسے سہیوگ، کھیتی، وکاس، پشو پالن، صحت وغیرہ وغیرہ کے وہ سارے عملدار جو اس حلقے میں ملازم ہیں اسی اسکیم کے ماتحت کام کر رہے ہیں . اس سرکاری پنجرے میں جان ڈالنے کا کام میئر صاحب نے کیا . انہیں کی بدولت اس مشینری میں کچھ دم آ گیا، دفتری لوٹا پھیری کی جھک جھک سے وہ کچھ تھوڑا باہر رہ سکی اور اس وجہ سے کچھ کر بھی سکی، جب کہ کیا دیش کے کیا صوبے کے ہر ضلعے کے اندر موجود ایسی سرکاری مشینریاں ایکدم نپنسک پڑی ہوئی ہیں. ساتھ ہی ساتھ یہ بھی کہنا چاہئے کہ اب تک سرکار نے کسی دیشی یا ودیشی جانکار یا یوجنا نویس پر اتنا وشواس نہیں کیا جتنا تقدیر کے سکندر میئر صاحب پر، اور نہ کبھی اتنے زور شور کے ساتھ کسی کے سپرد اپنا سارا کاروبار کیا . ہم کہ سکتے ہیں کہ سرکار نے اپنی طرف سے میئر صاحب کو مہیوا کا بےتاج کا راجہ بنا رکھا ہے .

یوجنا سے کام .

اس یوجنا کی شروعات میں اور خصوصیت کے ساتھ جو کام کیا گیا وہ تھا بڑھیا بیج بانٹنا، خاصکر گیہوں اور آلو کے . سنئی کے جیسی ہری کھاد کے بیج اور کیمیائی (ولایتی) کھاد بھی دئے گئے . ساتھ ہی ساتھ یہ بھی بتایا گیا کہ بڑھیا اور خاص اوزاروں سے کس طرح کام لیا جاتا ہے . ان اوزاروں کو استعمال کرنے کی آسانی بھی گاؤں والوں کو، اگر وہ چاہیں،

[illegible] जो नतीजे निकले वह हम नीचे देते हैं :

पैداوار بڑھی ۔ گیہوں اور آلو میں جو نتیجے نکلے وہ ہم نیچے دیتے ہیں۔

गेहूं.

साल	बीज जो बोया मन	ज़मीन ज़ेर काश्त एकड़	देसी बीज से फी एकड़ पैदावार मन	बढ़िया बीज से फी एकड़ पैदावार मन
1. 1948-49	915	600	8	10
2. 1949-50	3000	2000	9½	13
3. 1950-51	7500	5000	14	23
4. 1951-52	10,000	7000	...	18 से 20

आलू.

साल	बीज जो बोया मन	ज़मीन ज़ेर काश्त एकड़	देसी बीज से फी एकड़ पैदावार मन	बढ़िया बीज से फी एकड़ पैदावार मन
1. 1948-49	300	35	98	218
2. 1949-50	800	100	117	269
3. 1950-51	1000	125	160	280
4. 1951-52	1500	190	....	230

इस इलाक़े में जितनी ज़मीन पर गेहूं बोया जाता था उसका 92% इस योजना के अन्दर और आलू वाली का 80% आ चुका है. ऊपर के आंकड़ों से पता चलता है कि 1950-51 में पैदावार ख़ास तौर से ज़ियादा हुई. हमें बताया गया कि इसकी वजहें थीं बढ़िया बीज, हरी खाद, सुपरफ़ासफ़ेट फ़र्टीलाइज़र्स और जाड़े का पानी. देश में जगह जगह लाखों-करोड़ों रुपया "अनाज उपजाओ" के काम में बरबाद कर दिया गया पर कहीं भी इस तरह के नतीजे नहीं देखने में आये.

योजना की ख़ास बातें.

महेवा के 97 गांवों में 80 सहयोग सोसाइटियां हैं जिनसे सात यूनियन या संघ बना दिये गये हैं. उनके नाम हैं महेवा, लखना, औरंग, जयमलपुर, लाखी, नेवारी कलां और शेरपुर. हर संघ में क़रीब 10-12 सोसाइटियां हैं. इन संघों के गोदामों पर बीज, औज़ार, सूत, कपड़ा, चीनी, खाद, दवाइयां वग़ैरा मिला करती हैं.

इस इलाक़े में औज़ारों का एक वर्कशाप है जहां इनकी तैयारी, मरम्मत वग़ैरा का काम होता है और एक केन्द्र पशुपालन का है. यह दोनों महेवा ख़ास में ही रखे गये हैं. पशु पालन के सिलसिले में क्या और कितना काम हुआ नीचे दिये आंकड़ों से पता चलता है :

नम्बर काम	1948-49	49-50	50-51	51-52
1. खुरपका टीका	4,647	18,559	22,000	24,029
2. [illegible] टीका	11,238	23,116	6,530	8,885
3. बधिया	670	752	862	754
4. बनावटी गर्भ	6	6	220	543
5. हरियाना [illegible]	10	22	13	57

گیہوں.

سال	بیج جو بویا گیا من	زمین زیر کاشت ایکڑ	دیسی بیج سے فی ایکڑ پیداوار من	بڑھیا بیج سے فی ایکڑ پیداوار من
1. 1948-49	915	600	8	10
2. 1949-50	3000	2000	9½	13
3. 1950-51	7500	5000	14	23
4. 1951-52	10,000	7000	„	18 سے 20

آلو.

سال	بیج جو بویا گیا من	زمین زیر کاشت ایکڑ	دیسی بیج سے فی ایکڑ پیداوار من	بڑھیا بیج سے فی ایکڑ پیداوار من
1. 1948-49	300	35	98	218
2. 1949-50	800	100	117	269
3. 1950-51	1000	125	160	280
4. 1951-52	1500	190	...	230

اس علاقے میں جتنی زمین پر گیہوں بویا جاتا تھا اسکا 92% اس یوجنا کے اندر اور آلو والی کا 80% آچکا ہے۔ اوپر کے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ 1950-51 میں پیداوار خاص طور سے زیادہ ہوئی، ہمیں بتایا گیا کہ اس کی وجہیں تھیں بڑھیا بیج، ہری کھاد، سوپرفاسفیٹ فرٹیلائزرس اور جاڑے کا پانی۔ دیش میں جگہ جگہ لاکھوں کروڑوں روپیہ "اناج اپجاؤ" کے کام میں برباد کر دیا گیا پر نہیں بھی اس طرح کے نتیجے نہیں دیکھنے میں آئے۔

یوجنا کی خاص باتیں۔

مہوا کے 97 گاؤں میں 80 سہیوگ سوسائٹیاں ہیں جن سے سات یونین یا سنگھ بنا دیئے گئے ہیں۔ اُن کے نام ہیں مہوا، لکھنا، اورنگ، جیمل پور، لاکھی، نیواری کلاں اور شیرپور۔ ہر سنگھ میں قریب دس بارہ سوسائٹیاں ہیں۔ ان سنگھوں کے گوداموں پر بیج، اوزار، سوت، کپڑا، چینی، کھاد، دوائیاں وغیرہ ملا کرتی ہیں۔

اس علاقے میں اوزاروں کا ایک ورک شاپ جہاں ان کی تیاری، مرمت وغیرہ کا کام ہوتا ہے اور ایک کیندر پشو پالن کا ہے۔ یہ دونوں مہوا خاص میں ہی رکھے گئے ہیں۔ پشو پالن کے سلسلے میں کیا اور کتنا کام ہوا نیچے دیئے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے :

نمبر کام	1948-49	49-50	50-51	51-52
1. کھرپکا ٹیکہ	4,647	18,559	22,000	24,029
2. [illegible] ٹیکہ	11.238	23,116	6,530	8,885
3. بدھیا	670	752	862	754
4. بناوٹی گربھ	6	6	220	533
5. [illegible]	10	22	13	57

[illegible] गांव वालों ने काफ़ी स्वागत किया है. पर बनावटी गर्भ का इलाज के बारे में ऐसा हरगिज़ नहीं कहा जा सकता.

जहां तक जन-सेहत का वास्ता है मलेरिया रोकने के लिये लोगों को खाने के वास्ते पालूड्रीन की गोलियां पहले साल मुफ्त बांटी गईं. मकानों के अन्दर गेमक्सीन दीवारों और फ़र्श पर छिड़का गया ताकि मलेरिया के कीड़े मर जायें.

सिंचाई के सिलसिले में तीन आर्टीज़ियन कुंयें और एक ट्यूब वेल इस इलाक़े में खुदवाये गये साथ ही साथ यह भी कोशिश की गई कि उन ज़मीनों को क़ाबू में लायें जो या तो ऊसर हैं या जिनमें पानी बहुत रुक जाता है या जो खादर में हैं.

ऊपर कहा जा चुका है कि बढ़िया या सुधरे हुए औज़ार इस योजना की ख़सूसियत हैं. नीचे हम कुछ औज़ारों के नाम और दाम देते हैं.

		रुपये
1.	ओलपाड थ्रेशर	190
2.	कल्टीवेटर-सीडर	65
3.	सीड-ड्रिल	600
4.	कल्टीवेटर	85
5.	स्पाइक	90
6.	विक्ट्री हल	75
7.	मोवर (कटैया)	1200

इटावा योजना के अन्दर 41 जगहों पर बालिग़ तालीम चल रही है. एक चलती हुई लायब्रेरी भी है जिसमें किताबों की 50 पेटियां रहती हैं. महेवा से एक पंद्रहवाड़ा अख़बार "मन्दिर से" हिन्दी में निकलता है. इसमें 12 सफ़े होते हैं और सालाना चन्दा दो रुपया है.

पूरे इलाक़े में चार जगह महिला केन्द्र हैं—पुठिया, मरौली, बलजू और बनी. यह चारों हरिजन गांव हैं. हर सेन्टर पर तीन सेविकायें रहती हैं जिनके सिपुर्द ज़च्चा-काम, तालीम और कढ़ाई-बुनाई रहते हैं.

महेवा से दस मील के फ़ासले पर लखना में 'ग्राम सेवकों' की ट्रेनिंग का केन्द्र है. यहां पर ग्राम सेवकों और दूसरे लोगों को इस योजना से सम्बन्ध में ट्रेनिंग, विशेष कोर्स व जानकारी दी जाती है.

गांव वालों को तमाशे दिखाना, विशेष मेले और तरह तरह के दिखावों का इन्तज़ाम करना वग़ैरा काम इस योजना की ख़ास चीज़ें हैं.

योजना के कारकुन व ख़र्च.

ज़िला विकास अफ़सर से लेकर नीचे चपरासी या चौकीदार तक इस योजना में सवा सौ आदमी मुलाज़िम

[illegible] ہم یہاں ... لوں نے کافی ... کیا ہے پر بناوٹی ... یا عمل کے بارے میں ایسا ہرگز نہیں کہا جاسکتا۔

جہاں تک جن صحت کا واسطہ ہے ملیریا روکنے کے لئے لوگوں کو کھانے کے واسطے پالو ڈرین کی گولیاں پہلے سال مفت بانٹی گئیں۔ مکانوں کے اندر گیمکسین دیواروں اور فرش پر چھڑکا گیا تاکہ ملیریا کے کیڑے مرجائیں۔

سینچائی کے سلسلے میں تین آرٹیزین کوئیں اور ایک ٹیوب ویل اس علاقے میں کھدوائے گئے۔ ساتھ ہی ساتھ یہ بھی کوشش کی گئی کہ ان زمینوں کو قابو میں لائیں جو یا تو اوسر ہیں یا جن میں پانی بہت رک جاتا ہے یا جو کھادر میں ہیں۔

اوپر کہا جا چکا ہے کہ بڑھیا یا سدھرے ہوئے اوزار اس یوجنا کی خصوصیت ہیں۔ نیچے ہم کچھ اوزاروں کے نام اور دام دیتے ہیں۔

روپئے		
190	اولپاڈ تھریشر	.1
65	کلٹیویٹر سیڈر	.2
600	سیڈ ڈرل	.3
85	کلٹیویٹر	.4
90	اسپائیک	.5
75	وکٹری هل	.6
1200	موور (کٹیا)	.7

اٹاوہ یوجنا کے اندر 41 جگہوں پر بالغ تعلیم چل رہی ہے۔ ایک چلتی ہوئی لائبریری بھی ہے جس میں کتابوں کی 50 پیٹیاں رہتی ہیں۔ مہیوا سے ایک پندرہ واڑہ اخبار " مندر سے " ہندی میں نکلتا ہے اسمیں 12 صفحے ہوتے ہیں اور سالانہ چندہ دو روپیہ ہے۔

پورے علاقے میں چار جگہ مہیلا کیندر ہیں—پوٹھیا، مرولی، بلجو اور بنی۔ یہ چاروں ہریجن گاؤں ہیں۔ ہر سینٹر پر تین سیوکائیں رہتی ہیں جن کے سپرد زچہ کام تعلیم اور کڑھائی بنائی رہتے ہیں۔

مہیوا سے دس میل کے فاصلے پر لکھنا میں ' گرام سیوکوں ' کی ٹریننگ کا کیندر ہے۔ یہاں پر گرام سیوکوں اور دوسرے لوگوں کو اس یوجنا کے سمبندھ میں ٹریننگ، وشیش کورس و جانکاری دی جاتی ہے۔

گاؤں والوں کو تماشے دکھانا، وشیش میلے وغیرہ کا انتظام کرنا وغیرہ کام اس یوجنا کی خاص چیزیں ہیں۔

یوجنا کے کارکن و خرچ۔

ضلع وکاس افسر سے لے کر نیچے چپراسی یا چوکیدار تک اس یوجنا میں سوا سو آدمی ملازم

है. अगर उन सरकारी नौकरों को भी शामिल कर लिया जाये—जैसे सेक्रेटरी सर्जन, सर्किल अफसर, इन्सपेक्टर वगैरा—जो इस योजना में अपना पूरा समय नहीं देते लेकिन जिनसे मदद अक्सर ली जाती है—तो हम कह सकते हैं कि हर दो गांव पीछे तीन आदमी इस योजना में रखे गये हैं.

खर्चे के बारे में कुछ आंकड़े यह हैं.

गिनती	साल	तख़मीना (रुपये)	असल खर्च (रुपये)
1.	1948–49	8,32,900	2,69,112
2.	1949–50	3,15,800	6,67,877
3.	1950–51	2,37,700	2.28,500
4.	1951–52	3,45,600	मालूम नहीं

जगह की तंगी की वजह से बजट की तफ़सील पेश करना हमारे लिये नामुमकिन है. लेकिन खर्च का मोटा अन्दाज़ करने के लिये हम 1950–51 के खर्च के तख़मीने की सुर्खियां नीचे दे रहे हैं:

	रुपये
(I) देख भाल.	
(1) अफसरों की तनखा	24,600
(2) तनखा—(i) बाबू लोग	12,000
(ii) मिस्त्री लोग	11,280
(iii) चपरासी वगैरा.	9,276
(3) मंहगाई व भत्ता	25,000
(4) ऊपर के खर्च	6,315
	88,471
(II) अमला.	
(1) तनखा	44,760
(2) मंहगाई व भत्ता	41,340
(3) ऊपर के खर्च	52,810
	1 38,910
(III) देहाती प्रोग्राम.	
(1) तनखा	1,920
(2) मंहगाई व भत्ता	9,540
(3) ऊपर के खर्च	25,900
	37,360
(IV) इमारत व गांव बनाव.	
(1) नमूने के मकान	1,08,000
(2) गांव विकास	40,000
(3) कुएं	20,000
	1,68,000
कुल जोड़ 1950–51 के वास्ते	4,32,741 रुपया

ہیں۔ اگر ان سرکاری نوکروں کو بھی شامل کر لیا جائے—جیسے سیکرٹری سرجن، سرکل افسر، انسپکٹر وغیرہ—جو اس یوجنا میں اپنا پورا سمے نہیں دیتے لیکن جن سے مدد اکثر لی جاتی ہے—تو ہم کہہ سکتے ہیں کہ ہر دو گاؤں پیچھے تین آدمی اس یوجنا میں رکھے گئے ہیں

خرچے کے بارے میں کچھ آنکڑے یہ ہیں :

اصل خرچ (روپئے)	تخمینہ (روپئے)	سال	گنتی
2,69,112	8,32,9000	1948-49	.1
6,67,877	3,15,800	1949-50	.2
2,28,500	2,37,700	1950-51	.3
معلوم نہیں	3,45,500	1951-52	.4

جگہ کی تنگی کی وجہ سے بجٹ کی تفصیل پیش کرنا ہمارے لئے ناممکن ہے. لیکن خرچ کا موٹا اندازہ کرنے کے لئے ہم 1950-51 کے خرچ کے تخمینے کی سرخیاں نیچے دے رہے ہیں :

روپئے	
	I. دیکھ بھال.
24,600	(1) افسروں کی تنخواہ
12,000	(2) تنخواہ (i) بابو لوگ
11,280	(ii) مستری لوگ
9,276	(iii) چپراسی وغیرہ
25,000	(3) مہنگائی و بھتا
6,315	(4) اوپر کے خرچ
88,471	
	II. عملہ.
44,760	(1) تنخواہ
41,340	(2) مہنگائی و بھتا
52,810	(3) اوپر کے خرچ
1,38,910	
	III. دیہاتی پروگرام.
1,920	(1) تنخواہ
9,540	(2) مہنگائی و بھتا
25,900	(3) اوپر کے خرچ
87,360	
	IV. عمارت و گاؤں بناؤ.
1,08,000	(1) نمونے کے مکان
40,000	(2) گاؤں وکاس
20,000	(3) کوئیں
1,68,000	
روپیہ 4,32,741	کل جوڑ 1950-51 کے واسطے

ऊपर के आंकड़ों से यह कहा जा सकता है कि इस योजना पर साल भर का कम से कम ढाई लाख रुपये का खर्च है. हमने मेयर साहब से पूछा कि इस तरह आप कब तक खर्च करते रहेंगे, तो वह बोले, "हमेशा, हमेशा ही." उनके जवाब को सुन कर हम दंग रह गये.

इस योजना में 97 गांव हैं. इसलिये हर गांव पर औसत खर्च कम से कम ढाई सौ रुपये समझना चाहिये. इसका मतलब यह है कि अगर समूचे उत्तर प्रदेश पर इसे लागू करना हो तो क़रीब दो लाख आदमियों की दरकार होगी और हर साल 25 करोड़ रुपया बहा देना पड़ेगा.

गांवों का रुख़.

हम ऊपर कह चुके हैं कि बढ़िया बीज का इस्तेमाल बहुत से किसानों ने किया है. लेकिन जब हमने उनसे बात चीत की तो पता चला कि उनमें से कुछ को इस नये बीज (P B-591) के बारे में शक है. उनका कहना था कि इस नये गेहूं की रोटी हमारे देसी गेहूं की रोटी जैसी नहीं होती. ज़ाहिर है कि नये गेहूं का पूरा असर अच्छा या बुरा जो भी हो कई बरस बाद ही मालूम हो सकता है.

जैसा ऊपर कहा जा चुका है घुड़का और पोंके के टीकों से जानवरों को सचमुच फ़ायदा हुआ है जिससे गांव वालों को राहत पहुँची है. उसी तरह गेमक्सीन से भी फ़ायदा हुआ. पालुड्रीन की गोलियां भी कुछ लोगों ने खाईं पर उनसे कितना फ़ायदा हुआ ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. गायों के बनावटी गर्भ के खिलाफ़ जितना कहा जाये थोड़ा है. भावना या जज़बात को जाने दें, तब भी यह गर्भ-हमल अकसर कामयाब नहीं हुए हैं. हमने खुद एक ऐसा गर्भ दिये जाते देखा. जिस गंदे ढंग से क्रिया की जा रही थी उसे देख कर तो हम तोबा बोल गये. एक कम्पाउन्डर ने—जिसको सफ़ाई से कोई ख़ास मतलब नहीं मालूम पड़ता था—अपना हाथ गाय की योनि में डाल दिया और फिर पिचकारी से एक सांड का वीर्य अन्दर कर दिया. जब उसने हाथ बाहर निकाला तो खून में लथ पथ था. हमें डर है कि इस तरह गाय की बच्चेदानी ख़राब हो जाने या दूसरी बीमारियां हो जाने का काफ़ी अंदेशा है. कुछ लोगों का यह भी ख्याल है कि गाय के चार पांच बार इस तरह ब्याहने पर वह फिर बांझ हो जाती है.

बड़े हैरत की बात है कि सहयोगी सोसाइटियां या संघों के काम में लोगों ने दिलचस्पी नहीं दिखाई है. वह इन संघों के दफ़्तर (जो बीज गोदाम के नाम से मशहूर हैं) जाते तो हैं पर उसी तरह जैसे किसी बाज़ारू दूकान पर. 'सहयोग' या 'संघ' का वातावरण भी मानो नाम के

اوپر کے آنکڑوں سے یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس یوجنا پر سال بھر کا کم سے کم ڈھائی لاکھ روپئے کا خرچ ہے . ہم نے میئر صاحب سے پوچھا کہ اس طرح آپ کب تک خرچ کرتے رہینگے ' تو وہ بولے ' "ہمیشہ" ہمیشہ ہی". ان کے جواب کو سنکر ہم دنگ رہ گئے .

اس یوجنا میں 97 گاؤں ہیں . اس لئے ہر گاؤں پر اوسط خرچ کم سے کم ڈھائی سو روپئے سمجھنا چاہئے . اس کا مطلب یہ ہے کہ اگر سموچے اتر پردیش پر اسے لاگو کرنا ہو تو قریب دو لاکھ آدمیوں کی درکار ہوگی اور ہر سال 25 کروڑ روپیہ بہا دینا پڑے گا .

گاؤں کا رخ .

ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ بڑھیا بیج کا استعمال بہت سے کسانوں نے کیا ہے . لیکن جب ہم نے ان سے بات چیت کی تو پتہ چلا کہ ان میں سے کچھ کو اس نئے بیج (P. B-591) کے بارے میں شک ہے . ان کا کہنا تھا کہ اس نئے گیہوں کی روٹی ہمارے دیشی گیہوں کی روٹی جیسی نہیں ہوتی . ظاہر ہے کہ نئے گیہوں کا پورا اثر اچھا یا برا جو بھی ہو کئی برس بعد ہی معلوم ہو سکتا ہے .

جیسا اوپر کہا جا چکا ہے گھڑکا اور پونکے کے ٹیکوں سے جانوروں کو سچ مچ فائدہ ہوا ہے جس سے گاؤں والوں کو راحت پہونچی ہے . اسی طرح گیمکسین سے بھی فائدہ ہوا . پالوڈرین کی گولیاں بھی کچھ لوگوں نے کھائیں پر ان سے کتنا فائدہ ہوا ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جاسکتا . گایوں کے بناوٹی گربھ کے خلاف جتنا کہا جائے تھوڑا ہے . بھاونا یا جذبات کو جانے دیں ' تب بھی یہ گربھ حمل اکثر کامیاب نہیں ہوئے ہیں . ہم نے خود ایک ایسا گربھ دیئے جاتے دیکھا . جس گندے ڈھنگ سے کریا کی جا رہی تھی اسے دیکھ کر تو ہم توبہ بول گئے. ایک کمپاؤنڈر نے—جس کو صفائی سے کوئی خاص مطلب نہیں معلوم پڑتا تھا—اپنا ہاتھ گائے کے یونی میں ڈال دیا اور پھر پچکاری سے ایک سانڈ کا ویریہ اندر کر دیا . جب اس نے ہاتھ باہر نکالا تو خون میں لتھ پتھ تھا . ہمیں ڈر ہے کہ اس طرح گائے کی بچہ دانی خراب ہو جانے یا دوسری بیماریاں ہو جانے کا کافی اندیشہ ہے . کچھ لوگوں کا یہ بھی خیال ہے کہ گائے کو چار پانچ بار اس طرح بیاہنے پر وہ پھر بانجھ ہو جاتی ہے .

بڑے حیرت کی بات ہے کہ سہیوگی سوسائٹیاں یا سنگھوں کے کام میں لوگوں نے دلچسپی نہیں دکھائی ہے . وہ ان سنگھوں کے دفتر (جو بیج گودام کے نام سے مشہور ہیں) جاتے تو ہیں پر اسی طرح جیسے کسی بازارو دکان پر . 'سہیوگ' یا 'سنگھ' کا واتاورن تو مانو نام کے

...से भी नहीं है. हमने यह भी देखा कि इन केंद्रों में रजिस्टर बाकायदा एहतियात से नहीं रखे जाते हैं और न आडिट रिपोर्टों की कोई परवा की जाती है.

हम पूठिया गांव के महिला केन्द्र में भी गये. रजिस्टरों से पता चला कि हाजरी लगातार घट रही है. हमने एक घर के भीतर घुस कर एक बारह बरस की लड़की के हाथ का बना काम देखा. हमारे मन ही मन यह ख्याल पैदा हुआ कि काश इन्हें कोई ऐसी दस्तकारी सिखाई जाती जिस में इनको मिल का सूत या मिल की चीज कच्चे माल के तौर पर न इस्तेमाल करना पड़ती. पर हम जानते हैं कि औरतों के बीच काम करना कोई हंसी खेल नहीं है. इसलिये इन सेविकाओं के काम की—जिन्हें अपनी गुजर बसर के लायक तनखाह भी पूरी सी नहीं मिलती—तारीफ करते हैं. उनका जीवन त्याग और सेवा का जीवन है. अधिकारियों को चाहिये कि उनकी सही शिकायतें दूर करें.

इस योजना का बच्चों की या बुनियादी तालीम से कोई वास्ता ही नहीं है. लेकिन सोनबरसा नाम के गांव में हमें एक स्कूल दिखाया गया जो नई योजना के मातहत चल रहा है. बाद में हमें मालूम हुआ कि इस स्कूल की इमारत को पास की एक रानी विधवा ने बनवा दिया है. स्कूल में 80 से ऊपर बच्चे थे जिन्हें दो मास्टर पढ़ा रहे थे. पढ़ाई पहले दरजे से चौथे दर्जे की थी. जो तालीम दी जा रही थी उसे 'नई तालीम' हरगिज नहीं कहा जा सकता. चौथे दरजे के बच्चों की तकलियों का सूत ऐसा बेमेल और कमजोर था कि उससे रस्सी भी नहीं बन सकती थी.

योजना वाले औजारों के तो दाम ही इतने जियादा हैं कि अक्सर लोग उनका इस्तेमाल नहीं कर सकते. फिर उनके लिये लोहा और तेल कहां से आए. बहुत से लोग हमें मिले जो इन औजारों के इस्तेमाल के एक दम खिलाफ थे.

इस स्कीम के माहिर या जानकार लोग जो सलाह दिया करते हैं उससे भी काफी लोग इत्तफाक नहीं करते. मिसाल के तौर पर गांव वालों से कहा गया कि गेहूं के साथ तिलहन या दूसरी चीज मत बोइये लेकिन सदियों के तजुर्बे के बल पर उन्होंने इसे नहीं माना. इसके अलावा विलायती खाद भी लोगों को पसन्द नहीं है. वह गरम जियादा होते हैं जिसकी वजह से पानी जियादा मांगते हैं. पानी की अगर कमी रही तो सब चौपट. बहुत से किसानों ने काफी खोकर यह सबक हासिल किया और इसीलिये विलायती खाद से उनकी तबियत हट गई है.

सरसरी तौर पर हम कह सकते हैं कि गांव वाले बहुत सोच-समझ कर और होशियारी के साथ इस योजना को दूर से देख रहे हैं. अगर वह सहयोग देंगे तो पूरी जांच और पूरी तसल्ली कर लेने के बाद ही देंगे.

واسطہ بھی نہیں ہے۔ ہم نے یہ بھی دیکھا کہ ان سنٹروں میں رجسٹر ٹھیک احتیاط سے نہیں رکھے جاتے ہیں اور نہ آڈٹ رپورٹوں کی کوئی پرواہ کی جاتی ہے۔

ہم پوٹھیا گاؤں کے مہیلا کیندر میں بھی گئے۔ رجسٹروں سے پتہ چلا کہ حاضری لگاتار گھٹ رہی ہے۔ ہم نے ایک گھر کے بھیتر گھس کر ایک بارہ برس کی لڑکی کے ہاتھ کا بنا کام دیکھا۔ ہمارے من ہی من یہ خیال پیدا ہوا کہ کاش انہیں کوئی ایسی دستکاری سکھائی جاتی جس میں ان کو مل کا سوت یا مل کی چیز کچے مال کے طور پر نہ استعمال کرنا پڑتی۔ پر ہم جانتے ہیں کہ عورتوں کے بیچ کام کرنا کوئی ہنسی کھیل نہیں ہے۔ اس لئے ان سیوکاؤں کے کام کی—جنہیں اپنی گزر بسر کے لائق تنخواہ بھی پوری سی نہیں ملتی—تعریف کرتے ہیں۔ ان کا جیون تیاگ اور سیوا کا جیون ہے۔ ادھیکاریوں کو چاہئے کہ ان کی صحیح شکایتیں دور کریں۔

اس یوجنا کا بچوں کی یا بنیادی تعلیم سے کوئی واسطہ ہی نہیں ہے۔ لیکن سون برسا کے گاؤں میں ہمیں ایک اسکول دکھایا گیا جو نئی یوجنا کے ماتحت چل رہا ہے۔ بعد میں ہمیں معلوم ہوا کہ اس اسکول کی عمارت کو پاس کی ایک دانی ودھوا نے بنوا دیا ہے۔ اسکول میں 80 سے اوپر بچے تھے جنہیں دو ماسٹر پڑھا رہے تھے۔ پڑھائی پہلے درجے سے چوتھے درجے کی تھی۔ جو تعلیم دی جا رہی تھی اُسے 'نئی تعلیم' ہرگز نہیں کہا جا سکتا۔ چوتھے درجے کے بچوں کی تکلیوں کا سوت ایسا بے میل اور کمزور تھا کہ اس سے رسی بھی نہیں بن سکتی تھی۔

یوجنا والے اوزاروں کے تو دام ہی اتنے زیادہ ہیں کہ اکثر لوگ اُن کا استعمال نہیں کر سکتے۔ پھر اُن کے لئے لوہا اور تیل کہاں سے آئے۔ بہت سے لوگ ہمیں ملے جو اُن اوزاروں کے استعمال کے ایکدم خلاف تھے۔

اس اسکیم کے ماہر یا جانکار لوگ جو صلاح دیا کرتے ہیں اُس سے بھی کافی لوگ اتفاق نہیں کرتے۔ مثال کے طور پر گاؤں والوں سے کہا گیا کہ گیہوں کے ساتھ تلہن یا دوسری چیز مت بوئیے لیکن صدیوں کے تجربے کے بل پر اُنہوں نے اسے نہیں مانا۔ اس کے علاوہ ولایتی کھاد بھی لوگوں کو پسند نہیں ہے۔ وہ گرم زیادہ ہوتے ہیں جس کی وجہ سے پانی زیادہ مانگتے ہیں۔ پانی کی اگر کمی رہی تو سب چوپٹ۔ بہت سے کسانوں نے کافی کھوکر یہ سبق حاصل کیا اور اس لئے ولایتی کھاد سے اُن کی طبیعت ہٹ گئی ہے۔

سرسری طور پر ہم کہہ سکتے ہیں کہ گاؤں والے بہت سوچ سمجھ کر اور ہوشیاری کے ساتھ اس یوجنا کو دور سے دیکھ رہے ہیں۔ اگر وہ سہیوگ دیں گے تو پوری جانچ اور پوری تسلی کر لینے کے بعد ہی دیں گے۔

खिलाफ़ हम इतना कह सकते हैं कि इस योजना में हज़ारों रुपया फूंका गया है और जितने आदमी लगाये गये हैं उसके लिहाज़ से जनता में उत्साह कतई नहीं पैदा हुआ न उनका कोई हौसला ही बढ़ा है. बल्कि असल बात यह है कि उनके सामने नये नये सवाल खड़े हो गये हैं जिनका पहले सपने में भी शक नहीं था.

योजना का भविष्य.

इस तमाशे से अगर थोड़ा-बहुत कुछ फ़ायदा हुआ है तो वह अब आगे नहीं होने वाला है. वजह इसकी यह है कि रोज़ के काम में हुक्कामीयत अब दिन दिन बढ़ रही है जिससे हर जगह नये अड़ंगे पैदा हो रहे हैं, जो काम में अटकाव डालते हैं. हमारा ख़याल है कि जल्दी ही यह योजना दूसरी सरकारी योजनाओं के जैसी, दफ़्तरी चक्करों में पड़ कर सड़े ताल की तरह गंधाने लगेगी और हासिल कुछ भी न होगा.

हमने ऊपर कहा है कि इस योजना से देहात में कोई जोश पैदा नहीं हुआ है. नये बीज की बात, मंहगे मंहगे औज़ार, गरम गरम विलायती खाद और कारकुनों का साहबी ढंग—यह ऐसी बातें हैं जिन्होंने गांव वालों का दिल इस योजना की तरफ़ से फेर दिया है. ऐसा लगता है कि उन्हें आप से आप ही मालूम हो गया कि यह योजना हमारे काम की नहीं है. इस योजना ने पुरानी मुसीबतें हल करने के बजाये नई खड़ी कर दी हैं. तफ़सील में न जाकर हम इतना ही कहेंगे कि इस योजना के कारन बेकारी और बढ़ गई है. हम बहुत से बे ज़मीन वाले मज़दूरों से मिले जिनमें हरिजन भी थे. उनका कहना था कि हमारी हालत तो सुधरने के बजाये और भी बदतर हो गई है. इसलिये यह योजना आगे चल कर बरकत की बजाये एक बला साबित होने वाली है.

योजना की नक़ल से नुक़सान.

जैसा ऊपर कहा जा चुका है इस योजना का भविष्य अच्छा नहीं है. इसलिये इसकी नक़ल करके जगह जगह इसके नमूने खड़े करने से तो और भी बंटाधार होने वाला है. फिर, नक़ली इदारे जो बनेंगे उनमें ऐसर जैसी हस्तियां भी न होंगी जो और कुछ नहीं तो किसी तरह ज़ियादा गेहूं या कपास ही पैदा करा सकें. सरकारी मशीनरी जो हर जगह मौजूद है उसमें न कोई जान फूंक सकेगा न उससे कोई काम ले सकेगा.

इस योजना में लगे आदमी और इसके बड़े बड़े ख़र्चों का अन्दाज़ हम ऊपर दे चुके हैं. यह हालत उस वक़्त है जब केवल खेती पर, वह भी अधूरी शकल में, ध्यान दिया गया. अगर देहाती जीवन के सभी पहलुओं

کے خلاف ہم اتنا کہہ سکتے ہیں کہ اس یوجنا میں ہزاروں روپیہ پھونکا گیا ہے اور جتنے آدمی لگائے گئے ہیں اس کے لحاظ سے جنتا میں اتساہ قطعی نہیں پیدا ہوا اور نہ ان کا کوئی حوصلہ ہی بڑھا ہے ۔ بلکہ اصل بات یہ ہے کہ ان کے سامنے نئے نئے سوال کھڑے ہوگئے ہیں جن کا پہلے سپنے میں بھی شک نہیں تھا ۔

یوجنا کا بھوشیہ ۔

اس تماشے سے اگر تھوڑا بہت کچھ فائدہ ہوا ہے تو وہ اب آگے نہیں ہونے والا ہے ۔ وجہ اس کی یہ ہے کہ روز کے کام میں حاکمیت اب دن دن بڑھ رہی ہے جس سے ہر جگہ نئے اڑنگے پیدا ہو رہے ہیں، جو کام میں اٹکاؤ ڈالتے ہیں ۔ ہمارا خیال ہے کہ جلدی ہی یہ یوجنا دوسری سرکاری یوجناؤں کے جیسی، دفتری چکروں میں پڑکر سڑے تال کی طرح گندھانے لگیگی اور حاصل کچھ بھی نہ ہوگا ۔

ہم نے اوپر کہا ہے کہ اس یوجنا سے دیہات میں کوئی جوش پیدا نہیں ہوا ہے ۔ نئے بیج کی ذات، مہنگے مہنگے اوزار، گرم گرم ولایتی کھاد اور کارکنوں کا صاحبی ڈھنگ — یہ ایسی باتیں ہیں جنہوں نے گاؤں والوں کا دل اس یوجنا کی طرف سے پھیر لیا ہے ۔ ایسا لگتا ہے کہ انہیں آپ سے ہی معلوم ہوگیا کہ یہ یوجنا ہمارے کام کی نہیں ہے ۔ اس یوجنا نے پرانی مصیبتیں حل کرنے کے بجائے نئی کھڑی کردی ہیں ۔ تفصیل میں نہ جاکر ہم اتنا ہی کہینگے کہ اس یوجنا کے کارن بیکاری اور بڑھ گئی ہے ۔ ہم بہت سے بے زمین والے مزدوروں سے ملے جن میں ہریجن بھی تھے ۔ ان کا کہنا تھا کہ ہماری حالت تو سدھرنے کے بجائے اور بھی بدتر ہوگئی ہے ۔ اس لئے یہ یوجنا آگے چل کر برکت کی بجائے ایک بلا ثابت ہونے والی ہے ۔

یوجنا کی نقل سے نقصان ۔

جیسا اوپر کہا جا چکا ہے اس یوجنا کا بھوشیہ اچھا نہیں ہے ۔ اسلئے اسکی نقل کر کے جگہ جگہ اسکے نمونے کھڑے کرنے سے تو اور بھی بنٹادھار ہونے والا ہے ۔ پھر، نقلی ادارے جو بنینگے ان میں ایسر جیسی ہستیاں بھی نہ ہونگی جو اور کچھ نہیں تو کسی طرح زیادہ گیہوں یا کپاس ہی پیدا کرا سکیں ۔ سرکاری مشینری جو ہر جگہ موجود ہے اسمیں نہ کوئی جان پھونک سکیگا نہ اس سے کوئی کام لے سکیگا ۔

اس یوجنا میں لگے آدمی اور اسکے بڑے بڑے خرچوں کا اندازہ ہم اوپر دے چکے ہیں ۔ یہ حالت اس وقت ہے جب صرف کھیتی پر، وہ بھی ادھوری شکل میں، دھیان دیا گیا ۔ اگر دیہاتی جیون کے سبھی پہلوؤں

जो सामने रखा गया योजना चलाई जाये तब तो कर्ज करोड़ों और अरबों तक पहुँचेगी. पर इतना योजना के पूरे पर ही पता चलेगा कि हिन्दुस्तान के पांच लाख देहात के लिये करीब सवा सौ करोड़ रुपये की हर साल ज़रूरत पड़ेगी. शायद ही कोई समझदार सरकार ऐसी हो जो इतना रुपया हर साल फूंकती रहे. फिर, बाहर से जो कोई भी उधार या दान की शकल में मदद देगा वह अपनी शर्तों पर देगा और हमारे पैरों में उल्टे बेड़ियां ही बांध देगा.

योजना के ख़ास दोष.

ऊपर के खुलासे से साफ़ पता चलता है कि इस योजना में बहुत सारे दोश हैं. उनमें से ख़ास ख़ास हम नीचे पेश करते हैं.

(1) इस योजना में सिर्फ़ गेहूँ व आलू की काश्त पर ध्यान दिया गया है और स्वावलम्बी खेती के लिये ज़रूरी दूसरी बातों का कोई परवा नहीं की गई है.

(2) देहात के उद्योग-धन्धों से इस योजना का कोई वास्ता नहीं है.

(3) विलायती खाद के सहारे रहकर देहाती खाद और देहात के मैल-कचरे का उपयोग में लाने की कोई सूरत इस योजना में नहीं की गई है.

(4) जो औज़ार इसमें रखे गये हैं उनसे बेकारी ही बढ़ती है.

(5) इसके मातहत जो बालिग़ तालीम या स्कूली तालीम दी जाती है वह बुनियादी या 'नई तालीम' से कोसों दूर की चीज़ है.

(6) योजना को क़तई ख़याल बे-ज़मीन वाले लाखों मज़दूरों का नहीं है जिनकी हालत और बिगड़ती जा रही है.

(7) वह योजना हमारी खेती को एक व्योपार का रूप दे देना चाहती है जो बड़े बड़े सरमायेदारों और दल्लालों के इशारे पर नाचा करे.

(8) वह इतनी ख़र्चीली योजना है कि हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब देश तो इसे अमल में ला ही नहीं सकते.

(9) वह हमारे गावों को शहरों का और देश को परदेश का मोहताज बनाती है.

(10) वह गांव वालों को मजबूर करती है कि सरकारी हुक्कामों या जानकारों को "माई-बाप" समझें और अपनी अक़्ल व समझ को ताक़ पर रख दें.

(11) गहरे देखें तो पता चलता है कि वह योजना एक जाल है जिसका मक़सद हमारे सीधे सादे भाई-बहनों को पक्का पश्चिमी ढर्रे का गुलाम बनाना है.

تو مسلسل رکھکر یوجنا بنائی جائے تب تو خرچ کروڑوں اور اربوں تک پہونچیگا ۔ پر اتنا تو یوجنا کے سوچنے پر ہی پتا چلیگا کہ ہندستان کے پانچ لاکھ دیہات کے لئے قریب سوا سو کروڑ روپیہ کی ہر سال ضرورت پڑے گی ۔ شاید ہی کوئی سمجھدار سرکار ایسی ہو جو اتنا روپیہ ہر سال پھونکتی رہے ۔ پھر باہر سے جو کوئی بھی ادھار یا دان کی شکل میں مدد دے گا وہ اپنی شرطوں پر دے گا اور ہمارے پیروں میں الٹے بیڑیاں ہی باندھ دے گا ۔

یوجنا کے خاص دوش ۔

اوپر کے خلاصے سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اس یوجنا میں بہت سارے دوش ہیں ۔ ان میں سے خاص خاص ہم نیچے پیش کرتے ہیں ۔

1. اس یوجنا میں صرف گیہوں و آلو کی کاشت پر دھیان دیا گیا ہے اور سواولمبی کھیتی کے لئے ضروری دوسری باتوں کی کوئی پرواہ نہیں کی گئی ہے ۔

2. دیہات کے ادیوگ دھندوں سے اس یوجنا کا کوئی واسطہ نہیں ہے ۔

3. ولایتی کھاد کے سہارے رہ کر دیہاتی کھاد اور دیہات کے میلے کچرے کو اپیوگ میں لانے کی کوئی صورت اس یوجنا میں نہیں کی گئی ہے ۔

4. جو اوزار اس میں رکھے گئے ہیں ان سے بےکاری ہی بڑھتی ہے ۔

5. اسکے ماتحت جو بالغ تعلیم یا اسکولی تعلیم دی جاتی ہے وہ بنیادی یا نئی تعلیم سے کوسوں دور کی چیز ہے ۔

6. یوجنا کو قطعی خیال بے زمین والے لاکھوں مزدوروں کا نہیں ہے جن کی حالت اور بگڑتی جا رہی ہے ۔

7. یہ یوجنا ہماری کھیتی کو ایک بیوپار کا روپ دے دینا چاہتی ہے جو بڑے بڑے سرمایہ داروں اور دلالوں کے اشارے پر ناچا کرے ۔

8. یہ اتنی خرچیلی یوجنا ہے کہ ہندستان جیسے غریب دیش تو اسے عمل میں لا ہی نہیں سکتے ۔

9. یہ ہمارے گاؤں کو شہروں کا اور دیش کو پردیش کا محتاج بناتی ہے ۔

10. یہ گاؤں والوں کو مجبور کرتی ہے کہ سرکاری حاکموں یا جانکاروں کو " مائی باپ " سمجھیں اور اپنی عقل و سمجھ کو طاق پر رکھ دیں ۔

11. گہرے دیکھیں تو پتہ چلتا ہے کہ یہ یوجنا ایک جال ہے جس کا مقصد ہمارے سیدھے سادے بھائی بہنوں کو پکا پچھمی طرز کا غلام بنانا ہے ۔

हमें इस वक्त पंजाब के गुड़गांव जिले के एक कलक्टर साहब की याद हो आई जो अपने को गांव का सुक़रात बताते थे. हमें डर है कि इन अपने मुंह-मियां मिट्ठू सुक़रात की तरह मेयर साहब की भी कोशिश— जिन्हें हम अफ़लातून कह सकते हैं—कहीं बेकार साबित न हो. क्योंकि उन्हें भी उस कलक्टर की तरह यह नहीं मालूम कि हिन्दुस्तान के गांव की असलियत क्या है और गांव वाले कैसा जीवन बिताते हैं.

योजना का निचोड़.

इटावा की सारी योजना को तीन दिन तक देखने-समझने के बाद हमारे मन में बार बार यही ख़याल पैदा होता है कि यह योजना न तो जनता की है, न जनता की तरफ़ से है और न जनता के वास्ते है. बल्कि ऊपर से लादी हुई एक बनावटी चीज़ है जिसकी बुनियाद एकदम खोखली है. जहां एक ईंट खसकी कि सारा क़िला धड़ाम धड़ाम गिर पड़ेगा. ऐसी योजना देश के लिये ख़तरनाक है और अमल के लायक़ हरगिज़ नहीं है. राजकाजी, आर्थिक, समाजी, कलचरी वग़ैरा पहलुओं से सोचने पर हम तो कहेंगे कि सपने में भी इस योजना को हाथ नहीं लगाना चाहिये.

इस योजना की चर्चा अख़बारों में है, रेडियो में है, रईसों के बंगलों में है. अभी अभी अमरीका से एक मेहमान बहन आई थीं उन्होंने भी इसकी तारीफ़ में आसमान तक पुल बांध दिये और फिर अमरीका जाकर वहां के राजपति को इसका कमाल बताया. दुनिया भर में इटावे की गूंज है, मानों दुखी हिन्दुस्तान के मरज़ों की यही एक अकसीर दवा है. पर अफ़सोस कि शायद ही कोई जानता हो कि यह दवा क्या है, किस तरह की है, कितनी ख़ुराकें खानी चाहिये वग़ैरा. इसलिये ज़रूरी है कि इसकी सही जानकारी लोगों को दी जाये. और वह यह है कि इटावा योजना एक घर-फूंक तमाशा है. निहायत ही ख़र्चीला और दिखाऊ तमाशा है जो हमारे देश के रत्ती भर भी माफ़िक़ नहीं है. बहुत हुआ तो विलायती खाद दे देकर गेहूं व आलू पैदा कर लेंगे पर इससे हमारी धरती की क्या सूरत बन जायेगी कौन कह सकता है. अगर कहीं यह बांझ हो गई तब तो भगवान ही मालिक है.

फिर, जब एक तरफ़ से यह योजना हमारी देहाती ज़िन्दगी को तबाह करती जायेगी, लोगों को मशीनों और पलटनों का मोहताज बनाती जायेगी, देश को विदेशी व्योपारियों के इशारे पर नचायेगी तो यह पैदावार भी कब तक और किस काम की? योरप के पढ़े-लिखे लोग विलायती खाद और ट्रैक्टर छोड़ रहे हैं पर हम आंख मींच कर उन पर लट्टू हो गये हैं. ऐसी हालत में हमारे

ہمیں [illegible] ضلع کے ایک کلکٹر صاحب کی یاد ہو آئی جو اپنے کو گاؤں کا سقراط بتاتے تھے۔ ہمیں ڈر ہے کہ ان اپنے منہ میاں مٹھو سقراط کی طرح میئر صاحب کی بھی کوشش—جنہیں ہم افلاطون کہہ سکتے ہیں—کہیں بیکار ثابت نہ ہو۔ کیونکہ انہیں بھی اس کلکٹر کی طرح یہ نہیں معلوم کہ ہندستان کے گاؤں کی اصلیت کیا ہے اور گاؤں والے کیسا جیون بتاتے ہیں۔

یوجنا کا نچوڑ۔

اٹاوہ کی ساری یوجنا کو تین دن تک دیکھنے سمجھنے کے بعد ہمارے من میں بار بار یہی خیال پیدا ہوتا ہے کہ یہ یوجنا نہ تو جنتا کی ہے، نہ جنتا کی طرف سے ہے اور نہ جنتا کے واسطے ہے۔ بلکہ اوپر سے لادی ہوئی ایک بناوٹی چیز ہے جس کی بنیادیں ایک دم کھوکھلی ہیں۔ جہاں ایک اینٹ کھسکی کہ سارا قلعہ دھڑام دھڑام گر پڑے گا۔ ایسی یوجنا دیش کے لئے خطرناک ہے اور عمل کے لائق ہرگز نہیں ہے۔ راج کاجی، آرتھک، سماجی، کلچری وغیرہ پہلوؤں سے سوچنے پر ہم تو کہیں گے کہ سپنے میں بھی اس یوجنا کو ہاتھ نہیں لگانا چاہئے۔

اس یوجنا کی چرچا اخباروں میں ہے، ریڈیو میں ہے، رئیسوں کے بنگلوں میں ہے۔ ابھی ابھی امریکہ سے ایک مہمان بہن آئی تھیں، انہوں نے بھی اسکی تعریف میں آسمان تک پل باندھ دیئے اور پھر امریکہ جا کر وہاں کے راج پتی کو اسکا کمال بتایا۔ دنیا بھر میں اٹاوہ کی گونج ہے، مانو دکھی ہندستان کے مرضوں کی یہی ایک اکسیر دوا ہے۔ پر افسوس کہ شاید ہی کوئی جانتا ہو کہ یہ دوا کیا ہے، کس طرح کی ہے، کتنی خوراکیں کھانی چاہئیں وغیرہ۔ اسلئے ضروری ہے کہ اسکی صحیح جانکاری لوگوں کو دی جائے۔ اور وہ یہ ہے کہ اٹاوہ یوجنا ایک گھر پھونک تماشہ ہے۔ نہایت ہی خرچیلا اور دکھاؤ تماشہ ہے جو ہمارے دیش کے رتی بھر بھی موافق نہیں ہے۔ بہت ہوا تو ولایتی کھاد دے دے کر گیہوں و آلو پیدا کر لیں گے پر ان سے ہماری دھرتی کی کیا صورت بن جائے گی کون کہہ سکتا ہے۔ اگر کہیں یہ بانجھ ہو گئی تب تو بھگوان ہی مالک ہے۔

پھر، جب ایک طرف سے یہ یوجنا ہماری دیہاتی زندگی کو تباہ کرتی جائے گی، لوگوں کو مشینوں اور پلٹنوں کا محتاج بناتی جائے گی، دیش کو بدیشی بیوپاریوں کے اشارے پر نچائے گی تو یہ پیداوار بھی کب تک اور کس کام کی؟ یورپ کے پڑھے لکھے لوگ ولایتی کھاد اور ٹریکٹر چھوڑ رہے ہیں پر ہم آنکھ میچ کر ان پر لٹو ہو گئے ہیں۔ ایسی حالت میں ہمارے

[illegible] रहेंगे का [illegible] ! ऐसी घर-फूंक, जानलेवा और [illegible]- जनता [illegible] वही सरकार खेल सकती है जो हवा में रहती हो और जिसका जनता से कोई वास्ता न हो. यह योजना बिल्कुल [illegible] है, रईसों और पूंजीपतियों के हाथ का खेल है और समाज को चूसने वाले गिने-चुने लोगों के लिये सहारा है. यह योजना ग़रीब को ग़रीब और अमीर को और भी अमीर बनाने वाली है. यह योजना हिन्दुस्तान की रही सही दौलत को, लाज और आन को बरबाद करने वाली है. वह योजना निकम्मी होती है जो अपने देश के लाखों-करोड़ों नंगे-भूखों को कुछ फ़ायदा न पहुँचा सके. पर इटावा योजना तो उनकी तरफ़ भूठे को भी मुंह नहीं करती, उल्टे बेरोज़गार बना कर उनकी रोज़ी छीनती है.

सरकार को चाहिये कि इस घर-फूंक तमाशे को बन्द कर दे. इटावा नाम की धोखे की टट्टी को ख़त्म करे. सरकार को चाहिये कि इन जानकारों को जो हिन्दुस्तान के बारे में उरद के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी जानकारी नहीं रखते विदा कर दे, बाहर का जो पैसा लिया है वह वापिस कर दे, दूसरी कम्पनियों या सरकारों से जो नापाक इक़रारनामे किये हैं उन्हें ख़ारिज कर दे और देश को हवाले कर दे देश के असली बाशिन्दों के हाथों में. कोई ऐसी रुकावट नहीं है जो यहाँ के लोग अपने आप हल न कर सकें. न आदमी की कमी है, न अक़्ल-समझ की कमी है, न सामान की कमी है. कमी है हकूमत की सही निगाह की, उसके मुनासिब रुझान की, उसके ठीक तर्ज़ की.

हिन्दुस्तान में सिर्फ़ वही योजना कामयाब हो सकती है जो विकेन्द्री करन और ग़ैर-फ़ौजियाना बुनियादों पर बनाई जावे. वही एक सच्चा सहारा साबित होगी जिसके किनारे लोग अपने सूखे गलों को कुछ तर कर सकेंगे. पर इटावा जैसी योजना तो जले पर नमक छिड़कने का काम करती है और देश को बरबाद और तबाह करने का एक बहाना है. देश का भला इसी में है कि यह घर फूंक तमाशा हमेशा के लिये उठा दिया जावे.

اِٹاوے کا گھر پھونک تماشہ

کیوں رہینگے یا جائینگے ؟ ایسی گھر پھونک، جان لیوا اور ظلم جلتا تماشہ وہی سرکار کھیل سکتی ہے جو ہوا میں رہتی ہو اور جس کا جنتا سے کوئی واسطہ نہ ہو۔ یہ یوجنا [illegible] کھیل ہے، رئیسوں اور پونجی پتیوں کے ہاتھ کا کھیل ہے اور سماج کو چوسنے والے گنے چنے لوگوں کے لئے سہارا ہے۔ یہ یوجنا غریب کو غریب اور امیر کو اور بھی امیر بنانے والی ہے۔ یہ یوجنا ہندستان کی رہی سہی دولت کو لاج اور آن کو برباد کرنے والی ہے۔ وہ یوجنا نکمی ہوتی ہے جو اپنے دیش کے لاکھوں کروڑوں ننگے بھوکوں کو کچھ فائدہ نہ پہنچا سکے۔ پر اٹاوہ یوجنا تو ان کی طرف جھوٹے کو بھی منہ نہیں کرتی، الٹے بے روزگار بنا کر اُن کی روزی چھینتی ہے۔

سرکار کو چاہئے کہ اِس گھر پھونک تماشے کو بند کر دے۔ اِٹاوہ نام کی دھوکے کی ٹٹی کو ختم کرے۔ سرکار کو چاہئے کہ اِن جانکاروں کو ہندستان کے بارے میں ارد کے اوپر سفیدی برابر بھی جانکاری نہیں رکھتے وداع کردے، باہر کا جو پیسہ لیا ہے وہ واپس کردے، دوسری کمپنیوں یا سرکاروں سے جو ناپاک قرار نامے کئے ہیں اُنہیں خارج کردے اور دیش کو حوالے کردے دیش کے اصلی باشندوں کے ہاتھوں میں۔ کوئی ایسی رکاوٹ نہیں ہے جو یہاں کے لوگ اپنے آپ حل نہ کرسکیں۔ نہ آدمی کی کمی ہے، نہ عقل سمجھ کی کمی ہے، نہ سامان کی کمی ہے۔ کمی ہے حکومت کی صحیح نگاہ کی، اُسکے مناسب رجحان کی، اُسکے ٹھیک طرز کی۔

ہندستان میں صرف وہی یوجنا کامیاب ہوسکتی ہے جو وکیندری کرن اور غیر فوجیانہ بنیادوں پر بنائی جائے۔ وہی ایک سچا سہارا ثابت ہوگی جس کے کنارے لوگ اپنے سوکھے گلوں کو کچھ تر کر سکیں گے۔ پر اٹاوہ جیسی یوجنا تو جلے پر نمک چھڑکنے کا کام کرتی ہے۔ دیش کو برباد اور تباہ کرنے کا ایک بہانہ ہے۔ دیش کا بھلا اسی میں ہے کہ یہ گھر پھونک تماشہ ہمیشہ کے لئے اٹھا دیا جائے۔

मियाँ अहमद जान

"अब्बा, वह तो दो रुपये."

"वाह ! आज तो हमारे बेटे सईद ने बड़ा अच्छा काम किया. पहला गाहक पटाया, और जुम्मेरात के रोज़. आज ज़रूर पांच आने की मिठाई बाटूंगा."

"अब्बा, मुझे तो सौदा करने में कुछ भी नहीं लगा. मैंने गाहक से दो रुपये मांगे, उसने दे दिये."

"यह तो और भी अच्छी बात है. यह तो बताओ, तुमने कौनसी जोड़ी बेची ?"

"अब्बा, इसी तीसर ख़ाने में से एक बचकानी जोड़ी बेची है."

"तीसरे ख़ाने से, बचकानी !"

उस ख़ाने की ओर इशारा करके बारह बरस का सईद बोला, "हां अब्बा, इसी में से."

"पर बेटे, इस ख़ाने पर तो डेढ़ रुपया लिखा है."

"अब्बा, गाहक ने तो जूती उलट कर देखी थी. उसपर दो रुपये लिखे थे."

"उसपर लिखे होंगे, पर ख़ाने पर तो डेढ़ लिखा है. बेटे, तुम्हें मालूम है कि मैं रोज़ इसी में से डेढ़ के हिसाब से बेचता हूं. तुमने दो कैसे कह दिये !"

"अब्बा पता नहीं किस तरह मुंह से निकल गये. गाहक ने तो अच्छी तरह उसके पीछे लिखे दाम पढ़ लिये थे."

"यह तो मुझे भी ताज्जुब हो रहा है कि उस पर दो लिख किसने दिये ? अच्छा और तो कोई जोड़ी निकालो."

सईद एक जोड़ी निकालता है, उस पर डेढ़ लिखा मिलता है. दूसरी निकालता है उस पर भी डेढ़ मिलता है. तीसरी-चौथी, सभी पर डेढ़ मिलता है. घबरा कर बोलता है :

"अब्बा, इन सब पर तो डेढ़ ही लिखा है."

"डेढ़ की चीज़ है तो डेढ़ लिखा ही होगा."

"उस जोड़ी पर तो दो लिखे थे, मैंने देखा था. गाहक ने भी पढ़ा था. तब ही तो उसने पट निकाल कर दो दे दिये."

"उसने दे दिये ठीक, तुमने वे कैसे लिये ?"

"उसने दिये, मैंने लिये."

جوتی بیچنا کے لیے ایک کہانی

میاں احمد جان

" ابا' یہ تو دو روپے ."

" اہا ! آج تو ہمارے بیٹے سعید نے بڑا اچھا کام کیا. پہلا گاہک پٹایا اور جمعرات کے روز. آج ضرور پانچ آنے کی مٹھائی بانٹونگا ."

" ابا' مجھے تو سودا کرنے میں کچھ بھی نہیں لگا . میں نے گاہک سے دو روپے مانگے' اس نے دے دیئے ."

" یہ تو اور بھی اچھی بات ہے . یہ تو بتاؤ' تم نے کون سی جوڑی بیچی ؟"

" ابا' اسی تیسرے خانے میں سے ایک بچکانی جوڑی بیچی ہے ."

" تیسرے خانے سے' بچکانی !"

اس خانے کی اور اشارہ کر کے بارہ برس کا سعید بولا' " ہاں ابا' اسی میں سے ."

" پر بیٹے' اس خانے پر تو ڈیڑھ روپیہ لکھا ہے ."

" ابا' گاہک نے تو جوتی الٹ کر دیکھی تھی . اس پر دو روپے لکھے تھے ."

" اس پر لکھے ہونگے' پر خانے پر تو ڈیڑھ لکھا ہے . بیٹے' تمہیں معلوم ہے کہ میں روز اسی میں سے ڈیڑھ کے حساب سے بیچتا ہوں . تم نے دو کیسے کہ دیئے !"

" ابا پتہ نہیں کس طرح منہ سے نکل گئے . گاہک نے تو اچھی طرح اس کے پیچھے لکھے دام پڑھ لئے تھے ."

" یہ تو مجھے بھی تعجب ہو رہا ہے کہ اس پر دو لکھ کس نے دیئے ؟ اچھا اور تو کوئی جوڑی نکالو ."

سعید ایک جوڑی نکالتا ہے' اس پر ڈیڑھ لکھا ملتا ہے . دوسری نکالتا ہے اس پر بھی ڈیڑھ ملتا ہے . تیسری چوتھی' سبھی پر ڈیڑھ ملتا ہے . گھبرا کر بولتا ہے :

" ابا' ان سب پر تو ڈیڑھ ہی لکھا ہے ."

" ڈیڑھ کی چیز ہے تو ڈیڑھ لکھا ہی ہوگا ."

" اس جوڑی پر تو دو لکھے تھے' میں دیکھا تھا . گاہک نے بھی پڑھا تھا . جب ہی تو اس نے جھٹ نکال کر دو دے دیئے ."

" اس نے دے دیئے ٹھیک' تم نے وہ کیسے لئے ؟"

" اسی [illegible] میں نے لئے ."

"वह तीन [illegible] के लेते ?"

"वह कहाँ तीन देता, मैंने तो दो मांगे थे ?"

"तुम तीन मांगते, और वह तीन दे देता तो तुम ले लेते ?"

सईद चुप !

"बेटे सईद, सच बताओ, क्या तुमने दो रुपये जूती पर लिखे देख कर कहे थे ?"

"नहीं अब्बा, मैंने तो यों ही कह दिये थे."

"यों ही कह दिये थे, क्यों ?"

"अब्बा, भूल हुई."

"भूल नहीं, तुमने दुकान को हमेशा के लिये बदनाम कर दिया, देखो दुकान पर लिखा है—एक बात. इसलिये गाहक ने दो दिये. जाओ और फौरन गाहक को ढूँढ कर लाओ."

× × ×

"भाई रामदास जी, आपने उस गाहक को देखा था, जिसने अभी मेरे बच्चे से जूती ख़रीदी ?"

"मियाँ अहमद जान, देखा तो था, पर वह तो डेढ़-दो घंटे पहले की बात है."

"हां-हां, वही वही, तो कहिये उसकी शकल सूरत कुछ याद है आपको ?"

"ज़ियादा तो नहीं, मैंने उसे पीछे से देखा था. कोट पहने था, नंगे सिर था, काले रंग जूता था. गोरा रंग होना चाहिये, क्योंकि गर्दन गोरी थी. हो न हो, कालिज का स्टूडेंट रहा होगा. पर चेहरा बग़ैर देखे वह पहचाना नहीं जा सकता. मैंने उसका चेहरा नहीं देखा."

"फिर भी इन कपड़ों में अगर कोई आदमी निकले तो मुझे याद ज़रूर दिलाइये, ख़याल तो मैं ख़ुद भी रखूँगा. उसकी तलाश में सईद को भी भेजा है. पर आप भी ख़याल रखें."

"क्यों-क्यों क्या हुआ ? कुछ लेकर चलता बना क्या ?"

"नहीं-नहीं."

"तो क्या ख़राब नोट दे गया ?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं. बच्चे ने ग़लती से डेढ़ रुपये की जूती के दो रुपये ले लिये. अठन्नी उसकी रह गई है. वो उसको वापिस करनी है."

× × ×

"अब्बा, वह तो कहीं नहीं मिला. बहुत दूर तक गया, दुकानदारों से पूछा. वहाँ यह तो पता चला कि उस

" وہ تین [illegible] تو تم تین کے لیتے ؟"

" وہ کہاں تین دیتا، میں نے تو دو مانگے تھے ؟"

" تم تین مانگتے، اور وہ تین دے دیتا تو تم لے لیتے ؟"

سعید چپ !

" بیٹے سعید، سچ بتاؤ، کیا تم نے دو روپے جوتی پر لکھے دیکھکر کہے تھے ؟"

" نہیں ابا، میں نے تو یوں ہی کہہ دیئے تھے ."

" یوں ہی کہہ دیئے تھے، کیوں ؟"

" ابا، بھول ہوئی ."

" بھول نہیں، تم نے دوکان کو ہمیشہ کے لئے بدنام کر دیا، دیکھو دوکان پر لکھا ہے ایک بات، اس لئے گاہک نے دو دیئے . جاؤ اور فوراً گاہک کو ڈھونڈھکر لاؤ ."

× × × ×

" بھائی رام داس جی، آپ نے اُس گاہک کو دیکھا تھا، جس نے ابھی میرے بچے سے جوتی خریدی ؟"

" میاں احمد جان، دیکھا تو تھا، پر وہ تو ڈیڑھ دو گھنٹے پہلے کی بات ہے ."

" ہاں ہاں، وہی وہی، تو کہئے اس کی شکل وکل کچھ یاد ہے آپ کو ؟"

" زیادہ تو نہیں، میں نے اُسے پیچھے سے دیکھا تھا . کوٹ پہنے تھا، ننگے سر تھا، کالے رنگ کا جوتا تھا . گورا رنگ ہونا چاہئے، کیونکہ گردن گوری تھی . ہو نہ ہو، کالج کا اسٹوڈینٹ رہا ہوگا . پر چہرہ بغیر دیکھے وہ پہچانا نہیں جا سکتا . میں نے اس کا چہرہ نہیں دیکھا ."

" پھر بھی ان کپڑوں میں اگر کوئی آدمی نکلے تو مجھے یاد ضرور دلایئے . خیال تو میں خود بھی رکھونگا . اُس کی تلاش میں سعید کو بھی بھیجا ہے . پر آپ بھی خیال رکھیں ."

" کیوں کیوں کیا ہوا ؟ کچھ لیکر چلتا بنا کیا ؟"

" نہیں نہیں ."

" تو کیا خراب نوٹ دے گیا ؟"

" نہیں، ایسی کوئی بات نہیں . بچے نے غلطی سے ڈیڑھ کی جوتی کے دو روپئے لے لئے . اٹھنی اُسکی رہ گئی ہے . یہی اسکو واپس کرنی ہے ."

× + × ×

" ابا، وہ تو کہیں نہیں ملا . بہت دور تک گیا، دوکانداروں سے پوچھا . وہاں یہ تو پتہ چلا کہ اس

शक्ल का आदमी सौदे ले आया ज़रूर पर वह नहीं मालूम कहां गया ?"

"बेटे, तुमने ज़बर्दस्त ग़लती की. मुझे खुशी हुई थी कि आज तुमने पहला गाहक पटाया. पर मेरी खुशी सब मिट्टी में मिल गई. तुमने पहले ही सौदे में झूठ बोल दिया. बेटे, कहो तो, जब खाने में डेढ़ लिखा था, जूते पर दो की रक़म तुमने पढ़ी नहीं, फिर तुमने दो रुपये कैसे कह दिये ?"

"अब्बा, सच कहूं ?"

"हां बेटे, सच कहो."

"सभी दुकानदार तो ऐसा करते हैं."

"पर तुम तो मेरे बेटे हो. क्या तुमने मुझे कभी ऐसा करते देखा ?"

"नहीं अब्बा, आपको तो कभी नहीं देखा."

"फिर ?"

"फिर क्या अब्बा, भूल हुई. अब ऐसी ग़लती नहीं करूंगा."

बच्चे की आंखों से टपटप आंसू गिरने लगे. बाप की आंखों ने भी बेटे की आंखों का साथ दिया. बाप के हाथों ने बेटे को उठाया, छाती से लगाया, पुचकारा और फिर दुकान के काम में लग गया.

पन्द्रह रोज़ तक बराबर वह हर दुकानदार से पूछते, उस गाहक की शक्ल बताते, और जानना चाहते कि कोई उस शक्ल का निकला या नहीं. उनका अपना भी यह हाल था कि सौदा करते करते उनकी आंखें बाज़ार में चलते हर कोट बूट पर पड़ती थीं, टिकती थीं, और निराश होकर लौट आती थीं.

पन्द्रह दिन के बाद जुम्मेरात आई. उन्होंने पीर पर चादर चढ़ाई, दुआ मांगी, "ऐ मेरे पीर, मेरे बच्चे का कोई क़सूर नहीं, अगर कुछ हो तो उसे माफ़ करना. मेरा भी कोई क़सूर नहीं, वह अठन्नी अब तक अलग रखी है और उस वक़्त तक रखी रहेगी जब तक वह गाहक न आयेगा."

गाहक न आया, न आया, पर जीते जी मियां अहमद जान जुम्मेरात के जुम्मेरात पीर की क़ब्र पर पांच पैसे की मिठाई हमेशा चढ़ाते रहे.

—भगवानदीन

شکل کا آدمی سودے لے آیا ضرور پر یہ نہیں معلوم کہاں گیا ؟"

" بیٹے، تم نے زبردست غلطی کی۔ مجھے خوشی ہوئی تھی کہ آج تم نے پہلا گاہک پٹایا۔ پر میری خوشی سب مٹی میں مل گئی۔ تم نے پہلے ہی سودے میں جھوٹ بول دیا۔ بیٹے، کہو تو، جب خانے میں ڈیڑھ لکھا تھا، جوتے پر دو کی رقم تم نے پڑھی نہیں، پھر تم نے دو روپئے کیسے کہہ دیئے ؟"

" ابا، سچ کہوں ؟"

" ہاں بیٹے، سچ کہو۔"

" سبھی دوکاندار تو ایسا کرتے ہیں۔"

" پر تم تو میرے بیٹے ہو۔ کیا تم نے مجھے کبھی ایسا کرتے دیکھا ؟"

" نہیں ابا، آپ کو تو کبھی نہیں دیکھا۔"

" پھر ؟"

" پھر کیا ابا، بھول ہوئی۔ اب ایسی غلطی نہیں کروں گا۔"

بچے کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے۔ باپ کی آنکھوں نے بھی بیٹے کی آنکھوں کا ساتھ دیا۔ باپ کے ہاتھوں نے بیٹے کو اٹھایا، چھاتی سے لگایا، پچکارا اور پھر دوکان کے کام میں لگ گیا۔

پندرہ روز تک برابر وہ ہر دوکاندار سے پوچھتے، اس گاہک کی شکل بتاتے، اور جاننا چاہتے کہ کوئی اس شکل کا نکلا یا نہیں۔ ان کا اپنا بھی یہ حال تھا کہ سودا کرتے کرتے ان کی آنکھیں بازار میں چلتے ہر کوٹ بوٹ پر پڑتی تھیں، ٹکتی تھیں، اور نراش ہوکر لوٹ آتی تھیں۔

پندرہ دن کے بعد جمعرات آئی۔ انہوں نے پیر پر چادر چڑھائی، دعا مانگی، " اے میرے پیر، میرے بچے کا کوئی قصور نہیں، اگر کچھ ہو تو اسے معاف کرنا۔ میرا بھی کوئی قصور نہیں، وہ اٹھنی اب تک الگ رکھی ہے اور اس وقت تک رکھی رہے گی جب تک وہ گاہک نہ آئے گا۔"

گاہک نہ آیا، نہ آیا، پر جیتے جی میاں احمد جان جمعرات کے جمعرات پیر کی قبر پر پانچ پیسے کی مٹھائی ہمیشہ چڑھاتے رہے۔

—بھگوان دین

सर्वोदय अर्थशास्त्र की पुकार

हर एक का अनुभव है कि बाज़ार में चीज़ों के दाम गिरते-चढ़ते रहते हैं. ख़ासकर जो चीज़ें बुनियादी ज़रूरत की हैं जैसे अनाज, कपड़ा वग़ैरा, इनमें यह उतार-चढ़ाव बहुत होता है, जिससे मामूली समझ के आदमी को हैरत होती है कि आख़िर माजरा क्या है कि एक वक़्त में एक चीज़ के दाम तो कम हो जाते हैं पर दूसरी के वैसे ही बने रहते हैं. फिर यह समझ में नहीं आता कि अगर किसी वक़्त यह उतार-चढ़ाव आता है, तो क्यों आता है. हम इन सवालों में नहीं पड़ेंगे और न यहां इनमें पड़ने का कोई मौक़ा ही है. पर इतना ज़रूर कहेंगे कि इस महंगी सस्ती का—यह मुसीबत साबित हो या बरकत—कारन है हमारा मौजूदा अर्थशास्त्र, जिसको हम पूंजीवादी, साम्यवादी, साम्राज्यवादी या फ़ासिस्ट वग़ैरा न कहकर स्वार्थी अर्थशास्त्र कहेंगे. इसकी बुनियाद में एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें क्या सरकारी, क्या ग़ैर-सरकारी, सभी साधन इस तरह लगे हुए हैं कि उनसे चंद आदमियों को फ़ायदा पहुंच जाय और वह मालामाल होते रहें और ग़रीब ग़रीब बनते चले जायें.

इस तरफ़ ज़रा-सी ध्यान नहीं है कि वह व्यवस्था किस तरह क़ायम की जावे, ऐसा आर्थिक संगठन कैसे खड़ा किया जावे जिससे हर किसी का, सब का भला हो, सभी उसमें फूल-फलें और सब की तरक़्क़ी हो. अपनी अपनी चिन्ता करने वाले, अपना हित संभालने वाले यह स्वार्थी अर्थशास्त्र और उसके अलमबरदार आज क़रीब क़रीब समूची दुनिया पर हावी हैं. यही वजह है कि विज्ञान में आये दिन नई खोजें होती हैं. क़ुदरत पर 'विजय' पाने के लिए नये साधन निकलते हैं, लेकिन एक तरफ़ तो दुनिया में ग़रीबों मोहताजों की तादाद बढ़ती जाती है और दूसरी तरफ़, सन्तोष या शान्ति नाम की चीज़ किसी को हासिल नहीं होती दिखती.

आज कल हम नाज़ करते हैं अपनी ज़रूरतें बढ़ाने में और अपनी ज़रूरत ख़ुद मेहनत न करके पूरा करते हैं. इन्हीं ज़रूरतों के बढ़ने को हमें यह सिखाया जाता है, रहन सहन या 'स्टैण्डर्ड आफ़ लिविंग' का ऊंचा उठना कहते हैं और ज़रूरतें अपने जिस्म की मेहनत के बजाये मशीन के ज़रिये से पूरी करने को उद्योगीकरण या 'इण्डस्ट्रियलाइज़ेशन' कहते हैं. बताया जाता है कि आज विज्ञान का युग है न कि भावनाओं का, सब काम समझ-बूझ कर करने या 'रैशनलाइज़ेशन' का, न कि भावभक्ति का. हम

سرودے ارتھ شاستر کی پکار

ہر ایک کا تجربہ ہے کہ بازار میں چیزوں کے دام گرتے چڑھتے رہتے ہیں. خاص کر جو چیزیں بنیادی ضرورت کی ہیں جیسے اناج، کپڑا وغیرہ، ان میں یہ اتار چڑھاؤ بہت ہوتا ہے، جس سے معمولی سمجھ کے آدمی کو حیرت ہوتی ہے کہ آخر ماجرا کیا ہے کہ ایک وقت میں ایک چیز کے دام تو کم ہو جاتے ہیں پر دوسری کے ویسے ہی بنے رہتے ہیں. پھر یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ اگر کسی وقت یہ اتار چڑھاؤ آتا ہے، تو کیوں آتا ہے. ہم ان سوالوں میں نہیں پڑیں گے اور نہ یہاں ان میں پڑنے کا کوئی موقع ہی ہے. پر اتنا ضرور کہیں گے کہ اس مہنگی سستی کا — یہ مصیبت ثابت ہو یا برکت — کارن ہے ہمارا موجودہ ارتھ شاستر، جس کو ہم پونجی وادی، سامیہ وادی، سامراجوادی یا فاسسٹ وغیرہ نہ کہہ کر سوارتھی ارتھ شاستر کہیں گے. اس کی بنیاد میں ایک ایسی ویوستھا ہے جس میں کیا سرکاری، کیا غیر سرکاری، سبھی سادھن اس طرح لگے ہوئے ہیں کہ ان سے چند آدمیوں کو فائدہ پہنچ جائے اور وہ مالا مال ہوتے رہیں اور غریب غریب بنتے چلے جائیں.

اس طرف ذرا بھی دھیان نہیں ہے کہ وہ ویوستھا کس طرح قائم کی جائے، ایسا آرتھک سنگٹھن کیسے کھڑا کیا جائے جس سے ہر کسی کا، سب کا بھلا ہو، سبھی اس میں پھولے پھلیں اور سب کی ترقی ہو. اپنی اپنی چنتا کرنے والے، اپنا ہت سنبھالنے والے یہ سوارتھی ارتھ شاستر اور اس کے علمبردار آج قریب قریب ساری دنیا پر حاوی ہیں. یہی وجہ ہے کہ وگیان میں آئے دن نئی کھوجیں ہوتی ہیں. قدرت پر 'وجے' پانے کے نت نئے سادھن نکلتے ہیں، لیکن ایک طرف تو دنیا میں غریبوں محتاجوں کی تعداد بڑھتی جاتی ہے اور دوسری طرف، سنتوش یا شانتی نام کی چیز کسی کو حاصل نہیں ہوتی دکھتی.

آج کل ہم ناز کرتے ہیں اپنی ضرورتیں بڑھانے میں اور اپنی ضرورت خود محنت نہ کر کے پورا کرتے ہیں. انہیں ضرورتوں کے بڑھنے کو ہمیں یہ سکھایا جاتا ہے، رہن سہن یا 'اسٹینڈرڈ آف لیونگ' کا اٹھنا کہتے ہیں اور ضرورتیں اپنے جسم کی محنت کے بجائے مشین کے ذریعہ سے پوری کرنے کو ادیوگی کرن یا 'انڈسٹریلائزیشن' کہتے ہیں. بتایا جاتا ہے کہ آج وگیان کا یگ ہے نہ کہ بھاوناؤں کا، سب کام سمجھ بوجھ کر کرنے یا 'ریشنلائزیشن' کا نہ کہ بھاؤ بھکتی کا. ہم

जानते हैं कि पुराने देवी-देवताओं को हमने छोड़ दिया लेकिन हमें होश नहीं कि हम पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा पूजा करने लगे हैं पैसे और मशीन की, बल्कि कहना तो यह चाहिये कि हम पैसे और मशीन के इतने ज़ियादा गुलाम बन गये हैं कि इन्सान की असली हस्ती की कोई क़ीमत हमारी निगाह में अब रह नहीं गई है. अपने पड़ोसी के लिये हमारे दिल में कोई जगह बाक़ी नहीं है और हमीं हम का भूत बुरी तरह सवार होता चला जा रहा है. अगर इसी ढर्रे पर दुनिया चलती रही तो कहां पहुँचेगी ? यह एक सोचने की बात है.

अपने देश हिन्दुस्तान की हालत देखें तो हमें महसूस होता है कि सरकार बड़ी तेज़ी के साथ स्वार्थी अर्थशास्त्र की जड़ें आज़ाद देश में जमाती चली जा रही है. अनाज के लिये हमें परदेश से भीख मांगनी पड़ती है, तरह तरह के सामान भी परदेश से ही आते हैं, पैसा बाहर से, एक्सपर्ट या माहर बाहर से—और किस लिये, ताकि देश में बड़े बड़े कारख़ाने खोले जावें हमारे शहर और गांव विदेशी पैसा-परस्त 'सभ्य' कहे जाने वालों के मन की मौज के अनुसार ढाले जावें, लोग हरे-भरे और खुले-साफ़ खेत व गांव छोड़ कर हवा-बन्द, गन्दी, चिपचिपी मिलों व शहरों में बसें, अपने मालिक आप न बनकर मशीनों और पैसे या पैसे वालों के मोहताज बन जावें, अपनी ज़रूरतें इतनी ज़ियादा बढ़ा लें कि फिर उन्हें पूरा करने के लिये उस चक्कर से छुटकारा ही न मिले. हम इस पर सन्तोष कर लेते अगर यह काम हम ख़ुद करते, अपने देश की मिट्टी पानी के मुताबिक़ करते, अपने लोगों के स्वभाव व रीति-रिवाज के मुताबिक़ करते. लेकिन यहां तो होड़ लगी है विदेशी व्योपारियों और माहरों की जो अपने घर का संभाल तो कर नहीं सकते हमको पाठ पढ़ाने आये हैं. पर क़सूर उनका क्या है ? क़सूर है उस सरकार का, उन हाकिमों का जो यह करने की इजाज़त दे रहे हैं, जो विदेशी पैसे, सरमायेदार और एक्सपर्टों को मौक़ा दे देकर देश को गिरवी रख कर बेचे डाल रहे हैं. और रही सही जो दौलत है, जो ईमान है, जो कल्चर है, उसे तबाह करने पर तुले हैं. किसी ने सच कहा है, हम ख़ुद ही अपने सब से बड़े दुश्मन हैं और ख़ुद ही अपने सबसे बड़े दोस्त. आज हमारी सरकार जाने-अनजाने देश की सबसे बड़ी दुश्मन बन गई है.

ऐसी हालत में कहां सर्वोदय और कहां सर्वोदय अर्थशास्त्र। कौन इन्हें पूछेगा और कौन इनकी परवा करेगा ! हम अच्छी तरह जानते हैं कि आज के ज़माने में सर्वोदय अर्थशास्त्र की चर्चा करना धार के खिलाफ़ तैरना है. फिर, अर्थशास्त्र तो सब लोग जानते हैं,

سمجھتے ہیں کہ پرانے دیوی دیوتاؤں کو ہم نے چھوڑ دیا لیکن ہمیں ہوش نہیں کہ ہم پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ پوجا کرنے لگے ہیں پیسے اور مشین کی، بلکہ کہنا تو یہ چاہئے کہ ہم پیسے اور مشین کے اتنے زیادہ غلام بن گئے ہیں کہ انسان کی اصلی ہستی کی کوئی قیمت ہماری نگاہ میں اب رہ نہیں گئی ہے. اپنے پڑوسی کے لئے ہمارے دل میں کوئی جگہ باقی نہیں ہے اور ہمیں ہم کا بھوت بری طرح سوار ہوتا چلا جا رہا ہے. اگر اسی ڈھرے پر دنیا چلتی رہی تو کہاں پہنچےگی ؟ یہ ایک سوچنے کی بات ہے.

اپنے دیش ہندستان کی حالت دیکھیں تو ہمیں محسوس ہوتا ہے کہ سرکار بڑی تیزی کے ساتھ سوارتھی ارتھ شاستر کی جڑیں آزاد دیش میں جماتی چلی جا رہی ہے. اناج کے لئے ہمیں پردیش سے بھیک مانگنی پڑتی ہے، طرح طرح کے سامان بھی پردیش سے ہی آتے ہیں، پیسہ باہر سے، ایکسپرٹ یا ماہر باہر سے—اور کس لئے، تاکہ دیش میں بڑے بڑے کارخانے کھولے جائیں، ہمارے شہر اور گاؤں ودیشی پیسہ پرست 'سبھیہ' کہے جانے والوں کے من کی موج کے انوسار ڈھالے جائیں، لوگ ہرے بھرے اور کھلے صاف کھیت و گاؤں چھوڑ کر ہوا بند، گندی چپچپی ملوں و شہروں میں بسیں، اپنے مالک آپ نہ بنکر مشینوں اور پیسے یا پیسے والوں کے محتاج بن جائیں. اپنی ضرورتیں اتنی زیادہ بڑھا لیں کہ پھر انہیں کے پورا کرنے لئے کے چکر سے چھٹکارا ہی نہ ملے. ہم اس پر سنتوش کر لیتے اگر یہ کام ہم خود کرتے، اپنے دیش کی مٹی پانی کے مطابق کرتے، اپنے لوگوں کے سبھاؤ و ریتی رواج کے مطابق کرتے. لیکن یہاں تو ہوڑ لگی ہے ودیشی بیوپاریوں اور ماہروں کی جو اپنے گھر کا سنبھال تو کر نہیں سکتے ہمکو پاٹھ پڑھانے آئے ہیں. پر قصور ان کا کیا ہے ؟ قصور ہے اس سرکار کا، ان حاکموں کا جو یہ کرنے کی اجازت دے رہے ہیں، جو ودیشی پیسے، سرمایہ دار اور ایکسپرٹوں کو موقع دے دے کر دیش کو گروی رکھکر بیچے ڈال رہے ہیں. اور رہی سہی جو دولت ہے، جو ایمان ہے، جو کلچر ہے، اسے تباہ کرنے پر تلے ہیں. کسی نے سچ کہا ہے، ہم خود ہی اپنے سب سے بڑے دشمن ہیں اور خود ہی اپنے سب سے بڑے دوست. آج ہماری سرکار جانے انجانے دیش کی سب سے بڑی دشمن بن گئی ہے.

ایسی حالت میں کہاں سرودے اور کہاں سرودے ارتھ شاستر! کون انہیں پوچھے گا اور کون ان کی پرواہ کرےگا! ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ آج کے زمانے میں سرودے ارتھ شاستر کی چرچا کرنا دھار کے خلاف تیرنا ہے. پھر، ارتھ شاستر تو سب لوگ جانتے ہیں،

स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में पढ़ाया ही जाता है, लेकिन सर्वोदय अर्थशास्त्र क्या बला है; इसके अनुसार धन या दौलत किसे कहते हैं, श्रम या मेहनत क्या होती है, उत्पादन या पैदावार से क्या मुराद है, वगैरा वगैरा? यह सवाल हमारे सामने हैं. इनकी जानकारी अगर कोई हासिल करना चाहे तो कैसे करे? वैसे तो संसार के धर्म ग्रन्थ, सन्तों और महात्माओं की वाणियां मौजूद हैं, जो धर्म के साथ साथ अर्थशास्त्र के भी सबसे अच्छे खज़ाने हैं, पर तालीम का ऐसा असर है कि जब तक अर्थशास्त्र कह कर हमारे सामने चीज़ नहीं आये हम उसे समझने से इन्कार करते हैं. महात्मा गांधी ने इस अर्थशास्त्र को अपने जीवन में उतारा पर उसे किताबी जामा न उन्होंने पहनाया न उनका यह काम था. लेकिन उनके सामने से ही देश के कुछ विद्वानों ने यह काम अपने ऊपर उठा लिया था, जिनमें सब में ख़ास नाम डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का है. गांधीवादी या सर्वोदय अर्थशास्त्र का नाम अब पढ़े-लिखे लोग भी जान गए हैं, इनका प्रचार भी हो रहा है. पर इनका दायरा ज़ियादातर अंग्रेज़ी पाठकों तक ही सीमित रहा है. धीरे धीरे अपने देश की भाषाओं में भी इस तरह का साहित्य तैयार होने लगा है जैसे गुजराती में श्री नरहरि भाई परीख की 'मानव अर्थशास्त्र' नाम की किताब.

हिन्दी में अब तक यह कमी बनी हुई थी; सो इस तरफ़ श्री भगवानदास केला ने पहला क़दम उठाया है. हिन्दी संसार उन्हें अच्छी तरह जानता है. राजनीति और अर्थशास्त्र सम्बन्धी उनकी किताबें क़रीब एक पीढ़ी से विद्यार्थी भाई पढ़ते आ रहे हैं. अब हिन्दी में सच्चे या सर्वोदय अर्थशास्त्र के साहित्य भवन की बुनियाद की पहली ईंट भी उन्होंने ही रखी, इससे बढ़कर और ख़ुशी की बात क्या हो सकती है. मैं ख़ुद एक विद्यार्थी हूं. इस नाते मैं सारी किताब को एक बार अच्छी तरह पढ़ गया हूं. और मुझे इसका पढ़ना अपने लिये बहुत तालीम देने वाला और फ़ायदेमन्द साबित हुआ. मुझे यक़ीन है कि मेरी तरह या उससे ज़ियादा फ़ायदा दूसरे पाठक उठायेंगे, प्रोफ़ेसर हों या विद्यार्थी या कोई भी.

इन सफ़ों को देख जाने के बाद पाठक महसूस करेंगे कि सर्वोदय अर्थशास्त्र उतनी पढ़ने या चर्चा करने की चीज़ नहीं है, जितनी गुनने और अमल करने की. यही इसमें और दूसरे अर्थशास्त्रों में फ़र्क़ है. सर्वोदय अर्थशास्त्र समाज का हितैषी है पर व्यक्ति प्रधान है. इसमें पहला क़दम मुझे उठाना है, आपको उठाना है, जो इसको माने उसे उठाना है. इस अर्थशास्त्र में कर्तव्य या फ़र्ज़ पहले, अधिकार या हक़ बाद में. यह अर्थशास्त्र न केवल अर्थशास्त्र है बल्कि राजनीति-शास्त्र भी है, समाज शास्त्र भी है.

اسکول، کالج اور یونیورسٹی میں پڑھایا جاتا ہے، لیکن سروودے ارتھ شاستر کیا بلا ہے؟ اِس کے انوسار دھن یا دولت کسے کہتے ہیں، شرم یا محنت کیا ہوتی ہے، اُتپادن یا پیداوار سے کیا مراد ہے، وغیرہ وغیرہ؟ یہ سوال ہمارے سامنے ہیں. اِن کی جانکاری اگر کوئی حاصل کرنا چاہے تو کیسے کرے؟ ویسے تو سنسار کے دھرم گرنتھ، سنتوں اور مہاتماؤں کی بانیاں موجود ہیں، جو دھرم کے ساتھ ساتھ ارتھ شاستر کے بھی سب سے اچھے خزانے ہیں، پر تعلیم کا ایسا اثر ہے کہ جب تک ارتھ شاستر کہکر ہمارے سامنے چیز نہیں آئے ہم اسے سمجھنے سے انکار کرتے ہیں. مہاتما گاندھی نے اِس ارتھ شاستر کو اپنے جیون میں اُتارا پر اُسے کتابی جامہ نہ اُنہوں نے پہنایا نہ اُن کا یہ کام تھا. لیکن اُن کے سامنے سے ہی دیش کے کچھ ودوانوں نے یہ کام اپنے اوپر اُٹھا لیا تھا، جن میں سب میں خاص نام ڈاکٹر جے. سی. کماریپا کا ہے. گاندھی وادی یا سروودے ارتھ شاستر کا نام اب پڑھے لکھے لوگ بھی جان گئے ہیں، اِس کا پرچار بھی ہو رہا ہے. پر اِن کا دائرہ زیادہ تر انگریزی پاٹھکوں تک ہی سیمت رہا ہے. دھیرے دھیرے اپنے دیش کی بھاشاؤں میں بھی اِس طرح کا ساہتیہ تیار ہونے لگا ہے جیسے گجراتی میں شری نرہری بھائی پریکھ کی 'مانو ارتھ شاستر' نام کی کتاب.

ہندی میں اب تک یہ کمی بنی ہوئی تھی؛ سو اِس طرف شری بھگوان داس کیلا نے پہلا قدم اُٹھایا ہے. ہندی سنسار انہیں اچھی طرح جانتا ہے. راج نیتی اور ارتھ شاستر سمبندھی اُن کی کتابیں قریب ایک پیڑھی سے ودیارتھی بھائی پڑھتے آ رہے ہیں. اب ہندی میں سچے یا سروودے ارتھ شاستر کے ساہتیہ بھون کی بنیاد کی پہلی اینٹ بھی اُنہوں نے ہی رکھی، اِس سے بڑھکر اور خوشی کی بات کیا ہو سکتی ہے. میں خود ایک ودیارتھی ہوں. اِس ناتے میں ساری کتاب کو ایک بار اچھی طرح پڑھ گیا ہوں. اور مجھے اِس کا پڑھنا اپنے لئے بہت تعلیم دینے والا اور فائدے مند ثابت ہوا. مجھے یقین ہے کہ میری طرح یا اُس سے زیادہ فائدہ دوسرے پاٹھک اُٹھائیں گے، پروفیسر ہوں یا ودیارتھی یا کوئی بھی.

اِن صفحوں کو دیکھ جانے کے بعد پاٹھک محسوس کریں گے کہ سروودے ارتھ شاستر اُتنی پڑھنے یا چرچا کرنے کی چیز نہیں ہے، جتنی گننے اور عمل کرنے کی. یہی اِس میں اور دوسرے ارتھ شاستروں میں فرق ہے. سروودے ارتھ شاستر سماج کا ہتیشی ہے پر ویکتی پردھان ہے. اِس میں پہلا قدم مجھے اُٹھانا ہے، آپ کو اُٹھانا ہے، جو اِسے مانے اُسے اُٹھانا ہے. اِس ارتھ شاستر میں کرتویہ یا فرض پہلے، ادھیکار یا حق بعد میں. یہ ارتھ شاستر نہ کیول ارتھ شاستر ہے بلکہ راج نیتی شاستر بھی ہے، سماج شاستر بھی ہے.

जैसे चीज़ की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई. इन तीनों को अलग अलग नहीं कर सकते. इसी तरह अगर इन्सान को सचमुच ज़िन्दा रहना है तो अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र को अलग अलग नहीं कर सकते.

इस अर्थशास्त्र में चालू अर्थशास्त्र की खासियत स्वदेशी, चालू राजनीतिशास्त्र की खासियत—शासन या सरकार से इन्कार या असहयोग, और चालू समाजशास्त्र की खासियत सत्यम, तीनों शामिल हैं. स्वदेशी माने अपनी ज़रूरत जहां तक हो सकें इतनी रखना—जितनी हम अपने जिस्म की मेहनत से खुद पूरी कर सकें और मशीन का उपयोग (अगर हो भी) उतना ही हो जिस पर हमारा क़ाबू हो (न कि उसका हम पर), असहयोग माने किसी का शासन या ज़ियादती—चाहे राजा हो, सरकार हो, ज़मींदार हो, पूंजीपति हो, बाबा या मौलवी हो, बड़ा हो या छोटा हो—बर्दाश्त नहीं करेंगे और उनके साथ असहयोग करेंगे. पर वह असहयोग करेंगे कैसे? सत्यम से, यानी खुद तकलीफ़ें सहेंगे, दूसरे को मारेंगे नहीं, चाहे अपनी जान से हाथ भी धोना पड़े. इस तरह सर्वोदय अर्थशास्त्र में स्वधर्म-यानी स्वदेशी, असहयोग सत्याग्रह और प्रेम है. इन बातों के निभाये जाने पर हर किसी का भला या फ़ायदा होना लाज़मी है, आप से आप वह होगा.

हमारा यह विश्वास ही हमारा ध्रुवतारा है, जो धार के खिलाफ़ अपनी नाव ले जाने में हमारा अकेला सहारा है. जिस तरह अपने 'हिन्द स्वराज' में महात्मा जी ने लिखा है कि गैरीबाल्डी का इटली आज आज़ाद है पर मैज़िनी का इटली अब भी गुलाम बना हुआ है, उसी तरह हम देखते हैं कि जवाहर लाल का हिन्दुस्तान आज आज़ाद है पर गांधी का हिन्दुस्तान अब भी गुलाम बना हुआ है.

सिरजनहार से मेरी बिनती है कि इस किताब को पढ़कर हमारे अन्दर ऐसी प्रेरना पैदा हो कि हम गांधी के हिन्दुस्तान की गुलामी की बेड़ियां काट कर उसे आज़ाद बनावें और सच्चे या परमार्थी यानी सर्वोदय अर्थशास्त्र का नमूना दुनिया के आगे पेश करें.•

—सुरेश रामभाई

• श्री भगवान दास केला की किताब "सर्वोदय अर्थशास्त्र" से.

جیسے لمبائی چوڑائی اور اونچائی ... ہم تینوں کو الگ الگ نہیں کرسکتے۔ اسی طرح اگر انسان کو سچ مچ زندہ رہنا ہے تو ارتھ شاستر، راج نیتی شاستر اور سماج شاستر کو الگ الگ نہیں کرسکتے۔

اس ارتھ شاستر میں چالو ارتھ شاستر کی خاصیت سودیشی، چالو راج نیتی شاستر کی خاصیت- شاسن یا سرکار سے انکار یا اسہیوگ، اور چالو سماج شاستر کی خاصیت ستیم، تینوں شامل ہیں۔ سودیشی معنی اپنی ضرورتیں جہاں تک ہوسکیں اتنی رکھنا— جتنی ہم اپنے جسم کی محنت سے خود پوری کرسکیں اور مشین کا اپیوگ (اگر ہو تو) اتنا ہی ہو جس پر ہمارا قابو ہو (نہ کہ اس کا ہم پر)، اسہیوگ معنی کسی کا شاسن یا زیادتی—چاہے راجہ ہو، سرکار ہو، زمیندار ہو، پونجی پتی ہو، پنڈت یا مولوی ہو، بڑا ہو یا چھوٹا ہو—برداشت نہیں کریں گے اور اس کے ساتھ اسہیوگ کریں گے۔ پر یہ اسہیوگ کریں گے کیسے؟ ستیم سے، یعنی خود تکلیفیں سہیں گے، دوسرے کو ماریں گے نہیں، چاہے اپنی جان سے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑے۔ اس طرح سروودے ارتھ شاستر میں سودھرم یعنی سودیشی، اسہیوگ ستیاگرہ اور پریم ہے۔ ان باتوں کے نبھائے جانے پر ہر کسی کا بھلا یا فائدہ ہونا لازمی ہے، آپ سے آپ وہ ہوگا۔

ہمارا یہ وشواس ہی ہمارا دھروتارا ہے، جو دھار کے خلاف اپنی ناؤ لے جانے میں ہمارا اکیلا سہارا ہے۔ جس طرح اپنے 'ہند سوراج' میں مہاتما جی نے لکھا ہے کہ گیری بالڈی کا اٹلی آج آزاد ہے پر میزنی کا اٹلی اب بھی غلام بنا ہوا ہے، اسی طرح ہم دیکھتے ہیں کہ جواہر لال کا ہندستان آج آزاد ہے پر گاندھی کا ہندستان اب بھی غلام بنا ہوا ہے۔

سرجن ہار سے میری ونتی ہے کہ اس کتاب کو پڑھ کر ہمارے اندر ایسی پریرنا پیدا ہو کہ ہم گاندھی کے ہندستان کی غلامی کی بیڑیاں کاٹ کر اسے آزاد بنائیں اور سچے یا پرمارتھی یعنی سروودے ارتھ شاستر کا نمونہ دنیا کے آگے پیش کریں۔•

—سریش رام بھائی

• شری بھگوان داس کیلا کی کتاب "سروودے ارتھ شاستر" سے۔

बच्चों की दुनिया

[दु]म कट गई पर झड़ गये फिरते हैं लंडूरे

(हयात उल्ला अन्सारी)

(1)

जंगल में एक स्कूल था. वहां दो मोर पढ़ते थे. हरा मोर और लाल मोर. दोनों बड़े खूबसूरत थे.

स्कूल में तोता, मैना, कौवा और जुगनू भी पढ़ते थे. लाल मोर की इन सब से दोस्ती थी. जब स्कूल में छुट्टी हो जाती तो यह पांचों छुपी छुपैया खेलते.

लाल मोर का कोई दोस्त अगर बीमार पड़ जाता तो यह उसके घर जाता और अपना नाच दिखा दिखा कर उसका जी ऐसा बहलाता कि वह अच्छा हो जाता.

हरे मोर से किसी से दोस्ती नहीं थी. न तो यह अपने साथियों के साथ छुपी छुपैया खेलता और न किसी बीमार के घर आता जाता.

× × ×

एक दिन सब चिड़ियों ने हरे मोर से कहा, "आज तो तुम को भी खेलना पड़ेगा." बहुत कहने सुनने से वह राज़ी हो गया.

खेल होने लगा. थोड़ी देर में हरा मोर चोर बन गया. ढूंढना पड़ा तो वह दिल ही दिल में बहुत बिगड़ा. कभी मैना का पांव उसकी दुम पर पड़ गया. बस फिर तो वह आग बगूला हो गया. लगा मैना को अंधा और बदतमीज़ कहने. और ठोंगा मारने. सब ने बड़ी मुश्किल से उसको रोका. वह खफ़ा होकर चला गया.

उसी दिन से हरा मोर बिलकुल अलग थलग रहने लगा.

(2)

थोड़े दिनों के बाद लाल मोर, हरा मोर, तोता, मैना, कौवा और जुगनू, सब पढ़ लिख कर स्कूल से चले गये और अपने अपने कामों में लग गये.

بچوں کی دنیا

دم کٹ گئی پر جھڑ گئے پھرتے ہیں لنڈورے

(حیات اللہ انصاری)

(1)

جنگل میں ایک اسکول تھا . وہاں دو مور پڑھتے تھے . ہرا مور اور لال مور . دونوں بڑے خوبصورت تھے .

اسکول میں طوطا، مینا، کوا اور جگنو بھی پڑھتے تھے . لال مور کی ان سب سے دوستی تھی . جب اسکول میں چھٹی ہو جاتی تو یہ پانچوں چھپی چھپیا کھیلتے .

لال مور کا کوئی دوست اگر بیمار پڑ جاتا تو وہ اس کے گھر جاتا اور اپنا ناچ دکھا دکھا کر اس کا جی ایسا بہلاتا کہ وہ اچھا ہو جاتا .

ہرے مور سے کسی سے دوستی نہیں تھی . نہ تو وہ اپنے ساتھیوں کے ساتھ چھپی چھپیا کھیلتا اور نہ کسی بیمار کے گھر آتا جاتا .

× × × ×

ایک دن سب چڑیوں نے ہرے مور سے کہا " آج تو تم کو بھی کھیلنا پڑیگا ." بہت کہنے سننے سے وہ راضی ہوگیا .

کھیل ہونے لگا . تھوڑی دیر میں ہرا مور چور بن گیا . ڈھونڈھنا پڑا تو یہ دل ہی دل میں بہت بگڑا . کبھی مینا کا پاؤں اس کی دم پر پڑ گیا . بس پھر تو یہ آگ بگولا ہوگیا . لگا مینا کو اندھا اور بدتمیز کہنے . اور ٹھونگا مارنے . سب نے بڑی مشکل سے اس کو روکا . وہ خفا ہو کر چلا گیا .

اسی دن سے ہرا مور بالکل الگ تھلگ رہنے لگا .

(2)

تھوڑے دنوں کے بعد لال مور، ہرا مور، طوطا، مینا، کوا اور جگنو سب پڑھ لکھ کر اسکول سے چلے گئے اور اپنے اپنے کاموں میں لگ گئے .

हरे मोर और लाल मोर के बड़ी भारी भारी चमकदार दुमें निकल आईं. वह खूब नाचने लगे और बागों में घूमने लगे.

× × ×

एक दिन हरे मोर और लाल मोर दोनों ने बाग में मोरनी को देखा. उसकी बड़ी बड़ी आँखें थीं. नाजुक चोंच थी. मुलायम मुलायम पर थे. देखते ही दोनों की तबियत आ गई.

हरे मोर ने मोरनी से कहा—"मोरनी! मोरनी! हम से शादी कर लो."

लाल मोर ने मोरनी से कहा—"मोरनी! मोरनी! हम से शादी कर लो."

फिर दोनों ने मोरनी को अपना अपना नाच दिखाया.

मोरनी ने देखा कि दोनों मोर बहुत खूबसूरत हैं और दोनों बहुत अच्छा नाचते हैं वह बहुत चकराई कि मैं किस से शादी करूं, और किस से न करूं. कहने लगी—"जाओ, मैं तुम दोनों का इम्तहान लूँगी. जो उसमें पूरा उतरा उसी के साथ शादी करूंगी."

× × ×

मोरनी की एक सहेली थी—चुहिया. वह शहर में रहती थी मोरनी ने उसको बुला भेजा. जब वह आई तो मोरनी ने उससे कहा—

"अरे बहन चुहिया, तुम तो आदमियों में रहती हो. उनकी बातें जानती हो. तब जानूं कोई ऐसी तदबीर करो जिससे यह पता चल जाये कि लाल मोर अच्छा है या हरा." चुहिया ने जवाब दिया—"सहेली! तुम ज़रा भी फिकर न करो. मैं ऐसी ही तदबीर करती हूँ. तुम्हें क्या सारी दुनिया को पता चल जायेगा कि कौन मोर अच्छा है."

× × ×

जब आधी रात इधर, आधी रात उधर हुई और सारा संसार सो गया तब चुहिया काला कम्बल ओढ़ कर निकली. दबे पांव हरे मोर के घोंसले में आई. देखा कि वह पड़ा बेखबर सो रहा है. वह चुपके चुपके उसके पर कुतरने लगी.

हरा मोर सोते का सोता रह गया और चुहिया उसकी दुम और दुम भर के पर काट कर चलती बनी.

× जब [illegible] तो मोर [illegible] के लाल लाल गोश्त [illegible] निकल आया. . .

ہرے مور اور لال مور کے بڑی بھاری بھاری چمکدار دمیں نکل آئیں۔ وہ خوب ناچنے لگے اور باغوں میں گھومنے لگے۔

× × ×

ایک دن ہرے مور اور لال مور دونوں نے باغ میں مورنی کو دیکھا۔ اسکی بڑی بڑی آنکھیں تھیں۔ نازک چونچ تھی۔ پر ملائم ملائم تھے۔ دیکھتے ہی دونوں کی طبیعت آ گئی۔

ہرے مور نے مورنی سے کہا—"مورنی! مورنی! ہم سے شادی کر لو۔"

لال مور نے مورنی سے کہا—"مورنی! مورنی! ہم سے شادی کر لو۔"

پھر دونوں نے مورنی کو اپنا اپنا ناچ دکھایا۔

مورنی نے دیکھا کہ دونوں مور بہت خوبصورت ہیں اور دونوں بہت اچھا ناچتے ہیں۔ وہ بڑی چکرائی کہ میں کس سے شادی کروں اور کس سے نہ کروں۔ کہنے لگی—"جاؤ، میں تم دونوں کا امتحان لوں گی۔ جو اس میں پورا اترا اسی کے ساتھ شادی کرونگی۔"

× × +

مورنی کی ایک سہیلی تھی—چوہیا۔ وہ شہر میں رہتی تھی۔ مورنی نے اس کو بلا بھیجا۔ جب وہ آئی تو مورنی اس سے کہا—

"ارے بہن چوہیا، تم تو آدمیوں میں رہتی ہو۔ ان کی باتیں جانتی ہو۔ تب جانوں کوئی ایسی تدبیر کرو جس سے یہ پتہ چل جائے کہ لال مور اچھا ہے یا ہرا۔" چوہیا نے جواب دیا—"سہیلی! تم ذرا بھی فکر نہ کرو۔ میں ایسی ہی تدبیر کرتی ہوں۔ تمہیں کیا ساری دنیا کو پتہ چل جائیگا کہ کون مور اچھا ہے۔"

× × ×

جب آدھی رات ادھر، آدھی رات ادھر ہوئی اور سارا سنسار سو گیا تب چوہیا کالا کمبل اوڑھ کر نکلی۔ دبے پاؤں ہرے مور کے گھونسلے میں آئی۔ دیکھا کہ وہ پڑا بے خبر سو رہا ہے۔ یہ چپکے چپکے اس کے پر کترنے لگی۔

ہرا مور سوتے کا سوتا رہ گیا اور چوہیا اس کی دم اور دم بھر کے پر کاٹ کر چلتی بنی۔

× جو [illegible] تو مور ادھر سے لال لال [illegible] ایسا [illegible]

(3)

सुबह हरे मोर की आंख खुली तो देखा कि मैं बिलकुल टुंड मुंड हूं. वह बहुत घबराया कि अब क्या करूं. कोई दोस्त तो उसका था ही नहीं जो कोई राह बताता. वह घोंसले में अकेला पड़ा रहा.

हरे मोर के पंख कट गये थे. उससे आज दाना चुगने भी नहीं जा सका. जब सारा दिन बीत गया और भूक प्यास से बुरी हालत हो गई तब किसी न किसी तरह पेड़ से नीचे उतरा और खेत की तरफ चला.

रास्ते में उसे बतखें और मुर्गियां मिलीं जो हरे मोर को उस हालत में देखकर हंसने लगीं. और बतखें कहने लगीं—

"क्वाक्वा, क्वाक्वा! कैसी बे शरम चिड़िया है. अपने पर उतारे बाजार में नंगी घूम रही है."

मुर्गियां कहने लगीं:

"कटा कट, कटा कट! मारो तो इस नंग धड़ंग को."

चूहों ने जो देखा तो लगे तालियां बजा बजा चिढ़ाने.

"दुम कट गई, पर झड़ गये फिरते हैं लंडूरे
है है मियां चिर कुट! है है मियां चिर कुट!"

यह सुन कर हरा मोर बहुत बिगड़ा. और दौड़ा चूहों को मारने. जिस चूहे की तरफ जाता वह तो भागता और सब पीछे से चिल्लाने लगते.

"दुम कट गई, पर झड़ गये, फिरते हैं लंडूरे
है है मियां चिरकुट! है है मियां चिरकुट!"

× × ×

कहीं गश्त लगाते हुये इधर आ निकले सिपाही बिल्ले. उन्होंने जो देखा मोर को तो समझे कि बोटी है. फिर तो वह उस पर झपट पड़े और वह भागा अपनी जान लेकर, सिपाही बिल्ले चिल्लाने लगे—

"अरे बोटी भागी जा रही है! अरे बोटी भागी जा रही है!"

हरे मोर ने भाग कर बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई और बिल्लों के डर इधर से उधर छुपता फिरने लगा. आखिर जब भूक प्यास से मरने लगा और बहुत आजिज आ गया तो एक गिद्ध के दरवाजे जाकर कहने लगा—"ऐ भाई तू मुझे खा ले."

[illegible] गिद्ध को उस पर तरस आ गया.

हरा मोर वहीं दिन गुजारने लगा. वहीं का दिया हुआ [illegible] खाता, पोखर का पानी पीता और गुलामों [illegible] काम करता रहता.

(3)

صبح ہرے مور کی آنکھ کھلی تو دیکھا کہ میں بالکل ٹنڈمنڈ ہوں۔ وہ بہت گھبرایا کہ اب کیا کروں۔ کوئی دوست تو اس کا تھا ہی نہیں جو کوئی راہ بتاتا۔ وہ گھونسلے میں اکیلا پڑا رہا۔

ہرے مور کے پنکھ کٹ گئے تھے۔ اس سے آج دانا چگنے بھی نہیں جاسکا۔ جب سارا دن بیت گیا اور بھوک پیاس سے بری حالت ہوگئی تب کسی نہ کسی طرح پیڑ سے نیچے اترا اور کھیت کی طرف چلا۔

راستے میں اسے بطخیں اور مرغیاں ملیں جو ہرے مور کو اس حالت میں دیکھکر ہنسنے لگیں۔ اور بطخیں کہنے لگیں—

"قواقو، قواقو! کیسی بے شرم چڑیا ہے۔ اپنے پر اتارے بازار میں ننگی گھوم رہی ہے۔"

مرغیاں کہنے لگیں:

"کٹاکٹ، کٹاکٹ! مارو تو اس ننگ دھڑنگ کو"۔

چوہوں نے جو دیکھا تو لگے تالیاں بجا بجا چڑھانے۔

"دم کٹ گئی، پر جھڑ گئے، پھرتے ہیں لنڈورے
ہے ہے میاں چرکٹ! ہے ہے میاں چرکٹ!!"

یہ سن کر ہرا مور بہت بگڑا۔ اور دوڑا چوہوں کو مارنے۔ جس چوہے کی طرف جاتا وہ تو بھاگتا اور سب پیچھے سے چلانے لگتے۔

"دم کٹ گئی، پر جھڑ گئے، پھرتے ہیں لنڈورے
ہے ہے میاں چرکٹ، ہے ہے میاں چرکٹ"

کہیں گشت لگاتے ہوئے ادھر آ نکلے سپاہی بلے۔ انہوں نے جو دیکھا مور کو تو سمجھے کہ بوٹی ہے۔ پھر تو وہ اس پر جھپٹ پڑے اور یہ بھاگا اپنی جان لے کر۔

سپاہی بلے چلانے لگے—

"ارے بوٹی بھاگی جا رہی ہے! ارے بوٹی بھاگی جا رہی ہے!"

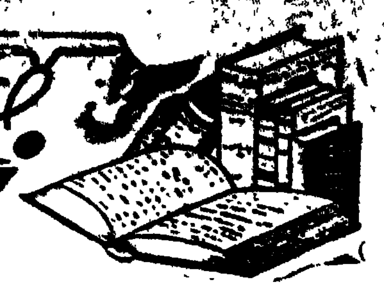
ہرے مور نے بھاگ کر بڑی مشکل سے اپنی جان بچائی۔ اور بلوں کے ڈر سے ادھر ادھر دبکتا پھرنے لگا۔ آخر جب بھوک پیاس سے مرنے لگا اور بہت عاجز آ گیا تو ایک گدھ کے دروازے جاکر کہنے لگا:—

"اے بھائی تو مجھے کھالے"۔

پھر گدھ کو اس پر ترس آگیا۔

ہرا مور وہیں دن گزارنے لگا۔ اس کا دیا ہوا سڑا گلا کھانا کھاتا، سنڈاس کا پانی پیتا اور غلاموں کی طرح اس کا کام کاج کرتا رہتا۔

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

झाड़ू

माहवारी परचा, एडीटर—गोपाल कृष्ण मलिक और नवरंग प्रसाद जयसवाल, सालाना चन्दा पांच रुपये, पता—झाड़ू, सहर्सा, बिहार.

अप्रैल 1951 में हैदराबाद में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन में विनोबा जी ने सेवकों के सामने एक पंच पहलू प्रोग्राम पेश किया था—अन्दर की भीतरी सफाई, बाहरी सफाई, मेहनत, शान्ति और समर्पण. उनके इस नुसखे को लेकर बिहार के दो नौ जवान दोस्तों ने—गोपाल कृष्ण मलिक और नवरंग प्रसाद जयसवाल—पिछले फरवरी के महीने से "झाड़ू" नाम का रिसाला निकालने की हिम्मत की है.

कौन नहीं जानता कि आज हिन्दुस्तान में सब से नीच समझे जाने वाले झाड़ूदार भंगी से लेकर सबसे ऊँचे माने जाने वाले झाड़ूदार बड़े वज़ीर और राजपती तक की "सफाई" की ज़रूरत है. जब तक ऐसा नहीं होता हमारे यहां का समाजी और आर्थिक तरीका बे-मेल बना रहेगा और यह दिखावटी स्वराज असली स्वराज न साबित होगा. सच कहा जाये तो हम सब के सब भंगी हैं लेकिन 'भंगी' से बदतर हैं क्योंकि झाड़ू ठीक से नहीं लगाते. इसलिये एक नमूने की 'झाड़ू' की सख्त ज़रूरत है जो दूसरे 'भंगियों' को सही रास्ता बता सके.

इसलिये हम अपने इन दोनों साथियों की 'झाड़ू' का स्वागत करते हैं. इसकी पहली मूँठ की दो सींकें (एक ठीक और दूसरी उससे दोगुनी बड़ी) हमारे सामने हैं. हमें डर लगता है कि अगर इस तरह की छोटी बड़ी सींकें रहीं तब झाड़ूदार का हाथ ठीक से न चल सकेगा. लेकिन हम यह जानते हैं कि मजबूरी सब कुछ कराती है और फिर आजकल आज़ाद ख्याल और ईमानदार रिसालों की जो दर्दनाक हालत है उसे देखकर तो यह अन्देशा होता है कि समाज 'झाड़ू' बर्दाश्त नहीं कर सकता. फिर भी अपना फर्ज़ अदा करना अपना फर्ज़ है. मालिक से हम दुआ करते हैं कि 'झाड़ू' का रास्ता आसान बनता जाये और वह समाज को दिन दिन निखरा सुथरा बना सके.

—सुरेश रामभाई

جھاڑو

ماہواری پرچہ، ایڈیٹر—گوپال کرشن ملک اور نورنگ پرساد جیسوال، سالانہ چندہ پانچ روپئے، پتہ—جھاڑو، سہرسا، بہار۔

اپریل 1951 میں حیدرآباد میں ہونے والے سرودیہ سمیلن میں ونوبا جی نے سیوکوں کے سامنے ایک پنچ پہلو پروگرام پیش کیا تھا—اندر کی بھیتری صفائی، باہری صفائی، محنت، شانتی اور سمرپن۔ ان کے اس نسخے کو لے کر بہار کے دونوں نوجوان دوستوں نے—گوپال کرشن ملک اور نورنگ پرساد جیسوال—پچھلے فروری کے مہینے سے "جھاڑو" نام کا رسالہ نکالنے کی ہمت کی ہے۔

کون نہیں جانتا کہ آج ہندستان میں سب سے نیچ سمجھے جانے والے جھاڑودار بھنگی سے لیکر سب سے اونچے مانے جانے والے جھاڑودار بڑے وزیر اور راج پتی تک کی "صفائی" کی ضرورت ہے۔ جب تک ایسا نہیں ہوتا ہمارے یہاں کا سماجی اور آرتھک طریقہ بے میل بنا رہے گا اور یہ دکھاوٹی سوراج اصلی سوراج نہ ثابت ہوگا۔ سچ کہا جائے تو ہم سب کے سب بھنگی ہیں لیکن 'بھنگی' سے بدتر ہیں کیوں کہ جھاڑو ٹھیک سے نہیں لگاتے۔ اس لئے ایک نمونے کی 'جھاڑو' کی سخت ضرورت ہے جو دوسرے 'بھنگیوں' کو صحیح راستہ بتا سکے۔

اس لئے ہم اپنے ان دونوں ساتھیوں کی 'جھاڑو' کا سواگت کرتے ہیں۔ اس کی پہلی موٹھ کی دو سینکیں (ایک ٹھیک اور دوسری اس سے دوگنی بڑی) ہمارے سامنے ہیں۔ ہمیں ڈر لگتا ہے کہ اگر اس طرح کی چھوٹی بڑی سینکیں رہیں تب جھاڑودار کا ہاتھ ٹھیک سے نہ چل سکے گا۔ لیکن ہم یہ جانتے ہیں کہ مجبوری سب کچھ کراتی ہے اور پھر آج کل آزاد خیال اور ایماندار رسالوں کی جو دردناک حالت ہے اسے دیکھکر تو یہ اندیشہ ہوتا ہے کہ سماج 'جھاڑو' برداشت نہیں کرسکتا۔ پھر بھی اپنا فرض ادا کرنا اپنا فرض ہے۔ مالک سے ہم دعا کرتے ہیں کہ 'جھاڑو' کا راستہ آسان بنتا جائے اور وہ سماج کو دن بدن نکھرا ستھرا شکل دے سکے۔

—سریش رام بھائی

नवनीत

(हिन्दी डाइजेस्ट), माहवारी परचा, एडीटर—रतन लाल जोशी, सालाना चन्दा, दस रुपये; पता—नवनीत प्रकाशन, 341, तार देव, बम्बई—7.

चिकना कागज, रंग बिरंगी छपाई, बढ़िया कवर और शुरू से आखीर तक खूबसूरत 'नवनीत' को देख कर हमारा जी इस तरह ललचा गया मानो ताजा मक्खन रखा हो. लेकिन जब मुँह में डाला तो पता चला कि वनस्पति है और न थू करते बनता है न अन्दर जाने देना. इसलिये हमारी समझ में नहीं आता कि अपने साथी 'नवनीत' का स्वागत करें तो किस तरह करें. हमें बहुत दुख होता है हिन्दी पर या हम कहें देश पर इस तरह के अमरीकी हमलों को देख कर. अगर अमरीका से ऐसा परचा निकलता होता तो हमें कोई शिकायत नहीं होती, लेकिन हिन्दुस्तान से निकलने पर हम इसको हिन्दी का डाइजेस्ट या 'नवनीत' मानने से इनकार करते हैं.

हमें नहीं मालूम कि इस अखबार के पीछे क्या क्या जोर लग रहे हैं पर शैतान को भले किसी ने देखा न हो लेकिन अक्ल से पहचाना तो है. इसी तरह नवनीत से हमें भी बड़ा डर लगता है कि यह कोका कोला, गैवर फिल्म और खूबसूरती मैच का मानो अलमबरदार बनकर जोगिया के वेश में हिन्दी के आंगन में आ घुसा है. हमारे चाहने से तो कुछ नहीं होता लेकिन हम चाहते यही हैं कि सम्पादक भाई रतनलाल 'नवनीत' को देसी बनायें और जो हमारे असली व सच्चे रतन व लाल हैं उनको हिन्दी संसार के सामने पेश करने की कोशिश करें.

—सुरेश रामभाई

نونیت

(ہندی ڈائجسٹ) ماہواری پرچہ' ایڈیٹر—رتن لال جوشی' سالانہ چندہ' دس روپئے؛ پتہ—نونیت پرکاشن' 341 تاردیو' بمبئی 7 .

چکنا کاغذ' رنگ برنگی چھپائی' بڑھیا کور اور شروع سے آخیر تک خوبصورت 'نونیت' کو دیکھکر ہمارا جی اس طرح للچا گیا مانو تازہ مکھن رکھا ہو . لیکن جب منہ میں ڈالا تو پتہ چلا کہ بناسپتی ہے اور نہ تھوکتے بنتا ہے نہ اندر جانے دینا . اس لئے ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ اپنے ساتھی 'نونیت' کا سواگت کریں تو کس طرح کریں . ہمیں بہت دکھ ہوتا ہے ہندی پر یا ہم کہیں دیش پر اس طرح کے امریکی حملوں کو دیکھ کر . اگر امریکہ سے ایسا پرچہ نکلتا ہوتا تو ہمیں کوئی شکایت نہ ہوتی' لیکن ہندستان سے نکلنے پر ہم اس کو ہندی کا ڈائجسٹ یا 'نونیت' ماننے سے انکار کرتے ہیں .

ہمیں نہیں معلوم کہ اس اخبار کے پیچھے کیا کیا زور لگ رہے ہیں پر شیطان کو بھلے کسی نے دیکھا نہ ہو لیکن عقل سے پہچانا تو ہے . اسی طرح نونیت سے ہمیں بھی بڑا ڈر لگتا ہے کہ یہ کوکا کولا 'زیور فلم' اور خوبصورتی میچ کا مانو علمبردار بن کر جوگیا کے بھیس میں ہندی کے آنگن میں آ گھسا ہے . ہمارے چاہنے سے تو کچھ نہیں ہوتا لیکن ہم چاہتے یہی ہیں کہ سمپادک بھائی رتن لال 'نونیت' کو دیسی بنائیں اور جو ہمارے اصلی و سچے رتن و لال ہیں اُن کو ہندی سنسار کے سامنے پیش کرنے کی کوشش کریں .

—سریش رام بھائی

सम्पदा

माहवारी परचा; एडीटर—कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार; सालाना चन्दा, आठ रुपये; पता—सम्पदा, अशोक प्रकाशन मंदिर, रोशन आरा रोड, दिल्ली.

सम्पदा यानी धन या दौलत कई तरह की होती है पर खास बात इसके बारे में यह है कि वह किस तरह हासिल की जाती है. अगर हजारों लाखों की रोजी छीन कर गरीबों के घर उजाड़ कर और बे-साधन वालों को तबाह कर वह सम्पदा जमा की जाती है तो उसे सम्पदा कहना इन्सानियत के खिलाफ ज्यादती करना है. इसलिये 'सम्पदा' की कसौटी हमारी निगाह में यही है कि वह समाज के किस हिस्से की सम्पदा या दौलत की तरफदारी करती है और किस का झंडा ऊंचा रखती है.

سمپدا

ماہواری پرچہ؛ ایڈیٹر—کرشن چندر ودیالنکار؛ سالانہ چندہ' آٹھ روپئے؛ پتہ—سمپدا' اشوک پرکاشن مندر' روشن آرا روڈ' دلی .

سمپدا یعنی دھن یا دولت کئی طرح کی ہوتی ہے پر خاص بات اس کے بارے میں یہ ہے کہ یہ کس طرح حاصل کی جاتی ہے . اگر ہزاروں لاکھوں کی روزی چھین کر غریبوں کے گھر اجاڑ کر اور بے سادھن والوں کو تباہ کر سمپدا جمع کی جاتی ہے تو اسے سمپدا کہنا انسانیت کے خلاف زیادتی کرنا ہے . اسلئے 'سمپدا' کی کسوٹی ہماری نگاہ میں یہی ہے کہ وہ سماج کے کس حصے کی سمپدا یا دولت کی طرفداری کرتی ہے اور کس کا جھنڈا اونچا رکھتی ہے .

हमारे सामने इस अखबार के पहले साल का तीसरा परचा, अप्रैल 1952, मौजूद है. शुरू से आखीर तक हम इसे देख गये तो ऐसा लगा कि यह किसी ब्योपारी कॉर्पोरेशन या कारोबारी बैंक या और किसी धनी मानी के कारनामों की रिपोर्ट है, या दूसरी निगाह से देखें तो हिन्दुस्तान की मौजूदा पूँजीवाली, फौजीवाला और ग़रीब-चूस सरकार का एक बखान है. तब फिर 'सम्पदा' हम जैसों से तो दूर ही होती चली जावेगी.

लेकिन हम अच्छी तरह जानते हैं कि अर्थ या माल से ताल्लुक़ रखने वाले अख़बार हमारे देश की भाषाओं में और ख़ास कर हिन्दी में बहुत थोड़े हैं. इसलिये हमें 'सम्पदा' के आने की ख़ुशी है पर इसकी कामयाबी इसी से नापी जावेगी कि वह जनता के ख़ालिस हितों की कितनी पैरवी करती है और जनता और सरकार व पूँजीपति के बीच की खाई को कितना और किस तरह भरने की कोशिश करती है.

—सुरेश रामभाई

ہمارے سامنے اس اخبار کے پہلے سال کا تیسرا پرچہ، اپریل 1952 موجود ہے۔ شروع سے آخیر تک ہم اسے دیکھ گئے تو ایسا لگا کہ یہ کسی بیوپاری کارپوریشن یا کاروباری بینک یا اور کسی دھنی منی کے کارناموں کی رپورٹ ہے، یا دوسری نگاہ سے دیکھیں تو ہندستان کی موجودہ پونجی والی، فوجوالی اور غریب چوس سرکار کا ایک بکھان ہے۔ تب پھر یہ 'سمپدا' ہم جیسوں سے دور ہی ہوتی چلی جائے گی۔

لیکن ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ ارتھ یا مال سے تعلق رکھنے والے اخبار ہمارے دیش کی بھاشاؤں میں اور خاص کر ہندی میں بہت تھوڑے ہیں۔ اسلئے ہمیں 'سمپدا' کے آنے کی خوشی ہے پر اس کی کامیابی اسی سے ناپی جائے گی کہ وہ جنتا کے خالص ہتوں کی کتنی پیروی کرتی ہے اور جنتا اور سرکار و پونجی پتی کے بیچ کی کھائی کو کتنا اور کس طرح بھرنے کی کوشش کرتی ہے۔

—سریش رام بھائی

विश्वज्योति

माहवारी परचा; सम्पादक भाई विश्व बंधु और भाई संतराम बी. ए., सालाना चन्दा आठ रुपये; पता—विश्व-ज्योति, होशियारपुर.

पंजाब के ज़िला होशियारपुर में साधु आश्रम नाम की धार्मिक संस्था काफ़ी अरसे से चल रही है. इसके पीछे कानपुर के नामी सेठ स्वर्गीय लाला धनीराम भल्ला की पूरी ताक़त थी. उनका इरादा एक समाजी, धार्मिक और कल्चरी पहलुओं को लेकर एक माहवारी परचा निकालने का था. कुछ मजबूरियों की वजह से उनके जीते जी यह मुमकिन न हो सका. पर उनके जाने के बाद उनके साथियों और उनके दोस्तों ने बड़ी ख़ूबी से इस काम को उठाया और 'विश्वज्योति' निकाल कर भल्ला जी का सपना सच्चा साबित किया.

'विश्वज्योति' मार्च के महीने से निकलना शुरू हुई है. इसके तीन परचे हमारी निगाह से गुज़रे. इनके अन्दर एक निराली भावना और सेवा की लगन मिलती है. हमें उम्मीद है कि देश के मौजूदा ज़हरीले वातावरण में 'विश्व-ज्योति' एक रहबर का काम करेगा और धार्मिक व समाजी मामलों में लकीर का फ़क़ीर न बन कर सही और सच्चा [illegible] होकर सेवा करेगा.

—सुरेश रामभाई

وشوجیوتی

ماہواری پرچہ؛ سمپادک بھائی وشو بندھو اور سنت رام بی. اے. سالانہ چندہ آٹھ روپئے؛ پتہ—وشو جیوتی' ہوشیار پور۔

پنجاب کے ضلع ہوشیار پور میں سادھو آشرم نام کی دھارمک سنستھا کافی عرصے سے چل رہی ہے۔ اس کے پیچھے کانپور کے نامی سیٹھ سورگیہ لالہ دھنی رام بھلہ کی پوری طاقت تھی۔ ان کا ارادہ سماجی، دھارمک اور کلچری پہلوؤں کو لے کر ایک ماہواری پرچہ نکالنے کا تھا. کچھ مجبوریوں کی وجہ سے ان کے جیتے جی یہ ممکن نہ ہو سکا۔ پر ان کے جانے کے بعد ان کے ساتھیوں اور ان کے دوستوں نے بڑی خوبی سے اس کام کو اٹھایا اور 'وشو جیوتی' نکال کر بھلہ جی کا سپنا سچا ثابت کیا۔

'وشو جیوتی' مارچ کے مہینے سے نکلنا شروع ہوئی ہے۔ اس کے تین پرچے ہماری نگاہ سے گذرے۔ ان کے اندر ایک نرالی بھاونا اور سیوا کی لگن ملتی ہے۔ ہمیں امید ہے کہ دیش کے موجودہ زہریلے واتاورن میں 'وشو جیوتی' ایک رہبر کا کام کرے گا اور دھارمک و سماجی معاملوں میں لکیر کا فقیر نہ بن کر صحیح اور سچا راستہ [illegible] ہو کر سیوا کرے گا۔

—سریش رام بھائی

चिन्ता रहित जीवन

लेखक, श्री अवध बिहारी लाल वानप्रस्थी, सम्पादक, डाक्टर शांति देव, प्रकाशक, आदर्श स्वास्थ्य प्रकाशन, 17 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ; सफे 99, दाम एक रुपया, जिल्द के साथ सवा रुपये.

यों तो आजकल दुनिया में हर कोई दुखी और परेशान दिखाई देता है और उससे बचने की कोशिश भी करता है. लेकिन मर्ज बढ़ता गया जितनी दवा की. वजह शायद यह है कि चीज की जड़ में बहुत कम लोग जाते हैं, और वह है चिंता या फ़िक्र करना. किसी ने सच कहा है कि चिता शरीर को जलाती है लेकिन चिन्ता मन को जलाती है. इसलिये चिन्ता पर कुल्हाड़ा चलाए बिना कोई कामयाबी नहीं हो सकती. डाक्टर अवध बिहारी लाल वानप्रस्थी ने इस गुर को अपने जीवन में निभाया है और वह हर दम खुश रह कर बिना चिन्ता का जीवन बिताते हैं. इसीलिये वह 'चिन्ता रहित जीवन' लिखने के हकदार हैं और हम उनकी इस किताब का दिल से स्वागत करते हैं.

इस किताब को किताब कहने में हमें थोड़ी सी झिझक मालूम होती है, क्योंकि यह प्राकृतिक चिकित्सा के पेशेवर डाक्टर का जमा किया हुआ मसाला नहीं है बल्कि एक ईमानदार और नेक आदमी के गाढ़े तजुर्बों का लाजवाब निचोड़ है. सीधी सादी बातें और रोज के जीवन की मिसालें जो इस किताब में दी गई हैं उनको देखकर लेखक की इस समझ और पहुँच का कुछ अन्दाजा लगता है. इसमें कोई शक नहीं कि जो भी इस किताब को पढ़ेगा उसकी तबियत खिल उठेगी और वह चाहे कितनी ही उदास क्यों न रहता हो, एक बार ज़ोर से हँसेगा और थोड़ी देर के लिये अपनी चिन्ता भूल जायेगा.

किताब के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि एक रुपया दाम ज़्यादा है और भाषा में भी कहीं कहीं सुधार की गुंजायश है. साथ ही साथ हमारी समझ में नहीं आता कि लेखक के नीचे सम्पादक का नाम क्यों दिया गया है और सम्पादक ने इस किताब में क्या और कितना काम किया है. इसके अलावा हमें यह भी नहीं पता चलता कि 'भूमिका' किस के कलम से और कब लिखी गई. तारीख या सन की शुरू से आखीर तक कहीं हवा भी नहीं है. उम्मीद है कि हमारे इन सुझावों पर ध्यान देकर वानप्रस्थी जी अपना एडीशन सस्ता और आसान निकालेंगे जिससे ज़्यादा से ज़्यादा आदमी इससे फ़ायदा उठा कर चिन्ता रहित जीवन बिता सकें.

چنتا رہت جیون

لیکھک، شری اودھ بہاری لال بان پرستھی، سمپادک ڈاکٹر شانتی دیو، پرکاشک، آدرش سواستھیہ پرکاشن، 17 امینآباد پارک، لکھنؤ؛ صفحے 99، دام ایک روپیہ، جلد کے ساتھ سوا روپیہ ۔

یوں تو آج کل دنیا میں ہر کوئی دکھی اور پریشان دکھائی دیتا ہے اور اس سے بچنے کی کوشش بھی کرتا ہے۔ لیکن مرض بڑھتا گیا جتنی دوا کی ۔ وجہ شاید یہ ہے کہ چیز کی جڑ میں بہت کم لوگ جاتے ہیں، اور وہ ہے چنتا یا فکر کرنا ۔ کسی نے سچ کہا ہے کہ چتا شریر کو جلاتی ہے لیکن چنتا من کو جلاتی ہے ۔ اس لئے چنتا پر کلہاڑا چلائے بنا کوئی کامیابی نہیں ہو سکتی ۔ ڈاکٹر اودھ بہاری لال بان پرستھی نے اس گر کو اپنے جیون میں نبھایا ہے اور وہ ہر دم خوش رہ کر بنا چنتا کا جیون بتاتے ہیں ۔ اسی لئے وہ 'چنتا رہت جیون' لکھنے کے حقدار ہیں اور ہم ان کی اس کتاب کا دل سے سواگت کرتے ہیں ۔

اس کتاب کو کتاب کہنے میں ہمیں تھوڑی سی جھجک معلوم ہوتی ہے، کیونکہ یہ پراکرتک چکتسا کے پیشہ ور ڈاکٹر کا جمع کیا ہوا مسالہ نہیں ہے بلکہ ایک ایماندار اور نیک آدمی کے گاڑھے تجربوں کا لاجواب نچوڑ ہے ۔ سیدھی سادی باتیں اور روز کے جیون کی مثالیں جو اس کتاب میں دی گئی ہیں ان کو دیکھکر لیکھک کی اس سمجھ اور پہنچ کا کچھ اندازہ لگتا ہے ۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ جو بھی اس کتاب کو پڑھیگا اسکی طبیعت کھل اٹھیگی اور وہ چاہے کتنا ہی اداس کیوں نہ رہتا ہو، ایک بار زور سے ہنسیگا اور تھوڑی دیر کے لئے اپنی چنتا بھول جائیگا ۔

کتاب کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہینگے کہ ایک روپیہ دام زیادہ ہے اور بھاشا میں بھی کہیں کہیں سدھار کی گنجائش ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ لیکھک کے نیچے سمپادک کا نام کیوں دیا گیا ہے اور سمپادک نے اس کتاب میں کیا اور کتنا کام کیا ہے ۔ اس کے علاوہ ہمیں یہ بھی نہیں پتہ چلتا کہ 'بھومکا' کس کے قلم سے اور کب لکھی گئی ۔ تاریخ یا سن کی، شروع سے آخیر تک کہیں ہوا بھی نہیں ہے ۔ ہمیں امید ہے کہ ہمارے ان سجھاؤں پر دھیان دیکر بان پرستھی جی اگلا ایڈیشن سستا اور آسان نکالیں کہ جس سے زیادہ سے زیادہ آدمی اس سے فائدہ اٹھا کر چنتا رہت جیون بتا سکیں ۔

और किताबें

हिन्दी.

सर्वोदय साहित्य संघ, काशी.

1. तकली—लेखक—श्री सत्यन, सफे 186; दाम छै आना.

2. कपास—लेखक—श्री सत्यन, सफे 55; दाम आठ आना.

3. गांधीजी के प्रमुख अनुयायी—लेखक श्री सत्यन; सफे 62; दाम बारह आना.

4. कताई शास्त्र—लेखक श्री सत्यन; सफे 314; दाम तीन रुपये चार आना.

5. आदर्श स्मारक (उपनाम) बापू की जीवात्मा—लेखक—डाक्टर ओम प्रकाश गुप्ता, निकालने वाले—प्रधान हरिजन सेवक संघ, कुमार कुंज, मुरादाबाद; सफे 57; दाम आठ आना.

6. सोने की कथा—लेखक—डाक्टर हीरालाल; निकालने वाले—निरोगी ग्रंथ माला, 32/97, बगिया मनीराम, कानपुर; सफे 56; दाम बारह आना.

7. हमारा अर्थशास्त्र कैसा हो ?—सम्पादक—भगवान दास केला; निकालने वाले—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, इलाहाबाद; पहली बार; सफे 42; दाम चार आने.

8. अन्तर्राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद—लेखक—ल्यू शाओ-ची; अनुवादक—मधुकर बागले; निकालने वाले—जन साहित्य सदन इन्दौर; सफे 54, दाम चौदह आना.

अंगरेज़ी.

1. द गांधी एप्रोच, लेखक—वालजी गोविन्द जी देसाई; निकालने वाले—नव जीवन अहमदाबाद; पहली बार, सफे 59; दाम आठ आना.

2. एजूकेशन इन यूनीवर्सिटीज़ इन इंडिया—1948-49; सफे 177; दाम सात रुपया आठ आने.

3. एजूकेशन स्टेटिक्स इन इंडियन स्टेट्स—सफे 51; दाम दो रुपया दस आने.

اور کتابیں

ہندی :

سروودیہ ساہتیہ سنگھ' کاشی .

1. تکلی—لیکھک—شری ستین' صفحے 186؛ دام چھ آنہ .

2. کپاس—لیکھک—شری ستین' صفحے 55؛ دام آٹھ آنے .

3. گاندھی جی کے پرمکھ انویائی—لیکھک شری ستین؛ صفحے 62؛ دام بارہ آنے .

4. کتائی شاستر—لیکھک شری ستین؛ صفحے 314؛ دام تین روپئے چار آنہ .

5. آدرش اسمارک (اپنام) باپو کی جیو آتما—لیکھک—ڈاکٹر اوم پرکاش گپتا' نکالنے والے—پردھان ہریجن سیوک سنگھ' کمار کنج' مرادآباد؛ صفحے 57؛ دام آٹھ آنہ .

6. سونے کی کتھا—لیکھک ڈاکٹر ہیرا لال؛ نکالنے والے—نروگی گرنتھ مالا' 32/97 بگیا منی رام' کانپور؛ صفحے 56؛ دام بارہ آنہ .

7. ہمارا ارتھ شاستر کیسا ہو؟—سمپادک—بھگوان داس کیلا؛ نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا' داراگنج' الہ آباد' پہلی بار' صفحے 42؛ دام چار آنہ .

8. انتر راشٹر واد اور راشٹرواد—لیکھک—لیو شاؤ چی؛ انوادک—مدھوکر باگلے؛ نکالنے والے—جن ساہتیہ سدن' اندور؛ صفحے 54' دام چودہ آنے .

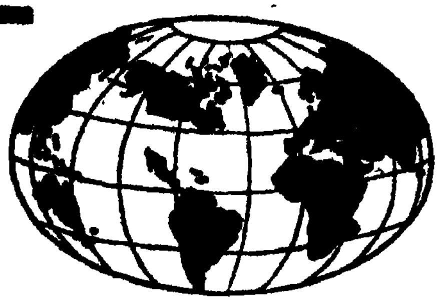
انگریزی :

1. دی گاندھی اپروچ' لیکھک—بال جی گووند جی دیسائی؛ نکالنے والے—نوجیون' احمدآباد؛ پہلی بار' صفحے 59؛ دام آٹھ آنہ .

2. ایجوکیشن ان یونیورسٹیز ان انڈیا 1948-49؛ صفحے—177؛ دام سات روپیہ آٹھ آنے .

3. ایجوکیشنل اسٹیٹکس ان انڈین اسٹیٹس—صفحے 51؛ دام دو روپیہ دس آنے .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

मार्च

16. जोहन्सबर्ग में अफ़्रीकनों की बग़ावत. पीकिंग रेडियो ने कोरिया का जर्म छोड़ने का अमरीका पर फिर इल्ज़ाम लगाया. योरप को अमरीका से ज़ियादा ख़तरा है कि स्तालिन से—बेविन का बयान.

17. अमरीकनों के ऊपर लाल कम्यूनिज़्म का हौवा छाया हुआ है—श्रीमती रूज़वेल्ट का इलाहाबाद में बयान. जनरल रिजवे ने जापान को हथियार तैयार करने का हुक्म दिया. वर्ल्ड बैंक मिशन ईरान से रवाना हो गया. बड़े वज़ीर नेहरू ने बुलसर (ज़िला सूरत) में अंगरेज़ी दवाएँ बनाने का एक हिन्द अमरीकी कारख़ाना खोला.

18. मिस्र के नये बड़े वज़ीर पुराने दो वफ़्द मिनिस्टरों को नज़र बन्द कर दिया. सुप्रीम कोर्ट ने 'मिस्र' के नायब एडीटर को फ़ौरन छोड़ने का हुक्म दिया.

19. अमरीकी विदेशी मदद प्रोग्राम के बारे में एचिसन ने टीका करने वालों को जवाब दिया. हिन्दुस्तान ने दक्खिन अफ़्रीका के मामले में यूनो कमीशन का मेम्बर होने से साफ़ इनकार कर दिया. अलीपुर में श्री चिन्तामन देशमुख ने एक टकसाल का उद्घाटन किया.

20. दक्खिन अफ़्रीका की सुप्रीमकोर्ट ने गोरे क़ानून नाजायज़ ठहराया. हिन्दुस्तान के चुनाव के झुकाव से अमरीका को परेशानी. डाक्टर मलान सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले को ठुकरा देंगे.

21. हिन्दुस्तान का बंटवारा एक बड़ी भारी ग़लती थी—तुर्की डेलीगेशन का बयान. जूट और रेशम के मिल मालिकों ने कमी के कारन काम के घंटे कम कर दिये.

22. अरब 'मिडिल ईस्ट डिफ़ेन्स' स्कीम में हिस्सा नहीं लेंगे—आज़म पाशा का ऐलान. लंका के बड़े वज़ीर सेनानायके गुज़र गये. फ़रवरी के महीने में हिन्दुस्तान में बाहर से आने वाली चीज़ों की क़ीमत जाने वाली से क़रीब 33 करोड़ रुपये ज़ियादा थी. कलकत्ते में कुल हिन्द कांग्रेस की बैठक में चार आने मेम्बरी क़ानून पास हुआ. इलाहाबाद की [illegible] कर गये.

مارچ۔

16. جوہانسبرگ میں افریقنوں کی بغاوت۔ پیکنگ ریڈیو نے کوریا میں جرم چھوڑنے کا امریکہ پر پھر الزام لگایا۔ یورپ کو امریکہ سے زیادہ خطرہ ہے نہ کہ اسٹالن سے— بیون کا بیان۔

17. امریکنوں کے اوپر لال کمیونزم کا ہوا چھایا ہوا ہے—شریمتی روزویلٹ کا الٰہ آباد میں بیان۔ جنرل رجوے نے جاپان کو ہتھیار تیار کرنے کا حکم دیا۔ ورلڈ بینک مشن ایران سے روانہ ہوگیا۔ بڑے وزیر نہرو نے بلسر (ضلع سورت) میں انگریزی دوائیں بنانے کا ایک ہند امریکی کارخانہ کھولا۔

18. مصر کے نئے بڑے وزیر پرانے دو وفد منسٹروں کو نظر بند کر دیا۔ سپریم کورٹ نے ' مصر ' کے نائب ایڈیٹر کو فوراً چھوڑنے کا حکم دیا۔

19. امریکی ودیشی مدد پروگرام کے بارے میں ایچیسن نے ٹیکا کرنے والوں کو جواب دیا۔ ہندستان نے ساؤتھ افریقہ کے معاملے میں یونو کمیشن کا ممبر ہونے سے صاف انکار کر دیا۔ علی پور میں شری چنتا منی دیش مکھ نے ایک ٹکسال کا اُدگھاٹن کیا۔

20. دکھنی افریقہ کی سپریم کورٹ نے گورے قانون کو ناجائز ٹھہرایا۔ ہندستان کے چناؤ کے جھکاؤ پر امریکہ پریشانی۔ ڈاکٹر ملان سپریم کورٹ کے فیصلے کو ٹھکرا دیں گے۔

21. ہندستان کا بٹوارہ ایک بڑی بھاری غلطی تھی—ترکی ڈیلی گیشن کا بیان۔ جوٹ اور ریشم کے مل مالکوں نے کمی کے کارن کام کے گھنٹے کم کر دیئے۔

22. عرب 'مڈل ایسٹ ڈیفینس' سکیم میں حصے نہیں لیں گے— اعظم پاشا کا اعلان۔ لنکا کے بڑے وزیر سینا نائیکے گذر گئے۔ فروری کے مہینے میں ہندستان میں باہر سے آنے والی کی قیمت جانے والی سے قریب 33 کروڑ روپئے زیادہ تھی۔ کلکتے میں کل ہند کانگریس کی بیٹھک میں چار آنے ممبری قانون پاس ہوا۔ الٰہ آباد کے نامی [illegible] کر گئے۔

23. हैदराबाद असेम्बली में निज़ाम साहब की तक़रीर के वक़्त मुख़ालिफ़ लोग बाहर चले गये. ट्रावनकोर कोचीन सरकार ने कम्युनिस्टों पर से पाबन्दी हटा ली.

24. अंगरेज़ों व सऊदी अरब वालों की बात चीत ख़त्म हो गई. हिन्दुस्तान को पचास लाख डालर का सामान अमरीका देगा. कांगरेस ने राष्ट्रपति और छोटे राष्ट्रपति के लिये राजेन्द्र बाबू और डाक्टर राधा कृष्णन के नाम चुने.

25. ग्राहम को कश्मीर का मामला तय हो जाने की आशा—वह जिनेवा को रवाना हुए. जरमनी के मामले पर सोवियत रूस के सुझावों को पच्छिमी मुल्कों ने मानने से इनकार कर दिया.

26. ट्यूनिस में ख़तरे की हालत का एलान; मिनिस्टर गिरफ़्तार, शहर में कर्फ़्यू. अमरीकी मदद की मातहती में हिन्दुस्तान में 65 जगह स्कीमें चलाई जायेंगी.

27. ट्यूनीशिया के लिये फ़्रांस वालों के नये सुझाव. कश्मीर में ज़मींदारों को कोई मावज़ा नहीं दिया जायेगा. कपड़ा मिल वालों को सरकार ने सहूलियतें कर दीं.

28. अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट ने पास किया कि सेरित्से खामा, हमेशा के लिये बामंगवाटो (अफ़्रीका की एक पुरानी जाति) दल की मुखियागीरी से ख़ारिज. अमरीका के पास पांच साल में इतने एटम बम हो जायेंगे कि दुनिया में हर आदमी का सफ़ाया कर सके. बम्बई में अनाज के दाम छोड़े किये जाने का अनाज मिनिस्टर का एलान.

29. कोलम्बो योजना पर करांची में चर्चा ख़त्म हुई. बड़े वज़ीर नेहरू ने व्योपारियों को चेतावनी दी कि जनता के हित का ख़्याल रखें.

30. राष्ट्रपति ट्रूमन अगले चुनाव में खड़े नहीं होंगे. तेहरान में मार्शल ला. कश्मीर असेम्बली सोलह आने ख़ुद मुख़्तार है—शेख़ अब्दुल्ला का एलान.

31. अमरीका को चाहिये कि लाल चीन को एक वाक़या समझे—बेवन की तक़रीर. श्री राजगोपालाचारी मद्रास असेम्बली की कांगरेस पार्टी के मुखिया चुने गये. खेती की पैदावार में आमतौर से कमी हुई है—रिज़र्व बैंक की रिपोर्ट.

अप्रैल.

1. आलमगीर लड़ाई का ख़तरा बड़ा नहीं है—स्तालिन का अमरीकन अख़बार वालों को जवाब. ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ां लाहौर सेन्ट्रल जेल से मेयो अस्पताल ले जाये गये. पाकिस्तान 15 देशों की मदद से ट्यूनीशिया का सवाल यू.नो. में पेश करेगा. राजा जी ने मद्रास के बड़े वज़ीर का काम संभाला.

2. नई कोलम्बो योजना में 1840 करोड़ रुपये की जगह 2300 करोड़ की तजवीज़. हिन्द सरकार 25,000 [illegible]

23. حیدرآباد اسمبلی میں نظام صاحب کی تقریر کے وقت مخالف لوگ باہر چلے گئے. ٹراونکور کوچین سرکار نے کمیونسٹوں پر سے پابندی ہٹالی.

24. انگریزوں و سعودی عرب والوں کی بات چیت ختم ہوگئی. ہندستان کو پچاس لاکھ ڈالر کا سامان [illegible] گا. کانگریس نے راشٹرپتی اور چھوٹے راشٹرپتی کے لئے راجیندر [illegible] اور ڈاکٹر رادھا کرشنن کے نام چنے.

25. گراہم کو کشمیر کا معاملہ طے ہوجانے کی آشا— [illegible] جنیوا کو روانہ ہوئے. جرمنی کے معاملے پر سوویت [illegible] کے سجھاؤں کو پچھمی ملکوں نے ماننے سے انکار کر دیا.

26. ٹیونس میں خطرے کی حالت کا اعلان؛ منسٹر گرفتار، شہر میں کرفیو. امریکی مدد کی ماتحتی میں ہندستان میں 65 جگہ اسکیمیں چلائی جائینگی.

27. ٹیونیسیا کے لئے فرانس والوں کے نئے سجھاؤ. کشمیر میں زمینداروں کو کوئی معاوضہ نہیں دیا جائے [illegible]. کپڑا مل والوں کو سرکار نے سہولیتیں کر دیں.

28. انگریزی پارلیامنٹ نے پاس کیا کہ سیریتسے [illegible]اما، ہمیشہ کے لئے بامنگواٹو (افریقہ کی ایک پرانی [illegible]اتی) دل کی مکھیا گیری سے خارج. امریکہ کے پاس [illegible] سال میں اتنے ایٹم بم ہو جائینگے کہ دنیا میں ہر [illegible]می کا صفایا کر سکے. بمبئی میں اناج کے دام چھوڑے [illegible] جانے کا اناج منسٹر کا اعلان.

29. کولمبو یوجنا پر کراچی میں چرچہ ختم ہوئی. [illegible]ے وزیر نہرو نے بیوپاریوں کو چیتاونی دی کہ جنتا کے [illegible]ت کا خیال رکھیں.

30. راشٹرپتی ٹرومین اگلے چناؤ میں کھڑے نہیں ہونگے. طہران میں مارشل لا. کشمیر اسمبلی سولہ آنے خود مختار ہے—شیخ عبداللہ کا اعلان.

31. امریکہ کو چاہئے کہ لال چین کو ایک واقعہ سمجھے—بیون کی تقریر. شری راج گوپالاچاری مدراس اسمبلی کی کانگریس پارٹی کے مکھیا چنے گئے. کھیتی کی پیداوار میں عام طور سے کمی ہوئی ہے—رزرو بینک کی رپورٹ.

اپریل.

1. عالمگیر لڑائی کا خطرہ بڑا نہیں ہے—استالن کا امریکن اخبار والوں کو جواب. خان عبدالغفار خاں لاہور سنٹرل جیل سے میو اسپتال لے جائے گئے. پاکستان 15 دیشوں کی مدد سے ٹیونیشیا کا سوال یو.نو. میں پیش کریگا. راجہ جی نے مدراس کے بڑے وزیر کا کام سنبھالا.

2. نئی کولمبو یوجنا میں 1840 کروڑ روپے کی جگہ [illegible] 25,000 [illegible]

3. मास्को में जग आर्थिक कान्फ्रेंस शुरू हुई. ट्यूनीशिया में तीन सौ गिरफ़्तारियां. लाल चीन पर हमला करने के लिये च्यांगी फ़ौज की तैयारी.

4. यूनो की हिफ़ाज़ती कौंसिल में फ़्रांस ने ट्यूनीशिया के मसले को शामिल करने के सुझाव का विरोध किया. अमरीकन फ़ौज ने कीड़ों की मदद से हथियार बनाने के लिये अपनी कांग्रेस से पैसा मांगा. डाक्टर राधा कृष्नन रूस के सच्चे हमदर्द हैं—रूसी परदेश मिनिस्टर विशिन्सकी. चीन पच्छिम योरप के सभी देशों से ब्योपार को तैयार—मास्को की सभा में चीनी नुमाइन्दे का एलान.

5. हिफ़ाज़ती कौन्सिल की बैठक मुल्तवी. कौन्सिल के अक्सर मेम्बरों की राय रही कि ट्यूनीशिया तो फ़्रांस की घरेलू चीज़ है.

6. दक्खिन अफ़्रीका में काले क़ानून के खिलाफ़ हिन्दुस्तानियों का सत्याग्रह शुरू. योरप में लड़ाई का खतरा कम हो रहा है—अंगरेज़ी परदेश मिनिस्टर एडन का एलान.

7. चर्चिल ने कहा कि तीन बड़ों की मीटिंग से मुझे खुशी होगी. हिन्दुस्तान और इटली में ब्योपारी समझौता.

8. अमरीका की 31,000 तारवालों की हड़ताल में 70,000 टेलीफ़ोन वालों ने भी शिरकत की. अंगरेज़ व मिस्र वालों की बात चीत खत्म होने का अन्देशा.

9. बोलीविया में फ़ौज और पुलिस ने "बे खूनी इनक़लाब" के ज़रिये सरकार को उलट दिया. राजा जी ने मद्रास की केबिनेट में 15 मिनिस्टर रखे.

10. अमरीका के लोहा ब्योपारियों ने एक 'गन्दी राज काजी हरकत" में शरीक होने का इलज़ाम राजपति ट्रूमैन पर लगाया. जर्मनी के बारे में रूस के नये सुझाव.

11. मास्को के अन्दर लड़ाई का वातावरन नहीं—डाक्टर राधा कृष्नन. नई चीन सरकार हिन्दुस्तान को चावल देगी. हिसार में पानी की कमी, तीस हज़ार लोग बे घर बार.

12. मिस्र के जो चुनाव 18 मई को होने वाले थे अभी टाल दिये गये. कलकत्ते में कुल हिन्द अखबार नवीसों की फ़ेडरेशन का सालाना इजलास.

13. रूस सचमुच अमन चाहता है—डाक्टर राधा कृष्नन. कोरिया में "शायद पहली मई तक" समझौता हो जाये. सेवापुरी (ज़िला-बनारस) में सर्वोदय सम्मेलन.

14. ट्यूनीशिया में गिरफ़्तारी. दक्खिन अफ़्रीका की सरकार अपनी गोरी नीति पर अटल.

15. यूनो कौन्सिल में ट्यूनीशिया के मसले पर चर्चा न होगी.

3. ماسکو میں جگ آرتھک کانفرنس شروع ہوئی ۔ ٹیونیشیا میں تین سو گرفتاریاں ۔ لال چین پر حملہ کرنے کے لئے چیانگی فوج کی تیاری ۔

4. یونو کی حفاظتی کونسل میں فرانس نے ٹیونیشیا کے مسئلے کو شامل کرنے کے سجھاؤ کا ورودھ کیا ۔ امریکی فوج نے کیڑوں کی مدد سے ہتھیار بنانے کے لئے اپنی کانگریس سے پیسے مانگا ۔ ڈاکٹر رادھا کرشنن روس کے سچے ہمدرد ہیں—روسی پردیش منسٹر وشنسکی ۔ چین پچھم یورپ کے دیشوں سے بیوپار کو تیار—ماسکو کی سبھا میں چینی نمائندے کا اعلان ۔

5. حفاظتی کونسل کی بیٹھک ملتوی ۔ کونسل کے اکثر ممبروں کی رائے رہی کہ ٹیونیشیا تو فرانس کی گھریلو چیز ہے ۔

6. دکھن افریقہ میں کالے قانون کے خلاف ہندستانیوں کا ستیاگرہ شروع ۔ یورپ میں لڑائی کا خطرہ کم ہو رہا ہے—انگریزی پردیش منسٹر ایڈن کا اعلان ۔

7. چرچل نے کہا کہ تین بڑوں کی میٹنگ سے مجھے خوشی ہوگی ۔ ہندستان اور اٹلی میں بیوپاری سمجھوتہ ۔

8. امریکہ کی 31,000 تار والوں کی ہڑتال میں 70,000 ٹیلیفون والوں نے بھی شرکت کی ۔ انگریز و مصر والوں کی بات چیت ختم ہونے کا اندیشہ ۔

9. بڑے لیبیا میں فوج اور پولیس نے "بے خونی انقلاب" کے ذریعے سرکار کو الٹ دیا ۔ راجہ جی نے مدراس کی کیبنٹ میں 15 منسٹر رکھے ۔

10. امریکہ کے لوہا بیوپاریوں نے ایک "گندی راج کاجی حرکت" میں شریک ہونے کا الزام راج پتی ٹرومین پر لگایا ۔ جرمنی کے بارے میں روس کے نئے سجھاؤ ۔

11. ماسکو کے اندر لڑائی کا واتاورن نہیں—ڈاکٹر رادھا کرشنن ۔ نئی چین سرکار ہندستان کو چاول دے گی ۔ حصار میں پانی کی کمی، تیس ہزار لوگ بے گھربار ۔

12. مصر کے جو چناؤ 18 مئی کو ہونے والے تھے ابھی ٹال دئے گئے ۔ کلکتے میں کل ہند اخبار نویسوں کی فیڈریشن کا سالانہ اجلاس ۔

13. روس سچ مچ امن چاہتا ہے—ڈاکٹر رادھا کرشنن ۔ کوریا میں "شاید پہلی مئی تک" سمجھوتہ ہو جائے ۔ سیواپوری (ضلع بنارس) میں سروودے سمیلن ۔

14. ٹیونیشیا میں گرفتاری ۔ دکھن افریقہ کی سرکار اپنی گوری نیتی پر اٹل ۔

15. یونو کونسل میں ٹیونیشیا کے مسئلے پر چرچہ نہ ہوگی ۔

हमारी राय — ہماری رائے

सर्वोदय सम्मेलन

तेरह, चौदह और पन्द्रह अप्रैल सन 52 को सेवापुरी जिला बनारस में कुल भारत सर्वोदय सम्मेलन का जलसा हुआ. हम उसमें शरीक थे. 'सर्वोदय' संस्कृत का शब्द है. गांधी जी ने इसे अपनी किताबों में बरता है. इसके मानी हैं सब की बढ़ोती, सब की भलाई या सब का विकास.

इस तरह के सर्वोदय सम्मेलन देश में चार साल से शुरू हुये हैं. गांधी जी के उठ जाने के कुछ दिन बाद वर्धा में देश के रचनात्मक काम करने वालों की एक कानफ्रेंस हुई थी. गांधी जी उसमें आने वाले थे. कानफ्रेंस के सामने वह अपनी यह तजवीज रखने वाले थे कि कांगरेस का काम अब हो चुका इसलिये कांगरेस को खत्म करके सब कांगरेसियों को हकूमत दूसरे देशवासियों के सुपुर्द करके खुद सरकारी ओहदों से निकल आना चाहिये और बाहर के दूसरे सेवकों के साथ मिलकर गांव गांव की जनता में नीचे से वह ताकत पैदा करनी चाहिये जिससे जनता सरकार के सहारे न रह कर अपने पैरों पर खड़ी हो सके और सरकार को भी अपनी राय के मुताबिक चला सके. गांधी जी की राय में राज काजी आजादी के साथ साथ मुल्क में समाजी और माली आजादी लाने का यही तरीका हो सकता था.

गांधी जी की यह भी राय थी कि अगर कांगरेस इस काम को न करे तो कांगरेस से अलग हो कर रचनात्मक काम करने वालों को यह काम अपने हाथ में लेना चाहिये.

गांधी जी के बाद कानफ्रेंस वर्धा में हुई. उसमें बहुत सी बातें हुईं. कुछ काम की बातें भी हुईं. पर गांधी जी की वह तजवीज सामने न आई. क्योंकि जिन लोगों के हाथों में उस नई कानफ्रेंस का बाग थी उन्हें गांधी जी की उस तजवीज में विश्वास नहीं था.

कानफ्रेंस के बाद कुछ लोगों को यह सूझा कि गांधी जी की उस तजवीज का थोड़ा बहुत अमली रूप देने की

سرودے سمیلن

تیرہ، چودہ اور پندرہ اپریل سن 52 کو سیوا پوری ضلع بنارس میں کل بھارت سرودے سمیلن کا جلسہ ہوا. ہم اس میں شریک تھے. 'سرودے' سنسکرت کا شبد ہے. گاندھی جی نے اسے اپنی کتابوں میں برتا ہے. اس کے معنی ہیں سب کی بڑھوتی، سب کی بھلائی یا سب کا وکاس.

اس طرح کے سرودے سمیلن دیش میں چار سال سے شروع ہوئے ہیں. گاندھی جی کے اٹھ جانے کے کچھ دن بعد وردھا میں دیش کے رچناتمک کام کرنے والوں کی ایک کانفرنس ہوئی تھی. گاندھی جی اس میں جانے والے تھے. کانفرنس کے سامنے وہ اپنی یہ تجویز رکھنے والے تھے کہ کانگریس کا کام اب ہوچکا اس لئے کانگریس کو ختم کر کے سب کانگریسیوں کو حکومت دوسرے دیش واسیوں کے سپرد کر کے خود سرکاری عہدوں سے نکل آنا چاہئے اور باہر کے دوسرے سیوکوں کے ساتھ مل کر گاؤں گاؤں کی جنتا میں نیچے سے وہ طاقت پیدا کرنی چاہئے جس سے جنتا سرکار کے سہارے نہ رہ کر اپنے پیروں پر کھڑی ہوسکے اور سرکار کو بھی اپنی رائے کے مطابق چلا سکے. گاندھی جی کی رائے میں راج کاجی آزادی کے ساتھ ساتھ ملک میں سماجی اور مالی آزادی لانے کا یہی طریقہ ہو سکتا تھا.

گاندھی جی کی یہ بھی رائے تھی کہ اگر کانگریس اس کام کو نہ کرے تو کانگریس سے الگ ہو کر رچناتمک کام کرنے والوں کو یہ کام اپنے ہاتھ میں لینا چاہئیے.

گاندھی جی کے بعد کانفرنس وردھا میں ہوئی. اس میں بہت سی باتیں ہوئیں. کچھ کام کی باتیں بھی ہوئیں. پر گاندھی جی کی وہ تجویز سامنے نہ آئی. کیونکہ جن لوگوں کے ہاتھوں میں اس نئی کانفرنس کی باگ تھی انہیں گاندھی جی کی اس تجویز میں وشواس نہیں تھا.

کانفرنس کے بعد کچھ لوگوں کو یہ سوجھا کہ گاندھی جی کی اس تجویز [illegible] بہت عملی روپ دینے کی

[illegible] की जाये. अगले साल एक कुल भारत सम्मेलन हुआ जो पहला सर्वोदय सम्मेलन कहलाया. इसी सिलसिले में सरकार की पांच साला योजना के जवाब में एक सर्वोदय योजना भी मुल्क के सामने रक्खी गई. इसी सिलसिले में आगे चल कर विनोबा जी ने अपना 'भूदान यज्ञ' शुरू किया. हर साल सर्वोदय सम्मेलन भी होते रहे जिन में सेवापुरी सम्मेलन चौथा सम्मेलन था.

सेवापुरी सम्मेलन में देश के अलग अलग प्रान्तों से आ कर लगभग डेढ़ हज़ार सेवक और लगभग उतने ही दर्शक शामिल हुये थे. सेवकों में अधिकतर ऐसे थे जो अपनी अपनी जगह गांधी जी के बताये तरह तरह के रचनात्मक कामों में लगे हुये हैं. इन तीन हज़ार के अलावा दो तीन हज़ार स्त्री पुरुष आस पास के गांवों से भी जलसों में शरीक होते रहते थे. सम्मेलन में खास चर्चा विनोबा जी के भूदान यज्ञ पर हुई और अगले साल के लिये उसकी तैयारियां की गईं.

सर्वोदय और विनोबा जी के भूदान यज्ञ के बारे में देश में तरह तरह के विचार फैले हुये हैं. तीन दिन तक सेवापुरी सम्मेलन में रह कर हम जिन नतीजों पर पहुंचे वह यह हैं :—

(1) सम्मेलन में जो सेवक जमा हुये थे उनमें से अधिकतर सेवक सच्चे, त्यागी और लगन से काम करने वाले थे. यह देख कर दिल को कुछ संतोष होता था कि गांधी जी के बाद देश में अभी तक इतने सच्चे काम करने वाले मौजूद हैं. इनमें भी अधिकतर वह थे जिनका कांग्रेस से खास सम्बन्ध नहीं है. कुछ कांग्रेसी भी थे. दोनों में फ़र्क साफ़ दिखाई देता था.

(2) इन काम करने वालों के अलावा सम्मेलन में कुछ सरकार के आदमी भी थे, जिन में दिल्ली सरकार के कुछ वज़ीर और अफ़सर और कुछ प्रान्तीय सरकारों के वज़ीर वज़ीरा भी थे. उनमें से कई ने सम्मेलन में हिस्सा लिया और बोले भी. यहां भी सरकारी और ग़ैर सरकारी लोगों में फ़र्क साफ़ दिखाई देता था. सरकारी लोग विनोबा जी के भूदान यज्ञ और खास कर उसके असली मक़सद के पूरा होने में तरह तरह की कठिनाइयां बताते थे. उनके और विनोबा जी के या सर्वोदय के सोचने के तरीक़ों में भी फ़र्क था. आज कल की अंतरराष्ट्रीय भाषा में वह लोग सरकार की तरफ़ से 'आबज़र्वर' की तरह थे और मुग़ल बादशाहों की बोली में 'ख़बर रसां.'

(3) जिस किसी ने सम्मेलन की सारी कार्यवाही को ध्यान से देखा और विनोबा जी की सब तक़रीरों को सुना उसे विनोबा जी की सच्चाई, बेग़र्ज़ी, ज़बरदस्त लगन,

استھاپنا کی جائے . اگلے سال ایک کل بھارت سمیلن ہوا جو پہلا سروودے سمیلن کہلایا . اسی سلسلے میں سرکار کی پانچسالہ یوجنا کے جواب میں ایک سروودے یوجنا بھی ملک کے سامنے رکھی گئی . اسی سلسلے میں آگے چل کر ونوبا جی نے اپنا ' بھودان یگیہ ' شروع کیا . ہر سال سروودے سمیلن بھی ہوتے رہے جن میں سیواپوری سمیلن چوتھا سمیلن تھا .

سیواپوری سمیلن میں دیش کے الگ الگ پرانتوں سے آ کر لگ بھگ ڈیڑھ ہزار سیوک اور لگ بھگ اتنے ہی درشک شامل ہوئے تھے . سیوکوں میں ادھک تر ایسے تھے جو اپنی اپنی جگہ گاندھی جی کے بتائے طرح طرح کے رچناتمک کاموں میں لگے ہوئے ہیں . اِن تین ہزار کے علاوہ دو تین ہزار اِستری پرش آس پاس کے گاؤں کے بھی جلسوں میں شریک ہوتے رہتے تھے . سمیلن میں خاص چرچا ونوبا جی کے بھودان یگیہ پر ہوئی اور اگلے سال کے لئے اس کی تیاریاں کی گئیں .

سروودے اور ونوبا جی کے بھودان یگیہ کے بارے میں دیش میں طرح طرح کے وچار پھیلے ہوئے ہیں . تین دن تک سیواپوری سمیلن میں رہ کر ہم جن نتیجوں پر پہنچے وہ یہ ہیں :—

(1) سمیلن میں جو سیوک جمع ہوئے تھے ان میں سے ادھک تر سیوک سچے ' تیاگی اور لگن سے کام کرنے والے تھے . یہ دیکھکر دل کو کچھ سنتوش ہوتا تھا کہ گاندھی جی کے بعد دیش میں ابھی تک اتنے سچے کام کرنے والے موجود ہیں . ان میں بھی ادھک تر وہ تھے جن کا کانگریس سے خاص سمبندھ نہیں ہے . کچھ کانگریسی بھی تھے . دونوں میں فرق صاف دکھائی دیتا تھا .

(2) ان کام کرنے والوں کے علاوہ سمیلن میں کچھ سرکار کے آدمی بھی تھے ' جن میں دلی سرکار کے کچھ وزیر اور افسر اور کچھ پرانتکی سرکاروں کے وزیر وغیرہ بھی تھے . ان میں سے کئی نے سمیلن میں حصہ لیا اور بولے بھی . یہاں بھی سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں میں فرق صاف دکھائی دیتا تھا . سرکاری لوگ ونوبا جی کے بھودان یگیہ اور خاصکر اس کے اصلی مقصد کے پورا ہونے میں طرح طرح کی کٹھنائیاں بتاتے تھے . ان کے اور ونوبا جی کے یا سروودے کے سوچنے کے طریقوں میں بھی فرق تھا . آجکل کی انتر قومی بھاشا میں یہ لوگ سرکار کی طرف کے ' آبزرور ' کی طرح تھے اور مغل بادشاہوں کی بولی میں 'خبر رساں' .

(3) جس کسی نے سمیلن کی ساری کاروائی کو دھیان سے دیکھا اور ونوبا جی کی سب تقریروں کو سنا اسے ونوبا جی کی سچائی' بے غرضی' زبردست لگن'

उनके दिल में सबके भलाई की चिन्ता और उन दूसरे कुछ उनकी सच्ची सूझ बूझ में भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता. कम ही सही लेकिन गांधी जी जैसी कर्मठता और सत्य की खोज विनोबा जी में साफ़ चमक रही थी.

(4) अपने और सरकार के फ़र्क़ को भी विनोबा जी ने खास कर अपने आखिरी भाषण में काफ़ी साफ़ कर दिया था. उनके कहने का निचोड़ यह था कि सर्वोदय की बुनियाद अहिंसा पर है और सरकारी योजनाओं की बुनियाद हिंसा पर है. सरकार अपने हाथों में बहुत सी ताक़त रखना चाहती है और हमेशा के लिये रखना चाहती है. इस के खिलाफ़ सर्वोदय चाहता है कि सरकार के हाथ में ,कम से कम ताक़त हो और जनता के हाथों में ज़ियादा से ज़ियादा ताक़त हो. सरकार की ताक़त दिन-दिन घटती रहनी चाहिये और जनता की ताक़त दिन दिन बढ़ती रहनी चाहिये. यहां तक कि एक दिन राज या सरकार बिल्कुल खत्म हो जाय और सारी ताक़त जनता के ही हाथों में आ जाए. यही उन्होंने सर्वोदय का असली और आखिरी मक़सद बताया यानी बिना सरकार और बिना फ़ौज की दुनिया. हमारी सरकार यह सब नहीं मानती और कम से कम इसका उल्टा ही चलती है. विनोबा ने यह भी कहा कि जब तक सरकार अपने हाथों में सब ताक़त रखने पर और फ़ौजों और हथियारों पर विश्वास रखती है और 'अहिंसा' शब्द मुंह से निकालती रहती है तब तक उसकी हालत ऐसी ही है जैसे "बग़ल में छुरी और मुंह में राम-राम."

हमने विनोबा जी के यह विचार अपने शब्दों में दिये हैं. हो सकता है कि अगर यह लेख उनके सामने रखा जाय तो वह ऊपर का कोई शब्द बदलना पसंद करें. पर "बग़ल में छुरी और मुँह में राम राम" उन्हीं का फ़िक़रा है. अपनी शक्ति भर हमने उनके ठीक-ठीक विचार पेश किये हैं. हम खुद भी इन विचारों को ठीक मानते हैं. सर्वोदय का अगर कोई आखरी मक़सद हो सकता है तो वही है जो विनोबा जी ने बताया.

(5) सरकारी लोगों की तक़रीरों से साफ़ ज़ाहिर था कि हमारी सरकार विनोबा जी की इस कोशिश को कि सब बे ज़मीन किसानों को ज़मीनें मिल जायें कड़ी हदों के अन्दर रखना चाहती है. लोगों में ज़मीनों के इस तरह के बंटवारे के वह खिलाफ़ है. बड़े से बड़े पैमाने पर बड़ी से बड़ी मशीनों के ज़रिये जिस तरह की चकबन्दी करके सरकार खेती कराना चाहती है उसकी भलाई बुराई की बहस हम यहां नहीं कर रहे हैं. यहां हम सिर्फ़ इतना कहना चाहते हैं कि इस बारे में सरकार की राय और विनोबा जी की राय में फ़र्क़ है और हम खुद सरकार की राय को जनता और मुल्क के लिये बुरा समझते हैं.

ان کے دل میں سب کے بھلائی کی چنتا اور ایک ... ان کی سچی سوجھ بوجھ میں بھی کسی طرح کا شک نہیں ہو سکتا . کم ہی صحیح لیکن گاندھی جی جیسی کرمٹھتا اور ستیہ کی کھوج ونوبا جی میں صاف چمک رہی تھی .

(4) اپنے اور سرکار کے فرق کو بھی ونوبا جی نے خاص کر اپنے آخری بھاشن میں کافی صاف کر دیا تھا . ان کے کہنے کا نچوڑ یہ تھا کہ سرودے کی بنیاد اہنسا پر ہے اور سرکاری یوجناؤں کی بنیاد ہنسا پر ہے . سرکار اپنے ہاتھوں میں بہت سی طاقت رکھنا چاہتی ہے اور ہمیشہ کے لئے رکھنا چاہتی ہے . اس کے خلاف سرودے چاہتا ہے کہ سرکار کے ہاتھ میں کم سے کم طاقت ہو اور جنتا کے ہاتھوں میں زیادہ سے زیادہ طاقت ہو . سرکار کی طاقت دن دن گھٹتی رہنی چاہئے اور جنتا کی طاقت دن دن بڑھتی رہنی چاہئے . یہاں تک کہ ایک دن راج یا سرکار بالکل ختم ہو جائے اور ساری طاقت جنتا کے ہی ہاتھوں میں آ جائے . یہی انہوں نے سرودے کا اصلی اور آخری مقصد بتایا یعنی بنا سرکار اور بنا فوج کی دنیا . ہماری سرکار یہ سب نہیں مانتی اور کم سے کم اسکا الٹا ہی چلتی ہے . ونوبا جی نے یہ بھی کہا کہ جب تک سرکار اپنے ہاتھوں میں سب طاقت رکھنے پر اور فوجوں اور ہتھیاروں پر وشواس رکھتی ہے اور 'اہنسا' شبد منہ سے نکالتی رہتی ہے تب تک اسکی حالت ایسی ہی ہے جیسے " بغل میں چھری اور منہ میں رام رام ."

ہم نے ونوبا جی کے یہ وچار اپنے شبدوں میں دیئے ہیں . ہو سکتا ہے کہ اگر یہ لیکھ ان کے سامنے رکھا جائے تو وہ اوپر کا کوئی شبد بدلنا پسند کریں . پر " بغل میں چھری اور منہ میں رام رام " انہیں کا فقرہ ہے . اپنی شکتی بھر ہم نے ان کے ٹھیک ٹھیک وچار پیش کئے ہیں . ہم خود بھی ان وچاروں کو ٹھیک مانتے ہیں . سرودے کا اگر کوئی آخری مقصد ہو سکتا ہے تو وہی ہے جو ونوبا جی نے بتایا .

(5) سرکاری لوگوں کی تقریروں سے صاف ظاہر تھا کہ ہماری سرکار ونوبا جی کی اس کوشش کو کہ سب بےزمین کسانوں کو زمینیں مل جائیں کڑی حدوں کے اندر رکھنا چاہتی ہے . لوگوں میں زمینوں کے اس طرح کے بٹوارے کے وہ خلاف ہے . بڑے سے بڑے پیمانے پر بڑی سے بڑی مشینوں کے ذریعے جس طرح کی چک بندی کر کے سرکار کھیتی کرانا چاہتی ہے اسکی بھلائی برائی کی بحث ہم یہاں نہیں کر رہے ہیں . یہاں ہم صرف اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ اس بارے میں سرکار کی رائے اور ونوبا جی کی رائے میں فرق ہے اور ہم خود سرکار کی رائے کو جنتا اور ملک کے لئے برا سمجھتے ہیں .

(6) सरकार कहीं कहीं विनोबा जी की तहरीक से फ़ायदा उठा कर देश पर अपने असर और अपनी ताक़त को और अधिक मज़बूत कर लेने की भी कोशिश में है. मिसाल के तौर पर उत्तर प्रदेश की सरकार का सूबे भर की पंचायतों को हुक्म देना कि वह हर गांव पीछे पांच-पांच एकड़ ज़मीन विनोबा जी को दिलवाएँ, इसी तरह की एक कोशिश मालूम हुई है. ज़ियादातर पंचायतें सरकारी लोगों के हाथों और असर में हैं. आम जनता उन्हें अपने लिये ऐसा ही समझती है जैसा दूसरे सरकारी महकमों को. इसलिये इस तरह के सरकारी हुक्म का क़ुदरती नतीजा हुआ कि सरकार के असर को मज़बूत करना और ख़िलाफ़ अंसुरों को क़ाबू में रखना.

(7) इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग विनोबा जी को ज़मीन दे रहे हैं उनमें कुछ बहुत ही नेक दिल और त्याग की भावना से ऐसा कर रहे हैं. लेकिन कुछ लोगों के दिल में दूसरी भावनाएं भी काम कर रही हैं. विनोबा जी ने ख़ुद अपने एक भाषण में इसका ज़िक्र किया था. बनारस के कुछ लोगों की तरफ़ से जो एक एडरेस सम्मेलन में पढ़ा गया था उसमें भी यह साफ़ कहा गया था कि इस भूदान में काफ़ी हिस्सा दबाव का है. सरकारी हुक्म के अधीन दान आमतौर पर सच्चा दान नहीं कहा जा सकता. और न इस तरह की तहरीक को फल सकता है.

(8) आज कल की हमारी कुछ सरकारें कम्युनिस्टों से बेहद डरी हुई हैं. हम इस डर को ग़लत, बेबुनियाद और अपने विरोध को दबाने का बहाना मानते हैं. विनोबा जी कभी कभी कुछ उसूली बातों को सामने रखते हुए सर्वोदय और कम्युनिज़्म का फ़र्क़ बताते रहते हैं और कहते हैं कि अगर सर्वोदय का यानी अहिंसा का तरीक़ा मुल्क के ग़रीबों को उनका हक़ दिलाने में कामयाब न हुआ तो फिर डर है लोग हिंसा के ग़लत तरीक़े से काम लें. उनके दाएं बाएं के कुछ लोग उनके कहने से ग़लत फ़ायदा उठा कर कहीं कहीं जनता को यह डराते हैं कि अगर तुमने विनोबा जी की बात न मानी तो जो गत कोरिया और चीन जैसे मुल्कों की बन चुकी है वही तुम्हारी भी बनेगी. इन तक़रीरों में कम्युनिस्टों से मुल्क को ख़तरा दिखाया जाता है. इस तरह की तक़रीरें अख़बारों तक में आ चुकी हैं. हो सकता है इस तरह की तक़रीरों से सरकार को कम्युनिस्टों के दबाने में कुछ मदद मिलती हो लेकिन विनोबा जी की पाक तहरीक का यह पहलू न सचाई से मेल खाता है और न इस से तहरीक का मान बढ़ता है.

(9) सेवापुरी सम्मेलन में एक बात हमें यह भी दिखाई दे रही थी कि वहां की हवा और रंग ढंग ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग लिये हुये थे. एक समझदार भाई ने

(6) سرکار جہاں تہاں ونوبا جی کی تحریک سے فائدہ اُٹھا کر دیش پر اپنے اثر اور اپنی طاقت کو اور ادھک مضبوط کر لینے کی بھی کوشش میں ہے۔ مثال کے طور پر اُتر پردیش کی سرکار کا صوبے بھر کی پنچایتوں کو حکم دینا کہ وہ ہر گاؤں پیچھے پانچ ایکڑ زمین ونوبا جی کو دلوائیں۔ اسی طرح کی ایک کوشش معلوم ہوتی ہے۔ زیادہ تر پنچایتیں سرکاری لوگوں کے ہاتھوں اور اثر میں ہیں۔ عام جنتا انہیں اپنے لئے ایسا ہی سمجھتی ہے جیسا دوسرے سرکاری محکموں کو۔ اس لئے اِس طرح کے سرکاری حکم کا قدرتی نتیجہ ہوا کہ سرکار کے اثر کو مضبوط کرنا اور خلاف عنصروں کو قابو میں رکھنا۔

(7) اِس میں کوئی شک نہیں کہ جو لوگ ونوبا جی کو زمین دے رہے ہیں ان میں کچھ بہت ہی نیک دل اور تیاگ کی بھاؤنا سے ایسا کر رہے ہیں۔ لیکن کچھ لوگوں کے دل میں دوسری بھاؤنائیں بھی کام کر رہی ہیں۔ ونوبا جی نے خود اپنے ایک بھاشن میں اِس کا ذکر کیا تھا۔ بنارس کے کچھ لوگوں کی طرف سے جو ایک ایڈریس سمیلن میں پڑھا گیا تھا اسمیں بھی یہ صاف کہا گیا تھا کہ اِس بھودان میں کافی حصہ دباؤ کا ہے۔ سرکاری حکم کے ادھین دان عام طور پر سچا دان نہیں کہا جا سکتا اور نہ اِس طرح کی تحریک کو پھل سکتا ہے۔

(8) آجکل کی ہماری کچھ سرکاریں کمیونسٹوں سے بے حد ڈری ہوئی ہیں۔ ہم اِس ڈر کو غلط، بے بنیاد اور اپنے وِرودھ کو دبانے کا بہانہ مانتے ہیں۔ ونوبا جی کبھی کبھی کچھ اصولی باتوں کو سامنے رکھتے ہوئے سروودیہ اور کمیونزم کا فرق بتاتے رہتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اگر سروودیہ کا یعنی اہنسا کا طریقہ ملک کے غریبوں کو ان کا حق دلانے میں کامیاب نہ ہوا تو پھر ڈر ہے لوگ ہنسا کے غلط طریقے سے کام لیں۔ ان کے دائیں بائیں کے کچھ لوگ اُن کے کہنے سے غلط فائدہ اُٹھا کر کہیں کہیں جنتا کو یہ ڈراتے ہیں کہ اگر تم نے ونوبا جی کی بات نہ مانی تو جو گت کوریا اور چین جیسے ملکوں کی ہو چکی ہے وہی تمہاری بھی ہوگی۔ ان تقریروں میں کمیونسٹوں سے ملک کو خطرہ دکھایا جاتا ہے۔ اِس طرح کی تقریریں اخباروں تک میں آ چکی ہیں۔ ہو سکتا ہے اِس طرح کی تقریروں سے سرکار کو کمیونسٹوں کے دبانے میں کچھ مدد ملتی ہو لیکن ونوبا جی کی تحریک کا یہ پہلو نہ سچائی سے میل کھاتا ہے اور نہ اِس سے تحریک کا مان بڑھتا ہے۔

(9) سیواپوری سمیلن میں ایک بات ہمیں یہ بھی دکھائی دے رہی تھی کہ وہاں کی ہوا اور رنگ ڈھنگ ضرورت سے زیادہ ہندو رنگ لئے ہوئے تھے۔ ایک سمجھدار بھائی نے

अपने भाषण में यह भी कहा कि कांग्रेस की गिरी हुई हालत में भी कांग्रेस के जलसों में जितने मुसलमान और दूसरे धर्मों के लोग दिखाई दे जाते हैं सर्वोदय सम्मेलन में उतने भी दिखाई नहीं देते. बात बिल्कुल सच्ची और दुख देने वाली है. हम इस के लिये किसी को दोषी नहीं ठहराते. विनोबा जी का अपना दिल इस बारे में बिल्कुल साफ है. वह अपने भाषणों में मुहम्मद साहब की जिन्दगी और कुरान और दूसरे धर्मों की किताबों से हवाले भी देते रहते हैं. उन्होंने कुरान को अच्छी तरह पढ़ा है. उसका उनके दिल में आदर है. पर उनकी तालीम और तरबियत अधिकतर हिन्दू शास्त्रों, पुरानों और हिन्दू परम्पराओं पर हुई है. उनके भाषणों और उनकी बातों में उस रंग का अधिक होना कुदरती है. यह लगभग वैसा ही है जैसा अगर मौलाना हुसेन अहमद मदनी जैसा सच्चा एकता प्रेमी देश भक्त इस तरह की तहरीक का अगुवा होता तो उसकी बातों में इस्लामी रंग अधिक होता ही. भोजनालय में वेद मंत्र से भोजन का शुरू किया जाना ही उसी तरह का असर पैदा करता है. हमें मालूम है कि कुछ फिरका-परस्त हिन्दुओं ने इससे गलत फायदा उठाने की भी कोशिश की है और यह कोशिशें जारी हैं. जिस भाई के भाषण की तरफ हमने ऊपर इशारा किया है उसने उसी भाषण में यह भी कहा था कि सम्मेलन में काम आने वाली भाषा न गांधी जी की हिन्दुस्तानी थी, और न उत्तर प्रदेश की जनता की बोली थी. वह थी संस्कृत भरी पंडिताऊ भाषा. हमें विश्वास है कि आस पास के गांव के जो अनपढ़ या कम पढ़े लोग वहां आए थे उनके पल्ले आधे से अधिक भाषणों में कुछ भी नहीं पड़ सका. इन बातों में भी कसूर हमारी तालीम और तरबियत का है. हमने अभी तक अपने रहन सहन, रंग ढंग, बोली और विचारों तक में एकता की वह लगन, वह सच्चा सर्वधर्म संभाव और वह [illegible] पैदा नहीं की जिसके बिना कोई सच्चा सेकूलर राज नहीं चल सकता और जिस के बिना आज कल का कोई ऐसा देश जिसमें अलग अलग धर्मों के लोग रहते हों सच्चे मानों में आजाद और खुशहाल नहीं हो सकता. सच्ची इन्सानी एकता का भी यही रास्ता है. गांधी जी इस पर तेजी से बढ़ रहे थे. इसी पर चलकर और इसी के लिये उन्होंने अपनी जान दी. हम अभी इस रास्ते से कोसों दूर हैं. हमें कोशिश कर के अपने पैर उधर को मोड़ने हैं.

(10) विनोबा जी का भूदान यज्ञ एक बेलाग और पाक कोशिश है. हमें यह भी विश्वास है कि सरकारें या फिरकापरस्त जमाअतें कोशिश करने पर भी इस तहरीक से बेजा फायदा नहीं उठा सकेंगी. आखिरी नतीजे में यह तहरीक अपनी गलत फहमियों को भी दूर करेगी. जनता

اپ بھاشن میں یہ بھی کہا کہ کانگریس کی گری ہوئی حالت میں بھی کانگریس کے جلسوں میں جتنے مسلمان اور دوسرے دھرموں کے لوگ دکھائی دے جاتے ہیں سروودے سمیلن میں اتنے بھی دکھائی نہیں دیتے ۔ بات بالکل سچی اور دکھ دینے والی ہے ۔ ہم اس کے لئے کسی کو دوشی نہیں ٹھہراتے ۔ ونوبا جی کا اپنا دل اس بارے میں بالکل صاف ہے ۔ وہ اپنے بھاشنوں میں محمد صاحب کی زندگی اور قرآن اور دوسرے دھرموں کی کتابوں سے حوالے بھی دیتے رہتے ہیں ۔ انہوں نے قرآن کو اچھی طرح پڑھا ہے ۔ اس کا ان کے دل میں آدر ہے ۔ پر ان کی تعلیم اور تربیت ادھک تر ہندو شاستروں، پرانوں اور ہندو پرمپراؤں پر ہوئی ہے ۔ ان کے بھاشنوں اور ان کی باتوں میں اس رنگ کا ادھک ہونا قدرتی ہے ۔ یہ لگ بھگ ویسا ہی ہے جیسا اگر مولانا حسین احمد مدنی جیسا سچا ایکتا پریمی دیش بھگت اس طرح کی تحریک کا اگوا ہوتا تو اس کی باتوں میں اسلامی رنگ ادھک ہوتا ہی ۔ بھوجنالیہ میں ویدمنتر سے بھوجن کا شروع کیا جانا ہی اسی طرح کا اثر پیدا کرتا ہے ۔ ہمیں معلوم ہے کچھ فرقہ پرست ہندوؤں نے اس سے غلط فائدہ اٹھانے کی بھی کوشش کی ہے اور یہ کوششیں جاری ہیں ۔ جس بھائی کے بھاشن کی طرف ہم نے اوپر اشارہ کیا ہے اس نے اسی بھاشن میں یہ بھی کہا تھا کہ سمیلن میں کام آنے والی بھاشا نہ گاندھی جی کی ہندوستانی تھی اور نہ اتر پردیش کی جنتا کی بولی تھی ۔ وہ تھی سنسکرت بھری پنڈتاؤ بھاشا ۔ ہمیں وشواس ہے کہ آس پاس کے گاؤں کے جو ان پڑھ یا کم پڑھے لوگ وہاں آئے تھے ان کے پلے آدھے سے ادھک بھاشنوں میں کچھ بھی نہیں پڑسکا ۔ ان باتوں میں بھی قصور ہماری تعلیم اور تربیت کا ہے ۔ ہم نے ابھی تک اپنے رہن سہن، رنگ ڈھنگ، بولی اور وچاروں تک میں ایکتا کی وہ لگن، وہ سچا سروودھرم سمبھاو اور وہ یگانگت پیدا نہیں کی جس کے بنا کوئی سچا سیکولر راج نہیں چل سکتا اور جس کے بنا آجکل کا کوئی ایسا دیش جس میں الگ الگ دھرموں کے لوگ رہتے ہوں سچے معنوں میں آزاد اور خوشحال نہیں ہوسکتا ۔ سچی انسانی ایکتا کا بھی یہی راستہ ہے ۔ گاندھی جی اس پر تیزی سے بڑھ رہے تھے ۔ اسی پر چل کر اور اسی کے لئے انہوں نے اپنی جان دی ۔ ہم ابھی اس راستے سے کوسوں دور ہیں ۔ ہمیں کوشش کرکے اپنے پیر ادھر کو موڑنے ہیں ۔

(10) ونوبا جی کا بھودان یگیہ ایک بے لاگ اور پاک کوشش ہے ۔ ہمیں یہ بھی وشواس ہے کہ سرکاریں یا فرقہ پرست جماعتیں کوشش کرنے پر بھی اس تحریک سے بے جا فائدہ نہیں اٹھا سکیں گی ۔ آخری نتیجہ میں یہ تحریک اپنی غلط فہمیوں کو بھی دور کرے گی ۔ جنتا

की आवाज़ इस तहरीक के पीछे है. जहां तक यह चल सकी इससे मुल्क को फ़ायदा ही है. लेकिन दूसरी तरफ़ इस चाल से मुल्क अपने असली मक़सद तक नहीं पहुँच सकता. विनोबा जी को पिछले एक साल के अन्दर कुल एक लाख एकड़ ज़मीन मिली बताई जाती है. वह भी अधिकतर ग़रीब किसानों से, बड़े ज़मींदारों से नहीं. उसमें भी अधिकतर अभी केवल कागज़ी कारवाई हो रही है. और वह भी अधूरा. अगले दो साल में विनोबा जी ने पचास लाख एकड़ का निशाना अपने सामने रखा है. सरकारें अपनी मुश्किलें बढ़ा ही रही हैं. अगर यह पचीस लाख किसी तरह पूरा भी हो गया तब भी इस से देश का ज़मीन का सवाल हल नहीं होता. विनोबा जी इसे देख रहे हैं. वह कहते हैं कि उनका काम अगर पांच सौ बरस में भी पूरा हो जाये तो उन्हें संतोष होगा. पर ज़ाहिर है दुनिया को इतना धीरज नहीं हो सकता. चीन जैसे बड़े देश ने एक साल के अन्दर और हमारे पड़ोसी कश्मीर ने कुछ महीनों के अन्दर ही अपने यहां के ज़मीन के सवाल को हल करके ख़त्म कर दिया और उसके नतीजों से फ़ायदा उठाना भी शुरू कर दिया. इनमें भी चीन के तरीक़े में थोड़ी बहुत हिंसा भले ही रही हो, कश्मीर के तरीक़े में तो हिंसा नाम को भी न थी. यह तरीक़े अमली तरीक़े हैं. इनके मुक़ाबले में बड़े बड़े मुआवज़ों और क़ानूनी बहसों का तरीक़ा ग़लत, लम्बा और ग़रीबों के साथ बेइन्साफ़ी का तरीक़ा है.

सेवापुरी सम्मेलन में जो तक़रीरें हुईं उनसे यह साफ़ ज़ाहिर था कि देश के रचनात्मक काम करने वाले भी इस बारे में काफ़ी बेचैन हैं और गहराई के साथ सोच रहे हैं. एक भाई ने अपनी तक़रीर में कहा कि ख़ुद विनोबा जी के पौनार आश्रम में कम से कम दो आश्रम वासियों ने यह राय ज़ाहिर की थी कि अगर चीन ने एक साल के अन्दर अपने ज़मीन के सवाल को हल कर लिया और उसमें थोड़ा बहुत अहिंसा के उसूल का उल्लंघन भी हुआ तब भी हमें बरसों इन्तज़ार करने के बजाय उसी तरीक़े पर चलकर एक बार अपने इस सवाल को हल कर लेना चाहिये. इसी तरह की धुन सम्मेलन की और तक़रीरों में भी सुनाई दे रही थी.

आख़िर में ज़मीन के सवाल को हल करने के दो ही अमली तरीक़े हो सकते हैं. एक क़ानून का तरीक़ा और दूसरा गांधी जी का बताया हुआ सत्याग्रह का तरीक़ा. विनोबा जी का काम राह दिखाना और हवा तैयार करना है इससे ज़्यादा नहीं. सम्मेलन की अधिकतर तक़रीरों से भी साफ़ ज़ाहिर था कि लोग इस बारे में आज-कल की सरकारों से कोई आशा नहीं रखते. सरकार के

کی آواز اس تحریک کے پیچھے ہے. جہاں تک یہ چل سکی اس سے ملک کو فائدہ ہی ہے. لیکن دوسری طرف اس چال سے ملک اپنے اصلی مقصد تک نہیں پہنچ سکتا. ونوبا جی کو پچھلے ایک سال کے اندر کل ایک لاکھ ایکڑ زمین ملی بتائی جاتی ہے. وہ بھی ادھک تر غریب کسانوں سے، بڑے زمینداروں سے نہیں. اس میں بھی ادھک تر ابھی کیول کاغذی کاروائی ہی ہے اور وہ بھی ادھوری. اگلے دو سال میں ونوبا جی نے پچاس لاکھ ایکڑ کا نشانہ اپنے سامنے رکھا ہے. سرکاریں اپنی مشکلیں بڑھا ہی رہی ہیں. اگر یہ پچیس لاکھ کسی طرح پورا بھی ہوگیا تب بھی اس سے دیش کا زمین کا سوال حل نہیں ہوتا. ونوبا جی اسے دیکھ رہے ہیں. وہ کہتے ہیں کہ اُن کا کام اگر پانچ سو برس میں بھی پورا ہو جائے تو انہیں سنتوش ہوگا. پر ظاہر ہے دنیا کو اتنا دھیرج نہیں ہوسکتا. چین جیسے بڑے دیش نے ایک سال کے اندر اور ہمارے پڑوسی کشمیر نے کچھ مہینوں کے اندر ہی اپنے یہاں کے زمین کے سوال کو حل کرکے ختم کر دیا اور اُس کے نتیجوں سے فائدہ اُٹھانا بھی شروع کر دیا. اِن میں بھی چین کے طریقے میں تھوڑی بہت ہنسا بھلے ہی رہی ہو، کشمیر کے طریقے میں تو ہنسا نام کو بھی نہ تھی. یہ طریقے عملی طریقے ہیں. اِن کے مقابلہ میں بڑے بڑے معاوضوں اور قانونی بحثوں کا طریقہ غلط، لمبا اور غریبوں کے ساتھ بےانصافی کا طریقہ ہے.

سیواپوری سمیلن میں جو تقریریں ہوئیں اُن سے یہ صاف ظاہر تھا کہ دیش کے رچناتمک کام کرنے والے بھی اس بارے میں کافی بے چین ہیں اور گہرائی کے ساتھ سوچ رہے ہیں. ایک بھائی نے اپنی تقریر میں کہا کہ خود ونوبا جی کے پونار آشرم میں کم سے کم دو آشرم واسیوں نے یہ رائے ظاہر کی تھی کہ اگر چین نے ایک سال کے اندر اپنے زمین کے سوال کو حل کر لیا اور اُس میں تھوڑا بہت اہنسا کے اصول کا اُلنگھن بھی ہوا ہو تب بھی ہمیں برسوں کا انتظار کرنے کے بجائے اُسی طریقے پر چل کر ایک بار اپنے اس سوال کو حل کرلینا چاہئے. اِسی طرح کی دھن سمیلن کی اور تقریروں میں بھی سنائی دے رہی تھی.

آخر میں زمین کے سوال کو حل کرنے کے دو ہی عملی طریقے ہوسکتے ہیں. ایک قانون کا طریقہ اور دوسرا گاندھی جی کا بتایا ہوا ستیاگرہ کا طریقہ. ونوبا جی کا کام راہ دکھانا اور ہوا تیار کرنا ہے اس سے زیادہ نہیں. سمیلن کی ادھک تر تقریروں سے یہ بھی صاف ظاہر تھا کہ لوگ اس بارے میں آجکل کی سرکاروں سے کوئی آشا نہیں رکھتے. سرکار کے

और चीन के बाज़ार बहुत से बड़ों पर बड़े दिखाई पड़ने लगते हैं. फिर कोलम्बो प्लैन के बहाने कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड ने भी—अमरीका और इंगलैन्ड की देखा देखी—हिन्दुस्तान को मुहब्बत दिखाने का रास्ता निकाल लिया. इतना होता तो हम सबर कर लेते पर आफ़त की मार यह है कि हमारे चाहने वाले दिन दिन नये पैदा होते जा रहे हैं.

पिछले मार्च में अमरीका के शिकंजे में कसे हुए (यानी गुलाम) जापान से बारह आदमियों का एक इन्डस्ट्रीयल मिशन आया जिसने यह जांच की कि हिन्दुस्तान में जापानी माल कितना खप सकता है और जापानी पूंजी कितनी लगाई जा सकती है. यानी जापान के नाम पर अमरीका हिन्दुस्तान में कितना मुनाफ़ा कर सकता है. मार्च की ही 18 तारीख़ को यूगोस्लेविया की तरफ़ से एक नुमायश नई दिल्ली में लगाई गई जिसका मक़सद था हिन्द-यूगोस्लेविया सनअती सम्बन्ध जमाना बढ़ाना. इसके पहले बम्बई में एक नुमायश लगी थी जिसमें रूस, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और चीन वग़ैरा की चीज़ें दिखाई गई थीं और रूसी राजदूत ने वादा किया था कि हिन्दुस्तान जो चीज़ चाहे अपने सिक्के में रूस से ख़रीद सकता है. इनके अलावा मार्च में ही कोलम्बो प्लान नुमायश लंका में लगाई गई जिसमें बताया गया कि हिन्दुस्तान के भले की ख़ातिर कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड वग़ैरा कितना करने को तैयार हैं.

सोचने की बात है कि विदेशी व्योपारियों को क्यों हम से इतनी मुहब्बत हो गई है, क्या बात है कि उनके अन्दर हमारे लिये इतना मोह हो रहा है? जवाब साफ़ है—हमारी लम्बी चौड़ी ज़मीन और छत्तीस करोड़ आबादी. बाहर वालों का ख़याल है कि जो माल कहीं न चले उससे हिन्दुस्तान में एक के दो बनाये जा सकते हैं क्योंकि हिन्द सरकार को विदेशी माल में अधिक दिलचस्पी है. सबूत चाहिये तो 1951 के आंकड़े देखिये—बाहर माल गया कम, बाहर से आया कहीं ज़ियादा; यानी यहां की सरकार अपनी दौलत लुटा रही है. तब बाहर वाले क्यों न मज़ा लें?

लेकिन "अभी तो इब्तदाये इश्क़ है." संसार का इतिहास बताता है कि इसका नतीजा क्या होता है. हमें नहीं मालूम कि सरकारी नक़्क़ारख़ाने में हमारी तूती जैसी आवाज़ पहुँचेगी भी या नहीं—पर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि सरकार को चाहिये कि इन चहेतों में से किसी को मुंह न लगाये और सबको दरवाज़ा दिखाये. इन में सब से पहले निपटना है अमरीका से क्योंकि उसके आने से आधे से ज़ियादा शहर दूर हो जायेंगे. अमरीका के इरादों पर ही हमें शक पैदा हो गया है.

اور چین کے بازار بہت سے بڑوں پر بڑے دکھائی پڑنے لگتے ہیں۔ پھر کولمبو پلین کے بہانے کناڈا، آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ نے بھی—امریکہ اور انگلینڈ کی دیکھا دیکھی—ہندستان کو محبت دکھانے کا راستہ نکال لیا۔ اتنا ہوتا تو ہم صبر کر لیتے پر آفت کی مار یہ ہے کہ ہمارے چاہنے والے دن دن نئے پیدا ہوتے جا رہے ہیں۔

پچھلے مارچ میں امریکہ کے شکنجے میں کسے ہوئے (یعنی غلام) جاپان سے بارہ آدمیوں کا ایک انڈسٹریل مشن آیا جس نے یہ جانچ کی کہ ہندستان میں جاپانی مال کتنا کھپ سکتا ہے اور جاپانی پونجی کتنی لگائی جا سکتی ہے۔ یعنی جاپان کے نام پر امریکہ ہندستان میں کتنا منافع کر سکتا ہے۔ مارچ کی ہی 18 تاریخ کو یوگوسلاویا کی طرف سے ایک نمائش نئی دلی میں لگائی گئی جس کا مقصد تھا ہند یوگوسلاویا صنعتی سمبندھ جمانا بڑھانا۔ اس کے پہلے بمبئی میں ایک نمائش لگی تھی جس میں روس، زیکوسلوواکیا، ہنگری اور چین وغیرہ کی چیزیں دکھائی گئی تھیں اور روسی راجدوت نے وعدہ کیا تھا کہ ہندستان جو چیز چاہے اپنے سکے میں روس سے خرید سکتا ہے۔ ان کے علاوہ مارچ میں ہی کولمبو پلان نمائش لنکا میں لگائی گئی جس میں بتایا گیا کہ ہندستان کے بھلے کی خاطر کناڈا، آسٹریلیا، نیوزی لینڈ وغیرہ کتنا کرنے کو تیار ہیں۔

سوچنے کی بات ہے کہ ودیشی بیوپاریوں کو کیوں ہم سے اتنی محبت ہو گئی ہے، کیا بات ہے کہ ان کے اندر ہمارے لئے اتنا موہ ہو رہا ہے؟ جواب صاف ہے—ہماری لمبی چوڑی زمین اور چھتیس کروڑ آبادی۔ باہر والوں کا خیال ہے کہ جو مال کہیں نہ چلے اس سے ہندستان میں ایک کے دو بنائے جا سکتے ہیں کیونکہ ہند سرکار کو ودیشی مال میں ادھک دلچسپی ہے۔ ثبوت چاہئے تو 1951 کے آنکڑے دیکھئے—باہر مال گیا کم، باہر سے آیا کہیں زیادہ؛ یعنی یہاں کی سرکار اپنی دولت لٹا رہی ہے۔ تب باہر والے کیوں نہ مزا لیں؟

لیکن "ابھی تو ابتدائے عشق ہے۔" سنسار کا اتہاس بتاتا ہے کہ اس کا نتیجہ کیا ہوتا۔ ہمیں نہیں معلوم کہ سرکاری نقار خانے میں ہماری طوطی جیسی آواز پہونچے گی بھی یا نہیں—پر ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ سرکار کو چاہئے کہ ان چہیتوں میں سے کسی کو منہ نہ لگائے اور سب کو دروازہ دکھائے۔ ان میں سب سے پہلے نپٹنا ہے امریکہ سے کیونکہ اس کے جانے سے آدھے سے زیادہ شہر دور ہو جائیں گے۔ امریکہ کے ارادوں پر ہی ہمیں شک پیدا ہو گیا ہے۔

हमारी सरकार का फ़र्ज़ है कि वह न अमरीका से मदद ले न रूस से, न जापान से न यूगोस्लेविया से, बल्कि अपने पैरों पर खड़ी हो और देश को हर माने में स्वावलम्बी बनावे.

22-3-1952 —सुरेश रामभाई

डाक्टरों का घमंड

अप्रैल के तीसरे हफ्ते में नई दिल्ली में मेडिकल कौंसिल आफ इंडिया की मीटिंग हुई जिस में यह बात बड़े ज़ोर के साथ कही गई कि हिन्दुस्तान में इलाज का सिर्फ़ एक ही तरीक़ा चलना चाहिये यानी मौजूदा एलोपैथिक तरीक़ा. इसका मतलब यह है कि हमारी सरकार के सलाहकार डाक्टर यह चाहते हैं कि वैद्यक, यूनानी, होम्यो पैथी और क़ुदरती इलाज जैसे इलाज के सब दूसरे तरीक़े इस मुल्क में बिलकुल बन्द कर दिये जावें. सरकार क्या करेगी हम नहीं जानते. पर हम अपने डाक्टर भाइयों की उनकी हम चुनीं दीगरे नेस्त अक़्ल पर बधाई देते हैं. अब वनस्पति-कोकोजम के कारखाने वालों को चाहिये कि अपनी अगली मीटिंग में वह यह ठहराव पास करें कि हिन्दुस्तान में सिर्फ़ वनस्पति का इस्तेमाल किया जाना चाहिये, और घी और दूसरे देसी तेलों का इस्तेमाल बन्द हो जाना चाहिये. इसी तरह कपड़े के मिल मालिकों और दरज़ियों को चाहिये कि सिर्फ़ मिल का कपड़ा और वह भी अंगरेज़ी पोशाक पहने जाने का ठहराव पास करें और हिन्द सरकार की तन्दुरुस्ती मिनिस्टरी की बा राज कुमारी अमृत कौर को चाहिये कि पार्लियामेन्ट में एक क़ानून पास करा दें कि अब लोग सिर्फ़ स्वीडन के नमूने वाले प्रीफ़ैब्रीकेटेड मकानों में रहा करें.

बलिहारी है इस सूझ की. हमारे डाक्टरों ने न मालूम अमरीका की, न मालूम इंगलैंड की या किस की रीस करके एलोपैथिक इलाज को अकेले ज़िन्दा रहने का फ़तवा दे दिया. कोई ताज्जुब नहीं कि हिन्द सरकार जो अमरीका के पंजे में वैसे ही फंसती जा रही है, डाक्टरों के इस फ़तवे को क़बूल कर ले. लेकिन हम डाक्टर भाइयों से पूछना चाहते हैं कि क्या सचमुच उनके काम में आजकल यही एक रुकावट है कि हिन्दुस्तान के कुछ लोग क़ुदरती, देसी या होम्योपैथी इलाज भी करा लेते हैं और लाखों इन इलाजों के ज़रिये से अच्छे हो जाते हैं; क्या आज के डाक्टर अपने दिल पर हाथ रख कर कह सकते हैं कि वह सब अपना काम पैसे की ख़ातिर नहीं बल्कि केवल जन सेवा के लिये कर रहे हैं ? क्या वह यह दावे के साथ कह सकते हैं कि सरकारी और खैराती अस्पतालों में सब काम ईमानदारी से होता है और ग़रीब अमीर सबके साथ एक

ہماری سرکار کا فرض ہے کہ وہ نہ امریکہ سے مدد لے نہ روس سے، نہ جاپان سے نہ یوگوسلاویا سے، بلکہ اپنے پیروں پر کھڑی ہو اور دیش کو ہر معنے میں سواولمبی بنائے۔

22-3-52 —سریش رام بھائی

ڈاکٹروں کا گھمنڈ

اپریل کے تیسرے ہفتے میں نئی دلی میں میڈیکل کونسل آف انڈیا کی میٹنگ ہوئی جس میں یہ بات بڑے زور کے ساتھ کہی گئی کہ ہندستان میں علاج کا صرف ایک ہی طریقہ چلنا چاہئے یعنی موجودہ ایلوپیتھک طریقہ۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ ہماری سرکار کے صلاح کار ڈاکٹر یہ چاہتے ہیں کہ ویدک، یونانی، ہومیوپیتھی اور قدرتی علاج جیسے علاج کے سب دوسرے طریقے اس ملک میں بالکل بند کر دیئے جائیں۔ سرکار کیا کریگی ہم نہیں جانتے۔ پر ہم اپنے ڈاکٹر بھائیوں کی اُن کی ہم چنیں دیگرے نیست عقل پر پر بدھائی دیتے ہیں۔ اب بناسپتی کوکوجم کے کارخانے والوں کو چاہئے کہ اپنی اگلی میٹنگ میں وہ یہ ٹھہراؤ پاس کریں کہ ہندستان میں صرف بناسپتی کا استعمال کیا جانا چاہئے اور گھی اور دوسرے دیسی تیلوں کا استعمال بند ہو جانا چاہئے۔ اسی طرح کپڑے کے مل مالکوں اور درزیوں کو چاہئے کہ صرف مل کا کپڑا اور وہ بھی انگریزی پوشاک پہنے جانے کا ٹھہراؤ پاس کریں، اور ہند سرکار تندرستی منسٹری کی راج کماری امرت کور کو چاہئے کہ پارلیامنٹ میں ایک قانون پاس کرا دیں کہ اب لوگ صرف سوئڈن کے نمونے والے پری فیبری کیٹڈ مکانوں میں رہا کریں۔

بلہاری ہے اس سوجھ کی۔ ہمارے ڈاکٹروں نے نہ معلوم امریکہ کی، نہ معلوم انگلینڈ کی یا کس کی ریس کر کے ایلوپیتھک علاج کو اکیلے زندہ رہنے کا فتوا دے دیا۔ کوئی تعجب نہیں کہ ہند سرکار جو امریکہ کے چنگل میں ویسے ہی پھنستی جا رہی ہے، ڈاکٹروں کے اس فتوے کو قبول کر لے۔ لیکن ہم ڈاکٹر بھائیوں سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ کیا سچ مچ اُن کے کام میں آجکل یہی ایک رکاوٹ ہے کہ ہندستان کے کچھ لوگ قدرتی، دیسی یا ہومیوپیتھی علاج بھی کرا لیتے ہیں اور لاکھوں ان علاجوں کے ذریعے سے اچھے ہو جاتے ہیں۔ کیا آج کے ڈاکٹر اپنے دل پر ہاتھ رکھ کر کہہ سکتے ہیں کہ وہ سب اپنا کام پیسے کی خاطر نہیں بلکہ کیول جن سیوا کے لئے کر رہے ہیں! کیا وہ یہ دعوے کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ سرکاری اور خیراتی اسپتالوں میں سب کام ایمانداری سے ہوتا ہے اور غریب امیر سب کے ساتھ ایک

का बरताव किया जाता है? क्या वह अपने जी से यह कह सकते हैं कि अमरीका या इंगलैंड से आये दिन आने वाली पेटेंट दवायें हिन्दुस्तान के लोगों को सभी माफ़िक़ रहती हैं और जो हैं तो क्या उनकी क़ीमतें ऐसी हैं जो हिन्दुस्तान के लाखों करोड़ों आदमी आसानी से बरदाश्त कर सकें.

कौन नहीं जानता कि पेंसलीन—जिसके बड़े ज़ोर शोर से और जिसके बनने का कारख़ाना नई दिल्ली के मिनिस्टर गाडगिल साहब ने 10 मार्च को पूना के पास खोला था और जिसमें 1953 तक हिन्द सरकार क़रीब दो करोड़ रुपया फूंक देगी—आज पच्छिमी डाक्टरों के अनुसार ही निकम्मी बल्कि हानिकर और अनेक नये रोगों को जन्म देने वाली साबित हो चुकी है. एक दूसरी दवा स्ट्रेप्टो माइसीन है जिसके बारे में भी बहुत से डाक्टरों को शक है. अब एक तीसरी दवा और निकली है, नाम है Iso-Niacin Hydrazide जिसकी 50 हज़ार गोलियां एक अमरीकन फ़र्म से हिन्द सरकार ने ख़रीदना तय किया है. यह वही दवा है जिसके बारे में ख़ुद अमरीकन डाक्टरों का कहना है, जैसा 'न्यूयार्क टाइम्स' में छपा है "इसकी ख़ुराक बढ़ाने से या अरसे तक इसके ज़रिये इलाज करने से फेफड़ों के बिगड़ जाने का अन्देशा है... .....और फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इस दवा से रोग अच्छा हो ही जायेगा."

एक बात और. पिछली 5 अप्रैल को न्यूज़ीलैन्ड के उद्योग धन्धे और कामर्स मिनिस्टर (ख़्याल रहे कि हेल्थ मिनिस्टर नहीं) ने नई दिल्ली में कुल हिन्द मेडिकल इन्स्टीट्यूट की इमारत का बुनियादी पत्थर रखा. कहा जाता है कि इसके बनने में 160 लाख रुपया ख़र्च होगा जिसमें से 10 लाख पौंड न्यूज़ीलैन्ड देगा. कहां हिन्दुस्तान और कहां हिन्दुस्तान को रुपया देने वाला वह छोटा सा टापू न्यूज़ीलैन्ड. क्या हमारे डाक्टर लोग बता सकते हैं कि यह चीज़ें हिन्दुस्तान के पैरों में बेड़ियां नहीं हैं? हमारी अपने डाक्टर भाइयों से अर्ज़ है कि ज़रा होश में आयें और दूसरे की आंख के तिल को न देख कर अपनी आंख के लट्ठे को देखें. हमारा तो ख़्याल है कि अंगरेज़ी ढंग के डाक्टरों और अस्पतालों के बढ़ने से हिन्दुस्तान में बीमारी, गंदगी और बेईमानी बढ़ी है घटी नहीं और इसके ख़िलाफ़ देश की लाखों जनता देसी इलाज से और होम्योपैथी और क़ुदरती इलाज जैसे तरीक़ों से फ़ायदा उठाती है और उठा रही है. हमारे पड़ोसी चीन की सरकार ने एलोपैथी इलाज को अपने यहां बढ़ने का पूरा मौक़ा देते हुए भी अपने हज़ारों बरस पुराने देसी इलाज के तरीक़े को फिर से ज़िन्दा किया है और लाखों पुराने तरीक़े के

سا برتاؤ کیا جاتا ہے؟ کیا وہ اپنے جی سے یہ کہہ سکتے ہیں کہ امریکہ یا انگلینڈ سے آئے دن آنے والی پیٹنٹ دوائیں ہندستان کے لوگوں کو سبھی موافق رہتی ہیں اور جو ہیں تو کیا اُن کی قیمتیں ایسی ہیں جو ہندستان کے لاکھوں کروڑوں آدمی آسانی سے برداشت کر سکیں ۔

کون نہیں جانتا کہ پنسلین—جس کے بڑے زور شور سے اور جس کے بننے کا کارخانہ نئی دلی کے منسٹر گاڈگل صاحب نے 10 مارچ کو پونا کے پاس کھولا تھا اور جس میں 1953 تک ہند سرکار قریب دو کروڑ روپیہ پھونک دیگی—آج پچھمی ڈاکٹروں کے انوسار ہی نکمی بلکہ ہانی کر اور انیک نئے روگوں کو جنم دینے والی ثابت ہو چکی ہے ۔ ایک دوسری دوا اسٹریپٹو مائی سین ہے جس کے بارے میں بھی بہت سے ڈاکٹروں کو شک ہے ۔ اب ایک تیسری دوا اور نکلی ہے، نام ہے Iso-Niacin Hydrazide جس کی 50 ہزار گولیاں ایک امریکن فرم سے ہند سرکار نے خریدنا طے کیا ہے ۔ یہ وہی دوا ہے جس کے بارے میں خود امریکن ڈاکٹروں کا کہنا ہے، جیسا 'نیویارک ٹائمس' میں چھپا ہے—"اس کی خوراک بڑھانے سے یا عرصے تک اس کے ذریعے علاج کرنے سے پھیپھڑوں کے بگڑ جانے کا اندیشہ ہے.........اور پھر بھی یہ نہیں کہا جا سکتا کہ اس دوا سے روگ اچھا ہو ہی جائے گا ۔"

ایک بات اور ۔ پچھلی 15 اپریل کو نیوزیلینڈ کے اُدیوگ دھندے اور کامرس منسٹر (خیال رہے کہ ہیلتھ منسٹر نہیں) نے نئی دلی میں کل ہند میڈیکل انسٹی ٹیوٹ کی عمارت کا بنیادی پتھر رکھا ۔ کہا جاتا ہے کہ اس کے بننے میں 160 لاکھ روپیہ خرچ ہوگا جس میں سے 10 لاکھ پونڈ نیوزیلینڈ دیگا ۔ کہاں ہندستان کو روپیہ دینے والا وہ چھوٹا سا ٹاپو نیوزیلینڈ ۔ کیا ہمارے ڈاکٹر لوگ بتا سکتے ہیں کہ یہ چیزیں ہندستان کے پیروں میں بیڑیاں نہیں ہیں؟ ہماری اپنے ڈاکٹر بھائیوں سے عرض ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور دوسرے کی آنکھ کے تل کو نہ دیکھ کر اپنی آنکھ کے لٹھے کو دیکھیں ۔ ہمارا تو خیال ہے کہ انگریزی ڈھنگ کے ڈاکٹروں اور اسپتالوں کے بڑھنے سے ہندستان میں بیماری، گندگی اور بےایمانی بڑھی ہے گھٹی نہیں ۔ اور اس کے خلاف دیش کی لاکھوں جنتا دیسی علاج سے اور ہومیوپیتھی اور قدرتی علاج جیسے طریقوں سے فائدہ اٹھاتی ہے اور اٹھا رہی ہے ۔ ہمارے پڑوسی چین کی سرکار نے ایلوپیتھی علاج کو اپنے یہاں بڑھنے کا پورا موقعہ دیتے ہوئے بھی اپنے ہزاروں برس پرانے دیسی علاج کے طریقے کو پھر سے زندہ کیا ہے اور لاکھوں پرانے طریقے کے

डाक्टरों के [illegible] की है. हम यह नहीं चाहते कि एलोपैथिक इलाज मुल्क से निकाल दिया जाये लेकिन हम यह ज़रूर कह देना चाहते हैं कि अगर सरकार और डाक्टरों ने मिल कर इस ग़रीब देश में इलाज के दूसरे तरीक़ों का गला घोंटा तो इससे देश को ज़बरदस्त नुक़सान होगा ही, ख़ुद उनके लिये भी यह विनाश काले विपरीत बुद्धि ही साबित होगा.

27. 4. 52. —सुरेश रामभाई

ग़रीब भारत और ऊंची तनख़ाहें

23 अप्रैल के 'स्टेट्समैन' में एक ख़बर छपी है जो उसके नई दिल्ली वाले ख़ास नुमायन्दे ने भेजी है. वह यह है कि दुनिया का सबसे ऊंची तनख़ा पाने वाला आदमी मिस्टर एम. एच. स्लोकोम है जो इमारत बनाने के काम में अमरीका के तजुर्बेकार इंजीनियरों में गिना जाता है. हिन्द सरकार ने इन्हें इन्कमटैक्स माफ़ 28 हज़ार डालर सालाना या 10 हज़ार रुपये महीने पर नौकर रखा है. मिस्टर स्लोकोम पंजाब के भाखरा बांध बनने में मदद देंगे. इनकी नौकरी का ठेका दस साल का है. तनख़ा के अलावा इन को भत्ता भी मिलेगा जिससे इनका हिन्दुस्तान में रहने सहने का सब ख़र्च निकल जाये.

'स्टेट्समैन' के नुमायन्दे का कहना है कि मिस्टर स्लोकोम की तनख़ा अमरीका के राजपति से भी ज़ियादा है और हिन्दुस्तान के राजपति को इन्कमटैक्स काटने के बाद जो रक़म मिलती है, उसके दुगने से भी ज़ियादा है. मिस्टर स्लोकोम के साथ चपरासी से लगा कर डिप्टी या सहायक तक एक लम्बा चौड़ा स्टाफ़ होगा जिसका ख़र्च भी हमारी सरकार बर्दाश्त करेगी. इस तरह मिस्टर स्लोकोम के ऊपर हिन्द सरकार लाखों रुपया ख़र्च करेगी और भाखरा बांध के बनने में करोड़ों रुपया मुलाज़िमों की तनख़ाहों, भत्तों वग़ैरा में साफ़ हो जायगा.

वैसे तो हिन्द सरकार तनख़ा के मामले में किसी पाबन्दी या त्याग की क़ायल नहीं है. फिर भी मिस्टर स्लोकोम की नियुक्ति हमें अजीब मालूम पड़ती है. इससे पता चलता है कि किस तरह अमरीका के माहिर हिन्द सरकार पर हावी हो गये हैं और सरकार बिना सोचे समझे उनके ऊपर रुपया पानी की तरह बहाने को तैयार है. कौन नहीं जानता कि आज का हिन्दुस्तान इतना धनी नहीं है जो देसी और विदेशी माहिरों की ऊंची तनख़ाहों का बोझ बर्दाश्त कर सके और न यह उसकी ग़रीबी को कम करने का तरीक़ा है. अलावा इसके एक की देखा देखी दूसरों को भी इच्छा ऊंची तनख़ा पाने या पाते रहने की बढ़ती रहती है

طریقوں کو اُن کے علم میں سائنٹفک دیکھے ہیں، ہم یہ نہیں کہتے کہ ایلوپیتھک علاج ملک سے نکال دیا جائے لیکن ہم یہ ضرور کہ دینا چاہتے ہیں کہ اگر سرکار اور ڈاکٹروں نے مل کر اس غریب دیش میں علاج کے دوسرے طریقوں کا گلا گھونٹا تو اِس سے دیش کو زبردست نقصان ہوگا ہی خود اُن کے لئے بھی یہ وناش کالے وپریت بدھی ہی ثابت ہوگا ۔

27 . 4 . 52 ـــــ سریش رام‌بھائی

غریب بھارت اور اونچی تنخواھیں

23 اپریل کے 'اسٹیٹس مین' میں ایک خبر چھپی ہے جو اُس کے نئی دلی والے خاص نمائندے نے بھیجی ہے ۔ وہ یہ ہے کہ دنیا کا سب سے اونچی تنخواہ پانے والا آدمی مسٹر ایم ۔ ایچ ۔ سلوکوم ہے جو عمارت بنانے کے کام میں امریکہ کے تجربے کار انجینیروں میں گنا جاتا ہے ۔ ہند سرکار نے اِنہیں اِنکم ٹیکس معاف 28 ہزار ڈالر سالانہ یا دس ہزار روپئے مہینے پر نوکر رکھا ہے ۔ مسٹر سلوکوم پنجاب کے بھاکھرا باندھ بننے میں مدد دینگے ۔ ان کی نوکری کا ٹھیکہ دس سال کا ہے ۔ تنخواہ کے علاوہ اِنکو بھتہ بھی ملیگا جس سے اِنکا ہندستان میں رہنے سہنے کا سب خرچ نکل آئے ۔

'اسٹیٹس مین' کے نمائندے کا کہنا ہے کہ مسٹر سلوکوم کی تنخواہ امریکہ کے راج پتی سے بھی زیادہ ہے اور ہندستان کے راج پتی کو انکم ٹیکس کاٹنے کے بعد جو رقم ملتی ہے اس کے دگنے سے بھی زیادہ ہے ۔ مسٹر سلوکوم کے ساتھ چپراسی سے لے کر ڈپٹی یا سہایک تک ایک لمبا چوڑا اسٹاف ہوگا جس کا خرچ بھی ہماری سرکار برداشت کریگی ۔ اِس طرح مسٹر سلوکوم کے اوپر ہند سرکار لاکھوں روپیہ خرچ کریگی اور بھاکھرا باندھ کے بننے میں کروڑوں روپیہ ملازموں کی تنخواہوں، بھتوں وغیرہ میں صاف ہو جائے گا ۔

ویسے تو ہند سرکار تنخواہ کے معاملے میں کسی پابندی یا تیاگ کی قائل نہیں ہے ۔ پھر بھی مسٹر سلوکوم کی نیکتی ہمیں عجیب معلوم پڑتی ہے ۔ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ کس طرح امریکہ کے ماہر ہند سرکار پر حاوی ہو گئے ہیں اور سرکار بنا سوچے سمجھے اُن کے اوپر روپیہ پانی کی طرح بہانے کو تیار ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ آجکا ہندستان اِتنا دھنی نہیں ہے جو دیشی اور ودیشی ماہروں کی اونچی تنخواہوں کا بوجھ برداشت کر سکے اور نہ یہ اسکی غریبی کو کم کرنے کا طریقہ ہے ۔ علاوہ اِس کے ایک کی دیکھا دیکھی دوسروں کی بھی اچھا اونچی تنخواہ پانے یا پاتے رہنے کی بڑھتی رہتی ہے

[illegible] कायम होने की आशा नहीं रहती. जब देशी कम्पनियाँ अपने काम करने वालों को ऊँची तनख्वाह या भत्ते देंगी तो लाज़मी तौर पर उन्हें यह फ़र्ज़ें किसी जायज़ या ना जायज़ तरीक़े से पूरे होंगे.

इस नियुक्ति में जो और भी दुख की बात है वह है 10 साल का ठेका. आजकल की किसी भी सरकार के लिए यह नामुनासिब बात है कि अपनी मियाद से ज़ियादा अरसे का ठेका किसी से करे. इस वक़्त हमें सन 1922 का वह ठहराव याद आ रहा है जिसमें कांग्रेस ने अंगरेज़ी सरकार को आगाह किया था कि आज़ाद हिन्दुस्तान अंगरेज़ सरकार के ठेकों या क़र्ज़ों को मानने को मजबूर न किया जा सकेगा. इसी तरह आज़ाद हिन्दुस्तान की आजकल की सरकार विदेश वालों से जो ठेके या राज़ीनामे करेगी उन पर आइन्दा की किसी दूसरी सरकार को अमल दरामद करना लाज़मी न होगा. साथ ही साथ हम मिस्टर स्लोकोम को यह बता देना चाहते हैं कि उनको भी हिन्द सरकार के ठेकों पर उतना ही विश्वास करना चाहिए जितना कि हिन्दुस्तान की मौजूदा बदलती हुई राजकाजी हालत में किया जा सकता है.

हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि इसी तरह के और इनसे बड़े बड़े बांध रूस में भी बंध चुके हैं और हाल में चीन में बंधे हैं और बंध रहे हैं.

अगर हिन्द सरकार को बाहर से माहिर बुलाना ही है तो अपने पड़ोसी चीन से सबक़ क्यों नहीं सीखती. चीन में विदेशी माहिर भी हैं पर वह चीन के माहिरों की तरह ही तनख़्वाह लेते और ज़िन्दगी बसर करते हैं.

हमारी साफ़ राय है कि मिस्टर स्लोकोम का ठेका ग़रीब हिन्दुस्तानियों का मुँह चिढ़ाना है. हम जानते हैं कि हमारी राय की हिन्द सरकार को क्या परवाह हो सकती है. फिर भी हम इस दुखी और ग़रीब देश की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को समझते हुए हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि हिन्द सरकार का फ़र्ज़ है कि फ़ौरन से पेश्तर इस ठेके को रद्द करके मिस्टर स्लोकोम को विदा दे दे और इसी तरह जिन दूसरे माहिरों या कम्पनियों से इसी तरह के मंहगे ठेके किये हों उनको भी रुख़सत कर दे, और अपने देश की जनता और उसकी ताक़त पर विश्वास करके देश को स्वावलंबी बनाने और बनाए रखने का अहद करे.

26. 4. '52. —सुरेश रामभाई

[illegible] ختم ہونے کی آشا نہیں رہتی ۔ جب دیشی کمپنیاں اپنے کام کرنے والوں کو اونچی طلب یا بھتے دینگی تو لازمی طور پر انہیں یہ خرچ کسی جائز یا نا جائز طریقے سے پورے ہونگے۔

اس نیُکتی میں جو اور بھی دکھ کی بات ہے وہ ہے 10 سال کا ٹھیکہ ۔ آجکل کی کسی بھی سرکار کے لئے یہ نامناسب بات ہے کہ اپنی میعاد سے زیادہ عرصے کا ٹھیکہ کسی سے کرے ۔ اس وقت ہمیں سن 1922 کا وہ ٹھہراؤ یاد آ رہا ہے جس میں کانگریس نے انگریزی سرکار کو آگاہ کیا تھا کہ آزاد ہندوستان انگریز سرکار کے ٹھیکوں یا قرضوں کو ماننے کو مجبور نہ کیا جا سکیگا ۔ اسی طرح آزاد ہندوستان کی آجکل کی سرکار ودیش والوں سے جو ٹھیکے یا راضی نامے کریگی ان پر آئندہ کی کسی دوسری سرکار کو عمل درآمد کرنا لازمی نہ ہوگا ۔ ساتھ ہی ساتھ ہم مسٹر سلوکوم کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ ان کو بھی ہند سرکار کے ٹھیکوں پر اتنا ہی وشواس کرنا چاہئے جتنا کہ ہندوستان کی موجودہ بدلتی ہوئی راج کاجی حالت میں کیا جا سکتا ہے ۔

ہمیں یہ بھی دھیان میں رکھنا چاہئے کہ اسی طرح کے اور اس سے بڑے بڑے باندھ روس میں بھی بندھ چکے ہیں اور حال میں چین میں بھی بندھے ہیں اور بندھ رہے ہیں ۔

اگر ہند سرکار کو باہر سے ماہر بلانا ہی ہے تو اپنے پڑوسی چین سے سبق کیوں نہیں سیکھتی ۔ چین میں ودیشی ماہر بھی ہیں پر وہ چین کے ماہروں کی طرح ہی تنخواہ لیتے اور زندگی بسر کرتے ہیں ۔

ہماری صاف رائے ہے کہ مسٹر سلوکوم کا ٹھیکہ غریب ہندوستانیوں کا منہ چڑھاتا ہے ۔ ہم جانتے ہیں کہ ہماری رائے کی ہند سرکار کو کیا پرواہ ہو سکتی ہے ۔ پھر بھی ہم اس دکھی اور غریب دیش کی طرف اپنے فرض کو سمجھتے ہوئے یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ ہند سرکار کا فرض ہے کہ فوراً سے پیشتر اس ٹھیکے کو رد کرکے مسٹر سلوکوم کو وداع دے دے اور اسی طرح جن دوسرے ماہروں یا کمپنیوں سے اسی طرح کے مہنگے ٹھیکے کئے ہوں ان کو بھی رخصت کر دے اور اپنے دیش کی جنتا اور اس کی شکتی پر وشواس کرکے دیش کو سوا ولمبی بنانے اور بنائے رکھنے کا عہد کرے ۔

سریش رام بھائی 26-4-'52

कश्मीर का नया क़दम

पहली अप्रैल को कश्मीर की विधान सभा ने यह क़ानून पास किया कि सरकार बड़े ज़मींदारों की जो फ़ालतू ज़मीनें ग़रीबों में बांटने के लिये ज़ब्त करेगी उसके बदले में उन्हें कोई मुआवज़ा नहीं दिया जायगा. इसके ऊपर हमारे हिन्दुस्तान में काफ़ी चर्चा हुई और यह दलील दी गई कि जब कश्मीर हिन्दुस्तान के अन्दर है और हिन्दुस्तान में बिना मुआवज़ा दिये ज़मीन नहीं ली जा सकती तो फिर कश्मीर में ऐसा क्योंकर हो सकता है. पर भारत के विधान की धारा 370 में साफ़ कहा गया है कि दफ़ा 238 के बंधन (जो भारत की 'बी' रियासतों पर लागू हैं) कश्मीर के सम्बन्ध में लागू नहीं होंगे. इसलिए कश्मीर की सरकार ने अपने किसानों के हित में जो क़दम उठाया है उस पर किसी भारतवासी को एतराज़ करने का कोई हक़ नहीं है.

एक और बात जिसने कश्मीर के ख़िलाफ़ नाराज़गी भड़का दी है वह कश्मीर के बड़े वज़ीर शेख़ अब्दुल्ला की वह स्पीच है जो उन्होंने दस अप्रैल को रनबीरपुरा में दी थी. वह स्पीच अख़बारों में छप चुकी है. उनके कहने का निचोड़ यह है कि कश्मीर का हिन्दुस्तान में शामिल होने का मतलब यह है कि फ़ौजी बचाव, विदेशों के साथ मामलों, और आवा जाई के साधनों में वह हिन्दुस्तान की सलाह पर और हिन्दुस्तान के साथ मिल कर चलेगा और बाक़ी सब मामलों में ख़ुद मुख़्तार रहेगा.

शेख़ अब्दुल्ला की यह बात सोलह आने सही है. भारत और कश्मीर का सम्बन्ध दोनों के लाभ के लिए है किसी के साथ ज़बरदस्ती करने के लिये नहीं. यह सम्बन्ध किसी हिन्दू राज और किसी मुसलमान जनता के बीच का सम्बन्ध नहीं है. यह सम्बन्ध है दो सच्चे ईमानदार और रवादार देशों और दो सेक्युलर गवरमेन्टों के बीच का. यह सम्बन्ध उन उसूलों के आधार पर है जो महात्मा गांधी ने हमें सिखाये हैं और जिनके लिये उन्होंने जान दी. जहां तक साम्प्रदायिक तंगनज़री का सवाल है शेख़ अब्दुल्ला और पंडित जवाहर लाल नेहरू दोनों उससे ऊपर हैं और दोनों इन मामलों में महात्मा गांधी के उसूलों के भक्त हैं. हिन्दू हों या मुसलमान ज़मींदारों और पूंजीपतियों के फ़ायदे के लिए ग़रीबों मज़दूरों और किसानों की भलाई की परवाह न करना इन उसूलों के बिलकुल ख़िलाफ़ है. इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि ज़मीनों की बस्ती और बटवारे के मामले में शेख़ अब्दुल्ला ने जो कुछ किया है ग़रीबों के फ़ायदे के लिये किया है. भारत वासियों को उससे सबक़ लेना चाहिये न कि उसे बुरा कहना. हाल में

کشمیر کا نیا قدم

پہلی اپریل کو کشمیر کی ودھان سبھا نے یہ قانون پاس کیا کہ سرکار بڑے زمینداروں کی جو فالتو زمینیں غریبوں میں بانٹنے کے لئے ضبط کریگی اس کے بدلے میں انہیں کوئی معاوضہ نہیں دیا جائیگا. اس کے اوپر ہمارے ہندستان میں کافی چرچہ ہوئی اور یہ دلیل دی گئی کہ جب کشمیر ہندستان کے اندر ہے اور ہندستان میں بلا معاوضہ دئے زمین نہیں لی جاسکتی تو پھر کشمیر میں ایسا کیوں کر ہوسکتا ہے. پر بھارت کے ودھان کی دھارا 370 میں صاف کہا گیا ہے کہ دفع 238 کے بندھن (جو بھارت کی 'بی' ریاستوں پر لاگو ہیں) کشمیر کے سمبندھ میں لاگو نہیں ہونگے. اس لئے کشمیر کی سرکار نے اپنے کسانوں کے ہت میں جو قدم اٹھایا ہے اس پر کسی بھارت واسی کو اعتراض کرنے کا کوئی حق نہیں ہے.

ایک اور بات جس نے کشمیر کے خلاف ناراضگی بھڑکا دی ہے وہ کشمیر کے بڑے وزیر شیخ عبداللہ کی وہ اسپیچ ہے جو انہوں نے دس اپریل کو رنبیرپورا میں دی تھی. وہ اسپیچ اخباروں میں چھپ چکی ہے. ان کے کہنے کا نچوڑ یہ ہے کہ کشمیر کا ہندستان میں شامل ہونے کا مطلب یہ ہے کہ فوجی بچاؤ، ودیشوں کے ساتھ معاملوں اور آوا جائی کے سادھنوں میں وہ ہندستان کی صلاح پر اور ہندستان کے ساتھ ملکر چلیگا اور باقی سب معاملوں میں خود مختار رہیگا.

شیخ عبداللہ کی یہ بات سولہ آنے صحیح ہے. بھارت اور کشمیر کا سمبندھ دونوں کے لابھ کے لئے ہے کسی کے ساتھ زبردستی کرنے کے لئے نہیں. یہ سمبندھ کسی ہندو راج اور کسی مسلمان جنتا کے بیچ کا سمبندھ نہیں ہے. یہ سمبندھ ہے دو سچے ایماندار اور روادار دیشوں اور دو سیکولر گورنمنٹوں کے بیچ کا. یہ سمبندھ ان اصولوں کے آدھار پر ہے جو مہاتما گاندھی نے ہمیں سکھائے ہیں اور جن کے لئے انہوں نے جان دی. جہاں تک سامپردائک تنگ نظری کا سوال ہے شیخ عبداللہ اور جواہر لال دونوں اس سے اوپر ہیں اور دونوں اس معاملے میں مہاتما گاندھی کے اصولوں کے قائل ہیں. ہندو ہو یا مسلمان زمینداروں اور پونجی پتیوں کے فائدے کے لئے غریبوں، مزدوروں اور کسانوں کی بھلائی کی پرواہ نہ کرنا ان اصولوں کے بالکل خلاف ہے. اس میں کوئی شک نہیں ہوسکتا کہ زمینوں کی بستی اور بٹوارے کے معاملے میں شیخ عبداللہ نے جو کچھ کیا ہے غریبوں کے فائدے کے لئے کیا ہے. بھارت واسیوں کو اس سے سبق لینا چاہئے نہ کہ اسے برا کہنا. حال میں

शेख़ अब्दुल्ला ने ख़ुद यह अच्छी तरह साफ़ कर दिया है कि महात्मा गांधी का उसूल ही वह सुनहरी जंजीर है जो कश्मीर को हिन्दुस्तान के साथ बांधती है और हमेशा बांधे रखेगी.

अख़बारी रिपोर्टों से मालूम होता है कि शेख़ अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि "हिन्दुस्तान से फ़िरक़ेवाराना भावना अभी ख़तम नहीं हुई है और हम कश्मीरियों को सब ऊँच नीच के लिए तैयार रहना है."

शेख़ अब्दुल्ला की इस बात से भी हम इनकार नहीं कर सकते. बदक़िस्मती से हिन्दुस्तान में यह फ़िरक़ेवाराना ताक़तें अब भी काम कर रही हैं. उनको देशी और विदेशी पूँजीपतियों और सरमायादारों का पूरा सहारा है. हकूमत में भी, ऊपर से साफ़ साफ़ न सही लेकिन अन्दर से तो ज़रूर उनका कुछ न कुछ असर है. ख़ुद कांग्रेस के अन्दर यह ताक़तें कितनी नुमायां हैं कहने की ज़रूरत नहीं. पिछले आम चुनाव में और आये दिन हमारी म्युनिसिपलटी और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, युनिवर्सिटी और मिनिस्ट्री वग़ैरा के चुनाव में इनका कितना असर रहता है कौन नहीं जानता. इसी का एक नमूना है "राष्ट्र भाषा" के ठेकेदारों का उर्दू भाषा की तरफ़ बैर रुख़; और उनका जनता की प्यारी बोली से हटकर जबरन थोड़ शब्दों का देश पर लादने का प्रयत्न. यह भी ज़ाहिर है कि कश्मीर का धनवान तबक़ा हिन्दुस्तान के धनवान तबक़े से मिल कर इस मामले में साज़िश कर रहा है. इसमें कोई शक नहीं कि कश्मीर ख़ुद मुख़्तारी या अपने स्वराज की तरफ़ जितना क़दम बढ़ायेगा वहां के और हिन्दुस्तान के स्वार्थी मालदार हितों को उतना ही ज़ियादा धक्का पहुँचेगा. बदक़िस्मती से कुछ अख़बार और प्रेस भी इन्हीं पैसे वालों के हाथ में हैं जो कश्मीर और हिन्दुस्तान को नज़दीक लाने के बजाय और अलग कर देते हैं.

शेख़ अब्दुल्ला ने न अब तक कभी ऐसा कोई क़दम उठाया है न उठायेंगे जिससे हिन्दुस्तान या कश्मीर की फ़िरक़ेवाराना ताक़तों या सरमायादार हिस्सों को बढ़ावा मिले. जब तक उनके सामने ग़रीब रियाया की भलाई और तरक़्क़ी ही है तब तक उनको कोई चीज़ भी आंच नहीं पहुँचा सकती. साथ ही साथ अपने देश के अख़बार, पैसा और ताक़त वालों से हमारी विनती है कि ज़माने की रफ़्तार को देख कर काम करें. और उन अंगारों को नहीं भड़कावें जिनकी लपटें सारे देश को तबाह कर दे सकती हैं. हम शेख़ अब्दुल्ला को यक़ीन दिलाते हैं कि हर समझदार भारतवासी पूरे दिल से उनके साथ है.

29-4-52 —सुरेश रामभाई

شیخ عبداللہ نے خود یہ اچھی طرح صاف کر دیا ہے کہ مہاتما گاندھی کا اُصول ہی وہ سنہری زنجیر ہے جو کشمیر کو ہندستان کے ساتھ باندھتی ہے اور ہمیشہ باندھے رکھیگی۔

اخباری رپورٹوں سے معلوم ہوتا ہے کہ شیخ عبداللہ نے یہ بھی کہا کہ "ہندستان سے فرقہ وارانہ بھاونا ابھی ختم نہیں ہوئی ہے اور ہم کشمیریوں کو سب اونچ نیچ کے لئے تیار رہنا ہے۔"

شیخ عبداللہ کی اس بات سے بھی ہم اِنکار نہیں کرسکتے۔ بدقسمتی سے ہندستان میں یہ فرقہ وارانہ طاقتیں اب بھی کام کر رہی ہیں۔ اُن کو دیشی اور ودیشی پونجی پتیوں اور سرمایہ‌داروں کا پورا سہارا ہے۔ حکومت میں بھی، اوپر سے صاف صاف نہ سہی لیکن اندر سے تو ضرور اُن کا کچھ نہ کچھ اثر ہے۔ خود کانگریس کے اندر یہ طاقتیں کتنی نمایاں ہیں کہنے کی ضرورت نہیں۔ پچھلے عام چناؤ میں اور آئے دن ہماری میونسپلٹی اور ڈسٹرکٹ بورڈ، یونیورسٹی اور منسٹری وغیرہ کے چناؤ میں اِن کا کتنا اثر رہتا ہے کون نہیں جانتا۔ اِسی کا ایک نمونہ ہے "راشٹر بھاشا" کے ٹھیکے داروں کا اردو بھاشا کی طرف بیجا رخ؛ اور اُن کا جنتا کی پیاری بولی سے ہٹکر جبرا تھوڑ شبدوں کا دیش پر لادنے کا پریتن۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ کشمیر کا دھنوان طبقہ ہندستان کے دھنوان طبقے سے مل کر اِس معاملے میں سازش کر رہا ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ کشمیر خود مختاری یا اپنے سوراج کی طرف جتنا قدم بڑھائیگا وہاں کے اور ہندستان کے سوارتھی مالدار ہتوں کو اُتنا ہی زیادہ دھکا پہونچیگا۔ بدقسمتی سے کچھ اخبار اور پریس بھی اِنہیں پیسے والوں کے ہاتھ میں ہیں جو کشمیر اور ہندستان کو نزدیک لانے کے بجائے اور الگ کر دیتے ہیں۔

شیخ عبداللہ نے نہ اب تک کبھی ایسا کوئی قدم اُٹھایا ہے نہ اُٹھائینگے جس سے ہندستان یا کشمیر کی فرقہ وارانہ طاقتوں یا سرمایہ‌دار حصوں کو بڑھاوا ملے۔ جب تک اُن کے سامنے غریب رعایا کی بھلائی اور ترقی ہی ہے تب تک اُن کو کوئی چیز بھی آنچ نہیں پہونچا سکتی۔ ساتھ ہی ساتھ اپنے دیش کے اخبار، پیسے اور طاقت والوں سے ہماری ونتی ہے کہ زمانے کی رفتار کو دیکھ کر کام کریں اور اُن انگاروں کو نہیں بھڑکائیں جن کی لپٹیں سارے دیش کو تباہ کر دے سکتی ہیں۔ ہم شیخ عبداللہ کو یقین دلاتے ہیں کہ ہر سمجھدار بھارت واسی پورے دل سے اُن کے ساتھ ہے۔

—سریش رام بھائی 29.4.52

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर को बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) उसको फैलाने के लिए किताबें, अख़बारें, रिसाले वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कान्फ़्रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना।

— : —

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि. अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा. अब्दुल हक़, गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी—पं. सुन्दरलाल

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा. सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि. मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी. जी. खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनमचन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरों के क़ायदों के लिए लिखिए

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम दे सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہیں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

— : —

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ
وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس و ڈاکٹر عبدالحق
گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس
سکریٹری — پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندرلال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 مٹھی گنج الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے مطابق ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم دے سکیں گے

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था। देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी पर वह अब ही मुमकिन हो सका है

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी [illegible] साथ देख गये हैं बहुत से बुज़ुर्गों और साथियों की राय और सुझावों से इसमें फ़ायदा उठाया गया है। नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित विशम्भर नाथ ने इस मज़मून का एक [illegible] नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और नेकियों से भरी-पूरी ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—का सबक़ मिलता है। उससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे [illegible] और फ़िरक़ों [illegible] देश को [illegible] बल्कि एक नये धर्म एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी भारी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपी [illegible] सफ़े. कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ [illegible] रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर, नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لکھنے والے — سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن ۱۹۴۱ میں نکلا تھا [illegible] اور جلدی ہی [illegible] دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی پر یہ اب ہی ممکن ہو سکا ہے۔

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی [illegible] بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی [illegible] اس کتاب کے شروع میں [illegible] ایک [illegible] لکھا ہے۔

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور [illegible] ساتھ ساتھ حضرت محمد کی [illegible] سچی اور [illegible] ایک [illegible] جس نے صدیوں سے [illegible] کو روشن کیا [illegible] اس سے پتہ لگیگا [illegible] حضرت محمد نے [illegible] بلکہ ایک نئے دھرم ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا۔

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی [illegible] مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائیں گے

سندر جلد بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی [illegible] صفحے کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام [illegible] روپیہ۔

ملنے کا پتہ
مینیجر نیا ہند ۱۴۵ مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naye Hind Press ,145, Muthiganj, Allahabad

या हिन्द

नम्बर के ख़ास लेख

نمبر کے خاص لیکھ

ली कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

जून 1952 جون

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जून 1952

क्या किससे — सफ़ा

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچہ

جون 1952

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

नया हिन्द / نیا ہند

जिल्द 12 — जून, सन '52 — नम्बर 6

نمبر 6 — جون' سن '52 — جلد 12

जात आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
"نیا ہند" پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

भगवान कहां ?

बसे हैं निर्धन में भगवान
क्योंकि समझते राम रुपये को दुनिया के धनवान

(1)

पाओ कोढ़ी मोहताजों में
पाओ मजदूरों राजों में
मिलें न पंडित के साजों में
राम समझते हैं पोथी को पंडित और विद्वान
बसे हैं निर्धन में भगवान

(2)

यही समझ लो तुम थोड़े में
मिल सकते कुत्ते घोड़े में
रह सकते रोड़े रोड़े में
पर न बसेंगे वह ऐंठू में उनका रब अभिमान
बसे हैं निर्धन में भगवान

(3)

ईश्वर की खातिर तो काशी
के बनना हरगिज मत वासी
मत बनना जोगी सन्यासी
सब सन्यास राम है उनका उनकी जोग दुकान
बसे हैं निर्धन में भगवान

—भगवानदीन

بھگوان کہاں ؟

بسے ہیں نردھن میں بھگوان
کیونکہ سمجھتے رام روپئے کو دنیا کے دھنوان

(1)

پاؤ کوڑھی محتاجوں میں
پاؤ مزدوروں راجوں میں
ملیں نہ پنڈت کے ساجوں میں
رام سمجھتے ہیں پوتھی کو پنڈت اور ودوان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

(2)

یہی سمجھ لو تم تھوڑے میں
مل سکتے کتے گھوڑے میں
رہ سکتے روڑے روڑے میں
پر نہ بسینگے وہ اینٹھو میں اُنکا رب ابھیمان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

(3)

ایشور کی خاطر تو کاشی
کے بننا ہرگز مت باسی
مت بننا جوگی سنیاسی
سب سنیاس رام ہے اُن کا اُن کی جوگ دوکان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

—بھگوان دین

सब रास्ते उसी तक पहुंचते हैं

(डाक्टर भगवान दास)

यह सच्चाई सब धर्मों की किताबों में पाई जाती है . एक अल्लाह ईश्वर तक पहुंचने के लिये अलग अलग ...ों और अलग अलग तबियतों के मुताबिक अलग ...लग रास्ते हैं. सब धर्मों की किताबों और सब महा ...ओं की बानी में यह बात भी मिलती है कि एक दूसरे ...जिन रास्तों को हम ग़लत कहते रहते हैं वह भी घूम ...र कर आखिर में एक उसी तक पहुंचते हैं. एक सूफ़ी ने ...हा है :—

"कुफ़्र और इस्लाम दोनों उसी अल्लाह की राह में ...ड़े चले जा रहे हैं. दोनों यही कहते हैं कि अल्लाह एक . उस जैसा कोई दूसरा नहीं."

एक और सूफ़ी ने और ज़ियादा साफ़ शब्दों में ...हा है :—

"मुसलमान और ईसाई और यहूदी भले और बुरे, ...बका मुँह उसी एक अल्लाह की तरफ़ है."

मुहम्मद साहब ने एक हदीस में कहा है—"जितने ...इंसान हैं उतने ही अल्लाह तक पहुँचने के रास्ते हैं."

यह सच्चाई बहुत गहरी सच्चाई है. हर रूह उसी ...क अथाह समुन्दर की एक बूंद है. हर बूंद उस के अन्त का ...क छोटा सा पहलू लिये हुए है. इसलिये अल्लाह तक ...हुंच कर जाने में भी हर रूह का रास्ता किसी न किसी ...जे तक दूसरों के रास्ते से अपना अलग पहलू लिये ...र होगा.

क़ुरान में साफ़ कहा गया है—"हम सब अल्लाह से ...ए हैं और सब अल्लाह ही की तरफ़ जा रहे हैं."

इंजील में लिखा है—"आदमी के नथनों में जितने ...ांस आते हैं उतने ही ख़ुदा तक पहुँचने के रास्ते हैं. पर ...ज़िल सबकी एक है."

संस्कृत की किताब शिव-महिमा-स्तुति में लिखा है—

"जिस तरह बहुत सी नदियां तरह तरह से घूम घूम ...र आखिर सब समुन्दर में जा गिरती हैं उसी तरह सब ...आदमी अपने अपने स्वभाव के मुताबिक़ अलग अलग ...स्तों से चल कर भी उसी एक ईश्वर तक पहुँचते हैं. ...सी का रास्ता सीधा और किसी का पेचदार. किसी ...का सरल और किसी का कठिन."

سب راستے اسی تک پہونچتے ہیں

(ڈاکٹر بھگوان داس)

یہ سچائی سب دھرموں کی کتابوں میں پائی جاتی ہے کہ ایک اللہ ایشور تک پہونچنے کے لئے الگ الگ لوگوں اور الگ الگ طبیعتوں کے مطابق الگ الگ راستے ہیں . سب دھرموں کی کتابوں اور سب مہاپرشوں کی بانی میں یہ بات بھی ملتی ہے کہ ایک دوسرے کے جن راستوں کو ہم غلط کہتے رہتے ہیں وہ بھی گھوم پھر کر آخیر میں ایک اسی تک پہونچتے ہیں. ایک صوفی نے کہا ہے:—

" کفر اور اسلام دونوں اسی اللہ کی راہ میں دوڑے چلے جا رہے ہیں . دونوں یہی کہتے ہیں کہ اللہ ایک ہے . اس جیسا کوئی دوسرا نہیں ."

ایک اور صوفی نے اور زیادہ صاف شبدوں میں کہا ہے:—

" مسلمان اور عیسائی اور یہودی بھلے اور برے' سب کا منہ اسی ایک اللہ کی طرف ہے ."

محمد صاحب نے ایک حدیث میں کہا ہے—" جتنے انسان ہیں اتنے ہی اللہ تک پہونچنے کے راستے ہیں ."

یہ سچائی بہت گہری سچائی ہے . ہر روح اسی ایک اتھاہ سمندر کی ایک بوند ہے . ہر بوند اس کے انت کا ایک چھوٹا سا پہلو لئے ہوئے ہے . اس لئے اللہ تک پہونچ کر جانے میں بھی ہر روح کا راستہ کسی نہ کسی درجے تک دوسروں کے راستے سے اپنا الگ پہلو لئے ہوئے ہوگا .

قرآن میں صاف کہا گیا ہے—" ہم سب اللہ سے آئے ہیں اور سب اللہ ہی کی طرف جا رہے ہیں ."

انجیل میں لکھا ہے—" آدمی کے نتھنوں میں جتنے سانس آتے ہیں اتنے ہی خدا تک پہونچنے کے راستے ہیں . پر منزل سب کی ایک ہے ."

سنسکرت کی کتاب شیو مہما استوتی میں لکھا ہے—

" جس طرح بہت سی ندیاں طرح طرح سے گھوم گھوم کر آخیر سب سمندر میں جا گرتی ہیں اسی طرح سب آدمی اپنے اپنے سبھاؤ کے مطابق الگ الگ راستوں سے چل کر بھی اسی ایک ایشور تک پہونچتے ہیں . کسی کا راستہ سیدھا اور کسی کا پیچدار؛ کسی کا سرل اور کسی کا کٹھن ."

गीता में भी भगवान ने साफ कहा है—

"जो लोग श्रद्धा यानी ईमान और वफादारी के साथ दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं वह भी अनजाने में और बे-तरीके उन सब रूपों के पीछे असल में मेरी ही पूजा करते हैं."

सच यह है कि सब नाम उसी अल्लाह के नाम हैं.

कुरान में लिखा है कि "सब अच्छे नाम उसी के नाम हैं." इस आयत के अन्दर जो शब्द "हिसना" यानी अच्छे या सुन्दर आया है वह इसलिये है कि उसके बिना भोले भाले कम समझ इनसान घबरा न जायें. मुहम्मद साहब ने एक मशहूर हदीस में कहा है—"लोगों से उनकी समझ के मुताबिक बात करो."

वही बात गीता में कही गई है.

अंगरेजी की एक कहावत है—"बच्चों को दूध दो और बड़ों को खाना." पर बड़ों को यह भी चाहिये कि प्रेम और मेहनत के साथ बच्चों को दूध से खाने की तरफ लाने की कोशिश करते रहें. दुनिया के सब मजहबों के पंडे, प्रोहित, मुल्ला और पादरी इस फिकर में रहते हैं कि जिन्दगी भर सबको दूध ही पिलाते रहें. इससे दुनिया के रूहानी मेदे कमजोर होते जा रहे हैं.

हर मजहब में इस तरह के फिरके मौजूद हैं. जिन फिरकों के लोगों को पूरा यकीन है कि ईश्वर अल्लाह ने कुछ लोगों को यानी उनके अपने फिरके के लोगों को इसी लिये बनाया है कि वह हमेशा के लिये स्वर्ग या जन्नत में रहें, और कुछ लोगों को यानी दूसरे सब फिरकों और मजहबों के लोगों को इसी लिये बनाया है कि वह हमेशा के लिये नरक या दोजख में रहें. बदकिस्मती से इस हालत में से भी हर मजहब को निकलना ही पड़ता है. ऐसे लोगों को प्रेम के साथ समझना चाहिये कि क्या सच मुच दया का सागर रहमान और रहीम अल्लाह ऐसा कठोर हो सकता है. वह धीरे धीरे सोचें कि दुनिया की सब अगली पिछली कौमों और सब इनसानों को एक ही ईश्वर अल्लाह ने बनाया है या अलग अलग ईश्वरों ने बनाया है? अगर एक ही ने बनाया है तो क्या सब अगले पिछले मजहबों में ईश्वर की बाबत वही बातें, वही सच्चाइयां और सब के भले के वही उसूल और वही हुक्म नहीं होने चाहियें? हां, उनमें इतना फरक हो सकता है जितना अलग अलग कौमों के रंगों, लिबासों, बोलियों और अलग अलग मुल्कों के हवा पानी और पैदावारों में है. पर यह फरक समझने वाले के लिये ऊपरी फरक ही होता है, बुनियादी नहीं.

گیتا میں بھی بھگوان نے صاف کہا ہے—

"جو لوگ شردھا یعنی ایمان اور وفاداری کے ساتھ دوسرے دیوتاؤں کی پوجا کرتے ہیں وہ بھی انجانے میں اور بے طریقے اُن سب روپوں کے پیچھے اصل میں میری ہی پوجا کرتے ہیں ."

سچ یہ ہے کہ سب نام اُسی اللہ کے نام ہیں .

قرآن میں لکھا ہے کہ "سب اچھے نام اُسی کے نام ہیں ." اِس آیت کے اندر جو شبد "حسنا" یعنی اچھے یا سندر آیا ہے وہ اس لئے ہے کہ اُس کے بنا بھولے بھالے کم سمجھ انسان گھبرا نہ جائیں . محمد صاحب نے ایک مشہور حدیث میں کہا ہے—"لوگوں سے اُن کی سمجھ کے مطابق بات کرو ."

یہی بات گیتا میں کہی گئی ہے .

انگریزی کی ایک کہاوت ہے—"بچوں کو دودھ دو اور بڑوں کو کھانا ." پر بڑوں کو یہ بھی چاہئیے کہ پریم اور محنت کے ساتھ بچوں کو دودھ سے کھانے کی طرف لانے کی کوشش کرتے رہیں . دنیا کے سب مذہبوں کے پنڈے، پروہت، ملا اور پادری اِس فکر میں رہتے ہیں کہ زندگی بھر سب کو دودھ ہی پلاتے رہیں . اِس سے دنیا کے روحانی میدے کمزور ہوتے جا رہے ہیں .

ہر مذہب میں اس طرح کے فرقے موجود ہیں جن فرقوں کے لوگوں کو پورا یقین ہے کہ ایشور اللہ نے کچھ لوگوں کو یعنی اُن کے اپنے فرقے کے لوگوں کو اسی لئے بنایا ہے کہ وہ ہمیشہ کے لئے سورگ یا جنت میں رہیں، اور کچھ لوگوں کو یعنی دوسرے سب فرقوں اور مذہبوں کے لوگوں کو اسی لئے بنایا ہے کہ وہ ہمیشہ کے لئے نرک یا دوزخ میں رہیں . بدقسمتی سے اِس حالت میں سے بھی ہر مذہب کو نکلنا ہی پڑتا ہے . ایسے لوگوں کو پریم کے ساتھ سمجھنا چاہئیے کہ کیا سچ مچ دیا کا ساگر رحمان اور رحیم اللہ ایسا کٹھور ہوسکتا ہے . وہ دھیرے دھیرے سوچیں کہ دنیا کی سب اگلی پچھلی قوموں اور سب انسانوں کو ایک ہی ایشور اللہ نے بنایا ہے یا الگ الگ ایشوروں نے بنایا ہے؟ اگر ایک ہی نے بنایا ہے تو کیا سب اگلے پچھلے مذہبوں میں ایشور کی بابت وہی باتیں، وہی سچائیاں اور سب کے بھلے کے وہی اصول اور وہی حکم نہیں ہونے چاہئیں؟ ہاں، اُن میں اتنا فرق ہوسکتا ہے جتنا الگ الگ قوموں کے رنگوں، لباسوں، بولیوں اور الگ الگ ملکوں کے ہوا پانی اور پیداواروں میں ہے . پر یہ فرق سمجھنے والے کے لئے سطحی فرق ہی ہوتا ہے، بنیادی نہیں .

कुरान के शब्द "इसमा" का मतलब समझाते हुए एक सूफ़ी ने अच्छा कहा है—

> बनामे आं कि ऊ नामे नदारद
> बहर नामे कि ख़्वानी सर बर आरद.

यानी उसका कोई नाम नहीं है लेकिन उसे जिस नाम से भी पुकारो उसी नाम से वह सर ऊंचा करके जवाब देता है.

कुरान में यह भी साफ़ लिखा है कि "ख़ैर (नेकी) और शर (बदी) दोनों अल्लाह ताला से हैं."

जलाल और तेज दोनों का एक ही मतलब है. ज़ात में 'वहदत' है 'सिफ़ात' में कसरत है. गुन अलग है पर एक ही ईश्वर आत्मा के आधार पर सब गुन ठहरे हुए हैं जो खुद निर्गुन है. सब धर्म अलग अलग है पर धर्मी सबका एक है जिसका कोई धर्म नहीं. जो सब अलग अलग धर्मों से ऊपर है.

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—"ओ अर्जुन, मुझसे ऊपर या बाहर और कोई चीज़ नहीं है. यह सब मुझ में इस तरह पिरोये हुए हैं जिस तरह सूत में माला के दाने. जितने 'सात्विक' भाव हैं और जितने 'राजस' भाव हैं और जितने 'तामस' भाव हैं वह सब मुझ से ही हैं. मैं उनमें नहीं हूँ, वह मुझ में हैं. सुख दुख, होना या न होना, डर, निडरता, नेक नामी, बदनामी, तप और दान सब मुझ से ही पैदा हुए हैं. आदमी की याददाश्त समझ और ना-समझी सब मुझ से ही हैं."

शंकराचार्य ने कहा है—

"पुन्य और पाप यानी सवाब और अज़ाब दोनों आदमी को बांधते हैं इसलिये दोनों पाप हैं." ज़ंजीर चाहे लोहे की हो और चाहे सोने की ज़ंजीर ज़ंजीर ही है.

बात ज़रा नाज़ुक है पर नेकी बिना बदी के ठहर नहीं सकती. इसलिये आख़ीर में बदी को मिटाने के लिये नेकी को भी मिटाना ही होगा.

जैन महात्मा भाग चन्द्र ने लिखा है—

> "परि नति सब जीवन की, तीन भांति बरनी
> एक पाप, एक पुन्य, एक राग हरनी
> ता में शुभ अशुभ अंध, दोऊ कर कर्म बंध
> वीत राग परि नति ही भव समुंद्र तरनी
> त्याग शुभ क्रिया कलाप करू मत कदाचे पाप
> शुभ में न मगन होई शुद्धता बिसरनी
> यावत शुद्ध उपयोग पावत नाहीं मनोग
> तावत ही करन योग कही पुन्य करनी

قرآن کے شبد "اسما" کا مطلب سمجھاتے ہوئے ایک صوفی نے اچھا کہا ہے—

> بنامے آں کہ او نامے ندارد
> بہر نامے کہ خوانی سر بر آرد

یعنی اس کا کوئی نام نہیں ہے لیکن اُسے جس نام سے بھی پکارو اسی نام سے وہ سر اونچا کر کے جواب دیتا ہے.

قرآن میں یہ بھی صاف لکھا ہے کہ 'خیر (نیکی) اور شر (بدی) دونوں اللہ تعالیٰ سے ہیں."

جلال اور تیج دونوں کا ایک ہی مطلب ہے. ذات میں 'وحدت' ہے 'صفات' میں کثرت ہے. گن الگ ہیں پر ایک ہی ایشور آتما کے آدھار پر سب گن ٹھہرے ہوئے ہیں جو خود نرگن ہیں. سب دھرم الگ الگ ہیں پر دھرمی سب کا ایک ہے جس کا کوئی دھرم نہیں. جو سب الگ الگ دھرموں سے اوپر ہے.

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے—" او ارجن، مجھ سے اوپر یا باہر اور کوئی چیز نہیں ہے. یہ سب مجھ میں اس طرح پروئے ہوئے ہیں جس طرح سوت میں مالا کے دانے. جتنے 'ساتوک' بھاؤ ہیں اور جتنے 'راجس' بھاؤ ہیں اور جتنے 'تامس' بھاؤ ہیں وہ سب مجھ سے ہی ہیں. میں اُن میں نہیں ہوں، وہ مجھ میں ہیں. سکھ دکھ، ہونا یا نہ ہونا، ڈر، نڈرتا، نیک نامی، بدنامی، تپ اور دان سب مجھ سے ہی پیدا ہوئے ہیں. آدمی کی یادداشت سمجھ اور ناسمجھی سب مجھ سے ہی ہیں."

شنکر آچاریہ نے کہا ہے—" پنیہ اور پاپ یعنی ثواب اور عذاب دونوں آدمی کو باندھتے ہیں اس لئے دونوں پاپ ہیں" زنجیر چاہے لوہے کی ہو اور چاہے سونے کی زنجیر زنجیر ہی ہے.

بات ذرا نازک ہے پر نیکی بنا بدی کے ٹھہر نہیں سکتی. اس لئے آخیر میں بدی کو مٹانے کے لئے نیکی کو بھی مٹانا ہی ہوگا.

جین مہاتما بھاگ چندر نے لکھا ہے—

> "پری نتی سب جیون کی، تین بھانت برنی
> ایک پاپ، ایک پن، ایک راگ ہرنی
> تا میں شبھ اشبھ اندھ دو او کر کرم بندھ
> ویت راگ پری نتی ہی بھو سمندر ترنی
> تیاگ شبھ کریا کلاپ کرو مت کداچے پاپ
> شبھ میں نہ مگن ہوئی شدھتا بسرنی
> یاوت شدھ اپیوگ پاوت نہیں منوگ
> تاوت ہی کرن یوگ کہی پن کرنی

सब रास्ते उसी तक पहुँचते हैं

ऊँच नीच दुविधा धार, चित परमाद को बिदार
ऊँचवी दिशा से गिरो मत अधो धरनी
भाग चन्द्र, या प्रकार जीवन है सुख अपार
याही के आधार स्याद्वाद की उचरनी.''

सारी दुनिया के सब जानदारों को तीन हालतों में से निकलना पड़ता है. पहली हालत खुदी और पाप की हालत है. दूसरी पर सेवा और नेकी की हालत है. तीसरी इन दोनों से ऊपर उठकर एक रस और एक रंगी की हालत. इस आखरी हालत में पाप और पुन्य अज़ाब और सवाब दोनों के बंधन टूट जाते हैं. तब ही आदमी हलका हो कर अपने रूप को पहचान कर भव सागर यानी ज़िंदगी के समुन्दर को पार कर सकता है. आदमी को चाहिए कि पुन्य या सवाब कमाने की इच्छा को छोड़ दे पर पाप या बुराई करने का ख्याल भी मन में न लाए तब उसका मन सच्चा और पाकी उसमें पैदा होगी. धीरज के साथ ऊँच नीच की उन सब हालतों को जो उस के जीवन में पैदा होती हैं बरदाश्त करता रहे. लेकिन साथ ही ध्यान रखे कि मन सच्चाई से हिलने न पाये. अपने को किसी तरह नीचे गिरने न दे दिल को क़ाबू में रखे, बहकने न दे. यही एक रास्ता है जिससे धीरे धीरे रूहानी शान्ति मिल सकती है और ज़िन्दगी सच्चे और अपार सुख की ज़िन्दगी बन सकती है जैन शास्त्रों में जिसे स्याद्वाद धर्म कहा गया है उस का निचोड़ यही है.

ईसाइयों की इंजील में और यहूदियों की पाक किताबों में भी बार बार और तरह तरह से यही चीज़ कही गई है.

हिन्दू धर्म में ईश्वर के नामों में रुद्र और मायावी. नाम भी मौजूद हैं.

इसी तरह इसलाम में अल्लाह को 'कह्हार' 'जब्बार' 'मुज़िल्ल' 'मुमीत' भी कहा गया है. सब रूप उसी के रूप हैं और वह सब रूपों से ऊपर है. वह एक रस है, एक रंग है, हर तरह एक है. अपनी अपनी समझ के मुताबिक़ उसे ध्यान में रखते हुए और उस पर ध्यान जमाये हुये आगे बढ़ते रहना यही उस तक पहुँचने का रास्ता और तरीक़ा है.

سب راستے اسی تک پہونچتے ہیں

اونچ نیچ دبدھا دھار، چت پرماد کو بدار
اونچی دشا سے گرو مت ادھو دھرنی
بھاگ چندر یا پرکار جیون ہے سکھ اپار
یاہی کے آدھار سیاد واد کی اُچرنی ۔''

یعنی دنیا کے سب جانداروں کو تین حالتوں میں سے نکلنا پڑتا ہے ۔ پہلی حالت خودی اور پاپ کی حالت ہے ۔ دوسری پر سیوا اور نیکی کی حالت ہے تیسری اِن دونوں سے اوپر اٹھکر ایک رس اور ایک رنگی کی حالت ۔ اِس آخری حالت میں پاپ اور پنیہ عذاب اور ثواب دونوں کے بندھن ٹوٹ جاتے ہیں تب ہی آدمی ہلکا ہو کر اپنے روپ کو پہچان کر بھو ساگر یعنی زندگی کے سمندر کو پار کر سکتا ہے ۔ آدمی کو چاہئے کہ پنیہ یا ثواب کمانے کی اچھا کو چھوڑ دے پر پاپ یا برائی کرنے کا خیال بھی من میں نہ لائے ۔ تب اُسکا من ستھرا اور سچی پاکی اُسمیں پیدا ہوگی ۔ دھیرج کے ساتھ اُونچ نیچ کی ان سب حالتوں کو جو اس کے جیون میں پیدا ہوتی ہیں برداشت کرتا رہے ۔ لیکن ساتھ ہی دھیان رکھے کہ من سچائی سے ڈگنے نہ پائے اپنے کو کسی طرح نیچے گرنے نہ دے دل کو قابو میں رکھے بہکنے نہ دے ۔ یہی ایک راستہ ہے جس سے دھیرے دھیرے روحانی شانتی مل سکتی ہے اور زندگی سچے اور اپار سکھ کی زندگی بن سکتی ہے ۔ جین شاستروں میں جسے سیاد واد دھرم کہا گیا ہے اُسکا نچوڑ یہی ہے ۔

عیسائیوں کی انجیل میں اور یہودیوں کی پاک کتابوں میں بھی بار بار اور طرح طرح سے یہی چیز کہی گئی ہے ۔

ہندو دھرم میں ایشور کے ناموں میں رودر اور مایاوی نام بھی موجود ہیں ۔

اِسی طرح اسلام میں اللہ کو 'قہار' 'جبار' 'مذل' اور 'ممیت' بھی کہا گیا ہے ۔ سب روپ اسی کے روپ ہیں اور وہ سب روپوں سے اوپر ہے ۔ وہ ایک رس ہے، ایک رنگ ہے، ہر طرح ایک ہے ۔ اپنی اپنی سمجھ کے مطابق اسے دھیان میں رکھتے ہوئے اور اس پر دھیان جمائے ہوئے آگے بڑھتے رہنا یہی اس تک پہونچنے کا راستہ اور طریقہ ہے ۔

देशवासियों से अपील

भूदान-यज्ञ की गंगोत्री.

गये साल गरमी के दिनों में मैं तेलंगाना में घूमता था. वहाँ जो विकट सवाल खड़ा था, उसके बारे में मेरा चिन्तन रोज चलता था. एक दिन हरिजनों की मांग पर मैंने गांव वालों से भूमि-दान की बात की. गांव वालों ने वह बात मान ली और मुझे पहला भूमि-दान मिला. अठारह अप्रैल का वह दिन था. उसके बाद भूमिदान-यज्ञ की कल्पना मुझे सूझी. और उसको तेलंगाना के दौरे में मैंने आजमाया. नतीजा अच्छा रहा. दो महीनों में बारह हजार एकड़ जमीन मिली. वहां की हालत सुलझाने में मेरा ख्याल है उससे बहुत मदद मिली. सारे देश पर उसका असर पड़ा. और आज हम देखते हैं कि तेलंगाना का वातावरण काफी शान्त हुआ है.

गांधी जी के जाने के बाद अहिंसा के जरिये काम करने के लिये मैं रास्ता ढूँढता था. मेवात के मुसलमानों को बसाने का सवाल उसी ख्याल से मैंने हाथ में लिया था. उसमें कुछ अनुभव मिला. उसी आधार पर मैंने तेलंगाना में जाने की हिम्मत की थी. वहां भूदान-यज्ञ की शक्ल में मुझे अहिंसा का दर्शन हुआ.

गंगा का बहाव.

तेलंगाना में जो भूदान मिला, उसके पीछे वहां की एक खास हालत थी. उस हालत के न होने से शायद हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में वह कल्पना चले या न चले, इस बारे में शक हो सकता था. उस शक के दूर करने के लिये दूसरे सूबों में भूदान-यज्ञ का आजमाना जरूरी था. प्लानिंग कमीशन के सामने मेरे विचार रखने के लिये पंडित नेहरू ने मुझे दावत दी. उस मकसद से मैं पैदल यात्रा में निकल पड़ा और दिल्ली तक दो महीने में करीब अठारह हजार एकड़ जमीन मुझे मिली. देखा कि अहिंसा को रास्ता देने के लिये जनता उत्सुक है.

पचीस लाख का पक्का इरादा.

उत्तर प्रदेश के सर्वोदय प्रेमियों की मांग पर मैंने भूमिदान-यज्ञ का उत्तर प्रदेश के व्यापक क्षेत्र में प्रयोग शुरू किया. वहां एक लाख से ज़ियादा देहात हैं. हर गांव में कम से कम एक सर्वोदय परिवार बनाया जाय और एक परिवार को कम या ज़ियादा पांच एकड़ ज़मीन दी जाये, ऐसे हिसाब से पांच लाख एकड़ ज़मीन हासिल करने का इरादा किया गया. बावजूद इसके कि बीच में तीन महीने बहुत सारे कार्यकर्ता चुनाव में लगे थे, लोगों

دیش واسیوں سے اپیل

بھودان یگیہ کی گنگوتری۔

گئے سال گرمی کے دنوں میں میں تیلنگانہ میں گھومتا تھا۔ وہاں جو وکٹ سوال کھڑا تھا' اُس کے بارے میں میرا چنتن روز چلتا تھا۔ ایک دن ہریجنوں کی مانگ پر میں نے گاؤں والوں سے بھومی دان کی بات کی۔ گاؤں والوں نے وہ بات مان لی اور مجھے پہلا بھومی دان ملا۔ اٹھارہ اپریل کا وہ دن تھا۔ اُس کے بعد بھومی دان یگیہ کی کلپنا مجھے سوجھی۔ اور اُس کو تیلنگانہ کے دورے میں میں نے آزمایا۔ نتیجہ اچھا رہا۔ دو مہینے میں بارہ ہزار ایکڑ زمین ملی وہاں کی حالت سلجھانے میں میرا خیال ہے اُس سے بہت مدد ملی۔ سارے دیش پر اُس کا اثر پڑا۔ اور آج ہم دیکھتے ہیں کہ تیلنگانہ کا واتاورن کافی شانت ہوا ہے۔

گاندھی جی کے جانے کے بعد اہنسا کے ذریعہ کام کرنے کے لئے میں راستہ ڈھونڈھتا تھا۔ میوات کے مسلمانوں کو بسانے کا سوال اُسی خیال سے میں نے ہاتھ میں لیا تھا۔ اُس میں کچھ انوبھو ملا۔ اُسی آدھار پر میں نے تیلنگانہ میں جانے کی ہمت کی تھی۔ وہاں بھودان یگیہ کی شکل میں مجھے اہنسا کا درشن ہوا۔

گنگا کا بہاؤ

تیلنگانہ میں جو بھودان ملا' اُس کے پیچھے وہاں کی ایک خاص حالت تھی۔ اُس حالت کے نہ ہونے میں شاید ہندستان کے دوسرے حصوں میں وہ کلپنا چلے یا نہ چلے' اِس بارے میں شک ہوسکتا تھا۔ اُس شک کے دور کرنے کے لئے دوسرے صوبوں میں بھودان یگیہ کو آزمانا ضروری تھا۔ پلاننگ کمیشن کے سامنے میرے وچار رکھنے کے لئے پنڈت نہرو نے مجھے دعوت دی۔ اُس مقصد سے میں پیدل یاترا میں نکل پڑا اور دلی تک دو مہینے میں قریب اٹھارہ ہزار ایکڑ زمین مجھے ملی۔ دیکھا کہ اہنسا کو راستہ دینے کے لئے جنتا اُتسک ہے۔

پچیس لاکھ کا پکا ارادہ۔

اُتر پردیش کے سرووِدے پریمیوں کی مانگ پر میں نے بھومی دان یگیہ کا اُتر پردیش کے وِیاپک چھیتر میں پریوگ شروع کیا۔ یہاں ایک لاکھ سے زیادہ دیہات ہیں۔ ہر گاؤں میں کم سے کم ایک سرووِدے پریوار بسایا جائے اور ایک پریوار کو کم یا زیادہ پانچ ایکڑ زمین دی جائے' ایسے حساب سے پانچ لاکھ ایکڑ زمین حاصل کرنے کا ارادہ کیا گیا تھا۔ باوجود اِس کے کہ بیچ میں تین مہینے بہت سارے کاریہ کرتا چناؤ میں لگے تھے' لوگوں

का सहयोग अच्छा रहा. एक लाख एकड़ तक हम पहुँच गये. मैं तो इसमें ईश्वर का हाथ देखता हूँ. मेरे बहुत सारे साथियों को भी ऐसा ही लगा. नतीजा यह हुआ कि सेवापुरी के सर्वोदय सम्मेलन में सबने मिल कर सारे हिन्दुस्तान में अगले दो साल के अन्दर कम से कम 25 लाख एकड़ ज़मीन प्राप्त करने का पक्का इरादा किया. यह बात अब आप लोगों को मालूम हो गयी है.

25 लाख एकड़ से हिन्दुस्तान के बे-ज़मीन वालों का मसला हल हो जाता है ऐसी बात नहीं. उसके लिये तो कम से कम पाँच करोड़ एकड़ ज़मीन चाहिये. लेकिन पहली किस्त के तौर पर अगर हम पचीस लाख एकड़ कर लेते हैं, और हिन्दुस्तान के पाँच लाख गांवों में अहिंसा का संदेश पहुँचा देते हैं, तो भूमि का ठीक ठीक इन्तज़ाम करने के लिये ज़रूरी हवा तैयार हो जायेगी, ऐसा मेरा यक़ीन है.

देने वालों में शबरी, सुदामा और सब पक्षों के लोग.

ज़मीन बड़े काश्तकारों और ज़मींदारों से तो मैं मांगता ही हूँ, लेकिन छोटे छोटे काश्तकारों से भी इसमें हाथ बंटाने की मैंने प्रार्थना की है. और मुझे कहने में खुशी होती है कि बड़े दिल वाले इन छोटे लोगों ने बहुत प्रेम से मेरी प्रार्थना सुनी है. इस यज्ञ में कई शबरियों ने अपने बेर दिये हैं और कई सुदामाओं ने अपने तंदुल समर्पण किये हैं. यह मेरे लिये एक जीवन भर याद रहने वाली भक्त गाथा हुई है. इसमें दरिद्रों को अपनी आत्मा साफ़ करने की प्रेरणा मिली है, और श्रीमानों को आत्म-शुद्धि और मालिकी भाव हटाने की.

मुझे भूमि सब तरह के लोगों ने दी है. हिन्दुओं ने दी है, मुसलमानों ने दी है, दूसरे धर्म वालों ने दी है. जो सब तरह से "सब हारा" गिने जायेंगे ऐसे हरिजनों ने भी दी है. जिनका भूमि पर अधिकार नहीं माना जाता ऐसी स्त्रियों ने भी दी है. देने वालों में सब तबक़ों और सब पक्षों के लोग शामिल हैं. दरिद्रनारायण को अपने खानदान का हिस्सा एक समझ कर हक़ के तौर पर दिया जाय, मैंने मांगा है. और वैसे ही भावना से लोगों ने दिया है.

'दान' की व्याख्या.

भूमिदान-यज्ञ में 'दान' शब्द आता है. उससे परहेज़ करने की ज़रूरत नहीं है. "दानम् संविभाग" दान यानी बराबर की तक़सीम. यह है शंकराचार्य के दान का मतलब. उसी मानी में हम उस शब्द का इस्तेमाल करते हैं. जिसको ज़मीन मिलेगी वह मुफ़्त खाने वाला नहीं है.

کا سہیوگ اچھا رہا . ایک لاکھ ایکڑ تک ہم پہونچ گئے . میں تو اِس میں ایشور کا ہاتھ دیکھتا ہوں . میرے بہت سارے ساتھیوں کو بھی ایسا ہی لگا . نتیجہ یہ ہوا کہ سیواپوری کے سروودے سمیلن میں سب نے ملکر سارے ہندستان میں اگلے دو سال کے اندر کم سے کم 25 لاکھ ایکڑ زمین پراپت کرنے کا پکا ارادہ کیا . یہ بات اب آپ لوگوں کو معلوم ہو گئی ہے .

25 لاکھ ایکڑ سے ہندستان کے بے زمین والوں کا مسئلہ حل ہو جاتا ہے ایسی بات نہیں . اُس کے لئے تو کم سے کم پانچ کروڑ ایکڑ زمین چاہئے . لیکن پہلی قسط کے طور پر اگر ہم پچیس لاکھ ایکڑ کرلیتے ہیں اور ہندستان کے پانچ لاکھ گاؤں میں اہنسا کا سندیش پہونچا دیتے ہیں تو بھومی کا ٹھیک ٹھیک اِنتظام کرنے کے لئے ضروری ہوا تیار ہو جائے گی . ایسا میرا یقین ہے .

دینے والوں میں شبری ، سداما اور سب پکشوں کے لوگ

زمین بڑے کاشتکاروں اور زمینداروں سے تو میں مانگتا ہی ہوں ، لیکن چھوٹے چھوٹے کاشتکاروں سے بھی اِس میں ہاتھ بٹانے کی میں نے پرارتھنا کی ہے . اور مجھے کہنے میں خوشی ہوتی ہے کہ بڑے دل والے اِن چھوٹے لوگوں نے بہت پریم سے میری پرارتھنا سنی ہے . اِس یگیہ میں کئی شبریوں نے اپنے بیر دیئے ہیں اور کئی سداماؤں نے اپنے تندل سمرپن کئے ہیں . یہ میرے لئے ایک جیون بھر یاد رہنے والی بھکت گاتھا ہوئی ہے . اِس میں دردروں کو اپنی آتما صاف کرنے کی پریرنا ملی ہے ، اور شریمانوں کو آتم شدھی اور مالکی بھاؤ ہٹانے کی

مجھے بھومی سب طرح کے لوگوں نے دی ہے ہندوؤں نے دی ہے ، مسلمانوں نے دی ہے ، دوسرے دھرم والوں نے دی ہے . جو سب طرح سے "سب ہارا" گنے جائینگے ایسے ہریجنوں نے بھی دی ہے . جن کا بھومی پر ادھیکار نہیں مانا جاتا ایسی استریوں نے بھی دی ہے . دینے والوں میں سب طبقوں اور سب پکشوں کے لوگ شامل ہیں . دردر نارائن کو اپنے خاندان کا ایک حصہ سمجھکر حق کے طور پر دیا جائے ، میں نے مانگا ہے . اور ویسے ہی بھاونا سے لوگوں نے دیا ہے .

'دان' کی ویاکھیا .

بھومی دان یگیہ میں 'دان' شبد آتا ہے . اُس سے پرہیز کرنے کی ضرورت نہیں ہے "دانم سم وبھاگ" دان یعنی برابر کی تقسیم . یہ ہے شنکراچاریہ کے دان کا مطلب . اسی معنی میں ہم اُس شبد کا استعمال کرتے ہیں . جس کو زمین ملے گی وہ مفت کھانے والا نہیں ہے .

[illegible] जमीन पर मेहनत मजदूरी करेगा, अपना पसीना उसमें मिलायेगा, तब खा सकेगा. इसलिये उसे दीन बनाने का कारन नहीं है. उसका अपना अधिकार हम उसे दिला रहे हैं.

तीन गुर.

हम मिन्नत से, प्रेम से और आज कल की हालत समझ कर मांगते हैं. हमारे तीन गुर हैं :—

1. हमारा विचार समझने पर अगर कोई नहीं देता है, तो उससे हम दुखी नहीं होते ; क्योंकि हम मानते हैं, जो आज नहीं देता है, वह कल देने वाला है. विचार का बीज उगे बिना नहीं रहता.

2. हमारा विचार समझ कर अगर कोई देता है, तो उससे हमें खुशी होती है. क्योंकि उससे सद्भावना पैदा होती है.

3. हमारा विचार समझे बिना किसी दबाव के कारन अगर कोई देगा तो उससे हमें दुख होगा. हमें किसी तरह जमीन बटोरना नहीं है. बल्कि साम्ययोग और सर्वोदय तबियत पैदा करनी है.

सब पारटियों के लिये काम.

मैं मानता हूँ कि यह एक ऐसा प्रोग्राम हमें मिला है जिसमें सब पारटियों के लोगों को एक साथ काम करने का मौका मिलता है. लोग कांगरेस की शुद्धि की बात करते हैं. शुद्धि की तो सब संस्थाओं को जरूरत है. लेकिन कांगरेस का नाम इसलिये लिया जाता है कि वह बड़ी संस्था है. मेरा विश्वास है कि कांगरेस और दूसरी संस्थायें अगर इस प्रोग्राम को अपनायेंगी और सत्य अहिंसा के तरीके से उसे चलायेंगी, तो उससे सबकी शुद्धि होगी, सबका बल बढ़ेगा और सब में एकता आयगी.

सहयोग की मांग.

मेरे हिन्दवासी भाइयो, आपसे मेरी प्रार्थना है कि इस जन भलाई के यज्ञ में अपनी शिरकत करें. और इस काम को कामयाब बना कर आर्थिक दायरे में अहिंसा कायम करें. मेरा इस काम के लिये तिहरा दावा है. एक तो यह कि, हिन्दुस्तान की सभ्यता या तहजीब के माफिक है; दूसरा, इसमें आर्थिक और समाजी इनकलाब का बीज है और तीसरा यह कि इससे दुनिया में शान्ति कायम करने के लिये मदद मिल सकती है.

मैं जानता हूँ कि सारे हिन्दुस्तान के सामने कोई प्रोग्राम रखने का मेरा हक नहीं है. लोगों को हुक्म देने वाला मैं कोई नेता नहीं हूँ. गांव वालों की सेवा को ही

وہ زمین پر محنت مشقت کرے گا اپنا پسینہ اُس میں ملائے گا تب کھا سکے گا . اِس لئے اُسے دین بنانے کا کارن نہیں ہے . اُس کا اپنا ادھیکار ہم اُسے دلا رہے ہیں .

تین گر .

ہم منت سے، پریم سے اور آج کل کی حالت سمجھ کر مانگتے ہیں . ہمارے تین گر ہیں :—

1. ہمارا وچار سمجھنے پر اگر کوئی نہیں دیتا ہے، تو اُس سے ہم دکھی نہیں ہوتے؛ کیونکہ ہم مانتے ہیں، جو آج نہیں دیتا ہے، وہ کل دینے والا ہے . وچار کا بیج اُگے بنا نہیں رہتا .

2. ہمارا وچار سمجھ کر اگر کوئی دیتا ہے، تو اُس سے ہمیں خوشی ہوتی ہے . کیونکہ اُس سے سدبھاونا پیدا ہوتی ہے .

3. ہمارا وچار سمجھے بنا کسی دباؤ کے کارن اگر کوئی دے گا تو اُس سے ہمیں دکھ ہوگا . ہمیں کسی طرح زمین بٹورنا نہیں ہے . بلکہ سامیہ یوگ اور سروودے کی طبیعت پیدا کرنی ہے .

سب پارٹیوں کے لئے کام .

میں مانتا ہوں کہ یہ ایک ایسا پروگرام ہمیں ملا ہے جس میں سب پارٹیوں کے لوگوں کو ایک ساتھ کام کرنے کا موقع ملتا ہے . لوگ کانگریس کی شدھی کی بات کرتے ہیں . شدھی کی تو سب سنستھاؤں کو ضرورت ہے . لیکن کانگریس کا نام اِس لئے لیا جاتا ہے کہ وہ بڑی سنستھا ہے . میرا وشواس ہے کہ کانگریس اور دوسری سنستھائیں اگر اِس پروگرام کو اپنائینگی اور ستیہ اہنسا کے طریقہ سے اُسے چلائینگی، تو اُس سے سب کی شدھی ہوگی، سب کا بل بڑھے گا اور سب میں ایکتا آئے گی .

سہیوگ کی مانگ .

میرے ہند واسی بھائیوں، آپ سے میری پرارتھنا ہے کہ آپ اِس جن بھلائی کے یگیہ میں اپنی شرکت کریں . اور اِس کام کو کامیاب بناکر آرتھک دائرے میں اہنسا قائم کریں . میرا اِس کام کے لئے تہرا دعویٰ ہے . ایک تو یہ کہ، ہندوستان کی سبھیتا یا تہذیب کے موافق ہے؛ دوسرا، اِس میں آرتھک اور سماجی انقلاب کا بیج ہے اور تیسرا یہ کہ اِس سے دنیا میں شانتی قائم کرنے کے لئے مدد مل سکتی ہے .

میں جانتا ہوں کہ سارے ہندوستان کے سامنے کوئی پروگرام رکھنے کا میرا حق نہیں ہے . لوگوں کو حکم دینے والا میں کوئی نیتا نہیں ہوں . گاؤں والوں کی سیوا کو ہی

अपनी परमार्थ-साधना समझने वाला मैं एक भंगी की राह पर चलने वाला एक मुसाफिर हूँ. आज अगर गांधी जी होते तो इस तरह लोगों के सामने मैं मौजूद नहीं होता. बल्कि वही देहात का भंगी काम और वही कांचन या पैसा मुक्त खेती का काम करता हुआ दिखाई पड़ता. लेकिन मजबूरन मुझे बाहर आना पड़ा है. और एक बड़े भारी यज्ञ का पुरोहित बनने की ज़ियादती करनी पड़ी है. यह ज़ियादती या शराफ़त जो कुछ भी हो, परमेश्वर को समर्पण करके मैं सब भाई बहनों से सहयोग की मांग करता हूँ.

अकबरपुर (उत्तर-प्रदेश) —विनोबा के
29.4 '52. प्रनाम

اپنی پرمارتھ سادھنا سمجھنے والا میں بھنگی کی راہ پر چلنے والا ایک مسافر ہوں ۔ آج اگر گاندھی جی ہوتے تو اس طرح لوگوں کے سامنے میں موجود نہیں ہوتا ۔ بلکہ وہی دیہات کا بھنگی کام اور وہی کانچن یا پیسہ مکت کھیتی کا کام کرتا ہوا دکھلائی پڑتا ۔ لیکن مجبوراً مجھے باہر آنا پڑا ہے ۔ اور ایک بڑے بھاری یگیہ کا پروہت بننے کی زیادتی کرنی پڑی ہے یہ زیادتی یا شرافت جو کچھ بھی ہو، پرمیشور کو سمرپن کرکے میں سب بھائی بہنوں سے سہیوگ کی مانگ کرتا ہوں ۔

اکبرپور (اُتر پردیش) —ونوبا کے
29 . 4 . 52 پرنام

'नया हिन्द' का नजरिया

'नया हिन्द' के अप्रैल नम्बर में एडीटर की तरफ से एक नोट था—"खूबसूरती मैच-एक कलंक." हमारे पढ़ने वालों में से कुछ को वह नोट भला नहीं लगा. उन्होंने हम से कुछ सवाल किये जो इस किस्म के हो सकते हैं.

(1) यह न मर्दानगी है न शराफ़त कि कोई मर्द किसी औरत की आबरू पर हाथ डाले.

(2) शर्म, हया, लज्जा नाम के जेवर आदमी ने औरत को काबू में रखने के लिये गढ़ लिये हैं.

(3) क्या एडीटर साहब को देहाती बहनों की तरफ से कोई मुख्तार नामा मिला हुआ है? और फिर वह बहनें बड़ी बूढ़ी बदसूरत औरतें थीं या जवान खूबसूरत.

एक साहब ने तो जोश में आकर यह भी लिख मारा है कि हर औरत जिसे खुदा ने खूबसूरत जिस्म दिया है वह जरूर उस पर नाज करती है. वह क्यों न उसकी नुमाइश करें. वही बुज़ुर्ग अपने तजुर्बे के बल पर यह भी लिखते हैं कि सिर्फ बड़ी बूढ़ी औरतें ही अपनी चारदीवारी में बन्द रह कर नेक चलनी को सराहती हैं. अपने मुंह मियां मिट्ठू बनती हैं. ईश्वर जाने वह सच कहती हैं या झूट.

(4) एडीटर साहब को यह मुनासिब नहीं है कि वह गांधी जी के नाम की आड़ लें.

(5) एडीटर को यह भी हक़ नहीं है कि गांधी जी के नाम की ओट लेकर लेडी रामा राव, हाई कोर्ट के जजों, नये पुराने मिनिस्टरों और दूसरे बड़े आदमियों को बेवकूफ बनाये.

'نیا هند' کا نظریه

'نیا هند' کے اپریل نمبر میں ایڈیٹر کی طرف سے ایک نوٹ تھا—" خوبصورتی میچ - ایک کلنک ." ہمارے پڑھنے والوں میں سے کچھ کو وہ نوٹ بھلا نہیں لگا ۔ انہوں نے ہم سے کچھ سوال کئے جو اس قسم کے ہو سکتے ہیں ۔

(1) یہ نہ مردانگی ہے نہ شرافت کہ کوئی مرد کسی عورت کی آبرو پر ہاتھ ڈالے ۔

(2) شرم، حیا، لجا نام کے زیور آدمی نے عورت کو قابو میں رکھنے کے لئے گڑھ لئے ہیں ۔

(3) کیا ایڈیٹر صاحب کو دیہاتی بہنوں کی طرف سے کوئی مختار نامہ ملا ہوا ہے ؟ اور پھر وہ بہنیں بڑی بوڑھی بد صورت عورتیں تھیں یا جوان خوبصورت ۔

ایک صاحب نے تو جوش میں آ کر یہ بھی لکھ مارا ہے کہ ہر عورت جسے خدا نے خوبصورت جسم دیا ہے وہ ضرور اس پر ناز کرتی ہے ۔ وہ کیوں نہ اسکی نمائش کرے ۔ وہی بزرگ اپنے تجربے کے بل پر یہ بھی لکھتے ہیں کہ صرف بڑی بوڑھی عورتیں ہی اپنی چار دیواری میں بند رہ کر نیک چلنی کو سراہتی ہیں ۔ اپنے منہ میاں مٹھو بنتی ہیں ۔ ایشور جانے وہ سچ کہتی ہیں یا جھوٹ ۔

(4) ایڈیٹر صاحب کو یہ مناسب نہیں ہے کہ وہ گاندھی جی کے نام کی آڑ لیں ۔

(5) ایڈیٹر کو یہ بھی حق نہیں ہے کہ گاندھی جی کے نام کی اوٹ لے کر لیڈی راما راؤ، ہائی کورٹ کے ججوں، نئے پرانے منسٹروں اور دوسرے بڑے آدمیوں کو بیوقوف بنائے ۔

पहले सवाल की बुनियाद में 296 सफ़े के तीसरे पैरे की शुरू की यह लाइन हो सकती है.

"खूबसूरती के इस बेहयाई भरे तमाशे में हाई कोर्ट के जज, नये मिनिस्टर, पुराने मिनिस्टर, रईस वग़ैरा किसी न किसी रूप में शरीक हुए हैं."

या आप फिर 297 सफ़े के तीसरे पैरे की बीच की यह दो लाइनें हो सकती हैं.

"लेडी रामा राव से हमारी अपील है कि ज़रा होश में आवें और याद करें किस मिट्टी में पाली पोसी गई हैं. बहन इन्द्रानी (मिस इण्डिया) से हमारी अपील है कि एक बार ठोकर खाई सो खाई. आगे उसी गढ़े में गिरने से क्या फ़ायदा और कौन खूबसूरती की बात है ?"

अब देखना यह है कि यह मिस बम्बई, मिस कलकत्ता, मिस दिल्ली वग़ैरा छांटने के तमाशे बेहयाई भरे थे या नहीं. कभी कभी जोश में आ कर समझदार से समझदार आदमी बेवक़ूफ़ी और बेहयाई से भरे काम कर बैठता है और जब कभी कोई नेशन जोश में आ जाती है या मुक़ाबले के लिये उमड़ उठती है तब तो मुश्किल से ही दो चार दस समझदार रह जाते हैं जो उस बाढ़ में न बह जावें. मिसाल के तौर पर हिन्दुस्तान की आज़ादी से कुछ पहले और ठीक बाद में जो हिन्दू मुसलमान लड़ाइयां हुईं क्या उनमें अनगिनत काम ऐसे नहीं हुए जो बेवक़ूफ़ी और बेहयाई से भरे हुये थे, और क्या उन कामों में समझदार से समझदार आदमी शामिल नहीं थे ? जोश ठंडा होने के कुछ दिनों बाद ही हिन्दू और मुसलमान यह तय कर पाये कि उनके वह सब काम निहायत बेवक़ूफ़ी और बेहयाई से भरे हुए थे, जिन्हें वह राजकाजी समझदारी का नाम दे रहे थे. द्रौपदी को भरी सभा में नंगा करने की कोशिश क्या कभी कौरव बेवक़ूफ़ी और बेहयाई समझ पाए. और सूपनखा की नाक काटने का काम तो शायद आज भी कोई हिन्दुस्तानी नासमझी और बेहयाई का काम बताने को तैयार नहीं.

जापान पर एटम बम गिराने के काम के ख़िलाफ़ दुनिया भर में सिर्फ़ एक आवाज़ उठी थी और क्या उस काम को अमरीकी नेशन ने आज तक भी ना-समझी और बेहयाई का काम माना ?

खूबसूरती मैच के लेख पर एतराज़ करने वाले एक दिल्ली के बुज़ुर्ग भी हैं. उनके जवाब में तो हम सिर्फ़ यही कहेंगे कि खुद दिल्ली में इस तरह के मैच के ख़िलाफ़ आवाज़ उठी थी और उसका असर मिस दिल्ली पर इतना ज़ोर का हुआ कि वह मिस इण्डिया के मैच में शामिल नहीं हुई.

پہلے سوال کی بنیاد میں 296 صفحے کے تیسرے پیرے کی شروع کی یہ لائن ہو سکتی ہے ۔

"خوبصورتی کے اس بے حیائی بھرے تماشے میں ہائی کورٹ کے جج، نئے منسٹر، پرانے منسٹر، رئیس وغیرہ کسی نہ کسی روپ میں شریک ہوئے ہیں ۔"

یا آپ پھر 297 صفحے کے تیسرے پیرے کی بیچ کی یہ دو لائنیں ہو سکتی ہیں ۔

"لیڈی راما راؤ سے ہماری اپیل ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالی پوسی گئی ہیں ۔ بہن اندرانی (مس انڈیا) سے ہماری اپیل ہے کہ ایک بار ٹھوکر کھائی سو کھائی آگے اسی گڈھے میں گرنے سے کیا فائدہ اور کون خوبصورتی کی بات ہے ؟"

اب دیکھنا یہ ہے کہ یہ مس بمبئی، مس کلکتہ، مس دلی وغیرہ چھانٹنے کے تماشے بے حیائی بھرے تھے یا نہیں ۔ کبھی کبھی جوش میں آکر سمجھدار سے سمجھدار آدمی بیوقوفی اور بے حیائی سے کام کر بیٹھتا ہے ۔ اور جب کبھی کوئی نیشن جوش میں آ جاتی ہے یا مقابلے کے لئے امڈ اٹھتی ہے تب تو مشکل سے ہی دو چار دس سمجھدار رہ جاتے ہیں جو اس باڑھ میں نہ بہہ جائیں ۔ مثال کے طور پر ہندستان کی آزادی سے کچھ پہلے اور ٹھیک بعد میں جو ہندو مسلمان لڑائیاں ہوئیں کیا ان میں ان گنت کام ایسے نہیں ہوئے جو بیوقوفی اور بے حیائی سے بھرے ہوئے تھے، اور کیا ان کاموں میں سمجھدار سے سمجھدار آدمی شامل نہیں تھے ؟ جوش ٹھنڈا ہونے کے کچھ دنوں بعد ہی ہندو اور مسلمان یہ طے کر پائے کہ ان کے وہ سب کام نہایت بیوقوفی اور بے حیائی سے بھرے ہوئے تھے، جنہیں وہ راج کاجی سمجھداری کا نام دے رہے تھے ۔ دروپدی کو بھری سبھا میں ننگا کرنے کی کوشش کیا کبھی کورو بیوقوفی اور بے حیائی سمجھ پائے اور سروپ نکھا کی ناک کاٹنے کا کام تو شاید آج بھی کوئی ہندستانی ناسمجھی اور بے حیائی کا کام بتانے کو تیار نہیں ۔

جاپان پر ایٹم بم گرانے کے کام کے خلاف دنیا بھر میں صرف ایک آواز اٹھی تھی اور کیا اس کام کو امریکی نیشن نے آج تک بھی نا سمجھی اور بے حیائی کا کام مانا ؟

خوبصورتی میچ کے لیکھ پر اعتراض کرنے والے ایک دلی کے بزرگ بھی ہیں ۔ ان کے جواب میں تو ہم صرف یہی کہیں گے کہ خود دلی میں اس طرح کے میچ کے خلاف آواز اٹھی تھی اور اس کا اثر مس دلی پر اتنی زور کا ہوا کہ وہ مس انڈیا کے میچ میں شامل نہیں ہوئیں ۔

हम यह जानते हैं कि जिस तरह सँवरना मर्दों का काम है वैसे ही सिंगार करना औरतों का काम है. पर सँवरना और सिंगार करना सिर्फ़ सँवरने और सिंगार करने के लिये हो यानी अपनी सज धज सिर्फ़ दूसरों को दिखाने के लिये हो तो यह बेहयाई और बेशर्मी है.

जब किसी के घर बारात आती है तो दूल्हा को देखने के लिये हर उम्र की लड़कियाँ सज धज कर बाज़ार में आती हैं, छतों पर खड़ी होती हैं, अपने घर की खिड़कियों में से झांकती हैं, उन्हें बेशर्म और बेहया कोई नहीं कहता क्योंकि उनकी नियत दूल्हा देखने की होती है. पर उसी बारात को देखने अगर सज धज कर वेश्यायें अपनी खिड़कियों से झांकने लगें तो उन्हें सब बेहया कहते हैं क्योंकि उनकी नियत देखने की नहीं अपने को दिखाने की होती है.

सिर्फ़ इसलिये सजना कि मैं सब से ज़ियादा ख़ूबसूरत समझी जाऊं वज़ादारी और हयादारी में कैसे शामिल हो सकता है क्योंकि ख़ूबसूरत साबित होने के लिये चेहरे मोहरे की बनावट और कपड़े ही काफ़ी नहीं होते. इनसे कहीं ज़ियादा उन चीज़ों की ज़रूरत होती है जो जाएँ मर्दों को रिझाने के काम में आती हैं. तब फिर इस काम को वज़ादारी और हयादारी का काम कैसे कहा जा सकता है?

हम मिस कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली या मिस इन्डिया में से किसी एक के भाई, बाप या क़रीबी रिश्तेदार बनकर ही इस खेल की अच्छाई बुराई के ठीक-ठाक नतीजे पर पहुंच सकते हैं. 'नया हिन्द' के लेख के समझने में और भी आसानी हो सकती है अगर हमारे पढ़ने वाले यह समझ लें कि यह तमाशा कुछ पैसे वालों ने क्यों और किस ग़रज़ से किया. जिस देश में देवदासियां गंदा दासियों का रूप ले सकती हैं उस देश में पैसे के लोभ में आ कर ख़ूबसूरती मैच खड़ा कर देना हमारी संस्कृति के लिये कितना ख़तरनाक साबित होगा इसका अन्दाज़ा वह साहब लगायें जो 'नया हिन्द' के नायब एडीटर पर अपने ख़तों में छींटें फेंक रहे हैं और ज़ोर के फ़िक़रे कस रहे हैं.

दूसरा सवाल कि शर्म लिहाज़ औरत को क़ाबू में करने के लिये तैयार की गई हैं, पहले सवाल से जो ग़ुस्सा पैदा हुआ है उसी की शाख़ है. ये शर्म और बेहया लफ़्ज़ इतने औरतों के लिए काम में नहीं आते जितने मर्दों के लिये. शर्म मर्दों के लिये उतनी ही ज़रूरी है जितनी औरतों के लिये—अगर यह बात ठीक मान ली जाये कि औरतों को क़ाबू में करने के लिए आदमी ने शर्म को गढ़ लिया है तब यह बात भी ठीक समझी जानी चाहिये कि औरत ने आदमी को क़ाबू में रखने के लिये शर्म का

ہم یہ مانتے ہیں کہ جس طرح سنورنا مردوں کا کام ہے ویسے ہی سنگار کرنا صرف عورتوں کا کام ہے۔ پر سنورنا اور سنگار کرنا صرف سنورنے اور سنگار کرنے کے لئے ہو یعنی اپنی سج دھج صرف دوسروں کو دکھانے کے لئے ہو تو وہ بےحیائی اور بےشرمی ہے۔

جب کسی کے گھر برات آتی ہے تو دولہے کو دیکھنے کے لئے ہر عمر کی لڑکیاں سج دھج کر بازار میں آتی ہیں، چھتوں پر کھڑی ہوتی ہیں، اپنے گھر کی کھڑکیوں میں سے جھانکتی ہیں، انہیں بےشرم اور بےحیا کوئی نہیں کہتا کیونکہ ان کی نیت دولہا دیکھنے کی ہوتی ہے پر اسی برات کو دیکھنے اگر سج دھج کر ویشیائیں اپنی کھڑکیوں سے جھانکنے لگیں تو انہیں سب بےحیا کہتے ہیں کیونکہ ان کی نیت دیکھنے کی نہیں اپنے کو دکھانے کی ہوتی ہے۔

صرف اس لئے سجنا کہ میں سب سے زیادہ خوبصورت سمجھی جاؤں وضع داری اور حیا داری میں کیسے شامل ہو سکتا ہے کیونکہ خوبصورت ثابت ہونے کے لئے چہرے مہرے کی بناوٹ اور کپڑے ہی کافی نہیں ہوتے ان سے کہیں زیادہ ان چیزوں کی ضرورت ہوتی ہے جو چیزیں مردوں کو رجھانے کے کام میں آتی ہیں تب پھر اس کام کو وضع داری اور حیا داری کا کام کیسے کہا جا سکتا ہے؟

ہم مس کلکتہ، بمبئی، دلی یا مس انڈیا میں سے کسی ایک کے بھائی، باپ یا قریبی رشتے دار بن کر ہی اس کھیل کے اچھائی برائی کے ٹھیک ٹھیک نتیجے پر پہنچ سکتے ہیں۔ 'نیا ہند' کے لیکھ سمجھنے میں اور بھی آسانی ہو سکتی ہے اگر ہمارے پڑھنے والے یہ سمجھ لیں کہ یہ تماشہ کچھ پیسے والوں نے کیوں اور کس غرض سے کیا۔ جس دیش میں دیو داسیاں گندا داسیوں کا روپ لے سکتی ہیں اس دیش میں پیسے کے لوبھ میں آ کر خوبصورتی میچ کھڑا کر دینا ہماری سنسکرتی کے لئے کتنا خطرناک ثابت ہوگا اس کا اندازہ وہ صاحب لگائیں جو 'نیا ہند' کے نائب ایڈیٹر پر اپنے خطوں میں چھینٹیں پھینک رہے ہیں اور زور کے فقرے کس رہے ہیں۔

دوسرا سوال کہ شرم لحاظ عورت کے قابو میں کرنے کے لئے تیار کی گئی ہیں، پہلے سوال سے جو غصہ پیدا ہوا ہے اسی کی شاخ ہے۔ یہ شرم اور بےحیا لفظ اتنے عورتوں کے لئے کام میں نہیں آتے جتنے مردوں کے لئے۔ شرم مردوں کے لئے اتنی ہی ضروری ہے جتنی عورتوں کے لئے—اگر یہ بات ٹھیک مان لی جائے کہ عورتوں کو قابو میں کرنے کے لئے آدمی نے شرم کو گڑھ لیا ہے تب یہ بات بھی ٹھیک سمجھی جانی چاہئے کہ عورت نے آدمی کو قابو میں رکھنے کے لئے شرم کا

अख़्तियार कर लिया है. अमरीका के हर आदमी को औरत के सामने आने पर अपनी पूरी टांगें ढकी रखनी ज़रूरी होती हैं. ऐसा न करना बेहयाई समझी जाती है. औरतों की तरह आदमी के वज़ादारी और हयादारी के क़ायदे हैं. और अगर वह उससे बाहर जाते हैं तो बेहया समझे जाते हैं.

तीसरा सवाल अपने ढंग का अनोखा है. अब जब तक किसी से मुख़्तार नामा न मिलेगा तो उनकी तरफ़ से कोई बात नहीं कही जा सकेगी. फिर जानवरों की तरफ़ से कोई कभी अपील न कर सकेगा, क्योंकि वह मुख़्तार नामा नहीं लिख सकते. और न फिर कोई अछूतों और आदिवासियों की तरफ़ के बोल सकेंगे अब जब वह औरतें जो आए दिन अपने शराबी पतियों से मार खाती रहती हैं और घर लुटवाती रहती हैं जब तक किसी लीडर को मुख़्तार नामा लिख कर न दे दें तब तक शराब बन्दी का कोई आन्दोलन नहीं किया जा सकता. हमें ऐसा मालूम होता है कि एतराज़ करने वाले साहब ने ज़रूर इन स्त्रियों से मुख़्तार नामा हासिल कर लिया है तभी वह उनकी तरफ़ से वकालत कर रहे हैं.

हम तो यही समझते आए हैं कि सच्चा पत्रकार वही है जो अपने आपको जनता का सच्चा वकील समझे अब शायद इस समझ में हमें तब्दीली करनी होगी.

चौथे सवाल के जवाब में हम यही कहेंगे कि 'नया हिन्द' गांधी जी की नाम की आड़ कभी नहीं लेता. हाँ, कभी किसी सिलसिले में उनका ज़िकर ज़रूर आ जाता है. गांधी जी जो कुछ कर गए या जो कुछ लिख कर धर गए 'नया हिन्द' वह सब पुराना समझता है. पर 'नया हिन्द' गांधी जी की स्पिरिट को हमेशा नया समझता है. उसकी नक़ल करने में उसे आनन्द आता है और वह स्पिरिट यही है कि मौक़े पर सच कहने से नहीं चूकना. सच्चाई को जहां तक बने मीठे से मीठे शब्दों में रखने की कोशिश करना और फिर भी किसी को कड़वी लगे तो उसकी गालियों को बरदाश्त कर लेना.

ख़ूबसूरती मैच के सिलसिले में गांधी जी का ज़िकर इन शब्दों में आया है.

'महात्मा गांधी अक्सर कहा करते थे कि उन्हें योरप वालों की हुकूमत से उतना डर नहीं है जितना उनके रहन सहन और उनकी ग़लत कल्चर के इस देश में फैलने से."

इन लाइनों में कोई आड़ नहीं ली गई. कल्चर के साथ ग़लत शब्द बेशक आ गया है पर वह सिर्फ़ निस्बत बताता है. उनकी कल्चर के मुताबिक़ बाप बेटी को प्लेटफ़ार्म पर चूम सकता है. इसकी नक़ल हिन्दुस्तानी

اختیار کر لیا ہے ۔ امریکہ کے ہر آدمی کو عورت کے سامنے آنے پر اپنی پوری ٹانگیں ڈھکی رکھنی ضروری ہوتی ہیں ۔ ایسا نہ کرنا بے حیائی سمجھی جاتی ہے ۔ عورتوں کی طرح آدمی کے وضع‌داری اور حیا داری کے قاعدے ہیں ۔ اور اگر وہ اس سے باہر جاتے ہیں تو بےحیا سمجھے جاتے ہیں ۔

تیسرا سوال اپنے ڈھنگ کا انوکھا ہے ۔ اب جب تک کسی سے مختار نامہ نہ ملے گا تو اُن کی طرف سے کوئی بات نہیں کہی جا سکیگی ۔ پھر جانوروں کی طرف سے کوئی کبھی اپیل نہ کر سکیگا' کیونکہ وہ مختار نامہ نہیں لکھ سکتے ۔ اور نہ پھر کوئی اچھوتوں اور آدیواسیوں کی طرف سے بول سکینگے ۔ اب جب وہ عورتیں جو آئے دن اپنے شرابی پتیوں سے مار کھاتی رہتی ہیں اور گھر لٹواتی رہتی ہیں جب تک کسی لیڈر کو مختار نامہ لکھکر نہ دے دیں تب تک شراب بندی کا کوئی آندولن نہیں کیا جا سکتا ۔ ہمیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اعتراض کرنے والے صاحب نے ضرور اِن استریوں سے مختار نامہ حاصل کر لیا ہے' تبھی وہ اُن کی طرف سے وکالت کر رہے ہیں ۔

ہم تو یہی سمجھتے ہیں کہ سچا پترکار وہی ہے جو اپنے آپ کو جنتا کا سچا وکیل سمجھے ۔ اب شائد اِس سمجھ میں ہمیں تبدیلی کرنی ہوگی ۔

چوتھے سوال کے جواب میں ہم یہی کہینگے کہ 'نیا ہند' گاندھی جی کی نام کی آڑ کبھی نہیں لیتا ۔ ہاں' کبھی کسی سلسلے میں اُن کا ذکر ضرور آجاتا ہے ۔ گاندھی جی جو کچھ کر گئے یا جو کچھ لکھکر دھر گئے 'نیا ہند' وہ سب پرانا سمجھتا ہے ۔ پر 'نیا ہند' گاندھی جی کی اسپرٹ کو ہمیشہ نئی سمجھتا ہے ۔ اسکی نقل کرنے میں اسے آنند آتا ہے اور وہ اسپرٹ یہی ہے کہ موقعے پر سچ کہنے سے نہیں چوکنا ۔ سچائی کو جہاں تک بنے میٹھے شبدوں میں رکھنے کی کوشش کرنا اور پھر بھی کسی کو کڑوی لگے تو اسکی گالیوں کو برداشت کر لینا ۔

خوبصورتی میچ کے سلسلے میں گاندھی جی کا ذکر اِن شبدوں میں آیا ہے ۔

'' مہاتما گاندھی اکثر کہا کرتے تھے کہ انہیں یورپ والوں کی حکومت سے اتنا ڈر نہیں ہے جتنا اُن کے رہن سہن اور انکی غلط کلچر کے اس دیش میں پھیلنے سے ۔''

اِن لائنوں میں کوئی آڑ نہیں لی گئی ۔ کلچر کے ساتھ غلط لفظ بے شک آگیا ہے پر وہ صرف نسبت بتاتا ہے ۔ انکی کلچر کے مطابق باپ بیٹی کو پلیٹ فارم پر چوم سکتا ہے ۔ اسکی نقل ہندستانی

बात [illegible] तो यह बुरा समझा जायेगा. योरप [illegible] कल्चर यहाँ के लिये एक दम ग़लत साबित होगी. इन शब्दों में न योरप की सारी कल्चर पर इलज़ाम है न उसके किसी एक हिस्से पर.

पाँचवाँ सवाल शायद इस फ़िक़रे के बल पर उठाया गया है कि "लेकिन राजा राव से हमारी अपील है कि ज़रा होश में आयें और याद करें कि किस मिट्टी में पाली पोसी गईं."

होश में आयें ज़रा भारी पड़ता है. मुहावरा है—होश करें, जिसके माने होते हैं ख़याल करें. पर होश में आयें लिखने का रिवाज अब काफ़ी चल पड़ा है. पर हम इतने गहरे क्यों जायें. सचमुच आदमी आन्दोलन के जोश में अपने होश को बैठता है और उसे होश में आने की बात कहना न कोई बहुत बड़ा गुनाह है और न इसका यही मतलब होता है कि कहने वाला सबको बेवक़ूफ़ समझता है. और फिर क्या बम्बई, क्या दिल्ली सभी जगह तो इस बैन के ख़िलाफ़ आन्दोलन हुआ, जुलूस निकाले गये और जुलूस में जो नारे लगाए गये उनके मुक़ाबले में होश में आयें शब्द इतना कमज़ोर पड़ जाता है कि कहीं दिखाई नहीं देता. और अगर बेहयाई से सोचा जाये तो जुलूस के नारों पर यह शब्द तैरता दिखाई देता है न कि डूबा और चिपका हुआ.

इन्हीं ख़तों में छोटे मुँह बड़ी बात का भी सीधे ना सीधे ज़िकर आया है. इसके बारे में हम इतना ही कहेंगे कि सब आदमियों के मुँह क़रीब क़रीब बराबर होते हैं. रही बड़ी बात की बात उसका यह हाल है कि जो बीज दरख़्त बन गया वह साया देता है और फल ज़रूर लगता है, जो न उग सका वह मर जाता है. पर इसी वजह से बीज यह नहीं सोचते कि वह ज़मीन में गिरना और उगना भी छोड़ दें.

—भगवानदीन

[illegible] تو یہ برا سمجھا جائیگا. یورپ کی ساری کلچر یہاں کے لئے ایک دم غلط ثابت ہوگی. ان لفظوں میں نہ یورپ کی ساری کلچر پر الزام ہے نہ اُس کے کسی ایک حصے پر.

پانچواں سوال شاید اِس فقرے کے بل پر اُٹھایا گیا ہے کہ "لیکن راما راؤ سے ہماری اپیل ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالی پوسی گئی ہیں."

ہوش میں آئیں ذرا بھاری پڑتا ہے. محاورہ ہے—ہوش کریں' جسکے معنی ہوتے ہیں خیال کریں. پر ہوش میں آئیں لکھنے کا رواج اب کافی چل پڑا ہے. پر ہم اتنے گہرے کیوں جائیں. سچ مچ آدمی آندولن کے جوش میں اپنے ہوش کھو بیٹھتا ہے اور اُسے ہوش میں لانے کی بات کہنا نہ کوئی بہت بڑا گناہ ہے اور نہ اِسکا یہی مطلب ہوتا ہے کہ کہنے والا سب کو بیوقوف سمجھتا ہے. اور پھر کیا بمبئی' کیا دلی سبھی جگہ تو اِس بین کے خلاف آندولن ہوا' جلوس نکالے گئے اور جلوس میں جو نارے لگائے گئے اُن کے مقابلے میں ہوش میں آئیں لفظ اتنا کمزور پڑ جاتا ہے کہ کہیں دکھائی نہیں دیتا. اور اگر بے حیائی سے سوچا جائے تو جلوس کے نعروں پر یہ لفظ تیرتا دکھائی دیتا ہے نہ کہ ڈوبا اور چپکا ہوا.

اِنہیں خطوں میں چھوٹے منہ بڑی بات کا بھی سیدھے نا سیدھے ذکر آیا ہے. اِسکے بارے میں ہم اتنا ہی کہینگے کہ سب آدمیوں کے منہ قریب قریب برابر ہوتے ہیں. رہی بڑی بات کی بات اُسکا یہ حال ہے کہ جو بیج درخت بن گیا وہ سایا دیتا ہے اور پھل ضرور لگتا ہے' جو نہ اُگ سکا وہ مر جاتا ہے. پر اِسی وجہ سے بیج یہ نہیں سوچتے کہ وہ زمین میں گرنا اور اُگنا بھی چھوڑ دیں.

—بھگوان دین

अन्तर क़ौमी आर्थिक कान्फ्रेंस

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[अप्रैल के दूसरे हफ़्ते में मास्को में एक बड़ी भारी अन्तर क़ौमी आर्थिक कान्फ्रेंस हुई थी. इसमें हिन्दुस्तान से भी लोग शरीक हुए थे. उनमें से एक ख़ास नाम डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का है, जिनसे 'नया हिन्द' के पाठक अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं. कुमारप्पा जी ने अपने सफ़र के दौरान में ग्रामोद्योग, सगनवाड़ी वर्धा, के मंत्री को जो ख़त लिखे और फिर मई के तीसरे हफ़्ते में हिन्दुस्तान लौटने के बाद "लोहे की दीवार के पीछे" नाम से जो महत्त्वपूर्ण लेख देश के अख़बारों को दिया, वह हम नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

1. मास्को का सफ़र

बम्बई में हम लोगों को प्रेग (चेकोस्लोवाकिया की राजधानी) ले जाने के लिये ब्रिटिश ओवरसीज़ एयर कारपोरेशन का एक हवाई जहाज़ किराये पर तय किया गया था, लेकिन ख़ास आख़िरी वक़्त पर न जाने क्यों कम्पनी ने इन्कार कर दिया. इसलिये जिस जहाज़ में जगह मिले उसमें जा कर अपनी जगह बनाने का इन्तज़ाम हम सब को करना पड़ा. मैं इतवार 30 मार्च को बम्बई से दोपहर के दो बजे ट्रांस वर्ल्ड एयर लाइन के जहाज़ से रवाना हुआ. हमारा जहाज़ शाम को साढ़े सात बजे तेहरान पहुंचा और उसके एक घंटे बाद उतरा. आधी रात के क़रीब हम लोग क़ाहिरा पहुँच गये. फिर दूसरे दिन 31 तारीख़ की सुबह साढ़े छै बजे रोम में आकर रुके. वहां से हम लोग एल्प पहाड़ों के ऊपर उड़ते चले गये. इन पहाड़ों पर बर्फ़ ही बर्फ़ बिछी हुई थी. हम लोग क़रीब साढ़े अठारह हज़ार फ़िट ऊंचाई पर उड़ रहे थे. जब हम ज़्यूरिच के पास पहुंच रहे थे तो काली घटायें घिर आईं थीं. ज़्यूरिच पर हम उतरे तो पानी बरस रहा था और सारा इन्तज़ाम भी गड़ बड़ था. प्रेग के लिये कोई जहाज़ नहीं मिलता था. 5 अप्रैल तक के लिये सब जहाज़ बुक हो चुके थे. हमने कई सफ़र एजन्सियों से कोशिश की पर कोई सूरत नहीं निकल रही थी. आख़िरकार हम रेल पकड़ने के लिये मजबूर हुए लेकिन रेल जर्मनी में होकर जाती थी जहां का वीज़ा हमारे पास नहीं था. वीज़ा के लिये हम जरमन कौंसिलेट तक दौड़े भागे लेकिन 24 घंटे लग ही गये. इस तरह पहली अप्रैल को रेल पर सवार हो कर दूसरी तारीख़ को साढ़े नौ बजे प्रेग पहुंचे.

उसके बाद ज़ोरों से बर्फ़ पड़ रहा था. चारों तरफ़ मानो बर्फ़ की सफ़ेद चादर बिछी हुई थी. बहुत ही सुहावना दृश्य था.

انٹرنیشنل اکنامک کانفرنس

(ڈاکٹر جے. سی. کماریا)

[اپریل کے دوسرے ہفتے میں ماسکو میں ایک بڑی بھاری انٹرنیشنل اکنامک کانفرنس ہوئی تھی. اس میں ہندستان سے بھی لوگ شریک ہوئے تھے. ان میں سے ایک خاص نام ڈاکٹر جے. سی. کماریا کا ہے جس سے 'نیا ہند' کے پاٹھک اچھی طرح واقف ہیں. کماریا جی نے اپنے سفر کے دوران میں گرام ادیوگ، سگنواڑی وردھا، کے منتری کو جو خط لکھے اور پھر مئی کے تیسرے ہفتے میں ہندستان لوٹنے کے بعد "لوہے کی دیوار کے پیچھے" نام سے مہتوپورن لیکھ دیش کے اخباروں کو دیا، وہ ہم نیچے دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

1. ماسکو کا سفر

بمبئی میں ہم لوگوں کو پریگ (چیکوسلوواکیا کی راجدھانی) لے جانے کے لئے برٹش اوورسیز ایئر کارپوریشن کا ایک ہوائی جہاز کرائے پر طے کیا گیا تھا، لیکن خاص آخری وقت پر نہ جانے کیوں کمپنی نے انکار کر دیا. اس لئے جس جہاز میں جگہ ملے اس میں جاکر اپنی جگہ بنانے کا انتظام ہم سب کو کرنا پڑا. میں اتوار 30 مارچ کو بمبئی سے دوپہر کے دو بجے ٹرانس ورلڈ ائر لائن کے جہاز سے روانہ ہوا. ہمارا جہاز شام کو ساڑھے سات بجے طہران پہونچا اور اس کے ایک گھنٹے بعد اترا. آدھی رات کے قریب ہم لوگ قاہرہ پہونچ گئے. پھر دوسرے دن 31 تاریخ کی صبح ساڑھے چھ بجے روم میں آکر رکے. وہاں سے ہم لوگ ایلپ پہاڑوں کے اوپر اڑتے چلے گئے. ان پہاڑوں پر برف ہی برف بچھی ہوئی تھی. ہم لوگ قریب ساڑھے اٹھارہ ہزار فٹ اونچائی پر اڑ رہے تھے. جب ہم زورچ کے پاس پہونچ رہے تھے تو کالی گھٹائیں گھر آئی تھیں. زورچ پر ہم اترے تو پانی برس رہا تھا اور سارا انتظام بھی گڑبڑ تھا. پریگ کے لئے کوئی جہاز نہیں ملتا تھا. 5 اپریل تک کے لئے سب جہاز بک ہو چکے تھے. ہم نے کئی سفر ایجنسیوں سے کوشش کی پر کوئی صورت نہیں نکل رہی تھی. آخرکار ہم ریل پکڑنے کے لئے مجبور ہوئے لیکن ریل جرمنی میں ہوکر جاتی تھی جہاں کا ویزا ہمارے پاس نہیں تھا. ویزا کے لئے ہم جرمن کونسلیٹ تک دوڑے بھاگے لیکن 24 گھنٹے لگ ہی گئے. اس طرح پہلی اپریل کو ریل پر سوار ہوکر دوسری تاریخ کو ساڑھے نو بجے پریگ پہونچے.

وہاں زوروں سے برف پڑ رہا تھا. چاروں طرف مانو برف کی سفید چادر بچھی ہوئی تھی. بہت ہی سہانا دکھائی دیتا تھا.

[illegible] याद हो आया जब मैं श्रीनगर (कश्मीर का एक शहर) में पढ़ता था. तब के बाद मैंने इतनी बर्फ़ पहली बार देखी. ठंड भी बहुत शिद्दत से थी, टम्परेचर क़रीब पच्चीस डिग्री फ़ारन हाईट (यानी ज़ीरो डिग्री सेंटीग्रेड से चार पांच डिग्री कम) पर था.

प्रेग में हमें कोई दिक़्क़त नहीं पड़ी. चेक वालों ने बहुत ही बढ़िया इन्तज़ाम कर रखा था जिससे हमारी सारी दिक़्क़तें हल हो गईं. ज़्यूरिच से ही हमने उनको टेलीफ़ोन कर दिया था कि हम आ रहे हैं. इसलिये वह स्टेशन पर मोटर लेकर मौजूद थे और फ़ौरन ही हमें हवाई अड्डे पर पहुँचा दिया. वहां पर दो बजे हम एक रूसी जहाज़ पर सवार हुये और एक घंटे बाद आधी रात को मास्को (रूस की राजधानी) पहुंच गये. रास्ते भर बर्फ़ ही बर्फ़ दीखती थी.

मेरे धोती जामे ने लोगों का ध्यान बहुत खींचा और वह मुझसे हैरत के साथ पूछते थे कि इस कड़ाके के जाड़े में धोती जामे से कैसे काम चला लेता हूं. मैंने इशारा कर दिया औरतों की तरफ़ जो पास में खड़ी थीं और कहा कि इन की टांगें तो मुझसे भी कम ढकी हुई हैं. वह सब समझ गये और ज़ोर से हंस पड़े. मैं कह सकता हूं कि मेरा कुल सफ़र मज़ेदार रहा और मैं भला चंगा महसूस करता हूं.

जिस होटल में हम ठहराये गये हैं वह रूस सरकार के नामी क़िले क्रेमलिन के सामने ही है.

× × ×

मास्को में जो आर्थिक कानफ़्रेंस हो रही है वह एक अजीब व ग़रीब चीज़ है. हिन्दुस्तान में कभी ऐसी चीज़ देखने में नहीं आई. हमारे देश की कानफ़्रेंसें तो बच्चों के क्लास जैसी होती हैं जिन में अर्थशास्त्र के दक़ियानूसी "प्रोफ़ेसरों" को उसूली और किताबी गोलियां घोंट घोंट कर खिलाई जाती हैं. लेकिन इस कानफ़्रेंस के ज़ियादातर डेलीगेट मंजे हुये व्योपारी हैं. इस आर्थिक कानफ़्रेंस में कोई उसूली बहस या मीन मेख नहीं की जाती और न बाल की खाल खींची जाती है. इस कानफ़्रेंस के सामने तो बस यह मक़सद है कि ऐसे रास्ते और ढंग निकाले जायें जिनसे देश देश में आपस का व्योपार और लेन देन बढ़े, चाहे इस व्योपार से कैसा ही उसूल क्यों न टकराता हो.

हमारे हिन्दुस्तान से क़रीब पैंतीस नुमाइन्दे आये हैं. इनमें से सिर्फ़ तीन के बारे में कहा जा सकता है कि वह अर्थशास्त्री हैं. बाक़ी सब के सब काम करने वाले आदमी हैं जो कारख़ाने, व्योपार ट्रेड यूनियन या मज़दूर काम में लगे हुये हैं.

سمجھو لیا وہ زمانہ یاد ہو آیا جب میں سرانگر (کشمیر کا ایک شہر) میں پڑھتا تھا. تب کے بعد سے اتنا برف میں نے پہلی بار دیکھا. ٹھنڈ بھی بہت شدت سے تھی، ٹمپریچر قریب پچیس ڈگری فارن ہائٹ (یعنی زیرو ڈگری سینٹی گریڈ سے چار پانچ ڈگری کم) پر تھا.

پراگ میں ہمیں کوئی دقت نہیں پڑی. چیک والوں نے بہت ہی بڑھیا انتظام کر رکھا تھا جس سے ہماری ساری دقتیں ہوا ہوگئیں. زیورچ سے ہی ہم نے انکو ٹیلیفون کردیا تھا کہ ہم آ رہے ہیں. اسلئے وہ اسٹیشن پر موٹر لے کر موجود تھے اور فوراً ہی ہمیں ہوائی اڈے پر پہنچا دیا. وہاں پر دو بجے ہم ایک روسی جہاز پر سوار ہوئے اور ایک گھنٹے بعد آدھی رات کو ماسکو (روس کی راجدھانی) پہنچ گئے. راستے بھر برف ہی برف دیکھتی تھی.

میرے دھوتی جامے نے لوگوں کا دھیان بہت کھینچا اور وہ مجھ سے حیرت کے ساتھ پوچھتے تھے کہ اِس کڑاکے کے جاڑے میں دھوتی جامے سے کیسے کام چلا لیتا ہوں. میں نے اشارہ کردیا عورتوں کی طرف جو پاس میں کھڑی تھیں اور کہا کہ اِن کی ٹانگیں تو مجھ سے بھی کم ڈھکی ہوئی ہیں. وہ سب سمجھ گئے اور زور سے ہنس پڑے. میں کہہ سکتا ہوں کہ میرا کل سفر مزےدار رہا اور میں بھلا چنگا محسوس کرتا ہوں.

جس ہوٹل میں ہم ٹھہرائے گئے ہیں وہ روس سرکار کے نامی قلعے کریملن کے سامنے ہی ہے.

× × ×

ماسکو میں جو آرتھک کانفرنس ہو رہی ہے وہ ایک عجیب و غریب چیز ہے. ہندستان میں کبھی ایسی چیز دیکھنے میں نہیں آئی. ہمارے دیش کی کانفرنسیں تو بچوں کے کلاس جیسی ہوتی ہیں جن میں ارتھ شاستر کے دقیانوسی "پروفیسروں" کو اصولی اور کتابی گولیاں گھونٹ گھونٹ کر کھلائی جاتی ہیں. لیکن اس کانفرنس کے زیادہ تر ڈیلی گیٹ منجھے ہوئے بیوپاری ہیں. اس آرتھک کانفرنس میں کوئی اصولی بحث یا میخ میخ نہیں کی جاتی اور نہ بال کی کھال کھینچی جاتی ہے. اس کانفرنس کے سامنے تو بس یہ مقصد ہے کہ ایسے راستے اور ڈھنگ نکالے جائیں جن سے دیش دیش میں آپس کا بیوپار اور لین دین بڑھے، چاہے اس بیوپار سے کیسا ہی اصول کیوں نہ ٹکراتا ہو.

ہمارے ہندستان سے قریب پینتیس نمائندے آئے ہیں. ان میں سے صرف تین کے بارے میں کہا جا سکتا ہے کہ یہ ارتھ شاستری ہیں. باقی سب کے سب کام کرنے والے آدمی ہیں جو کارخانے، بیوپار ٹریڈ یونین یا مزدور کام میں لگے ہوئے ہیں.

[illegible] कदमें क्या ले रहा हूँ.

मेरे इन सुझावों को क़रीब क़रीब एक मत से पास किया है. ताज्जुब की बात यह है कि अंग्रेज़ी पार्लियामेंट के दो मेम्बरों ने और पाकिस्तान के 'डान' अखबार के एडीटर ने इनका समर्थन भी किया. यह सब सुझाव एक मसौदा कमेटी को दे दिये गये हैं और मैं नहीं कह सकता कि इनकी आखरी शकल क्या होगी. हैरत की बात यह है कि मेरे दूसरे ठहराव में यहां बहुत दिलचस्पी ली गई लेकिन हिन्द सरकार और कांग्रेस व इंडस्ट्री मिनिस्ट्री उस पर क्यों शंका करती है.

ठहराव

1. योजना-बन्द अन्तरक़ौमी व्योपार.

चूंकि बड़े बड़े और तरक़्क़ी-याफ़्ता देशों और पिछड़े हुए देशों के बीच खुला और आज़ाद व्योपार होने से पिछड़े हुए देश सौदे के लिहाज़ से घाटे में रहते हैं,

चूंकि अन्तर क़ौमी व्योपार की आज जो शक्ल बन गई है वह यही है कि लोगों के बीच माल की अदला बदली चलती रहे बिना इस लिहाज़ के कि योजना बन्दी और संतोष अर्थनीति के विचार से उस देश की असली ज़रूरतें क्या हैं,

चूंकि जग भर में योजना बन्द निज़ाम क़ायम होने के लिए ज़रूरी है कि उसके लिहाज़ से हर देश की बंधी हुई योजना हो,

चूंकि आज जो अन्तर क़ौमी व्योपार का संगठन है उसमें लेन देन इस तरह चलता है कि नैतिक और इनसानी पहलू ओझल हो जाते हैं और इस लेन देन में पिछड़े हुए देशों के साथ बहुत ना-इन्साफ़ी और ज़ियादती हो जाती है,

चूंकि अन्तर क़ौमी व्योपार के ग़लत राह पर चलने से देश देश में झगड़े खड़े हो जाते हैं,

और चूंकि जग शान्ति के हित में यह ज़रूरी है कि देश देश के बीच चीज़ों का लेन देन सही और वाजिब ढंग से होना चाहिये,

इसलिये यह कान्फ़्रेंस सिफ़ारिश करती है कि सारे अन्तर क़ौमी व्योपार को अच्छी तरह समझा बूझा जाये और फिर हर देश की योजना बन्द आर्थिक ढांचे में उसे बैठाया जाये, साथ ही साथ इस बात ख़्याल रहे कि लेन देन का असर उसमें शरीक होने वाले लोगों और मुल्कों को नुक़सान देह न साबित हो.

यह कान्फ़्रेंस यह भी सिफ़ारिश करती है कि अन्तर क़ौमी व्योपार का ऐसा संगठन किया जाये जो कि ऊपर लिखे हुए मक़सदों को हासिल करे, देश देश के बीच जो साझा और [illegible] मौजूद हैं उनको सोचे समझे, साथ ही

[illegible] کی نقلیں [illegible]
سعدے اور [illegible] کو ایک ایک [illegible]
سب نے مان لیا ہے. تعجب کی بات یہ ہے کہ انگریزی پارلیامنٹ کے دو ممبروں نے اور پاکستان کے 'ڈان' اخبار کے ایڈیٹر نے ان کا سمرتھن بھی کیا. یہ سب سجھاؤ ایک مسودہ کمیٹی کو دے دیئے گئے ہیں اور میں نہیں کہہ سکتا کہ ان کی آخری شکل کیا ہوگی. حیرت کی بات یہ ہے کہ میرے دوسرے ٹھہراؤ میں یہاں بہت دلچسپی لی گئی لیکن ہند سرکار اور کانگریس و انڈسٹری منسٹری اس پر [illegible] جھانکا کرتی ہے.

ٹھہراؤ

1. یوجنا بند انتر قومی بیوپار.

چونکہ بڑے بڑے اور ترقی یافتہ دیشوں اور پچھڑے ہوئے دیشوں کے بیچ کھلا اور آزاد بیوپار ہونے سے پچھڑے ہوئے دیش سودے کے لحاظ سے گھاٹے میں رہتے ہیں،

چونکہ انتر قومی بیوپار کی آج جو شکل بن گئی ہے وہ یہی ہے کہ لوگوں کے بیچ مال کی ادلا بدلی چلتی رہے بنا اس لحاظ کے کہ یوجنا بندی اور معقول ارتھ نیتی کے وچار سے اس دیش کی اصلی ضرورتیں کیا ہیں،

چونکہ جگ بھر میں یوجنا بند نظام قائم ہونے کے لئے ضروری ہے کہ اس کے لحاظ سے ہر دیش کی بندھی ہوئی یوجنا ہو،

چونکہ آج جو انتر قومی بیوپار کا سنگٹھن ہے اس میں لین دین اس طرح چلتا ہے کہ نیتک اور انسانی پہلو اوجھل ہو جاتے ہیں اور اس لین دین میں پچھڑے ہوئے دیشوں کے ساتھ بہت نا انصافی اور زیادتی ہو جاتی ہے،

چونکہ انتر قومی بیوپار کے غلط راہ پر چلنے سے دیش دیش میں جھگڑے کھڑے ہو جاتے ہیں،

اور چونکہ جگ شانتی کے ہت میں یہ ضروری ہے کہ دیش دیش کے بیچ چیزوں یا لین دین صحیح اور واجب ڈھنگ سے ہونا چاہئے،

اس لئے یہ کانفرنس سفارش کرتی ہے کہ سارے انتر قومی بیوپار کو اچھی طرح سمجھا بوجھا جائے اور پھر ہر دیش کی یوجنا بند آرتھک ڈھانچے میں اسے بٹھایا جائے، ساتھ ہی ساتھ اس بات کا خیال رہے کہ لین دین کا اثر اس میں شریک ہونے والے لوگوں اور ملکوں کو نقصان دہ نہ ثابت ہو.

یہ کانفرنس یہ بھی سفارش کرتی ہے کہ انتر قومی بیوپار کا ایسا سنگٹھن قائم کیا جائے جو کہ اوپر لکھے ہوئے مقصدوں کو حاصل کرے، دیش دیش کے بیچ جو ساجھی اور [illegible] ہیں ان کو سوجھ سمجھے. ساتھ ہی

[illegible] ध्यान रहे कि हर देश के रीति रिवाज और कल्चर का क्या तकाजा है. मजदूरों का यह भी काम होगा कि ऐसे ज्ञान को फैलाएं.

२. ग्रामोद्योग की तरक्की.

चूंकि पिछड़े हुये देशों की आर्थिक बनावट के बारे में खास तौर से विचार करने की जरूरत है,

चूंकि जो उसूल तरक्की-याफ्ता देशों पर लागू होते हैं वह पिछड़े हुये देशों पर अक्सर लागू नहीं होते,

चूंकि सभी पिछड़े देशों की यह खसूसियत है कि वहां पर दौलत या धन गैर-बराबर ढंग पर बटा हुआ है,

चूंकि सभी पिछड़े हुये देशों में खेती वाली जमीन पर जरूरत से ज़ियादा बोझ और बेरोजगारी है,

यह कांग्रेस सिफारिश करती है कि ऐसे देशों में मिलने वाला कच्चा माल, जहां तक हो सके, खर्च लायक माल की शक्ल में बदल दिया जाय और इस तरह बदला जाय कि सीधे सादे देहाती और घरेलू उद्योग धंधों के जरिये बेरोजगार और अधूरी रोजगार आबादी को मुनासिब काम मिल जाय जिससे जमीन का बोझा हलका हो.

इसलिये यह जरूरी है कि तरक्की-याफ्ता देशों के बड़े बड़े कारखानों में एक दूसरे को मुंह की खिलाने वाले तरीकों से जो माल तैयार किया जाता है वह पिछड़े हुये देशों में इनसानियत के नाते न भेजा जाय. और चाहे कुछ भी हो ऐसे माल को ग्रामोद्योग की जगह छीन कर उन्हें बरबाद न करने दिया जावे. जहां तक मुमकिन हो अन्तर कौमी व्यापार की योजना इस तरह बनाई जाय कि जिन जिन देशों की हालत इस तरह की हो और जहां इस तरह के साधन मौजूद हों कि ग्रामोद्योग पनप सकते हैं, वहां ग्रामोद्योग को मदद मिलनी चाहिये. ऐसे देशों में रहन सहन का दर्जा तभी ऊंचा उठ सकता है जब उनको कारामद काम मिले और उनकी बनाई चीजें बाहर भेजने के पहले उनके अपने ही खर्च में ले आई जायें.

2. लोहे की दीवार के पीछे

अर्थशास्त्रियों की अन्तर कौमी कानफ्रेंस के एक डेलीगेट की हैसियत से पिछले मार्च के महीने में मैं रूस गया था. मामूली रास्ता जर्मनी होकर है. लेकिन उस रास्ते में मौसम बहुत खराब था इसलिये हमें ज़्यूरिच और प्रेग होकर मास्को जाना पड़ा. कानफ्रेंस 13 अप्रैल से 23 अप्रैल तक दस दिन जारी रही. उसके बाद तीन दिन के लिये हम

مثلاً اِسباب کا بھی لحاظ رہے کہ اُس دیش کے ریت رواج اور کلچر کا کیا تقاضہ ہے مزدور کا کام ہوگا کہ ایسے گیان کو پھیلائے .

2. گرام اُدیوگ کی ترقی .

چونکہ پچھڑے ہوئے دیشوں کی آرتھک بناوٹ کے بارے میں خاص طور سے وچار کرنے کی ضرورت ہے .

چونکہ جو اُصول ترقی یافتہ دیشوں پر لاگو ہوتے ہیں وہ پچھڑے ہوئے دیشوں پر اکثر لاگو نہیں ہوتے .

چونکہ سبھی پچھڑے دیشوں کی یہ خصوصیت ہے . کہ وہاں پر دولت یا دھن غیر برابر ڈھنگ پر بٹا ہوا ہے .

چونکہ سبھی پچھڑے ہوئے دیشوں میں کھیتی والی زمین پر ضرورت سے زیادہ بوجھ اور بے روزگاری ہے'

یہ کانفرنس سفارش کرتی ہے کہ ایسے دیشوں میں ملنے والا کچا مال' جہاں تک ہو سکے' خرچ لائق مال کی شکل میں بدل لیا جائے اور اِس طرح بدلا جائے کہ سیدھے سادے دیہاتی اور گھریلو اُدیوگ دھندوں کے ذریعے بے روزگار اور ادھوری روزگاری آبادی کو مناسب کام مل جائے جس سے زمین کا بوجھا ہلکا ہو .

اِسلئے یہ ضروری ہے کہ ترقی یافتہ دیشوں کے بڑے بڑے کارخانوں میں ایک دوسرے کو منھ کی کھلانے والے طریقوں سے جو مال تیار کیا جاتا ہے وہ پچھڑے ہوئے دیشوں میں انسانیت کے ناتے نہ بھیجا جائے . اور چاہے کچھ بھی ہو مال کو گرام اُدیوگ کی جگہ چھین کر اُنہیں برباد نہ کرنے دیا جائے . جہاں تک ممکن ہو انٹر قومی بیوپار کی یوجنا اِس طرح بنائی جائے کہ جن جن دیشوں کی حالت اِس طرح کی ہو اور جہاں اِس طرح کے سادھن موجود ہوں کہ گرام اُدیوگ پنپ سکتے ہیں' وہاں گرام اُدیوگ کو مدد ملنی چاہئے . ایسے دیشوں میں رہن سہن کا درجہ تبھی اُونچا اُٹھ سکتا ہے جب اُن کو کارآمد کام ملے اور اُن کی بنائی چیزیں باہر بھیجنے کے پہلے اُن کے اپنے ہی خرچ میں لگائی جائیں .

2. لوہے کی دیوار کے پیچھے

ارتھ شاستریوں کی انٹر قومی کانفرنس کے ایک ڈیلیگیٹ کی حیثیت سے پچھلے مارچ کے مہینے میں میں روس گیا تھا. معمولی راستہ جرمنی ہوکر ہے. لیکن اس راستے میں موسم بہت خراب تھا اِس لئے ہمیں زیورچ اور پراگ ہوکر ماسکو جانا پڑا. کانفرنس 13 اپریل سے 23 اپریل تک دس دن جاری رہی . اسکے بعد تین دن کے لئے ہم

लेनिन ग्राड देखने गये. फिर [illegible] (उज़बक रिपब्लिक) की राजधानी ताशक़न्द में गुज़ारे. उसके बाद एक दिन [illegible] के शहर में [illegible] में रहे. तीन दिन स्तालिन ग्राड में रहे. यह सब जगहें अच्छी तरह देखीं और पहली मई के जलसों के लिये मास्को लौट आये. फिर जब मास्को से चले तो ताशक़न्द और काबुल होते हुए 11 मई को अहमदाबाद वापस आ गये. कुल मिला कर हमने क़रीब बारह हज़ार मील हवा का और क़रीब दो हज़ार मील रेल का सफ़र किया.

हम छै हफ़्ते रूस में ठहरे. इन छै हफ़्तों में हमने वहां के कारख़ाने देखे, बड़े बड़े खेत देखे जिनमें लोग मिल कर काम करते हैं, बड़े बड़े सरकारी फ़ार्म देखे जिनमें सरकार की तरफ़ से तजुरबे किये जाते हैं, वहां के कोआपरेटिव देखे, मज़दूरों के कलचरी महल और बच्चों के शानदार महल देखे और 'समाज सुधार' के बड़े बड़े मरकज़ देखे. इसी तरह की और भी बहुत सी चीज़ें देखीं. इन छै हफ़्तों के अन्दर हमें नये नये तजुरबे हुए, चीज़ों की नई नई क़िस्में और नये नये अन्दाज़े हमारे सामने आये. कहीं कहीं हम कुछ घबरा जाते थे और समझने में देर लगती थी. जो कुछ हमने देखा और सुना उसमें से कुछ मैं इस लेख में बयान कर रहा हूं. इस ग़रज़ से नहीं कि लोगों को कुछ नई बातें मालूम हों बल्कि इस ग़रज़ से कि दुनिया की तारीख़ में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर जो अनमोल तजुरबे हो रहे हैं उनसे अपने मुल्क के लिये हम कुछ सबक़ सीख सकें.

रूस ने दुनिया में एक ऐसा समाज क़ायम करने के लिये जिसमें सब इनसान बराबर हों, कोई ऊंच नीच न हो, एक बहुत बड़ा तजुरबा कर डाला. इस तजुरबे में रूस को शायद सोलह आने कामयाबी तो नहीं हुई लेकिन जितनी कामयाबी की उम्मीद की जाती थी उससे बहुत ज़ियादा ज़रूर हुई. और इतनी ज़ियादा हुई कि साम्राज-शाही मुल्कों में तहलका मच गया. इसलिये भी हमें रूस को समझने की कोशिश तो करनी ही चाहिये.

आम तौर पर कहा जाता है कि रूस ने अपने चारों तरफ़ एक लोहे की दीवार खड़ी कर रखी है. यह बात एक हद तक सच है. इसकी वजह से लोग और भी जानना चाहते हैं कि इस दीवार के पीछे क्या हो रहा है. सबसे पहली बात मैं यह बता दूं कि रूस की यह दीवार किसी बाहर वाले को नुक़सान पहुंचाने के लिये नहीं है बल्कि बाहर के [illegible] से अपने को और अपने नये तजुरबे को बचाने के लिये है. हम सब कोई छोटा सा दरख़्त या पौधा लगाते हैं तो उसके चारों तरफ़ बाड़ लगा देते हैं ताकि

[illegible] (ازبک ریپبلک) کی راجدھانی تاشقند میں گزارے. اسکے بعد ایک دن تفلس کے [illegible] میں رہے. تین دن اسٹالن گراڈ میں رہے. یہ سب جگہیں اچھی طرح دیکھیں اور پہلی مئی کے جلسوں کے لئے ماسکو لوٹ آئے پھر جب ماسکو سے چلے تو تاشقند اور کابل ہوتے ہوئے 11 مئی کو احمدآباد واپس آگئے. کل ملا کر ہم نے قریب بارہ ہزار میل ہوا کا اور قریب دو ہزار میل ریل کا سفر کیا.

ہم چھ ہفتے روس میں ٹھہرے. ان چھ ہفتوں میں ہم نے وہاں کے کارخانے دیکھے، بڑے بڑے کھیت دیکھے جن میں لوگ مل کر کام کرتے ہیں، بڑے بڑے سرکاری فارم دیکھے جن میں سرکار کی طرف سے تجربے کئے جاتے ہیں، وہاں کے کوآپریٹو دیکھے، مزدوروں کے کلچری محل اور بچوں کے شاندار محل دیکھے اور 'سماج سدھار' کے بڑے بڑے مرکز دیکھے. اسی طرح کی اور بھی بہت سی چیزیں دیکھیں. ان چھ ہفتے کے اندر ہمیں نئے نئے تجربے ہوئے. چیزوں کی نئی نئی قسمیں اور نئے نئے اندازے ہمارے سامنے آئے. کہیں کہیں ہم کچھ گھبرا جاتے تھے اور سمجھنے میں دیر لگتی تھی. جو کچھ ہم نے دیکھا اور سنا اس میں سے کچھ میں اس لیکھ میں بیان کر رہا ہوں. اس غرض سے نہیں کہ لوگوں کو کچھ نئی باتیں معلوم ہوں بلکہ اس غرض سے کہ دنیا کی تاریخ میں پہلی بار اتنے بڑے پیمانے پر جو انمول تجربے ہو رہے ہیں ان سے اپنے ملک کے لئے ہم کچھ سبق سیکھ سکیں.

روس نے دنیا میں ایک ایسا سماج قائم کرنے کے لئے جس میں سب انسان برابر ہوں، کوئی اونچ نیچ نہ ہو، ایک بہت بڑا تجربہ کر ڈالا. اس تجربے میں روس کو شاید سولہ آنے کامیابی تو نہیں ہوئی لیکن جتنی کامیابی کی امید کی جاتی تھی اس سے بہت زیادہ ضرور ہوئی. اور اتنی زیادہ ہوئی کہ سامراج شاہی ملکوں میں تہلکہ مچ گیا. اس لئے بھی ہمیں روس کو سمجھنے کی کوشش تو کرنی ہی چاہئے.

عام طور پر کہا جاتا ہے کہ روس نے اپنے چاروں طرف ایک لوہے کی دیوار کھڑی کر رکھی ہے. یہ بات ایک حد تک سچ ہے. اسکی وجہ سے لوگ اور بھی جاننا چاہتے ہیں کہ اس دیوار کے پیچھے کیا ہو رہا ہے. سب سے پہلی بات میں یہ بتا دوں کہ روس کی یہ دیوار کسی باہر والے کو نقصان پہنچانے کے لئے نہیں ہے بلکہ باہر کے [illegible] سے اپنے کو اور اپنے نئے تجربے کو بچانے کے لئے ہے. ہم سب کوئی چھوٹا سا درخت یا پودا لگاتے ہیں تو اسکے [illegible] کو [illegible] ہیں تاکہ

है की नाव [illegible] भी पार न कर पावें. इसी तरह [illegible] बच्चों के [illegible] पौधे भी रहते हैं [illegible] मनों को बचाने के लिये बीच में लोहे की सलाखें लगा दी जाती हैं. रूस की लोहे की दीवार केवल अमरीकी और यूरपी साम्राज्यशाही के चीतों और भेड़ियों से रूस को बचाने के लिये है. रूस एक नई तरह का समाज कायम करना चाह रहा है. जंगलों के ग़ुसलख़ानों के पानी से छोटे पौधे अक्सर मर जाते हैं. इसी तरह अमरीका और इंग्लिस्तान के ग़ुसलख़ानों का पानी अगर रूस में बहने दिया गया तो डर है कि वहां के नये समाजी तजुरबे को बड़ा नुक़सान पहुंच जावे. इसलिये रूस को अपने चारों तरफ़ बांध बांधने की ज़रूरत महसूस हुई. इस बांध की ग़रज़ केवल इतनी है कि जो विदेशी रूस के नये तजुरबे में दख़ल देना और उसे बिगाड़ना चाहते हैं उन्हें अलग रखा जावे.

हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में भी एक बड़ी लोहे की दीवार है. यह दीवार है राजा और प्रजा के बीच में, हाकिमों और महकूमों के बीच में. हमारे सरकारी अफ़सर हैट, कोट, पैन्ट और बूट पहन कर गांव में जाते हैं. ग़रीब किसान उन्हें देख कर डर जाते हैं, उनसे भागते हैं. डर, शक और बे-एतबारी की दीवार और पक्की होती रहती है. देखने वाले को यह दीवार गांव के झोंपड़ों से लेकर दिल्ली के "राष्ट्रपति भवन" तक बराबर दिखाई देगी.

मैं गांव वालों के बीच रहता हूं. मैं जानता हूं कि हमारे गांव वाले सरकारी अफ़सरों को भेड़िये और चीते समझते हैं जिनसे वह महसूस करते हैं कि अपने को बचाये रखने की ज़रूरत है. इस लोहे की दीवार को हटाने के लिये ही गांधी जी ने हमें खादी के सीधे सादे कपड़े पहनाये थे और रचनात्मक काम करने वाले इसी लिये खादी का कुरता धोती पहनते रहे. बाहर के किसी दबाव या बाहर की मदद से भारत अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता. इसके लिये हमें इस लोहे की दीवार को तोड़ कर गांव वालों के से बनकर गांव वालों के पास जाना होगा. हमें उन्हीं की तरह रहना होगा.

मिसाल के लिये दिल्ली में जो तड़क भड़क और रोब दाब दिखाया जाता है अपनी शान क़ायम रखने के लिये ("To maintain dignity") वही यह लोहे की दीवार है. हाकिम और महकूम के बीच कोई दीवार नहीं होनी चाहिये. तभी जनता का अपने हाकिमों पर भरोसा हो सकता है और बिना इस भरोसे के देश तरक़्क़ी नहीं कर सकता. आज हम सब रचनात्मक काम करने वाले यह महसूस कर रहे हैं कि सरकार और जनता के बीच में एक लोहे की दीवार खड़ी है. इसलिये इस दीवार को

رستے کی گائے یا بکریاں اسے چٹ نہ کر جائیں۔ اسی طرح چڑیا گھروں میں جہاں چیتے بھی رہتے ہیں اور بھیڑیے بھی مہمانوں کو بچانے کے لئے بیچ میں لوہے کی سلاخیں لگا دی جاتی ہیں۔ روس کی لوہے کی دیوار کیول امریکی اور یوروپی سامراج شاہی کے چیتوں اور بھیڑیوں سے روس کو بچانے کے لئے ہے۔ روس ایک نئی طرح کا سماج قائم کرنا چاہ رہا ہے۔ جنگلوں کے غسل خانوں کے پانی سے چھوٹے پودے اکثر مر جاتے ہیں۔ اسی طرح امریکہ اور انگلستان کے غسل خانوں کا پانی اگر روس میں بہنے دیا گیا تو ڈر ہے کہ وہاں کے نئے سماجی تجربے کو بڑا نقصان پہنچ جاوے۔ اسی لئے روس کو اپنے چاروں طرف باندھ باندھنے کی ضرورت محسوس ہوئی۔ اس باندھ کی غرض کیول اتنی ہے کہ جو ودیشی روس کے نئے تجربے میں دخل دینا اور اسے بگاڑنا چاہتے ہیں انہیں الگ رکھا جائے۔

ہمارے ملک ہندستان میں بھی ایک بڑی لوہے کی دیوار ہے۔ یہ دیوار ہے راجا اور پرجا کے بیچ میں، حاکموں اور محکوموں کے بیچ میں۔ ہمارے سرکاری افسر ہیٹ، کوٹ، پینٹ اور بوٹ پہن کر گاؤں میں جاتے ہیں۔ غریب کسان انہیں دیکھکر ڈر جاتے ہیں۔ ان سے بھاگتے ہیں۔ ڈر، شک اور بے اعتباری کی دیوار اور پکی ہوتی رہتی ہے۔ دیکھنے والے کو یہ دیوار گاؤں کے جھونپڑوں سے لے کر دلی کے "راشٹر پتی بھون" تک برابر دکھائی دے گی۔

میں گاؤں والوں کے بیچ رہتا ہوں۔ میں جانتا ہوں کہ ہمارے گاؤں والے سرکاری افسروں کو بھیڑیئے اور چیتے سمجھتے ہیں جن سے وہ محسوس کرتے ہیں کہ اپنے کو بچائے رکھنے کی ضرورت ہے۔ اس لوہے کی دیوار کو ہٹانے کے لئے ہی گاندھی جی نے ہمیں کھادی کے سیدھے سادے کپڑے پہنائے تھے اور رچناتمک کام کرنے والے اسی لئے کھادی کا کرتا دھوتی پہنتے رہے۔ باہر کے کسی دباؤ یا باہر کی مدد سے بھارت اپنے پیروں پر کھڑا نہیں ہو سکتا۔ اسکے لئے ہمیں اس لوہے کی دیوار کو توڑ کر گاؤں والوں کے سے بن کر گاؤں والوں کے پاس جانا ہوگا۔ ہمیں انہیں کی طرح رہنا ہوگا۔

مثال کے لئے دلی میں جو تڑک بھڑک اور رعب داب دکھایا جاتا ہے اپنی شان قائم رکھنے کے لئے ('To maintain dignity') وہی یہ لوہے کی دیوار ہے۔ حاکم اور محکوم کے بیچ کوئی دیوار نہیں ہونی چاہئے۔ تبھی جنتا کو اپنے حاکموں پر بھروسہ ہو سکتا ہے اور بنا اس بھروسے کے دیش ترقی نہیں کر سکتا۔ آج ہم سب رچناتمک کام کرنے والے یہ محسوس کر رہے ہیں کہ سرکار اور جنتا کے بیچ میں ایک لوہے کی دیوار کھڑی ہے۔ اس لئے اس دیوار کو

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सके, तभी हमारे [illegible] जनता [illegible] पहुंच सकते हैं और तभी यह लोहे की दीवार हट सकती है. रूस की लोहे की दीवार बाहर की दुनिया से अपने को बचाने के लिये है. भारत की यह लोहे की दीवार हमारे ही समाज के अन्दर बड़े छोटे, ऊंच नीच, अमीर, ग़रीब के फ़र्क़ को क़ायम रखती है और देश को एक नहीं होने देती.

इसी अपनी लोहे की दीवार की मदद से रूस ने अपने हाकिमों की सूझ और मुहब्बत के सहारे एक नया समाजी तजुरबा किया और उसने कामयाबी हासिल की. उनके यहां बड़े और छोटे, अमीर और ग़रीब एक दूसरे में मिल गये. वहां मामूली मज़दूरों और नौकरों के खाने, कपड़े, रहन सहन वग़ैरा में हमें बहुत कम फ़र्क़ दिखाई देता है. कम से कम मज़दूरी और बड़ी से बड़ी तनख़ाह में एक और दस का औसत है. सरकारी कारख़ाने के डायरेक्टर को पांच हज़ार रूबल माहवार मिलते हैं तो उन पढ़ मज़दूर औरत को जो झाड़ू देने का काम करती है पांच सौ रूबल माहवार मिलते हैं. अपने यहां हम इस पर अमल करें तो किसी भी मज़दूर या मेहतर को यहां सौ रुपये महीने से कम नहीं मिलना चाहिये और किसी भी बिरला या टाटा को एक हज़ार से ज़ियादा नहीं मिलना चाहिये. जब तक हम यह नहीं कर सकते तब तक न हम जनता को समझ सकते हैं और न जनता हमें, और न मुल्क तरक़्क़ी कर सकता है.

रूस में इसी लोहे की दीवार की बदौलत लोग निडर हो कर रहते हैं. उन्हें अपने लीडरों पर पूरा भरोसा है. वह समझते हैं कि बाहर की दुनिया में चाहे कुछ भी हो वह खुद अपने लीडरों के हाथों में सुरक्षित हैं. हमारे देश में इसका ठीक उल्टा है. इस देश में जनता का हर आदमी सरकारी अफ़सरों को और वज़ीरों को शक की निगाह से देखता है.

रूस में लगभग सब पैदावार सरकार के हाथों में है. डायरेक्टर, अफ़सर, मैनेजर और मज़दूर सब मिलकर काम करते हैं और सब को गुज़ारे के लिए काफ़ी मिलता है. लगभग सत्तर फ़ी सदी सरकारी आमदनी उद्योग धन्धों से है. इसी रक़म से सरकार उद्योग धन्धे चलाती है और आम जनता के भले के तरह तरह के काम करती है. रूस के बजट का पैंतीस फ़ी सदी तालीम और जनता की भलाई के कामों में ख़र्च होता है. चालीस फ़ी सदी देश की आर्थिक हालत सुधारने में ख़र्च होता है. बीस फ़ी सदी फ़ौज और हथियारों पर और बाक़ी पांच फ़ी सदी मुल्क के इन्तज़ाम पर.

[illegible] ہمارا [illegible] سماجی اور [illegible] ایک اونچ نیچ [illegible] جائے۔ تبھی ہم ہندوستانی جنتا کے دل تک پہنچ سکتے ہیں اور تب ہی یہ لوہے کی دیوار ہٹ سکتی ہے۔ روس کی لوہے کی دیوار باہر کی دنیا سے اپنے کو بچانے کے لئے ہے۔ بھارت کی یہ لوہے کی دیوار ہمارے ہی سماج کے اندر بڑے چھوٹے، اونچ نیچ، امیر، غریب کے فرق کو قائم رکھتی ہے اور دیش کو ایک نہیں ہونے دیتی۔

اسی اپنی لوہے کی دیوار کی مدد سے روس نے اپنے حاکموں کی سوجھ اور محبت کے سہارے ایک نیا سماجی تجربہ کیا اور اس میں کامیابی حاصل کی۔ ان کے یہاں بڑے اور چھوٹے، امیر اور غریب ایک دوسرے میں مل گئے۔ وہاں معمولی مزدوروں اور نوکروں کے کھانے، کپڑے، رہن سہن وغیرہ میں ہمیں بہت کم فرق دکھائی دیتا ہے۔ کم سے کم مزدوری اور بڑی سے بڑی تنخواہ میں ایک اور دس کا اوسط ہے۔ سرکاری کارخانے کے ڈائریکٹر کو پانچ ہزار روبل ماہوار ملتے ہیں تو ان پڑھ مزدور عورت کو جو جھاڑو دینے کا کام کرتی ہے پانچ سو روبل ماہوار ملتے ہیں۔ اپنے یہاں ہم اس پر عمل کریں تو کسی بھی مزدور یا مہتر کو یہاں سو روپئے مہینے سے کم نہیں ملنا چاہئے اور کسی بھی برلا یا ٹاٹا کو ایک ہزار سے زیادہ نہیں ملنا چاہئے۔ جب تک ہم یہ نہیں کر سکتے تب تک نہ ہم جنتا کو سمجھ سکتے ہیں اور نہ جنتا ہمیں، اور نہ ملک ترقی کر سکتا ہے۔

روس میں اسی لوہے کی دیوار کی بدولت لوگ نڈر ہو کر رہتے ہیں۔ انہیں اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ باہر کی دنیا میں چاہے کچھ بھی ہو وہ خود اپنے لیڈروں کے ہاتھوں میں سرکشت ہیں۔ ہمارے دیش میں جنتا کا ہر آدمی سرکاری افسروں کو اور وزیروں کو شک کی نگاہ سے دیکھتا ہے۔

روس میں لگ بھگ سب پیداوار سرکار کے ہاتھوں میں ہے۔ ڈائرکٹر، افسر، منیجر اور مزدور سب مل کر کام کرتے ہیں اور سب کو گذارے کے لئے کافی ملتا ہے۔ لگ بھگ ستر فی صدی سرکاری آمدنی ادیوگ دھندوں سے ہے۔ اسی رقم سے سرکار ادیوگ دھندے چلاتی ہے اور عام جنتا کے بھلے کے طرح طرح کے کام کرتی ہے۔ روس کے بجٹ کا پینتیس فی صدی تعلیم اور جنتا کی بھلائی کے کاموں میں خرچ ہوتا ہے۔ چالیس فی صدی دیش کی آرتھک دشا سدھارنے میں خرچ ہوتا ہے۔ بیس فی صدی فوج اور ہتھیاروں پر اور باقی پانچ فی صدی ملک کے انتظام پر۔

रूस की [illegible] की सरकार ने तमाम मामलात [illegible] थी. [illegible] की यह [illegible] उसी तरह का था [illegible] पादरी की हुक्म या कलमा [illegible] ऊपर की लकीर थी. इससे मालूम होता है लोगों को हुक्म मानने की आदत पड़ गई है. भारत में इसका उल्टा है. हिन्दू मज़हब इस तरह का मज़हब नहीं है जिसमें एक आदमी ने जो कह दिया वही सबने मान लिया. हिन्दू मज़हब में तरह तरह के विचार और तरह तरह के रीत रिवाज अच्छी तरह चल सकते हैं. मेरा मतलब इससे यह दिखाना है कि जिस तरह के नतीजे रूस अपने मुल्क में अपने तरीक़ों और अपने संगठन से पैदा कर सके उस तरह के नतीजे शायद हम इस देश में उन तरीक़ों से पैदा न कर सकें. इसलिए हमारे मुल्क के कम्युनिस्ट जब अपने मुल्क की रवायतों और हालतों से निगाह हटा कर रूस के तरीक़ों की नक़ल करना चाहते हैं तो ग़लत रास्ते पर पड़ जाते हैं. रूस और हिन्दुस्तान में एक बात मिलती है—वह यह है कि दोनों में सामन्त शाही का राज रह चुका है. हमारे यहां रजवाड़े, ज़मींदार और ताल्लुक़दार सब इसी सामन्त शाही के रूप हैं. लेकिन और बातों में हिन्दुस्तान और रूस में बहुत फ़रक़ है.

इसीलिए रूसी तरीक़ों के नक़ल करने में हमें बहुत एहतियात बरतनी चाहिये. हमारे देश के हालात रूस की निस्बत चीन के हालात से बहुत ज़ियादा मिलते जुलते हैं. रूस में जहां कोई हुक्म निकला तो समझ लीजिये कि काम हो गया. जनता अपने लीडरों पर पूरा भरोसा रखती है. यहां तक कि जनता में अपनी सूझ और बूझ कम रह गया है. पर रूस ने जो नतीजे पैदा किये वह बहुत अच्छे हैं.

रूस में रोज़मर्रा के ज़रूरत की चीज़ें खूब पैदा की गई हैं. उनके यहां खाने, कपड़े और मकान की बहुतात है. सब के लिए सामान काफ़ी से ज़ियादा है. पैदावार सब एक नमूने की और अच्छी है. उनके यहां की बनी हुई सब चीज़ें शायद इतनी अच्छी नहीं हैं जितनी अमरीका और इंगलिस्तान की बनी हुई चीज़ें. लेकिन वह लोग जो चीज़ें अपने मुल्क में बनाते हैं वही बरतते हैं. उनकी दुकानें माल से भरी पड़ी हैं. ख़रीदने वालों के ठट के ठट लगे रहते हैं क्योंकि कोई अपनी तनख़ाह में से बचा कर रखना नहीं चाहता. माल तरह तरह का दिखाई देता है. हवाई जहाज़ और जेट प्लेन से लेकर बच्चों का पुराने टिकट रखने की एलबम तक सब चीज़ें इस मुल्क में तैयार होती हैं. खाना और कपड़ा लोगों के यहां अपनी ज़रूरत से ज़ियादा है. जिन [illegible] ने मुल्क में यह हालत पैदा कर दी है [illegible] जनता को भरोसा क्यों न हो ?

روس کی اس سے پہلے کی سرکار نے تمام سامراج شاہی تھی۔ ان کا مذہب بھی ان دنوں اسی طرح کا تھا۔ بڑا پادری جو حکم یا فتویٰ دے دے وہی سب کے لئے پتھر کی لکیر تھی۔ اس سے معلوم ہوتا ہے لوگوں کو حکم ماننے کی عادت پڑ گئی ہے۔ بھارت میں اس کا الٹا ہے۔ ہندو مذہب اس طرح کا مذہب نہیں ہے جس میں ایک آدمی نے جو کہہ دیا وہی سب نے مان لیا۔ ہندو مذہب میں طرح طرح کے وچار اور طرح طرح کے ریت رواج اچھی طرح چل سکتے ہیں۔ میرا مطلب اس سے یہ دکھانا ہے کہ جس طرح کے نتیجے روس والے اپنے ملک میں اپنے طریقوں اور اپنے سنگھٹن سے پیدا کر سکے اس طرح کے نتیجے شاید ہم اس دیش میں ان طریقوں سے پیدا نہ کر سکیں۔ اس لئے ہمارے ملک کے کمیونسٹ جب اپنے ملک کی روایتوں اور حالتوں سے نگاہ ہٹا کر روس کے طریقوں کی نقل کرنا چاہتے ہیں تو غلط راستے پر پڑ جاتے ہیں۔ روس اور ہندوستان میں ایک بات ملتی ہے وہ یہ ہے دونوں میں سامنت شاہی کا راج رہ چکا ہے ہمارے یہاں رجواڑے، زمیندار اور تعلقہ دار سب اسی سامنت شاہی کے روپ ہیں لیکن اور باتوں میں ہندوستان اور روس میں بہت فرق ہے۔

اس لئے روسی طریقوں کے نقل کرنے میں ہمیں بہت احتیاط برتنی چاہئے۔ ہمارے دیش کے حالات روس کی نسبت چین کے حالات سے بہت زیادہ ملتے جلتے ہیں۔ روس میں جہاں کوئی حکم نکلا تو سمجھ لیجئے کہ کام ہو گیا۔ جنتا اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ رکھتی ہے۔ وہاں کی جنتا ایک درجہ تک مشین کی طرح ہے یہاں تک کہ جنتا میں اپنی سوجھ اور بوجھ کم رہ گیا ہے۔ پر روس نے جو نتیجے پیدا کئے وہ بہت اچھے ہیں۔

روس میں روز مرہ کے ضرورت کی چیزیں خوب پیدا کی گئی ہیں۔ ان کے یہاں کھانے، کپڑے اور مکان کی بہتات ہے۔ سب کے لئے سامان کافی سے زیادہ ہے۔ پیداوار سب ایک نمونے کی اچھی ہے۔ ان کے یہاں کی بنی ہوئی سب چیزیں شاید اتنی اچھی نہیں ہیں جتنی امریکہ اور انگلستان کی بنی ہوئی چیزیں۔ لیکن وہ لوگ چیزیں اپنے ملک میں بناتے ہیں وہی برتتے ہیں۔ ان کی دوکانیں مال سے لدی ہوئی ہیں۔ خریدنے والوں کے ٹھٹ ٹھٹ لگے رہتے ہیں کیونکہ کوئی اپنی تنخواہ میں بچا کر رکھنا نہیں چاہتا۔ مال طرح طرح کا دکھائی دیتا ہے۔ ہوائی جہاز جیٹ پلین سے لے کر بچوں کی پرانے ٹکٹ رکھنے کی البم تک سب چیزیں اس ملک میں تیار ہوتی ہیں۔ کھانا اور کپڑا ان کے یہاں اپنی ضرورت سے زیادہ ہے۔ جن نیتاؤں نے ملک میں یہ حالت پیدا کر دی ہے ان پر جنتا کو بھروسہ کیوں نہ ہو؟

हमारे मुल्क में लोग अच्छी चीज की कद्र करते हैं चाहे वह जापान की बनी हो और चाहे अमरीका की. रूस में अगर देसी चीज के दाम दस गुने भी हों तब भी रूस के लोग सस्ती विदेशी चीज न खरीद कर मंहगी देसी चीज ही खरीदते हैं. हमारे यहां बड़े वजीर से लेकर चपरासी तक सब विदेशी चीजों के शौकीन हैं. रूसियों को इस बात का घमंड है कि वह अपने मुल्क की बनी चीजें ही बरतते हैं चाहे वह चीजें घटिया और मंहगी ही क्यों न हों. अगर हमें तरक्की करना है तो हमें यह स्वदेशी की भावना अपने देश में फिर से जगानी होगी. भारत में किसी वजीर के यहां जाइये और उनसे कलम मांगिये तो वह फौरन बड़े इत्मिनान के साथ पारकर कलम आपके सामने रख देगा. ऐसे लोगों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल देना चाहिये और उनसे कहना चाहिये कि अमरीका में जा कर वहीं नौकरी करें. जो आदमी देसी चीज मिलते हुए विदेशी चीज खरीदता है वह देश के साथ दगा करता है वह विदेशों का दलाल है. हिन्दुस्तान में किसी वजीर के घर जाइये तो बेल्जियम का बना हुआ शीशा आपको मेज पर दिखाई देगा लेकिन किसी रूसी महल में जाइये तो आपको जो शीशा मिलेगा वह रूस ही का बना हुआ होगा चाहे उसमें चेहरा भी साफ दिखाई दे या न दे. रूस की बनी हुई चीजें सब घटिया नहीं होतीं. लेकिन उनके यहां की कोई कोई चीजें हमारे यहां की बनी चीजों से भी घटिया होती हैं. पर हर रूसी बरतेगा अपने यहां की बनी चीज ही.

हमारे यहां की कारीगरी रूस की कारीगरी से हरगिज घटिया नहीं है. हमारे कारीगर काफी होशियार हैं. इसलिए आखिर में हमें किसी देश से मुकाबले का डर नहीं है. लेकिन आज कल की हालत में अगर हमें अपने उद्योग धन्धों को तरक्की देना है तो जो इंगलैंड अमरीका और दूसरे देशों का माल यहां आ कर सस्ता बिकता है उस पर जबरदस्त रोक जरूरी है.

रूस में चीजों की कीमतें इस तरह नहीं लगाई जातीं जिस तरह हमारे मुल्क में. वहां लागत चाहे कुछ भी आई हो ऐश की चीजों की कीमत ज़्यादा रखी जाती है और जनता की ज़रूरत की चीजों की कीमत कम रखी जाती है. इस लिए कोई कोई चीज जो हम समझते हैं रूस में सस्ती मिलेगी वहां हमारे यहां से बहुत मंहगी बिकती है. रूस जा कर हमारे कीमतों के अन्दाजे सब उलट पुलट हो जाते हैं.

होटलों में मामूली नौकर को डेढ़ हज़ार रूबल माहवार से लेकर दो हज़ार रूबल माहवार तक मिलता है. हमारे हिसाब से एक रूबल की कीमत आज कल एक रुपये से

[illegible] میں ایک سستی چیز کی طرف جاتے ہیں [illegible] کی بنی ہو اور چاہے امریکہ کی. روس میں اگر دیسی چیز کے دام دس گنے بھی ہوں تب بھی روس کے لوگ سستی ودیشی چیز نہ خرید کر مہنگی دیسی چیز ہی خریدتے ہیں. ہمارے یہاں بڑے وزیر سے لے کر چپراسی تک سب ودیشی چیزوں کے شوقین ہیں. روسیوں کو اس بات کا گھمنڈ ہے کہ وہ اپنے ملک کی بنی چیزیں ہی برتتے ہیں چاہے وہ چیزیں گھٹیا اور مہنگی ہی کیوں نہ ہوں. اگر ہمیں ترقی کرنا ہے تو ہمیں یہ سودیشی کی بھاونا اپنے دیش میں پھر سے جگانی ہوگی. بھارت میں کسی وزیر کے یہاں جائیے اور اس سے قلم مانگئے تو فوراً بڑے اطمینان کے ساتھ پارکر قلم آپ کے سامنے رکھ دے گا. ایسے لوگوں کو ہندوستان سے باہر نکال دینا چاہئے اور ان سے کہنا چاہئے کہ امریکہ میں جا کر وہیں نوکری کریں. جو آدمی دیسی چیز ملتے ہوئے ودیشی چیز خریدتا ہے وہ دیش کے ساتھ دغا کرتا ہے وہ ودیشوں کا دلال ہے. ہندوستان میں کسی وزیر کے گھر جائیے تو بلجیم کا بنا ہوا شیشہ آپکو میز پر دکھائی دیگا. لیکن کسی روسی محل میں جائیے تو آپکو جو شیشہ ملے گا وہ روس ہی کا بنا ہوا ہوگا چاہے اسمیں چہرہ بھی صاف دکھائی دے یا نہ دے. روس کی بنی ہوئی چیزیں سب گھٹیا نہیں ہیں. لیکن ان کے یہاں کی کوئی کوئی چیزیں ہمارے یہاں کی بنی چیزوں بھی گھٹیا ہوتی ہیں. پر ہر روسی برتے گا اپنے یہاں کی بنی چیز ہی.

ہمارے یہاں کی کاریگری روس کی کاریگری سے ہرگز گھٹیا نہیں ہے. ہمارے کاریگر کافی ہوشیار ہیں. اسلئے آخر میں ہمیں کسی دیش سے مقابلے کا ڈر نہیں ہے. لیکن آجکل کی حالت میں اگر ہمیں اپنے ادیوگ دھندوں کو ترقی دینا ہے تو جو انگلینڈ امریکہ اور دوسرے دیشوں کا مال یہاں آکر سستا بکتا ہے اسپر زبردست روک ضروری ہے.

روس میں چیزوں کی قیمتیں اس طرح نہیں لگائی جاتیں جس طرح ہمارے ملک میں. وہاں لاگت چاہے کچھ بھی آئی ہو عیش کی چیزوں کی قیمت زیادہ رکھی جاتی ہے اور جنتا کی ضرورت کی چیزوں کی قیمت کم رکھی جاتی ہے. اس لئے کوئی کوئی چیز جو ہم سمجھتے ہیں روس میں سستی ملے گی وہاں ہمارے یہاں سے بہت مہنگی ملتی ہے. روس جاکر ہمارے قیمتوں کے اندازے سب الٹ پلٹ ہو جاتے ہیں.

ہوٹلوں میں معمولی نوکر کو ڈیڑھ ہزار روبل ماہوار سے لے کر دو ہزار روبل ماہوار تک ملتا ہے. ہمارے حساب سے ایک روبل کی قیمت آجکل ایک روپے [illegible]

[illegible] है. लेकिन वहां के एक रूबल से उतनी चीज़ नहीं ख़रीदी जा सकती जितनी हिन्दुस्तान में एक रुपये से. फ़र्क इससे भी बहुत ज़्यादा है. यह समझिये कि यहां जितना सामान हम सौ रुपये में ख़रीद सकते हैं उतना रूस में डेढ़ हज़ार रूबल में मिलेगा. एक प्याला कॉफ़ी क़रीब क़रीब तीन रुपये में मिलता है. रूस वाले जहां तक हो सकता है मुल्क की दौलत बराबर बांटना चाहते हैं. नौकर और मालिक दोनों को लगभग एक सा खाना और एक से कपड़े मिलते हैं.

हिन्दुस्तान में हमारे गांव वाले जो चीज़ें बनाते और पैदा करते हैं उनकी मुनासिब क़ीमत भी उन्हें नहीं मिलती. गांव वालों को अपनी चीज़ें सस्ती बेचनी पड़ती हैं ताकि शहर वाले उनसे फ़ायदा उठा सकें.

हम हर चीज़ में यही सोचते हैं कि इस से मुझे अपने व्यापार में क्या फ़ायदा होगा या यह चीज़ विलायती के मुक़ाबले में बिक सकेगी या नहीं. इसके ख़िलाफ़ रूस में हर आदमी यह सोचता है कि इस चीज़ की जो क़ीमत मैं दे रहा हूं उससे बनाने वाले का पेट भरेगा या नहीं. उन लोगों में अपने देश और देश वालों की भलाई का ख़्याल सब से ज़बरदस्त है और उनको इसका अभिमान है.

गांव की बनी हुई चीज़ों पर हमारे यहां की कम क़ीमतें गांव वालों को भूखा रखती हैं. हमारे यहां का पैसा लोगों में बराबर नहीं बंटता. रूस में इस बराबर के बटवारे की कोशिश की जा रही है और बहुत दर्जे तक उन्हें कामयाबी मिली है. उनका सारा ध्यान इस तरफ़ है कि आम जनता के रहन सहन को ऊंचा से ऊंचा ले जाया जावे.

शहरों में बड़े मकान और पुराने महल भी हैं. लेकिन गांव के मकान भी कम से कम वैसे ही हैं जैसे हमारे ख़ानदानी के मकान. यह लोग जो फ़ौज और हथियार पर अपना ख़र्च करते हैं उसका नतीजा यह है कि यहां की जनता का रहन सहन अमरीका के जनता का रहन सहन से नीचा है लेकिन हिन्दुस्तान की जनता के रहन सहन से काफ़ी ऊंचा है. बड़ी बड़ी सड़कें बहुत अच्छी हालत में हैं. गांव की सड़कें क़रीब क़रीब वैसी ही हैं जैसे हमारे मुल्क में. शहरों में कोई कोई सड़क न्यूयार्क और लंदन की सड़कों से भी ज़्यादा चौड़ी है.

गांव के लोगों की हालत इतनी अच्छी नहीं है जितनी उम्मीद की जा सकती है. बाक़ी साइन्स वग़ैरा में जितनी रूस ने तरक़्क़ी की है उस हिसाब से गांव की हालत ने तरक़्क़ी नहीं की. रूस के हवाई अड्डे हमारे यहां के हवाई अड्डों से बहुत ज़्यादा सादा हैं. हवाई अड्डों की इमारतें कच्ची हैं. [illegible] की इमारतों में और उनमें कहीं यह

تنخواہ زیادہ ہے . لیکن وہاں کے ایک روبل سے اتنی چیز نہیں خریدی جاسکتی جتنی ہندستان میں ایک روپئے سے. فرق اس سے بھی بہت زیادہ ہے یہ سمجھئے کہ یہاں جتنا سامان ہم سو روپیہ میں خرید سکتے ہیں اتنا روس میں ڈیڑھ ہزار روبل میں ملے گا . ایک پیالہ کوفی قریب قریب تین روپیہ میں ملتا ہے . روس والے جہاں تک ہوسکتا ہے ملک کی دولت برابر برابر بانٹنا چاہتے ہیں . نوکر اور مالک دونوں کو لگ بھگ ایک سا کھانا اور ایک سے کپڑے ملتے ہیں .

ہندستان میں ہمارے گاؤں والے جو چیزیں بناتے اور پیدا کرتے ہیں اُن کی مناسب قیمت بھی انہیں نہیں ملتی . گاؤں والوں کو اپنی چیزیں سستی بیچنی پڑتی ہیں تاکہ شہر والے اُس سے فائدہ اُٹھاسکیں .

ہم ہر چیز میں یہی سوچتے ہیں کہ اِس سے مجھے اپنے بیوپار میں کیا فائدہ ہوگا یا یہ چیز ولائتی کے مقابلے میں بک سکے گی یا نہیں . اِس کے خلاف روس میں ہر آدمی یہ سوچتا ہے کہ اِس چیز کی جو قیمت میں دے رہا ہوں اس سے بنانے والے کا پیٹ بھرے گا یا نہیں . اِن لوگوں میں اپنے دیش اور دیش والوں کی بھلائی کا خیال سب سے زبردست ہے اور اُن کو اِس کا ابھیمان ہے .

گاؤں کی بنی ہوئی چیزوں پر ہمارے یہاں کی کم قیمتیں گاؤں والوں کو بھوکا رکھتی ہیں . ہمارے یہاں کا پیسہ لوگوں میں برابر نہیں بٹتا . روس میں اِس برابر کے بٹوارے کی کوشش کی جا رہی ہے اور بہت درجے تک انہیں کامیابی ملی ہے . اُن کا سارا دھیان اِس طرف ہے کہ عام جنتا کے رہن سہن کو اونچے سے اونچا لے جایا جائے .

شہروں میں بڑے مکان اور پرانے محل بھی ہیں . لیکن گاؤں کے مکان بھی کم سے کم ایسے ہی ہیں جیسے ہمارے مکن وازی کے مکان . یہ لوگ جو فوج اور ہتھیار پر اتنا خرچ کرتے ہیں اُس کا نتیجہ یہ ہے کہ یہاں کی جنتا کا رہن سہن امریکہ کی جنتا کے رہن سہن سے نیچا ہے لیکن ہندستان کی جنتا کے رہن سہن سے کافی اونچا ہے . بڑی بڑی سڑکیں بہت اچھی حالت میں ہیں . گاؤں کی سڑکیں قریب قریب ویسی ہی ہیں جیسے ہمارے ملک میں . شہروں میں کوئی کوئی سڑک نیویارک اور لندن کی سڑکوں سے بھی زیادہ چوڑی ہیں .

گاؤں کے لوگوں کی حالت اتنی اچھی نہیں ہے جتنی اُمید کی جاسکتی ہے . باقی سائنس وغیرہ میں جتنی روس نے ترقی کی ہے اُس حساب سے گاؤں کی حالت نے ترقی نہیں کی . روس کے ہوائی اڈے ہمارے یہاں کے ہوائی اڈوں سے بہت زیادہ سادہ ہیں . ہوائی اڈوں کی عمارتیں کچی ہیں . مکن وازی کی عمارتوں میں اور اُن میں فرق یہ

है कि हम [illegible] में खोद खोद कर उसकी दीवारें बनाते हैं और उस पर मिट्टी थोप देते हैं. और रूसी लकड़ी के तख़्तों की दीवारें बना कर उस पर मिट्टी थोप देते हैं. हमारे यहां लोगों के पास खाने को नहीं है लेकिन फिर भी हम अपने हवाई अड्डों की इमारतें बनाने में अमरीका की नक़ल करना चाहते हैं.

रूस के हवाई जहाज़ चलाने वाले पाइलट बहुत होशियार होते हैं. जिन ज़मीनों पर वह अपने जहाज़ उतारते हैं वह बढ़िया सिमेन्ट की नहीं होतीं लेकिन यह पाइलट इतने होशियार होते हैं कि आसानी से और बिना किसी ख़तरे के घास के मैदान के ऊपर हवाई जहाज़ों को उतार लेते हैं और चला लेते हैं. पैसे की कमी को वह अपनी अक़्ल और हाथ की होशियारी से पूरा करते हैं.

रूसी समाज की बुनियाद घरेलू ज़िन्दगी यानी कुटुम्बी जीवन पर रखी जा रही है. मियां बीवी, मां बाप और बच्चों के आपसी सम्बंध की वह बहुत क़द्र करते हैं. तलाक़ के ख़िलाफ़ वह अपने क़ायदे कसते जा रहे हैं. वेश्याओं के पेशे को उन्होंने क़ानून के ख़िलाफ़ क़रार दिया है. मैंने सुना कि इससे बहुत सी बीमारियां वहां पहले से बहुत कम हो गई हैं. अमरीका या इंगलिस्तान में किसी भी शहर के इन बाग़ों और पार्कों में तरह तरह के इन्सानी जोड़े बेहूदा हरकतें करते हुए दिखाई देते हैं. रूस में पहली मई के जलसों और जुलूसों में लड़कियों के ठट के ठट अलग जाते हुए दिखाई देते थे और लड़कों के जत्थे के जत्थे अलग घूमते नज़र आते थे. सब में एक सलीक़ा, और तरीक़ा था. और कहीं कोई बात दिखाई नहीं दी जिसे सदाचार से गिरा हुआ कहा जा सके. घरेलू ज़िन्दगी की आज वहां बड़ी इज़्ज़त है, और यूरप के मुल्कों से बहुत ज़ियादा.

रूस के लोग बड़ी बड़ी मशीनों से बड़े पैमाने पर माल पैदा करना चाहते हैं. फिर भी ज़ियादा माल पैदा करने का वह तेज़ जोश उनमें नहीं है जो अमरीका में दिखाई देता है. मिसाल के लिए मैं एक कारख़ाने में गया जिस में मोटरें और ट्रैक्टर तैयार किये जाते हैं. मैंने देखा कि मशीनों के ऊपर चमड़े के पट्टे इतने धीरे धीरे घूमते थे कि एक आदमी आसानी से पांच या छै पहियों की देख रेख कर सकता था. इसी तरह के कारख़ाने में अमरीका में पट्टे इतनी तेज़ी से घूमते हैं कि एक आदमी दो या तीन से ज़ियादा पहियों की देख रेख नहीं कर सकता. अमरीका वाले मुमकिन है इन कामों में ज़ियादा होशियार हों, मुमकिन है उनकी मशीनें भी बढ़िया हों. लेकिन अमरीका की तेज़ी वहां के लोगों के रग-पट्ठों को बरबाद कर देती है. रूस में अगर कोई मज़दूर बहुत ज़ियादा काम नहीं कर

ہے کہ ہم مٹی کھود کھود کر اس کی دیواریں بناتے ہیں اور اس پر مٹی تھوپ دیتے ہیں اور روسی لکڑی کے تختوں کی دیواریں بنا کر اُن پر مٹی تھوپ دیتے ہیں۔ ہمارے یہاں لوگوں کے پاس کھانے کو نہیں ہے لیکن پھر بھی ہم اپنے ہوائی اڈوں کی عمارتیں بنانے میں امریکہ کی نقل کرنا چاہتے ہیں۔

روس کے ہوائی جہاز چلانے والے پائلٹ بہت ہوشیار ہوتے ہیں۔ جن زمینوں پر وہ اپنے جہاز اُتارتے ہیں وہ بڑھیا سیمنٹ کی نہیں ہوتیں لیکن یہ پائلٹ اتنے ہوشیار ہوتے ہیں کہ آسانی سے اور بنا کسی خطرے کے گھاس کے میدان کے اوپر ہوائی جہازوں کو اُتار لیتے ہیں اور چلا لیتے ہیں۔ پیسے کی کمی کو وہ اپنی عقل اور ہاتھ کی ہوشیاری سے پورا کرتے ہیں۔

روسی سماج کی بنیاد گھریلو زندگی یعنی کٹمبی جیون پر رکھی جا رہی ہے۔ میاں بیوی، ماں باپ اور بچوں کے آپسی سمبندھ کی وہ بہت قدر کرتے ہیں۔ طلاق کے خلاف وہ اپنے قاعدے کستے جا رہے ہیں۔ ویشیاؤں کے پیشے کو انہوں نے قانون کے خلاف قرار دیا ہے۔ میں نے سنا کہ اس سے بہت سی بیماریاں وہاں پہلے سے بہت کم ہو گئی ہیں۔ امریکہ یا انگلستان میں کسی بھی شہر کے ان باغوں اور پارکوں میں طرح طرح کے انسانی جوڑے فضول حرکتیں کرتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ روس میں پہلی مئی کے جلسوں اور جلوسوں میں لڑکیوں کے ٹھٹ کے ٹھٹ الگ جاتے ہوئے دکھائی دیتے تھے اور لڑکوں کے جتھے کے جتھے الگ گھومتے پھرتے نظر آتے تھے۔ سب میں ایک سلیقہ اور طریقہ تھا۔ اور کہیں کوئی بات دکھائی نہیں دی جسے سداچار سے گرا ہوا کہا جا سکے۔ گھریلو زندگی کی آج وہاں بڑی عزت ہے، اور یورپ کے ملکوں سے بہت زیادہ۔

روس کے لوگ بڑی بڑی مشینوں سے بڑے پیمانے پر مال پیدا کرنا چاہتے ہیں۔ پھر بھی زیادہ مال پیدا کرنے کا وہ تیز جوش اُن میں نہیں ہے جو امریکہ میں دکھائی دیتا ہے۔ مثال کے لئے میں ایک کارخانے میں گیا جس میں موٹریں اور ٹریکٹر تیار کئے جاتے ہیں۔ میں نے دیکھا کہ مشینوں کے اوپر چمڑے کے پٹے اتنے دھیرے دھیرے گھومتے تھے کہ ایک آدمی آسانی سے پانچ یا چھ پہیوں کی دیکھ ریکھ کر سکتا تھا۔ اسی طرح کے کارخانے میں امریکہ میں پٹے اتنی تیزی سے گھومتے ہیں کہ ایک آدمی دو یا تین سے زیادہ پہیوں کی دیکھ ریکھ نہیں کر سکتا۔ امریکہ والے ممکن ہے اِن کاموں میں زیادہ ہوشیار ہوں، ممکن ہے اُن کی مشینیں بھی بڑھیا ہوں۔ لیکن امریکہ کی تیزی وہاں کے لوگوں کے رگ پٹھوں کو برباد کر دیتی ہے۔ روس میں اگر کوئی مزدور بہت اچھا کام نہیں کر

जाता तो कुछ सीखने के लिये भेजा जाता है. अमरीका में इस तरह के मजदूर को फ़ौरन बरखास्त कर दिया जाता है. रूस वाले, कभी किसी मजदूर को बरखास्त करना नहीं जानते क्योंकि उन्हें जितनी फ़िकर अपनी पैदावार बढ़ाने का है उससे ज़ियादा मुहब्बत अपने आदमियों से है.

आख़ीर में मैं जिस नतीजे पर पहुँचा वह यह है कि रूस ने जो कुछ किया वह उस मुल्क की हालत में उसके लिये सबसे अच्छी चीज़ हो सकती है. हमारे मुल्क के हालात, हमारा पिछला इतिहास और हमारी ज़रूरतें कुछ अलग हैं. इसलिये हम इस मुल्क में रूसी नमूने की नक़ल नहीं कर सकते हैं. सारे समाज को एक नमूने पर ढालना, इनसानी समाज को एक मशीन बना देने और सारी ताक़त को ऊपर के कुछ आदमियों के हाथों में दे देने का नतीजा अंत में जा कर सिवाये हिंसा और समाज की बरबादी के और कुछ नहीं हो सकता.

रूस से हम बहुत सी अच्छी बातें ले सकते हैं. रूस के अंदर वहां के लीडरों की जो ताक़त और उनका जो असर है वह बहुत तारीफ़ की चीज़ है. वहां के लीडर जनता के हो कर उसे राह दिखाते हैं. जनता के ऊपर रौब नहीं जमाते. रूस के लीडरों की देश भक्ति, मुल्क को उसके पैरों पर खड़ा करने की कोशिश और स्वदेशी की ज़बरदस्त भावना हम नक़ल कर सकते हैं. मिल कर काम करने की आदत भी हम उन से सीख सकते हैं. उनकी कोआपरेटिव सोसाइटियां बहुत ही अच्छा काम कर रही हैं और सराहने की चीज़ें हैं. आम जनता के भले के लिये बड़ी नहरें खोदना और इसी तरह के दूसरे काम वह बिल्कुल समाज सेवा की निगाह से करते हैं. यह समाज सेवा का भाव हम में उन से बहुत कम है. यह सब हम उनसे सीख सकते हैं.

रूस की ताक़त का सब से बड़ा भेद यह है कि वहां की जनता को अपने लीडरों पर पूरा भरोसा है अगर हम अपने यहां यह पैदा कर लें तो हमारे आधे सवाल ख़ुद बख़ुद हल हो जायें. हम यह कर सकते हैं अगर हम जनता की सच्ची ज़रूरतों और उनके दिल और दिमाग़ को समझ सकें, उसके साथ अपने अन्दर हमदर्दी पैदा कर सकें और अपनी सारी प्लानों को उसके मुताबिक़ ढाल सकें तो आसानी से देश का दुःख दूर हो सकता है. हमारी आजकल की सरकार इससे बहुत दूर है.

रूस से और चीन से हम ऐसे ही बहुत से उसूल सीख सकते हैं. इस मुल्क के इनसान किसी तरह रूस या चीन के इनसानों से घटिया नहीं हैं. हम अगर अपनी पूरी समझ, होशियारी और पूरी शक्ति से काम लें और रूस और चीन के [illegible] उठाते हुए अपने सवाल अपना

جاتا تو سیکھنے کے لئے بھیجا جاتا ہے. امریکہ میں اس طرح کے مزدور کو فوراً برخاست کردیا جاتا ہے. روس والے کبھی کسی مزدور کو برخاست کرنا نہیں جانتے کیونکہ انہیں جتنی فکر اپنی پیداوار بڑھانے کا ہے اس سے زیادہ محبت اپنے آدمیوں سے ہے.

آخیر میں میں جس نتیجے پر پہونچا وہ یہ ہے کہ روس نے جو کچھ کیا وہ اس ملک کی حالات میں اس کے لئے سب سے اچھی چیز ہوسکتی ہے. ہمارے ملک کے حالات، ہمارا پچھلا اتہاس اور ہماری ضرورتیں کچھ الگ ہیں. اس لئے ہم اس ملک میں روسی نمونے کی نقل نہیں کرسکتے ہیں. سارے سماج کو ایک نمونے پر ڈھالنے انسانی سماج کو ایک مشین بنا دینے اور ساری طاقت کو اوپر کے کچھ آدمیوں کے ہاتھوں میں دے دینے کا نتیجہ انت میں جاکر سوائے ہنسا اور سماج کی بربادی کے اور کچھ نہیں ہوسکتا.

روس سے ہم بہت سی اچھی باتیں لے سکتے ہیں. روس کے اندر وہاں کے لیڈروں کی جو طاقت اور ان کا جو اثر ہے وہ بہت تعریف کی چیز ہے. وہاں کے لیڈر جنتا کے ہوکر اسے راہ دکھاتے ہیں جنتا کے اوپر رعب نہیں جماتے. روس کے لیڈروں کی دیش بھکتی، ملک کو اس کے پیروں پر کھڑا کرنے کی کوشش اور سودیشی کی زبردست بھاونا ہم نقل کرسکتے ہیں. مل کر کام کرنے کی عادت بھی ہم ان سے سیکھ سکتے ہیں. ان کی کوآپریٹو سوسائٹیاں بہت ہی اچھا کام کر رہی ہیں اور سراہنے کی چیزیں ہیں. عام جنتا کے بھلے کے لئے بڑی بڑی نہریں کھودنا اور اسی طرح کے دوسرے کام وہ بالکل سماج سیوا کی نگاہ سے کرتے ہیں. یہ سماج سیوا کا بھاؤ ہم میں ان سے بہت کم ہے. یہ سب ہم ان سے سیکھ سکتے ہیں.

روس کی طاقت کا سب سے بڑا بھید یہ ہے کہ وہاں کی جنتا کو اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ ہے. اگر ہم اپنے یہاں یہ پیدا کرلیں تو ہمارے آدھے سوال خود بخود حل ہو جائیں. ہم یہ کرسکتے ہیں اگر ہم جنتا کی سچی ضرورتوں اور ان کے دل اور دماغ کو سمجھ سکیں، اس کے ساتھ اپنے اندر ہمدردی پیدا کرسکیں اور اپنی ساری پلینوں کو اس کے مطابق ڈھال سکیں تو آسانی سے دیش کا دکھ دور ہوسکتا ہے. ہماری آج کل کی سرکار اس سے بہت دور ہے.

روس سے اور چین سے ہم ایسے ہی بہت سے اصول سیکھ سکتے ہیں. اس ملک کے انسان کسی طرح روس یا چین کے انسانوں سے گھٹیا نہیں ہیں. ہم اگر اپنی پوری سمجھ، ہوشیاری اور پوری شکتی سے کام لیں اور روس اور چین سے فائدہ اٹھاتے ہوئے اپنے سوال اپنی طرح

तरह हल करें तो बहुत जल्दी हम उनसे आगे बढ़ सकते हैं.

रूस के लोग जब एक बार कोई मक़सद अपने सामने रख लेते हैं तो पूरी ताक़त से और एक दिल हो कर उसे पूरा करने में जुट जाते हैं. उनमें संगठन शक्ति भी कमाल की है. हमें यह चीज़ें उनसे सीखनी हैं.

दूसरी तरफ़ लोहे की जिस दीवार के पीछे रूस ने यह सब तरक़्क़ी की है उसका क़ुदरती नतीजा रूस की लड़ाई की तैयारियां हैं. यह तैयारियां केवल अपने बचाव के लिये हैं, दूसरे को नुक़सान पहुंचाने के लिये नहीं. फिर भी सारे इनसानी समाज को एक कुटुम्ब मानते हुए हम हमेशा के लिये लोहे की दीवारों के पीछे नहीं रह सकते. एक दूसरे पर शक और नफ़रत से सब क़ौमें एक कुटुम्ब नहीं बन सकतीं. इस तरह की लोहे की दीवार को बनाये रखने के लिये जो ख़र्च होगा वह साइन्स की सारी तरक़्क़ी के असली फ़ायदों को खा जायेगा. और आम जनता फिर ग़रीब और जहां थी वहां रह जायेगी. नये नये हथियारों में मुक़ाबले की जो दौड़ इस समय हो रही है वह सब को बरबाद कर देने वाली है. इसका हल सिर्फ़ एक है. वह यह कि हर क़ौम और हर मुल्क की जनता हर तरह अपने पैरों पर खड़ी हो. रूस ने लोहे की दीवार के पीछे इसकी भी काफ़ी कोशिश की है. लेकिन यह चीज़ असल में तभी पैदा होगी जब हकूमत की सारी ताक़त आम जनता के हाथ में बिखरी हुई हो. और जनता की ज़रूरत की सब चीज़ें ऐसे तरीक़ों से पैदा की जायें जिनमें ताक़त और अधिकार थोड़े से लोगों के हाथों में न आने पायें. असली शान्ति और तरक़्क़ी का यही एक रास्ता है.

इतना कुछ कर लेने पर भी रूस वैसे ही ख़तरे में है जैसे ख़तरे में अमरीका है. दोनों को अपनी जान बचाने के लिये हिंसा के बड़े बड़े क़िले खड़े करने पड़ रहे हैं. इन दोनों में से कोई भी सब क़ौमों को एक करके सच्ची शान्ति और सब की भलाई की तरफ़ नहीं ले जा सकता. रूस जहां है वहीं वह रुक भी नहीं सकता. उसे आगे का रास्ता बनाना होगा. दुनिया में शान्ति क़ायम करने और क़ायम रखने की रूस की ज़बरदस्त इच्छा अगर पूरी होनी है तो रूस को अपना तरीक़ा बदलना और सुधारना होगा. हो सकता है कि मास्को में जो अन्तर क़ौमी आर्थिक कानफ़्रेंस हुई है वह इस मक़सद के पूरा करने में मदद दे.

रूस की जनता और वहां के लीडर दोनों सच्चे मानों में खोजी हैं. वह ऊंचे दरजे के खोजी हैं. इसमें शक नहीं कि वह सारी दुनिया का भला चाहते हैं. हमारी सब की यही प्रार्थना होनी चाहिये कि उनकी खोज कामयाब हो.

طرح حل کریں تو بہت جلدی ہم ان سے آگے بڑھ سکتے ہیں۔

روس کے لوگ جب ایک بار کوئی مقصد اپنے سامنے رکھ لیتے ہیں تو پوری طاقت سے اور ایک دل ہوکر اُسے پورا کرنے میں جٹ جاتے ہیں۔ ان میں سنگٹھن شکتی بھی کمال کی ہے۔ ہمیں یہ چیزیں ان سے سیکھنی ہیں۔

دوسری طرف لوہے کی جس دیوار کے پیچھے روس نے یہ سب ترقی کی ہے اس کا قدرتی نتیجہ روس کی لڑائی کی تیاریاں ہیں۔ یہ تیاریاں کیول اپنے بچاؤ کے لئے ہیں، دوسرے کو نقصان پہونچانے کے لئے نہیں۔ پھر بھی سارے انسانی سماج کو ایک کٹمب مانتے ہوئے ہم ہمیشہ کے لئے لوہے کی دیواروں کے پیچھے نہیں رہ سکتے۔ ایک دوسرے پر شک اور نفرت سے سب قومیں ایک کٹمب نہیں بن سکتیں۔ اس طرح کی لوہے کی دیوار کو بنائے رکھنے کے لئے جو خرچ ہوگا وہ سائنس کی ساری ترقی کے اصلی فائدوں کو کھا جائے گا۔ اور عام جنتا پھر غریب اور جہاں تھی وہاں رہ جائے گی۔ نئے نئے ہتھیاروں میں مقابلے کی جو دوڑ اس سمے ہو رہی ہے وہ سب کو برباد کر دینے والی ہے۔ اس کا حل صرف ایک ہے وہ یہ کہ ہر قوم اور ہر ملک کی جنتا ہر طرح اپنے پیروں پر کھڑی ہو۔ روس نے لوہے کی دیوار کے پیچھے اس کی بھی خاصی کوشش کی ہے۔ لیکن یہ چیز اصل میں تبھی پیدا ہوگی جب حکومت کی ساری طاقت عام جنتا کے ہاتھ میں بکھری ہوئی ہو۔ اور جنتا کی ضرورت کی سب چیزیں ایسے طریقوں سے پیدا کی جائیں جن میں طاقت اور ادھیکار تھوڑے سے لوگوں کے ہاتھوں میں نہ آنے پائیں۔ اصلی شانتی اور ترقی کا یہی ایک راستہ ہے۔

اتنا کچھ کر لینے پر بھی روس ویسے ہی خطرے میں ہے جیسے خطرے میں امریکہ ہے۔ دونوں کو اپنی جان بچانے کے لئے ہنسا کے بڑے بڑے قلعے کھڑے کرنے پڑ رہے ہیں۔ ان دونوں میں سے کوئی بھی سب قوموں کو ایک کرکے سچی شانتی اور سب کی بھلائی کی طرف نہیں لے جا سکتا۔ روس جہاں ہے وہاں وہ رک بھی نہیں سکتا۔ اسے آگے کا راستہ بنانا ہوگا۔ دنیا میں شانتی قائم کرنے اور قائم رکھنے کی زبردست اچھا اگر پوری ہونی ہے تو روس کو اپنا طریقہ بدلنا اور سدھارنا ہوگا۔ ہو سکتا ہے کہ ماسکو میں جو انٹر قومی آرتھک کانفرنس ہوئی ہے وہ اس مقصد کے پورا ہونے میں مدد دے۔

روس کی جنتا اور وہاں کے لیڈر دونوں سچے معنوں میں کھوجی ہیں۔ وہ اونچے درجے کے کھوجی ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ وہ ساری دنیا کا بھلا چاہتے ہیں۔ ہم سب کی یہی پرارتھنا ہونی چاہئے کہ ان کی کھوج کامیاب ہو۔

मलाया में अंगरेज़ी साम्राज का नंगा नाच

(हांग घी-मिंग, एडीटर 'मलायन मानीटर,)

['नया हिन्द' के पाठक जानते हैं कि पूर्वी एशिया में अमरीका की दिलचस्पी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है. उसकी दिलचस्पी के दो अड्डे हैं—वीत नाम और मलाया. पिछले नम्बर में "हो-चा-मिन्ह और वीत नाम" नाम के लेख में वीत नाम की झलक दी जा चुकी है. इस लेख में हम मलाया की असलीयत दे रहे हैं. यह 'मलायन मानीटर' के क़ाबिल एडीटर के लेख का आज़ाद अनुवाद है—एडीटर]

जब अंगरेज़ी साम्राज ने 1945 के आख़िर में मलाया पर फिर से क़ब्ज़ा किया तो उसका मक़सद यह था कि इस मुल्क को एक नई बस्ती की हैसियत दे दे. लेकिन इस मक़सद को हासिल करने के लिये उसे एक नई जागी हुई क़ौम को भी इत्मिनान दिलाना था जिसने तय कर लिया था कि वह अब 1939 के ज़माने में वापस नहीं लौटेगी. इस चुनौती के जवाब में साम्राजियों के पास सिवाय हिंसा और ज़ुल्म के कोई चारा न था.

अपनी तरक़्क़ी के ज़माने में मलाया फ़ेडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन के चार लाख मेम्बर थे. इस फ़ेडरेशन को नई बस्ती क़ानून ने बाक़ायदा नहीं माना था. फिर भी अंगरेज़ी फ़ौजी हुकूमत ब्योपारी झगड़ों में उसके प्रतिनिधियों को क़बूल करने पर मजबूर थी. अंगरेज़ी हाकिम कम से कम उसूली तौर पर मज़दूरों के इन्तज़ाम करने की मांग को मानने पर मजबूर थे. यह और बात है कि उस वक़्त क़ानूनी ट्रेड यूनियन के बारे में अंगरेज़ी हाकिमों का कुछ और ख़याल रहा हो. मज़दूरों की लगातार कोशिश ने नई बस्ती के हाकिमों से कुछ रिआयतें हासिल कर ली थीं.

देश के हर हिस्से में आज़ादी, चावल, कपड़े और ठीक इन्तज़ाम की मांग का बन्दूकों के कुन्दों और गोलियों से जवाब दिया गया.

आम जनता की कोशिशों से इसी ज़माने में मलाया के इतिहास में मज़दूरों की सबसे बड़ी फ़ेडरेशन बनी. इसका नाम था आम लेबर यूनियन. बाद में इसी का नाम पान मलाया फ़ेडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन पड़ा.

मज़दूरों की इस कोशिश को किसानों, मछेरों और यहां तक कि हुकूमत और अंगरेज़ी दफ़्तर के सफ़ेद कालर वाले लोगों की हिमायत भी हासिल होती गई.

ملایا میں انگریزی سامراج کا ننگا ناچ

(ھانگ بی . لم' ایڈیٹر 'ملاین مانیٹر')

['نیا ھند' کے پاٹھک جانتے ھیں کہ پوربی ایشیا میں امریکہ کی دلچسپی دن دونی رات چوگنی بڑھ رھی ھے . اس کی دلچسپی کے دو اڈے ھیں— ویت نام اور ملایا . پچھلے نمبر میں "ھوچی منہ اور ویت نام" نام کے لیکھ میں ویت نام کی جھلک دی جا چکی ھے . اس لیکھ میں ھم ملایا کی اصلیت دے رھے ھیں . یہ 'ملاین مانیٹر' کے قابل ایڈیٹر کے لیکھ کا آزاد انوواد ھے—ایڈیٹر]

جب انگریزی سامراج نے 1945 کے آخر میں ملایا پر پھر سے قبضہ کیا تو اس کا مقصد یہ تھا کہ اس ملک کو ایک نئی بستی کی حیثیت دے دے . لیکن اس مقصد کو حاصل کرنے کے لئے اسے ایک نئی جاگی ھوئی قوم کو بھی اطمینان دلانا تھا . جس نے طے کر لیا تھا کہ وہ اب 1939 کے زمانے میں واپس نہیں لوٹے گی. اس چنوتی کے جواب میں سامراجیوں کے پاس سوائے ھنسا اور ظلم کے کوئی چارہ نہ تھا .

اپنی ترقی کے زمانے میں ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین کے چار لاکھ ممبر تھے . اس فیڈریشن کو نئی بستی قانون نے باقاعدہ نہیں مانا تھا . پھر بھی انگریزی فوجی حکومت بیوپاری جھگڑوں میں اس کے پرتی ندھیوں کو قبول کرنے پر مجبور تھی . انگریزی حاکم کم سے کم اصولی طور پر مزدوروں کے انتظام کرنے کی مانگ کو ماننے پر مجبور تھے . یہ اور بات ھے کہ اس وقت قانونی ٹریڈ یونین کے بارے میں انگریزی حاکموں کا کچھ اور خیال رھا ھو . مزدوروں کی لگاتار کوشش نے نئی بستی کے حاکموں سے کچھ رعایتیں حاصل کرلی تھیں .

دیش کے ھر حصے نے آزادی' چاول' کپڑے اور ٹھیک انتظام کی مانگ کا بندوقوں کے کندوں اور گولیوں سے جواب دیا گیا .

عام جنتا کی کوششوں سے اسی زمانے میں ملایا کے اتہاس میں سب سے بڑی مزدوروں کی فیڈریشن بنی . اس کا نام تھا عام لیبر یونین . بعد میں اسی کا نام پان ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین ہوا .

مزدوروں کی اس کوشش کو کسانوں' مچھیروں اور یہاں تک کہ حکومت اور انگریزی دفتر کے سفید کالر والے لوگوں کی حمایت بھی حاصل ہوگئی .

डंडे की हुकूमत.

अक्तूबर 1945 से लेकर अक्तूबर 1947 तक नई बस्ती के अंगरेज़ी हाकिमों की कोशिशें मज़दूरों को परेशान करने और हिंसा के ज़रिये उनमें फूट डालने पर खर्च होती रहीं. जब वह इन कोशिशों में कामयाब नहीं हुए तो उनके फिर बहाल करने के दावे भी हवा हो गये. जून 1948 में अंगरेज़ी हुकूमत ने इन तमाम राज काजी दलों को जो आज़ादी चाहती थीं डंडे के ज़ोर से कुचलकर रख दिया और कुल मलाया फ़ैडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन को दबाने के लिये अपनी फ़ौजी ताक़त से काम लिया. लोग भी अपनी आज़ादी और ज़िन्दगी बचाने के लिये हथियारों से मुक़ाबले पर उतर आये.

अंगरेज़ी हुकूमत ने बहुत जल्द अपने इस अमल को लड़ाई में बदल दिया. और एक पुलिस हुकूमत बना डाली इस वक़्त के बाद से पांच आदमी इकट्ठे होने को पुलिस अपनी ताक़त से रोक सकती थी. सिर्फ़ वही राज काजी दल या मज़दूर सभा काम कर सकती थी जिसको नई बस्ती के हाकिमों ने क़ायम कराया हो. जो थोड़ा बहुत बोलने की आज़ादी थी वह भी छीन ली गई.

लड़ाई के क़ानून.

अंगरेज़ी हुकूमत मलाया में पुलिस राज की मौजूदगी से इनकार करने की कोशिश नहीं कर रही बल्कि वह सिर्फ़ मलाया की जनता पर, डाकू और डरे हुओं का कलंक लगा कर अपनी ज़ियादतियां सही साबित करने की कोशिश करती है. आज तक मलाया में जमहूरी राज या लोक शाही सरकार जैसी कोई चीज़ नज़र नहीं आती.

अंगरेज़ी नई बस्ती हुकूमत ने सन 1950 में ब्रिग्ज़ प्लान (Briggs Plan) चालू किया. इस मंसूबे का निचोड़ यह था कि मज़दूरों और किसानों को 'बहालयाबी इलाक़ों' (फिर बसाये गये इलाक़ों) में बदला जा सकता था. अंगरेज़ी हुकूमत ने निहायत ही धोखे बाज़ तरीक़े और चालबाज़ी से इसका प्रचार किया था. सच्चाई यह थी कि देहाती इलाक़ों के लाखों मज़दूरों और किसानों को फ़ौज और पुलिस के पहरे में घेर कर उनसे मन चाहा काम लेना इस मंसूबे का असली मक़सद था. कुछ अरसे तक शुरू में अंगरेज़ी हुकूमत इस बात से इनकार करती रही कि बहालयाबी कैम्प असल में "नज़र बन्दी कैम्प" न थे. कुछ लोग तो बेशरमी से यहां तक कहने लगे कि इन के कैम्पों में काम और खेल की बेमिसाल आसानियां हासिल हैं लेकिन आख़िर में सच्चाई ज़ाहिर हो गई. और जब चीन की रेडक्रास जमाअत ने मार्च 1951 में इन कैम्पों में चीनी मज़दूरों के साथ जो सलूक किया गया था उसकी जांच की तो अंगरेज़ी हाकिमों ने बहुत नाक भौं सिकोड़ी.

ڈنڈے کی حکومت.

اکتوبر 1945 سے لیکر اکتوبر 1947 تک نئی بستی کے انگریزی حاکموں کی کوششیں مزدوروں کو پریشان کرنے اور هنسا کے ذریعے اُن میں پھوٹ ڈالنے پر خرچ ہوتی رہیں . جب وہ اِن کوششوں میں کامیاب نہیں ہوئے تو اُن کے پھر بحال کرنے کے دعوے بھی ہوا ہو گئے . جون 1948 میں انگریزی حکومت نے اِن تمام راج کاجی دلوں کو جو آزادی چاہتی تھیں ڈنڈے کے زور سے کچل کر رکھ دیا اور کل ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین کو دبانے کے لئے اپنی فوجی طاقت سے کام لیا . لوگ بھی اپنی آزادی اور زندگی بچانے کے لئے ہتھیاروں سے مقابلے پر اُتر آئے .

انگریزی حکومت نے بہت جلد اپنے اِس عمل کو لڑائی میں بدل دیا . اور ایک پولیس حکومت بنا ڈالی اس وقت کے بعد پانچ آدمی اِکٹھے ہونے کو پولیس اپنی طاقت سے روک سکتی تھی . صرف وہی راج کاجی دل یا مزدور سبھا کام کرسکتی تھی جس کو نئی بستی کے حاکموں نے قائم کرایا ہو . جو تھوڑا بہت بولنے کی آزادی تھی وہ بھی چھین لی گئی .

لڑائی کے قانون

انگریزی حکومت ملایا میں پولیس راج کی موجودگی سے اِنکار کرنے کی کوشش نہیں کرتی بلکہ وہ صرف ملایا کی جنتا پر ڈاکو اور ڈرے ہوؤں کا کلنک لگا کر اپنی زیادتیاں صحیح ثابت کرنے کی کوشش کرتی ہے. آج تک ملایا میں جمہوری راج یا لوک شاہی سرکار جیسی کوئی چیز نظر نہیں آتی .

انگریزی نئی بستی حکومت نے سن 1950 میں برگز پلان (Briggs Plan) چالو کیا . اِس منصوبے کا نچوڑ یہ تھا کہ مزدوروں اور کسانوں کو بحالیاتی علاقوں (پھر بسائے گئے علاقوں) میں بدلا جاسکتا تھا . انگریزی حکومت نے نہایت ہی دھوکے باز طریقے اور چالبازی سے اِس کا پرچار کیا تھا . سچائی یہ تھی کہ دیہاتی علاقوں کے لاکھوں مزدوروں اور کسانوں کو فوج اور پولیس کے پہرے میں گھیر کر اُن سے من چاہا کام لینا اس منصوبے کا اصلی مقصد تھا . کچھ عرصے تک شروع میں انگریزی حکومت اس بات سے انکار کرتی رہی کہ بحالیاتی کیمپ اصل میں "نظر بندی کیمپ" نہ تھے. کچھ لوگ تو بےشرمی سے یہاں تک کہنے لگے کہ ان کے کیمپوں میں کام اور کھیل کی وہ آسانیاں حاصل ہیں لیکن آخر میں سچائی ظاہر ہوگئی . اور جب چین کی ریڈکراس جماعت نے مارچ 1951 میں اِن کیمپوں میں چینی مزدوروں کے ساتھ جو سلوک کیا گیا تھا اس کی جانچ کی تو انگریزی حاکموں نے بہت ناک بھوں سکوڑی .

पीली मज़दूर सभायें.

पी. एम. एफ. टी. यू. के काम करने वाले मज़दूरों को कुचलने के बाद हकूमत ने 'पीली यूनियनें' क़ायम कीं. इनका नाम ट्रेड यूनियन एडवाईज़र्स रखा गया. इनका मक़सद आम मज़दूर जमाअतों को कुचलना और उनकी जगह "ग़ैर सियासी" और हड़ताल न करने वाली जमाअतें क़ायम करना था जो कि क़ौमी तहरीक को गड़बड़ा दें.

इन ट्रेड यूनियन एडवाइज़रों ने अंगरेज़ी नई बस्ती के साथ मिल कर काम किया. लेकिन जब वह आये थे तो उन्होंने क़बूल किया था कि वह लन्दन के नई बस्ती दफ़्तर के नौकर नहीं हैं बल्कि "ट्रांसपोर्ट हाउस" के भेजे हुए हैं. फिर भी इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता. क्योंकि नई आबादी दफ़्तर ट्रेड यूनियन से ताल्लुक़ रखने वाले तमाम मसलों के बारे में ट्रांसपोर्ट हाउस से ही सलाह मशवरा लिया करता है.

मलाया के मज़दूरों को बेवक़ूफ़ बनाने की यह कोशिश नाकाम हो गई. जनवरी सन 1950 में हकूमत की मदद से क़ायम होने वाली जमाअतों के मेम्बरों की तादाद सिर्फ़ सत्तर हज़ार थी, और ग़ैर क़ानूनी पी. एम. एफ. टी. यू. के मेम्बरों की तादाद उस समय भी तीन लाख थी. इसी के ख़त्म होने तक "पीली यूनियनों" के मेम्बर हकूमत की चालबाज़ी से परेशान हो कर उसे छोड़ने लगे और हकूमत को यह मानना पड़ा कि उसके पिट्ठू यूनियनों के मुश्किल से चालीस हज़ार मेम्बर हैं.

अंगरेज़ी सरकार ने छोटी छोटी यूनियनें बना कर अपनी कामयाबी के दावे को कम से कम काग़ज़ पर सच्चा साबित कर दिया. ऐसे यूनियन गिनती में तो बढ़े पर उनके मेम्बरों की तादाद घटती चली गई.

हकूमत की बनाई जमाअतों की असलियत मज़दूर लोग समझ चुके थे. इसलिये इन क़ानूनी जमाअतों के आम मेम्बरों में भी एक सख़्त ग़ुस्सा फैलना शुरू हो गया और उन्होंने अपने दग़ाबाज़ लीडरों की पोल खोलना शुरू कर दी.

क़ानूनी मज़दूर जमाअतों की तरफ़ से पहली मुठभेड़ कोरिया की लड़ाई छिड़ने पर शुरू हुई. रबर और टीन के कारोबार में लड़ाई की वजह से काफ़ी फ़ायदा हुआ और उनकी क़ीमतें इतनी चढ़ गईं कि पहले कभी नहीं बढ़ी थीं.

रबर की खेती करने वाले अंगरेज़ों और टीन की कानों के मालिकों ने मज़दूरों को और ज़्यादा दबाना शुरू कर दिया. उन्होंने रबर की कमी का ढोंग रचा कर रोज़ाना ज़रूरत की चीज़ों के दाम आसमान पर चढ़ा दिये. इस तरह से मालिकों के फ़ायदा का कोई ओर-छोर ही नहीं था.

پیلی مزدور سبھائیں۔

پی۔ ایم۔ ایف۔ ٹی۔ یو۔ کے کام کرنے والے مزدوروں کو کچلنے کے بعد حکومت نے 'پیلی یونینیں' قائم کیں۔ ان کا نام ٹریڈ یونین ایڈوائزرس رکھا گیا۔ ان کا مقصد عام مزدور جماعتوں کو کچلنا اور ان کی جگہ "غیر سیاسی" اور ہڑتال نہ کرنے والی جماعتیں قائم کرنا تھا جو کہ قومی تحریک کو گڑبڑا دیں۔

ان ٹریڈ یونین ایڈوائزروں نے انگریزی نئی بستی کے ساتھ مل کر کام کیا۔ لیکن جب وہ آئے تھے تو انہوں نے قبول کیا تھا کہ وہ لندن کے نئی بستی دفتر کے نوکر نہیں ہیں بلکہ "ٹرانسپورٹ ہاوس" کے بھیجے ہوئے ہیں۔ پھر بھی اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا۔ کیونکہ نئی آبادی دفتر ٹریڈ یونین سے تعلق رکھنے والے تمام مسئلوں کے بارے میں ٹرانسپورٹ ہاوس سے ہی صلاح مشورہ لیا کرتا ہے۔

ملایا کے مزدوروں کو بیوقوف بنانے کی یہ کوشش ناکام ہوگئی۔ جنوری سن 1950 میں حکومت کی مدد سے قائم ہونے والی جماعتوں کے ممبروں کی تعداد صرف ستر ہزار تھی، اور غیر قانونی پی۔ ایم۔ ایف۔ ٹی۔ یو۔ کے ممبروں کی تعداد اس سمے بھی تین لاکھ تھی۔ اسی سال کے ختم ہونے تک "پیلی یونینوں" کے ممبر حکومت کی چال بازی سے پریشان ہوکر اسے چھوڑنے لگے اور حکومت کو یہ ماننا پڑا کہ اس کے پٹھو یونینوں کے مشکل چالیس ہزار ممبر ہیں۔

انگریزی سرکار نے چھوٹی چھوٹی یونینیں بناکر اپنی کامیابی کے دعوے کو کم سے کم کاغذ پر سچا ثابت کردیا۔ ایسے یونین گنتی میں تو بڑھے پر اُن کے ممبروں کی تعداد گھٹتی چلی گئی۔

حکومت بنائی جماعتوں کی اصلیت مزدور لوگ سمجھ چکے تھے۔ اس لئے قانونی جماعتوں کے عام ممبروں میں بھی ایک سخت کھلبلاہٹ شروع ہوگئی اور انہوں نے اپنے دغاباز لیڈروں کی پول کھولنا شروع کردی۔

قانونی مزدور جماعتوں کی طرف سے پہلی مٹھ بھیڑ کوریا کی لڑائی چھڑنے پر شروع ہوئی۔ ربر اور ٹین کے کاروبار میں لڑائی کی وجہ سے کافی فائدہ ہوا اور ان کی قیمتیں اتنی چڑھ گئیں کہ پہلے کبھی نہیں بڑھی تھیں۔

ربر کی کھیتی کرنے والے انگریزوں اور ٹین کی کانوں کے مالکوں نے مزدوروں کو اور زیادہ دبانا شروع کردیا۔ انہوں نے ربر کی کمی کا ڈھونگ رچا کر روزانہ ضرورت کی چیزوں کے دام آسمان پر چڑھا دیئے۔ اس وجہ سے مالکوں کے فائدے کا کوئی اور چھور ہی نہیں تھا۔

लेकिन जंग खत्म होने के बाद भी मालिकों ने मजदूरी की वही दर रखी जो 1947 से चली आती थी और इसकी कोई परवाह नहीं की कि मंहगाई में मजदूर लोग अपना पेट पाल सकेंगे या नहीं. उल्टे 1950 के नये क़ानून के आधार पर जिसमें हड़ताल पर पाबन्दी लगा दी गई है मजदूरों को और भी सताना शुरू कर दिया.

फिर मिस्र में एक नई जंग की आशा में, मलाया के बड़े बड़े कारोबारी अभी से अपने होंठ चाटने लगे हैं.

× × ×

लेकिन मजदूरों का खून और पसीना निचोड़ने की यह पालिसी बहुत मंहगी पड़ी. मजदूरों ने भी जवाबी हमले किये. पिछले चार महीनों में मजदूरों की बे-इतमिनानी अधिक बढ़ गई है. हुकूमत के ज़ुल्म और हिंसा के कारन पूरे मुल्क में असन्तोष बढ़ता और फैलता जा रहा है. 1951 के शुरू से मजदूरों की बढ़ती हुई तादाद ने कारखानों और रबर के जंगलों में "गैर क़ानूनी हड़ताल" की है; उन्होंने 'वाक आउट' किया. रबर के जंगलों में हड़ताल का काम खूब जोरों से हुआ. इस पर हुकूमत और कारोबारी लोगों ने आदमियों की कमी का शोर मचाना शुरू कर दिया.

आजकल सब से खास बात यह है कि तमाम बड़ी बड़ी और वफ़ादार यूनियनों ने या तो हड़ताल की धमकी दी है या अपनी मांग को इतने ज़ोरदार तरीक़े से पेश किया है कि एक साल पहले अगर ऐसा हुआ होता तो न जाने लोग उसके बारे में क्या समझते.

आर्मी सिविल सर्विस यूनियन (मलाया के अंगरेज़ी फ़ौजी नौकरों की यूनियन) ने भी बड़ी तगड़ी मांग पेश की. शुरू में यूनियन अपनी मांग मंज़ूर कराने में नाकाम रही. लेकिन बाद में इससे ज़ियादा ज़ोरदार तरीक़े से धमकी दे कर अपनी मांग को रखा. मलाया के अंगरेज़ी अखबार 'स्ट्रेट्स टाइम्स' के 22 जून 1951 वाले परचे में यूनियन की मांग के बारे में यह रिपोर्ट दी गई थी:—

"यूनियन ने ज़ियादा उजरत, मंहगाई भत्ता, प्राविडेंट फ़ंड, बुढ़ापा पेंशन, इलाज और मुलाज़मत की ज़मानत की मांग की है."

इन मांगों से ज़ाहिर होता है कि मलाया में मुलाज़िमों की कितनी बुरी हालत थी और उन्हें डाक्टरी सहूलियतें, बुढ़ापा पेंशन और नौकरी की गारन्टी तक हासिल न थी. इस पर भी ट्रान्सपोर्ट हाउस के हाकिम मलाया में सरकारी असर वाले ट्रेड यूनियनों की कामयाबी की डींगें मार रहे हैं.

لیکن جنگ ختم ہونے کے بعد بھی مالکوں نے مزدوری کی وہی در رکھی جو 1947 سے چلی آتی تھی اور اس کی کوئی پرواہ نہیں کی کہ مہنگائی میں مزدور لوگ اپنا پیٹ پال سکیں گے یا نہیں ۔ الٹے 1950 کے نئے قانون کے آدھار پر جس میں ہڑتال پر پابندی لگادی گئی ہے مزدوروں کو بھی ستانا شروع کردیا ۔

پھر مصر میں ایک نئی جنگ کی آشا میں، ملایا کے بڑے بڑے کاروباری ابھی سے اپنے ہونٹ چاٹنے لگے ہیں ۔

× × ×

لیکن مزدوروں کا خون اور پسینہ نچوڑنے کی یہ پالیسی بہت مہنگی پڑی ۔ مزدوروں نے بھی جوابی حملے کئے ۔ پچھلے چار مہینوں میں مزدوروں کی بے اطمینانی ادھک بڑھ گئی ہے ۔ حکومت کے ظلم اور ہنسا کے کارن پورے ملک میں اسنتوش بڑھتا اور پھیلتا جا رہا ہے ۔ 1951 کے شروع سے مزدوروں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے کارخانوں اور ربر کے جنگلوں میں " غیر قانونی ہڑتال " کی ہے ۔ انہوں نے ' واک آؤٹ ' کیا ۔ ربر کے جنگلوں میں ہڑتال کا کام خوب زوروں سے ہوا ۔ اور اس پر حکومت اور کاروباری لوگوں نے آدمیوں کی کمی کا شور مچانا شروع کر دیا ۔

آجکل سب سے خاص بات یہ ہے کہ تمام بڑی بڑی اور وفادار یونینوں نے یا تو ہڑتال کی دھمکی دی ہے یا اپنی مانگ کو اتنے زور دار طریقے سے پیش کیا کہ ایک سال پہلے اگر ایسا ہوا ہوتا تو نہ جانے لوگ اُن کے بارے میں کیا سمجھتے ۔

آر ی سول سروس یونین (ملایا کے انگریزی فوجی نوکروں کی یونین) نے بھی بڑی تگڑی مانگ پیش کی ۔ شروع میں یونین اپنی مانگ منظور کرانے میں ناکام رہی ۔ لیکن بعد میں اس سے زیادہ زور دار طریقے سے دھمکی دے کر اپنی مانگ کو رکھا ۔ ملایا کے انگریزی اخبار 'اسٹریٹس ٹائمس' کے 22 جون 1961 والے پرچے میں یونین کی مانگ کے بارے میں یہ رپورٹ دی گئی تھی:—

" یونین نے زیادہ اُجرت' مہنگائی بھتّا' پراوی ڈینٹ فنڈ' بڑھاپا پینشن' علاج اور ملازمت کی ضمانت کی مانگ کی ہے ۔"

ان مانگوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ ملایا میں ملازموں کی کتنی بری حالت تھی اور انہیں ڈاکٹری سہولتیں' بڑھاپا پینشن اور نوکری کی گارنٹی تک حاصل نہ تھی ۔ اس پر بھی ٹرانسپورٹ ہاؤس کے حاکم ملایا میں سرکاری اثر والے ٹریڈ یونینوں کی کامیابی کی ڈینگیں مار رہے ہیں ۔

[illegible] का नंगा नाच

सन् 1951 में सिंगापुर म्युनिसिपैल्टी के बारह हज़ार नौकरों ने महीने में एक दिन की छुट्टी की मांग की. इतनी मामूली मांग भी ठुकरा दी गई. इससे पता चलता है कि अंगरेज़ों ने मज़दूरों की क्या दुर्गत बना रखी है.

ऊपर लिखी मांग की पैरवी में अगस्त में सिंगापुर वरकर्स यूनियन ने अल्टीमेटम दे दिया. यूनियन ने अपने मेम्बरों से कहा कि अगर उनकी मांगें पूरी न की गईं तो वह आगे क़दम बढ़ायेगी. इसी तरह फ़ेडरेशन आफ़ क्लेरिकल एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ़, माइनिंग सेक्शन, सिंगापुर हुंग साम मिल वर्कर्स, सिंगापुर ट्रेड यूनियन कांग्रेस, मलाया रेलवे ट्रेफ़िक आपरेटिंग यूनियन और दूसरी मज़दूर जमाअतों ने इस तरह की मांगें हुकूमत के सामने रक्खीं. मज़दूरों की लगातार कोशिशों के कारन हुकूमत को हार मानना पड़ी और मलाया के आजकल की हालत में मज़दूरों की यह ज़बरदस्त जीत है.

हुकूमत ने जो छटनी की उसका नतीजा यह हुआ कि रबर के जंगलों में हड़ताल फैल गई लेकिन हुकूमत ने फ़ौरन ही फ़ौज और पुलिस दौड़ कर सख़्ती से मज़दूरों को दबा दिया. मलाया के मज़दूरों ने एंग्लो-अमरीकी हिमायत से क़ायम हुई आई. सी. एफ़. टी. यूनियन में शामिल होने से इनकार कर दिया. इस यूनियन की घटती हुई तादाद से पता चलता है कि मलाया के मज़दूर बराबर बेदार होते चले जा रहे हैं.

इंगलिस्तान के ख़ुदग़र्ज़ हाकिमों ने वर्ल्ड फ़ेडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन से मलाया की मज़दूर जमाअतों के मिलने या उसके नुमाइन्दों के मलाया में आने पर पाबन्दी लगा रखी है. लेकिन इसके बावजूद अपनी तमाम कोशिशों में मलाया के मज़दूरों को कुचलने में अंगरेज़ लोग नाकाम रहे हैं. और उनकी नाकामी का कारन यह है कि उन्हें मज़दूरों की हिमायत हासिल नहीं हो सकी है. अंगरेज़ों ने उन्हें डराया, धमकाया, पूरे पूरे गांवों पर जुरमाना किया और उन्हें तबाह करके वहां की आबादी को नज़रबन्द कैम्पों में डाल दिया. उन्होंने रूसी पनडुब्बियों को मलाया के समुन्दर में घुसने और चीन की तरफ़ से कम्युनिस्ट हमले की झूठी गढ़न्त ख़बरें उड़ाईं. लेकिन मज़दूरों और मलाया के आम लोगों ने एक न सुनी और अपनी आन पर डटे रहे जिससे गोरे और ज़ियादा आग बबूला हो गये.

हाकिमों ने अब भरती का दूसरा रास्ता शुरू किया. यह वह कि 22 से 40 साल की उमर वाले तमाम लोगों को ज़बरदस्ती भरती करते हैं. कारख़ानों और रबर के जंगलों के मज़दूरों को भी तरह तरह से तंग करते हैं.

ملایا میں انگریزی سامراج کا ننگا ناچ

سن 1951 میں سنگاپور میونسپلٹی کے بارہ ہزار نوکروں نے مہینے میں ایک دن کی چھٹی کی مانگ کی . اتنی معمولی مانگ بھی ٹھکرا دی گئی. اس سے پتہ چلتا ہے کہ انگریزوں نے مزدوروں کی کیا درگت بنا رکھی ہے .

اوپر لکھی مانگ کی پیروی میں اگست میں سنگاپور ورکرز' یونین نے الٹی میٹم دے دیا . یونین نے اپنے ممبروں سے کہا کہ اگر اُن کی مانگیں پوری نہ کی گئیں تو وہ آگے قدم بڑھائے گی. اِسی طرح فیڈریشن آف کلیریکل ایڈمنسٹریٹیو اسٹاف مائننگ سیکشن' سنگاپور ٹنگ سان ہرک ورکس کے سنگاپور ٹریڈیونین کانگریس' ملایا ریلوے ٹریفک آپریٹنگ یونین اور دوسری مزدور جماعتوں نے اِس طرح کی مانگیں حکومت کے سامنے رکھیں . مزدوروں کی لگاتار کوششوں کے کارن حکومت کو ہار ماننی پڑی اور ملایا کے آجکل کے حالات میں مزدوروں کی یہ زبردست جیت ہے . حکومت نے جو چھنٹنی کی اسکا نتیجہ یہ ہوا کہ ربر کے جنگلوں میں ہڑتال پھیل گئی. لیکن حکومت نے فوراً ہی فوج اور پولیس دوڑا کر سختی سے مزدوروں کو دبا دیا . ملایا کے مزدوروں نے اینگلو امریکی حمایت سے قائم ہوئی آئی . سی . ایف . ٹی یونین میں شامل ہونے سے انکار کر دیا . اِس یونین کی گھٹتی ہوئی تعداد سے پتہ چلتا ہے کہ ملایا کے مزدور برابر بیدار ہوتے چلے جا رہے ہیں .

انگلستان کے خود غرض حاکموں نے ورلڈ فیڈریشن آف ٹریڈیونین سے ملایا کی مزدور جماعتوں کے ملنے یا اُس کے نمائندوں کے ملایا میں جانے پر پابندی لگا رکھی ہے . لیکن اِس کے باوجود اپنی تمام کوششوں میں ملایا کے مزدوروں کو کچلنے میں انگریز لوگ ناکام رہے ہیں . اور اُن کی ناکامی کا کارن یہ ہے کہ اُنہیں مزدوروں کی حمایت حاصل نہیں ہو سکی ہے . انگریزوں نے اُنہیں ڈرایا' دھمکایا' پورے پورے گاؤں پر جرمانہ کیا اور اُنہیں تباہ کر کے وہاں کی آبادی کو نظر بند کیمپوں میں ڈال دیا . اُنہوں نے روسی پن ڈبیوں کو ملایا کے سمندر میں گھسنے اور چین کی طرف سے کمیونسٹ حملے کی جھوٹی من گھڑت خبریں اڑائیں . لیکن مزدوروں اور ملایا کے عام لوگوں نے ایک نہ سنی اور اپنی آن پر ڈٹے رہے جس سے گورے اور زیادہ آگ ببولا ہو گئے .

حاکموں نے اب بھرتی کا دوسرا راستہ شروع کیا . وہ یہ کہ 22 سے 40 سال کی عمر والے تمام لوگوں کو زبردستی بھرتی کرتے ہیں. کارخانوں اور ربر کے جنگلوں کے مزدوروں کو بھی طرح طرح سے تنگ کرتے ہیں .

उन्हें कुछ कुछ देर चौकीदार की ड्यूटी बजानी पड़ती है. दूसरे लोगों को स्पेशल कान्सटेबलरी और मदद करने वाली पुलिस के साथ लगाया गया है. सिंगापुर में लेजिस्लेटिव कौंसल के जलसे में 20 सितम्बर को मलाया में इंगलिस्तान के मंत्री ने बताया कि पुलिस स्टेशनों और चौकियों की तादाद बढ़ा दी गई है. इसके अलावा तीन लाख अस्सी हज़ार स्पेशल कान्सटेबिल और इस से कहीं ज़ियादा तादाद इमदादी पुलिस और केम्पांग गार्डस यानी पहरेदारों की है.

इस सच्चाई को निगाह में रखते हुए कि मलाया स्वेज़ नहर के पूरब में अंगरेज़ी साम्राजियों का सब से बड़ा फ़ौजी अड्डा है, मलाया की आज़ादी के लिये लड़ने वालों की साबित क़दमी की जितनी तारीफ़ की जाये थोड़ी है. वह साढ़े तीन साल से बराबर मुक़ाबला कर रहे हैं. कम होने की बजाये उनकी लिबरेशन आरमी या आज़ाद फ़ौज के हमले महीने में कुल मिला कर आठ सौ से भी ज़ियादा हो जाते हैं.

"आज़ादी" की नई चाल.

यह समझ कर मलाया के आम लोग किसी तरह भी उनके साथ नहीं आयेंगे सरकारी पिट्ठू 'आज़ाद' पारटी क़ायम करने की चालबाज़ी पर उतर आए. पारटी (मलाया के लिये आज़ादी की जमाअत) 12 सितम्बर 1951 को क़ायम की गई थी और "दस साल में आज़ादी" का नारा लगाया. साम्राजी हुकूमत का पल्ला पकड़ कर वह जनता को धोके में डालने के लिये खींचा तानी करती रहती है.

लेकिन इस बात में कोई शक नहीं कि मलाया के आम लोग इस चालबाज़ी के फेर में नहीं आयेंगे. वह इस धोके की टट्टी को खूब अच्छी तरह समझते हैं. रबर के जंगलों और कानों में काम करने वाले मज़दूरों को मालूम है कि इस पारटी के दस मेम्बर तो ऐसे हैं जो कि आज़ादी और ऊंचे रहन सहन के लिये खून पसीना एक कर देने का दावा करते हैं. लेकिन सचमुच रबर के जंगलों और टीन की कानों के मालिक या जागीरदार और बैंकर हैं. उनमें से एक तो करोड़ पति है. कौन नहीं जानता कि हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और ?

मज़दूरों की कोशिशें ज़ियादा सफल होती जाती हैं. मलाया के समुन्द्री, फ़ौजी और हवाई अड्डों को शामिल करने के लिये अंगरेज़ी साम्राज पर अमरीका का दबाव कुछ महीनों से बहुत बढ़ गया है. यह एक ख़तरनाक चीज़ है जिस पर मलाया के ईमानदार लोग यह शक करते हैं और ठीक शक करते हैं कि "ज़ियादा क़रीबी ताल्लुक़" से अमरीका का मक़सद मलाया के कच्चे माल को अपने क़ाबू में करना है.

انہیں کچھ کچھ دیر چوکیدار کی ڈیوٹی بجانی پڑتی ہے ۔ دوسرے لوگوں کو اسپیشل کانسٹیبلری اور مدد کرنے والی پولیس کے ساتھ لگایا گیا ہے ۔ سنگاپور میں لیجسلیٹیو کونسل کے جلسے میں 20 ستمبر کو ملایا میں انگلستان کے منتری نے بتایا کہ پولیس اسٹیشنوں اور چوکیوں کی تعداد بڑھا دی گئی ہے ۔ اس کے علاوہ تین لاکھ اسی ہزار اسپیشل کانسٹیبل اور اس سے کہیں زیادہ تعداد امدادی پولیس اور کیمپانگ گارڈز یعنی پہرے داروں کی ہے ۔

اس سچائی کو نگاہ میں رکھتے ہوئے کہ ملایا سوئز نہر کے پورب میں انگریزی سامراجیوں کا سب سے بڑا فوجی اڈا ہے، ملایا کی آزادی کے لئے لڑنے والوں کی ثابت قدمی کی جتنی تعریف کی جائے تھوڑی ہے ۔ وہ ساڑھے تین سال سے برابر مقابلہ کر رہے ہیں ۔ کم ہونے کی بجائے ان کی لبریشن آرمی یا آزاد فوج کے حملے مہینے میں کل ملا کر آٹھ سو سے بھی زیادہ ہو جاتے ہیں ۔

" آزادی " کی نئی چال ۔

یہ سمجھ کر ملایا کے عام لوگ کسی طرح بھی ان کے ساتھ نہیں آئیں گے سرکاری پٹھو ' آزاد ' پارٹی قائم کرنے کی چال بازی پر اتر آئے ۔ پارٹی (ملایا کے لئے آزادی کی جماعت) 12 ستمبر 1951 کو قائم کی گئی تھی اور " دس سال میں آزادی " کا نعرہ لگایا ۔ سامراجی حکومت کا پلا پکڑ کر وہ جنتا کو دھوکے میں ڈالنے کے لئے کھینچا تانی کرتی رہتی ہے ۔

لیکن اس بات میں کوئی شک نہیں کہ ملایا کے عام لوگ اس چال بازی کے پھیر میں نہیں آئیں گے ۔ وہ اس دھوکے کی ٹٹی کو خوب اچھی طرح سمجھتے ہیں ۔ ربر کے جنگلوں اور کانوں میں کام کرنے والے مزدوروں کو معلوم ہے کہ اس پارٹی کے دس ممبر تو ایسے ہیں جو کہ آزادی اور اونچے رہن سہن کے لئے خون اور پسینہ ایک کر دینے کا دعویٰ کرتے ہیں ۔ لیکن سچ مچ ربر کے جنگلوں اور ٹین کی کانوں کے مالک جاگیر دار اور بینکر ہیں ۔ ان میں ایک تو کروڑ پتی ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ ہاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور ؟

مزدوروں کی کوششیں زیادہ سپھل ہوتی جاتی ہیں ۔ ملایا کے سمندری، فوجی اور ہوائی اڈوں کو شامل کرنے کے لئے انگریزی سامراج پر امریکہ کا دباؤ کچھ مہینوں سے بہت بڑھ گیا ہے ۔ یہ ایک خطرناک چیز ہے جس پر ملایا کے ایماندار لوگ یہ شک کرتے ہیں اور ٹھیک شک کرتے ہیں کہ " زیادہ قریبی تعلق " سے امریکہ کا مقصد ملایا کے کچے مال کو اپنے قابو میں کرنا ہے ۔

अमन की कोशिशें.

मलाया के अन्दर भी शान्ति का आन्दोलन चल रहा है. मज़दूर और जनता इसमें एक साथ हैं उन्होंने जापान को फिर से हथियार बन्द कर देने के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई है. इस सवाल पर मलाया के आम लोगों की कोई और दूसरी राय नहीं है.

रूस और चीन के साथ मलाया के आम लोगों में गहरी हमदर्दी की भावना है. इन मुल्कों की आम जनता के ऊपर उनके दिलों में बेहद प्रेम और इज़्ज़त है. वह उनको अमन का निशान और मज़दूर क़ौमों को आज़ादी का अलमबरदार मानते हैं.

अमन, आज़ादी और ख़ुशहाली के लिये कोशिशें करना, मलाया के पुलिस राज में ऐसा नारा है जिसका लगाना मना है. लेकिन वहां के मज़दूर इसके लिये बराबर काम कर रहे हैं और उनकी यह कोशिश लगातार जारी रहेगी.

امن کی کوششیں ۔

ملایا کے اندر بھی شانتی کا آندولن چل رہا ہے مزدور اور جنتا اِس میں ایک ساتھ ہیں ۔ انہوں نے جاپان کو پھر سے ہتھیار بند کر دینے کے خلاف آواز اٹھائی ہے ۔ اِس سوال پر ملایا کے عام لوگوں کی کوئی اور دوسری رائے نہیں ہے ۔

روس اور چین کے ساتھ ملایا کے عام لوگوں میں گہری ہمدردی کی بھاونا ہے ۔ اِن ملکوں کی عام جنتا کے اوپر اُن کے دلوں میں بے حد پریم اور عزت ہے ۔ وہ اُن کو امن کا نشان اور مزدور قوموں کی آزادی کا علمبردار مانتے ہیں ۔

امن، آزادی اور خوش حالی کے لئے کوششیں کرنا ملایا کے پولیس راج میں ایسا نعرہ ہے جسکو لگانا منع ہے ۔ لیکن وہاں کے مزدور اِس کے لئے برابر کام کر رہے ہیں اور اُن کی یہ کوشش لگاتار جاری رہے گی ۔

रोटी और राजनीति

(अब्दुल हलीम अन्सारी)

रोटी का सम्बन्ध राजनीति के साथ ऐसा ही है जैसे राजनीति का नाता जनता के साथ. जिस तरह बिना जनता की शक्ति और सहयोग के राजनीति को सफलता नहीं उसी तरह रोटी का इन्तज़ाम किये बिना राजनीति का ज़िन्दा रहना कठिन.

जनता के साथ राज नीति का सम्बन्ध क़ायम रखने के सिलसिले में किसी भी प्रकार उसके लिये रोटी का प्रबन्ध करना ज़रूरी है, क्योंकि उसी की ज़िन्दगी से वह ज़िन्दगी पानी और मंज़िल को पहुँचती है.

अगर राज की नीति या नेता ने इस फ़र्ज़ और कर्तव्य को न समझा, या अगर समझा मगर पूरा न किया तो ऐसी सूरत में राज और नेता दोनों ग़ैर ज़िम्मेदार क़रार दिये जायेंगे. और ग़ैर ज़िम्मेदारी के दोष में जनता के सामने वह जवाब देने के ज़िम्मेदार होंगे.

जम्हूरी या लोकराज में समाज के हर मर्द और औरत को यह हक़ और अधिकार है कि वह पुकार कर उन

روٹی اور راجنیتی

(عبدالحلیم انصاری)

روٹی کا سمبندھ راجنیتی کے ساتھ ایسا ہی ہے جیسے راجنیتی کا ناتا جنتا کے ساتھ ۔

جس طرح بنا جنتا کی شکتی اور سہیوگ کے راجنیتی کو سپھلتا نہیں اسی طرح روٹی کا انتظام کئے بنا راجنیتی کا زندہ رہنا کٹھن ۔

جنتا کے ساتھ راجنیتی کا سمبندھ قائم رکھنے کے سلسلے میں کسی بھی پرکار اُس کے لئے روٹی کا پربندھ رکھنا ضروری ہے ۔ کیونکہ اُسی کی زندگی سے وہ زندگی پانی اور منزل کو پہونچتی ہے ۔

اگر راج کی نیتی یا نیتا نے اِس فرض اور کرتویہ کو نہ سمجھا، یا اگر سمجھا مگر پورا نہ کیا تو ایسی صورت میں راج اور نیتا دونوں غیر ذمے دار قرار دیئے جائینگے ۔ اور غیر ذمے داری کے دوش میں جنتا کے سامنے وہ جواب دینے کے ذمے دار ہوں گے ۔

جمہوری یا لوک راج میں سماج کے ہر مرد اور عورت کو یہ حق اور ادھکار ہے کہ وہ پکار کر اُن

[illegible]

... हो जा जाता है. और अगर उन पर खतरे पड़े हों तो उन खतरों को रोक लेना भी उसका फ़र्ज़ है।

लोकराज का मतलब और लोकराज के अन्दर अपनी ताक़त, यह दोनों बातें जनता को समझनी चाहिये. जब तक वह ऐसा नहीं करेगी चालाक राजनीतिकार उसके साथ खिलवाड़ करता रहेगा और उसको बेवक़ूफ़ बना कर अपना घर व पेट भरता रहेगा.

हर ज़माने में, हर मिनिस्टर और राज पति से जवाब तलब करना जमहूरियत के मतलब और इनसानी आज़ादी की स्पिरिट को पूरा करना है. इसलिये यह जुरअत और यह हिम्मत जनता के हर व्यक्ति में होनी चाहिये. और दिलेरी मगर सच्चाई और नेक नियती के साथ उनको बरतने का आदी हर देस वासी को बनना चाहिये ताकि वह ख़ुद अपने को भी समझ सके और विधान के मन्शा को पूरा करने में उसको इस्तेमाल में फ़र्क़ न आने दे और अपने फ़र्ज़ के पालन में कमी न होने दे.

इसका बड़ा सबब है उसकी जहालत या उसका कुन्दज़ापन और उसके ऊपर एक अजीब व सियासी क़िस्म का बोझ या दबाव.

हम देख रहे हैं कि इस बोझ से ज्ञानी और अज्ञानी, सियासी हैं और ग़ैर सियासी, सभी प्रकार के लोग दबे हुए हैं. इस की वजह से देश और देशवासियों के पनपने और ऊपर उठने के निशान नहीं मिलते. अधिक-तर गिरावट ही गिरावट की तरफ़ हैं.

× × ×

रोटी और राजनीति का एक दूसरे के साथ ऐसा नाता है जो किसी तरह तोड़ा नहीं जा सकता. जहाँ इसमें कोई दरार पड़ी उसी समय जनता के अन्दर से ग़ुस्से का मादा फूट पड़ता है और सारी हवा में असन्तोष छा जाता है. इसी रोटी कपड़े के सवाल पर जो जनता का पहला हक़ और राजनीति का पहला वचन है दुनिया भर में झगड़े क़िस्से चल रहे हैं और एक दूसरे में तनाव खिचाव हो रहा है. कारन यह कि राजनीति अपनी चाहत के मुताबिक़ अपने वचन से फिर फिर जाती है इसका नतीजा यह होता है कि झगड़े क़िस्से बढ़ते हैं जो बढ़ते बढ़ते जंग के मैदान तक पहुँच जाते हैं.

क्या रोटी का सवाल पाप है ?

क्या कपड़े लत्ते की मांग गुनाह है ?

[illegible]

... لوگوں کے لئے ... پھر ذمہ داری اُن کی ... ل کو سود دیتا ہوا چلتا ہی کا کام ہے۔ اور اگر ان پر ... ے ہوئے ہوں تو اُن خطروں کو روک لینا بھی اس کا ... ض ہے!

لوک راج کا مطلب اور لوک راج کے اندر ... طاقت' یہ دونوں باتیں جنتا کو سمجھنی ... یئیں۔ جب تک وہ ایسا نہیں کریگی چالاک ... سیاست کار اسکے ساتھ کھلواڑ کرتا رہے گا اور اسکو ... بیوقوف بنا کر اپنا گھر و پیٹ بھرتا رہے گا۔

... ہر زمانے میں' ہر منسٹر اور راج پتی سے جواب ... طلب کرنا جمہوریت کے مطلب اور انسانی آزادی کی ... سپرٹ کو پورا کرنا ہے۔ اِس لئے یہ جرأت اور یہ ہمت ... جنتا کے ہر ویکتی میں ہونی چاہئیے۔ اور دلیری مگر ... سچائی اور نیک نیتی کے ساتھ اُن کو برتنے کا عادی ہر ... دیس واسی کو بننا چاہئیے تاکہ وہ خود اپنے کو بھی ... سمجھ سکے اور ودھان کے منشا کو پورا کرنے میں اسکی ... استعمال میں فرق نہ آنے دے اور اپنے فرض کے پالن میں ... کمی نہ ہونے دے۔

اِس کا بڑا سبب ہے اُسکی جہالت یا اُس کا کندذہن اور ... اس کے اوپر ایک عجیب و سیاسی قسم کا بوجھ یا دباؤ۔

ہم دیکھ رہے ہیں کہ اس بوجھ سے گیانی اور اگیانی' ... سیاسی اور غیر سیاسی' سبھی پرکار کے لوگ دبے ہوئے ... ہیں۔ اس وجہ سے دیش اور دیش واسیوں کے پنپنے اور ... اُٹھنے کے نشان نہیں ملتے۔ ادھک تر گراوٹ ہی ... گراوٹ کی طرف ہیں۔

× × × ×

روٹی اور راجنیتی کا ایک دوسرے کے ساتھ ایسا ناتا ... ہے جو کسی طرح توڑا نہیں جا سکتا۔ جہاں اس میں ... کوئی دراڑ پڑی اُسی سمے جنتا کے اندر سے غصے کا مادہ ... پھوٹ پڑتا ہے اور ساری ہوا میں اسنتوش چھا جاتا ہے۔ ... اسی روٹی کپڑے کے سوال پر جو جنتا کا پہلا حق اور ... راجنیتی کا پہلا وچن ہے دنیا بھر میں جھگڑے قصے ... چل رہے ہیں اور ایک دوسرے میں تناؤ کھینچاؤ ہو رہا ... ہے۔ کارن یہ کہ راجنیتی اپنی چاہت کے مطابق اپنے ... وچن سے پھر پھر جاتی ہے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ... جھگڑے قصے بڑھتے ہیں جو بڑھتے بڑھتے جنگ کے میدان ... تک پہنچ جاتے ہیں۔

کیا روٹی کا سوال پاپ ہے ؟

کیا کپڑے لتے کی مانگ گناہ ہے ؟

इसी सवाल और इसी मांग पर दुनिया भर में, ज़ाहिर, जो ना इन्साफ़ी और ज़्यादतियाँ हो रही हैं वह सामने है. हमको इस बारे में अपनी हुकूमत की रहम दिली, अहिंसा परवरी और प्रजा परवरी का अहसास है — हमको यह भी इक़रार है कि हमारी हुकूमत बड़ी प्रजा पालक और मेहरबान है. सबूत यह कि वह प्रजा पर बन्दूक का उपयोग नहीं करती. कारन यह कि वह अहिंसक है मगर क़ानून की मार ज़रूर देती रहती है. बेशक वह प्रजा का खून तो नहीं करती मगर खून खुश्क कर देती है. जब इन्सान के शरीर का सारा खून सूख जाय तो फिर उसमें बाक़ी ही क्या रह जाता है ?

सूखी हड्डियों का एक ढांचा,

या मरी मिट्टी का एक ढेर ?

याद रहे जहां किसी भी नेता या लीडर के मुंह से 'आज़ादी' या राजनीति का शब्द निकला कि जनता में नई ज़िन्दगी की लहर दौड़ गई और उसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी उस नेता पर आ जाती है और जनता की चिन्ताओं को दूर करने का दावा भी उसे पूरा करना पड़ जाता है. मगर जल्द ही यह देखने में आता है कि वह बोझ उतार फेंकता है और मुहर तोड़ डालता है.

कितना अफ़सोस और कितना अचरज !

उस ग़ैर ज़िम्मेदारी और लोभ के अंधेरे में कहीं यह लिखा हुआ भी दिखाई नहीं देता कि मुहर तोड़ना अख़लाक़ी जुर्म भी है, समाजी जुर्म भी और क़ानूनी जुर्म भी !

दोष या जुर्म को अपना कर यानी मुजरिम या दोषी बनकर रहते हुए क्या इनका ज़मीर और आत्मा इन पर लानत न करती होगी — ज़रूर, मगर आत्मा की बात कौन सुनता और कौन मानता है ?

अगर नैतिक उपदेश मानकर अपना किरदार और सदाचार सुधार लिया जाये तो फिर यह बुराइयां ही क्यों पैदा हों ? इन तमाम बुराइयों का जन्म चालचलन अख़लाक़ की गिरावट और दिल की ख़राबी से है, नियतों के फ़साद से है और लोभ की चाट से. कितनी ख़ुशी का वह समय होगा और कितना मुबारक वह दिन जब उजले चालचलन और साफ़ सुथरे दिल के लोग हमें देखने को मिलेंगे. सही शक्ल सूरत और सही दिमाग़ और सिफ़त (गुन) के इन्सान हमको देखने को मिलेंगे — उस सही इन्सान को हम बेशक पहचान लेंगे.

पर आज सूरत क्या है ? इन्सान, इन्सानियत से जितना दूर है उतना ही बर्बरता के नज़दीक.

روٹی اور راجنیتی

اسی سوال اور اسی مانگ پر دنیا بھر میں، جہاں یا ظاہر جو نا انصافی اور زیادتی ہو رہی ہے وہ سامنے ہے۔ ہم کو اس بارے میں اپنی حکومت کی رحم دلی، اہنسا پروری اور پرجا پروری کا احساس ہے — ہم کو یہ بھی اقرار ہے کہ ہماری حکومت بڑی پرجا پالک اور مہربان ہے۔ ثبوت یہ کہ وہ پرجا پر کوئی بندوق کا پیوگ نہیں کرتی۔ کارن یہ کہ وہ اہنسک ہے مگر قانون کی مار ضرور دیتی رہتی ہے۔ بے شک وہ پرجا کا خون تو نہیں کرتی مگر خون خشک ضرور کر دیتی ہے۔ جب انسان کے شریر کا سارا خون سوکھ جائے تو پھر اس میں باقی ہی کیا رہ جاتا ہے ؟

سوکھی ہڈیوں کا ایک ڈھانچہ،

یا مری مٹی کا ایک ڈھیر ؟

یاد رہے جہاں کسی بھی نیتا یا لیڈر کے منہ سے 'آزادی' یا راجنیتی کا لفظ نکلا کہ جنتا میں نئی زندگی کی لہر دوڑ گئی اور اسکی رکشا کی ذمہ داری بھی اس نیتا پر آجاتی ہے اور جنتا کی چنتاؤں کو دور کرنے کا دعویٰ بھی اسے پورا کرنا پڑ جاتا ہے۔ مگر جلد ہی یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ وہ بوجھ اتار پھینکتا ہے اور مہر توڑ ڈالتا ہے۔

کتنا افسوس اور کتنا اچرج !

اس کو غیر ذمہ داری اور لوبھ کے اندھیرے میں کہیں یہ لکھا ہوا بھی دکھائی نہیں دیتا کہ مہر توڑنا اخلاقی جرم بھی ہے، سماجی جرم بھی اور قانونی جرم بھی !

دوش یا جرم کو اپنا کر یعنی مجرم یا دوشی بن کر رہتے ہوئے کیا ان کا ضمیر اور آتما ان پر ملامت نہ کرتی ہوگی — ضرور، مگر آتما کی بات کون سنتا اور کون مانتا ہے ؟

اگر نیتک اپدیش مان کر اپنا کردار اور سداچار سدھار لیا جائے تو پھر یہ برائیاں ہی کیوں پیدا ہوں ؟ ان تمام برائیوں کا جنم چال چلن اخلاق کی گراوٹ اور دل کی خرابی میں سے ہے، نیتوں کے فساد میں ہے اور لوبھ کی چاٹ سے۔ کتنی خوشی کا وہ سمے ہوگا اور کتنا مبارک وہ دن جب اجلے چال چلن اور صاف ستھرے دل کے لوگ ہمیں دیکھنے کو ملیں گے۔ صحیح شکل صورت اور صحیح دماغ اور صفت (گن) کے انسان ہم کو دیکھنے کو ملینگے — اس صحیح انسان کو ہم بے شک پہچان لیں گے۔

پر آج صورت کیا ہے ؟ انسان، انسانیت سے جتنا دور ہے اتنا ہی بربرتا سے نزدیک ہے۔

[illegible] इन्सानियत, हैवानियत के रूप में आ जाती है तो अपनी आप पास का रोटी टुकड़ा छीन जाती है, अपने ही भाई बन्दों का खून पी जाती है और अपने ही अज़ीज़ प्यारों को नोच खसोट लेती है.

नेता या लीडर से जनता की रोटी का सवाल उसका वाजबी हक और पहला सवाल है.

आज की सियासी और लोक राज पसंद दुनिया में जहाँ अधिकारियों के हाथों में मुल्की और समाजी प्रबन्ध है और जिनकी ज़ात के साथ जनता के जीने मरने का सम्बन्ध है.

उनके बारे में यह बात कितनी तूल पकड़ चुकी है कि उनमें चोर भी हैं और रिश्वत खोर भी हैं.

तो क्या ऐसे चोरों और रिश्वत खोरों से दुनिया की राज नीति चल सकती है और क्या ऐसी राजनीति से जनता चल सकती है ?

राजनीति का चलन और जनता का चलन क्यों निस्वार्थ त्याग में है. केवल इनसानियत और सदाचार में है, लेकिन जब इनसानियत ही का निशान न हो तो सदाचार का नाम लेना ही बेकार.

आज़ादी से राजनीति, आज़ादी के अलमबरदार राजनीति के शहसवार-सब को देखा, समझा और आज़माया,

दोनों चालाक और चालबाज़,

दोनों मतलब परस्त और खुदगरज़.

इस लिये विश्वास उनपर गलत !

क्या वक़्त है ?

राजनीति, जनता की रोटी हड़प कर रही है,

जनता रोटी के लिये तड़प रही है—और

हर ओर रोटी ही के लिये आग भड़क रही है.

یہی سبب ہے ایک خطرے کی چیز ہے ۔ کیونکہ جب اِنسانیت' حیوانیت کے روپ میں آجاتی ہے تو اپنی جانت پانت کا روٹی ٹکڑا چھین لیتی ہے ۔ اپنے ہی بھائی بندوں کا خون پی جاتی ہے اور اپنے ہی عزیز پیاروں کو نوچ کھسوٹ لیتی ہے ۔

نیتا یا لیڈر سے جنتا کی روٹی کا سوال اُس کا واجبی حق اور پہلا سوال ہے ۔

آج کی سیاسی اور لوک راج پسند دنیا میں جہاں ادھیکاریوں کے ہاتھوں میں ملکی اور سماجی پربندھ ہے اور جن کی ذات کے ساتھ جنتا کے جینے مرنے کا سمبندھ ہے ۔

اُن کے بارے میں یہ بات کتنی طول پکڑ چکی ہے کہ اُن میں چور بھی ہیں اور کچھ رشوت خور بھی ہیں.

تو کیا ایسے چوروں اور رشوت خوروں سے دنیا کی راج نیتی چل سکتی ہے . اور کیا ایسی راجنیتی سے جنتا چل سکتی ہے ؟

راجنیتی کا چلن اور جنتا کا چلن کیوں نسوارتھ تیاگ میں ہے . کیول اِنسانیت اور سداچار میں ہے . لیکن جب انسانیت ہی کا نشان نہ ہو تو سداچار کا نام لینا ہی بیکار .

آزادی سے راجنیتی' آزادی کے علمبردار سے راجنیتی کے شہ سوار—سب کو دیکھا سمجھا آزمایا'

دونوں چالاک اور چال باز'

دونوں مطلب پرست اور خود غرض .

اِس لئے وشواس اُن پر غلط !

کیا وقت ہے ؟

راجنیتی' جنتا کی روٹی ہڑپ کر رہی ہے'

جنتا' روٹی کے لئے تڑپ رہی ہے—اور

ہر اور روٹی ہی کے لئے آگ بھڑک رہی ہے .

संत साने गुरू जी का

'आंतर भारती' का सपना

(श्रीपाद जोशी)

[साने गुरू जी की गिनती महाराष्ट्र के ठोस, ऊंचे और गहरे लेखकों में की जाती है. उनकी अचानक मौत ने महाराष्ट्र के जीवन में एक गढ़ा सा खाली छोड़ दिया. ख़ुशी की बात है कि महाराष्ट्र के भाई बहनों ने उसको पाटने के इरादे से साने गुरू जी के 'आन्तर भारती' के सपने को असली जामा पहनाने का फ़ैसला कर लिया है. इस सिलसिले में अपने नौजवान भाई श्री पाद जोशी का एक लेख हम अपने पाठकों के आगे पेश करते हैं—एडीटर]

नये महाराष्ट्र के संत श्री पांडुरंग सदाशिव साने उर्फ़ साने गुरू जी ने 11 जून 1950 को इस दुनिया से विदा ली. महाराष्ट्र के जवानों को जगाकर उनमें देश प्रेम और सेवा की धुन भर देने का काम साने गुरू जी ने पच्चीस बरस तक लगातार किया. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के बाद महाराष्ट्र की आम जनता और ख़ास कर नौजवान महात्मा गांधी के अलावा किसी दूसरे शख़्स की तरफ़ अगर झुके हैं तो वह साने गुरू जी ही थे. गांधी जी की बात ही निराली थी—वह तो सारे देश पर लगातार तीस बरस तक छाये रहे और अब भी उनकी आत्मा हिन्दुस्तानियों पर राज कर रही है. गांधी जी के विचारों का प्रचार करना ही साने गुरू जी का मक़सद था और ज़िन्दगी भर वह यही काम करते रहे इसलिये उन्हें 'महाराष्ट्र का गांधी' भी कहा जा सकता है.

आज़ादी के बाद कांगरेस वालों में जो बुराईयां पैदा हो गईं, जो फ़िरक़ेवाराना जज़बात उभरे, जो सूबावारी दुश्मनी की तंग दिली फैली, उससे साने गुरू जी के दिल को सख़्त चोट पहुँची. उन्होंने ही तो मराठी-भाषी जनता को समझाया था कि 'कांगरेस हमारी मां है'. और वह ख़ुद भी कांगरेस से मां की सी मुहब्बत करते थे. लेकिन जब वही मां एक बाज़ारू औरत बनने लगी, जब देश के सारे नेक व बद रिश्वत ख़ोर या चोर बाज़ारिया उसमें घुसने लगे और दुनिया की सारी गंदगी उसमें जमा होने लगी तो उनका कलेजा फट गया और वह राजनीति से मायूस हो गये. उन्होंने कांगरेस से नाता तोड़ लिया और समाजी व कलचरी कामों में लग गये.

असल में साने गुरू जी कोई राज नेता या सियासी लीडर थे ही नहीं. हालांकि उनकी आम सेवा

سنت سانے گرو جی کا

آنتر بھارتی کا سپنا

(شری پاد جوشی)

[سانے گرو جی کی گنتی مہا راشٹر کے ٹھوس اونچے اور گہرے لیکھکوں میں کی جاتی ہے. ان کی اچانک موت نے مہا راشٹر کے جیون میں ایک گڑھا سا خالی چھوڑ دیا. خوشی کی بات ہے کہ مہا راشٹر کے بھائی بہنوں نے اسکو پاٹنے کے ارادے سے سانے گرو جی کے آنتر بھارتی کے سپنے کو اصلی جامہ پہنانے کا فیصلہ کر لیا ہے. اس سلسلے میں اپنے نوجوان بھائی شری پاد جوشی کا ایک لیکھ ہم اپنے پاٹھکوں کے آگے پیش کرتے ہیں—ایڈیٹر]

نئے مہا راشٹر کے سنت شری پانڈو رنگ سدا شیو سانے عرف سانے گرو جی نے 11 جون 1950 کو اس دنیا سے ودا لی. مہا راشٹر کے نوجوانوں کو جگا کر ان میں دیش پریم اور سیوا کی دھن بھر دینے کا کام سانے گرو جی نے پچیس برس تک لگاتار کیا. لوک مانیہ بال گنگا دھر تلک کے بعد مہا راشٹر کی عام جنتا اور خاص کر نوجوان مہاتما گاندھی کے علاوہ کسی دوسرے ویکتی کی طرف اگر جھکے ہیں تو وہ سانے گرو جی ہی تھے. گاندھی جی کی بات ہی نرالی تھی—وہ تو سارے دیش پر لگاتار تیس برس تک چھائے رہے اور اب بھی ان کی آتما ہندوستانیوں پر راج کر رہی ہے. گاندھی جی کے وچاروں کا پرچار کرنا ہی سانے گرو جی کا مقصد تھا اور زندگی بھر وہ یہی کام کرتے رہے. اسی لئے انہیں 'مہا راشٹر کا گاندھی' بھی کہا جا سکتا ہے.

آزادی کے بعد کانگریس والوں میں جو برائیاں پیدا ہو گئیں، جو فرقہ وارانہ جذبات ابھرے، جو صوبہ واری دشمنی کی تنگ دلی پھیلی، اس سے سانے گرو جی کے دل کو سخت چوٹ پہنچی. انہوں نے ہی تو مراٹھی بھاشی جنتا کو سمجھایا تھا کہ کانگریس ہماری ماں ہے. اور وہ خود بھی کانگریس سے ماں کی سی محبت کرتے تھے. لیکن جب وہی ماں ایک بازارو عورت بننے لگی، جب دیش کے سارے نیک و بد رشوت خور یا چور بازاریا اسمیں گھسنے لگے اور دنیا کی ساری گندگی اسمیں جمع ہونے لگی تو ان کا کلیجہ پھٹ گیا اور وہ راج نیتی سے مایوس ہو گئے. انہوں نے کانگریس سے ناتا توڑ لیا اور سماجی و کلچری کاموں میں لگ گئے.

اصل میں سانے گرو جی کوئی راج نیتا یا سیاسی لیڈر تھے ہی نہیں. حالانکہ ان کی عام سیوا

[illegible] भी अपनी [illegible] [illegible] उनकी अपनी स्वर्गीय की [illegible] अपने विचारों को फैलाने की गरज़ से मराठी में 'साधना' नाम का एक साप्ताहिक अखबार चलाया था जिसे उन्होंने किसी राजनैतिक पार्टी के चंगुल में फंसने नहीं दिया था. आज भी उनकी यादगार के तौर पर 'साधना' चल रहा है और उसके ग़ैरजानिबदार रवैये में कोई फ़र्क नहीं आया है. अपने इस अखबार के ज़रिये उन्होंने मराठी बोलनेवाले लोगों को बराबर यह नसीहत दी कि उन्हें फ़िरक़ेवाराना [illegible], सूबाई तंग दिली और [illegible] वग़ैरा से आज़ाद हो जाना चाहिये, इसी ख़याल से उन्होंने अपने 'आंतर भारती' के तसव्वुर को मराठी जनता के सामने रखने की कोशिश की.

हिन्दुस्तान के आज़ाद होने के साथ ही वहाँ की जनता में तंग सूबाइयत को ज़ोरों से बढ़ते देख साने गुरुजी का [illegible] मन बीच बीच में उदास हो उठता था. उनका यह पक्का ख़याल था कि हिन्दुस्तानी जीवन की एकता अलग अलग सूबों के लिये भी ज़रूरी है. इसलिये उन्हें ऐसा लगता था कि भारत के अलग अलग सूबों में प्रेम भाव बढ़ाने की ख़ास कोशिश होनी चाहिये. उन्हें पूरा भरोसा था कि 'आंतर भारती' के ज़रिये यह काम हो सकेगा. साने गुरुजी हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद के ज़बरदस्त हिमायती थे. इसकी वजह से महाराष्ट्र के हिन्दू सभाई और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाले उन्हें 'भूला-भटका देश भक्त' कह कर उनका मज़ाक़ उड़ाया करते थे. लेकिन गुरु जी ने इस मज़ाक़ की ज़रा भी परवाह नहीं की और अपने लेखों, कहानियों और नावेलों में हिन्दू मुस्लिम एकता का बराबर प्रचार करते रहे. जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों ने सरकार के ख़िलाफ़ क़ानून भंग की कार्रवाई शुरू की थी तो महाराष्ट्र में साने गुरुजी और आचार्य भागवत ने इन लोगों के ख़िलाफ़ एक ज़ोरदार मोर्चा खड़ा करके जनता के सामने उनकी पोल खोल दी थी. इसी तरह जब एक मराठा भाई ने गांधी जी का ख़ून किया तो साने गुरु जी के दिल को इतनी बड़ी ठेस लगी कि उन्होंने महाराष्ट्र के इस पाप के बदले में ख़ुद इक्कीस रोज़ तक उपवास किया. लेकिन उससे भी उनके दिल को शान्ति नहीं मिली. गांधी जी के साथ साथ उनके जीवन का सारा आनन्द, सारी ख़ुशी चली गई और उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया.

फिर भी वह इस अंधेरे में से निकल कर रोशनी की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करते रहे. फ़िरक़ापरस्ती और सूबापरस्ती के ख़िलाफ़ जीवन भर लड़ते रहे और जब उन्हें ऐसा लगा कि अब इस [illegible] हालत को देख सकना

کا بہت [illegible] سے بنا ہوا ہے
پر بھی لیکن [illegible] گرو جی
اُن کی سچی [illegible] تھی۔ انہوں نے اپنے وچاروں کو پھیلانے
کی غرض سے مراٹھی میں 'سادھنا' نام کا ایک ہفتہ
وار اخبار چلایا تھا جسے انہوں نے سیاسی پارٹی کے چنگل
میں پھنسنے نہیں دیا تھا۔ آج بھی اُن کی یادگار کے طور پر
'سادھنا' چل رہا ہے اور اسکے غیر جانبدار رویئے میں
کوئی فرق نہیں آیا ہے۔ اپنے اِس اخبار کے ذریعے انہوں نے
مراٹھی بولنے والے لوگوں کو برابر یہ نصیحت دی کہ
انہیں فرقہ وارانہ جذبات صوبائی تنگ دلی اور [illegible]
وغیرہ سے آزاد ہو جانا چاہئیے اسی خیال سے انہوں نے اپنے
'انتر بھارتی' کے تصور کو مراٹھی جنتا کے
سامنے رکھنے کی کوشش کی۔

ہندستان کے آزاد ہونے کے ساتھ ہی یہاں کی جنتا میں
تنگ صوبائیت کو زوروں سے بڑھتے دیکھ سانے گروجی کا
[illegible] من بیچ بیچ میں اداس ہو اُٹھتا تھا۔ اُن کی یہ
پکی دھارنا تھی کہ ہندستانی جیون کی ایکتا الگ
الگ صوبوں کے لئے بھی ضروری ہے۔ اسلئیے انہیں ایسا
لگتا تھا کہ بھارت کے الگ الگ صوبوں میں پریم بھاو
بڑھانے کی خاص کوشش ہونی چاہئیے۔ انہیں پورا بھروسہ
تھا کہ 'انتر بھارتی' کے ذریعے یہ کام ہو سکے گا۔ سانے
گرو جی ہندو مسلم اتحاد کے زبردست حمایتی تھے۔ جس
کی وجہ سے مہاراشٹر کے ہندو سبھائی اور راشٹریہ سویم
سیوک سنگھ والے انہیں 'بھولا بھٹکا دیش بھگت' کہکر
اُن کا مذاق اُڑایا کرتے تھے۔ لیکن گرو جی نے اِس مذاق
کی ذرا بھی پرواہ نہیں کی اور اپنے لیکھوں، کہانیوں اور
ناولوں میں ہندو مسلم ایکتا کا برابر پرچار کرتے رہے۔
جب راشٹریہ سویم سیوک سنگھ والوں نے سرکار کے خلاف
قانون بھنگ کی کاروائی شروع کی تھی تو مہاراشٹر
میں سانے گرو جی اور آچاریہ بھاگوت نے ان لوگوں کے
خلاف ایک زور دار مورچہ کھڑا کر کے جنتا کے سامنے ان
کی پول کھول دی تھی۔ اسی طرح جب ایک مراٹھی
بھائی نے گاندھی جی کا خون کیا تو سانے گرو جی کے
دل کو اتنی بڑی ٹھیس لگی کہ انہوں نے مہاراشٹر کے
اس پاپ کے بدلے میں خود اکیس روز تک اپواس کیا۔
لیکن اس سے بھی اُن کے دل کو شانتی نہیں ملی۔
گاندھی جی کے ساتھ ساتھ اُن کے جیون کا سارا آنند،
ساری خوشی چلی گئی اور اُن کی ساری آشاؤں پر
پانی پھر گیا۔

پھر بھی وہ اِس اندھیرے میں سے نکل کر روشنی
کی طرف بڑھنے کی کوشش کرتے رہے۔ فرقہ پرستی اور
صوبہ پرستی کے خلاف جیون بھر لڑتے رہے اور جب
انہیں ایسا لگا کہ اب اِس [illegible] حالت کو دیکھ سکنا

उनके लिये [illegible] असहनीय है और बिगड़ती हुई दशा को सुधारना उनके बस के बाहर है तो उन्होंने जान बूझ कर अपनी जिन्दगी के चिराग को बुझा दिया और हमेशा के लिये आंखें मीच लीं.

लेकिन जाते जाते वह एक बहुत भारी बोझ हम पर यानी सिर्फ महाराष्ट्रियों पर ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तानियों पर छोड़ गये हैं. वह है उनका 'अन्तर भारती का सपना' आखिर तो वह सपना ही ठहरा. उसकी कोई बंधी बंधाई योजना नहीं है, कोई नियम कानून नहीं है. लेकिन उसे हम समझ सकते हैं, अपने रोजाना जीवन में उस पर अमल कर सकते हैं. साने गुरु जी के ही शब्दों में उनका यह सपना इस तरह है:—

"आज़ाद भारत की शानदार इमारत अब खड़ी होने वाली है. ज़बान के लिहाज़ से सूबे बनाने का मनसूबा को पहले ही मान लिया गया है लेकिन इस तरह की रचना जब की जा रही हो तब इस बात की यह खबरदारी रखनी चाहिये कि जलन दुश्मनी न फैले, आपसी मुहब्बत बनी रहे, मिल जुल कर काम करने की आदत पड़े. भारत का दिल एक है इसका ध्यान सब को रहे. भगवान को हज़ारों आंख हज़ारों नामों से हम पुकारते हैं लेकिन दिल हज़ारों कभी नहीं कहते. जिस तरह भगवान के एक ही दिल होता है उसी तरह, भारत के कई सूबे हो जाने पर भी उसका दिल एक ही रहे.

"सारे सूबे 'भारती' हों. भारत 'अति भारती' हो. हमें तंग अहाते बना कर नहीं बैठना चाहिये. अगर आप अपना दायरा चौड़ा करेंगे तो आपकी शोभा बढ़ेगी. तंग दिली को छोड़ दीजिये. सारे सूबे एक दूसरे के साथ प्यार मुहब्बत से बर्ताव करें, भारत का दिल एक हो, सूबे एक जान हों. हमारे दो मक़सद हैं—'अन्तर भारती' और 'विश्व भारती'—यानी प्रान्तों या सूबों का एक दूसरे के साथ और भारत के साथ जानदार ताल्लुक रहे—इसे हम 'अन्तर भारती' कहें. दूसरा मक़सद है 'विश्व भारती' जिसे रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ज़ाहिर किया था.

(27 अगस्त 1948)

"भारती को मैं दुनिया का (निशान) मानता हूं. भारत की सेवा में इन्सानियत की सेवा आ जाती है. यहां सारे धर्म, सारी संस्कृतियां, आकर जमी हैं. दिन दिन हम सबको इस एकता का [illegible] महसूस करना चाहिये.

"हम अब तक 'अखण्ड भारत' का राग अलापते आये. मगर हमें इस भारत का ज्ञान नहीं, उसकी जानकारी नहीं. हमें ऐसा नहीं लगता कि यह सारे सूबे मेरे हैं, यह सारी बस्तियां मेरी हैं, यह सब मेरे भाई हैं; मैं सबसे मिलूंगा, सब कुछ सीखूंगा. बम्बई में [illegible],

اُن کے لئے ناقابل برداشت ہے اور بگڑتی ہوئی ہوا کو سدھارنا اُن کے بس کے باہر ہے تو انہوں نے جان بوجھکر اپنی زندگی کے چراغ کو بجھا لیا اور ہمیشہ کے لئے آنکھیں میچ لی.

لیکن جاتے جاتے وہ ایک بہت بھاری بوجھ ہم پر یعنی صرف مہاراشٹریوں پر ہی نہیں بلکہ سارے ہندستانیوں پر چھوڑ گئے ہیں. وہ ہے اُن کا 'انتر بھارتی کا سپنا' آخر تو وہ سپنا ہی ٹھہرا. اُسکی کوئی بندھی بندھائی یوجنا نہیں ہے، کوئی نیم قانون نہیں ہے. لیکن اُسے ہم سمجھ سکتے ہیں، اپنے روزانہ جیون میں اُس پر عمل کر سکتے ہیں. سانے گرو جی کے ہی شبدوں میں اُن کا یہ سپنا اِس طرح ہے:—

"آزاد بھارت کی شاندار عمارت اب کھڑی ہونے والی ہے. زبان کے لحاظ سے صوبے بنانے کی تجویز کو پہلے ہی مان لیا گیا ہے لیکن اس طرح کی رچنا جب کی جا رہی ہو تب اس بات کی احتیاط رکھنی چاہئے کہ جلن دشمنی نہ پھیلے، آپسی محبت بنی رہے، مل جل کر کام کرنے کی عادت پڑے، بھارت کا دل ایک ہے اس کا دھیان سب کو رہے. بھگوان کو ہم ہزاروں آنکھ ہزاروں ناموں سے ہم پکارتے ہیں لیکن دل ہزاروں کبھی نہیں کہتے. جس طرح بھگوان کے ایک ہی دل ہوتا ہے اُسی طرح بھارت کے کئی صوبے ہو جانے پر بھی اس کا دل ایک ہی رہے.

'سارے صوبے 'بھارتی' ہوں، بھارت 'اتی بھارتی' ہو. ہمیں تنگ احاطے بنا کر نہیں بیٹھنا چاہئے. اگر آپ اپنا دائرہ چوڑا کریں گے تو آپ کی شوبھا بڑھے گی. تنگ دلی کو چھوڑ دیجئے. سارے صوبے ایک دوسرے کے ساتھ پیار محبت سے برتاؤ کریں، بھارت کا دل ایک ہو، صوبے ایک جان ہوں. ہمارے دو مقصد ہیں—'انتر بھارتی' اور 'وشو بھارتی'—یعنی پرانتوں یا صوبوں کا ایک دوسرے کے ساتھ اور بھارت کے ساتھ جاندار تعلق رہے—اِسے ہم 'انتر بھارتی' کہیں. دوسرا مقصد ہے 'وشو بھارتی' جسے رویندر ناتھ ٹھاکور نے ظاہر کیا تھا.

(27 اگست 1948)

"بھارتی کو میں دنیا کا (نشان) مانتا ہوں. بھارت کی سیوا میں انسانیت کی سیوا آ جاتی ہے. یہاں سارے دھرم، ساری سنسکرتیاں آکر آ بسی ہیں. دن دن ہم سب کو اِس ایکتا کی [illegible] محسوس کرنا چاہئے.

"ہم اب تک 'اکھنڈ بھارت' کا راگ الاپتے آئے. مگر ہمیں اِس بھارت کا گیان نہیں، اصلی جانکاری نہیں. ہمیں ایسا نہیں لگتا کہ یہ سارے صوبے میرے ہیں، یہ ساری بستیاں میری ہیں، یہ سب میرے بھائی ہیں؛ میں سب سے ملونگا، سب کچھ سیکھونگا. بمبئی میں [illegible]

[illegible] सिखाने का इन्तज़ाम है, लेकिन [illegible] जहाँ सारी हिन्दुस्तानी ज़बानें सीखी जा सकें. इसी वजह से 'आन्तर भारती' की नींव डालने का सपना मैं बरसों से देख रहा हूँ. अच्छी सी जगह हो, वहाँ उन उन सूबाई ज़बानों के अच्छे जानकार हों, वह सब हिन्दी जानते हों, उन उन ज़बानों का साहित्य वहाँ रहे, उस संस्था के साथ ही एक विद्यालय रहे, वहाँ हिन्दुस्तानी ज़बानें सीखने का इन्तज़ाम हो, विद्यार्थियों के कानों पर सब ज़बानें आती रहें, उन उन साहित्यों से मराठी की जानकारी कराई जावे; दूसरी ज़बान में भी माहवारी रिसाले चला कर उन उन सूबों को सारे भारत की पहचान कराई जावे. भारत के सूबे भी एक दूसरे को कहाँ पहचानते हैं! अलग अलग सूबों में चलने वाला कामकाज, नई नई बातें हमें कहाँ मालूम हैं! 'आन्तर भारती' हिन्दुस्तानियों की एक दूसरे से भक्ति प्रेम से पहचान करा देगी. ऐसा संस्कृति, कला, उदारता, ज्ञान विज्ञान एक पायदार काम चलाने की कोशिश 'आन्तर भारती' करती रहेगी, भारत की एकता का जगमगाता मकसद सिखाने वाली 'आन्तर भारती' प्यारे महा राष्ट्र में खड़ी हो जावे." 7 मई 1949)

"सिर्फ़ ज़बानों की पढ़ाई ही इस संस्था का मकसद नहीं है. उसके साथ दूसरी भी तहरीकों को जोड़ देने का इरादा है. कला और देहाती जीवन का भी वहाँ अध्ययन होना चाहिये. कलाकार यह बतावेंगे कि देहाती धंधों में कला को कैसे शामिल किया जावे, मामूली चटाईयां भी बुनती हों तो उनमें खूबसूरती कैसे पैदा हो, मामूली बाँस की टोकरियों में हुनर को कैसे ज़ाहिर किया जावे, मामूली मिट्टी के बर्तनों को भी कैसे दिलकश और सुन्दर बनाया जावे, इसकी भी वहाँ जाँच और पढ़ाई की जाय. इसलिये ग्रामउद्योगों के जानकारों और कलाकारों को वहाँ इज़्ज़त का दर्जा रहेगा. किस्म किस्म के नाच जमा कर के उनका प्रचार किया जावेगा. मिल जुल कर ज़िन्दगी बसर करने की तालीम वहां दी जावेगी, इदारे या केन्द्र के आस पास काफी ज़मीन हो तो फल फूलों के पेड़, खेती बाड़ी वगैरा के प्रयोग किये जावेंगे. विद्यार्थी मेहनत करेंगे, नई नई चीज़ें पैदा करेंगे. मेरे मन का सपना तो अनन्त है, लामहदूद है. उसे मैं कागज़ पर कहाँ तक पेश करूं!

राष्ट्र की महान एकता को जीवन में महसूस करने की मुख्तलिफ कोशिशें हों. सारे देश भर ऐसे नज़ारे दिखाई देने चाहियें कि अलग अलग अच्छे अच्छे ख़यालों को अमल में लाने के लिये देश में रहने वाले सब तरह के लोग एक साथ मेहनत कर रहे हैं, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई [illegible] मिल कर नई नई चीज़ें [illegible] अलग अलग सूबों के [illegible]

[illegible] سکھانے کا انتظام ہے، لیکن ایسی کوئی جگہ نہیں جہاں ساری ہندستانی زبانیں سیکھی جاسکیں. اسی وجہ سے 'انتر بھارتی' کی نیو ڈالنے کا سپنا میں برسوں سے دیکھ رہا ہوں. اچھی سی جگہ ہو، وہاں ان ان صوبائی زبانوں کے اچھے جانکار ہوں، وہ سب ہندی جانتے ہوں، ان ان زبانوں کا ساہتیہ وہاں رہے، اس سنستھا کے ساتھ ہی ایک ودیالیہ رہے، وہاں ہندستانی زبانیں سیکھنے کا انتظام ہو، ودیارتھیوں کے کانوں پر سب زبانیں آتی رہیں، ان ان ساہتیوں سے مراٹھی کی جانکاری کرائی جائے؛ دوسری زبان میں بھی ماہواری رسالے چلاکر ان ان صوبوں کو سارے بھارت کی پہچان کرائی جائے. بھارت کے صوبے بھی ایک دوسرے کو کہاں پہچانتے ہیں؟ الگ الگ صوبوں میں چلنے والا کام کاج، نئی نئی باتیں ہمیں کہاں معلوم ہیں؟ 'انتر بھارتی' ہندستانیوں کی ایک دوسرے سے بھکتی پریم سے پہچان کرادے گی. ایسا سنسکرتی، کلا، اداریتا، گیان وگیان ایک پائدار کام چلانے کی کوشش 'انتر بھارتی' کرتی رہے گی. بھارت کی ایکتا کا جگمگاتا مقصد سکھانے والی 'انتر بھارتی' پیارے مہاراشٹر میں کھڑی ہو جائے." (7 مئی 1949)

"صرف زبانوں کی پڑھائی ہی اس سنستھا کا مقصد نہیں ہے. اس کے ساتھ دوسری بھی تحریکوں کو جوڑ دینے کا ارادہ ہے. کلا اور دیہاتی جیون کا بھی وہاں ادھین ہونا چاہئے. کلاکار یہ بتائیں گے کہ دیہاتی دھندوں میں کلا کو کیسے شامل کیا جائے، معمولی چٹائیاں بھی بنتی ہوں تو ان میں خوبصورتی کیسے پیدا ہو، معمولی بانس کی ٹوکریوں میں ہنر کو کیسے ظاہر کیا جائے، معمولی مٹی کے برتنوں کو بھی کیسے دلکش اور سندر بنایا جائے، اس کی بھی وہاں کھوج اور پڑھائی کی جائے. اس لئے گرام ادیوگوں کے جانکاروں اور کلاکاروں کو وہاں عزت کا درجہ رہے گا. قسم قسم کے ناچ جمع کرکے ان کا پرچار کیا جائے گا. مل جل کر زندگی بسر کرنے کی تعلیم وہاں دی جائے گی، ادارے یا کیندر کے آس پاس کافی زمین ہو تو پھل پھولوں کے پیڑ، کھیتی باڑی وغیرہ کے پریوگ کئے جائیں گے. ودیارتھی محنت کریں گے، نئی نئی چیزیں پیدا کریں گے. میرے من کا سپنا تو اننت ہے، لامحدود ہے. اسے میں کاغذ پر کہاں تک پیش کروں؟

راشٹر کی مہان ایکتا کو جیون میں محسوس کرنے کی مختلف کوششیں ہوں. سارے دیش بھر ایسے نظارے دکھائی دینے چاہئیں کہ الگ الگ اچھے اچھے خیالوں کو عمل میں لانے کے لئے دیش میں رہنے والے سب طرح کے لوگ ایک ساتھ محنت کر رہے ہیں، ہندو، مسلمان، [illegible] سب مل کر نئی نئی [illegible] الگ الگ صوبوں کے لوگ [illegible]

[illegible] भारती का सपना

प्यार से एक दूसरे से मिल जुल रहे हैं, एक दूसरे की संस्थायें देख रहे हैं, मदद दे रहे हैं, उनमें से स्फूर्ति ले रहे हैं. भगवान जाने इस तरह के शानदार प्रयोग को मैं कहां शुरू कर सकूंगा." (2 जुलाई 1949)

'साने गुरुजी स्मारक योजना' के कन्वीनर आचार्य भागवत 'आंतर भारती' के बारे में लिखते हैं :—

"अपनी कल्पना को अमली शक्ल देने के लिये साने गुरुजी कई कदम उठा चुके थे. महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन के पूना के अधिवेशन में खुद उन्होंने 'आंतर भारती' के सम्बन्ध में ठहराव पेश किया था और महामहोपाध्याय दत्तो वामन पोतदार जी के समर्थन के साथ सम्मेलन ने बड़े बड़े उत्साह से मान भी लिया था.

"गुरु देव की 'विश्व भारती' के सांस्कृतिक या कलचरी ख्याल को महात्मा गांधी ने अपनी सत्याग्रह की राजनीति में जगह दे ही दी है. सत्याग्रही राजनीति में इनसानी एकता की बुनियाद पर खड़े होने के कारन द्वेश या हिंसा के लिये कभी कोई स्थान नहीं होता. गांधी जी ने स्वराज की साधना के लिये सर्व धर्म समभाव की आवाज ऊंची की थी. उनका अछूतोद्धार आन्दोलन असल में मानवोद्धारका ही आन्दोलन था. हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ भाषाओं का पठन-पाठन करने की योजना को भी उन्होंने बड़े पैमाने पर चालना दी थी. गांधी जी के आश्रमों और रचनात्मक काम करने वाली उनकी जुदा जुदा संस्थाओं में बहुत मात्रा में 'आंतर भारती' के आदर्श को माना हुआ दिखाई देता है. इसीलिये इसमें शक नहीं कि साने गुरुजी की 'आंतर भारती' का काम रवीन्द्र नाथ और गांधीजी के सांस्कृतिक आदर्शों का ही एक स्वरूप है. इस काम में अलग अलग राजकाजी पक्षों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं को कलचरी नजर से एक साथ आने का मौका मिलेगा. हमारे जीवन विकास की नजर से इसे एक शुभकारी घटना समझा जा सकता है."

जाहिर है कि साने गुरुजी के इस सपने को अमली जामा अगर पहनाया जा सका तो हिन्दुस्तान को आज जिन बड़े बड़े सवालों का सामना करना पड़ रहा है उन्हें हल करने में आसानी होगी और अलग अलग फिरकों, मजहबों और सूबों के लोगों में जो शक शुबहा व बदगुमानी घर किये बैठी है वह दूर हो जायेगी. यह काम पहले तो महाराष्ट्र में शुरू होगा और फिर धीरे धीरे दूसरे सूबों में फैलता जायेगा. इसके लिये महाराष्ट्र में चंदा इकट्ठा किया जा रहा है और अगर कोई भी इस काम में दिलचस्पी लेना चाहें तो 'आचार्य भागवत, 12 तिलक रोड, पूना—2 से चिट्ठी-पत्री करें.

آنتر بھارتی کا سپنا

پیار سے ایک دوسرے سے مل جل رہے ہیں' ایک دوسرے کی سنستھاؤں دیکھ رہے ہیں' مدد دے رہے ہیں' ان میں سے اسپھورتی لے رہے ہیں. بھگوان جانے اِس طرح کے شاندار پریوگ کو میں کہاں شروع کرسکوں گا." (2 جولائی 1949)

'سانے گروجی اسمارک یوجنا' کے کنوینر آچاریہ بھاگوت 'آنتر بھارتی' کے بارے میں لکھتے ہیں :—

"اپنی کلپنا کو عملی شکل دینے کے لئے سانے گروجی کئی قدم اٹھا چکے تھے' مہاراشٹر ساہتیہ سمیلن کے پونا ادھیویشن میں خود انہوں نے "آنتر بھارتی" کے سمبندھ میں ٹھہراؤ پیش کیا تھا اور مہامہو پادھیائے دتو وامن پوتدار جی کے سمرتھن کے ساتھ سمیلن نے اسے بڑے اُتساہ سے مان بھی لیا تھا .

"گرو دیو کی 'وشو بھارتی' کی سانسکرتک یا کلچرل خیال کو مہاتما گاندھی نے اپنی ستیاگرہ کی راجنیتی میں جگہ دے ہی رکھی ہے . ستیاگرہی راجنیتی میں انسانی ایکتا کی بنیاد پر کھڑے ہونے کے کارن دویش یا ہنسا کے لئے کبھی کوئی استھان نہیں ہوتا . گاندھی جی نے سوراج کی سادھنا کے لئے سرو دھرم سمبھاؤ کی آواز اونچی کی تھی . اُن کا اچھوتو دھار آندولن اصل میں مانو دھار کا ہی آندولن تھا. ہندستان کی مختلف بھاشاؤں کا پٹھن پاٹھن کرنے کی یوجنا کو بھی انہوں نے بڑے پیمانے پر چالنا دی تھی . گاندھی جی کے آشرموں اور رچناتمک کام کرنے والی اُن کی جدا جدا سنستھاؤں میں بہت بڑی ماترا میں "آنتر بھارتی" کے آدرش کو مانا ہوا دکھائی دیتا ہے. اس لئے اس میں شک نہیں کہ سانے گروجی کی "آنتر بھارتی" کا کام رویندر ناتھ اور گاندھی جی کے سانسکرتک آدرشوں کا ہی ایک سوروپ ہے . اِس کام میں الگ الگ راج کاجی پکشوں میں کام کرنے والے کاریہ کرتاؤں کو کلچرل نظر سے ایک ساتھ آنے کا موقع ملیگا . ہمارے جیون وکاس کی نظر سے اِسے ایک شبھ کاری گھٹنا سمجھا جاسکتا ہے . "

ظاہر ہے کہ سانے گروجی کے اس سپنے کو عملی جامہ اگر پہنایا جا سکے تو ہندستان کو آج جن بڑے سوالوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے اُنہیں حل کرنے میں آسانی ہوگی اور الگ الگ فرقوں' مذہبوں اور صوبوں کے لوگوں میں جو شک شبہ و بدگمانی گھر کئے بیٹھی ہے وہ دور ہو جائیگی . یہ کام پہلے تو مہاراشٹر میں شروع ہوگا اور پھر دھیرے دھیرے دوسرے صوبوں میں پھیلتا جائیگا . اس کے لئے مہاراشٹر میں چندہ اکٹھا کیا جا رہا ہے اور اگر کوئی بھی اس کام میں دلچسپی لینا چاہیں تو آچاریہ بھاگوت' 12 تلک روڈ' پونا—2 سے چٹھی پتری کریں .

बापू से

रेल के डिब्बों में लिखा मिलता है, "खिड़की से बाहर न झांकना, बड़ी भयानक बात है." इसी के आगे किसी मनचले ने लिख दिया था, 'पर होती है बड़े आनंद की.'

अंगरेज़ी कहावत है: दुख के बिना सुख कैसा, इस तरह की कहावतें और भी इकट्ठी की जा सकती हैं, उनको यहां कहना बेकार होगा. यहां तो खूबसूरती नुमायश को लेकर आप से बातें करनी हैं.

मशरूवाला जैसे, आपके साथ काम करने वालों में से एक ने न जाने क्यों, इस बीसवीं सदी की भरी जवानी में खूबसूरती नुमायश को, भयानक और नीच काम समझ लिया है !

अगर मशरूवाला जी इलाहाबाद के मशहूर शायर, अकबर के शागिर्द रहे होते तो अजब नहीं उन्होंने आपके औरतों को पर्दे से बाहर लाने के काम पर, कितने छींटे फेंके होते.

यह ठीक है कि खूबसूरती मैच को प्रेरना मिली हिन्दुस्तान की आज़ादी के आन्दोलन से, हुक्म मिला सीधा आप से. इससे क्या हज़ारों आदमी चिल्ला उठे थे कि ग़ज़ब हो गया, हमारी वह नारियां जिन्हें सूरज भी देखने की हिम्मत नहीं करता था, उन्हें सब कोई देखे.

मुसलमानों में जब हिम्मत करके, कुछ लड़कियों ने अपने बुर्के फेंके नहीं, सिर्फ़ उतार कर ही रखे थे, तब 'अकबर' इलाहाबादी को एक क़िता लिखना पड़ा जिसका खुलासा था, कि अकबर को जब यह चन्द बे परदा बीबियां नज़र आईं तो वह शर्म से ज़मीन में गड़ गया, जब उसने उन बीबियों से पूछा कि तुम्हारा पर्दा क्या हुआ, तो उन्होंने जवाब दिया, मर्दों की अक़्ल पर पड़ गया.

अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमान उल्ला ने अपनी बेगम सुरैया को, जब पर्दे से बाहर किया, तो उसे अफ़ग़ानिस्तान से बाहर होना पड़ा.

खूबसूरती नुमायश उसी तरह ख़तरों से भरा है, जिस तरह आज़ादी नुमायश, प्रेम या मुहब्बत नुमायश, सत्य नुमायश, या शिव प्रदर्शन या नुमायश.

बापू, अब आपका भारत, आपके समय से बहुत ज़ियादा आज़ाद है. आज वह सच्चे मानों में प्रजा भक्त है. आज उसकी गवर्नमेंट उसकी अपनी चुनी हुई है. आज भारत को यों तो सब कुछ कर डालने का अख़्तियार है, पर

باپو سے

ریل کے ڈبوں میں لکھا ملتا ہے، " کھڑکی سے باہر نہ جھانکنا، بڑی بھیانک بات ہے." اسی کے آگے کسی منچلے نے لکھ دیا تھا، 'پر ہوتی ہے بڑے آنند کی.'

انگریزی کہاوت ہے : دکھ کے بنا سکھ کیسا، اس طرح کی کہاوتیں اور بھی اکٹھی کی جا سکتی ہیں، ان کو یہاں کہنا بیکار ہوگا . یہاں تو خوبصورتی نمائش کو لے کر آپ سے باتیں کرنی ہیں .

مشروالا جیسے، آپ کے ساتھ کام کرنے والوں میں سے ایک نے، نہ جانے کیوں، اس بیسویں صدی کی بھری جوانی میں خوبصورتی نمائش کو، بھیانک اور نیچ کام سمجھ لیا ہے !

اگر مشروالا جی الہ آباد کے مشہور شاعر، اکبر کے شاگرد رہے ہوتے تو عجب نہیں انہوں نے آپ کے عورتوں کو پردے سے باہر لانے کے کام پر، کتنے چھینٹے پھینکے ہوتے .

یہ ٹھیک ہے کہ خوبصورتی میچ کو پریرنا ملی ہندوستان کی آزادی کے آندولن سے، حکم ملا سیدھا آپ سے . اس سے کیا ہزاروں آدمی چلا اٹھے تھے کہ غضب ہوگیا، ہماری وہ ناریاں جنہیں سورج بھی دیکھنے کی ہمت نہیں کر سکتا تھا، انہیں سب کوئی دیکھے .

مسلمانوں میں جب ہمت کر کے، کچھ لڑکیوں نے اپنے برقعے پھینکے نہیں، صرف اتار کر رکھے تھے، تب 'اکبر' الہ آبادی کو ایک قطعہ لکھنا پڑا جس کا خلاصہ تھا کہ اکبر کو جب یہ چند بے پردہ بیبیاں نظر آئیں تو وہ شرم سے زمین میں گڑ گیا، جب اس نے ان بیبیوں سے پوچھا کہ تمہارا پردہ کیا ہوا، تو انہوں نے جواب دیا، مردوں کی عقل پر پڑ گیا .

افغانستان کے بادشاہ امان اللہ نے اپنی بیگم ثریا کو، جب پردے سے باہر کیا، تو اسے افغانستان سے باہر ہونا پڑا .

خوبصورتی نمائش اسی طرح خطروں سے بھرا ہے، جس طرح آزادی نمائش، پریم یا محبت نمائش، ستیہ نمائش یا شیو پردرشن یا نمائش .

باپو، اب آپ کا بھارت، آپ کے سمے سے بہت زیادہ آزاد ہے . آج وہ سچے معنوں میں پرجا بھکت ہے . آج اس کی گورنمنٹ اس کی اپنی چنی ہوئی ہے . آج بھارت کو یوں تو سب کچھ کر ڈالنے کا اختیار ہے، پر

ऐसी कोई बात करने में तो उसे कोई झिझक नहीं होनी चाहिये, जो किसी न किसी रूप में भारत में होती चली आई है, जो किसी न किसी रूप में भारती संस्कृति का हिस्सा बनी हुई है.

बापू, यों तो अगर देखा जाये, तो हमारे देश में, नगर कन्यायें हमेशा से होती आई हैं. यह ठीक है कि उनके रिवाज आज से अलग थे, पर यही तो इस बात का सबूत है कि आज हम उसी बात को धो पोंछ कर नया रूप दे रहे हैं.

दिल्ली कुमारी, कलकत्ता कुमारी, मद्रास या बम्बई कुमारी, या भारत कुमारी, मौर्य और गुप्त काल की नगर कन्याओं का दूध में धुला रूप हैं.

बापू, कल ही किसी लड़की ने हमसे व्यंग में कहा था, "मर्दों को घबराने की क्या जरूरत. वह मियां दिल्ली, मियां कलकत्ता, मियां बम्बई, मद्रास, या मियां भारत की नुमाइशें क्यों नहीं शुरू कर देते ?" तब हमने यह जवाब दे दिया था कि सलाह तो तुम्हारी ठीक है, पर यह तो भारत के लिये आगे बढ़ना नहीं पीछे हटना होगा. लड़की बोली, "कैसे ?" हमने जवाब दिया. "स्वयम्बर प्रथा में और होता ही क्या था, लड़की ही तो सैकड़ों में से सबसे खूबसूरत को छांट लेती थी. अगर उन दिनों हर को खूबसूरत थोड़ा बहुत बहादुरी का हाल भी बताना पड़ता था, तो आज भी सुन्दरी कुमारियों को, दाखला टिकट मिलने में यह जरूरी है कि वह किसी कालेज में पढ़ी हो, और अठारह और बाईस के बीच में हो.

बापू, स्वयम्बर पुरानी चीज हो चुकी, उससे आगे बढ़ना हमारा काम है. वह आगे बढ़ना ही होगा कि स्वयंवर की प्रथा को जन्म दिया जाये. खूबसूरती नुमायश उसी तरफ बढ़ने का पहला कदम है. फिर न जाने क्यों कुछ लोगों को इसमें दुराचार के कांटे दिखाई देते हैं. व्यभिचार की गंध आती है, या अनाचार का खतरा दिखाई देता है ?

बापू, भारत के जिस पूज्य ग्रंथ महा भारत ने, भीष्म पितामा जैसे परम ब्रह्मचारी अम्बा और अम्बालिका को, अपने भाई के लिये उड़ा ले जाते हैं. वहां खूबसूरती नुमायश पर इतना शोर मचाने की हिम्मत लोग कैसे करते हैं ?

बापू, जिस देश में खूबसूरती नुमायश से भी आगे की नुमायश पूजा की चीजें बनी हों, वहां जिनको खूबसूरती नुमायश में खतरा दिखाई दे, तो यही समझना चाहिये कि उन्हें अपने मन पर पूरा काबू नहीं है.

ایسی کوئی بات کرنے میں تو اُسے کوئی جھجھک نہیں ہونی چاہئے، جو کسی نہ کسی روپ میں بھارت میں ہوتی چلی آئی ہے، جو کسی نہ کسی روپ میں بھارتی سنسکرتی کا حصہ بنی ہوئی ہے ۔

باپو، یوں تو اگر دیکھا جائے، تو ہمارے دیش میں، نگر کنیائیں ہمیشہ سے ہوتی آئی ہیں ۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن کے رواج آج سے الگ تھے، پر یہی تو اس بات کا ثبوت ہے کہ آج ہم اُسی بات کو دھو پونچھکر نیا روپ دے رہے ہیں ۔

دلی کماری، کلکتہ کماری، مدراس یا بمبئی کماری، یا بھارت کماری، موریہ اور گپت کال کی، نگر کنیاؤں کا دودھ میں دھلا روپ ہیں ۔

باپو، کل ہی کسی لڑکی نے ہم سے ویَنگ میں کہا تھا، "مردوں کو گھبرانے کی کیا ضرورت، وہ میاں دلی، میاں کلکتہ، میاں بمبئی، مدراس یا میاں بھارت کی نمائشیں کیوں نہیں شروع کر دیتے ؟" تب ہم نے یہ جواب دے دیا تھا، کہ صلاح تو تمہاری ٹھیک ہے، پر یہ تو بھارت کے لئے آگے بڑھنا نہیں پیچھے ہٹنا ہوگا ۔ لڑکی بولی، "کیسے ؟" ہم نے جواب دیا، "سوئمبر پرتھا میں اور ہوتا ہی کیا تھا ؟ لڑکی ہی تو سینکڑوں میں سے سب سے خوبصورت کو چھانٹ لیتی تھی ۔ اگر اُن دنوں ہر خوبصورت کو تھوڑا بہت بہادری کا حال بھی بتانا پڑتا تھا، تو آج بھی سندری کماریوں کو، داخلہ ٹکٹ ملنے میں یہ ضروری ہے کہ وہ کسی کالج میں پڑھی ہو، اور اٹھارہ اور بائیس کے بیچ میں ہو ۔

باپو، سوئمبر پرانی چیز ہو چکی، اُس سے آگے بڑھنا ہمارا کام ہے ۔ وہ آگے بڑھنا یہی ہوگا کہ اس سوئمبر کی پرتھا کو جنم دیا جائے ۔ خوبصورتی نمائش اُسی طرف بڑھنے کا پہلا قدم ہے ۔ پھر نہ جانے کیوں کچھ لوگوں کو اس میں دراچار کے کانٹے دکھائی دیتے ہیں، ویابھچار کی گندھ آتی ہے، یا اناچار کا خطرہ دکھائی دیتا ہے ؟

باپو، بھارت کے جس پوجیہ گرنتھ مہا بھارت نے بھیشم پتاما جیسے پرم برہمچاری امبا اور امبالکا کو اپنے بھائی کے لئے اُڑا لے جاتے ہیں ۔ وہاں خوبصورتی نمائش پر اتنا شور مچانے کی ہمت لوگ کیسے کرتے ہیں ؟

باپو، جس دیش میں خوبصورتی نمائش سے بھی آگے کی نمائش پوجا کی چیزیں بنی ہوں، وہاں جن کو خوبصورتی نمائش میں خطرہ دکھائی دے تو یہی سمجھنا چاہئے کہ انہیں اپنے من پر پورا قابو نہیں ہے ۔

बापू, वह मशरूवाला जो खूबसूरती नुमायश से इतने घबरा उठे हैं, इन्हें अगर राष्ट्रपति के आशीर्वाद पाये हुये श्री सोमनाथ जी के दर्शन करा लिये जायें, और जगन्नाथ पुरी का तीर्थ करा दिया जाय, तो वह विरोध करने की जगह, खूबसूरती नुमायश का समर्थन करने लगे, तो हमारा क़लम झूटा समझा जावे.

बापू, सुन्दरता या खूबसूरती एक सच्चाई है, फिर चाहे वह तन की हो मन की हो, सूरत की हो, गुन की हो या और किसी चीज़ की हो उसकी नुमायश होनी ही चाहिये.

बापू, कुछ रिशियों ने प्रानों की हिंसा को हिंसा माना. उनके धर्म की रूह से किसी को अच्छा गाना न सुनने देना हिंसा है, किसी को अच्छा रूप न देखने देना हिंसा है. फिर क्या यह हिंसा न होगी कि खूबसूरती नुमायश को रोका जाये, या रोके जाने का आन्दोलन किया जाये. हमारी राय में खूबसूरती नुमायश को रोकना असत्य और हिंसक व्यवहार है. बापू, अगर आप आज जीवित होते, तो हम ज़रूर आपकी अदालत में, मशरूवाला के खिलाफ़, असत्यवादी और हिंसक होने का दावा दायर करते. अब किसके पास जायें.

बापू, जब स्वयम्वर प्रथा हमारे यहां थी, तब मर्द पूरे आज़ाद थे. स्वयं वधू प्रथा के जारी किये बिना, औरतों की पूरी आज़ादी साबित नहीं की जा सकती.

बापू, अब राजा तो रहे नहीं, तो यह काम नगरों में नगरपाल के साहब ज़ादों से शुरू किया जा सकता है कि वह अपना स्वयं वधू यज्ञ करें. इसी तरह राज में राजपाल पुत्रों से. और भारत में राष्ट्रपति के साहब ज़ादे से किया जाना इस तरह की बहादुरी का सबूत है.

यह ठीक है कि इस रिवाज का अंकुर अभी जल्दी नहीं फूट सकता. तब तक यह काम तो शुरू हो जाना ही चाहिये कि नगर कुमारियों को, नगरपाल पुत्र ताज पहनाया करें. इसी तरह राज कुमारियों को राजपाल पुत्र वग़ैरा.

बम्बई के मेयर ने सचमुच ज़ियादती की कि ताज पहनाने का काम ज़बरदस्ती अपने हाथ ले लिया. बापू क्या आप की राय में यह ठीक न होगा कि बम्बई के मेयर के खिलाफ़ मुक़द्दमा चलाया जाये ?

बापू के भारत की जय.

बापू, आप तो कुछ बोलते नहीं, ज़रा मुस्करा ही दीजिये.

—भगवानदीन

باپو' یہ مشروالا جو خوبصورتی نمائش سے اتنے گھبرا اٹھے ہیں' انہیں اگر راشٹر پتی کے آشیرواد پائے ہوئے شری سومناتھ جی کے درشن کرا لئے جائیں' اور جگناتھ پوری کا تیرتھ کرادیا جائے' تو یہ وِرودھ کرنے کی جگہ' خوبصورتی نمائش کا سمرتھن نہ کرنے لگے' تو ہمارا قلم جھوٹا سمجھا جائے .

باپو' سندرتا یا خوبصورتی ایک سچائی ہے' پھر چاہے وہ تن کی ہو' من کی ہو' صورت کی ہو' گن کی ہو یا اور کسی چیز کی ہو اس کی نمائش ہونی ہی چاہئے.

باپو' کچھ رشیوں نے پرانوں کی ہنسا کو ہنسا مانا. اُن کے دھرم کی روح سے کسی کو اچھا گانا نہ سننے دینا ہنسا ہے' کسی کو اچھا روپ نہ دیکھنے دینا ہنسا ہے . پھر کیا یہ ہنسا نہ ہوگی کہ خوبصورتی نمائش کو روکا جائے' یا روکے جانے کا آندولن کیا جائے. ہماری رائے میں خوبصورتی نمائش کو روکنا استیہ اور ہنسک ویوہار ہے باپو' اگر آپ آج جیوت ہوتے' تو ہم ضرور آپ کی عدالت میں' مشروالا کے خلاف' استیہ وادی اور ہنسک ہونے کا دعویٰ دائر کرتے . اب کس کے پاس جائیں .

باپو' جب سویمبر پرتھا ہمارے یہاں تھی' تب مرد پورے آزاد تھے . سویم بدھو پرتھا کے جاری کئے بنا' عورتوں کی پوری آزادی ثابت نہیں کی جاسکتی .

باپو' اب راجہ تو رہے نہیں' تو یہ کام نگروں میں نگرپال کے صاحب زادوں سے شروع کیا جاسکتا ہے کہ وہ اپنا سویم بدھو یگیہ کریں . اسی طرح راج میں راجپال پتروں سے. اور بھارت میں راشٹر پتی کے صاحب زادے سے کیا جانا اِس طرح کی بہادری کا ثبوت ہے .

یہ ٹھیک ہے کہ اس رواج کا انکر ابھی جلدی نہیں پھوٹ سکتا. تب تک یہ کام تو شروع ہو جانا ہی چاہئے کہ نگر کماریوں کو' نگر پال پتر تاج پہنایا کریں . اِسی طرح راج کماریوں کو راج پال پتر وغیرہ .

بمبئی کے میئر نے سچ مچ زیادتی کی کہ تاج پہنانے کا کام زبردستی اپنے ہاتھ لے لیا . باپو کیا آپ کی رائے میں ٹھیک نہ ہوگا کہ بمبئی کے میئر کے خلاف مقدمہ چلایا جائے ؟

باپو کے بھارت کی جے .

باپو' آپ تو کچھ بولتے نہیں' ذرا مسکرا ہی دیجئے.

—بھگوان دین

मेरी दुविधा

(ओंकार नाथ शास्त्री)

कुछ दिन पहले मैं ए. जी. आफ़िस में काम करता था. तब मुझे मंहगाई लगा कर सौ रुपये मासिक पड़ते थे. मेरी बीवी मुन्नी और तीन बच्चों के छोटे परिवार का भी इतनी आमदनी से पालना मुश्किल था. दो पढ़ने वाले लड़कों की फ़ीस, किताब कागज़ का प्रबन्ध, किराया मकान, राशन, कपड़ा, धोबी, नाई वग़ैरा खर्चों के मदों में से कोई न कोई मुझे क़र्ज़ लेने के लिये मजबूर करता रहा. यहां तक कि जब पिता जी की मृत्यु के बाद डेढ़ साल के भीतर मेरे ऊपर पांच सौ रुपये का क़र्ज़ हो गया तो मैं ज़रा डर सा गया.

मुन्नी खर्चीली औरत नहीं है. न गृहस्थी के चलाने में भी मेरी मर्ज़ी के खिलाफ़ एक पैसा भी बाहरी टीम टाम में खर्च करती है. हां, उसे शहरी ज़िन्दगी बहुत प्यारी है. इसलिये आज से छै महीने पहले जब मैंने इस गांव की चीनी मिल की डेढ़ सौ रुपये की नौकरी स्वीकार की तो उसने बहुत चाहा था कि मैं देहात न आऊं. उसने साफ़ कहा था कि "मैं गांव की ज़िन्दगी से ऊब गई हूं, वहां के आपसी झगड़े, मुक़दमे बाज़ी, बेपढ़ी जनता की संगति, हर तरह से मुर्दा ज़िन्दगी मुझे पसन्द नहीं है." उसने इतिहास की अपनी थोड़ी सी जानकारी की आड़ लेते हुये कहा था कि "अब वह गांव का जीवन नहीं है जिसकी सादगी सच्चाई, और ऊंचाई की तारीफ़ करते करते विदेशी यात्रियों का मुँह सूखता था. आज के भारत में तो सिर्फ़ झगड़ा फ़साद ही दीखता है." गांव के जीवन से उसकी चिढ़ इतनी गहरी हो गई थी, कि शादी ब्याह के मौक़े पर जब वह मैके जाती तो तीन चार दिन से ज़ियादा उसका वहां ठहरना मुश्किल हो जाता. फिर भी वह मेरे कहने का साफ़ साफ़ विरोध न कर सकी और उसे यहां आने के लिये मजबूर होना पड़ा.

शहर से तीन मील दूर यह गांव एक दम गांव ही नहीं कहा जा सकता. बच्चों के पढ़ने के लिये हाई स्कूल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का एक छोटा सा अस्पताल तो यहां है ही. शहर जाने के लिये गांव के दक्खिन से पचास क़दम के फ़ासले पर पक्की सड़क भी है, जिसके दूसरी तरफ़ चीनी मिल, स्कूल और अस्पताल हैं. लेकिन यहां शहरी ज़िन्दगी की अच्छी बातों में से इसके अलावा और कुछ नहीं है. बस्ती बहुत बड़ी होते हुये भी पढ़े लिखे

میری دبدھا

(اونکار ناتھ شاستری)

کچھ دن پہلے میں اے . جی . آفس میں کام کرتا تھا . تب مجھے مہنگائی لگاکر سو روپئے ماسک پڑتے تھے. میری بیوی منی اور تین بچوں کے چھوٹے پریوار کو بھی اتنی آمدنی سے پالنا مشکل تھا . دو پڑھنے والے لڑکوں کی فیس، کتاب کاغذ کا پربندھ، کرایہ مکان راشن، کپڑا، دھوبی، نائی وغیرہ خرچوں کے مدوں میں سے کوئی نہ کوئی مجھے قرض لینے کے لئے مجبور کرتا رہا . یہاں تک کہ پتاجی کی مرتیو کے بعد ڈیڑھ سال کے بھیتر میرے اوپر پانچ سو روپیہ کا قرض ہوگیا تو میں ذرا ڈر سا گیا .

منی خرچیلی عورت نہیں ہے، نہ گرہستی کے چلانے میں کبھی میری مرضی کے خلاف ایک پیسہ بھی باہری ٹیم ٹام میں خرچ کرتی ہے. ہاں، اسے شہری زندگی بہت پیاری ہے . اس لئے آج سے چھ مہینے پہلے، جب میں نے اس گاؤں کی چینی مل کی ڈیڑھ سو روپئے کی نوکری سوئیکار کی، تو اس نے بہت چاہا تھا کہ میں دیہات نہ آؤں . اس نے صاف کہا تھا کہ "میں گاؤں کی زندگی سے اوب گئی ہوں، وہاں کے آپسی جھگڑے، مقدمے بازی، بے پڑھی جنتا کی سنگتی، ہر طرح سے مردہ زندگی، مجھے پسند نہیں ہے." اس نے اتہاس کی اپنی تھوڑی سی جانکاری کی آڑ لیتے ہوئے کہا تھا کہ "یہ وہ گاؤں کا جیون نہیں ہے، جس کی سادگی سچائی اور اونچائی کی تعریف کرتے کرتے ودیشی یاتریوں کا منہ سوکھتا تھا آج کے بھارت میں تو صرف جھگڑا فساد ہی دکھتا ہے." گاؤں کے جیون سے اس کی چڑھ اتنی گہری ہوگئی تھی کہ شادی بیاہ کے موقعے پر جب وہ میکے جاتی تو تین چار دن سے زیادہ اس کا وہاں ٹھہرنا مشکل ہو جاتا. پھر بھی وہ میرے کہنے کا صاف صاف ورودھ نہ کر سکی اور اسے یہاں آنے کے لئے مجبور ہونا پڑا .

شہر سے تین میل دور یہ گاؤں ایک دم گاؤں ہی نہیں کہا جاسکتا . بچوں کے پڑھنے کے لئے ہائی اسکول اور ڈسٹرکٹ بورڈ کا ایک چھوٹا سا اسپتال تو یہاں ہے ہی. شہر جانے کے لئے گاؤں کے دکھن سے پچاس قدم کے فاصلے پر پکی سڑک بھی ہے، جس کے دوسری طرف چینی مل، اسکول اور اسپتال ہیں . لیکن یہاں شہری زندگی کی اچھی باتوں میں اس کے علاوہ اور کچھ نہیں ہے . بستی بہت بڑی ہوتے ہوئے بھی پڑھے لکھے

लोग उंगलियों पर गिनाये जा सकते हैं. मिल के क्लर्क वगैरा ज़्यादातर शहर के हैं, जो छुट्टी खत्म होने पर वापस चले जाते हैं. उनके और दूसरे मज़दूरों के क्वार्टरों में भी ये ज़्यादा लोग न रहते हैं, न उनके रहने की जगह है. हाई स्कूल में पढ़ने वाले लड़के आस पास के गांव से आते हैं और शाम को चले जाते हैं. और बोर्डिंग हाउस में स्कूल के स्टाफ के लोगों और दस पांच लड़कों के अलावा कोई नहीं रहता.

हां शहर की सभी बुराइयां यहां मौजूद हैं. शराब पीना, जुआ खेलना, बदमाशी, गुन्डा शाही, मेरे शहर के उस मुहल्ले से यहां दस गुना है. शराब पीने वालों से, माल निकालने वालों से, औरतें भगाने वालों से, एक शब्द में सभी जरायम पेशा वालों से पुलिस को अपना हिस्सा घर बैठे मिल जाता है. अभी उस दिन, उस राही की गठरी लूटने वाले सुक्खू पासी को उसके भाई ने बड़े तपाक से पुलिस हवालात से छुड़ाते हुये कहा "जब तक दीवान जी सलामत हैं और मेरे भाई का दम है सत्तर रुपयों के बदले कई सत्तर सौ आते रहेंगे." अगर मुझे यह सब मालूम होता तो डेढ़ सौ रुपये क्या पांच सौ रुपये पर भी इस नौकरी को लात मारता. घनी बस्ती के बीच मेरे मकान के सामने से कौन ऐसा वक्त होता है, जब दो चार गुन्डे कन्धे पर लाठी रक्खे, माथे पर रोली का टीका लगाये, बानबाइन या क़मीज़ और तहमद पहिने न गुज़रते हों. सामने रहने वाले बुद्धू नामक पक्के वान की बीबी, लखिया पर उनकी निगाह है.

बुद्धू दर असल बुद्धू है. जब उसे शराब पीने को नहीं मिलती तो उसकी बात चीत और व्यवहार से उसे खराब आदमी नहीं कहा जा सकता. मगर शराब के नशे में मैंने उसे कई बार दरवाज़े पर लाठी चमकाते, पैंतरा घुमाते हुये अपने धोबी पड़ोसी को ललकार कर यह कहते हुये सुना है—"देख, बुद्धू गुन्डे की शान, मेरे रुपयों का ब्याज दे नहीं तो तेरे सर की खैर नहीं." यह दो जुमले शराब पीने पर उसे खास तौर से याद आते हैं. मगर सभी जानते हैं कि उसी धोबी से वह बार बार क़र्ज़ लेता और उसके यहां अपनी स्त्री के कड़े वगैरा गिरवीं रखता रहा है. अक्सर जब वह मुझ से मिलता है तो मैं उसे शराब पीने, जुआ खेलने के खिलाफ़ ज़ोर दिया करता हूं और तब उस समय वह बार बार क़सम खाता है कि बाबू जी अब मुझे ऐसा करते देख लें, तो सौ जूते गिन कर मारना. मगर लखिया ने मेरी बीबी को बतलाया है कि उसकी बातों का कोई विश्वास नहीं. एक बार तो ऐसा हुआ था कि जो गुंडे उसे बहका कर उसके साथ शराब पीते

لوگ انگلیوں پر گنائے جاسکتے ہیں. مل کے کلرک وغیرہ زیادہ تر شہر کے ہیں، جو چھٹی ختم ہونے پر واپس چلے جاتے ہیں. ان کے اور دوسرے مزدوروں کے کوارٹروں میں بھی یہ زیادہ لوگ نہ رہتے ہیں، نہ ان کے رہنے کی جگہ ہے. ہائی اسکول میں پڑھنے والے لڑکے آس پاس کے گاؤں سے آتے ہیں اور شام کو چلے جاتے ہیں. اور بورڈنگ ہاؤس میں اسکول کے اسٹاف کے لوگوں اور دس پانچ لڑکوں کے علاوہ کوئی نہیں رہتا.

ہاں شہر کی سبھی برائیاں یہاں موجود ہیں. شراب پینا، جوا کھیلنا، بدمعاشی، غنڈا شاہی، میرے شہر کے اس محلے سے یہاں دس گنا ہے. شراب پینے والوں سے، مال نکالنے والوں سے، عورتیں بھگانے والوں سے، ایک لفظ میں سبھی جرائم پیشہ والوں سے پولیس کو اپنا حصہ گھر بیٹھے مل جاتا ہے. ابھی اس دن، اس راہی کی گٹھری لوٹنے والے سکھو پاسی کو اس کے بھائی نے بڑے تپاک سے پولیس حوالات سے چھڑاتے ہوئے کہا—"جب تک دیوان جی سلامت ہیں اور میرے بھائی کا دم ہے ستر روپیوں کے بدلے کئی ستر سو آتے رہیں گے." اگر مجھے یہ سب معلوم ہوتا تو ڈیڑھ سو کیا پانچ سو روپیہ پر بھی اس نوکری کو لات مارتا. گھنی بستی کے بیچ میرے مکان کے سامنے سے کون ایسا وقت ہوتا ہے، جب دو چار غنڈے کندھے پر لاٹھی رکھے، ماتھے پر رولی کا ٹیکہ لگائے، بنیائن یا قمیض اور تہمد پہنے نہ گذرتے ہوں. سامنے رہنے والے بدھو نامک پکے وان کی بیوی، لکھیا پر ان کی نگاہ ہے.

بدھو دراصل بدھو ہے. جب اسے شراب پینے کو نہیں ملتی، تو اس کی بات چیت اور بیوہار سے اسے خراب آدمی نہیں کہا جاسکتا. مگر شراب کے نشے میں میں نے اسے کئی بار دروازے پر لاٹھی چمکاتے، پینترا گھماتے ہوئے اپنے دھوبی پڑوسی کو للکار کر یہ کہتے ہوئے سنا ہے— "دیکھ، بدھو غنڈے کی شان، میرے روپیوں کا بیاج دے نہیں تو تیرے سر کی خیر نہیں." یہ دو جملے شراب پینے پر اسے خاص طور سے یاد آتے ہیں. مگر سبھی جانتے ہیں کہ اسی دھوبی سے وہ بار بار قرض لیتا اور اس کے یہاں اپنی بیوی کے کڑے وغیرہ گروی رکھتا رہا ہے. اکثر جب وہ مجھ سے ملتا ہے، تو میں اسے شراب پینے، جوا کھیلنے کے خلاف زور دیا کرتا ہوں اور تب اس سمے وہ بار بار قسم کھاتا ہے کہ بابوجی اب مجھے ایسا کرتے دیکھ لیں، تو سو جوتے گن کر مارنا. مگر لکھیا نے میری بیوی کو بتلایا ہے کہ اس کی باتوں کا کوئی وشواس نہیں. ایک بار تو ایسا ہوا تھا کہ جو غنڈے اسے بہکا کر اس کے ساتھ شراب پیتے

पिलाते और जुआ खेलते थे, उन्होंने उससे अपने पचास रुपयों के बदले ठेले की रकम वसूल करने के फेर में, उसे गन्दे नाले में डुबो दिया था. खाली उसका हाथ, जिसे वह पकड़े थे, ऊपर था और इस तरह उसे दो मिनट तक रक्खे रहे.

लखिया सुन्दर सचरित्र औरत है. यह अचरज की बात है कि इस गांव की हवा उसे नहीं लगी है. अपने काम काज के अलावा वह किसी से कोई रिश्ता नहीं रखती. उसके चार बच्चे हैं, जिनमें सब से बड़े की उम्र दस साल से ज़्यादा नहीं है. घरेलू काम काज से खाली होने पर वह बानबंटा करती है, जिससे सात आठ आना रोज़ तो वह पैदा कर ही लेती है. किसी के मकान पर बिना ज़रूरत दूसरी औरतों की तरह गप्पें लड़ाना, बात बात में लड़ना झगड़ना, गाली गलौज करना, चुगली खाना, दूसरे मर्दों से आंखें लड़ाना वग़ैरा उसकी आदत में दाखिल नहीं है. सच्चे मानों में वह एक पति व्रता औरत है. इधर जब से मैंने बुद्धू के पड़ोस में अपना मकान लिया है तब से जाने क्या समझ कर उसने मेरी बीबी के साथ मेल कर लिया है और अक्सर वह उससे मिलती है. अपनी दर्द भरी कहानी सुना कर ऐसी हमदर्दी की भीख मांगती है जिसके लिये हमारे परिवार में साधन भी नहीं हैं.

आज वह हमदर्दी अपनी आख़िरी सीमा तक पहुंच चुकी है. बुद्धू अपना दो सौ रुपये का इक्का पचास रुपये में बेच कर उसे जुआ में हार कर भागा है. इसके अलावा दो सौ कर्ज़ भी कर चुका है. इसकी वसूली के लिये उसके मकान पर तीन चार दिन से गुन्डों का जमाव लगा रहता है. ख़बर है कि बुद्धू ने उनसे कहा था कि क्यों घबराते हो मकान बेच कर पैसा पैसा चुका देंगे. अब गुन्डे उसकी बीबी को गालियां देते हैं. अब उन्हें लखिया को खुले आम छेड़ने का मौक़ा मिल गया है. अक्सर जब मैं घर पर होता हूँ तो आंगन से तरह तरह की बातें सुनाई देती हैं और कानों को क्या करूं? न भी सुनाई देतीं तो लखिया तो मुन्नी से सब कुछ बता जाती है. उसकी कड़ी फटकार शर्म वालों के लिये काफ़ी थी, मगर इन बेशर्मों के लिये तो वे आग में घी का काम करती है. रोती हुई लखिया मेरी बीबी से कहती है,—"दीदी मेरी इन गुन्डों से रक्षा करो, नहीं तो मैं अपने बच्चों सहित कुएँ में डूब मरूंगी." मुन्नी या मैं करें तो क्या करें? मुन्नी के जी में आया कि अपने कड़े बेच कर लखिया को दूसरा इक्का खरीदवा दे, पर न मालूम किस वजह से वह रुक गई. पर वह लखिया से बेहद प्यार करने लगी है और उसके संकट को अपना संकट समझती है. उसके जी में कई बार आया कि वह ख़ुद निकल कर गुन्डों को फटकारे. मगर लखिया

پلاتے اور جوا کھیلتے تھے، انہوں نے اس سے اپنے پچاس روپوں کے بدلے ٹھیلہ سو روپئے وصول کرنے کے پھیر میں، اسے گندے نالے میں ڈبو دیا تھا، خالی اس کا ہاتھ، جسے وہ پکڑے تھے، اوپر تھا اور اس طرح اسے دو منٹ رکھے رہے۔

لکھیا سندر سچرتر عورت ہے۔ یہ اچرج کی بات ہے کہ اس گاؤں کی ہوا اسے نہیں لگی ہے۔ اپنے کام کاج کے علاوہ وہ کسی سے کوئی رشتہ نہیں رکھتی۔ اس کے چار بچے ہیں، جن میں سب سے بڑے کی عمر دس سال سے زیادہ نہیں ہے۔ گھریلو کام کاج سے خالی ہونے پر وہ بان بٹا کرتی ہے۔ جس سے سات آٹھ آنہ روز تو وہ پیدا کر ہی لیتی ہے۔ کسی کے مکان پر بنا ضرورت دوسری عورتوں کی طرح گپیں لڑانا، بات بات میں لڑنا جھگڑنا گالی گلوچ کرنا، چغلی کھانا، دوسرے مردوں سے آنکھیں لڑانا وغیرہ اس کی عادت میں داخل نہیں ہے۔ سچے معنوں میں وہ ایک پتی ورتا عورت ہے۔ ادھر جب سے میں نے بدھو کے پڑوس میں اپنا مکان لیا ہے تب سے جانے کیا سمجھ کر اس نے میری بیوی کے ساتھ میل کر لیا ہے اور اکثر وہ اس سے ملتی ہے۔ اپنی درد بھری کہانی سنا کر ایسی ہمدردی کی بھیک مانگتی ہے جس کے لئے ہمارے پریوار میں سادھن بھی نہیں ہیں۔

آج وہ ہمدردی اپنی آخری سیما تک پہنچ چکی ہے۔ بدھو اپنا دو سو روپئے کا یکہ پچاس روپئے میں بیچ کر اسے جوا میں ہار کر بھاگا ہے۔ اس کے علاوہ دو سو روپے قرض بھی کر چکا ہے۔ اس کی وصولی کے لئے اس کے مکان پر تین چار دن سے غنڈوں کا جماؤ لگا رہتا ہے۔ خبر ہے کہ بدھو نے ان سے کہا تھا کہ کیوں گھبراتے ہو مکان بیچ کر پیسہ پیسہ چکا دینگے۔ اب غنڈے اسکی بیوی کو گالیاں دیتے ہیں۔ اب انہیں لکھیا کو کھلے عام چھیڑنے کا موقع مل گیا ہے۔ اکثر جب میں گھر پر ہوتا ہوں تو آنگن سے طرح طرح کی باتیں سنائی دیتی ہیں اور کانوں کو کیا کروں؟ نہ بھی سنائی دیتی تو لکھیا تو منی سے سب کچھ بتا جاتی ہے۔ اسکی کڑی پھٹکار شرم والوں کے لئے کافی تھی، مگر ان بے شرموں کے لئے تو وہ آگ میں گھی کا کام کرتی ہے۔ روتی ہوئی لکھیا میری بیوی سے کہتی ہے—"دی دی میری ان غنڈوں سے رکشا کرو، نہیں تو میں اپنے بچوں سمیت کنوئیں میں ڈوب مروں گی۔" منی یا میں کریں تو کیا کریں؟ منی کے جی میں آیا کہ اپنے کڑے بیچ کر لکھیا کو دوسرا یکہ خریدوا دے، پر نہ معلوم کس وجہ سے وہ رک گئی۔ پر وہ لکھیا سے بے حد پیار کرنے لگی ہے اور اس کے سنکٹ کو اپنا سنکٹ سمجھتی ہے۔ اس کے جی میں کئی بار آیا کہ وہ خود نکل کر غنڈوں کو پھٹکارے۔ مگر لکھیا

…ने ही उसको रोक दिया और कहा "नहीं, दीदी आप नहीं जानतीं हैं. हम लोगों को तो हमेशा ही गाली खानी पड़ती है. अगर उन्होंने आपको कुछ कह दिया तो आपकी इज़्ज़त उतर जायेगी. पुलिस वाले इनकी मुट्ठी में हैं, रहना मुश्किल कर देंगे." इन सब बातों से लखिया, मुन्नी के और भी नज़दीक आ गई है. कल मैंने जो उससे कहा कि—"चलो इस नरक से निकल कर फिर शहर चलें. ए. जी. आफ़िस के साहब तो मुझे मानते ही हैं, नौकरी मिलने में मुश्किल नहीं होगी." तो मुन्नी ने कड़ा रुख़ करके जवाब दिया—"शरम नहीं आती, इस बेचारी को इस मुसीबत में छोड़ कर कायरों की तरह भागने को कहते हो."

मैंने कहा—"अगर लखिया का इतना ख़याल है तो उसको भी साथ ले चलो."

मुन्नी इस पर राज़ी हो गई उसने कहा—"ठीक है एक समय भोजन करेंगे, दूसरे वक़्त चने चबायेंगे. उस वक़्त तक जब तक लखिया को मिल में नौकरी न मिल जावे." लेकिन जब उसने इसका प्रस्ताव लखिया से किया तो उसने साफ़ कहा "मगर दीदी, वह बौखल कहां जायेगा, उसे कैसे छोड़ सकती हूँ." मुन्नी ने उसे फिर समझाया तुम्हारी जाति में तो छोड़ने छाड़ने का रिवाज है तो उसने कहा—"वह सब तो ठीक है दीदी, मगर जाने क्यों उसे छोड़ने का जी नहीं चाहता." अजीब बात है मैं दुविधा में हूँ क्या करूं.

ने ہی اُس کو روک دیا اور کہا—"نہیں' دی دی آپ نہیں جانتیں هیں. هم لوگوں کو تو همیشه هی گالی کھانی پڑتی هے. اگر اُنهوں نے آپ کو کچھ کہه دیا تو آپ کی عزت اُتر جائے گی. پولیس والے ان کی مٹھی میں هیں' رهنا مشکل کر دیں گے." اِن سب باتوں سے لکھیا' منی کے اور بھی نزدیک آ گئی هے. کل میں نے جو اُس سے یہ کہا—" چلو اس نرک سے نکل کر پھر شہر چلیں. اے. جی. آفس کے صاحب تو مجھے مانتے هی هیں' نوکری ملنے میں مشکل نہیں هوگی." تو منی نے کڑا رخ کر کے جواب دیا—" شرم نہیں آتی' اِس بیچاری کو اِس مصیبت میں چھوڑ کر کائروں کی طرح بھاگنے کو کہتے هو."

میں نے کہا—" اگر لکھیا کا اتنا خیال هے تو اُس کو بھی ساتھ لے چلو."

منی اِس پر راضی هوگئی. اُس نے کہا—" ایک سمے بھوجن کریں گے' دوسرے وقت چنے چبائیں گے اُس وقت تک جب تک لکھیا کو مل میں نوکری نه مل جائے" لیکن جب اُس نے اِس بات کا پرستاؤ لکھیا سے کیا تو اُس نے صاف کہا—"مگر دی دی' وہ بوکھل کہاں جائے گا' اُسے کیسے چھوڑ سکتی هوں" منی نے اُسے پھر سمجھایا تمہاری جاتی میں تو چھوڑنے چھاڑنے کا رواج هے. تو اُس نے کہا—" یہ سب تو ٹھیک هے دی دی' مگر جانے کیوں اُسے چھوڑنے کا جی نہیں چاهتا."

عجیب بات هے میں دبدھا میں هوں کیا کروں.

श्री पाटिल को विनोबा जी का जवाब

(दामोदर दास मूंदड़ा)

[कुछ पढ़े लिखे जानकारों को और सरकारी हलक़ों में यह शिकायत है कि विनोबा जी अपने भूदान यज्ञ के ज़रिये ज़मीन के टुकड़े टुकड़े करके उसे किसी काम का नहीं रहने देंगे. इस बारे में ख़ास तौर से शिकायत श्री राम कृष्ण पाटिल को है जो प्लानिंग कमीशन के मेम्बर हैं. विनोबा जी ने इसका जो लासानी जवाब दिया है वह हम उनके सेक्रेटरी भाई दामोदर दास मूँदड़ा के क़लम से लेकर नीचे दे रहे हैं. हमें उम्मीद है कि हिन्द सरकार का प्लानिंग कमीशन और प्लानिंग मिनिस्टर जो सहयोगी खेती के नाम पर लट्टू हो कर ट्रैक्टरों, मशीनों और विलायती खाद को देश के लाचार किसानों के सरों ज़बरदस्ती मढ़ रहे हैं उन पर गहराई से सोच कर मुनासिब क़दम उठायेंगी—एडीटर]

شری پاٹل کو ونوبا جی کا جواب

(دامودر داس موندڑا)

[کچھ پڑھے لکھے جانکاروں کو اور سرکاری حلقوں میں یہ شکایت هے که ونوبا جی اپنے بھودان یگه کے ذریعے زمین کے ٹکڑے ٹکڑے کرکے اُسے کسی کام کا نہیں رهنے دیں گے. اِس بارے میں خاص طور سے شکایت شری رام کرشن پاٹل کو هے جو پلاننگ کمیشن کے ممبر هیں. ونوبا جی نے اِس کا جو لاثانی جواب دیا هے وہ هم اُن کے سکریٹری بھائی دامودر داس موندڑا کے قلم سے لیکر نیچے دے رهے هیں. همیں اُمید هے که هند سرکار کا پلاننگ کمیشن اور پلاننگ منسٹر جو سہیوگی کھیتی کے نام پر لٹو هوکر ٹریکٹروں' مشینوں اور ولایتی کھاد کو دیش کے لاچار کسانوں کے سروں زبردستی مڑھ رهے هیں اِس پر گہرائی سے سوچ کر مناسب قدم اُٹھائیں گے—ایڈیٹر]

श्री पाटिल को विनोबा जी का जवाब

सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन से लौटने पर श्री राम कृष्ण पाटिल ने भूदान यज्ञ के बारे में दिल्ली से जो बयान अखबारों को दिया है, उस सम्बन्ध में पूछने पर विनोबा जी ने श्री पाटिल को बधाई दी कि उन्होंने भूदान यज्ञ के वास्ते ही क्यों न हो, ग्रामोद्योग की इतनी हिमायत की है.

"अगर प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट में इसकी झांकी नज़र आती, तो मुझे जो उसकी सख्त आलोचना करनी पड़ी वह नहीं करनी पड़ती. देरी से ही क्यों न हो, श्री पाटिल ग्रामोद्योग का ही महत्व समझ गये हैं, इससे मैं देश के लिहाज़ से फ़ायदा ही देखता हूँ.

"अब रहा भूदान यज्ञ के आन्दोलन के बारे में. उन्होंने इस आन्दोलन को समय के लायक मौज़ूँ चीज़ बना कर इसको जो इज़्ज़त दी है, उसके लिये मैं उनका अहसान मानता हूँ. लेकिन मुझे डर है कि वह शायद आन्दोलन की बुनियादी कल्पना को ठीक ठीक नहीं समझ सके. वरना सारी रामायण सुनकर आख़िर में राम की सीता कौन है, ऐसा सवाल वह नहीं उठाते. इसमें शक नहीं कि मैं चाहता हूँ कि जो भी ज़मीन पर मेहनत करके अपनी रोटी कमाना चाहे, उसे ज़मीन दी जाये. इन्सानी मेहनत में विश्वास के इस बीज से ही सर्वोदय का फल हासिल होने वाला है. लेकिन फ़िलहाल ज़मीन तक़सीम करने के बारे में सेवापुरी में मैंने अपने पहले रोज़ के भाषण में ही यह साफ़ किया था कि गांव में जो बढ़ई, बुनकर, लोहार या दूसरे ऐसे लोग जिन के पास रोज़ी कमाने का कुछ न कुछ ज़रिया मौजूद है, उन्हें हम ज़मीन नहीं देने वाले हैं. भूदान यज्ञ की ज़मीन तो उन्हें ही मिलेगी, जो बेज़मीन हैं, खेती अच्छी तरह जोतना जानते हैं, लेकिन आज जिन्हें मज़दूरी के भरोसे ज़िन्दगी बसर करनी पड़ती है—मज़दूरी जो कभी मिलती है, कभी नहीं मिलती. मैंने यह भी साफ़ किया था कि ऐसी तमीज़ किये बिना अगर हर किसी बेज़मीन को हम ज़मीन देना चाहें तो हमारे प्रधान मंत्री भी ज़मीन मांग सकते हैं.

"जो ठहराव सर्व सेवा संघ ने मंज़ूर किया है और जिसके कारण सारे देश को पच्चीस लाख एकड़ ज़मीन बेज़मीनों के लिये हासिल करने की प्रेरणा मिलने वाली है, वह ठहराव ही कहता है कि सिर्फ़ ज़मीन देने से देश का मसला हल नहीं होगा. ज़मीन के साथ साथ ग्रामोद्योग भी जुड़े होने चाहियें, और इसलिये उस ठहराव में निजी जीवन की हद तक खाने पीने और पहनने ओढ़ने की चीज़ों के लिये मिल धंधों के बाईकाट की बात कही गई है. ग्रामोद्योग के बारे में मैंने इसरार के साथ प्लानिंग कमीशन की सभा में भी समझाया था—और जहां जाता हूँ वहां भी इस सम्बन्ध में अपना ख़्याल लोगों के सामने रख देता

شری پاٹل کو ونوبا جی کا جواب

سیواپوری سروودے سمیلن سے لوٹنے پر شری رام کرشن پاٹل نے بھودان یگیہ کے بارے میں دلی سے جو بیان اخباروں کو دیا ہے، اُس سمبندھ میں پوچھنے پر ونوبا جی نے شری پاٹل کو بدھائی دی کہ اُنہوں نے بھودان یگیہ کے واسطے ہی کیوں نہ ہو، گرام اُدیوگ کی اتنی حمایت کی ہے۔

"اگر پلاننگ کمیشن کی رپورٹ میں اِس کی جھانکی نظر آتی، تو مجھے جو اسکی سخت آلوچنا کرنی پڑی وہ نہیں کرنی پڑتی۔ دیری سے ہی کیوں نہ ہو، شری پاٹل گرام اُدیوگ کا مہتو سمجھ گئے ہیں، اِس میں میں دیش کے لحاظ سے فائدہ ہی دیکھتا ہوں۔

"اب رہا بھودان یگیہ کے آندولن کے بارے میں۔ اُنہوں نے اِس آندولن کو سمے کے لائق موزوں چیز بناکر اسکو جو عزت دی ہے، اُس کے لئے میں اُن کا احسان مانتا ہوں۔ لیکن مجھے ڈر ہے کہ وہ شاید آندولن کی بنیادی کلپنا کو ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھ سکے۔ ورنہ ساری رامائن سن کر آخر میں رام کی سیتا کون ہے، ایسا سوال وہ نہیں اُٹھاتے۔ اِس میں شک نہیں کہ میں چاہتا ہوں کہ جو بھی زمین پر محنت کرکے اپنی روٹی کمانا چاہے، اُسے زمین دی جائے۔ انسانی محنت میں وشواس کے اس بیج سے ہی سروودے کا پھل حاصل ہونے والا ہے۔ لیکن فی الحال زمین تقسیم کرنے کے بارے میں سیواپوری میں میں نے اپنے پہلے روز کے بھاشن میں ہی یہ صاف کہا تھا کہ گاؤں میں جو بڑھئی، بنکر، لوہار یا دوسرے ایسے لوگ جن کے پاس روزی کمانے کا کچھ نہ کچھ ذریعہ موجود ہے، اُنہیں ہم زمین نہیں دینے والے ہیں۔ بھودان یگیہ کی زمین تو اُنہیں ہی ملے گی، جو بےزمین ہیں، کھیتی اچھی طرح جوتنا جانتے ہیں، لیکن آج جنہیں مزدوری کے بھروسے زندگی بسر کرنی پڑتی ہے—مزدوری جو کبھی ملتی ہے، کبھی نہیں ملتی۔ میں نے یہ بھی صاف کہا تھا کہ ایسی تمیز کئے بنا اگر ہر کسی بےزمین کو ہم زمین دینا چاہیں تو ہمارے پردھان منتری بھی زمین مانگ سکتے ہیں۔

"جو ٹھہراؤ سرو سیوا سنگھ نے منظور کیا ہے اور جس کے کارن سارے دیش کو پچیس لاکھ ایکڑ زمین بےزمینوں کے لئے حاصل کرنے کی پریرنا ملنے والی ہے، وہ ٹھہراؤ ہی کہتا ہے کہ صرف زمین دینے سے دیش کا مسئلہ حل نہیں ہوگا۔ زمین کے ساتھ ساتھ گرام اُدیوگ بھی جڑے ہونے چاہئیں، اور اِس لئے اُس ٹھہراؤ میں نجی جیون کی حد تک کھانے پینے اور پہننے اوڑھنے کی چیزوں کے لئے مل دھندوں کے بائیکاٹ کی بات کہی گئی ہے۔ گرام اُدیوگ کے بارے میں میں نے اصرار کے ساتھ پلاننگ کمیشن کی سبھا میں بھی سمجھایا تھا—اور جہاں جاتا ہوں وہاں بھی اِس سمبندھ میں اپنا خیال لوگوں کے سامنے رکھ دیتا

है—कि देहातों में जो कच्चा माल होता है, उसी से देहात की ज़रूरत का सारा ज़रूरी पक्का माल तैयार होना चाहिये. अगर इस उसूल को मान लेते हैं—जिसे मानने के लिये अभी तक प्लानिंग कमीशन हिम्मत नहीं कर रहा है, और करता भी है तो अगर मगर की शर्तों के साथ करना चाहता है—तो सारा मसला हल हो जाता है.

"श्री पाटिल ने अपने बयान में फिर से इकनोमिक होल्डिंग (Economic Holding) की बात उठाई है. किसी मसले को बार बार चर्चा करने से वह मसला और साफ़ हो जाता है. इस लिहाज़ से उनके इस सवाल का मैं स्वागत करता हूँ. मुझे उनकी याददाश्त में अविश्वास नहीं है. यह मैंने इसलिये कहा कि न सिर्फ़ सर्वोदय सम्मेलन में, बल्कि दिल्ली में की गई प्लानिंग कमीशन की सारी चर्चा में और वहीं पर अख़बार वालों साथ हुई बात चीत में मैंने इस बारे में अपनी राय साफ़ साफ़ बताई थी. एकनोमिक होल्डिंग क्या हो सकता है, क्या नहीं हो सकता है, यह बहस का सवाल है. आज तो सवाल यही है कि पांच एकड़ सूखी या एक एकड़ तरी ज़मीन पांच आदमियों के परिवार के लिये काफ़ी है या नहीं ? हैदराबाद में तो इतनी तादाद काफ़ी मानी गई है. इधर उत्तर प्रदेश में पूरब के ज़िलों में मैंने कई जगहों पर किसानों को सीधा सवाल पूछा है और उन्होंने इससे आधी ज़मीन पर भी अच्छी तरह गुज़र बसर कर सकना मुमकिन बताया है. जापान और चीन में ज़मीन का बंटवारा जिस तरह हो रहा है, उससे श्री पाटिल को अपनी शंका का जवाब मिलना चाहिये. लेकिन वहां तक जाने की ज़रूरत नहीं. थोड़ी ज़मीन से कितनी अच्छी फ़सल ली जा सकती है, यह वह चाहें तो परंधाम (पौनार, ज़िला वर्धा) आश्रम में जाकर देख सकते हैं.

"उन्होंने बैल जोड़ी का सवाल भी उठाया है. इस बारे में मेरा इतना ही कहना है कि अगर एक बैल जोड़ी बीस एकड़ के लिये काफ़ी होती है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर आदमी के पास कम से कम बीस एकड़ ज़मीन हो. अगर पाटिल साहब इतनी ज़मीन देने का जादू कर सकें तो मुझे इनकार नहीं है. लेकिन देश में इतनी ज़मीन है ही नहीं. इसलिये हो यही सकता है कि चार पांच काश्तकार मिलकर एक बैल जोड़ी रखें और इस तरह पार्शियल कोआपरेशन यानी थोड़ी थोड़ी शिरकत से खेती करें. यह पार्शियल कोआपरेशन न सिर्फ़ बैल जोड़ी की हद तक हो, बल्कि हिफ़ाज़त, सिंचाई वग़ैरा बातों में भी हो सकता है.

"श्री पाटिल के और मेरे विचारों में एक बुनियादी फ़र्क़ दिखाई देता है. मैं चाहता हूं कि एक रोज़ ऐसा आवे

ہیں—کہ دیہاتوں میں جو کچا مال ہوتا ہے، اسی سے دیہات کی ضرورت کا سارا ضروری پکا مال تیار ہونا چاہئیے . اگر اس اصول کو مان لیتے ہیں—جسے ماننے کے لئے ابھی تک پلاننگ کمیشن ہمت نہیں کر رہا ہے، اور کرتا بھی ہے تو اگر مگر کی شرطوں کے ساتھ کرنا چاہتا ہے—تو سارا مسئلہ حل ہو جاتا ہے .

"شری پاٹل نے اپنے بیان میں پھر سے ایکونامک ہولڈنگ (Economic Holdnig) کی بات اٹھائی ہے . کسی مسئلہ کی بار بار چرچا کرنے سے وہ مسئلہ اور صاف ہو جاتا ہے . اس لحاظ سے ان کے اس سوال کا میں سواگت کرتا ہوں. مجھے ان کی یادداشت میں اوشواس نہیں ہے؛ یہ میں نے اس لئے کہا کہ نہ صرف سرودے سمیلن میں، بلکہ دلی میں کی گئی پلاننگ کمیشن کی ساری چرچا میں اور وہیں پر اخبار والوں کے ساتھ ہوئی بات چیت میں میں نے اس بارے میں اپنی رائے صاف صاف بتا دی تھی . ایکونامک ہولڈنگ کیا ہو سکتا ہے، کیا نہیں ہو سکتا ہے، یہ بحث کا سوال ہے . آج تو سوال یہی ہے کہ پانچ ایکڑ سوکھی یا ایک ایکڑ تری زمین پانچ آدمیوں کے پریوار کے لئے کافی ہے یا نہیں ؟ حیدرآباد میں تو اتنی تعداد کافی مانی گئی ہے . ادھر اتر پردیش میں پورب کے ضلعوں میں میں نے کئی جگہوں پر کسانوں کو سیدھا سوال پوچھا ہے اور انہوں نے اس سے آدھی زمین پر بھی اچھی طرح گذر بسر کر سکنا ممکن بتایا ہے . جاپان اور چین میں زمین کا بٹوارہ جس طرح ہو رہا ہے، اس سے شری پاٹل کو اپنی شنکا کا جواب ملنا چاہئے. لیکن وہاں تک جانے کی ضرورت نہیں . تھوڑی زمین سے کتنی اچھی فصل لی جا سکتی ہے، یہ وہ چاہیں تو پرم دھام (پونار—ضلع وردھا) آشرم میں جا کر دیکھ سکتے ہیں .

" انہوں نے بیل جوڑی کا سوال بھی اٹھایا ہے . اس بارے میں میرا اتنا ہی کہنا ہے کہ اگر ایک بیل جوڑی بیس ایکڑ کے لئے کافی ہوتی ہے، تو اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ ہر آدمی کے پاس کم سے کم بیس ایکڑ زمین ہو . اگر پاٹل صاحب اتنی زمین دینے کا جادو کر سکیں تو مجھے انکار نہیں ہے . لیکن دیش میں اتنی زمین ہی نہیں . اس لئے ہو یہی سکتا ہے کہ چار پانچ کاشتکار مل کر ایک بیل جوڑی رکھیں اور اس طرح پارشیل کوآپریشن یعنی تھوڑی تھوڑی شرکت سے کھیتی کریں . یہ پارشیل کوآپریشن نہ صرف بیل جوڑی کی حد تک ہو، بلکہ حفاظت، سینچائی وغیرہ باتوں میں بھی ہو سکتا ہے .

"شری پاٹل کے اور میرے وچاروں میں ایک بنیادی فرق دکھائی دیتا ہے . میں چاہتا ہوں کہ ایک روز ایسا آئے

श्री पाटिल को विनोबा जी का जवाब

"जब हर आदमी, फिर वह चाहे मजदूर हो या मालिक, प्रोफेसर हो या पढ़ा हो, मिनिस्टर हो या मैनेजर और प्लानिंग कमीशन का मेम्बर हो या उस दफ्तर का चपरासी, सब घंटा दो घंटा खेती में काम करें और देश की पैदावार बढ़ाने में मदद करें, मेरा मानना है कि इन्सानी मेहनत में इस विश्वास से देश का कल्याण ही होने वाला है और आज के बेहद भाव मिलने वाले हैं. बहुत मुमकिन है कि इसके लिये हमें अपने आज के शहरों को खतम कर के उनको फिर से बसाना पड़े. श्री टंडन जी ने सेवापुरी के अपने भाषण में इसका ज़िकर किया था और मैंने कहा था कि यह चीज़ वैदिक ख्याल के मुताबिक है, क्योंकि इन्द्र को पुरन्दर यानी शहरों को छिन्न भिन्न करने वाला कहा गया है. मैं मानता हूं कि यह वैदिक भावना किसी न किसी रोज़ पूरी होकर रहेगी."

شری پاٹل کو ونوبا جی کا جواب

"جب ہر آدمی، پھر وہ چاہے مزدور ہو یا مالک، پروفیسر ہو یا پڑھا ہو، منسٹر ہو یا منیجر اور پلاننگ کمیشن کا ممبر ہو یا اس دفتر کا چپراسی، سب گھنٹہ دو گھنٹہ کھیتی میں کام کریں اور دیش کی پیداوار بڑھانے میں مدد کریں۔ میرا ماننا ہے کہ انسانی محنت میں اس وشواس سے دیش کا کلیان ہی ہونے والا ہے اور آج کے بیحد بھاؤ ملنے والے ہیں۔ بہت ممکن ہے کہ اس کے لئے ہمیں اپنے آج کے شہروں کو ختم کر کے ان کو پھر سے بسانا پڑے۔ شری ٹنڈن جی نے سیوا پوری کے اپنے بھاشن میں اس کا ذکر کیا تھا اور میں نے کہا تھا کہ یہ چیز ویدک خیال کے مطابق ہے، کیونکہ اندر کو پرندر یعنی شہروں کو چھن بھن کرنے والا کہا گیا ہے۔ میں مانتا ہوں کہ یہ ویدک بھاونا کسی نہ کسی روز پوری ہو کر رہے گی۔"

भूदान यज्ञ आन्दोलन मजदूर आन्दोलन है

मैंने यह जो चीज़ उठाई है, वह मजदूरों की चीज़ है. मेरा आन्दोलन मजदूरों का आन्दोलन है. जो सबसे कमजोर हैं और जो बे ज़बान और बे अरमान हैं. उनका यह आन्दोलन है. मजदूरों के आन्दोलन यहाँ अकसर शहरों में होते हैं और वहीं उनका संगठन होता है. यूरप में खेतिहर मजदूरों के आन्दोलन हुए भी हैं, मगर हिन्दुस्तान में ज़ियादातर शहरी मजदूरों के ही आन्दोलन हुए हैं. उनके पास सिवा खेती के और कोई धन्धा नहीं है. जो सबसे नीचे के स्तर के हैं, उनका सवाल उठाना ही सर्वोदय और अहिंसा का तरीका है, क्योंकि जो सबसे आखिर का है, उसे ऊपर उठाने से बाकी के भी ऊपर उठ ही जाते हैं. मेरे आन्दोलन की कई नज़रें हो सकती हैं, पर एक खास नज़र यह कि यह मजदूर आन्दोलन है. मैं खुद बरसों मजदूर भी रहा हूं. मैंने खेती, रसोई, बुनाई, कताई, भंगी काम वगैरा सब में मजदूरी कर के सालों बिताये हैं. मैं मजदूरों की बात और उन्हीं का काम आज कर रहा हूं.

—विनोबा

بھودان یگیہ آندولن مزدور آندولن ہے

میں نے یہ جو چیز اٹھائی ہے، وہ مزدوروں کی چیز ہے. میرا آندولن مزدوروں کا آندولن ہے۔ جو سب سے کمزور ہیں اور جو بے زبان اور بے ارمان ہیں، ان کا یہ آندولن ہے۔ مزدوروں کے آندولن یہاں اکثر شہروں میں ہوتے ہیں اور وہیں ان کا سنگٹھن ہوتا ہے۔ یورپ میں کھیتی ہر مزدوروں کے آندولن ہوئے بھی ہیں، مگر ہندوستان میں زیادہ تر شہری مزدوروں کے ہی آندولن ہوئے ہیں۔ ان کے پاس سوا کھیتی کے اور کوئی دھندا نہیں ہے۔ جو سب سے نیچے کے استر ہیں، ان کا سوال اٹھانا ہی سروودے اور اہنسا کا طریقہ ہے، کیونکہ جو سب سے آخر کا ہے، اسے اوپر اٹھانے سے باقی کے بھی اوپر اٹھ ہی جاتے ہیں۔ میرے آندولن کی کئی نظریں ہوسکتی ہیں، پر ایک خاص نظر یہ کہ یہ مزدور آندولن ہے۔ میں خود برسوں مزدور بھی رہا ہوں۔ میں نے کھیتی، رسوئی، بنائی، کتائی، بھنگی کام وغیرہ سب میں مزدوری کرکے سالوں بتائے ہیں۔ میں مزدوروں کی بات اور انہیں کا کام آج کر رہا ہوں۔

—ونوبا

बच्चों की दुनिया

दुम कट गई पर झड़ गए फिरते हैं लंडूरे

(हयात उल्ला अन्सारी)

दूसरी रात चुहिया ने लाल मोर के पर भी काट डाले. लाल मोर ने जब देखा कि मेरे सब पर ग़ायब हैं तो रोने लगा कि भला अब मोरनी मेरे साथ शादी क्यों करने लगी.

मैना और कौवा उस दिन जो अपने दोस्त लाल मोर से मिलने आए तो उनको उसकी मुसीबत का पता चला. वह दोनों उसे समझाने लगे कि ऐसी बीमारियां आती रहती हैं. घबराओ नहीं कोई राह निकल ही आयेगी.

मैना जाकर कहीं से दाने बटोर लाई. कौवा एक चपाती उठा लाया. फिर तीनों ने मज़े से बैठ कर खाना खाया. और आपस में ऐसी हंसी की बातें हुईं कि लाल मोर अपनी मुसीबत भूल गया. जब तीनों खा पी चुके और लाल मोर की ढारस बंध गई तब मैना और कौवा बैठ कर सोचने लगे कि क्या किया जाय जो लाल मोर के पर फिर से निकल आयें.

कौवे ने कहा—"हकीम की दवा से पर निकल सकते हैं. मगर उसके घर का रास्ता बहुत मुश्किल है. राह में दो बड़े भयानक मैदान पड़ते हैं. पीला मैदान और काला मैदान. पीले मैदान में रात को ओले पड़ते हैं और काले में दिन को. इसलिये पीला मैदान दिन भर में पार कर लेना होगा. नहीं तो ओलों से सर फट जायगा. फिर बिना दम लिये रात भर में काला मैदान पार करना होगा."

लाल मोर ने कहा—"मैं पैदल बड़ा तेज़ भाग सकता हूं. पार कर लूंगा."

कौवे ने कहा—"एक मुश्किल और है. ज़मीन पर एक बड़ा भारी सांप रहता है जो पैदल जाने वालों को निगल जाता है."

लाल मोर ने कहा—"मैं तो जाऊंगा. सांप निगल जाय, निगल जाय. मोरनी के बग़ैर जीने से मर जाना अच्छा."

بچوں کی دنیا

دم کٹ گئی پر جھڑ گئے پھرتے ہیں لنڈورے

(حیات اللہ انصاری)

دوسری رات چوہیا نے لال مور کے پر بھی کاٹ ڈالے ۔ لال مور نے جب دیکھا کہ میرے سب پر غائب ہیں تو رونے لگا کہ بھلا اب مورنی میرے ساتھ شادی کیوں کرنے لگی۔

مینا اور کوا اس دن جو اپنے دوست لال مور سے ملنے آئے تو ان کو اس کی مصیبت کا پتہ چلا ۔ وہ دونوں اسے سمجھانے لگے کہ ایسی بیماریاں آتی رہتی ہیں ۔ گھبراؤ نہیں کوئی راہ نکل ہی آئے گی ۔

مینا جاکر کہیں سے دانے بٹور لائی۔ کوا ایک چپاتی اٹھا لایا ۔ پھر تینوں نے مزے سے بیٹھ کر کھانا کھایا۔ اورآپس میں ایسی ہنسی کی باتیں ہوئیں کہ لال مور اپنی مصیبت بھول گیا۔ جب تینوں کھا پی چکے اور لال مور کی ڈھارس بندھ گئی تب مینا اور کوا بیٹھ کر سوچنے لگے کہ کیا کیا جائے جو لال مور کے پر پھر سے نکل آئیں ۔

کوے نے کہا—"حکیم کی دوا سے پر نکل سکتے ہیں ۔ مگر اس کے گھر کا راستہ بہت مشکل ہے ۔ راہ میں دو بڑے بھیانک میدان پڑتے ہیں۔ پیلا میدان اور کالا میدان۔ پیلے میدان میں رات کو اولے پڑتے ہیں اور کالے میں دن کو ۔ اس لئے پیلا میدان دن بھر میں پار کرلینا ہوگا ۔ نہیں تو اولوں سے سر پھٹ جائیگا ۔ پھر بنا دم لئے رات بھر میں کالا میدان پار کرنا ہوگا ۔"

لال مور نے کہا—"میں پیدل بڑا تیز بھاگ سکتا ہوں ۔ پار کرلوں گا ۔"

کوے نے کہا—"ایک مشکل اور ہے ۔ زمین پر ایک بڑا بھاری سانپ رہتا ہے جو پیدل جانے والوں کو نگل جاتا ہے ۔"

لال مور نے کہا—"میں تو جاؤں گا۔ سانپ نگل جائے، نگل جائے ۔ مورنی کے بغیر جینے سے مر جانا اچھا ۔"

मैना बोली—"भाई कौवे, चलो हम दोनों भी लाल मोर के साथ साथ चलें. जहां सांप निकला मैं तुम को बता दूंगी. फिर दोनों मिल कर उसको मार डालेंगे."

तीनों ने दूसरे दिन चलने की ठान ली.

उसी दिन लाल मोर, कौवा और मैना भी हकीम के घर को चले. लाल मोर नीचे नीचे भाग रहा था और कौवा और मैना उसी के ऊपर ऊपर उड़ रहे थे.

सांप एक झाड़ी में बैठा था कि उसको लाल मोर नज़र आया. उसने कहा—

"अहा हा! कैसी अच्छी बोटी भागी जा रही है. मैं अभी इसको खाता हूं."

सांप लाल मोर पर झपटा. लेकिन उसको इसकी सख्त सज़ा मिली.

मैना ने टें टें करके कौवे को ख़बर दी कि सांप आ रहा है. कौवे ने पीछे से आकर एक चोंच सांप की दुम पर मारी. सांप जो पलटा कौवे की तरफ़ तो मैना ने पीछे से एक चोंच रसीद की उसकी दुम पर. फिर तो दोनों ने मिल कर सांप के इतनी चोंचें मारीं, इतनी चोंचें मारीं कि उसका कचूमर निकल गया. और वह मर गया.

सांप को मार कर फिर तीनों अपनी मंज़िल की तरफ़ चल खड़े हुए, और सूरज डूबते डूबते पीला मैदान पार हो गया और काला मैदान आ गया. एक तो मैदान काला, उस पर रात का घुप अंधेरा. लाल मोर घबरा कर कहने लगा—

"बहन मैना और भाई कौवे, मुझे तो रास्ता नहीं सूझता."

मैना बोली—"भैया! घबराओ नहीं. वह सामने जो रोशनी दिखाई दे रही है, यह मियां जुगनू का घर है. चलो उनसे कहें कि हमको रोशनी दिखा दें."

तीनों पहुंचे जुगनू के घर. उसने इन तीनों की बड़ी ख़ातिर की. चाय पिलाई, खाना खिलाया और फिर रोशनी दिखाने चल खड़े हुए.

काला मैदान सायं सायं कर रहा था. हर तरफ़ भयानक अंधेरा छाया हुआ था. उसमें आगे आगे मियां जुगनू रोशनी दिखा रहे थे. पीछे ज़मीन पर लाल मोर भाग रहा था और उसके ऊपर मैना और कौवा उड़ रहे थे.

चारों भागते रहे, भागते रहे. जैसे जैसे सुबह क़रीब आती जाती मैना और कौवा जुगनू से कहते—

"भाई जुगनू—और तेज़—और तेज़—नहीं तो अगर सुबह हो गई तो ओले पड़ने लगेंगे और हम लोगों का सर फट जायगा."

مینا بولی—"بھائی کوے، چلو ہم دونوں بھی لال مور کے ساتھ ساتھ چلیں. جہاں سانپ نکلا میں تم کو بتا دوں گی. پھر دونوں ملکر اس کو مار ڈالیں گے."

تینوں نے دوسرے دن چلنے کی ٹھان لی .

اسی دن لال مور، کوا اور مینا بھی حکیم کے گھر کو چلے . لال مور نیچے نیچے بھاگ رہا تھا اور کوا اور مینا اسی کے اوپر اوپر اڑ رہے تھے .

سانپ ایک جھاڑی میں بیٹھا تھا کہ اس کو لال مور نظر آیا . اس نے کہا—

"اہا ہا! کیسی اچھی بوٹی بھاگی جا رہی ہے. میں ابھی اس کو کھاتا ہوں."

سانپ لال مور پر جھپٹا. لیکن اس کو اس کی سخت سزا ملی .

مینا نے ٹیں ٹیں کرکے کوے کو خبر دی کہ سانپ آ رہا ہے . کوے نے پیچھے سے آکر ایک چونچ سانپ کی دم پر ماری . سانپ جو پلٹا کوے کی طرف تو مینا نے پیچھے سے ایک چونچ رسید کی اس کی دم پر. پھر دونوں نے مل کر سانپ کے اتنی چونچیں ماریں، اتنی چونچیں ماریں کہ اس کا کچومر نکل گیا . اور وہ مر گیا .

سانپ کو مار کر پھر تینوں اپنی منزل کی طرف چل کھڑے ہوئے . اور سورج ڈوبتے ڈوبتے پیلا میدان پار ہوگیا اور کالا میدان آ گیا . ایک تو میدان کالا، اس پر رات کا گھپ اندھیرا. لال مور گھبرا کر کہنے لگا—

"بہن مینا اور بھائی کوے، مجھے تو راستہ نہیں سوجھتا."

مینا بولی—"بھیا! گھبراؤ نہیں. وہ سامنے جو روشنی دکھائی دے رہی ہے، یہ میاں جگنو کا گھر ہے . چلو ان سے کہیں کہ ہم کو روشنی دکھائیں."

تینوں پہنچے جگنو کے گھر . اس نے ان تینوں کی بڑی خاطر کی . چائے پلائی، کھانا کھلایا اور پھر روشنی دکھانے چل کھڑے ہوئے .

کالا میدان سائیں سائیں کر رہا تھا. ہر طرف بھیانک اندھیرا چھایا ہوا تھا. اس میں آگے آگے میاں جگنو روشنی دکھا رہے تھے . پیچھے زمین پر لال مور بھاگ رہا تھا اور اس کے اوپر مینا اور کوا اڑ رہے تھے

چاروں بھاگتے رہے، بھاگتے رہے . جیسے جیسے صبح قریب آتی جاتی مینا اور کوا جگنو سے کہتے—

"بھائی جگنو—اور تیز—اور تیز—نہیں تو اگر صبح ہوگئی تو اولے پڑنے لگیں گے اور ہم لوگوں کا سر پھٹ جائے گا."

फिर जुगनू कहते—"हम थके जा रहे हैं. इतना तेज नहीं चल सकते."

मैना और कौवा कहते—"भाई ज़रा हिम्मत से काम लो और फिर हमारा काम बना जाता है."

सुबह होते होते काला मैदान भी पार हो गया.

लाल मोर ने हकीम के दरवाज़े पर पहुंच कर कहा—

"मैं आऊं, मैं आऊं."

अन्दर से हकीम साहब का कुत्ता निकला उसने कहा—

"भाग ! भाग ! मैं तुझे अन्दर नहीं घुसने दूंगा. तेरे पर नहीं हैं. तू कोढ़ी है."

यह कह कर कुत्ता भौंकने लगा—"भौं. भौं. भौं. भौं."

इतने में किसी ने ऊपर से कहा—

"भाई लाल मोर ! तुम कहां ?"

ऊपर एक पिंजरे में भाई तोते मिट्ठू मियां बने बैठे थे. लाल मोर ने उनको अपनी बिपता कह सुनाई. तोता बोला—

"भाई लाल मोर, घबराओ नहीं. मैं आदमी की बोली जानता हूं. अभी हकीम साहब से दवा दिलवाता हूं."

फिर तोते ने "दुत दुत" करके कुत्ते को भगा दिया. जब हकीम साहब बाहर आए तो तोते ने लाल मोर को दवा दिलवा दी. दवा खाते ही लाल मोर के पर और दुम निकल आई. जो पहले से ज़ियादा खूबसूरत और चमकदार हो गया.

लाल मोर के अच्छे होने की मैना, कौवे, जुगनू और तोते चारों ने बड़ी खुशी मनाई. फिर मैना, कौवा, जुगनू और लाल मोर तोते से छुट्टी कर जंगल आए.

मोरनी ने लाल मोर का जो सारा किस्सा सुना तो वह भी इस पर आशिक हो गई. दिल में चुहिया के इम्तहान की तारीफ करने लगी. जिस से पता चल गया कि कौन कौन मोर अच्छा था कौन बुरा.

फिर बड़ी धूम धाम से लाल मोर और मोरनी की शादी हो गई.

پھر جگنو کہتے—"ہم تھکے جا رہے ہیں. اتنا تیز نہیں چل سکتے."

مینا اور کوا کہتے—"بھائی ذرا ہمت سے کام لو اور ہمارا کام بنا جاتا ہے."

صبح ہوتے ہوتے کالا میدان بھی پار ہوگیا.

لال مور نے حکیم کے دروازے پر پہنچ کر کہا—

"میں آؤں. میں آؤں."

اندر سے حکیم صاحب کا کتا نکلا. اس نے کہا—

"بھاگ! بھاگ! میں تجھے اندر نہیں گھسنے دوں گا. تیرے پر نہیں ہیں. تو کوڑھی ہے."

یہ کہکر کتا بھونکنے لگا—"بھوں بھوں. بھوں بھوں."

اتنے میں کسی نے اوپر سے کہا—

"بھائی لال مور! تم کہاں؟"

اوپر ایک پنجرے میں بھائی طوطے مٹھو میاں بنے بیٹھے تھے. لال مور نے ان کو اپنی بپتا کہ سنائی. طوطا بولا—

"بھائی لال مور، گھبراؤ نہیں. میں آدمی کی بولی جانتا ہوں. ابھی حکیم صاحب سے دوا دلواتا ہوں."

پھر طوطے نے "دت دت" کرکے کتے کو بھگا دیا. جب حکیم صاحب باہر آئے تو طوطے نے لال مور کو دوا دلوادی. دوا کھاتے ہی لال مور کے پر اور دم نکل آئی. جو پہلے سے زیادہ خوبصورت اور چمکدار ہوگیا.

لال مور کے اچھے ہونے کی مینا، کوے، جگنو اور طوطے چاروں نے بڑی خوشی منائی. پھر مینا، کوا، جگنو اور لال مور طوطے سے چھٹی لےکر جنگل آئے.

مورنی نے لال مور کا سارا قصہ جو سنا تو وہ بھی اس پر عاشق ہوگئی. دل میں چوہیا کے امتحان کی تعریف کرنے لگی. جس سے صاف پتہ چل گیا کہ کون مور اچھا تھا کون برا.

پھر بڑی دھوم دھام سے لال مور اور مورنی کی شادی ہوگئی.

कानपुर

23-6-09

राधे,

कल की चिट्ठी में भी यही लिखा गया था कि सब काम अक्ल के मुताबिक करने चाहिये न कि मन के. और अगर कोई आदमी बराबर शुरू ही से यह आदत डाले

کان پور

23-6-09

رادھے،

کل کی چٹھی میں بھی یہی لکھا گیا تھا کہ سب کام عقل کے مطابق کرنے چاہئیں نہ کہ من کے. اور اگر کوئی آدمی برابر شروع ہی سے یہ عادت ڈالے

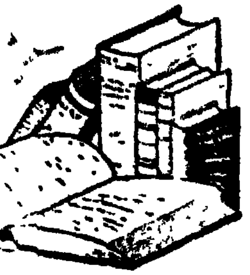
कि अपने मन का जो काम अक़्ल के मुताबिक़ हो वह तो करे और जो अक़्ल के ख़िलाफ़ हो वह न करे, तो फिर थोड़े अर्से में उस का मन संभल जाता है और अक़्ल के ख़िलाफ़ कोई बात करता ही नहीं. कुछ आदमी समझते हैं कि अक़्ल के मुताबिक़ काम करने के यह माने हैं कि न खेलें, न कूदें, यों ही चुपचाप बैठे रहें, या हमेशा हर वक़्त पढ़ते या और कोई काम करते रहें. मगर यह बिल्कुल ग़लत है. असल में सबसे बड़ी बात जो अक़्ल बतलाती है वह यह है कि दिल को हमेशा बिल्कुल और पूरा ख़ुश रखें. और कोई भी काम इस तरह न करें जिस से उदासी या सुस्ती पैदा हो, सब कुछ हंसी ख़ुशी से करना चाहिये. ऐसा होने ही न देना चाहिये कि कोई काम ज़बरदस्ती करना पड़े. लड़के लड़कियों और बच्चों को खेलना ज़रूर चाहिये और ख़ूब खेलना चाहिये. मगर साथ ही यह ख़याल रखना चाहिये कि ऐसा कोई खेल न खेलें जिस से नुक़सान हो या जिस को कोई बड़ा देख ले तो बुरा कहे. खेल बीसियों तरह के होते हैं मगर सबसे अच्छे खेल वह होते हैं जिन से कुछ अक़्ल आवे या नई बात मालूम हो और साथ ही दिल भी ख़ुश हो और हंसी भी ख़ूब आवे. राधे, अब के मुलतान आकर एक किताब में से देख कर दो एक खेल ऐसे सिखाऊंगा जिन से फ़ायदा का फ़ायदा हो और दिल का दिल ख़ुश हो. राधे, तुम ने अब तक एक भी चिट्ठी का जवाब नहीं दिया है, ख़बर नहीं तुम से बग़ैर जवाब दिये रहा क्यों कर जाता है. मेरे पास तो अगर किसी का जवाब देने वाला ख़त थोड़े दिन भी पड़ा रहे तो बड़ा ही बुरा मालूम होता है. अच्छा अब इस चिट्ठी के पहुँचते ही इन बातों का जवाब देना.

(1) अब तुम रोज़ उस्तानी से पढ़ती हो या नहीं. (2) क्या क्या चीज़ पढ़ती हो. (3) वह जो एक सफ़ा अंगरेज़ी, एक हिन्दी, एक रोमन का मैंने तुम्हें लिखने को बताया था वह तुम रोज़ लिखती हो या नहीं. (4) डायरी तुम रोज़ लिखती हो या नहीं. (5) वरज़िश रोज़ करनी शुरू की या नहीं. (6) हवा ख़ोरी को रोज़ जाती हो या कभी कभी और किस के साथ और कौन कौन जाया करते हैं.

کہ اپنے من کا جو کام عقل کے مطابق ہو وہ تو کرے اور جو عقل کے خلاف ہو وہ نہ کرے، تو پھر تھوڑے عرصے میں اُسکا من سنبھل جاتا ہے اور عقل کے خلاف کوئی بات کہتا ہی نہیں. کچھ آدمی سمجھتے ہیں کہ عقل کے مطابق کام کرنے کے یہ معنی ہیں کہ نہ کھیلیں، نہ کودیں، یوں ہی چپ چاپ بیٹھے رہیں، یا ہمیشہ ہر وقت پڑھتے یا کوئی اور کام کرتے رہیں. مگر یہ بالکل غلط ہے. اصل میں سب سے بڑی بات جو عقل بتلاتی ہے وہ یہ ہے کہ دل کو ہمیشہ بالکل اور پورا خوش رکھیں. اور کوئی بھی کام اِس طرح نہ کریں جس سے اُداسی یا سستی پیدا ہو، سب کچھ ہنسی خوشی سے کرنا چاہئے. ایسا ہونے ہی نہ دینا چاہئے کہ کوئی کام زبردستی کرنا پڑے. لڑکے لڑکیوں اور بچوں کو کھیلنا ضرور چاہئے اور خوب کھیلنا چاہئے. مگر ساتھ ہی یہ خیال رکھنا چاہئے کہ ایسا کوئی کھیل نہ کھیلیں جس سے نقصان ہو یا جس کو کوئی بڑا دیکھ لے تو برا کہے. کھیل بیسیوں طرح کے ہوتے ہیں مگر سب سے اچھے کھیل وہ ہوتے ہیں جن سے کچھ عقل آئے یا نئی بات معلوم ہو اور ساتھ ہی دل بھی خوش ہو اور ہنسی بھی خوب آئے. رادھے، اب کے ملتان جاکر ایک کتاب میں سے دیکھکر دو ایک کھیل ایسے لکھوں گا جن سے فائدہ کا فائدہ ہو اور دل کا دل خوش ہو. رادھے، تم نے اب تک ایک بھی چٹھی کا جواب نہیں دیا ہے، خبر نہیں تم سے بغیر جواب دیئے رہا کیونکر جاتا ہے. میرے پاس تو اگر کسی کا جواب دینے والا خط تھوڑے دن بھی پڑا رہے تو بڑا ہی برا معلوم ہوتا ہے. اچھا اب اِس چٹھی کے پہونچتے ہی ان باتوں کا جواب دینا.

(1) اب تم روز اُستانی سے پڑھتی ہو یا نہیں. (2) کیا کیا چیز پڑھتی ہو. (3) وہ جو ایک صفحہ انگریزی، ایک ہندی، ایک رومن کا میں نے تمہیں لکھنے کو بتایا تھا وہ تم روز لکھتی ہو یا نہیں. (4) ڈائری تم روز لکھتی ہو یا نہیں. (5) ورزش روز کرنی شروع کی یا نہیں. (6) ہوا خوری کو روز جاتی ہو یا کبھی کبھی اور کس کے ساتھ اور کون کون جایا کرتے ہیں.

नई किताबें



نئی کتابیں

कांगरेस सन्देश

हफ्ते वारी अखबार, सम्पादक, हर्ष देव मालवीय; निकालने वाले, दफ्तर कुल हिन्द कांगरेस कमेटी; 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सालाना चन्दा नौ रुपये.

पिछले चुनाव के ज़माने में अपने प्रचार के ख़ातिर कुल हिन्द कांगरेस कमेटी के नई दिल्ली वाले दफ्तर से 'कांगरेस सन्देश' नाम का हफ्ते वारी परचा शुरू हुआ. मई के आख़ीर तक इसके 31 नम्बर निकल चुके हैं. इस वक़्त हमारे सामने इसके तीन परचे 30, 31, 32 मौजूद हैं.

कांगरेस पांच साल पहले क्या थी ?—हिन्दुस्तान की महकूम जनता की अलमबरदार और आवाज़. कांगरेस आज क्या है ? उसी जनता की हाकिम. इसलिये 'कांगरेस सन्देश' इस वक़्त हाकिम कांगरेस के ही नुमायन्दे या दूत यानी मैसैंजर का काम कर सकता है. उससे यह उम्मीद करना कि वह जनता की नुमायन्दगी करे दिन में तारे देखने की उम्मीद करना है.

जब हम 'कांगरेस सन्देश' के सफ़े उलटते हैं तो हमारा यह ख़याल और भी पक्का हो जाता है. शुरू से आख़ीर तक किसी नम्बर को देख जाइये ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान में अगर कोई अक़्लमंद और देश के हमदर्द हैं तो सिर्फ़ कांगरेसी ओहदेदार और बाक़ी सब के सब—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, प्रजा पारटी या और कोई क्यों न हो, कम अक़्ल और देश के दुश्मन हैं. और इसके अनुसार केन्द्रीय सरकार हो या सूबे की सरकार हो, सब अपना काम बड़ी ख़ूबसूरती से अंजाम दे रही हैं, जिसके कारन देश में सुख ही सुख छाया हुआ है और शेर बकरी मानों एक ही घाट पानी पी रहे हैं.

अफ़सोस कि 'कांगरेस सन्देश' जनता से कोसों दूर हटा हुआ है. उसे यह नहीं ख़बर कि आज में मर्द, औरत और बच्चे रोटी पानी और काम को तरस रहे

کانگریس سندیش

ہفتہ واری اخبار' سمپادک ہرش دیو مالویہ؛ نکالنے والے' دفتر کل ہند کانگریس کمیٹی؛ 7 جنتر منتر روڈ' نئی دلی؛ لکھاوٹ ہندی: سالانہ چندہ 9 روپئے .

پچھلے چناو کے زمانے میں اپنے پرچار کے خاطر کل ہند کانگریس کمیٹی کے نئی دلی والے دفتر سے 'کانگریس سندیش' نام کا ہفتے واری پرچہ شروع ہوا . مئی کے آخیر تک اِس کے 31 نمبر نکل چکے ہیں . اس وقت ہمارے سامنے اِس کے تین پرچے 30' 31' 32 موجود ہیں .

کانگریس پانچ سال پہلے کیا تھی ؟—ہندستان کی محکوم جنتا کی علمبردار اور آواز . کانگریس آج کیا ہے ؟ اُسی جنتا کی حاکم . اِس لئے 'کانگریس سندیش' اِس وقت حاکم کانگریس کے ہی نمائندے یا دوت یعنی میسانجر کا کام کرسکتا ہے . اس سے یہ اُمید کرنا کہ وہ جنتا کی نمائندگی کرے دن میں تارے دیکھنے کی اُمید کرنا ہے .

جب ہم 'کانگریس سندیش' کے صفحے اُلٹتے ہیں تو ہمارا یہ خیال اور بھی پکا ہو جاتا ہے . شروع سے آخیر تک کسی نمبر کو دیکھ جائیے ایسا لگتا ہے کہ ہندستان میں اگر کوئی عقل مند اور دیش کے ہمدرد ہیں توصرف کانگریسی عہدےدار اور باقی سب کے سب—کمیونسٹ' سوشلسٹ' پرجا پارٹی یا اور کوئی کیوں نہ ہو' کم عقل ہیں اور دیش کے دشمن ہیں. اور اِس کے انوسار کیندری سرکار ہو یا صوبے کی سرکار' ہو سب اپنا کام بڑی خوبصورتی سے انجام دے رہی ہیں' جس کے کارن دیش میں سکھ ہی سکھ چھایا ہوا ہے اور شیر بکری مانو ایک ہی گھاٹ پانی پی رہے ہیں .

افسوس 'کانگریس سندیش' جنتا سے کوسوں دور ہٹا ہوا ہے . اُسے یہ نہیں خبر کہ آج میں مرد' عورت اور بچے روٹی پانی اور کام کو ترس رہے

है, पंजाब में जानवर चारा न पाने की वजह से रोज मर रहे हैं, बिहार में ईख की खेती के वास्ते पेड़ पर पेड़ कटते जाने से गांव वाले कह रहे हैं कि 'नील' की खेती की जगह 'मील' की खेती आ गई, राजस्थान में लोग शिकायत कर रहे हैं कि रेगिस्तान दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से बढ़ रहा है, वग़ैरा वग़ैरा.

इस वजह से हम 'कांगरेस सन्देश' को हिन्दुस्तान के उस ख़ुश क़िस्मत या (बदक़िस्मत ?) गिने चुने समाज का नुमाइन्दा सा मानते हैं जो या तो हुकूमत में रह कर या बड़े बड़े कारख़ाने चला कर और किसी ना जायज़ तरीक़े से अपनी निजी दौलत में बढ़ौती कर कर देश के ग़रीबों को लगातार चूस रहा है. इसलिये 'कांगरेस सन्देश' के दिल में जनता की भावना की न कोई क़दर हो सकती है और न जनता के लिये कोई लिहाज़.

काग़ज़ तस्वीरों और छपाई के लिहाज़ से तो ख़ैर कोई कसर रहने की बात ही नहीं है. क्या हम उम्मीद करें कि 'कांगरेस सन्देश' कुछ करवट बदलेगा और जनता और हुकूमत के बीच जो आज मोटी दीवार बनती जा रही है उसको तोड़ने में कंधा लगायेगा ?

—सुरेश रामभाई

ہیں' پنجاب میں جانور چارا نہ پانے کی وجہ سے روز مر رہے ہیں' بہار میں ایکھ کی کھیتی کے واسطے پیڑ پر پیڑ کٹتے جانے سے گاؤں والے کہہ رہے ہیں کہ 'نیل' کی کھیتی کی جگہ 'مل' کی کھیتی آ گئی' راجستھان میں لوگ شکایت کر رہے ہیں کہ ریگستان دن دونی رات چوگنی رفتار سے بڑھ رہا ہے' وغیرہ وغیرہ.

اس وجہ سے ہم 'کانگریس سندیش' کو ہندستان کے اُس خوش قسمت یا (بدقسمت ؟) گنے چنے سماج کا نمائندہ سا مانتے ہیں جو یا تو حکومت میں رہ کر یا بڑے بڑے کارخانے چلا کر اور کسی نا جائز طریقے سے اپنی نجی دولت میں بڑھوتی کر کر دیش کے غریبوں کو لگاتار چوس رہا ہے. اس لئے 'کانگریس سندیش' کے دل میں جنتا کی بھاونا کی نہ کوئی قدر ہوسکتی ہے اور نہ جنتا کے لئے کوئی لحاظ.

کاغذ تصویروں اور چھپائی کے لحاظ سے تو خیر کوئی کسر رہنے کی بات ہی نہیں ہے. کیا ہم اُمید کریں کہ 'کانگریس سندیش' کچھ کروٹ بدلے گا اور جنتا اور حکومت کے بیچ جو آج موٹی دیوار بنتی جا رہی ہے اُس کو توڑنے میں کندھا لگائے گا ؟

—سریش رام بھائی

उत्तर की दीवारें

लेखक—काका कालेलकर; अनुवादक—शकुन्तला देवी, निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; सफ़े 84; लिखावट हिन्दी; दाम चौदह आने.

सोकर उठे खाया पिया, काम किया, फिर सो गये, ज़ियादातर शख़्स इसी को ज़िन्दगी का मक़सद समझते हैं. लेकिन ऐसे लोग भी इस दुनिया में मिलेंगे (जिनकी तादाद कम होगी) जिनकी नज़र क़ुदरत की दूसरी चीज़ों पर जैसे पेड़ पौधे, नदी, नाले, टीले पहाड़, जंगल वग़ैरा और तरह तरह के कीड़े, चिड़ियां और जानवरों की तरफ़ भी जाती है. चिड़ियों को रोज़ सब आदमी देखते हैं. लेकिन जब चिड़ियों का चहचहाना सुनते हैं तो यह समझ नहीं पाते और समझने की कोशिश भी नहीं करते कि यह रोती या हँसती हैं या किसी से बात करती हैं. "उत्तर की दीवारें" के लेखक ने इन सबकी जांच बारीकी से की है. 1922 में प्रकृति प्रेमी और पंछी-स्नेही लेखक जब जेल में थे तब उन्हें फ़िकर हुई कि जेल में प्रकृति के नज़ारे तो नहीं मिलेंगे. लेकिन उस छोटी दुनिया के बाशिन्दे कीड़े मकोड़े, चिड़ियां और जानवरों ने उन्हें तसल्ली दी. खाते पीते वक़्त, नहाते-धहलते वक़्त, दातून तोड़ते वक़्त और सोने की तैयारी करते वक़्त, जिन चिड़ियों, जानवरों और

اُتر کی دیواریں

لیکھک—کاکا کالیلکر' انوادک—شکنتلا دیوی'

نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد' صفحے 84؛ لکھاوٹ ہندی؛ دام چودہ آنے.

سوکر اُٹھے کھایا پیا' کام کیا' پھر سو گئے' زیادہ تر شخص اسی کو زندگی کا مقصد سمجھتے ہیں. لیکن ایسے لوگ بھی اس دنیا میں ملیں گے (جن کی تعداد کم ہوگی) جن کی نظر قدرت کی دوسری چیزوں پر جیسے پیڑ پودھے' ندی نالے' ٹیلے' پہاڑ' جنگل وغیرہ اور طرح طرح کے کیڑے' چڑیاں' اور جانوروں کی طرف بھی جاتی ہے. چڑیوں کو روز سب آدمی دیکھتے ہیں. لیکن جب چڑیوں کا چہچہانا سنتے ہیں تو یہ سمجھ نہیں پاتے اور سمجھنے کی کوشش بھی نہیں کرتے کہ یہ روتی یا ہنستی ہیں یا کسی سے بات کرتی ہیں. "اُتر کی دیواریں" کے لیکھک نے ان سب کی جانچ باریکی سے کی ہے. 1922 میں پرکرتی پریمی اور پنچھی سنیہی لیکھک جب جیل میں تھے تب انہیں فکر ہوئی کہ جیل میں پرکرتی نظارے تو نہیں ملیں گے. لیکن اُس چھوٹی دنیا کے باشندے کیڑے مکوڑے' چڑیاں اور جانوروں نے انہیں تسلی دی. کھاتے پیتے وقت' نہاتے دھلتے وقت' داتون توڑتے وقت اور سونے کی تیاری کرتے وقت جن چڑیوں' جانوروں اور

कीड़ों से लेखक का साबका पड़ा उसका बयान विद्वान लेखक ने आसान मिसालों के ज़रिये, सुन्दर ढंग से और व्यंग भरी ज़बान में किया है. कहीं कहीं सुन्दर सुन्दर मुहावरों का प्रयोग करके शैली में नई जान पैदा की है.

इस किताब में लेखक ने गिलहरी, बन्दर, कबूतर, कौवा, चील, तोता, छिपकली, खटमल, चींटी और तिलचट्टों का ज़िकर किया है. पर लेखक की मुहब्बत गिलहरी के साथ ज़ियादा मालूम होती है. लेखक के खाते वक़्त गिलहरी उनके सामने कैसे बैठती थी, उनके फेंके हुए रोटी के टुकड़े को कैसे खाती थी, कौवों और दूसरी चिड़ियों से बचाकर कैसे गिलहरी को लेखक खिलाते थे और एक दिन कैसे गिलहरी के बच्चे को उसकी मां के पास पहुंचा आये थे, वग़ैरा बातों का ज़िकर बढ़िया ढंग से किया है.

ऊपर ज़िकर किये हुये जानवरों के स्वभाव का बयान अच्छे ढंग से किया गया है. कौन कीड़े या चिड़िया कितना मूर्ख या अक़्लमंद है, कौन सावधान या असावधान है इन बातों की भी जांच लेखक ने बारीकी से की है. चींटियों और दूसरी जीव जन्तुओं के स्वभाव का बयान करते समय इन्सान के स्वभाव के साथ उनके स्वभाव की तुलना व्यंग पूर्ण तरीक़े से की है.

राजनैतिक बातों को लेकर भी ख़ूब मिसालें दी गई हैं. नमूने देखिये (1) कौवे गिलहरियों की लड़ाई अंगरेज़ों अरबों के लड़ाई की तरह हैं; अगर अरबों के पास हवाई जहाज़ होते और गिलहरियों के पास पंख होते तो इन दोनों बड़ी लड़ाइयों का रूप ही दूसरा होता. (2) स्पेनिश आरमेडा या मुग़ल फ़ौज की तरह चील धीरे धीरे चलती है, जल्दी दिशा बदलना उसे आता ही नहीं, जब कि कौवा मराठा बारगीरों की तरह तेज़ी से दौड़ सकता है और चाहे जैसे हमला हो अपना बचाव कर सकता है.

जेल की ज़िन्दगी से इस तरह हिल मिल जाने पर कौन शख़्स जेल ख़ाने से बाहर जाने की बात सोचेगा? जब जेल का नियम लेखक को बाहर जाने को मजबूर करने लगा, तो ससुराल जाते समय अपने पाले हुए जानवर और अपने हाथों पानी सींचे हुए पेड़ पौधों को छोड़ते वक़्त शकुंतला को जो सदमा पहुंचा उस से कम सदमा लेखक को नहीं पहुंचा होगा.

इस रचना में न तो उपदेश है, न प्रचार है, केवल अनुभव का, सुख दुख का और कल्पनाओं का आदान प्रदान है और ख़ासकर ख़ुश मिज़ाजी है. इसलिये यह किताब छोटे बड़े, जवान बूढ़े, बच्चे सभी को एक सा रस देगी.

—एम. सुब्रह्मण्यम

(तामिलनाड हिन्दी प्रचार

सभा, तिरुच्चिरापल्ली)

کیڑوں سے لیکھک کا سابقہ پڑا اُسکا بیان ودوان لیکھک نے آسان مثالوں کے ذریعے، سندر ڈھنگ سے اور ویَنگ بھری زبان میں کیا ہے۔ کہیں کہیں سندر سندر محاوروں کا پریوگ کر کے شیلی میں نئی جان پیدا کی ہے۔

اِس کتاب میں لیکھک نے گلہری، بندر، کبوتر، کوا، چیل، طوطا، چھپکلی، کھٹمل، چیونٹی اور تلچٹوں کا ذکر کیا ہے۔ پر لیکھک کی محبت گلہری کے ساتھ زیادہ معلوم ہوتی ہے۔ لیکھک کے کھاتے وقت گلہری اُن کے سامنے کیسے بیٹھتی تھی، اُن کے پھینکے ہوئے روٹی کے ٹکڑے کو کیسے کھاتی تھی، کوؤں اور دوسری چڑیوں سے بچاکر کیسے گلہری کو لیکھک کھلاتے تھے اور ایک دن کیسے گلہری کے بچے کو اُس کی ماں کے پاس پہنچا آئے تھے، وغیرہ باتوں کا ذکر بڑھیا ڈھنگ سے کیا ہے۔

اوپر ذکر کئے ہوئے جانوروں کے سوبھاؤ کا بیان اچھے ڈھنگ سے کیا گیا ہے۔ کون کیڑے یا چڑیا کتنا مورکھ یا عقل مند ہے، کون ساودھان یا اساودھان ہے اِن باتوں کی بھی جانچ لیکھک نے باریکی سے کی ہے۔ چیونٹیوں اور دوسری جیو جنتوؤں کے سوبھاؤ کا بیان کرتے سمے اِنسان کے سوبھاؤ کے ساتھ اُن کے سوبھاؤ کی تلنا ویَنگ پورن طریقے سے کی ہے۔

راج نیتک باتوں کو لیکر بھی خوب مثالیں دی گئی ہیں۔ نمونے دیکھئے (1) کوے گلہریوں کی لڑائی انگریزوں عربوں کے لڑائی کی طرح ہیں: اگر عربوں کے پاس ہوائی جہاز ہوتے اور گلہریوں کے پاس پنکھ ہوتے تو اِن دونوں بڑی لڑائیوں کا روپ ہی دوسرا ہوتا۔ (2) اسپینش آرمیڈا یا مغل فوج کی طرح چیل دھیرے دھیرے چلتی ہے، جلدی دشا بدلنا اُسے آتا ہی نہیں، جب کہ کوا مراٹھا بارگیروں کی طرح تیزی سے دوڑ سکتا ہے اور چاہے جیسا حملہ ہو اپنا بچاؤ کر سکتا ہے۔

جیل کی زندگی سے اِس طرح ہل مل جانے پر کون شخص جیل خانے سے باہر جانے کو سوچیگا؟ جب جیل کا نیم لیکھک کو باہر جانے کو مجبور کرنے لگا، تب سسرال جاتے سمے اپنے پالے ہوئے جانور اور اپنے ہاتھوں پانی سینچے ہوئے پیڑ پودھوں کو چھوڑتے وقت شکنتلا کو جو صدمہ پہنچا اُس سے کم صدمہ لیکھک کو نہیں پہنچا ہوگا۔

اِس رچنا میں نہ تو اُپدیش ہے، نہ پرچار ہے، کیول انوبھو کا، سکھ دکھ کا اور کلپناؤں کا آدان پردان ہے اور خاص کر خوش مزاجی ہے۔ اِس لئے یہ کتاب چھوٹے بڑے، جوان بوڑھے، بچے سبھی کو ایک سا رس دے گی۔

—ایم سبرہ منیم

(تامل ناڈ ہندی پرچار

[illegible]

कलकत्ते का चमत्कार

लेखक—मनु बहन गांधी; निकालने वाले—नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; पहला एडीशन; लिखावट—हिन्दी; सफ़े 132, दाम एक रुपया चार आना.

कलकत्ते की जलती हुई आग को बापू ने सितम्बर 1947 में किस तरह ठंडा किया उसकी याद इतिहास के पन्ने हमेशा दिलाते रहेंगे. इस किताब में उसी की कहानी है, दर्दनाक कहानी है जिसका पन्ना रोंगटे खड़े कर देने वाला है.

मनु बहन गांधी गांधी जी के पास दिसम्बर 1946 से उनके आखरी दम तक साथ रहीं. इस किताब में उन्होंने पहली अगस्त 1947 से लेकर 8 सितम्बर तक की अपनी डायरी पेश की है. खास बात यह है कि इस डायरी को बापू रोज पढ़ लेते थे और साथ ही साथ अपनी सही बना देते थे. इसलिये हम इस किताब को बापू की एक छोटी मोटी डायरी कह सकते हैं अलावा इसके यह कहानी है, इतिहास है, धर्मकथा है.

इस किताब को पढ़ कर हमारा दिल भर आता है. 15 अगस्त 1947 को जहां हिन्दुस्तान खुशियां मनाता था, बापू उपवास और प्रार्थना करते थे. उन्होंने उस दिन कहा—"आज हमारी जिम्मेदारी कितनी बढ़ गई है जिस पर हम शान्ति भाव से मनन करें. चरखे ने यह आजादी दिलवाई है उसे हमें नहीं भूलना चाहिये और उपवास करने से हमारा शरीर शुद्ध होता है. इस तरह हम शुद्ध होकर ईश्वर से प्रार्थना करें कि हम आजादी के लायक बनें." कौन नहीं जानता कि आज चरखे को सरकार तो भूल ही गई है और जनता भी भूलती मालूम पड़ती है. गांधी जी के निजी जीवन, देश के राजकाजी हालात, हिन्दू मुस्लिम समस्या वगैरा बातों में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई बहन के लिये यह किताब अनमोल हीरा साबित होगी. मनु बहन को हम इस चमत्कार भरी किताब पर दिल से बधाई देते हैं.

इस किताब का जितना प्रचार हो थोड़ा है.

—चेतन कुमार शर्मा

चुनौती (भंगी का बेटा)

लेखक—तकषी शिवशंकर पिल्लई; अनुवादक—श्रीमती भारती विद्यार्थी; निकालने वाले—आत्मा राम एण्ड संन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सफ़े 135; दाम ढाई रुपये; पहली बार 1952.

'तूती चूडे मकन' मलयालम भाषा का जो मलाबार, कोचीन और ट्रावनकोर के रहने वालों की भाषा है एक

کلکتے کا چمتکار

لیکھک—منو بہن گاندھی؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ پہلا ایڈیشن؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے 132، دام ایک روپیہ چار آنہ۔

کلکتے کی جلتی ہوئی آگ کو باپو نے ستمبر 1947 میں کس طرح ٹھنڈا کیا اُس کی یاد اتہاس کے پنے ہمیشہ دلاتے رہیں گے۔ اِس کتاب میں اُسی کی کہانی ہے، دردناک کہانی ہے جس کا پنا رونگٹے کھڑے کر دینے والا ہے۔

منو بہن گاندھی گاندھی جی کے پاس دسمبر 1946 سے اُن کے آخری دم تک ساتھ رہیں۔ اِس کتاب میں انہوں نے پہلی اگست 1947 سے لے کر 8 ستمبر تک کی اپنی ڈائری پیش کی ہے۔ خاص بات یہ ہے کہ اِس ڈائری کو باپو روز پڑھ لیتے تھے اور ساتھ ہی ساتھ اپنی صحیح بنا دیتے تھے۔ اِس لئے ہم اِس کتاب کو باپو کی ایک چھوٹی موٹی ڈائری کہہ سکتے ہیں۔ علاوہ اِس کے یہ کہانی ہے، اتہاس ہے، دھرم کتھا ہے۔

اِس کتاب کو پڑھ کر ہمارا دل بھر آتا ہے۔ 15 اگست 1947 کو جہاں ہندوستان خوشیاں مناتا تھا، باپو اپواس اور پرارتھنا کرتے تھے۔ انہوں نے اُس دن کہا—"آج ہماری ذمہ داری کتنی بڑھ گئی ہے جس پر ہم شانتی بھاؤ سے منن کریں۔ چرخے نے یہ آزادی دلوائی ہے اُسے ہمیں نہیں بھولنا چاہئے اور اُپواس کرنے سے ہمارا شریر شدھ ہوتا ہے۔ اِس طرح ہم شدھ ہو کر ایشور سے پرارتھنا کریں کہ ہم آزادی کے لائق بنیں۔" کون نہیں جانتا کہ آج چرخے کو سرکار تو بھول ہی گئی ہے اور جنتا بھی بھولتی معلوم ہوتی ہے۔ گاندھی جی کے نجی جیون، دیش کے راج کاجی حالات، ہندو مسلم سمسیا وغیرہ باتوں میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کے لئے یہ کتاب انمول ہیرا ثابت ہوگی۔ منو بہن کو ہم اِس چمتکار بھری کتاب پر دل سے بدھائی دیتے ہیں۔

اِس کتاب کا جتنا پرچار ہو تھوڑا ہے۔

—چیتن کمار شرما

چنوتی (بھنگی کا بیٹا)

لیکھک—تکشی شیو شنکر پلئی؛ انوادک—شریمتی بھارتی ودیارتھی؛ نکالنے والے—آتما رام اینڈ سنس، کشمیری گیٹ، نئی دلی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 135؛ دام ڈھائی روپے؛ پہلی بار 1952۔

'توٹی چوڑے مکن' ملیالم بھاشا کا جو مالابار، کوچین اور ٹراونکور کے رہنے والوں کی بھاشا ہے ایک

लाजवाब और मशहूर नावेल है. इसके अन्दर एक भंगी ख़ानदान की तीन पीढ़ियों की ज़िन्दगी की झलक दी गई है. दादा, रबी पुराने ख़याल का बूढ़ा भंगी है जिसे दूसरे की जूठन बरकत मालूम होती है. उसका लड़का चूरन एक समझदार, होशियार और मेहनती आदमी है, जिस को यह सवाल परेशान करता है कि भंगी का बेटा भंगी ही क्यों हो, भंगी ही क्यों माना जाय और दूसरे बेटों की तरह समाज उसे सब सहूलियतें क्यों नहीं देता. रबी के मरने के बाद चूरन उसका क़र्ज़ा अदा करके अपनी गाढ़ी कमाई से ख़ासी आमदनी कर लेता है और फिर सजनी से ब्याह करके अपना घर बसाता है. पर इस ख़याल से कि वह भंगी है तो है उसका बेटा मोहन भंगी क्यों समझा जाय. भंगी चूरन जैसे बाप ने मोहन को साथ बैठा कर उसे न कभी खाना खिलाया और न कभी अपनी गोदी में लिया. पर मां कब तक यह मोहन से छिपा सकती थी कि उसका बाप भंगी है. आख़िर कार चूरन ने वह काम छोड़ दिया और श्मशान में चौकीदारी करने लगा, और थोड़े दिन बाद हैज़े में मोहन के मां बाप गुज़र गये. लेकिन मोहन इतना जान गया था कि उसके बाप ने दो बार भंगियों का संगठन कराने की कोशिश की थी—एक बार तो वह म्युनिस्पल्टी के ओहदेदारों के चक्कर में आकर अपने रास्ते से भटक गया और दूसरी बार भी वह कामयाब न हो सका—लेकिन मोहन ख़ुश क़िस्मत निकला कि श्रम जीवियों के जुलूस की अगुवाई करते करते हकूमत की गोली खा कर शहीद हो गया और हमेशा के लिये बता गया कि भंगी का बेटा भी साफ़ सुथरा रह कर सेवा के ज़रिये समाज में उसी ऊंचे दर्जे को पहुँच सकता है जिस तरह किसी और का बेटा.

थोड़े से लफ़्ज़ों में इस नावेल की यही कहानी है, यही इस नावेल की समाज को 'चुनौती' है.

बहन भारती विद्यार्थी ने ऐसा लाजवाब अनुवाद किया है कि कुछ कहते नहीं बनता. पढ़ने बैठिये तो बिना ख़त्म किये उठने को दिल नहीं चाहता. हम बहन भारती विद्यार्थी को उनकी इस सेवा के लिये बधाई देते हैं और यक़ीन करते हैं कि मलयालम और हिन्दी के पढ़ने वालों को एक दूसरे के नज़दीक लाने में वह ज़बरदस्त सहारा साबित होगी.

हमें यह भी उम्मीद है कि हिन्दी के आज के कहानी लेखक और उपन्यास कार इस "चुनौती" को देख कर अपना ध्यान इन लाखों करोड़ों ग़रीबों और नीच समझे जाने वालों की तरफ़ लगायेंगे जिनका नाम लेवा और पानी देवा भी कोई नहीं मिलता.

—सुरेश रामभाई

لاجواب اور مشہور ناول ہے ۔ اس کے اندر ایک بھنگی خاندان کے تین پیڑھیوں کی زندگی کی جھلک دی گئی ہے. دادا' ربی' پرانے خیال کا بوڑھا بھنگی ہے جسے دوسرے کی جوٹھن برکت معلوم ہوتی ہے. اُس کا لڑکا چورن ایک سمجھدار' ہوشیار اور محنتی آدمی ہے' جس کو یہ سوال پریشان کرتا ہے کہ بھنگی کا بیٹا بھنگی ہی کیوں ہو' بھنگی ہی کیوں مانا جائے اور دوسرے بیٹوں کی طرح اُسے سماج سب سہولیتیں کیوں نہیں دیتا. ربی کے مرنے کے بعد چورن اُس کا قرضہ ادا کرکے اپنی گاڑھی کمائی سے خاصی آمدنی کرلیتا ہے اور پھر سجنی سے بیاہ کر کے اپنا گھر بساتا ہے ۔ پر اِس خیال سے کہ وہ بھنگی ہے تو ہے اُس کا بیٹا موہن بھنگی کیوں سمجھا جائے. بھنگی چورن جیسے باپ نے موہن کو ساتھ بیٹھا کر اُسے نہ کبھی کھانا کھلایا اور نہ کبھی اپنی گودی میں لیا. پر ماں کب تک یہ موہن سے چھپا سکتی تھی کہ اُس کا باپ بھنگی ہے. آخر کار چورن نے وہ کام چھوڑ دیا اور شمشان میں چوکیداری کرنے لگا' اور تھوڑے دن بعد ہیضے میں موہن کے ماں باپ گذرگئے. لیکن موہن اتنا جان گیا تھا کہ اُس کے باپ نے دو بار بھنگیوں کا سنگٹھن کرانے کی کوشش کی تھی—ایک بار تو وہ میونسپلٹی کے عہدے داروں کے چکر میں آکر اپنے راستے سے بھٹک گیا اور دوسری بار بھی وہ کامیاب نہ ہو سکا—لیکن موہن خوش قسمت نکلا کہ شرم جیوں کے جلوس کی اگوائی کرتے کرتے حکومت کی گولی کھا کر شہید ہوگیا اور ہمیشہ کے لئے بتا گیا کہ بھنگی کا بیٹا بھی صاف ستھرا رہ کر سیوا کے ذریعے سماج میں اُسی اونچے درجے کو پہنچ سکتا ہے جس طرح کسی اور کا بیٹا.

تھوڑے سے لفظوں میں اِس ناول کی یہی کہانی ہے' یہی اس ناول کی سماج کو 'چنوتی' ہے.

بہن بھارتی ودیارتھی نے ایسا لاجواب انوواد کیا ہے کہ کچھ کہتے نہیں بنتا ۔ پڑھنے بیٹھئے تو بنا ختم کئے اُٹھنے کو دل نہیں چاہتا ۔ ہم بہن بھارتی ودیارتھی کو اُن کی اس سیوا کے لئے بدھائی دیتے ہیں اور یقین کرتے ہیں کہ ملیالم اور ہندی کے پڑھنے والوں کو ایک دوسرے کے نزدیک لانے میں وہ زبردست سہارا ثابت ہوگی ۔

ہمیں یہ بھی اُمید ہے کہ ہندی کے آج کے کہانی لیکھک اور اُپنیاس کار اِس "چنوتی" کو دیکھکر اپنا دھیان اِن لاکھوں کروڑوں غریبوں اور نیچ سمجھے جانے والوں کی طرف لگائیں گے جن کا نام لیوا اور پانی دیوا بھی کوئی نہیں ملتا.

—سریش رامبھائی

नवीन-प्राकृतिक चिकित्सा

लेखक, डाक्टर हीरा लाल; निकालने वाले, प्राकृतिक जीवन समिति; 32/97 बगिया मनीराम, कानपुर; सफ़े 228, लिखावट हिन्दी, दूसरा एडीशन, दाम दो रुपये चौदह आने.

ख़ुशी की बात है कि धीरे-धीरे पढ़े लिखों के दिल में भी क़ुदरती इलाज के लिये जगह बनती जा रही है. एलोपैथिक और दूसरे इलाजों में काफ़ी रुपया फूंकने के बाद ही उनका ध्यान क़ुदरती इलाज की तरफ़ जाने लगा है. इसलिये अब सख़्त ज़रूरत इस बात की है कि क़ुदरती इलाज या प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में सही जानकारी देने वाली किताबें हमारे सामने आएं और इसके लिये अच्छा से अच्छा वातावरन तैयार हो.

हीरालाल जी ने पिछले क़रीब दस साल से अपना जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के काम के लिये सौंप रखा है. इस इलाज के नामी जानकारों, अच्छे सेन्टरों के साथ उन्होंने समय बिताया है और देश के क़रीब क़रीब सभी अच्छे क़ुदरती इलाज सेन्टर देखे हैं. उनका अपना अनुभव तो इस दायरे में दिन-दिन बढ़ता जाता है सो अलग. इसलिये उनके तजुर्बे के बल पर लिखी हुई उनकी इस किताब का हम स्वागत करते हैं

यह किताब शुरू से आख़ीर तक अमली या प्रेक्टीकल बातों से भरी है. तरह तरह के नहान, मिट्टी का इस्तेमाल, व्यायाम या कसरत, तरह तरह के एनीमा, तरह तरह की ख़ुराकें और उनके गुन व इस्तेमाल इस में भरे पड़े हैं. मिट्टी, पानी, हवा, धूप, उपवास वग़ैरा के ज़रिये इलाज करने के ढंग भी बताए हैं. छोटी बड़ी, ख़तरनाक, और लाइलाज बीमारियों का इलाज भी कैसे करें ख़ूबी के साथ दिखाया है. किताब के आख़ीर में जो आंकड़े या नक़्शे दी हैं उनसे इस किताब का महत्व और भी बढ़ जाता है. हर बात मुनासिब तस्वीरों के ज़रिये समझाई गई है जिससे अमल करने में किसी को कोई दिक़्क़त न हो.

किताब के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि इसके सिलसिले और तरतीब में अभी बहुत काफ़ी गुंजायश है. शुरू में जो 'प्रारम्भिक ज्ञान' दिया है उसमें भी ज़ियादा तफ़सील की ज़रूरत है. किताब के आख़ीर में अगर एक क्या कहाँ (Index) हो तो पढ़ने वाले को और भी आसानी हो. हमें उम्मीद है कि अगले एडीशन में इन बातों के साथ-साथ किताब की छपाई और ब्लाक की सफ़ाई पर भी ध्यान रखा जायेगा. किताब का दाम भी अगर कुछ कम हो सके तो आम लोगों के पास पहुँचने में आसानी होगी.

डाक्टर हीरा लाल को हम इस किताब पर बधाई देते हैं. हमें उम्मीद है कि वह अपने तजुर्बों में और कामयाब होंगे और उनसे हिन्दी संसार को लगातार वाक़िफ़ कराते रहेंगे.

—सुरेश रामभाई

نوین پراکرتک چکتسا

لیکھک، ڈاکٹر ھیرا لال؛ نکالنے والے، پراکرتک جیون سمتی؛ 32/97 بگیا منی رام، کانپور؛ صفحے 228، لکھاوٹ ھندی، دوسرا ایڈیشن، دام دو روپئے چودہ آنے ۔

خوشی کی بات ہے کہ دھیرے دھیرے پڑھے لکھوں کے دل میں بھی قدرتی علاج کے لئے جگہ بنتی جا رہی ہے۔ ایلوپیتھک اور دوسرے علاجوں میں کافی روپیہ پھونکنے کے بعد ہی اُن کا دھیان قدرتی علاج کی طرف جانے لگا ہے ۔ اِس لئے اب سخت ضرورت اِس بات کی ہے کہ قدرتی علاج یا پراکرتک چکتسا کے بارے میں صحیح جانکاری دینے والی کتابیں ہمارے سامنے آئیں اور اِس کے لئے اچھا سے اچھا واتاورن تیار ہو ۔

ھیرا لال جی نے پچھلے قریب دس سال سے اپنا جیون پراکرتک چکتسا کے کام کے لئے سونپ رکھا ہے ۔ اِس علاج کے نامی جانکاروں، اچھے سینٹروں کے ساتھ اُنہوں نے سمے بتایا ہے اور دیش کے قریب قریب سبھی اچھے قدرتی علاج سینٹر دیکھے ہیں ۔ ان کا اپنا انوبھو تو اِس دائرے میں دن دن بڑھتا جاتا ہے سو الگ ۔ اِسلئے اُن کے تجربے کے بل پر لکھی ہوئی ان کی اِس کتاب کا ہم سواگت کرتے ہیں ۔

یہ کتاب شروع سے آخیر تک عملی یا پریکٹیکل باتوں سے بھری ہے ۔ طرح طرح کے نہان، مٹی کا استعمال، ویایام یا کثرت، طرح طرح کے اینیما، طرح طرح کی خوراکیں اور ان کے گن و استعمال اِس میں بھرے پڑے ہیں ۔ مٹی، پانی، ہوا، دھوپ، اُپواس وغیرہ کے ذریعے علاج کرنے کے ڈھنگ بھی بتائے ہیں ۔ چھوٹی بڑی، خطرناک، اور لاعلاج بیماریوں کا علاج بھی کیسے کریں خوبی کے ساتھ دکھایا ہے ۔ کتاب کے آخیر میں جو آنکڑے یا نقشے دئے ہیں اُن سے اِس کتاب کا مہتو اور بھی بڑھ جاتا ہے ۔ ہر بات مناسب تصویروں کے ذریعے سمجھائی گئی ہے جس سے عمل کرنے میں کسی کو کوئی دقت نہ ہو ۔

کتاب کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہیں گے کہ اِس کے سلسلے اور ترتیب میں ابھی بہت کافی گنجائش ہے ۔ شروع میں جو 'پرارمبھک گیان' دیا ہے ۔ اُس میں بھی زیادہ تفصیل کی ضرورت ہے ۔ کتاب کے آخیر میں اگر ایک کیا کہاں (Index) ہو تو پڑھنے والے کو اور بھی آسانی ہو ۔ ہمیں اُمید ہے کہ اگلے ایڈیشن میں ان باتوں کے ساتھ ساتھ کتاب کی چھپائی اور بلاک کی صفائی پر بھی دھیان رکھا جائے گا ۔ کتاب کا دام بھی اگر کچھ کم ہو سکے تو عام لوگوں کے پاس پہنچنے میں آسانی ہوگی ۔

ڈاکٹر ھیرا لال کو ہم اِس کتاب پر بدھائی دیتے ہیں ۔ ہمیں اُمید ہے کہ وہ اپنے تجربوں میں اور کامیاب ہوں گے اور اُن سے ھندی سنسار کو لگاتار واقف کراتے رہیں گے ۔

—سریش رامبھائی

हिन्दी

1. हमारे आराध्य—लेखक बनारसी दास चतुर्वेदी; प्रकाशक, अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भारतीय ज्ञान पीठ, पोस्ट बाक्स नम्बर 48, बनारस; पहला एडीशन, सफ़े 260; दाम तीन रुपये, मार्च 1952.

2. भारतीय ज्योतिष—लेखक नेमी चन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य; प्रकाशक—अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भारतीय ज्ञान पीठ, पोस्ट बाक्स नम्बर 48, बनारस; पहला एडीशन; सफ़े 598; अप्रैल 1952; दाम 6 रुपये.

3. अहिंसा वाणी—सम्पादक कामता प्रसाद जैन; छापने वाले, दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लिमिटेड, जीरो रोड, इलाहाबाद; सफ़े 53; दाम दस आने.

4. तारा—लेखक ई. कज़ाकेविच; अनुवादक; रनबीर सक्सेना; निकालने वाले-जन साहित्य सदन, 23-24 जेल रोड, इन्दौर; सफ़े 120; दाम दो रुपये.

5. बापू राज पत्रिका—सम्पादिका मीरा बहिन; पशु लोक, डाक खाना रिशी केश, देहरादून; सफ़े 16; दाम तीन आना; छमाही चन्दा एक रुपया.

6. सर्वोदय अर्थ शास्त्र लेखक—भगवान दास केला; निकालने वाले; भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 350; दाम चार रुपये.

7. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था—लेखक—जवाहिरलाल जैन; निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 127; दाम डेढ़ रुपया.

8. हमारा अर्थशास्त्र कैसा हो ? सम्पादक—भगवान दास केला; निकालने वाले; भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 42; दाम चार आना.

अंगरेज़ी

1. कंट्रोल्स-एन्क्वैरी—निकालने वाले फ़ेडरेशन आफ़ इण्डियन चेम्बर्स आफ़ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री; 28, फ़िरोज़ शाह रोड, नई दिल्ली-1. सफ़े 98.

2. सिलवर जुबली सोविनर—निकालने वाले, फ़ेडेरेशन आफ़ इण्डियन चेम्बर्स आफ़ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री 1927-51) 28 फ़ीरोज़ शाह रोड, नई दिल्ली 1.

उर्दू

इख़लाक़ी समाजियात—लेखक—डाक्टर ज़ाकर हुसैन, निकालने वाले, अंजुमन-तरक़्क़ी उरदू (हिन्द) अलीगढ़, जनवरी 1952, सफ़े 238; दाम चार रुपये आठ आना.

ہندی

1. ہمارے آرادھیہ—لیکھک بنارسی داس چترویدی؛ پرکاشک، ایودھیا پرساد گوئیلیہ؛ بھارتیہ گیان پیٹھ، پوسٹ باکس نمبر 48، بنارس؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 260؛ دام تین روپئے، مارچ 1952 .

2. بھارتیہ جیوتش—لیکھک نیمی چندر شاستری جیوتش آچاریہ؛ پرکاشک—ایودھیا پرساد گوئیلیہ؛ بھارتیہ گیان پیٹھ، پوسٹ باکس نمبر 48، بنارس؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 598، اپریل 1952؛ دام چھ روپئے .

3. اہنسا وانی—سمپادک، کامتا پرساد جین؛ چھاپنے والے، دی الہ آباد بلاک ورکس لمیٹڈ، زیرو روڈ الہ آباد؛ صفحے 53. دام دس آنے .

4. تارا—لیکھک ای. کزاکوچ؛ انوادک—رنبیر سکسینہ؛ نکالنے والے—جن ساہتیہ سدن، 23-24 جیل روڈ، اندور؛ صفحے 120؛ دام دو روپئے .

5. باپو راج پتریکا سمپادکا—میرا بہن؛ پشو لوک، ڈاکخانہ رشی کیش، دہرادون؛ صفحے 16 : دام تین آنہ؛ چھ ماہی چندہ ایک روپیہ .

6. سروودے ارتھ شاستر لیکھک—بھگوان داس کیلا : نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا، دارا گنج، الہ آباد : صفحے 350 دام چار روپئے .

7. سروودے ارتھ ویوستھا لیکھک—جواہر لال جین؛ نکالنے والے بھارتیہ گرنتھ مالا، دارا گنج، الہ آباد؛ صفحے 127 ؛ دام ڈیڑھ روپیہ .

8. ہمارا ارتھ شاستر کیسا ہو سمپادک—بھگوان داس کیلا؛ بھارتیہ گرنتھ مالا دارا گنج، الہ آباد؛ صفحے 42؛ دام چار آنہ .

انگریزی

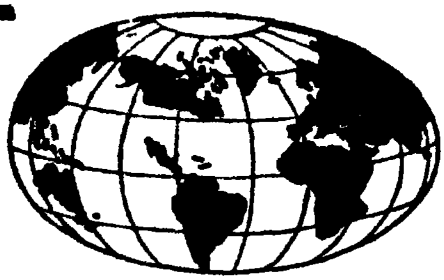
1. کنٹرولس اے انکوائری—نکالنے والے—فیڈریشن آف انڈین چیمبرس آف کامرس اینڈ انڈسٹری؛ 28 فیروز شاہ روڈ، نئی دلی-1 صفحے 98 .

2. سلور جوبلی سووینر—نکالنے والے، فیڈریشن آف انڈین چیمبرس آف کامرس اینڈ انڈسٹری (1927-'51) 28 فیروز شاہ روڈ، نئی دلی-1 .

اردو

اخلاقی سماجیات—لیکھک ڈاکٹر ذاکر حسین، نکالنے والے—انجمن ترقی اردو (ہند) علی گڑھ؛ جنوری 1952؛ صفحے 238؛ دام چار روپیہ آٹھ آنہ .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

अप्रैल.

16. दूधी और संगरौली में (ज़िला मिर्ज़ापुर) अनाज की कमी, चार लाख आदमियों पर भयानक असर.

17. कांग्रेस के बड़े मंत्री ने सूबों की कांग्रेस कमेटियों के नाम सरकुलर जारी किये जिसमें नया खून शामिल करने पर ज़ोर दिया.

18. टोकियो में एक लाख से ज़ियादा आदमियों ने अपनी सरकार की 'नाजायज़ हरकतों' के खिलाफ हड़ताल की. पेप्सू में कांग्रेस मिनिस्ट्री हार गई. 'यूनाइटेड फ़्रन्ट' नई सरकार क़ायम करेगा.

19. अंगरेज़ी फ़ौजों ने बग़ैर इजाज़त कोरिया मे जापान की हद के आस पास से हमला किया.

20. अमरीकन कांग्रेस में एक रिपब्लिकन नुमायन्दे ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रूमैन के अमल पर उनके खिलाफ़ कारंवाई की जा सकती है या नहीं इसकी जांच पड़ताल के लिये एक कमेटी बनाई जाय. लंका शायर में बेरोज़गारी बढ़ रही है.

21. जापान को अपने बचाव की खातिर हथियार बन्दी पूरी तरह करनी चाहिये—जनरल रिजवे का एलान.

कोरिया का झगड़ा तय होने की कोई उम्मीद नहीं है पर यूनो कम्यूनिस्टों को हरा सकता है—रिजवे का बयान.

22. सर स्टेफर्ड क्रिप्स कूच कर गये. लंका की सरकार ने, हिन्दुस्तानियों को वोट देने के मामले पर, हिन्द सरकार के सुझाव को ना मंजूर कर दिया. देवरिया में अनाज की कमी पर असेम्बली और पारलियामेंट के मेम्बरों ने स्तीफ़ा दिया.

23. शोलापुर में पचास फ़ी सदी आदमी जो हैन्डलूम पर काम करते थे बेकार बैठे हैं. मध्य भारत में अनाज की भारी कमी—आदिवासी लोग पत्तियां और दूसरी चीज़ें इस्तेमाल कर रहे हैं.

24. इलाहाबाद के मशहूर पत्रकार श्री प्रमोद कुमार सेन गुज़र गये. डाक्टर ग्राहम ने कश्मीर के मसले पर [illegible] कौंसिल में अपनी रिपोर्ट पेश की.

اپریل

16. دودھی اور سنگرولی (ضلع مرزاپور) میں اناج کی کمی، چار لاکھ آدمیوں پر بھیانک اثر.

17. کانگریس کے بڑے منتری نے صوبوں کی کانگریس کمیٹیوں کے نام سرکلر جاری کئے جس میں نیا خون شامل کرنے پر زور دیا.

18. ٹوکیو میں ایک لاکھ سے زیادہ آدمیوں نے اپنی سرکار کی 'ناجائز حرکتوں' کے خلاف ہڑتال کی. پیپسو میں کانگریس منسٹری ہار گئی. 'یونائٹڈ فرنٹ' نئی سرکار قائم کرے گا.

19. انگریزی فوجوں نے بغیر اجازت کوریا میں جاپان کی حد کے آس پاس سے حملہ کیا.

20. امریکن کانگریس میں ایک ریپبلک نمائندے نے کہا کہ راشٹرپتی ٹرومین کے عمل پر اُنکے خلاف کاروائی کی جا سکتی ہے یا نہیں اسکی جانچ پڑتال کے لئے ایک کمیٹی بنائی جائے. لنکا شائر میں بے روزگاری بڑھ رہی ہے.

21. جاپان کو اپنے بچاؤ کی خاطر ہتھیار بندی پوری طرح کرنی چاہئے—جنرل رجوے کا اعلان. کوریا کا جھگڑا طے ہونے کی کوئی اُمید نہیں ہے پر یونو کمیونسٹوں کو ہرا سکتا ہے—رجوے کا بیان.

22. سر اسٹیفرڈ کرپس کوچ کر گئے. لنکا کی سرکار نے، ہندستانیوں کو ووٹ دینے کے معاملے پر، ہند سرکار کے سجھاؤ کو نامنظور کر دیا. دیوریا میں اناج کی کمی پر اسمبلی اور پارلیامنٹ کے ممبروں نے استعفا دیا.

23. شولاپور میں پچاس فی صدی آدمی جو ہینڈلوم پر کام کرتے تھے بیکار بیٹھے ہیں. مدھیہ بھارت میں اناج کی بھاری کمی—آدی واسی لوگ پتیاں اور دوسری چیزیں استعمال کر رہے ہیں.

24. الہ آباد کے مشہور پترکار شری پرمود کمار سین گزر گئے. ڈاکٹر گراہم نے کشمیر کے مسئلے پر [illegible] کونسل میں اپنی رپورٹ پیش کی.

25. इंगलिस्तान और मिस्र के बीच बात चीत फ़ेल हो गई. अमरीका ने सरकारी तौर पर दूसरी बड़ी जंग के बन्द होने का एलान किया. पुलिस ने गोरखपुर में गोली चलाई.

26. कोरिया के मामले को सुलझाने के लिये पांच उसूल बनाये गये. हिन्दी भाशा को लोगों पर जबरदस्ती न थोपा जाय—मदरास के गवरनर श्री श्री प्रकाश की स्पीच.

27. फ़ारमूसा की सरकार जापान से एक नया माहेदा करेगी. सरमायादारों को अपना लोभ कम करना चाहिये—इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांगरेस के सदर का एलान.

28. अंगरेजी सरकार ने चीन सरकार से ब्योपार करने की बात चीत शुरू की. लंका में सत्याग्रह शुरू हुआ—41 आदमी गिरफ़्तार. गोरखपुर रेलवे कर्मचारी अपने काम पर वापस आये. हैदराबाद, राजस्थान, मध्य भारत में हिन्द सरकार ने सलाहकार मुक़र्रर किये

29. 'ग़ैर मुल्कों' के लोगों को शहरी हक़ नहीं दिये जायेंगे—लंका के बड़े वज़ीर का एलान.

30. 'ब्योपारी मनमुटाव' आज़ाद मुल्कों के बीच कम होना चाहिये—एचेसन का बयान. कोलम्बो योजना की कन्सलटेटिव कमेटी की पहली सालाना रिपोर्ट अख़बार वालों को दी गई. हिन्दुस्तान से एक कलचरल डेलीगेशन पीकिंग पहुँचा.

मई.

1. 'मई दिन' मास्को, पीकिंग और भारत में मनाया गया. टोकियो में दंगा—कम्युनिस्टों ने अमन संधि के ख़िलाफ़ नाराज़गी ज़ाहिर की. चीन हिन्दुस्तान को चावल देगा.

2. भारत अमरीकी फ़र्टीलाइज़र समझौता नई दिल्ली में हुआ. बिहार भूमि सुधार क़ानून सुप्रीम अदालत ने जायज़ क़रार दे दिया. राजपति के चुनाव के लिये देश भर में वोट पड़े. देवरिया ज़िले में साढ़े आठ लाख गांव वाले अनाज की कमी से परेशान.

3. मिस्र को पाकिस्तान के 'मुस्लिम ब्लाक' से कोई दिलचस्पी नहीं. लड़ाई का कोई ख़तरा नहीं है—चर्चिल का बयान. देवरिया ज़िले को 'क़हत का इलाक़ा' क़रार दे देना चाहिये—इस सिलसिले में पन्त जी को मेमोरन्डम दिया गया. लंका के सत्याग्रह को हिन्द सरकार ने ठीक बताया.

4. पाकिस्तान भारत के लिये पास पोर्ट का क़ायदा चालू करेगा. अगर पंच साला योजना ठीक से अमल में लाई जाय तो फिर 'कन्ट्रोल' की ज़रूरत न रहेगी—श्री नन्दा का

25. انگلستان اور مصر کے بیچ بات چیت فیل ہو گئی۔ امریکہ نے سرکاری طور پر دوسری بڑی جنگ کے بند ہونے کا اعلان کیا۔ پولیس نے گورکھپور میں گولی چلائی۔

26. کوریا کے معاملے کو سلجھانے کے لئے پانچ اصول بنائے گئے۔ ہندی بھاشا کو لوگوں پر زبردستی نہ تھوپا جائے—مدراس کے گورنر شری شری پرکاش کی اسپیچ۔

27. فارموسا کی سرکار جاپان سے ایک نیا معاہدہ کرے گی۔ سرمایہ داروں کو اپنا لوبھ کم کر دینا چاہئے—انڈین نیشنل ٹریڈیونین کانگریس کے صدر کا اعلان۔

28. انگریزی سرکار نے چین سرکار سے بیوپار کرنے کی بات چیت شروع کی۔ لنکا میں ستیاگرہ شروع ہوا—41 آدمی گرفتار۔ گورکھپور ریلوے کرمچاری اپنے کام پر واپس آئے۔ حیدرآباد، راجستھان، مدھیہ بھارت میں ہند سرکار نے صلاح کار مقرر کئے۔

29. 'غیر ملکوں' کے لوگوں کو شہری حق نہیں دئے جائیں گے—لنکا کے بڑے وزیر کا اعلان۔

30. 'بیوپاری من مٹاؤ' آزاد ملکوں کے بیچ کم ہو جانا چاہئے—اچیسن کا بیان۔ کولمبو یوجنا کی کنسلٹیٹو کمیٹی کی پہلی سالانہ رپورٹ اخبار والوں کو دی گئی۔ ہندستان سے ایک کلچرل ڈیلی گیشن پیکنگ پہونچا۔

مئی۔

1. 'مئی دن' ماسکو، پیکنگ اور بھارت میں منایا گیا۔ ٹوکیو میں دنگا—کمیونسٹوں نے امن سندھی کے خلاف ناراضگی ظاہر کی۔ چین ہندستان کو چاول دے گا۔

2. بھارت امریکی فرٹیلائزر سمجھوتا نئی دلی میں ہوا۔ بہار بھومی سدھار قانون سپریم عدالت نے جائز قرار دے دیا۔ راج پتی کے چناؤ کے لئے دیش بھر میں ووٹ پڑے۔ دیوریا ضلع میں ساڑھے آٹھ لاکھ گاؤں والے اناج کی کمی سے پریشان۔

3. مصر کو پاکستان کے 'مسلم بلاک' سے کوئی دلچسپی نہیں۔ لڑائی کا کوئی خطرہ نہیں ہے—چرچل کا بیان۔ دیوریا ضلعے کو 'قحط کا علاقہ' قرار دے دینا چاہئے—اس سلسلے میں پنت جی کو میمورنڈم دیا گیا۔ لنکا کے ستیاگرہ کو ہند سرکار نے ٹھیک بتایا۔

4. پاکستان بھارت کے لئے پاسپورٹ کا قاعدہ چالو کرے گا۔ اگر پنچ سالہ یوجنا ٹھیک سے عمل میں لائی جائے تو پھر کنٹرول کی ضرورت نہ رہے گی—شری نندا کا

बयान. भूमि-दान-यज्ञ जनता का आन्दोलन है—फ़ैज़ाबाद में विनोबा जी का बयान. मध्य भारत में पानी की कमी दिन दिन बढ़ती जा रही है.

5. मिस्र नये अंगरेज़ी फ़ारमूले को मानने से इन्कार कर देगा. उत्तर प्रदेश के ज़मींदारी ख़त्म क़ानून को सुप्रीम अदालत ने जायज़ ठहराया. सोशलिस्टों ने पूना में सत्याग्रह शुरू किया.

6. राजेन्द्र बाबू हिन्दुस्तान के राष्ट्र पति चुने गये. डाक्टर मेरिया मान्टेसरी 81 साल की उमर में चल बसीं. मद्रास असेम्बली में डेमोक्रेटिक फ़्रन्ट के मेम्बरों ने 'वाकआउट' किया.

7. पंडित नेहरू ने, नई दिल्ली में डेवलपमेंट या विकास कमिश्नरों की बैठक में भाषण दिया.

8. डाक्टर मुसादिक़ तेल के मसले पर दूसरे देशों से बात चीत कर रहे हैं.
मिस्र ने मिस्टर एडेन के सुझावों को रद्द कर दिया. ग्वालियर और इन्दौर दोनों मध्य भारत की राजधानी रहेंगे—नेहरू का फ़ैसला.

9. मैं कम्यूनिस्टों का दुश्मन नम्बर एक हूँ—राजा जी का एलान. हिन्द सरकार बम्बई की सरकार को सस्ते दामों पर अनाज देगी.

10. लड़ाई 1960 से पहले ज़रूर होगी—अमरीकी नेवल चीफ़ का एलान. हिन्दुस्तान और अमरीका के मक़सद क़रीब क़रीब एक से हैं—अमरीका में हिन्दुस्तानी राजदूत सेन का एलान.

11. पंडित नेहरू कांगरेस पारटी के नेता चुने गये. देश के सामने दो ही चीज़ें हैं—गांधीवाद या मार्क्सवाद—आचार्य कृपलानी.

12. मिस्र ने इंगलिस्तान के फ़ारमूले को रद्द कर दिया. श्री को मो-जो ने बीमारी बमबारी के और सबूत पेश किये.

18. राजेन्द्र बाबू ने अपने ओहदे की शपथ ली. पंडित नेहरू ने नई केबिनेट बनाई.

14. पच्छिमी ताक़तों ने 'जरमनी' के सवाल पर चार बड़ों की कान्फ़रेन्स बुलाने का इरादा किया. ट्यूनेसिया में हालात फिर ख़तरनाक. ज़मींदारी प्रथा उत्तर प्रदेश में पहली जुलाई से ख़त्म—पंत जी का बयान.

15. राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कहा कि अगर अमरीका के "हिफ़ाज़त या विदेशी मदद प्रोग्राम" में कटौती की गई तो उससे "ठंडी लड़ाई" में हमारे हार जाने का ख़तरा है. मौलाना आज़ाद कांगरेस पारटी के नायब लीडर चुने गये. उत्तर प्रदेश के दाल पर पाबन्दी वाले क़ानून को सुप्रीम अदालत ने ख़ारिज कर दिया.

بیان۔ بھومی دان یگیہ جنتا کا آندولن ہے—فیض آباد میں ونوبا جی کا اعلان ۔ مدھیہ بھارت میں پانی کی کمی دن بدن بڑھتی جا رہی ہے ۔

5. مصر نئے انگریزی فارمولے کو ماننے سے انکار کر دے گا ۔ اتر پردیش کے زمینداری ختم قانون کو سپریم عدالت نے جائز ٹھہرایا۔ سوشلسٹوں نے پونا میں ستیاگرہ شروع کیا ۔

6. راجیندر بابو ہندستان کے راج پتی چنے گئے ۔ ڈاکٹر میریا مانٹیسری 81 سال کی عمر میں چل بسیں۔ مدراس اسمبلی میں ڈیموکریٹک فرنٹ کے ممبروں نے 'واک آوٹ' کیا ۔

7. پنڈت نہرو نے، نئی دلی میں ڈیولپ منٹ یا وکاس کمشنروں کی بیٹھک میں بھاشن دیا ۔

8. ڈاکٹر مصادق تیل کے مسئلے پر دوسرے دیشوں سے بات چیت کر رہے ہیں ۔ مصر نے مسٹر ایڈین کے سجھاؤ کو رد کر دیا۔ گوالیار اور اندور دونوں مدھیہ بھارت کی راجدھانی رہیں گے—نہرو کا فیصلہ ۔

9. میں کمیونسٹوں کا دشمن نمبر ایک ہوں—راجاجی کا اعلان ۔ ہند سرکار بمبئی کی سرکار کو سستے داموں پر اناج دے گی ۔

10. لڑائی 1960 سے پہلے ضرور ہوگی—امریکی نیول چیف کا اعلان ۔ ہندستان اور امریکہ کے مقصد قریب قریب ایک سے ہیں—امریکہ میں ہندستانی راج دوت سین کا اعلان ۔

11. پنڈت نہرو کانگریس پارٹی کے نیتا چنے گئے ۔ دیش کے سامنے دو ہی چیزیں ہیں—گاندھی واد یا مارکس واد—آچاریہ کرپلانی ۔

12. مصر نے انگلستان کے فارمولے کو رد کر دیا ۔ شری کو مو جو نے بیماری بمباری کے اور ثبوت پیش کئے ۔

13. راجیندر بابو نے اپنے عہدے کی شپتھ لی۔ پنڈت نہرو نے نئی کیبنٹ بنائی ۔

14. پچھمی طاقتوں نے 'جرمنی' کے سوال پر چار بڑوں کی کانفرنس بلانے کا ارادہ کیا۔ ٹیونیشیا میں حالات پھر خطرناک ۔ زمینداری پرتھا اتر پردیش میں پہلی جولائی سے ختم—پنت جی کا بیان ۔

15. راشٹرپتی ٹرومین نے کہا کہ اگر امریکہ کے "حفاظت یا ودیشی مدد پروگرام" میں کٹوتی کی گئی تو اس سے "ٹھنڈی لڑائی" میں ہمارے ہار جانے کا خطرہ ہے ۔ مولانا آزاد کانگریس پارٹی کے نائب لیڈر چنے گئے ۔ اتر پردیش کے دال پر پابندی والے قانون کو سپریم عدالت نے خارج کر دیا ۔

हमारी राय — ہماری رائے

हिन्दू-मुस्लिम शादी

पढ़ने वाले यह न समझ लें कि हम उस शादी पर कोई राय ज़ाहिर कर रहे हैं जिसको लेकर हाल ही में कुछ मनचलों ने दिल्ली में एक तूफ़ान खड़ा कर दिया और तूफ़ान उठने पर कुछ सिरफिरों ने मनमानी कर डाली. क्योंकि यह मामला तो अदालत के सामने है, उसे अदालत जाने और मुद्दई मुद्दालय.

हम तो किसी और नज़र से ही हिन्दू मुस्लिम शादी को देखते हैं और उस नज़र से हमारे अन्दर क्या क्या ख़याल घूम जाते हैं उन्हीं को क़लम बन्द करना चाहते हैं.

दो साल भी नहीं हुये हम इन्दौर के एक प्लेटफ़ार्म से बोल रहे थे. वहां हमने यही बात कह दी थी कि अब हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया. अब ख़ूब हिन्दू मुस्लिम शादियां होनी चाहियें.

हमारी इस बात पर भरी सभा में एक जवान उठ खड़ा हुआ और सवाल पूछ बैठा कि जब हिन्दू मुसलमान की शादियां होने लगेंगी तब क्या होगा. हमने सीधा सा जवाब दे दिया—तब बच्चे होंगे और ज़रूर ऐसे ही बच्चे होंगे जैसे हिन्दू हिन्दू में और मुसलमान मुसलमान में, शादी होने पर होते हैं. सारी सभा हंस पड़ी और बात हवा में उड़ गई.

एक आर्य समाजी इसी सिलसिले में खान पान की कुछ बात लेकर आगे बढ़े लेकिन वह बात हिन्दू मुस्लिम शादी से सम्बन्ध नहीं रखती, इसलिये हम छोड़े देते हैं.

हिन्दू मुस्लिम शादी से अगर यह मतलब है कि लड़का हिन्दू हो और लड़की मुसलमान तब तो हिन्दुस्तान में बहुत कम मन चले और सिर फिरे मिलेंगे जो ऊधम मचाने और सिर फोड़ने को तैयार हों. और अगर ऐसे कुछ निकल भी आयें तो उन्हें हिन्दुस्तान की आज़ाद जनता पुलिस और अदालत की मदद के बग़ैर ही क़ाबू में कर लेगी.

हिन्दुस्तान की जनता है तो वही जनता, जो तब थी जब अंगरेज़ों का राज था. अंगरेज़ों के राज में जनता

ہندو مسلم شادی

پڑھنے والے یہ نہ سمجھ لیں کہ ہم اس شادی پر کوئی رائے ظاہر کر رہے ہیں جس کو لے کر حال ہی میں کچھ من چلوں نے دلی میں ایک طوفان کھڑا کر دیا اور طوفان اٹھنے پر کچھ سر پھروں نے من مانی کر ڈالی. کیونکہ یہ معاملہ تو عدالت کے سامنے ہے، اسے عدالت جانے اور مدعی مدعا علیہ.

ہم تو کسی اور نظر سے ہی ہندو مسلم شادی کو دیکھتے ہیں اور اس نظر سے ہمارے اندر کیا کیا خیال گھوم جاتے ہیں انہیں کو قلم بند کرنا چاہتے ہیں.

دو سال بھی نہیں ہوئے ہم اندور کے ایک پلیٹ فارم سے بول رہے تھے. وہاں ہم نے یہی بات کہہ دی تھی کہ اب ہندستان آزاد ہوگیا. اب خوب ہندو مسلم شادیاں ہونی چاہئیں.

ہماری اس بات پر بھری سبھا میں ایک جوان اٹھ کھڑا ہوا اور سوال پوچھ بیٹھا کہ جب ہندو مسلمان کی شادیاں ہونے لگیں گی تب کیا ہوگا. ہم نے سیدھا سا جواب دے دیا—تب بچے ہونگے اور ضرور ایسے ہی بچے ہونگے جیسے ہندو ہندو میں اور مسلمان مسلمان میں، شادی ہونے پر ہوتے ہیں. ساری سبھا ہنس پڑی اور بات ہوا میں اڑ گئی.

ایک آریہ سماجی اسی سلسلے میں کھان پان کی کچھ بات لے کر آگے بڑھے لیکن وہ بات ہندو مسلم شادی سے سمبندھ نہیں رکھتی، اسلئے ہم چھوڑ دیتے ہیں.

ہندو مسلم شادی سے اگر یہ مطلب ہے کہ لڑکا ہندو ہو اور لڑکی مسلمان تب تو ہندستان میں بہت کم من چلے اور سر پھرے ملیں گے جو اودھم مچانے اور سر پھوڑنے کو تیار ہوں اور اگر ایسے کچھ نکل بھی آئے تو انہیں ہندستان کی آزاد جنتا پولیس اور عدالت کی مدد کے بغیر ہی قابو میں کر لے گی.

ہندستان کی جنتا ہے تو وہی جنتا، جو تب تھی جب انگریزوں کا راج تھا. انگریزوں کے راج میں جنتا

अपने आपको हिन्दू मुसलमान बहुत ज़ियादा मानती थी और हिन्दुस्तानी बिलकुल नहीं. हां, जब सन 1921 में गांधी जी ने अंगरेज़ी हकूमत के पेड़ को सारे हिन्दुस्तानियों के साथ मिल कर जड़ से हिला दिया तब जनता अपने आपको हिन्दुस्तानी समझने लगी और हिन्दू मुसलमान समझना भूल गई. धीरे धीरे हिन्दुस्तानियत का ख़याल कम होता गया. बिलकुल कभी नहीं मिटा, हिन्दू मुसलमा-नियत बढ़ती रही पर पूरी पूरी कभी नहीं छा पाई. हिन्दुस्तान के आज़ाद होने पर हिन्दुस्तानियत साठ सत्तर फ़ीसदी हो गई और हिन्दू मुसलमानियत तीस चालीस फ़ी सदी रह गई.

सन 1952 के चुनाव में सन 1921 की झलक आई और हिन्दुस्तानियत 95 फ़ी सदी तक पहुँच गई. आज भी 90 फ़ी सदी से कम न होगी. जो हिन्दू मुसलमानियत आज दिखाई देती है वह ऊपरी है अन्दरूनी नहीं. अन्दरूनी वाली दस फ़ीसदी तो मुर्झाई हुई हिन्दुस्तान के इधर उधर कोनों में दम तोड़ रही है.

दिल्ली में जो फुलझड़ी खिली वह हमारी राय में सौ फ़ीसदी हिन्दुस्तानी थी. और इसी बूते पर हम कृपलानी जी से इस बात में हमराह हैं कि इसके लिये मामूली क़ानून काफ़ी था. पर इसे छोड़िये. इससे हमें क्या लेना देना.

आज हिन्दुस्तान की जनता हर चीज़ को हिन्दुस्तानी निगाह से देखती है. अगर ज़रा कांगरेस या कांगरेसी सरकार की निगाह हिन्दुस्तानियत की तरफ़ गई होती तो आज हिन्दू मुसलमानियत सुनने के लिये भी बहुत कम मिलती.

चीन में एक नमाज़ पढ़ते हुए आदमी से नमाज़ पढ़ने के बाद शायद कुमारप्पा जी ने या पंडित सुन्दरलाल जी ने पूछा कि आपका धर्म क्या है उसने जवाब दिया, बौद्ध. उससे फिर पूछा गया कि आप यह मस्जिद में नमाज़ क्यों पढ़ते हैं. तो बोला क्यों क्या बुराई है ? उनसे कहा नमाज़ तो मुसलमान पढ़ते हैं. वह बोला मैं भी तो मुसलमान हूं. उनसे पूछा गया अभी तो आपने कहा कि आपका धर्म बौद्ध है. तो वह बोले. हां, बौद्ध तो मेरा बुनियादी धर्म है. पर मेरा फ़ार्मल धर्म यानी रोज़मर्रा का धर्म तो इस्लाम है.

सन 1952 का हिन्दुस्तान न सन 1947 का भड़काया हुआ हिन्दुस्तान है और न सन 1858 से 1919 तक का अंगरेज़ों का बहकाया हुआ हिन्दुस्तान.

दिल्ली में जो शादी होने जा रही थी और जिसके ऊपर एक ऐसी बेढंगी इमारत खड़ी हो गई जिसे अख़बार वाले ले दौड़े. उस मौक़े पर अगर हम भी दिल्ली में होते तो हम भी यही शोर मचाते कि ऐसी शादी हरगिज़ नहीं

اپنے آپ کو ہندو مسلمان بہت زیادہ مانتی تھی اور ہندستانی بالکل نہیں ۔ ہاں، جب سن 1921 میں گاندھی جی نے انگریزی حکومت کے پیڑ کو سارے ہندستانیوں کے ساتھ مل کر جڑ سے ہلا دیا تب جنتا اپنے آپ کو ہندستانی سمجھنے لگی اور ہندو مسلمان سمجھنا بھول گئی ۔ دھیرے دھیرے ہندستانیت کا خیال کم ہوتا گیا ۔ بالکل کبھی نہیں مٹا، ہندو مسلمانیت بڑھتی رہی پر پوری پوری کبھی نہیں چھا پائی ۔

ہندستان کے آزاد ہونے پر ہندستانیت ساٹھ ستر فی صدی ہوگئی اور ہندو مسلمانیت تیس چالیس فی صدی رہ گئی ۔

سن 1952 کے چناؤ میں سن 1921 کی جھلک آئی اور ہندستانیت 95 فی صدی تک پہونچ گئی ۔ آج بھی 90 فی صدی سے کم نہ ہوگی ۔ جو ہندو مسلمانیت آج دکھائی دیتی ہے وہ اوپری ہے اندرونی نہیں ۔ اندرونی والی دس فی صدی تو مرجھائی ہوئی ہندستان کے اِدھر اُدھر کونوں میں دم توڑ رہی ہے ۔

دلی میں جو پھلجھڑی کھلی وہ ہماری رائے میں سو فی صدی ہندستانی تھی ۔ اور اِسی بوتے پر ہم کرپلانی جی سے اِس بات میں ہمراہ ہیں کہ اِس کے لئے معمولی قانون کافی تھا ۔ پر اِسے چھوڑئیے اِس سے ہمیں کیا لینا دینا ۔

آج ہندستان کی جنتا ہر چیز کو ہندستانی نگاہ سے دیکھتی ہے ۔ اگر ذرا کانگریس یا کانگریسی سرکار کی نگاہ ہندستانیت کی طرف گئی ہوتی تو آج ہندو مسلمانیت سننے کے لئے بھی بہت کم ملتی ۔

چین میں ایک نماز پڑھتے ہوئے آدمی سے نماز پڑھنے کے بعد شاید کماریپا جی نے یا پنڈت سندر لال جی نے پوچھا کہ آپ کا دھرم کیا ہے اُس نے جواب دیا، بودھ ۔ اُس سے پھر پوچھا گیا کہ آپ یہ مسجد میں نماز کیوں پڑھتے ہیں ۔ تو بولے کیوں کیا برائی ہے ؟ اُن سے کہا نماز تو مسلمان پڑھتے ہیں ۔ وہ بولا میں بھی تو مسلمان ہوں ۔ اُن سے پوچھا گیا ابھی تو آپ نے کہا کہ آپ دھرم بودھ ہیں ۔ تو وہ بولے ۔ ہاں بودھ تو میرا بنیادی دھرم ہے ۔ پر میرا فارمل دھرم یعنی روز مرہ کا دھرم تو اسلام ہے ۔

سن 1952 کا ہندستان نہ سن 1947 کا بھڑکا ہوا ہندستان ہے اور نہ سن 1858 سے 1919 تک کا انگریزوں کا بہکایا ہوا ہندستان ۔

دلی میں جو شادی ہونے جا رہی تھی اور جس کے اوپر ایک ایسی بے ڈھنگی عمارت کھڑی ہوگئی جسے اخبار والے لے دوڑے ۔ اس موقع پر اگر ہم بھی دلی میں ہوتے تو ہم بھی یہی شور مچاتے کہ ایسی شادی ہرگز نہیں

होनी चाहिये. लेकिन हमारे पढ़ने वाले यह खूब समझ लें कि हम सिर्फ़ इस नियत से शोर मचाते कि कमबख्त ले दे कर दो चार काम ही तो हम लोगों के लिये बचे हैं और उसकी भी सारी वाहवाही गांधी टोपी वाले, कांगरेसी और कांगरेसी सरकार लूटे लिये जा रही है. जो काम हमारे हाथों होना चाहिये था वह इनके हाथों हुआ, हम कैसे देख सकते हैं.

या फिर हमने इस नियत से फ़िक़रे कसे होते जिस नियत से नटों के खेल में नटों का बुड्ढा उस्ताद हर खेल के बाद कह उठता है "तो भी कसर रह गई." "तो भी कसर रह गई."

हिन्दू लड़का मुसलमान लड़की शादी का तो बहुत कम ही शोर मचता है. पर कुछ दिनों से तो मुसलमान लड़का और हिन्दू लड़की की शादी का शोर भी कम हो गया है. ईसाई और पारसी भी हिन्दुओं की नज़र में रोटी बेटी व्यवहार के मामले में मुसलमानों के बराबर नहीं, कुछ कम समझे जाते हैं. पर ऐसी शादियां तो इस दिल्ली के मामले के पहले कई हो चुकीं. कभी शोर नहीं मचा. हमारे यहां जहां रुकमनी अरनाडेल मौजूद हैं और इन्द्रा फ़ीरोज़ मौजूद हैं, वहां अरुना आसफ़ अली और श्याम कुमारी खां भी मौजूद हैं. और अभी चार महीने गुज़रे हम फ़ातिमा लछमी चन्द के पति लछमी चन्द से मिले थे. पता चला था फ़ातिमा देवी अपने सास सुसर, नन्द भौजाई से ऐसी एक मेक हो गई हैं कि पता ही नहीं चलता कि उस घर में कोई मुसलमान या हिन्दू है. वहां तो सब हिन्दुस्तानी हैं. नाम से ही आप फ़ातिमा को मुसलमान और लछमी चन्द को जैन कह सकते हैं.

बम्बई में भी इसी सन 1952 में एक जैन लड़की ने ईसाई लड़के से शादी की है और एक जैन पत्र में भी लड़की के इस काम को बढ़ावा दिया गया है.

क्या यह सब शादियां इस बात का सबूत नहीं हैं कि हिन्दुस्तानियत छलांगे मारती हुई तेज़ी से आगे चली जा रही है. इसको जो रोकने की कोशिश करता है वह जी से रोकना नहीं चाहता, रोक कर दिखाने की वाह वाही लूटना चाहता है.

दिल्ली के मामले में काश कि मैं लड़की होता और ऐसा ही मामला उठा होता तो मैं अपने जी में बहुत खुश होता और अपने भावी पति को और भी ज़ियादा प्यार करने लगता; क्योंकि शादी के बाद मेरे पास अपनी शादी का ज़िकर करने के लिये एक कहानी होती, एक रोमान्स होता. मैं उन सबके लिये बड़ा एहसान मन्द होता जिन्होंने मेरे खातिर ऐसी बढ़िया ज़िन्दा कहानी खड़ी कर दी.

ہونی چاہئیے۔ لیکن ہمارے پڑھنے والے یہ خوب سمجھ لیں کہ ہم صرف اس نیت سے شور مچاتے کہ کمبخت لے دے کر دو چار کام ہی تو ہم لوگوں کے لئے بچے ہیں اور اس کی بھی ساری واہ واہی گاندھی ٹوپی والے، کانگریسی اور کانگریسی سرکار لوٹے لئے جا رہی ہے۔ جو کام ہمارے ہاتھوں ہونا چاہئے تھا وہ اِن کے ہاتھوں ہوا، ہم کیسے دیکھ سکتے ہیں۔

یا پھر ہم نے اِس نیت سے فقرے کسے ہوتے کہ جس نیت سے نٹوں کے کھیل میں نٹوں کا بڈھا استاد ہر کھیل کے بعد کہہ اٹھتا ہے "تو بھی کسر رہ گئی،" تو بھی کسر رہ گئی۔"

ہندو لڑکا مسلمان لڑکی کی شادی کا تو بہت کم ہی شور مچتا ہے۔ پر کچھ دنوں سے تو مسلمان لڑکا اور ہندو لڑکی کی شادی کا شور بھی کم ہوگیا ہے۔ عیسائی اور پارسی بھی ہندوؤں کی نظر میں روٹی بیٹی بیوہار کے معاملے میں مسلمانوں کے برابر نہیں، کچھ کم سمجھے جاتے ہیں۔ پر ایسی شادیاں تو اس دلی کے معاملے کے پہلے کئی ہو چکیں۔ کبھی شور نہیں مچا۔ ہمارے یہاں جہاں رکمنی ارناڈیل موجود ہیں اور اندرا فیروز موجود ہیں، وہاں ارونا آصف علی اور شیام کماری خاں بھی موجود ہیں۔ اور ابھی چار مہینے بھی نہیں گذرے ہم فاطمہ لکھمی چند کے پتی لکھمی چند سے ملے تھے۔ پتہ چلا تھا فاطمہ دیوی اپنے ساس سسر، نند بھوجائی سے ایسی ایک میک ہوگئی ہیں کہ پتہ ہی نہیں چلتا کہ اس گھر میں کوئی مسلمان یا ہندو ہے۔ وہاں تو سب ہندستانی ہیں۔ نام سے ہی آپ فاطمہ کو مسلمان اور لکھمی چند کو جین کہہ سکتے ہیں۔

بمبئی میں بھی اسی سن 1952 میں ایک جین لڑکی نے عیسائی لڑکے سے شادی کی ہے اور ایک جین پتر میں بھی لڑکی کے اس کام کو بڑھاوا دیا گیا ہے۔

کیا یہ سب شادیاں اس بات کا ثبوت نہیں ہیں کہ ہندستانیت چھلانگیں مارتی ہوئی تیزی سے آگے چلی جا رہی ہے۔ اس کو جو روکنے کی کوشش کرتا ہے وہ جی سے روکنا نہیں چاہتا، روک کر دکھانے کی واہ واہی لوٹنا چاہتا ہے۔

دلی کے معاملے میں کاش کہ میں لڑکی ہوتا اور ایسا ہی معاملہ اٹھا ہوتا تو میں اپنے جی میں بہت خوش ہوتا اور اپنے بھاوی پتی کو اور بھی زیادہ پیار کرنے لگتا؛ کیونکہ شادی کے بعد میرے پاس اپنی شادی کا ذکر کرنے کے لئے ایک کہانی ہوتی، ایک رومانس ہوتا۔ میں اُن سب کے لئے بڑا احسان مند ہوتا جنہوں نے میری خاطر ایسی بڑھیا زندہ کہانی کھڑی کر دی۔

गांधी जी की आत्मा उस हिन्दू ब्राह्मण के लिये कितना एहसान मंद होगी जिसने उनको असंख्य बरसों के लिये हिन्दुस्तान का नहीं बल्कि सारी दुनिया का आदमी बना दिया. फिर जिसकी कृपा से मेरा नाम अपने सारे पत्रों में आ गया होता तो क्यों न एहसान मन्द होता ?

हिन्दुस्तान जितना आज आज़ाद है उतना अब से पहले कभी नहीं हुआ. और जितना आज बड़ा है उतना किसी की हकूमत में कभी बड़ा नहीं हुआ. हिन्दुस्तान की हर नारी, आज नर जितनी ही आज़ाद है. यह दूसरी बात है कि कुछ नारी और नर अपनी आज़ादी को समझते हों न हों या अगर समझते हों तो उससे काम लेना न जानते हों. आज की नारी की आज़ादी कुछ लोगों को खटक सकती है पर बहुत लोगों को बहुत सुख देती है. पर आज़ाद हिन्दुस्तान में बहुत लोगों के बहुत सुख का ख़याल रखना ही पड़ेगा.

हिन्दुस्तान एक नेशन बन गया है. जो अपने को हिन्दुस्तानी समझता है उस पर उसका तो दावा है. जो अपने को हिन्दुस्तानी समझता है पर उसका दावा नहीं हो सकता जो अपने आपको हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन, पारसी और ईसाई समझता है.

हिन्दुस्तानी होने के नाते किसी नर या नारी को यह हक़ हासिल है कि वह किसी अपने जानपहचान के लड़के या लड़की को शादी करने या न करने की सलाह दे. लेकिन हिन्दू मुसलमान की हैसियत से यह हक़ बिलकुल नहीं रह जाता और अगर कुछ रह जाता है तो उन पर जो अपने को हिन्दू या मुसलमान समझते हैं.

हमारा तो ख़याल है कि दिल्ली के मामले से हिन्दुस्तानियत को बढ़ने में मदद मिलेगी और हिन्दू मुसलमानियत का ज़ोर कम हो जायेगा.

4. 6. '52. —भगवानदीन

बीमारी बम

चीन का कहना है अमरीकी बमबारों ने कोरिया में और चीन की सरहद में फ़रवरी और मार्च के महीने में कई बार ऐसे बम गिराये जिनमें बीमारी के कीड़े थे और जिनसे ऐसी बीमारी फैल सकती थी जो बहुत आदमियों की जान ले लेती.

कोरिया में लड़ने के लिये तो यू.नो. की फ़ौजें लड़ रही हैं पर असल में वहां की कमान है अमरीकियों के हाथ में. जितने शौक़ से कोरिया में अमरीका लड़ रहा है उतने शौक़ से कोई दूसरा मुल्क नहीं लड़ रहा है. दूसरे मुल्क सिर्फ़ इस वजह से साथ दे रहे हैं कि वह यू.नो. में शामिल हैं और लड़ाई यू.नो. की छेड़ी हुई समझी जाती है.

گاندھی جی کی آتما اُس ہندو براہمن کے لئے کتنا احسان مند ہوگی جس نے اُنکو اسنکھیہ برسوں کے لئے ہندستان کا نہیں بلکہ ساری دنیا کا آدمی بنا دیا ۔ پھر جس کی کرپا سے میرا نام اپنے سارے پتروں میں آگیا ہوتا تو کیوں نہ احسانمند ہوتا ؟

ہندستان جتنا آج آزاد ہے اُتنا اب سے پہلے کبھی نہیں ہوا۔ اور جتنا آج بڑا ہے اُتنا کسی کی حکومت میں کبھی بڑا نہیں ہوا ۔ ہندستان کی ہر ناری، آج نر جتنی ہی آزاد ہے ۔ یہ دوسری بات ہے کہ کچھ ناری اور نر اپنی آزادی کو سمجھتے ہی نہ ہوں یا اگر سمجھتے ہوں تو اُس سے کام لینا نہ جانتے ہوں ۔ آج کی ناری کی آزادی کچھ لوگوں کو کھٹک سکتی ہے پر بہت لوگوں کو بہت سکھ دیتی ہے ۔ پر آزاد ہندستان میں بہت لوگوں کے بہت سکھ کا خیال رکھنا ہی پڑیگا ۔

ہندستان ایک نیشن بن گیا ہے۔ جو اپنے کو ہندستانی سمجھتا ہے اُس پر اُس کا تو دعوا ہے۔ جو اپنے کو ہندستانی سمجھتا ہے پر اس کا دعویٰ نہیں ہوسکتا جو اپنے آپ کو ہندو، مسلم، سکھ، جین، پارسی اور عیسائی سمجھتا ہے ۔

ہندستانی ہونے کے ناتے کسی نر یا ناری کو یہ حق حاصل ہے کہ وہ کسی اپنے جان پہچان کے لڑکے یا لڑکی کو شادی کرنے یا نہ کرنے کی صلاح دے ۔ لیکن ہندو مسلمان کی حیثیت سے یہ حق بالکل نہیں رہ جاتا اور اگر کچھ رہ جاتا ہے تو اُن پر جو اپنے کو ہندو یا مسلمان سمجھتے ہیں ۔

ہمارا تو خیال ہے کہ دلی کے معاملے سے ہندستانیت کو بڑھنے میں مدد ملیگی اور ہندو مسلمانیت کا زور کم ہوجائیگا ۔

—بھگوان دین 4 . 6 . '52

بیماری بم

چین کا کہنا ہے امریکی بمباروں نے کوریا میں اور چین کی سرحد میں فروری اور مارچ کے مہینے میں کئی بار ایسے بم گرائے جن میں بیماری کے کیڑے تھے اور جن سے ایسی بیماری پھیل سکتی تھی جو بہت آدمیوں کی جان لے لیتی ۔

کوریا میں لڑنے کے لئے تو یو۔نو۔ کی فوجیں لڑ رہی ہیں پر اصل میں وہاں کی کمان ہے امریکیوں کے ہاتھ میں ۔ جتنے شوق سے کوریا میں امریکہ لڑ رہا ہے اُتنے شوق سے کوئی دوسرا ملک نہیں لڑ رہا ہے ۔ دوسرے ملک صرف اِس وجہ سے ساتھ دے رہے ہیں کہ وہ یو۔نو۔ میں شامل ہیں اور لڑائی اسی یو۔نو۔ کی چھیڑی ہوئی سمجھی جاتی ہے ۔

कोरिया पर एटम बम गिराने की धमकी यूनो नहीं दे सकता क्योंकि न उसके पास अपनी फौज है न अपने हथियार. एटम बम गिराने की धमकी अमरीका ही दे सकता है क्योंकि उसके पास इतने ज़ियादा एटम बम हो गये हैं जो उसके पड़े रहे हैं. अमरीका की इस तरह की धमकी यूनो के लिये है तो गुस्ताख़ी लेकिन यूनो बरदाश्त कर लेता है क्योंकि वह आजकल इसी तरह अमरीका के हाथ की कठपुतली बना हुआ है; जिस तरह लीग आफ़ नेशन्स बरतानिया के हाथ की चीज़ थी.

कोरिया में लड़ाई जीतने की जितनी ज़ियादा फ़िकर अमरीका को है उतनी किसी दूसरे को नहीं है. अमरीकी जनरल एक से ज़ियादा बार कोरिया की लड़ाई में ऐसे काम कर चुके हैं जिसे बहुत से मुल्कों ने अच्छा नहीं समझा, जैसे 38 पैरेलल लाइन को पार कर जाना या रूस या चीन की हद में बम गिराना. कोरिया में जब यूनो की हार होती है तो वह अमरीकियों की हार मानी जाती है, यूनो की नहीं. यूनो एक ऐसी संस्था है जो हार जीत से परे है.

बीमारी बम किसी और मुल्क के पास हैं या नहीं, यह पता नहीं. पर अमरीका के पास ज़रूर हैं. एटम बम की तरह बीमारी बमों के होने का अमरीका खुले मैदान दावा कर चुका है. इसलिये उसे लड़ाई जीतने के ख़ातिर बीमारी बम गिराने की सूझ जाय तो कोई बड़ी बात नहीं.

कहावत है कि सुई का फावड़ा बन जाता है, पर न कुछ का फावड़ा नहीं बना करता. चीन यह तो कर सकता था कि दस बीमारी बम गिराये जाते और वह सौ बताता या एक गिराता और वह दस कहता. पर यह ज़रा समझ से बाहर की बात है कि वह बिना बम गिरे ही बीमारी बम की बात कह डाले. हम यह मानते हैं कि लड़ाई में अनहोनी बातें भी कही जाती हैं पर आज कोरिया की लड़ाई इतने ज़ोरों पर नहीं है जो किसी को अनहोनी बात कहने की सूझे. आज तो सुलह की बातें चल रही हैं. ऐसी हालत में बेसिर पैर का झूट जल्दी पकड़ा जा सकता है. इसलिये बात बढ़ा कर कही जा सकती है, बे बात की बात नहीं कही जा सकती.

बीमारी बम की बात कहते ही कोरिया में तहलका शुरू हो गया और एक से ज़ियादा मुल्क के साइन्सदां फ़तवा दे चुके कि कोरिया पर बीमारी बम गिराये गये. पर अमरीका है कि झुठलाता चला जाता है और सिर्फ़ इस बल पर कि यूनो में उसका बहुमत है. और कोई बात वहां ऐसी नहीं हो सकती जो उसकी शान को धक्का पहुंचाये.

अमरीका भले ही बीमारी बम गिराने से इन्कार करे और उसे ऐसा करना भी चाहिये. क्योंकि वह गिराने से

کوریا پر ایٹم بم گرانے کی دھمکی یونو نہیں دے سکتا کیونکہ نہ اُس کے پاس اپنی فوج ہے نہ اپنے ہتھیار۔ ایٹم بم گرانے کی دھمکی امریکہ ہی دے سکتا ہے کیونکہ اُس کے پاس اِتنے زیادہ ایٹم بم ہو گئے ہیں جو اُنکے پڑے رہے ہیں۔ امریکہ کی اِس طرح کی دھمکی یونو کے لئے ہے تو گستاخی لیکن یونو برداشت کر لیتا ہے کیونکہ وہ آجکل اِسی طرح امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بنا ہوا ہے؛ جس طرح لیگ آف نیشنس برطانیہ کے ہاتھ کی چیز تھی۔

کوریا میں لڑائی جیتنے کی جتنی زیادہ فکر امریکہ کو ہے اُتنی کسی دوسرے کو نہیں ہے۔ امریکی جنرل ایک سے زیادہ بار کوریا کی لڑائی میں ایسے کام کر چکے ہیں جسے بہت سے ملکوں نے اچھا نہیں سمجھا' جیسے 38 پیرل لائن کو پار کر جانا یا روس یا چین کی حد میں بم گرانا۔ کوریا میں جب یونو کی ہار ہوتی ہے تو وہ امریکیوں کی ہار مانی جاتی ہے' یونو کی نہیں۔ یونو ایک ایسی سنستھا ہے جو ہار جیت سے پرے ہے۔

بیماری بم کسی اور ملک کے پاس ہیں یا نہیں' یہ پتہ نہیں۔ پر امریکہ کے پاس ضرور ہیں۔ ایٹم بم کی طرح بیماری بموں کے ہونے کا امریکہ کھلے میدان دعوا کر چکا ہے۔ اس لئے اُسے لڑائی جیتنے کے خاطر بیماری بم گرانے کی سوجھ جائے تو کوئی بڑی بات نہیں۔

کہاوت ہے کہ سوئی کا پھاوڑا بن جاتا ہے' پر نہ کچھ کا پھاوڑا نہیں بنا کرتا۔ چین یہ تو کر سکتا تھا کہ دس بیماری بم گرائے جاتے اور وہ سو بتاتا یا ایک گرتا اور وہ دس کہتا۔ پر یہ ذرا سمجھ سے باہر کی بات ہے کہ وہ بنا بم گرے ہی بیماری بم کی بات کہہ ڈالے۔ ہم یہ مانتے ہیں کہ لڑائی میں انہونی باتیں بھی کہی جاتی ہیں۔ پر آج کوریا کی لڑائی اتنے زوروں پر نہیں ہے جو کسی کو انہونی بات کہنے کی سوجھے۔ آج تو صلح کی باتیں چل رہی ہیں۔ ایسی حالت میں بے سر پیر کا جھوٹ جلدی پکڑا جا سکتا ہے۔ اس لئے آج بات بڑھا کر کہی جا سکتی ہے' بے بات کی بات نہیں کہی جا سکتی۔

بیماری بم کی بات کہتے ہی کوریا میں تہلکہ شروع ہو گیا اور ایک سے زیادہ ملک کے سائنسداں یہ فتوا دے چکے کہ کوریا پر بیماری بم گرائے گئے۔ پر امریکہ ہے کہ جھٹلاتا چلا آتا ہے اور صرف اِس بل پر کہ یونو میں اُس کا بہومت ہے۔ اور کوئی بات وہاں ایسی نہیں ہو سکتی جو اُس کی شان کو دھکا پہونچائے۔

امریکہ بھلے ہی بیماری بم گرانے سے اِنکار کرے اور اُسے ایسا کرنا بھی چاہئے۔ کیونکہ وہ گرانے سے

इनकार करके यह तो साबित कर ही रहा है कि बीमारी बम गिराना अन्तर क़ौमी क़ानून के ख़िलाफ़ है. पर उसका यह कहना कि बीमारी बम गिराने से न कुछ नुक़सान होता है न लड़ाई जीती जाती है, इस बात का सबूत है कि बम गिराये ज़रूर गये.

अमरीका के बम न गिराने की बात को हम उस वक़्त कुछ कुछ ठीक समझ सकते हैं जब वह यूनो में पहले यह ठहराव पास करा ले कि बीमारी बम गिराने वाला मुल्क लड़ाई का मुजरिम समझा जायगा और तहक़ीक़ात के बाद उस मुल्क को सज़ा भी दी जायगी.

कोरिया में बीमारी बम गिराने के बारे में आये दिन नये नये भेद खुल रहे हैं. हर भेद खुल कर यही कहता मालूम होता है कि बीमारी बम गिराये गये और गिराये अमरीका ने. पर ऐसे भेदों का खुलना न खुलना बेकार है जब तक यूनो न कह दे कि बम गिराये गये. हां, जब दुनिया की आवाज़ यूनो की आवाज़ से ज़ोरदार हो जायगी तब शायद अमरीका कुछ सोचे तो सोचे. उससे पहले उसे कोई चिन्ता नहीं.

10. 6. '52. —भगवानदीन

बीमारी बम और हिन्दुस्तानी सरकार

कहा जाता है हिन्द सरकार जनता की सरकार है और हाल के चुनाव ने यह बात साबित कर दी है कि सचमुच हिन्द सरकार जनता की सरकार है. पर यह बात समझ में नहीं आती कि हिन्दुस्तान के क़रीब क़रीब सब अख़बारों में कोरिया में बीमारी बम गिराने की ख़बरें चार महीने से बराबर निकल रही हैं, कुछ ज़िम्मेदार पत्रों ने इस पर अपनी राय भी ज़ाहिर की है, लेकिन हिन्दुस्तान की जनता की सरकार है कि एक दम चुप्पी मार कर बैठ गई है.

है तो यह सरकार पांच बरस की, पर बाज़ बाज़ मामलों में इतना सोचती है मानो अस्सी नब्बे बरस की हो. चीन की नई सरकार को अपना कर और बरतानिया से पहले अपना कर, अपने गरम ख़ून का सबूत दिया था. और ग़लत या सही उत्तरी कोरिया को 'अग्रेसर' कह कर भी यही सबूत दिया था कि हिन्दुस्तानी सरकार अभी बच्चा है और बच्चों ही की तरह उछलना कूदना जानता है. उसके बाद भी कई मामलों में हिन्द सरकार ने बड़े जोशीले काम किये. ३८ वीं लकीर के मामले में तो उसने जो फ़ैसला किया उसकी वजह से सारी दुनिया में उसकी धाक जम गई. उत्तरी कोरिया को अग्रेसर कह कर भूल की थी वह इसके इस फ़ैसले से पशेमानी में बदल गई. और अब हिन्दुस्तानी बच्चा सरकार एक दम जवानी में क़दम रख

اِنکار کرکے یہ تو ثابت کر ہی رہا ہے کہ بیماری بم گرانا انتر قومی قانون کے خلاف ہے. پر اُس کا یہ کہنا کہ بیماری بم گرانے سے نہ کچھ نقصان ہوتا ہے نہ لڑائی جیتی جاتی ہے، اِس بات کا ثبوت ہے کہ بم گرائے ضرور گئے .

امریکہ کے بم نہ گرانے کی بات کو ہم اُس وقت کچھ کچھ ٹھیک سمجھ سکتے ہیں جب وہ یونو میں پہلے یہ ٹھہراؤ پاس کرا لے کہ بیماری بم گرانے والا ملک لڑائی کا مجرم سمجھا جائیگا اور تحقیقات کے بعد اُس ملک کو سزا بھی دی جائیگی .

کوریا میں بیماری بم گرانے کے بارے میں آئے دن نئے نئے بھید کھل رہے ہیں . ہر بھید کھل کر یہی کہتا معلوم ہوتا ہے کہ بیماری بم گرائے گئے اور گرائے امریکہ نے. پر ایسے بھیدوں کا کھلنا نہ کھلنا بیکار ہے جب یونو نہ کہہ دے کہ، بم گرائے گئے . ہاں، جب دنیا کی آواز یونو کی آواز سے زور دار ہوجائیگی تب شائد امریکہ کچھ سوچے تو سوچے. اُس سے پہلے اُسے کوئی چنتا نہیں .

—بھگوان دین 10 . 6 . '52

بیماری بم اور ہندستانی سرکار

کہا جاتا ہے ہند سرکار جنتا کی سرکار ہے اور حال کے چناؤ نے یہ بات ثابت کر دی ہے کہ سچ مچ ہند سرکار جنتا کی سرکار ہے. پر یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ ہندستان کے قریب قریب سب اخباروں میں کوریا میں بیماری بم گرانے کی خبریں چار مہینے سے برابر نکل رہی ہیں، کچھ ذمےدار پتروں نے اِس پر اپنی رائے بھی ظاہر کی ہے، لیکن ہندستان کی جنتا کی سرکار ہے کہ ایک دم چپی مار کر بیٹھ گئی ہے .

ہے تو یہ سرکار پانچ برس کی، پر بعض بعض معاملوں میں اتنا سوچتی ہے مانو اسی نوے برس کی ہو . چین کی نئی سرکار کو اپنا کر اور برطانیہ سے پہلے اپنا کر، اپنے گرم خون کا ثبوت دیا تھا. اور غلط یا صحیح اتری کوریا کو 'اگریسر' کہہ کر بھی یہی ثبوت دیا تھا کہ ہندستانی سرکار ابھی بچہ ہے اور بچوں ہی کی طرح اُچھلنا کودنا جانتی ہے . اُس کے بعد بھی کئی معاملوں میں ہند سرکار نے بڑے جوشیلے کام کئے . 38 ویں لکیر کے معاملے میں تو اُس نے جو فیصلہ کیا اُس کی وجہ سے ساری دنیا میں اُس کی دھاک جم گئی . اتری کوریا کو اگریسر کہکر بھول کی تھی وہ اِس کے اِس فیصلے سے پشیمانی میں بدل گئی. اور اب ہندستانی بچہ سرکار ایک دم جوانی میں قدم رکھ

बैठी. पर इस बीमारी बम के बारे में बड़ी फुर्ती जांच कर सकने सिर्फ़ यही सबूत दिया कि वह हद से ज़ियादे एहतियातकार हो गई है, फूंक फूंक कर क़दम रखने लगी है और जहां उसे जल्दी फ़ैसला करना चाहिये था वहां मामूल से ज़ियादा सोचने लगी है.

चाहिये तो यह था कि अगर कोई बिलकुल झूटी ख़बर कुछ हफ़्तों ही सब अख़बारों में आए तो सरकार उसकी जांच का फ़ौरन इन्तज़ाम करे और बीमारी बम जैसे बड़े ख़तरनाक मामले की अख़बारों में एक बार ख़बर आने पर भी जांच का इन्तज़ाम करती. पर वह तो महीनों की ख़बर के बाद चुप बैठी है. हो सकता है सरकार ने फ़ौरन ही अपने तरीक़े से उसकी जांच शुरू कर दी हो. पर वैसा करना जनता के लिये काफ़ी नहीं है. जनता की तसल्ली तो इससे हो सकती है कि वह बताये कि वह सचमुच इस मामले में कुछ कर रही है या नहीं.

हिन्दुस्तान एशियाई देश है. हम एशिया, योरप अफ़्रीका, अमरीका में फ़र्क़ नहीं करना चाहते. पर दूसरे जब हमें फ़र्क़ करने के लिये मजबूर करें तो हम क्या करें. जब यूरोप के सिर पर अटलान्टिक संघ मौजूद है तब एशियाई संघ क्यों न बने. और हिन्दुस्तान एशियाइयों और अमरीकियों में क्यों न फ़र्क़ करे? ऐटम बम की बुनियाद योरप में पड़ी, वह पनपा और बड़ा हुआ अमरीका में और उसने नाश किया एशियाई मुल्क जापान के शहर हिरोशीमा को. आज भी बीमारी के बम की जांच के मैदान बने हैं—एशियाई मुल्क कोरिया और चीन. यह मामूली बात नहीं है. हिन्दुस्तान को एशियाई मुल्क की हैसियत से ही बीमारी बम गिराने जैसे ख़तरनाक मामले में कुछ न कुछ बोलना और करना ही चाहिये था.

10. 6. '52. —भगवानदीन

अमरीका की मिसाल

अमरीका की तरक़्क़ी की ख़बरें जब हम तक पहुंचती हैं तो उन्हें सुन सुन कर हम में से बहुतों के मुंह में पानी भर आता है. और जिनके हाथ में हमारे मुल्क की बागडोर है वह तो बारी बारी से पंख लगा कर अमरीका उड़ कर अपनी आंखों उस तरक़्क़ी को देख आते हैं और उसे देख कर वह उस पर इतने लट्टू होते हैं कि घर लौट कर उसी धुन में मस्त उसकी नक़ल करने बैठ जाते हैं. न वक़्त देखते हैं, न जगह देखते हैं, न क़ाबलियत देखते हैं, न मेल जोल कर देखते हैं.

पंख लगा कर देख आने वाले यह देखने की परवाह नहीं करते कि अमरीका की तरक़्क़ी की तह में कौन कौन

بیٹھی. پر اس بیماری بم کے بارے میں بڑی جلدی جانچ کر اس نے صرف یہی ثبوت دیا کہ وہ حد سے زیادہ احتیاط کار ہوگئی ہے، پھونک پھونک کر قدم رکھنے لگی ہے اور جہاں جہاں اسے جلدی فیصلہ کرنا چاہئے تھا وہاں معمول سے زیادہ سوچنے لگی ہے .

چاہئے تو یہ تھا کہ اگر کوئی بالکل جھوٹی خبر کچھ ہفتوں ہی سب اخباروں میں آئے تو سرکار اس کی جانچ کی فوراً انتظام کرے . اور بیماری بم جیسے بڑے خطرناک معاملے کی اخباروں میں ایک بار خبر آنے پر بھی جانچ کا انتظام کرتی . پر وہ تو مہینوں کی خبر کے بعد چپ بیٹھی ہے . ہوسکتا ہے سرکار نے فوراً ہی اپنے طریقے سے اس کی جانچ شروع کردی ہو . پر ویسا کرنا جنتا کے لئے کافی نہیں ہے . جنتا کی تسلی تو اس سے ہوسکتی ہے کہ یہ بتائے کہ وہ سچ مچ اس معاملے میں کچھ کر رہی ہے یا نہیں .

ہندستان ایشیائی دیش ہے . ہم ایشیا' یورپ' افریقہ' امریکہ میں فرق نہیں کرنا چاہتے . پر دوسرے جب ہمیں فرق کرنے کے لئے مجبور کریں تو ہم کیا کریں . جب یورپ کے سر پر اٹلانٹک سنگھ موجود ہے تب ایشیائی سنگھ کیوں نہ بنے . اور ہندستان ایشیائیوں اور امریکیوں میں کیوں نہ فرق کرے ؟

ایٹم بم کی بنیاد یورپ میں پڑی ' وہ پنپا اور بڑا ہوا امریکہ میں اور اس نے ناش کیا ایشیائی ملک جاپان کے شہر ہیرو شیما کو . آج بھی بیماری کے بم کی جانچ کے میدان بنے ہیں—ایشیائی ملک کوریا اور چین . یہ معمولی بات نہیں ہے . ہندستان کو ایشیائی ملک کی حیثیت سے ہی بیماری بم گرانے جیسے خطرناک معاملے میں کچھ نہ کچھ بولنا اور کرنا ہی چاہئے تھا .

—بھگوان دین 10 . 6 . '52

امریکہ کی مثال

امریکہ کی ترقی کی خبریں جب ہم تک پہونچتی ہیں تو انہیں سن سن کر ہم میں سے بہتوں کے منھ میں پانی بھر آتا ہے . اور جن کے ہاتھ میں ہمارے ملک کی باگ ڈور ہے وہ تو باری باری سے پنکھ لگا کر امریکہ اڑکر اپنی آنکھوں اس ترقی کو دیکھ آتے ہیں اور اسے دیکھ کر وہ اس پر اتنے لٹو ہوتے ہیں کہ گھر لوٹ کر اسی دھن میں مست اس کی نقل کرنے بیٹھ جاتے ہیں . نہ وقت دیکھتے ہیں' نہ جگہ دیکھتے ہیں' نہ قابلیت دیکھتے ہیں' نہ میل جول کر دیکھتے ہیں .

پنکھ لگا کر دیکھ آنے والے یہ دیکھنے کی پرواہ نہیں کرتے کہ امریکہ کی ترقی کی تہ میں کون کون

सी ऐसी चीज़ें हैं जो अगर कभी ऊपर आईं तो अमरीका की सारी तरक्क़ी धूल में मिल जायगी. वह यह भी देखने की परवाह नहीं करते कि अमरीका सचमुच उस तरक्क़ी से उतना ही सुखी और बेफ़िकर है जितना उसकी तरक्क़ी का शोर मच रहा है. हमने तो यही सुना है और गुरुजनों से यही सीखा है कि वही दुकान पनपती है जिसमें बाहर की पूँजी घर की पूँजी से आधी से ज़ियादा हरगिज़ न हो और जितनी कम उतना ही अच्छा. इसी के सिलसिले में यह भी आता है कि अगर किसी दुकान की पूँजी आधी से ज़ियादा बाहर की होती है तो या तो वह दुकान बाहर वालों की हो जाती है या फिर धूल में मिल जाती है.

कुछ ऐसी ही बात बल और विद्या के बारे में कही जाती है. वह बल बल नहीं जो दूसरों के सहारे पर हो. वह विद्या विद्या नहीं जो अपनी मेहनत से न सीखी गई हो. बल और विद्या जो जल्दी जल्दी हासिल किये जाते हैं वह जल्दी जल्दी खो भी दिये जाते हैं.

हम नहीं समझते कि हिन्दुस्तानी सरकार की बहुत जल्दी बुद्धिमान, बलवान और मालदार बनने की नीति कहां तक ठीक रहेगी. जब कि वह इन तीनों के लिये उस अमरीका की नक़ल कर रहा है जो उसकी बराबर का नहीं है. और उस अमरीका से मदद ले रहा है जिसकी नियत और चालों से उसको पूरी पूरी वाक़फ़ियत नहीं है, क्योंकि हिन्दुस्तान को अमरीका के साथ रहने का आज से पहले कभी मौक़ा नहीं मिला.

अमरीका डरावनी चीज़ हो या न हो हमें कम से कम यह ज़रूर जानना चाहिये कि अमरीका ने अपने बचपन में उसी तरह अपनी क्या पेशबन्दियां की थीं जिस तरह कोई समझदार माली नये पौधे के लिये करता है. नया पौधा बड़े पेड़ की देखा देखी अगर अपने थांवले को उखाड़ फेंके तो नतीजा यही होगा कि वह चौपायों को अपने मुलायम पत्तों तक बुला लेगा और कभी न पनप पायेगा.

अमरीका ने अपने बचपन में मुनरो जैसे समझदार को जन्म दिया जिसने अमरीका के चारों तरफ एक थांवला बनाया जिसका नाम था 'अमरीका अमरीकियों के लिये', यही थांवला मुनरो सिद्धान्त नाम से मशहूर है.

अमरीका ने इस नये सिद्धान्त को मुनासिब वक़्त से पहले छोड़ दिया और वह पहली लड़ाई में शामिल हो गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि पहली लड़ाई जीती अमरीका ने, पर उसके बाद जो लीग आफ़ नेशन्स बनी उसमें उसे मुंह की खानी पड़ी और अमरीका की सारी नामवरी को बरतानिया हड़प गया. अमरीका को लीग आफ़ नेशन्स से ऐसे निकाल दिया जैसे दूध से मक्खी.

سی ایسی چیزیں ہیں جو اگر کبھی اوپر آئیں تو امریکہ کی ساری ترقی دھول میں مل جائیگی ۔ وہ یہ بھی دیکھنے کی پرواہ نہیں کرتے کہ امریکہ سچ مچ اُس ترقی سے اتنا ہی سکھی اور بےفکر ہے جتنا اُس کی ترقی کا شور مچ رہا ہے. ہم نے تو یہی سنا ہے اور گروجنوں سے یہی سیکھا ہے کہ وہی دوکان پنپتی ہے جس میں باہر کی پونجی گھر کی پونجی سے آدھی سے زیادہ ہرگز نہ ہو اور جتنی کم اتنا ہی اچھا. اسی کے سلسلے میں یہ بھی جاتا ہے کہ اگر کسی دوکان کی پونجی آدھی سے زیادہ باہر کی ہوتی ہے تو یا تو وہ دوکان باہر والوں کی ہوجاتی ہے یا پھر دھول میں مل جاتی ہے ۔

کچھ ایسی ہی بات بل اور ودیا کے بارے میں کہی جاتی ہے ۔ وہ بل بل نہیں جو دوسرے کے سہارے پر ہو ۔ وہ ودیا ودیا نہیں جو اپنی محنت سے نہ سیکھی گئی ہو ۔ بل اور ودیا جو جلدی جلدی حاصل کئے جاتے ہیں وہ جلدی جلدی کھو بھی دیئے جاتے ہیں ۔

ہم نہیں سمجھتے کہ ہندستانی سرکار کی بہت جلدی بدھیوان، بلوان اور مالدار بننے کی نیتی کہاں تک ٹھیک رہیگی ۔ جبکہ وہ اِن تینوں کے لئے اُس امریکہ کی نقل کر رہا ہے جو اُس کی برابر کا نہیں ہے ۔ اور اُس امریکہ سے مدد لے رہا ہے جسکی نیت اور چالوں سے اُس کی پوری پوری واقفیت نہیں ہے، کیونکہ ہندستان کو امریکہ کے ساتھ رہنے کا آج سے پہلے کبھی موقع نہیں ملا.

امریکہ ڈراؤنی چیز ہو یا نہ ہو ہمیں کم سے کم یہ ضرور جاننا چاہئے کہ امریکہ نے اپنے بچپن میں اسی طرح اپنی کیا پیش بندیاں کی تھیں جس طرح کوئی سمجھدار مالی نئے پودھے کے لئے کرتا ہے ۔ نیا پودھا بڑے پیڑ کی دیکھا دیکھی اگر اپنے تھانولے کو اُکھاڑ پھینکے تو نتیجہ یہی ہوگا کہ وہ چوپایوں کو اپنے ملائم پتوں تک بلا لیگا اور کبھی نہ پنپ پائیگا ۔

امریکہ نے اپنے بچپن میں منرو جیسے سمجھدار کو جنم دیا جس نے امریکہ کے چاروں طرف ایک تھانولا بنایا جس کا نام تھا 'امریکہ امریکیوں کے لئے' یہی تھانولا 'منرو سدھانت' نام سے مشہور ہے ۔

امریکہ نے اِس نئے سدھانت کو مناسب وقت سے پہلے توڑ دیا اور وہ پہلی لڑائی میں شامل ہو گیا. جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ پہلی لڑائی جیتی امریکہ نے ۔ پر اُس کے بعد جو لیگ آف نیشنس بنی اُس میں اسے منھ کی کھانی پڑی اور امریکہ کی ساری ناموری کو برطانیہ ہڑپ گیا ۔ امریکہ کو لیگ آف نیشنس سے ایسے نکال دیا جیسے دودھ سے مکھی.

सन 14 की लड़ाई से सबक़ लेकर दूसरी लड़ाई से अमरीका ने फ़ायदा उठाया और अब यूनो में अमरीका ने रूस को एक बेकार शाख़ बना रक्खा है. बरतानिया और फ्रांस को मामूली टहनी और चीमंग टान चीन को एक पत्ता.

भारत सरकार को अमरीका की जीवनी से सबक़ लेना चाहिये. उसे अमरीका की ही नक़ल करना है तो वह मुनरो के अमरीका की नक़ल करे, वुडरो विलसन, रूज़वेल्ट और ट्रूमेन के अमरीका की नहीं.

10. 6. '52 —भगवानदीन

नई सरकार नई बहार

आज़ाद भारत के नये विधान के मुताबिक़ जो चुनाव दिसम्बर 1951 में शुरू हुए थे वह 2 मई 1952 को पूरे हुए, जब राजपति के चुनाव के लिये वोट डाले गये. और आज़ाद भारत की पहली बाक़ायदा हकूमत 13 मई को बनी जब नये राजपति ने क़सम खाई और बड़े वज़ीर ने उनके आगे नये केबिनेट की फ़हरिस्त पेश की. दूसरे दिन नये मिनिस्टरों ने भी क़सम खाई. तीसरे दिन 15 मई को राजपति ने नई पार्लियामेन्ट के सामने अपनी पहली स्पीच दी. इस तरह मई के महीने में हमारे देश में नई सरकार क़ायम हुई. इस नई सरकार में हमारे राजपति और बड़े वज़ीर वही हैं जो पहले थे और ज़ियादतर मिनिस्टर भी पुराने हैं. हकूमत के इन अलमबरदारों को हम मुबारकबाद देते हैं और उम्मीद करते हैं कि देश में नई सरकार के आने का मतलब नई बहार लाना भी होगा.

पर हमें दुख के साथ क़बूल करना पड़ता है कि अगर राजपति की 15 मई वाली स्पीच से नई सरकार के इरादों का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है तो नई बहार आती नहीं दीखती. राजपति के भाषण को हम तीन हिस्सों में बांट सकते हैं—(1) गांधी जी में श्रद्धा और जग-शान्ति की दुहाई, एका व दोस्ती का पुराना राग, (2) विदेशी नीति में हिन्द सरकार का बेलाग और ग़ैर जानिबदार होना, और (3) देश के भीतरी मामलों में कमाल और कामयाबी का दावा.

इन तीन में पहली बात तो ऐसी है जो हर कोई हर मंच से कह सकता है और जो अंगरेज़ों की क़ायम की हुई, [illegible] जैसे पार्लिमेन्ट्री निज़ाम की दर्दनाक देन है. रही दूसरी बात. उसकी कसौटी भीतरी नीति है. अगर भीतरी मामलों में देश सुखी है और जनता आराम से अपने काम पर लगी रहती है तो समझना चाहिये कि देश की विदेशी नीति भी ठीक है. यह वैसी ही बात है जैसे

سن 14 کی لڑائی سے سبق لے کر دوسری لڑائی سے امریکہ نے فائدہ اٹھایا اور اب یونو میں امریکہ نے روس کو ایک بیکار شاخ بنا رکھا ہے۔ برطانیہ اور فرانس کو معمولی ٹہنی اور چی منگ ٹان چین کو ایک پتا۔

بھارت سرکار کو امریکہ کی جیونی سے سبق لینا چاہئے۔ اسے امریکہ کی ہی نقل کرنا ہے تو وہ منرو کے امریکہ کی نقل کرے۔ ووڈرو ولسن، روز ویلٹ اور ترومین کے امریکہ کی نہیں۔

10-6-'52 —بھگوان دین

نئی سرکار نئی بہار

آزاد بھارت کے نئے ودھان کے مطابق جو چناؤ دسمبر 1951 میں شروع ہوئے تھے وہ 2 مئی 1952 کو پورے ہوئے، جب راج پتی کے چناؤ کے لئے ووٹ ڈالے گئے۔ اور آزاد بھارت کی پہلی باقاعدہ حکومت 13 مئی کو بنی جب راج پتی نے قسم کھائی اور بڑے وزیر نے ان کے آگے نئے کیبنٹ کی فہرست پیش کی۔ دوسرے دن نئے منسٹروں نے بھی قسم کھائی۔ تیسرے دن 15 مئی کو راج پتی نے نئی پارلیامنٹ کے سامنے اپنی پہلی اسپیچ دی۔ اس طرح مئی کے مہینے میں ہمارے دیش میں نئی سرکار قائم ہوئی۔ اس نئی سرکار میں ہمارے راج پتی اور بڑے وزیر وہی ہیں جو پہلے تھے اور زیادہ تر منسٹر بھی پرانے ہیں۔ حکومت کے ان علمبرداروں کو ہم مبارک باد دیتے ہیں اور امید کرتے ہیں کہ دیش میں نئی سرکار کے آنے کا مطلب نئی بہار لانا بھی ہوگا۔

پر ہمیں دکھ کے ساتھ قبول کرنا پڑتا ہے کہ اگر راج پتی کی 15 مئی والی اسپیچ سے نئی سرکار کے ارادوں کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے تو نئی بہار آتی نہیں دکھتی۔ راج پتی کے بھاشن کو ہم تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں— (1) گاندھی جی میں شردھا اور جگ شانتی کی دہائی، ایکا و دوستی کا پرانا راگ، (2) ودیشی نیتی میں ہند سرکار کا بے لاگ اور غیر جانبدار ہونا، اور (3) دیش کے بھیتری معاملوں میں کمال اور کامیابی کا دعوا۔

ان تین میں پہلی بات تو ایسی ہے جو ہر کوئی ہر منچ سے کہہ سکتا ہے اور جو انگریزوں کی قائم کی ہوئی، [illegible] جیسے پارلیمنٹری نظام کی دردناک دین ہے۔ رہی دوسری بات۔ اس کی کسوٹی بھیتری نیتی ہے۔ اگر بھیتری معاملوں میں دیش سکھی ہے اور جنتا آرام سے اپنے کام پر لگی رہتی ہے تو سمجھنا چاہئے کہ دیش کی ودیشی نیتی [illegible] ٹھیک ہے۔ یہ ویسی ہی بات ہے جیسے

कि किसी प्रजातन्त्र की तरक्की का नाप उसके पीछे के इलाकों की दौलत और खुशहाली है, बाहर से आने वाले जहाजों की गिनती नहीं.

राजपति की तीसरी बातों को हम फिर तीन हिस्सों में बांट सकते हैं–(1) सरकार की तारीफ़ कि सिमेन्ट, लोहा, सन, चीनी और नमक वगैरा में खूब पैदावार हुई और इस तरह की चीज़ों के दाम गिरे, (2) इस बात का वादा कि नई सरकार नये व पुराने मसलों पर इस पार्लियामेन्ट के सामने क़ानून पेश करेगी, और (3) अनाज की कास्त व विकास योजनायें.

जहां तक सरकार की तारीफ़ की बात है, अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना कोई तसल्ली देने वाली चीज़ नहीं है. राजपति ने जो वादे किये हैं वह जब पूरे हो जायें तभी कुछ कहा जा सकता है. उनकी कुल स्पीच में जो काम की बात हमें मालूम हुई वह तीन पैरे की है जिसमें उन्होंने अनाज और विकासी योजना के बारे में चर्चा की है. इन दोनों बातों में उन्होंने जो रुख लिया है उससे पता चलता है कि हुकूमत और जनता के बीच में कितनी चौड़ी खाई है.

राजपति ने कहा है कि पानी न होने की वजह से देश में खाने की कमी पड़ती है. हमारे यहां के अकालों का ठीक यही कारन अंगरेज़ सरकार डेढ़ सौ बरस तक बताती थी और हम सच कहते हैं इन्द्र देवता या और किसी पर यह इल्ज़ाम लगाना गुनाह है. हिन्दुस्तान में अनाज की कमी के जो असली कारन हैं वह हम नीचे देते हैं :—

1. हिन्द सरकार का बड़ी बड़ी मशीनों, पूंजी वाद, फ़ौजों और शक्ति-कठोर जैसी रानियों से बेमेल गठबन्धन और ताक़त की हवस.

2. देहाती उद्योग धंधों को धीरे धीरे बरबाद करके उनकी जगह मिलों और बड़े उद्योगों को बढ़ावा देना.

3. देश में दिन दूनी रात चौगुनी बेरोज़गारी बढ़ने देना.

4. सरकारी मुलाज़मों में जिनसे सूबों के या केन्द्र के मिनिस्टर भी बाहर नहीं हैं कामचोरी, रिश्वतख़ोरी और सीनाज़ोरी का बढ़ना.

5. हुकूमत का देश की जनता की ताक़त में विश्वास न करना.

हम मानते हैं कि जब तक यह पांच कारन रहते हैं तब तक देश के अनाज का सवाल यह सरकार हल नहीं कर सकती और न इसे जनता का सहयोग ही मिल सकता है. सरकारी विकास योजनाओं या अन्न उपजाओ आन्दोलन को देखिये जिनमें करोड़ों रुपया पानी की तरह

کہ کسی پرجاتنتر کی ترقی کا ناپ اُس کے پیچھے کے علاقوں کی دولت اور خوش حالی ہے' باہر سے آنے والے جہازوں کی گنتی نہیں .

راج پتی کی تیسری بات کو ہم پھر تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں—(1) سرکار کی تعریف کہ سیمنٹ' لوہا' سن' چینی' اور نمک وغیرہ میں خوب پیداوار ہوئی اور اِس طرح کی چیزوں کے دام گرے' (2) اِس بات کا وعدہ کہ نئی سرکار نئے و پرانے مسئلوں پر اِس پارلیامنٹ کے سامنے قانون پیش کرے گی' اور (3) اناج کی کاشت و وکاس یوجنائیں .

جہاں تک سرکار کی تعریف کی بات ہے' اپنے منہ میاں مٹھو بننا کوئی تسلی دینے والی چیز نہیں ہے . راج پتی نے جو وعدے کئے ہیں وہ جب پورے ہو جائیں تبھی کچھ کہا جاسکتا ہے . اُن کی کل اسپیچ میں جو کام کی بات ہمیں معلوم ہوئی وہ تین پیرے کی ہے جس میں اُنہوں نے اناج اور وکاسی یوجنا کے بارے میں چرچہ کی ہے. ان دونوں باتوں میں اُنہوں نے جو رخ لیا ہے اُس سے پتہ چلتا ہے کہ حکومت اور جنتا کے بیچ میں کتنی چوڑی کھائی ہے .

راج پتی نے کہا ہے کہ پانی نہ ہونے کی وجہ سے دیش میں کھانے کی کمی پڑتی ہے . یہاں کے اکالوں کا ٹھیک یہی کارن ہمارے انگریز سرکار ڈیڑھ سو برس تک بتاتی تھی اور ہم سچ کہتے ہیں کہ اِندر دیوتا یا اور کسی پر یہ الزام لگانا گناہ ہے . ہندستان میں اناج کی کمی کے جو اصلی کارن ہیں وہ ہم نیچے دیتے ہیں:—

1. ہند سرکار کا بڑی بڑی مشینوں' پونجی واد' فوجوں اور شکتی کٹھور جیسی رانیوں سے بے میل گٹھ بندھن اور طاقت کی ہوس .

2. دیہاتی ادیوگ دھندوں کو دھیرے دھیرے برباد کرکے اُن کی جگہ ملوں اور بڑے ادیوگوں کو بڑھاوا دینا .

3. دیش میں دن دونی رات چوگنی بےروزگاری بڑھنے دینا .

4. سرکاری ملازموں میں جن سے صوبوں کے یا کیندر کے منسٹر بھی باہر نہیں ہیں کام چوری' رشوت خوری اور سینہ زوری کا بڑھنا .

5. حکومت کا دیش کی جنتا کی طاقت میں وشواس نہ کرنا .

ہم مانتے ہیں کہ جب تک یہ پانچ کارن رہتے ہیں تب تک دیش کے اناج کا سوال یہ سرکار حل نہیں کر سکتی اور نہ اِسے جنتا کا سہیوگ ہی مل سکتا ہے . سرکاری وکاس یوجناؤں یا ان اپجاؤ آندولن کو دیکھئے جن میں کروڑوں روپیہ پانی کی طرح

यहां तक भी सरकार तरह के ऊपर अकेली बराबर भी जनता की हालत बेहतर नहीं बना सकी. जिला इटावे में अमरीकी देख रेख में जो विकास योजना चल रही है उसको हमने घर फूंक तमाशा कहा है क्योंकि उसमें सरकार रुपया लगातार फूंकती जाती है मगर जनता का सहयोग या हमदर्दी रत्ती भर भी नहीं मिलता.

सोचने की बात है कि आखिर इस दर्दनाक सूरत का इलाज क्या है ? सरकार और जनता में क्यों नहीं पटती. इसकी बहुत सी वजहें हो सकती हैं लेकिन एक बहुत ही खास वजह है—हमारे मिनिस्टरों की निजी ऐश की जिन्दगी. सूबों में जहां मिनिस्टरों की तनखाहें डेढ़ हजार के करीब हैं वहां नई दिल्ली में चार और पांच हजार तक पहुँचती हैं और राजपति की दस हजार तक. नई केन्द्री कैबिनेट में कम से कम तीन मिनिस्टर ऐसे हैं जो कुछ अरसा पहले सूबों में मिनिस्टर थे. आप से आप खयाल होता है कि केन्द्री कैबिनेट में आने पर उन्हें इतनी जियादे तनखा की जरूरत क्यों पड़ी? और अगर डेढ़ हजार के करीब में वह रह सकते हैं तो केन्द्र के दूसरे मिनिस्टर क्यों नहीं रह सकते ? और अगर मिनिस्टर लोग डेढ़ हजार में रह सकते हैं तो उन मिनिस्टरों के I. C. S. या I. A. S. सेक्रेटरियों को क्यों जियादा चाहिये ? या विदेश में जाने वाले हमारे राजदूतों को और गवरनरों को क्यों जियादा चाहिये ? जब बंगाल का गवरनर मुकर्जी पांच सौ रुपये में काम चला सकता है तो किसी दूसरे गवरनर को क्यों जियादा दिया जाय ? और सौ बातों की बात यह कि ऐसी हालत में राजपति क्यों जियादा लें ? क्या यह अफसोस की बात नहीं है कि सूबे के मिनिस्टर से दुगनी तिगनी तनखा गवरनर की हो और गवरनर से दूनी राजपति की ? यह ऊंच नीच की सीढ़ी आखिर क्यों ?

यह वह सवाल हैं जो हर वक्त जनता की जबान पर आते हैं. इनका कोई जवाब हकूमत के पास न था, न है और न होगा. लेकिन हमारे मिनिस्टर, जो किसी जमाने में त्यागी से त्यागी साधू को भी मात करते थे, शायद आज मजबूर हैं उस मशीन से जिसके शिकंजे में वह फंस गये हैं. और यह मशीन वही है जो वारेन हेस्टिंग्ज ने हिन्दुस्तान पर अंगरेजी राज जमाने के लिये और हिन्दुस्तान की जनता के चूसने के लिये बनाई थी. और जब मशीन वही रहती है, तो यह उम्मीद करना कि देश की हालत में सुधार हो जायगा ऐसी बात है जैसे दिन में तारे देखने की उम्मीद करना. तब फिर नई सरकार भले आ गई हो, बहार वही पुरानी है, वही तनाहकुम है जो पहले कभी थी.

इसलिये नई सरकार के आने पर हमें जहां खुशी है वहां ना उम्मेदी भी है. इस ना उम्मेदी में भी उम्मीद यह

بھی سرکار گرد کے اوپر —— برابر بھی جنتا کی
حالت بہتر نہیں بنا سکی. ضلع اٹاوے میں امریکی دیکھ
ریکھ میں جو وکاس یوجنا چل رہی ہے اُس کو ہم نے گھر
پھونک تماشہ کہا ہے کیونکہ اُس میں سرکار روپیہ لگاتار
پھونکتی جاتی ہے مگر جنتا کا سہیوگ یا ہمدردی رتی
بھر بھی نہیں ملتا .

سوچنے کی بات ہے کہ آخر اِس دردناک صورت کا
علاج کیا ہے ؟ سرکار اور جنتا میں کیوں نہیں پٹتی .
اس کی بہت سی وجہیں ہوسکتی ہیں لیکن ایک بہت
ہی خاص وجہ ہے——ہمارے منسٹروں کی نجی عیش کی
زندگی . صوبوں میں جہاں منسٹروں کی تنخواہیں
ڈیڑھ ہزار کے قریب ہے وہاں نئی دلی میں چار اور پانچ
ہزار تک پہونچتی ہیں اور راج پتی کی دس ہزار تک .
نئی کیندری کیبنٹ میں کم سے کم تین منسٹر ایسے
ہیں جو کچھ عرصہ پہلے صوبوں میں منسٹر تھے . آپ سے
آپ خیال ہوتا ہے کہ کیندری کیبنٹ میں آنے پر انہیں
اتنی زیادہ تنخواہ کی ضرورت کیوں پڑی؟ اور اگر ڈیڑھ
ہزار کے قریب میں وہ رہ سکتے ہیں تو کیندر کے دوسرے
منسٹر کیوں نہیں رہ سکتے؟ اور اگر منسٹر لوگ ڈیڑھ
ہزار میں رہ سکتے ہیں تو اُن منسٹروں کے .I. C. S یا
.I. A. S سیکریٹریوں کو کیوں زیادہ چاہئیے؟ یا ودیش
میں جانے والے ہمارے راج دوتوں کو اور گورنروں کو کیوں
زیادہ چاہئیے؟ جب بنگال کا گورنر مکرجی پانچسو روپئے
میں کام چلا سکتا ہے تو کسی دوسرے گورنر کو کیوں زیادہ
دیا جائے؟ اور سو باتوں کی بات یہ کہ ایسی حالت میں
راج پتی کیوں زیادہ لیں ؟ کیا یہ افسوس کی بات نہیں
ہے کہ صوبے کے منسٹر سے دگنی تگنی تنخواہ گورنر کی ہو
اور گورنر سے دونی راج پتی کی ؟ یہ اونچ نیچ کی سیڑھی
آخر کیوں ؟

یہ وہ سوال ہے جو ہر وقت جنتا کی زبان پر آتے
ہیں . اِن کا کوئی جواب حکومت کے پاس نہ تھا' نہ ہے
اور نہ ہوگا . لیکن ہمارے منسٹر' جو کسی زمانے میں
تیاگی سے تیاگی سادھو کو بھی مات کرتے تھے' شاید آج
مجبور ہیں اُس مشین سے جس کے شکنجے میں وہ
پھنس گئے ہیں . اور یہ مشین وہی ہے جو وارن ہسٹنگز
نے ہندستان پر انگریزی راج جمانے کے لئے اور ہندستان
کی جنتا کو چوسنے کے لئے بنائی تھی . اور جب مشین
وہی رہتی ہے تو یہ اُمید کرنا کہ دیش کی حالت میں
سدھار ہو جائے گا ایسی بات ہے جیسے دن میں تارے
دیکھنے کی اُمید کرنا . تب پھر نئی سرکار بھلے آ گئی ہو'
بہار وہی پرانی ہے' وہی تناہ کن ہے جو پہلے کبھی تھی .

اِس لئے نئی سرکار کے آنے پر ہمیں جہاں خوشی ہے وہاں
ناامیدی بھی ہے . اِس ناامیدی میں بھی اُمید یہ

है कि जिस तरह रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद' उसी तरह हो सकता है यह सरकार भी पिछले पांच साल के तजुर्बों से कुछ फायदा उठाये, कुछ सीखे और तन-मन-धन से नई बहार लाने की कोशिश में अपने को मिटाने देने में कोई कसर न रखे.

हमारा असली आसरा देश की उस जनता पर है जिसने अपने त्याग और कुरबानियों से आजादी हासिल की और जो हमें पूरा भरोसा है अपने रहे सहे आजकल के दुख ों को भी जल्दी ही खत्म करेगी.

28. 5. '52. —सुरेश रामभाई

विलायती खाद का समझौता

5 जनवरी 1952 को नई दिल्ली में हिन्द सरकार ने अमरीकी सरकार से जो हिन्द-अमरीकी तकनीकी सहयोग समझौता किया है उसे हम गुलामी नामा या गुलामी का पट्टा कह चुके हैं. हाल की कुछ घटनाओं ने हमारे इस खयाल को और भी मजबूत बना दिया है. पहली मई को इस समझौते के मातहत पहला अमली समझौता किया गया. उसके अनुसार अमरीकी सरकार दस लाख आठ हजार टन विलायती खाद हिन्दुस्तान को देगी. इसका दाम करीब एक करोड़ साढ़े छैह लाख डालर (लगभग पांच करोड़ छैह लाख रुपया) होगा, जो अमरीकी सरकार अपने पांच करोड़ डालर वाले फंड ए में से कटा देगी. और फंड बी का करीब चवालीस लाख रुपया हिन्द सरकार इन खादों के इधर उधर पहुंचाने में खर्च कर देगी.

अमरीकी सरकार की तरफ से नई दिल्ली से निकलने वाले हफ्तेवारी पर्चे 'अमरीकन रिपोर्टर' के 14 मई 1952 वाले नम्बर में विलायती खाद के इस राजीनामे की पूरी तफसील दी गई है. उसकी खास बातें हम नीचे देते हैं :—

1. आज हिन्दुस्तान में करीब साढ़े चार लाख टन अमोनियम सलफेट बाहर से आता है. बिहार में इस खाद को बनाने वाली सिन्दरी फैक्टरी साढ़े तीन लाख टन से ज्यादा खाद नहीं तैयार कर सकेगी. इस तरह करीब 70,000 हजार टन का टोटा रहता है जिसको पूरा करने की सख्त जरूरत है. इसलिये उसे बाहर से मंगाना चाहिये.

2. अमरीका से जो खादें आएंगी वह ज्यादातर देहाती विकास योजना वाले इलाकों में भेजी जायेंगी. और किसानों को उनके इस्तेमाल करने के लिये बढ़ावा दिया जायेगा.

3. विलायती खाद के इस समझौते की तरह हिन्द सरकार और अमरीका के बीच दूसरे और समझौते भी होंगे जिनके मातहत कुछ ऐसी चीजें हिंदुस्तान के गांव

ہے کہ جس طرح رنگ لاتی ہے حنا پتھر پہ پس جانے کے بعد' اسی طرح ہوسکتا ہے یہ سرکار بھی پچھلے پانچ سال کے تجربوں سے کچھ فائدہ اٹھائے' کچھ سیکھے اور تن من دھن سے نئی بہار لانے کی کوشش میں اپنے کو مٹا دینے میں کوئی کسر نہ رکھے ۔

ہمارا اصلی آسرا دیش کی اس جنتا پر ہے جس نے اپنے تیاگ اور قربانیوں سے آزادی حاصل کی' اور جو ہمیں پورا بھروسہ ہے اپنے رہے سہے آج کل کے دکھوں کو بھی جلدی ہی ختم کرے گی ۔

28 . 5 . '52 —سریش رام بھائی

ولایتی کھاد کا سمجھوتا

5 جنوری 1952 کو نئی دلی میں ہند سرکار نے امریکی سرکار سے جو ہند امریکی تکنیکی سہیوگ سمجھوتہ کیا ہے اُسے ہم غلامی نامہ یا غلامی کا پٹہ کہہ چکے ہیں ۔ حال کی کچھ گھٹناؤں نے ہمارے اس خیال کو اور بھی مضبوط بنا دیا ہے ۔ پہلی مئی کو اس سمجھوتے کے ماتحت پہلا عملی سمجھوتہ کیا گیا ۔ اسکے انوسار امریکی سرکار دس لاکھ آٹھ ہزار ٹن ولایتی کھاد ہندستان کو دیگی ۔ اس کا دام قریب ایک کروڑ ساڑھے چھ لاکھ ڈالر (لگ بھگ پانچ کروڑ چھ لاکھ روپیہ) ہوگا' جو امریکی سرکار اپنے پانچ کروڑ ڈالر والے فنڈ اے میں سے کٹا دیگی ۔ اور فنڈ بی کا قریب چوالیس لاکھ روپیہ ہند سرکار ان کھادوں کے اِدھر اُدھر پہونچانے میں خرچ کردیگی ۔

امریکی سرکار کی طرف سے نئی دلی سے نکلنے والے ہفتہ واری پرچہ 'امریکن رپورٹر' کے 14 مئی 1952 والے نمبر میں ولایتی کھاد کے اِس راضی نامے کی پوری تفصیل دی گئی ہے ۔ اسکی خاص باتیں ہم نیچے دیتے ہیں —

1. آج ہندستان میں قریب ساڑھے چار لاکھ ٹن امونیم سلفیٹ باہر سے آتا ہے ۔ بہار میں اِس کھاد کو بنانے والی سندری فیکٹری ساڑھے تین لاکھ ٹن سے زیادہ کھاد نہیں تیار کر سکیگی ۔ اِس طرح قریب 70,000 ٹن کا ٹوٹا رہتا ہے جس کو پورا کرنے کی سخت ضرورت ہے ۔ اِس لئے اسے باہر سے منگانا چاہئے ۔

2. امریکہ سے جو کھادیں آئینگی وہ زیادہتر دیہاتی وکاس یوجنا والے علاقوں میں بھیجی جائینگی اور کسانوں کو انکے استعمال کرنے کے لئے بڑھاوا دیا جائیگا ۔

3. ولایتی کھاد کے اس سمجھوتے کی طرح ہند سرکار اور امریکہ کے بیچ دوسرے اور سمجھوتے بھی ہونگے جنکے ماتحت کچھ ایسی چیزیں ہندستان کے گاؤں

[illegible] के भाव पहुंचाई जानेवाली विलायती खाद से वह अपना बचाव पैदा कर सकें और हिन्द सरकार अपनी पंचसाला योजना में कामयाब हो सके.

अखबारों में खबर छपी है कि इस समझौते की तरह सात समझौते अब तक और किये जा चुके हैं. इन पर हम अगले नम्बर में विचार करेंगे. इस वक्त सिर्फ विलायती खाद वाले समझौते को ले रहे हैं.

इस समझौते से साफ जाहिर है कि हिन्द-अमरीकी विकास फन्ड (फन्ड ए) पांचवें हिस्से से ज्यादा की रकम विलायती खाद खरीदने में खत्म कर दी गई. अमरीका को हर लगी न फिटकरी, रंग चोखा बना रहा. इसी तरह पूरा फन्ड हिन्दुस्तान के मत्थे मढ़ दिया जाएगा और जैसा हमको डर था अमरीकी कारखानों और उद्योग धन्धों को हिन्दुस्तान के किसानों की बदौलत बढ़ावा मिलता रहेगा.

विलायती खाद का इस्तेमाल हमारे देश के लिए नई चीज है हालांकि पिछले कुछ अरसे से सरकार इसका रिवाज फैलाने की कोशिश कर रही है. कौन नहीं जानता कि जिस मिट्टी को विलायती खाद दी जाती है उसे देशी खाद वाली मिट्टी के मुकाबले कहीं ज्यादा पानी की जरूरत पड़ती है. और फिर हमारे देश में तो करोड़ों एकड़ जमीन ऐसी है जिसके बारे में सरकार खुद ही कहती है कि पानी काफी नहीं बरसता और सिंचाई के दूसरे साधन भी नहीं हैं. इसलिये सरकार का पानी का इन्तजाम किये बिना किसानों के सर पर विलायती खाद जबरदस्ती थोप देना उनके रही सही फसलों को जला देने का काम करेगा और जो कुछ थोड़ी बहुत काश्त हो जाती है उसे भी चौबे गये थे छब्बे होने रह गए दुबे, वाली हालत को पहुँचा देगा.

साथ ही साथ एक बड़ा सवाल यह है कि हिन्दुस्तान की खेती में विलायती खाद को क्या जगह मिलनी चाहिये. जिस देश में खेती का काम दूसरे कामों की तरह एक इन्डस्ट्री या धन्धा हो और जहां बड़े-बड़े कारखानों, मशीनों और औजारों का बोलबाला हो वहां पर विलायती खाद जरूरत की चीज या बरकत की चीज भी समझी जा सकती है. लेकिन क्या हिन्दुस्तान जैसे देश में भी उसका वही महत्व है जहां बेरोजगारी या बेकारी का रोग सारी जनता पर हावी हो और जो अपनी जरूरत के बुनियादी चीजों के लिए तरसता हो?

जाने दीजिए इन बातों को. हम यह देखें कि पश्चिम के जानकार और अनुभवी आदमी इस बारे में क्या कहते हैं. उनकी राय है कि मशीनों से और विलायती खाद के जरिये खेती करने के कारन धरती के साथ बलात्कार जैसा

[illegible] بچاؤ پیدا کر سکیں اور ہند سرکار اپنی پنج سالہ یوجنا میں کامیاب ہو سکے ۔

اخباروں میں خبر چھپی ہے کہ اس سمجھوتے کی طرح سات سمجھوتے ایک اور کئے جا چکے ہیں ۔ ان پر ہم اگلے نمبر میں وچار کرینگے ۔ اس وقت صرف ولایتی کھاد والے سمجھوتے کو لے رہے ہیں ۔ اس سمجھوتے سے صاف ظاہر ہے کہ ہند امریکی وکاس فنڈ (فنڈ اے) کے پانچویں حصے سے زیادہ کی رقم ولایتی کھاد خریدنے میں ختم کردی گئی ۔ امریکہ کی ہر لگی نہ پھٹکری' رنگ چوکھا بنا رہا ۔ اسی طرح پورا فنڈ ہندستان کے متھے مڈھ دیا جائیگا اور جیسا ہم کو ڈر تھا امریکی کارخانوں اور اُدیوگ دھندوں کو ہندستان کے کسانوں کی بدولت بڑھاوا ملتا رہیگا ۔

ولایتی کھاد کا استعمال ہمارے دیش کے لئے نئی چیز ہے حالانکہ پچھلے کچھ عرصے سے سرکار اِسکا رواج پھیلانے کی کوشش کر رہی ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ جس مٹی کو ولایتی کھاد دی جاتی ہے اُسے دیشی کھاد والی مٹی کے مقابلے کہیں زیادہ پانی کی ضرورت پڑتی ہے ۔ اور پھر ہمارے دیش میں تو کروڑوں ایکڑ زمین ایسی ہے جسکے بارے میں سرکار خود ہی کہتی ہے کہ پانی کافی نہیں برستا اور سنچائی کے دوسرے سادھن بھی نہیں ہیں ۔ اِسلئے سرکار کا پانی کا انتظام کئے بنا کسانوں کے سر پر ولایتی کھاد زبردستی تھوپ دینا اُن کی رہی سہی فصلوں کو جلا دینے کا کام کریگا اور جو کچھ تھوڑی بہت کاشت ہو جاتی ہے اُسے بھی چوبے گئے تھے چھبے ہونے رہ گئے دوبے' والی حالت کو پہونچا دیگا ۔

ساتھ ہی ساتھ ایک بڑا سوال یہ ہے کہ ہندستان کی کھیتی میں ولایتی کھاد کو کیا جگہ ملنی چاہئے ۔ جس دیش میں کھیتی کا کام دوسرے کاموں کی طرح ایک انڈسٹری یا دھندا ہو اور جہاں بڑے بڑے کارخانوں' مشینوں اور اوزاروں کا بول بالا ہو وہاں پر ولایتی کھاد ضرورت کی چیز یا برکت کی چیز بھی سمجھی جاسکتی ہے ۔ لیکن کیا ہندستان جیسے دیش میں بھی اس کا وہی مہتو ہے جہاں بیروزگاری یا بیکاری کا روگ ساری جنتا پر حاوی ہو اور جو اپنی ضرورت کے بنیادی چیزوں کے لئے ترستا ہو ؟

جانے دیجئے اِن باتوں کو ۔ ہم یہ دیکھیں کہ پچھم کے جانکار اور انوبھوی آدمی اس بارے میں کیا کہتے ہیں ۔ اُنکی رائے ہے کہ مشینوں سے اور ولایتی کھاد کے ذریعے کھیتی کرنے کے کارن دھرتی کے ساتھ بلاتکار جیسا

जुर्म किया जा रहा है. लार्ड नार्थ बोर्न ने अपनी किताब "Look To The Land" में कहा है :—

"सन 1919 के बाद से धरती की जितनी मिट्टी बरबाद की गई है उतनी दुनिया के पिछले इतिहास में कभी नहीं की गई.........इन्सान की करतूतों का का नतीजा यह है कि जिस धरती पर उसने सभ्यताएँ खड़ी करने की कोशिश की वह धरती गायब होती जा रही है, पानी उसकी मिट्टी को बहा ले जा रहा है और हवा उड़ा दे रही है. धरती के ऊपर की पतली तह जिस तेज़ी के साथ बरबाद हो रही है वैसा इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ ......वाक़या यह है कि इस अरसे में दस लाख मील के रक़बे में नये रेगिस्तान बन गए हैं और कहीं ज़ियादा बड़े इलाक़े में रेगिस्तान बनते जा रहे हैं."

जिस रफ़्तार के साथ यह काम हो रहा है इसका अन्दाज़ा हम नीचे देते हैं :—

ब्रिटेन के ख़ुराक के सवाल पर बोलते हुए ब्रिटिश एसोसिएशन के सदर सर जान रसल ने कहा है कि हमारी 45 लाख एकड़ ज़मीन खेती के लायक़ नहीं रही है और हर साल क़रीब क़रीब 88 हज़ार एकड़ ज़मीन बरबाद होती जा रही है.

अमरीका की Soil Con.ervation Service का कहना है कि अमरीका में हर साल तीन बिलियन टन मिट्टी बेकार हो जाती है या उड़ जाती है. इस मिट्टी को रेलवे के डिब्बों में भरा जाय तो इन डिब्बों की इतनी ज़ियादा तादाद हो जाएगी कि अगर इन्हें धरती के बीच वाली लकीर पर फैलाया जाय तो उसके अट्ठारह चक्कर पूरे हो जाएंगे. इस Consravation Service के मुखिया डाक्टर ह्यू ग बैनेट का कहना है कि अपनी थोड़ी सी ज़िन्दगी में अमरीका ने अपनी बेहतरीन ज़मीन में से 282,00,000 एकड़ ज़मीन खो दी और 775,00,000 एकड़ ज़मीन का नम्बर आ रहा है.

साथ ही साथ ब्रिटेन के नामी खेती एक्सपर्ट सर अलबर्ट हावर्ड ने अपनी मशहूर किताब "An Agricultural Testament" में कहा है :—

"पच्छिमी देशों में जो खेती हो रही है उसके अन्दर ख़ास दोष यह है कि हैवानात और नबातात से मिलने वाला जो कचरा या मैला है वह या तो पूरा का पूरा या तो बरबाद हो जाता है या बहुत कम काम में आता है. इसका नतीजा यह है कि फ़सल के उगाने में जो Humus (सड़ी पत्तियों का एक जुज़) ख़र्च हो जाते हैं और खाद की शक्ल में जो Humus मिल जाते हैं दोनों की तादाद में ज़मीन आसमान [illegible] होता जा रहा है. इस फ़र्क़ को मिलावटी खाद दे

جرم کیا جا رہا ہے . لارڈ نارتھ بورن نے اپنی کتاب "Look To The Land" میں کہا ہے :—

"سن 1919 کے بعد سے دھرتی کی جتنی مٹی برباد کی گئی اتنی دنیا کے پچھلے اتہاس میں کبھی نہیں کی گئی....... انسان کی کرتوتوں کا نتیجہ یہ ہے کہ جس دھرتی پر اس نے سبھیتائیں کھڑی کرنے کی کوشش کی وہ دھرتی غائب ہوتی جا رہی ہے' پانی اس کی مٹی کو بہا لے جا رہا ہے اور ہوا اڑا دے ڈال رہی ہے . دھرتی کے اوپر کی پتلی تہ جس تیزی کے ساتھ برباد ہو رہی ہے ویسا اتہاس میں پہلے کبھی نہیں ہوا...... واقعہ یہ ہے کہ اس عرصے میں دس لاکھ میل کے رقبے میں نئے ریگستان بن گئے ہیں اور کہیں زیادہ بڑے علاقے میں ریگستان بنتے جا رہے ہیں."

جس رفتار کے ساتھ یہ کام ہو رہا ہے اسکا اندازہ ہم نیچے دیتے ہیں :—

برٹن کے خوراک کے سوال پر بولتے ہوئے برٹش ایسوسیئیشن کے صدر سر جان رسل نے کہا ہے کہ ہماری 45 لاکھ ایکڑ زمین کھیتی کے لائق نہیں رہی ہے اور ہر سال قریب قریب 88 ہزار ایکڑ زمین برباد ہوتی جا رہی ہے.

امریکہ کی Soil Conservation Service کا کہنا ہے کہ امریکہ میں ہر سال تین ملین ٹن مٹی بیکار ہو جاتی ہے یا اڑ جاتی ہے . اس مٹی کو ریلوے کے ڈبوں میں بھرا جائے تو ان ڈبوں کی اتنی زیادہ تعداد ہو جائیگی کہ اگر انہیں دھرتی کے بیچ والی لکیر پر پھیلایا جائے تو اسکے اٹھارہ چکر پورے ہوجائینگے . اس Conservation Service کے مکھیا ڈاکٹر ہیو گ بینٹ کا کہنا ہے کہ اپنی تھوڑی سی زندگی میں امریکہ نے اپنی بہترین زمین میں سے 282,00,000 ایکڑ زمین کھو دی اور 775,00,000 ایکڑ زمین کا نمبر آ رہا ہے .

ساتھ ہی ساتھ برٹن کے نامی کھیتی ایکسپرٹ سر البرٹ ہاورڈ نے اپنی مشہور کتاب "An Agricultural Testament" میں کہا ہے :—

"پچھمی دیشوں میں جو کھیتی ہو رہی ہے اسکے اندر خاص دوش یہ ہے کہ حیوانات اور نباتات سے ملنے والا جو کچرا یا میلا ہے وہ یا تو پورا کا پورا یا تو برباد ہو جاتا ہے یا بہت کم کام میں آتا ہے . اسکا نتیجہ یہ ہے کہ فصل کے اگانے میں جو (Humus) (سڑی پتیوں کا ایک جزو) خرچ ہو جاتے ہیں اور کھاد کی شکل میں جو Humus مل جاتے ہیں دونوں کی تعداد میں زمین آسمان کا فرق ہوتا جا رہا ہے. اس فرق کو ملاوٹی کھاد دے

देकर पूरा करने कोशिश की जाती है. लोग समझते यह हैं कि मिट्टी में कोई भी कमी क्यों न हो तरह तरह की विलायती खाद देकर उसे पूरा किया जा सकता है. लेकिन इस ख़्याल का पौधों की ख़ुराक और उनके असली ज़रूरत से कोई वास्ता नहीं है. यह ख़्याल बुनियादी तौर पर ग़लत और ओछा है. इसमें इस बात का कोई लिहाज़ नहीं रखा जाता कि मिट्टी की ज़िन्दगी कैसी होती है. नक़ली खाद देने से पौधों को नक़ली ख़ुराक पहुँचेगी. उससे नक़ली काश्त तैयार होगी, नक़ली जानवर बनेंगे और आख़िर में उसका नतीजा होगा नक़ली इनसान.”

दूर जाने की ज़रूरत नहीं. न्यूज़ीलैंड में विलायती खाद बहुत कसरत से इस्तेमाल की जाती है. पर उसका नतीजा क्या है? अपनी किताब में “The Living Soil” Miss E. B. Balfour का कहना है :—

“धरती को हम क्या चीज़ देते हैं और क्या चीज़ नहीं देते इसका ज़बरदस्त असर उसकी बनावट, असलियत और उसके गुन पर पड़ता है. ऐसी ज़मीन पर खाना उगने से उसकी तासीर में फ़र्क़ पैदा हो जाता है और इसका नतीजा होता है जनता की सेहत और ताक़त पर असर पड़ना. यह मानी हुई बात है हमारे खाने में बहुत सी कमियां हैं और इनमें से ज़ियादातर कमियों का कारन यही है.

“यह कमियां क्या है?” कहा जाता है कि आंकड़े आप से आप बोलते हैं लेकिन न्यूज़ीलैंड में तो चीख़ चीख़ कर सुनने वाले का मानो सिर फाड़ते हैं. सन 1914 और 1939 की लड़ाइयों के दौरान के बीस साल में न्यूज़ीलैंड की आबादी 36 फ़ी सदी पैदायश से और बाहर की आमद से बढ़ी. लेकिन इसी अरसे में पैदायश की रफ़्तार औसत आबादी के 23 फ़ी हज़ार से गिर कर 17 पर आ गई, दिमाग़ की ख़राबी के केस 100 फ़ी सदी बढ़ गए और अस्पतालों में भरती 126 फ़ी सदी बढ़ी. दो और पांच साल के उम्र के बीच के बच्चों में अस्सी फ़ी सदी हर साल किसी न किसी रोग के शिकार पाए जाने लगे.”

बड़ी नम्रता के साथ हम जानना चाहते हैं कि क्या हमारी सरकार हिन्दुस्तान में दूसरा न्यूज़ीलैंड बनाना चाहती है? हमने जो ऊपर एक्सपर्टों (माहिरों) की राय है क्या उससे हम कोई सबक़ नहीं सीख सकते? क्या हमारी सरकार दावे के साथ यह कह सकती है कि विलायती खाद का नतीजा हर सूरत में अच्छा ही होगा? नहीं, हरगिज़ नहीं. हिन्दुस्तान के किसान को विलायती खाद नहीं चाहिये. वह सिर्फ़ एक चीज़ चाहता है—ज़मीन. जहां तक उसकी खेती करनेके माद्दे की बात है सर अलबर्ट हावर्ड का कहना

کر پورا کرنے کی کوشش کی جاتی ہے. لوگ سمجھتے یہ ہیں کہ مٹی میں کوئی بھی کمی کیوں نہ ہو طرح طرح کی ولایتی کھاد دیکر اسے پورا کیا جاسکتا ہے. لیکن اس خیال کا پودھوں کی خوراک اور انکے اصلی ضرورت سے کوئی واسطہ نہیں ہے. یہ خیال بنیادی طور پر غلط اور اوچھا ہے. اسمیں اس بات کا کوئی لحاظ نہیں رکھا جاتا کہ مٹی کی زندگی کیسی ہوتی ہے. نقلی کھاد دینے سے پودھوں کو نقلی خوراک پہونچیگی. اس سے نقلی کاشت تیار ہوگی' نقلی جانور بنینگے اور آخر میں اسکا نتیجہ ہوگا نقلی انسان."

دور جانے کی ضرورت نہیں. نیوزیلینڈ میں ولایتی کھاد بہت کثرت سے استعمال کی جاتی ہے. پر اسکا نتیجہ کیا ہے؟ اپنی کتاب "The Living Soil" میں Miss E. B. Belfour کا کہنا ہے :--

''دھرتی کو ہم کیا چیز دیتے ہیں اور کیا چیز نہیں دیتے اسکا زبردست اثر اسکی بناوٹ' اصلیت اور اسکے گن پر پڑتا ہے. ایسی زمین پر کھانا اگنے سے اسکی تاثیر میں فرق پیدا ہو جاتا ہے اور اسکا نتیجہ ہوتا ہے جنتا کی صحت اور طاقت پر اثر پڑنا. یہ مانی ہوئی بات ہے کہ ہمارے کھانے میں بہت سی کمیاں ہیں اور اسمیں سے زیادہ تر کمیوں کا کارن یہی ہے.

"یہ کمیاں کیا ہیں؟" کہا جاتا ہے کہ آنکڑے آپ سے آپ بولتے ہیں لیکن نیوزیلینڈ میں تو چیخ چیخ کر سننے والے کا ماتھا سر پھاڑتے ہیں. سن 1914 اور 1939 کی لڑائیوں کے دوران کے بیس سال میں نیوزیلینڈ کی آبادی 36 فیصدی پیدائش سے اور باہر کی آمد سے بڑھی. لیکن اسی عرصے میں پیدائش کی رفتار اوسط آبادی سے 23 فی ہزار سے گر کر 17 پر آگئی' دماغ کی خرابی کے کیس 100 فیصدی بڑھ گئے اور اسپتالوں میں بھرتی 126 فیصدی بڑھی. دو اور پانچ سال کے عمر کے بیچ کے بچوں میں 80 فیصدی ہر سال کسی نہ کسی روگ کے شکار پائے جانے لگے."

بڑی نمرتا کے ساتھ ہم جاننا چاہتے ہیں کہ کیا ہماری سرکار ہندستان میں دوسرا نیوزیلینڈ بنانا چاہتی ہے؟ ہم نے جو اوپر ایکسپرٹوں (ماہروں) کی رائے دی ہے کیا اس سے ہم کوئی سبق نہیں سیکھ سکتے؟ کیا ہماری سرکار دعوے کے ساتھ یہ کہ سکتی ہے کہ ولایتی کھاد کا نتیجہ ہر صورت میں اچھا ہی ہوگا؟ نہیں' ہرگز نہیں. ہندستان کے کسان کو ولایتی کھاد نہیں چاہئے. وہ صرف ایک چیز چاہتا ہے — زمین. جہانتک اسکی کھیتی کرنے کے مادے کی بات ہے سر البرٹ ہاورڈ کا کہنا

[illegible] ने कोई काम किए बिना, सिर्फ अपने तजरुबे के बल पर, सदियों के दौरान में उसने खेती करने के ऐसे तरीके निकाल लिए हैं कि धरती का कस बरकरार कायम रखने में उसे ताज्जुब कामयाबी मिली है……वह न ज़मीन की ताकत के बाहर काश्त करता है, न गलत वक्त पर काश्त करता है. उसके पास जो कमज़ोर नाइट्रोजन का भंडार है उसे वह नहीं जलने देता और उसके पास जो Humus की पूँजी है उसे भी नहीं बरबाद करता. चीन को छोड़ कर शायद ही दुनिया में किसी और जगह ऐसा किसान हो जो इतनी कम नाइट्रोजन से अपना काम निकाल लेता हो. यही वजह है कि अनगिनती सदियों से वह धरती का उपजाऊ पन लगातार कायम रख सका है.

इससे ज़ियादा सर्टीफ़िकेट क्या चाहिये. हमने माना कि थोड़े अरसे से हमारा किसान अपनी खेती में उतना कामयाब नहीं रहा है और हमारे गांव की हालत पहले से बिगड़ गई है. लेकिन इसके पीछे बहुत सी राजकाजी और आर्थिक वजहें भी हैं. हमारे किसान को आज जिस चीज़ की ज़रूरत है वह विलायती खाद है न बाहर का पैसा, न बाहर का एक्सपर्ट, न बाहर का दिमाग़. ज़रूरत इस बात की है कि किसान को इत्मिनान दिलाया जाय कि उसका भला चाहने वाले सचमुच उसका भला चाहते हैं.

बड़े अफ़सोस की बात है कि हिन्द-अमरीकी समझौते के अन्दर पहला अमली समझौता जो किया गया वह एक ऐसी चीज़ के लिए किया गया जिसके बिना हमारा काम खूब अच्छी तरह चल सकता है. इस समझौते को देख कर हमारे दिल में शक ज़ोर पकड़ जाते हैं जिसकी वजह से हमने हिन्द अमरीकी समझौते को गुलामी का पट्टा कहा है.

10. 6. 52 —सुरेश रामभाई

'लोक सेवक' बन्द

पिछले पौने चार बरस से इन्दौर से 'लोक सेवक' नाम का अखबार श्री बैजनाथ महोदय की देख रेख में निकल रहा है. इस अरसे में अपनी लगन, समझ और सेवा के ज़रिये उसने हिन्दी जगत और रचनात्मक काम के दायरे में अपनी खास जगह बना ली थी. लेकिन आर्थिक मजबूरी के कारन पिछले 3 मई के बाद से इसका निकलना बन्द हो गया.

हमें यकीन है कि अगर 'लोक सेवक' भी दूसरे बाज़ारू अखबारों की तरह इश्तहार लेता होता तो जारी रह सकता था. मगर इश्तहारों के सहारे ज़िन्दा रहना दूसरों के कन्धों पर खड़ा रहना है. हमें अफ़सोस होता है जब भाषा के बहुत से ऐसे अखबारों को देख कर जो इश्तहारों के कारन अपनी आत्मा

[illegible] کی کوئی مدد لئے بنا صرف اپنے تجربے کے بل پر صدیوں کے دوران میں اس نے کھیتی کرنے کے ایسے طریقے نکال لئے ہیں کہ دھرتی کا کس برقرار قائم رکھنے میں اسے تعجب کامیابی ملی ہے……وہ نہ زمین کی طاقت کے باہر کاشت کرتا ہے، نہ غلط وقت پر کاشت کرتا ہے. اس کے پاس جو انمول نائٹروجن کا بھنڈار ہے اسے وہ نہیں جلنے دیتا اور اسکے پاس جو Humus کی پونجی ہے اسے بھی نہیں برباد کرتا. چین کو چھوڑ کر شاید ہی دنیا میں کسی اور جگہ ایسا کسان ہو جو اتنی کم نائٹروجن سے اپنا کام نکال لیتا ہو. یہی وجہ ہے کہ ان گنتی صدیوں سے وہ دھرتی کا اپجاؤپن لگاتار قائم رکھ سکا ہے.

اس سے زیادہ سرٹیفکیٹ کیا چاہئے. ہم نے مانا کہ تھوڑے عرصے سے ہمارا کسان اپنی کھیتی میں اتنا کامیاب نہیں رہا ہے اور ہمارے گاؤں کی حالت پہلے سے بگڑ گئی ہے. لیکن اسکے پیچھے بہت سی راج کاجی اور آرتھک وجہیں بھی ہیں. ہمارے کسان کو آج جس چیز کی ضرورت ہے وہ ولایتی کھاد ہے نہ باہر کا پیسہ، نہ باہر کا ایکسپرٹ، نہ باہر کا دماغ. ضرورت اس بات کی ہے کہ کسان کو اطمینان دلایا جائے کہ اس کا بھلا چاہنے والے سچ مچ اسکا بھلا چاہتے ہیں.

بڑے افسوس کی بات ہے کہ ہند امریکی سمجھوتے کے اندر پہلا عملی سمجھوتہ جو کیا گیا وہ ایک ایسی چیز کے لئے کیا گیا جس کے بنا ہمارا کام خوب اچھی طرح چل سکتا ہے. اس سمجھوتے کو دیکھ کر ہمارے دل میں وہ شک زور پکڑ جاتے ہیں جسکی وجہ سے ہم نے ہند امریکی سمجھوتے کو غلامی کا پٹہ کہا ہے.

—سریش رام بھائی 10-6-52

'لوک سیوک' بند

پچھلے پونے چار برس سے اندور سے 'لوک سیوک' نام کا اخبار شری بیجناتھ مہودے کی دیکھ ریکھ میں نکل رہا ہے. اس عرصے میں اپنی لگن، سمجھ اور سیوا کے ذریعے اس نے ہندی جگت اور رچناتمک کام کے دائرے میں اپنی خاص جگہ بنا لی تھی. لیکن آرتھک مجبوری کے کارن پچھلے 3 مئی کے بعد سے اس کا نکلنا بند ہوگیا.

ہمیں یقین ہے کہ اگر 'لوک سیوک' بھی دوسرے بازارو اخباروں کی طرح اشتہار لیتا ہوتا تو جاری رہ سکتا تھا. مگر اشتہاروں کے سہارے زندہ رہنا دوسروں کے کندھوں پر کھڑا رہنا ہے. ہمیں افسوس ہوتا ہے جب بھاشا کے بہت سے ایسے اخباروں کو دیکھ کر جو اشتہاروں کے کارن اپنی آتما

[illegible] ... की कोशिश कर रहा है जो कौन नहीं जानता ?

'हरिजन', 'नया हिन्द', 'लोक सेवक' और 'सर्वोदय' एक ही पेड़ की शाखें जैसी हैं. 'लोक सेवक' के जाने पर हमें उतना ही दुख हो रहा है जितना अपना क़रीबी से क़रीबी ख़ानदानी के जाने पर. हमें उम्मीद यह है कि जल्दी ही हवा बदलेगी, जिस चीज़ की जितनी क़द्र होनी चाहिये उतनी होगी, और 'लोक सेवक' दोबारा खड़ा हो कर पहले के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा शान से चल निकलेगा.

—सुरेश रामभाई

विनोबा जी का ख़त

अप्रैल के नम्बर में 'यू. पी. सरकार और भूमिदान' नाम से एक नोट हमने दिया था. उस बारे में हमें विनोबा जी का एक ख़त मिला है. उसका ज़रूरी हिस्सा हम नीचे दे रहे हैं.

"भूमि दान यज्ञ में मैं सबकी मदद ले रहा हूँ. उसमें गांव सभा और ग्राम सभा पंचायत के लोगों का भी मैंने समावेश किया है. वह सब लोग लखनऊ में इकट्ठा हुये थे. उनको मैंने भू दान यज्ञ का स्वरूप समझाया था और केवल प्रेम से लोगों की ख़ुद काश्त ज़मीन में से कुछ ज़मीन हासिल करने की कोशिश करें ऐसी मांग मैंने की थी. इसमें किसी तरह के कोई दबाव की गुँजाइश नहीं, यह भी अच्छी तरह समझा दिया. 'नया हिन्द' के एक लेख में आपने शंका प्रगट की थी उसके सिलसिले में मैं यह लिख रहा हूँ. एक जन आन्दोलन में हमें सबका सहयोग लेना चाहिये, और काम की मर्यादायें समझ कर सावधानी से और विश्वास पूर्वक सबसे काम लेना चाहिये यह मेरी वृत्ती है."

3. 6. 1952. कैम्प (पहाड़ी, ज़िला बांदा)

विनोबा जी की राय से हम पूरी तरह से इत्तफ़ाक़ करते हैं. हमें यक़ीन है कि आत्म विश्वास के साथ चलते हुये वह दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करेंगे और उनके इस जन आन्दोलन से जनता के अन्दर वह जागृति पैदा हो सकेगी जिससे वह अपने हक़ों को अपने ही बल से हासिल कर लेगी.

लेकिन यू. पी. सरकार का जो रवैया इस भूमि दान यज्ञ आन्दोलन की तरफ़ हमें दिखाई दिया उसके बारे में हमारी पिछली राय रत्ती भर नहीं बदली है. हमारा ख़्याल है कि उसकी दो घोड़ों पर सवारी ज़ोरों से जारी है.

12. 6. '52. —सुरेश रामभाई

[illegible] ... جیسا ہمارے دیش کے [illegible] کو ہٹانے کی کوشش کر رہا ہے سو کون نہیں جانتا ؟

'ہریجن' 'نیا ہند' 'لوک سیوک' اور 'سرودے' ایک ہی پیڑ کی شاخوں جیسی ہیں . 'لوک سیوک' کے جانے پر ہمیں اتنا ہی دکھ ہو رہا ہے جتنا اپنا قریبی سے قریبی خاندانی کے جانے پر . ہمیں امید یہ ہے کہ جلدی ہی ہوا بدلے گی' جس چیز کی جتنی قدر ہونی چاہئے اتنی ہوگی' اور 'لوک سیوک' دوبارہ کھڑا ہوکر پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ شان سے چل نکلے گا .

—سریش رام بھائی

ونوبا جی کا خط

اپریل کے نمبر میں 'یو . پی . سرکار اور بھومی دان' نام سے ایک نوٹ ہم نے دیا تھا . اس بارے میں ہمیں ونوبا جی کا ایک خط ملا ہے . اس کا ضروری حصہ ہم نیچے دے رہے ہیں .

"بھومی دان یگیہ میں میں سب کی مدد لے رہا ہوں . اس میں گاؤں سبھا اور گرام سبھا پنچایت کے لوگوں کا بھی میں نے سماویش کیا ہے . وہ سب لوگ لکھنؤ میں اکٹھا ہوئے تھے . انکو میں نے بھودان یگیہ کا سروپ سمجھایا تھا اور کیول پریم سے لوگوں کی خود کاشت زمین میں سے کچھ زمین حاصل کرنے کی کوشش کریں ایسی مانگ میں نے کی تھی . اسمیں کسی طرح کے کوئی دباؤ کی گنجائش نہیں' یہ بھی اچھی طرح سمجھا دیا . 'نیا ہند' کے ایک لیکھ میں آپ نے شنکا پرکٹ کی تھی اس کے سلسلے میں میں یہ لکھ رہا ہوں . ایک جن آندولن میں ہمیں سب کا سہیوگ لینا چاہئے' اور کام کی مریادائیں سمجھ کر ساودھانی سے اور وشواس پوروک سب سے کام لینا چاہئے یہ میری ورتی ہے ."

3 . 6 . 1952 کیمپ (پہاڑی' ضلع باندہ)

ونوبا جی کی رائے سے ہم پوری طرح سے اتفاق کرتے ہیں . ہمیں یقین ہے کہ آتم وشواس کے ساتھ چلتے ہوئے وہ دن دونی رات چوگنی ترقی کریں گے اور ان کے اس جن آندولن سے جنتا کے اندر وہ جاگرتی پیدا ہو سکے گی جس سے وہ اپنے حقوں کو اپنے ہی بل سے حاصل کر لے گی .

لیکن یو . پی . سرکار کا جو رویہ اس بھومی دان یگیہ آندولن کی طرف ہمیں دکھائی دیا اس کے بارے میں ہماری پچھلی رائے رتی بھر نہیں بدلی ہے . ہمارا خیال ہے کہ اس کی دو گھوڑوں پر سواری بڑے زوروں سے جاری ہے .

—سریش رام بھائی 12 . 6 . '52

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास. सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल गफ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये -

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالے وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٠:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس۔ سکریٹری—پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندرلال
سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے۔

Registered No. A—210

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से रंडी-बाज़ी, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाकेबन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया. किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की. देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 के क़रीब सफ़े, बढ़िया काग़ज़, पक्की जिल्द, 28 तस्वीरोंदार किताब, दाम लागत बराबर, सिर्फ़ साढ़े छै रुपया.

जल्दी ही इस किताब का हिन्दी एडीशन भी निकल रहा है, दाम सिर्फ़ चार रुपया. अभी से अपना आर्डर बुक करा लीजिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद—3.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے.

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور آج چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے رنڈی بازی، بھکمنگی اور بیروزگاری کو ختم کیا گیا، کس طرح وہاں کے بے زمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کس طرح امریکہ کی ناکے بندی کے باوجود اس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سوا ولمبی بنا لیا، کس طرح اپنی تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی. کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سینہ زوری ختم کی، دیش کے آرتھک سنگھٹن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ.

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی. ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے.

700 کے قریب صفحے، بڑھیا کاغذ، پکی جلد 28 تصویروں دار کتاب، دام لاگت برابر، صرف ساڑھے چھ روپیہ.

جلدی ہی اس کتاب کا ہندی ایڈیشن بھی نکل رہا ہے دام صرف چار روپیہ. ابھی سے اپنا آرڈر بک کرا لیجئے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد-3